ओ३म्

भास्करग्रन्थमाला नं० २

संस्कृत-हिन्दी-कोष

THE

SANSKRIT-HINDI-DICTIONARY

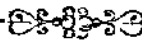
For the Use of Schools & Colleges.



जिस में

अकारादि क्रम से प्रायः समस्त प्रसिद्ध संस्कृतसंज्ञा और धातुओं के [संज्ञाओं के लिंग और धातुओं के गण सहित] हिन्दी उर्दू के सरल पर्यायवाची शब्द दिये गये हैं।

जिस में २६॥ हजार शब्द हैं



प्रकाशक—

रघुवीरशरण दुबलिस, अध्यक्ष भास्कर प्रेस मेरठ शहर।

मिलने का पता—

मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

प्रथमावृत्ति १०००

सं० १९७१

मूल्य १ प्रति ४)

विषयसूची

अ–	पृष्ठ	१ से आरम्भ है।		ट–	”	३०१	”
आ–	”	१३८	”	ठ–	”	३०१	”
इ–	”	१६०	”	ड–	”	३०१	”
ई–	”	१६३	”	ढ–	”	३०२	”
उ–	”	१६४	”	ण–	”	३०२	”
ऊ–	”	१८८	”	त–	”	३०२	”
ऋ–	”	१९०	”	थ–	”	३२१	”
ॠ–	”	१९२	”	द–	”	३२१	”
ऌ–	”	१९२	”	ध–	”	३४७	”
ॡ–	”	१९२	”	न–	”	३५९	”
ए–	”	१९२	”	प–	”	३९५	”
ऐ–	”	१९५	”	फ–	”	४६५	”
ओ–	”	१९६	”	ब–	”	४६८	”
औ–	”	१९७	”	भ–	”	४८१	”
क–	”	१९९	”	म–	”	४९६	”
ख–	”	२५२	”	य–	”	५३२	”
ग–	”	२५७	”	र–	”	५४३	”
घ–	”	२७३	”	ल–	”	५६२	”
ङ–	”	२७६	”	व–	”	५६७	”
च–	”	२७६	”	श–	”	६१५	”
छ–	”	२८९	”	ष–	”	६३६	”
ज–	”	२९१	”	स–	”	६३७	”
झ–	”	३००	”	ह–	”	६८८	”
ञ–	”	३०१	”				



ओ३म्

लेखक का यह तुच्छ प्रयत्न

श्रीयुत पं० घासीरामजी एम० ए० एल० एल० बी०

प्रधान

आर्यप्रतिनिधिसभा संयुक्तप्रान्त, मेरठ

की सेवा में

संस्कृतभाषा के प्रति उन के असीम प्रेम और

देववाणी के प्रचार के लिये उन के सतत

प्रयत्न के उपलक्ष में

सादर समर्पित है।

प्रस्तावना

आजकल आर्यभाषा [हिन्दी] में संस्कृतशब्दों का प्रयोग बहुलता से होता है। ज्यों ज्यों आर्यभाषा उन्नत होती जायगी, नवीन २ विषयों पर ग्रन्थों का समावेश उस में दिन प्रतिदिन होता रहेगा, त्यों त्यों संस्कृतशब्दों का प्रयोग भी अधिकाधिक ही बढ़ता रहेगा; क्योंकि संस्कृतभाषा हिन्दी के लिये अब तक माता का काम देती रही है और ऐसा ही आगे को होता रहेगा। ऐसी दशा में एक ऐसे कोष की आवश्यकता थी, जिस में संस्कृत के प्रचलित शब्दों के सुगमार्थ हिन्दी में दिये गये हों। इसी उद्देश्य को लक्ष्य में रख कर हमने यह कोष प्रस्तुत किया है। आशा है कि इससे साधारण हिन्दी पढ़े लिखे मनुष्यों को उच्च आर्यभाषा के समझने और सीखने में सुगमता होगी। यह ही नहीं, इस के पाठ से स्कूलों और कालिजों में पढ़ने वाले विद्यार्थी, जिनकी गौणभाषा संस्कृत होती है, बहुत लाभ उठा सकते हैं। कारण कि इस में संस्कृतशब्दों के हिन्दी पर्यायवाची शब्दों के साथ ही उर्दू भाषा के पर्यायवाची शब्द भी दिये गये हैं। स्कूलों और कालिजों में, जहां संस्कृत पढ़ने वाले विद्यार्थी भी उर्दू शब्दों का प्रयोग करने पर विवश होते हैं, इस कोष की इस विशेषता को बड़ा उपयोगी पायेंगे। अब हम यहां संक्षेप से उन बातों का विवरण देते हैं, जिन के जानने से इस कोष के समझने में पाठकों को सुगमता होगी।

१–संस्कृतवर्णमाला में ४९ अक्षर होते हैं, जिनमें १४ स्वर और ३५ व्यंजन हैं। अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ–ये १४ स्वर कहलाते हैं। इन में अ इ उ ऋ ऌ–ये ह्रस्व और शेष दीर्घ स्वर कहलाते हैं। क ख ग घ ङ,च छ ज झ ञ,ट ठ ड ढ ण,त थ द ध न,प फ ब भ म,य र ल व, श ष स ह, अं अः–ये पैंतीस व्यञ्जन हैं। क से लेकर म तक स्पर्शवर्ण कहलाते हैं, जो पांच वर्गों [कक्षाओं] में विभक्त हैं। क ख ग घ ङ = कवर्ग; च छ ज झ ञ = चवर्ग; ट ठ ड ढ ण = टवर्ग; त थ द ध न = तवर्ग; प फ ब भ म = पवर्ग; य र ल व अन्तस्थ और श ष स ह ऊष्मवर्ण तथा अं [ं] अनुस्वार और अः [:] विसर्ग जो अयोगवाह वर्ण कहलाते हैं। इन वर्णों के अनेक उच्चारण स्थान हैं जो किसी व्याकरणग्रन्थ के देखने से ज्ञात हो सकते हैं; किन्तु यहां इतना जानना आवश्यक है कि श ष स में श तालव्य, ष मूर्धन्य और स दन्त्य सकार कहलाता है।

२–संस्कृत में जब दो पद पास २ आते हैं तो वे एक दूसरे से संयुक्त हो जाते हैं। इस संयोग का नाम 'सन्धि' है। सन्धि दो प्रकार की होती है–स्वरसन्धि और व्यञ्जनसन्धि। सन्धि का विशेष विवरण हमारे यहां के छपे 'संस्कृतशिक्षक' नामक पुस्तक में देखिये।

३–द्रव्यवाचक जो शब्द होते हैं, उनके पश्चात् सात विभक्तियां लगती हैं। जो ये हैं–प्रथमा, द्वितीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी। जिन के प्रत्यय नीचे लिखे अनुसार होते हैं। प्रथमा में–ः, औ, अः, द्वितीया में अम्, औ, अः, तृतीया में आ, भ्याम्, भिः, चतुर्थी में ए, भ्याम्, भ्यः, पञ्चमी में अः, भ्याम्, भ्यः; षष्ठी में अः, ओः, आम् और सप्तमी में इ, ओः, सु प्रत्यय लगाये जाते हैं। ये २१ प्रत्यय सुप् कहलाते हैं और जिस शब्द के अन्त में ये प्रत्यय लगाये जाते हैं वह सुबन्त-पद कहलाता है।

४–द्रव्यवाचक संज्ञाओं के अतिरिक्त संस्कृत में सर्वनाम नामक संज्ञा भी होती हैं, जिन्हें अंग्रेज़ी में प्रोनौन (Pronoun) कहते हैं। इनके उत्तर भी उपर्युक्त विभक्तियां लगती हैं। सर्व, विश्व, उभय, एकतर, अन्य, अन्यतर, इतर, कतर, यतम, एकतम, भवत्, पूर्व, पर, अवर, अन्तर, अधर, दक्षिण, उत्तर, स्व, किम्, यद्, तद्, एतद्, इदम्, अदस्, युष्मद्, अस्मद् ये प्रसिद्ध सर्वनाम हैं।

५–इन के अतिरिक्त संख्यावाचक संज्ञा होती है, जिन्हें अंग्रेज़ी में Numeral (न्यूमिरल) कहते हैं। एक, अनेक, द्वि, त्रि, चतुर्, पंचन्, षष्, सप्तन्, अष्टन्, नवन्, दशन्, विंशति, त्रिंशत्, चत्वारिंशत्,

पञ्चाशत्, षष्टि, सप्तति, अशीति, नवति, शत, सहस्र इत्यादि सङ्ख्यावाचक शब्द हैं, यह स्मरण रखना चाहिये कि सञ्ज्ञाओं के पश्चात् सुप् विभक्ति लगने पर इन के रूप में कुछ फेरफार होजाता है।

६—कुछ ऐसे भी शब्द हैं जिन के रूप में कभी विकार नहीं होता और उनके पश्चात् सुप् विभक्तियां नहीं लगतीं। ऐसे शब्दों को अव्यय कहते हैं। कुछ अव्ययों की तालिका यहां दीजाती है। अकस्मात्, अति, अतीव, अथवा, अधो, अत्र, अद्यस्, अधुना, अन्यथा, अपि, अयि, अरे, अलम्, अहो, आ, इति, इत्थम्, इदानीम्, इह, उच्चैस्, उपरि, ऋते, एव, एवम्, कथम्, कदा, किन्तु, किम्, किल, चिरम्, चेत्, तथा, तदा, नीचैस्, नूनम्, पश्चात्, प्रति, प्राक्, प्रातर्, प्रादुस्, प्रायस् इत्यादि। अव्ययों का अन्तिम स् वा र् विसर्ग में बदल जाता है। अव्यय एक प्रकार के क्रियाविशेषण होते हैं। क्रिया के अर्थ में भेदभाव करने के लिये उसके पूर्व कुछ अव्यय लगाये जाते हैं, जिन का नाम उपसर्ग है। अति, अधि, अनु, अप्, अपि, अभि, अव, आ, उत्, उप्, दुर्, नि, निर्, परा, परि, प्र, प्रति, वि, सम्, सु-ये उपसर्ग हैं। अप्, अव्, और अपि के अ का विकल्प से लोप होजाता है जैसे अवगाह = वगाह, अपिहित = पिहित।

७—पुल्लिङ्गसञ्ज्ञाओं से स्त्रीलिङ्ग संज्ञा बनाने के लिये आ, ई, इका इत्यादि प्रत्यय लगाये जाते हैं। जो स्त्रीलिङ्गप्रत्यय कहलाते हैं। अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के पश्चात् आ लगा कर स्त्रीलिङ्ग बनाया जाता है। जैसे—सरल से सरला, प्रिय से प्रिया, किन्तु गौर से गौरी, कुमार से कुमारी, किशोर से किशोरी इत्यादि रूप बनते हैं। अजादि को छोड कर जातिवाचक शब्दों के पश्चात् ई प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे—सिंह से सिंही, राक्षस से राक्षसी, हरिण हरिणी; किन्तु अज से अजा और चटक से चटका। ऋकारान्त शब्दों के पश्चात् ई प्रत्यय लगाते हैं। जैसे दातृ से दात्री, धातृ से धात्री। सङ्ख्यावाचक को छोड़कर नकारान्त सञ्ज्ञाओं के उत्तर ई प्रत्यय लगता है, जैसे कामिन् से कामिनी, यामिन् से यामिनी। मत्, वत्, तवत्, वस्, ईयस् प्रत्ययान्त सञ्ज्ञाओं के पश्चात् ई प्रत्यय लगता है। जैसे विद्वस् से विदुषी, बुद्धिमत् से बुद्धिमती।

८—संस्कृत में ६ कारक (Cases) होते हैं। यथा—कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण; सम्बन्ध और सम्बोधन को कारकों में गिनती नहीं होती। कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति, कर्म में द्वितीया, करण में तृतीया, सम्प्रदान में चतुर्थी, अपादान में पञ्चमी, सम्बन्ध में षष्ठी और अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। कर्त्ता कारक क्रिया करने वाले को प्रकट करता है, कर्म उस द्रव्य को प्रकट करता है जिसमें क्रिया का फल रहता है। करण से उस साधन का द्योतन होता है जिसकी सहायता से क्रिया की जाती है। सम्प्रदान उस व्यक्ति वा द्रव्य को बतलाता है जिस को कोई वस्तु दीजाती है या जिस के उद्देश्य से क्रिया की जाती है। अपादान उस पुरुष वा द्रव्य को प्रकट करता है जिस से कोई वस्तु अलग की जाय, लीजाय, उत्पन्न की जाय, रक्षित की जाय, सीखी जाय। अधिकरण उस व्यक्ति वा द्रव्य को बतलाता है जो क्रिया का आधार होता है। सम्बन्ध से दो वस्तुओं का आपस का सम्बन्ध (तााल्लुक़) ज्ञात होता है।

९—विशेषण उस सञ्ज्ञा को कहते हैं जो किसी व्यक्ति वा द्रव्य के पूर्व लगाई जाकर उसके अर्थ में कुछ विशेषता लादे। वह व्यक्ति वा द्रव्य विशेष्य कहलाता है। विशेषण का कोई निश्चित लिङ्ग नहीं होता, प्रत्युत वह जिस विशेष्य के साथ जोड़ा जाता है उसी के लिङ्ग को ग्रहण कर लेता है। इसीलिये वह त्रिलिङ्ग कहलाता है। भाषा में पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग केवल दो ही लिङ्ग होते हैं, किन्तु संस्कृत में इन से अधिक एक और लिङ्ग होता है जो नपुंसकलिङ्ग कहलाता है। पुल्लिङ्ग उन शब्दों को बतलाता है जिन में पुरुषत्व या पुरुषचिन्ह पाया जाय। स्त्रीलिङ्ग उन शब्दों को बतलाता है जिन में स्त्रीत्व, स्त्रीचिन्ह या मृदुता [कोमलता] पाई जाय। जिस में स्त्रीत्व और पुरुषत्व दोनों का अभाव हो वह नपुंसक कहलाता है। संस्कृत में शब्दों का लिङ्ग निश्चित होना है इसलिये यह नियम सर्वत्र नहीं लगता; क्योंकि संस्कृत में स्त्री के वाचक स्त्रीलिङ्ग नारी, पुल्लिङ्ग दारा, और नपुंसकलिङ्ग कलत्र तीनों लिङ्गों में पाये जाते हैं।

१०–हिन्दीभाषा में एक वचन और बहुवचन केवल दो ही वचन होते हैं, जिन से एक वा अनेक वस्तुओं का ज्ञान होता है; किन्तु संस्कृत में, जैसा कि प्रायः समस्त प्राचीनकालीन भाषाओं में पाया जाता है, दो वस्तु का द्योतक द्विवचन भी होता है। इसलिये सात सात विभक्तियों के लग जाने से एक शब्द के रूप तीनों वचनों में २१ हो जाते हैं।

११–वे प्रकृति, जिन से होना, करना, सहना इत्यादि अर्थ प्रकट होता है, धातु कहलाती हैं। हिन्दी में धातु का चिह्न ना है। जैसे–करना, धरना, पहिरना आदि में। संस्कृत में ऐसा कोई निश्चित चिह्न नहीं होता। भू, स्था, गम्, वच्, दृश्, पठ्, सह्, नम्, वन्द, कृ, धृ, शी, प्लव, द्रु इत्यादि अनेक धातु होती हैं, जिन की संख्या २३४३ है, जिन में परस्मैपद और आत्मनेपद की विभक्तियां लगती हैं। विभक्तियां लगने पर उन का नाम अङ्ग होता है। धातु दश विभागों में विभक्त हैं, जिन्हें गण कहते हैं। १ भ्वादि, २ अदादि, ३ ह्वादि वा जुहोत्यादि, ४ दिवादि; ५ स्वादि, ६ तुदादि, ७ रुधादि, ८ तनादि; ९ क्र्यादि और १० चुरादि–ये दश गणों के नाम हैं।

१२–क्रियाओं की विभक्ति दो प्रकार की होती हैं। एक परस्मैपद और दूसरी आत्मनेपद। जिन धातुओं के पश्चात् परस्मैपद की विभक्तियां लगती हैं वे परस्मैपदी, जिन के उत्तर आत्मनेपद की विभक्तियां लगती हैं वे आत्मनेपदी धातु कहलाती हैं और कुछ ऐसी भी धातु हैं जिनके पश्चात् दोनों प्रकार की विभक्तियां लगती हैं, ऐसी धातुओं को उभयपदी कहते हैं। कालभेद से इन विभक्तियों के दश भेद होते हैं, जो लकार कहलाते हैं। जिन के नाम ये हैं–१ लट् [*वर्तमानकाल*], २ लङ् [*अनद्यतनभूत*], ३ लिट् [*परोक्ष*], ४ लुङ् [*सामान्यभूत*], ५ लुट् [*अनद्यतनभविष्य*], ६ लृट् [*सामान्यभविष्य*], ७ लोट् [*आज्ञा*], ८ विधिलिङ्, ९ आशीर्लिङ्, १० लृङ् [*क्रियातिपत्ति*]।

१३–संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं प्रथम, मध्यम और उत्तम। प्रथम पुरुष परोक्षकर्त्ता को जताता है, मध्यम पुरुष पुरोवर्ती कर्त्ता का और उत्तम पुरुष वक्ता का बोधक होता है। प्रत्येक लकार में इन तीन पुरुषों और तीन वचनों के विभाग से ९ विभक्तियां होती हैं, इस प्रकार कुल १८० विभक्तियां होती हैं, जो तिङ् प्रत्यय कहलाते हैं। अकर्मक और सकर्मक भेद से धातु के दो भेद होते हैं। जिसके साथ कर्म का सम्बन्ध होता है उसे सकर्मक और जिस के साथ कर्म का सम्बन्ध नहीं होता उसे अकर्मक धातु कहते हैं।

१४–धातु के अर्थ में प्रेरणा दिखलाने के लिये णिच् प्रत्यय लगता है और इस प्रत्यय के लगने पर वह धातु णिजन्त कहलाती है। जैसे पठ् [पढ़ना] धातु का अर्थ णिच् प्रत्यय लगने पर पढ़ाना हो जायगा। णिजन्त धातुओं के रूप चुरादिगण की धातुओं के समान होते हैं। जैसेः–पठ् से पाठयति, गम् से गमयति, वद् से वादयति इत्यादि।

१५–धातु के अर्थ में कर्त्ता की इच्छा प्रकाश करने के लिये सन् प्रत्यय लगाया जाता है और इस प्रत्यय के लगने पर वह सन्नन्त धातु कहलाती है। धातु के उत्तर स [सन्] प्रत्यय लगाने से धातु के रूप में अवश्य हेरफेर होता है। जैसे –पा [पीना] से पिपासति, पिपासतु, पिपासेत् इत्यादि रूप बनते हैं और ज्ञा से जिज्ञासति, जिज्ञासतु आदि रूप बनते हैं। *पिपासति = वह पीना चाहता है, जिज्ञासति = वह जानना चाहता है, चिकीर्षति = वह करना चाहता है।*

गया, रुच् से रुरुचान = रोचता गया, युध् से युयुधान = युद्ध करता गया, इत्यादि रूप बनते हैं। इसी प्रकार भावी कर्म जतलाने को परस्मैपद में शतृ और आत्मनेपद में स्यमान प्रत्यय लगता है।

१७–तव्य, अनीय और यत् प्रत्ययों से बने हुए शब्द इस कोष में बहुतायत से आये हैं। जैसे दा + तव्य = दातव्य, दा + अनीय = दानीय, दा + यत् = देय; चिन्त् + तव्य = चिन्तयितव्य, चिन्त् + अनीय = चिन्तनीय और चिन्त् + यत् = चिन्त्य आदि। ये तीनों प्रत्यय एक ही अर्थ में अर्थात् औचित्य दिखलाने में प्रयुक्त होते हैं। जैसे —दातव्य = देने योग्य।

१८–क्तवत् और क्त प्रत्यय भी बहुत प्रयुक्त होते हैं। ये दोनों भूतक्रिया का द्योतन कराते हैं। जैसे ज्ञा से ज्ञातवत् = जानता गया, गम् से गतवत् = जाता गया। क्त प्रत्यय लगने पर ज्ञा से ज्ञात, गम् से गत उसी अर्थ में रूप बनते हैं।

१९–धातुओं से उत्तर स्त्रीलिंग में भाववाचक शब्द बनाने के लिये क्ति प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे ख्या से ख्याति = प्रसिद्धि, स्था से स्थिति = हालत, मुच् से मुक्ति = छुटकारा। तृच्, ण्वुल्, णिनि प्रत्यय कर्त्ता को जतलाने के लिये लगाये जाते हैं। जैसे –दा से दातृ = देने वाला, नी से नायक = ले जाने वाला। घञ् अल् प्रत्यय प्रायः पुल्लिंग संज्ञा बनाने में लगाये जाते हैं। जैसे –पच् से पाक = पकाने का काम, पठ् से पाठ = पढ़ने का काम, जि से जय = जीतना इत्यादि। ल्युट् प्रत्यय नपुंसकलिङ्ग की संज्ञा बनाने के काम में आता है। जैसे –गम् से गमन = जाना, भुज् से भोजन = खाना।

२०–संज्ञाशब्द या किसी २ अव्यय शब्द के उत्तर अण्, ष्यञ्, फायनञ्, ढिण्, ठञ्; कन्, तल्, त्व, वतिच्, मतुप्, वतुप्, इनि, विनि, इत् इत्यादि प्रत्यय अपत्य अधिकार, योग्यता, भाव इत्यादि अर्थ बतलाने के लिये लगाये जाते हैं, जिन को तद्धित कहते हैं। तद्धित प्रत्यय लगने में प्रकृति के स्वरूप में बहुधा हेरफेर होता है। तद्धितप्रत्ययान्त शब्द कोई २ तो संज्ञा, कोई विशेषण और कोई कोई अव्यय होते हैं। अण्, ष्यञ्, फेयण् इत्यादि प्रत्यय उत्पत्ति वा अपत्य अर्थ में आते हैं। जैसे –कुशिकस्य अपत्य कौशिक, दशरथस्य अपत्य दाशरथि। कन् प्रत्यय स्वार्थ और अल्पार्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे बाल से बालक, वृक्ष से वृक्षक। तल और त्व प्रत्यय भाववाचक संज्ञा बनाने में लगते हैं जैसे –गुरु से गुरुता, गुरुत्वम्। तल लगने से सर्वदा स्त्रीलिंग और त्व लगने से सर्वदा नपुंसकलिंग शब्द बनते हैं। वतिच् के लगाने से अव्यय बनते हैं जैसे –गुरुवत् = गुरु के समान। मतुप्, वतुप्, 'वाला' अर्थ में आते हैं, मतिमत् = बुद्धिवाला, ज्ञानवत् = ज्ञानवाला। इन् प्रत्यय अकारान्त या आकारान्त ऐसी संज्ञाओं के पश्चात् लगाया जाता है, जिनमें एक से अधिक स्वर हो। जैसे –ज्ञान से ज्ञानिन् = ज्ञान वाला। ईयस् और इष्ठ प्रत्यय उत्कर्ष दिखलाने के लिये प्रयुक्त होते हैं। जैसे –गरीयस्, गरिष्ठ = अधिक भारी। चित् और चन प्रत्यय किम् के पश्चात् अनिश्चितता दिखाने के लिये लगते हैं जैसे –किंचित्, किंचन, कश्चित्, कश्चन इत्यादि।

२१–संक्षिप्तता के लिये संस्कृत में समास का प्रयोग होता है। अनेक पदों की विभक्तियों का लोप करके एक पद बनाने को समास कहते हैं। समास से सिद्ध शब्द कोई तो विशेषण, कोई संज्ञा और कोई अव्यय होते हैं। समास करने में समास के घटकपदों के स्वरूप में कहीं २ हेरफेर होता है और कहीं २ अन्त में क क इत्यादि प्रत्यय भी लगते हैं। समास छः प्रकार का होता है। यथा –तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि, द्वन्द्व और अव्ययीभाव। समास में कहीं २ पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता उसे अलुक्समास कहते हैं। जैसे वनेचर, युधिष्ठिर।

तत्पुरुष–जिस समास में प्रथमा और सम्बोधन को छोड़ कर अन्य कोई विभक्ति पूर्वपद के अन्त में रहे, उस का नाम तत्पुरुष समास है। तत्पुरुष का लिङ्ग उत्तरपद के अनुसार होता है। जैसे–दुःखम् अतीत = दुःखातीत, राज्ञः पुरुषः = राजपुरुष।

कर्मधारय–विशेषण और विशेष्य के समास को कर्मधारय कहते हैं। जैसे नीलम्–उत्पलम् = नीलोत्पलम्।

द्विगु–जब संख्यावाचक विशेषण के साथ विशेष्य का समास हो और उसका प्रयोग स्त्रीलिङ्ग या नपुंसकलिङ्ग के एकवचन में हो, तब उसका नाम द्विगु होता है। जैसे त्रयाणाम् लोकानाम् समाहारः = त्रिलोकी। सप्तानां शतानां समाहारः = सप्तशती।

द्वन्द्व–जिस समास में प्रत्येक पद का अन्वय किसी एक क्रिया से हो उसे द्वन्द्व कहते हैं। इतरेतरद्वन्द्व और समाहारद्वन्द्व नाम से द्वन्द्व समास दो प्रकार का होता है। समाहारद्वन्द्व सदा नपुंसकलिङ्ग एकवचनान्त होता है और इतरेतरद्वन्द्व का लिङ्ग उत्तरपद के लिङ्ग के समान होता है। समाहारद्वन्द्व जैसे:–करश्च चरणं च = करचरणम्। मथुरा च पाटलिपुत्रं च = मथुरापाटलिपुत्रम्। इतरेतरद्वन्द्व जैसे:–रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ, माता च पिता च मातापितरौ। एकशेष द्वन्द्वसमास में दो पद में से केवल एक पद रह जाता है। जैसे–माता च पिता च = पितरौ। यह समास इतरेतरद्वन्द्व के ही अन्तर्गत है।

बहुव्रीहि–इस में समासित पदों की विशेषता नष्ट हो कर किसी भिन्न पुरुष वा द्रव्य का द्योतक पद बन जाता है। जैसे–दीर्घौ बाहू यस्य स दीर्घबाहुः [पुरुषः]। इस समास से बने हुए शब्द विशेषण होते हैं।

अव्ययीभाव–इस समास में पूर्वपद अव्यय होता है और उस द्वारा सामीप्य, वीप्सा, अनतिक्रम, अभाव, पर्यन्त इत्यादि बातों की द्योतना होती है। जैसे कूलस्य समीपे = उपकूलम्।

यहां संस्कृतव्याकरण का दिग्दर्शनमात्र केवल इसी अभिप्राय से दिया गया है कि जिससे इस कोष में आये हुए शब्दों के समझने में पाठकों को सुगमता हो; परन्तु संस्कृत भाषा के समझने के लिये संस्कृत व्याकरण का सम्यग्ज्ञान बड़ा आवश्यक है। इसलिये पाठकों से हमारा अनुरोध है कि संस्कृत का साधारण ज्ञान प्राप्त करने के लिये भास्करप्रेस मेरठ से प्रकाशित होने वाले "संस्कृतशिक्षक" नामक व्याकरणग्रन्थ का अवश्य अवलोकन करें।

इस ग्रन्थ के सम्पादन, मुद्रण और प्रकाशन में हम से अनेक त्रुटियां रह गई हैं, जिन को यथाशक्ति दूर करना हमारा कर्त्तव्य है। इसलिये पाठकों से सानुनय निवेदन है कि जो अशुद्धि भी उन्हें प्रतीत हो, उसके लिये वे हमें क्षमाप्रदान करते हुए लिख भेजें, जिस से अगले संस्करण में उन का संशोधन कर दिया जाय। अन्त में परमात्मा को धन्यवाद देते हुए और अपने पाठकों की ज्ञानवृद्धि की प्रार्थना करते हुए इस प्रस्तावना को समाप्त करते हैं। ओं शम्।

मेरठ
तिथि १ आ० १९७१

विनीत
लेखक और प्रकाशक

ओ३म्

संस्कृत-हिन्दी-कोष

अ

अ–देवनागरी और संस्कृत वर्णमाला का प्रथम अक्षर।

अ (पु०)–विष्णु का नाम। परमात्मा के सर्वोत्तम नाम 'ओम्' का पहिला अक्षर। शिव, ब्रह्मा, वायु वा वैश्वानर का नाम है। निषेधार्थ उपसर्ग (जिस शब्द के आदि में आता है उस का विपरीतार्थ होजाता है और जब 'अ' से परे शब्द का प्रथम अक्षर स्वर होता है तो 'अ' के स्थान में 'अन्' आदेश हो जाता है) जैसे अ+सत्य=असत्य, अ (अन्)+अर्थ=अनर्थ।

अऋण(वि०)–बिना क़र्ज़ का, ऋणमुक्त

अऋणिन् (वि०)–अ+ऋण+णिनि=अऋणी–जिस पर ऋण (क़र्ज़) न हो [इसका दूसरा रूप अनृणिन् भी बनता है]

अंश् (धा० उ०)–विभाग करना।

अंश (पु०) अंश्+अच्–भाग, हिस्सा, टुकड़ा, राशि का तीसवां हिस्सा, भिन्न की लकीर के ऊपर की संख्या। अंशसुता–यमुना नदी।

अंशक (पु०)–स्त्री० अंशिका–भाग, दिन, हिस्सेदार, रिश्तेदार।

अंशल(वि०) अंश्+लच्–बलशाली।

अंशिन् (वि०) अंश्+णिनि=अंशी–हिस्सेदार, शरीक।

अंशु (पु०) अंश्+कु–किरण, प्रभा।

अंशुक (नपु०)–वस्त्र, बारीक कपड़ा, रेशमी वस्त्र, दुपट्टा।

अंशुधर (पु०)–अंशु+धृ+अच्–किरणों को धारण करने वाला अर्थात् सूर्य।

अंशुपट्ट (नपु०)–एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। [धारस्वामी, सूर्य।

अंशुपति-भृत-स्वामी (पु०)–किरणों

अंशुमाला(स्त्री०)-किरणों का समूह।
अंशुमालिन् (पु०)-अंशु+माला+णिनि=अंशुमाली-सूर्य।
अंशुमत्(वि०)-प्रभायुक्त।
अंशुमान् (पु०)-सूर्य। कभी २ चन्द्रमा का भी बोधक होता है, सूर्यवंशीय राजा सगर का पौत्र और असमंजस का पुत्र, दिलीप का पिता।
अंशुमती (स्त्री०)-शालपर्णी वृक्ष का नाम, यमुना नदी का नाम।
अंशुमत्फला (स्त्री०)-केले का वृक्ष
अंशुल (वि०)-प्रभायुक्त। (पु०) चाणक्य मुनि का नाम।
अंस् (चा०प०अंसयति, अंसापयति)-अंश का बोधक। [कन्धा
अंस (पु०)-अंस्+अच्-भाग,टुकड़ा,
अंसकूट (पु०)-सांड के कन्धों के बीच का ऊपर उठा हुआ भाग, डुह्ह
अंसल(वि०)-बलवान्, प्रभावाला, दृढ़ कन्धों वाला।
अंह् (भा०आ०)-जाना,पास आना, चमकना।
अंहति, ती (स्त्री०)-दान, त्याग, रोग,चिन्ता [दूसरा रूप अंहिती]
अंहस् (नपु०) अंह्+असि-पाप, दुःख, बाधा। [मूल
अंह्रि(पु०)-अंह्+क्रिन्-पाद,वृक्ष का
अंह्रिप(पु०)-पादप, वृक्ष।
अक् (भा० प० अकति)-जाना, सांप के समान गति करना।

अक (नपु०)-पाप, दुःख, सुख का अभाव। [ग्रह का नाम।
अकच(वि०)-गंजा। (पु०)-केतु
अकथ (वि०)-अकथनीय, अकथ्य-जो कहा न जासके। अकथित-जो न कहा गया हो।
अकन्या (स्त्री०)-जो कन्या अर्थात अविवाहिता न हो।
अकम्पन (वि०)-नहीं हिलता हुआ। पु०-एक राक्षस का नाम।
अकम्पित (वि०)-न हिला हुआ, मजबूत, दृढ़।पु०-एक जैन साधु।
अकर (वि०)-जिस के हाथ न हो, जो कर (महसूल) से रहित हो। काम न करने वाला।
अकरा (स्त्री०)- विना हाथ की स्त्री, आंवले का वृक्ष।
अकरण (नपु०)-क्रिया का अभाव। (वि०) असली,जो बनावटी न हो।
अकरणि (स्त्री०)-असफलता, नाकामयाबी, निराशा।
अकरणीय(वि०)-जो न करने योग्य हो, करने के अयोग्य।
अकर्ण (वि०)-कर्ण [कान]रहित, बहरा। (पु०)-सांप।
अकर्ण्य (वि०)-कानों के अयोग्य, जो कानों में न हो।
अकर्त्तन (वि०)-न काटता हुआ।
अकर्तृ (अकर्ता पु०)-जो कर्ता न हो, कर्म का न करने वाला।-क, वि०-विना कर्ता का।
अकर्तृत्वं, ता- कर्तापन का अभाव।

अकर्त्तव्य(वि०)–न करने योग्य,अनुचित
अकर्म (वि०)–कार्यरहित, सुस्त, अयोग्य, दुष्ट, गिरा हुआ।
अकर्मक–क्रिया के दो भेदों में से एक।
अकर्मण्य–काम न करने वाला, निकम्मा
अकर्मा (पु०)–बेकाम, कार्य के लिये अनुपयुक्त, सुस्त।
अकर्मिणी(स्त्री०)–अपराधिनी,कर्म न करने वाली, दुष्कर्मा।
अकल (वि०)–कलारहित, परमात्मा का एक विशेषण।
अकल्क(वि०)–कल्क[मिट्टी,चूर्ण]रहित, शुद्ध, पापरहित। [रहित
अकल्का (स्त्री०)--चांदनी, पाखण्ड से
अकल्कता (स्त्री०)–ईमानदारी।
अकल्कन (वि०)--गर्वरहित, लज्जा-युक्त, ईमानदार, सुजन।
अकल्पित (वि०)--जो कल्पित [बनावटी] न हो, असली, सच्चा, प्रकृत। [कार।
अकल्मष (वि०)--पापरहित, निर्वि-
अकल्य (वि०)--रोगी, अस्वस्थ।
अकल्याण (वि०)-भाग्यहीन, हतभाग्य। नपु०--दुर्भाग्य।
अकथ्य (वि०)--अवर्णनीय, जिस का वर्णन न होसके। [स्त्री० अकथ्या]
अकस्मात् (अ०)--अचानक, एक बारगी, यकायक।
अकाण्ड(वि०)–कांड[शाखा]रहित, आकस्मिक, अवसर बिना।
अकाण्डजात (वि०)–अकस्मात उत्पन्न हुआ।

अकाण्डपात(पु०)–आकस्मिक घटना
अकाण्डे(अ०)–अकस्मात,अचानक।
अकाम (वि०)--काम [इच्छा] रहित, निःस्पृह, कामनारहित [स्त्री० अकामा]
अकामिन् (पु०)–अकामी [स्त्री० अकामिनी]–काम रहित,निःस्वार्थ
अकामतः (अ०)–बिना इच्छा,बिना इरादे के, प्रेरणारहित होकर।
अकामना (स्त्री०)–काम [इच्छा] का अभाव, निःस्पृहता।
अकाय (वि०)– काया [शरीर] रहित, देहहीन, अशरीर। पु०--राहु। ['अ' अक्षर।
अकार (वि०)–क्रियारहित। पु०-
अकारण (वि०)–कारणरहित, हेतुहीन, बिना वजह का, मूल-रहित। नपु०–कारण या हेतु का अभाव। क्रि० वि०–बिना वजह के।
अकार्य (वि०)–नामुनासिब, अनु-चित, न करने योग्य। नपु०–अनु-चित वा बुरा काम। पु०–कार्य का अभाव।
अकार्यकारिन् (पु० अकार्यकारी स्त्री० अकार्यकारिणी)–बुरा काम करने वाला या वाली।
अकाल (वि०) [नास्ति उचितः कालोयस्य]–असमय, जिस का उचित काल उपस्थित न हुआ हो, जो काला न हो अर्थात् सफ़ेद हो। पु०--बुरासमय, अनुपयुक्त समय, दुर्भिक्ष।

अकालज (वि०)–अनुचित काल में उत्पन्न हुआ। [अर्थात्परमात्मा
अकालमूर्ति (पु०)–अविनाशी पुरुष
अकालमृत्यु (स्त्री०)–बेसमय की मृत्यु, थोड़ी अवस्था का मरना, अनायास मृत्यु । [बैमौके का।
अकालिक (वि०)–बिना समय का,
अकिञ्चन (वि०)–जिस के पास कुछ भी न हो; नितान्त निर्धन, मुहताज । पु०–धनहीन मनुष्य । नपुं०-जिसका कुछ भी मूल्य न हो।
अकिंचनता (स्त्री०)–प्रत्येक वस्तु का त्याग, इच्छाकृत धनहीनता।
अकिंचित्कर (वि०) न+किंचित् +कृ+अप्–काम न करने वाला, निरर्थक, निरुद्योगी ।
अकिल्बिष (वि०)–निष्पाप, पवित्र। पु०–पापरहित मनुष्य।
अकीर्ति (स्त्री०)–कीर्ति [यश] का न होना, अपयश,बदनामी, अपमान
अकीर्तिकर (वि०)–अपमानजनक, बदनाम करने वाला ।
अकुंठ (वि०)–जो कुंठित न हो,तेज, काम करने योग्य, न रुकने वाला
अकुंठित (वि०)–अकुंठ, तीव्र।
अकुटिल (वि०)–जो कुटिल या टेढ़ा न हो, सीधा, निष्कपट, साफ़ दिल का ।-ता–सादगी।
अकुतः (अ०)–कहीं से भी नहीं ।
अकुतोभय (वि०)–न डरने वाला।
अकुप्य (नपुं०)–सोना या चांदी।
अकुल (वि०)–कुलरहित, नीच, परिवारहीन।पु०-शिवकानाम।

अकुला (स्त्री०)–शिव की स्त्री पार्वती ।
अकुलीन (वि०)–नीच कुल का ।
अकुशल (वि०)–जो चतुर न हो, मूर्ख, हतभाग्य । नपुं०–बुराई ।
अकूपार (वि०)–असीम, वार पार रहित । पुं०–समुद्र, सूर्य, कच्छप।
अकृच्छ्र (वि०)–क्लेशशून्य । नपुं०–क्लेश का अभाव ।
अकृत (वि०)–न किया हुआ, अन्यथा किया हुआ । नपुं०–असम्पादित कार्य, कार्य का असम्पादन ।
अकृतात्मा (वि०)–मूर्ख, बेवकूफ़।
अकृतोद्वाह (वि०)–बिन विवाहा।
अकृतज्ञ (वि०)– किये हुए उपकार को न मानने वाला ।
अकृतिन् (पु० अकृती स्त्री० अकृतिनी)–निकम्मा, काम न करने योग्य; अकुशल । [नपुं०–पाप।
अकृत्य (वि०)–न करने योग्य,
अकृत्रिम (वि०)–असली, बिना बनावटी, स्वाभाविक ।
अकृपा (स्त्री०)–कृपा (दया) का अभाव, नाराज़ी, क्रोध ।
अकेतु (वि०)–अज्ञात, आकाररहित, ध्वजाहीन ।
अकेश (वि०)–बिना बाल का, गञ्जा।
अकैतव (पु०)–कपट का अभाव, निष्कपटता ।
अक्का (स्त्री०) अक्+कन्–माता।

अक्रम (वि०)–बिना क्रम, बेसिलसिला, गड़बड़ । पु०–क्रम का अभाव, गड़बड़, बेतरतीबी, गति का अभाव।

अक्रान्त (वि०)–जिसका उल्लंघन न हुआ हो, अजित ।

अक्रिय (वि०)–क्रियाहीन, सुस्त, चेष्टारहित, परमात्मा का विशेषण, निकम्मा ।

अक्रिया(स्त्री०)–कर्त्तव्यहीनता, सुस्ती

अक्रूर (वि०)–जो क्रूर (निर्दय) न हो, कोमल । पु०–कृष्ण के एक चचा का नाम ।

अक्रोध (वि०)–क्रोध से मुक्त । पु०–क्रोध का अभाव ।

अक्लिष्ट (वि०)–बिना क्लेश का, आसान, सीधा । –

अक्ष् (धा० प० अक्षति, अक्ष्णोति)–पहुंचना, बढ़ना ।

अक्ष (पु०)–पासा खेलने का, धुरा गाड़ी का, रावण का एक पुत्र, बहेड़ा नाम औषधि ।

अक्षत (वि०) अ+क्षण्+क्त–बिना टूटा, जिस में घाव न हो । नपु० चावल, जौ ।

अक्षतयोनि (स्त्री०)–जिस का पति के साथ समागम न हुआ हो ।

अक्षतवीर्य (पु०)--ब्रह्मचारी ।

अक्षदर्शक (पु०)–न्यायाधीश,जुआरी

अक्षदेविन् (वि०)–जुआ खेलने वाला

अक्षपाद (पु०)–पदार्थवादी, गौतम ऋषि ।

अक्षम (वि०)–अ+क्षम्+अच्–असमर्थ, लाचार। अक्षमा (स्त्री०)–क्षमा का न होना, न सहारना ।

अक्षमाला (स्त्री०)--रुद्राक्ष की माला, अरुन्धती का नाम ।

अक्षय (वि०)–जिसका क्षय [नाश] न हो, सदा रहनेवाला ।

अक्षर (वि०)–जो क्षर [नाश] न हो, अविनाशी, परमात्मा और आत्मा का विशेषण । पु०–अकारादि वर्ण, पानी, आकाश, मोक्ष

अक्षरी (स्त्री०)–वर्षाकाल,बरसात।

अक्षरचण (नपु०)–लिखने वाला, नकल करनेवाला ।

अक्षरशः (क्रि० वि०)–अक्षर अक्षर, लफ़ज़बलफ़ज़,बिलकुल,ज्योंकात्यों

अक्षशौण्ड (पु०)–पक्का जुआरी ।

अक्षान्ति (स्त्री०)-- द्वेष, ईर्ष्या, असहन, क्रोध, हसद । [न हो ।

अक्षार(वि०)–बनावटी नमक जिसमें

अक्षि(नपु०) अक्ष्+क्सि–आंख, नेत्र ।

अक्षिगत (वि०)--शत्रु, बैरी ।

अक्षिगोलक (पु०)–आंख का टेढ़न।

अक्षित (वि०)–बिना सड़ा हुआ, हमेशा रहने वाला। नपु०–पानी।

अक्षिति (वि०)–नाशरहित ।

अक्षीव (पु०)–जो मतवाला न हो, शान्त । [समुद्र ।

अक्षुण्ण (वि०)--नहीं टूटा हुआ,

अक्षुद्र (वि०)--जो छोटा न हो ।

अक्षोट (पु०)–अखरोट, अक्षोड ।

अक्षोभ (वि०)--क्षोभरहित, गम्भीर पु०--क्षोभ का अभाव।
अक्षौहिणी (स्त्री०)-अक्ष+ऊहि+णिनि--सेना का एक बड़ा भाग जिसमें १०९३५० पैदल ६५६१० घोड़े २१८७० रथ और २१८७० हाथी होते हैं।
अखण्ड (वि०)-न टूटा हुआ, अखण्ड। नपु०--काल, समय।
अखण्ड (वि०)--सम्पूर्ण, खंडरहित
अखंडनीय (वि०)--जिस का खण्डन न किया जा सके, अखण्ड्य।
अखण्डित (वि०)--जिसके खंड न हुए हों, अविच्छिन्न, अविभक्त, समूचा, पूरा, शामिल।
अखात (पु० नपु०)-स्वाभाविक जलाशय, खाड़ी, झील।
अखाद्य(वि०)न+खाद्+ण्यत्-खाने के अयोग्य, अभक्ष्य, न खाने योग्य।
अखिन्न(वि०)-जो थका हुआ न हो।
अखिल (वि०)-सम्पूर्ण, सारा।
अख्याति (स्त्री०)--अपयश, बदनामी
अग् (धा० प०)-चक्कर लगाकर चलना। [वृक्ष, पर्वत, रवि।
अग (वि०)-न चलने वाला। पु०-
अगणनीय (वि०) अ+गण्+अनीयर्--बहुत, लातादाद, गणना करने के अयोग्य अर्थात् तुच्छ।
अगणित (वि०)-नहीं गिना हुआ, बेशुमार, बहुत।
अगति (स्त्री०) न+गम्+क्तिन्-जिस की गति न हो, उपायरहित
अगद (वि०)-गद [रोग] रहित, तन्दुरुस्त, स्वस्थ। पु०-औषध
अगदङ्कार (पु०)-वैद्य, हकीम।
अगम (वि०)-अग का पर्यायवाची
अगम्य (वि०)-न जानने के योग्य, जहां कोई जा न सके, दुर्गम।
अगम्या (स्त्री०)-ऐसी स्त्री जिसके साथ संग करना उचित नहीं।
अगम्यागमन (नपु०)-अनुचितसंसर्ग
अगस्ति (पु०) अग+अस्+ति--अगस्त्य मुनि का नाम। स्त्री-दक्षिण दिशा, अगस्त्य की वंशजा।
अगस्त्य (पु०)--अगस्त्य ऋषि का नाम, शिव का नाम। [गहरा।
अगाध(वि०) न+गाध्+घञ्--बहुत
अगार (नपु०)--घर, निवासस्थान।
अगिर (पु०)-स्वर्ग, सूर्य, एक राक्षस।
अगुण (वि०)--गुणरहित, निकम्मा। पु०- दोष, ऐब, बुराई।
अगुरु (वि०)-हलका, जो भारी न हो, गुरुरहित। न०शीशों का पेड़।
अगूढ़ (वि०)--प्रत्यक्ष, न छिपा हुआ।
अगृह, अगेह (वि०)--गृहविहीन वानप्रस्थी, फ़कीर।
अगोचर (वि०)--इन्द्रियों द्वारा अगम्य, अप्रत्यक्ष। [नामक देवता।
अग्नि (पु०)--आग, आंच, तेज, अग्नि
अग्निक (पु०)--अग्नि+कै+क--बीरबहूटी नाम का कीड़ा, तीज।
अग्निकर्म-कार्य (पु०)--अग्निहोत्र, होमसाधन। [नाम।
अग्निकुमार (पु०)--कार्तिकेय का

अग्निकेतु (पु०)--धूम, शिव का एक नाम, रावण की सेना का एक राक्षस ।
अग्निकोण (पु०)--पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना [दाग देना ।
अग्निक्रिया (स्त्री०)--अन्त्येष्टिकर्म,
अग्निक्रीडा (स्त्री०)--आतिशबाजी
अग्निगर्भ (पु०)--सूर्यकान्तमणि, आतसी शीशा ।
अग्निचित् (पु०)-अग्निहोत्री ।
अग्निज (पु०)-अग्नि से उत्पन्न हुआ द्रव्य, सोना ।
अग्निजिह्व (वि०)-देवता ।
अग्निज्वाला (स्त्री०)--आग का शोला, अग्निशिखा, आंच की लपट ।
अग्निप्रस्तर (पु०)--चकमक पत्थर ।
अग्निवाहु (पु०)--धुआं, धूम ।
अग्निमुख (पु०)--देवता, ब्राह्मण ।
अग्निवित् (पु०)--अग्निहोत्री ।
अग्निष्टोम (पु०)--एक यज्ञ का नाम
अग्निसात् (वि०)--आग में जलाया हुआ ।
अग्निष्वात्त (पु०)--अग्नि, विद्युत आदि विद्याओं का जाननेवाला ।
अग्निहोत्र (पु०)-वेदोक्त मंत्रों से अग्नि में आहुति देने की क्रिया ।
अग्न्यस्त्र (पु०)--वह अस्त्र जिससे आग उत्पन्न हो ।
अग्न्याधान (पु०)--अग्नि का विधिपूर्वक स्थापन ।
अग्न्याहित (पु०)--अग्निहोत्री ।
अग्न्याशय (पु०)--जठराग्नि का स्थान, पक्वाशय ।
अग्मन् (नपु० --युद्ध, लड़ाई ।
अग्र (वि०)--पहिला, सब से आगे का, सरदार, सर्वोत्तम । नपु०--ऊपर का भाग, नोक ।
अग्रगण्य (वि०) अग्र+गण्+यत्-आगे गिना जाने योग्य, प्रधान ।
अग्रगामिन् (पु० अग्रगामी स्त्री० अग्रगामिनी)--अग्रिम, आगे जाने वाला, अगुआ ।
अग्रजन्मन्(पु०)--बड़ा भाई, ब्राह्मण । वि०--पहिले उत्पन्न हुआ ।
अग्रजाति (पु०)--ब्राह्मण ।
अग्रणी (वि०)--अग्र+नी+क्विप्--स्वामी, श्रेष्ठ । पु०--मुखिया, प्रधानपुरुष ।
अग्रतः (अ०)--आगे तक ।
अग्रतःसर (वि०)--आगे जाने वाला ।
अग्रदानी (पु०)--अचारज, मृतक का दान लेने वाला ।
अग्रभाग (पु०)--अगलाहिस्सा, सिरा
अग्रमुख(नपु०)--मुख का अगला भाग
अग्रयान (पु०)--आगे जानेवाली सेना
अग्रवर्ती (पु०)--आगे रहनेवाला ।
अग्रसोची (पु०)--दूरदर्शी, पहिले सोचने वाला । [सन्ध्या ।
अग्रसन्ध्या (स्त्री०)--प्रातःकाल की
अग्रसर(वि०)--अग्र+सृ+ट-आगे जाने वाला । [रहित संन्यासी आदि ।
अग्रह (पु०)--स्त्री का न होना, स्त्री

अग्रहायण (अस्त्री०)--वर्ष का पहिला मास, मार्गशीर्ष मास।

अग्रहार (पु०)--राज्य की ओर से ब्राह्मण या ब्रह्मचारी को भूमि का दान।

अग्राह्य (वि०)--न लेने योग्य,त्याज्य

अग्रिम (वि०)--अगाऊ, पेशगी,श्रेष्ठ, उत्तम। पु०-बड़ा भाई।

अग्रिय [अग्रीय]पु०-- बड़ा भाई (वि०)--श्रेष्ठ, उत्तम।

अग्रु--ग्रू (स्त्री०)--एक नदी, अविवाहिता, एकाकिनी।

अग्रे (अ०)--सामने, आगे [काल या स्थान की अपेक्षा से]

अग्रेदिधिषु (पु०)--विधवा के साथ विवाह करने वाला। स्त्री०दिधिषू--बड़ी कन्या से पूर्व विवाही हुई छोटी कन्या।

अग्रेभव(पु०)--अग्रिमका पर्यायवाची

अघ (नपु०)-अघ्+अच्--पाप, व्यसन, दुःख। वि०--बुरा, पापी, क्रूर।

अघटित (वि०)--जो घटित [वाक्य] न हुआ हो।

अघवान् (पु०)--पापयुक्त, पापी।

अघमर्षण (वि०)--पापनाशक, पापों को दूर करने के लिये जपने योग्य मंत्र। [पापयुक्त।

अघाप (वि०)--द्वेषपूर्ण, क्रूर,हानिकर, अघारी (वि०)-व्यसनयुक्त।

अघर्म (वि०)--जो गर्म न हो, ठंढा।

अघासुर (पु०)--एक राक्षस का नाम

अघोर (वि०)-प्रियदर्शन, सुहावना। पु०--शिव और दुर्गा का पुजारी

अघोरपथ (वि०)-शिव का अनुयायी।

अघोष (वि०-शब्दरहित, नीरव, ग्वाल या अहीरों से रहित।

अघोस् (अ०)--जो शब्द दूर से पुकारने के समय नाम से पूर्व लगाया जाता है।

अघ्न्य (वि०)-न+हन्+यत्-न मारने योग्य। पु०--ब्रह्मा, बैल। स्त्री० अघ्न्या--गाय, गौ। [शराब।

अघ्रेय (वि०)--न सूंघने योग्य। नपु०

अंक् (धा० आ०)--टेढी गति करना। (उ०प०) अंकित करना, चिन्हित करना।

अंक (पु०) अंक्+अच्-चिन्ह, संख्या, नाटक का एक भाग,कोई तिरछा अस्त्र, झूंठी लड़ाई, स्थान,पाप, रेखा, शरीर, पर्वत।

अंकक (पु०)--चिन्ह करने वाला।

अंकगणित(पु०)--गिनती का हिसाब, अर्थमैटिक, अंकविद्या।

अंकन (नपु०) अंक्+ल्युट्--चिन्ह, निशान, प्रेम का निशान, चिन्ह करने का काम, मोहर।

अंकपरिवर्तन (पु०)--करवट लेना, करवट बदलना।

अंकपालि-ली-- (स्त्री०)--गोद का स्थान, कौली भरना, धाय, चवनासा।

अंकति-ती (पु०)-आंधी, आग, ब्रह्मा। स्त्री०आगियाडी,आती हुई।

अंकस्(नपु०)–निशान, देह।
अंकित(वि०) चित्रित, चिन्हित, गिना हुआ, निशान किया हुआ।
अंकुट(पु०)–कुंजी।
अंकुर-कूर(पु०नपु०)–अंकुआ, नवोद्भिद्, बीज से जो नया उत्पन्न हो, कल्ला, बाल, जल, खून।
अंकुरक(पु०)–घोंसला, पक्षियोंका घर
अंकुरित(वि०)–उगा हुआ, जिसमें अंकुर निकल आये हों।
अंकुश-कूप(पु०)–एक प्रकार का छोटा शस्त्र जो हाथी के चलाने में काम आता है, अंकस।
अंकुशग्रह(पु०)–हाथीवान्, फीलवान्, हाथी का हांकने वाला महावत।
अंकुशदुर्धर(पु०)–दुर्दान्त हाथी, मस्त हाथी।
अंकुशधारी(पु०)–हाथीवान्। [हुआ
अंकुशित(वि०)–अंकुश से चलाया
अंकोट-ठ-ल(पु०)–आकोडनामक वृक्ष
अंकोलिका(स्त्री०)–आलिङ्गन, गले लगाना। यह शब्द अंकपालिका का अपभ्रंश प्रतीत होता है।
अंक्य(पु०)अक्+यत्–अंकित करने योग्य, मृदङ्ग तबला आदि का भी नाम है। [रोके रखना।
अख्(धातु प०)–रेंगना, चिपटना,
अग्(धा०प०)–चलना, जाना।
अंग-अग्+अच्–शरीरका अवयव, भाग अंश, एक देश, लग्न, उः, मन।
अंगाः(पु०)–एक देश का नाम (उस देश के निवासी), वर्तमान भागलपुरके समीपवर्त्ती देशका नामहै
अंगग्रह(पु०)–देह की पीड़ा, शारीरिक कष्ट या रोग।
अंगज–जात(वि०)–अंग में उत्पन्न हुआ, देह से पैदा, सुन्दर। (पु०)पुत्र, केश, प्रेम, कामदेव, रोग (नपु०) रक्त, रुधिर।
अंगजा(स्त्री०)–पुत्री, आत्मजा।
अंगण-न(न०)–आंगन, घरका सहन।
अंगति(पु०)–सवारी, अग्नि, अग्निहोत्री।
अंगत्राण(पु०)–शरीर को ढकने वाला अंगरखा, पहिरने का वस्त्र।
अंगद(पु०)–बांह के ऊपर पहिरने का एक आभूषण जिसे बाजूबन्द कहते हैं। किष्किन्धाधिपति वाली के पुत्र का नाम, लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम।–दा स्त्री०–दक्षिण की हथिनी। [युद्ध से पलायन।
अंगदान(पु०)–युद्ध में पीठ दिखलाना,
अंगदीया(स्त्री०)–कारूपथ नामक देश की राजधानी जिसका राजा लक्ष्मण का पुत्र अंगद था।
अंगद्वार(पु०)–मुख, नासिका आदि शरीर की कर्मेन्द्रिय।
अंगना(स्त्री०)अच्छे अंगों वाली स्त्री, कोई स्त्री, उत्तर दिशा में पाई जाने वाली हथिनी।
अंगन्यास(पु०)–विशेष मंत्रों के पाठ के साथ शरीरके अंगों को छूना।
अंगनाप्रिय(पु०)–अशोक का वृक्ष।

(वि०)-जो स्त्रियों को प्रिय हो, स्त्रियों का प्रेमपात्र।
अंगपाली(पु०)-आलिङ्गन।
अंगपालिका(पु०)-दाई, उपमाता, अंग पालन करने वाली।
अंगपाक(पु०)-अंग पकने का रोग।
अंगप्रोञ्छण(पु०)-अंग पोंछना, अंगोछे से शरीर साफ करना।
अंगभंग(पु०)-शरीर के अवयव का टूटजाना, किसी अंग का नाश।
अंगभंगी(पु०)-स्त्रियों का कटाक्ष, चेष्टा। [का संचालन।
अंगभाव(पु०)-गाते समय अंगों
अंगभूत(वि०)-अंगसे उत्पन्न,अन्तर्गत
अंगमर्द(पु०)-हड्डियों का फूटना, हड्फूटन। [दबाना।
अंगमर्दन(पु०)-अंगोंकी मालिश,शरीर
अंगमर्दिन्(पु०)-मुट्ठीभरनेवालानौकर
अंगरक्षणी(स्त्री०)-अंग+रक्ष+ल्युट्+ङीप्-अंगरखा। वि० अंगरक्षक
अंगरक्षा(पु०)-शरीर की रक्षा, देह का बचाव। [का लेप।
अंगराग(पु०)-केसर, चन्दन, अंग
अंगराज(पु०)-अंग देश का राजा कर्ण
अंगव(न०)-सूखा हुआ फल।
अंगविकृति(स्त्री०)-वि+कृ+क्तिन्-मिर्गी, अपस्मार, अंगविकार।
अंगविक्षेप(पु०)-वि+क्षिप्+घञ्-अंगों का हिलाना, नृत्य, कसरत।
अंगविद्या(स्त्री०)-सामुद्रिक विद्या।
अंगशोष(पु०)-शरीर सूखने का रोग।
अंगस्(पु०)-एक प्रकार का पक्षी।
अंगसंस्कार(पु०)-देह की सजावट, शरीर का सम्हारना, उबटना मलना।
अंगसख्य(पु०)-गहरी दोस्ती।
अंगहार (पु०) अङ्ग+हृ+घञ्-अंग विक्षेप, अंग का नृत्य।
अंगहीन(वि०)-जिसका कोई अंग भंग होगया हो, लूला, लंगड़ा।
अंगांगीभाव(पु०)-अवयव का अवयवी के साथ सम्बन्ध, गौण और मुख्य भाव। [स्वामी।
अंगाधिप(पु०)-राजा कर्ण, अंगों का
अंगार(अस्त्री०)-अंग्+आरन्-दहकता हुआ कोयला, बिना धुएं की अग्नि, अँगारा। पु०-मंगलग्रह (न०)लालरंग। वि०-सुर्ख, लाल
अंगारक(पु०)-मंगलग्रह, दहकता अँगार,चिङ्गारी। न० अंगारकनाम ज्वरों को दूर करने वाला एक प्रकार का तैल।
अंगारकमणि(पु०)-मूंगा।
अंगारधानी-निका(स्त्री०)-अँगीठी, आग रखने का बर्तन।
अंगारपरिपाचित(न०)-कबाब, पका हुआ मांस। [अंगीठी।
अंगारपात्री-शकटी (स्त्री०)-हलकी
अंगारपुष्प(पु०)-हिंगोटवृक्ष, इंगुदी नामक पेड़। [वृक्ष।
अंगारमंजरी(स्त्री०)-करौंजा नामक
अंगारि(स्त्री०)-अंगीठी, बिना लपट की आग। [अंगीठी।
अंगारिका (स्त्री०)-अंगारपात्र,

अंगारिणी(स्त्री०)–छोटी सी अगीठी, दिशा जिस पर डूबे हुए सूर्य की लाली छाई हो, लतामात्र।

अंगारित-रकित(वि०)–जला हुआ, भुना हुआ। [लतामात्र।

अंगारिता(स्त्री०)–अंगारधानी, कली,

अंगर्या (स्त्री०)–कोयले का ढेर।

अंगिन्(वि०) अंग+इनि–प्रधान, शरीरी, अंगोंवाला।

अंगिरस्(पु०)–एक ऋषि, ब्रह्मा के मुख से उत्पन्न हुआ पुत्र, यह यज्ञपति और देवताओं का पुरोहित भी कहलाता है।

अंगीकृ(धा० उ०)–स्वीकार करना, अगीकार करना।

अंगीकारः-कृतिः–करणम्--स्वीकारी, ग्रण, साहिदा, मान लेना।

अंगीकृत(वि०)–स्वीकार किया हुआ, माना हुआ।

अंगु(पु०)अंग्+उन्=हाथ।

अंगुरि-री(स्त्री०)अंग+उलि=अंगुली।

अंगुरीय(नपु०)=अंगूठी, मुन्दरी।

अंगुल(पु०)–उंगली, अगूठा, [ज्योतिष में] ग्रास या बारहवांभाग, वात्स्यायन वा चाणक्यमुनि का नाम। अस्त्री०–आठ जौ का माप, लम्बाई की एक माप।

अंगुलि-ली(स्त्री०)–उंगली, पांचों उंगलियों के नाम ये हैं:–[अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा वा कनिष्ठिका।

अंगुलिका(स्त्री०)–एक प्रकार की चींटी, उंगली।

अंगुलीतोरण(नपु०)–चन्दनादि द्वारा माथे पर आधे चन्द्रमा के आकार का तिलक।

अंगुलित्र-त्राण(नपु०)–अंगुलि की रक्षा करनेवाला, दस्ताना।

अंगुलिपर्व(पु०)--उंगलियों के पोरवे वा गांठ।

अंगुलिमुद्रा(स्त्री०)–अंगूठी जिस पर नाम खुदा हो, मुहर लगाने की अंगूठी।

अंगुलिवेष्टन(पु०)–दस्ताना।

अंगुलिसंज्ञा(स्त्री)–उंगली से बनाया निशान।

अंगुलिसन्देश(पु०)–उंगली के शब्द से सकेत करना, उंगलियों का बजाना।

अगुलिसंभूत(पु०)–नाखून, नख।

अंगुष्ठ(पु०)–अंगूठा, हाथ वा पैरकी सब से मोटी अंगुलि।

अंगुष्ठमात्र(वि०)–अगूठाभर।

अंगुष्ठाना(स्त्री०)–सुई से हाथ बचाने के लिये एक बनी हुई लोहेकी टोपी, अंगुस्ताना।

अंगुष्ठ्य(पु०)--अंगूठे का नाखून।

अगूष(पु०)--नेवला, वाण।

अंघ (धा०आ०)–जाना, आरम्भ करना, जल्दी करना, धिक्कारना।

अंघस्(नपु०)--पाप, गुनाह।

अघारि(वि०)--दीप्तिमान्, चमकीला।

अंघ्रि(पु०)--पैर, वृक्ष की जड़, श्लोक का चतुर्थ पाद।
अंघ्रिपान(वि०)--अंगूठा चूसनेवाला, छोटा बच्चा, वृक्ष।
अंघ्रिस्कन्ध(पु०) -एड़ी।
अच्(धा० उ०)--जाना, गति करना, निवेदन करना,पूछना। [तिक।
अचक्र(वि०)--बिना पहिये का, अग-
अचक्षु:(वि०)--नेत्रहीन, अन्धा।
अचण्ड(वि०)--क्रोधरहित, साधु।
अचण्डी(स्त्री०)--सीधी, या साधु स्वभाव की गाय।
अचर(वि०)--न चलने वाला, ठहरा हुआ, पृथ्वी, पर्वत। [विचला।
अचरम(वि०)--जो आख़िरी न हो,
अचल(वि०)--ठहरा हुआ, गतिहीन, स्थायी। पु०-पर्वत, चट्टान, गोंज नामी कील, सात का अंक, शिव का नाम। नपु०-ब्रह्म।
अचला(स्त्री०)- पृथ्वी।
अचलकन्यका-सुता-दुहिता-तनया-(स्त्री०)-पार्वती का नाम। [हुआ।
अचलज-जात(वि०)-पर्वत से उत्पन्न
अचलद्विष्(पु०)-पर्वतों का शत्रु अर्थात् इन्द्र। [हिमालय।
अचलपति-राट्(पु०)पर्वतों का राजा
अचलासप्तमी(स्त्री०)-अयोज की शुक्ल सप्तमी। [मूर्ख, अदृष्ट।
अचित्त(वि०)-अचिन्त्य,विचाररहित,
अचित्ति(स्त्री०)-बुद्धि का अभाव, मूर्खता, जड़ता।
अचिन्त्य-न्तनीय(वि०)-जिस का चिन्तन न होसके, अज्ञेय,दुर्बोध।
अचिन्त्यात्मा(पु०)-ईश्वर, जिस का स्वरूपठीक२ध्यान में न आ सके।
अचिन्तित(वि०)-जिस का चिन्तन नहीं किया गया हो,अप्रत्याशित।
अचिकित्स्य (वि०)-चिकित्सा के अयोग्य, असाध्य।
अचित्(वि०)-अचेतन, जड़।
अचिर(वि०)-शीघ्र, थोड़े समय का, संक्षिप्त, क्षणिक,नवीन, हाल का।
अचिरं-रेण-राय-रात्(अ०)अविलम्ब से, हाल में ही, जल्दी,शीघ्रता से।
अचिरांशु(स्त्री०)-बिजली [आभा, द्युति, प्रभा, भास् इत्यादि लगाने से भी यही अर्थ होता है]।
अचेतन(वि०)-चेतनारहित, ज्ञानहीन, बेसमझ।
अचेतस्(वि०)-ज्ञानशून्य, जीवनशून्य, मुर्दा, चेतनाहीन।
अचेष्ट(वि०)--चेष्टाहीन, गतिशून्य।
अचैतन्य(वि०)-ज्ञानरहित, जड़। नपु०-चेतना का अभाव, अज्ञान, प्रकृति, प्राकृतिक संसार।
अच्छ(वि०)-साफ़, स्वच्छ, निर्मल। पु०-स्फटिक।
अच्छ-च्छा(अ०)-सम्मुख, सामने से।
अच्छभल्ल(पु०)-रीछ, भालू।
अच्छत्र(पु०)-राजा रहित देश, जिस देश में अराजकता हो।
अच्छावाक(पु०)-आह्वान करनेवाला,

सोमयज्ञ कराने वाले पुरोहितों में से एक।
अच्छन्दः(वि०)-वेद न पढ़ने वाला, छन्दःरहित, वेद पढ़ने का अनधिकारी।
अच्छिद्र(वि०)-छिद्रहीन, बेऐब, समूचा, अक्षत, दोषरहित।
अच्छिन्न(वि०)-अखंडित, जो कटा न हो, लगातार। [हो सके।
अच्छेद्य(वि०)-जिस का विनाश न
अच्छोद(वि०)-निर्मल जल वाला छोटा तालाब। [मृगया।
अच्छोदन(नपु०)-शिकार, आखेट,
अच्युत(वि०)-दृढ़, स्थिर, नित्य जो गिरा न हो। पु०-विष्णु का नाम, परमात्मा का नाम, पीपल।
अच्युताग्रज(पु०)-बलराम वा इन्द्र का नाम।
अच्युताङ्गज(पु०)-कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र कामदेव।
अच्युतानन्द(पु०)-परमात्मा।
अच्युतावास(पु०)-वट वृक्ष, क्षीर-समुद्र, मथुरा, वृन्दावन।
अज्(धा०प०)-जाना, हांकना, फेंकना।
अज(वि०)-अनुत्पन्न, नित्य। पु०-ब्रह्मा, विष्णु, शिव, आत्मा, बकरा, दशरथ के पिता का नाम।
अजकर्ण-क(पु०)--साल का दरख्त, मरिचपत्र। [धनुष।
अजकव-गव(अस्त्री०)-शिव जी का
अजका-जिका(स्त्री०)-छोटी बकरी।
अजकाजात(पु०)--आंख में होने वाली लाल फूली, नाखूना।
अजक्षीर(न०)--बकरी का दूध।
अजगन्ध(पु०)--विष्णु, अग्नि। [तुलसी।
अजगंधा(स्त्री०)--वन अजवायन, बन-
अजगंधिका(स्त्री०)--बर्बरीनामशाक।
अजगंधिनी(स्त्री०)--काकड़ासींगी।
अजगर(पु०)-बहुत बड़ा सांप, जो कहते हैं कि बकरी को निगल जाता है।
अजगल-देखो अजागल।
अजगल्लिका(स्त्री०)-बच्चों को होने वाला एक रोग।
अजघन्य(वि०)-जो नीच न हो, अच्छा
अजजीविक(पु०)-गड़रिया। [नाम।
अजटा(स्त्री०)-भूम्यामलकी वृक्ष का
अजड(वि०)-चेतन, जो मूर्ख न हो।
अजथ्या(स्त्री०)-पीलेरंग की जूही का पेड़ और फूल, बकरों का समूह।
अजदण्डी(स्त्री०)-ब्रह्मदण्डी, एक प्रकार का पौदा।
अजन(पु०)-ब्रह्मा, बुरा आदमी। न०-गति करना, हांकना। वि०-जन-शून्य। [जाता न हो।
अजननि(स्त्री०)-जन्मरहित, जिसकी
अजन्त(पु०)-स्वरांत शब्द।
अजन्मन्(वि०)-जो उत्पन्न न हुआ हो। पु०-मोक्ष।
अजन्य(नपु०)-भूचाल आदि उपद्रव।
अजप(पु०)-बुरा पढ़ने वाला। वि० बकरी पालने वाला।
अजपा(स्त्री०)-हंस नामक मन्त्र का

नाम, जो आप ही श्वासके आने जाने से निकलता रहता है ।

अजपात द्-द(पु०)-११ रुद्रों में से एक का नाम।

अजभक्ष(पु०)-बबूल का पेड़ ।

अजमीढ(पु०)-अजमेर नामक नगर, वहां का राजा, युधिष्ठिर ।

अजमोदा(स्त्री०)-अजवायन ।

अजम्भ(पु०)-मेंढक । वि० -बिना दांत का ।

अजय(पु०)-पराजय, हार, एक नद का नाम, अग्नि का नाम । वि० जो जीता न जासके, अजेय ।

अजय्य(वि०)-अजेय, जो जीता नहीं जा सकता । [समालगोटा ।

अजयपाल(पु०)-एक राजा का नाम,

अजया(स्त्री०)-भांग, विजया, दुर्गा के एक मित्र का नाम, माया ।

अजर(वि०)-जिसे बुढ़ापा न सतावे, सदा जवान । पु०--देवता, जीर्णफंजी नामक वृक्ष । न०-परमात्मा।

अजरा(स्त्री०)-घीगवार, जराशून्य ।

अजर्य(वि०)-नाशहीन, जो पचाया न जा सके । न०-मित्रता ।

अजराल(वि०)-बलवान् ।

अजलोमा-मी(स्त्री०)-कौंच वृक्ष ।

अजवस्(वि०)-वेग रहित, मन्द ।

अजवीथी(स्त्री०)-पितरों का मार्ग, यमगाला, छायापथ ।

अजशृंगी(स्त्री०)-मेढ़ासींगी ।

अजस्रम्(अ०)-निरन्तर, सदा ।

अजहत्स्वार्था(स्त्री०)-अपने अर्थ को न छोड़कर दूसरे अर्थ को बताने वाली लक्षणा नाम शक्ति ।

अजहल्लिङ्ग(पु०)-जिसका लिङ्ग नियत हो, विशेष्य का चाहे जो लिङ्ग हो पर अपना लिङ्ग न छोड़ने वाला विशेषण । जैसे "वेदाःश्रुतिर्वो प्रमाणम्" ।

अजा(स्त्री०)-प्रकृति या माया, बकरी।

अजागर(पु०)-भीमराज नामक भृङ्गराज, जिसके सेवन से नींद नहीं आती ।

अजागल(पु०)-बकरी का गला ।

अजगलस्तन(पु०)-बकरी के गले में लटका हुआ मांस ।

अजाजि-जी(स्त्री०)-सफ़ेद व काला जीरा । [हुआ हो ।

अजात(वि०)-अनुत्पन्न, जो पैदा न

अजातककुद्(पु०)-थोड़ी उम्र का बछड़ा ।

अजातशत्रु(वि०)-जिसका कोई शत्रु न हुआ हो, शत्रुविहीन, युधिष्ठिर।

अजातारि(वि०)-अजातशत्रु के समान

अजातव्यवहार(पु०)-नाबालिग़ ।

अजाति(वि०)-जातिरहित, जिसकी कोई जाति न हो, अनुत्पन्न । स्त्री० -उत्पत्ति का अभाव ।

अजानि(पु०)-स्त्रीरहित, रंडवा ।

अजानिक(वि०)-गडरिया ।

अजानेय(वि०)-शक्तिसम्पन्न, बेखौफ़ निडर, अच्छी नसल का । पु० उत्तम घोड़ा ।

अजि(वि०)–तेज चलनेवाला। स्त्री०–गति,चलना, फेंकना।

अजित(वि०)–जो जीता न गया हो,जो क़ाबू में न रहे। पु०–विष्णु,शिव वा बुद्ध का नाम।

अजिता(स्त्री०)–भादों वदि एकादशी का नाम।

अजितापीड(पु०)–अजेय मुकुटवाला, एक राजा का नाम।

अजिताविक्रम(पु०)–अजेय शक्तिवाला. द्वितीय चन्द्रगुप्त का नाम।

अजितेन्द्रिय(वि०)–जिसने इन्द्रियों को न जीता हो, इन्द्रियलोलुप, विषयासक्त।

अजिन(न०)–शेर, चीते या हाथी का चमड़ा, एक प्रकार के चमड़े का वस्त्र।

अजिनपत्रा(स्त्री०)–चिमगादर।

अजिनयोनि(पु०)–हरिण, मृग।

अजिर(वि०)-तेज़, शीघ्रगामी। पु०-एक प्रकार का दाखदार चूहा। न०-आंगन, अखाड़ा, शरीर, वायु मेंढक, इन्द्रियों का विषय।

अजिरा(स्त्री०)–दुर्गा का नाम, एक नद का नाम।

अजिह्म(वि०)–जो कुटिल न हो,सीधा, ईमानदार। पु०-मेंढक, एक प्रकार की मछली। [जाने वाला।

अजिह्मग(पु०)--बाण,तीर। वि०-सीधा

अजिह्व(पु०)--जीभरहित, मेंढक।

अजीकव(न०)--शिव का धनुष।

अजीगर्त(पु०)--सांप, भृगुवंशीय एक ब्राह्मण का नाम।

अजीत(वि०)--बिना मुर्झाया हुआ।

अजीति(स्त्री०)--अभ्युदय, नाश से भयरहितता।

अजीर्ण(वि०)--न पचा हुआ, नवीन।

अजीर्णि-र्णि(स्त्री०)--बदहज़मी,शक्ति, बल, क्षीणता का अभाव।

अजीव(वि०) -जीवनरहित,मरा हुआ। अचेतन। पु०-अभाव, मृत्यु।

अजीवन(वि०)--आजीविका रहित। न०-मृत्यु, अभाव।

अजीवनि(स्त्री०)--मौत, मृत्यु, एक प्रकार का शापवचन।

अजुष्टि(स्त्री०)--निराशता वा असन्तोष का भाव, जीवनानन्द का अभाव।

अजेय(वि०)--जो जीता न जासके। न०--एक प्रकार का औषधयुक्त बना हुआ घी।

अजोष(वि०)--असन्तुष्ट।

अज्जका(स्त्री०)--वेश्या, कंचिनी।

अज्झल(न०)--ढाल।

अज्ञ(वि०)--अज्ञानी, अजान, मूर्ख।

अज्ञका,स्त्री०)--मूर्ख स्त्री।

अज्ञता(स्त्री०)--मूर्खता,बेवकूफ़ी।

अज्ञात(वि०)--न जाना हुआ, अप्रकट

अज्ञातचर्या(स्त्री०)--छिपकर रहना

अज्ञातनामा(वि०)--जिसका नाम ज्ञात न हो।

अज्ञातवास(पु०)--छिपकर रहना।

अज्ञाति(वि०)–जो जाति वाला न हो।
अज्ञान(वि०)–मूर्ख, जड़। न०-मूर्खता जड़ता, अविद्या। [नासमझी।
अज्ञानता(स्त्री०)–मूर्खता, जड़ता,
अज्ञानी(पु०)–अज्ञ का पर्यायवाची।
अज्ञेय(वि०)–न जानने योग्य, जो समझ में न आसके। [घर।
अज्मन्(स्त्री०)–गाय। न०-रास्ता, युद्ध
अज्येष्ठ(वि)–जो बड़ा न हो, छोटा, जिसके कोई बड़ा भाई न हो।
अज्र(पु०)- खेत, मैदान।
अंच्(धा०उ०)--झुकना, जाना, पूजना, प्रतिष्ठा करना, गुनगुनाना।
अञ्चित(वि० –झुका हुआ, गत, प्रतिष्ठित, सुन्दर, पूजित।
अञ्चति(पु०)--वायु, अग्नि, जानेवाला।
अञ्चल(अस्त्री०)--साड़ी का छोर, आंचल, किनारा, तट।
अञ्चितभ्रू(स्त्री०)--सुन्दरभौं वाली स्त्री
अञ्ज्(धा०प०)--अभिषेक करना, प्रकाश करना, जाना।
अञ्ज(पु०)--कमल का फूल, कमल।
अञ्जन(पु०)--एक प्रकार की छपकली, एक वृक्ष का नाम, पश्चिम दिशा का दिग्गज। न० -कज्जल, सुरमा, रात्रि, स्याही, अग्नि। वि०--काला, सुरमई। [एक गन्धद्रव्य।
अञ्जनकेशी(स्त्री०)--हस्तिविलासिनी ना-
अञ्जनशलाका(स्त्री०)--सुरमा लगाने की सलाई। [का नाम।
अञ्जना(स्त्री०)--हनुमान् की माता
अञ्जनावती(स्त्री०)--ईशान कोण की हथिनी, कालांजन वृक्ष।
अञ्जनाद्रि(पु०)--एक पर्वत का नाम।
अञ्जनानन्दन(पु०)--हनुमान्।
अञ्जनाम्भस्(न०)--आंखों का पानी, आंसू। [कली, छोटी चूही।
अञ्जनिका(स्त्री०)--एक प्रकार की छप-
अञ्जनी(स्त्री०)--चन्दन लगाये हुए स्त्री, कुटकी, कालांजन वृक्ष का नाम।
अञ्जलि(पु०)--दोनों हाथों से बना हुआ सम्पुट, पावभर वस्तु की तोल।
अञ्जलिका(स्त्री०)--छोटी चूही
अञ्जलिकारिका (स्त्री०)--छुईमुई का पौदा, हाथों का जोड़ना।
अञ्जलिगत(वि०)-अंजलि में आयाहुआ
अञ्जलिपुट(अस्त्री०)-दोनों हथेलियों के जोड़ने से बना हुआ खालीस्थान।
अञ्जलिबद्ध (वि०)--हाथ जोड़े हुए।
अञ्जस(वि०)--सीधा, ऋजु, जो टेढ़ा नहो
अञ्जसा(अ०)--शीघ्र, ठीक २, साक्षात्
अञ्जि(पु०)--प्रेरक, तिलक का निशान प्रेषक। (स्त्री०)--मरहम, रङ्ग। [हुए।
अञ्जित (वि०)--अंजन लगाये हुए, आंजे
अञ्जिव(वि०)--चिकना।
अञ्जिष्णु (पु०)--सूर्य।
अञ्जी(स्त्री०)--चक्की, बरकत, आशिष्।
अञ्जीर(अस्त्री०)--अजीर नामक फल या वृक्ष।
अट् (धा० प०)--इधर उधर घूमना।
अट (वि०)--भ्रमण करता हुआ।
अटन (न०) -भ्रमण, घूमना।

अटनि-नी(स्त्री०)–धनुषका अग्रभाग।
अटरूप-रूप(पु०)–बांसे का पेड़।
अटल(वि०)–न टलने वाला, दृढ़।
अटवि-वी(स्त्री०)–जङ्गल, वन।
अटविक(पु०)–वनवासी।
अटा(स्त्री०)–पर्यटन, भ्रमण।
अटाट्या(स्त्री०)–पर्यटन, इधर उधर घूमना, वृथा घूमना।
अट्(धा०आ०)–वध करना, अतिक्रमण करना।
अट्ट(वि०)–ऊंचा, ज़ोर का, सूखा हुआ। अस्त्री०–अटारी, मीनार, बाज़ार, वध, अतिक्रमण। न०–ख़ूराक, उबले हुए चावल।
अट्टक(पु०)–अटारी, महल।
अट्टट(अ०)–बहुत ज़ोर से। [अन्न।
अट्टन(न०)–उपेक्षा, चक्रफल नामक
अट्टहास(पु०)–ज़ोर से हंसना।
अट्टहासक(पु०)–कुन्दपुष्प का वृक्ष।
अट्टहासी(पु०)ज़ोर से हंसने वाला, शिव। [ऊपर का मकान।
अट्टाल-लक(पु०)–अटारी, सब से
अट्टालिका(स्त्री०)–राजमहल, ऊंचा महल, देशविशेष।
अट्टालिकाकार (पु०)–राजमज़दूर, मकान चिनने वाला।
अट्या(स्त्री०)–पर्यटन, भ्रमण।
अंठ्(धा०उ०)–जाना।
अड्(धा०प०)–उद्यमकरना, यत्नकरना।
अड्ड्(धा०प०)–अभियोग, हमला करना, अनुमान करना, समाधान करना।
अड्डन(न०)–ढाल। [लेना, जीना।
अण्(धा०प०)–आवाज़ करना, श्वास
अण[न]क(वि०)–अधम, कुत्सित, बहुत छोटा, नीच। पु०–एक प्रकार का पक्षी। [अनाज पैदा हो।
अणव्य(न०)–वह खेत जिसमें छोटा२
अणि-णी(अक्ली०)–रथ के पहिये की कील, सुई का सिरा, सीमा, हथियार की नोक।
अणिमा[न्](पु०)–पतलापन, छोटापन, सूक्ष्मता, आठ सिद्धियों में से एक। [छोटा।
अणीयः[स्](वि०)–अति सूक्ष्म, बहुत
अणु(वि०)–छोटा। स्त्री०–[अणवी]-छोटे २ धान• चीना, कङ्गनी, श्यामा आदि।
अणुक(वि०)–चतुर, निपुण, अल्प।
अणुभा(स्त्री०)–विद्युत, बिजली।
अणुमात्र(वि०)–बहुत थोड़ा।
अणुरेणु(पु०)–धूलिकण, ग़र्द।
अणुवाद(पु०)–वल्लभाचार्य का मत, वह मत जिस में जीव व आत्मा अणु माना गया हो।
अण्ड(न०)–अण्डा, पुरुष के शरीर का अवयव विशेष।
अण्डज(पु०)–अण्डे से उत्पन्न पक्षी, सर्प, मछली, छकलास नामकपक्षी।
अण्डजा(स्त्री०)–मृगनाभि, कस्तूरी।
अण्डालु(पु०)–मछली।
अण्डीर(पु०)–सामर्थ्यवान् पुरुष, शक्ति, ताक़त। [निरन्तरचलना।
अत्(धा०प०)–बांधना, पहुंचाना,

अतः(अ०)–इस कारण से, इस वजह से, इस लिये।
अतएव(अ०)–इसी लिये,इस हेतु से।
अतट(पु०)–तट [किनारे] रहित,जिस के जलप्रपात स्थान न हो, पर्वत आदि ऊंचा स्थान।
अतथ्य(वि०)–अन्यथा, झूठ, मिथ्या, अयथार्थ।
अतद्गुण(पु०)–एक प्रकार का वचन जिस में दूसरे का गुण ग्रहण न किया जाय।
अतनु(वि०)–शरीररहित,विना शरीर का। पु०-अनंग, कामदेव।
अतन्द्र(वि०)–जिस को तन्द्रा न हो, चालाक।
अतन्द्रित(वि०)–निद्रारहित,आलस्य हीन, चपल।
अतप्त(वि०)–जो तपा न हो, ठण्डा।
अतप्ततनु(वि०)–रामानुज सम्प्रदाय के अनुसार जिस ने मुद्रा धारण न की हो। पु०-विना दाग का मनुष्य
अतमस्(वि०)–जिस में अन्धेरा न हो, चमकदार।
अतरुण(वि०)–जो तरुण [जवा] न हो अर्थात् पुराना, बूढ़ा।
अतर्क(वि०)–तर्करहित।
अतर्कित(वि०)–जो पहिले से अनुमान में न आया हो, बेसोचा समझा।
अतर्क्य(वि०)जो तर्क के योग्य न हो, जिसके विषय में किसी तरह की विवेचना न हो सके,अचिन्त्य।
अतल(वि०)–जिसके तल भाग न हो, न०-सातपातालों में प्रथम पाताल।
अतलस्पर्श(वि०)–जिस का नीचे का भाग छूआ न जासके,अति गम्भीर, अगाध।
अतलस्पृक्-श्(वि०)–अतल को छूने वाला, अत्यन्त गहरा।
अतस(पु०)–अलसी का पेड़, वायु, आत्मा, शस्त्र, अलसी की छाल से बना कपड़ा। [अलसी, सन।
अतसि-सी (स्त्री०)–वृक्ष विशेष,
अतापी(वि०)-तापरहित, शान्त।
अति(अ०)–प्रशंसा, उल्लङ्घन करना, अधिक।
अतिकथ(वि०)–न कहने योग्य, न विश्वास करने लायक़, नष्टधर्म।
अतिकथा(स्त्री०)–व्यर्थ सापण।
अतिकन्दक(पु०)–लम्बी कन्द वाला हस्तिकन्द नामक वृक्ष।
अतिकाय(वि०)–बहुत लम्बा चौड़ा, स्थूल, डीलडौल का (पु०)–रावण के एक पुत्र का नाम।
अतिकृच्छ्र(वि०)–बहुतकठिन।भ०स्त्री० कष्टसाध्य व्रत।
अतिकृत(वि०)–अतिक्रान्त किया हुआ, सीमासे अधिक किया हुआ। (न०)–सीमातिक्रम।[बाहरजाना
अतिकृति(स्त्री०)–अतिक्रम, सीमा से
अतिक्रम्(धा०प०)–पार करना,अतिक्रमण करना, सीमासे बाहर जाना
अतिक्रम(पु०)–क्रमोल्लङ्घन, अतिपात, अतिक्रम, सीमा से बाहर होना।

अतिक्रमण(न०)–अधिकता, ज्यादती उल्लंघन, पार करना ।
अतिक्रान्त(वि०)–सीमासे बाहर गया, बीता हुआ,अतीत।[करनेवाला।
अतिक्रामक(वि०)–क्रम का उल्लंघन
अतिक्रुद्ध(वि०)–बहुतक्रोधमेंभराहुआ
अतिक्रूर(वि०)–बहुत निर्दय ।
अतिक्षिप्त(वि०)–दूर फेंका हुआ ।
अतिगम्(धा०प०)-गुजरना, बीतना, विदारना, मरना । [गया ।
अतिग(वि०)–लांघ गया, बाहर हो
अतिगंड(पु०)–ज्योतिष शास्त्र में एक योग का नाम, बड़ेर गालों वाला
अतिगंध(वि०)–अत्यन्त गन्धवाला । (पु०)–चम्पा का पेड़, अतिगन्धक।
अतिगंधालु(पु०)-पुत्रदात्री नाम लता
अतिगव(वि०)--अति मूर्ख ।
अतिगर्वित(वि०)--अत्यन्त घमण्डी ।
अतिगहन–गह्वर(वि०)--बहुत गहरा, जो पार न किया जासके ।
अतिगुण(वि०)--बहुत अच्छे गुणों वाला, गुणरहित ।
अतिगुरु(वि०)--बहुतभारी।[ओषधि
अतिगुहा(स्त्री०)--पृश्निपर्णी नामक
अतिग्रह्(धा०प०)--सीमा से बाहर ले जाना ।
अतिग्रह्य(वि०)--समझने में कठिन ।
अतिघ--हथियार । [वाला ।
अतिघ्न(वि०)--अत्यन्त नाश करने
अतिचर्(धा०प०)--सबकत लेजाना, बाजीलेजाना, सीमातिक्रमकरना, भूलसे छोड़ देना ।
अतिचर(वि०)--अति परिवर्तनशील।
अतिचरण(न०)--अतिक्रमण ।
अतिचार(पु०)--अतिक्रमण, सबक़त।
अतिचिरम्(अ०)--बहुत देर से ।
अतिच्छत्र(पु०)--छातिया नामक प्रसिद्ध तृणविशेष । [सलूया ।
अतिच्छत्रा(स्त्री०)--अधाक्पुष्पी, .
अतिछंद:(वि०)--संसारीपणा से रिक्त, वेदाज्ञा का उल्लंघन करने वाला
अतिजन(वि०)--वह मनुष्य जो जिस देशमेंरहता हो उसका निवासी नहो
अतिजव(वि०)--अति शीघ्रगामी, अतिवेगवान् ।
अतिजागर(वि०)--सर्वदा जागनेवाला पु०--नीला बगुला ।
अतिजात(वि०)--अपने वंश से बढ़ा ।
अतिजीव्(धा०प०)--बच रहना,अन्यों के पश्चात् जीते रहना ।
अतिजीवन(न०)--अन्यों की मृत्यु के पश्चात् जीते रहना । [यों का।
अतिडीन(न०)-विलक्षण उड़ान॰ पक्षि-
अतितीव्र-तीक्ष्ण (वि०)--बहुत तेज़
अतितीव्रा(स्त्री०)--दूर्वा, गण्डदूर्वा ।
अतितृष्णा(स्त्री०)--अत्यन्त लालच या इच्छा । [ले जाना ।
अतितॄ(धा०प०)--पार करना, बाजी
अतिथि(पु०)--कुश का पुत्र, रामचन्द्र का पौत्र,महमान, जिस की तिथि नियत न हो, आगन्तुक ।
अतिथिक्रिया(स्त्री०)-आतिथ्यसत्कार अतिथिपूजा, अतिथिसेवा। [करे।
अतिथिपति(पु०)–जो अतिथि सत्कार

अतिदग्ध(वि०)--बुरी तरह झुलसा हुआ, अधिकता से भुना हुआ। (न०)--कष्टसाध्य जलन। [दान।
अतिदान(न०)--बड़ादान, अपरिमित
अतिदाह(पु०)--अत्यन्त दाह।
अतिदिश्(धा०प०)--अतिसर्जन करना
अतिदीप्य(पु०)--रक्तचित्रक नाम वृक्ष
अतिदूर(वि०)--बहुत दूर।
अतिदेव(पु०)- शिवका नाम,परमात्मा
अतिदेश(पु०)--अन्य धर्म को दूसरे में लगा कर दिखा देना।
अतिद्वय(वि०)--दो से अधिक,अनुपम, लासानी।
अतिधन्वन्(पु०)-अच्छे धनुष वाला, मरुभूमि को लांघने वाला।
अतिधृति(स्त्री०)-उन्नीस अक्षरों के पादवाला एकछन्द, जिसकी धृति जाती रही हो।
अतिनिद्रा(स्त्री०)-बहुत सोना।
अतिनिर्हारिन्(वि०)-बहुतप्रियअच्छा [सुगन्ध का विशेषण]
अतिनु-नौ(वि०)-नाव से उतरा हुआ
अतिपत्(धा० प०)-भूलना, छोड़ना, पड़ना,पार करना, नाश करना।
अतिपतन(न०)-अतिक्रमण, भूल, सीमा से बाहर जाना।
अतिपत्ति(स्त्री०)-न सिद्ध होना।
अतिपत्र(पु०)-हस्तिकन्द वृक्ष।
अतिपथिन्(पु०)-अच्छा रास्ता, सन्मार्ग [सिद्धरूप अतिपंथाः]।
अतिपद्(धा०आ०)-सीमा से बाहर जाना, भूलना, छोड़ना।

अतिपद(वि०)--पदरहित, एक पैर से अधिक माप का।
अतिपन्न(वि०)-अतिक्रांतकिया हुआ, भूला हुआ, गुजरा हुआ।
अतिपर(वि०)-जिसने अपने शत्रुओं का नाश करदिया हो। पु०-अधिक क्षमतापन्न शत्रु।
अतिपरिचय(पु०)-अति मित्रता।
अतिपरोक्ष(वि०)-दृष्टि से बहुत दूर, न दिखाई देने वाला वा दिखाई देने वाला। [पर्य्यय।
अतिपात(पु०)--उपात्यय, अतिक्रम,
अतिपातक(न०)-घोर पाप।
अतिप्रगे(अ०)-बहुत ही सवेरे।
अतिप्रवृद्ध(वि०)-अत्यन्त बूढ़ा।
अतिप्रश्न(पु०)-दिक्क करने वा चिढ़ाने के लिये किया हुआ प्रश्न।
अतिप्रसंग (पु०)-किसी काम में बहुत लग जाना।
अतिप्रसक्ति(स्त्री०)-अतिप्रसंगवत्।
अतिप्रौढा(स्त्री०)-विवाह योग्य कन्या
अतिबल(वि०)-प्रबल, अतिशय बल वाला। पु०-अतिरथ। न०-बड़ा बल।
अतिबला(स्त्री०)--खिरैटी।
अतिबालक(पु०)-बच्चा।
अतिबाला(स्त्री०)-दो वर्ष की गाय।
अतिभ [भा]र(पु०)-भारी बोझा।
अतिभारग(पु०)-खर,अश्वतर,खच्चर, खिचर।
अतिभी(स्त्री०)-विद्युत, वज्रज्वाला।

अतिभू(धा०प०)–डटना, अतिक्रमण करना, क़ाबू पाना।
अतिभव(पु०)–पराजय।
अतिभूमि(स्त्री०)–अधिकता, मर्यादा का तोड़ना, बड़ी मर्यादा।
अतिभोजन(न०)–खाने में अधिकता।
अतिमंगल्य(वि०)–बहुत शुभको उत्पन्न करने वाला। पु०–बिल्ववृक्ष, बेल का पेड़।
अतिमति(स्त्री०)–अत्यन्त गर्व, घमंडीपन। [अतिमान भी इसी अर्थ में आता है]
अतिमर्त्य(वि०)–अमानुषी [अतिमानुष भी इसी अर्थ में आता है]
अतिमर्याद(वि०)–सीमाओं का अतिक्रमण।
अतिमर्श(पु०)–गहरा सम्बन्ध।
अतिमांस(वि०)–बहुत मांस वाला, मोटा।
अतिमात्र(वि०)–अतिशय, बहुत।
अतिमान(वि०)–जिसका परिमाण न किया जासके, बहुत बड़ा वा चौड़ा।
अतिमाय(वि०)–माया के जंजाल से छूटा हुआ।
अतिमारुत(पु०)–तूफान। [मे माहर।
अतिमित(वि०)–अतिशयित, प्रमाण
अतिमित्र (न०)–गहरा दोस्त।
अतिमुक्त(वि०)–संसारैषणा से बिलकुल मुक्ति पाया हुआ, ऐसा सफेद कि जो मोती को भी मात करे, बंजर। पु०–तिनिश वृक्ष का नाम
अतिमुक्ति-मोक्षः–निर्वाण, जन्म मरण से अन्तिम छुटकारा।
अतिमृत्यु(पु०)–मोक्ष।
अतिमोदा(स्त्री०)–नवमल्लिका लता, बड़ी सुगन्धि।
अतियोग(पु०)–अतिशय, आधिक्य।
अतिरंहस्(वि०)–बहुत तेज।
अतिरक्त(वि०)–बहुत लाल, अत्यन्त आसक्त।
अतिरक्ता(स्त्री०)–अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम।
अतिरथ(पु०)–अनुपम योद्धा।
अतिरभस(पु०)–बहुत वेग।
अतिरसा(स्त्री०)–बहुत रस वाली लता, मूर्वा, रास्ना, क्लीतनक लताओं का बोधक।
अतिराजन्(पु०)–अद्वितीय राजा, राजा से भी बढ़ा हुआ पुरुष।
अतिरात्र(पु०)–यज्ञविशेष, रात्रि का मध्यकाल। [नाग वा सर्पका नाम
अतिराष्ट्र(पु०)–पुराण के अनुसार एक
अतिरिक्त(वि०)--अधिक, अतिशयित, अनुपम, भिन्न, बिलकुल खाली।
अतिरुचिर(वि०)-बहुत प्रियदर्शन।
अतिरूक्ष(वि०)--बहुत रूखा, प्रेमहीन, निर्दय, बहुत प्रेमयुक्त। पु०—एक प्रकार का अनाज।
अतिरूप(वि०)--रूपरहित वायुइत्यादि, बहुत सुन्दर। न०--बड़ी सुन्दरता। पु०-- परमात्मा।
अति[री]रेक(पु०)--अधिकता, अतिशय, अनुपमता, भिन्नता।

अतिरोग(पु०)–क्षयरोग; बड़ा रोग ।
अतिरोमश(वि०)--बहुत बालों वाला पु०--जंगली बकरा, बड़ा बन्दर ।
अतिलोमश--पूर्ववत् ।
अतिलोमशा(स्त्री०)--नीलबुन्दा ।
अतिलंघन(न०)–अतिक्रमण, अतिशय उपवास । [करनेवाला ।
अतिलंघिन्(वि०)–अशुद्धि [ग़लती]
अतिवक्तृ[क्ता](वि०)–बहुत बातूनी, वाचाल ।
अतिवक्र(वि०)–बहुत टेढ़ा ।
अतिवयस्(वि०)–वयोवृद्ध, बूढ़ा ।
अतिवर्ती(वि०)–नियम को तोड़कर चलने वाला ।
अतिवर्तुल(पु०)–बहुत गोल, कलाय विशेष [सफेद मटर]
अतिवद्(धा० प०)–अतिक्रमण करना, गुजरना । [मत, कठोरवचन ।
अतिवाद(पु०)–अत्युक्ति,डागतमला-
अतिवादिन्[दी] (वि)–वाचाल,बहुत बोलनेवाला ।
अतिवास(पु०)–श्राद्ध से पूर्व उपवास ।
अतिवाह(पु०)–अतिक्रमण, लेजाना ।
अतिवाहक(पु०) यमदूत,लेजानेवाला
अतिवाहन(न०)–गुजारना, बिताना, अतिशय परिश्रम, प्रेषण ।
अतिवाहिक(पु०)–अतिवाह का पर्यायवाची ।
अतिवाहित(वि०)--बीता हुआ, गुजरा हुआ । पु०-पाताल देश का निवासी । न०-सूक्ष्म शरीर ।
अतिविकट (वि०)–भयंकर । पु०-दुष्ट हाथी ।
अतिविष(वि०)–बहुत जहरीला,विष को मारनेवाला ।
अतिविषा(स्त्री०)–अतीस एकओषधि
अतिवृत्(धा० आ०)–पार करना, सीमा से बाहर जाना, भूलना, अपमान करना ।
अतिवर्तन(न०)–क्षमा योग्य पाप, दण्ड से मुक्ति ।
अतिवर्धन(न०)–अत्यन्त बढ़ोतरी ।
अतिवृत्ति(स्त्री०)–अतिक्रमण, बढ़ावा
अतिवृद्ध(वि०)–बहुत बूढ़ा ।
अतिवृद्धा(स्त्री०)–बहुत बूढ़ी गाय ।
अतिवृष्टि(स्त्री०)–अत्यन्त वर्षा, छः ईतियों में से एक ।
अतिवेगित(वि०)–बहुत वेगवान् ।
अतिवेध(पु०)–गहरा लगाव ।
अतिवेल(वि०)–बेहद, असीम, किनारों से बढ़ जाना । [मौक़े ।
अतिवेलम्(क्रि०वि०)–अधिकता से,बे
अतिव्यथन(न०)–अत्यन्त कष्ट ।
अतिव्यथा(स्त्री०)–बड़ा दुःख ।
अतिव्याप्ति(स्त्री०)–अतिशय व्यापन, न्यायमत में अलक्ष्य में लक्षण का जाना ।
अतिशक्तिता(स्त्री०)–विक्रम,महाबल
अतिशक्तिभाक्(पु०)–अतिसमर्थ ।
अतिशी(धा० आ०)–अतिक्रमण करना सफल लेजाना । [समधिक ।
अतिशय(पु०)–बहुत, अधिक, उत्कर्ष,

अतिशयित(वि०)–अतिक्रान्त अतिक्रमण किया हुआ।
अतिशयिन्(वि०)–अच्छा, बढ़िया, उच्चकक्षा का।
अतिशयोक्ति(स्त्री०)--किसी बात को बहुत बढ़ाकर कहना।
अतिशयन(न०)–अधिकता, अतिक्रम
अतिशायन(न०)--प्रकर्ष, प्रशंसा, आधिक्य। [समान।
अतिशायिन्(वि०)–अतिशयिन् के
अतिशीत(न०)–बहुत ठंडा।
अतिशीलन(न०)–अभ्यास, मनन या सम्पादन।
अतिशूद्र(पु०)–अन्त्यज।
अतिशेष(पु०)--बकाया,थोड़ा बाक़ी।
अतिशोभन(वि०)–श्रेष्ठ, अतिसुन्दर
अतिश्व(वि०)–कुत्ते से अधिक शक्ति रखनेवाला [पशु], कुत्ते से बुरा पु०–एक जाति का नाम।
अतिश्वा(स्त्री०)–नौकरी, सेवा।
अतिश्वन्(पु०)– उत्तम कुत्ता।
अतिष्ठा(स्त्री०)–महत्त्व, बड़प्पन।
अतिसक्ति(स्त्री)–गहरा लगाव,अधिक प्रेम। [हानि पहुंचाना।
अतिसंधा(धा०उ०)–धोखादेना,ठगना
अतिसन्धान(न०)–ठगई, धोखेबाज़ी।
अतिसर्ग(पु०)–इच्छापूर्त्ति,दान,आज्ञा दान, बरख़ास्तगी, सम्बन्धत्याग।
अतिसर्जन(न०)–दान, स्वीकारी, फ़ैयाज़ी, वध, ठगई, परित्याग।
अतिसर्पण(न०)–गर्भ में बच्चे का बहुत हिलना।
अतिसर्व(वि०)–सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम।
अतिसान्तपन(न०)–एक प्रकार का कष्टसाध्य तप। [का काल।
अतिसायम्(अ०)–सन्ध्या के निकट
अतिसांवत्सर(वि०)–एक वर्ष से अधिक काल का।
अतिसृ(धा०प०)–फैलना।
अतिसर(वि०)–अतिक्रमण करने वाला नेता, सबसे आगे का। पु०–प्रयत्न।
अति [ती] सार(पु०)–दस्तों का रोग।
अतिसारिन्(वि०)--अतिसार रोग से पीड़ित।
अतिसृज्(धा०प०)--देना,दान करना बख़्शना, त्यागना, छोड़ देना।
अतिसौरभ(वि०);--बहुत सुगन्धि वाला। न०--बहुत सुगन्धि। पु०–आम का वृक्ष।
अतिस्नेह(पु०)--अतिशय प्रेम।
अतिस्पर्श(वि०)--अनुदार, नीच प्रकृति का।
अतिस्फिर(पु०)--अतिस्फूर्तिशाली।
अतिहसित(न०)--अतिशय हास्य।
अतिहास(पु०)--अत्यन्त हँसना।
अती(धा०प०)--अतिक्रम करना, पार करना,प्रवेश करना,ग़ालिबआना, बीतना, मरना।
अतीत(वि०)--बीता हुआ,अतिक्रान्त, गत, भूत। न०--भूतकाल।
अतीन्द्रिय(वि०)--अप्रत्यक्ष, इन्द्रियों से अप्राप्य।
अतीव(अ०)--बहुत, अतिशय।
अतुन्द(वि०)--जो भारी न हो, पतला।

अतुल(पु०)--तिल वृक्ष। वि०--अनुपम, अद्वितीय।

अतुल्य(वि०)--तुलना रहित, बेमिसाल

अतुषार(वि०)--तुषाररहित, जो ठंडा न हो।

अतुषारकर(पु०)--सूर्य।

अतुष्टि(स्त्री०)--असन्तोष।

अतुष्टिकर(अस्त्री०)--असन्तोषजनक --री--स्त्री०--सन्तोषशून्य।

अतुहिनकर-रश्मि-धामन्(पु०)-सूर्य।

अतृतुजि(वि०)--अदाता, अनदाता।

अतूर्त्त(न०)--आकाश, असीमस्थान।

अतृणाद(पु०)--घास न खानेवाला, नया पैदा हुआ बछड़ा।

अतृण्या(स्त्री०)--घास का छोटा ढेर।

अतृप्ति(स्त्री०)--असन्तोष, तृप्ति का अभाव।

अतेज[स्] (न०)--अन्धकार, छाया, दुर्बलता। वि०--धुंधियाला, दुर्बल, तुच्छ, तेजहीन।

अत्क(पु०)--पथिक, अवयव।

अत्कील(पु०)--एक मंत्रद्रष्टा ऋषि।

अत्ता(स्त्री०)--माता, बड़ी बहिन, सास।

अत्ति(स्त्री०)--बड़ी बहिन।

अत्तिका(स्त्री०)--बड़ी बहिन।

अत्न(न०)--युद्ध, लड़ाई। पु० -आंधी, सूर्य, पथिक।

अत्नु(पु०)--सूर्य, वायु, धान्य।

अत्र(पु०)--घोड़ा, अश्व।

अत्यग्नि(वि०)--अग्नि से भी अधिक

अत्यङ्कुश(वि०)--बेक़ाबू, क़ाबू से बाहर।

अत्यध्वन्(पु०)--लम्बा सफ़र।

अत्यधिक(वि०)--बहुत, ज्यादह।

अत्यन्त(वि०)--बहुत अधिक, सम्पूर्ण, अन्तरहित, नित्य।

अत्यन्तम्(अ०)--अधिकता से, अतिशयेन, बिल्कुल। [वगह।

अत्यन्तकोपन(वि०)-अतिशय क्रोधी,

अत्यन्तगत(वि०)--भरा हुआ।

अत्यन्तगामिन् [मी] (पु०)--शीघ्र गमन करने वाला। -मिनी स्त्री०--शीघ्र गमन करनेवाली।

अत्यन्तनिवृत्ति(स्त्री०)--मुक्ति, मोक्ष।

अत्यन्तसम्पर्क(पु०)--अत्यन्त मैथुन।

अत्यन्तसंयोग (पु०)-पूर्ण प्रकार से सम्बन्ध।

अत्यन्तसुकुमार (वि०)-बहुत सुकुमार, अत्यन्त कोमल। पु०--कङ्गनी नामक अनाज।

अत्यन्ताभाव(पु०)-नितान्त अभाव।

अत्यन्तिक(वि०)-समीप, बहुत शीघ्रगामी। न०-अधिक समीपता।

अत्यन्तीन(वि०)-शीघ्रगामी।

अत्यम्ल(वि०)-बहुत खट्टा। पु० तिन्तडीक नामक वृक्ष।

अत्यम्लपर्णी(स्त्री०)-लताविशेष।

अत्यम्ला(स्त्री०)-- जंगली बिजौरा, नींबू। [दोष।

अत्यय(पु०)--मृत्यु, अतिक्रम, दण्ड,

अत्यर्थ(वि०)--बहुत, अत्यधिक। अ०-अधिकता से।

अत्यल्प(वि०)--अतिसूक्ष्म।
अत्यष्टि(स्त्री०)--छन्दोभेद। [का।
अत्यह्न(वि०)--एक दिन से अधिककाल
अत्याकार(पु०)--तिरस्कार, निरादर, बड़ा देह। [त्यागना।
अत्याग(पु०)--ग्रहण, स्वीकारी, नहीं
अत्यागी(वि०)--दुर्गुणों को न छोड़ने वाला, दुर्व्यसनी।
अत्याचार(वि०)--विरुद्धाचारी। पु०-आचार का अतिक्रमण, अनुचिताचरण।
अत्याचारी-रिणी (वि०)--अत्याचार करनेवाला या वाली, अन्यायी, निष्ठुर। [ग्य, ग्राह्य।
अत्याज्य(वि०)-त्याग करने के अयो-
अत्याधान(न०) -आधान का व्यतिक्रम, ऊपर धरना। [बड़ालाभ।
अत्याय(पु०)--अतिक्रमण, ज्यादती,
अत्यायु(न०)--यज्ञ का पात्रविशेष।
अत्यारूढ(न०)--बहुत उच्चपद।
अत्यारूढि(स्त्री०)--पूर्ववत्।
अत्याल(पु०)-रक्तचित्रक नामक वृक्ष अर्थात् लाल चीता।
अत्याशा(स्त्री०)-अत्यन्त चाहना।
अत्याहारी रिणी(वि०)-बहुत खाने वाला या वाली। [दुर्भाग्य।
अत्याहित(न०)-बड़ी मुसीबत,खतरा,
अत्युक्त(वि०) -जो बढ़ा कर कहा गया हो।
अत्युक्ति(स्त्री०) -बढ़ा कर कहना, असम्भाव्य उक्ति, अलङ्कारविशेष।
अत्युग्र(वि०)-बड़ा भयङ्कर।
अत्युपध(वि०)-विश्वासी,आजमूदा, अनुभूत।
अत्यूह(पु०)-मयूर [नीलकण्ठ] नामक पक्षी, तर्क से बाहर।
अत्यूहा(स्त्री०)-नीलिका नामकपौदा
अत्र(अ०)-इस स्थान में, यहां, इस विषय में। [स्थानिक।
अत्रक-त्य(वि०)-यहां का, ऐहिक,
अत्रप(वि०)-निर्लज्ज, लज्जारहित।
अत्रभवती(स्त्री०)-माननीया,पूज्या
अत्रभवान्(पु०)-मान्य, पूजनीय।
अत्रस्न(वि०)-निडर, बेखौफ।
अत्रस्थ(वि०)-यहां रहनेवाला।
अत्रस्नु(वि०)-भयरहित, निडर।
अत्रान्तर(अ०)-इस बीच में।
अत्रास(वि०) -निडर, दुःखरहित।
अत्रि(वि०)-खा जाने वाला। पु०-एक मंत्रद्रष्टा ऋषि का नाम जिसकी भार्या कर्दम मुनि की कन्या अनुसूया थी, जिस के तीन पुत्र थे, दत्तात्रेय, दुर्वासा और चन्द्र।
अत्रिगुण(वि०)-त्रिगुणातीत, सत्व, रज, तम नामक तीनों गुणों से पृथक्।

अत्सरुक(पु०)-यज्ञपात्रविशेष।
अथ(अ०)-निरन्तर, मङ्गल, प्रश्न, संशय, आरम्भ, विकल्प, पक्षांतर
अथवा(अ०)-पक्षान्तर, वा, या।
अथकिम्(अ०)-स्वीकार, हां।
अथर्व(पु०)-चौथावेद।
अथर्वण(पु०)-शिव।
अथर्वाणि(पु०)-अथर्ववेद का जानने वाला ब्राह्मण वा पुरोहित।
अथर्वविद्-निधि(पु०)-अथर्ववेद का जाननेवाला।
अथर्वशिखा(स्त्री०)--एक उपनिषद् का नाम।
अथर्वशिरः(न०)-पूर्ववत्।
अथर्वन् [वा] (पु०)-ब्राह्मण।
अथर्वांगिरस्(पु०)-इसी नाम की कक्षा का एक अङ्ग। बहुवचन में इस का अर्थ अथर्ववेदकेमंत्र होताहै
अथर्वांगिरस(वि०)-अथर्वांगिरस् का।
अथर्वांगिरसाः(वि०)-अथर्ववेद केमंत्र
अथर्वाण(न०)-अथर्ववेद की रीतियां, पु०-अथर्ववेद का जाननेवाला।
अथो(अ०)-अथ के समान।
अद्(धा० प०)-भक्षण करना, खाना, नष्ट करना।
अद[त्] (वि०)-भक्षण करनेवाला।
अद्-द(वि०)-खाता हुआ, भक्षण करता हुआ [समासान्त में प्रयुक्त होता है जैसे मांसाद में]।
अदंष्ट्र(वि०)-दन्तहीन। पु०-सांप।
अदक्ष(वि०)-अकुशल, मूर्ख।
अदक्षिण(वि०)-बायां, दक्षिणा रहित, सीधा।
अदाक्षिणीय(वि०)-दक्षिणा के अयोग्य
अदाक्षिण्य(वि०)-पूर्ववत्।
अदग्ध(वि०)-न जला हुआ।
अदण्ड(वि०)-दण्ड से मुक्त।
अदण्डनीय(वि०)-दण्ड के अयोग्य, जो दण्ड का भागी न हो।
अदण्ड्य(वि०--दण्ड के अयोग्य, दण्ड से मुक्त।
अदत्(वि०)--दन्तहीन, बिना दांतों [का।
अदत्त(वि०)--न दिया हुआ, अन्यथा दिया हुआ।--त्ता (स्त्री०)-अविवाहिता कन्या।
अदन(न०)-भक्षण, भोजन।
अदन्त(वि०)-दंतरहित।
अदन्त्य(वि०)-जो दांतों का न हो, दांतों के अयोग्य।
अदभ्र(वि०)-बहुत अधिक।
अदम्भ(वि०)-ईमानदार, सच्चा। पु०-ईमानदारी, शिवका नाम। [अजेय
अदम्य(वि०)-जिसका दमन न होसके,
अदय(वि०)-दयाहीन, क्रूर, निर्दय।
अदयं(क्रि०वि०)-बेरहमी से।
अदर्श(पु०)-जिस दिन चन्द्रमा पहिले पहिल निकले। [दिखलाई देना।
अदर्शन(न०)-दर्शन का न होना, न
अदर्शनीय(वि०)-नहीं देखनेके योग्य, कुरूप, बुरा।
अदल(वि०)-पत्तों रहित, भागरहित पु० हिज्जल नामक वृक्ष।
अदला(स्त्री०)-घीगवार का पौदा।

अदस्(सर्व०)–वह, जो वस्तु सामने न हो उसका बोधक । [न देने वाला
अदातृ[ता] (वि०)अ+दा+तृच्-कृपण,
अदादि(वि०)–धातुओं का एक भेद ।
अदान(वि०)–न देने वाला, कंजूस, अनुदार ।
अदान्त(वि०)–तप क्लेशादि को न सहने वाला, इन्द्रियों का निग्रह न करने वाला ।
अदान्य(वि०)-कंजूस, निर्धन ।
अदाय(वि०)–जो दायभागी न हो ।
अदायाद(वि०)–जो वारिस बनने का हक़दार न हो; जिसका कोई वारिस न हो ।
अदायिक(वि०)-जिसका कोई वारिस न हो, जो विरासत से सम्बन्ध न रखता हो । [कवारा ।
अदार(पु०)–स्त्रीरहित, रंडवा वा
अदास(पु०)–स्वतन्त्र मनुष्य ।
अदाह्य(वि०)–जो अग्नि को ग्रहण न कर सके ।
अदिति (स्त्री०)–दक्ष प्रजापति की कन्या, जो कश्यपऋषि की पत्नी थी, देवताओं की माता, पृथिवी, धनहीनता । वि०-स्वतन्त्र, असीम, समूचा । [का बोधक ।
अदिती(स्त्री०द्वि०)–द्यौ और पृथिवी
अदितिज(पु०)–देवता ।
अदितिनन्दन(पु०)–देवता ।
अदीन(वि०)–जो दीन न हो, शक्तिशाली, अमीर । [आशावान् ।
अदीनात्मा(पु०)–जो हताश न हो,
अदीनवृत्ति(वि०)–आशान्वित ।
अदीनसत्त्व(वि०)–आशा से भराहुआ, हिम्मत वाला ।
अदीर्घ(वि०)–जो लम्बा न हो ।
अदीर्घसूत्र(वि०)–तीव्र, कर्मशील ।
अदीर्घसूत्रिन्(वि०)–तीव्र, कर्मयोगी ।
अदुःख(वि०)–दुःख से रहित, शुभ ।
अदुःखनवमी(स्त्री०)–भाद्रपद शुक्ला नवमी, जिसमें स्त्रियां देवी की पूजा करती हैं ।
अदुर्ग(वि०)–जिसके पास पहुंचना कठिन न हो, दुर्गरहित ।
अदूर(वि०)–जो दूर न हो, समीप । न०-समीपता ।
अदूरं(अ०)-समीप में ।
अदूरतः(अ०)-समीप से ।
अदूरात्(अ०)–समीप से, क़रीब में ।
अदूरे(अ०)–पास ही ।
अदूरेण(अ०)-पास से ही ।
अदूषित(वि०)-दोषरहित, बेदाग़ ।
अदृप्त(वि०)-गर्वहीन, शान्त, जो घमण्डी न हो ।
अदृक् शृ(वि०) दृष्टिरहित, अन्धा ।
अदृश्य(वि०)--अदर्शनीय अदृष्टव्य ।
अदृष्ट(न०)--भाग्य, प्रारब्ध । वि०-जो देखा न गया हो, जो दिखाई न दे ।
अदृष्टपूर्व(वि०)--जिस का पहिले से ज्ञान न हो, आकस्मिक, विरला, अनुपम ।
अदृष्टफल(वि०)--जिसका परिणाम

अभी तक ज्ञात न हुआ हो।
न०--फल कर्मों का भावीफल।
अदृष्टवान्(वि०)-भाग्यवान्,कपालिया
अदृष्टि(स्त्री०)--प्रतिकूल दृष्टि,कुत्सित दृष्टि,क्रोधयुक्त दृष्टि। वि०--अन्धा, दृष्टिहीन।
अदृष्टिका(स्त्री०)--क्रोधयुक्त दृष्टिवाली
अदेय(वि०)--जो न दिया जाना चाहिये।
अदेयदान(न०)—अनुचित या अशास्त्रीय दान।
अदेव(वि०)--जो देवता का न हो, जो देवतुल्य न हो, देवहीन। पु०--जो देवता नहीं है।
अदेवमातृक(वि०)--नदी या नहर के पानी से सींचा हुआ।
अदेश(पु०)--कुठौर, अनुचित स्थान, बुरा देश।
अदेशस्थ(वि०)--अनुचित स्थान में रहने वाला, अप्रामाणिक,स्वदेश से बाहर।
अदैन्य(वि०)--जिस में दीनता का अभाव हो। [न हो।
अदैव(वि०)--जो दैव [प्रारब्ध का]
अदोग्ध्री(वि०)-दूध न देनेवाली गाय।
अदोह(पु०)-वह काल जिस में दूध न दुहा जावे। [का अभाव।
अदोष(वि०)-दोषरहित। पु०-दोष
अद्म(पु०)-अन्न,पुरोडाश। [मय में।
अद्भुत(न०)-चमत्कार, विलक्षण, या-
अद्भुत(वि०)—अनोखा, आश्चर्यपूर्ण।
न०–आश्चर्यमयी घटना। पु०–देवता,गन्धर्व,पीतवर्ण,लोकातीत वस्तु।
अद्भुतसार(पु०)—खदिरसार, कत्था।
अद्भुतस्वन(पु०)—महादेव (वि०)—अद्भुत आवाज़ वाला।
अद्मनि(पु०)--आग।
अद्मर(वि०)--भक्षक, भक्षणपरः।
अद्य(अ०)--आज, आज से लेकर।
अद्यतन(वि०)--आजवाला,आज का।
अद्यश्वीन(वि०)--आज कल में होने वाला, आसन्नमरणादि।
अद्यश्वीना(स्त्री०)--आसन्नप्रसवा।
अद्यावधि(अ०)--आज तक।
अद्रव(वि०)--जो पतला न हो।
अद्रि(पु०)--सूर्य, पर्वत, वृक्ष।
अद्रिकर्णी(स्त्री०)--अपराजिता नामक बेल।
अद्रिकीला(स्त्री०)--भूमि।
अद्रिज(न०)--शिलाजीत। वि०--पर्वत पर उत्पन्न होने वाला।
अद्रिजा(स्त्री०)--सैंहली वृक्ष, दुर्गा।
अद्रिकन्या-तनया सुता,(स्त्री०)--पार्वती
अद्रिभित् द्(पु०)- इन्द्र। वि०–पर्वत को भेदन करने वाला।
अद्रिभू(स्त्री०)--आखुकर्णी नामक बेल वि०--पर्वत पर पैदा होने वाला।
अद्रिराज(पु०)--हिमालय पर्वत।
अद्रिशृंग-सानु(न०)--पर्वत का शिखर
अद्रिसार(पु०)--लोहा।

अद्रीश(पु०)--हिमालय पर्वत, पर्वत का स्वामी, शिव।
अद्रोह(वि०)--द्रोहरहित।
अद्वंद्व(वि०)--झगड़े से रहित।
अद्वय(वि०)--जिसके मन में दो न हों, अकेला।
अद्वयवादिन् (वि०)--अद्वैतवादी, सब ही चैतन्यस्वरूप है, ऐसा मानने वाला। पु०--बुद्धभेद।
अद्वार(न०)--द्वारहीनता।
अद्वितीय(वि०)--जिसके समान दूसरा न हो, एकाकी, अनुपम।
अद्वेष(वि०)--द्वेषरहित, जो बैर न रक्खे, शांत।
अद्वैत(वि०)--द्वैतभाव से रहित, अकेला। पु०--विष्णु।
अद्वैतवादिन्[दी] (वि०)--एक ब्रह्मही है और कुछ नहीं ऐसा कहने वाला
अधः[स्] (अ०)--नीचे, अधोभाग।
अधःक्षिप्त(वि०)--नीचे रक्खा गया, नीचे फेंका गया।
अधःपुष्पी(स्त्री०)--अनन्तमूल नामक ओषधि, गोजिह्वा, गोभी।
अधन(वि०)--धनरहित, जिसके पास धन न हो। [अभागा।
अधन्य वि०)--सुखहीन, हतभाग्य,
अधम(वि०)--नीच, निन्दित। पु०-कामुक। [प्रतियोगी।
अधमर्ण(पु०)--क़र्ज़दार, उत्तमर्ण का
अधमर्णिक(पु०)--अधमर्ण, क़र्ज़दार।
अधमभृत(पु०)--अधमभृत्य, नीचदास दरबान, झाड़ू देने वाला।
अधमभृतक(पु०)--अधमभृत का पर्यायवाची। [कन।
अधमा(स्त्री०)--अहितकारिणी मालि-
अधमांग(न०)--पाद, चरण, पैर।
अधमार्ध(न०)--शरीर के नीचे का आधा भाग।
अधमार्ध्य (वि०) नीचे के भाग का।
अधमाचार(वि०)--अत्यन्त गर्हित आचार वाला। पु०--गर्हितआचार
अधर(वि०)--नीचे का, उत्तर का प्रतिद्वन्द्वी, निचला, अधम, बोलने में अशक्त। पु०--होठ, नीचे का होठ न०-शरीर के नीचे का भाग। अस्त्री०-रतिगृह, स्मरागार।
अधरकण्ठ(पु०)--गर्दन का निचला भाग। [भाग।
अधरकाय(पु०)--शरीर का निचला
अधरतः(अ०)--नीचे से।
अधरपान(न०)--चूमना, चुम्बनकरना।
अधरमधु(न०)--अधररस, अधरामृत।
अधरस्तात्(अ०)--नीचे से अधरतः।
अधरस्मात्(अ०)--अधस्तात, अधरात नीचे से।
अधरा(स्त्री०)--नीच, हीन, अपकृष्ट।
अधरात्(अ०)--अधरेण, अधरस्तात्।
अधरामृत(न०)--अधरसुधा, होठों का अमृत।
अधरीकृ(धा०उ०)--अतिक्रमण करना, बढ़ जाना, नीचा दिखलाना।
अधरीण(वि०)--तिरस्कृत, धिक्कारा हुआ।
अधरेण(अ०)--नीचे से, अधरात्।

अधरेद्युः(अ०)-उस दिन, बीता हुआ दिन, बीते हुए कल से पूर्ववर्ती दिन।
अधरौष्ठ(पु०)-नीचेका होंठ। [की ओर
अधराञ्च्(वि०)-दक्षिण की ओर, नीचे
अधराची(स्त्री०)-दक्षिण दिशा।
अधराक्(अ०)-नीचे।
अधराचीन(वि०)-नीचेकी ओर जाने .. वाला, पातालदेश का। [पवाची।
अधराच्य-अधराचीन का पर्या-
अधर्म(पु०)-धर्माभाव, अन्यथाधर्म पाप, अपराध, धर्मविरोध, एक प्रजापति का नाम। न०-निर्गुण, ब्रह्म का विशेषण।
अधर्मिमन्(वि०)-अधर्मात्मा, पापी।
अधर्म्य(वि०)-पापी, क्रूर, अधार्मिक।
अधवा(स्त्री०)-धव [पति] हीन, रांड
अधस्[अधः](अ०)-नीचे, भीतर।
अधउपासन(न०)-मैथुनकार्य।
अधःकर(पु०)-करभ, हाथ का नीचे का भाग। [गिरावट।
अधःकरण(न०)-दब जाना, पराजय,
अधःक्रिया(स्त्री०)-बेइज्जती, अपमान। [खोखला करना।
अधःखनन(न०)-नीचे से खोद कर
अधःगति(स्त्री०)-नीचे ही ओर जाना, उतार, गिरावट, अधःपात।
अधःगमन(न०)-अधोगति का पर्याय .वाची। [की ओर जानेवाला।
अधःगन्ता(पु०)-चूहा, खोद कर नीचे
अधश्चर(पु०)-चोर, नीचे की ओर जाने वाला।
अधश्चौर(पु०)-नीचचोर, सिन्धचोर
अधोजानु(न०)-घुटनेका नीचे का भाग
अधोपहास(पु०)-मैथुन।
अधस्तन(वि०)-नीचे का, अधःस्थित, पहिले का।
अधस्तल(न०)-नीचे की सतह।
अधस्तात्(अ०)-नीचे की ओर, नीचेसे
अधःपतन(न०)-गिरावट, नाश।
अधःपद(न०)-पैरके नीचे की जगह।
अधःपात(पु०)-अधःपतन, नाश, क्षय।
अधोभक्त(न०)-पानी या दवा की खूराक जो भोजन के पश्चात् खाई जावे।
अधोभाग(पु०)-शरीर के नीचे का भाग, निम्नस्थ हिस्सा।
अधोभू(स्त्री०)-नीचे की भूमि, तराई
अधोमुख(वि०)-नीचे को मुख किये हुए
अधोवदन(वि०)-नीचेको मुंह किये हुए
अधःस्थित(वि०)-नीचे स्थित। [वृक्ष
अधामार्गव(पु०)-अपामार्ग, घामार्गव
अधारणक(वि०)-जो लाभदायक न हो
अधार्मिक(वि०)-अधर्मी, अधर्मात्मा पापी।
अधि(अ०)-ऐश्वर्य, अधिकार, व्याप्ति उपरिभाग, अधिक। पु०-मन की पीड़ा, आधि।
अधिक(वि०)-अनेक, ज्यादह, अतिरिक्त। न०-काव्यालंकारभेद।
अधिकतिथि(स्त्री०)--चन्द्रमास में बढ़ी हुई तिथि।
अधिकरण(न०)-आश्रय, अधिकरण नामक कारक, अदालत।

अधिकरणी(पु०)-निरीक्षक [जज।
अधिकरणभोजक(पु०)-न्यायाधीश,
अधिकरणमण्डप(पु०)--जजकाकमरा वा अदालत का मकान।
अधिकरणविचाल(पु०)-एककोअनेक बनाना वा अनेक को एक बनाना
अधिकरणिक(पु०)-जज, मेजिस्ट्रेट, सरकारी अफसर।
अधिकरण्य(न०)-अधिकार, शक्ति।
अधिकवाक्योक्ति(स्त्री०)-बढ़ावा, बढ़ाकर कहना। [वाला।
अधिकर्द्धि(वि०)-समृद्ध, बहुत सम्पत्ति
अधिकर्मन्(न०)-उच्चकार्य, वा उत्तम काम, निरीक्षण। पु० सुपरिण्टैण्डेण्ट, निरीक्षक।
अधिकर्मकर(पु०)--मजूरों का ओवरसीयर, मेट। [सीयर।
अधिकर्मकृत(पु०)--मेट या ओवर-
अधिकार्मिक(पु०)--हट्टाध्यक्ष, बाज़ार का दारोगा।
अधिकांग(वि०)--जिस के कोई अंग अधिक हो। न०-पेटी, जो कोटके ऊपर पहिनी जाती है।
अधिकाधिक(वि०)--बहुत २. एक से एक बढ़ कर। [कामना।
अधिकाम(वि०)--कामी। पु०--दृढ़
अधिकार(पु०)--स्वामित्व, निरीक्षण, कर्त्तव्य, पद, धर्म, हकूमत, हक़।
अधिकारवत(वि०)--अधिकारी का पर्य्यायवाची।
अधिकारविधि(पु०)--कर्म से उसका फल भोगनेवाले को बताने हारी विधि। [अधिकार पर अधिष्ठित।
अधिकारस्थ(वि०)--अधिकारयुक्त,
अधिकाराढ्य(वि०)-अधिकारस्थ का पर्य्यायवाची।
अधिकारिन् [री] (पु०)--अधिकारयुक्त, प्रभु, स्वामी, अधिपति, स्वत्ववान्, वेदान्तशास्त्र का जानने वाला।
अधिकारिणी(स्त्री०)-स्वामिनी, अधिकारयुक्ता।
अधिकारिता(स्त्री०)--अधिकारी होने का गुण, अधिकार।
अधिकारित्व(न०)--अधिकारिता का पर्य्यायवाची।
अधिकार्थ(वि०)--बढ़ाया हुआ।
अधिकृ (धा० उ०)--अधिकार देना, निरीक्षण करना, रुकना।
अधिकृत(पु०)--अध्यक्ष, आयव्यय-निरीक्षक। वि०-अधिकार में किया हुआ, अधिकारयुक्त। [स्वत्व।
अधिकृति(स्त्री०)--अधिकार, हक़,
अधिकृत्य (अ०)--बाबत, लगाव से, विषय में। [करना।
अधिक्रम् (धा० उ०)-चढ़ना, हमला
अधिक्रम(पु०)-आक्रमण, हमला।
अधिक्रमण(न०)--आक्रमण, हमला।
अधिक्षिप्(धा०उ०)-गाली देना, अपमान करना, धमकाना।
अधिक्षेप(पु०)-गाली, अपमान, बरखास्तगी।
अधिगत(वि०)--हासिल किया हुआ सीखा हुआ, जाना हुआ, प्राप्त।

अधिगम्(धा०प०)-हासिल करना, प्राप्त करना, पास पहुंचना।
अधिगम(पु०)-प्राप्ति, अध्ययन, ज्ञान, लाभ, समागम। [वाची।
अधिगमन(न०)-अधिगमका पर्य्याय-
अधिगम्य(वि०)-प्राप्ति के योग्य।
अधिगमनीय(वि०)-प्राप्तियोग्य।
अधिगन्तव्य(वि०)-प्राप्तियोग्य।
अधिगन्तृ[न्ता] (वि०)--प्राप्ति करने वाला।
अधिगत(वि०)-गौसे प्राप्त कियाहुआ।
अधिगुण(वि०)-उत्तम गुणों वाला, योग्य, गुणनिधान। पु०-उत्तमगुण।
अधिचर्(धा०प०)-किसी वस्तु पर चलना। [चलने का कृत्य।
अधिचरण(न०)-किसी वस्तु के ऊपर
अधिजनन(न०)-जन्म, पैदायश।
अधिजिह्व(पु०)-सांप। [धनुष]
अधिज्य(वि०)-चढ़ा हुआ, तना हुआ
अधित्यका(स्त्री०)-टेबिललैण्ड, ऊंची भूमि।
अधिदण्डनेता(पु०)-यम का नाम।
अधिदन्त(पु०)-दांत के ऊपर दूसरा उगा हुआ दांत।
अधिदार्व(वि०)-लकड़ी का।
अधिदेव-ता--अधिष्ठातृदेव या देवता परमात्मा। [या तट्टा।
अधिदेवन(न०)-जुआ खेलने की मेज़
अधिदैवत (न०)-अधिष्ठातृदेवता, ईश्वर। [ईश्वर।
अधिनाथ(पु०)-सब से बड़ा स्वामी,
अधिनाथ(पु०)-सुगन्धि, सुगन्ध।
अधिनिर्णिज्(वि०)-ढका हुआ, परदा पड़ा हुआ।
अधिनी(धा०प०)-बढ़ाना, लेजाना, अधिनायकता करना।
अधिप(पु०) -स्वामी, अधिपति, राजा
अधिपति(पु०)--प्रभु, स्वामी। [धिका।
अधिपत्नी(स्त्री०)--स्वामिनी, स्त्री शा-
अधिपुरुष[पूरुष] (पु०)--परमात्मा, ब्रह्म।
अधिपेषण(न०)-पीसना।
अधिप्रज(वि०)--बहुत बच्चों वाला।
अधिभू(पु०)--स्वामी, प्रभु।
अधिभूत(न०)--व्यापक, परमात्मा।
अधिभोजन(न०)--अधिक भोजन।
अधिमन्थ(पु०)--अधिकमन्थन, बहुत बिलोना, एक प्रकार का नेत्ररोग।
अधिमन्थित (वि०)--चक्षुरोग से पीड़ित। [का रोग।
अधिमांस(पु०)--आंखों का एक प्रकार
अधिमांसक(पु०)--दन्तरोगविशेष।
अधिमात्र(वि०)--मात्रा से अधिक, अतिशयित। [मलमास।
अधिमास(पु०)--लौंद का महीना,
अधिमुक्ति(स्त्री०)--विश्वास, भरोसा
अधियज्ञ(वि०)--यज्ञसम्बन्धी। पु०--मुख्ययज्ञ।
अधियोग(पु०)-मुहूर्त।
अधियोध(पु०)--अग्रणी योद्धा।
अधिरथ(वि०)--रथ पर चढ़ा हुआ। पु०--सारथि, रथवान्, कर्ण के पिता का नाम।

अधिराज(पु०)-सम्राट्, चक्रवर्ती राजा। [साम्राज्य, शाहंशाही।
अधिराज्य-राष्ट्र(न०)--चक्रवर्त्तित्व,
अधिराट्[ज] (पु०)-सम्राट्, शाहंशाह
अधिरुक्म(वि०)-आभूषणों वाला।
अधिरुह्(धा० प०)--चढ़ना, खींचना, उगना।
अधिरूढ(वि०)-चढ़ा हुआ, आरूढ़, बढ़ा हुआ। [करने का काम।
अधिरोपण(न०)-चढ़ाने या उच्चपदस्थ
अधिरोह(पु०)-हाथी का सवार।
अधिरोहण(न०)-चढ़ाना, चढ़ना, उपरिगति। [निःश्रेणी।
अधिरोहणी-हिणी (स्त्री०)-सीढ़ी,
अधिरोही(वि०)-ऊपरको चढ़ने वाला
अधिवच्(धा०प०)-वकालत करना।
अधिवक्ता(पु०)-वकील, वाग्मी।
अधिवचन(न०)-वकालत, पक्षपात-पूर्वक कथन, उपनाम। [वचन।
अधिवाक(पु०)-वकालत, पक्षपात-
अधिवस्(धा० प०)--बसना, आबाद होना, पहिरना।
अधिवस्त्र(वि०)--कपड़ों से ढका हुआ
अधिवास(पु०) -रहने का स्थान, मकान, पड़ौसी, रहने वाला।
अधिवास्(धा०प०)--सुगन्धि देना।
अधिवासन(न०) -रहना, सुगन्धियों से संस्कृत करना, मूर्त्ति की प्रतिष्ठा
अधिवासित(वि०)--सुगन्धि देनेवाला, रहने वाला। [वस्त्रयुक्त।
अधिवासित(वि०)--सुगन्धियुक्त,
अधिवाहन(न०)--ले आना।

अधिविकर्त्तन(न०)--बीच में से फाड़ना। [दूसरा विवाह करना
अधिविद्(धा०उ०)--भार्या होते हुए
अधिवेत्ता(पु०)--एक स्त्रीके होते हुए दूसरी स्त्री को व्याहने वाला पति
अधिवेदः-नम्-एक से अधिक विवाह करना। [सोना।
अधिशी (धा० आ०)--लेटना, ऊपर
अधिश्रि(धा०उ०) ऊपर सोना,ऊपर रखना।
अधिश्रय(पु०)--आश्रय, उबालना।
अधिश्रयण(न०)--उबालना, हांडी को आग पर चढ़ाना।
अधिश्री(वि०) -उच्चपद वाला, बहुत अमीर, प्रभु।
अधिष्ठा(धा०प०)-ऊपर बैठना,अन्दर या ऊपर खड़ा होना, अधिकार जमाना, रहना, पकड़ना।
अधिष्ठान(न०)--नगर, चक्र, प्रभाव, अध्यासन। [रक्षक, प्रबन्धक।
अधिष्ठातृ(वि०) -निरीक्षक, सर्दार,
अधिष्ठित(वि०)--बैठा हुआ, अधिकारयुक्त, अवस्थित।
अधिष्ठाता(पु०)--त्री(स्त्री०)प्रबन्धकर्त्ता या कर्त्री, निरीक्षक,निरीक्षिका।
अधिस्त्री(स्त्री०)--उच्चपदस्थ स्त्री।
अधिस्पर्द्धं(अ०)--बहुत तेजी से।
अधी[अधि+इ] (धा० आ०)--पढ़ना, कण्ठस्थ करना, अध्ययन करना
अधीकार(पु०) -अधिकार।
अधीत(वि०)-सीखा हुआ,पढ़ा हुआ, याद किया हुआ।

अधीतविद्य(वि०)--जिस ने अपना पाठकार्य समाप्त करलिया हो।
अधीति(स्त्री०)-पठन, अध्ययन, याद करना।
अधीतिन्(वि०)-पढने वाला, जिस ने पढ़ने का कार्य कर लिया हो।
अधीन(वि०)-परवश, परतन्त्र।
अधीर(वि०)-डरपोक, घबराया हुआ, चंचल, कातर।
अधीरा(स्त्री०)-विद्युत, बिजली।
अधीयान(पु०)-शिक्षार्थी, वेदपाठी।
अधीवास(पु०)-चोगा, वस्त्रविशेष।
अधीश(पु०)-अधिपति, प्रभु।
अधीश्वर(पु०)-महाराज, चक्रवर्त्ती, जैनियों के एक तीर्थंकर।
अधीश्वरी(स्त्री०)-स्वामिनी।
अधीष्ट(वि०)-आनरेरी, अवैतनिक। पु०-आनरेरीपद।
अधुत(वि०)-अकम्पित।
अधुना(अ०)-अब, इस समय।
अधुनातन(वि०)-हाल का, इस समय का, इदानीन्तन।
अधुर(वि०)-भाररहित, भारसे मुक्त।
अधूमक(वि०)-धूमरहित, विना धुएं का। [किया हुआ, वेक़ायू।
अधृत(पु०)-विष्णु। वि०-न धारण
अधृति(स्त्री०) धृति वा धैर्यका अभाव, चंचलता, असुख। [प्रशांत, शालीन
अधृष्ट(वि०)-लज्जावान्, अजेय,
अधृष्य(वि०)-अजेय, जिस पर आक्रमण न हो सके, घमंडी, लज्जायुक्त।
अधेनु(स्त्री०)भइगाय जो दूध न देती हो
अधैर्य(वि०)-धैर्यहीन, न०-धैर्याभाव।
अध्यय(पु०)-शिक्षा, पाठ, याद करना
अध्ययन(न०)-पढ़ना, शिक्षा, पाठकार्य
अध्यक्ष(वि०)-दिखाई देने वाला, दृष्टिगत। पु०-निरीक्षक, प्रधान, प्रभु, स्वामी।
अध्यधीन(वि०)-बिलकुलआधीन, दास
अध्यर्द्ध(पु०)-वायु, आंधी। वि०-अधिक आधा रखने वाला।
अध्यवसो(धा०प०)-निश्चय करना, इरादा करना, यत्न करना, सोचना।
अध्यवसान(न०)-यत्न, इरादा।
अध्यवसाय(पु०)-प्रयत्न, कोशिश, इरादा, धैर्य, परिश्रम। [नती।
अध्यवसायिन्(वि०)-परिश्रमी, मेह-
अध्यवसित(वि०)-यत्न किया हुआ, निश्चययुक्त।
अध्यशन(वि०)-बहुत खाना। [हड्डी।
अध्यस्थि(न०)-हड्डी पर उगने वाली
अध्यस्त(वि०)-ऊपर रक्खा हुआ, नियुक्त।
अध्याक्रम्(धा०उ०)--अधिकार करना, आक्रमण करना, दबाना। [हुआ।
अध्याक्रान्त(वि०)-अधिकृत किया
अध्यात्म(वि०)-आत्मा से सम्बन्ध रखने वाला, व्यक्ति से सम्बन्ध रखने वाला। न०-ब्रह्म।
अध्यात्मिक(वि०)-अध्यात्म का पर्यायवाची।
अध्यात्मज्ञान-विद्या-आत्मा और

परमात्मा का ज्ञान, उपनिषदों की विद्या।
अध्यात्मदृश्-विद्-(वि०)-अध्यात्म विद्या का जानने वाला।
अध्यात्मयोग(पु०)-चित्तवृत्तियों को आत्मा के ऊपर लगाना।
अध्यात्मरामायण(न०)-एक रामचरित का नाम।
अध्यापक(पु०)-शिक्षक,गुरु,वेदशिक्षक
अध्यापन(न०)-शिक्षा, पढ़ाना।
अध्याय(पु०)-पढ़ना, सीखना, अध्ययन।
अध्यायिन्(वि०)-शिक्षार्थी।
अध्यारुह्(धा०प०)-ऊपर चढ़ना।
अध्यारूढ(वि०)-ऊपर चढ़ा हुआ।
अध्यारोप(वि०)-ऊपर चढ़ाने का कार्य, अन्यथा ज्ञान। [बोना।
अध्यारोपण(न०)-ऊपर चढ़ाना,
अध्यावाप(पु०)-बोने का कृत्य।
अध्यावाहनिक(न०)-स्त्रीधनविशेष।
अध्यास्(धा० आ०)- नीचे लेटना, से करना, अधिकार करना, रहना
अध्यासन(न०)-बैठने का स्थान, बैठने का कृत्य, अधिकार।
अध्यास(पु०)-झूठा अनुमान, मिथ्या आरोपण।
अध्यासित(वि०)-अधिष्ठित,आश्रित, आसरा दिया गया। [ऊहा।
अध्याहरण--हारः-तर्कना,अनुमान, ऊहा। [हुआ।
अध्युषित(वि०)-निवेशित, आबाद
अध्युष्ट्र(पु०)-ऊंटगाड़ी।
अध्यूढ(वि०)-सम्पन्न, ऊंचा हुआ, बहुत। पु०-शिव।
अध्यूध्नी(स्त्री०)-मोटे थनोंवालीगाय
अध्यूह्(धा०उ०)-ऊपर रखना, ऊपर उठाना।
अध्येता(पु०)-शिक्षार्थी, विद्यार्थी।
अध्येत्री(स्त्री०)-शिक्षार्थिनी, विद्यार्थिनी।
अध्येषणा(स्त्री०)-प्रार्थना, निवेदन।
अध्रि (वि०)-बेकाबू, जो रोका न जा सके। [वाला।
अध्रिगु-गु(वि०)-अप्रतिहत गति
अध्रिपुष्पिका(स्त्री०)-पानकी बेल
अध्रियमाण(वि०)-अजीवित, मृत, अप्रतिहत।
अध्रुव(वि०)-अनिश्चित, संदिग्ध,चर, गतिशील। न०-अनिश्चयता।
अध्वग(पु०)-पथिक,ऊंट,सूर्य,खच्चर।
अध्वगत(पु०)-मुसाफिर।
अध्वगभोग्य(पु०)-आम्रातक वृक्ष।
अध्वगा(स्त्री०) गंगा। [वृक्ष।
अध्वजा(स्त्री०)-स्वर्णजुही नामक
अध्वन् [ध्वा] (पु०)-रास्ता, सड़क मार्ग। [पु०-पथिक।
अध्वनीन(वि०)-सफ़र करने के योग्य
अध्वन्य(वि०)-यात्रा करने के योग्य पु० पथिक।
अध्वर(वि०)-जो टेढ़ा न हो, असत, ध्यानस्थ, चंगा, सावधान। पु०-यज्ञ। अन्त्री-आकाश या वायु, वसुभेद। [यज्ञ।
अध्वरकल्पा(स्त्री०)-काम्येष्टियाग

अध्वरग(वि०)–यज्ञनिमित्त ।

अध्वर्यु(पु०)--यज्ञ कराने वाला, यजुर्वेद का ज्ञाता ।

अध्वर्युवेद(पु०)–यजुर्वेद ।

अध्वशल्य(पु०)–अपामार्ग ।

अध्वस्मन्(वि०)--न नाश होने वाला ।

अध्वा(पु०)-[अध्वन् का विकृतरूप]--मार्ग, काल, आकाश ।

अध्वान्त(न०)–सन्ध्या समय का प्रकाश, अन्धियारा, हलका अन्धियारा । पु०-यात्रा का अन्त ।

अध्वान्तशात्रव (पु०)–श्योनाक नामक वृक्ष ।

अन्(पु०)–आत्मा ।

अन्(धा०प०)–सांस लेना, जीना, हरकत करना ।

अन(पु०)–श्वास [सांस] ।

अनन(न०)–सांस लेने वा जीने का काम

अनंश(वि०)–दायभाग का अनधिकारी, अंशहीन, अविभक्त ।

अनंशुमत्फला(स्त्री०)--केले का वृक्ष ।

अनक(वि०)–नीच, अधम ।

अनक्ष्(वि०)--दृष्टिहीन, अन्धा ।

अनक्ष(वि०)--दृष्टिहीन, अन्धा ।

अनकस्मात(अ०)–अचानक नहीं ।

अनक्षर(वि०)–बोलने के अयोग्य, गूंगा, अशिक्षित । न०--गाली गलौच ।

अनक्षि(न०)--खराब आंख, दुर्बल दृष्टि

अनगार(वि०)--गृहहीन । पु०–वानप्रस्थी, ऋषि, मुनि ।

अनग्नि(पु०)--अग्नि का अभाव, अग्नि से भिन्न द्रव्य । वि०--जिस में अग्नि की आवश्यकता न हो, अनाहिताग्नि ।

अनघ(वि०)--पापहीन, बेक़सूर, पवित्र पु०–विष्णु का नाम ।

अनङ्कुश(वि०)–बेक़ाबू, हठी ।

अनंग(वि०)--देहहीन, आकाररहित, देह से भिन्न । पु०–मदन, कामदेव । न०-आकाश, मन ।

अनंगक(न०)–चित्त, मन ।

अनंगक्रीड़ा(स्त्री०)–रति, सम्भोग ।

अनङ्गज(वि०)–प्रेम उत्पन्न करनेवाला

अनंगलेख(पु०)–प्रेमपत्र ।

अनंगशत्रु(पु०)--शिव का नाम ।

अनंगवती(स्त्री०)--कामवती, कामिनी ।

अनंगशेखर(पु०)–छन्दोभेद ।

अनंगुरि-लि(वि०)–उंगलियों से रहित

अनच्छ(वि०)–मैला, अस्वच्छ ।

अनजका(स्त्री०)--दुःखी, वा छोटा बकरा ।

अनंजन(वि०)–अंजनरहित, दोषहीन, बेदाग, निःसम्बन्ध । न०-आकाश, परब्रह्म ।

अनडुह्(पु०)--बैल, सांड ।

अनडुही--ड्वाही(स्त्री०)–गाय ।

अनडुत्क(वि०)--बैलोंवाला ।

अनडुह(पु०)–एक ऋषि का नाम ।

अनणु(वि०)–जो छोटा वा बारीक न हो ।

अनति(अ०)--बहुत अधिक नहीं ।

अनद्य(पु०)--सफेद सरसों ।

अनद्यतन(वि०) -जो आज का न हो।
अनधिक(वि०)--जो अधिक न हो।
अनधिकार(पु०)-अधिकार का अभाव
अनधिकारचर्चा(स्त्री०)- बेजा दखल देना।
अनधिकारिन्(वि०)-जो अधिकारी न हो।
अनधिगत(वि०)-अप्राप्त, अपठित, अनधीत।
अनधिगतशास्त्र(वि०)-जिसने शास्त्र न पढ़े हों।
अनधीन(वि०)-स्वतन्त्र।
अनध्यक्ष(वि०)-अध्यक्षहीन,जो दि-खलाई न देता हो, अप्रत्यक्ष।
अनध्ययन(न०)--अध्ययन न करना, छुट्टी का दिन।
अनध्याय(पु०)--छुट्टी का दिन।
अनवभावुक(वि०)--समझने के अ-योग्य।
अनवभाषण(न०)-फिरसेनदोहराना
अनन्त(वि०)—अन्तहीन, असीम, नित्य। पु०- विष्णु का नाम, बादल। न०-आकाश, नित्यता, मोक्ष।
अनन्तक(वि०)-अन्तहीन, नित्य।
अनन्तग(वि०)-सर्वदा चलने वाला।
अनन्तचतुर्दशी (स्त्री०)-भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी। [एक तीर्थंकर।
अनन्तजित्(पु०)-वासुदेव का नाम,
अनन्तदृष्टि(पु०)—शिव या इन्द्र का नाम। [नारायण का नाम।
अनन्तदेव(पु०)-शेषनाग का नाम,
अनन्तपार(वि०)—असीम, तटरहित।
अनन्तवत्(वि०)—असीम, नित्य।
अनन्तवात(पु०)—शिरसम्बन्धी एक रोग। [फट।
अनन्तवीर्य(पु०) तेईसवां जैन तीर्थं-
अनन्तव्रत(न०)—अनन्तचतुर्दशी।
अनन्तशक्ति(वि०)—असीम शक्ति-वाला, सर्वशक्तिमान्।
अनन्तशीर्ष(पु०)-विष्णु का नाम।
अनन्तशीर्षा(स्त्री०)-वासुकिपत्नी।
अनन्तश्री(वि०) असीमशोभावाला।
अनन्ता(स्त्री)-पार्वती, पृथिवी,श्या-मालता,दूर्वा,पीपली,एक का अंक।
अनन्तात्मा(पु०)-परब्रह्म।
अनन्त्य(वि०)-असीम, लातादाद। न०-नित्यता!
अनन्तर(वि०)-अन्तरहीन, सीमा-रहित। न०-समीपता, ब्रह्म।
अनन्तरम्(अ०)-तुरन्त बाद में, तत्पश्चात्, उपरान्त।
अनन्द(वि०)-अप्रसन्न।
अनन्न(न०)-खाने के अयोग्य वस्तु।
अनन्य(वि०) अभिन्न, वही, एक ही, अनुपम, अविभक्त।
अनन्यगति(स्त्री०)-केवल एकहीगति।
अनन्यज(पु०)-कामदेव। [रमा।
अनन्यदेव(पु०)-सर्वोत्तमदेव परमा-
अनन्यपूर्व(पु०)-जिस के दूसरी स्त्री न हो। [वाहिता।
अनन्यपूर्वा(स्त्री०)-कुमारी, अवि-
अनन्यसदृश(वि०)-अद्वितीय,अनुपम, बेजोड़। [-हो।
अनप(वि०)-जिस में बहुत पानी न

अनपकार(पु०)-अपकार का अभाव।
अनपकारिन्(वि०)-बेक़सूर, अपकार न करने वाला।
अनपत्य(वि०)-सन्तानहीन।
अनपत्रप(वि०)-बेशर्म। [हीन।
अनपर(वि०)-द्वितीयहीन, अनुपायि-
अनपराध-धिन् वि०)-बेक़सूर, अपराधहीन। बेज़रर।
अनपराध(पु०)-बेक़सूरी, अपराधहीनता।
अनपाय(वि०)-अपाय [नाश] से मुक्त, न नाश होने वाला, कम न होने वाला। पु०-शिव का नाम।
अनपायिन्(वि०)-मज़बूत,एकरस,नाश न होने वाला, अनश्वर।
अनपेक्ष-पेक्षिन्(वि०)-बेफ़िक्र, अपेक्षा न रखनेवाला, निष्पक्ष।
अनपेक्षा(स्त्री०)-अपेक्षा का अभाव, उदासीनता, अचिन्तता।
अनपेक्षित(वि०)-जो अपेक्षित न हो, जिस की परवाह न हो।
अनपेक्ष्य(वि०)-जिसे किसी की परवाह न हो।
अनपेत(वि०)-अनतीत,न बीता हुआ
अनप्सरस्-रा(स्त्री०)-जो अप्सरा न हो। [नावाक़िफ़।
अनभिज्ञ(वि०)-मूर्ख, बुद्धिहीन,
अनभिलाप(वि०)-अभिलाषशून्य। पु०-अनिच्छा, अरुचि।
अनभिसन्धान(न०)-इरादे का अभाव
अनभिहित(वि०)-न कहा हुआ। पु०-गोत्र के सरदार का नाम।
अनभ्यावृत्ति(स्त्री०)-आवृत्ति [दोहराना] का अभाव।
अनभ्याश-स(वि०)-अनिकट, दूर।
अनभ्र(वि०)-मेघरहित।
अनम(पु०)-ब्राह्मण।
अनमितपच(वि०)-कृपण, कंजूस।
अनमित्र(वि०)-जिस का कोई शत्रु न हो। [संन्यासी।
अनम्बर(वि०)-वस्त्रहीन। पु०-बौद्ध
अनम्र(वि०)-घमण्डी,मग़रूर,असाधु।
अनय(पु०)-दैव, अशुभ, व्यसन,विपद्
अनरण्य(पु०)-अयोध्या के एक राजा का नाम।
अनर्गल(वि०)--निरर्गल,अबाध, निरंकुश, उद्दाम।
अनर्घ(वि०)--अमूल्य, बेशक़ीमत। पु०--अन्यथा या ग़लत मूल्य।
अनर्घत्व-ता--अमूल्यता, बेशक़ीमती
अनर्घ्य(वि०)--बेशक़ीमत, अतिपूजनीय।
अनर्थ(वि०)--निकम्मा, बेकार, दुःखी भाग्यहीन, हानिकर, बुरा। पु०--निकम्मापन,निकम्मी वस्तु, विपद्, ख़तरा, बेहूदगी, विष्णु का नाम।
अनर्थक-र्थ्य(वि०)-निकम्मा, निरर्थक, अर्थशून्य।
अनर्थकार(वि०)--हानिकर,बेफ़ायदा।
अनर्थकरी(स्त्री०)--हानिकरने वाली
अनर्थनाशी(पु०)--शिव का नाम।
अनर्वन्(वि०)--अद्वितीय, जिसके कोई घोड़ा न हो।

अनर्ह(वि०)–अयोग्य,बेमौजूं,नाकाफी अनधिकारी ।
अनल(पु०)–अग्नि, वायु, पांचवांवसु, वासुदेव, चित्रक आदि का नाम, रकार, तीन का अंक, जीव, परमात्मा, विष्णु । [नाशक ।
अनलद(वि०)–अग्निनाशक, ताप-
अनलप्रभा(स्त्री०)–ज्योतिष्मतीनाम पौदा । [अग्नि की स्त्री ।
अनलप्रिया(स्त्री०)--स्वाहा नामक
अनलसाद(पु०)--भूख का कम होना ।
अनलस(वि०)--जो सुस्त न हो,कार्यशील, मेहनती ।
अनलि(पु०)--बकवृक्ष ।
अनल्प(वि०)–बहुत, अधिक ।
अनवकाश(वि०)--जिसे फुरसत न हो । पु०--अवकाश का अभाव ।
अनवग्रह(वि०)–बेक़ाबू , बेलगाम ।
अनवच्छिन्न(वि०)--अबद्ध,अच्छिन्न, लगातार, असीम । [तराज़ ।
अनवद्य(वि०)--बेदाग़, नाक़ाबिले ऐ-
अनवद्राण(वि०)--तन्द्राहीन,सुप्तिहीन ।
अनवधान(न०)--चित्त का अविक्षेप, अमनोयोग, अप्रणिधान । वि०--बेतवज्जह ।
अनवधानता(स्त्री०)–प्रमाद मनोयोग का अभाव ।
अनवधि(वि०)--लातादाद,असीम ।
अनवभ्र(वि०)–अपभ्रंशशून्य, कम न हुआ हुआ ।
अनवम(वि०)--उच्च, ऊंचा,सर्वश्रेष्ठ ।
अनवर(वि०)--अन्यून, श्रेष्ठ, प्रधान ।
अनवरत(वि०)–निरन्तर, नित्य, अश्रान्त ।
अनवरतम् अ०–सततम् , हमेशा ।
अनवराध्य(वि०)--सर्वोत्तम,सर्वश्रेष्ठ ।
अनवलम्बन (वि०)--अवलम्बनहीन, स्वतन्त्र । पु०--स्वतन्त्रता ।
अनवसर(वि०)--नाग़ुज़ल, बेसमय, असङ्गत ।
अनवसान(वि०)--अन्तहीन, अमर ।
अनवसित(वि०)-असमाप्त,अनिश्चित
अनवस्कर(वि०)--स्वच्छ, धूलिरहित
अनवस्थ(वि०)--चंचल, अनिश्चित ।
अनवस्था(स्त्री०)--तर्कविशेष, दशाभाव, स्थिति का अभाव, गड़बड़
अनवस्थान(वि०)--चपल, अनिश्चित पु०--वायु । न०--चंचलता, अनिश्चय ।
अनवस्थित(वि०)–चंचलस्वभाव, व्यभिचारी, बदला हुआ, ठहरने में असमर्थ । [रता, अधैर्य ।
अनवस्थिति(स्त्री०)–चापल्य, अस्थि-
अनवाय(वि०)–निरवयव, अंगहीन ।
अनवेक्षक(वि०)-चिन्ताहीन,उदासीन।
अनवेक्षा(स्त्री०)–अनपेक्षा, उदासीनता ।

अनश्वर(वि०)–नाश न होने वाला सनातन, ध्रुव [स्त्री० में अनश्वरी रूप होता है]।
अनसु(न०)–छकड़ा, पके हुए चावल, अन्न।
अनसूय(वि०)–असूया से रहित,द्वेषहीन।
अनुसूयक(वि)–पूर्ववत्।
अनसूया(स्त्री०)--असूया का अभाव, द्वेषहीनता या शकुन्तला की एक सखी का नाम, अत्रि मुनि की स्त्री का नाम जो कर्दम मुनि की कन्या थी और जो पातिव्रत्य के लिये अत्यन्त प्रसिद्ध है।
अनस्थ-स्थिक(वि०)--अस्थिहीन। पु०--अस्थिहीन अंग।
अनह्न(न०)--बुरा या अशुभ दिन।
अनहंवादी[न] (वि०)--गर्वरहित, अहंकारशून्य।
अनहंकृति (स्त्री०)--अहंकार का अभाव, अबोध।
अनाकार(वि०)--आकाररहित, परब्रह्म का विशेषण।
अनाकाल(पु०) -असंगत समय,दुर्भिक्ष
अनाकाश(वि०)--जो स्वच्छ न हो। अस्त्री०--जो आकाश न हो।
अनाकुल(वि०) -एकाग्र, अव्याकुल।
अनाक्रान्त(वि०)--जिस पर आक्रमण न हुआ हो।
अनाक्रान्ता(स्त्री०)--कटकारी नामक वृक्ष।
अनाग(वि०)--पापरहित।
अनागा(स्त्री०)--एक नदी का नाम।
अनागत(वि०)-न आया हुआ,भावी, अनुपस्थित, भविष्यत्।
अनागतार्तवा(स्त्री०)--ऐसी कन्या जिस के रजोदर्शन का काल अभी न आया हो।
अनागति(स्त्री०)-आगमन का अभाव, अप्राप्ति, न पहुंचना।
अनागम(वि०)--न आया हुआ, अनुपस्थित। पु०--अप्राप्ति।
अनागम्य(वि०)--अगम्य, जिसके पास न पहुंचा जा सके।
अनागामुक(वि०)-जिसके वापिस आने की आशा न हो।
अनागस् वि०–बेदाग, अकल्मष।
अनाचार (वि०)–आचारहीन। पु० आचारहीनता,अनाचरण, अशुद्धाचार।
अनाज्ञात(वि)–अज्ञात,अन्यथा ज्ञात।
अनातप(वि०)–उष्णता से रहित। पु० छाया, ठण्ड।
अनातुर(वि०)--अरोगी,न थका हुआ स्वस्थ, आतुरतारहित।
अनात्मा(पु०)--आत्मा से भिन्न,शरीर।
अनात्मक(वि०)--अवास्तविक,क्षणिक
अनात्मज्ञ(वि०)--आत्मज्ञान से रहित, अज्ञानी।
अनात्म्य(वि०)--अशरीर।
अनाथ(वि०)--प्रभुहीन, नाथशून्य। यतीम।
अनाथपिण्डद(पु०)--अनाथपालक।
अनाथसभा(स्त्री०)--अनाथालय।
अनादर(पु०)--निरादर, अवज्ञा, अवमानना।

अनादरण(न०)-अपमानजनक व्यवहार, बेमुधि।
अनादरिन्(वि०)--अवमाननाकारी।
अनादि(वि०)--आदिरहित, उत्पत्तिशून्य, स्वयंभू, कारणहीन।
अनाद्यन्त(वि०)--आदि अन्त रहित, नित्य। पु०--शिव का नाम।
अनादिता-त्वम्--उत्पत्तिशून्यता।
अनादिमत(वि०)-जिसकेकोई आदि न हो।
अनादीनव(वि०)-बेकसूर, बेदाग।
अनादृत(वि०)-तिरस्कृत, उदासीन। न०-अपमान, बेइज्जती।
अनादेय(वि०)-स्वीकार या प्रविष्ट करने के अयोग्य, न लेने योग्य।
अनादेश(पु०)-आदेश वा आज्ञा का अभाव। [योग्य।
अनाद्य(वि०)-आदिरहित, न खाने
अनाधार(वि०)-आधाररहित, अनवलम्ब। [रहित।
अनाधि(वि०)-मानसिक पीड़ा से
अनाधृष्ट-ष्य(वि०)-अजेय,अनवरुद्ध।
अनापद्(स्त्री०)-आपत्ति का अभाव।
अनापि(वि०)-मित्रहीन,बिना बन्धुओं का।
अनाप्त(वि०)-असमाप्त, अयोग्य। पु०-अजनबी।
अनाप्ति(स्त्री०)-असमाप्ति।
अनामन्[मा](वि०)-नामरहित,अप्रसिद्ध। पु०-अनामिका उंगली। न०-अर्शोरोग।
अनामक(वि०)-अप्रसिद्ध,नामरहित।
अनामिका(स्त्री०)-कनिष्ठा के पास की उङ्गली, छल्ला आदि जिस में पहने जाते हैं।
अनामय(वि०)-रोगरहित, स्वस्थ। अस्त्री०-आरोग्य, तन्दुरुस्ती।
अनामिष(वि०)-मांसरहित, लाभरहित।
अनामृण(वि०)-हिंसकरहित।
अनामृत(वि०)-कभी न मरने वाला।
अनायक(वि०)-नेतारहित, गड़बड़ में फंसा हुआ।
अनायत(वि०)-जो लम्बा न हो,अनाधार,अनवरुद्ध। [भूत, स्वतन्त्र।
अनायत्त(वि०)-अनधीन, अवशी-
अनायत्न(वि०)-एकान्त, निश्चल।
अनायास(वि०)-जो कठिन न हो, आसान। पु०-अक्लेश,यत्नाभाव।
अनायासकृत(वि०)-आसानी से किया हुआ,बिना यत्न के किया हुआ। [तुरन्त।
अनायासेन(क्रि० वि०)-आसानी से,
अनायुष्य(वि०)-दीर्घायु को हानि पहुंचाने वाला जैसे अधिकभोजन, मैथुन इत्यादि।
अनारत(वि०)-अनवरत, लगातार, सतत, नित्य।
अनारम्भ(पु०)-आरम्भ का अभाव।
अनारभ्य(वि०)-आरम्भ करने के अयोग्य। अ०-आरम्भ किये बिना।
अनारम्भण(वि०)-अनालम्बन, अनाधार। [कारक।
अनारोग्य(वि०)-आरोग्य को हानि-

अनार्जव(वि०)-बेईमान, कुटिल । न०-रोग, धोखा ।

अनार्तव(वि०)-अनवसर, बेमौके ।

अनार्तवा(स्त्री०)-अप्राप्तवयस्का, रजोदर्शन से हीन ।

अनार्य(वि०)-अश्रेष्ठ, गंवार, आर्य से भिन्न । पु०-जो आर्य न हो, शूद्र, म्लेच्छ ।

अनार्यक(न०)-अगरु काष्ठ ।

अनार्यकर्मिन्(वि०)-आर्य के समान आचार न करने वाला ।

अनार्यज(वि०)-नीचकुलोत्पन्न ।

अनार्यजुष्ट(वि०)-आर्य या श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा न किया हुआ, आर्यों से त्याज्य । [क्षुप ।

अनार्यतिक्त(पु०)--चिरायता नामक

अनार्ष(वि०)-अवैदिक, जो ऋषियों से सम्बन्ध न रखता हो ।

अनार्षेय(वि०)--अनार्ष ।

अनालम्ब(वि०)-अनाश्रय, आधारहीन । पु०-आश्रय का अभाव ।

अनालंबु[भु]का(स्त्री०)रजस्वलास्त्री।

अनालोचित (वि०)--अविवेचित, जिसकी आलोचना न की गई हो।

अनावर्ति(स्त्री०)-अप्रत्यागमन, मोक्ष

अनाविद्ध(वि०)-न छेदा हुआ, अक्षत।

अनाविल(वि०)--निर्मल, स्वच्छ ।

अनावृत्त(वि०)-आवृत्त न पाया हुआ, न दोहराया हुआ ।

अनावृत्ति(स्त्री०)--अप्रत्यागमन, न दोहराना, मोक्ष ।

अनावृष्टि(स्त्री०)--छः ईतियों में से एक, सूखा, अवर्षण ।

अनाश(वि०)-नित्य, नष्ट न किया हुआ, आशाशून्य, ना-उम्मेद ।

अनाशक(वि०)-जीवनानन्द से शून्य, अहानिकर । न०--उपवास ।

अनाशस्त(वि०)--अप्रशंसित ।

अनाशिन्(वि०)--नाश न होने वाला जैसे आत्मा वा परमात्मा ।

अनाशु(वि०)--नाशरहित, सुस्त, अव्याप्त ।

अनाश्रमिन्(पु०)--जो किसी आश्रम से भी सम्बन्ध नहीं रखता ।

अनाश्रय(वि०)--बेसहारे, अरक्षित, सहायकहीन ।

अनाश्रित(वि०)--स्वतन्त्र, जो किसी के आश्रय में न हो । [हीन ।

अनास्--(वि०)--मुखरहित, वाणी-

अनासादित(वि०)--असमाप्त, अनाक्रान्त, अभूत ।

अनास्था (स्त्री०)--उदासीनता, आस्था या श्रद्धा का अभाव ।

अनास्थान(वि०)--स्थानरहित ।

अनास्वाद(वि०)--स्वादरहित ।

अनास्राव(वि०)--क्लेशरहित, हानि-रहित ।

अनाहत(वि०)--जो ज़ख्मी न हो ।

अनाहार(वि०)-भोजन न करने वाला, उपवास करने वाला । पु०-उपवास

अनाहारिन्(वि०)-भोजन न करने वाला । [अभोज्य ।

अनाहार्य(वि०)-अकृत्रिम, कुदरती,

अनाहुति(स्त्री०)–अनुचित आहुति, यज्ञ का न होना।
अनाहूत(वि०)–न बुलाया हुआ, अनिमन्त्रित।
अनिकेत(वि०)–गृहहीन, फ़क़ीर।
अनिगीर्ण(वि०)–न निगला हुआ, न छिपा हुआ, प्रत्यक्ष।
अनिग्रह(वि०)–असत्याग्रह, अजेय। पु०–निग्रह का अभाव।
अनिच्छ-च्छक-च्छु-च्छुक (वि०)–इच्छा न करता हुआ, ग़ैर रज़ामन्द
अनिच्छा(स्त्री०)–इच्छा का अभाव, अनाकांक्षा।
अनित(वि०)–रिक्त, हीन।
अनित्य(वि०)–क्षणिक, जो नित्य न हो, नश्वर, आकस्मिक।
अनित्यम्(क्रि०वि०)–कभी, यदाकदा
अनिद्र-द्रित(वि०)–जागता हुआ, निद्रा हीन, सावधान। [सावधानी।
अनिद्रा(स्त्री०)–निद्रा का अभाव,
अनिधृष(वि०)–अपराभूत, बेक़ाबू।
अनिन्दित(वि०)–निन्दारहित, अगर्हित, साधु।
अनिन्द्रिय(न०)–जो इन्द्रिय नहीं, मन
अनिप(पु०)–सेनापति, फ़ौजका अफ़सर
अनिपात(पु०)–निपात का अभाव, जीवन का अटूटपन।
अनिपुण(वि०)–अप्रवीण, अपटु, अविज्ञ
अनिबद्ध(वि०)–न बंधा हुआ।
अनिबाध(पु०)–स्वतन्त्रता। वि०–स्वतन्त्र। [लज्जाहीन, चंचल।
अनिभृत(वि०)–प्रत्यक्ष, खुला हुआ,
अनिभृष्ट(वि०)–बेरोक, अक्षत।
अनिभ्य(वि०)–जो धनमय[धनी] न हो, कंगाल।
अनिमक(पु०)–मेंढक, कोयल, मक्खी, पद्मकेशर, मधूक नामक वृक्ष।
अनिमान(वि०)–बहुत, अपरिच्छिन्न।
अनिमित्त(वि०)–हेतुरहित, बेबुनियाद। न०–अशकुन, पर्याप्त हेतु का अभाव।
अनिमित्तनिराक्रिया(स्त्री०)–अशकुन को दूर करने की क्रिया।
अनिमिष(पु०)–देवता, मछली। वि०–निमेषरहित, सावधान, अप्रमत्त।
अनिमेष(पु०)–देवता, मछली।
अनियत(वि०)–अनिश्चित, बेक़ाबू, अस्थायी।
अनियन्त्रण(वि०)–स्वतन्त्र, बेरोक।
अनियम(पु०)–नियम का अभाव, अनिश्चित नियम, बेक़ायदगी।
अनियमित(पु०)–बेक़ायदा, गड़बड़।
अनियुक्त(वि०)–जो नियुक्त न हो।
अनिरा(स्त्री०)–नितान्त दरिद्रता, अन्न का अभाव, ईति।
अनिराकरण(न०)–दूर न करना या न रोकना।
अनिरुक्त(वि०)–अस्पष्ट कहा हुआ।
अनिरुद्ध(वि०)–अनिबाध, स्वतन्त्र, बेरोक। पु०–जासूस। न०–बांधनेका रस्सा, कामदेव का पुत्र उषापति
अनिरुद्धपथ(न०)–आकाश, अवरुद्धपथ

अनिरुद्धभामिनी(स्त्री०)–उषा, जो कामदेव के पुत्र की पत्नी थी और बाणराज की कन्या थी।
अनिर्णय(पु०)–अनिश्चय, सन्दिग्धता
अनिर्दिष्ट(वि०)-जो बतलाया न गया हो, अनिरूपित, अनिर्धारित।
अनिर्देश(पु०)–निर्देश [हिदायत या निश्चित नियम] का अभाव।
अनिर्देश्य(वि०)–जिसकी परिभाषा न हो सके, अवर्णनीय। न०–परमात्मा का विशेषण।
अनिर्धारित(वि०)-अनिश्चित।
अनिर्मल(वि०)-मैला,गन्दा, अस्वच्छ
अनिर्वचनीय(वि०)–अवर्णनीय,अनिर्देश्य, कहने के अयोग्य। न०–माया, अज्ञान, जगत् या संसार।
अनिर्वाण(वि०)–अस्नात, न नहाया हुआ। [धनाभाव।
अनिर्वाह(पु०)-असम्पूर्णता,अप्राप्ति,
अनिर्विंद(वि०)–न थका हुआ।
अनिर्विण्ण(वि०)–न थका हुआ, जो हताश न हो, विष्णु का विशेषण
अनिर्वेद(पु०)–निराशा का अभाव, स्वावलम्बन, हिम्मत बांधना।
अनिर्वृत(वि०)-अस्वस्थ, असुखी, पूरा न किया हुआ।
अनिर्वृति-त्ति(स्त्री०)–चिन्ता,उद्विग्नता, ग़रीबी, धनाभाव।
अनिर्वेश(वि०)–कमयाब, दुःखी, वृत्तिहीन।
अनिल(पु०)–वायु, वसुविशेष, स्वाति नक्षत्र, पवन, विष्णु।
अनिलघ्नक(वि०)–विभीतक नामक वृक्ष।
अनिलप्रकृति(वि०) वायु के समान प्रकृति वाला, वातप्रकृति।
अनिलव्याधि(स्त्री०)-शरीरस्थ वायु का विकार।
अनिलसख(पु०)--अग्नि।
अनिलाशन(वि०)–व्रत रखने वाला, हवा पर गुज़ारने वाला, सांप।
अनिलान्तक(पु०)–इंगुदी वृक्ष।
अनिलात्मज(पु०)–वायु का पुत्र, भीम और हनुमान् का विशेषण।
अनिलामय(पु०)–वातरोग, गठिया।
अनिलोचित (वि०)–असमालोचित, अविवेचित। [सोचा हुआ।
अनिर्लोडित(वि०)–अच्छे प्रकार न
अनिलोडित(वि०)–वातजुर्वकार।
अनिवर्तन(वि०)–मज़बूत, दृढ़, त्याग के अयोग्य।
अनिवर्तिन्(वि०)–वीर, पीछे न हटने वाला, विष्णु और परमात्मा का विशेषण, न लौटने वाला।
अनिविशमान(वि०)–बेचैन, सदा घूमने वाला, न बैठने वाला।
अनिश(वि०)–अनवरत, सतत, सदा भय खाने वाला।
अनिश्चित(वि०)–अनिर्णीत, सन्दिग्ध, निश्चयरहित।
अनिषिद्ध(वि०)–निषिद्ध न किया हुआ, न रोका हुआ,अप्रतिहत।
अनिष्पन्न(वि०)–असम्पूर्ण, अनिश्चित।

अनिष्ट(वि०)—न चाहा हुआ, अनभिलषित, अवांछित, बुरा। न०—बुराई, मुसीबत, कष्ट।
अनिष्टफल(न०)—बुरा फल, हानिकारक परिणाम।
अनिष्टशंका(स्त्री०)-बुराई का भय।
अनिष्टहेतु(पु०)—अशकुन, बुराशकुन।
अनिष्टा(स्त्री०)—नागबला।
अनिष्टिन्(वि०)—जिसने यज्ञ न किया हो, अनिष्णात। वि०—अकुशल, अप्रवीण, अनभिज्ञ। [न होना।
अनिष्पत्ति(स्त्री०)—असम्पूर्णता, पूर्ण,
अनिष्पन्न(वि०)—असमाप्त, असम्पूर्ण निष्पत्तिरहित।
अनिस्तीर्ण(वि०)--न पार कियाहुआ, अनुत्तर, जिसकी तरदीद न कीगई हो
अनीक(अस्त्री०)—युद्ध, सैन्य, मुख, तेज, मोक्ष।
अनीकस्थ(पु०)--योद्धा, महावत, युद्ध का बाजा, निशान, रणगत।
अनीकिनी(स्त्री०)—अक्षौहिणी सेना, का दशवां भाग(जिस में १०९३५ पैदल, ६५६१ घोड़े, २१८७ हाथी, २१८७ रथ होते हैं), कमल, सेना।
अनीच(वि०)—जो नीच न हो, उच्च।
अनीचदर्शी(पु०)--बुद्धभेद। [यण।
अनीड(वि०)—अशरीरी, अग्निकाविशे
अनीति(स्त्री०)—अन्याय, अत्याचार, दुर्नीति, दुःखरहितता।
अनीतिज्ञ (वि०)—असभ्य, बेहूदा, व्यवहार में अकुशल।
अनील(वि०)—जो नीला न हो।
अनीश(वि०)--ईशरहित, अनिरुद्धशक्ति, शक्तिविहीन, अस्वतन्त्र, विष्णु।
अनीशा(स्त्री०)-दीनभाव।
अनीश्वर(वि०)—जिस के ऊपर कोई स्वामी न हो, बेकाबू, अशक्त, नास्तिक।
अनीश्वरवाद(पु०)-नास्तिकता, परमात्मा को हर्त्ता कर्त्ता न मानने का सिद्धान्त।
अनीश्वरवादिन्(वि०)—नास्तिक, जो ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता।
अनीह(वि०)—जिसे कोई इच्छा न हो, उदासीन। पु०—अयोध्या के एक राजा का नाम।
अनीहा(स्त्री०)-उदासीनता, अनिच्छा
अनीहित(वि०)--अनिच्छित, नाखुशगवार। न०—नाराज़ी।
अनु(अ०)—सह, पीछे, निकृष्ट, सादृश्य लक्षण, वीप्सा, भाग, हीन, आयाम समीप आदि। [का नाम।
अनु(पु०)—मनुष्य, ययाति के एक पुत्र
अनुक(वि०)—कामुक, कामी, लालची।
अनुकथ्(धा०प०)—एक कथा कहने के उपरान्त दूसरी कथा कहना।
अनुकथन(न०)-बादमें कही हुई वार्ता, क्रमबद्ध वचन।
अनुकम्प्(धा० आ०)—दया दर्शाना, सहानुभूति करना।
अनुकम्पक(वि०)—सहानुभूति करने वाला, दया दिखलाने वाला।

अनुकम्पन(वि०)–दयालु, सहृदय।
.. न०–दया, दयार्द्रता, सहानुभूति।
अनुकम्पा(स्त्री०)–दया, कृपा।
अनुकम्पित(वि०)–दयापात्र। [कृपालु।
अनुकम्पिन्(वि०)–दया करने वाला,
अनुकम्प्य(वि०)--दया के योग्य, दया-
पात्र। पु०–तपस्वी, वेगवान्, दूत।
अनुकर(वि०)–नक़ल करने वाला।
. पु०–सहायक।
अनुकरण(न०)–नक़ल, देखादेखी,
समान आचरण। [योग्य।
अनुकरणीय(वि०)--अनुकरण करने
अनुकर्ता(वि०)–नक़ल करने वाला,
आदर्श पर चलने वाला, ऐक्टर,
नाटकी। [काम, नक़ल।
अनुकर्मन्(न०)–पश्चात् किया हुआ
अनुकर्ष(पु०)–आकर्षण, खिंचाव।
अनुकर्षण(न०)–पूर्ववत्।
अनुकर्षन्(पु०)–गाड़ी की तलहटी।
अनुकल्प(पु०)–गौणकल्प, मुख्य कल्प
से अधम कल्प।
अनुकांक्षा(स्त्री०)–इच्छा, इत्यादि।
अनुकाम(वि०)–इच्छानुकूल। पु०--
अनुरूप कामना, उचित इच्छा।
अनुकामीन(वि०)--कामाकामी, स्वे-
च्छागमनशील।
अनुकार(पु०)–नक़ल, समानता।
अनुकारिन्(वि०)–नक़ल करनेवाला,
समानता रखनेवाला।
अनुकार्य-कारिन्(वि०)--नक़ल करने
के योग्य।
अनुकार्य-क्रिया–बाद में किया हुआ
अनुष्ठान।
अनुकाल(वि०)–समयानुकूल।
अनुकालम्(अ०)–उचित समय पर।
अनुकीर्तन(न०)–प्रसिद्ध करने का कार्य
अनुकूल(वि०)--मुआफ़िक़, पक्ष में
रहने वाला, सहायक। पु०–वह
नायक जो एक ही विवाहिता
स्त्री में अनुरक्त हो, रामदल का
एक बन्दर। न०–पक्षपात, अनुग्रह.
अनुकूलं(अ०)--ओर, तरफ़, अनुसार,
अनुरूप। [अभ्युदय।
अनुकूलता-त्वम्--अनुग्रह, दया, प्रसाद,
अनुकूला(स्त्री०)--दन्ती नामक वृक्ष।
अनुकृ(धा० उ०)--अनुगमन करना।
अनुकृति(स्त्री०)–अनुकरण, नक़ल,
समानता।
अनुकृष्(धा०प०)--खींचना, आकर्षण
करना, अपने पीछे खींचना।
अनुक्त(वि०)--अविहित, न कहा
हुआ, न सुना हुआ।
अनुक्रय(वि०)–क्रोधरहित।
अनुक्रन्द्(धा०प०)--पीछे रोना, पीछे
चिल्लाना, प्रतिध्वनि करना।
अनुक्रन्दन(न०)–उत्तर में प्रतिध्वनि
या आक्रोश।
अनुक्रम्(धा०उ०)-अनुक्रमण करना,
अनुगमन करना, गिनना, तर-
तीब देना।
अनुक्रम(वि०)-मुरत्तिब, क्रमानुसार।
पु०--तरतीब, यथाक्रम, परिपाटी।

अनुक्रमण(न०)–क्रमपूर्वक आगे बढ़ना, अनुगमन। [विषयसूची
अनुक्रमणी-णिका(स्त्री०)–भूमिका,
अनुक्रुश्(धा० प०)–चिल्लाना, पीछे चिल्लाना।
अनुक्रोश(पु०)--करुणा, दया, जो एक कोस की यात्रा कर चुका हो।
अनुक्षणम्(अ०)--क्षण २ में।
अनुख्याति(स्त्री०)--प्रसिद्ध, रिपोर्ट।
अनुख्याता(पु०)--रिपोर्ट करनेवाला।
अनुग(वि०)- अनुचर, सेवक, नौकर।
अनुगत(वि०)–आश्रित, अधीन, अनुगामी।
अनुगतार्थ(वि०)–प्रायः समान अर्थ वाला, मिलते जुलते अर्थवाला।
अनुगति(स्त्री०)–अनुगमन, अनुसरण, स्वीकारी।
अनुगम्(धा०प०) -अनुसरण करना, पीछे चलना, साथ जाना।
अनुगमः-मनम्--अनुसरण, पश्चात् गमन, सहगमन।
अनुगामिन्(वि०)--अनुग.सेवक,सहचर
अनुगामुक(वि०)--स्वभावतः पीछे जाने वाला।
अनुगर्ज्(धा०प०)–पश्चात् गर्जना वा गर्जने की नकल करना।
अनुगवीन(पु०) -गोप, गोरक्षक, ग्वालिया। [गूंजनेवाला।
अनुगादिन्(वि०)--दुहराने वाला,
अनुगीत(न०)–अनुकरण में गाना।
अनुगीति(पु०)–एक छन्द का नाम।
अनुगुण(पु०)--एक काव्यालंकार,जिस में किसी वस्तु के पूर्व गुण का दूसरी वस्तु के संसर्ग से बढ़ना दिखाया जाय। [हुआ।
अनुगुप्त(वि०)--ढका हुआ, छिपा
अनुगै(धा०प०)--अनुकरण में गाना, गाने में अनुकरण करना।
अनुगृहीत(वि०)–जिस पर अनुग्रह किया गया हो, कृतज्ञ, उपकृत।
अनुग्रह्(धा० प०)--दया दिखलाना, ममनून करना, दया का बर्त्ताव करना, स्वागत करना, अनुकरण करना।
अनुग्रह(पु०)--ऐसी कृपा दिखानी जिसमें दूसरोंका मनोरथ पूर्ण हो, अनुकूलता, सूर्य आदि ग्रह के पास।
अनुग्रहण(न०)--पूर्ववत्।
अनुग्राहक(वि०)--अनुग्रह करनेवाला, दयालु, उपकारी।
अनुग्राह्य(वि०)--अनुग्रह करने योग्य, अनुग्रह का पात्र।
अनुग्रासक(पु०)--जितना एक बार मुंह में ग्रास आ जाय।
अनुचर्(धा०प०)- अनुसरण करना, पीछा करना, सेवकाई करना, व्यवहार करना।
अनुचर(पु०)–साथी,अनुगामी,सेवक।
अनुचरा री(स्त्री०)--सेविका, टहलनी, दासी।
अनुचरित(वि०)--अनुसृत। न०- व्यवहार, जीवनयात्रा।

अनुचारक(पु०)--सेवक, भृत्य, नौकर, अनुग।

अनुचारिका(स्त्री०)--सेविका, दासी, नौकरनी।

अनुचित(वि०)- अयोग्य, गैरमुनासिब, अशुद्ध। [ग़ौर करना।

अनुचिन्त्(धा० प०)--मन में सोचना,

अनुचिन्तन(न०)--बीती हुई बात को याद करना, गौरख़ोज, चिन्ता, बार बार सोचना।

अनुचिन्ता(स्त्री०)--पूर्ववत्।

अनुच्छित्ति(स्त्री०)-अनुच्छेद, अलोप, न नाश होना। [भिन्न।

अनुच्छिष्ट(वि०)--पवित्र, उच्छिष्ट

अनुज(न०)--प्रपौण्डरीक नामक सुगन्धिद्रव्य। पु०--कनिष्ठ भ्राता। पीछे उत्पन्न हुआ, छोटा।

अनुजा(स्त्री०)--छोटी बहन, त्रायमाणा लता।

अनुजात(वि०)--अनुज के समान।

अनुजावर(वि०)--सब से छोटा [भाई]।

अनुजन्(धा० आ०)--पश्चात् उत्पन्न होना। [भ्राता।

अनुजन्मन्(पु०)--छोटा भाई, कनिष्ठ

अनुजीव्(धा०प०)-अन्य के सहारे निर्वाह करना, आश्रित होकर रहना, जीवन में अनुकरण करना, पश्चात् जीते रहना।

अनुजीविन्(वि०)-आश्रित, अन्य के आश्रय जीने वाला। पु०- दास, सेवक, अनुचर।

अनुज्ञा(धा०उ०)--आज्ञा देना, अधिकार देना, मंजूरी करना, सगाई करना, क्षमा करना, दुःख मानना, निवेदन करना।

अनुज्ञा(स्त्री०)--आज्ञा, अनुमति, क्षमा

अनुज्ञात(वि०)--स्वीकृत, उपकृत, जिसे आज्ञा दीगई हो, त्यक्त, प्रतिष्ठित

अनुज्ञान(न०)--आज्ञा, स्वीकारी, मंजूरी, क्षमादान।

अनुज्ञापक(पु०)--आज्ञा करने वाला।

अनुज्ञापनं-ज्ञप्तिः--आज्ञा देने का कार्य, अधिकार देना।

अनुज्येष्ठ(वि०)--सब से बड़े से छोटा।

अनुतप्(धा०प०)--गर्म करना, दुःखी करना। [रंजीदा।

अनुतप्त(वि०)--गर्म किया हुआ,

अनुताप(पु०)--पश्चात्ताप, पछताना, दाह, गर्मी, दुःख, रंज।

अनुतापन(वि०)--दुःख वा कष्ट उत्पन्न करने वाला। [वाला, दुःखी।

अनुतापिन्(वि०)--पश्चात्ताप करने

अनुतर्ष(पु०)--पिपासा, पीनेकी इच्छा, ख्वाहिश, मद्यपान, मद्य।

अनुतर(न०)--किराया, भाड़ा।

अनुत्क(वि०)--अभिलाषारहित, बिना लालसा का, अनुत्सुक।

अनुत्तम(वि०)--श्रेष्ठ, प्रधान, जो उत्तम न हो। पु०--शिव या विष्णु का नाम।

अनुत्तर(वि०)--मुख्य, प्रधान, सर्वोत्तम उत्तरहीन, नीच, अधम, दक्षिण ओर का।

अनुत्तरा(स्त्री०)—पृथिवी।
अनुत्तरंग(वि०)—मज़बूत, लहरों से न घबड़ाया हुआ।
अनुत्थान(न०)—प्रयत्न का अभाव।
अनुत्पत्ति(स्त्री०)—असफलता, नाकामयाबी।
अनुत्पन्न(वि०)—न उत्पन्न हुआ हुआ।
अनुत्पाद(पु०)—उत्पत्ति में न आना।
अनुत्साह(वि०)—उत्साहहीन। पु०—उत्साहहीनता। [शान्त।
अनुत्सुक(वि०)—जो उत्सुक न हो,
अनुत्सेक(पु०)—गर्व या दर्प का अभाव
अनुत्सेकिन्(वि०)—गर्वहीन, दर्पशून्य
अनुदक(वि०)—जलरहित, पीछे जल वाला। [यम।
अनुदग्र(वि०)—अनुच्च, कमज़ोर, मुला-
अनुदर(वि०)—पतली कमर वाला, कमज़ोर।
अनुदर्शन(न०)—निरीक्षण, देखभाल।
अनुदा(धा० उ०)—वापिस देना।
अनुदात्त(वि०)—छोटा, तुच्छ, नीचा [स्वर], लघु [उच्चारण]।
अनुदार(वि०)—अदाता, कंजूस, असज्ञान्, अतिमहान्, अनुरूप भार्या वाला। [हुआ।
अनुदित(वि०)—न कहा हुआ, न उठा
अनुदिन—दिवसं(अ०)—प्रतिदिन, रोज़ २।
अनुदेयी(स्त्री०)—पुनर्दान, सहचारिका
अनुदृश्(धा० प०)—मापना, देखना, दृष्टि में रखना।
अनुदृष्टि(स्त्री०)—अनुग्रहपूर्वक दृष्टि।
अनुद्धत(वि०)—जो उद्धत न हो, सौम्य, शान्त, विनीत।
अनुद्धरण(न०)—उद्धार न करना।
अनुद्धर्ष(पु०)—शान्ति।
अनुद्धार (पु०)—उद्धार का अभाव।
अनुद्धृत(वि०)—अविभक्त, अक्षत, न निकाला हुआ।
अनुद्भट(वि०)—मुलायम, अनुच्च।
अनुद्यत(वि०)—जो मेहनती न हो, सुस्त।
अनुद्यम(वि०)—उद्योगहीन, अनुद्योगी
अनुद्योग(वि०)—सुस्त, काहिल। पु०—सुस्ती, काहिली।
अनुद्रु(धा० प०)—पीछे दौड़ना, अनुगमन करना, पीछा करना।
अनुद्रुत(वि०)—पीछा किया गया अनुसृत। [चर्य।
अनुद्वाह(पु०)—विवाह न होना, ब्रह्म-
अनुद्विग्न(वि०)—शान्तचित्त।
अनुद्वेग(वि०)—चिन्तारहित, शान्त। पु०—भयरहितता।
अनुधाव(धा० प०)—पीछे दौड़ना, अनुसरण करना, धोकर साफ करना, दौड़कर निकट पहुचना।
अनुधावन(न०)—अनुसन्धान, पीछे पड़ना, शुद्धि।
अनुध्यै(धा० प०)—ध्यानपूर्वक सोचना, आशीर्वाद देना।
अनुनय(पु०)—विनय, क्रोधाभाव। वि०—मेहरबान, शान्ति देनेवाला
अनुनयिन्(वि०)—विनयावनत, नम्र।
अनुनाद(पु०)—आवाज़, ध्वनि।

अनुनादिन्(वि०)–आवाज देने वाला, प्रतिध्वनि करने वाला।

अनुनायक(वि०)–विनयी, अवनत, प्रार्थी।

अनुनासिक(पु०)–जिनका नासासहित मुख से उच्चारण किया जाता है जैसे ङ,ञ,ण,न,म और अनुस्वार

अनुनी(धा० प०)–तसल्ली देना, बहकाना, रजामन्द करना, विनय करना, खुश करना, आदर करना

अनुन्नत (वि०)–न उठा हुआ, जो ऊंचा न हो।

अनुन्मत्त(वि०)–जो पागल न हो, स्वस्थ, शान्त।

अनुन्माद(वि०)–उन्मादविहीन।

अनुप–देखो अनूप। [अपकार।

अनुपकार(पु०)–उपकार का अभाव,

अनुपकारिन्(वि०)–उपकार न करने वाला, निकम्मा।

अनुपाख्य(वि०)–अज्ञात, अनष्ट।

अनुपगत(वि०)–दूर का।

अनुपगीत(वि०)–अकीर्तित, नतारीफ किया हुआ। [अभाव।

अनुपघात(पु०)–हानि या क्षति का

अनुपठ्(धा० प०)–दोहराना, कहे को फिर कहना।

अनुपठित(वि०)–दुहराया हुआ।

अनुपत्(धा० प०)–पीछे दौड़ना, अनुगमन करना, पीछा करना। उड़ कर पहुंचना। [करना।

अनुपतनं-पात:–आक्रमण, पीछा

अनुपथ(वि०)–रास्ते का अनुसरण करने वाला। पु०–सड़क, रास्ते

अनुपद्(धा०प०)–पीछे जाना, अनुगमन करना।

अनुपद(वि०)–अनुग, पश्चात्गामी। पु०– जातिविशेष।

अनुपदं(अ०)–अनन्तर पीछे २, पदे २

अनुपदिन्(वि०)–अन्वेषणकर्त्ता, ढूंढनेवाला।

अनुपदीना (स्त्री०)–पैर के समान लम्बा जूता या मोजा।

अनुपद्वी–रास्ता, सड़क।

अनुपध(वि०)–उपधारहित।

अनुपधि (वि०)–धोखेरहित।

अनुपनीत (वि०)–अप्राप्त, न लाया हुआ, जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो।

अनुपन्यास(पु०)–अनिश्चय, सन्देह, प्रमाणाभाव।

अनुपपत्ति (स्त्री०)–नाकामयाबी, युक्ति का अभाव, दारिद्र्य।

अनुपपन्न(वि०)–अनुचित, असम्भव, अलौकिक।

अनुपम(वि०)–अतुल्य, अद्वितीय, उत्तम, उपमारहित।

अनुपमा(स्त्री०)–कुमुद नाम दिग्गज की भार्या। [उपमारहित।

अनुपमित मेय(वि०)–अद्वितीय, सादृ-

अनुपमर्दन(न०)–लगाये हुए अभियोग की तरदीद न करना।

अनुपयुक्त(वि०)–बेमौजूं, अयोग्य, निकम्मा, बेकार। [कता।

अनुपयोग(वि०)–बेकार। पु०–निरर्थ-

अनुपरत(वि०)–न हटा हुआ, न मरा हुआ।

अनुपलब्ध(वि०) -न देखा हुआ, अप्रत्यक्ष ।

अनुपलब्धि(स्त्री०)–प्रत्यक्षाद्यभाव, न मिलना, अप्राप्ति ।

अनुपवीतिन्(पु०)–यज्ञोपवीत को न धारण करने वाला ।

अनुपशय(पु०)–रोगज्ञान के पांच विधानों में से एक ।

अनुपसंहारिन्(पु०)- न्यायमत में कहा गया एक प्रकार का हेत्वाभास (दुष्टहेतु)। ऐसा हेतु कि जिस में अन्वय एवं व्यतिरेक का कोई दृष्टान्त न बन सके जैसे " सर्वं नित्यं प्रमेयत्वात् " इस अनुमान में " सर्वं " को पक्षत्व होने से अन्वय में दृष्टान्त नहीं हो सकता और नाहीं व्यतिरेक में दृष्टान्त बनता है क्योंकि सर्व को प्रमेयता होने से उसका अभाव (अप्रमेयत्व) कहीं भी सिद्ध नहीं हो सकता ।

अनुपसर्ग(पु०)–ऐसा शब्द जिस में उपसर्गभाव न हो अथवा जिस में उपसर्ग न लगा हुआ हो ।

अनुपसेचन(वि०)–उपसेचन [दाल, भात, कढ़ी] रहित ।

अनुपस्कृत(वि०)–असंस्कृत, सच्चा, बेदाग, अपक्व । [रहित ।

अनुपस्कार (वि०)–अध्याहारदोष-

अनुपस्थान(न०)–अनुपस्थिति ।

अनुपस्थित(वि०)–जो उपस्थित न हो, ग़ैरहाज़िर ।

अनुपस्थिति(स्त्री०)-ग़ैरहाज़िरी, याद रखने में अशक्तता ।

अनुपहत(वि०)–अक्षत, न खराब हुआ हुआ, अप्रयुक्त ।

अनुपा(धा०प०) -अन्य वस्तु केपश्चात् पीना, पीने में अनुकरण करना, अनुपालन करना ।

अनुपाकृत(वि०)–मन्त्रों से यज्ञ में पशु का पूजन आदि संस्कार उपाकरण कहलाता है, उससे रहित ।

अनुपाकृतमांस (न०) ऐसा मांस जो यज्ञार्थ न हो। [न दे ।

अनुपाख्य(वि०)–जो साफ़ २ दिखाई

अनुपात(पु०)–पश्चात्पतन, गणित की त्रैराशिक क्रिया ।

अनुपातक(न०)- ब्रह्महत्या आदि महापातक के समान वेदनिन्दा आदि से उत्पन्न एक प्रकार का पाप, मनु ने तीस अनुपातक बतलाये हैं, देखो, अ० ११ श्लोक ५५ से ५६तक।

अनुपान(न०)- औषध का अंग, जो औषध के साथ वा पीछे खाया जावे जैसे मधु, गुड़ आदि ।

अनुपानीय(वि०)–अनुपान करनेयोग्य

अनुपाल्(धा०प०)–रक्षा करना, खबरदारी करना, आज्ञापालन करना।

अनुपालन(न०)–रक्षा, आज्ञापालन

अनुपुत्त्व(पु०)–अनुयायी ।

अनुपुष्प(पु०)–शरवृक्ष ।

अनुपूर्व(वि०)–यथाक्रम, सिलसिलेवार, क्रमानुसार । [एक २ करके ।

अनुपूर्वेण-पूर्वशः(क्रि०वि०)-क्रमपूर्वक,

अनुपूर्व्य(वि०)–क्रमानुसार,सिलसिलेवार।
अनुपेत(वि०)–अनुपनीत, अदीक्षित
अनुप्त(वि०)–न बोया हुआ, विना बोया हुआ।
अनुप्रधान(न०)–पता चलाना, ढूंढना
अनुप्रदान(न०)–दान, बाह्यप्रयत्न, वरिधश। [राना।
अनुप्रयोग(पु०)–विशेष प्रयोग, दोह-
अनुप्रविश(धा०प०)–दाखिल होना, शामिल होना, आक्रमण करना, प्रवेश में अनुसरण करना।
अनुप्रसक्ति (स्त्री०)–बहुत गहरा लगाव या प्रेम। [प्राप्ति
अनुप्राप्ति(स्त्री०)–पहुंचना, आमद,
अनुप्राशन(न०)–खाना, भक्षण करना
अनुप्रास(पु०)–वह शब्दालंकार जिस में किसी पद मे एक ही अक्षर बार बार आकर उस पद की अधिक शोभा का कारण होता है
अनुप्रेक्षा(स्त्री०)–नेत्र गड़ाकर देखना, ध्यान से देखना। [गमन करना।
अनुप्लु(धा०आ०)–पीछे दौड़ना, अनु-
अनुप्लव (पु०)–अनुचर, अनुयायी, नौकर।
अनुबन्ध् (धा०प०)–किसी वस्तु से बांधना, जोड़ना या मिलाना, पीछा करना।
अनुबद्ध(वि०)–बंधाहुआ, जोड़ाहुआ, सम्बन्धित।
अनुबन्ध(पु०)–बांधना, लगाव, सम्बन्ध, बन्धन, नतीजा, इरादा, दोष।
अनुबन्धक(वि०)–सम्बन्धित, जोड़ा हुआ।
अनुबन्धन(न०)–सम्बन्ध, लगाव।
अनुबन्धिन्(वि०)–लगाव रखने वाला, सम्बन्धी।
अनुबन्धी(स्त्री०)–हिक्का, तृष्णा।
अनुबन्ध्य(वि०)–यज्ञ में मारने के लिये बांधी गई गौ आदि।
अनुबल(न०)–वह सेना जो आगे जाने वाली सेना की सहायता के लिये रहती है।
अनुबुध्(धा० आ०)–जागना, स्मरण करना, वाक़िफ़ होना।
अनुबोध(पु०)–पश्चात् बोधन, प्रबोधन।
अनुबोधन(न०)–स्मृति, बीती हुई बात को याद करना।
अनुभव(पु०) स्मृति से भिन्न ज्ञान, परीक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान।
अनुभवी(वि०)–अनुभव रखने वाला, तजुर्बेकार, जानकार। [हुआ।
अनुभवसिद्ध(वि०)–तजुर्बे से जाना
अनुभाव(पु०)–प्रभाव,महिमा,बड़ाई, तेज। [वाला।
अनुभावक(वि०)–अनुभव कराने
अनुभाविन्(वि०)–साक्षात्कारकराने वाला।
अनुभाषण(न०)–कहे हुए को फिर दोहराना, बातचीत, गुफ्तगू।
अनुभाषितृ[ता](वि०)–उत्तरमेंबोलने वाला।

अनुभास(पु०)-एक प्रकार का कौआ।
अनुभुज्(धा०आ०)-आनन्द उठाना, अनुभव करना, बरदाश्त करना।
अनुभू(धा०प०)-अनुभव करना, महसूस करना, चखना, बरदाश्त करना, आनन्द उठाना, अनुमान लगाना।
अनुभू(वि०)-अनुभव करने वाला। स्त्री०-अनुभव, साक्षात्ज्ञान।
अनुभूत(वि०)-अनुभव किया हुआ, आज़माया हुआ।
अनुभूति(स्त्री०)-तजुर्बा, आशंका, अनुभव, नतीजा, महिमा।
अनुभूतिप्रकाश(पु०)-माधवाचार्यकृत उपनिषदों का भाष्य।
अनुभोग(पु०)-उपभोगानन्द, सेवा के बदले में भूमि का दान।
अनुभ्राता(पु०)-कनिष्ठ भ्राता।
अनुमद्(धा०प०)-प्रसन्न होना, सुख मानना।
अनुमत्त(वि०)-खुशी से पागल हुआ।
अनुमत(वि०)-स्वीकृत, पसन्द, खुशगवार, अङ्गीकृत। पु०-प्रेमी। न०-स्वीकारी, रज़ामन्दी, आज्ञा।
अनुमति(स्त्री०)-आज्ञा, स्वीकारी, मञ्जूरी, सम्मति।
अनुमतिपत्र(न०)-ऐसी दस्तावेज़ जिस में किसी विषय में रज़ामन्दी पाई जावे।
अनुमन्(धा०आ०)-रज़ामन्द होना, पसन्द करना, मञ्जूरी देना।
अनुमन्तृ[न्ता](वि०)-अनुमति देने वाला।
अनुमनन(न०)-मंज़ूरी, स्वीकारी, बरदाश्त, स्वतन्त्रता।
अनुमरण(न०)-पीछे मरना, सतीकर्म।
अनुमरु(पु०)-मरुभूमि के पास का देश।
अनुमा(धा०आ०)-अनुमान करना, नतीजा निकालना।
अनुमा(स्त्री०)-अनुमान, अनुमति।
अनुमातृ[ता](वि०)-अनुमान करने वाला।
अनुमान(न०)-अटकल, अन्दाज़ा, भावना, क़यास, न्याय के अनुसार प्रमाण के चार भेदों में से एक।
अनुमानोक्ति(स्त्री०)-तर्क, ऊह।
अनुमास(पु०)-आने वाला महीना।
अनुमासं(अ०)-हरमहीने, प्रतिमास।
अनुमित(वि०)-अनुमान किया हुआ, विचारा हुआ, क़यास किया हुआ।
अनुमिति(स्त्री०)-अनुमान, नवीन न्याय के अनुसार अनुभूति के चार भेदों में से एक।
अनुमित्सा(स्त्री०)-अनुमानकरने की इच्छा।
अनुमुद्(धा०आ०)-खुशी में शामिल होना, मञ्जूरी देना, अनुमोदन करना, बढ़ावा देना।
अनुमृ(धा०आ०)-मरने में अनुसरण करना।
अनुमेय(वि०)-अनुमान करने योग्य।
अनुमोद(पु०)-और के सुख से सुखप्राप्ति, अनुमोदन।

अनुमोदन(न०)–ताईद, मंजूरी, स्वीकारी, मुसद्दान।

अनुया(धा० प०)–पीछे जाना या चलना, अनुसरण करना, नकल करना, साथ जाना।

अनुया (वि०)--अनुगमन।

अनुयाज(पु०)--यज्ञ का अङ्ग।

अनुयातृ[ता] (वि०)--अनुयायी, पीछे जाने वाला।

अनुयात्र-त्रा--यात्रा में पीछे जाने वाले, सेवक आदि, अनुगमन, अनुयायीपन।

अनुयात्रिक(पु०)--अनुयायी, सेवक।

अनुयान(न०)--अनुगमन।

अनुयायी [न्] (वि०)--पश्चाद्गामी, मट्ठ्य, अनुचर, सेवक, पैरोकार

अनुयुज्(धा० आ०)--प्रश्न करना, पूछना, ममाअतकरना, आदेश करना, आज्ञा देना, घुमना[पति]।

अनुयुक्त(वि०)--पूछा हुआ, प्रश्न किया हुआ, परीक्षा किया हुआ, शिफारिश।

अनुयुक्तिन्(वि०)--परीक्षा लेनेवाला, आज्ञा देने वाला; समाअत करने वाला।

अनुयोक्तृ[ता] (वि०)--भूतकाध्यापक, परीक्षक, प्रश्नकर्ता, अनुसन्धानकर्ता।

अनुयोग(पु०)--प्रश्न, अनुसंधान, परीक्षा, धिक्कार, प्रयत्न।

अनुयोगकृत(पु०)--प्रश्नकर्ता, धर्मगुरु।

अनुयोगिन्(वि०)--प्रश्न करने वाला, जोड़ने या मिलाने वाला।

अनुयोजन(न०)--प्रश्न, अनुसन्धान।

अनुयोज्य(वि०)--प्रष्टव्य, निन्दनीय, बुरा।

अनुरंज् (धा० उ०)--रक्त होना, प्रसन्न होना, अनुरक्त होना, पसन्द करना।

अनुरक्त(वि०)--सुर्ख किया हुआ, रंगा हुआ, प्रसन्न, सन्तुष्ट, वफादार।

अनुरक्ति(स्त्री०)--प्रेम, लगाव, श्रद्धा।

अनुरंजक(वि०)–हर्षदायक, प्रीतिकर

अनुरंजन(न०)–अनुराग, आह्लादन, हर्षजनन।

अनुरंजित(वि०)–सन्तुष्ट, प्रसन्न।

अनुरणन(न०)–टनटन की आवाज।

अनुरत(वि०)--प्रीत, अनुराग में फंसा हुआ।

अनुरति(स्त्री०)–अनुराग, प्रेम।

अनुरथ्या(स्त्री०)–पगडण्डी।

अनुरसित(वि०)–प्रतिध्वनि करता हुआ।

अनुरसः-सितं–प्रतिध्वनि, गूंजने की आवाज। पु०-गौणरस।

अनुरहस(वि०)–छिपा हुआ, गुप्त।

अनुराग(पु०)–आसक्ति, प्रीति, लाली, राग। [आसक्त।

अनुरागवत्(वि०)–प्रीत, प्रसन्न,

अनुरागिन्[णी](वि०)–अनुरक्त, आसक्त, प्रेमान्वित।

अनुरात्रं(न०)–हर एक रात में।

अनुराध(पु०)--विनती, प्रार्थना, आराधन।
अनुराधा(स्त्री०)-एक नक्षत्र का नाम।
अनुरुद्(धा० प०)–साथ२ रोना, सहानुभूति करना।
अनुरुध्(धा०उ०)–रोकना, घेरना, बांधना,अनुगमन करना, प्रेम करना
अनुरूप(वि०)–समान, सदृश, तुल्यरूप
अनुरूपतः क्रि०वि०)–मुआफ़िक़।
अनुरूपेण(क्रि०वि०)–पूर्ववत्।
अनुरूपशः(क्रि०वि०)–पूर्ववत्।
अनुरोदन(न०)-सहानुभूति,समवेदना।
अनुरोधः-धनम्-रुकावट,बाधा, अनुवर्त्तन, सन्तुष्टि, आग्रह।
अनुरोधक-रोधिन् (वि०)–अनुरोध करने वाला, आग्रही।
अनुलग्न(वि०)–आसक्त, लगा हुआ
अनुलाप(पु०)–पुनरुक्ति, वार वार कथन।
अनुलास(पु०)–मोर।
अनुलिप्(धा०प०)–अभिषिक्त करना, लेपन करना, सुगन्धि आदि की मालिश करना। [हुआ,अनुरक्त।
अनुलीन(वि०)-छिपा हुआ, लगा
अनुलेपः-नम् अभिषेक, मरहम,लेपन करने की वस्तु, गन्धद्रव्यादि का लेपन।
अनुलोम(पु०)–प्रतिलोम का प्रतिद्वन्द्वी। उतार का सिलसिला, सगीतमेंस्वरों का उतार,अविलोम
अनुलोमज(वि०)–अनुलोमजात अप्रतिलोमक, दो वर्णों के संयोग से उत्पन्न हुआ।
अनुलोमन(न०)–कोष्ठबद्ध को दूर करने वाली रेचक वा भेदक औषध।
अनुलोमाः(पु०ब०)--दो वर्णों के संयोग से उत्पन्न हुई जाति।
अनुलोमाथ(वि०)-अच्छे प्रारब्ध वाला
अनुल्वण(वि०)--अनतिरिक्त,अन्यूनाधिक, अप्रत्यक्ष।
अनुवश(वि०)--दूसरे की इच्छा के आधीन। पु०--अधीनता।
अनुवंश(पु०)--वंश की क्रमागत सूची, नूतन वंश।
अनुवक्र(वि०)--बहुत टेढ़ा।
अनुवक्ता[तृ] (पु०)--दोहराने वाला।
अनुवच्(धा० प०)–पीछे कहना वा बोलना, दूसरे के लिये बोलना, दोहराना, पुकारना।
अनुवचन (न०)–पुनरुक्ति, शिक्षा, अध्याय, पाठ।
अनुवत्सर(पु०)--वर्ष, ज्योतिष में अनुसार जो पांच वर्षों का युग होता है उस का चौथा वर्ष।
अनुवद्(धा०प०)--बोलने की नक़ल करना, हंसी उड़ाना,कथन करना, दुर्वचन कहना।
अनुवर्त्तन(न०)- अनुगमन, आज्ञापालन, परिणाम, पूर्वसूत्र में से ग्रहण करना।
अनुवर्त्तिन्(वि०)--आज्ञाकारी, गतानुगतिक, अनुगामी, पैरवी करने वाला। [अनुयायी।
अनुवर्त्मन्(वि०)--पीछे जाने वाला,

अनुवस्(धा०प०)--साथ रहना, नज़दीक बसना । [में से एक ।
अनुवह्(पु०)--अग्नि की सात जिह्वाओं
अनुवसित(वि०)--कपड़ों में ढका हुआ, लिपटा हुआ, बंधा हुआ ।
अनुवाक(पु०)--दोहराना, पुनःकथन, वेद का अध्याय ।
अनुवाक्या(स्त्री०)--प्रशस्तानामी ऋत्विग्भेद से पढ़ाने योग्य देवता के बुलाने का मंत्र ।
अनुवार(अ०)--बारबार ।
अनुवाच्(स्त्री०)-दोहराना, अनुवचन, पुनरुक्ति । पु०--लेक्चर, वक्तृता ।
अनुवाचन (न०)--यज्ञों में विधि के अनुसार मंत्रों का पाठ ।
अनुवाद(पु०)--पुनरुक्ति, व्याख्या पूर्वक दोहराना, उल्था, तर्जुमा, भाषान्तर ।
अनुवादक-दिन्(वि०)--अनुवाद करने वाला, व्याख्यान करने वाला, तसदीक करने वाला ।
अनुवाद्य(वि०)--व्याख्या करने योग्य
अनुवादित(वि०)--उल्था किया हुआ
अनुवास्(धा०प०)--सुगन्धि देना ।
अनुवासः-सनम्--वस्त्रादि को सुगन्धित करना, महकाना, सुश्रुत के अनुसार पिचकारी के द्वारा तरल औषध शरीर के भीतर पहुंचाना । [वस्तिकर्म किया हुआ ।
अनुवासित(वि०)--सुगन्धमेंबसायाहुआ
अनुवासिन् [सी] (वि०)--समीप रहने वाला, निकटवर्ती ।
अनुविद्(धा०प०)--प्राप्त करना, ज्ञात करना, समझना, विवाह करना ।
अनुवित्ति(स्त्री०)प्राप्ति,हासिलकरना
अनुविद्ध(वि०)--छेदा हुआ, सूराख किया हुआ, भरा हुआ, व्याप्त
अनुविधा(धा०उ०)--विधान करना, हुक्म मानना, तद्रूप होना ।
अनुविधान(न०)--आज्ञापालन, तद्रूप कार्य । [आज्ञानुवर्ती ।
अनुविधायिन्[यी](वि०)--फ़रमाबर्दार
अनुविनश्(धा०प०)-नष्ट होना,अन्य वस्तु के साथ वा पीछे अलोप होना ।
अनुविनाश(पु०)-पश्चात्नाश ।
अनुविश्(धा०प०)--अनुगमन करना, पश्चात् प्रविष्ट होना ।
अनुवृत्(धा०आ०)--पीछा करना,पीछे आना ।
अनुवृत्त(वि०)--आज्ञा मानने वाला, अनुयायी,गतसूत्रमें से लिया हुआ, शीलानुगत । [अनुक्रम ।
अनुवृत्ति(स्त्री०)--अनुवर्तन, अनुरोध,
अनुवृद्धि(वि०)--क्रमपूर्वक बढ़नेवाला
अनुवेलं(अ०)--लगातार, नित्य ।
अनुवेशः-शनम्--अनुप्रवेश, बड़े भाई के विवाह के पहिले छोटे भाई का विवाह ।
अनुवेश्य(वि०)--घर से जुटा हुआ पड़ोसी । [वाला ।
अनुव्य (वि०)--अनुगत, पीछे जाने
अनुव्यध्(धा० प०)-- जख़्मी करना, फिर से मारना, मजबूर करना ।

अनुव्याध वेध (पु०)--छेदना, सूराख करना, नुकसान पहुंचाना।
अनुव्याहरण(न०) -पुनरुक्ति, बार २ कथन, शाप, बद्दुआ।
अनुव्याहार (पु०)--पूर्ववत्
अनुव्रज् (धा० प०)–अनुगमन करना, आज्ञापालन करना।
अनुव्रजन(न०)--अनुव्रज्या, अनुगमन, सेवा, पीछा करना।
अनुव्रत(वि०)–जिसने व्रतानुष्ठान कर लिया हो, आसक्त, भक्त।
अनुशय(पु०)–दीर्घद्वेष, पूर्ववैर, अनुताप। [द्वालु, अनुरक्त।
अनुशयी(वि०)–द्वेषी, वैरी, श्रग-
अनुशर(पु०)–राक्षस।
अनुशास्(धा०प०)–सलाह देना, तरगीब देना, शासन करना, सजा देना, तारीफ करना, सम्पादन करना।
अनुशासक-शासिन्(वि०)–अनुशासन करने वाला, हकूमत करने वाला।
अनुशासन(न०)–सलाह, तरगीब, हिदायत, आज्ञा, आदेश।
अनुशासनपर(वि०)–आज्ञाकारी।
अनुशासनपर्व[न्] (न०)–महाभारत का १३वां अध्याय।
अनुशास्ता-सिता (पु०)–अनुशासक, आदेश करने वाला।
अनुशासित(वि०)–जिसको आज्ञा दीगई हो, शिक्षित।
अनुशिष्टि(स्त्री०)–आज्ञा, आदेश।

अनुशिक्षिन्(वि०)-विद्यार्थी, अभ्यास करने वाला।
अनुशी(धा० आ०)–साथ लेटना या सोना, अनुगमन करना, पश्चात्ताप करना।
अनुशीलन(न०)–चिन्तन, मनन, विचार, बार२ अभ्यास, आवृत्ति।
अनुशीलनीय(वि०)–चिन्तन करने योग्य, अभ्यास करने योग्य।
अनुशीलित(वि०) मनन किया हुआ, अच्छे प्रकार से अभ्यास किया हुआ। [क्रन्दन करना।
अनुशुच्(धा० प०)–सोच - करना,
अनुशोक–शोचनं–दुःख, पश्चात्ताप, रञ्ज।
अनुशोचक-शोचिन्(वि०)–पश्चात्ताप करनेवाला, कष्टदायक।
अनुश्रव(पु०)–वेद।
अनुश्राविक(वि०)–परम्परा से श्रुति द्वारा प्राप्त परलोकविषयक [ज्ञान] जैसे स्वर्ग, देवता, अमृत इत्यादिका
अनुश्लोक(न०)–महाव्रतीय साम-भेद। [हुआ।
अनुषक्त(वि०)–सम्बन्धित, लगा
अनुषंग(पु०)–गहरा लगाव, ताल्लुक, दया, करुणा, प्रसंग।
अनुषंगिन्(वि०)-सम्बन्धरखनेवाला, अनुराग प्रसक्त, आसक्त।
अनुसेक: सेचनं–जल छिड़कना।
अनुष्टुप्[भ्](स्त्री०)–सरस्वती, वाणी, आठ अक्षरवाला छन्द।
अनुष्ठ(वि०)-क्रमानुसार खड़ा हुआ।

अनुष्ठा(धा० उ०)– अनुष्ठान करना, सम्पादन करना, शासन करना, समीप खड़े होना, अनुगमन करना।

अनुष्ठातृ[तृ] (पु०)–सम्पादन करने वाला, अनुष्ठानकर्ता।

अनुष्ठात्री(स्त्री०)–सम्पादन करने वाली।

अनुष्ठायिन्(वि०)–अनुष्ठानकर्ता, सम्पादक।

अनुष्ठान(न०)–कर्मारम्भ, अभ्यास, अनुशीलन, कार्यकरण। [वाला।

अनुष्ठापक(वि०)–सम्पादन कराने

अनुष्ठापन(न०)–सम्पादन कराना।

अनुष्ठित(वि०)–किया हुआ, सम्पादित। [मिला।

अनुष्ठि-ष्ठु(स्त्री)-यथाक्रम,ठीकसिल-

अनुष्ठेय-ष्ठातव्य(वि०)-सम्पादन के योग्य।

अनुष्ण(वि०)–जो गर्म न हो, ठंडा, अलस। न०-उत्पल।

अनुष्णावल्लिका(स्त्री०)–नीलदूर्वा।

अनुस्पनन्द(पु०)–पीछे का पहिया।

अनुसंचर्(धा० प०)–साथ चलना, पीछा करना। [करना।

अनुसंचरण(न०)–अनुगमन, पीछा

अनुसंधा–(धा० उ०)–अनुसंधान करना, अन्वेषण करना, परीक्षा करना, अनुसरण करना।

अनुसन्धान(न०)–अन्वेषण, चेष्टा, तहक़ीक़ात।

अनुसन्धानिन्-यिन्(वि०)–अनुसन्धान करनेवाला, तहक़ीक़ात करने वाला।

अनुसंबद्ध(वि०)–साथ जुड़ा हुआ।

अनुसर(पु०)–अनुयायी, साथी, सेवक।

अनुसरण(न०)–अनुगमन, पीछा करना, रिवाज, आदत।

अनुसार(पु०)–अनुसरण, अनुक्रम, अनुष्ठान।

अनुसारक-रिन्(वि०)-पीछे जाने वाला, तहक़ीक़ात करनेवाला।

अनुसारणा(स्त्री०)–पीछा,अनुगमन

अनुसृ(धा० प०)–पीछे जाना, पीछा करना, अमल करना।

अनुसृति(स्त्री०)–अनुगमन, कुलटा, असती स्त्री।

अनुसृष्टि(स्त्री०)–क्रमपूर्वक उत्पत्ति, हाज़िरजवाब औरत।

अनुसेविन्(वि०)–अमल करनेवाला, सेवन करनेवाला।

अनुसैन्य(न०)–सेनाका पीछे का भाग

अनुस्तरण(न०)–चारों ओर फैलाना।

अनुस्तरणी(स्त्री०)-आच्छादन,ढक्कन, गाय।

अनुस्तोत्र(न०)–याद में प्रशंसा करना या गुण गाना।

अनुस्पष्ट(वि०)–साफ, प्रत्यक्ष।

अनुस्मरण(न०)–स्मृति, याददाश्त, पुनः पुनः स्मृति।

अनुस्मृ(धा०प०)–याद करना,सोचना

अनुस्मृति(स्त्री०)-अनुस्मरण, बार बार याद। [हुआ, ग्रन्थित।
अनुस्यूत(वि०)-सीया हुआ, पिरोया
अनुस्वान(पु०)-अनुरणन, झकार, प्रतिध्वनि।
अनुस्वार(पु०)-स्वर के पीछे उच्चारण होनेवाला एक अनुनासिक वर्ण।
अनुहव(पु०)-निमन्त्रित करना।
अनुहुंकृ(धा०उ०)-गर्जने की नक़ल करना, हुंकारना।
अनुहुंकार(पु०)-गर्जने की नकल।
अनुहृ(धा०प०)-नक़ल करना, तद्वत् होना। [तुल्यरूप।
अनुहरण-हारः-नक़ल, समानता,
अनुहारी(वि०)-अनुकरण करनेवाला
अनुहोड(पु०)-छकड़ा।
अनूक(पु०)-गतजन्म, पूर्वजन्म। अस्त्री०-कुल,वंश,शील,स्वभाव।
अनूकाश(पु०)-रोशनी का उदय, उदाहरण, तमसील।
अनूक्ति(स्त्री०)-वेदपाठ, पश्चाद्वर्णन, व्याख्याक्रम से दोहराना।
अनूचान(वि०)-विनीत, सविनय, सामवेदविचक्षण। [हुआ।
अनूढ(वि०)-अविवाहित,न लेजाया
अनूढमान(वि०)-लज्जाशील,शर्मीला
अनूढा(स्त्री०)-अविवाहिता स्त्री।
अनूति(स्त्री०)-अनागमन।
अनूदक(न०)-जलाभाव, अवर्षण।
अनूदित(वि०)-कहा हुआ, वर्णन किया हुआ, अनुवादित।
अनूद्य(वि०)--अनुवाद्य, अनुवादनीय
अनून(वि०)--असमस्त, समग्र, पूर्ण, अहीन, अन्यून।
अनूनक(वि०)-पूर्ववत्।
अनूप(वि०)-जलबहुल [देश], जलप्लावित [स्थान], तर, जल से परिपूर्ण। पु०--जल से परिपूर्ण देश, दलदल, तालाब, दादुर, महिष, मेंढक, हस्ती।
अनूपज(न०)--ताज़ा अदरक।
अनूपदेश(पु०)-जल से भरा हुआ देश।
अनूपप्राय(पु०)--जलपूर्ण,दलदलयुक्त।
अनूप्य(वि०)--दलदल या तालाब में होने वाला।
अनूरु(वि०)--ऊरु [जंघा] रहित। पु०--सूर्य का सारथि अरुण,प्रभातकाल।
अनूरुसारथि(पु०)-सूर्य।
अनूर्जित(वि०)-कमज़ोर, शक्तिहीन, दर्परहित।
अनूर्ध्व(वि०)--अनुच्च,निम्नस्थ।
अनूर्मि(वि०)--निश्चल, लहरों से न हिलाया हुआ।
अनूह(वि०)--चिन्ताहीन, ख्याल न करनेवाला।
अनृच(वि०)- ऋचाहीन,ऋग्वेद का पाठ न करनेवाला।
अनृजु(वि०)--टेढ़ा,जो सीधा न हो, क्रूर, बेईमान।
अनृण(वि०)--क़र्ज़ से मुक्त।
अनृणता(स्त्री०)--ऋण से छुटकारा।
अनृणिन्(वि०)--अऋणी, ऋणमुक्त।

अनृत(वि०)- असत्य, झूठा। न०--झूठ, धोखा, फरेब, कृषि।
अनृतवादी(वि०)--झूठा, झूठ बोलने-वाला।
[वाला।
अनृतव्रत(वि०)--वादेखिलाफी करने
अनृतक(वि०)--झूठ बोलने वाला।
अनृतु(स्त्री०)--अन्यथा ऋतु,रजोदर्शन से पूर्व का काल। [की कन्या।
अनृतुकन्या(स्त्री०)--रजोदर्शन से पूर्व
अनेक(वि०)--एक नहीं,एक से अधिक, --बहुत, कतिपय,विविध, विभक्त।
अनेककृत्(पु०)--शिव का नाम।
अनेकगुण(वि०)--विविध गुणोंवाला।
अनेकगुप्त(पु०)--एक राजा का नाम।
अनेकचित्त(वि०)--चंचलस्वभाव।
अनेकज(वि०)--अनेक बार उत्पन्न हुआ। पु०--पक्षी।
अनेकप(पु०)--हाथी।
अनेकधा(अ०)--अनेक प्रकार से।
अनेकमूर्ति(पु०)--विष्णु का नाम।
अनेकरूप(वि०)--बहुत से आकारों वाला, कई क़िस्म का, चंचल। पु०--परमात्मा का विशेषण।
अनेकलोचन(पु०)--शिव,इन्द्र,परब्रह्म
अनेकविध(वि०)--मुख्तलिफ,विविध।
अनेकशः(अ०)--अक्सर, अनेकवार।
अनेकशब्द(वि०)--पर्यायवाची।
अनेकाकिन्(वि०)--अकेला नहीं,किसी के साथ में। [अनिश्चित।
अनेकान्त(वि०)--सन्दिग्ध, चंचल,
अनेकार्थ(वि०)--बहुत से अर्थोंवाला [शब्द-जैसे गो,अमृत,अक्ष आदि]।

अनेजत्(वि०)--हरकत न करनेवाला, स्थिर,तद्रूप, ब्रह्म का विशेषण।
अनेड(पु०)--मूर्ख पुरुष, बुद्धिहीन मनुष्य।
अनेडमूक(वि०)--बहरा और गूंगा। अन्धा, धूर्त, शठ, बेईमान्।
अनेन(वि०)--पापरहित, दोषहीन।
अनेनस्(वि०)--पूर्ववत्।
अनेन(पु०)--जिसके ऊपर कोई प्रभु न हो, चक्रवर्ती।
अनेहस् [हा](पु०)--काल, समय।
अनैक्य(न०)--ऐक्य का अभाव, अनेकता, फूट, गड़बड़। [चंचल।
अनैकान्त(वि०)--अनिश्चित,अस्थिर,
अनैकान्तिक-न्तिकी(वि०)--पूर्ववत्।
अनैकान्त्य(न०)--चंचल स्वभाव।
अनो(अ०)--नहीं, निषेध व अभाव में प्रयुक्त होता है।
अनोकशायी(पु०)--घर में न सोने वाला, फकीर, भिखमंगा।
अनोकह(वि०)--गृहहीन। पु०--वृक्ष।
अनोदन(वि०)--भोजनहीन। [तता
अनौचित्य(न०)--अयोग्यता, अनुचि-
अनौजस्य(न०)--तेज या बल का अभाव।
अनौद्धत्य(न०)--गर्वहीनता, लज्जा-शीलता, विनय।
अनौरस(वि०)--जो आत्मज न हो, गोद लिया हुआ।
अंचु(धा०उ०)--गमन करना,पूजन करना
अन्त्(धा०प०)--बांधना। [अंतति]

अन्त(वि०)-नजदीक, अन्तिम, प्रियदर्शन, सब से नीचे का, सब से छोटा, अतिमनोहर। पु०-नाश, स्वरूप, प्रान्त सीमा, निश्चय, अवयव। न०-स्वरूप, स्वभाव।

अन्तःकरण (न०)-अन्तरिन्द्रिय, भीतरमक इन्द्रिय, मन।

अन्त कुटिल(पु०)-शख। वि०-जो अन्त करण में कुटिल हो।

अन्तःकृमि-पेट में उत्पन्न हो जाने वाले कीड़े, एक प्रकार का रोग विशेष। [अन्दरूनी गड़बड़।

अन्त कोप(पु०) छिपा हुआ गुस्सा,

अन्त कोष(न०)-भण्डार का अन्दर का भाग। [अन्दरूनी।

अन्तःचर(वि०)-शरीर में भरा हुआ,

अन्त पट(अस्त्री०)-परदा, आड़, आड़ करने का कपड़ा।

अन्तःपरिधान(न०)-सब से नीचे का कपड़ा।

अन्तःपुर(न०)-जनानखाना, हरम, घर में स्त्रियों के रहने का स्थान, घर में रहने वाली स्त्रियां।

अन्त पुराध्यक्ष(पु०)-राजा के अन्तःपुर का रक्षक।

अन्तःप्रकृति(स्त्री०)-मन्त्रिमण्डल, मनुष्य का अन्दरूनी स्वभाव।

अन्तःशार (पु०)-बीमारी, शरीरस्थ रोग। [नाम।

अन्त शिला (स्त्री०)-एकनदी का

अन्त.सत्त्व(वि०)-भीतरी ताकत रखने वाला।

अन्त सत्त्वा(स्त्री)-भल्लातक,गर्भिणी

अन्त सार(वि०) मजबूत, शक्तिशाली

अन्त स्वेद(पु०)-हाथी।

अन्तक(पु०)-मौत यमराज, काल, सीमा। वि०-अन्त करने वाला, नाशक। [कारी, मृत्युकर।

अन्तकर्-करण-कारिन् (वि०)-नाश-

अन्तकर्मन्(न०)-मृत्यु, नाश।

अन्तकालः-वेला-मृत्यु का समय।

अन्तकृत (पु०)-मृत्यु।

अन्तकारक(वि०) नाश करने वाला, संहार करने वाला। [दाहक्रिया।

अंत्यक्रिया(स्त्री०)-अन्त्येष्टिकर्म,

अन्तग(वि०)-अन्त तक पहुंचा हुआ, अच्छी तरह वाकिफ।

अन्तगति(स्त्री०)--मृत्यु, नाश, शरीर का प्रकृति में लय होना।

अन्तगमन (न०)-अन्त तक जाना, समाप्त करना, पूरा करना, मृत्यु, नाश।

अन्तगामी-मिनी(वि०)-नष्टहोनेवाला

अन्तचर(वि०)-इधर उधर घूमने वाला। सीमा तक पहुंचने वाला, पूरा करने वाला।

अन्तज(वि०)-अन्त में उत्पन्न हुआ।

अन्तत (अ०)-आखिरकार, अन्त में।

अन्तभव-भाज्(वि०)-अन्तिम,अन्ते-स्थित।

अन्तलीन(वि०)-छिपा हुआ।

अन्तवत् [वान्] (वि०)-शान्त, विनाशी, सीमाबद्ध।

अन्तशय्या(स्त्री०)--मृत्युशय्या, मृत्यु, मरघट, अरथि, मृत्युसमय पृथ्वी पर लेटाना।

अन्तसद्(पु०)--शिष्य।

अन्तर्(अ०)--मध्य, प्रान्त, स्वीकार। इत्यादि शब्दों में प्रयुक्त होता है; समास में अन्तर् का र् कहीं र विसर्ग में परिणत हो जाता है।

अन्तर(न०)--अवकाश, अवधि, परिधान, अन्तर्धान, भेद, सादृश्य, अवसर, अन्तरात्मा, मध्य, छिद्र, आत्मीय, बिना, बाहरी, सदृश।

अन्तरंस(पु०)--वक्षःस्थल।

अन्तराग्नि(पु०)--जठराग्नि।

अन्तरंग(वि०)--आत्मीय, स्वसम्पर्क, अन्दरूनी। न०-हृदय, मन, भीतर का भाग, गहरा दोस्त।

अन्तरचक्र(पु०)-दिशाओं और विदिशाओं के बीच के अन्तर को बारह भागों में बाटनेसे बने हुएकुर भाग

अन्तरज्ञ(वि०)- भीतर की बात जानने वाला।

अन्तरदिशा (स्त्री०)-दिशाओं के बीच की दिशा, विदिशा।

अन्तरा(अ०)-मध्य, निकट, वर्जन, बिना।

अन्तराकाश(पु०)-ईथर नामक वायु, ब्रह्म, जो हृदय में रहता है।

अन्तराकूत(न०)-छिपा हुआ इरादा।

अन्तरागार(न०)-घर का अन्दरूनी भाग। [जीवात्मा या मन, हृदय।

अन्तरात्मा(पु०)-अन्दरूनी आत्मा,

अन्तरापण(पु०)-नगर के भीतर का बाजार।

अन्तरापत्या(स्त्री०)-गर्भिणी स्त्री।

अन्तराय(पु०)-विघ्न, रुकावट। वि०-फर्क डालने वाला। [अन्तरय भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]

अन्तराराम(वि०)-अपने आप में खुश होने वाला।

अन्तराल(न०)-अभ्यन्तर, बीच, मध्य। [दूसरा रूप आन्तराल भी होता है]

अन्तरालक(न०)-अभ्यन्तर।

अन्तरिक्ष(न०)- पृथिवी और सूर्यादि लोकों के बीच का स्थान।

अन्तरित(वि०)-अन्तर्धान, प्राप्त, व्यवहित।

अन्तरी[रि]क्ष(न०)-सूर्य और पृथिवी के बीच का कुल, वायु, आकाश।

अन्तरीक्षोदर (वि०)-जिस का भीतर का भाग अन्तरिक्ष के समान चौड़ा हो।

अन्तरिक्षग-चर(पु०)-पक्षी।

अन्तरिक्षजल(न०)ओस, आकाश में रहने वाला जल।

अन्तरिक्षलोक(पु०)-स्वर्ग और पृथिवी के बीच का लोक।

अन्तरीप(पु०)-स्थल का भाग जो समुद्र में जो निकला हुआ होता है, द्वीप। [वस्त्र।

अन्तरीय(न०)-अधोवस्त्र, परिधान

अन्तरे(अ०)-मध्य में, बीच में, अभ्यन्तर में।

अन्तरेण(अ०)–बीचमें,मध्यमें,बिना।
अन्तर्गडु(वि०)–निरर्थक, वृथा।
अन्तर्गत(वि०)–बीच में गया हुआ, छिपा हुआ, अन्दरूनी, विस्मृत, आभ्यान्तर।
अन्तर्गम्(धा० प०)–बीच में जाना, बीच में पड़ना, शामिल होना, विनष्ट होना।
अन्तर्गामी[न्] (वि०)–अन्तर्गत।
अन्तर्गर्भ(वि०)–गर्भ वाली,अभ्यन्तर-युक्त।
अन्तर्गूढ(वि०)–भीतर छिपा हुआ।
अन्तर्गृह(न०)–घर का भीतर,बनारस में एक पवित्र स्थान का नाम।
अन्तर्घण(पु०)–दर्वाज़े के बाहर आंगन
अन्तर्घात(पु०)–बीच में मारना।
अन्तर्जठर(न०)–पेट।
अन्तर्जात(वि०)–अन्दर की ओर उत्पन्न हुआ। [हुआ ज्ञान।
अन्तर्ज्ञान(न०)–आभ्यन्तर या छिपा
अन्तर्ईधन(न०) सुराबीज,स्प्रिट।
अन्तर्दहन-दाहः–अन्दर की गर्मी, सोज़िश। [हो।
अन्तर्दु:ख(वि०)–जिस का हृदय दु:खी
अन्तर्दृष्टि(स्त्री०)–अपने आपको देखना [जानना]।
अन्तर्द्वार(न०)–प्रकोष्ठद्वार, छिपा हुआ घर का दर्वाज़ा।
अन्तर्धा(धा०उ०)–अन्दर रखना, जमा करना, प्रविष्ट करना, छिपना, अन्तर्धान होना।
अन्तर्धा(स्त्री०)–छिपाना,पोशीदगी।
अन्तर्धान(न०)–दिखलाई न देना, दृष्टि से बाहर होना।
अन्तर्धानगत(वि०)–अदृश्य, दिखलाई न देने वाला।
अन्तर्धायक(वि०)–छिपाने वाला आंखों से ओझल करनेवाला।
अन्तर्धि(पु०)–अन्तर्धान, दृष्टि से ओझल होना।
अन्तर्हित(वि०)–अलग किया हुआ, ओझल, छिपा हुआ, विनष्ट, अदृष्ट।
अन्तर्निहित(वि०)–अन्दर की ओर छिपा हुआ। [मग्न।
अन्तर्निष्ठ(वि०)–आत्मचिन्तन में
अन्तर्भव(वि०)–अन्दरूनी,भीतर का
अन्तर्भाव(पु०)–अन्तर्गत वस्तु, अन्तर्धान।
अन्तर्भावना(स्त्री०)अन्तर्गति,भीतर२ सोचना, या चिन्ता करना।
अन्तर्भिन्न(वि०)–विरोध के कारण टुकड़े २ हुआ। [करना।
अन्तर्भू(धा० प०)–अन्दर शामिल
अन्तर्भूत(वि०)--शामिल किया हुआ, अन्तर्गत। [का ज्ञान।
अन्तर्भूमि(स्त्री०)--पृथिवी के अन्दर
अन्तर्भेद(पु०)--अन्दरूनी झगड़ा।
अंतर्मनस्(वि०)--उदासीन, ग़मगीन चिंतातुर।
अंतर्याम(पु०)--श्वास का रोकना।
अंतर्यामी(पु०)--अंत:करणनियामक, आत्मा, जीव, पुरुष,ईश्वर।
अंतर्योग(पु०)–ध्यान में मग्न होना।

अन्तर्लीन(वि०)--छिपाहुआ,अंदर की तरफ् पोशीदा । [ध्यस्त ।
अंतर्वंशिक-वासिक(पु०)--अंत पुरा-
अंतर्वत(वि०)--अंदरूनी, जिस के भीतर कोई वस्तु हो ।
अन्तर्वती-वत्नी(स्त्री०)--गर्भिणी ।
अन्तर्वमि(पु०)--पेट की गड़बड़, बद-हजमी । [वाला ।
अंतर्वर्तिन्(वि०)--भीतर की ओर रहने
अंतर्वस्त्र(न०)--नीचे का कपड़ा ।
अंतर्वाणि(वि०)--शास्त्रज्ञ,शास्त्रवित्
अंतर्विगाहः-हनं अंदर दाखिल होना, घुसना, प्रवेश ।
अंतर्वेग(पु०)--अंदर की बेचैनी, अंदर का बुखार ।
अंतर्वेदी(स्त्री०)--ब्रह्मावर्त देश, गंगा यमुना के मध्यवर्ती देश, दुआब
अंतर्वेश्मन्(न०)--घर के भीतर के कमरे
अंतर्हास(पु०)-अव्यक्तहास, गूढ़हास
अंतर्हित(वि०)- गुप्त, छिपा हुआ, तिरोधान ।
अंतर्हृदय(न०)--हृदय के भीतर का भाग
अंतावशायी(पु०)--चण्डाल, नापित, मुनिविशेष ।
अन्ति(स्त्री०)--नाटक में बड़ीबहन को बोलते हैं। अ० -सामने,निकट।
अन्तिक(वि०)-निकट,समीप,नजदीक, अनुगामी । न०--समीपता ।
अन्तिकं(अ०)- समीप में, क़रीब में ।
अन्तिकतम(वि०)--अतिनिकट, अन्तितम, नेदिष्ठ ।
अन्तिका(स्त्री०)--बड़ी बहन, चूल्हा, एक पौधे का नाम ।
अंतिकाश्रय(पु०)--निकट आश्रय,सपक्ष
अन्तिम(वि०)--अन्तिमय, चरम, अति-निकट ।
अन्तिमांक(पु०)--नौ का अङ्क ।
अन्तिमांगुलि(स्त्री०)--कनिष्ठिका उङ्गली ।
अन्ती(स्त्री०)--अङ्गीठी, चूल्हा ।
अन्तेवासी(पु०)-शिष्य, चण्डाल, पुरये में रहने वाला ।
अन्त्य(वि०)--अधम, जघन्य, अंतिम, चरम, शेष, शेषोत्पन्न, न०-दश सागरसंख्या,सहस्रलक्षकोटि,द्वादशलग्न। पु०-म्लेच्छ,मुस्ता या मुता घास ।
अन्त्यक(पु०)--शूद्रजाति का मनुष्य ।
अन्त्यकर्म(न)--अन्त्येष्टिक्रिया ।
अन्त्यगमन(न०)--उच्चकुलोत्पन्न स्त्री का नीचकुलोत्पन्न पुरुष के साथ समागम ।
अन्त्यज(पु०)--शूद्र, शूद्रातिशूद्र, रजक आदि सात जाति ।
अन्त्यजा(स्त्री०)--नीचजाति की स्त्री।
अन्त्यजन्मा(पु०)- चतुर्थवर्ण, शूद्र ।
अंत्यजाति(पु०) -चण्डाल आदि ।
अंत्यभ(न०)--रेवती नक्षत्र,मीनराशि।
अन्त्यवर्ण(पु०)- शूद्र ।
अन्त्या(स्त्री०)--शूद्रजाति की स्त्री ज्योतिष में त्रिज्या का नाम ।
अन्त्यावसायी(पु०)-चण्डाल या निषाद जाति का पुरुष ।

अंत्याश्रमी(पु०)--संन्यासी, चौथे आश्रम का।
अन्त्येष्टि(स्त्री०)--मृतकका दाहादिकर्म [दाहकर्म।
अंत्याहुति (स्त्री०)--अंत्येष्टिकर्म,
अन्त्र(न०)--आंत, अंतड़ी।
अंत्रकूजन(न०)--आंतोंकी गड़गड़ाहट।
अंत्रवृद्धि(स्त्री०)--आंत उतरने का रोग
अंत्रंधमि(स्त्री०)--बदहजमी, आंतों का सूजन।
अंत्राद(पु०)--आंतों का कीड़ा।
अन्दू(धा०प०)बांधना, जकड़ना।
अन्द(पु०)-बांधना।
अन्दिका(स्त्री०)--अतिका का पर्यायवाची।
अन्दु-न्दू(स्त्री०)--स्त्रियों के पैर का एक भूषण, जंजीर या बेड़ी, हाथी के पैर बांधने का रस्सा।
अन्दुक-न्दूक(पु०)--पूर्ववत्।
अन्ध् (धा० उ०)--अंधा होना, अंधा करना।
अन्ध(वि०)-अंधा, दृष्टिहीन। न०--अंधकार, आत्मज्ञान का अभाव, अविद्या, जल। पु०--अज्ञ, परिव्राजकविशेष।
अन्धक(वि०)--अंधा। पु०--कश्यप और दिति का पुत्र जो असुर था।
अन्धकरिपु-घाती-शत्रु(पु०)-अंधक का मारने वाला शिव।
अन्धकवर्त(पु०)-एक पर्वत का नाम।
अन्धकार(पु०)-अंधियारा।
अन्धकारि(पु०)-शिव का विशेषण।
अन्धकूप(पु०)--ऐसा कुंआ जिसका मुंह ढक गया हो और वृक्षों में छिप गया हो।
अन्धतमस(न०)--बिलकुल अंधेरा।
अन्धतमसा(स्त्री०)--रात।
अन्धधी(वि०)--जो बुद्धि से अंधा हो।
अन्धपूतना(स्त्री०)--बच्चों के रोग उत्पन्न करने वाली एक राक्षसी।
अन्धंकरण(वि०)--अंधा करने वाला।
अन्धंभविष्णु-भावुक(वि०)-अंधा होनेवाला।
अन्धस्(न०)--अन्न, भात, चावल।
अन्धिका(स्त्री०)--रात्रि, जुआ खेलना, स्त्रियों की जातिविशेष, आंखों का एक रोग।
अन्धीकृ(धा०उ०)-अंधा करना।
अन्धीकृतात्मा(पु०)-अंधे मनवाला।
अन्धीभू(धा०प०)-अंधा होना।
अन्धु(पु०)--कुआं, कूप, उपस्थेन्द्रिय।
अन्धुल(पु०)-शिरीष नामक वृक्ष।
अन्ध्र (पु०)-देशभेद, जातिभेद। [बहुवचन में प्रयोग होता है]
अन्ध्रभृत्याः-एक राजवंश का नाम।
अन्न(न०)-भोज्यपदार्थ, पके हुए चावल, अनाज, जल, पृथिवी, विष्णु। पु०-सूर्य। वि०-खाया हुआ, भोजन दिया हुआ।
अन्नकाल(पु०)-खानाखाने का समय
अन्नकूट(पु०)-पके हुए चावलों का एक बड़ा ढेर।
अन्नकोष्ठक(वि०)-कोठार, अनाज भरने का घर, विष्णु, सूर्य।

अन्नगन्धि(पु०)-अतिसार, दस्तों का रोग।

अन्नज-जात(वि०)-अन्न से उत्पन्न

अन्नजल(न०)-दानापानी,भोजनमात्र

अन्नद-दाता(वि०)-भोजन देनेवाला, शिवका विशेषण।

अन्नदा(स्त्री०)-दुर्गा या अन्नपूर्णा।

अन्नदास(पु०)-भोजनमात्र पर नौकरी करने वाला।

अन्नदेवता(स्त्री०)-भोज्यपदार्थों की रक्षा करने वाला देवता।

अन्नद्वेष(पु०)-भोजन में अरुचि,भूख का कम होना।

अन्नपति(पु०)-सावित्री, अग्नि और शिव का विशेषण।

अन्नपाक(पु०)-भोजन का पकाना, पेट में भोजन का पचाना।

अन्नपू(वि०)-अन्न को पवित्र करने वाला अर्थात सूर्य।

अन्नपूर्ण(वि०)-अन्न से भरा हुआ।

अन्नपूर्णा(स्त्री०)-दुर्गा का एक भेद।

अन्नप्राशः-शनम्-सोलह संस्कारों में से एक,जिस में उत्पत्तिके पश्चात् छठे या आठवें महीने में बच्चे को प्रथम अन्न खिलाया जाता है।

अन्नमय-यी(वि०)-अन्नयुक्त, अन्न का बना हुआ।

अन्नमल(न०)-पाखाना, विष्टा।

अन्नवस्त्र(न०)-भोजन और वस्त्रमात्र

अन्नविकार(पु०) पेट में गड़बड़, अन्न का रूपपरिवर्तन।

अन्नात्(वि०)-अनाज खानेवाला।

अन्नाद(वि०)-अनाज खाने वाला, दीप्ताग्नि। पु०-विष्णु।

अन्नाशन(न०)-विधि से अन्न का खुलाना।

अन्य(वि०)-दूसरा,भिन्न,असदृश,पर, विभिन्न,अन्यतर, समान, कोई।

अन्यक(वि०)-अन्य, भिन्न।

अन्यकारुका(स्त्री०)-शकृत्कीट।

अन्यक्षेत्र(न०)-दूसरा क्षेत्र, दूसरे की स्त्री।

अन्यग-गामिन्(वि०)-दूसरे के पास जानेवाला, व्यभिचारी।

अन्यच्च(अ०)-और भी।

अन्यत्(वि०)-इतर, भिन्न।

अन्यतः(अ०)-अन्यत्र, और से, दूसरे से।

अन्यतम(वि०)-बहुतसों में से एक।

अन्यतर(वि०)-दो में से एक।

अन्यतरतः(अ०)-दो ओर में से एक ओर से। [अन्यतर दिन में।

अन्यतरेद्यु(अ०)-एक न एक दिन,

अन्यतस्त्य(पु०)-प्रतियोगी, शत्रु।

अन्यत्र(अ०)-दूसरे स्थान में, दूसरे स्थान से, दूसरे अवसर पर।

अन्यत्रमनस्(वि०)-अन्यत्रचित्त,जिस का ध्यान किसी और विषय पर लगा हुआ हो।

अन्यथा(अ०)-विपरीत, उलटा, विरुद्ध, और का और, विना, व्यतिरेक, असत्य।

अन्यथाकार(पु०)-तबदीलकरनेवाला, बदलने वाला।
अन्यथाभाव(पु०)-तबदीली, विभेद, दूसरे प्रकार से होना। [वाला।
अन्यथावादी(वि०)-झूठा।झूठ बोलने
अन्यथासिद्ध(वि०)-गलत सिद्ध हुआ।
अन्यथासिद्धि(स्त्री०)-न्याय में एक दोष जिस में यथार्थ नहीं किन्तु और कोई कारण दिखाकर किसी बात की सिद्धि की जाय।
अन्यदा(अ०)-अन्य समय में, कालान्तर में।
अन्यदीय(वि०)-दूसरे में या दूसरेका
अन्यदुर्वह(वि०)-दूसरी से लेजाने या बरदाश्त करने के अयोग्य।
अन्यनाभि(वि०)-दूसरे वंश से सम्बंध रखने वाला। [वाला।
अन्यपर(वि०)-दूसरे में भक्ति रखने
अन्यपुष्टा(स्त्री०)-कोयल, कोकिल।
अन्यपूर्वा(स्त्री०)-ऐसी स्त्री जिसकी दूसरे से पूर्व सगाई होगई हो, दूसरी बार विवाही हुई स्त्री।
अन्यभृत(पु०)-कौआ।
अन्यभृत(पु०)-कोयल।
अन्यमनस्क(वि०)-भिन्नचित्त,अन्यमना,दूसरे के ध्यान में लगा हुआ।
अन्यलिंग(वि०)-दूसरे का लिंग ले लेने वाला अर्थात् विशेषण।
अन्यविवर्द्धित(वि०)-अन्यपुष्ट, दूसरे से पला हुआ, कोयल।
अन्यवादी(वि०)--झूठी गवाही देने वाला, मुद्दाअलह।
अन्यवाप(पु०)-कोयल,जिस की बाबत कहा जाता है कि वह अपने अण्डों को दूसरी चिड़िया के घोंसले में छोड़ देती है।
अन्यव्रत(वि०)-अवैदिक अनुष्ठानों का करनेवाला, वेदभिन्न देवताओं का पूजक।
अन्यसंगम(पु०)-अन्य स्त्री के साथ समागम, अनुचित समागम।
अन्यस्त्री(स्त्री०)-दूसरे की स्त्री।
अन्या(वि०)-न सूखने वाला।
अन्यार्थ(वि०)-विभिन्न अर्थों वाला।
अन्यादृक्(वि०)-अन्य प्रकार का।
अन्यादृश(वि०)-पूर्ववत्।
अन्याय(पु०)-न्याय से भिन्न, अनौचित्य, अयुक्ति। [वाला।
अन्यायी [न्] (वि०)-अन्याय करने
अन्याय्य(वि०)-अनुचित, अयोग्य, असङ्गत, गर्हित, धर्मविरुद्ध।
अन्यून(वि०)-न्यूनतारहित,सम्पूर्ण।
अन्येद्युः(अ०) दूसरे दिन, दिवसान्तर में, अन्य दिन। [का।
अन्येद्युष्क(वि०)-रोजाना, प्रतिदिन
अन्योढा(वि०)-दूसरे की विवाही हुई, दूसरे की स्त्री।
अन्योदर्य(वि०)-अन्यमातृज,वैमात्रेय, दूसरे उदर से उत्पन्न हुआ, सौतेली मा का। [परस्परतः।
अन्योन्य(वि०)-परस्पर, इतरेतर,
अन्योन्याश्रय(वि०)-जो एक दूसरे का आश्रय करता हो, न्यायमत में तर्क विशेष।

अन्वक् [च] (वि०)-पश्चाद्गामी, अनुग। अ०-पश्चात्, पीछे से।
अन्वक्ष(वि०)-दिखलाई देने वाला, पीछा करने वाला।
अन्वच्(वि०)-अनुगामी।
अन्वय(पु०)-वंश, कुल, अनुगमन, सम्बंध, वाक्य को व्याकरणानुसार तरतीब। [रखने वाला।
अन्वयवत्(वि०)-अन्वय वा सम्बंध
अन्वयागत(वि०)-खान्दानी, परम्परागत।
अन्वयी(वि०)-अनुगामी, सम्बन्धी।
अन्वर्थ(वि०)-स्पष्ट अर्थों वाला।
अन्ववकिरण(न०)-क्रमपूर्वक इधर उधर बखेरना।
अन्ववसर्ग(पु०)-स्वेच्छानुगामिता, कामचारानुज्ञा। [हुआ।
अन्ववसित(वि०)-सम्बन्धित, बंधा
अन्ववाय(पु०)-कुल, वंश।
अन्ववेक्षा(स्त्री०)-ख्याल, विचार।
अन्वष्टका(स्त्री०)-सागिनियों के लिये एक मातृकश्राद्ध जो अष्टका के अनन्तर पौष, माघ, फाल्गुन और क्वार की कृष्णपक्ष की नवमी को होता है।
अन्वस्त(वि०)-फेंका हुआ, गोली से मारा हुआ, बीच २ में पिरोया हुआ।
अन्वहं(अ०)-प्रतिदिन, दिन पर दिन, दिन बदिन।
अन्वाख्या(धा० प०)-गणना करना, क्रमपूर्वक दोहराना।
अन्वाख्यान(न०)-अध्याय, परिच्छेद, पश्चाद्वर्णन, गणना।
अन्वाचय(पु०)-प्रधान वा मुख्य कार्य करने के साथ २ किसी अप्रधान कार्य को भी करने की आज्ञा।
अन्वाचित(वि०)-गौण, मुख्य से भिन्न।
अन्वादिश्(धा० प०)-फिर से बयान करना, उल्लेख करना, फिर से नियुक्त करना।
अन्वादिष्ट(वि०)-बाद में बयान किया हुआ, फिर से नियुक्त, गौण।
अन्वादेश(पु०)-पहिले एक काम करने पर कुछ दूसरा काम करने का फिर आदेश वा उपदेश।
अन्वाधान(न०)-अग्न्याधान के उपरान्त अग्नि को बनाये रखने के लिये उसमें ईंधन छोड़नेकी क्रिया।
अन्वाधि(पु०)-किसीके हाथ में कोई वस्तु देकर कहना कि इसे अमुक मनुष्यको देदेना। निरन्तर चिन्ता, पश्चात्ताप।
अन्वाधेय-यक(न०)-विवाह के पीछे माता पिता से तथा भर्तृकुल से एवं बन्धुकुल से स्त्री को जो धन मिलता है।
अन्वाध्य(पु०)-देवयोनि विशेष।
अन्वारभ्(धा०आ०)-आरम्भ करना, शुरू करना, छूना।
अन्वारब्ध(वि०)-शरीरके किसी अंग पर स्पर्श किया हुआ, अनुगत।
अन्वारम्भ:-रम्भणं-स्पर्श, छूना, यज्ञानुष्ठान के समय यजमान का छूना।

अन्वारम्भणीया(स्त्री०)–आरम्भिक अनुष्ठान।
अन्वारुह्(धा०प०)–चढ़ने में अनुकरण करना, ऊपर चढ़ना।
अन्वारोहण(न०)–पति की मृत्यु के पश्चात् विधवा का सती होना।
अन्वास्(धा० आ०)–समीप बैठाया जाना, सेवकाई करना, किसी धार्मिककृत्य का सम्पादन करना
अन्वासन(न०)–उपासना, अनुशोचन, शिल्पागार, पश्चात्ताप, स्नेहवस्ति। [यज्ञ की दक्षिणा।
अन्वाहार्य(अस्त्री०)–मासिकश्राद्ध,
अन्वाहार्यक(न०)–पूर्ववत्।
अन्वाहिक(वि०)–रोज़ाना, प्रतिदिन
अन्वाहिकी(स्त्री०)–पूर्ववत्।
अन्वाहित(वि०)–जो एक के यहां अमानत रक्खा हो और वह उसे किसी और के यहां रखदे।
अन्वि(धा० प०)–अनुगमन करना, साथ जाना, तलाश करना।
अन्वित(वि०)–मिलित, युक्त, शामिल, अनुगत, अन्वय किया हुआ, समझा हुआ।
अन्विति(वि०)–वन्दना द्वारा प्रसन्न किया हुआ। स्त्री०-भोजन, अनुगमन।
अन्विष्(धा० प०)–इच्छा करना, ढूंढना, तलाश करना।
अन्विष्ट(वि०)--अन्वेषित, ढूंढा हुआ, इच्छा किया हुआ।
अन्वीक्ष्(धा०आ०)–टकटकी लगाकर देखना, दृष्टि में रखना, तलाश करना। [ध्यान।
अन्वीक्षण(न०)--तलाश, तहक़ीक़ात,
अन्वीक्षा(स्त्री०)–पूर्ववत्।
अन्वीत–अन्वित के समान।
अन्वीप(वि०)–पानी के समीप, प्रातियोग्य। [ढुंढाई, तलाश।
अन्वेष(पु०)--अन्वेषण, अनुसन्धान,
अन्वेषक(वि०)–ढूंढने वाला, अनुसन्धान करने वाला।
अन्वेषण(न०)–अनुसन्धान।
अन्वेषणा(स्त्री०)–गवेषणा, अनुसन्धान, पर्येषणा।
अन्वेषित(वि०)--कृतान्वेषण, गवेषित, अन्विष्ट। [समान।
अन्वेषी [न्] (वि०)–अन्वेषक के
अन्वेष्टा(वि०)–अन्वेषणकर्त्ता।
अप्(स्त्री०)--जल [यह शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होता है, जहां इस के रूप आपः, अपः, अद्भिः, इत्यादि बनते हैं], वायु।
अप्कृत्स्न(न०)--जल की सहायता से गम्भीर ध्यान।
अप्पति(पु०)--वरुण, समुद्र।
अप(अ०)–अनादर, वश, वैरूप्य, त्याग, वर्जन, वियोग, विपर्यय, विकृति निर्देश, हर्ष, इन अर्थों में प्रयुक्त होता है।
अपः[स्] (न०)–यज्ञकर्म।
अपकरण(न०)–अनिष्टाचार, बुराई करना।

अपकरुण(वि०)-निष्ठुर, कठोरहृदय।

अपकर्ता(वि०)-अपकार करने वाला हानिकारक, वैर रखने वाला।

अपकर्म(न०)-दुष्क्रिया, मन्दकर्म।

अपकर्ष(पु०)-नीचे को खींचना, गिराना, बिगाड़ना।

अपकर्षक (वि०)-नीचे को खींचने वाला, कम करने वाला।

अपकर्षण (वि०)-अपकर्षक, वर्द्धक का प्रतियोगी। न०-हटाना, नीचे की ओर खींचना, कम करना।

अपकलंक(पु०)-बहुत बड़ा कलंक या धब्बा।

अपकार(पु०)-द्रोह, अत्याचार, द्वेष, अनुपकार, अनिष्टसाधन।

अपकारक-रिन् (वि०)-अपकार करने वाला, हानि देने वाला, शत्रु, बुराई करने वाला। [देना।

अपकारगीः(स्त्री०)-झिड़कना, गाली

अपकारार्थी(वि०)-हानि पहुंचाने वाला, द्वेषी। [निन्दा।

अपकीर्ति(स्त्री०)-अपयश, बदनामी,

अपकीर्तिकर (वि०)-अपयश करने वाला, बदनाम करने वाला, निंदक।

अपकृति(स्त्री०)-हानि, नुकसान, चोट, दुश्मनी, गिराने वाला काम।

अपकृत्य(न०)-पूर्ववत्।

अपकृष् (धा० प०)-पीछे की ओर खींचना, एक ओर को खींचना, खींचकर लेजाना, खींचकर बाहर निकालना, अपमानित करना। [यह धातु छठे गण में उभयपदी होती है]।

अपकृष्ट(वि०)-हटाया हुआ, खींचकर बाहर किया हुआ, जघन्य, अधम निकृष्ट। पु०-कौआ।

अपकृष्टचेतन(वि०)-नीच प्रकृति का

अपकृष्टजाति(वि०)-नीचजाति या वंश का।

अपकॄ(धा० प०)-बखेरना, [जल का] छिड़कना।

अपक्रीशली(पु०)-खबर, समाचार।

अपक्ति(स्त्री०)-न पकना, अपरिपक्वता, बदहज़मी।

अपक्रम्(धा० प०)-दौड़ जाना, चला जाना, बचकर भागना, पीछे हटना, चौंकना।

अपक्रम(पु०)-पलायन, भागना, बचकर भागना। वि०-बेतरतीब, क्रमहीन।

अपक्रमण(न०)-पलायन, पीछे की ओर हटना।

अपक्व(वि०)–कच्चा, न पका हुआ।
अपक्ष(वि०)–पर या पक्षहीन, उड़ने की शक्ति न रखने वाला, दूसरी पार्टी का, विरुद्ध।
अपक्षपात(पु०)—पक्षपातहीनता, किसी की तरफ़दारी न करना।
अपक्षपातिन्(वि०)–पक्षपातहीन, ऐसा तरफ़दारी न करने वाला।
अपक्षय (पु०)–अधःपतन, नाश।
अपक्षि(धा० प०)–अन्त करना, नष्ट करना, बरबाद करना।
अपक्षिप्(धा० प०)–फेंकना, दूर वा नीचे फेंकना, दूर लेजाना, हटा देना।
अपक्षिप्त(वि०)–फेंका हुआ, पतित, गिराया हुआ। [हुआ।
अपक्षीण(वि०)–अधोगत, नष्ट हुआ
अपक्षेप(पु०)-दूर फेंकना वा नीचे फेंकना
अपक्षेपण(न०)–पूर्ववत्।
अपगंड(वि०)--बालिग़,प्राप्तवयस्क।
अपग(वि०)—जानेवाला, लौट जानेवाला।
अपगत(वि०)--मृत, मरा हुआ, गत, दूरीभूत, पलायित।
अपगति(स्त्री०)–दुर्गति,बदक़िस्मती।
अपगम्(धा० प०)--चला जाना, जुदा होना,मरना,गुज़रना, नष्ट होना।
अपगम(पु०)–अलहदगी,जुदाई,नाश, दूर होना, मृत्यु।
अपगमन(न०)–पूर्ववत्।
अपगार(पु०)–निन्दा, बदनामी।
अपगा (स्त्री०)–नदी [शुद्धरूप आपगा है]।
अपगुण(पु०)--अवगुण, दोष।
अपगुर्(धा०प०)--धमकाना, भर्त्सना करना, सहकृत करना, त्यागना।
अपगुह्(धा०उ०)--छिपाना, छिपना।
अपगोह(पु०)--छिपने का स्थान, अगोचर होना।
अपघन(पु०)–अवयव, अंग।
अपघात(पु०)–अपहनन, मारना, बुरी मृत्यु।
अपघातिन्(वि०)–मारने वाला, घात करने वाला।
अपच(पु०)–बदहज़मी, बुरी तरह पकी हुई वस्तु, ऐसा मनुष्य जो अपने लिये भोजन न पकाता हो।
अपचय(पु०)–क्षति, हानि, अपहरण, खर्च।
अपचर्(धा० प०)–जुदा होना, क़सूर करना, भटकना।
अपचरित(वि०)–मरा हुआ, गत। न०–दोष, बुरा कर्म।
अपचाय्(धा०आ०)–सम्मानना,अर्चना करना।
अपचायित(वि०)-डरा हुआ,प्रतिष्ठित।
अपचार(पु०)–अहिताचरण, जुदाई, मरना, जुर्म, अभाव, हानि।
अपचारिन्(वि०)–अपचार करने वाला, दुष्ट, बुरा।
अपचि(धा० प०)–इज़्ज़त करना, निमंत्रित करना, [उभयपदी में] इकट्ठा करना।
अपचित(वि०)-इकट्ठा हुआ२, पतला दुबला,प्रतिष्ठित, पूजित, क्षीण।

अपचिति(स्त्री०)–हानि, व्यय, पूजा, क्षय, ध्वंस, सम्मानना।
अपच्छत्र(वि०)–छत्रहीन।
अपच्छाय(वि०)–छायारहित, अप्रतिम।
अपच्छेद(पु०)–काटकर अलग करना, हानि, दखल।
अपच्छेदन(न०)–पूर्ववत्।
अपच्यु(धा० आ०)–टूट कर गिर पड़ना, साथ छोड़ना, नष्ट होना, मरना।
अपच्युत(वि०)–नष्ट, टूटा हुआ।
अपजय(पु०)–हार, पराजय।
अपजात(पु०)–कुपुत्र, पिता से कम योग्यता का पुत्र।
अपजि(धा० प०)–हराना, जय प्राप्त करना।
अपज्ञा(धा० आ०)–इंकार करना, अस्वीकार करना।
अपज्ञान(न०)–इंकार, छिपावट।
अपटान्तर(वि०)–जिसके बीच में पर्दा न हो, अव्यवहित, आसन्न।
अपटी(स्त्री०)–पर्दा, यवनिका, कनात
अपटु(वि०)–जो चतुर न हो, पटुता रहित, रोगी, व्यथित।
अपठ(वि०)–पढ़ने में अशक्त, न पढ़ने वाला, बुरा पढ़ने वाला।
अपण्डित(वि०)–मूर्ख, अविद्वान्।
अपण्य(वि०)–न बेचने योग्य।
अपतर्पण(न०)–लंघन, रोगादि में भोजन न करना।
अपति-क(वि०)–स्वामिरहित, अविवाहित

अपत्नी(स्त्री०)–अविवाहित, पतिरहित।
अपत्नीक(वि०)–भार्यारहित।
अपत्य(न०)–पुत्र, कन्या, सन्तान, सन्तति, प्रसूति।
अपत्यकाम(वि०)–सन्तान की इच्छा करने वाला।
अपत्यद(वि०)–सन्तान देनेवाला।
अपत्यदा(स्त्री०)–गर्भदातृवृक्ष।
अपत्यपथ(पु०)–भग, योनि।
अपत्यविक्रयी(पु०)–ऐसा पिता जो अपनी कन्या को रुपया लेकर विवाहे।
अपत्यशत्रु(पु०)–जिसका शत्रु अपत्य या सन्तान हो, केकड़ा, कर्कट।
अपत्र(वि०)–पत्तों से रहित, पत्रहीन। पु०–अंकुर, परराहित पक्षी, सूखा वृक्ष।
अपत्रप(वि०)–निर्लज्ज, त्रपारहित।
अपत्रपिष्णु(वि०)–लज्जाशील।
अपत्रपा-पर्या–निर्लज्जता, शर्मीलापन
अपत्रस्त(वि०)–भयभीत, डरा हुआ।
अपथ(वि०)–मार्गरहित। न०–कुमार्ग, कुपथ, योनि।
अपथ्य(अ०)–भटका हुआ, ग़लत रास्ते में।
अपथगामी(वि०)–बुरे मार्ग में जाने वाला, नास्तिक।
अपथप्रपन्न(वि०)–अन्यथा स्थान में व्यय किया हुआ, अपव्यय में लगाया हुआ।

अपथ्य(वि०)-अनुचित, बेमौजूं, हानिप्रद, रोगकर, अहित ।
अपथ्यकारी(वि०)-अनिष्ट करनेवाला, मुजरिम । [पादरहित ।
अपद्-पाद्(वि०)-न जानने के योग्य,
अपद(वि०)-पादरहित, पद [ओहदा], रहित । पु०-सर्प । न०-अनुचित स्थान, स्थानाभाव, ईथर नामक वायु । [वाला ।
अपदम(वि०)-आत्मसंयम न करने
अपदान-नक(न०)-शोधन,साफ़करना परिशुद्ध आचारण, कोई उत्तम काम, सुकृत, अवदान ।
अपदान्तर(वि०)-अव्यवहित, संयुक्त, निकट। न०--समीपता,सन्निकर्ष।
अपदिश्(१प०)-बतलाना,देना, ज़ाहिर करना, कहना ।
अपदिश(न०)--दिशाओं का बीच, कोण । अ०-दिशाओं के बीच में।
अपदेवता(स्त्री०)-भूत, प्रेत, जिन ।
अपदेश(पु०)--लक्ष्य, निशान, छल, बहाना, स्थान, स्वरूप को आच्छादन करना, वेष बदलना ।
अपदेशी[न्] (वि०)--छल करने वाला, अन्यथा रूप धारण करने वाला ।
अपद्रव्य(न०)--बुरी वस्तु ।
अपद्वार(न०)--बग़ल का दर्वाजा, मुख्यद्वार से भिन्न द्वार ।
अपधूम(वि०)--धूमरहित ।
अपध्यै(१ प०)—किसी का बुरा सोचना, मन मन में शाप देना ।
अपध्यान(न०)-बुरा विचार, बुरा सोचना, मनमन में शाप देना ।
अपध्वंस्(१ आ०)--साफ करना, धूल झाड़ना, धिक्कारना ।
अपध्वंस(पु०)-अपमान, छिपावट, गिरावट । [फ़ोनजात ।
अपध्वंसज(पु०)--वर्णसंकर,प्रति-
अपध्वंसजा (स्त्री०)--प्रतिलोमजा ।
अपध्वंसी[न्] (वि०)--नाश करने वाला, दूर करने वाला ।
अपध्वस्त(वि०)-परित्यक्त, निन्दित, अवचूर्णित, बुरी तरह पिसा हुआ।
अपध्वान्त(न०)-अन्यथा या कठोर ध्वनि ।
अपनय(पु०)-अपकार, दूर ले जाना, रद्द करना, दुर्नीति ।
अपनयन(न०)-खण्डन, दूरीकरण ।
अपनस(वि०)-नासिकाहीन ।
अपनाम(न०)-बुरा नाम, बदनामी ।
अपनी(१प०)-दूर करना, दूर हटाना, नाश करना । लूटना, उखाड़ना, खींचना, इंकार करना, मुस्तस्ना करना ।
अपनीत(वि०)-उद्धृत,दूर किया हुआ, अदा किया हुआ, अन्यथाकृत । न०-बुरा आचार ।
अपनुद्(६प०)-दूर करना, नाशकरना, पश्चात्ताप करना ।
अपनुत्ति(स्त्री०)-दूरीकरण, खण्डन ।
अपनोद(पु०)-पूर्ववत ।
अपनोदन(न०)-पूर्ववत ।
अपपय स्(वि०)-जलहीन, सूखा ।
अपपाठ(पु०)-अन्यथापाठ, अशुद्धपाठ
अपपात्र(वि०)-नीचकुल का ।

अपचिति(स्त्री०)–हानि, व्यय,पूजा, क्षय, ध्वंस, सम्मानना।
अपच्छत्र(वि०)–छत्रहीन।
अपच्छाय(वि०)–छायारहित,अप्रतिम।
अपच्छेद(पु०)–काटकर अलग करना, हानि, दख़ल।
अपच्छेदन(न०)–पूर्ववत्।
अपच्यु(धा० आ०)–टूट कर गिर पड़ना, साथ छोड़ना,नष्ट होना, मरना।
अपच्युत(वि०)–नष्ट, टूटा हुआ।
अपजय(पु०)–हार, पराजय।
अपजात(पु०)–बुरापुत्र, पिता से कम योग्यता का पुत्र।
अपजि(धा० प०)–हराना, जय प्राप्त करना।
अपज्ञा(धा० आ०)–इंकार करना, अस्वीकार करना।
अपज्ञान(न०)–इकार, छिपावट।
अपटान्तर(वि०)–जिसके बीच में पर्दा न हो, अव्यवहित, आसन्न।
अपटी(स्त्री०)–पर्दा, यवनिका, कनात
अपटु(वि०)–जो चतुर न हो, पटुता रहित, रोगी, व्यथित।
अपठ(वि०)–पढ़ने में अशक्त, न पढ़ने वाला, बुरा पढ़ने वाला।
अपण्डित(वि०)–मूर्ख, अविद्वान्।
अपण्य(वि०)–न बेचने योग्य।
अपतर्पण(न०)–उपवास, रोगादि में भोजन न करना।
अपति-का(वि०)–स्वामिरहित, अविवाहित

अपत्नी(स्त्री०)–अविवाहित, पति-रहित।
अपत्नीक(वि०)–भार्यारहित।
अपत्य(न०)–पुत्र, कन्या, सन्तान, सन्तति, प्रसूति।
अपत्यकाम(वि०)–सन्तान की इच्छा करने वाला।
अपत्यद(वि०)–सन्तान देनेवाला।
अपत्यदा(स्त्री०)–गर्भदावृक्ष।
अपत्यपथ(पु०)–भग, योनि।
अपत्यविक्रयी(पु०)–ऐसा पिता जो अपनी कन्या को रुपया लेकर बिवाहे।
अपत्यशत्रु(पु०)–जिसका शत्रु अपत्य या सन्तान हो, केकड़ा, कर्कट।
अपत्र(वि०)–पत्तों से रहित,पत्रहीन। पु०–अंकुर, परहित पक्षी, सूखा वृक्ष।
अपत्रप(वि०)–निर्लज्ज, त्रपारहित।
अपत्रपिष्णु(वि०)–लज्जाशील।
अपत्रपा-त्रा–निर्लज्जता,शर्मीलापन
अपत्रस्त(वि०)–भयभीत, डरा हुआ।
अपथ(वि०)–मार्गरहित। न०–कुमार्ग; कुपथ, योनि।
अपथे(अ०)–भटका हुआ, ग़लत रास्ते में।
अपथगामी(वि०)–बुरे मार्ग में जाने वाला, नास्तिक।
अपथप्रपन्न(वि०)–अन्यथा स्थान में व्यय किया हुआ, अपव्यय में लगाया हुआ।

अपथ्य(वि०)—अनुचित, बेमौजू, हानिप्रद, रोगकर, अहित।
अपथ्यकारी(वि०)—अनिष्ट करनेवाला, मुजरिम। [पादरहित।
अपद्-पाद्(वि०)—न जानने के योग्य,
अपद(वि०)—पादरहित, पद [ओहदा] रहित। पु०—सर्प। न०—अनुचित स्थान, स्थानाभाव, ईथर नामक वायु। [वाला।
अपदम(वि०)—आत्मसंयम न करने
अपदान-नक(न०)—शोधन, साफ करना परिशुद्ध आचारण, कोई उत्तम काम, सुकृत, अवदान।
अपदान्तर(वि०)—अव्यवहित, संयुक्त, निकट। न०--समीपता, सन्निकर्ष।
अपदिश्(६प०)-बतलाना, देना, ज़ाहिर करना, कहना।
अपदिश(न०)--दिशाओं का बीच, कोण। अ०—दिशाओं के बीच में।
अपदेवता(स्त्री०)—भूत, प्रेत, जिन।
अपदेश(पु०)--लक्ष्य, निशान, छल, बहाना, स्थान, स्वरूप को आच्छादन करना, वेष बदलना।
अपदेशी[न्] (वि०)--छल करने वाला, अन्यथा रूप धारण करने वाला।
अपद्रव्य(न०)--बुरी वस्तु।
अपद्वार(न०)--बगल का दर्वाज़ा, मुख्यद्वार से भिन्न द्वार।
अपधूम(वि०)--धूमरहित।
अपध्यै(१ प०)—किसी का बुरा सोचना, मन मन में शाप देना।
अपध्यान(न०)—बुरा विचार, बुरा सोचना, मनमन में शाप देना।
अपध्वंस्(१ आ०)--नाश करना, धूल फाड़ना, धिक्कारना।
अपध्वंस(पु०)—अपमान, छिपावट, गिरावट। [क्षीनजात।
अपध्वंसज(पु०)--वर्णसंकर, प्रति-
अपध्वंसजा (स्त्री०)--प्रतिलोमजा।
अपध्वंसी[न्] (वि०)--नाश करने वाला, दूर करने वाला।
अपध्वस्त(वि०)—परित्यक्त, निन्दित, अवचूर्णित, बुरी तरह पिसा हुआ।
अपध्वान्त(न०)—अन्यथा या कठोर ध्वनि।
अपनय(पु०)—अपकार, दूर लेजाना, रद्द करना, दुर्नीति।
अपनयन(न०)—खण्डन, दूरीकरण।
अपनस(वि०)—नासिकाहीन।
अपनाम(न०)—बुरा नाम, बदनामी।
अपनी(१प०)-दूर करना, दूर हटाना, नाश करना। लूटना, उखाड़ना, खींचना, इंकार करना, मुस्तसना करना।
अपनीत(वि०)—उद्धृत, दूर किया हुआ, अदा किया हुआ, अन्यथाकृत। न०-बुरा आचार।
अपनुद्(६प०)-दूर करना, नाश करना, पश्चात्ताप करना।
अपनुत्ति(स्त्री०)-दूरीकरण, खण्डन।
अपनोद(पु०)-पूर्ववत।
अपनोदन(न०)—पूर्ववत।
अपत्रपस्(वि०)—लज्जाहीन, धृष्ट।
अपपाठ(पु०)—अन्यथापाठ, अशुद्धपाठ
अपपात्र(वि०)—नीचकुल का।

अपचिति(स्त्री०)–हानि, व्यय, पूजा, क्षय, ध्वंस, सम्मानना।
अपच्छत्र(वि०)–छत्रहीन।
अपच्छाय(वि०)–छायारहित, अप्रतिभ।
अपच्छेद(पु०)–काटकर अलग करना, हानि, दखल।
अपच्छेदन(न०)–पूर्ववत्।
अपच्यु(धा० आ०)–टूट कर गिर पड़ना, साथ छोड़ना, नष्ट होना, मरना।
अपच्युत(वि०)–नष्ट, टूटा हुआ।
अपजय(पु०)–हार, पराजय।
अपजात(पु०)–बुरापुत्र, पिता से कम योग्यता का पुत्र।
अपजि(धा० प०)–हराना, जय प्राप्त करना।
अपज्ञा(धा० आ०)–इंकार करना, अस्वीकार करना।
अपज्ञान(न०)–इंकार, छिपावट।
अपटान्तर(वि०)–जिसके बीच में पर्दा न हो, अव्यवहित, आसन्न।
अपटी(स्त्री०)–पर्दा, यवनिका, कनात
अपटु(वि०)–जो चतुर न हो, पटुता रहित, रोगी, व्यथित।
अपठ(वि०)–पढ़ने में अशक्त, न पढ़ने वाला, बुरा पढ़ने वाला।
अपण्डित(वि०)–मूर्ख, अविद्वान्।
अपण्य(वि०)–न बेचने योग्य।
अपतर्पण(न०)–लंघन, रोगादि में भोजन न करना।
अपति-क(वि०)–स्वामिरहित, अविवाहित
अपत्नी(स्त्री०)–अविवाहित, पतिरहित।
अपत्नीक(वि०)–भार्यारहित।
अपत्य(न०)–पुत्र, कन्या, सन्तान, सन्तति, प्रसूति।
अपत्यकाम(वि०)–सन्तान की इच्छा करने वाला।
अपत्यद(वि०)–सन्तान देनेवाला।
अपत्यदा(स्त्री०)–गर्भदातृवृक्ष।
अपत्यपथ(पु०)–भग, योनि।
अपत्यविक्रयी(पु०)–ऐसा पिता जो अपनी कन्या को रुपया लेकर विवाहे।
अपत्यशत्रु(पु०)–जिसका शत्रु अपत्य या सन्तान हो, केकड़ा, कर्कट।
अपत्र(वि०)–पत्तों से रहित, पत्रहीन। पु०–अंकुर, परदहित पक्षी, सूखा वृक्ष।
अपत्रप(वि०)–निर्लज्ज, त्रपारहित।
अपत्रपिष्णु(वि०)–लज्जाशील।
अपत्रपा-पर्या–निर्लज्जता, धर्मीलापन
अपत्रस्त(वि०)–भयभीत, डरा हुआ।
अपथ(वि०)–मार्गरहित। न०–कुमार्ग; कुपथ, योनि।
अपथं(अ०)–भटका हुआ, गलत रास्ते में।
अपथगामी(वि०)–बुरे मार्ग में जाने वाला, नास्तिक।
अपथप्रपन्न(वि०)–अन्यथा स्थान में व्यय किया हुआ, अपव्यय में लगाया हुआ।

अपथ्य (वि०)–अनुचित, बेमौजू, हानिप्रद, रोगकर, अहित ।
अपथ्यकारी(वि०)–अनिष्ट करनेवाला, मुजरिम । [पादरहित ।
अपद्-पाद्(वि०)–न जानने के योग्य,
अपद(वि०)–पादरहित, पद [ओहदा] रहित । पु०–सर्प । न०–अनुचित स्थान, स्थानाभाव, ईथर नामक वायु । [वाला ।
अपदम(वि०)–आत्मसंयम न करने
अपदान-नक(न०)–शोधन,साफकरना परिशुद्ध आचारण, कोई उत्तम काम, सुकृत, अवदान ।
अपदान्तर(वि०)–अव्यवहित, संयुक्त, निकट। न०--समीपता,सन्निकर्ष ।
अपदिश्(६प०)-बतलाना,देना, जाहिर करना, कहना ।
अपदिश(न०)--दिशाओं का बीच, कोण । अ०–दिशाओं के बीच में।
अपदेवता(स्त्री०)–भूत, प्रेत, जिन ।
अपदेश(पु०)--लक्ष्य, निशान, छल, बहाना, स्थान, स्वरूप को आच्छादन करना, वेष बदलना ।
अपदेशी[न्] (वि०)--छल करने वाला, अन्यथा रूप धारण करने वाला ।
अपद्रव्य(न०)--बुरी वस्तु ।
अपद्वार(न०)--बगल का दर्वाजा, मुख्यद्वार से भिन्न द्वार ।
अपधूम(वि०) -धूमरहित ।
अपध्यै(१ प०)—किसी का बुरा सोचना, मन मन में शाप देना ।
अपध्यान(न०)-बुरा विचार, बुरा सोचना, मनमन में शाप देना ।
अपध्वंस्(१ आ०)--साफ करना, धूल झाड़ना, धिक्कारना ।
अपध्वंस(पु०)–अपमान, छिपावट, गिरावट । [लोमजात ।
अपध्वंसज(पु०)--वर्णसंकर,प्रति-
अपध्वंसजा (स्त्री०)--प्रतिलोमता ।
अपध्वंसी[न्] (वि०)--नाश करने वाला, दूर करने वाला ।
अपध्वस्त(वि०)–परित्यक्त, निन्दित, अवचूर्णित, बुरी तरह पिसा हुआ ।
अपध्वान्त(न०)–अन्यथा या कठोर ध्वनि ।
अपनय(पु०)–अपकार, दूर लेजाना, रद्द करना, दुर्नीति ।
अपनयन(न०)–खण्डन, दूरीकरण ।
अपनस(वि०)–नासिकाहीन ।
अपनाम(न०)–बुरा नाम, बदनामी ।
अपनी(१प०)–दूर करना, दूर हटाना, नाश करना । लूटना, उखाड़ना, खींचना, इंकार करना, मुकरना करना ।
अपनीत(वि०)–उद्धृत,दूर किया हुआ, अदा किया हुआ, अन्यथाकृत । न०–बुरा आचार ।
अपनुद्(६प०)–दूरकरना, नाशकरना, पश्चात्ताप करना ।
अपनुत्ति(स्त्री०)–दूरीकरण, खण्डन ।
अपनोद(पु०)–पूर्ववत ।
अपनोदन(न०)–पूर्ववत ।
अपपयस्(वि०)–जलहीन, सूखा ।
अपपाठ(पु०)–अन्यथापाठ, अशुद्धपाठ
अपपात्र(वि०)–नीचकुल का ।

अपपात्रित(वि०)-जाति से बाहर किया हुआ, जिससे सम्बन्धियों ने खाने-पीने का सम्बन्ध छोड़ दिया हो।

अपपाद(वि०)-बुरे पैर वाला।

अपपान(न०)-बुरी शराब।

अपप्रजाता(स्त्री०)-ऐसी स्त्री जिसका गर्भपात हो गया हो।

अपप्रदान(न०)-रिश्वत।

अपभय(वि०)-भयरहित, निडर।

अपभाष्(१ आ०)-गाली देना, दोषारोपण करना। [विल।

अपभाषण(न०)-दोषारोपण, लाञ्छ-

अपभू(१प०)-दूर होना, अनुपस्थित होना।

अपभूति(स्त्री०)-पराजय, नुकसान।

अपभ्रंश्(१आ०)-गिर पड़ना, टूट पड़ना, अलग होना।

अपभ्रंश(पु०)-ग्राम्यभाषा,अपशब्द, पतन, ध्वंस, अधोगति।

अपभ्रष्ट (वि०)-पतित, बिगड़ी, बुरी [जैसे भाषा]।

अपम(पु०)-क्रान्ति।

अपमर्द(पु०)-जो कुछ झाड़ कर अलग कर दिया जाय जैसे,धूल, खाक।

अपमर्श(पु०)-छूना, पास चुगना।

अपमान(न०)-अनादर, अमर्यादा, अवज्ञा, पराभव, बेइज्जती।

अपमानित(वि०)-निन्दित, अपमानित, बेइज्जत।

अपमानिन्[नी](वि०)-बेइज्जती करने वाला, अपमान करने वाला, निरादर करने वाला।

अपमान्य(वि०)-अपमान के योग्य, निन्द्य।

अपमार्ग(पु०)-पगडण्डी,बुरा रास्ता, स्पर्शमार्जन।

अपमार्गी(वि०)-कुमार्गी, अन्यथाचारी, दुष्ट। [संशोधन।

अपमार्जन(न०)-शुद्धि,सफाई,संस्कार,

अपमित्य-ल्यप (न०)-कर्ज, ऋण।

अपमुख(वि०)-विकृतानन, जिस का मुख टेढ़ा हो गया हो।

अपमृज् (२, १० प०)-धो डालना, मिटाना, दूर करना।

अपमृत्यु(पु०)-आकस्मिक मृत्यु,अपघात मृत्यु, बिना रोग के मरण।

अपमृषित(वि०)-न समझने योग्य;

अपयशः(न०)-बदनामी, अपमान, अपख्याति।

अपया(२ प०)-अलग होना, जुदा होना, चला जाना, अन्तर्धान होना।

अपयान(न०)-पलायन, प्रस्थान।

अपयोग(पु०)-बुरायोग, कुसमय।

अपर(वि०)-जो पर न हो, पहिला, पूर्वका, पिछला, अन्य, दूसरा, इतर, अर्वाचीन, भिन्न, और। न०-हाथी का पिछला भाग,कथा, पैर इत्यादि। पु०-शत्रु।

अपरं(अ०)-फिर से, भविष्यत् में।

अपरकाल(पु०)-आने वाला समय।

अपरक्त(वि०)-विरक्त, जो अनुकूल न हो।

अपरज(पु०)–नाशकारी अग्नि ।
अपरजन(पु०)-पश्चिम दिशा का निवासी ।
अपरता–स्त्री०–भिन्नता, अर्वाची-नता, परायापन । न्यायशास्त्रानुसार चौबीस गुणों में से एक,दूरी
अपरति(स्त्री०)–निवृत्ति, विरति ।
अपरत्र (अ०)--अन्यत्र, और कभी, दूसरे समय में ।
अपरथा(अ०)--अन्य प्रकार से ।
अपरदक्षिण(पु०)-दक्षिण और पश्चिम का कोना, नैऋत्य कोण ।
अपरदिशा(स्त्री०)--पश्चिम ।
अपरपक्ष(पु०)--कृष्णपक्ष, मुद्दई, प्रति-द्वन्द्वी । [भाग ।
अपररात्र (पु०)--रात्रि का अन्तिम
अपरस्पर(वि०)–एक के पश्चात् एक, लगातार ।
अपरलोक(पु०)–दूसरा लोक, स्वर्ग ।
अपरा(स्त्री०)–पश्चिम दिशा, सांगो-पाङ्ग वेदपाठ, जरायु ।
अपरांग(न०)–गुणीभूत व्यंग्यभेद ।
अपराङ्मुख (पु०)–अभिमुख, सामने आया हुआ ।
अपराजित(वि०)-नजीता हुआ,अजेय पु०--शिव, विष्णु,ग्यारह रुद्रों में से एक, एक मुनि का नाम, एक जहरीला कीड़ा ।
अपराजिता(स्त्री०)-दुर्गा विष्णुक्रान्ता उमा, अयोध्या का एक नाम ।
अपराध् (४,५ प०)–अपराध करना, विरुद्धाचरण करना,हिंसा करना ।
अपराध(पु०)–पाप,दोष, जुर्म,गुनाह, गलती ।
अपराधभंजन(पु०)--पापों का नाश करने वाला अर्थात् शिव ।
अपराधी [न्] (वि०)--अपराध करने वाला, मुजरिम ।
अपराद्ध(वि०)--जिसने पाप किया हो, मुजरिम, दोषी । [गलती ।
अपराद्धि(स्त्री०)--दोष, गुनाह, पाप,,
अपरान्त(पु०)–पश्चिम का देश, मृत्यु
अपरापरण(वि०)–सन्ततिहीन ।
अपरामृष्ट(वि०)–अछूता, अस्पृष्ट, जिस को किसी ने न छुआ हो, कोरा ।
अपरावर्ती(वि०)–बिना काम पूरा किये न लौटने वाला, जो पीछे न हटे, मुस्तैद । [तीसरा पहर ।
अपराह्ण(पु०)–दिन का पिछला भाग,
अपरिकलित(वि०)--अज्ञात, अदृष्ट, अश्रुत । [अयोग्य, सुस्त ।
अपरिक्रम(वि०)–परिक्रमा करने के
अपरिक्लिन्न(वि०)–सूखा, शुष्क ।
अपरिगत(वि०)–अज्ञात,अपरिचित ।
अपरिगृहीत(वि०)–न ग्रहण किया हुआ, त्यक्त ।
अपरिग्रह(वि०)- सामान आदि से विहीन । पु०-दरिद्रता, दान का न लेना, त्याग ।

अपरिचय(पु०)-परिचय का अभाव, जान पहिचान न होना।
अपरिचित(वि०)-जिसे परिचय न हो, जो जानता न हो, अज्ञात, अनजान।
अपरिच्छद(वि०) गरीब,खालीहाथ, आवरणशून्य।
अपरिच्छिन्न(वि०)--परिच्छेदरहित, असीम,अभेद्य,जो मापा न जाय।
अपरिच्छेद(पु०)-विभाग या अध्याय का क्रमाभाव।
अपरिणत(वि०)-जो पका न हो, कच्चा, जिस में विकार और परिवर्तन न हुआ हो, ज्यों का त्यों। [ब्रह्मचर्य।
अपरिणय(पु०)-विवाह न करना,
अपरिणाम(पु०)-अपरिवर्त्तन।
अपरिणामदर्शी(वि०)-अदूरदर्शी।
अपरिणीता (स्त्री०)-अविवाहिता कन्या।
अपरिपक्व(वि०)-परिपाकरहित।
अपरिमाण(वि०)-बेअन्दाज़, बहुत।
अपरिमित(वि०)-पूर्ववत।
अपरिमेय(वि०)-पूर्ववत।
अपरिम्लान(वि०)-न मुरझाने वाला। पु०-महामहा वृक्ष। [से रहित।
अपरिवृत(वि०)-न घिरा हुआ, बाड़
अपरिवर्तनीय(वि०)-जो परिवर्तन के योग्य न हो, जो बदल न सके।
अपरिष्कार(पु०)-संस्कार का अभाव, अशोधन।
अपरिष्कृत(वि०)-अमार्जित,असंस्कृत।
अपरिष्टि(स्त्री०)-पूजा, अर्चना।
अपरिसर(वि०)-दूर, अनिकट।
अपरिहरणीय(वि०)-अत्याज्य, न छोड़ने योग्य।
अपरिहार(पु०)-अवर्ज्जन, निवारण।
अपरिहार्य्य (वि०)-अपरिहरणीय, अत्याज्य।
अपरीक्षित(वि०)-परीक्षा न किया हुआ,जिस की जांच न की गई हो।
अपरुष(वि०,-क्रोधहीन।
अपरूप(वि०)-कुरूप, बदशकल,भद्दा।
अपरेद्युः(अ०)-अगले दिन।
अपरोक्ष(वि०)-जो दिखाई दे, जो दूर न हो।
अपरोक्षं (अ०)-सामने।
अपर्ण(वि०)-पत्तों से रहित।
अपर्णा(स्त्री०)-दुर्गा या पार्वती।
अपर्त्तु(वि०)-असमय,निवृत्तऋतुका
अपर्यन्त(वि०)-असीम,न घिरा हुआ।
अपर्याप्त(वि०)-नाकाफी, असम्पूर्ण, असीम, असमर्थ। [कमी।
अपर्याप्ति(स्त्री०)-अपूर्णता, त्रुटि,
अपर्याय(वि०)-क्रमहीन, क्रम या ढंग का अभाव।
अपर्युषित(वि०)-अटपट, सद्योभव, जो बासी न हो।
अपल (वि०)-पलशून्य, मांसरहित। पु०--कील, आलपीन।
अपलप्(धा०)-इंकारकरना,छिपाना।
अपलपन(न०)-छिपावट, धोखा

अपलाप(पु०)–सत्य को झूठ बनाकर कहना, सत्य को छिपाना, जानी हुई बात को छिपाना।

अपलापिका(स्त्री०)–तृष्णा, अतिशय लालसा। [इच्छा रहित।

अपलापिन्–लाषुक(वि०)–प्यासा,

अपवचन(न०)–बुराई करना।

अपवद्(१उ०)–गाली देना, धिक्कारना, इन्कार करना, [आत्म०] खण्डन करना। [वि०–वायुरहित।

अपवन(न०)–उपवन, बाग़, वाटिका।

अपवरक–वारक(पु०)–वासगृह, अन्तर्गृह, रहने का कमरा।

अपवर्ग(पु०)–मोक्ष, त्याग, कर्मफल, मुक्ति, निर्वाण, समाप्ति।

अपवर्जन(न०)–दान, मोक्ष, त्याग।

अपवर्जित(वि०)-छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, मुक्त। [फेर।

अपवर्तः-नम्-परिवर्तन, पलटाव, उलट

अपवर्तित (वि०)–बदला हुआ, पलटाया हुआ।

अपवह्(१प०)–दूर लेजाना, खदेड़ना, त्यागना, घटाना। [घटोतरी।

अपवहन-वाहः--दूरीकरण, लेजाना,

अपवाद(पु०)–आज्ञा, निन्दा, धिक्कार, उत्सर्ग का विरोधी, साधारण नियमबाधक, अध्यारोपका निराकरण, प्रेम, विश्वास।

अपवादक-दिन्(वि०)–दोष देने वाला, बदनाम करने वाला, बाधक, विरोधी।

अपवादित(वि०)-निन्दित, जिसका प्रतिरोध किया गया हो [हुआ।

अपवारण(न०)- अन्तर्धान, व्यवधान।

अपवारित(वि०)–अन्तर्हित, छिपा।

अपवाहक(वि०)–एक स्थान से किसी पदार्थ को दूसरे स्थान पर ले जाने वाला।

अपवाहित (वि०)–स्थानांतरित करना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाया हुआ।

अपवाहुक(पु०)–एक रोग जिस में बाहु की नसें मारी जाती हैं, भुजस्तम्भ।

अपविघ्न(वि०)–अक्षत। [विघ्नरहित।

अपविघ्न(वि०)अरुद्ध, न रोका हुआ,

अपविद्ध(वि०)–अशुद्ध, मलिन।

अपविद्ध(वि०)–निराकृत, त्यक्त।

अपविद्या (स्त्री०)–अज्ञान, माया, अविद्या।

अपविष(वि०)–विषरहित।

अपवृ(५ उ०)–खोलना, प्रकाशित करना, ज़ाहिर करना, ढकना।

अपवृज्(७आ०)-नाशकरना दूरकरना, फाड़ना, समाप्त करना।

अपवृक्त(व०)–समाप्त, अन्त हुआ।

अपवृक्ति(स्त्री०)–सम्पूर्णता, समाप्ति।

अपवृत्त(वि०)–पराङ्मुखीभूत।

अपवृत्ति(स्त्री०)–अन्त, सीमा।

अपवेध(पु०)–ग़लत छेद करना।

अपवोढा[ढृ] (वि०)–लेजाने वाला।

अपव्यध्(४प०)–बुरी प्रकार छेदना, फेंकना, त्यागना।
अपव्यय(पु०)–सीमा से अधिक व्यय [करना।
अपव्ययी(वि०)–फिजूलखर्च।
अपशकुन(न०)–बुरा शकुन।
अपशङ्क (वि०)–निडर, भयरहित।
अपशद(पु०)–नीच, अपसद।
अपशब्द(पु०)–ग्राम्यभाषा अपभ्रंश, अयुक्त वचन। [शीर्ष।
अपशिरस् (वि०)–शिररहित, अप-
अपशु(वि०)–पशुरहित, पशुभिन्न।
अपशुच्[क्](वि०)–शोकरहित। पु०–आत्मा। [अशोक वृक्ष।
अपशोक(वि०)–शोकरहित। पु०–
अपश्री(वि०)–श्रीहीन, शोभारहित।
अपष्ठ(न०)–अंकुश का अग्रभाग।
अपष्ठु(वि०)–विपरीत,मुखालिफ।पु०–समय, काल।
अपष्ठुर-ल(वि०)–प्रतिकूल, विरुद्ध।
अपस्(न०)–जल, कार्य, यज्ञ।
अपस्तम(वि०)–अत्यन्त कर्मशील।
अपसद(पु०)–नीच, जातिपतित।
अपसर(पु०)–अपसरण, गमन, उचित हेतु। [भागना।
अपसरण(न०)–चलाजाना, बच
अपसर्जन(न०)–त्याग, दान, मोक्ष।
अपसर्प–क(पु०)–भेदिया, गुप्तचर, जासूस।
अपसर्पण(न०)–पीछेकी ओर लौटना, जासूसी करना, रेंगना।
अपसव्य-ल(वि०)–दक्षिण, दाहिना, प्रतिकूल।
अपसव्यं(अ०)–दाहिनी ओर।
अपसार(पु०)–बहिर्गमन, प्रवेश का प्रतिद्वन्द्वी।
अपसारण-रणा(पु०)–बाहर निकालना,दूर हटा कर स्थान करना।
अपसृ(१ प०)–चलाजाना,जुदा होना, नष्ट होना, बच भागना।
अपसृत(वि०)–गया हुआ,परित्यक्त।
अपसृप्(१ प०)–रेंगना, चला जाना, जासूसी करना। [परित्याग।
अपसृप्ति(स्त्री०)–बहिर्गमन, स्थान-
अपस्कर(पु०)–पहिये के अतिरिक्त गाड़ी का कोई अङ्ग, विष्ठा, गुह्यस्थान।
अपस्नात(वि०)–मृत्यु के पश्चात नहाया हुआ।
अपस्नान(न०)–मृतकस्नान,नहायेहुए जल में फिर से नहाना।
अपस्मार(पु०)–रोग विशेष,मृगी, याददाश्त का कम हो जाना।
अपस्मृति(स्त्री०)–याद का कम हो जाना, भूलना।
अपहन्(२ प०)–मार कर भगाना, बध करना, दूर करना।
अपहनन(न०)–दूरीकरण, अपघात।
अपहृति(स्त्री०)–पूर्ववत।
अपहरण(न०)–चुराना, दूरीकरण।
अपहर्ता(वि०)–दूर करने वाला या चुराने वाला। [करना।
अपहस्(१ प०)–हँसी उड़ाना, मजाक
अपहसितं-हासः–अकारण हँसना।

अपहस्त(वि०)-जिस में हटाने के लिये हाथ चले, गले में हाथ डाल कर निकाला गया।
अपहा(२ प०)-त्यागना, छोड़ना।
अपहान(न०)-परित्याग, छोड़ना।
अपहानि(स्त्री०)-पूर्ववत।
अपहार(पु०)-हानि, अपचय, अपहरण, चोरी, विनाश।
अपहारक-हारिन् (वि०)-अपहरणकर्ता, चोरी करने वाला।
अपहृत (वि०)-अपहरण किया हुआ, छीना हुआ।
अपन्हु(२ आ०)-छिपाना, वेषबदलना
अपह्नव(पु०)-छिपावट, अपलाप, स्नेह
अपह्नुति(स्त्री०)-पूर्ववत्।
अपाक(पु०)-बदहज़मी, परिपक्वता का अभाव।
अपाकरण-कृति-दूरीकरण, त्याग, खण्डन, अदायगी।
अपाकर्म(न०)-अदायगी।
अपाकशाक(न०)-अदरक।
अपाकृ(८ उ०)-दूर भगाना, खदेड़ना, नष्ट करना, त्यागना।
अपाकृत(वि०)-त्यक्त, नष्ट, दूरीकृत।
अपाक्ष(वि०)-उपस्थित, दिखाई देने वाला, नेत्रहीन।
अपाङ्क्त-पांक्तेय (वि०)-पंक्ति से बाहिर, जाति से बाहिर।
अपाङ्ग क्क (वि०)-अङ्गहीन। पु०-चिरचिटा, आंख का सिरा या अन्त भाग।
अपाची (स्त्री०)-दक्षिण या पश्चिम दिशा।
अपाचीन(वि०)-पीछे की ओर का, जोदिखाई न दे, दक्षिण या पश्चिम दिशा का, प्रतिकूल।
अपाच्य(वि०)-पश्चिमीय या दक्षिणीय
अपाटव(न०)पटुता का अभाव, अकुशलता, अनाड़ीपन। वि०-अपटु, अनाड़ी। [आचारहीन।
अपात्र(वि०)-अयोग्य, कुपात्र, मूर्ख,
अपात्रदायी(वि०)-कुपात्र को दान देने वाला।
अपात्रीकरण(न०)-निन्दित दान आदि लेने से उत्पन्न हुआ पाप का भेद, शूद्र की सेवा, झूठ बोलना आदि सब दान लेने के अयोग्य बना देते हैं।
अपाद्(वि०)-पदरहित।
अपादान(न०)-हटाना, विभाग, व्याकरण में एक कारक का नाम।
अपाध्वन्(न०)--बुरा रास्ता, कुपथ।
अपान् (२ प०)-श्वास का बाहर निकालना।
अपान(पु०)-दश या पांच प्रकार की वायु में से एक, गुह्य स्थान का वायु। न०-गुदा। [वाला वायु।
अपानवायु(पु०)-गुदा द्वारा निकलने
अपामार्ग (पु०)—चिरचिटा नाम औषधि वृक्ष, लटजीरा, ओंगा।
अपामार्जन(न०)--पवित्रीकरण, साफ करना।

अपाय(पु०)-वियोग,नाश,हटना,दुःख, आपत्ति।
अपायी(वि०)--नष्ट होने वाला,नश्वर, अनित्य, अलग होने वाला।
अपार(वि०)-जिस का पार न हो, सीमारहित, अनन्त, असीम।
अपार्थ(वि०)-अर्थशून्य,निरर्थक,निष्प्रयोजन, व्यर्थ। [अपार्थक भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]
अपावरण(न०)-आवरणशून्यता।
अपावृ(५ प०)-खोलना।
अपावृत(वि०)-न ढका हुआ, खुला।
अपावृति (स्त्री०)-आवरणशून्यता, अपावरण।
अपावृत्त(वि०)-लौटा हुआ, त्यक्त।
अपावर्तन-वृत्तिः—लौटना, त्याग, वापिसी।
अपाश्रय(वि०)-आश्रयहीन, अधीन। पु०--सायबान, चन्दोवा।
अपाश्रि(१ उ०)-आश्रय ग्रहण करना, इस्तेमाल करना, नौकर रखना।
अपाश्रित(वि०)-एकान्तसेवी, विरक्त।
अपास्(४ प०)-फेंकना, अलग रखना, त्यागना। [वध।
अपासन(न०)-दूर फेंकना, त्यागना,
अपास्त(वि०)-फेंका हुआ, त्यागा हुआ।
अपासरण(न०)-जुदाई, गमन।
अपासु(वि०)-मुर्दा, जीवनरहित।
अपाहृत(वि०)-दूरीकृत, तिरस्कार किया गया।
अपि(अ०)-सम्भावना, सन्देह, निन्दा, उपसर्गविशेष, आहरण, अनुज्ञा,अल्पत्व,समुच्चय,निश्चय, फिर, शंका, एव, वा, सत्य, एवं अपरञ्च आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।
अपिगीर्ण(वि०)--वर्णित, स्तुति किया गया, वमन किया गया।
अपिच(अ०)--और भी, पुनश्च, बल्कि।
अपिच्छिल(वि०)--स्वच्छ, गहरा, जो गदला न हो।
अपिज(पु०)-ज्येष्ठ मास।
अपित(वि०)-सूखा, कलहीन।
अपितु(अ०)-किन्तु, बल्कि।
अपितृक(वि०)-पितारहित, जो पिता का न हो। [का न हो।
अपित्र्य(वि०)-अपैतृक, जो पिता
अपिधा(३ उ०)-ढकना, बन्द करना, छिपाना।
अपिधान(न०)--छिपावट, ढक्कन।
अपिधि(स्त्री०)--छिपावट, ढक्कन।
अपिनद्ध(वि०)--बंधा हुआ, जकड़ा हुआ, ढका हुआ।
अपिहित(वि०)--बन्द किया हुआ, ढका हुआ, न ढका हुआ।
अपिप्राण(वि०)-सर्वदा चेष्टमान।
अपिशल(पु०)--एक वैयाकरण।
अपीति(स्त्री०)--नाश, हानि, प्रलय, प्रवेश। [हुआ।
अपीच्य(वि०)--अतिसुन्दर, छिपा
अपुंस्(पु०)--हीजड़ा।

अपुंस्त्व(न०)–हीजड़ापन ।
अपुंस्का(स्त्री०)–पतिरहित स्त्री ।
अपुच्छ(वि०)–बिना पूछ का ।
अपुण्य(वि०)–अपवित्र, क्रूर ।
अपुत्रक(पु०)–पुत्रहीन ।
अपुनः(अ०)–फिर नहीं,सदा के लिये
अपुनरावृत्ति (स्त्री०)–अप्रत्यागमन, मोक्ष ।
अपुनर्भव(पु०)–निर्वाण, मोक्ष। न०-फिर जन्म न होना । [पतला
अपुष्ट(वि०)–जो पुष्ट न हो, दुबला
अपुष्प(वि०)–पुष्परहित, बिना फूलों का ।
अपुष्पफलद(पु०)–जो फूल के बिना फल देने वाला हो जैसे उदुम्बर, पनस आदि ।
अपूत(वि०)--अपवित्र ।
अपूप(पु०)--पिष्टक, आटे का बना पूआ नामक खाद्य पदार्थ ।
अपूरणी(स्त्री०)–शाल्मलीवृक्ष, सि-म्बल का पेड़ ।
अपूर्ण(वि०)--जो पूरा न हो ।
अपूर्व(वि०)--जो पहिले नहीं देखा गया, आश्चर्यमय ।
अपूर्वविधि(पु०)--जिस द्रव्य का ज्ञान प्रत्यक्ष अनुमानादि से न होसके उस की प्राप्ति की विधि जैसे स्वर्ग की इच्छा हो तो यज्ञ करे।
अपृक्त(वि०)-असम्बद्ध,बेमेल, लगाव रहित ।
अपे(२ प०)–चला जाना,अब भागना, जुदा होना, नष्ट होना ।
अपेक्ष्(१आ०)–आशा करना, किसी वस्तु के लिये इधर उधर देखना, इन्तज़ार करना,ज़रूरत रखना ।
अपेक्षणीय(वि०)–अपेक्षा करने योग्य
अपेक्षा–क्षणं–आशा, इच्छा, ज़रूरत इन्तज़ार ।
अपेक्षाबुद्धि(स्त्री०)–यह एक है यह एक है, इस प्रकार की जो अनेकों में बुद्धि हो ।
अपेक्षित(वि०)–इच्छित,अभिलषित, आवश्यक, ज़रूरी । न०-इच्छा, ख्वाहिश, ख्याल ।
अपेक्षितव्य-पेक्ष्य(वि०)–अपेक्षा करने के योग्य, ज़रूरी ।
अपेक्षी[न्] (वि०)–अभिलाषा करने वाला, इन्तज़ार करने वाला, चिन्तित । [किया हुआ ।
अपेत(वि०)-गया हुआ, नष्ट, दूर
अपेतराक्षसी(स्त्री०)–तुलसी नामक वृक्ष।
अपेय(वि०)–पीने के अयोग्य ।
अपोगण्ड(पु०)–विकलांग, सोलहवर्ष से अधिक अवस्था का, किशोर, शिशु, बहुत डरपोक, बालिग ।
अपोढ(वि०)--निरस्त, निकाला गया
अपोदिका(स्त्री०)–पोई नामक शाक
अपोह्(१उ०)–हटाना, धकेलना, नष्ट करना, चंगा करना, त्यागना, स्वीकार करना, तर्कना करना।
अपोह(पु०)--वादी से किये हुए तर्क के दूर करने के लिये प्रतिवादी से किया गया तर्क, तर्क, त्याग ।

अपोहन(न०)–पूर्ववत् ।
अपोह्य-हनीय(वि०)–दूर करने योग्य, तर्कना करने योग्य ।
अपौरुष-षेय(वि०)–जो पुरुष का न हो, अमानुषी, डरपोक, पुरुषार्थ हीन ।
अप्नस्(न०)–यज्ञकर्म ।
अप्तुर्(पु०)–इन्द्र का विशेषण, आग, कार्यशील, मशगूल । [हुआ ।
अप्नस्थ,(वि०)–अपत्य, काम में लगा
अप्नस्(न०)--कब्ज़ा, जायदाद, कार्य, सन्तान, आकार ।
अप्नस्वान(वि०)–सन्तति वाला, गरीब । पु०-बाहू ।
अप्य(वि०)–जल से सम्बन्ध रखने वाला, जलयुक्त, प्राप्तियोग्य ।
अप्रकंप(वि०)–न हिला हुआ, मजबूत, स्थिर । [करने वाला ।
अप्रकर(वि०)–अच्छे प्रकार काम न
अप्रकाण्ड(वि०)–जिस के तना न हो, शाखारहित । पु०–झाड़ी ।
अप्रकाश(वि०)–अप्रकाशित । न०–परप्रल, प्रकाश का न होना, अन्धकार ।
अप्रकाशित(वि०)–गुप्त, छिपा हुआ, प्रकाश न किया हुआ ।
अप्रकाश्य(वि०)–प्रकाश करने के अयोग्य, गोप्य ।
अप्रकृत(वि०)–अस्वाभाविक, बनावटी, बनाया हुआ ।
अप्रकृष्ट(वि०)–नीच । पु०–कौआ ।
अप्रकृष्टगुण(वि०)–जिस का गुण उत्तम न हो, घबराया हुआ ।
अप्रखर(वि०)–अतीक्ष्ण, मृदु, शान्त ।
अप्रगल्भ(वि०)–अप्रौढ, अपरिपक्व, निरुत्साह, ढीला, सुस्त ।
अप्रगुण(वि०)–जिस के गुण अच्छे न हों, व्याकुल ।
अप्रचलित(वि०)–जो प्रचलित न हो, जिस का रिवाज़ न हो, अप्रयुक्त, अप्रचरित ।
अप्रच्छेद्य(वि०)जो छेदन के अयोग्य हो
अप्रज(वि०)–बिना सन्तान का, प्रजाहीन ।
अप्रणीत (वि०)-गंवार, असंस्कृत ।
अप्रतर्क्य(वि०)–जिस के विषय में तर्क वितर्क न हो सके ।
अप्रताप(वि०)-प्रतापरहित, तेजहीन ।
अप्रतिकर(वि०)–विश्वस्त, विश्वासपात्र ।
अप्रति [ती] कार(पु०)–उपाय का अभाव, तदबीर का न होना । वि०–जिस का उपाय न हो सके अर्थात् असाध्य, ला इलाज ।
अप्रतिकारी(वि०)–उपाय या तदबीर न करने वाला, बदला न लेने वाला ।
अप्रतिगृहीत(वि)-जिसका प्रतिग्रह न किया गया हो, -जो ग्रहण न किया हो ।
अप्रतिग्रहण(न०)–दान न लेना, किसी वस्तु का ग्रहण न करना ।
अप्रतिग्राह्य(वि०)–जो प्रतिग्रहण के अयोग्य हो, अग्राह्य ।
अप्रतिघ(वि०)–अजेय, जो दूर न किया जा सके, अक्रोधी ।

अप्रतिद्वन्द्व(वि०)-युद्ध में जिसका कोई शत्रु न हो, अजेय, अनुपम।
अप्रतिपक्ष(वि०)-अप्रतियोगी, विपक्ष-शून्य।
अप्रतिपत्ति(स्त्री०)-अस्वीकारी, असम्पूर्णता, भूल, इरादे का अभाव, घबराहट।
अप्रतिपद्(वि०)-न जानेवाला, विकल
अप्रतिबन्ध(वि०)-अरुद्ध, सीधा।
अप्रतिबल(वि०)-अजेय शक्तिवाला, असीमशक्तिशाली।
अप्रतिभ(वि०)-लज्जाशील, कुन्दज़ेहन, अप्रगल्भ।
अप्रतिभट(वि०)-अप्रतिद्वन्द्व। पु०-अनुपम योद्धा। [शीलता।
अप्रतिभा(स्त्री०)-मृदुलता, लज्जा-
अप्रतिम(वि०)-अनुपम, अद्वितीय।
अप्रतियत्न(पु०)-प्राकृतिक अवस्था।
अप्रतियोगी(वि०)-अप्रतिद्वन्द्व, अप्रतिपक्ष।
अप्रतिरथ(पु०)-ऐसा योद्धा जिसके सामने लड़ने वाला और कोई न हो, एक ऋषि का नाम। न०-यात्रा, सामवेद, मंगल।
अप्रतिरव(वि०)-जिसके सम्बन्ध में कोई झगड़ा न हो।
अप्रतिरूप(वि०)-प्रतिकूल, जो अनुकूल न हो, ग़ैरमौज़ूं।
अप्रतिरूपकथा(स्त्री०)-स्वगणिका।
अप्रतिवीर्य(वि०)-अनुपम शक्तिवाला
अप्रतिष्ठ(वि०)-अप्रतिष्ठित, प्रतिष्ठारहित, बेसूद।
अप्रतिष्ठा(स्त्री०)-बदनामी, बेइज्जती
अप्रतिष्ठित(वि०)-अनिश्चित, गुमनाम, असंस्कृत, अपवित्र। पु०-विष्णु।
अप्रतिहत(वि०)-अरुद्ध, जो रोका न जा सके, अक्षत।
अप्रतीक(वि०)-अवयवरहित, ब्रह्म का विशेषण। [अज्ञात।
अप्रतीत(वि०)-अप्रसन्न, अप्रतिहत,
अप्रतीति(स्त्री०)-अविश्वास।
अप्रतुल(पु०)-तौल का अभाव, ज़रूरत, आवश्यकता।
अप्रत्त(वि०)-न दिया हुआ।
अप्रत्ता(स्त्री०)-ऐसी कन्या जो विवाही न गई हो।
अप्रत्यक्ष(वि०)-जो दिखाई न दे, अज्ञात, अनुपस्थित। [श्वास।
अप्रत्यय(पु०)-संशय, सन्देह, अवि-
अप्रधान(न०)-जो प्रधान न हो, प्राधान्यरहित, मातहत, निम्नपदस्थ, गौण, साधारण। [सके।
अप्रधृष्य(वि०)-अजेय, जो जीता न जा
अप्रभ(वि०)-प्रभाहीन, नीच, सुस्त।
अप्रभु(वि०)-शक्तिहीन, स्वामिरहित, अशक्त। [यत्न।
अप्रभूति(स्त्री०)-यत्नाभाव, कुछ २
अप्रमत्त(वि०)-सावधान, होशियार, प्रमादहीन।
अप्रमद(वि०)-रंजीदा, प्रसन्नताहीन
अप्रमाद(वि०)-सावधान। पु०-चिंता, सावधानी, ध्यान, खबरदारी।
अप्रमादं(अ०)-ध्यानपूर्वक, गौर से।

अप्रमय(वि०)-असीम, न नाश होने वाला।
अप्रमा(स्त्री०)-मिथ्याज्ञान।
अप्रमाण(वि०)-असीम, प्रमाणहीन, जो प्रमाण न हो।
अप्रमायुक(वि०)-एकाएक न मरने वाला, बड़ी उम्र का।
अप्रमित(वि०)-न तोला हुआ, असीम, प्रमाणहीन।
अप्रमूर(वि०)-अक्लमन्द, बुद्धिमान्।
अप्रमृष्य(वि०)-न नाश होने वाला, अजय्य।
अप्रमेय(वि०)-सीमारहित, प्रमाणरहित, जो ठीक २ न जाना जावे। न०-ब्रह्म।
अप्रमोद(अस्त्री०)-हर्ष का अभाव, दुःख दूर करने में अशक्तता।
अप्रयत्न(वि०)-जो प्रयत्नशील न हो, उदासीन, सुस्त। पु०-प्रयत्न का अभाव, उदासीनता। [अभाव।
अप्रयाणि(स्त्री०)-अगति, गति का
अप्रयुक्त(वि०)-जिसका प्रयोग न किया गया हो, जो इस्तेमाल न किया गया हो।
अप्रयोग(पु०)-प्रयोग का अभाव, इस्तेमाल न करना।
अप्रलम्ब(वि०)-तेज शीघ्रता से काम करने वाला। न०-शीघ्रता, अविलम्ब।
अप्रवर्तक(वि०)-प्रवृत्ति उत्पन्न न करने वाला। अशक्त, अप्रतिहत, लगातार। [का अभाव।
अप्रवृत्ति(स्त्री०)-प्रवृत्ति या आकृति

अप्रशस्त(वि०)-अश्रेष्ठ, अविहित, क्षीण।
अप्रसक्त(वि०)-न लगा हुआ, लगाव न रखने वाला, मौतदिल।
अप्रसक्ति(स्त्री०)-अलगाव।
अप्रसंग(पु०)-सम्बन्ध का अभाव, कुअवसर। [संतुष्ट, विरक्त।
अप्रसन्न(वि०)-जो खुश न हो, अ-
अप्रसाद पु०-नाराजी, प्रसन्नता का अभाव। [न हो।
अप्रसिद्ध(वि०)-अज्ञात, जो मशहूर
अप्रसिद्धि(स्त्री०)-गुमनामी, अख्याति
अप्रसूत(वि०)-बांझ, सन्ततिरहित।
अप्रस्तुत(वि०)-अनवसर, अप्रासङ्गिक, बेहूदा, अनुद्यत।
अप्रहत(वि०)-अक्षत, बेदाग और नवीन [जैसे कपड़ा]।
अप्रहित(वि०)-न भेजा हुआ, शत्रुओं ने जिस पर आक्रमण न किया हो
अप्राकरणिक(वि०)-अप्रासांगिक।
अप्राकृत(वि०)-जो प्राकृत न हो, जो गवार न हो, जो असली न हो, असाधारण।
अप्राचीन(वि०)-नवीन, जो पूर्व का न हो, पश्चिमीय। [हीन।
अप्रौढ(वि०)-डरपोक, मुलायम, दर्प-
अप्रौढा(स्त्री०)-अविवाहिता कन्या।
अप्राण(वि०)-जीवनरहित, बेजान।
अप्राप्त(वि०)-प्राप्त न किया हुआ, न आया हुआ।
अप्राप्तकाल(वि०)-अनवसर, बेमौके

अप्राप्तयौवन(वि०)--जो जवान न हुआ हो।
अप्राप्तवयस्(वि०)--नाबालिग़।
अप्राप्ति(स्त्री०)-प्राप्ति वा आगम का अभाव, अनुपपत्ति।
अप्रामाणिक(वि०)--विश्वास के अयोग्य, नाक़ाबिलेऐतबार।
अप्रिय(वि०)--अप्रीतिकर, अनभीष्ट, नाख़ुशगवार।
अप्रियकारक-कारिन्(वि०)-अप्रिय करनेवाला। [कहने वाला।
अप्रियवादी(वि०)-अप्रिय [वचन]
अप्रीति(स्त्री०)-स्नेह का अभाव,प्रेमहीनता,अरुचि। [नाख़ुशगवार।
अप्रीतिकर(वि०)-अरुचि करने वाला,
अप्लव(वि०)-जलयानरहित, न तैरने वाला।
अप्सर(पु०)-जलजन्तु।
अप्सरा[स्] (स्त्री०)-उर्वशी आदि स्वर्ग की वेश्या।
अप्सु(वि०)-आकाररहित,असुन्दर।
अप्सुक्षित(पु०)-देवता।
अप्सुचर(वि०)-जलचर।
अप्सुयोनि(पु०)-घोड़ा, बेत।
अफल(वि०)-निष्फल, बेसूद, बंजर। पु०-बकरा। [मलकी।
अफला(स्त्री०)-घृतकुमारी, भूम्या-
अफलाकांक्षी(वि०)-प्रतिफल की इच्छा न करने वाला, बेग़रज़।
अफेन(वि०)-फेनरहित। न०-अफ़ीम
अबद्ध-ध्रुक(वि०)-आज़ाद, स्वतन्त्र, बन्धनरहित।
अबद्धमुख(वि०)-गाली देनेवाला।
अबन्धन(वि०)-बन्धनरहित, आज़ाद
अबन्धु-बान्धव (वि०)-बन्धुहीन, अकेला। [-न रोके।
अबन्ध्य(वि०)-सफल, जो फल को
अबध्य(वि०)-जो मारने के योग्य न हो।
अबल(वि०)-कमज़ोर, दुर्बल, अरक्षित। पु०-वरुण [बरना] वृक्ष। न०-कमज़ोरी, बल का अभाव।
अबला(स्त्री०)-औरत, स्त्री।
अबलाबल(पु०) शिव का नाम।
अबलास(वि०) क्षयरोगरहित।
अबल्य(न०)-कमज़ोरी, बीमारी।
अबाध(वि०)-बेक़ाबू, बेरोक, दुःखरहित। पु०-अखण्डन, बाधा का अभाव। [सम्पूर्ण जैसे चन्द्रमा।
अबाल(वि०)-जवान,जो बच्चा न हो,
अबाह्य(वि०)-जो बाहर का न हो, आभ्यान्तरिक।
अबुद्ध(वि०)-बेवक़ूफ़, मूर्ख।
अबुद्धि(स्त्री०)-बुद्धि वा समझ का अभाव, अज्ञान, मूर्खता। वि०-मूर्ख, कमसमझ।
अबुध-ध(वि०)-मूर्ख, कमसमझ।
अबोध(वि०)-नासमझ, मूर्ख, घबराया हुआ। पु०-अज्ञान, कमसमझी। [सके।
अबोधगम्य(वि०)--जो समझा न जा
अबोध्य धनीय(वि०)-जो समझा न जासके, जिस में प्रबोध न हो।
अबुध्न(वि०)--तलरहित, मूलरहित।

अब्ज(वि०)--जलोत्पन्न । न०--पद्म, दशार्बुद संख्या। पु०--चन्द्र, धन्वन्तरि, निचुलवृक्ष । अस्त्री०--शङ्ख।
अब्जज(पु०)--ब्रह्मा ।
अब्जनयन(वि०)--कमल की सी आंखों वाला । [दृश्, नेत्र, लोचन जोड़ने से भी यह ही अर्थ होता है]।
अब्जबान्धव(पु०)--सूर्य ।
अब्जभोग(पु०)--वराटक, पद्मकन्द ।
अब्जयोनि(पु०)--विधाता, ब्रह्मा ।
अब्जवाहन(पु०)--शिव ।
अब्जहस्त(पु०)--सूर्य ।
अब्जा(स्त्री०)--लक्ष्मी । [पद्मलता ।
अब्जिनी(स्त्री०)--पद्मिनी, पद्मसमूह,
अब्जिनीपति(पु०)--सूर्य ।
अब्द(पु०)-बादल, मुस्ता नामक घास, पर्वतविशेष । अस्त्री०-वर्ष, साल । वि०--जल देने वाला ।
अब्दवाहन(पु०)-शिव का नाम ।
अब्दशत(न०)-सदी, सौ वर्ष ।
अब्दसार(पु०)--एक प्रकार का कपूर।
अब्धि(पु०)-समुद्र, झील ।
अब्धिकफ(पु०)-समुद्रफेन, समुद्र झाग
अब्धिज(पु०)-चन्द्रमा, शंख ।
अब्धिजौ(पु० द्विव०)-अश्विनीकुमार
अब्धिद्वीपा(स्त्री०)--पृथ्वी ।
अब्धिनगरी(स्त्री०)-द्वारकापुरी ।
अब्धिनवनीतक(पु०)-चन्द्रमा ।
अब्धिफेन(पु०)-समुद्रफेन ।
अब्धिशयन(पु०)-विष्णु ।
अब्ध्यग्नि(पु०)--समुद्र की अग्नि, बड़वानल ।

अब्भक्ष(पु०)-सर्प ।
अभ्र(न०)-मेघ, अबरक धातु ।
अभ्रमातङ्ग(पु०)-ऐरावत हाथी ।
अभ्रंलिह(पु०)-वायु । [गम।
अब्रह्मचर्य(न०)-असतीत्व, स्त्रीसमा-
अब्रह्मण्य(वि०)--ब्राह्मण के अयोग्य, ब्राह्मण का शत्रु । [पु०--शूद्र।
अब्राह्मण (वि०)-जो ब्राह्मण न हो
अभ्(१भा०)--ध्वनि करना ।
अभक्षः-क्षणं--उपवास, भोजन न खाना
अभक्ष्य(वि०)-न खाने योग्य । न०-अखाद्य पदार्थ ।
अभक्त(वि०)-भक्ति न रखने वाला, न खाया हुआ ।
अभक्ति(स्त्री०)-भक्ति या आसक्ति का अभाव, अश्रद्धा ।
अभग(वि०)-बदनसीब ।
अभग्न(वि०)-न टूटा हुआ, अखण्डित, समूचा ।
अभद्र(वि०)-अशुभ, अमांगलिक, अश्रेष्ठ । न०-बुराई, पाप, दुःख ।
अभय(वि०)-भयरहित, निडर । पु०-परमात्मा का विशेषण, शिव । न०-भय का अभाव ।
अभयकृत्(वि०)-अभयदान देनेवाला।
अभयद-दायी(वि०)-अभयदान देने वाला । पु०-विष्णु ।
अभयदान(न०)-रक्षा का वचन देना।
अभययाचना(स्त्री०)-रक्षा के लिये विनती । [वचन ।
अभयवचन(नि०)-रक्षा करने का
अभया(स्त्री०)-हरीतकी, हैड़ ।

अभयंकर(वि०)–जो भयंकर न हो।
अभर्तृका(स्त्री०)–विधवा, अविवाहिता स्त्री।
अभव(पु०)–न होना, मुक्ति, अन्त।
अभव्य(वि०)–अनुचित, अशुभ, न होने योग्य।
अभाग(वि०)–भागरहित।
अभागी(वि०)–भाग्यहीन बदकिस्मत।
अभाग्य(पु०)-बदकिस्मती, भाग्यहीनता।
अभाजन(न०)–कुपात्र, अपात्र, बुरा आदमी।
अभाव(वि०)–प्रेमरहित, भावरहित। पु०--मरण, असत्ता, नाश।
अभावना(स्त्री०)--भावना का न होना।
अभावनीय(वि०)–अचिन्तनीय।
अभावी-भाव्य(वि०)–न होने वाला।
अभाषण(न०)–न बोलना, मौन।
अभाषित(वि०)–न कहा हुआ।
अभि(अ०)–उपसर्गविशेष, सामने, वीप्सा, अभिलाष, आभिमुख्य, चिन्ह आदि अर्थों का द्योतक।
अभि[भी] क(वि०)–कामी, कामुक।
अभिकम्(१०आ०)–प्रेम करना, इच्छा करना।
अभिकरण(न०)–करना, जादू।
अभिकाम(वि०)प्रेमी, इच्छुक, कामी। पु०–प्रेम, इच्छा।
अभिकामिक(वि०)–इच्छाकृत।
अभिकम्प्(१आ०)–विशेषता से हिलना या हिलाना, तरंगीव देना।
अभिकंपन(वि०)-हिलना, तरंगीव।
अभिकांक्षा(स्त्री०)–इच्छा, लवाहिश, चाहना।
अभिकांक्षी(वि०)–इच्छा करनेवाला।
अभिकृ(८ उ०)–करना, दूसरे की ओर से करना, प्राप्त करना।
अभिकृति(स्त्री०)–छन्दोभेद।
अभिक्रतु(वि०)–असहिष्णु, बलशाली
अभिक्रन्द्(१ प०)–क्रन्दन करना, चिल्लाना।
अभिक्रन्द(पु०)–चिल्लाहट, गर्जन।
अभिक्रम्(१ उ०,४ प०)–समीप पहुंचना, करीब आना, इधर उधर भटकना, आक्रमण करना, आरम्भ करना। [आक्रमण।
अभिक्रम(पु०)–आरम्भ, यत्न, उद्योग,
अभिक्रमण(न०)–समीप आगमन, आक्रमण।
अभिक्रान्ति(स्त्री०)–पूर्ववत। [रना।
अभिक्रुश्(१प०)–चिल्लाना, मातम क-
अभिक्रोश(पु०)–चिल्लाहट, धिक्कार, भर्त्सना। [करना।
अभिक्षिप्(६ प०)–फेंकना, अपमान
अभिख्या(स्त्री०)–नाम, शोभा, कीर्त्ति, आख्यान।
अभिख्यान(न०)--यश, प्रशंसा।
अभिगम्(१ प०)--समीप पहुंचना, अनुगमन करना, पा लेना, समागम करना, समझना।
अभिगन्ता(वि०)–समझने वाला, समीप जाने वाला या समागम करने वाला।

अभिगमः-नम्-समीपगमन, मुलाक़ात, आगमन, समागम।
अभिगामी[न्] (वि०)-समीप जाने वाला, समागम करनेवाला।
अभिगर्जू(१ प०)-गुर्राना या गर्जना।
अभिगीत(वि०)-गाया हुआ।
अभिगुप्(१० प०)-रक्षा करना, हिफ़ाज़त करना, छिपाना।
अभिगुप्ति(स्त्री०)-छिपाना, हिफ़ाज़त, रक्षा।
अभिगै(१ प०)-पुकारना, गीत गाकर गुंजाना, अनुमति देना।
अभिग्रस्त(वि०)-अभियुक्त, शत्रु द्वारा आक्रान्त।
अभिग्रह्(९ उ०)-पकड़ना, ले लेना, मज़बूती से ग्रहण करना।
अभिग्रह्(पु०)-लूटना, पकड़ना, आक्रमण, शिकायत।
अभिग्रहण(न०)-लूटना, छीनना।
अभिघर्षण(न०)-रगड़ना, रगड़, भूत प्रेत का चढ़ना।
अभिघात(पु०)-आघात, प्रहार, चोट।
अभिघातक(वि०)-चोट करनेवाला, प्रहार करनेवाला।
अभिघार(पु०)-घी, घृत। [मलना।
अभिघारण(न०)-घी छिड़कना या
अभिघाती(वि०)-मारनेवाला, चोट करने वाला।
अभिघ्रा(स्त्री०)-सूंघना।
अभिचर्(१ प०)-अनुचित व्यवहार करना, नाराज़ करना, जादू करना आक्रान्त करना।
अभिचर(पु०)-अनुगामी, नौकर, दास।
अभिचरण(न०)-जादू करना।
अभिचार(पु०)-जादू, वध, हिंसाकर्म।
अभिचारमंत्र(पु०)-जादू का मंत्र।
अभिचारी[न्] (वि०)-अभिचार करने वाला। [वंश, कुल।
अभिजन(पु०)-ख्याति, जन्मभूमि,
अभिजय(पु०)-जीत, पूर्ण विजय।
अभिजात(वि०)-सुन्दर, कुलीन।
अभिजाति(स्त्री०)-कुलीनता, अच्छा वंश। [जीत कर प्राप्त करना।
अभिजि(१ प०)-बिलकुल जीतना,
अभिजित्(वि०)-फतहमन्द। पुः-विष्णु।
अभिजित(पु०)-मुहूर्त विशेष।
अभिज्ञ(वि०)-जानकार, वाक़िफ़।
अभिज्ञा(९उ०)-पहिचानना, देखना, जानना।
अभिज्ञान(न०)-चिन्ह, लक्षण, स्मृति।
अभिज्ञापक(वि०)-ज्ञात करानेवाला, सूचना देने वाला।
अभितड् (१० प०)-खटखटाना, निशाना मारना। [दुःखी।
अभितप्त(वि०)-सन्तप्त, जला हुआ,
अभितर्पण(न०)-सन्तुष्टि, तरोताज़गी। [ओर, शीघ्रता।
अभितस्(अ०)-समीप, सामने, दोनों
अभिताडन(न०)-खटखटाहट।
अभिताप (पु०)-अत्यन्त गर्मी, घबराहट, कष्ट। [सुर्ख।
अभिताम्र(वि०)-गहरालाल, बहुत
अभितृप्(१० प०)-तृप्त करना, सन्तुष्ट करना, तरोताज़ा करना।

अभिदर्शन(न०)–प्रत्यक्षीकरण, देखना।
अभिदृश्(१ प०)–घूरना, देखना।
अभिद्यु(वि०)–स्वर्गीय, शोभायुक्त।
अभिद्रवः–द्रवण–आक्रमण।
अभिद्रु(१ प०)–दौड़कर पास पहुंचना, आक्रमण करना, अस्तव्यस्त करना।
अभिद्रुत(वि०)–आक्रान्त।
अभिद्रुह्(४ प०)–नफ़रत करना, नुक़सान पहुंचाने का यत्न करना, साज़िश करना।
अभिद्रोह(पु०)–साज़िश, नुक़सान, भर्त्सना, क्रूरता।
अभिधा(३ उ०)–कहना, बोलना, बयान करना, पुकारना।
अभिधान(न०)–नाम, कथन, शब्द-कोष, उल्लेख, निर्देश।
अभिधेय(न०)–नाम, अभिधान। वि०–कहने के योग्य, प्रतिपाद्य।
अभिधाव्(१ प०)–दौड़कर पहुंचना, आक्रमण करना।
अभिधावन(न०)–आक्रमण, पीछा।
अभिध्या(स्त्री०)–दूसरे के माल को चाहना, इच्छा।
अभिध्यान(न०)–चिन्तन, ख्वाहिश।
अभिध्यै(१ प०)–चिन्तन करना, सोचना, इच्छा करना।
अभिनन्द्(१ प०)–खुशी मानना, प्रसन्न होना, अभिनन्दन करना।
अभिनन्दन(न०)–इच्छा, स्वागत।
अभिनम्(१ प०)–झुकना।
अभिनत(वि०)–झुका हुआ।
अभिनय(पु०)–हृदयस्थभावप्रकाशक क्रिया, शरीर की चेष्टादि से दृश्य पदार्थ को बताने वाला रूपक आदि दृश्यकाव्य।
अभिनव(वि०)–बिलकुल नया, ताज़ा।
अभिनवोद्भित द्रु-द(पु०)–अंकुर।
अभिनह्(४ प०)–बांधना।
अभिनहन(न०)–दोनों ओर से बांधना, पक्का बांधना।
अभिनिर्मुक्त(पु०)–सूर्यास्त के वक्त निद्रा के कारण छूटा हुआ उस वक्त करने लायक़ काम।
अभिनिर्याण(न०)–जीतने की कामना से गमन करना, धावा मारना।
अभिनियुक्त(वि०)–मशगूल, लगा हुआ।
अभिनियोग(पु०)–गहरा लगाव, ध्यान।
अभिनिविश्(६ आ०)–अन्दर प्रवेश करना, क़ब्ज़ा करना।
अभिनिविष्ट(वि०)–अन्दर प्रविष्ट हुआ, लगा हुआ, धंसा हुआ, गड़ा हुआ।
अभिनिवेश (पु०)–मनोनिवेश, किसी विषय में गति। योगशास्त्र में मरणभय का हेतु अविद्याविशेष।
अभिनिवेशित(वि०)–प्रविष्ट, धंसा हुआ।
अभिनिवेशी[न्] (वि०)–रत, लगा [हुआ।
अभिनिष्क्रमण(न०)–बाहर निकलना।
अभिनिष्पत(१ प०)–बाहर दौड़ना, जारी होना, अंकुर उगना।

अभिनिष्पद्(४ आ०)–पास आना या जाना, दाख़िल होना, ज़ाहिर होना।
अभिनिष्पत्ति(स्त्री०)–सम्पूर्णता, समाप्ति। [लेजाना।
अभिनी(१ प०)–नज़दीक लाना,
अभिनीत(वि०)–पास लाया हुआ, लेजाया हुआ, सम्पादित, अभिनय किया हुआ, योग्य।
अभिनीति(स्त्री०)–चेहरे की हरकत, मेहरबानी, दोस्ती, यत्न।
अभिनेता(पु०)–अभिनय करने वाला।
अभिनेत्री(स्त्री०)–अभिनय करनेवाली।
अभिन्न(वि०)–भिन्नतारहित, वही, एक ही, सम्पूर्ण, अविभक्त।
अभिन्यास(पु०)–ज्वरविशेष।
अभिपत्(१ प०)–समीप आना, पास आना, उड़ कर पास पहुंचना, हमला करना।
अभिपतन(न०)–समीपगमन, आक्रमण, जुदा होना। [आना।
अभिपत्ति(स्त्री०)–सम्पूर्णता, पास
अभिपद्(४ आ०)–पास आना, पास खींचना, पकड़ना, मग़लूब करना, स्वीकार करना, इज़्ज़त करना।
अभिपद्म(वि०)–अद्भुत सुन्दर।
अभिपन्न(वि०)–समीप आया हुआ, भगोड़ा, मग़लूब, स्वीकृत, दोषी, मृत। [करना।
अभिपूज्(१० प०)–पूजा करना, अर्चना
अभिपूजन(न०)–पूजा करना, पसन्द करना। [तार।
अभिपूर्व(अ०)–एक के बाद एक, लगा-
अभिपूरण (न०)–भरना, आक्रान्त करना।
अभिप्रणय(पु०)–प्रेम, सुन्टीकरण।
अभिप्रणी(१प०)–लेजाना, पास लाना, संस्कृत करना।
अभिप्रतप्त (वि०)–अत्यन्तगर्म, सूखा हुआ, दुःख से पका हुआ।
अभिप्रवृत्(१ आ०)–दूसरे की ओर बढ़ना, पहुंचना, वाक़िफ़ होना।
अभिप्रवृत्त(वि०)–लगा हुआ, मशगूल
अभिप्राय(पु०)–आशय, राय, सलाह, तात्पर्य, इच्छा, इरादा, उद्देश्य, विश्वास, विष्णु का नाम।
अभिप्रीति(स्त्री०)–इच्छा, खुशी समान
अभिप्रे (२ प०)–समीप आना, क़रीब आना, इरादा करना, सोचना।
अभिप्रेत(वि०)–इष्ट, अभिलषित, चाहा हुआ, मकसूद, स्वीकृत।
अभिप्रोक्षण(न०)–छिड़कना।
अभिप्लव(पु०)–दुःख, गड़बड़।
अभिप्लु(४आ०)–पास आना, कूदकर पास पहुंचना, बह निकलना।
अभिभव (पु०)–पराभव, सर्वनाश, तिरस्कार।
अभिभा(२प०)–चमकना।
अभिभार (वि०)–बहुत भारी।
अभिभाष्(धा०आ०)–बातें करना, बयान करना।
अभिभाषण(न०)–बातचीत, कथन।
अभिभू(१प०)–पराजित करना, हराना, आक्रमण करना, दर्पनाश करना, बेइज़्ज़ती करना।

अभिभूत(वि०)-ज्ञानरहित, पराजित, हराया हुआ।

अभिभूति(स्त्री०)-अवज्ञा, अनादर।

अभिमत(वि०)-इष्ट, सम्मत, हृदयङ्गम। न०-इच्छा,ख्वाहिश। पु०-प्रेमी।

अभिमति(स्त्री०)इच्छा,गर्व,अभिमान।

अभिमन्(४आ०)-इच्छा करना, ख्याल करना।

अभिमनस्(त्रि०)-ख्वाहिशमन्द।

अभिमन्त्र्(१० आ०)-संस्कृत करना, निमन्त्रित करना। [करण।

अभिमन्त्रण(न०)-आह्वान, संस्कार-

अभिमन्य(पु०)-चक्षुरोग।

अभिमन्यु(पु०)-अर्जुन का पुत्र जो सुभद्रा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

अभिमर(पु०)-युद्ध, वध,बन्धन, अपनी सेना से भय।

अभिमर्द(पु०)-पीडन, युद्ध, रगड़।

अभिमर्दन(न०)-सताना, दवाना।

अभिमर्शः-नम्--छूना,आक्रमण,समागम।

अभिमाति(पु०)-शत्रु।

अभिमान(पु०)-अहङ्कार, धनादिद्वारा दर्प, प्रार्थना, हिंसा।

अभिमानिन(न०)-प्रेम, मैथुन, गर्व। वि०-अभिमानयुक्त।

अभिमानी[न्] (वि०)-अभिमानयुक्त, अभिमान में फंसा हुआ, घमंडी

अभिमाय(वि०)-अभिभूत, मूर्ख, कर्त्तव्य को न जानने वाला।

अभिमुख(वि०)--सम्मुख, सामने।

अभिमूर्च्छित(वि०)-बिलकुल घबराया हुआ, पागल।

अभिमृद्(९प०)-कुचलना, सताना, बरबाद करना।

अभिमृश्(६प०)-छूना,धीरे २ रगड़ना।

अभिमृष्ट(वि०)-छुआ हुआ, रगड़ा हुआ, समीप आया हुआ।

अभिया(२प०)-समीप जाना, आक्रमण करना, आसक्त होना।

अभियाच्(१आ०)-याचना करना।

अभियाचन-याञ्चा-प्रार्थना, विनय, दरख्वास्त। [आक्रमणकारी।

अभियाता(वि०)-समीप आनेवाला,

अभियाति(स्त्री०)-आक्रमण।

अभियान(न०)-पास आना, अभिक्रमण,युद्ध के लिये प्रस्थान।

अभियुज्(७आ०)-आसक्त होना,अपने आप को तैयार करना,यत्न करना, दोष लगाना।

अभियुक्[ज्] (स्त्री०)-शत्रु, दुश्मन।

अभियुक्त(वि०)-तत्पर, मेहनती, आक्रान्त, मुजरिम, कथित।

अभियोक्ता(पु०)-शत्रु,अभियोगकर्त्ता, फरयादी, वादी, अर्थी।

अभियोग(पु०)-अपराध की योजना, किसी के किये हुए दोष व अपराध के विरुद्ध न्यायालय में निवेदन करना,मुकद्दमा,नालिश, चढ़ाई, आक्रमण, उद्योग, मनोनिवेश।

अभिरक्ष्(१ प०)-रक्षा करना, निरीक्षण करना, शासन करना।

अभिरक्षा(स्त्री०)–सब ओर से रक्षा।
अभिरक्त(वि०)–आसक्त,लगा हुआ।
अभिरत(वि०)–प्रसन्न, सन्तुष्ट, अभिरक्त।
अभिरति(स्त्री०)–प्रसन्नता, सन्तुष्टि, अमल।
अभिरम्(१ आ०)–प्रसन्न होना, खुश करना।
अभिराम(वि०)–रुचिर,सुन्दर,मनोहर
अभिरुच्(१ आ०)–चमकना, सुन्दर दीख पड़ना।
अभिरुचि(स्त्री०)–इच्छा, पसन्द।
अभिरुचिर(वि०)–बहुत सुन्दर।
अभिरूप(वि०)-अनुकूल, अनुरूप, मनोहर, पण्डित। पु०–चन्द्रमा, शिव, विष्णु, कामदेव।
अभिलक्षित(वि०)–चिन्हित, अंकयुक्त
अभिलप्(१ प०)–बातें करना, मुलाकात करना।
अभिलष्(१, ४ प०)–इच्छा करना, ख्वाहिश करना।
अभिलषित(वि०)–इच्छित, चाहा हुआ।
अभिलाप(पु०)–शब्द, कथन, वाक्य।
अभिलाव(पु०)–छेदन, काटना।
अभिलाष[स] (पु०)–लोभ, इच्छा, आकांक्षा।
अभिलाषी[न्] (वि०)–अभिलाषयुक्त।
अभिलाषुक(वि०)–अभिलाषयुक्त, लोभी।
अभिलिखित(वि०)–लिखा हुआ, खोदा हुआ।
अभिलीन(वि०)–आसक्त, तल्लीन।
अभिवद्(१ उ०)–बातें करना,बोलना।
अभिवदन(न०)–पुकारना, नमस्कार
अभिवादः-दनम् -अप्रियवाक्य,वन्दना, प्रणाम।
अभिवादक-दिका(वि०)-वन्दन करने वाला या वाली, अप्रियवक्ता।
अभिवंद्(१ आ०)–आदरपूर्वक प्रणाम करना।
अभिवंदन(न०)–आदरपूर्वक प्रणाम।
अभिविख्यात(वि०)–सर्वत्र जाना हुआ, मशहूर।
अभिविधि(स्त्री०)–व्याप्ति, मर्यादा।
अभिविनी(१ उ०)–सिखलाना,तालीम देना।
अभिविश्रुत(वि०)–अभिविख्यात।
अभिवृद्धि(स्त्री०)–बढ़ोतरी, कामयाबी, अभ्युदय।
अभिव्यक्त(वि०)–जाहिर, प्रकाशित, साफ।
अभिव्यक्ति(स्त्री०)–प्रकाशन,इज़हार, ज़ाहिर होना।
अभिव्यापक(वि०)–पूर्ण रूप से फैलने वाला। पु०-ईश्वर।
अभिव्याप्ति(स्त्री०)-पूरी तरह से मिलना, सब ओर फैलना।
अभिशपन(न०)–अभिशाप, मिथ्या अभिशंसन, बद्दुआ, मिथ्या दोषारोपण।
अभिशप्त(वि०)–जिसे शाप दिया गया हो, शापग्रस्त।
अभिशंसन(न०)–व्यभिचार का मिथ्या दोष लगाना।
अभिशस्त(वि०)–व्यर्थकलंकित, लाञ्छित जिस पर व्यभिचार का मिथ्या दोष लगा हो।
[याचना।
अभिशस्ति(स्त्री०)–लोकापवाद,शाप,

अभिशाप(पु०)-मिथ्यापवाद, बद दु-आ, गहरा अभियोग ।

अभिशापन(न०)-बद्दुआ देना ।

अभिशोक(पु०)-घना दुःख ।

अभिशोच(वि०)-गर्मी के कारण चमकने वाला । [मन्त्रों का पाठ ।

अभिश्रवण(न०)-श्राद्ध के समय वेद-

अभिश्राव(पु०)-प्रसिद्ध होना ।

अभिषंग(पु०)-पराजय, आक्रोश, शपथ, मिथ्यापवाद, आलिंगन ।

अभिषव(पु०)-यज्ञस्नान, मद्यसंधान, सोमलतापान, यज्ञ, स्नान ।

अभिषिचु(६ उ०)-जल का छिड़कना, तर करना, सत्कृत करना ।

अभिषेक(पु०)-स्नान, जल से सिंचन, छिड़काव, बाधाशान्ति के लिये वा मंगल के वास्ते मंत्र पढ़ कर कुश या दूब से जल छिड़कना, राजपद पर निर्वाचन, तिलक की रसम । [वाला ।

अभिषेक्ता(वि०)-अभिषेक कराने

अभिषेचन(न०)-छिड़काव,राजतिलक।

अभिषेणन(न०)-शत्रु के प्रति सेना सहित गमन करना ।

अभिष्टव(पु०)-तारीफ, प्रशंसा ।

अभिष्टु(२ प०)-तारीफ करना, बढ़ावा देना, सत्कृत करना ।

अभिष्टुत(वि०)-वर्णित,तारीफ किया गया । [का एक रोग ।

अभिष्यन्द(पु०) बहाव, स्राव, आंख

अभिष्वंग(पु०)-लगाव,प्रेम, मुहब्बत।

अभिसंयोग(पु०)-गहरा लगाव, बहुत गहरा ताल्लुक ।

अभिसंवृत(वि०)-वस्त्रयुक्त । [स्थान ।

अभिसंश्रय(पु०)-आश्रय, रक्षा का

अभिसंमार(पु०)-दल बद्ध होकर आना

अभिसंस्कार(पु०)-ख्याल, विचार, निरर्थक काम । [करना ।

अभिसंस्कृ(८ उ०)-बनाना, संस्कृत

अभिसंस्तव(पु०)-अत्यधिक प्रशंसा ।

अभिसंख्या(२ प०)-गिनना, अनुमान लगाना, । [शील ।

अभिसंचारी(पु०)-अस्थिर, परिवर्तन-

अभिसन्तप्(१ प०)-दुःख देना,सताना।

अभिसन्ताप(पु०)-लड़ाई, झगड़ा, युद्ध । [न्द्रिय ।

अभिसन्देह(पु०)-तबादला, उपस्थि-

अभिसन्ध-न्धक(पु०)-धोखेबाज ।

अभिसन्धा(३ उ०)-एक जगह कायम रखना, स्वीकार करना, निशाना लगाना, धोखा देना, अभिसन्धान करना ।

अभिसन्धा(स्त्री०)-कपट, छिपाव, वायदा, धोखा ।

अभिसन्धान(न०)-पूर्ववत् ।

अभिसन्धि(पु०)-पूर्ववत् ।

अभिसमवाय(पु०)-जोड़, मिलन ।

अभिसम्पत्(१ प०)-उड़ कर पहुंचना, जल्दी करना, पहुंचना ।

अभिसम्पद्(४आ०)-होना, परिवर्तित होना, तद्रूप होना, प्राप्त करना ।

अभिसम्पराय(पु०)-भावी, भविष्यत।

अभिरक्षा(स्त्री०)–सब ओर से रक्षा।
अभिरक्त(वि०)–आसक्त,लगा हुआ।
अभिरत(वि०)–प्रसन्न, सन्तुष्ट, अभिरक्त।
अभिरति(स्त्री०)–प्रसन्नता, सन्तुष्टि, अमल। [करना।
अभिरम्(१ आ०)–प्रसन्न होना, खुश
अभिराम(वि०)–रुचिर,सुन्दर,मनोहर
अभिरुच्(१ आ०)–चमकना, सुन्दर दीख पड़ना।
अभिरुचि(स्त्री०)–इच्छा, पसन्द।
अभिरुचिर(वि०)–बहुत सुन्दर।
अभिरूप(वि०)–अनुकूल, अनुरूप, मनोहर, पण्डित। पु०–चन्द्रमा, शिव, विष्णु, कामदेव।
अभिलक्षित(वि०)–चिन्हित, अंकयुक्त
अभिलप्(१ प०)–बातें करना, मुलाकात करना।
अभिलष्(१, ४ प०)–इच्छा करना, ख्वाहिश करना। [हुआ।
अभिलषित(वि०)–इच्छित, चाहा
अभिलाप(पु०)–शब्द, कथन, वाक्य।
अभिलाव(पु०)–छेदन, काटना।
अभिलाष[स] (पु०)–लोभ, इच्छा, आकांक्षा।
अभिलाषी[न्] (वि०)–अभिलाषयुक्त।
अभिलाषुक(वि०)–अभिलाषयुक्त, लोभी। [खोदा हुआ।
अभिलिखित(वि०)–लिखा हुआ,
अभिलीन(वि०)–आसक्त, तल्लीन।
अभिवद्(१ उ०)–बातें करना,बोलना।
अभिवदन(न०)–पुकारना, नमस्कार
अभिवादः-दनम् -अप्रियवाक्य,वन्दना, प्रणाम।
अभिवादक-दिका(वि०)-वन्दन करने वाला या वाली, अप्रियवक्ता।
अभिवंद्(१ आ०)–आदरपूर्वक प्रणाम करना।
अभिवंदन(न०)–आदरपूर्वक प्रणाम।
अभिविख्यात(वि०)–सर्वत्र जाना हुआ, मशहूर।
अभिविधि(स्त्री०)–व्याप्ति, मर्यादा।
अभिविनी(१ उ०)–सिखलाना,तालीम देना।
अभिविश्रुत(वि०)–अभिविख्यात।
अभिवृद्धि(स्त्री०)–बढ़ोतरी, कामयाबी, अभ्युदय। [साफ़।
अभिव्यक्त(वि०)–ज़ाहिर, प्रकाशित,
अभिव्यक्ति(स्त्री०)–प्रकाशन,इज़हार, ज़ाहिर होना।
अभिव्यापक(वि०)–पूर्ण रूप से फैलने वाला। पु०-ईश्वर।
अभिव्याप्ति(स्त्री०)–पूरी तरह से मिलना, सब ओर फैलना।
अभिशपन(न०)–अभिशाप, मिथ्या अभिशंसन, बद्दुआ, मिथ्या दोषारोपण। [हो, शापग्रस्त।
अभिशप्त(वि०)–जिसे शाप दिया गया
अभिशंसन(न०)-व्यभिचार का मिथ्या दोष लगाना।
अभिशस्त(वि०)–व्यर्थकलंकित, लाञ्छित जिस पर व्यभिचार का मिथ्या दोष लगा हो। [याचना।
अभिशस्ति(स्त्री०)–लोकापवाद,शाप,

अभिशाप(पु०)–मिथ्यापवाद, बद दुआ, गहरा अभियोग।
अभिशापन(न०)–बद्दुआ देना।
अभिशोक(पु०)–घना दुःख।
अभिशोच(वि०)–गर्मी के कारण चमकने वाला। [मन्त्रों का पाठ।
अभिश्रवण(न०)–श्राद्ध के समय वेद-
अभिश्राव(पु०)–प्रसिद्ध होना।
अभिषंग(पु०)–पराजय, आक्रोश, शपथ, मिथ्यापवाद, आलिंगन।
अभिषव(पु०)–यज्ञस्नान, मद्यसंधान, सोमलतापान, यज्ञ, स्नान।
अभिषिच्(६ उ०)–जल का छिड़कना, तर करना, संस्कृत करना।
अभिषेक(पु०)–स्नान, जल से सिंचन, छिड़काव, बाधाशान्ति के लिये या मंगल के वास्ते मंत्र पढ़ कर कुश या दूब से जल छिड़कना, राजपद पर निर्वाचन, तिलक की रसम। [वाला।
अभिषेक्ता(वि०)–अभिषेक कराने
अभिषेचन(न०)–छिड़काव, राजतिलक।
अभिषेणन(न०)–शत्रु के प्रति सेना सहित गमन करना।
अभिष्टव(पु०)–तारीफ, प्रशंसा।
अभिष्टु (२ प०)–तारीफ करना, बढ़ावा देना, सस्कृत करना।
अभिष्टुत(वि०)–वर्णित, तारीफ किया गया। [का एक रोग।
अभिष्यन्द(पु०)–बहाव, स्राव, आंख
अभिष्वंग(पु०)–लगाव, प्रेम, सुदृढ़ग्रह।
अभिसंयोग(पु०)–गहरा लगाव, बहुत गहरा ताल्लुक।
अभिसंवृत(वि०)–वस्त्रयुक्त। [स्थान।
अभिसंश्रय(पु०)–आश्रय, रक्षा का
अभिसंसार(पु०)–दलबद्ध होकर आना
अभिसंस्कार(पु०)–ख़याल, विचार, निरर्थक काम। [करना।
अभिसंस्कृ(८ उ०)–बनाना, संस्कृत
अभिसंस्तव(पु०)–अत्यधिक प्रशंसा।
अभिसंख्या(२ प०)–गिनना, अनुमान लगाना,। [शील।
अभिसंचारी(पु०)–अस्थिर, परिवर्तन-
अभिसन्तप्(१ प०)–दुःख देना, सताना।
अभिसन्ताप(पु०)–लड़ाई, झगड़ा, युद्ध। [न्द्रिय।
अभिसन्देह(पु०)–तबादला, उपस्थे-
अभिसन्ध-न्धक(पु०)–धोखेबाज।
अभिसन्धा(३ उ०)–एक जगह कायम रखना, स्वीकार करना, निशाना लगाना, धोखा देना, अभिसन्धान करना।
अभिसन्धा(स्त्री०)-कथन, विभाग, वायदा, धोखा।
अभिसन्धान(न०)–पूर्ववत्।
अभिसन्धि(पु०)–पूर्ववत्।
अभिसमवाय(पु०)–जोड़, मिलन।
अभिसम्पत्(१ प०)–उड़ कर पहुंचना, जल्दी करना, पहुंचना।
अभिसम्पद्(४आ०)–होना, परिवर्तित होना, तद्रूप होना, प्राप्त करना।
अभिसम्पराय(पु०)–भावी, भविष्यत्।

अभिसम्पात(पु०)-एक स्थान पर मिलना, युद्ध, शाप।
अभिसम्बन्ध्(९ प०)-वाहम बांधना।
अभिसम्बन्ध(पु०)-ताल्लुक, रिश्ता, लगाव, मैथुन।
अभिसर(पु०)-सहायक, अनुचर।
अभिसरण(न०)-आगे जाना, समीप जाना।
अभिसर्ग(पु०)-उत्पत्ति।
अभिसर्जन(न०)-दान, वध। [आना।
अभिसर्पण(न०)-युद्धाभिप्राय से समीप
अभिसां [शां] त्व् (१० प०)-प्रसन्न करना, शान्त करना, हमदर्दी करना। [करना, शान्ति देना।
अभिसां [शां] त्वः-नम्—हमदर्दी
अभिसायं(अ०)-सूरज छिपने के समय।
अभिसार(पु०)-बल, युद्ध, साधन, सहाय
अभिसारिका(स्त्री०)-अवस्थानुसार नायिका के दश भेदों में से एक, वह स्त्री जो संकेतस्थल में प्रिय से मिलने के लिये स्वयं जाय।
अभिसृ (१प०)-समीप जाना, आक्रमण करना, मुलाक़ात करना।
अभिसृज्(६ प०)-बनाना, तैयार करना, खोलना, देना, आक्रमण करना। [करना, अभ्यास करना।
अभिसेवन(न०)-अमल करना, सेवन
अभिस्नेह (पु०)-मुहब्बत, प्रेम, आसक्ति।
अभिहत(वि०)-आक्रान्त, हत।
अभिहति(स्त्री०)-चोटकरना, मारना।
अभिहन्(२ प०)-मारना, पीटना, नुक़सान पहुंचाना, आक्रान्त करना। [ना, आह्वान।
अभिहव(पु०)-यज्ञ, आहुति, पुकार-
अभिहास(पु०)-मज़ाक, हंसी ठट्ठा।
अभिहित(वि०)-उक्त, कथित, कहा हुआ।
अभिहर (पु०)-दूरीकरण, लेजाना।
अभिहरण (न०)-पास लाना, लूटना।
अभिहार(पु०)-दूरीकरण, लूटना, आक्रमण, शराबी। [गिराना।
अभिहुति(स्त्री०)-नुकसान, हार,
अभिहृ(१ प०)-दूर लेजाना, हटाना, समीप लाना, पहिरना, आक्रमण करना।
अभी(२ प०)-करीब आना, दाख़िल होना, पहुंचना। वि०-भयरहित।
अभीक(वि०)-उत्सुक, निर्भय, कामुक, क्रूर। पु०-प्रेमी, कवि, स्वामी।
अभीक्ष्ण(वि०)-दोहराया हुआ, लगातार, अत्यधिक। [तेज़ी से।
अभीक्ष्णं(अ०)-बार बार, लगातार,
अभीज्य(पु०)-देवता।
अभीत-भीति(वि०)-भयरहित, निडर।
अभीति(स्त्री०)-निर्भयता, आक्रमण, सामीप्य।
अभीप्सित (वि०)-अभिलषित, इच्छित। न०-ख्वाहिश, इच्छा।
अभीम(वि०)-जो भयानक न हो। पु०-विष्णु।
अभीमान=अभिमान।
अभीमोद(पु०)-खुशी।

अभीर(पु०)-ग्वालिया, अहीर, गोप।
अभीरपल्ली(स्त्री०)-ग्वालियों का ग्राम वा झोंपड़ा।
अभीरणी(स्त्री०)-एक प्रकार का सांप।
अभीरी(स्त्री०)-ग्वालों की भाषा।
अभीरु(वि०)-जो भयानक न हो, निडर। [स्त्रीलिंग में ऊकारांत हो जाता है]।
अभीरु(पु०)-शिव वा भैरव। स्त्री०-शतावरी। न०-युद्धस्थल।
अभीरुण(वि०)-निडर, दोषहीन।
अभीरुपत्री(स्त्री०)-शतमूली, शतावरी
अभील(न०)-कठिनता, दुःख।
अभीलाप(पु०)-गुफ़्तगू, बातचीत।
अभीवृत(वि०)-ढका हुआ, घिरा हुआ
अभीशाप(पु०)-शाप, बद्दुआ।
अभीशु-षु(पु०)-घोड़े की लगाम, किरण। स्त्री०-उंगली।
अभीष्(६ प०)-किसी वस्तु के लिये इच्छा करना, तलाश करना, प्राप्ति का यत्न करना।
अभीषंग(पु०)-आक्रोश, क्रन्दन।
अभीपया(क्रि०वि०)-निडर होकर।
अभीषु(पु०)-काम, अनुराग।
अभीष्ट(वि०)-वाञ्छित, अभिलषित, प्रिय। न०-इच्छा की वस्तु, अभिमत वस्तु।
अभीष्टदेवता(स्त्री०)-प्रिय देवता, प्रसन्न हुआ देवता।
अभीष्टलाभः-सिद्धिः-चाही हुई वस्तु का प्राप्त होना।
अभुक्त(वि०)-न खाया हुआ, न भोगा हुआ, उपवासी।
अभुग्न(वि०)-भुग्नाहीन, ठुण्ठा।
अभूत(वि०)-अनुत्पन्न, जो न हुआ हो, वर्त्तमान, अपूर्व, विलक्षण।
अभूतपूर्व(वि०)-विलक्षण, अनुपम।
अभूतशत्रु(वि०)-अजातशत्रु, शत्रुरहित
अभूति (स्त्री०)-अभाव, शक्ति का अभाव, निर्धनता।
अभूमि(स्त्री०) स्थानाभाव, अनाधार, आश्रयाभाव।
अभूरि(वि०)--चन्द, थोड़े, अल्प।
अभृश(वि०)-पूर्ववत्।
अभेद(वि०)-भेदरहित, अविभक्त। पु०-भेद का अभाव। [हीरा।
अभेद्य(वि०)-न भेदने योग्य। न०-
अभोग(पु०)-भोग का अभाव।
अभोजन(न०)-भोजन का अभाव, उपवास।
अभोज्य(वि०)-न खाने योग्य, अखाद्य
अभौतिक(वि०)--अपार्थिव, अप्राकृतिक, मानसिक।
अभ्यक्त (वि०)-मला हुआ, अभिषिक्त
अभ्यग्र(वि०)-निकट, समीप।
अभ्यङ्क (वि०)-हाल में ही चिन्हित
अभ्यङ्ग(पु०)-तैलमर्दन, मालिश।
अभ्यञ्ज् (७प०)-अभिषेक करना, मलना
अभ्यञ्जन(न०)-तैल, अभ्यंग।
अभ्यतीत(वि०)-गुज़रा हुआ, मुर्दा।
अभ्यधिक(वि०)-बहुत अधिक।
अभ्यनुज्ञा(९उ०)-आज्ञा देना, पसन्द करना। [हुक्म।
अभ्यनुज्ञा-ज्ञानं-स्वीकारी, आज्ञा,
अभ्यन्तर(वि०)-भीतर का, आभ्यान्तरिक, अन्दरूनी।

अभ्यमन(न०)–आक्रमण, रोग, हानि
अभ्यमित(वि०)-रोगी, क्षत ।
अभ्यमित्र(न०) शत्रु पर आक्रमण ।
अभ्यमित्रीण(पु०)-ऐसा योद्धा जो शत्रु का पूरे बल से मुकाबिला करता है।
अभ्यय(पु०)-पहुंच, आगमन, प्रवेश, सूर्य का डूबना ।
अभ्यर्च्(१,१०प०)–पूजना,तारीफ करना
अभ्यर्चनं भ्यर्चा-पूजा, प्रतिष्ठा ।
अभ्यर्ण(वि०)--निकट, समीप ।
अभ्यर्थ्(१० आ०)–प्रार्थना, विनय करना, इच्छा करना ।
अभ्यर्थना(स्त्री०)-विनय, विनती ।
अभ्यर्दन(न०)–कष्टदेना, सताना ।
अभ्यर्ह्(१०प०)–पूजना,सलाम करना।
अभ्यर्हणा(स्त्री०)–पूजा,प्रतिष्ठा,इज्जत।
अभ्यवकाश(पु०)–खुला हुआ स्थान ।
अभ्यवहार(पु०)–भक्षण, आहार ।
अभ्यवहृत (वि०)- भुक्त, खाया हुआ ।
अभ्यस्(४ प०)–अमल करना, अभ्यास करना, दोहराना, सीखना ।
अभ्यसन(न०)--अभ्यास का करना ।
अभ्यस्त(वि०)--अभ्यास किया हुआ, दोहराया हुआ,बार२ किया हुआ।
अभ्यसूया(स्त्री०)--गुणों में दोष का आरोपण, ईर्ष्या, द्वेष ।
अभ्याकर्ष(पु०)--ताल ठोकना ।
अभ्याकांक्षित(न०)--मिथ्या अभियोग, इच्छा ।
अभ्यागत(पु०) -अतिथि ।
अभ्यागम्(१ प०)--समीप आना, पास खींचना, मुलाकात करना ।
अभ्यागम(पु०)--सामीप्य, युद्ध, वैर, अभ्युत्थान, प्रहार । [तत्पर ।
अभ्यागारिक(पु०)--कुटुम्ब पालन में
अभ्याघात(पु०)--आक्रमण,हमला ।
अभ्याचर्(१प०)–समीप आना, इस्तैमाल करना, सम्पादन करना ।
अभ्यादा(३ आ०)-लेना, पकड़ना, पहरना, वार्त्ता आरम्भ करना ।
अभ्यादान(न०)–आरम्भ, प्रथमारम्भ
अभ्यान्त(वि०)--रोगी, बीमार ।
अभ्यामर्दः-र्दनं--संग्राम,युद्ध,आक्रमण
अभ्यायम्(१ प०)--फैलाना, लम्बा करना, खैंचना,निशाना लगाना, मुलाकात करना ।
अभ्यारुह्(१ प०)--चढ़ना, ऊपर जाना
अभ्यारोहण(न०)--ऊपर चढ़ना, मंत्रपाठ, अवस्थान्तर होना, तरक्की ।
अभ्यावर्त(पु०)-आवृत्ति,आवृत्तिस्तोत्र
अभ्यावृत्ति(स्त्री०)--पूर्ववत् ।
अभ्याश(वि०)--समीप, निकट ।
अभ्यास(पु०)--अभ्यसन, आवृत्ति, दोहराना, बार २ करना ।
अभ्यासादन(न०)-शत्रु के सामने जाना
अभ्याहार(पु०)–अभिहार, चोरी, ग्रहण, भोजन ।
अभ्युत्थान(न०)--प्रतिष्ठार्थ आसन से उठना,अभ्युदय,सूर्योदय,गौरव
अभ्युदय(पु०)--इष्टलाभ,उन्नति,समृद्धि पराक्रम, प्रभाव ।
अभ्युदित(वि०)--उन्नत, समृद्ध ।
अभ्युद्यत(वि०)- विना मांगे आपहुंचा फल आदि उद्यत, समुद्यत,तैयार ।

अभ्युन्नत(वि०)—बहुत ऊंचा, उठा हुआ, उच्चपदस्थ ।
अभ्युन्नति(स्त्री०)-अभ्युदय, उन्नति।
अभ्युपगत(वि०)-स्वीकृत, अंगीकृत, समीपागत ।
अभ्युपगम(पु०)—स्वीकार, निकट आगमन, अनुमति, अनुमोदन ।
अभ्युपपत्ति(स्त्री०)-अनुग्रह, प्रसाद, रक्षा, परित्राण ।
अभ्युपाय(पु०)—अंगीकार, स्वीकार, उपाय, कौशल । [अंगीकृत ।
अभ्युपेत(वि०)-उपगत, स्वीकृत,
अभ्युष(पु०)—रोटी, पोली ।
अभ्युषित(वि०)-समीप वा साथ रहने वाला । पु०—नौकर ।
अभ्यूढ(वि०)—समीप लाया हुआ ।
अभ्यूह(पु०)-बहस, वादविवाद, तर्कना, अनुमान । [मण ।
अभ्येषण(न०)—इच्छा करना, आक्र-
अभ्र्(१प०)-जाना, इधर उधर घूमना।
अभ्र(न०)—मेघ, आकाश, स्वर्ण, अभ्रक धातु । [अत्युच्च ।
अभ्रंलिह(पु०)—वायु । वि०-मेघस्पर्शी,
अभ्रक(न०)—धातु, भोडल जो कहते हैं कि पार्वती के रज से उत्पन्न हुई है ।
अभ्रकष(पु०)-मेघस्पर्शी, अत्युन्नत ।
अभ्रपिशाच(पु०)-राहुग्रह । [वृक्ष ।
अभ्रपुष्प(न०)—जल । पु०—बेंत का
अभ्रम (वि०)—भ्रमरहित, अभ्रान्त । पु०-भ्रम का अभाव । [हाथी ।
अभ्रमातङ्ग (पु०)-ऐरावत, इन्द्र का
अभ्रमाला(स्त्री०) मेघसमूह, मेघश्रेणी।
अभ्रमु(स्त्री०)—ऐरावत की स्त्री ।
अभ्रमुप्रिय(पु०)—ऐरावत हाथी ।
अभ्रान्त(वि०)—भ्रान्तिशून्य ।
अभ्राति(स्त्री०)-स्वस्थता, मुस्तैदी ।
अभ्रि भ्री(स्त्री०)—काष्ठ का कुद्दाल, नौका साफ करने का कुद्दाल ।
अभ्रेष(पु०)—औचित्य, न्याय ।
अभ्व(वि०)—बहुत बड़ा, शक्तिशाली
अम्(अ०)—तेजी से, अल्प ।
अम्(१प०)—जाना, भजन करना, शब्द करना, खाना ।
अम(वि०)—कच्चा । पु०—गति, बोझ, बल, भय, बीमारी, नौकर, प्राण
अमङ्गल (वि०)-अशुभ, मंगलहीन । न०-अशकुन । पु०-एरण्ड वृक्ष ।
अमङ्गल्य(वि०)—अमङ्गलजनक ।
अमण्ड(पु०)—एरण्ड वृक्ष ।
अमत(पु०)—रोग, मृत्यु, काल । वि०-न माना हुआ, अज्ञात ।
अमति(स्त्री०)—अबुद्धि,अज्ञान । वि०-क्रूर, दुष्टप्रकृति, मतिहीन । पु०—बदमाश, चन्द्र, काल ।
अमत्त(वि०)-मदरहित, बिना घमण्ड का, शान्त ।
अमत्र(न०)—बर्तन, पात्र, हथियार ।
अमत्सर(वि०)—अद्वेषी, उदार ।
अमन—मनस्क (वि०)—मन वा इच्छा से रहित, उदासीन ।
अमनि(स्त्री०)—रास्ता, पथ, गति ।
अमनुष्य(वि०) अमानुषी, मनरहित, पिशाच ।

अमन्द(वि०)–जो सुस्त न हो, कर्मवीर, तेज। पु०–वृक्ष।
अमम(वि०)–ममतारहित।
अममता-स्त्री–उदासीनता।
अमर(वि०)–न मरने वाला, न नाश होने वाला। पु०-देवता, स्नुही वृक्ष, पारा, सोना, तेतीस का अंक, एक कोषकार का नाम, मरुद्गणों में से एक, विवाह के पहिले वर कन्या के राशिवर्ण के मिलान के लिये नक्षत्रों का एक गण।
अमरकंटक(न०)–विन्ध्याचलपर्वत का वह भाग जो नर्मदा नदी के उद्भव-स्थान के पास है।
अमरकोट(पु०)–एक नगर का नाम।
अमरकोश-ष (पु०)–अमरसिंह द्वारा रचित लिंगानुशासन प्रसिद्ध कोष
अमरज(पु०)–देवदारु, एक प्रकार का खदिर वृक्ष।
अमरण(न०)–न मरना। [मरना।
अमरता (स्त्री०)–देवभाव, कभी न
अमरद्विज(पु०)–मन्दिर का पुजारी।
अमरपुष्पक(पु०)–कल्पवृक्ष, केतक।
अमररत्न(न०)–स्फटिक।
अमरलोक(पु०)–स्वर्ग।
अमरवल्लरी(स्त्री०)-आकाशवल्ली।
अमरसिंह(पु०)–अमरकोष का कर्त्ता।
अमरा(स्त्री०)–अमरावती नामक इन्द्र की राजधानी, गुडूची, दूर्वा, जरायु, घृतकुमारी, गर्भ की नाल
अमराद्रि(पु०)–सुमेरुपर्वत।
अमरालय(पु०)–अमरलोक, स्वर्ग।
अमर्त्य (पु०)–देवता। वि०-अक्षय, अविनश्वर।
अमर्त्यभुवन(न०)–स्वर्ग।
अमर्याद(वि०)–असीम, सीमातिक्रमण करने वाला।
अमर्ष(वि०)–क्रोधशून्य, असहिष्णु। पु०–असहिष्णुता, क्रोध, बेसबरी
अमर्षण(वि०)–क्रोधी, कोपनस्वभाव।
अमल(वि०)-मलरहित, स्वच्छ, निर्मल न०–अभ्रक धातु, ब्रह्म।
अमला (स्त्री०)–लक्ष्मी, नाभि की नाड़ी, भूम्यामलकी, सातला वृक्ष।
अमलात्मा(वि०)-शुद्धात्मा, पवित्रात्मा
अमलिन(वि०)–स्वच्छ, बेदाग, शुद्ध
अमस(पु०)–रोग, मूर्ख, काल, मूर्खता
अमा(अ०)–निकट, साथ, इसलोक में वि०–असीम, लातादाद। स्त्री० अमावस्या। [काय।
अमांस(वि०)–दुर्बल, मांसरहित, क्षीण-
अमातृक(वि०)–मातारहित।
अमात्य(पु०)–मन्त्री, बन्धु।
अमात्र (वि०)–असीम, असम्पूर्ण। पु०-परमात्मा।
अमानन(न०)–अनादर, अपमान।
अमानना(स्त्री०)–पूर्ववत।
अमानव(वि०)–अमानुषी, जो मनुष्य का न हो।
अमानस्य(न०)–दुःख, पीड़ा।
अमानिता-स्त्री--विनय, लज्जाशीलता।
अमानी [न्] (वि०)–लज्जाशील, विनयावनत।

अमानुष(वि०)—मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर का, जो मनुष्य से न हो सके, मनुष्यस्वभाव के विरुद्ध, पाशव, पैशाचिक। पु०—जो मनुष्य न हो, देव, राक्षस।
अमान्य(वि०)—अमाननीय।
अमाय(वि०)-अक्रूर, सीधा, ईमानदार
अमाया(स्त्री०)—धोखा या माया का अभाव।
अमायिक-यी(वि०)--ईमानदार, सच्चा
अमार(पु०)—न मरना।
अमार्ग(वि०)—मार्गहीन। पु०--कुमार्ग, मार्ग का अभाव।
अमावसी(स्त्री०)—अमावस्या।
अमाव [वा] स्या (स्त्री०)—कृष्णपक्ष का १५ वां दिन, वह तिथि जिस में सूर्य व चन्द्र एक ही राशि के हों, उस दिन किया जाने वाला यज्ञ। [बहुत, अज्ञात।
अमित (वि०)—असीम, लातादाद,
अमितविक्रम (वि०)—असीमशक्ति वाला। पु०—विष्णु।
अमितवीर्य(वि०)—असीम शक्तिशाली
अमित्र(पु०)—शत्रु, विपक्षी।
अमित्रता(स्त्री०)—दुश्मनी, शत्रुता।
अमिन्(वि०)—बीमार, रोगी।
अमिश्र-श्रित(वि०)—न मिला हुआ, मिश्रणरहित।
अमिष(न०)—छल का अभाव, लौकिक सुख, मांस, ईमानदारी।
अमीव(पु०)—शत्रु, सताने वाला वि०—पाप, दुःख।
अमुक(वि०)—फलां, जब किसी वस्तु या पुरुष का नाम न लेकर उस का निर्देश करना हो तब इसका प्रयोग होता है।
अमुक्त(वि०)—न छुटा हुआ, अस्वतन्त्र। न०—छुरीविशेष।
अमुक्ति(स्त्री०)—मुक्ति या मोक्ष का अभाव।
अमुग्ध(वि०)—विरक्त, चतुर।
अमुत्र(अ०)—वहां, उस स्थान में, वहां से, परलोक, जन्मान्तर।
अमुष्य(वि०)-प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर
अमुष्यपुत्र (पु०)—प्रख्यातवंश में उत्पन्न, कुलीन।
अमुष्यपुत्री(स्त्री०)-पूर्ववत्। [चतुर।
अमूक(वि०)—जो गूंगा न हो, वक्ता,
अमूढ(वि०)—चतुर, विद्वान्।
अमूर्त(वि०)—मूर्तिरहित, निराकार।
अमूर्ति(स्त्री०)—पूर्ववत्।
अमूर्तिमान्(वि०)—पूर्ववत्।
अमूल-लक(वि०)—बेजड़ का, निर्मूल, मिथ्या, असत्य।
अमूल्य(वि०)—जिस का मूल्य निर्धारित न हो सके, बहुमूल्य।
अमृत(पु०)—वह वस्तु जिस के पीने से जीव अमर हो जाता है, सुधा, जल, घी, अन्न, मुक्ति, औषध, विष, पारा, धन, सोना, मीठी वस्तु, देवता। वि०-न मरने वाला, सुन्दर।
अमृतकर(पु०)—चन्द्रमा।

अमृतकुंडली(स्त्री०)-छन्द का एकभेद, एक प्रकार का बाजा।
अमृतगति(स्त्री०)-एक प्रकार का छन्द।
अमृतगर्भ(पु०)-ब्रह्म, ईश्वर।
अमृततरंगिणी- (स्त्री०)-चन्द्रिका, चांदनी। [मरना, मोक्ष।
अमृतता-त्वं--मरण का अभाव, न
अमृतद्रव (पु०)-चन्द्रमा की किरण।
अमृतफल (पु०)-नाशपाती, परवल, पारावत। [मुनक्का।
अमृतफला(स्त्री०)-आमला, अंगूर,
अमृतबन्धु(पु०)-देवता, चन्द्रमा।
अमृतलता(स्त्री०)-गिलोय।
अमृतलोक(पु०)-स्वर्ग।
अमृतवायु(पु०)-चन्द्रमा। [शवेल।
अमृतवल्ली(स्त्री०)-अमरबेल, आका-
अमृतसम्भवा(स्त्री०)-गुडूची,गिलोय।
अमृतसार(पु०)-मक्खन, घी।
अमृतांशु(पु०)-चन्द्रमा।
अमृता(स्त्री०)-हड़,आमला, तुलसी, पीपल, मदिरा, गिलोय।
अमृताशन(पु०)-देवता।
अमृताहरण(पु०)-गरुड़।
अमृतेश(पु०)-देवता, शिव।
अमृत्यु(वि०)-अमर, न मरने वाला।
अमृषा(अ०)-सच सच,बिना झूंठ के।
अमृष्ट(वि०)-अमार्जित, जो साफ न हो। [मूर्ख।
अमेधाः [स्] (वि०)-पागल, मूढ,
अमेध्य(न०)-पुरीष। वि०-अपवित्र।
अमेय(वि०)-असमीम, असंख्य, तादाद, न जानने योग्य।

अमेयात्मा(वि०)-महानुभाव, उदार-चरित। पु०-विष्णु।
अमोक्ष(वि०)-न छूटा हुआ,अस्वतन्त्र।
अमोघ(वि०)-सफल,अव्यर्थ,अविफल।
अमोघा (स्त्री०)-विडंग, पाटलिवृक्ष, हरीतकी।
अमौन(न०)-चुप न रहना।
अम्ब्(१ प०)-जाना, [आत्मनेपदी में ध्वनि करना अर्थ होता है]।
अम्ब(पु०)-पिता, आवाज। न०-आंख, जल।
अम्बक(न०)-नेत्र, ताम्बा, पिता।
अम्बर(न०)-वस्त्र, आकाश, कपास, पड़ोस, होठ, पाप।
अम्बरद(न०)-रुई।
अम्बरमणि(पु०)-सूर्य।
अम्बरस्थली(स्त्री०)-पृथिवी,जमीन।
अम्बरीष(न०)-भर्जनपात्र,पश्चात्ताप, युद्ध, नरकविशेष, बछड़ा, सूर्य, आम्रातक वृक्ष, विष्णु, शिव। पु०-सूर्यवंशी एक राजा।
अम्बष्ठ(पु०)-चिकित्सक, हकीम, ब्राह्मण से वैश्यकन्या में उत्पन्न हुआ पुत्र, एक देश, हाथीवान्।
अम्बष्ठिका(स्त्री०)-ब्राह्मी बूटी।
अम्बा(स्त्री०)-माता, जननी, काशी-राज की लड़की, अम्बष्ठा, दुर्गा का नाम।
अम्बायु(स्त्री०)-माता।

अम्बालिका(स्त्री०)-माता, अच्छी माता, अम्बाडा वृक्ष, काशीराज की सब से छोटी कन्या जो विचित्रवीर्य को विवाही गई थी और पाण्डु की माता थी।
अम्बिका(स्त्री०)-माता, अच्छी स्त्री, दुर्गा, पार्वती, काशीराज की बिचली कन्या जो विचित्रवीर्य को विवाही गई थी और जिस के गर्भ से धृतराष्ट्र पैदा हुए थे।
अम्बिकेय(पु०)-गणेश, कार्त्तिकेय, राजा धृतराष्ट्र।
अम्बिकेयक(पु०)-पूर्ववत।
अम्बु(न०)-जल, पानी, रास्नावेल।
अम्बुकंटक(पु०)-कुम्भीर, नाका।
अम्बुकिरात(पु०)-पूर्ववत्।
अम्बुकीश-कूर्म(पु०)-शिशुमार नामक जलजन्तु, सूस।
अम्बुकेशर(पु०)-छालंग वृक्ष।
अम्बुचत्वर(न०)-झील।
अम्बुचामर(न०)-शैवाल, सिरवाल नामक घास।
अम्बुज(पु०)-चन्द्रमा, कपूर। न०-कमल, हिज्जल नामक वृक्ष।
अम्बुजन्म[न्](न०)-पद्म, शंख,सारस पक्षी। वि०-जलजात,सलिलोद्भव।
अम्बुतस्कर(पु०)-पानी का चोर अर्थात सूर्य।
अम्बुताल(पु०)-शैवाल, सिरवाल।
अम्बुद(वि०)-जलदाता । पु०-मेघ, मोथा।
अम्बुधर(पु०)-बादल, मेघ।
अम्बुधि(पु०)-समुद्र।
अम्बुनिधि(पु०)-समुद्र।
अम्बुप(पु०)-जलेश्वर, वरुण, समुद्र। वि०-जल का पान करनेवाला।
अम्बुपत्रा(स्त्री०)-उच्चटा नामक वृक्ष, नागरमोथा।
अम्बुपात(पु०)-लहर, सोता,चश्मा।
अम्बुप्रसाद(पु०)-कतकवृक्ष,निर्मली।
अम्बुप्रसादन(न०)-पूर्ववत।
अम्बुभृत(पु०)-मेघ, समुद्र, मोथा।
अम्बुमात्रज(वि०)-केवल पानी में उत्पन्न होने वाला। पु०-शंख।
अम्बुमुच्(पु०)-बादल।
अम्बुराज(पु०)-समुद्र, वरुण।
अम्बुराशि(पु०)-समुद्र।
अम्बुरुह्(न०)-कमल, सारस।
अम्बुरुह(अस्त्री०)-पूर्ववत्।
अम्बुरुहा(स्त्री०)-स्थलपद्मिनी।
अम्बुवाची(स्त्री०)-आषाढ़ में आर्द्रा नक्षत्र का प्रथम चरण अर्थात् आरम्भ के तीन दिन और बीस घड़ी जिन में पृथ्वी ऋतुमती समझी जाती है और बीज बोने का निषेध है।
अम्बुवाह(पु०)-बादल, मेघ, मोथा, झील, १७ का अङ्क।
अम्बुवाहिनी(स्त्री०)-नाव के पानी को उलीचने व फेंकने का पात्र, जल लाने वाली स्त्री।
अम्बुविहार(पु०)-जलक्रीड़ा।
अम्बुविस्रवा(स्त्री०)-घीगवार।

अम्बुसरण(न०)–पानी की लहर या सोता।
अम्बुशायी(पु०)–विष्णु।
अम्बुसर्पिणी(स्त्री०)–जलौका, जोंक।
अम्बुसेचनी(स्त्री०)–नौका से जल निकाल कर फेंकने का पात्र।
अम्बूकृत(वि०)–अस्पष्ट उच्चरित। न०-ऐसा वचन जिस के कहने में थूक निकले।
अम्भ्(१ आ०)-ध्वनि करना।
अम्भः[स्] (न०)–जल,आकाश,देवता, मनुष्य, राक्षस, शक्ति।
अम्भःसार(न०)–मुक्ता,मोती। [पन।
अम्भःसू(पु०)–धुवां, धूम,धुन्धियाला
अम्भोज(वि०)–जलोत्पन्न। पु०-चन्द्रमा, सारस। न०-कमल।
अम्भोजयोनि(पु०)-ब्रह्मा।
अम्भोजिनी(स्त्री०)–पद्मलता, पद्मसमूह, नलिनी।
अम्भोद-धर(पु०)-मेघ, मोथा।
अम्भोधि-निधि-राशि(पु०)–समुद्र।
अम्भोरुह्-ह(न०)--पद्म, सारसपक्षी।
अम्मय(वि०)--जलयुक्त, जल से बना हुआ फेनादि। [का फल।
अम्र(पु०)--आम का वृक्ष। न०-आम
अम्ल(वि०)--खट्टा,खारी। पु०--खट्टापन, खार, रस विशेष, सिरका। न०--तक्र, मट्ठा।
अम्लक(पु०)-लकुच वृक्ष, बड़हर।
अम्लकाण्ड(न०)–लवणतृण नामक वृक्ष।
अम्लकेशर (पु०)—बिजौरानीबू।
अम्लचूड़(पु०)–अम्लशाक।
अम्लनायक(पु०)-अम्लवेत।
अम्लनिशा(स्त्री०)-शठीनामक वृक्ष, कचूर।
अम्लपूर(न०)–वृक्षाम्ल।
अम्लफल(न०)–वृक्षाम्ल, तिन्तड़ीक। पु०–आम का पेड़।
अम्लवेतस (पु०)–अम्लवेत।
अम्लशाक(न०)-शाकाम्ल, वृक्षाम्ल।
अम्लसार(न०)–कांजी, आमलासार गन्धक। पु०–नींबू, अम्लवेत।
अम्लांकुश(पु०)--अम्लवेतस। पु०–महासहावृक्ष, आंवला।
अम्लान(वि०)–जो उदास न हो, जो मलिन न हो, हृष्ट,प्रसन्न, बिना मुर्झाया हुआ,स्वच्छ। [पद्मिनी।
अम्लानिनी (स्त्री०)-पद्मसमूह,
अम्लिका(स्त्री०)-इमली।
अम्लोद्गार(पु०)-खट्टी डकार।
अय्(१ आ०)-जाना।
अय(वि०)--जाता हुआ, गतिशील। पु०-गति,सौभाग्य, मङ्गलानुष्ठान।
अयन(न०)-गति, हरकत, रास्ता, स्थान, प्रवेशद्वार, सूर्य की गति का मार्ग, मुक्ति,-उपायता।
अयनकाल(पु०)-छः महीने का काल।
अयनसंक्रान्ति(स्त्री०)--मकर और कर्क की संक्रान्ति।
अयनांश(पु०)--सूर्य की गति विशेष के काल का भाग, अयन भाग।

अयज्ञ(वि०)–यज्ञ न करने वाला। पु०--बुरा यज्ञ, यज्ञाभाव।
अयज्ञार्ह(वि०)–यज्ञ के अयोग्य।
अयज्ञिय(वि०)--यज्ञ के अयोग्य, यज्ञ करने का अनधिकारी, अपवित्र।
अयत(वि०)–यत्न न करने वाला।
अयत(वि०)–बेरोक, बेकाबू।
अयति(वि०)–जिसने इन्द्रियों का दमन न किया हो।
अयत्न(वि०)--जिस में यत्न की आवश्यकता न हो। पु०–यत्नाभाव।
अयत्नकारी(वि०)--यत्न न करने वाला सुस्त।
अयत्नकृत(वि०)–आसानी से प्राप्त।
अयत्नलभ्य(वि०)–आसानी से प्राप्तियोग्य। [में।
अयत्नेन(क्रि०वि०)–आसानी से,सहज
अयथा (अ०)--जैसा होना चाहिये उसके विरुद्ध,गलती से।
अयथार्थ(वि०)–झूठा, ग़लत, बेमाने।
अयथावत्(अ०)–ग़लती से,
अयथेष्ट (वि०)–नाकाफ़ी, अपर्याप्त, इच्छा के प्रतिकूल।
अयथोचित(वि०)–अयोग्य, अनुचित
अयन्त्र(न०)- रोक टोक का अभाव, अस्त्रविशेष।
अयन्त्रित(वि०)--न रोका हुआ।
अयमित(वि०)--अयन्त्रित, न रोका हुआ।
अयव(पु०)--पुरीष का एक कीड़ा जो यव से छोटा होता है, पितृकर्म, शुक्र,कृष्णपक्ष।
अयश[स्](वि०)--बदनाम। न०--अकीर्त्ति, निन्दा।
अयशस्कर(वि०)--अपमानजनक, बदनाम करने वाला।
अयशस्य(वि०) -बदनाम, अयश।
अयः[स्](वि०)--गतिशील,जानेवाला। न०--लोहा,फ़ौलाद, सोना, धातु, गमन। पु०--आग।
अयस्कान्त(पु०)--चकमक पत्थर।
अयस्कार(पु०)--लोहार, जंघा का ऊपर का भाग।
अयस्कीट(न०)-लोहे का ज़ंग।
अयस्कृति(स्त्री०)—महाकुष्ठ की चिकित्सा का एक उपाय।
अयाचक(वि०)--जो याचना नहीं करता।
अयाचित(वि०) -न मांगा हुआ।
अयाज्य (वि०)--यज्ञ करने का अनधिकारी, शूद्र, जातिच्युत।
अयात(वि०)–न गया हुआ।
अयातयाम(वि०)--जो पुराना या कमज़ोर नहो, ताज़ा। [विपर्यय।
अयाथार्थ्य(न०) -अशुद्धि,गलती,अनै-
अयान(न०)--न जाना, अगति, ख़सलत, आदत।
अयानय(न०)–सौभाग्य या दुर्भाग्य।
अयाचक(वि०)–कुदरतीसुख।
अयास्य(वि० - प्रत्र विरोधी। पु०–अंगिरा ऋ०प
अयि(अ०)–सम्बोधन का शब्द, हे, अय, अरे, प्रार्थना,प्रश्न, नम्रता, प्रीति, प्यार से बुलाना।

अयुक्त(वि०)-गाड़ी में न जोता हुआ, असम्बन्धित, अश्रद्धालु, अप्रयुक्त, अयोग्य, अनुचित, ग़लत, अविवाहित ।

अयुक्ति(स्त्री०)-बेमेल, अलहदगी, बेहूदगी, अनौचित्य, युक्ति का अभाव । [विषम संख्या ।

अयुग-गल(वि०)-अलहदा, अकेला,

अयुगपद्(अ०)-सब एक साथ नहीं, रपता २ ।

अयुगू(स्त्री०)-ऐसी स्त्री जिस ने केवल एक बच्चा ही जना हो, काकवन्ध्या ।

अयुग्म (वि०)-अकेला, बिना जोड़े का, अलहदा, विषम संख्या ।

अयुग्मनयन-नेत्र-लोचन(पु०)-विषम आखों वाला अर्थात् शिव ।

अयुग्मबाण-शर (पु०)-विषम बाणों वाला अर्थात् कामदेव ।

अयुग्मवाह-सप्ति(पु०)-सात घोड़ों वाला अर्थात् सूर्य ।

अयुज्(वि०)-बिना जोड़े का, विषम ।

अयुज(वि०)-जिस का कोई साथी न हो, अलहदा, अकेला, विषम ।

अयुत(वि०)-न जुड़ा हुआ, असम्बन्धित, अलग । न०-दशसहस्र ।

अयुध(पु०)-जो योद्धा न हो, योद्धा से भिन्न ।

अयुध्य(वि०)-अजेय, जिस का मुकाबिला न किया जा सके ।

अयुव(वि०)-अलग, असम्बन्धित ।

अये(अ०)-सम्बोधन में प्रयुक्त होता है, आश्चर्य, दुःख, क्रोध, भय, थकावट आदि का द्योतक ।

अयोग(वि०)-असम्बन्धित । पु०-जुदाई, अनौचित्य, गुरामेल, बड़ा यत्न, रंडवा, हथौड़ा, नफ़रत ।

अयोगव(पु०)-शूद्र पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न पुरुष ।

अयोगू(पु०)-लोहार ।

अयोगुड(पु०)--लोहे की गेंद, एक प्रकार की बटी जिस में लोहे का अंश होता है । [निकम्मा ।

अयोग्य(वि०)--अनुचित, ग़ैरमौज़ूं,

अयोघन(पु०)--हथौड़ा, लोहार का एक बड़ा औज़ार । [जाल ।

अयोजाल(न०) -लोहे का बना हुआ

अयोधा(पु०)--जो योधा न हो, जिस के बराबर दूसरा योधा न हो ।

अयोध्य(वि०)--अजेय, जिस पर आक्रमण न हो सके ।

अयोध्या(स्त्री०)--सूर्यवंशीय राजाओं की राजधानी जो इस समय भी सरयू नदी के तट पर अवस्थित है ।

अयोध्याकाण्ड(न०)--वाल्मीकीय रामायण का दूसरा परिच्छेद ।

अयोनि(वि०)-उत्पत्तिशून्य, नित्य । पु०-ब्रह्मा, शिव ।

अयोनिज(वि०)-जो योनि से उत्पन्न न हुआ हो । पु०-विष्णु, शिव ।

अयोनिजन्म(वि०)--पूर्ववत् ।

अयोनिजा-सम्भवा(स्त्री०)-सीता जो जनक की पुत्री व राजा रामचन्द्र की वधू थीं। [अर्थात् रूढ़ि।
अयौगिक(वि०)-जो यौगिक न हो
अयौक्तिक(वि०)-युक्तिशून्य, तर्कना के अयोग्य।
अर(वि०)-तेज़, शीघ्रगामी, थोड़ा। पु०-पहिये का अरा, कोण, शैवाल।
अरक्षित(वि०)-ग़ैरमहफ़ूज़,रक्षाहीन।
अरघट्ट-ट्टक(पु०)-रहट, कुएं से पानी खींचने का पहिया, गहरा कुआं।
अरज-जस्-जस्क(वि०)-धूलिरहित, शुद्ध, स्वच्छ, रजोविकाररहित।
अरजाः(स्त्री०)-रजोदर्शन से पूर्व की कन्या।
अरज्जु(न०)-क़ैदख़ाना। वि०-जो रस्सी का बना हुआ न हो।
अरणि(अक्ली०)-अग्नि उत्पन्न करने वाला लकड़ी का डंडा। पु०-सूर्य, अग्नि। स्त्री०-रास्ता, मार्ग, अरनी नामक ओषधि।
अरणिसुत(पु०)-व्यासपुत्र शुकदेव।
अरणी(स्त्री०)-आग उत्पन्न करने का काष्ठ विशेष।
अरण्य(न०)-जङ्गल, वन, रेगिस्तान।
अरण्यकदली(स्त्री०)-जङ्गली केला।
अरण्यकाण्ड(न०)-रामायण का तीसरा परिच्छेद जिस में विश्वामित्र के साथ रामचरित का वर्णन है।
अरण्यगज(पु०)-जङ्गली हाथी।
अरण्यगान(न०)-सामवेद के अन्तर्गत एक गान विशेष जो जङ्गल में गाया जाता था।
अरण्यचर(वि०)-जङ्गली, वनचर।
अरण्यपण्डित(पु०)-मूर्ख पुरुष।
अरण्यराज्-ज(पु०)-शेर या चीता।
अरण्यरोदन(न०)-जङ्गल में रोना, निष्फल रोना, निरर्थक काम।
अरण्यानी(स्त्री०)-बड़ा जङ्गल, वन का देवता।
अरण्यायन(न०)-वानप्रस्थी बनना।
अरण्यीय(वि०)-वनयुक्त,वन के समीप
अरत(वि०)-सुस्त, विरक्त, असन्तुष्ट।
अरति(वि०)-असन्तुष्ट, सुस्त, बेचैन। स्त्री०-रति या आमोद का अभाव, दुःख, कष्ट, चिन्ता, असन्तोष, सुस्ती। [बांह।
अरत्नि(अक्ली०)-कोहनी, बाज़ू,
अरत्निक(पु०)-पूर्ववत्।
अरथी[न्](वि०)-जो रथ में सवार होकर नहीं लड़ता।
अरद(वि०)-दन्तहीन।
अरम(वि०)-नीच, कमीना। [गवार।
अरमण(न०)-असन्तोषप्रद, नाख़ुश-
अरमति(स्त्री०)-शोभा, आज्ञापालन, देवश्रद्धा।
अरर(न०)-कपाट, किवाड़, द्वार। पु०-युद्ध, लड़ाई, यज्ञ का भाग।
अररि(पु०)-किवाड़, दर्वाज़ा।
अररे(अ०)-अपमान या शीघ्रता का बोधक।

अरविन्द(न०)-कमल। पु०-सारस।
अरविन्दनाभि(पु०)--विष्णु का नाम।
अरविन्दसद्(पु०)--ब्रह्मा का नाम।
अरविन्दाक्ष(वि०)--कमल की सी आंखों वाला, विष्णु का विशेषण।
अरविन्दिनी(स्त्री०)-पद्म, पद्मसमूह, पद्मयुक्त देश। [कमजोर।
अरस(वि०)-रसरहित, स्वादुरहित,
अरसिक(वि०)-जो रसिक न हो।
अरहस्(न०)-रहस्य का अभाव।
अराग-गी(वि०)-शान्त, निश्चल, रागरहित। [पड़ा हुआ।
अराजक(वि०)-राजारहित, गड़बड़ में
अराजस्थापित(वि०)-राजा द्वारा जो स्थापित न किया गया हो अर्थात् नियमविरुद्ध, ग़ैरक़ानूनी।
अराति(पु०)-शत्रु, दुश्मन, छः का अंक
अरातिभंग(पु०)-शत्रुओं का नाश।
अराद्धि(स्त्री०)-नियमभंग, पाप, गुनाह, द्वेष।
अराधस(वि०)-ग़रीब, कठोर, कंजूस।
अराय(वि०)-निर्धन, कंजूस।
अराल(वि०)-टेढ़ा, झुका हुआ। पु०-मदयुक्त हाथी। [वाली स्त्री।
अरालकेशी(स्त्री०)-घुंघराले बालों
अराला(स्त्री०)-असती स्त्री, अधृष्टास्त्री
अराष्ट्र(न०)-राज्यभ्रष्टता।
अरि(वि०)-गतिशील। पु०-शत्रु, खदिर विशेष, छः का अङ्क, गाड़ी का कोई भाग, पहिया, स्वामी, धार्मिक मनुष्य।
अरिकुल(न०)-शत्रुओं का गिरोह, शत्रु
अरिचिन्तन(न०)-परराष्ट्रविभाग का प्रबन्ध।
अरिणी(पु०)-मुर्गी।
अरित्र(वि०)-शत्रुओं से रक्षित। न०-पतवार, किश्ती।
अरिनिपात(पु०)-शत्रुओं का आक्रमण।
अरिन्दम(वि०)-शत्रुओं को पराजित करनेवाला, फ़तहमन्द।
अरिमर्दन(न०)-पूर्ववत्।
अरिप(न०)-लगातार वर्षा होना।
अरिष्ट(वि०)-अक्षत, सम्पूर्ण, रक्षित। पु०-बगुला, कौआ, शत्रु। न०-दुर्भाग्य, बदक़िस्मती। [नाम।
अरिष्टमथन(पु०)-शिव या विष्णु का
अरिष्टसूदन(पु०)-अरिष्टघातक अर्थात् विष्णु।
अरिष्टि(स्त्री०)-हिफ़ाज़त, रक्षा।
अरिसूदन(पु०)-शत्रुघ्न, अरिघ्न।
अरिस्थानक(न०)-पराजय, हार।
अरु(पु०)-सूर्य, लाल खैर, रक्तखदिर।
अरुः[स्] (अस्त्री०) व्रण, क्षत, जख़्म, घाव। अ०-मर्म, सन्धिस्थान।
अरुग्ण(वि०)-अरोगी, स्वस्थ, अक्षत।
अरुचि(स्त्री०)-अश्रद्धा, अनभिलाष, रोग भेद।
अरुचिर-रुच्य(वि०)-अरोचक, नापसन्द, घृणा उत्पन्न करने वाला।
अरुचिकर(वि०)-अरुचि करनेवाला।
अरुज्(वि०)-रोगरहित, तन्दुरुस्त।
अरुज(वि०)-तन्दुरुस्त, स्वस्थ। पु०-आरग्वध नामक वृक्ष।

अरुण(वि०)—लाल, रक्त, कपिल वर्ण वाला, घबराया हुआ, शब्दरहित। पु०—लाल रंग, उषाकाल की लाली, सूर्य, कुष्ठभेद। न०—कुंकुम, सिन्दूर, सोना।
अरुणकमल(न०)—लालकमल।
अरुणज्योति(पु०)—शिव का नाम।
अरुणप्रिय(पु०)—शिव का नाम।
अरुणलोचन(पु०)—लाल आंखों वाला कबूतर।
अरुणसारथि(पु०) सूर्य।
अरुणा(स्त्री०)—अतिविषा, श्यामा आदि औषधियों का नाम, लाल, कपिल।
अरुणाग्रज(पु०)—गरुड़।
अरुणात्मज(पु०)—जटायु पक्षी।
अरुणित(वि०)—लाल किया हुआ।
अरुणिमा(स्त्री०)—लालिमा, सुर्खी।
अरुणी(स्त्री०)—लाल रंग की, उषाकाल
अरुणोदय(पु०)—उषाकाल, ब्राह्ममुहूर्त
अरुणोपल(पु०)—पद्मरागमणि, लाल।
अरुन्तुद(वि०)—मर्मपीड़क, कठोर, परुष
अरुन्धती(स्त्री०)—वशिष्ठ ऋषि की पत्नी, एक तारा।
अरुन्धतीजानि (पु०)—वशिष्ठमुनि, आकाश के सप्तऋषियों में से एक। [नाथ और पति शब्द के संयोग से भी यही अर्थ होता है]
अरुष्ट(वि०)—शान्त, अक्रोधी।
अरुष(वि०)—अक्रोधी, चमकीला, अक्षत पु०—अग्नि का लाल घोड़ा, ज्वाला, सूर्य।
अरुषी(स्त्री०)—उषाकाल, अग्निशिखा।
अरुष्क(वि०)—भल्लातक वृक्ष।
अरुष्कर(वि०)—व्रणकर, क्षतकारक।
अरुष्कृत(वि०)—जख्मी, क्षत। [कार।
अरूप(वि०)—रूपशून्य, कुरूप, निराकार।
अरूपक(वि०)—रूपकरहित, अलंकारशून्य।
अरूपता(स्त्री०)—बदशकल, कुरूपता
अरूप(पु०)—एक प्रकार का सर्प, सूर्य।
अरे(अ०)—नीच सम्बोधन, ओरे।
अरेणु(वि०)—धूलिरहित। न०—धूलिभिन्न।
अरेरे(अ०)—अधम संबोधन। [रहित।
अरोक(वि०)- अछिद्र, निष्प्रभ, दीप्तिरहित।
अरोग(वि०)—रोगरहित, स्वस्थ। पु०—तन्दुरुस्ती।
अरोचक(पु०)—रोगविशेष, अरुचिरोग। वि०—जो रुचिकर न हो।
अरोष(पु०)—क्रोध का अभाव, शान्तचित्तता।
अरौद्र(वि०)—जो भयानक न हो।
अर्क्(१० प०)—गर्म करना, तारीफ करना।
अर्क(वि०)—अर्चनीय। पु०—सूर्य, किरण अग्नि, ताम्बा, आक, मदार, रविवार, इन्द्र, प्रशंसा, विद्वान्, बड़ा भाई, विष्णु, १२ का अंक। अस्त्री०—भोजन। [वृक्ष।
अर्ककान्ता(स्त्री०)—हुड़हुड़िया नामक
अर्कचन्दन(पु०)—रक्त चन्दन।
अर्कज(पु०)—कर्ण, यम, सुग्रीव का नाम।
अर्कजौ(पु०)—दोनों अश्विनीकुमार।

अर्कतनय(पु०)--कर्ण,यम,वैवस्वत मनु
अर्कत्विष्(स्त्री०)--सूर्य का प्रकाश।
अर्कदिन-वासर:-सूर्यवार, रविवार।
अर्कनन्दन(पु०)--कर्ण,यम,वैवस्वतमनु
अर्कपत्रा(स्त्री०)--अर्कमूल, एक लता जो विष की औषध है।
अर्कपर्ण(पु०)-आक का वृक्ष, मदार का पत्ता। [फूल।
अर्कपुष्प(न०)--आक [मदार] का
अर्कपुष्पी(स्त्री०)-सूर्यमुखी नाम वृक्ष
अर्कप्रिया(स्त्री०)--जवा,जपा,गुडहर।
अर्कबन्धु(पु०)--गौतम बुद्ध, पद्म।
अर्कभ(न०)--वह नक्षत्र जो सूर्यक्रान्त हो, सिंहराशि, उत्तराफाल्गुनी नामक नक्षत्र।
अर्कभक्ता(स्त्री०)--हुलहुल का वृक्ष।
अर्कमूल(पु०)--ईसर मूल नामक लता यह साँप तथा बिच्छू के काटे पर बहुत गुण करती है।
अर्कवल्लभ(पु०)-बन्धूक नामक वृक्ष।
अर्कवल्लभा(स्त्री०)--गुडहरनाम वृक्ष।
अर्कवेध(पु०)--तालीशपत्र नामकवृक्ष।
अर्कसोदर(पु०)--ऐरावत हाथी।
अर्काश्म(पु०)--अरुणोपल, सूर्यकान्त मणि।
अर्कोपल(पु०)-सूर्यकान्त मणि,स्फटिक मणि।
अर्गल(स्त्री०)-वह लकड़ी जिसे किवाड़ बन्द करके पीछे से आड़ी लगाते हैं, किवाड़, बन्धन, लहर।
अर्गला-लो(स्त्री०) पूर्ववत्।

अर्गलिका(स्त्री०)-छोटी अर्गला।
अर्घ् (१ प०)-योग्य होना,मोललेना।
अर्घ(पु०)-मूल्य, क़ीमत, पूजाविधि।
अर्घपात्र(न०)-एक ताम्बे का पात्र जो शंख के आकार का होता है, अर्घा।
अर्घीश(पु०)-शिव का नाम।
अर्घ्य(वि०)-पूजनयोग्य,पूज्य,क़ीमती।
अर्च् (१ उ०)-पूजना, वन्दना करना; स्वागत करना,चमकना। १०प०-आदर करना, तारीफ़ करना।
अर्चक(पु०)-पूजक, पुजारी।
अर्चन(वि०)-पूजा करने वाला। न०-अर्चना, पूजन, आदर, देवपूजन।
अर्चना(स्त्री०)-पूजा, देवपूजा।
अर्चनीय-र्च्य(वि०)-पूजनीय, पूजायोग्य, आदरणीय।
अर्चा(स्त्री०)-पूजा, प्रतिमा।
अर्चि(स्त्री०)-किरण, अग्निशिखा।
अर्चित(वि०)-पूजित, आदृत।
अर्चिष्मत्(वि०)-प्रकाशमान। पु०-अग्नि, सूर्य।
अर्चिस्(न०)-किरण, अग्निशिखा, प्रभा। पु०-किरण, अग्नि।
अर्ज् (१ प०)-प्राप्त करना, हासिल करना। १० प०-बनाना, तैयार करना।
अर्जक(वि०)-उपार्जनकर्ता। पु०-सितपर्णास आदि कई वृक्षों का नाम।
अर्जन(न०)-उपार्जन, प्राप्ति।
अर्जनीय(वि०)-उपार्जन करने योग्य।

अर्जित(वि०)-उपार्जन किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ।
अर्जुन(पु०)-अर्जुन वृक्ष, राजा पाण्डु का मध्यम व तीसरा पुत्र, कार्तवीर्य। न०-तृण, नेत्ररोग। वि०-सफेद, स्वच्छ, चमकीला,रुपहरा।
अर्जुनक(पु०)-अर्जुन का पूजक। वि०-अर्जुन का।
अर्जुनध्वज(पु०)-हनुमान्।
अर्जुनी(स्त्री०)-गवी, करतोया नदी, कुटनी, उषा।
अर्ण(वि०)-वेचैन। पु०-चश्मा, शाकवृक्ष, अक्षर, वर्ण।
अर्णः[स्] (न०)-जल, लहर, चश्मा।
अर्णव(पु०)-समुद्र,सूर्य,इन्द्र,अन्तरिक्ष।
अर्णवज(अस्त्री०)-समुद्रफेन।
अर्णवपोत(पु०)-किश्ती या जहाज़।
अर्णवमन्दिर(पु०)-वरुण, विष्णु।
अर्णवोद्भव(पु०)—अग्निजार वृक्ष, चन्द्रमा। न०-अमृत। [मोथा।
अर्णोद(पु०)—बादल, मुस्तक, नागर
अर्णोभव(पु०)—शंख।
अर्तन(वि०)—दोष देने वाला,दुःखित। न०-जुगुप्सा,दोषारोपण। [सिरा।
अर्ति(स्त्री०)—दुःख, रज, धनुष का
अर्तिका(स्त्री०)—अत्तिका, नाटक में ज्येष्ठा भगिनी।
अर्थ् (१० आ०)--विनय करना, प्रार्थना करना, पाने का यत्न करना, इच्छा करना।
अर्थ(पु०)--गरज, उद्देश्य, इच्छा, रयाहिश, विषय, धन, कारण, वस्तु, शब्दप्रतिपाद्य, निवृत्ति प्रयोजन, प्रकार। [दायक।
अर्थकर(वि०)- धन देनेवाला, लाभ-
अर्थकाम (वि०)--धन का इच्छुक।
अर्थकृच्छ्र(न०)--आर्थिक कठिनता।
अर्थघ्न(वि०)खर्चीला, फिजूलखर्च।
अर्थचिन्तन(न०)-अर्थविभाग का प्रबन्ध।
अर्थचिन्ता(स्त्री०)-पूर्ववत्।
अर्थजात(वि०)-धामाने, ज्ञातधर्म।
अर्थज्ञ(वि०)-अर्थ को जानने वाला।
अर्थद(वि०)--धनदाता। पु० कुवेर।
अर्थदण्ड(पु०)-वह धन जो किसी अपराध के दण्ड में अपराधी से लिया जाय, जुर्माना। [ख्वास्त।
अर्थना(स्त्री०)--विनय, प्रार्थना, दर-
अर्थनिश्चय(पु०)-इरादा, फैसला।
अर्थलाभ(पु०)--धनप्राप्ति।
अर्थलुब्ध(वि०)--लालची,धनलोलुप।
अर्थवत्ता(स्त्री०)--धन, सम्पत्ति।
अर्थवान्(पु०)--पुरुष। वि०--सार्थक।
अर्थशास्त्र(न०) सम्पत्तिशास्त्र, पोलिटीकलइकानौमी।
अर्थसंग्रह-सचय(पु०)-धन का इकट्ठा करना, खज़ाना।
अर्थसिद्धि(स्त्री०)—कामयाबी, इच्छित कार्य की पूर्त्ति।
अर्थहीन(वि०)-धनहीन,ग़रीब,बेमाने
अर्थागम(पु०)-धन का आगमन, आमदनी।
अर्थात्(अ०)-यानी, इसका प्रयोग विवरण करने में होता है।

अर्धांगी(पु०)–शिव। वि०–अर्धांग रोग से पीड़ित।
अर्धान्तर(न०)–आधा फासला।
अर्धार्ध(अस्त्री०)–आधे का आधा अर्थात् चौथाई, आधा आधा।
अर्धावभेदक(पु०)–आधाशीशी रोग।
अर्धिक(वि०)–अर्धांश का भागी। पु०–आधाशीशी, वर्णसंकर जो ब्राह्मण द्वारा वैश्यकन्या में उत्पन्न हुआ हो।
अर्धीकरण(न०)–आधा करना।
अर्धुक(वि०)–कामयाब, उन्नतिशील।
अर्धेन्दु(पु०)–चन्द्रार्ध भाग, गलहस्त, नखचिन्ह, अनुनासिक का चिन्ह।
अर्धोदय(पु०)–माघ का महीना, अमावस्या तिथि, श्रवण नक्षत्र और व्यतिपात योग।
अर्ध्य(वि०)–आधे का, वृद्धियोग्य।
अर्पण(न०)–देना, भेंट करना, सौंपना नज़र करना।
अर्पित(वि०)–भेट किया गया, सौंपा गया, दिया गया।
अर्पिस(पु०)–हृदय, हृदय का मांस।
अर्ब्(१ प०)–किसी की ओर जाना, वध करना।
अर्बुद(अस्त्री०)–एक रोग, दश करोड़ की संख्या, आबू नामक पर्वत, सांप, बादल, मांसकील।
अर्बुदि(पु०)–एक राक्षस जिस को इन्द्र ने मारा था।
अर्भ(वि०)–प्रभाहीन, मलिन। पु०–बालक, शिष्य।
अर्भक(वि०)–क्षुद्र, छोटा, कमजोर, मूर्ख। पु०–बालक, मूर्ख, पागल।
अर्म(अस्त्री०)–आंखों का एक रोग, पुराना नगर वा गांव।
अर्मक(वि०)–तङ्ग। न०–तंगी।
अर्मण(न०)–एकद्रोण की माप।
अर्य(वि०)–उत्तम, शरीफ, सच्चा, प्यारा। पु०–स्वामी, वैश्य, श्रेष्ठ।
अर्यमा [न्] (पु०)–सूर्य, उत्तराफाल्गुनी, वैश्यजाति की स्त्री।
अर्याणी(स्त्री०)–वैश्य जाति की स्त्री।
अर्यमिक(वि०)–दयार्द्र, दयालु।
अर्व्(१ प०)–मारना, घात करना।
अर्वती (स्त्री०)–घोड़ी, इन्द्र की अप्सरा।
अर्वन् (वि०)–गतिशील, कुत्सित, गर्ह्य। पु०–घोड़ा, इन्द्र।
अर्वाचीन(वि०)–इदानीन्तन, पश्चाज्जात, नवीन, हाल का।
अर्वावसु(पु०)–देवताओं का होता।
अर्श(वि०)–विपत्तिजनक, पापयुक्त, मलिन। पु०–नुकसान, चोट।
अर्शः[स्] (न०)–बवासीर का रोग।
अर्शस(वि०)–बवासीर रोग वाला।
अर्शी [न्] (वि०)–पूर्ववत्।
अर्शोघ्न(वि०)–बवासीरनाशक। पु०–सूरण नामक कन्द, जिमीकन्द।
अर्शोहर–पूर्ववत्।
अर्षण(वि०)–गतिशील। न०–गति, [गमन।
अर्ह्(१ प०)–योग्यता रखना, हकदार बनना, अधिकारी होना।
अर्ह(वि०)–श्रेष्ठ, प्रतिष्ठा योग्य, योग्यतापन्न, अधिकारी, उचित।

अर्थान्तरन्यास(पु०)–अर्थालंकार भेद।
अर्थान्वित(वि०)–अमीर, धनवान, सार्थक।
अर्थार्थी(वि०)–धन या किसी इच्छित वस्तु का यत्न करने वाला।
अर्थापत्ति(स्त्री०)–मीमांसा शास्त्र के अनुसार एक प्रकार का प्रमाण, अनुमानभेद, न कहे गये अर्थ का समझना।
अर्थालङ्कार(पु०)–शब्दालंकार के विरुद्ध अलंकार, जिसमें अर्थ का चमत्कार दिखाया जाता है।
अर्थिक(पु०)–वैतालिक, रक्षक, स्तुतिपाठक, सोये हुए राजा को जगाने वाला।
अर्थित(वि०)–प्रार्थित, इच्छित। न०–इच्छा, प्रार्थना।
अर्थिता(स्त्री०)–मांगना दरख्वास्त, सवाहिश, प्रार्थना।
अर्थित्व(न०)–पूर्ववत।
अर्थी[न्] (पु०)–याचक, सेवक, विवादी, धनी। वि०–इच्छा रखने वाला, चाहरखने वाला, प्रयोजन वाला।
अर्थ्य(वि०)–मांगने योग्य, योग्य, उचित, अमीर, धनवान्, बुद्धिमान्। न०-शिलाजीत।
अर्द्द(१ प०)–कष्ट देना, मारना, वध करना, विनय करना, मांगना, जाना, हरकत करना।
अर्दन(न०)–याचन, पीड़न, हनन, गमन। वि०–कष्टदायक।
अर्दना(स्त्री०)–भिक्षा, यातना, वध, हिंसा, गति।
अर्दनि(पु०)–अग्नि, याचना, रोग।
अर्दित(वि०)–याचित, हिंसित, गत, पीड़ित। न०–वायुव्याधि विशेष।
अर्ध-र्द्ध(वि०)–आधा। पु०–वृद्धि,वायु, अंश,भाग। अस्त्री०–आधाभाग।
अर्धकृत(वि०)–आधा किया हुआ, असम्पूर्ण।
अर्धकेतु(पु०)–रुद्र का नाम।
अर्धगंगा(स्त्री०)–कावेरी नदी।
अर्धगुच्छ(पु०)–वह मोती की माला जिस में चौबीस लड़ियां हों।
अर्धगोल(पु०)–आधावृत्त।
अर्धचन्द्र(पु०)–चन्द्रार्द्ध, अष्टमी का चन्द्रमा, नखक्षत, एक प्रकार का बाण जिस की नोक अर्धचन्द्राकार होती है, अनुनासिक चिन्ह।
अर्धदिन-दिवसः–आधा दिन, दोपहरी, १२ घंटे का दिन।
अर्धनिशा(स्त्री०)–आधी रात।
अर्धपञ्चाशत्(स्त्री०)–पच्चीस।
अर्धभाग(पु०)–आधा हिस्सा।
अर्धभास्कर(पु०)–दोपहरी। [वाड़ा।
अर्धमास(पु०)–आधा महीना, पख-
अर्धवीक्षण(न०)-पुरास देखना,कटाक्ष।
अर्धशत(न०)–पचास। [खाना।
अर्धशन(-न०)—आधा भोजन, आधा
अर्धशब्द(वि०)–धीमी आवाज़ वाला।
अर्धांग(वि०)–आधा अंग, लकवा, फालिज़, पक्षाघात।
अर्धांगिनी (स्त्री०)–स्त्री, भार्या।

अर्धांगी(पु०)–शिव। वि०–अर्धांग रोग से पीड़ित।
अर्धान्तर(न०)–आधा फासला।
अर्धार्ध(अस्त्री०)–आधे का आधा अर्थात् चौथाई, आधा आधा।
अर्धावभेदक(पु०)–आधाशीशी रोग।
अर्धिक(वि०)–अर्धांश का भागी। पु०–आधाशीशी, वर्णसंकर जो ब्राह्मण द्वारा वैश्यकन्या में उत्पन्न हुआ हो।
अर्धीकरण(न०)–आधा करना।
अर्धुक(वि०)–कामयाब,उन्नतिशील।
अर्धेन्दु(पु०)–चन्द्रार्ध भाग, गलहस्त, नखचिन्ह,अनुनासिक का चिन्ह।
अर्धोदय(पु०)–माघ का महीना, अमावस्या तिथि, श्रवण नक्षत्र और व्यतिपात योग।
अर्ध्य(वि०)–आधे का, वृद्धियोग्य।
अर्पण(न०)–देना, भेंट करना, सौंपना नज़र करना।
अर्पित(वि०)–भेंट किया गया, सौंपा गया, दिया गया।
अर्पिस(पु०)–हृदय, हृदय का मांस।
अर्ब्(१ प०)–किसी की ओर जाना, वध करना।
अर्बुद(अस्त्री०)–एक रोग, दश करोड़ की संख्या, आबू नामक पर्वत, सांप, बादल, मांसकील।
अर्बुदि(पु०)–एक राक्षस जिस को इन्द्र ने मारा था।
अर्भ(वि०)–प्रभाहीन, मलिन। पु०–बालक, शिष्य।
अर्भक(वि०)–क्षुद्र, छोटा, कमजोर, मूर्ख। पु०–बालक, मूर्ख, पागल।
अर्म(अस्त्री०)–आंखों का एक रोग, पुराना नगर या गांव।
अर्मक(वि०)–तङ्ग। न०–तंगी।
अर्मण(न०)–एकद्रोण की माप।
अर्य(वि०)–उत्तम, शरीफ, सच्चा, प्यारा। पु०–स्वामी,वैश्य,श्रेष्ठ।
अर्यमा [न्] (पु०)–सूर्य, उत्तराफाल्गुनी, वैश्यजाति की स्त्री।
अर्याणी(स्त्री०)–वैश्य जाति की स्त्री।
अर्यमिक(वि०)–दयार्द्र, दयालु।
अर्व्(१ प०)–मारना, घात करना।
अर्वती (स्त्री०)–घोड़ी, इन्द्र की अप्सरा।
अर्वन् (वि०)–गतिशील, कुत्सित, गर्ह्य। पु०–घोड़ा, इन्द्र।
अर्वाचीन(वि०)–इदानीन्तन, पश्चाज्जात, नवीन, हाल का।
अर्वावसु(पु०)–देवताओं का होता।
अर्श(वि०)–विपत्तिजनक, पापयुक्त, मलिन। पु०–नुकसान, चोट।
अर्शः[स्] (न०)–बवासीर का रोग।
अर्शस(वि०)–बवासीर रोग वाला।
अर्शी [न्] (वि०)–पूर्ववत्।
अर्शोघ्न(वि०)–बवासीर नाशक। पु०–सूरण नामक कन्द, जिमीकन्द।
अर्शोहर—पूर्ववत्।
अर्षण(वि०)–गतिशील। न०–गति, [गमन।
अर्ह्(१ प०)–योग्यता रखना, हकदार बनना, अधिकारी होना।
अर्ह(वि०)–श्रेष्ठ,प्रतिष्ठा योग्य, योग्यतापन्न, अधिकारी, उचित।

पु०–इन्द्र, विष्णु, मूल्य, योग्यता, गति।
अर्हणा-णा—पूजा, प्रतिष्ठा।
अर्हन् [त] (वि०)–अधिकारी, योग्यतापन्न, स्तुत, ख्यात। पु०–बुद्ध, जैनतीर्थङ्कर।
अर्हन्त(वि०)–पूर्ववत।
अर्हा(स्त्री०)–पूजा, प्रतिष्ठा।
अर्हित(वि०)–पूजित, प्रतिष्ठित।
अल्(१ उ०)–प्रतिष्ठा करना, योग्य होना, रोकना, दूर करना।
अलक(पु०)–बालों का गुच्छा, घुंघराले बाल, जुल्फ, पागल कुत्ता।
अलकनन्दा(स्त्री०)--गंगा का नाम, आठ से दश वर्ष तक की उम्र वाली कन्या।
अलकप्रभा(स्त्री०)--कुवेर की राजधानी, कुबेरपुरी।
अलकप्रिय(पु०)--पीतसालनामक वृक्ष
अलका(स्त्री०)--कुबेरपुरी, आठ से दश वर्षतककी उम्र वाली कन्या।
अलकाधिप(पु०)--कुवेर।
अलक्त-क्तक(पु०)–लाक्षारस, लाख का रंग, लाख। [कुङ्कुम।
अलक्षण(वि०)--लक्षणरहित। न०--
अलक्षित(वि०)--न देखा हुआ, अप्रकट, अज्ञात। [मता।
अलक्ष्मी(स्त्री०)--दुर्भाग्य,कष्ट, निर्धनता।
अलगर्द(पु०)--जल सर्प।
अलघु(वि०)--जो छोटा न हो, बड़ा, वजनदार।
अलज(पु०)-एक प्रकार का पक्षी।
अलज्ज(वि०)-बेशर्म, लज्जाहीन।
अलब्ध(वि०)--अप्राप्त। [दुष्प्राप्य।
अलभ्य(वि०)--प्राप्ति के अयोग्य,
अलय(वि०)--गृहहीन, आश्रयरहित। पु०--अनाश, नित्यता, पैदायश, उत्पत्ति।
अलर्क(पु०) बावला कुत्ता, एक कीड़ा।
अलस(वि०)--न चमकता हुआ।
अलस(वि०)--आलसी, उद्योगहीन, सुस्त, थका हुआ, मन्द। पु०--एक मुनि का नाम, वृक्ष विशेष।
अलसक(वि०)-सुस्त, आलसी।
अलस्य(वि०)-सुस्त, आलसी।
अलं(अ०)--काफी,पर्याप्त,पूरा,धारण, निरर्थक आदि अर्थों में आता है।
अलंकरण(न०)-भूषण, शृंगार,तैयारी, सजावट। [ष्णशील।
अलंकरिष्णु(वि०)--अलंकारकर्ता,भूष-
अलंकर्ता(वि०)--अलंकार करने वाला, सजाने वाला। [क्षम।
अलंकर्मीण(वि०)--कार्यकुशल, कार्य-
अलंकार(वि०)--भूषण, आभरण, अर्थ और शब्द की वह युक्ति जिस से काव्य में शोभा हो।
अलंकारक(पु०)--आभूषण, शृंगार।
अलंकारशास्त्र(न०)--काव्यके गुण और दोष को बताने वाला शास्त्र।
अलंकारहीन(वि०)--आभूषणहीन, शृङ्गाररहित। [अलंकृत करना।
अलंकृ(८ उ०)--तैयार करना, सजाना,
अलंकृत(वि०)--अलंकारयुक्त, भूषित सजाया हुआ।

अलंकृति(स्त्री०)--सजावट, गहना।
अलंक्रिया(स्त्री०) -भूषितकाना,भूषा।
अलंघन(न०)--पार न करना।
अलंघनीय(वि०)--जो पार न किया जा सके, पहुंच से वाहर।
अलंघ्य(वि०)--पूर्ववत्।
अलंजर(पु०)--मिट्टी का घड़ा।
अलंजुर (पु०)-पूर्ववत्।
अलंजुप(वि०)--पर्याप्त, भोजन के लिये काफी।
अलंधन(वि०)-पर्याप्त धनवाला, अमीर
अलंधूम(पु०)--धूमसमूह। [न हो।
अलंपट(वि०)-जो लम्पट न हो,छली
अलंबल(वि०)-काफी मज़बूत, पर्याप्त शक्तिवाला।
अलंवुष(पु०)-वमन, प्रहस्त, हाथ की हथेली। [भेद, छुईमुई।
अलंवुषा(स्त्री०)--अप्सराओं का एक
अलंबुसा(स्त्री०)-एक देश का नाम।
अलात(अस्त्री०)-आग की जलन, आधी जली हुई लकड़ी।
अलावु-बू(स्त्री०)-तुम्बी, कद्दू, लता विशेष।
अलाभ(वि०)-लाभरहित। पु०-लाभ का अभाव, हानि।
अलार(न०)-दर्वाज़ा।
अलास(पु०)-जीभ की जड़ों का सूजन
अलास्य(वि०)-सुस्त, बेकार।
अलि (पु०)-भौंरा, बिच्छू, कौआ, कोयल।
अलिक(न०)-ललाट, माथा।
अलिगर्द(पु०)-एक प्रकार का सांप।
अलिङ्ग(वि०)--लिङ्गरहित, परमात्मा का विशेषण। [कौआ।
अलिजिह्वा(स्त्री०)-गले के भीतर का
अलिदूर्वा(स्त्री०)--मालादूर्वा नामक वृक्ष। [चबूतरा।
अलिन्द(पु०)-दर्वाज़े के बाहर का
अलिपक(पु०)-भ्रमर, कुक्कुर, कोयल।
अलिप्रिय(न०)-रक्तोत्पल, लालकमल
अलिप्रिया(स्त्री०)-पाटला वृक्ष।
अलिम्पा(स्त्री०)-लालसा का अभाव
अलिमक(पु०)-कोयल, भ्रमर,पद्मकेशर
अलिम्पक (पु०)-पद्मकेशर, भ्रमर, कोयल।
अली[नू] (पु०)-भौंरा, भ्रमर।
अलीक(वि०)-अप्रिय, मिथ्या, थोड़ा न०-माथा झूठ, स्वर्ग।
अलीक्य(वि०)-झूठा।
अलु(पु०)-छोटी कलशी।
अलुक्समास (पु०)-एक प्रकार का समास जिसमें विभक्ति का लोप नहीं होता जैसे आत्मनेपद शब्दमें
अलुप्त(वि०)-अनष्ट, अक्षत, न घटा हुआ। [भी न हो।
अलुब्ध(वि०)-शान्तचित्त, जो लाल-
अले लेले (अ०)-निरर्थक शब्द जो पिशाच भाषा में प्रयुक्त होते हैं।
अलेपक(वि०)-बेदाग़। पु०-परमात्मा
अलेश(वि०)-बहुत,जो थोड़ा न हो।
अलेश(अ०) - बिलकुल नहीं।
अलेशोज(वि०)-मज़बूत, स्थिर।
अलोक(वि०)-जो दिखलाई न दे, जनशून्य। अस्त्री०-लोकभिन्न, प्रलय, जनाभाव, पाताल।

अलोकन(न०)–न दिखलाई देना, नष्ट होना।
अलोकित(वि०)–न देखा हुआ।
अलोभ(पु०)–लोभ का अभाव।
अलोभी(वि०)–लोभरहित।
अलोल(वि०)–शान्त, स्थिर, निश्चल
अलोलुप(वि०)–तृष्णारहित, लालच रहित, वैरागी।
अलोहित(वि०)–रक्तहीन, जो लाल न हो। न०–रक्तपद्म।
अलौकिक(वि०)–लोकातीत, अमानुषिक, जो ऐहिक न हो।
अल्क(पु०)–वृक्ष, शरीर का अवयव।
अल्प(वि०)–थोड़ा, छोटा, कम, न्यून किंचित्। न०–बहुत थोड़ा।
अल्पक (वि०)–थोड़ा, छोटा, नीच। पु०–यवास वृक्ष।
अल्पक्रीत(वि०)–सस्ता, थोड़े दामका
अल्पगन्ध(न०)–लाल कमल।
अल्पज्ञ(वि०)–थोड़ा जानने वाला, थोड़े ज्ञान का।
अल्पतनु(वि०)–दुर्बल, खर्वकाय, नाटा
अल्पता-त्वम् छोटापन, मूर्खता।
अल्पदृष्टि(वि०)–तंगदिल, थोड़े भाव वाला। [वाला कम समझ।
अल्पधी(वि०)–मूर्ख, दुर्बल हृदय
अल्पपत्र(पु०)–छोटे पत्ते वाली तुलसी।
अल्पपद्म(न०)–लाल कमल।
अल्पप्रमाणक(पु०)–तरबूज, खरबूजा।
अल्पबल(वि०)–कमजोर, दुर्बल।
अल्पबुद्धि-मति(वि०)-कमजोर दिल, बेवकूफ, अनजान, मूर्ख।
अल्पभाषी(वि०)–थोड़ा बोलने वाला, कमगो।
अल्पमूर्त्ति(वि०)–खर्वकाय, नाटा।
अल्पवयस्(वि०)-थोड़ी उमका, जवान
अल्पविद्य(वि०)–अनजान, मूर्ख, कुशिक्षित। [यदा कदा।
अल्पशः(अ०)–थोड़ा, कममात्रा में,
अल्पशक्ति(वि०)–कमजोर, दुर्बल।
अल्पंपच(पु०)–कंजूस।
अल्पायुः(वि०)–थोड़ी उम्र का। पु०–छाग, बकरा।
अल्पाहारी(वि०)–थोड़ा खाने वाला, परहेजगार।
अल्पिष्ठ(वि०)-बहुत थोड़ा। [बनाना।
अल्पीकृ(८ उ०)–कम करना, छोटा
अल्पीभूत(वि०)–घटा हुआ, छोटा किया हुआ। [थोड़ा।
अल्पीयः [स](वि०)–अल्पतम, बहुत
अल्ला(स्त्री०)–परमेश्वर, माता।
अव्(१ प०)–रक्षा करना, सन्तुष्ट करना, इच्छा करना।
अव(अ०)–निश्चय, अनादर, आलंबन, शुद्धि, अल्प, परिभव, नियोग, पालन इत्यादि अर्थों में प्रयुक्त होता है।
अवकट(वि०)–विरुद्ध, मुखालिफ, नीचे की ओर का।
अवकर(पु०)–झाड़ू से उड़ती हुई धूलि आदि।
अवकर्ण्(१० प०)–सुनना।
अवकर्त्त(पु०)–कटा हुआ भाग।

अवकर्षण (न०)–बलपूर्वक खींचना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटाना। [हुआ, क्रूर।
अवकलित(वि०)–देखा हुआ, लागा
अवका(स्त्री०)–सिरवाल ।
अवकाश्(१, ४ आ०)–दिखलाई देना प्रकट होना। [अवस्थान देश।
अवकाश(पु०)–अवसर, मौका, अन्तर
अवकीर्ण(वि०)–पिसा हुआ, अवचूर्णित, मिश्रित, विक्षिप्त ।
अवकुटार(वि०)–बहुत गहरा। न०–विरूपता, विपरीतता। [हुआ।
अवकुंठित(वि०)–कटा हुआ, तंग किया
अवकृष्(१ प०)–खींचना, उखाड़ना।
अवकृष्ट(वि०)–बहिष्कृत, दूरीकृत, आकृष्ट, निकाला हुआ।
अवकॄ(६ प०)–छिड़कना, परिपूर्ण करना, फेंकना, फैलाना।
अवकेश(वि०)–जिसके बाल नीचे को लटक रहे हों।
अवकेशी(वि०)–बन्ध्य, अफल। पु०–फलहीन वृक्ष।
अवक्तव्य(वि०)–न कहने योग्य, अनुचित, झूठा, अवर्णनीय।
अवक्र(वि०)–अकुटिल, सीधा, ईमानदार। [करना।
अवक्रन्द्(१ उ०)–चिल्लाना, गर्जन
अवक्रन्द(वि०)–चिल्लाने वाला, गर्जने वाला। पु०–चिल्लाहट।
अवक्रन्दन(न०)–ज़ोर २ से रोना।
अवक्रम्(१ उ०, ४प०)–भागजाना, बच भागना, कुचलना, गालिब आना।
अवक्रय(पु०)–क्रयसाधन द्रव्य, मूल्य, भाड़ा, बदला। [झुकाव।
अवक्रान्ति(स्त्री०)–उतार, अधोगमन,
अवक्रिया(स्त्री०)–भूल, कर्तव्य का असम्पादन।
अवक्री(९ उ०)–खरीदना, किराया करना, रिश्वत देना।
अवक्रोश(पु०)–शाप, गाली गलौच, निन्दा, असह्य बोली।
अवक्लिन्न(वि०)–तर, बिलकुल भीगा हुआ।
अवक्षय(पु०)–नाश, सड़ना, हानि।
अवक्षि(१,५,९ प०)–हटाना, लेजाना, नष्ट करना। [देना, देना।
अवक्षिप्(६ उ०)–दूर फेंकना, गाली
अवक्षिप्त(वि०)–फेंका हुआ, अपमानित
अवक्षेप(पु०)–ऐतराज़, ऐबजोई।
अवखण्ड्(१० प०)–काटना, टुकड़े २ करना, बरबाद करना। [करना।
अवखण्डन(न०)–विभागकरना, नाश
अवखात(न०)–गहरी खाई।
अवगण् (१० प०)–अपमान करना, अवहेलना करना।
अवगणन(न०)–नाफरमाँबरदारी, बेइज्जती, दोषारोपण, पराजय।
अवगणित(वि०)–अपमानित, तिरस्कृत।
अवगण्ड(पु०)–कपोल पर का फोड़ा।
अवगत(वि०)–ज्ञात, जाना हुआ, विदित, प्रतिपन्न। [मात्र।
अवगति(स्त्री०)–सामान्य ज्ञान, बोध-

अवगम्(१ प०)–नीचे जाना, उतरना, पहुंचना, प्राप्त करना, जानना।
अवगम(पु०)–समीपगमन, उतार, समझौता, ज्ञान।
अवगमन(न०)–पूर्ववत।
अवगाढ(वि०)–प्रविष्ट, डूबा हुआ, गहरा, पतित, गर्जित।
अवगाध(पु०)–नाव में से जल निकालने का पात्र विशेष।
अवगाह्(१ आ०)–स्नान करना, डुबकी लगाना, गोता मारना, प्रवेश करना।
अवगाह(पु०)–स्नान करना, मज्जन, प्रवेश, अध्ययन, नहाने का स्थान, होल।
अवगाहन(न०)–पूर्ववत।
अवगीत(वि०)–निन्दित। न०–लोकापवाद, असाधुगीत।
अवगुण(पु०)–दोष, ऐब।
अवगुट्(१० प०)–ढकना, छिपाना।
अवगुण्ठित(वि०)–ढका हुआ, घिसा हुआ।
अवगुण्ठत(वि०)–घिसा हुआ।
अवगुम्फित(वि०)–गूंथा हुआ, गुदा हुआ। [फौली करना।
अवगुह्(१ उ०)–ढकना, छिपाना,
अवगूहन(न०)–छिपावट, आलिङ्गन
अवग्रह्(९ उ०)–ढीला छोड़ना, विभाग करना, रोकना, सज़ा देना, पकड़ना, काबू में करना, रोकना।
अवग्रह(पु०)–समास विच्छेद करना, सन्धि का अभाव, वृष्टिरोध, अनावृष्टि, गजयूथ, हस्तिललाट, स्वभाव, प्रकृति, शाप, कोसना रुकावट। [ज्ञान, ध्यान।
अवग्रहण(न०)–रोक, रुकावट, अपअवग्राह(पु०)–शाप, रोक अलहदगी, कोसना। [आन्दोलित करना।
अवघट्(१ आ०)–ढकेलना, तोड़ना,
अवघट(पु०)–ज़मीन का सूराख़,गुफ़ा, चक्की, गर्त। [करना।
अवघर्षण(न०)–पीसना, रगड़ना, साफ
अवघात(पु०)–आघात विशेष,चोट।
अवघ्रा(१ प०)–मुहँ से छूना, सूंघना।
अवघुष्(१ प०)–ढोरसे ज़ाहिर करना, पुकारना, मिलाना, ध्वनि से भरपूर करना।
अवघूर्ण(पु०)–भवर, आवर्त्त।
अवघोष(पु०)–प्रकटीकरण, विज्ञप्ति।
अवघोषणा(स्त्री०)–विज्ञप्ति, डौंडी पिटवा कर ज्ञात कराना।
अवचन(वि०)–मौन,चुप,वाणीरहित। न०–कुशब्द, गाली, मौनसाधन।
अवचनीय(वि०)–न कहने योग्य, दोष रहित।
अवचय-चाय(पु०)–इकट्ठा करना,फूल फलादि तोड़ कर एकत्र करना।
अवचर्(१ प०)–नीचे उतरना।
अवचस्कर(वि०)–चुप, मौनवृत्ति।
अवचार(पु०)–उतराव की जगह, सड़क, कार्यक्षेत्र।
अवचि(३ प०)–पूजा करना, अर्चना करना। ५ उ०–इकट्ठा करना, चुनना।

अवचूड-चूल(पु०)–झण्डे के नीचे बंधा हुआ कपड़ा।

अवचूलक(अस्त्री०)–मोर के पंख या गाय की पूंछ के बालों की बनी हुई सफ़ेद उड़ाने की चँवरी।

अवच्छद्(१० प०)–फैलाना, ऊपर से ढकना, छिपाना।

अवच्छ[च्छा] द (पु०)–ढक्कन।

अवच्छिद्(७ उ०)–काट कर अलग करना, टुकड़े २ करना, बीच में से तोड़ना, पहिचानना, सीमा-बद्ध करना, रोकना।

अवच्छिन्न(वि०)–कटा हुआ, अलग किया हुआ, विभक्त, किसी वस्तु में उसके विशेष गुणों के कारण दूसरी सम्पूर्ण वस्तुओं से भेद को प्रकाश करने वाला।

अवच्छुरित(वि०)–मिश्रित। न०–महाहास्य।

अवच्छेद(पु०)परिच्छेद, एक देश, भाग, टुकड़ा, अवयव, सीमा, तसफ़िया, व्याप्ति।

अवच्छेदक(वि०)–जुदा करने वाला, निश्चय करने वाला, व्यापक। पु०–सीमा, परिमापक वा लक्षण बताने वाला।

अवच्छेदन(न०)–काटना, जुदा करना, निश्चय करना।

अवजय(पु०)–पराजय, जीत।

अवजि(१प०)–लूटना, जीतना, रोकना।

अवजित(वि०)–पराजित, अपमानित।

अवजिति(स्त्री०)–पराजय, जीत।

अवज्ञा(९ प०)–अपमान करना, निरादर का बर्त्ताव करना, अवहेलना करना।

अवज्ञा(स्त्री०)–अपमानता, अवहेलना

अवज्ञात(वि०)–अपमानित, पराभूत।

अवज्ञान(न०)–बेइज्ज़ती, अवहेलना, तिरस्कार।

अवट(पु०)–सूराख, गर्त, गढ़ा, कूप।

अवटि(पु०)–सूराख, कुआं, गर्त।

अवटी(स्त्री०)–पूर्ववत्।

अवटु(पु०)–गर्त, कूप, गर्दन के पीछे का भाग, एक प्रकार का वृक्ष। स्त्री०–गर्दन के पीछे का भाग।

अवड्क-ड्ग(पु०)–बाज़ार, मार्किट, हट्ट।

[अधोगति।

अवडीन(न०)–पक्षियों का उड़ान वा

अवत(पु०)–कुआ, हौज़।

अवतंस(अस्त्री०)–कान का एक भूषण, माला। [नीचे गिराना।

अवतड्(१० प०)–कुचलना, मार कर

अवतन्(८ उ०)–फैलाना, तानना, ढकना।

अवतत(वि०)–फैला हुआ, ढका हुआ।

अवतति(स्त्री०)–फैलाव, प्रसारण।

अवतप्त(वि०)–तपा हुआ।

अवतमस(न०)–थोड़ा अन्धकार।

अवतस् [:] (अ०)–नीचे, पाताल लोक में।

अवतर्पण(न०)–सुखदायक इलाज।

अवतर(पु०)–अधोगति, उतार।

अवतरण(न०)–पानी में नहाने के लिये उतरना, अवतार ग्रहण

करना, पार करना, तीर्थ भाषानुवाद, भूमिका, चट्टू, तमाग, सीढ़ी की पैड़ी।

अवतरणिका(स्त्री०)-किसी पुस्तक के आरम्भ में लिखी हुई प्रार्थना, भूमिका, दिबाचा। [क्रम।

अवतरणी(स्त्री०)-भूमिका, क़ायदा,

अवताडन(न०)-कुचलना, मारना।

अवतान(पु०)-फैलाव, ढक्कन, सायबान।

अवतार(पु०)-उतार, प्रादुर्भाव, ईश्वर या किसी देवता का पृथ्वी पर जन्म ग्रहण करना, पड़ाव डालने का स्थान, तीर्थ, तलैया, तालाब, भूमिका, पार करना।

अवतारकथा(स्त्री०)-शङ्करविजय के एक अध्याय का नाम, किसी अवतार का वर्णन।

अवतारण(न०)-उतरवाना, अनुवाद, भूत प्रेत का चढ़ना, पूजा, भूमिका, कपड़े का दामन।

अवतारी(वि०)-अवतार लेने वाला, उतरने वाला।

अवतीर्ण(वि०)-उतरा हुआ, नीचे आया हुआ, स्नात। जिस ने अवतार ग्रहण किया हो, पार किया हुआ, अनुवादित।

अवतीर्णसत्त्व(वि०)-त्राण से मुक्त।

अवतॄ(१ प०)-उतरना, नीचे आना, अवतार ग्रहण करना, प्रवेश करना, आरम्भ करना, ग़ालिब आना।

अवतोका(स्त्री०)-ऐसी स्त्री या गाय जिस का अकस्मात् गर्भपात हो गया हो।

अवत्रस्त(वि०)-डरा हुआ, भयभीत।

अवदंश(पु०)-मद्यपान के समय जो कबाब व बड़े आदि खाये जाते हैं, चाट। [समाप्त।

अवदत्त(वि०)-दिया हुआ, स्वदत्त,

अवदह(१ प०)-जला कर ख़ाक करना, नष्ट करना।

अवदाघ(पु०)-गर्मी, जलन, ग्रीष्मऋतु।

अवदात(वि०)-सुन्दर, स्वच्छ, बेदाग़, गुणवान्, पीला। [कीर्तिकर काम।

अवदान(न०)-पूरा किया हुआ काम

अवदान्य(वि०)-कंजूस।

अवदारण(न०)-फाड़ना, टुकड़े २ करना। [जलन, गर्मी।

अवदाह(अस्त्री०)-बीरण की जड़,

अवदीर्ण(वि०)-फटा हुआ, विभक्त, दो भागों में बटा हुआ, घबराया हुआ। [करना।

अवदो (४ प०)-काटना, तक़सीम

अवदोह(पु०)-दूध, दुहने का कार्य।

अवद्य(वि०)-अधम, नीच, पापी, गर्हित, निकृष्ट। न०-पाप, अनिष्ट, निन्दा।

अवद्रंग(पु०)-बाज़ार, हट्ट।

अवध(पु०)-वध से छुटकारा।

अवधा(३ आ०)-नीचे रखना, लगाना, ध्यान देना, बन्द करना।

अवधान(न०)-मनोयोग, समाधान, प्रणिधान, श्रद्धा।

अवधानी(वि०)-श्रद्धावान्, जिस ने ध्यान लगाया हुआ हो।
अवधानीय(वि०)-अवधातव्य, ध्यान देने योग्य।
अवधार(पु०)-ठीक २ इरादा।
अवधारण(न०)-निश्चय, अवधार, इरादा।
अवधारित(वि०)-कृतावधारण।
अवधार्य(वि०)-अवधारणीय निर्णेय
अवधाव्(१ उ०)-पीछे दौड़ना, दौड़ कर पकड़ना।
अवधावन(न०)-पीछा, पकड़, पीछे दौड़ना, धोना।
अवधावित(वि०)-पीछा किया हुआ, साफ किया हुआ।
अवधि(पु०)-सीमा, अवधान, काल, बिल, सूराख। [रत करना।
अवधीर्(१०प०)-अवज्ञा करना, हिका-
अवधीरण(न०)-अपमान पूर्वक बर्ताव
अवधीरणा(स्त्री०)-अपमान, हिकारत
अवधीरित(वि०)-अपमानित, तिरस्कृत।
अवधू(५ उ०)-हिलाना, हटाना, हरकत देना, अवज्ञा करना।
अवधूर(पु०)-भायरहित।
अवधूत(वि०)-कांपा हुआ, त्यागा हुआ, अपमानित, आक्रान्त। पु०-वर्णाश्रमधर्म को छोड़ने द्वारा सन्यासी।
अवधृ(१०उ०)-निश्चय करना, इरादा करना, सुनना, वाकिफ होना, सीमाबद्ध करना। [सुना हुआ।
अवधृत (वि०)-निश्चित, तयशुदा,
अवध्य(वि०)-न मारने योग्य।
अवध्वंस(पु०)-त्याग, धूलि, अपमान, छिड़कना। [बखेरा हुआ।
अवध्वस्त(वि०)-नष्ट, तिरस्कृत, त्यक्त-
अवन(न०)-रक्षा, तुष्टि, इच्छा, प्रसन्नता, जल्दी। [हुआ, आलिङ्ग।
अवनत(वि०)-झुका हुआ, लटका
अवनतमुख (वि०)-जिस का चेहरा नीचे को झुक रहा हो।
अवनति(स्त्री०)-झुकाई, गिरावट।
अवनद्ध(वि०)-आनद्ध, आबद्ध, आच्छादित। न०-ढोल। [होना।
अवनम्(१प०)-झुकाना, झुकना, नीचे
अवनय (पु०)-अधःपातन। नीचे गिराना।
अवनाक(वि०)-चपटी नाक का।
अवनाय(पु०)-अधोनयन, नीचे ले जाना
अवनायक(वि०)-नीचे उतारनेवाला।
अवनाह(पु०)-बाधना, पेटी लगाना।
अवनि-नी(स्त्री०)-पृथ्वी, भूमि।
अवनिज्(३ उ०)-धोना, साफ करना, मिटाना।
अवनी(१ प०)-भीतर की ओर धकेलना, उतारना, नीचे गिराना, ले जाना।
अवनीश-नाथ-पति-पाल(पु०)-पृथिवी का स्वामी, राजा, भूपति।
अवनी[नि]-ध्र(पु०)-पहाड़, पर्वत।
अवनेजन(न०)-धोना, जलसेचन।
अवन्ति(पु०)-अवन्तीदेश, नदी विशेष, उज्जैन।
अवन्तिका(स्त्री०)-उज्जयिनी नगरी।

अवन्तिपुर(न०)–पूर्ववत् ।

अवन्तिसोम(न०)–कांजिक, कांजी ।

अवन्ती(स्त्री०)–अवन्ति के समान ।

अवन्ध्य(वि०)–फलवान्, फलयुक्त ।

अवपत्(१ प०)–उतरना, कूदना, झपट कर गिरना ।

अवपतन (न०)–उतार, गिरावट ।

अवपात(पु०)–रन्ध्र, गर्त, अधःपतन ।

अवपूर्ण(वि०)–भरा हुआ, पूरित ।

अवबध्(१ प०)–बांधना, अटकाना ।

अवबाध(पु०)–चारों ओर से बन्धन, रोगविशेष । [विरोध ।

अवबाधा(स्त्री०)–दुःख, मानसिक कष्ट,

अवबुद्ध(वि०)–जाना हुआ, जानने द्वारा ।

अवबुध्(४ आ०)–जागना खबरदार होना, जानना, समझना ।

अवबोध(पु०)–ज्ञान, जागरण, स्वप्न का प्रतियोगी शब्द ।

अवभङ्ग(पु०)–पराजय, पराभूति ।

अवभञ्ज्(७ प०)–तोड़ना, तोड़ कर अलग करना ।

अवभाषण(न०)–कथन, बोलना ।

अवभास्(१ आ०)–चमकना, प्रकट होना

अवभास(पु०)–शोभा, प्रभा, ज्ञान, मिथ्या ज्ञान ।

अवभासित(वि०)–शोभित, प्रकट ।

अवभिद्(७ प०)–तोड़ कर अलग करना ।

अवभुज्(६ प०)–टेढ़ा करना, झुकाना ।

अवभुग्न(वि०)–झुका हुआ, टेढ़ा किया हुआ ।

अवभृथ (पु०)–दीक्षान्तयज्ञ, यज्ञ के अन्त में स्नान ।

अवम(वि०)–गुनहगार, अधम, निन्दित, कमीना, सब से छोटा । पु०–रक्षक न०–पाप ।

अवमत(वि०)–अवमानित, तिरस्कृत ।

अवमति(पु०)–स्वामी, ईश्वर । स्त्री०–अवमान, नफरत ।

अवमन्(४ आ०)–तिरस्कार करना, अवज्ञा करना । [करी ।

अवमन्ता [तृ] (वि०)–अवमानना-

अवमान(पु०)–अपमान, अवज्ञा ।

अवमानना(न०)–पूर्ववत् ।

अवमानी(वि०)–अवज्ञा करने वाला ।

अवमर्द(पु०)–पीड़न, व्यथा, बरबादी ।

अवमर्दन(न०)–लूटना, कुचलना ।

अवमर्श(पु०)–छूना ।

अवमर्ष(पु०)–आलोचना, विचारना ।

अवमुच्(६ प०)–ढीला करना, उतारना, खोलना । [दूर करना ।

अवमृज्(२ प०)–रगड़ कर मिटाना,

अवमृद्(९ प०)–पीसना, कुचलना ।

अवमृश्(६ प०)–छूना, सोचना, विचारना ।

अवयव(पु०)–शरीर का अंग, अंश, भाग, टुकड़ा, शरीर, साधन, उपकरण । [सम्पूर्ण वस्तु ।

अवयवी(वि०)– अंगी, अंशी । पु०-

अवया(२ प०)–अधीन होना, रुकना, जानना, रोकना ।

अवर(वि०)–चरम, कनिष्ठ, अश्रेष्ठ, नीचे का, सब से ख़राब, अन्तिम

अत्यन्त श्रेष्ठ । पु०-बीता हुआ काल । [जात ।
अवरज(पु०)-कनिष्ठभ्राता, हीनवंश-
अवरत:(अ०)-पीछे से, पीछे, नीचे, नीचे से ।
अवरति(स्त्री०)-विराम, निवृत्ति ।
अवरवर्ण(पु०)--शूद्र, चौथे वर्ण का ।
अवरव्रत(पु०)-सूर्य,वृक्षविशेष । वि०-हीनव्रत ।
अवरस्तात(अ०)-पश्चात, अवरतः ।
अवरा(स्त्री०)--दुर्गा, दिधा ।
अवरीण(वि०)-तिरस्कृत, निन्दित ।
अवरुद्ध(वि०)-रोका हुआ,बन्द किया हुआ, रक्षित, बन्दीभूत ।
अवरुध(७ उ०)--रोकना, बन्द करना, घेरना । [वृक्ष से उतारना ।
अवरुह(१ प०)--उतरना, नीचे आना,
अवरोध(पु०)-बाधा,आच्छादन,निरोध राजस्त्रीगृह, राजगृह, रक्षक ।
अवरोधक(वि०)--रोकने वाला, घेरने वाला। पु०-रक्षक । न० खेत की बाड़ ।
अवरोधन(न०)-घेरा, रोक टोक, बाधा,अन्त.पुर । [अस्त होना ।
अवरोपण(न०)--उखाड़ना,कम करना.
अवरोह(पु०)--अधोगति, वृक्ष पर चढ़ने वाली बेल, चढ़ाव, स्वर्ग ।
अवरोहण(न०) -चढ़ना, उतरना ।
अवर्ग(वि०)--कक्षारहित । पु०- स्वर्ग ।
अवर्ण(पु०)-निन्दा, परिवाद । वि०-बेरंग का, गुणरहित, अधम ।
अवर्तन(वि०)--जीविकारहित । न०-जीविका का अभाव ।
अवर्ष(पु०)-वर्षा का अभाव, सूखा ।
अवर्षण(न०)-:पूर्ववत् ।
अवलक्ष(वि०)-सफ़ेद ।
अवलग्न(वि०)--संलग्न, संयुक्त । पु०-कटि, कमर ।
अवलम्ब्(१ आ०)-लटकना, पकड़ना, सहारे से लटकना ।
अवलम्बः-लम्बनम्--आश्रय, सहारा, टेक, सहायता, मदद ।
अवलम्बित(वि०)--आश्रित, शीघ्र, बिना विलम्ब के । [वित्त ।
अवलिप्त(वि०)-धन से गर्वित,अभि-
अवलिह्(२ उ०)--चाटना ।
अवलीढ(वि०)-चबाया हुआ, भक्षित चाटा हुआ ।
अवलीढा(स्त्री०)--अपमान,अनादर।
अवलीला(स्त्री०) हेला, क्रीड़ा, अपमान । [सुधा, मग ।
अवलेप(पु०)-गर्व,आक्रमण, अभिषेक,
अवलेपन(न०)--तैल, गर्व,संग,चन्दन।
अवलेह(पु०)--चटनी, माजून, औषध जो चाटी जाय, लेही ।
अवलेहन(न०)--जीभ से चाटना ।
अवलेह्य(वि०)--चाटने योग्य ।
अवलोक्(१ आ० वा१० प०)-देखना, गौर करना । [जाँच,पड़ताल ।
अवलोकन(न०)-देखना, देखभाल,
अवलोकनीय(वि०)-देखने योग्य ।
अवलोकित(वि०)-देखा हुआ,दर्शित ।

अववदः--वदन--अपवाद ।

अववाद(पु०)--अपवाद, अपमान, सहारा, सूचना । [सूराख ।

अववारक(पु०)--खिड़की, हवा के लिये

अवश(वि०)--विवश, परवश, लाचार ।

अवशस्(स्त्री०)--अनुचित इच्छा ।

अवशिष्ट(वि०)--बचा हुआ, शेष ।

अवशीभूत(वि०)--स्वतन्त्र, बेबस ।

अवशीन(पुं०)--बिच्छू ।

अवशेष(पु०)--बाक़ी, बचा हुआ, समाप्त

अवशेषित(वि०)--बचा हुआ, अवशिष्ट

अवश्य(वि०)--ज़रूरी, जो वश में न हो ।

अवश्यं(अ०)--ज़रूर, यक़ीनन, निश्चय करके । [अटल, निश्चित ।

अवश्यंभावी(वि०)--जो टले नहीं,

अवश्यमेव(वि०)--ज़रूर ही, निश्चय करके ।

अवश्या(स्त्री०)--स्वतन्त्र स्त्री, कोहरा

अवश्याय(पु०)--हिम, तुषार, पाला, अभिमान । [उतारना ।

अवश्रयण(न०)--चूल्हे पर से पक्वान्न

अवष्टभ्(प. ९.प०)--सहारे के लिये, झुकना, टकना, सहारा देना, रोकना । [आसरा ।

अवष्टंभ(पु०)--सहारा, खम्भा, सोना,

अवष्टब्ध(वि०)--आश्रित, जिसे सहारा मिला हो । ध्वनि ।

अवष्ठ्यान(पु०)--खाते समय होंठों की

अवस(पु०)--राजा, सूर्य, अर्क, वृक्ष । न०--भोजन, नाश्ता, रक्षा ।

अवसक्(१ प०)--इधर उधर करना, रखना, लगाना ।

अवसंजन(न०)--फाँसी करना, चिपटना ।

अवसडीन(न०)--पक्षियों की नीचे की ओर गति ।

अवसथ(पु०)--निवासस्थान, ग्राम, छात्रालय, मठ ।

अवसद्(१ प०)--मुरझाना, मूर्छित होना, बेदिल होना, नष्ट होना ।

अवसाद(पु०)--विषाद, नाश, क्षमता का अभाव, अन्त ।

अवसन्न(वि०)--विषादप्राप्त, नाश होने वाला, सुस्त, आलसी ।

अवसर(पु०)--अवकाश, मौक़ा, समय ।

अवसर्ग(पु०)--मोचन, स्वतन्त्रता, मुक्ति ।

अवसर्प(पु०)--जासूस, गुप्तचर ।

अवसव्य(वि०)--अव्यक्त, अपसव्य ।

अवसान(न०)--समाप्ति, अन्त, सीमा, सायंकाल, मरना, ठहराव ।

अवसाय(पु०)--अन्त, नाश, अवशेष, समाप्ति, निश्चय ।

अवसायी[न्](वि०)--रहने वाला ।

अवसित(वि०)--बढ़ा हुआ, परिपक्व, निश्चित, समाप्त, सम्बद्ध ।

अवसृ(१ प०)--फैलाना, व्याप्त होना ।

अवसृज्(६ प०)--गिराना, फेंकना, मुक्त करना, सृजन करना ।

अवसृष्ट(वि०)--त्यागा हुआ, दिया हुआ, निकाला हुआ, त्यक्त ।

अवसेक(पु०)--चक्षुरोग, छिड़काव ।

अवसेचन(न०)--सींचना, एक क्रिया जिस के द्वारा शरीर से पसीना

निकाला जाय जैसे स्टीमबाथ। फस्द लगाना। [झपटना।
अवस्कन्द(१ प०)-आक्रमण करना,
अवस्कन्द(पु०)-शिविर, सेना का निवासस्थान, आक्रमण।
अवस्कन्दन(न०)-पूर्ववत्।
अवस्कर(पु०)-मलमूत्र,गुह्यदेश,कूड़ा।
अवस्करमन्दिर(न०)-जाय जरूर, पाखाना, मलमूत्र का स्थान।
अवस्तु(वि०)-शून्य, तुच्छ, हीन।
अवस्त्र(वि०)-वस्त्रहीन।
अवस्था(१ आ०)-रहना ठहरना, जीवन धारण करना, उतरना।
अवस्था(स्त्री०)-दशा, काल, नम्र, स्थिति, शब्द।
अवस्थान(न०)-निवासस्थान, वास, स्थिति, सत्ता।
अवस्थान्तर(न०)-बदली हुई दशा।
अवस्थापन (न०)-स्थापन करना, निदिग्ध,अवस्थित। वि०-ठहरा हुआ, विद्यमान, उपस्थित।
अवस्थिति(स्त्री०)-स्थिति, निवास, विद्यमानता।
अवस्फोट(पु०)-ज़ाहिर होना।
अवस्यन्दन(न०)-चूना,टपकना।
अवह(वि०)-न लेजाने वाला।पु०-ईथर नामक वायु।
अवहति(स्त्री०)-छड़ना, कूटना।
अवहन्(२ प०)-मारना, नष्ट करना छड़ना। [उड़ाना।
अवहस्(१ प०)-मज़ाक करना, हँसी
अवहस्त(पु०)-कर का पृष्ठभाग, हथेली के पीछे का भाग।
अवहार(पु०)-जलहस्ती, घूंस, चोर।
अवहारक(पु०)-पूर्ववत्।
अवहास(पु०)-मज़ाक, हंसी ठट्ठा।
अवहित्था(स्त्री०)-आकारगुप्ति, मनोविकार को छिपाना।
अवहीन(वि०)--त्यक्त, त्यागा हुआ।
अवहृ(१ प०)-लेजाना,-अलग रखना।
अवहेलः-ला-अपमान, तिरस्कार।
अवहेलनम्-ला-पूर्ववत्।
अवहेलित(वि०)-अनादृत, तिरस्कृत।
अवह्वर(वि०) टेढ़ा। पु० टेढ़ा मार्ग।
अवाकर(पु०)-हकमाल।
अवाक्[च्](वि०)-चुप, मौन, चकित।
अवाक्पुष्पी(स्त्री)-सौंफ सोया।
अवाङ्मुख-नीचे को मुख किये हुए।
अवाच्छ्रुति(वि०)-बहिरा, गूंगा।
अवाची(स्त्री०)-दक्षिण दिशा।
अवाचीन(वि०)-अधोमुख, मुख लट-काये हुए।
अवाच्य(वि०)-न कहने योग्य।
अवात(वि०)-वायुशून्य, जहां वायु न पहुंचे, निर्वात।
अवादी(वि०)-विवाद न करने वाला, शान्तिप्रिय।
अवान्(२प०)-अन्दर को श्वास लेना।
अवान(पु०)-श्वास। वि०-सूखा हुआ।
अवान्तर(वि०)-मध्यवर्ती, बीचका। न०-बीच, मध्य।
अवान्तरदिशा(स्त्री०)-बीचकी दिशा जैसे- आग्नेय, वायव्य।

अवाप्(धु०)–प्राप्त करना, पहुंचना, बरदाश्त करना।
अवाप्त(वि०)–पाया हुआ, उपलब्ध।
अवाप्ति(स्त्री०)–प्राप्ति, उपलब्धि।
अवाप्य (वि०)–प्राप्तियोग्य, बिना कटा हुआ।
अवाम(वि०)-सीधा, अशुभ, अविरोधी
अवाय(पु०)–अङ्ग। [किनारा।
अवार(अस्त्री०)–नदी के समीप का
अवारण (वि०)–अनिवार्य, बेरोक, निश्चित। [जा सके।
अवारणीय(वि०)–जो दूर न किया
अवारपार (पु०)–समुद्र।
अवारिका(स्त्री०)–धनियां।
अवावट(पु०)–दूसरे सवर्ण पति से उत्पन्न पुत्र।
अवावन्(पु०)–चोर, चुराने वाला।
अवासस्(वि०)–वस्त्रहीन, नंगा।
अवास्तव(वि०)–जो असली न हो, अप्रमाण।
अवि(पु०)–सूर्य, आक, भेड़, बकरा, पर्वत, वायु, समूह।
अविक(पु०)–मेष। न०-हीरा।
अविकट(वि०)–जो विकट न हो। पु०-मेषदल।
अविकल(वि०)–जो विकल न हो, ज्यों का त्यों, पूर्ण, शान्त।
अविकल्प(वि०)–निश्चित, असंदिग्ध।
अविकल्पं(न०)–निस्सन्देह।
अविकार(वि०)–विकाररहित।
अविक्रम(वि०)–शक्तिरहित। पु०-डरपोक।
अविक्रान्त(वि०)–शक्तिरहित, कमज़ोर, अतुलनीय।
अविकृत (वि०)–विकाररहित, न बिगड़ा हुआ।
अविकृति(स्त्री०)–विकार का अभाव।
अविक्रम(पु०)पराक्रमहीनता,तरोताज़गी
अविक्षत(वि०)–अक्षत, पूर्ण, समूचा।
अविक्षिप्त(वि०)–न फेंका हुआ, ध्यान देने वाला, जो उन्मत्त न हो।
अविगत(वि०)–न गया हुआ,वर्तमान,
अविग्रह(वि०)–अविज्ञात, निराकार, जो स्पष्टरूप से ज्ञात न हो। पु०–नित्य समास।
अविघात(वि०)–अक्षत, अरुद्ध।
अविघ्न (वि०)–बेरोक. विघ्नरहित।
अविचल(वि०)–अचल,स्थिर, अटल।
अविचार(वि०)–विचाररहित। पु०-विचारका अभाव,अज्ञान,अन्याय
अविचारणीय(वि०)--प्रस्तुत विषय से भिन्न।
अविचारित(वि०)-बिना विचारा हुआ
अविच्छिन्न(वि०)--अटूट, लगातार।
अविच्छेद(वि०)–पूर्ववत्। पु०-सम्पूर्णता, लगाव।
अविज्ञ(वि०)--मूर्ख, अशिक्षित,भद्दा।
अविज्ञता(स्त्री०)–अज्ञानता, मूर्खता।
अविज्ञात (वि०)–अज्ञात, सन्दिग्ध, अस्पष्ट।
अविज्ञेय(वि०)–जो जाना न जा सके। पु०–परमात्मा।
अवितथ(वि०)–विरुद्ध, उल्टा।
अवितथ(वि०)–सत्य,जो झूठा न हो।

अविनद्भाषण(न०)—अण्डबण्ड बकना।
अविनर्कित(वि०)—निस्सन्देह, तर्कना रहित।
अवित्त(वि०)—धनहीन, अविख्यात।
अवित्यज(अस्त्री०)—पारा, पारद।
अविद्(वि०)—अनजान, मूर्ख।
अविदग्ध(वि०)-न जला हुआ, न पका हुआ, मूर्ख।
अविदित(वि०)--अज्ञात, जो विदित न हो, अप्रकट, अप्रसिद्ध। [स्त्री।
अविदुषी(स्त्री०)--मूर्खा स्त्री, बे पढ़ी
अविदूर(वि०)--जो दूर न हो, नज़दीक।
अविदूरेण-दूरतः(अ०)--नज़दीक से।
अविद्धकर्णी(स्त्री०)--पाठा नामक बेल।
अविद्य(वि०)--विद्यारहित, मूर्ख, नष्ट, नेस्तनाबूद।
अविद्यमान(वि०)--जो विद्यमान वा उपस्थित न हो, अनुपस्थित।
अविद्या(स्त्री०)--विरुद्ध ज्ञान, मिथ्या ज्ञान, मोह। [मोहयुक्त।
अविद्यामय(वि०)--विरुद्ध ज्ञानयुक्त,
अविद्वत्ता(स्त्री०)--मूर्खता, अज्ञानता।
अविद्वान्(वि०)--जो विद्वान् न हो, मूर्ख, बे पढ़ा। [अनुराग, प्रेम।
अविद्वेष(पु०)—विद्वेष का अभाव,
अविधवा(वि०)—जो विधवा [राँड] न हो, सौभाग्यवती।
अविधान(न०)—विधान का अभाव। वि०-विधि के विरुद्ध, उलटा।
अविधि(वि०)--विधि के विरुद्ध, क़ायदे के खिलाफ़, बेक़ायदे। पु०-विधि का अभाव।
अविनय(पु०)-विनय का अभाव, उद्दण्डता।
अविनश्वर(वि०)--नित्य, चिरस्थायी, जो नष्ट न हो।
अविनाभाव(पु०)--सम्बन्ध, व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध।
अविनाशी [न्] (वि०)—नष्ट न होने वाला, नित्य, अक्षय।
अविनिगम(पु०)-न्यायविरुद्ध नतीजा।
अविनीत(वि०)—जो विनीत न हो, उद्धत, दुष्ट। [चारिणी स्त्री।
अविनीता(स्त्री०)—असती वा दुरा-
अविन्ध्य(पु०)--रावण के एक मन्त्री का नाम।
अविपक्व(वि०)-कच्चा, न पका हुआ।
अविपद्(स्त्री०)--विपत्ति का अभाव।
अविपन्न (वि०) स्वस्थ, नीरोग।
अविपर्यय(पु०)--विपर्यय वा विकार का अभाव।
अविबुध(वि०)—अज्ञानी, मूर्ख, बुद्धि-शून्य। पु०--असुर, दैत्य।
अविभक्त(वि०)—न बटा हुआ, जुड़ा हुआ, सम्पूर्ण। [हुआ।
अविभाग(वि०)-अविभक्त, न बटा
अविभाज्य(वि०)—न बटने योग्य।
अविमुक्त(वि०)—न छुटा हुआ, छुटा हुआ। न०-बनारस।
अविमृश्य(वि०)—असन्दिग्ध, निश्चित।
अवियुक्त(वि०)—अविभक्त, जुड़ा हुआ।
अवियोग(वि०)—वियोगशून्य। पु०--संयोग, वियोग का अभाव।
अविरत(वि०)—विरामशून्य, निरन्तर।

अविरति(स्त्री०)-निवृत्ति का अभाव, लीनता, विषयासक्ति। [मिला।
अविरल(वि०)-मिला हुआ, अव्यय-
अविराम(वि०)-अविश्रान्त, निरन्तर, लगातार। [अनुकूल।
अविरुद्ध(वि०)-जो विरुद्ध न हो,
अविरेचन(न०)-कब्ज़ करने वाली औषध। [अभाव, मेल।
अविरोध(पु०)-साधर्म्य, विरोध का
अविरोधी(वि०)-जो विरोध करने वाला न हो, मित्र।
अविलक्ष्य(वि०)-उद्देश्यहीन।
अविलम्ब(वि०)-शीघ्र, तीव्र, जल्दी, होने वाला। पु०-तेज़ी, शीघ्रता।
अविलम्बित(वि०)-शीघ्र, तेज़ी से किया हुआ।
अविला(स्त्री०)--भेड़। [ग्रहावान्।
अविलास (वि०)--विलासरहित,
अविवाद (वि०)--विवादरहित, निर्विवाद। [कुंवारा।
अविवाहित(वि०)--बिना ब्याहा,
अविविक्त(वि०)-तलाश न किया हुआ, घबराया हुआ, खिलत मिलत।
अविवेक(वि०)-विवेकशून्य, विचारहीन। पु०-अज्ञान, विवेक का अभाव, अन्याय। [का न होना
अविवेकता(स्त्री०)-अज्ञानता, विवेक
अविवेकी(वि०)-अज्ञानी, विवेकहीन मूढ़।
अविशङ्क(वि०)--निर्भय, भयरहित।
अविशंका(स्त्री०)-भय का अभाव, भरोसा, सन्देहहीनता।
अविशंकित(वि०) सन्देहरहित, निर्भय
अविशङ्केन(अ०)-निस्सन्देह, बिलाशक
अविशुद्ध(वि०)-अपवित्र, मलीन, अशुद्ध
अविशुद्धि(स्त्री०)-अपवित्रता।
अविशेष (वि०)-विशेषतारहित, समान। [लगातार।
अविश्रान्त(वि०)-न थका हुआ, अक्षत,
अविश्वस्त(वि०)-सन्दिग्ध, शकास्पद
अविश्वसनीय(वि०)-विश्वास न करने योग्य।
अविश्वास(वि०)-जिस में विश्वास न किया जासके। पु०-सन्देह, शक।
अविश्वासी (वि०)-विश्वास न करने वाला, सन्देही।
अविष(वि०)-विषरहित। पु०-समुद्र, राजा, आकाश।
अविषय(वि०)-अदृश्य, अगोचर, अप्र-तिपाद्य। पु०-अभाव।
अविषा(स्त्री०)-निर्विषातृण, जदुवार
अविषी(स्त्री०)-नदी, पृथ्वी, स्वर्ग।
अविष्या(स्त्री०)-गमन की इच्छा।
अविष्(न०)-रक्षा, गमन। पु०-प्रभा-रक।
अविस्तर(वि)-विस्ताररहित।
अविस्तार(पु०)-विस्तार का अभाव
अविस्तीर्ण (वि०)-छोटा, विस्तार रहित।
अविस्तृत(वि०)-सङ्कीर्ण, छोटा।
अविस्पष्ट (वि०)-जो साफ़ न हो, सन्दिग्ध।
अवी(स्त्री०)--रजस्वला स्त्री।
अवीचि(वि०)-तरंगरहित।

अवीज-जता(वि०)--बीजरहित,नपुंसक, कारणहीन। पु०-रोक,इन्द्रियदमन

अवीजा(स्त्री०)--किशमिश, अंगूर की बेल।

अवीत(न०) -अनुमानभेद।

अवीर(वि०)--डरपोक, सन्तानरहित, निराश्रय, जनरहित।

अवीरा(स्त्री०) ऐसी स्त्री जिस का पति हो न पुत्र।

अवृत्ति(स्त्री०)-जीविका का अभाव, स्थिति का न होना, आश्रयरहित

अवृद्धिक(वि०)--बिना वृद्धि, ब्याज का रुपया, मूलधन, असल।

अवेक्षण(न०) -देखना, घूरना, रक्षण, निरीक्षण।

अवेक्षणीय(वि०)--देखने योग्य।

अवेक्षा(स्त्री०)-देखना, ध्यान, चिन्ता, साहिदा।

अवेक्षी(वि०)-देखने वाला।

अवेदि(स्त्री०) -ज्ञान का अभाव।

अवेद्य(वि०)--अज्ञेय, गुप्त। पु० -बछड़ा।

अवेद्या(स्त्री०)-अविवाहिता, जिसका विवाह न हो ऐसी स्त्री।

अवेल(वि०)-असीम, अनवसर। पु०-ज्ञान का छिपाना।

अवेला(स्त्री०)-कुसमय, चर्वित पान।

अवैद(वि०)-क्रमरहित, बेकायदे, शास्त्र के प्रतिकूल।

अवोद (वि०)--तर,गीला। पु०--जल-सेचन, नम करना।

अवोष (वि०)--उष्ण भोजन।

अव्यक्त(वि०) -अस्पष्ट,अदृश्य, अनुत्पन्न, अज्ञात। पु०-विष्णु, शिव, कामदेव, प्रकृति, मूर्ख। न०-ब्रह्म, सुषुप्त्यवस्था, आत्मा, प्रकृति।

अव्यक्तक्रिया(स्त्री०)- बीजगणित की एक क्रिया।

अव्यक्तपद(वि०)-अस्पष्ट,अर्थहीन।

अव्यक्तमूलप्रभव(पु०)-संसार, जगत्।

अव्यक्तराग(पु०)--उषाकाल की लाली, वि०-हलका लाल।

अव्यक्तलिङ्ग(वि०) ऐसा रोग जिसके लक्षण न पहिचाने जा सकें। पु०-संन्यासी।

अव्यग्र (वि०)-शान्त, स्थिर।

अव्यङ्ग(वि०)-सम्पूर्ण, जिसका कोई अङ्ग विच्छेद न हुआ हो।

अव्यथ(वि०)-व्यथारहित, दुःख न देने वाला। पु०-सर्प।

अव्यथा(स्त्री०)-हरीतकी, सोंठ।

अव्यथिष्ठ(पु०)-सूर्य, समुद्र।

अव्यथिष्ठी(स्त्री०) रात्रि,मध्यरात्रि।

अव्यध(वि०)-न छिदा हुआ।

अव्यपेक्षा(स्त्री०)-लापरवाही।

अव्यभिचार(पु०)-अपार्थक्य, मेल, नित्यता, स्थिरता।

अव्यभिचारी[न्](वि०)-जो किसी भी प्रतिकूल कारण से न हटाया जा सके, न रुकने वाला, न्यायमत में शुद्ध हेतु।

अव्यय(वि०)-जो विकार को प्राप्त न हो, सदा एकसा रहने वाला, नित्य, आद्यन्तरहित, विकार-

शून्य। पु०-विष्णु, शिव। न०-परब्रह्म, व्याकरण में वह शब्द जिस के रूप में कभी विकार नहीं होता।

अव्ययीभाव(पु०) व्याकरण में एक प्रसिद्ध समास, जैसे-'उपकुम्भम्' यहां अनव्यय भी कुम्भादि पद अव्यय बन गया है। अपरिवर्त्तनीय अवस्था। [सार्थक।

अव्यर्थ(वि०)-जो व्यर्थ न हो, सफल,

अव्यलीक(वि०)-जो झूठा न हो,सच्चा

अव्यवधान(वि०)-समीप, नजदीक। न० निकटता,रुकावट का न होना

अव्यवसायी(वि०) उद्यमहीन,आलसी

अव्यवस्थ(वि०)-बेकायदे, अमर्याद, अस्थिर।

अव्यवस्था(स्त्री०)-नियम का अभाव, गड़बड़, मर्यादा का न होना, अस्थिरता।

अव्यवस्थित(वि०)-चञ्चल,अव्यवस्थ।

अव्यवहार्य(वि०)-जो काम में न लाया जा सके, पतित, जातिच्युत।

अव्यसन(वि०)--व्यसनरहित,शुद्धाचारी

अव्यस्त(वि०)-शान्त, सादा।

अव्याकृत(वि०) अप्रकट, जो विकार को प्राप्त न हो। [अस्पष्ट।

अव्याघात(वि०)-व्याघातरहित,

अव्याघात(वि०) व्याघातशून्य, बेरोक, अटूट।

अव्याज(वि०)-कपटरहित।

अव्यापन्न(वि०)-जो मरा न हो, जीवित।

अव्यापार(वि०) व्यापारशून्य। पु०-उद्यम का अभाव।

अव्यापी(वि०)-जो व्यापक न हो, जो सब जगह न पाया जावे।

अव्याविनी(स्त्री०)-पूर्वबस।

अव्याप्ति(स्त्री०)-व्याप्ति का अभाव।

अव्यायाम(पु०)-व्यायाम का अभाव

अव्याहत(वि०)-अप्रतिरुद्ध, बेरोक।

अव्युत्पन्न(वि०)-नावाकिफ, मूर्ख।

अव्रण(वि०)-अक्षत, तन्दुरुस्त। न०-नेत्र का रोगविशेष।

अव्रत(वि०) व्रतरहित, नियमशून्य।

अश्(१,५ आ०) व्याप्त होना, प्रवेश करना, पहुंचना, प्राप्त करना।

अशकुन(न०)-बुरा शकुन बुरा लक्षण।

अशक्त(वि०)-असमर्थ, कमजोर।

अशक्ति(स्त्री०)-निर्बलता, कमजोरी।

अशक्य(वि०)-असाध्य,न होने योग्य।

अशङ्क-कित(वि०)-निडर, निर्भय, रक्षित, अशत्रु। वि०-शत्रुरहित। पु०-चन्द्रमा।

अशन(न०) व्याप्ति, भोजन।

अशना या(स्त्री०)-भोजन, खाने की इच्छा।

अशनि(अक्ली०)-इन्द्र का वज्र, बिजली।

अशनीय(वि०)-खाने योग्य।

अशरण(वि०)-अनाथ, निराश्रय, बेरोजगार।

अशरीर(वि०)-शरीररहित। पु०-ब्रह्म, कामदेव। [ब्रह्म, देवता।

अशरीरी(वि०)-अपार्थिव, स्वर्गीय,

अशर्म(वि०)-दुःखी, क्लेशित। न०-कष्ट, दुःख। [डोल।
अशान्त (वि०)-चञ्चल, अस्थिर, डावां-
अशालीन(वि०)-धृष्ट, ढीठ।
अशालीनता(स्त्री०)-धृष्टता, ढिठाई।
अशासन (न०)-अराजकता, गड़बड़।
अशासनीय(वि०)-जो क़ाबू में न आ सके।
अशास्त्रीय(वि०)-शास्त्रविरुद्ध, अनुचित।
अशित (वि०)-खाया हुआ, भक्षित।
अशिन पु०)-चोर।
अशिर(पु०)-अग्नि, सूर्य, वायु। न०-हीरा
अशिव(वि०)-अमंगलकर, भाग्यहीन। न०-अमंगल, अशुभ।
अशिष्ट(वि०)-गंवार, अकुलीन, अयोग्य।
अशिष्टता (स्त्री०)-धृष्टता, असाधुता।
अशीतकर(पु०)-सूर्य।
अशीति(स्त्री०)-अस्सी।
अशील(वि०)-गंवार, अभद्र।
अशुचि(वि०)-मैला, गन्दा, अपवित्र। स्त्री० अपवित्रता, अशौच।
अशुद्ध(वि०)-अपवित्र, असंस्कृत, ग़लत।
अशुद्धता(स्त्री०)-अपवित्रता, गलती।
अशुद्धि(स्त्री०)-पूर्ववत्।
अशुभ(वि०)-अहित, अमङ्गलकर। न०-पाप, दुःख, अमंगल।
अशून्य(वि०)- जो खाली न हो, स्थापित।
अशेष(वि०)-शेषरहित, पूरा, समाप्त।
अशेषता(स्त्री०)-सम्पूर्णता, समाप्ति।
अशोक(वि०)-शोकरहित। पु०-एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियां आम के सी होती हैं। [पूर्णिमा।
अशोकपूर्णिमा(स्त्री०)-फाल्गुनमास की
अशोकवाटिका (स्त्री०)-रावणकी वह प्रसिद्ध वाटिका जिसमें उसने सीता को कैद कर रक्खा था।

अशोकषष्ठी(स्त्री०)-चैत्रशुक्ला षष्ठी।
अशोका(स्त्री०)-कुटकी, पारा।
अशोकाष्टमी(स्त्री०) चैत्रशुक्लाष्टमी
अशोच (पु०)-चिन्ता का अभाव, शान्ति। [विहित मलिनता।
अशौच(न०)-अशुद्ध, ग़लाज़त, शास्त्र-
अश्नया(स्त्री०)-भूख।
अश्नीतपिबता(स्त्री०)-दावत, भोजन का बुलावा।
अश्न(पु०)-आहार, मेघ, पत्थर।
अश्मक(पु०)-ट्रावनकोर प्रदेश, एक ऋषि का नाम।
अश्मगर्भ(अस्त्री०)-पन्ना, मरकत।
अश्मज(न०)-लोहा, शिलाजीत।
अश्मन्त(वि०)-अशुभ। न०-मरघट, खेत, चूल्हा।
अश्मन्तक (अस्त्री०)-चूल्हा, दीवट, मूंजकी तरह की एक घास, ढक्कन।
अश्मर(वि०)-पथरीला। [विशेष।
अश्मरी(स्त्री०)-पथरी नामक मूत्ररोग
अश्मसार(अस्त्री०)-लोहा।
अश्र (न०)-आंसू, खून।
अश्रद्ध(वि०)-श्रद्धारहित। [श्वास।
अश्रद्धा(स्त्री०)-श्रद्धाका अभाव, अवि-
अश्रद्धेय(वि०)-श्रद्धा के अयोग्य।
अश्राद्ध(पु०)-श्राद्ध का न करना।
अश्रान्त(वि०)-न थका हुआ, स्वस्थ, निरन्तर।
अश्राव्य(वि०)-न सुनने योग्य।
अश्रि-श्री(स्त्री०)-घर का कोना, हथियार की नोक।

अश्रीमान्(पु०)-हतभाग्य, कमबख्त।
अश्रु (न०)-आंख का जल, आंसू।
अश्रुत(वि०)-न सुना हुआ, वेदविरुद्ध।
अश्रुतपूर्व(वि०)-जो पहिले न सुना गया हो, विलक्षण।
अश्रुति(स्त्री०)-न सुनना, विस्मृति।
अश्रुतिधर(वि०)-ध्यान न खींचने वाला, वेदानभिज्ञ।
अश्रुपात(पु०)-रोदन, रोना।
अश्रुपूर्ण(वि०)-आंसुओं से भरा हुआ।
अश्रेष्ठ(वि०) जो सर्वोत्तम न हो, कमीना।
अश्रौत(वि०)-जो वेदविहित न हो।
अश्लाघा(स्त्री०)-आत्मप्रशंसा का अभाव, लज्जाशीलता। [नीच।
अश्लाघ्य(वि०)-प्रशंसा के अयोग्य,
अश्लिष्ट(वि०)-असङ्गत, असम्बद्ध।
अश्लील(वि०)-भद्दा,गंवार,लज्जाकर।
अश्लीलता(स्त्री०)-गंवारपन, भद्दापन।
अश्लेषा(स्त्री०)-नवां नक्षत्र।
अश्लेषाभ(पु०)-केतुग्रह।
अश्व(पु०)-घोड़ा, तुरंग।
अश्वगति(स्त्री०)-छन्दोभेद।
अश्वगन्धा(स्त्री०)-असगन्ध औषधविशेष।
अश्वगोष्ठ(न०)-अस्तबल।
अश्वग्रीव(पु०)-हयग्रीव नामक एक दैत्यविशेष। [स्थान।
अश्वघास(पु०)-घासों के चरने का
अश्वचक्र(न०)-घोड़ों का समूह, एक प्रकार का पहिया, घूमता हुआ घर।
अश्वचिकित्सक(पु०)-अश्ववैद्य,घोड़ों का इलाज करने वाला।
अश्वतर(पु०)-एक प्रकार का सर्प, खच्चर।
अश्वदंष्ट्रा(स्त्री०)-गोखरू।
अश्वत्थ(पु०)-पीपल।
अश्वत्थामा(पु०)-द्रोणाचार्य का पुत्र, एक हाथी का नाम।
अश्वन्त=अश्मन्त।
अश्वपति(पु०)-घुड़सवार,रिसालदार, कैकयदेश के राजकुमारों की उपाधि।
अश्वपाल(पु०)-साईस।
अश्ववाल(पु०)-कांस का पौदा।
अश्वमार(पु०)-कनेर का पेड़।
अश्वमाल(पु०)-एक प्रकार का सांप।
अश्वमुख(पु०)-किन्नर, घोड़े के मुंह वाला।
अश्वमेध(पु०)-एक यज्ञ विशेष जिस में घोड़े के मस्तक पर जयपत्र बांध कर उसे भूमण्डल में घूमने के लिये छोड़ दिया जाता था और उस की रक्षा के लिये सेना भेजी जाती थी। सेना के विजयी हो कर लौट आने पर घोड़े का स्वामी राजा बड़ा यज्ञ करता था, जो चक्रवर्तित्व का सूचक होता था। [नाम।
अश्वल(पु०)-एक गोत्रकार ऋषि का
अश्ववदन(पु०)-घुड़सवार, एक देश का प्राचीन नाम।
अश्ववह-वार (पु०)-घुड़सवार।

अश्वशाला(स्त्री०)घुड़साल,अस्तबल।
अश्वसूक्त(पु०)—वेद का एक सूक्त, जिस मे अश्वविद्या का वर्णन है।
अश्वस्तन(वि०)—केवल आज का। पु०-जिसके पास केवल एक दिन का भोजन हो।
अश्वस्तनिक (वि०)—भविष्यत् की चिन्ता न करने वाला।
अश्वारि(पु०)—भैंसा, महिष।
अश्वारोहण(न०)—घोड़े की सवारी।
अश्वारोही(वि०)—घोड़े का सवार।
अश्विनी(स्त्री०)—प्रथम नक्षत्र, घोड़ी।
अश्विनीकुमार(पु०)—सूर्य की स्त्री अश्विनी का पुत्र, ये दो हैं इसलिये यह शब्द द्विवचन में प्रयुक्त होता है।
अश्वी(वि०)—घोड़े रखने वाला।
अश्वीय(वि०)—अश्वसम्बन्धी।
अष् (१ उ०)—चमकना, जाना, हरकत करना।
अषाढ़(पु०)—एक मास का नाम जो बरसात के आरम्भ में होता है।
अष्ट(वि०)—आठ।
अष्टक(वि०)—आठ भाग का। पु०—विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम, आठ वस्तुओं का संग्रह, अष्टाध्यायी का ज्ञाता।
अष्टका(स्त्री०)—अष्टमी, अष्टमी के दिन का कृत्य :
अष्टकुली(वि०)-सांपों के आठ कुलों में से किसी में उत्पन्न।
अष्टकोण(पु०)—वह क्षेत्र जिस में आठ कोण हों, एक यन्त्रविशेष।
अष्टगन्ध(पु०)—आठ सुगन्धित द्रव्यों का समाहार।
अष्टगुण(वि०)—अठगुणा।
अष्टदल(न०)—आठ दल का कमल।
अष्टद्रव्य(न०)-आठ द्रव्य जो हवन में काम आते हैं।
अष्टधातु(पु०)—आठ धातु जैसे सोना, चांदी, तांबा, रांग, जस्त, शीशा, लोहा और पारा।
अष्टपदी(स्त्री०)—एक प्रकार का गीत जिस में आठ पद होते हैं।
अष्टपाद(पु०)—मकड़ी, शरभ, एक कीड़ा, कैलास पर्वत।
अष्टभुजा(स्त्री०)—दुर्गा।
अष्टम(वि०)—आठवां। [परिमाण।
अष्टमान(न०)—आठ मुट्ठी का एक
अष्टमिका(स्त्री०)—चार तोले का एक परिमाण।
अष्टमी(स्त्री०)—शुक्ल और कृष्णपक्ष की आठवीं तिथि, आठें।
अष्टमूर्त्ति(पु०)—आठ मूर्त्ति वाला अर्थात् शिव।
अष्टवर्ग(पु०)—जीवक, ऋषभक आदि आठ ओषधियों का समाहार।
अष्टांग(न०)—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि नामक योग की आठ क्रियायें।
अष्टांगी(वि०)—आठ अंगवाला।

असन्त(वि०)–बुरा, खल, दुष्ट।
असन्तति(स्त्री०)-सन्तति का अभाव। वि०–सन्तानहीन।
असन्तान(पु०)-पूर्ववत्।
असन्तुष्ट(वि०)–अप्रसन्न, अतृप्त।
असन्तुष्टि(स्त्री०)–सन्तोष का अभाव, अप्रसन्नता।
असन्तोषी(वि०)-सन्तोषरहित, अतृप्त
असन्दिग्ध(वि०)-निश्चित, यक़ीनी, साफ।
असन्धि(वि०)–न जुड़ा हुआ, स्वतन्त्र। पु०–सन्धि का अभाव।
असन्नद्ध(वि०)–जो तैयार न हो, अहकारी, घमण्डी।
असन्निकर्ष(पु०)–दूरी, समीप न होना
असन्निकृष्ट(वि०)–दूर, अलक्षित।
असन्निधान(न०)–दूरी का अभाव, भरोसा।
असन्निधि(पु०)–पूर्ववत्।
असन्निवृत्ति (स्त्री०)–अनागमन।
असपिण्ड(वि०)–असगोत्रीय।
असभ्य(वि०)–सभा में बैठने के अयोग्य, उजड्ड, गवार।
असम (वि०)–समतारहित, विषम, नीच, अनुपम। पु०–युद्ध।
असमग्र(वि०)–अधूरा, असम्पूर्ण।
असमञ्जस(वि०)–अप्रत्यक्ष, अनुचित। न०–दुविधा, अड़चन, कठिनाई।
असमन (वि०)–विविध मन वाला, चंचलस्वभाव, त्रिपन।
असमनेत्र(पु०)-त्रिनेत्र, शिव।
असमय(पु०)–अनुपयुक्तता, अनुचित-काल। [क़ाबिल।
असमर्थ(वि०)–अयोग्य, अशक्त, ना-
असमबाण(पु०)–पञ्चबाण, कामदेव।
असमवायिकारण(न०)–न्याय के अनुसार वह कारण जो द्रव्य न हो, गुण वा कर्म हो।
असमस्त (वि०)–असम्पूर्ण, अधूरा, अलग, अव्यस्त।
असमाति(वि०)–अनुपम, अद्वितीय।
असमान(वि०)–अनुपम, अतुल्य।
असमाप्त (वि०)–अधूरा, असम्पूर्ण।
असमाहार(वि०)–न जुड़ा हुआ। पु०–अप्राप्ति, अनमेल। [कर।
असमीक्ष्य(अ०)–न देखकर, न विचार
असम्पत्ति (स्त्री०)–नाकामयाबी, सम्पत्ति का अभाव।
असम्पूर्ण(वि०)-असमाप्त, अपूर्ण, अधूरा
असम्प्रज्ञात (वि०)–अच्छे प्रकार न जाना हुआ, एक प्रकार की समाधि।
असम्बद्ध(वि०)–अलग, बेमेल, अण्ड बण्ड। [सम्बन्ध का अभाव।
असम्बन्ध(वि०)–सम्बन्धरहित। पु०-
असम्बाध(वि०)–जो तंग न हो, चौड़ा, जनशून्य, खुला हुआ।
असम्भव (वि०)–जो सम्भव न हो, अनहोना, नामुमकिन।
असम्भार(वि०)-जो सभाला न जा सके, अपार। [न होना।
असम्भावना(स्त्री०)–नामुमकिनियत,
असम्भावनीय(वि०)–नामुमकिन।

असम्भावित(वि०)-जिस की सम्भावना न रही हो, अनुमानविरुद्ध
असम्भाव्य(वि०)-पूर्ववत्।
असम्भाष्य(वि०)-न कहे जाने योग्य।
असम्भूति(स्त्री०)-अभाव, पुनर्जन्म का अभाव, प्रकृति।
असम्भूत(वि०)-कुदरती, अकृत्रिम, अच्छी तरह न पला हुआ।
असम्भ्रम(वि०)-शान्तचित्त। पु०-शान्ति, भ्रम का अभाव।
असम्मत(वि०)-जो राज़ी न हो, न माना हुआ। [पसन्दीदगी।
असम्मति(स्त्री०)-विरुद्ध मति, ना-
असम्मान(पु०)-बेइज्जती, अपमान।
असम्मित(वि०)-असीम, बहुत।
असम्मुग्ध(वि०)-जिस को सन्देह नहीं होता। [चित्तता।
असम्मोह(पु०)-स्थिरता, शान्त-
असय(न०)-लोहा, हथियार, एकमंत्र।
असवर्ण(वि०)-दूसरे वर्ण का, दूसरी जाति का।
असह(वि०)-न सहने योग्य, असह्य।
असहन(वि०)-असहिष्णु, जो सहन न करे, द्वेषी। पु०-शत्रु। न०-बेसबरी, असहिष्णुता।
असहनशील(वि०)-असहिष्णु।
असहनशीलता(स्त्री०)-न सहन करने का स्वभाव। [योग्य।
असहनीय(वि०)-असह्य, न सहने
असहाय(वि०)-सहायकरहित, लाचार
असहित(वि०)-साथरहित, बेमेल।
असहितव्य(वि०)-न सहने योग्य।
असहिष्णु(वि०)-चिड़चिड़ा, न सहने वाला।
असहिष्णुता(स्त्री०)-न सहने की आदत, असहनशीलता।
असह्य(वि०)-न सहन करने योग्य।
असाक्षात्(अ०)-आँखों से दूर, जो सामने न हो।
असाक्षात्कार(पु०)-अभाव, न देखना।
असाक्षिक(वि०)-जिस का कोई गवाह न हो।
असाक्षी(पु०)-वह पुरुष जिसकी साक्षी अमान्य हो, साक्षी देने का अनधिकारी।
असाक्ष्य(न०)-साक्षी का अभाव।
असाधन(वि०)-साधनरहित। न०-पूरा न करना। [ध्य।
असाधनीय(वि०)-नामुमकिन, असा-
असाधारण(वि०)-असामान्य, विलक्षण, लोकातीत।
असाधु(वि०)-दुष्ट, बुरा, अविनीत।
असाधुता(स्त्री०)-दुर्जनता, अशिष्टता
असाध्य(वि०)-साधना के अयोग्य, असम्भव। [समय का।
असामयिक(वि०)-बेवक्त का, बिना
असामर्थ्य(न०)-शक्ति का अभाव, निर्बलता। [मामूली।
असामान्य(वि०)-असाधारण, गैर
असाम्प्रत(वि०)-अयोग्य, अनुचित।
असाम्य(न०)-फर्क, विभिन्नता।
असार(वि०)-साररहित, निःसार, तुच्छ। अस्त्री०-निरर्थक भाग, अगरचन्दन।

असारता(स्त्री०)--निःसारता, तुच्छता
असावधान(वि०)--जो सचेत न हो।
असावधानता(स्त्री०)-बेपरवाही।
असाहस(न०)--साधुता, नम्रता।
असि(पु०)--तलवार, खड्ग, असी नदी, श्वास।
असिक(न०)--होंठ और ठुड्डी के बीच का भाग, देशविशेष।
असिक्नी(स्त्री०)-अन्तःपुर की युवती दासी, चिनाब नदी।
असित(वि०)-जो सफ़ेद न हो,काला, दुष्ट, कुटिल। पु०—एक ऋषि, पिङ्गला नाम की नाड़ी।
असितांग(वि०)--काले रङ्ग का। पु०—एक मुनि।
असिता(स्त्री०)-यमुना नदी।
असिद्ध(वि०)--जो सिद्ध न हो, अपूर्ण, अधूरा, अप्रमाणित।
असिद्धि(स्त्री०)-असमाप्ति, कच्चापन, अपूर्णता।
असिधावक(पु०)-तलवार आदि के साफ़ करने वाला सिकलीगर।
असिधेनु-धेनुका (स्त्री०)-छुरी।
असिपत्र(वि०)-तलवार की शक्ल के से पत्तों वाला। पु०-ईख। न०-म्यान।
असिपुच्छ(पु०)-मगर, नाका।
असिपुत्रिका(स्त्री०)- छुरी। [वाला।
असिहेति(पु०)-तलवार धारण करने
असी(स्त्री०)-बनारस के पास एक नदी।
असीम (वि०)-सीमारहित, बेहद।
असु(पु०)-श्वास, जीवन, देहमें विलग आत्मा, जल, मर्म। न०-विचार, मन, दुःख। [अभाव।
असुख(वि०)-दुःखी। न०-सुख का
असुन्दर(वि०)-जो सुन्दर न हो, भद्दा।
असुप्त(वि०)-न सोया हुआ।
असुमान्(वि०)-जीवधारी, जीवित।
असुर(वि०)-जीवधारी, अमानुषी। पु०-राक्षस, सूर्य, हाथी, राहु, मेघ।
असुरगुरु(पु०)-दैत्यगुरु, शुक्राचार्य।
असुरसूदन (पु०)-विष्णु।
असुरा(स्त्री०)-रात्रि, वेश्या। [वालि।
असुराधिप (पु०)-प्रह्लाद का पौत्र
असुरारि(पु०)-देवता।
असुलभ(वि०)--जो सुलभ न हो।
असुसू(पु०)-बाण, तीर।
असुस्थ(वि०)-अस्वस्थ, रोगी।
असूत(वि०)--वन्ध्या, बंजर।
असूत(वि०)-वन्ध्या, बंजर।
असूति(स्त्री०)-अनुत्पत्ति, रोक।
असूक्षण(न०)-अपमान, अनादर।
असूयक(वि०)-हसद करने वाला।
असूयन(न०)-हसद, द्वेष, ईर्षा।
असूया(स्त्री०)-द्वेष, ईर्षा, जलन।
असूयु(पु०)-द्वेषी, अप्रसन्न, ईर्षी।
असूर्यम्पश्या(स्त्री०)पर्दे में रहने वाली स्त्री
असृक् [ज्] (न०)-रक्त, रुधिर।
असृग्धरा(स्त्री०)-त्वचा, चमड़ा।
असृग्वहा(स्त्री०)-रक्तवाहिनी नाड़ी।
असृष्ट(वि०)-अनुत्पन्न, अवितरित, नित्य।
असेचन(वि०)-प्रियदर्शन, लुभाने वाला।

असेवन(न०)-आज्ञा न मानना, ध्यान न देना
असेवित(वि०)-न सेवन किया हुआ, त्यक्त
असौम्य(वि०)-अप्रिय, भद्दा।
असौष्ठव(वि०)-पूर्ववत्।
असंयत(वि०)-अरुद्ध न बंधा हुआ।
असंयम(पु०)-इन्द्रियदमन का भाव।
असंयुक्त(वि०) विलग, न जुड़ा हुआ।
असंयुत(वि०)—पूर्ववत्।
असंविदान(वि०)—मूर्ख, बेवकूफ़।
असंवृत(वि०)—खुला हुआ, न ढका हुआ
असंशय(वि०) -संशयरहित, असन्दिग्ध।
असंसृति(वि०)—ब्रह्म में लय हो जाना।
असंस्कृत(वि०)—अपवित्र, अशुद्ध।
असंस्थान(न०)—गड़बड़, मेल का अभाव।
असंहत(वि०)-असंयुक्त, विलग।
अस्कन्न(वि०)-दागमी, न ढका हुआ
अस्खलित(वि०)-अकम्पित, स्थिर, अक्षत।
अस्त(वि०)-त्यक्त, समाप्त। पु०--अस्ताचल नामक पर्वत, कहते हैं जिस के पीछे सूर्य छिपता है, नाश, छिपना। न०-घर। वि०-आसन्न, मृत्यु।
अस्तक(पु०)-मुक्ति, मोक्ष।
अस्तब्ध(वि०)-अस्थिर, चञ्चल।
अस्तमन(न०)--सूर्यास्त। [ग्रह।
अस्तव्यस्त(वि०)--बिखरा हुआ, गड़
अस्ताचल(पु०)--पश्चिमीय पर्वत।
अस्तिक(वि०)-एक ऋषि का नाम।
अस्तेय(न०)-न चुराना।
अस्थान(न०)--धिक्कार, दोषारोपण

अस्त्र(न०)-हथियार, कमान, तीर।
अस्त्रकार(पु०)-हथियार बनाने वाला
अस्त्रचिकित्सा(स्त्री०)--चीड़फाड़की विद्या, सर्जरी।
अस्त्रविद्या(स्त्री०)-धनुर्वेद। अस्त्रशास्त्र। [यार।
अस्त्रशस्त्र(न०)-सब प्रकार के हथि-
अस्त्रशिक्षा(स्त्री०)-फौजी क़वायद।
अस्त्रसायक(पु०)-नाराच, लोहबाण।
अस्त्रहीन(वि०) -बेहथियार।
अस्त्री(स्त्री०)-जो स्त्री न हो, व्याकरण में जो पुल्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग का वाचक हो।
अस्त्रीक(वि०) -भार्यारहित।
अस्थान(वि०)-बहुत गहरा। न०-बुरी जगह।
अस्थायी(वि०)-थोड़े दिन रहने वाला, नाशवान्, चन्दरोज़ा।
अस्थावर(वि०)-अस्थिर, चञ्चल, जङ्गम का विरोधी।
अस्थि(न०)--हड्डी।
अस्थिक(पु०)-चर्बी, वज्र।
अस्थित(वि०)-चञ्चल, अस्थिर।
अस्थिति(स्त्री०)-स्थिरता का अभाव
अस्थिखेद(पु०)-हड्डियों में दर्द।
अस्थिपञ्जर(पु०)-हड्डियों का ढांचा।
अस्थिभक्ष-भुक्(पु०)-कुक्कुर, कुत्ता।
अस्थिभङ्ग(पु०) -हड्डियों का टूटजाना
अस्थियोग(पु०)--टूटे अङ्ग का जोड़ना
अस्थिर(वि०)-जो मज़बूत न हो, चञ्चल, अनिश्चित। [मात्र।
अस्थिशेष(वि०)-बहुत दुबला, हड्डी-

अस्थिसञ्चय(पु०)—मुर्दे के जलाने के बाद हड्डियों का इकट्ठा करना।
अस्थूल(वि०)—सूक्ष्म, छोटा।
अस्निग्ध (वि०)—जो चिकना न हो, सूखा, रूखा।
अस्पर्श(वि०)—विलग। पु०—लगाव का अभाव।
अस्पृश्य(वि०)-जो छूने योग्य न हो, नीच जाति का।
अस्पृष्ट(वि०)- न छुआ हुआ।
अस्पष्ट(वि०)—जो साफ न हो, सन्दिग्ध, अप्रत्यक्ष।
अस्फुट(वि०)--जो स्पष्ट न हो, गूढ़।
अस्मिता(स्त्री०)—अहङ्कार, एक प्रकार का क्लेश।
अस्मद्(सर्व०)- वक्ता का बोधक जिस से 'अहम्'[मैं] इत्यादि बनते हैं।
अस्मदीय(वि०)--हमारा, अपना।
अस्मरण(न०) -भूल, विस्मृति।
अस्मर्त्त(वि०)--जो याद न हो, शास्त्र-विरुद्ध।
अस्मि(अ०)--मैं का बोधक।
अस्मृति(स्त्री०)--विस्मृति, भूल।
अस्र(पु०)—आँसू, कोना, रुधिर, जल।
अस्रप(पु०)--राक्षस, मूल नक्षत्र। वि०-रक्त पीने वाला।
अस्रपा(स्त्री०)--जोंक, डायन।
अस्रफला(स्त्री०)--सलाई का पेड़।
अस्रार्जक(पु०)—श्वेत तुलसी।
अस्व (पु०)--कोना, एक करोड़ का वाचक।
अस्व(वि०)-निर्धन।
अस्वकीय(वि०)—जो अपना न हो।
अस्वच्छन्द(वि०)--परतन्त्र।
अस्वतन्त्र(वि०)-पूर्ववत्।
अस्वप्न(पु०)--देवता, अनिद्रा।
अस्वस्थ(वि०)—रोगी, अनमना।
अस्वाभाविक(वि०)--बनावटी, कृत्रिम
अस्वास्थ्य(न०)--रोग, बीमारी।
अस्वीकृत(वि०)--नामञ्जूर, अस्वीकार किया हुआ।
अह् (१आ०,१० उ०)--मिलकर गाना, तैयार करना, बयान करना, पुकारना।
अह(अ०)—पूजा, जुदाई, निश्चय आदि में प्रयुक्त होता है।
अहत(वि०)—अक्षत, न धोया हुआ।
अह[न्] (न०)--केवल दिन, आकाश, विष्णु, दिनरात।
अह(सर्व०)- मैं।
अहङ्कार(पु०)--अभिमान, घमण्ड।
अहङ्कारी(वि०)--घमण्डी, अहङ्कार करने वाला।
अहङ्कारिणी(स्त्री०)—घमण्ड करने वाली।
अहङ्कृति(स्त्री०)-अहकार।
अहंवाद(पु०)--अपनी शेख़ी मारना, डींग मारना।
अहंभाव(पु०) -ग़रूर करना।
अहमति(स्त्री०)--अहकार, अविद्या।
अहमहमिका (स्त्री०)- लागडाट, मैं पहिले मैं पहिले इस अर्थ में।
अहरणीय-अहार्य(वि०)--दूर करने के अयोग्य।
अहर्निशम्(अ०)--रातदिन, सदा।

अहल्या(स्त्री०)-ऐसी भूमि जो जोती न जासके, गौतम ऋषि की पत्नी ।
अहल्लिक(पु०)-मृतक, मुर्दाशरीर ।
अहस्त(वि०)-बिना हाथ का ।
अहह(अ०)-आश्चर्य, खेद, क्लेश और शोक का बोधक ।
अहि(वि०)-घातक, व्याप्त । पु०-सर्प, सूर्य, राहु, मुसाफिर, चोरसेवाक, जल, पृथिवी, मेघ, सीसा ।
अहिक(पु०)-ध्रुव तारा, अन्धा सर्प ।
अहिका(स्त्री०)-सेमल का वृक्ष ।
अहिकान्त(पु०)-वायु, हवा ।
अहिक्षेत्र(पु०)-दक्षिणी पाञ्चाल देश ।
अहिच्छत्र(पु०)-पूर्ववत् ।
अहिजित(पु०)-इन्द्र, कृष्ण ।
अहिजिह्वा(स्त्री०)-नागजिह्वा लता ।
अहित(वि०)-न रक्खा हुआ, हानिकारक । न०-हानि, मोचन ।
अहितकारी(वि०)-बुरा चाहने वाला, नुकसान पहुंचाने वाला ।
अहितेच्छु(वि०)-पूर्ववत् । [सपेरा ।
अहितुण्डिक(पु०)-सांप पकड़ने वाला,
अहिद्विष्-मार-रिपु(पु०)-गरुड़, मोर, इन्द्र, कृष्ण, नकुल ।
अहिपति(पु०)-वासुकि, बड़ा सांप ।
अहिफेन(नस्त्री०)-अफीम, सांप की लार ।
अहिभृत(पु०)-शिव ।
अहिम(वि०)-गर्म, जो ठंढा न हो ।
अहिमकर(पु०)-सूर्य । [सूर्य ।
अहिमतेज-द्युति-रुचि-अंशु(पु०)-
अहिमारिका(स्त्री०)-कृष्णवाकुची वृक्ष ।
अहिंसक(वि०)-हिंसा न करने वाला ।
अहिंसा(स्त्री०)-हिंसा का अभाव, किसी को न मारना, न हानि पहुंचाना ।
अहिंस्र(वि०)-हिंसारहित, अघातक ।
अही(द्वि०)-पृथ्वी और स्वर्ग ।
अहीन(वि०)-सम्पूर्ण, अक्षत, युक्त, बड़ा । पु०-सर्पोंकाराजा वासुकि
अहीनगु(पु०)-सूर्यवंशी एक राजा ।
अहीरणि(पु०)-दो शिर वाला सांप ।
अहु(वि०)-तंग, व्यापक ।
अहुत(पु०)-जप, ब्रह्मयज्ञ, वेदपाठ ।
अहृदय(वि०)-बेदिल ।
अहे(अ०)-धिक्कार, दुःख, जुदाई का बोधक ।
अहेतु(वि०)-बिना कारण का, व्यर्थ । पु०-कारण का अभाव ।
अहे [है] तुक (वि०)-कारणरहित, अप्रामाणिक ।
अहो(अ०)-करुणा, खेद, प्रशंसा, हर्ष और विस्मयबोधक ।
अहोरात्र(न०)-दिन रात ।
अह्नाय(अ०)-जल्दी से, शीघ्रतया ।
अह्रस्व(वि०)-दीर्घ, लम्बा ।
अह्रीक (वि०)-लज्जाहीन, धृष्ट । पु०-बौद्ध साधु ।

आ

आ(अ०)-वर्णमाला का द्वितीय अक्षर । स्मरण, दुःख, शोक, पीड़ा, अनुकम्पा, व्याप्ति, मेल, थोड़ा, अवधि, दया आदि अर्थों का बोधक ।

आकत्थन(न०)-शेखी, फख्र।
आकम्प्(१आ०)–हिलना, थरथराना।
आकम्पन(न०)–थरथराहट, हिलना, भयातुरता, [हुआ।
आकम्पित (वि०)–भयातुर, हिला
आकर(पु०)--समूह, खान, अच्छा।
आकर्ष(पु०)–खींचना, पाशा, चकमक पत्थर। [-चकमक पत्थर।
आकर्षक(वि०)--खींचने वाला-२-पु०-
आकर्षण(न०)–खींचना।
आकर्षणी(स्त्री०)–ऊंचे लगे हुए पुष्प आदि के झाड़ने की एक लाठी।
आकर्षिक(पु०)--चुम्बक। वि० खींचने वाला।
आकर्षी(वि०) -खींचने वाला।
आकर्ण्(१०प०)-सुनना, ध्यान देना।
आकल्(१०प०)–पकड़ना, क़ाबू करना, देखना, बांधना, घबराना।
आकल्प(पु०)--गहना, सिंगार, रोग।
आकल्पक(पु०)–अध्यान, खुशी, हर्ष।
आकल्य(न०)–बीमारी, दुःख।
आकष(पु०)–चकमक पत्थर, कसौटी।
आकस्मिक(वि०)-अकस्मात्, अचानक संघटित।
आकांक्ष्(१उ०)--चाहना, इच्छा करना।
आकांक्षा (स्त्री०)- अभिलाष, ख्वाहिश, पूछगछ।
आकांक्षित(वि०)-चाहाहुआ, इच्छित
आकाय(पु०)–घर, निवास, चिता।
आकाल(पु०)--ठीक समय, कुसमय।
आकार(पु०)-स्वरूप, इशारा, शकल।
आकारगुप्ति(स्त्री०)-मनोभावको छिपाना, स्वरूप को छिपाना।
आकारण (न०)–बुलावा, बुलाना, चैलेंज।
आकारणा(स्त्री०)--पूर्ववत्।
आकालिक (वि०)–क्षणिक, अनवसरोत्पन्न।
आकालिकी(स्त्री०)–बिजली।
आकाश्(१आ०)-चमकना, पहिचानना
आकाश(अस्त्री०)–गगन, आसमान, ख़ला। [असम्भव वस्तु।
आकाशकुसुम(न०)–आकाश का फूल,
आकाशगङ्गा (स्त्री०)–देवताओं की नदी, मन्दाकिनी। [घेरा।
आकाशमण्डल (न०)–आसमान का
आकाशयान(न०)–विमान, बेलून।
आकाशवल्ली(स्त्री०)–अमरबेल।
आकाशवाणी(स्त्री०)–अदृष्ट पुरुष की आवाज।
आकिञ्चन(न०)–निर्धनता, ग़रीबी।
आकीर्ण(वि०)–व्याप्त, फैला हुआ।
आकुञ्च्(१आ०,६प०) झुकाना, दबाना, कम करना, झुकना।
आकुञ्चन(न०)–संकोच, सिकोड़ना।
आकुल(वि०)–आतुर, घबराया हुआ।
आकुलता (स्त्री०)–घबराहट।
आकूत(न०)–इरादा, अभिप्राय, इच्छा,
आकूति (स्त्री०)–पूर्ववत्।
आकृ (८ उ०, ५ प०)–समीप लाना, बुलाना, चैलेंज करना।
आकृति (स्त्री०)–आकार, शकल।
आकृष् (१ प०, ६ उ०)–खींचना, आकृष्ट करना।
आकृष्ट (वि०)–खिंचा हुआ।

आगम्(१प०), आना, समीप पहुंचना, प्राप्त करना, जानना।
आगम (पु०)–आगमन, शास्त्र, नियमानुकूल किसी वस्तु की प्राप्ति, वेद। [उत्पत्ति।
आगमन(न०)–पहुंच, वापिसी, प्राप्ति,
आगर(पु०)–अमावस्या।
आगस्(न०)–दोष, जुर्म, अपराध, सज़ा
आगस्ती(स्त्री०)–दक्षिण दिशा।
आगस्त्य(वि०)–दक्षिणीय, अगस्त्य का
आगाध(वि०)-बहुत गहरा, दुष्प्राप्य।
आगामी(वि०)–आने वाला, अगला, परदेशी। [आने वाला।
आगामुक(वि०)–भविष्यत् काल का,
आगार(न०) घर, कमरा, मकान।
आगुर्(६ आ०)–पसन्द करना, मंजूर करना। स्त्री०–वायदा, स्वीकारी।
आगु[गू]रण(न०)–छिपा हुआ प्रस्ताव।
आगू(स्त्री०)–प्रतिज्ञा, इक़रार।
आगै(१ प०)–गाना, गाकरप्रास करना।
आग्निक(वि०)–अग्नि का।
आग्नीध्र(न०)–होम करने का घर। पु०–होता।
आग्नेय(वि०)--अग्नि का, आतिशी। न०–स्वर्ण, घी। पु०–अगस्त्य मुनि, अग्नि का पूजक।
आग्नेयी(स्त्री०)–पूर्व और दक्षिण के मध्य की दिशा, प्रतिपदा, अग्नि की स्त्री स्वाहा।
आग्रयण(न०)–नया अन्न, अग्नि का एक स्वरूप।

आग्रह्(९उ०)–पकड़ना, खींचना, जद्दोजहद करना।
आग्रह(पु०)–पकड़, इरादा, जद्दोजहद करना।
आग्रहायण(पु०)–मार्गशीर्ष मास।
आघट्(१० प०)–छूना, हरकत करना, मारना।
आघट्टक(पु०)–लालअपामार्ग वृक्ष।
आघर्षः-घर्षणम्—रगड़, आघात।
आघर्षणी(स्त्री०)-बुरुश, हरूफ़ मिटाने की रबड़। [खाना, आघाट।
आघात(पु०)–चोट, वधस्थान, कसाई-
आघार(पु०)- घी छिड़कना।
आघुष्(१ प०)–चिल्ला कर बताना, ज़ाहिर करना, तारीफ़ करना।
आघूर्णित (वि०)–चालित, हिलाया हुआ। [वाला। पु०-सूर्य।
आघृणि(वि०)–प्रकाशमान, बहुत धन,
आघोष(पु०)–चिल्लाहट, पुकार।
आघोषणा(स्त्री०)–विज्ञप्ति, सब को बता कर कहना।
आघ्रा(१ प०)–सूंघना, चूमना।
आघ्राण(न०)–सूंघना, गन्धग्रहण।
आघ्रात(वि०)–सूंघा हुआ, आक्रान्त, छुआ हुआ। [देशोत्पन्न।
आङ्ग(वि०)–शरीरयुक्त, अवयवी, अङ्ग-
आङ्गिक(वि०)–शरीर का, अङ्गों से उपजा, मृदङ्ग बाजा। [स्पति।
आङ्गिरस(पु०)–अङ्गिरा का पुत्र बृह-
आङ्गूष(पु०)–प्रशंसा, गीत।
आचक्ष्(२आ०)--बोलना, प्रकट करना, दिखलाना।

आचम्(१ प०)-चाटना, आचमन करना, चपचप करना।
आचमन(न०)-कुल्ला करना, मुख आदि का धोना। उपासनाके पूर्व जल का पीना। [का जल।
आचमनक(न०)--पीकदानी, आचमन
आचर्(१प०)-आचरण करना, काम करना, बर्ताव करना'' सम्पादन करना। [व्यवहार।
आचरण(न०)-बर्ताव,क्रिया,सम्पादन,
आचरित(वि०)-किया हुआ,व्यवहृत।
आचार (पु०)--चरित्र, चालचलन, ऋषियों द्वारा सम्मत व्यवहार।
आचारपूत(वि०)-शुद्धाचार द्वारा पवित्र। [हीन।
आचारभ्रष्ट(वि०)-पतित, सदाचार-
आचारहीन(वि०)--पूर्ववत्।
आचार्य(पु०)-वेद की शिक्षा देने वाला, शिक्षक,फिलासफर, सैद्धान्तिक।
आचार्यक(न०)-शिक्षा, सिखाना।
आचार्याणी(स्त्री०)-आचार्यकीस्त्री।
आचि(५ उ०)--इकट्ठा करना,चुनना।
आचित (वि०)--संगृहीत, एकत्रित, फैला हुआ। पु०--एक गाड़ी का बोझ अर्थात् पच्चीस मन।
आचूषण(न०)--चूसना,चूसने का कार्य।
आच्छद्(१० प०)--ढकना, छिपाना, वस्त्रयुक्त करना।
आच्छन्न (वि०)--ढका हुआ, घिरा हुआ, आवृत।
आच्छाद(पु०)--वस्त्र, कपड़ा।
आच्छादन(न०)-वस्त्र, चादर, पर्दा, ढकना [हुआ।
आच्छादित(वि०)--ढका हुआ, छिपा
आच्छिद्(७ उ०)--काट कर अलग करना, टुकड़े २ करना, तोड़ना।
आच्छुरित (न०)- खिलखिला कर हँसना, नाखून बजाना।
आच्छेदन(न०)--काट कर अलग करना, छीनने का काम।
आच्छोदन(न०)-शिकार, मृगया।
आज(न०)-बकरे का मांस घी।
आजक(न०) बकरों का झुंड।
आजकार(पु०)-शिव का नादिया।
आजन्(४ आ०)-उत्पन्न होना, पैदा होना।
आजन्म(अ०)-पैदायश से लेकर।
आजाति(स्त्री०)--पैदायश, आरम्भ।
आजान(पु०)--पूर्ववत्।
आजानु(अ०)--घुटनों तक।
आजि(स्त्री०)-युद्ध, लड़ाई कुश्ती, गाली, संग्रामभूमि।
आजि(१ प०)--जीतना, प्राप्त करना।
आजिगीषु(वि०)--सब को जीतने की इच्छा करने वाला।
आजीव् (१प०)--सहारे से जीना, जिन्दा रहना।
आजीवक(पु०)--भिखारी, मंगता।
आजीवन(न०)-रोजी,जीविका,सहारा, पेशा।
आजीवनं(अ०)--जीवनपर्यन्त।
आजीविका(स्त्री०)-पेशा, जीवन-निर्वाह का साधन।

आजू(स्त्री०)--मुफ्त काम करने वाला।
आज्ञप्ति (स्त्री०)--हुक्म, आर्डर।
आज्ञा (९ प०)--जानना, समझना, सूचना पाना।
आज्ञा(स्त्री०)--हुक्म, इजाज़त।
आज्ञानुगामी (वि०)--आज्ञानुवर्ती, आज्ञाकारी। पु०--नौकर [डर।
आज्ञापक(वि०)-हुक्म देनेवाला,कर्मा-
आज्ञापत्र(न०)-शासनपत्र, लिखा हुआ हुक्म।
आज्ञाभंग(पु०)-नाफर्माबरदारी,विद्रोह
आज्य(न०)--घृत, घी।
आज्यपाः(पु०) पितरों की एक कक्षा।
आज्यस्थाली(स्त्री०)--होम में घृत रखने का बर्तन।
आज्यभुक्(पु०)-अग्नि देवता।
आञ्जन(न०)-मरहम, चर्बी, आंख में आंजने का काला अञ्जन। पु०--हनूमान्।
आञ्जनेय(पु०) -हनूमान्। [विशेष।
आटविक(पु०)-जंगली,वनवासी, सेना
आटीकर(पु०)--सांड, बैल।
आटोप(पु०)- ग़रूर, अहंकार, वेग, पेट का वायुविकार।
आडम्बर(पु०)--गर्व, दिखलावा, हर्ष, वेग, अहंकार, बाजा, बादल का गर्जन, आंख के रोम।
आडम्बरी(वि०)--उजड्ड, मग़रूर।
आडू(स्त्री०)--शहतीर, लकड़ी का तख्ता।
आढक(अस्त्री०)--चारों ओर से दश अंगुल का माप, अनाज फटकने का पात्र।
आढ्य(वि०)--युक्त, मिला हुआ, महाधनी।
आणक(वि०)--नीच, कमीना, मैथुन का आसनविशेष।
आणव(वि०)--बहुत छोटा।
आणि (अक्लीo)--रथचक्र के आगे की कील, नोक, कोना।
आतंक(पु०)--भय, डर, रोग, ढोल का शब्द। [घात, ख़ाक करना।
आतञ्चन(न०)--नाश,उपद्रव,वेग,मुसी-
आतत(वि०)--फैला हुआ, प्रसारित।
आततायी(वि०)-मारनेको तैयारहुआ, शस्त्र उठा कर मारने वाला, महापापी।
आतन् (८ उ०) -फैलाना, तानना, पूरा करना, प्रवेश करना।
आतन(न०)--फैलाव,दृष्टि,प्रसारण।
आतप्(१ प०)--तपना, तपाना, चमकाना। [प्रकाश।
आतप(पु०)--पीड़ा का कारण, धूप,
आतपत्र(पु०)- छाता, छत्र।
आतर(न०)--नदी आदि तरने के लिये भाड़ा।
आतर्पण(न०)--सन्तुष्टि,मंगलालेपन।
आतान(पु०)--तना हुआ रस्सा, बहुत फैलाव।
आतापि(पु०)--एक दैत्य का नाम जिसे अगस्त्य ने निगला।
आतापी(पु०)--खचर,चील पक्षी।
आतायी(पु०)-चील पक्षी।
आतिथेय(न०)--अतिथिपूजा। वि०--चतुर, कुशल।

आतिथ्य(न०)--अतिथिसेवा।
अतिथ्यसत्कार (पु०)-अतिथिसेवा, मेहमाननवाज़ी।
आतिरे[रै]क्य(न०)-अधिकता, बहुतायत, ज़्यादती,
आतिवाहिक(पु०)-मृत्यु के पश्चात् सूक्ष्म शरीर को परलोक में ले जाने वाला ईश्वरदूत।
आतिशय्य=आतिरेक्य।
आतु(पु०)-तख्ता, लक्कड़, शहतीर।
आतुड् (६ उ०)-मारना, चुभाना, एड़ी लगाना। [ब्रुकुक।
आतुर(वि०)-पीड़ित, रोगी, दुर्बल,
आतुरशाला(स्त्री०)--रोगिशाला, अस्पताल।
आतुर्य(न०)-रोग, ज्वरविशेष।
आतृप्(४,५,६प०)-सन्तुष्ट होना या। तृप्त करना।
आतोद्य(न०)-वीणा आदि बाजा, कोई बाजा।
आत्म[न्]-समास के आरम्भ में स्वार्थ प्रयुक्त होता है। पु०-आत्मा।
आत्मक(वि०)-समास के अन्त में स्वार्थ में प्रयुक्त होता है।
आत्मकाम(वि०)--खुदपसन्द, दर्पित।
आत्मकार्य(न०)-प्राइवेटकाम।
आत्मकीय(वि०)-अपना, निजी, सम्बन्धी।
आत्मगुप्ति(स्त्री०)--गुफा, गार।
आत्मघाती(वि०)-लालची, खुदगर्ज़।
आत्मघातक(पु०)-खुदकशी, आत्महत्या
आत्मघोष(पु०)-कौवा, मुर्गा।
आत्मज(पु०)-पुत्र, सन्तान कामदेव।
आत्मजन्म-जात-प्रभव-सम्भव(पु०)-- पुत्र, सन्तान।
आत्मजा(स्त्री०)-पुत्री, तर्कबुद्धि।
आत्मज्ञ-विद्(पु०)-ज्ञानवान्, परिज्ञत, ऋषि।
आत्मज्ञान(न०)-आत्मा और परमात्मा का ज्ञान, अध्यात्मविद्या।
आत्मतत्त्व(न०)-जीवात्मा और परमात्मा का वास्तविक स्वरूप।
आत्मतुष्टि(स्त्री०)-सन्तोष, चित्त की शान्ति।
आत्मत्याग(पु०)-स्वार्थत्याग।
आत्मदर्श(पु०)-दर्पण, शीशा।
आत्मदर्शन (न०)-अध्यात्मज्ञान, आत्मा के स्वरूप को जान लेना।
आत्मनिन्दा(स्त्री०)-अपने आप को धिक्कारना।
आत्मनीन(वि०)--पुत्र, साला, सम्बन्धी
आत्मनेपद(न०)--धातुओं के दो भेदों में से एक।
आत्मप्रशंसा(स्त्री०)-खुदपसन्दी, अपनी तारीफ़।
आत्मबन्धु(पु०)-सम्बन्धी, रिश्तेदार
आत्मबोध(पु०)-आत्मज्ञान।
आत्मभू-योनि(पु०)-ब्रह्मा, विष्णु, वामदेव, पुत्र।
आत्मम्भरि(वि०)--लालची, स्वार्थी
आत्मरक्षा(स्त्री०)-अपनी रक्षा।
आत्मवध(पु०)-खुदकशी।
आत्मविक्रय(पु०)-अपने आप को बेच देना।
आत्मविद्या(स्त्री०)-आत्मा का ज्ञान

आत्मश्लाघा(स्त्री०)-शेखी,खुदपसन्दी आत्मस्तुति।
आत्मसंयम(पु०)—इन्द्रियदमन।
आत्मसात्(अ०)—अपने क़ाबू में, अपने अधीन।
आत्महत्या(स्त्री०)—अपने आप को मारना, खुदकशी।
आत्मा(पु०)—जीव, ब्रह्म, बुद्धि, मन स्वरूप, सूर्य, देह, अग्नि, वायु, स्वभाव।
आत्माधीन(वि०)—स्वाधीन। पु०—पुत्र, साला, विदूषक।
आत्मानुरूप(वि०)—अपने अनुकूल।
आत्मीय(वि०)-अपना,निजी,सम्बन्धी
आत्मोद्भव(पु०)—पुत्र, कामदेव, दुःख
आत्यन्तिक (वि०)—अतिशयजात, अन्तहीन, बहुत अधिक।
आत्रेय(पु०)—अत्रि मुनि का पुत्र, एक नदीविशेष, शिव, अत्रिवंश का अधिष्ठाता।
आत्रेयी(स्त्री०)—अत्रिमुनि की कन्या, ऋतुमती स्त्री, एक नदी।
आथर्वण(पु०)—अथर्ववेदद्वारा विहित, अथर्ववेद का शिक्षक ब्राह्मण, अथर्ववेद के अनुसार क्रिया करने वाला पुरोहित।
आदत्त(वि०)-ग्रहीत, स्वीकृत।
आदर(पु०)—इज्जत, प्रतिष्ठा, आरम्भ
आदर्श (पु०)—दर्पण, शीशा, उद्देश्य, प्रतिरूप, पुस्तक।
आदंश्(१प०)—काटना, कुरेदना।
आदा(३ आ०)—प्राप्त करना, लेना, ग्रहण करना। [ज़ेवर।
आदान(न०)—ग्रहण, लेना, घोड़े का
आदाय(अ०)—ग्रहण करके, लेकर।
आदि (वि०)—पहला, आरम्भ का, आरम्भिक,प्रधान।पु०—आरम्भ, कारण, मुख्य, हिस्सा, प्रथम।
आदिक(वि०)—वग़ैरा, आरम्भ करके, लेकर। [मुनि।
आदिकवि (पु०)—ब्रह्मदेव, वाल्मीकि
आदिकारण(न०)—ब्रह्म, प्रकृति।
आदिकाव्य(न०)—वाल्मीकीय रामायण। [अर्थात् देवता।
आदितेय(पु०)—अदिति की सन्तान
आदित्य(पु०)—सूर्य, देवता, आक का वृक्ष, पुनर्वसु नक्षत्र।
आदि [दी] नव(अस्त्री०)—दुःख,रोक, अपराध, ऐब।
आदित्यसूनु (पु०)—यमराज, सुग्रीव, शनि, राजा कर्ण, वैवस्वत मनु।
आदिदेव(पु०)—नारायण,शिव, आदिकारण, ब्रह्म।
आदिपु [पू] रुष (पु०)—आदिकारण, परमात्मा, नारायण।
आदिम(वि०)—पहिला, आरम्भिक।
आदिश्(६ उ०)—बतलाना,दिखलाना, हुक्म देना।
आदिष्ट (वि०)—आज्ञापित, कथित, आदेश किया गया। न०—आज्ञा, हुक्म।
आदृ(६आ०)—इज्ज़त करना, प्रतिष्ठा करना, प्रतिष्ठा पाना।

आदृत(वि०)–पूजित, सम्मानित।
आदेश(पु०)–हुक्म, आज्ञा, उपदेश, शिक्षा, शासन, नियम।
आदेशी(वि०)–आज्ञा करने वाला, •इशारा करने वाला। पु०–नजूमी, कमानियर, डाइरेक्टर।
आदेष्टा(पु०)–आज्ञाकारक, यज्ञाह्-कार, यजमान।
आद्य(वि०)–प्रथम, आदिभूत, खाद्य। न०-धान्य।
आद्यन्त(न०)-शुरू और अखीर।
आद्या(स्त्री०)–दुर्गा, शक्ति, काली।
आद्यून (वि०)–आदिशून्य, आरम्भ रहित, भूखा, पेटू।
आद्योत(पु०)–चमक, रोशनी।
आद्रिसार(वि०)–लोहे का बना हुआ।
आधमन(न०)–अमानत, गिर्वी, निक्षेप।
आधमर्ण्य(न०)–क़र्ज़दार होना।
आधर्मिक(वि०)-अन्यायी, धर्मविरोधी
आधर्ष(पु०)–हिक़ारत, बलात् हानि पहुंचाना।
आधा (३उ०)–रखना, जमा करना, पौद लगाना, नियुक्त करना।
आधाता(वि०)-आधान करने वाला।
आधान (न०)–नियुक्ति, गर्भाधान, मन्त्रादि से अग्नि स्थापन करना।
आधानिक(पु०)-गर्भाधान संस्कार।
आधार(पु०)-अधिकरण, आश्रय, नहर, पुल, थाह।
आधारक(पु०) बुनियाद। [देना।
आधारण(न०)–धारण करना, सहारा

आधारशक्ति(स्त्री०)–माया, जगज्जननी। [अमानत।
आधि(पु०)–मन की पीड़ा, आश्रय,
आधिकरणिक(पु०)–जज।
आधिक्य (न०)–अधिकता, ज़्यादती, बहुतायत।
आधिज्ञ(वि०)–कष्ट जानने वाला।
आधिदैविक (वि०)–पञ्चभूत अर्थात् वायु आदि से उपजा दुःख।
आधिपत्य(न०)–अधिकार, स्वामित्व।
आधिभौतिक(वि०)–व्याघ्र, सर्प आदि से उपजा दुःख।
आधिराज्य (न०)–आधिपत्य, अधिकार, रियासत।
आधिवेदनिक (न०)–दूसरा विवाह करने पर पहली स्त्री को दिया हुआ धन।
आधिकरण(न०)–अमानत, रहन।
आधिकृ(८प०)-अमानत रखना, गिर्वी रखना, रहन करना। [करना।
आधु(५ उ०)–हिलाना, आन्दोलित
आधुनिक(वि०)-नया, नवीन, हालका.
आधृ(१,१०प०)–धारण करना, सहारा देना। [ब आना।
आधृष्(५प०)–आक्रमण करना, ग़ालि-
आधृष्ट(वि०)–रोका हुआ, आक्रान्त।
आधोरण(पु०)–हाथीवान, हस्तिपक।
आध्मात(वि०)–शब्दित, फूंका गया, वायुपूरित। न०–आध्मान, वायु रोग से पेट का फूलना।
आध्मान (न०)-वायुरोग, पेट फूलना, शेख़ी, धौंकनी।

आध्यात्मिक (वि०)-परमात्मसम्बन्धी, मनोविकार से उत्पन्न दुःख
आध्यान (न०)-चिन्ता, शोकपूर्वक याद करना।
आध्वनिक(वि०)-यात्रा में गया हुआ, सफर करने वाला।
आध्वरिक (वि०)-पुरोहित, सोमयज्ञ का विधान करने वाला।
आध्वर्यव (वि०)-यजुर्वेदसम्बन्धी, यजुर्वेद का ज्ञाता।
आन(पु०) -श्वास लेना, मुख,नासिका
आनक (पु०)-बाजा, मृदंग, बहुत आवाज करने वाला ढोल।
आनकदुन्दुभि(पु०)-वसुदेव का नाम। स्त्री०-बड़ा ढोल।
आनत (वि०)-नम्र, अवनत, झुका हुआ, अधोमुख।
आनति(स्त्री०)-प्रणाम,नम्रता,सन्तोष
आनद्ध (न०)-बंधा हुआ। पु०-ढोल, वस्त्र ग्रहण करना।
आनन (न०)-मुख, जिस से श्वास लिया जाता है।
आनन्त्य(न०)-बहुतायत,अनन्तसुख।
आनन्द (१प०)-हर्षित होना, दिल बहलाना। [ब्रह्म।
आनन्द(पु०)-खुशी, सुख,दुःखाभाव,
आनन्दक (वि०)-खुश, हर्षित।
आनन्दता(स्त्री०)-खुशी, प्रसन्नता।
आनन्दन (न०)-जाने आने के समय कुशलप्रश्न से आनन्द उत्पन्न करना। वि०-आनन्द से भरा हुआ। पु०-ब्रह्म।
आनन्दलहरी (स्त्री०)-शङ्कराचार्य-कृत पार्वती की प्रार्थना।
आनन्दि (पु०)-खुशी, हर्ष, शौक।
आनम्(१प०)-झुकना, झुकाना,प्रणाम करना।
आनर्त्त (पु०)-युद्ध, लड़ाई, थियेटर-हाल, काठियावाड़ प्रदेश। नं०-जल।
आनर्थक्य(न०)-निरर्थकता,अनौचित्य
आनव (वि०)-मानुषी, उदार। पु०-जन, विदेशी जन।
आनह् (४उ०)-बांधना, जकड़ना।
आनय (पु०)-उपनय, लाना।
आनयन (न०)-पूर्ववत्।
आनाथ्य(न०)-आश्रयहीनता,यतीमी।
आनाय (पु०)-जाल, यज्ञोपवीत धारण करना।
आनायी (पु०)-मछेरा, बधिक।
आनाह (पु०)-बन्ध, कब्ज, लम्बाई।
आनिल (वि०)-वायु का, हवा से उत्पन्न। पु०-हनुमान्।
आनी (१प०)-लाना, जाकर लाना, *उत्पन्न करना, ले जाना।*
आनीति (स्त्री०)-पास लाना।
आनील (वि०)-कुछ कुछ काला। पु०-काला घोड़ा।
आनुकूलिक (वि०)-अनुकूल,मुआफिक
आनुकूल्य(न०)-अनुकूलपना, आपस में मिल कर रहना।
आनुगत्य (न०)-वाकफियत।
आनुगुण्य (न०)-समानता, तुल्यता, अनुकूलपना।

आनुग्रामिक (वि०)-गंवार, उजड्ड ।
आनुपदिक (वि०)-अनुगमन या पीछा करने वाला । [नतीजा ।
आनुपूर्व-र्व्य(न०)-क्रम, सिलसिला,
आनुपूर्वी (स्त्री०)-पूर्ववत् ।
आनुमानिक (वि०)-अनुमान से प्राप्त, अनुमित ।
आनुयात्रिक (पु०)-पीछे जाने वाला, सेवक ।
आनुरति (स्त्री०)-प्रेम, आसक्ति ।
आनुलोमिक(वि०)-क्रमबद्ध,अनुकूल ।
आनुविधित्सा (स्त्री०)-कृतघ्नता, अहसानफरामोशी ।
आनुवेश्य (वि०)-पड़ोसी ।
आनुश्रविक (वि०)-वेदविहित ।
आनुषंगिक (वि०)-लगाव रखने वाला, गौण, ज़रूरी, समान ।
आनूप(वि०)-तर, जलयुक्त ।
आनृण्य(न०)-ऋण से छुटकारा ।
आनृत(वि०)-सदा झूठ कहने वाला, असत्यवादी ।
आनृशंस(वि०)-मेहरबान,रहमदिल ।
आनैपुण्य(न०)-मूर्खता, दक्षता का अभाव ।
आन्त(वि०)-अख़ीरी, अन्तिम ।
आन्तर(वि०)-अन्दरूनी,छिपा हुआ ।
आन्तरतम्य(न०)-नज़दीकी, रिश्तेदारी । [जानने वाला ।
आन्तराल (वि०)-अन्दरूनी बातों का
आन्तरीक्ष-रिक्ष (वि०)-अन्तरिक्ष में स्थित, स्वर्गीय । [लित ।
आन्तर्गणिक(वि०)-गिना हुआ,सम्मि-
आन्तिका(स्त्री०)-बड़ी बहिन ।
आन्त्र(वि०)-अन्तड़ियों का ।
आन्दोल(१०प०)-इधर उधर हिलना, झूलना, कांपना ।
आन्दोलन(न०)-बार २ झूलना, अनुसन्धान, बार २ तहरीक, एजीटेशन ।
आन्धसिक(पु०)-रसोइया,पाचक ।
आन्ध्य(न०)-अन्धापन ।
आन्यभाव्य(न०)-अन्य आकार ।
आन्वयिक (वि०)-कुलीन, अच्छे वंश का । [जाय ।
आन्वाहिक(वि०)-जो रोज़ २ किया
आन्वीक्षिकी (स्त्री०)-मन्तक़, तर्कविद्या, अध्यात्मविद्या ।
आन्वीपिक(वि०)-अनुकूल ।
आप् (५ प०)-प्राप्त करना, पाना, हासिल करना ।
आप(न०)-जल, जलधारा ।
आपकर(वि०)-क्रूर, शत्रु ।
आपक्व(वि०)-कच्चा, आधा पका ।
आपगा(स्त्री०)-नदी, दरिया ।
आपण(न०)-बाज़ार, दूकान ।
आपणिक(वि०)-व्यापारी, तिजारती, व्यवसायी ।
आपत (१ प०)-झपटना, आक्रमण करना, समीप आना ।
आपतन(न०)-आक्रमण, समीपगमन, घटना, अवतार, प्राप्ति, ज्ञान ।
आपतिक(वि०)-आकस्मिक । पु०-बाज़ पक्षी ।

आपतित(वि०)-सङ्कटित, अवतीर्ण, क़िस्मत में बदा हुआ।

आपत्ति(स्त्री०)-प्राप्ति, अन्तःप्रवेश, दुःख, मुसीबत।

आपत्काल(पु०)-मुसीबत का वक्त।

आपत्य(वि०)-सन्तान का, सन्तति-सम्बन्धी।

आपद्(४ आ०)-क़रीब जाना, प्रवेश करना, संघटित होना, पहुँचना।

आपद् (स्त्री०)-आपत्ति, मुसीबत, ख़तरा। [हुआ, कमबख़्त।

आपद्ग्रस्त(वि०)-मुसीबत में फँसा

आपद्धर्म (पु०)-ऐसा आचार जो द्विजातियों के लिये साधारण अवस्था में तो वर्जित हो, किन्तु विपत्ति या विप्लवकाल में सम्मत ठहराया गया हो जैसे नियोग, शुद्धि आदि।

आपदा(स्त्री०)-मुसीबत, कठिनता।

आपन्न(वि०)-प्राप्त, विपद्ग्रस्त, मुसीबत में फँसा हुआ। [मिला।

आपन्नसत्त्वा(स्त्री०)-गर्भवती, हा-

आपनिक(पु०)-हीरा, किरात।

आपमित्यक(वि०)-तबादले में पाया हुआ। न०-तबादले का माल।

आपराह्णिक (वि०)-दोपहर के पश्चात् का।

आपव् (न०)-पाप, धार्मिक कृत्य।

आपस्तम्ब (पु०)-धर्मशास्त्रकार एक ऋषि।

आपाक(पु०)-कुम्हार का आवा।

आपात(पु०)-आक्रमण, जलता हुआ तन्दूर, कुम्हार का आवा, मार्ग, रास्ता। [वाला।

आपाती (वि०)-यकायक आ पहुँचने

आपाद(पु०)-बदला, प्राप्ति।

आपान(न०)-शराबियों की जमाअत, दावत, शराब की दुकान।

आपालि(पु०)-जूँ। [पीला।

आपिञ्जर(न०)-सोना। वि०-कुछ २

आपी(वि०)-मोटा ताज़ा।

आपीड् (१० प०)-दबाना, तंग करना, सिकोड़ना।

आपीड (वि०)-कष्टदायक, दबाने वाला। पु०-माला, एक ज़ेवर।

आपीडन(न०)-दबाना, तंग करना, दुःख देना।

आपीत(वि०) मस्त, थोड़ापीला, थोड़ा पिया हुआ, माक्षिक धातु।

आपीन (वि०)-थोड़ा मोटा, ऊध (हवाना)कूप।

आपूपिक(वि०)-पूड़े बेचने वाला या खाने वाला। न०-पूड़ों का समूह।

आपूप्य(पु०)-मैदा, सत्तू।

आपूरण-र्ण(वि०)-भरा हुआ, पूरित।

आपृच(७ प०)-भरना, व्याप्त करना मिलाना।

आपृच्छा(स्त्री०)-आलाप, बातचीत।

आपेक्षिक(वि०)-इन्तज़ार करने वाला

आपोमय(वि०)-जल का बना हुआ।

आप्त(वि०)-विश्वस्त, पाया हुआ, सच्चा उपदेशक, रागद्वेष से रहित, सत्यज्ञाता।

आप्तकाम(वि०)–जिस की इच्छा पूर्ण हो गई हो, सदातृप्त।
आप्तोक्ति(स्त्री०)–आप्त का वचन, वेदज्ञ का दिया हुआ फैसला।
आप्यायन(न०)–तसल्ली, सन्तुष्टि, मोटापन।
आपृच्छ् (६ आ०)–अलविदा कहना, जुदा होते समय प्रणाम करना।
आपृच्छन (न०)–अलविदा, स्वागत, अन्तिम प्रणाम। वि०--छिपा हुआ, गुप्त। [पोशाक।
आप्रपद(न०)–पांव तक पहुंचने वाली
आप्रीतप (पु०)–विष्णु।
आप्लव (पु०)–स्नान, मज्जन, छिड़काव।
आप्लवन(न०)–पूर्ववत्।
आप्लाव(पु०)–पानी का चढ़आना, बाढ़
आप्लु (१ आ०)–फुदकना, नाचना, नहाना।
आप्लुत(वि०)–नहाया हुआ, स्नात।
आप्व(पु०)-वायु। स्त्री०–गर्दन।
आफूक(न०)–अफीम। [माम।
आबद्ध(वि०)–बंधा हुआ, जकड़ा हुआ,
आबन्ध् (९ प०)–बांधना, जकड़ना, बनाना।
आबन्ध(पु०)–बांध, बंधन, भूषण।
आबन्धन(न०)–पूर्ववत्।
आबल्य(न०)–कमज़ोरी।
आबाध्(१आ०)-रोकना,उल्लंघना, बाधा डालना, दिक़ करना।
आबाध(पु०)–चोट, दुःख, हानि।
आबिल(वि०)–काला, मैला।

आबुध्(१प०)–समझना, देखना।
आबोधन(न०)–ज्ञान, समझ, शिक्षा।
आब्दिक(वि०)–सालाना, वार्षिक।
आभरण(न०)–भूषण, ज़ेवर, सजावट।
आभा(३प०)–चमकना। स्त्री०–प्रकाश, सुन्दरता, दीप्ति, चमक।
आभाणक(पु०)–कहावत, लोकोक्ति।
आभाष् (१ आ०)–बातचीत करना, मुख़ातिब करना, चिल्लाना।
आभाषण(न०)–बातचीत, गुफ़्तगू।
आभास्(१आ०)-चमकना, दिखलाई देना
आभास(पु०)-प्रतीति, समानता, चमक, भूमिका।
आभास्वर(वि०)-चमकीला, शानदार।
आभिजन(वि०)–जन्मसम्बन्धी, कुल-सम्बन्धी। न०–कुलीनता।
आभिजात्य(न०)–कुलीनता, विद्वत्ता, सुन्दरता, चतुराई।
आभिधानिक(वि०)–शब्दकोष में का, पु०--कोशकार। [सम्मुख होना।
आभिमुख्य(न०)–सामना, मुक़ाबिला,
आभीक्ष्ण्य(न०)–बार २ होना, लगातार, दुहराना।
आभीर(पु०)–ग्वालिया, अहीर, देशभेद
आभीरपल्ली(स्त्री०)–ग्वालों के घर, गोपों का ग्राम। [होती।
आभील (स्त्री०)-भयावना, भयङ्कर,
आभूति(स्त्री०)व्याप्ति, शक्तिशालिता
आभोग(पु०)-संपूर्णता, पूरापन, टेढ़ापन, गीत की समाप्ति, सन्तुष्टि।
आभ्यन्तर(वि०)–अन्दरूनी, अन्दरका

आभ्यवहारिक (वि०)-भक्षण करने योग्य ।

आभ्यासिक (वि०)-अभ्यासगत, अभ्यास से उत्पन्न ।

आभ्युदयिक (वि०)-उन्नति-सम्पदा देने वाला, अभ्युदय करने वाला, शुभ कर्म ।

आम् (अ०)-स्वीकारी, मंजूरी, स्मृति और निश्चय का बोधक, हां, अच्छा ।

आम (वि०)-कच्चा, अपरिपक्व । पु०-अजीर्ण, बदहज़मी ।

आमञ्जु (वि०)-सुन्दर, मनोहर ।

आमण्ड (पु०)--अरण्ड का वृक्ष ।

आमनस्य (न०)--कष्ट, दुःख ।

आमन्त्र् (१०आ०)--अलविदा कहना, बातचीत करना, निमन्त्रित करना।

आमन्त्रण (न०)--निमन्त्रण, बुलावा, अभिनन्दन, स्वागत, विचार, बातचीत ।

आमन्त्रणा (स्त्री०)--पूर्ववत् ।

आमय (पु०)--रोग, बदहज़मी ।

आमयावी (वि०)--रोगी, अजीर्ण रोग वाला ।

आमरणान्तिक (वि०)--जीवन भर रहने वाला ।

आमर्शण(न0) -छूना, विचारना,स्पर्श।

आमर्षः-र्षणम्-क्रोध, गुस्सा, बेसबरी

आमलक[की](पु०)--आंवला, आंवले का पेड़ । न०--आंवले का फल ।

आमात्य (पु०)--मन्त्री, वज़ीर ।

आमाशय (पु०)—उदर में भोजन पकने का स्थान ।

आमिक्षा (स्त्री०)—फटा हुआ दूध ।

आमिष (न०)—मांस, खाद्य वस्तु, रिश्वत, इच्छा, कामदेव का गुण, विषय, लोभ ।

आमील् (१प०)—आंखें बन्द करना, ध्यानावस्थित होना ।

आमीलन(न०)—आंखों का बन्द करना व खोलना ।

आमुख (न०)-आरम्भ, नाटक की प्रस्तावना ।

आमुच् (६ उ०)-ढीला करना, मुक्त करना, छोड़ना । [पहिरना ।

आमोचन(न०)—त्याग, मुक्ति,छोड़ना,

आमुष्मिक(वि०)—जो ऐहिक न हो, परलोकसम्बन्धी । [दबाना ।

आमृद् (९ प०)—रगड़ के कुचलना,

आमृश् (६ प०)-छूना,हाथ डालना ।

आमोद (पु०)—खुशी, दिलबहलाव, तेज़ खुशबू । [बुदार ।

आमोदित(वि०)—हर्षित, खुश, खुश-

आमोष(पु०)—चोरी, लूट ।

आम्नाय(पु०)—वेद, निगम, आगम, परम्परा से प्राप्त उपदेश ।

आम्बिकेय(पु०)—कार्त्तिकेय,धृतराष्ट्र।

आम्भस(वि०)—जलयुक्त, रसालु ।

आम्र(पु०)—आम का वृक्ष । न०—आम का फल ।

आम्रातक(पु०)—सिरावा,आमड़ा वृक्ष।

आम्रेडित(वि०)—बार २ कहा हुआ ।

आम्ल(पु०)–इमली का वृक्ष। न०–खट्टापन। [वृक्ष।
आम्ला-आम्लिका(स्त्री०)–इमली का
आय(पु०)–प्राप्ति, आमदनी, धनागम, लाभ, अन्तःपुर का रक्षक।
आयत(१ आ०)–यत्न करना, कोशिश करना।
आयत (वि०)–बड़ा, लम्बा, खेंचा हुआ, रोका हुआ। [वेदि।
आयतन (न०)–जगह, घर, आश्रय-
आयति(स्त्री०)–लम्बाई, भविष्यकाल, मेल, प्रापण।
आयत्त(वि०)–अधीन.पालतू वशीभूत।
आयत्ति (स्त्री०)--अधीनता, वशता, शक्ति, सीमा, लम्बाई।
आयस् (४ पु०)–यत्न करना, थक जाना। [लोहा, हथियार।
आयस (वि०)--लोहनिर्मित। न०--
आयस्त(वि०)--दुःखी, व्याकुल,क्रोधित
आया(२ पु०)–आना, पहुंचना, प्राप्त करना, नतीजा निकलना।
आयात(वि०)–आया हुआ, आगत।
आयाति(स्त्री०)–आमद,समीप आगमन।
आयान(न०)–मिजाज, प्रकृति,आमद
आयाम (पु०)–लम्बाई, प्रसारण, तनाव।
आयल्लक(पु०)–बेसबरी, तीव्रइच्छा।
आयास(पु०)–यत्न, कठिनता, दुःख, मानसिक कष्ट।
आयु(पु०)–मनुष्य, जाति, आदिम मनुष्य, जीवन, वायु, पुत्र।
आयुः[स्] (न०)–जीवनकाल, जीवनीशक्ति, भोजन।
आयुक्त(वि०)–नियुक्त, मुक़र्रिर। पु०–डिप्टी, प्रतिनिधि।
आयुज् (७ उ०)–बांधना, मुक़र्रिर करना, लगाना।
आयुध् (४ आ०)–लड़ना, मुक़ाबिला।
आयुध(अस्त्री०)–हथियार, अस्त्र।
आयुर्वेद(पु०)–चिकित्साशास्त्र, ऐसा शास्त्र जिस में रोगों का निदान और चिकित्सा बतलाई गई हो।
आयुष् (न०)–जीवन।
आयुष्काम (वि०)–आरोग्य चाहने वाला। [अवस्था का।
आयुष्मान् [ष्मत्]–दीर्घजीवी, बड़ी
आयुष्य(वि०)–हितकर, उम्र बढ़ाने वाला। [तट, किनारा।
आयोग(पु०)–फूल, चन्दन आदि भेंट,
आयोगव(पु०)–शूद्र से वैश्य की स्त्री में उत्पन्न हुई सन्तान।
आयोजन(न०)–यत्न, उद्योग, तरकीब सामान इकट्ठा करना।
आयोधन(न०)--युद्ध, लड़ाई, युद्धस्थल
आर(अस्त्री०)--पीतल, लोहे का जंग, कोना, मधुराम्ल फल। [भूषण।
आरकूट(अस्त्री०)--पीतल, पीतल का
आरट(पु०)–अभिनयकर्त्ता।
आरट्ट(पु०)–हिरात प्रदेश।
आरट्टज(पु०)–अर्बी घोड़ा।
आरधि(पु०)–गर्त, भवर।
आरण्यक(पु०)--जंगली मनुष्य। न०-ब्राह्मणग्रन्थों के कोई २ अध्याय

इस नाम से पुकारे जाते हैं। वि०-जंगल में पैदा हुआ। [सीधा।
आरत(वि०)-रोका हुआ, शरीक,
आरति(स्त्री०) उपरम,ठहराव,निवृत्ति
आरण(पु०)-एक घोड़े की गाड़ी।
आरब्ध(वि०)-आरम्भ किया हुआ।
आरभ्(१ आ०)-आरम्भ करना, शुरू करना, प्राप्त करना, पकड़ना।
आरभट(पु०)--साहसी मनुष्य।
आरभटी(स्त्री०)--साहस, खेल, नाच, नटों की क्रीड़ा।
आरम्भ(पु०)शुरू, उद्योग, भूमिका, काम, तैयारी, यत्न, जल्दी, वध, अहङ्कार।
आरव(पु०)--ध्वनि, आवाज़, शब्द।
आरा(स्त्री०)--लोहे का एक अस्त्र जो चमड़ा फाड़ने में काम आता है।
आरात्(अ०)--निकट, पास, दूर।
आराध्(५,१० प०)--खुश करना,संतुष्ट करना, पूजना।
आराधन(न०)-पूजा,उपासना,सन्तुष्टि, साधन, प्राप्ति।
आराधना(स्त्री०)--सेवा, पूजा।
आराम(वि०)-मनोहर। पु०-खुशी, वाटिका, उपवन।
आरामिक(पु०)-बागवान, माली।
आरालिका(पु०)-बावर्चीखाना, रसोइया।
आरु(२ प०)-चिल्लाना,प्रशंसा करना।
आरु(पु०)-सूअर, केकड़ा।
आरुच्(१ आ०)-पसन्द करना।
आरुणि(पु०)-उद्दालक ऋषि, यम, वैनतेय।
आरुध्(७ उ०)-रोकना, दूर हटाना।
आरुह्(१ प०)-चढ़ना, प्राप्त करना।
आरूढ(वि०)-उन्नत, चढ़ा हुआ, बैठा हुआ।
आरोग्य(न०)-रोगाभाव, तन्दुरुस्ती।
आरोप(पु०)-अन्य में अन्य का धर्म प्रतीत होना-जैसे रस्सी में सर्प का ज्ञान, स्थापन, कल्पना, धनुष् झुकाना।
आरोपण(न०)-आरोपित करने का कार्य, क़ायम करना, लगाना।
आरोपित(वि०)-लगा हुआ, खिंचा हुआ, रक्खा हुआ।
आरोह(पु०)-सवार, चढ़ना, ऊंचा उठना, ऊंचा स्थान, दर्प, पहाड़, लम्बाई।
आरोहण(न०)-चढ़ाई,चढ़ना, सीढ़ी।
आर्जव(न०)-सरलता,सीधापन, शुद्ध-हृदयता। [विनाशी।
आर्त्त(वि०)-दुःखी,रोगी,सताया हुआ,
आर्त्तनाद(पु०)-करुणाजनक आवाज़, आर्त्तध्वनि, रोने की आवाज़।
आर्त्तव(न०)-स्त्री का रज, स्त्रीपुष्प, पुष्प।
आर्त्तवी(स्त्री०)-घोड़ी।
आर्त्तवेयी(स्त्री०)-ऋतुमती स्त्री।
आर्थिक(वि०)-धन सम्बन्धी,पण्डित, वास्तविक, सच्चा। [युक्त।
आर्द्र(वि०)-तर,गीला, मुलायम, रस-
आर्द्रक(न०)-अदरक।
आर्ध(वि०)-आधा।
आर्य(वि०)-श्रेष्ठ, पूजायोग्य, मान-

नीय,शरीफ,उदारचरित,कुलीन। पु०–आर्यजाति में उत्पन्न पुरुष, द्विजाति,प्रतिष्ठित पुरुष,स्वामी, प्रभु, गुरु, मित्र।
आर्यक(पु०)–श्रेष्ठ मनुष्य, पितामह, नाना, माननीय।
आर्यपुत्र (पु०)--पति, गुरु का पुत्र, नाटक में स्वामी और भर्त्ता के लिये प्रयुक्त होता है।
आर्यभट्ट(पु०)--एकज्योतिषी का नाम जिसने बीजगणित विद्या को निकाला। [लमैत।
आर्यमिश्र(वि०)–श्रेष्ठ, पूजनीय,जयिट-
आर्या(स्त्री०)--पार्वती, सासू, एक छन्द, श्रेष्ठ स्त्री।
आर्यावर्त्त (पु०)–विन्ध्याचल और हिमालय के बीच का प्रदेश, पूर्व समुद्र से लेकर पश्चिम समुद्र तक के मध्य का देश।
आर्ष(वि०)--जो ऋषि का हो, वैदिक, पवित्र,अमानुषी। पु०–एक प्रकार का विवाह जिस में कन्या का पिता दो या चार गौ वरपक्ष से ग्रहण करता है। [नीय।
आर्षेय(वि०)–ऋषि का, योग्य, मान-
आर्हत(पु०)–जैन, जैन सिद्धान्तों के मानने वाला।
आल(वि०)-बड़ा, विस्तीर्ण। न०स्त्री०- हरताल, धोखा, फरेब।
आलक्तक(न०)–अवराब।
आलप्(१ प०)--वार्तालाप करना।
आलभ् (१आ०)--छूना; मारन करना; पकड़ना।
आलभन(न०)--स्पर्श; छूना, पाना।
आलम्ब्(१ आ०)--झुक कर सहारा लेना; पकड़ना, आश्रित होना।
आलम्ब(पु०)--अवलम्ब; आश्रय।
आलम्बन(न०)--पूर्ववत।
आलम्बित(वि०)–आश्रित;लटकाहुआ
आलम्भ(पु०)--स्पर्श, छूना।
आलम्भन(न०)–पूर्ववत्।
आलय(पु०)–गृह, छिपने का स्थान।
आलवाल(न०)---वृक्ष की जड़ का थांवला।
आलस्य(वि०)--सुस्त,उदासीन। न०--सुस्ती, यत्नाभाव।
आलान(न०)--हाथी के बांधने का खम्भ वा रस्सी, बेड़ी, जञ्जीर।
आलाप(पु०)--संभाषण, बातचीत, गुफ्तगू, संगीत के सात स्वर।
आलाबु(पु०)--तूंबी। [पंखा।
आलावर्त(पु०)–कपड़े का बना हुआ
आलि(वि०)-सुस्त; निकम्मा; ईमान- दार। पु०--बिच्छू; मक्खी।
आलि-ली(स्त्री०)-पुल; जाति; पंक्ति; क़तार; समवयस्क सखी।
आलिख् (६ प०) -लिखना; खाका खींचना; मुसव्वरी करना; खाका खींचना। [मिलना।
आलिङ्गन(न०)–प्रेम पूर्वक आपस में
आलिंजर(पु०)--पानी भरने का मटका।
आलिप्(६प०)--लेपन करना;मलना।
आलिम्पन (न०)--मकान में सफ़ेदी करना। [हुआ; छत।
आलीढ(वि०)–खाया हुआ; चाटा

आलीनक(न०)--ऐसी धातु जो अग्नि के लगते ही पिघल जाय जैसे रांग, शीशा।
आलेख(पु०) -लेख; दस्तावेज़; ख़त।
आलेखन(न०)--लिखना,कुन्दा करना; ड्राइङ्ग।
आलेखनी(स्त्री०)--बुरुश; पेंसिल।
आलेख्य(न०)-चित्रपट, मूर्ति, कुनवा।
आलोक् (१ आ०,१० प०)-देखना, विचार करना, सोचना। [अध्याय।
आलोक(पु०)-प्रकाश, दर्शन, नज्ज़ारा,
आलोकन(न०)-पूर्ववत्।
आलोकित(वि०)-देखा हुआ, दृष्ट।
आलोच्(१ आ०,१० उ०)-देखना, विचारना, सोचना। [वाला।
आलोचक(वि०)-गुणदोष का बताने
आलोचना (स्त्री०)-देखना; विचार करना; गुण दोष का प्रकट करना।
आवप्(१ उ०)-बखेरना, इधर उधर डालना। [बनाना, थाली।
आवपन (न०)-खेत में बीज डालना, क्षौर
आवय (पु०)-आमद, आने वाला।
आवरक (न०) परदा, ढांकने का वस्त्र।
आवरण (न०)-छिपना,ढांकना,छिपाना, अज्ञान का पर्दा,वेदान्तमत में अविद्या के कारण आत्मज्ञान का न होना।
आवर्जित (वि०)-झुका हुआ, प्रक्षिप्त, आहत।
आवर्त (पु०)-पानी का स्वयं चक्कर काटना, भंवर। न०-माक्षिक धातु।
आवर्तक (पु०)-पूर्ववत्।
आवर्तन (न०)-चक्कर काटना, बार २ लौटना, अध्ययन।
आवर्तित (वि०)-अभ्यस्त,लौटा हुआ।
आवश्य (न०)-ज़रूरत, अनिवार्य कार्य।
आवश्यक (वि०)-जरूरी, अनिवार्य।
आवश्यकता (स्त्री०)-ज़रूरत, अनिवार्य कार्य। [होना।
आवस् (१ प०)-रहना, बसना, मशगूल
आवसति (स्त्री०)-रात्रि, मध्यरात्रि।
आवसथ (पु०)-घर, निवासस्थान, ग्राम, विश्रामस्थान।
आवसित (वि०)-निश्चित, समाप्त।
आवह् (१प०)-लाना, लेजाना।
आवाप (पु०)-बोने का बीज, आलवाल, अन्न भरने का बर्तन।
आवापन (न०)-हजामत बनाना, चर्खा।
आवास (पु०)--घर, कमरा।
आवाह (पु०)-विवाह करना।
आवाहन (न०)—निमन्त्रण; बुलावा। उपासनार्थ देवता का बुलाना।
आवाल (न०)—आलवाल।
आविक (न०)-भेड़के बालों से बना हुआ कम्बल; ऊनी कपड़ा। वि०-ऊनी।
आविग्न (वि०)-दुःखी, सन्तप्त।
आविद् (धा०)-ज्ञात कराना, रिपोर्ट करना, बतलाना।
आविद्ध (वि०)—बिंधा हुआ, पराजित।
आविल (वि०)-गन्दा, अपवित्र,धुंधियाला
आविश्(६उ०)-प्रवेश करना,कब्जे में लाना।
आविष्ट (वि०)-प्रविष्ट, भूतादि से दबाया गया; तत्पर।
आवी,स्त्री०)---ऋतुमती स्त्री, गर्भवती स्त्री।
आवीत(वि०)--पहरा हुआ, धारण किया हुआ, गत।
आवुक(पु०)--पिता, जनक [नाटकमें]
आवुत्त(पु०)--भगिनीपति [नाटकमें]
आवृ (५, ९, १० उ०)-ढकना,छिपाना,

घेरना, पसन्द करना।
आवृत(वि०) ढकाहुआ,गुप्त,घिराहुआ
आवृत्त(वि०) -अभ्यस्त, अधीन, घूटा हुआ। [छिपाना।
आवृति (स्त्री०)--आवरण, ढकना,
आवृत्ति (स्त्री०)--अभ्यास, बार २ गुणना, लौटना।
आवृष्टि(स्त्री०)--बौछार, बूंदाबांदी
आवेग(पु०) -दुःख, घबराहट, जल्दी, चिन्ता, जोश।
आवेश(पु०) -अहंकार, हट, दुराग्रह, क्रोध, भूत प्रेतका चढना, प्रवेश।
आवेशन(न०)--कारखाना, घर, प्रवेश, क्रोध। [मान, अतिथि।
आवेशिक(वि०)-असाधारण।पु० मेह-
आवेष्टक(पु०) -कन्दील, घेरा, प्राचीर
आवेष्टन(न०) चक्कल बनाना, चारों तर्फ़ से बांधना, घेरा, वेढन, लिफ़ाफ़ा।
आव्यध्(४प०)- छेदना, ज़ख्मी करना, गोली चलाना, खदेड़ना।
आश(वि०) -खाने वाला।
आशंस्(१आ०)--आशा करना, इच्छा करना, दुआ देना, तारीफ़ करना, भयभीत होना।
आशंसा(स्त्री०) इच्छा, उम्मेद, शक, ख्यालीपुलाव।
आशंसित(वि०) -इच्छित, कथित।
आशंसु(वि०)--उम्मेदवार, इच्छुक।
आशक्ति(स्त्री०) शक्ति, कार्यक्षमता।
आशंक्(१आ०) शक करना, सन्देह करना, आशंका करना।

आशंका(स्त्री०)- संशय, संकोच, डर।
आशंकित(वि०) सन्दिग्ध, भययुक्त।
आशय(पु०)--अभिप्राय, मतलब, सोने का कमरा, घर, अभ्युदय, मर्ज़ी, प्रारब्ध, कटहल का वृक्ष।
आशर(पु०) -अग्नि, वायु, राक्षस।
आशव(न०) -तेजी, तीव्रता, आसव।
आशा(स्त्री०) उम्मेद,लम्बी ख्वाहिश, दिशा।
आशान्वित (वि०)- आशा से भरा हुआ, आशाजनक।
आशाभङ्ग(पु०)--ना-उम्मेदी।
आशाहीन(वि०)--ना-उम्मेद।
आशावान्(वि०)- आशा से भरा हुआ
आशास्(२आ०) -दुआ देना, आशीर्वाद देना, इच्छा करना, आज्ञा करना। [पेट भरा हुआ।
आशित(वि०)--खाया हुआ, भुक्त,
आशिस्[षी] (स्त्री०) दुआ, शुभकामना।
आशी (स्त्री०) -सर्प की विषयुक्त, दंष्ट्रा, दुआ, शुभकामना।
आशी(२आ०)सोना, लेटना, रहना, आबाद होना।
आशीर्वाद (पु०)- आशीर्वचन, शुभकामना, शुभेच्छा।
आशीविष(पु०) -जिस की दाढ में विष हो अर्थात् साप।
आशु(वि०) -तेज, जल्द, शीघ्रगामी।
आशुग(वि०) शीघ्रगामी, जल्दीजाने वाला। पु०-वायु; सूर्य, तीर।
आशुता(स्त्री०)--जल्दी, तेजी।

आशुतोष(वि०)--आसानी से प्रसन्न होने वाला, शिव। [वाला।
आशुबोध(वि०)--जल्दी से ज्ञान कराने
आशेकुटी [न्] (पु०)-पर्वत, पहाड़।
आशोषण(न०)-सुखाना, सुखाने का काम।
आशौच(न०)-अशुद्धि, अपवित्रता।
आश्चर्य(न०)-ताज्जुब, अचंभा।
आश्म(वि०)-पत्थर का बना हुआ, पथरीला, आश्मिक।
आस्र(न०)-आंसू, आंख का जल।
आश्रम(अस्त्री०)-झोपड़ा, वानप्रस्थियों के घर, मठ, विद्यार्थियों का वासस्थान, वन, आर्यजीवन के चार विभाग जो ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास नाम से पुकारे जाते हैं।
आश्रमिक (वि०)-चार आश्रमों में से किसी से सम्बन्ध रखने वाला।
आश्रय (पु०)-घर, आधार, आसरा, जोरावर। [देने वाला।
आश्रयभूत (वि०)-दूसरों को आश्रय
आश्रयाश(पु०)-वन्हि, अग्नि।
आश्रव (पु०)-चश्मा, नदी, अपराध।
आश्रि(१उ०)-आश्रय ग्रहण करना।
आश्रि(स्त्री०)-तलवार की धार।
आश्रित(वि०)-आश्रयप्राप्त, शरणागत
आश्रु(५प०)-सुनना, स्वीकार करना, प्रतिज्ञा करना।
आश्रुत(वि०)-अंगीकृत, स्वीकृत।
आश्लेष(पु०)-सम्बन्ध, गहरा लगाव, आलिंगन।

आश्व(वि०)-घोड़े का, रथ वा गाड़ी जिसमें घोड़े जुतें।
आश्वतरणिक(पु०)-साईस, चाबोतरी
आश्वलायन (पु०)-एक ऋषि का नाम
आश्वास(पु०)-आश्रयदान, बढ़ावा देना। [कीन।
आश्वासन(न०)-भरोसा, बढ़ावा, तस-
आश्विन (पु०)-असौज का महीना।
आश्विनेय(पु०)-अश्विनीकुमार, नकुल और सहदेव का नाम।
आश्वीन(अस्त्री०)-घोड़े की एकमंजिल
आषाढ़ (पु०)-बरसात का पहिला मास जो जून वा जोलाई में होता है
आष्ट्री(स्त्री०)-बड़ा जंगल, चूल्हा।
आस् [आः] (अ०)-विस्मृति, क्रोध, दुःख, अपाकरण का बोधक।
आस्(१,२आ०)-बैठना, लेटना, रहना, आराम करना।
आस(पु०)-बैठने की जगह, धनुष, राख
आसक्त(वि०)-फंसा हुआ, लगा हुआ, मशगूल।
आसक्ति(स्त्री०)-लगाव, प्रेम, श्रद्धा, मेहनत, तत्परता।
आसंग (पु०)-अभिनिवेश, भोग की इच्छा, अनुरक्ति, सम्बन्ध।
आसंगिनी(स्त्री०)-हवा का चक्करदार झोंका अर्थात् बवूला।
आसज् (१प०)-बांधना, जोड़ना, जकड़ना।
आसंजन (न०)-हुक, अनुरक्ति, फंसाव।
आसक्ति (स्त्री०)-मिलान, गहरा मेल, लाभ, प्राप्ति।

आसद् (१प०)-नीचे बैठना, पास बैठना, इन्तज़ार करना, समीप आना।

आसन(न०)-बैठना, बैठने का स्थान, उपवेशन, आरामकरना, चौकी।

आसन्न (वि०)-समीपस्थ, उपस्थित, नज़दीक।

आसन्द (पु०)-विष्णु या वासुदेव।

आसन्दी(स्त्री०)-छोटा कौच, आराम-कुरसी।

आसव (पु०)-मद्यमात्र, हरएक प्रकार की शराब, खिरका, नशीली औषध।

आसादन (न०)-सन्निधान, रखना, आक्रमण, सम्मिलन, प्राप्ति।

आसायन (न०)-प्राप्ति, पूर्त्ति।

आसार (पु०)-ज़ोर की वर्षा, झड़ी, आक्रमण, रसद। [योद्धा।

आसिक (पु०)-तलवार चलाने वाला

आसिध् (१प०)-पकड़ना, हवालात में करना। [प्रसव।

आसुति (स्त्री०)-शराब निकालना,

आसुर (वि०)-दैत्य का, आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिस में कन्या क्रीत की जाती है।

आसुरी (स्त्री०)-सर्जरीविद्या, राक्षसी। [सींचना।

आसेक (पु०)-सिंचन, छिड़काव,

आसेध(पु०)-हिरासत, क़ैद, हवालात

आसेवा-अव्यय्-इच्छापूर्वक बार बार प्रवृत्ति, किसी काम को बार २ करना, भले प्रकार सेवा करना।

आस्कन्द् (१प०)-आक्रमण करना, हमला करना।

आस्कन्दन (न०)-आक्रमण, हमला।

आस्तर (पु०)-बिछौना, फ़ूल, कम्बल।

आस्तरण (न०)-फैलाव, विस्तर, कम्बल, गद्दी।

आस्ताव (पु०)-तारीफ़, प्रशंसा।

आस्तिक (वि०)-ईश्वरभक्त, वेदानुयायी, शुद्धाचारी।

आस्तिकता (स्त्री०)-शुद्धाचार, वेद-विहित आचार। [पुत्र।

आस्तीक (पु०)- जरत्कारु मुनि का

आस्तीर्ण (वि०)-विस्तीर्ण, फैला हुआ।

आस्था (स्त्री०)-ध्यान, चिन्ता, आशा, भक्ति, विश्वास, स्थिति।

आस्थान (न०)-स्थान, बुनियाद, समूह, चिन्ता, विश्रामस्थान।

आस्थानी (स्त्री०)-लेक्चरहाल, वक्तृतागृह।

आस्थिति (स्त्री०)-दशा, हालत।

आस्नान (न०)-पवित्रता, नहाने का जल।

आस्पद (न०)-स्थान, जगह, दरजा, पद, कारोबार, सहारा।

आस्पर्धा (स्त्री०)-रश्क, चढ़ाऊपरी।

आस्फालन (न०)-रगड़ना, पछाड़ना, पिसना, दर्प।

आस्फोट (पु०)-अर्क वृक्ष, ख़म ठोकना, कांपना।

आस्माक (वि०)-हमारा, अपना।

आस्य (न०)-मुख, चेहरा, जमाहा।

आस्यपत्र (न०)–कमल।
आस्यलांगल (पु०)–कुत्ता, सूअर।
आस्यन्दन (न०)–बहना।
आस्या(स्त्री०)–स्थिति, आसन, निवास
आस्यासव (पु०)–थूक, लार, मुह का पानी।
आस्र (न०)–खून, रक्त।
आस्रप (पु०)–खूंख्वार, राक्षस।
आस्रव (पु०)–दुःख, कष्ट, बहना, अपराध।
आस्राव (पु०)–जख्म, लार, कष्ट।
आस्वद् (१आ०)–चखना, जायका लेना। [लेना।
आस्वाद (पु०)–रस, स्वाद, स्वाद
आस्वादन (न०)–जायका उठाना, खाना।
आह (अ०)–धिक्कार, सख्ती, हुक्म, प्रेषण आदि का बोधक।
आहत (वि०)–क्षत, ताडित, जाना हुआ। न०–पुराना या नया कपड़ा।
आहति (स्त्री०)–वध, आगति, गुणन
आहन् (२प०)–मारना, चोट करना, पीटना।
आहव (न०)–युद्ध, लड़ाई, यज्ञ, होम
आहार (पु०)–भोजन, खाना, आहरण, लाना।
आहार्य (वि०)–खाने के योग्य, आगन्तुक, उपाप्य, बनावटी। पु०–बन्ध। न०–उखाड़, वर्त्तन, नाटक का पोशाक पहने आदि सामान।
आहाव(पु०)–अग्नि, लड़ाई, बुलाना, चौबच्चा।
आहित (वि०)–स्थापित, रक्खा हुआ, टिकाया गया।
आहितुण्डिक (पु०)–सपेरा, सांप पकड़ने वाला।
आहुत (वि०)–यज्ञाग्नि में डाला हुआ। न०–आतिथ्यसत्कार।
आहुति (स्त्री०)–यज्ञ के समय सामग्री और घी का अंश बार बार मंत्र पढ़कर डालना। [हुआ।
आहूत (वि०)–निमन्त्रित, बुलाया
आहृ (१प०)–लाना, जाकर लाना, देना, वापिस पाना, खाना, बोलना, पुकारना।
आहेय (वि०)–सर्पसम्बन्धी।
आहो (अ०)–प्रश्न, विकल्प, विचार आदि में प्रयुक्त होता है।
आहोपुरुषिका (स्त्री०)–अहंकार से उत्पन्न हुआ अपनी बड़ाई का ख्याल।
आहोस्विद् (अ०)–आहो के समान।
आन्ह(वि०)–रोज़ाना, दिन में किया हुआ।
आन्हिक (वि०)–रोज़ाना, प्रत्येक दिन का। न०–प्रत्येक दिन किये जाने वाला धार्मिक कृत्य, भोजन, एक दिन का पाठ।
आह्लाद(पु०)–खुशी, हर्ष।
आह्वय(पु०)–नाम, जुआ।
आह्वान (न०)–आकारण, आहुति, बुलाना, निमंत्रण।
आह्वाय(पु०)–नाम, सम्मन, निमत्रण।
आह्वायक(पु०)–दूत, बुलावा देने वाला।

इ

इ—देवनागरी और संस्कृत वर्णमाला का तीसरा अक्षर जो स्वर है।
इ (पु०)--कामदेव। अ०--क्रोध, दया, तिरस्कार, आश्चर्य, खेद, सम्बोधन तथा दुःख का बोधक।
इ (१, २प०)-आना, पहुँचना, लौटना, गुजरना।
इकट(पु०)--सरकंडे का अङ्कुर या तना।
इक्षु(पु०)--गन्ना, मीठे रस का पौंडा, --इच्छा।
इक्षुकाण्ड(क्लस्त्री०)-काश और मुञ्ज तृण नामक दो भेद।
इक्षुकुट्टक(पु०)-ईख काटने वाला या काट कर एकत्रित करने वाला।
इक्षुपत्र(पु०)-ज्वार, चरी, जिस के पत्ते ईख के समान होते हैं।
इक्षुमेह(पु०) -शियाबतीस, मधुमेह का रोग।
इक्षुयन्त्र (न०)-रस निकालने की मशीन, कोल्हू।
इक्षुर(पु०)-तालमखाना, ईख।
इक्षुरस(पु०)--गन्ने का रस।
इक्षुविकार(पु०)--शक्कर, मिठाई, गुड़।
इक्षुसार(पु०)--गुड़, गन्ने का सार।
इक्ष्वाकु(पु०)-वैवस्वत मनु का पुत्र जो सूर्यवंश का पहिला राजा था।
इख-इङ्ख(१ प०)-जाना, हरकत करना।
इगि (१ प०)-पूर्ववत्।
इङ्गित(वि०)-हिला हुआ, गया हुआ। न०--चेष्टा, इशारा, मनोऽभिप्राय, मनोविकार को प्रकट करने वाली शरीर की चेष्टा, अभिप्राय।
इंगु (पु०)-रोग, बीमारी।
इंगुद-ल (पु०)-हिंगोट नामक वृक्ष।
इचिक्लि (पु०)-तालाब, कीचड़।
इच्छक (वि०)-चाहने वाला, ख्वाहिशमन्द।
इच्छा(स्त्री०)-ख्वाहिश, मर्जी, चाह।
इच्छादान(न०)-इच्छापूर्ति, चाह को पूरी करना।
इच्छानिवृत्ति (स्त्री०)-इच्छापूर्ति, इच्छा का पूर्ण होना, सांसारिक विषयों से उदासीनता।
इच्छु-क (वि०)-ख्वाहिशमन्द, चाह करने वाला। [इपति।
इज्य (पु०)-शिक्षक, परमात्मा, बृह-
इज्या(स्त्री०)-यज्ञ, गौ, प्रतिमा, दान।
इट् (१प०)-जाना, गलती करना, बढ़ाना।
इड् (स्त्री०)-आहुति, प्रार्थना, पृथ्वी, धरमात, भोजन।
इडा (स्त्री०)-पृथ्वी, वाणी, आहुति, नाड़ीभेद, दुर्गा, स्वर्ग, गौ।
इडाचिका (स्त्री०)-ततय्या।
इडिका (स्त्री०)-पृथ्वी, भूमि।
इण् (२प०)-जाना।
इत (वि०)-गया हुआ, स्मृत, प्राप्त।
इतर (वि०)-नीच, पामर, दूसरा, छोटे दर्जे का।
इतरतः-त्र (अ०)-अन्यत्र, अन्यतः।
इतरेतर (वि०)-आपस में, अन्योन्य, परस्पर।
इतरेद्युः(अ०)-और दिन, अगले दिन।

इतस्[:] (अ०)—यहां से, इस ओर से, अब से ।
इतस्ततः(अ०)—यहां वहां, इधर उधर।
इति (अ०)-हेतु, अभिप्राय, प्रकार, समाप्ति, निकटता, प्रारम्भ, मत आदि अर्थों का बोधक,इस तरह, इस प्रकार ।
इतिकथा(स्त्री०)—निरर्थक बातचीत ।
इतिकर्तव्य(वि०)—अवश्य करने लायक, अनिवार्य कर्तव्य ।
इतिवत्(अ०)—इस ही प्रकार से ।
इतिहास(पु०)—बीती हुई वार्ता का वर्णन करने वाली पुस्तक, पुराने वृत्तान्त का प्रकाशक, तवारीख ।
इत्थम्(अ०)-इस प्रकार से, इस रीति से ।
इत्यर्थ(पु०)-सार, संक्षेप, अभिप्राय ।
इत्य(वि०)—प्राप्तियोग्य । [लिये ।
इत्यर्थम्(अ०)—इस अभिप्राय से, इस
इत्यादि (वि०)-इन २ बातों या वस्तुओं को आरम्भ में लेकर, वगैरा ।
इत्युक्त(न०)-सूचना, रिपोर्ट ।
इदम्(सर्व०)—वक्ता के समीप की वस्तु का बोधक, यह ।
इदम्(अ०)—यहां, अत्र, अब ।
इदन्तन(वि०)—मौजूदा, क्षणिक ।
इदानीम्(अ०)—अब, इस दशा में, बाकी ।
इदानीन्तन(वि०)—मौजूदा, क्षणिक, वर्तमान काल का ।
इद्ध(न०)—धूप,प्रकाश । वि० निर्मल ।
इध्म(न०)—लकड़ी, समिधा, ईंधन ।
इन्दिरा (स्त्री०)-विष्णु की स्त्री, लक्ष्मी ।
इन्दी[न्दि] वर(न०)—नीला कमल ।
इन्दु(पु०)—चन्द्रमा, कापूर, मृगशिर नक्षत्र, एक की संख्या ।
इन्दुकमल(न०)—सफेद कमल ।
इन्दुकला (स्त्री०)-चन्द्रमा की १६ कलाओं में से कोई ।
इन्दुकान्त(पु०)-चन्द्रकान्त मणि, केतकी, रात्रि ।
इन्दुज-पुत्र(पु०)—चन्द्रमा का पुत्र बुध ।
इन्दुजनक(पु०)—समुद्र, अत्रि ऋषि ।
इन्दुजा(स्त्री०)—नर्मदा नदी ।
इन्दुमणि(पु०)--चन्द्रकान्त मणि ।
इन्दुमती(स्त्री०)—पूर्णिमा, अजराज की पत्नी । [कला ।
इन्दुलेखा(स्त्री०)-सोमलता, चांद की
इन्दुलोहक-लौह(न०)—चांदी ।
इन्दूर(पु०) चूहा, मूषकी ।
इन्द्र(पु०)—देवताओं का स्वामी अर्थात परमेश्वर, प्रभु, वर्षा का अधिष्ठातृदेव,सर्वोत्तम,यज्ञपद्य ।
इन्द्रक(न०)—सभागृह, हाल ।
इन्द्रकील(पु०)—मन्दर पर्वत, चट्टान ।
इन्द्रकुञ्जर(पु०) ऐरावत हस्ती ।
इन्द्रगिरि(पु०) -महेन्द्र पर्वत ।
इन्द्रगोप(पु०)—बीरबहूटी, तीज ।
इन्द्रजाल(न०)—युद्ध में एक प्रकार का दाव पेंच, छल, धोखा, माया ।
इन्द्रजालिक(वि०)-धोखेबाज, अवास्तविक । पु०-छलिया, मदारी ।

इन्द्रजित(पु०)–इन्द्र को जीतने वाला रावण का पुत्र मेघनाद।
इन्द्रनील(पु०)–नीलम,पन्ना।
इन्द्रपत्नी(स्त्री०)–इन्द्र की स्त्री, इन्द्राणी, शची।
इन्द्रप्रस्थ(न०)–यमुना के तट पर एक नगर जिसे पाण्डवों ने बसाया था वर्त्तमान में जो देहली कहलाता है।
इन्द्रलोक (पु०)–देवताओं का लोक, स्वर्ग।
इन्द्रवज्रा(स्त्री०)–एक छन्द का नाम।
इन्द्रवल्ली(स्त्री०)–पारिजात वृक्ष।
इन्द्रवृक्ष(पु०)–देवदारु वृक्ष।
इन्द्रशत्रु(पु०)–इन्द्र जिस का शत्रु है या इन्द्र का जो शत्रु है,वृत्रासुर।
इन्द्रसुत(पु०)–अर्जुन, जयन्त।
इन्द्राणी(स्त्री०)–शची,इन्द्र की स्त्री, बड़ी इलायची।
इन्द्रायुध (न०)–इन्द्र का धनुष् जो वर्षा के पश्चात आकाश में धनुषाकार दिखलाई देता है।
इन्द्रासन(न०)–इन्द्र का सिंहासन, कोई सिंहासन।
इन्द्रिय(न०)–चिन्ह, ज्ञान और कर्म के साधन जैसे नेत्र, कर्ण आदि। मनुष्य के शरीर में पांच ज्ञानेन्द्रिय और पांच कर्मेन्द्रिय हैं। यथा–नेत्र, कर्ण, नासिका, त्वचा और रसना ये ज्ञानेन्द्रिय और हाथ, पांव, वाणी, गुदा, और उपस्थ ये कर्मेन्द्रिय हैं।
इन्द्रियग्राम (पु०)–पांचों कर्मेन्द्रिय, इन्द्रियसमूह।
इन्द्रियनिग्रह(पु०)–इन्द्रियदमन।
इन्द्रियागोचर(वि०)–जो दिखाई न दे, जो अनुभव न किया जासके।
इन्द्रियायतन(न०)-इन्द्रियों का निवासस्थान अर्थात् शरीर।
इन्द्रियाराम (वि०)–इन्द्रियलोलुप, विषयों में फंसा हुआ।
इन्ध्(७आ०)–जलाना, आग लगाना, रोशन करना।
इन्धन(पु०)–ईंधन, परमात्मा। [काष्ठ
इन्धन(न०)–आग रोशन करना,ईंधन,
इन्व्(६प०)–जाना, पकड़ना, घेरना।
इभ(पु०)–हाथी, ८ की संख्या।
इभकणा(स्त्री०)–गजपिप्पली।
इभनिमीलिका(स्त्री०)–चतुराई,सभीदगी, विजया, भाग।
इभपोत(पु०)–हाथी का बच्चा,पोता।
इभारि(पु०)–सिंह, शेर।
इभ्य(वि०)–धनवान्, अमीर। पु०–राजा, हाथीवान, शत्रु।
इभ्या(स्त्री०)–हथिनी।
इयत् (वि०)–इतना, यहां तक।
इयत्ता(स्त्री०)–सीमा, हद्, परिमाण, गिनती।
इर्(६प०)–जाना।
इरण(न०)–मरुभूमि, ऊसर भूमि।
इरम्मद(पु०)–बिजली, वाड़वानल।
इरा(स्त्री०)–वाणी, सरस्वती, पृथ्वी, जल, सुरा।
इरावती(स्त्री०)–रावी नदी; रुद्र की स्त्री दुर्गा।

इरावान्(पु०)–समुद्र, राजा, बादल।
इरिण(न०)–ऊसरभूमि, निराश्रय।
इरेश (पु०)–राजा, भूपति, वरुण, विष्णु, गणेश।
इर्वारु–लु (वि०)–हिंसक, नाशक। अव्स्त्री०–ककड़ी।
इल् (६प०, १० उ०)–जाना, सोना, फेंकना, एक जगह खड़े रहना।
इलविला(स्त्री०)–कुबेर की माता जो पुलस्त्य मुनि की कन्या थी।
इला (स्त्री०)–भूमि, गौ, वाणी।
इलिका (स्त्री०)–भूमि, पृथिवी।
इली (स्त्री०)–छोटी तलवार।
इव् (१ प०)–फैलना, व्याप्त होना।
इव (अ०)–समान, मानिन्द, उत्प्रेक्षा, मानो, थोड़ा।
इष् (६ प०)–चाहना, इच्छा करना।
इष् (वि०)–तीव्रगामी, इच्छुक।
इष (पु०)–आश्विन मास, बलवान्।
इषित (वि०)–तीव्र, आन्दोलित, प्रेषित।
इषु (पु०)–बाण, ५ का अङ्क।
इषुक (वि०)–तीर के समान।
इषुधि (पु०)–तरकस, बाण रखने का घर।
इष्ट (वि०)–इच्छित, प्रिय, पसन्द, पूजित। पु०-प्रेमी, पति, मित्र, एरण्ड वृक्ष, विष्णु, यज्ञ। न०-इच्छा, सत्कार।
इष्टका(स्त्री०)–ईंट, पका हुआ मिट्टी का टुकड़ा।
इष्टदेव(पु०)–प्रियदेवता, आराध्यदेव।
इष्टापूर्त (न०)–लोकोपकारी कार्यों का सम्पादन।
इष्टि (स्त्री०)–प्रार्थना, इच्छा, अभिलषित वस्तु।
इष्टिपच (पु०)–राक्षस, असुर, कंजूस।
इष्टु (स्त्री०)–इच्छा, स्वाहिश।
इष्व (पु०)–धर्मगुरु।
इष्वसन (न०)–धनुष्।
इह (अ०)–यहां, इस स्थान में, इस लोक में, इस देश में, अत्र, इस समय।
इहकाल (पु०)–वर्त्तमान जीवन।
इहत्य (वि०)–इस लोक का।
इहामुत्र (अ०)–यहां और वहां, इस लोक में और परलोक में।

ई

ई (स्त्री०)–विष्णु की स्त्री लक्ष्मी। पु०-कामदेव। अ०-निराशता, क्रोध, खेद, दया, कष्ट और सम्बोधन इन अर्थों का बोधक।
ई (४ आ०)–जाना। (२ प०) जाना, चमकना, इच्छा करना, फेंकना, खाना, मांगना।
ईक्ष्(१ आ०)–देखना, चिन्ता करना, ख्याल करना।
ईक्षक (पु०)–तमाशबीन, द्रष्टा।
ईक्षण(न०)-देखना, दृष्टि, दर्शन, चक्षु।
ईक्षणिक(पु०)--ज्योतिषी, रम्माल।
ईक्षा (स्त्री०)–दृश्य, नज़ारा।
ईक्षिका (स्त्री०)–आंख, दृष्टि, नज़र।
ईङ्ख् (१प०)-हिलना जुलना, चलना।

ईड् (२आ०)–प्रशंसा करना, विनय करना, प्रार्थना करना।
ईडा (स्त्री०)–तारीफ, सराहना।
ईति(स्त्री०)–उपद्रवविशेष, मनुस्मृति में खेती को हानि पहुंचाने वाली ६ ईतियां गिनवाई हैं, जैसे–"अतिवृष्टिरनावृष्टिः, शलभा मूषकाः शुकाः। प्रत्यासन्नाश्च राजानः, षडेता ईतयः स्मृताः" ॥
ईदृक्–श् (वि०)–ऐसा, इस के समान, एतादृश।
ईदृक्ष–क्ष(वि०)–पूर्ववत्। स्त्री०-ईदृशी।
ईप्सित(वि०)–इच्छित, अभिलषित।
ईर् (२आ०,१प०)–जाना, हिलना, उठना।
ईरित (वि०)–गत, प्रेषित, कथित।
ईर्म (वि०)–आन्दोलित। पु०-बाजू। न०-जख्म, घाव।
ईर्या(स्त्री०)–ईर्ष्या, द्वेष, द्रोह।
ईर्ष्य् (१प०)–हसद करना, जलना।
ईर्ष्या (स्त्री०)–हसद, जलन, दूसरे की उन्नति को न सहना।
ईर्ष्या[र्ष्या]लु (वि०)–दूसरे की उन्नति को न देख सकने वाला।
ईश् (२आ०)–हकूमत करना, शासन करना, शक्तिशाली होना, स्वामी होना।
ईश (वि०)–स्वामी, शक्तिशाली। पु०–प्रभु, पति, रुद्र।
ईशा (स्त्री०)–आधिपत्य, बड़प्पन, दुर्गा का नाम, अमीर औरत।
ईशान (वि०)–स्वामी, धनी। पु०–प्रभु, अधिपति, शिव, ११ की संख्या। [ईशकोण
ईशिता(स्त्री०)–आधिपत्य, महत्त्व,
ईश्वर (पु०)–प्रभु, स्वामी, पति, परमेश्वर, शिव, कामदेव।
ईश्वरा (स्त्री०)–दुर्गा, लक्ष्मी।
ईश्वराधीन (वि०)–स्वामी के अधीन, प्रभु के आश्रित।
ईष्(१उ०)–उड़ जाना, देखना, देना, वध करना।
ईषणा (स्त्री०)–जल्दी, तेजी।
ईषत्(अ०)–कुछ २, थोड़ा २, किञ्चित्।
ईषत्कर (न०)–बहुत थोड़ा। वि०–सहजगम्य।
ईषदुष्ण (वि०)–थोड़ा २ गर्म।
ईषद्धास(पु०)–मुसकराना,मुसकराहट।
ईषा (स्त्री०)–हलदण्ड, फाली।
ईषिका (स्त्री०)–मुसव्विर का बुरुश, तीर, हाथी की आंख का गोलक।
ईषिर (पु०)–अग्नि।
ईह् (१आ०)–चाहना, चेष्टा करना, इच्छा करना।
ईहा (स्त्री०)–इच्छा, उद्योग, चेष्टा।
ईहावृक (पु०)–भेड़िया।
ईहित (न०)–चेष्टा। वि०–इच्छित, चेष्टित।

उ

उ–नागरी वर्णमाला का पञ्चम अक्षर, पांचवां स्वर।
उ (१आ०)–शोर करना, पुकारना।

उ (पु०)–शिव का नाम,ब्रह्मा । अ०–पुकारना, क्रोध, आज्ञा, प्रश्न, स्वीकारी, दया आदि अर्थों का बोधक ।

उकार (पु०)--उ स्वर, शिव।

उक्त (वि०)–कहा हुआ, कथित ।

उक्ति (स्त्री०)–कहना, वचन ।

उक्थ (न०)–स्तोत्र, प्रशंसावाक्य, सामवेद, एक प्रकार का यज्ञ ।

उक्ष् (१.६उ०)–सींचना, बखेरना, शुद्ध करना । [करना ।

उक्षण (न०)–जल सिंचन करके पवित्र

उक्षतर (पु०)–छोटा बैल या सांड ।

उक्षा (पु०)–बैल या सांड ।

उखाल (पु०)–बन्दर ।

उख् (१प०)–जाना, हरकत करना ।

उख(पु०)–हेगची ।

उग्र(वि०)–खूंख्वार, क्रूर, भयानक, सख्त, निर्दय, क्रोधी । पु०--शिव, रुद्र । न०–क्रोध, गुस्सा ।

उग्रकाण्ड (पु०)–करेला, कारवेल्ल ।

उग्रगन्ध (पु०)–चम्पक, चमेली, लहसुन, हींग ।

उग्रचारिणी-चंडा(स्त्री०)–दुर्गा ।

उग्रता(स्त्री०)–कठोरता,क्रूरता,क्रोध ।

उग्रदण्ड(पु०)–बे रहम,सख्त मिजाज ।

उग्रशासन (न०)--कठोर शासन ।

उग्रसेन (पु०)--धृतराष्ट्र का एक पुत्र, कंस का पिता मथुरा का राजा ।

उच् (४प०)–इकट्ठा करना, शौकीन होना, आदी होना ।

उचथ(न०)–प्रशंसा, स्तोत्र ।

उचित(वि०)–मुनासिब, ठीक, यथार्थ, मामूली, ज्ञात, ग्राह्य ।

उच्च(वि०)–ऊंचा, उन्नत, बड़ा हुआ, बलशाली ।

उच्चतरु(पु०)--नारियल का वृक्ष ।

उच्चता (स्त्री०)–ऊंचाई, बड़प्पन, उन्नति ।

उच्चन(न०)–मन २ में हंसना । [होना,

उच्चट्(१ प०)–चला जाना, अन्तर्धान

उच्चटा(स्त्री०)–दर्प, उजड्डपन ।

उच्चण्ड(वि०)–भयानक,ज़ोरका,क्रोधी ।

उच्चर्(१ प०)–बोलना, आवाज़ निकालना, शौच जाना, उठना, उदय होना ।

उच्चरित(वि०)–कहा हुआ, कथित ।

उच्चल्(१प०)–रवाना होना,चल जाना।

उच्चलन(न०)–रवानगी ।

उच्चाटन(न०)–उखाड़ना, अपनी जगह से अलग करना, उत्पाटन ।

उच्चार(पु०)--उच्चारण, कथन, गोबर, मल । [विषम, विविध ।

उच्चावच(वि०)–कहीं ऊंचा कहीं नीचा,

उच्चा[च्च]रण(न०)–बोलना, शब्द को मुंह से निकालना ।

उच्चूड-ल(पु०)–झंडे के ऊपर लटका हुआ कपड़ा, पताका, झंडे के ऊपर बांधा हुआ आभूषण ।

उच्चैः(अ०)--ऊंचा, ऊपर की ओर, ऊंचे स्थान में, लम्बा, पूरा २ ।

उच्चैःश्रवस्(वि०)–बधिर, बहिरा।पु०-इन्द्र का घोड़ा जो समुद्र में से

निकला था। [ध्वनि।
उच्चैःस्वर(पु०)-बड़ी आवाज़, दीर्घ-
उच्चैर्घुष्ट(न०)-मनादी, ढोंडी।
उच्चैस्तर(वि०)-अधिक ऊंचा, उच्चतर।
उच्चैस्तम(वि०)-सब से ऊंचा।
उच्छल्(१उ०)-हिलाना, ऊपर की तर्फ़ कूदना, मढ़ना।
उच्छादन(न०)-ढक्कन, शरीर पर सुगन्धित-द्रव्य मलना।
उच्छासन(वि०)-जो शासन में न रहे, उच्छृंखल।
उच्छास्त्र(वि०)-शास्त्रविरुद्ध।
उच्छिख(वि०)-ऊंची शिखा वाला, लपटों वाला।
उच्छित्ति(स्त्री०)-नाश, मलियामेट।
उच्छिद्(७उ०)-उखाड़ना, नाश करना, मलियामेट करना। [पदरूप।
उच्छिरः[रा](वि०)-ऊंचा, शरीफ़, उच्च-
उच्छिष्ट(वि०)-जूठा, खाने से बचा हुआ
उच्छीर्षक(न०)-तकिया, शीर्षविधान
उच्छुष्क(वि०)-सूखा हुआ, मुरझाया। हुआ। [सूखा हुआ।
उच्छून(वि०)-फूला हुआ, मोटा, ऊंचा,
उच्छृंखल(वि०)-अनियन्त्रित, अबाध, क्रमरहित।
उच्छेत्ता(पु०)-नाश करने वाला, नाम मिटाने वाला।
उच्छेदः-नम्-छेदन, काटना, विनाश।
उच्छेष(पु०)-बचा हुआ भाग, जूठन
उच्छोषण(न०)-सुखाना, सूखा करना
उच्छ्रित(वि०)-ऊंचा, चढ़ा हुआ, बढ़ा हुआ, अहंकारी।
उच्छुरेय(वि०)-पूर्ववत्।
उच्छ्व [च्छ्वा] सन(न०)-बाहिर सांस निकालना।
उच्छ्वास(पु०)-सांस का बाहिर निकालना, आह भरना।
उज्झ्(६प०)-त्यागना, समाप्त करना, बाधना।
उज्जय [यि] नी (स्त्री०)-मालवा प्रान्त की प्राचीन राजधानी जिस का राजा विक्रमादित्य इतिहासकीर्तित है।
उज्जासन(न०)-वध, क़त्ल।
उज्जि(१प०)-जीतना, जीत कर प्राप्त करना।
उज्जीव्(१प०)-तरोताज़ा करना, पुनर्वार जीवित होना।
उज्जीवन(न०)-दोबारा ज़िन्दगी।
उज्जृम्भ्(१आ०)-मुंह फाड़ना, मुंह फैलाना, चीरना। [लना।
उज्जृम्भ(पु०)-विकास, स्फुटन, खि-
उज्जृम्भाः-म्भणम्-पूर्ववत्।
उज्ज्वल(वि०)-चमकीला, चमकदार, शानदार, साफ़, खूबसूरत।
उज्ज्वलन(न०)-शोभा, शान, अग्नि।
उज्ज्वलित(वि०)-चमकीला, स्वच्छ।
उज्झ्(६प०)-त्यागना, छोड़ना।
उज्झक(पु०)-बादल, भक्त।
उज्झटित (वि०)-घबड़ाया हुआ, विक्षिप्त।
उञ्छ्(६प०)-बिखरा चुगना।
उञ्छन(न०)-बिखरा चुगना, बाज़ार में पड़े हुए दानों को चुगना।

उट (न०)--पत्ती, घास।
उटज (अस्त्री०)--झोंपड़ा, वानप्रस्थियों का घर, पर्णशाला।
उडु (अपु०)--नक्षत्र, तारा, जल।
उडुप (अस्त्री०)--नौका, बेड़ा।
उडुपति (पु०)--चन्द्रमा; वरुण।
उडुम्बर (पु०)--औदुम्बर, हीजड़ा।
उड्डामर (वि०)--भयानक, सबसे ऊंचा
उड्डी (१, ४ आ०)--ऊंचा उड़ना, परवाज़ करना। [वाज़।
उड्डीन (न०)--आकाश में उड़ना, पर-
उणादि (पु०)--प्रत्ययों का एक संग्रह जो 'उण्' से आरम्भ होता है।
उत् (अ०)--शंका, विचार, कष्ट आदि का बोधक।
उत (अ०)--विकल्प, वितर्क, अत्यर्थ, प्रश्न, सन्देह, और, भी, अथवा आदि अर्थों का बोधक।
उतथ्य (पु०)--बृहस्पति का बड़ाभाई
उत्क (वि०)--उत्कण्ठित, जिस का मन संशयाक्रान्त हो, उद्विग्नमनका
उत्कट् (१ प०)--जारी होना, फूट निकलना।
उत्कट (वि०)--लम्बा, चौड़ा, भयानक, अत्यधिक, कठिन। पु०-दारचीनी, बाण, लाल गन्ना।
उत्कण्ठ (वि०)--तत्पर, उद्यत। [शौक,
उत्कण्ठा (स्त्री०)- बेचैनी, चिन्ता,
उत्कण्ठित (वि०)-बेचैन, चिन्तित।
उत्कम्पन (न०)--आन्दोलन, हिलना, हिलोरा।
उत्कर (पु०)-फैलाव, पासका फैलाना।
उत्कर्ष (वि०)--उच्च, अत्यधिक, आकर्षक। पु०--उच्चता, अभ्युदय, बढ़ोतरी।
उत्कल (वि०)-अत्यधिक। पु०-उड़ीसा प्रदेश, शिकारी, कुली।
उत्कलिका (स्त्री०)--चिन्ता, उत्कण्ठा
उत्कर्षण (न०)--हल जोतना।
उत्काशन (न०)--आज्ञा देना।
उत्कीलित (वि०)--कील जड़ा हुआ, नाल लगा हुआ।
उत्कीर्ण (वि०)--उल्लिखित, बिंधा हुआ, फैला हुआ।
उत्कुण (पु०)--खटमल; जूं।
उत्कुल (वि०)--वंश से पतित।
उत्कूट (पु०)--छाता।
उत्कृष् (१ प०)-खींचना, ऊपर चढ़ाना, बढ़ाना, टुकड़े २ करना।
उत्कृष्ट (वि०)-उन्नत, उठाया हुआ। उत्तम, बढ़िया।
उत्कोच (पु०)--रिश्वत, घूस।
उत्कोचक (वि०)-जिसको रिश्वत दी गई हो। पु०-रिश्वत, रिश्वत पाने वाला।
उत्क्रम् (४ प०, १उ०)--ऊपर चढ़ना, अतिक्रमण करना, अवज्ञा करना।
उत्क्रम (पु०)-उलटा क्रम, उन्नति की ओर बढ़ना, अतिक्रमण।
उत्क्रमण (न०)--ऊर्ध्वगति, प्रयाण, गमन।
उत्क्रान्त (वि०)--गत, मिटा हुआ, अतिक्रान्त, मृत।
उत्क्रुश् (१ प०)--चिल्लाना, उच्च-

स्वर से कहना। [चिल्लाहट।
उत्क्रुष्ट (वि०)--चिल्लाता हुआ। न०-
उत्क्रोश (पु०)--शोरगुल, विज्ञप्ति, चिल्लाहट।
उत्क्लेश(पु०)--मचलना, बेचैनी, रोग, समुद्रीय रोग।
उत्क्लेद(पु०)--तर होना।
उत्क्षिप्(६ प०)--ऊपर फेंकना, खड़ा करना, त्यागना, वमन करना।
उत्क्षिप्त(वि०)--ऊपर फेंका हुआ, आधृत, आश्रित। पु०--धतूरा।
उत्क्षेप(पु०)--ऊपर फेंकना, प्रेषण, त्याग, वमन।
उत्क्षेपण(न०)--ऊपर फेंकना, पंखा, वमन, धान मलने की लकड़ी।
उत्खन्(१ प०)--खोदना, खोद कर खाली करना, जड़ से उखाड़ना।
उत्खात(वि०)--उखाड़ा हुआ, खोदकर खाली किया हुआ। न०--सुराख, सूराख, विषम भूमि। [लना।
उत्खिद्(६प०)--खींचकर बाहर निका-
उत्खेद(पु०)--बाहिर खींचना। [बाली
उत्तंस(पु०)--शिरोभूषण, कान की
उत्तट(वि०)--किनारों से बह निकलने वाला।
उत्तन्(८ उ०)--ऊपर की ओर फैलाना, उठाने का यत्न करना।
उत्तप्(१प०)--गर्म करना, झुलसाना, झुलसना, चमकना।
उत्तप्त(वि०)--सन्तप्त, तपाया हुआ, क्रोध में भरा हुआ, नहाया हुआ।
उत्तम(वि०)--सब से अच्छा, नफीस, सब से बढ़िया, सब से बड़ा। पु०--विष्णु, वक्ता--जैसे अहम्, आवाम्। [गुण।
उत्तमता(स्त्री०)--उम्दगी, नेकी, अच्छा
उत्तमन (न०)--बेसबरी, हिम्मत हारना।
उत्तमर्ण-र्णिक(पु०)--उधार देने वाला, महाजन, बैंकर, अधमर्ण का प्रतियोगी।
उत्तमसाहस (अस्त्री०)--सब से बड़ा आर्थिक दण्ड, १००० पण या किन्हीं के मत में ८०००० पण का दण्ड, बड़ी दिलेरी।
उत्तमा (स्त्री०)--उत्कृष्ट स्त्री।
उत्तमाङ्ग (न०)--मस्तक, शिर, शरीर का सब से अच्छा अङ्ग।
उत्तम्भ् (५,९प०) सहारा देना, थामे रखना, ऊंचा करना।
उत्तम्भन (न०)--सहारा देकर ऊपर थामे रखना।
उत्तर (वि०)--अधर का प्रतियोगी, ऊंचा, उच्चतर, वाम, प्रधान, सुन्दर, अधिक। पु०--भविष्यत्काल, विष्णु, शिव, विराट् राजा का पुत्र। न०--जवाब, अदालत में डीफेंस, नतीजा, उम्दगी, अधिकता।
उत्तरकाल (पु०)--आने वाला काल।
उत्तरकोशला(स्त्री०)--अयोध्या नामक नगर।
उत्तरक्रिया (स्त्री०)--दाहकर्म। [भाग।
उत्तरखण्ड(न०)--पुस्तक का अन्तिम
उत्तरङ्ग (वि०)--ऊंची तरंगों वाला।

न०—दरवाज़े के ऊपर की लकड़ी।
उत्तरच्छद(पु०)—बिछौना, बिछानेकी चादर
उत्तरादिक् [श्] (स्त्री०)—उत्तरदिशा।
उत्तरदिग्पाल(पु०)—कुबेर, बुधग्रह।
उत्तरपक्ष(पु०)—कृष्णपक्ष, पूर्वपक्ष का विरोध या जवाब।
उत्तरपश्चिम (वि०)—शुमाली और मग़रबी।
उत्तरप्रत्युत्तर (न०)—विवाद, वितण्डावाद, मुबाहिसा।
उत्तरमीमांसा (स्त्री०)—वेदान्तदर्शन जिसको महर्षि व्यास ने बनाया है।
उत्तररहित(वि०)—लाजवाब।
उत्तररामचरित्र (न०)—भवभूति कवि का बनाया हुआ एक प्रसिद्ध नाटक जिस में श्रीराम के अन्तिम जीवन का वर्णन है।
उत्तरवयस्(न०)—बुढ़ापा, वृद्धावस्था।
उत्तरवादी(पु०)—मुद्दाइलह, रेसपाण्डेन्ट।
उत्तरसाक्षी(पु०)—सफ़ाई का गवाह।
उत्तरसाधक (पु०)—सहायक असिस्टन्ट।
उत्तरा(स्त्री०)—उत्तरदिशा, विराट राजाकी कन्या जो अभिमन्यु की पत्नी थी, अच्छी ऊंची, लायक़। [बाद में।
उत्तरात् (अ०)—उत्तर की ओर से, पश्चात्,
उत्तराधिकारी (वि०)—मृत्यु आदि के संबन्ध से पहिले स्वामी का अधिकार समाप्त होने पर पुत्र, पौत्र आदि दायाद, वारिस, दायभागी।
उत्तराभास (पु०)—जो उत्तर न होता हुआ तद्वत् प्रतीत होता हो, बुरा जवाब, मिथ्या उत्तर।
उत्तरायण(न०)—सूर्य की उत्तर की ओर गति, मकरसंक्रान्ति अर्थात् २२ दिसम्बर से मिथुनसंक्रान्ति अर्थात् २२ जून तक सूर्य उत्तर की ओर वृद्धिगत होता रहता है, यह उत्तरायण कहलाता है।
उत्तरार्द्ध(न०)—शरीर का ऊपर का भाग, उत्तरीय भाग, अन्तिम आधा।
उत्तरासंग(पु०)—ऊपर का कपड़ा, चादर, दुपट्टा।
उत्तरीय (वि०)—उत्तर दिशा का। न०—ऊपर का वस्त्र, चोगा या दुपट्टा।
उत्तरेण(अ०)—उत्तर की ओर से।
उत्तरेद्यु (अ०)—आने वाली कल।
उत्तरोत्तर(वि०)—अधिकाधिक।
उत्तरोत्तरम्(अ०)— आगे २।
उत्तर्जन(न०)—बुरी तरह धमकाना।
उत्तान(वि०)—फैला हुआ, तना हुआ, विस्तारशून्य।
उत्तानपाद(पु०)—ध्रुव का पिता जो स्वायम्भुव मनु का पुत्र था।
उत्तानशय(पु०)—छोटा बच्चा जो प्रायः मुख ऊपर को करके सोता है।
उत्तानित(वि०)—उठा हुआ, फैला हुआ। [चिन्ता, प्रयत्न २
उत्ताप (पु०)—दुःख, अधिक गर्मी,
उत्तार(वि०)—बहुत ऊंचा, अच्छी पुतली वाला।
उत्ताल(वि०)—बड़ा, मज़बूत, भयानक, तीव्र। [कामयाब, तजुर्बेकार।
उत्तीर्ण(वि०)—उतरा हुआ, मुक्त,
उत्तुङ्ग(वि०)—अत्युन्नत, बहुत ऊंचा।
उत्तेजक(वि०)—भड़काने वाला, प्रेरक।
उत्तेजन(न०)—भड़काना, प्रेरित करना, जोश दिलाना, तेज़ करना।
उत्तेजना(स्त्री०)—पूर्ववत्। [काया हुआ
उत्तेजित(वि०)—प्रेषित, तीव्र, भड़-

उत्तोलन(न०)–ऊपर उठाना, उठाकर तोलना।
उत्था(१ प०)–उठना, खड़ा होना, उभरना, उत्पन्न होना।
उत्थान(न०)–ऊपर उठना, खड़ा होना, उठान, उद्यम, युद्ध, सेना, जागरण।
उत्थानैकादशी(स्त्री०)–कार्तिक शुक्ला एकादशी, देव उठान एकादशी। वर्षाकाल के चार मास विश्राम के लिये समझे जाते थे और इस एकादशी से यात्री तथा व्यवसायिजन पुनः निज २ कार्य सम्पादन में संलग्न होते थे।
उत्थापन(न०)–उठाना, घर खाली कराना, भड़काना, जगाना।
उत्थित(वि०)–उठा हुआ, उद्भूत, उत्पन्न, ऊंचा, फैला हुआ।
उत्थिति(स्त्री०)–ऊंचाई, उठान।
उत्पट्(१० प०)–जड़से उखाड़ना, नष्ट करना। [होना।
उत्पत(१ प०)–झपटना, उठना, पैदा
उत्पत(पु०)–चिड़िया, पक्षी।
उत्पतन(न०)–ऊंचा चढ़ना, उत्पत्ति, ऊपर फेंकना। [आविर्भाव।
उत्पत्ति(स्त्री०)–पैदायश, जन्म,
उत्पथ(पु०)–ग़लत रास्ता, अनुचित मार्ग, अशुद्धि।
उत्पद्(४ आ०)–उत्पन्न होना, पैदा होना, जन्म लेना, सघटित होना।
उत्पन्न(वि०)–पैदा हुआ, उठा हुआ, प्राप्त, संघटित, विदित।
उत्पल(न०)–नीला कमल। वि०–कमज़ोर, दुबला, बिना मांस का।
उत्पवन(न०)–पवित्रीकरण, शुद्ध करना
उत्पाट(पु०)–मूलनाश, जड़ से उखाड़ना, कर्णरोगविशेष।
उत्पाटन(न०)–उन्मूलन, उखाड़ना।
उत्पात (पु०)–उपद्रव, उछलकूद, अशुभ घटना, बड़ी मुसीबत, महामारी, भूचाल आदि का सघटन।
उत्पाद(पु०)–पैदायश, जन्म, उत्पत्ति, जहूर।
उत्पादक(वि०)-जन्मदाता, पैदाकरने वाला। पु०–शरभ नामक आठ पाद का कल्पित मृगविशेष।
उत्पादन(न०)–पैदाकरना, जन्म देना
उत्पादिका(स्त्री०)–माता, दीमक।
उत्पाली(पु०)–आरोग्य, तन्दुरुस्ती।
उत्पीड् (१० प०)–सताना, रगड़ना, दबाना।
उत्पीडन (न०)–सताना, दु:ख देना।
उत्पू(उभ०)–साफ करना, पवित्रकरना
उत्प्रास(पु०)–उपहास, हंसना।
उत्प्रासन(न०)–फेंकना, उपहास, मज़ाक़
उत्प्रेक्ष् (१ आ०)–अनुमान लगाना, आशा करना, देखना, याद करना
उत्प्रेक्षण(न०)–अनुमान, अन्दाज़ा।
उत्प्रेक्षा (स्त्री०)–उद्भावना, आरोप, अर्थालङ्कारभेद, जिस में प्रकृत विषय को छोड़कर दूसरे के साथ एक ही होने का अनुमान किया जाय। [पर तैरना।
उत्प्लवन(न०)–उछलना, कूदना, पानी

उत्प्लवा(स्त्री०)–नौका, डोंगी।
उत्फल्‌(१प०)–कूदना, उछलना, खोलना, खिलना। [फुदकना।
उत्फाल (पु०)–तीव्रगति, कूदफांद,
उत्फुल्ल(वि०)- खिला हुआ। न०-स्त्री-करण, योनि। [हुआ पानी।
उत्स (पु०)–झरना, चश्मा, बहता
उत्सङ्ग(पु०)–गोद, क्रोड, आलिङ्गन।
उत्सजन (न०)–ऊपर फेंकना, ऊपर उठाना। [गना।
उत्सद्‌(१प०)–डूबना, नष्ट होना, त्या-
उत्सन्न(वि०)–नष्ट, उखाड़ा हुआ, त्यक्त।
उत्सर्ग (पु०)–व्याकरण में कहा गया सामान्य नियम, त्याग, दान, यज्ञविशेष।
उत्सर्जन (न०)–त्याग, मुक्ति, दान, अनध्याय, उपाकर्म।
उत्सर्पः-णम्-लांघना, ऊर्ध्वगति, उदय।
उत्सव(पु०)–त्योहार, खुशी का अवसर, दिलबहलाव, जलसा, ऊंचाई, क्रोध, साहस।
उत्सवसङ्केता (पु०ब०)–एक प्रकार की जंगली जाति जो हिमालय में रहती है जिस में वैवाहिक नियम का प्रचार नहीं।
उत्सह्‌(१आ०)–काबिल बनना, शक्ति रखना, हिम्मत करना, यत्न करना, आगे बढ़ना।
उत्साद(पु०)–नाश, बरबादी, क्षति।
उत्सादक(वि०)–नाश करने वाला, नाशक।
उत्सादन(न०)–चढ़ना, दोबारा हल जोतना, नाश करना, व्यवस्थित करना, उबटना। [दुर्नाम।
उत्सारक (पु०)–पुलिसमैन, गार्ड,
उत्सारण (न०)–दूरीकरण, मार्ग का साफ करना, अतिथिसत्कार।
उत्साह(पु०)–यत्न, पुरुषार्थ, इच्छा, दम, इरादा, शक्ति, हिम्मत, खुशी।
उत्साहन(न०)–बढ़ावा, हिम्मत देना।
उत्साहवर्द्धक (वि०)–हिम्मत बढ़ाने वाला।
उत्साहवर्द्धन (न०)–हिम्मत बढ़ाना।
उत्साहसम्पन्न(वि०)–हिम्मत वाला, कर्मवीर।
उत्सिक्त (वि०)–गर्वित, अहङ्कारी, चञ्चल, बढ़ा हुआ, बाढ़युक्त।
उत्सिच्‌ (६प०)–छिड़कना, डालना, फैलाना, गर्वित करना।
उत्सुक(वि०)–इच्छुक, बेचैन, शौकीन, दुविधा में पड़ा हुआ, चिन्तापूर्वक इच्छा करने वाला।
उत्सुकता(स्त्री०)–बेचैनी, शौक, दुःख, संलग्नता, जोश।
उत्सूर (पु०)–सायंसन्ध्या।
उत्सृ(१प०)–बाहिर निकालना, हटाना।
उत्सृज्‌ (६प०)–त्यागना, वापिस करना, छोड़ना।
उत्सृप्‌(१प०)–ऊपर की ओर जाना, उदय होना, फैलाना।
उत्सृष्ट (वि०)–त्यक्त, प्रक्षिप्त, दत्त।
उत्सेक (पु०)–अहङ्कार, ज्यादती,

खिड़कना, याद आना।
उत्सेध (वि०)–ऊँचा, लम्बा। पु०–ऊँचाई, लम्बाई। न०–वध, कत्ल।
उत्स्मय (पु०)–मुसकराहट।
उत्स्वन (पु०)–जोर की आवाज।
उत्स्मि (१आ०)–मुसकराना, मूर्ख बनाना।
उदक (न०)–जल, पानी। [वाला।
उदकहार (पु०)–कहार, पानी ढोने
उदकेचर (पु०)–जलजन्तु।
उदकिल (वि०)–जलयुक्त।
उदक्या (स्त्री०)–ऋतुमती स्त्री।
उदगद्रि (पु०)–उत्तर का पहाड़, हिमालय।
उदगयन (न०)–उत्तरायण।
उदग्र (वि०) ऊँचा, उन्नत, चौड़ा, बड़ा, उदार।
उदङ्क (पु०)–चमड़े का बना हुआ घी वा तेल भरने का कुप्पा।
उदज् (१उ)–बाहिर निकालना, खदेड़ना
उदञ्च् (१उ०)–उठाना, ऊँचा करना, [जल] खींचना।
उदञ्चन (न०)–जल खींचने का डोल, ढक्कन, ऊपर फेंकना।
उदपटपाल(पु०)–मटली सर्पविशेष।
उदधाम (पु०)–घड़ा, बादल।
उदधि (पु०)–समुद्र, घन, घट।
उदन् (२प०)–ऊपर की ओर श्वास लेना।
उदन् (न०)–जल, पानी।
उदन्त (पु०)–बात, वृत्तान्त, कुशलप्रश्न। समाचार साधु।
उदन्तक (पु०)–समाचार, सूचना।
उदन्तिका(स्त्री०)–सन्तुष्टि।सन्तोष।
उदन्य (वि०)–प्यासा, जलयुक्त।
उदन्या (स्त्री०)–प्यास।
उदन्वान् [वत्](वि०)–तरङ्गों वाला। पु०–समुद्र।
उदपात्र (न०)–गिलास, बर्त्तन।
उदपान(अस्त्री०)–कुए के पास पानी का चौबच्चा।
उदय (पु०)–उठना, ऊपर जाना, चमकना, उत्पत्ति, उन्नति, ऊँचाई, कामयाबी, लाभ, आमदनी।
उदयन(न०)–ऊपर उठना वा चढ़ना, नतीजा, परिणाम। पु०–अगस्त्य मुनि, वत्सराज, उदयनाचार्य।
उदर(न०)–पेट, जठर, नाभि और स्तनों के बीच का स्थान, पेट का रोग, लड़ाई।
उदरम्भरि (वि०)–स्वार्थी, पेटू, पञ्च महायज्ञ के किये बिना पेट भरने वाला।
उदरावर्त्त(पु०)–नाभि, नाक।
उदरिक(वि०)–मोटा, बड़े पेट का।
उदरिणी(स्त्री०)–गर्भवती स्त्री।
उदर्चि(पु०)–समुद्र, सूर्य।
उदर्क(पु०)–नतीजा, परिणाम, फल।
उदर्चिस् (वि०)–प्रभायुक्त चमकीला। पु०–अग्नि, शिव, कामदेव।
उदर्द (पु०)–एक प्रकार का ज्वर जो शिशिर ऋतु में होता है इस में रक्तवर्ण के ददोरे निकल आते हैं। ददोरे, शुद्धपित्ती।

उद्वसित(न०)–घर, मकान।
उदस्रु(वि०)–ज़ार ज़ार रोने वाला।
उदस् (४ प०)--ऊपर फेंकना, ऊपर उठाना; ऊंचा करना।
उदसन(न०)--ऊपर उठाना, बाहिर निकालना।
उदात्त(पु०)--ऊंचे स्वर से उच्चारित अक्षर, दान, बड़ा ढोल। वि०–ऊंचा, उदार, बड़ा, मनोहर।
उदान(पु०)--गले में रहने वाला वायु, नाभि, सर्पभेद।
उदार(वि०)--फ़य्याज़; दाता, चतुर, खुलादिल, ईमानदार, दयालु, मनोहर।
उदारचरित(वि०)--उदार हृदय वाला, सब का भला चाहने वाला।
उदारता(स्त्री०)--फ़ैयाज़ी, उदारपना, चतुरता; नेकी, भलाई।
उदारदर्शन(वि०)--प्रियदर्शन, मनोहर।
उदारधि(वि०)–ऊपर लाने वाला। पु०–विष्णु।
उदास् (२आ०)--उपेक्षा करना, सुस्त होना; शौक़ न रखना।
उदास–सी(वि०)–रागद्वेष रहित, बेपरवाह; उपेक्षा करने वाला, मध्यस्थ।
उदासीन(वि०)–पूर्ववत्।
उदाहरण(न०)--किसी बात को एक स्थान पर प्रदर्शित कर सम्पूर्ण स्थानों में दिखलाना; दृष्टान्त, मिसाल। [प्रस्तावना।
उदाहार (पु०)--मिसाल; उदाहरण,
उदाहृ(१प०)–बयान करना; कहना; मिसाल देना।
उदाहृत(वि०)–कहा, हुआ, कथित; मिसाल के तौर पर दिखाया हुआ।
उदि (२प०)–उदय होना, दिखलाई देना, उत्पन्न होना, उगना।
उदित(वि०)--उगा हुआ, चढ़ा हुआ, ऊंचा; कहा हुआ, उत्पन्न।
उदिति(स्त्री०)--उदय; वाणी।
उदीक्ष् (१आ०)-देखना, घूरना, आशा करना, इन्तिज़ार करना।
उदीची(स्त्री०)-उत्तर की दिशा।
उदीचीन(वि०)-उत्तर का, उत्तर की ओर झुका हुआ।
उदीच्य(वि०)-उत्तर दिशा का। पु०-भारतवर्ष का उत्तरीय भाग।
उदीप(पु०)-पानी का चढ़ आना, बाढ़
उदीरण(न०)–कहना, उच्चारण करना, बोलना। [हुआ।
उदीर्ण (वि०)–उदार, महान्; बढ़ा
उदुम्बर(पु०)-गूलर का वृक्ष, उडुम्बर
उदूढ(वि०)-विवाहित, मोटा।
उद्गत(वि०)–उदय हुआ उदित, निकला हुआ।
उद्गम्(१प०)-उठना; निकलना, अंकुर उगना, ऊपर आना।
उद्गम (पु०)-बहिर्गमन, उत्पत्ति, आरम्भ, ऊंचाई, अङ्कुर, वमन, बाहिर आना।
उद्गमन(न०)-प्रत्यक्ष होना।
उद्गमनीय(न०)-धुले हुए दो वस्त्र

जो कि विवाह के समय वर और कन्या को दिये जाते हैं।
उद्गाढ (वि०)–गहरा, अतिशय, ज्यादा।
उद्गाता(पु०)–सामवेद का गायक।
उद्गार(पु०)–वमन, कै, शब्द।
उद्गीथ(पु०)–सामवेद का एक भाग।
उद्गुर्(६ आ०)–गर्जकर बोलना।
उद्गूर्ण (वि०)–तैयार, उद्यत।
उद्गै(१ प०)–उच्चस्वर से गाना, आरम्भ करना, साम का गान करना।
उद्ग्रथ(१, ९ उ०)–मिलाकर बाँधना, बँडल बनाना; गूथना।
उद्ग्रन्थ(पु०)–अध्याय, परिच्छेद।
उद्ग्रह्(९ प०)–ऊपर उठाना, ऊंचा करना।
उद्ग्राह (पु०)–ऊपर उठाना, सन्धि का नियमविशेष, पैलराज।
उद्ग्राहणिका(स्त्री०)–वादविवाद में दिया हुआ प्रत्युत्तर। [अग्नि।
उद्घ (पु०)–उम्दगी, महत्त्व, खुशी,
उद्घटित(न०)–इशारा।
उद्घाटक(पु०)–कुञ्जी, डोलरस्सी।
उद्घाटन (न०)–खोलना, परदा उठाना, चोड़ी।
उद्घाटित(वि०)–खोला हुआ, जाहिर किया हुआ, उठाया हुआ।
उद्घाटिताग(वि०)–नंगा। [वार्ता।
उद्घोष(पु०)–घोषणा; सार्वजनिक
उद्दंश(पु०)–खटमल, जू, मच्छर।
उद्दण्ड(वि०)–कड़ा, भयानक, उच्छृङ्खल, बेदाब।
उद्वहता (स्त्री०)–उजड्डपन।
उद्दम(पु०)–दमन करना, भीचना।
उद्दीम(न०)–तापना, अगीठी; समुद्र की अग्नि।
उद्दान्त(वि०)–साहसिक; विनयावनत।
उद्दाम (वि०)–बेरोक; अरुद्ध; मस्त; भयानक; स्वेच्छाचारी; मगरूर। पु० -यम; वरुण।
उद्दालक(पु०)–एक ऋषि का नाम।
उद्दिन(न०)–दोपहरी।
उद्दिश्(६ उ०)–बतलाना; जाहिर करना; नाम लेना; व्याख्या करना। [सम्बन्ध से।
उद्दिश्य(अ०)–लिये; वास्ते; बसबब,
उद्दिष्ट(वि०)–इच्छित; कथित; उपदिष्ट
उद्दीप्(४आ०)–रोशनकरना, चमकना।
उद्दीपक(वि०)–चमकाने वाला; तेज करने वाला।
उद्दीपन(न०)–प्रकाशन; रोशनी; भड़काना, तेज करना।
उद्दीप्त(वि०)–भड़काया हुआ, रोशन, चमकीला।
उद्देश (पु०)–अनुसंधान, अभिप्राय, इच्छा, निशान, तलाश, नाम पर, वस्तु का नाम लेना।
उद्देहिका(स्त्री०)–दीमक, कुरा।
उद्योत (पु०)–रोशनी, चमक, अध्याय, परिच्छेद।
उद्धत (वि०)–उजड्ड, भड़का हुआ, उद्यत, गंवार। पु०—राजाओं का पहलवान।
उद्धतमनस्क (वि०)–उदाराशय, उजड्ड, मगरूर।
उद्धरण(न०)–खींचकर निकालना, [कर्जे]

उतारना, रिहाई, छुटकारा, ऋण से मुक्ति।
उद्धर्ष (पु०)—बड़ी खुशी, उत्सव।
उद्धव (पु०)-उत्सव, कृष्णके एक चचा का नाम। [हुए हों।
उद्धस्त (वि०)-जिसके हाथ ऊपर को उठे
उद्धार (पु०)-बचाव, रिहाई, उखाड़ना, छुटकारा, मुक्ति, अभ्युदय, अंगीठी।
उद्धारक (पु०)-उद्धार करने वाला।
उद्धारा (स्त्री०)-गुडूची, गिलोय।
उद्धुर (वि०)-बोझ से मुक्त, जोत से खुला हुआ, आज़ाद।
उद्धूत (वि०)--फेंका हुआ, उठाया हुआ, हिला हुआ। [फेंकना
उद्धूनन (न०)—उछालना, ऊंचा
उद्धूपण(न०)--रोंगटे खड़े होना, भयभीत होना।
उद्धृ (१, १० प०)--उद्धार करना, बचाना, रिहाई दिलाना।
उद्धृत(वि०)--उठा हुआ,उखाड़ा हुआ गृहीत, नष्ट।
उद्ध्मा (१प०)--सांस बाहिर निकालना, फूंकना, बिगुल बजाना।
उद्ध्मान (न०)--चूल्हा, अंगीठी।
उद्बंध (न०)--बांधना, लटकाना।
उद्बल(वि०)--मज़बूत, शक्तिशाली।
उद्बाहु (वि०)- ऊपर को हाथ उठाए हुए।
उद्बुद्ध(वि०)--खिला हुआ,जगा हुआ।
उद्बोधः-नम्-जागरण, थोड़ी समझ, याददाश्त।
उद्भट (वि०)-उम्दा, बढ़िया, उन्नत। पु०-कछुआ, छाज।

उद्भव (पु०)--उत्पत्ति,जन्म,पैदायश।
उद्भावन (न०)--सोचना, उत्पत्ति विस्मृति।
उद्भास् (१आ०)--चमकना, चमकाना।
उद्भिज्ज(वि०)-पृथ्वी फाड़कर उत्पन्न हुआ जैसे वृक्ष, झाड़ी, वनस्पति आदि।
उद्भिद् (पु०)--अंकुर उगना, जन्म लेना, निकलना।
उद्भिद् (पु०)=अंकुर, पौदा, झरना।
उद्भिद्विद्या (स्त्री०)-वनस्पतिशास्त्र, बोटेनी।
उद्भिन्न (वि०)—उत्पन्न, अंकुरित, खिला हुआ।
उद्भूत (वि०)-पूर्ववत्।
उद्भेदः-नम्--उत्पत्ति, अंकुर, चश्मा, बाहिर निकालना, भेद बताना।
उद्भ्रम(पु०)—उद्वेग, व्याकुलता; घबराहट, भूल, चिन्ता।
उद्भ्रान्त(वि०) -चिन्तातुर, घबराया हुआ, भयभीत।
उद्यत(वि०)--तत्पर; तय्यार; उन्नत, मुस्तैद। पु०--अध्याय,परिच्छेद।
उद्यम(पु०)—उद्योग;कोशिश,परिश्रम, हिम्मत। [वीर।
उद्यमी(वि०)-मेहनती,परिश्रमी, कर्म-
उद्या(२ प०)—उदय होना, चढ़ना, अंकुर उगना।
उद्यान(अस्त्री०)—सैर, टहलना, बाग़, वाटिका, क्रीडास्थल,अभिप्राय।
उद्यानक (न०)—वाटिका, बगीचा।
उद्यानपाल [रक्षक] (पु०)—बागबान,

माली। [का अन्त।
उद्यापन (न०)–समाप्ति, पूर्ति, व्रत
उद्योग (पु०)–यत्न, चेष्टा, उत्साह, उद्यम।
उद्योगपर्व (पु०)–महाभारत का पांचवां पर्व [अध्याय]।
उद्योगी (वि०)–मेहनती, परिश्रमी।
उद्राव (पु०)–शोरगुल, गर्जन।
उद्रिक्त (वि०)–बढ़ा हुआ, अधिक।
उद्रेक (पु०)–बढ़ोतरी, बहुतायत, आरम्भ।
उद्रेकभङ्ग (पु०)–शिर मुड़ाते ही ओले पड़ना, आरम्भ में ही हिम्मत हारना।
उद्वम् (१प०)–बाहिर फेंकना, कै करना,
उद्वमन (न०)–वमन, कै, त्याग।
उद्वर्तन (न०)–उबटना, चन्दन लगाना, विलेपन। [ह्रास।
उद्वर्धन (न०)–बढ़ोतरी, दबाया हुआ
उद्वह् (१प०)–विवाहना, घर ले आना, थामना, अनुभव करना, रखना।
उद्वह (पु०)–पुत्र, विवाह। [ठिकाना।
उद्वहन (न०)–विवाह, कब्जा रखना,
उद्वहा (स्त्री०)–पुत्री।
उद्वान्त (वि०)–बाहिर निकला हुआ, वमन किया हुआ, उद्गीर्ण।
उद्वासन (न०)–वध, त्याग, विसर्जन।
उद्वाह (पु०)–विवाह, शादी, परिणय।
उद्वाहिक (वि०)–विवाह सम्बन्धी।
उद्वाहित (वि०)–विवाहित, उठा हुआ। लिया हुआ।
उद्विग्न (वि०)–घबड़ाया हुआ, चिन्तातुर।
उद्विज् (६आ०)–उद्विग्न होना, दुःखी होना, भयभीत होना।
उद्वेग (पु०)–चित्त का व्याकुल होना, डर, भय, चिन्ता।
उद्वेप (पु०)–हिलना, कांपना।
उद्वेल (वि०)–सीमा से बाहिर जाने वाला, किनारों से बाहिर हो कर बहने वाला। [दस्ताना।
उद्वेष्टन (न०)–बाड़ा, पगड़ी, जुर्राब,
उधस्=ऊधस्, थन।
उन्द् (७प०) तर करना, गीला करना, जल छिड़कना।
उन्द[न्दु न्दू]रु र (पु०)–मूसा, चूहा,
उन्न (वि०)–भीगा हुआ, गीला।
उन्नत (वि०)–उन्मत्त, ऊंचा, महान्, बड़ा।
उन्नति (स्त्री०)–उदय, बढ़ती, बढ़ोतरी, गरुड़ की स्त्री।
उन्नद्ध (वि०)–अच्छी तरह से बन्धा हुआ, बढ़ा हुआ।
उन्नम् (१प०)–उठना, उदय होना, उन्नति पाना।
उन्नमित (वि०)–उन्नत, बढ़ा हुआ।
उन्नयन (न०)–वितर्क, दलील, ऊंचा करना।
उन्नस (वि०)–ऊंची नाक वाला।
उन्नह् (४प०)–चारों तरफ से बांधना, बाहिर खींचना, कसना।
उन्निद्र (वि०)–जिसे नींद न आती हो, खिला हुआ, जागा हुआ।

उन्नी (१ प०)-ऊपर ले जाना, खड़ा करना, रिहाई दिलाना।
उन्मज्ज् (६ प०)-जल में से बाहिर निकलना, उगना।
उन्मज्जक (पु०)-जल में खड़ा हो कर तपस्या करने वाला।
उन्मत्त (वि०)-पागल, उन्मादयुक्त। पु०-धतूरा।
उन्मद (वि०)-पागल, नशे में भरा हुआ।
उन्मनः-स्क (वि०)-जिसका दिल उखड़ गयाहो, बेचैन, बेसबरा।
उन्मथ् (१,६ प०)—हिलाना, मन्थन करना मारना, मिलाना।
उन्मथ-न्थ (पु०)-वध, गड़बड़, आन्दोलन।
उन्मन्थ् (१,६ प०)=उन्मथ्।
उन्मन्थन (न०)-वध, हिलोरा, छड़ी से मारना।
उन्माथ (पु०)-मारना, हिलाना, बड़ा कष्ट।
उन्माद (पु०)-पागलपन, दिमाग का बहुत घूमना, बुद्धि का स्थिर न रहना।
उन्मादक (वि०)-पागल बनाने वाला। पु० धतूरा।
उन्मादन (पु०)-कामदेव के पञ्च शरों में से एक।
उन्मादी (वि०)-शराबी।
उन्मान (न०)-तोलना, नापना, बाट।
उन्मार्ग (पु०)-ग़लत रास्ता, अनुचित व्यवहार।
उन्मित (वि०)-मापा हुआ, तोला हुआ।
उन्मिति (स्त्री०)-माप, मूल्य।
उन्मिष् (६ प०)-आंख खोलना, खिलना, उगना।
उन्मिष (पु०)-आंख खोलना।
उन्मिषित (वि०)-खिला हुआ, प्रफुल्ल, थोड़ासा चमका हुआ।
उन्मील् (१प०)-आँखें खोलना, जागना, खिलना, प्रकट होना।
उन्मीलः-नम्-जागरण, खिलना, आंखें खुलना, आलेख्य।
उन्मीलित (वि०)-खिला हुआ, जगा हुआ।
उन्मुख (वि०)-ऊपर को मुंह उठाये हुए, उद्यत, तैयार।
उन्मुच् (६ उ०)-खोलना, ढीला करना, मुक्ति देना, फेंकना।
उन्मुद्र (वि०)-बिना मुंदा हुआ, खिला हुआ, खुला हुआ।
उन्मूल् (१० प०)-उखाड़ना, जड़से खोना, नष्ट करना।
उन्मूलन (न०)-जड़ से उखाड़ना, अत्यन्त नाश।
उन्मेदा (स्त्री०)-मुटापा।
उन्मेय (वि०)-मापने योग्य। न०-तोल, वज़न।
उन्मेषः-षम्-थोड़ा प्रकाश, नेत्र आदिका खोलना।
उप (अ०)-समीपता, व्याप्ति, आरम्भ, पूजा, उपरति, उपघात आदि अर्थों का बोधक।
उपकण्ठ (वि०)-नज़दीक, समीप। अव्य० समीपता, घोड़े की उछलने की चाल।
उपकथा (स्त्री०)-छोटी कहानी।
उपकरण (न०)-प्रधान साधन जिस से उपकार किया जाता है।
उपकर्ण् (१० उ०)—सुनना।
उपकर्णिका (स्त्री०)-अफवाह, मिथ्या अपवाद, किम्वदन्ती।
उपकर्त्ता (वि०)-उपकार करनेवाला, मित्र
उपकार (पु०)-मदद, सहायता, मेहरबानी, बन्दरवार।
उपकारक (वि०)-उपकार करने वाला, मददगार, सहायक।

उपकारिका(स्त्री०)–रक्षा करने वाली, सहायिका, राजा का महल, तम्बू, पटभवन।
उपकारी (वि०)–मददगार, उपकार करने वाला।
उपकार्य (वि०)–उपकार के योग्य।
उपकार्या (स्त्री०)–राजभवन, शाही ख़ेमा। [दयाना।
उपकिरण (न०)–व्याप्ति, गाड़ना,
उपकुञ्चिका (स्त्री०)–छोटी इलायची, काला जीरा।
उपकुम्भ (वि०)–समीप, अकेला।
उपकुल्या(स्त्री०)-नहर,नाली,पीपल।
उपकूज् (१प०)–गुञ्जा डालना।
उपकूप (पु०)–कुए के पास का जलाशय, चौबच्चा। [भूमि।
उपकूल (न०)–किनारे के पास की
उपकृ (८उ०)–समीप लाना, उपकार करना, मदद देना, सहायता पहुंचाना।
उपकृत (वि०)–उपकार पाया हुआ, सहारा दिया हुआ। न०–सहायता, उपकार। [नेकी।
उपकृति(स्त्री०)–उपक्रिया,सहायता,
उपक्रन्ता (पु०)–कार्य को आरम्भ करने वाला।
उपक्रम् (१आ०;४प०)–समीप जाना, आरम्भ करना, आक्रमण करना, उपचार करना।
उपक्रम (पु०)–आरम्भ, साहसिक कार्य, हिकमत, इलाज।
उपक्रमण (न०)---समीपागमन, साहस, आरम्भ, इलाज। [बना।
उपक्रमणिका(स्त्री०)-भूमिका, प्रस्ता-
उपक्रमणीय (न०)--आरम्भ करने योग्य।
उपक्रीडा (स्त्री०)-खेलने का मैदान।
उपक्रुश् (१प०)--दोष देना, धिक्कारना, फिड़कना। [निन्दा, तर्जना।
उपक्रोशः–नम्––धिक्कार, भर्त्सना,
उपक्रोष्टा (वि०)–निन्दक। पु०–गधा।
उपक्षय (पु०)–नाश, घटना।
उपक्षीण(वि०)–नष्ट,खर्च किया हुआ, शक्तिरहित।
उपक्षेप(पु०)–फेंकना, इशारा, प्रस्ताव, धमकी, आरम्भ।
उपगण(वि०)–नीची कक्षा का। पु०–छोटी कक्षा।
उपगन्ध (पु०)–खुशबू, सुगन्धि।
उपगम् (१प०)–समीप जाना, प्राप्त करना, मुलाक़ात करना, प्रवेश करना, सहारना।
उपगमः–नम्--पास जाना, अङ्गीकार, जानना, प्राप्ति, संगत। [हुआ।
उपगीत (वि०)–चारणों द्वारा गाया
उपगीति (स्त्री०)–आर्या छन्द का एक भेद।
उपगुरु (पु०)–असिस्टेंट मास्टर।
उपगुह् (१उ०)–आलिंगन करना, छिपाना, चारों ओर बांधना।
उपगूढ (वि०) -छिपा हुआ, आलिंगन किया हुआ।
उपगूहन (न०)--आलिंगन, आश्चर्य, गुप्तीकरण।

उपगै (१ प०)--गुणानुवाद गाना, मिलकर गाना।
उपग्रह (पु०)--पराजय, क़ैद, क़ैदी, मेहरबानी, राहु, केतु।
उपग्रहण (न०)--पकड़ना, सहारा देना, वेदाध्ययन।
उपग्राह(पु०)--नज़राना, तोहफ़ा, भेट।
उपघात (पु०)- अपकार, नाश, चोट।
उपघ्न(पु०)--लगातार सहारा, शरण देना, रक्षा।
उपचय(पु०)-वृद्धि, उन्नति, बढ़ोतरी।
उपचर् (१ प०)--सेवा करना, टहल करना, पूजा करना।
उपचर(पु०)--इलाज, चिकित्सा।
उपचार (पु०) --सेवा, टहल, पूजन, आतिथ्य, इलाज, बर्ताव।
उपचारक(पु०)--टहल करने वाला, चिकित्सक, मआलिज।
उपचारिका(स्त्री०)--दाई, टहलनी।
उपचाय्य(पु०)--संस्कृत अग्नि, वेदी।
उपचि(५ उ०)--इकट्ठा करना, ढेर लगाना।
उपचित(वि०)-एकत्रित, वर्द्धित।
उपचित्र(पु०)--एक छन्दोविशेष।
उपच्छद(पु०)-छोटा शामियाना, मशहरी।
उपज(वि०)--अधिक उत्पन्न, वर्द्धित।
उपजन्(४ आ०)--जन्म लेना, पैदा होना, संघटित होना।
उपजप् (१ प०)--कानाफूसी करना।
उपजाति(स्त्री०)--छन्द का एक भेद।
उपजाप(पु०)--कानाफूसी, विरोध का बीज बोना।

उपजीव्(१ प०)--सहारे से जीना।
उपजीवन(न०)-निर्वाह का साधन।
उपजीविका (स्त्री०)--गुज़ारा, वृत्ति, रोज़ी।
उपजीवी (वि०)--नौकर, आश्रित।
उपजोष (पु०)--प्रीति, सेवन।
उपज्ञा(स्त्री०)--जानना, मालूम करना।
उपज्ञात(वि०)--ईजाद किया हुआ, आविष्कृत।
उपढौकन(न०)--भेट, नज़राना, तोहफ़ा।
उपतप्(१ प०)--गर्म करना, ज्वराक्रान्त होना।
उपताप(पु०)--गर्मी, कष्ट, रोग, जल्दी।
उपत्य (वि०)--अधःस्थित।
उपत्यका (स्त्री०)--पहाड़ के नीचे की भूमि, तराई।
उपदंश्(१ प०)--काटना, कुतरना।
उपदंश(पु०)--आतशक, गर्मी का रोग, काटना, डसना, डंक मारना।
उपदर्शन(न०)--व्याख्या, टीका।
उपदा (स्त्री०)--रिश्वत, नज़राना।
उपदान (न०)--पूर्ववत्।
उपदिश्(६उ०)--उपदेश करना, शिक्षा देना, बतलाना। स्त्री०--दो दिशाओं के बीच की दिशा।
उपदिशा(स्त्री०)--दरम्यानी दिशा या कोण जैसे ईशान, वायव्य, नैर्ऋत्य और आग्नेय।
उपदिष्ट (वि०)--उपदेश किया हुआ, सिखलाया हुआ।
उपदेश(पु०)--शिक्षा, सलाह, भलाई की बात, सीख।

उपदेशक (पु०)–सिखाने वाला, शिक्षक, गुरु, रहनुमा ।
उपदेष्टा(पु०)–गुरु, शिक्षक, आचार्य ।
उपदेह(पु०)–ढक्कन, मलहम ।
उपद्रव (पु०)–दुर्घटना, उत्पात, विद्रोह, झगड़ा ।
उपद्रवी(वि०)–उपद्रव करने वाला, विद्रोही, झगड़ालू ।
उपद्वीप(पु०)–टापू, चारों ओर से पानी से घिरा हुआ स्थान ।
उपधा(३ उ०)–ऊपर रखना, आदेश करना । स्त्री०–धोखा, छल,कपट, व्याकरण की एक संज्ञा ।
उपधातु(पु०)–सोनामाखी,नीलाथोथा हरताल, अभ्रक, खपड़िया, सुर्मा और मनशिल ये सात धातु उपधातु कहलाती हैं ।
उपधान(न०)–विशेषता,तकिया,विष, मेहरबानी, प्रणय, प्रेम ।
उपधानीय(न०)–तकिया ।
उपधारण(न०)–किसी दूरस्थ वस्तु को उठ [उग्गी] आदि से खींचना ।
उपधि(पु०)–छल, कपट, जानबूझ कर कुछ का कुछ कहना ।
उपधिक(पु०)–छलिया, कपटी, ठग ।
उपधूपित(वि०)–सन्तप्त,मृत्युके समीप
उपधृति(स्त्री०)–किरण, रश्मि ।
उपध्वस्त(वि०)-मिश्रित,नष्ट,बर्बाद।
उपनगर(न०)–पुरवा, क़स्बा, छोटा शहर ।
उपगत(वि०)–समीपागत, समीपस्थ ।
उपनम् (१ प०)–समीप आना,संघटित होना ।
उपनय(पु०)–उपनयन, शिक्षार्थ गुरुकुल में पहुंचाना ।
उपनयन (न०)–यज्ञोपवीतसंस्कार, इस के पश्चात बालक गुरुकुल में प्रविष्ट होता है । मनुस्मृति के लेखानुसार ब्राह्मणपुत्र का ८ वर्ष की अवस्था में, क्षत्रियपुत्र का ११ और वैश्यपुत्र का १२ वर्ष की अवस्था में यज्ञोपवीतसंस्कार होना चाहिये ।
उपनह् (४ प०)- बांधना,बण्डल बनाना।
उपनहन(न०)–बण्डल, बस्ता, बाधने का कपड़ा ।
उपनाम(न०)–उपाधि,छोटा नाम ।
उपनाहन(न०)–मलहम लगाना, लेप करना ।
उपनिधान(न०)–समीप रखना,अमानत ।
उपनिधि(पु०)–अमानत, दूसरे के विश्वास पर रक्खी हुई चीज़ ।
उपनिपात(पु०)–समीप आगमन, आकस्मिक घटना ।
उपनिवेश(पु०)–छावनी, कालोनी, अन्य देश में बस्ती डालना ।
उपनिवेशित(वि०)–दूसरी जगह से आकर बसा हुआ ।
उपनिषद् (स्त्री०)–अध्यात्मज्ञान की प्राप्ति के लिये गुरु के पास बैठना। वेद और ब्राह्मणभाग के वे उद्धृतांश जिन में ब्रह्मविद्या का वर्णन है । मुख्य उपनिषद १०

हैं, यथा—ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य और बृहदारण्यक।
उपनिष्कर(पु०)—राजपथ, शारेआम, स्ट्रीट।
उपनी(१प०)—पास लाना, भेंट करना, हवाले करना।
उपनीत(वि०)—समीप लाया हुआ, प्राप्त, यज्ञसूत्रधारी।
उपनृत्य(न०)—नाचघर, बालरूम।
उपनेता(पु०)—आचार्य, यज्ञोपवीत देने वाला गुरु।
उपनेत्र(न०)—आंख पर लगाने का चश्मा, ऐनक।
उपन्यस्(४ प०)—सामने रखना, हवाले करना, व्याख्या करना।
उपन्यास(पु०)—पास रखना, अमानत, भूमिका, वाक्यरचना, नाविल, दिलबहलाव की कहानी।
उपपति(पु०)—ऐसा पुरुष जिस से अन्यविवाहित स्त्री प्रेम करती हो, जार, आशना।
उपपत्ति (स्त्री०)—युक्ति, हेतु, घटना, सगति, प्राप्ति, दलील।
उपपद् (४आ०)—पहुंचना, प्राप्त होना, सघटित होना।
उपपन्न(वि०)—प्राप्त, शरणागत, सम्पन्न।
उपपातक (न०)—छोटा पाप, मनु के अनुसार गोवध, आत्मविक्रय, परस्त्रीगमन आदि उपपातक हैं।
उपपादन (न०)—सिद्ध करना, साबित करना, परीक्षा।
उपपादित (वि०)—प्रतिपादित, सिद्ध।
उपपार्श्व (अस्त्री०)—कधा, दूसरी तरफ।
उपपुर (न०)—पुरवा, शहर के पास की छोटी बसती।
उपपौरिक(वि०)—पुरवे में रहने वाला।
उपपुराण (न०)—अठारह मुख्य पुराणों से भिन्न अठारह उपपुराण भी हैं। [जम्भाई।
उपपुष्पिका (स्त्री०)—जभाई लेना,
उपप्लव (पु०)—विपत्ति, हलचल, बाढ़, उत्पात, बाधा।
उपबहु (वि०)—चन्द, थोड़े।
उपभंग (पु०)—पीछे की ओर भागना, लौटना। [व्यवहृत।
उपभुक्त (वि०)—बर्ता हुआ, उच्छिष्ट,
उपभोक्ता [स्त्री० क्त्री] (पु०)—उपभोग करने वाला, आनन्द उठाने वाला।
उपभोग (पु०)—इस्तैमाल, व्यवहार, बर्तना, विलास की सामग्री।
उपभोग्य-भोज्य(वि०)—व्यवहारयोग्य, काबिले इस्तैमाल।
उपमन्त्री(पु०)—सहायकमन्त्री, असिस्टैण्ट सैक्रेटरी।
उपमन्थनी (स्त्री०)—झलार, आग कुरेदने की छड़।
उपमर्दः—नम्-रगड़, दबाव, नाश, भर्त्सना, अभियोग की तरदीद।
उपमन्ता (पु०)—पति, वर।
उपमा(२प०,३आ०)—मुकाबिला करना, तोलना। स्त्री०-मिसाल, समानता, उदाहरण, तुलना, सादृश्य।

उपमातृ[त्री] (पु०)–उपमा देने वाला, मूर्ति बनाने वाला। स्त्री०–सौतेली मां, धाय।
उपमाति (स्त्री०)–तुलना, वध।
उपमान (न०)–वह वस्तु जिस से उपमा दी जाय।
उपमित (वि०)–जिस की उपमा दी गई हो, जिस पर उपमा घटती हो।
उपमिति (स्त्री०)–उपमा या सादृश्य से होने वाला ज्ञान।
उपमेय (वि०)–उपमा देने योग्य, वर्णनीय। [करने वाला।
उपयन्ता (पु०)–पति, स्त्री से विवाह
उपयम् (१उ०)–विवाह करना, पकड़ना, अंगीकार करना।
उपयम –मम्–विवाह, शादी, रोक।
उपया (२ प०)–पास जाना, पहुंचना।
उपयाच् (१आ०)–चाहना, मांगना।
उपयाचित (वि०)–मांगा हुआ। न०–याचना।
उपयुक्त (वि०)–ठीक, योग्य, कारआमद, भक्षित, उचित, मौजूं।
उपयुज् (७ आ०)–इस्तेमाल करना, काम में लाना।
उपयोग (पु०)–इस्तेमाल, औषध देना या तैयार करना, औचित्य, अच्छा व्यवहार।
उपयोगिता (स्त्री०)–आवश्यकता, फायदा, अच्छापन, मुफीद होना, मेहर्बानी।
उपयोगी (वि०)–अनुकूल, फायदेमन्द, उचित, काम देने लायक।
उपयोजन (न०)–घोड़े को गाड़ी में जोतना।
उपरक्ष (पु०)–शरीररक्षक।
उपरक्त (पु०)–ग्रस्त सूर्य वा चन्द्र, राहु। वि०–विपद्ग्रस्त, रंगा हुआ।
उपरत (वि०)–ठहरा हुआ, वैरागी, मुर्दा। [विरागता।
उपरति (स्त्री०)–मृत्यु, उदासीनता,
उपरतात्(अ०)–समीप में।
उपरम्(१ प०)–बन्द होना, रुकना।
उपरम–मम्–निवृत्ति, परहेज, विषयभोग का त्याग।
उपराग(पु०)–लाली, लाल रंग, तकलीफ, उपद्रव, भर्त्सना, चन्द्रग्रहण वा सूर्यग्रहण। [निधि।
उपराज(पु०)–वाइसराय, राजप्रति-
उपराम(पु०) रुकना, ठहरना, परहेज, त्याग, मृत्यु।
उपरि(अ०)–ऊपर, ऊंचे पर।
उपरिगत(वि०)–चढ़ा हुआ, ऊपर गया हुआ।
उपरिभाग(पु०)–ऊपर का हिस्सा।
उपरिष्टात्(अ०)–ऊपर, ऊपर की ओर, ऊर्ध्वः। [कैदी।
उपरुद्ध(वि०)–रुका हुआ, ठहरा हुआ,
उपरुध्(७उ०)–रोकना, ठहराना।
उपरोध(पु०)–रोकना, दिक करना, विरोध, इन्कार। [बादल।
उपल (पु०)–चट्टान, पत्थर, रत्न,
उपलक्ष्(१० प०)–देखना, गौर करना, चिन्ह करना।
उपलक्षण(न०)–देखना, चिन्ह, नाम।

वह शब्दशक्ति कि जिस से निर्दिष्ट वस्तु से भिन्न तत्सदृश वस्तु का ज्ञान होता है अर्थात अजहत्स्वार्था लक्षणा।

उपलब्ध(वि०)–प्राप्त, अधीत, जाना हुआ। [अनुमान।

उपलब्धि(स्त्री०)–प्राप्ति,ज्ञान,समझ,

उपलभ्(१ आ०)–जानना, समझना, सीखना, प्राप्त करना।

उपलम्भ(पु०)–ज्ञान,अनुभव,प्राप्ति।

उपलालिका(स्त्री०)–प्यास,पिपासा।

उपलिप्सा(स्त्री०)–प्राप्त करने की इच्छा। [करना।

उपवद्(१आ०)–बातें करना, खुशामद

उपवन(न०)–बाग, उद्यान, कुञ्ज।

उपवर्ण् (१० प०)–व्याख्या करना।

उपवर्णन(न०)–एकर बात की व्याख्या या बयान। [सिरहाना।

उपवर्ह (पु०)–शिरोधान, तकिया,

उपवस्(१ प०)–रहना,आबाद होना।

उपवसथ(पु०)–ग्राम,उपवास का दिन।

उपवस्त(न०)–उपवास, निराहार।

उपवस्ति(स्त्री०)–जीवन का आश्रय वा आधार जैसे अन्न, निद्रा।

उपवह्(१ प०)–पास लेजाना, आरम्भ करना। [करना।

उपवास (पु०)–अनाहार, भोजन न

उपवाह्य[स्त्री० ह्या] (पु०)–राजा की सवारी पालकी, हाथी आदि।

उपविद् (वि०)–प्राप्त करने वाला, जानने वाला। [बैठना।

उपविश् (६प०)–तम्बू गाड़ना, पास

उपवीत(न०)–जनेऊ, यज्ञसूत्र।

उपवीती (पु०)–यज्ञोपवीत धारण करने वाला।

उपवृंहित(वि०)–वर्द्धित, बढ़ा हुआ।

उपवेद(पु०)–गौण वेद। चार वेदों के चार उपवेद हैं, यथा–ऋग्वेद का आयुर्वेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गान्धर्ववेद और अथर्ववेद का शिल्पवेद।

उपवेश(पु०)–समीप बैठना।

उपवेशन(न०)–पूर्ववत्।

उपशम्(४ प०)–शांत होजाना,रुकना, ठहरना।

उपशमः-मम्–आराम, शान्ति,इन्द्रियदमन।

उपशय(पु०)–समीप सोना।

उपशल्य(न०)–ग्राम के पास खुला हुआ मैदान।

उपशिष्य(पु०)–शिष्य का शिष्य।

उपशी(२ आ०)–समीप सोना, समागम करना।

उपश्रु (५ प०)–सुनना,वायदा करना।

उपश्रुत (पु०)–यज्ञ।

उपश्रुति (स्त्री०)–स्वीकारी, वायदा, भाग्य बताना।

उपश्लिष् (४ प०)–आलिंगन करना, समीप जाना।

उपश्लेष(पु०)–एक ओर से मिलना।

उपष्टम्भक(न०)–रोकनेवाला,स्तम्भक, न०–स्तम्भ, खूंटा, स्थूणा।

उपसंयम(पु०)–उपसंहार, महाप्रलय, रोकना, बांधना।

उपसयोग(पु०)—गौणसयोग, तबदीली।
उपसवाद(पु०)—माहिदा, ठेका।
उपसव्यान (न०)—नीचे पहिरने का वस्त्र, अधोवस्त्र।
उपसहार(पु०)—समाप्ति, नाश, पूर्ति, इकट्ठा करना।
उपसक्लेव (पु०) खुलासा, साफ।
उपसव्यान (न०)—धोती, पहिरने का वस्त्र।
उपसग्रह (९ प०)—अनुभवकरना, महसूसकरना, पकड़ना, अपनी ओर करना।
उपसग्रह (पु०)—चरणवन्दना, झुकना, पैर छूकर प्रणाम करना उपकरण।
उपसत्ति (स्त्री०)—लगाव, सेवा, पूजा, दान।
उपसद्(१, ६ प०)—सेवा करना, समीप आना, पैर पड़ना। स्त्री०-चेरा, पूजा।
उपसद (पु०)—समीपागमन, दान, यज्ञविशेष।
उपसदन(न०)—शिष्यता ग्रहण करना, समीप पहुंचना।
उपसधा (३उ०)—एक जगह रखना, ढेर लगाना। [गुरुपू।
उपसमान(पु०)—बातचीत, दोस्ताना
उपसर्ग(पु०)—बीमारी, दुःख, ग्रहण पड़ना, उपद्रव।
उपसर्जन(न०) गौण, विपत्ति, विशेषण।
उपसर्प(पु०)—पहुंच, अनुगमन।
उपसृज् (६प०)—छोड़ना, ग्रहण करना, पैदा करना।
उपसृप् (१ प०)—अचानक मिलना; हरकत करना, आक्रमण करना।
उपसृष्ट(न०)—मैथुन, भोग। वि० -छूटा हुआ, आक्रान्त।
उपसेक(पु०)-सींचकर मुलायम करना।
उपसेचन (न०)—पूर्ववत्।
उपसेव् (१ आ०)—सेवा करना, पूजा करना, इस्तेमाल करना, सेवन करना।
उपसेवा(स्त्री०)-पूजा, प्रतिष्ठा, सेवा।
उपस्कर(पु०)—अपवाद, आभूषण, घरेलू काम की वस्तु, उपकरण, मसाला, सामान।
उपस्करण(न०)—वध, भेट, तब्दीली।
उपस्तम्भन(न०)—आश्रय, जीवनाधार, बढावा। [हरी।
उपस्तरण(न०)—विस्तर, फैलाना, मस-
उपस्त्री (स्त्री०)—उपपत्नी, करी हुई औरत।
उपस्थ(पु०)—गोद। स्त्री०-जननेन्द्रिय
उपस्था(१ उ०)—समीप खड़ा होना, सेवा करना।
उपस्थाता(पु०)—सेवक, भृत्य, पुरोहित
उपस्थान(न०)—मौजूदगी, उपस्थिति, निकटता, जनसमूह, याददाश्त।
उपस्थायक(पु०)—नौकर, बुद्धानुयायी।
उपस्थित (वि०)—समीपागत, हाजिर मौजूद, प्राप्त।
उपस्थिति(स्त्री०) हाजिरी, मौजूदगी, प्राप्ति, याददाश्त।
उपस्पर्श —नम-छूना, स्नान, आचमन करना।

उपक्रमण (न०)-स्त्रियों का मासिकधर्म।
उपस्वत्व (न०)-भूमिकर, इनकमटैक्स आदि की आय।
उपहत(वि०)-क्षत, हानि पहुंचाया हुआ।
उपहति (स्त्री०)-वध, चोट, हानि।
उपहर (पु०)-युद्ध, लड़ाई।
उपहस्(१प०)-हंसना, मज़ाक उड़ाना।
उपहस्तिका (स्त्री०)-पानदानी, पान रखने की छोटी डिबिया।
उपहार (पु०)-भेंट, नज़राना, इनआम।
उपहूति (स्त्री०)-निमन्त्रण, बुलाना।
उपांशु(पु०)-मन मन में जाप करना, मौनता।
उपाकरण (न०)-तैयारी, आरम्भ, श्रावण की पूर्णिमा के दिन का किये जाने वाला कर्म।
उपाकर्म (न०)-पूर्ववत्।
उपाकृ (८ उ०)-लाना, निमन्त्रित करना, देना, आरम्भ करना।
उपाख्या(२प०)-बयान करना, कहना।
उपाख्यान-क (न०)--कहानी, छोटी कथा, सुनी हुई कथा को फिर से कहना।
उपागत (वि०)-समीपागत, संघटित प्रतिज्ञात। [स्वीकारी, घटना।
उपागम (पु०)-समीपागमन, प्रतिज्ञा,
उपाग्रहण (न०)-उपनयनसंस्कार के पश्चात् वेदाध्ययन।
उपाङ्ग (न०)-गौण अङ्ग। जैसे हाथ की अंगुली, अंगूठा आदि। प्राचीन संस्कृत साहित्य में वेदांगों के सहायक पुस्तकें उपांग कहलाते हैं जो चार हैं, यथा—पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र।
उपात्त (वि०)-गृहीत, प्राप्त, पकड़ा हुआ, कथित। पु०-ऐसा हाथी जिस का मद प्रकट न हुआ हो।
उपात्यय (पु०)-उल्लङ्घन, अनाचार, सीमाभंग।
उपादा (३ आ०)-लेना, ग्रहण करना, प्राप्त करना, पकड़ना।
उपादान (न०)-प्राप्ति, ग्रहण, बयान, कथन, हेतु।
उपादानकारण (न०)-वह कारण जो स्वयं कार्य रूप में परिणत हो जाय। ऐसी सामग्री जिससे कोई वस्तु प्रकट हो या तैयार हो।
उपादेय(वि०)-करने योग्य, उम्दा, ग्राह्य, उत्कृष्ट।
उपाधा (३ उ०)-समीप रखना, धारण करना, पहरना।
उपाधि (पु०)-झगड़ा, छल, चिन्ह, उपनाम, खिताब, टाइटिल।
उपाध्याय (पु०)-शिक्षक, गुरु, आचार्य, उस्ताद।
उपाध्यायी—यानी (स्त्री०) उपाध्याय की स्त्री, गुरानी।
उपानत्[ह्] (स्त्री०)-जूता, खड़ाऊं, चर्मपादुका।
उपान्त(पु०)-किनारा, सिरा, सीमा निकटता।
उपान्तिक (न०)-निकटता, समीपता।
उपान्त्य (न०)-पड़ोस। पु०-नेत्र का कोना। वि०-अन्तिम से पहिला।
उपाय (पु०)-ज़रिया, द्वारा, साधन, यत्न,

कोशिश हिकमत, तरीक़ा, प्रकार, तरकीब।
उपायचतुष्टय (न०)-विजयप्राप्ति के चार साधन यथा-साम, दान, दण्ड और भेद।
उपायन (न०)-समीप गमन, पास जाना, भेट, उपहार।
उपार (पु०)-अशुद्धि, अपराध।
उपारत (वि०)-निवृत्त, हटा हुआ, मशगूल।
उपारम् (१ प०)-दिलबहलाना, रुकना, निवृत्त होना।
उपारम्भ (पु०)-आरंभ, शुरू।
उपार्जन(न०)-प्राप्ति, हासिल।
उपालभ् (१ आ०)-ताना देना, धिक्कारना, निन्दा करना।
उपालम्भ (पु०)-निन्दा, उलाहना, ताना-जनी, देरी।
उपालम्भन(न०)-पूर्ववत्।
उपावृत्त (पु०)-थकान उतारने के लिये पृथ्वीपर लोटने वाला घोड़ा।
उपाश्रय (पु०)-आश्रयस्थान, आधार-स्थान।
उपास् (२ आ०)-समीप बैठना, पास २ बैठना, पूजा करना।
उपासक (पु०)-पूजा करने वाला, अनुगामी शूद्र।
उपासना-नम् (न०)-सेवा शुश्रूषा, देवा राधन याज्ञविद्या।
उपासा (स्त्री०)-सेवा, पूजा ध्यान।
उपासिता [तृ] (वि०)-आराधक।
उपे (२ प०)-समीप आना, पहुंचना, प्राप्त करना, समागम करना।
उपेक्ष् (१ आ०)-भूलना, विस्मरण करना, छोड़ना, अपमानना करना।
उपेक्षा (स्त्री०)—उदासीनता, बे परवाही, त्याग, अवमानना।
उपेत (वि०)-समीप में आया हुआ, उपस्थित, युक्त।
उपेन्द्र (पु०)—कृष्ण, विष्णु।
उपेन्द्रवज्रा (स्त्री०)- ११ अक्षर के पादवाला एक छन्द।
उपोढ (वि०) विवाहित, समीप।
उपोदक (वि०)-जलके समीप।
उपोद्ग्रह (पु०)-ज्ञान।
उपोद्घात (पु०)-आरंभ, भूमिका, प्रस्तावना, उदाहरण।
उपोद्बलन(न०)-तसदीक।
उपोषण(न०)-उपवास, व्रत, रोजा।
उप्त(वि०)-बोया हुआ।
उब्ज्(६प०)-दबाना, काबू में रखना, सीधा करना।
उभ्(६, ७, ९ प०)-कैद करना, ढकना।
उभ(सर्व०)-दो, यह शब्द केवल द्विवचन में प्रयुक्त होता है, जैसे "उभौ बालकौ"।
उभय(वि०)-दोनो, यह सर्वनाम है और प्राय एकवचन और बहुवचन में प्रयुक्त होता है।
उभयत [स्] (अ०)-दोनों ओर से, दोनों दशाओं में।
उभयत्र(अ०)-दोनों स्थानों में, दोनों दशाओं मे।
उभयथा(अ०)-दोनों प्रकार से, दोनों तरह।
उभयविध (वि०)-दोनों प्रकार का।
उभयसम्भव(पु०)-अनिश्चयता।
उभयात्मक (वि०)-दोनों से सम्बन्ध रखने वाला। [का बोधक।
उम्(अ०)-प्रश्न, स्वीकारी, क्रोध आदि

उमा (स्त्री०)–हिमालयराज की पुत्री पार्वती, हल्दी, रात्रि, शान्ति, कीर्ति, कान्ति। [देव।
उमापति(पु०)–उमाधव, शिव, महा-
उमासुत(पु०)--कार्तिकेय, गणेश।
उमेश(पु०)–शिव, महादेव।
उम्भ(६,७,९ प०)–क़ैद करना, ढकना।
उरग(पु०)–सांप, सर्प, छाती से चलने वाला।
उरगारि(पु०)–गरुड़, मोर।
उरगाशन(पु०)–गरुड़, मोर।
उरंग(पु०)–सांप, सर्प।
उरण(पु०)–मेंढा, भेड़।
उरणक(पु०)–मेंढा, बादल।
उरभ्र(पु०)–मेंढा, बादल, मेघ।
उररी(अ०)–स्वीकारी, विस्तार अर्थों का बोधक।
उररीकार(पु०)--स्वीकारी, वायदा।
उरस्(वि०)–उत्तम।न०-छाती,वक्षःस्थल
उरःघात(न०)–छाती का घाव।
उरु(वि०)–चौड़ा, विस्तीर्ण,अत्यधिक, उत्तम।
उरुता(स्त्री०)–बड़प्पन, विस्तीर्णता।
उरुष्या(स्त्री०)–रक्षा करने की इच्छा।
उरुसत्व(वि०)–शक्तिशाली,पराक्रमी।
उरूल(वि०)–स्वतन्त्र,स्वेच्छानुगामी।
उरोज(न०)–स्त्रीस्तन।
उर्णनाभ(पु०)–मकड़ी। [रेखा।
उर्णा (स्त्री०)--ऊन, भौं के बीच की
उर्द् (१ आ०)–नापना, खेलना, देना, खेलना।
उर्द् (१प०)-मारना,नुकसान पहुंचाना।
उर्वट(पु०)–बछड़ा, वर्ष, साल।
उर्वरा(स्त्री०)–उपजाऊ ज़मीन, सर्वधान्यसम्पन्न भूमि।
उर्वरी(स्त्री०)–श्रेष्ठ स्त्री।
उर्वशी(स्त्री०)–स्वर्ग की वेश्या, हूर, अप्सरा विशेष जो पुरूरवा की पत्नी होगई थी।
उर्वारु(पु०)--खरबूजा, ककड़ी।
उर्वी(स्त्री०)–भूमि, पृथ्वी, ज़मीन।
उल(पु०)–एक जंगली जानवर।
उलिन्द (पु०)–देशविशेष, शिव का नाम।
उलूक(पु०)–उल्लू।
उलूखल(न०)–ओखली, गुग्गुल।
उलूपी(स्त्री०)–पातालदेशस्थ नागराज की कन्या जिसने अर्जुन से विवाह किया था।
उल्का (स्त्री०)–उग्र आकार का आकाश से गिरा हुआ तेजःसमूह।
उल्कापात (पु०)–उपरोक्त तेजःसमूह का पृथ्वी पर गिरना।
उल्कामुखी(स्त्री०)–गीदड़ी।
उल्ब(न०)–योनि, जेर, जरायु।
उल्मुक (पु०)–मशाल, अंगार।
उल्बण(वि०)–वर्द्धित,घना,बड़ा हुआ।
उल्लंघ(१ आ०, १० प०)–लांघना, अतिक्रमण करना, पार करना।
उल्लंघन (न०)–अतिक्रमण, पार पहुंचना। [क्रान्त।
उल्लंघित(वि०)–लांघा हुआ, अति-
उल्लम्(१ प०)–कूदना,खेलना,प्रसन्न होना।

उल्लसन(न०)–खुशी, आनन्द।
उल्लास(पु०)–प्रकाश,चमक,आल्हाद, ग्रन्थ का अध्याय, आरम्भ।
उल्लासित(वि०)–प्रसन्न,आल्हादयुक्त
उल्लिख् (६ प०)–नक्श करना, मुसव्वरी करना, लिखना, लकीर खींचना।
उल्लिखित (वि०)–उपर्युक्त, ऊपर लिखा हुआ, ऊपर फेंका हुआ, रेखांकित।
उल्लेख (पु०)–हवाला, बयान, कथन, उच्चारण, लिखना, कुन्दा करना।
उल्लेखन (न०)–वमन, क़ै करना, खोदना।
उल्लिंगित (वि०)–ज्ञात, प्रसिद्ध।
उल्लोच (पु०)–मशहरी, चादनी, चन्दोवा।
उल्लोल(पु०)–महातरंग, बड़ी लहर।
उल्व (न०)–जरायु, गर्भ।
उशती (स्त्री०) नुकसान देने वाली बातचीत,हानिकर वार्तालाप।
उशनस् (पु०)–भृगु का पुत्र शुक्राचार्य।
उशीर (अस्त्री०)–वीरणमूल, खस।
उष्(१प०)–जलाना;मारना,सजादेना।
उष(पु०)–गुग्गुल, खारी मिट्टी, कामी पुरुष, दिन निकलना।
उषण(न०)–कालीमिर्च, पीपल, सोंठ।
उषप (पु०)–अग्नि, सूर्य।
उषस् (स्त्री०)–सुबह,प्रत्यूष,अहर्मुख।
उषसी (स्त्री०)–सांझ, सन्ध्या।
उषा (स्त्री०)–सुबह, प्रत्यूष, रात्रि, खारी मिट्टी, गाय, स्थाली, बाण राजा की कन्या।
उषाकाल (पु०)–मुर्गा, कुक्कुट, दिन निकलने का समय।
उषापति (पु०)–कामदेव का बेटा अनिरुद्ध, सूर्य।
उषित(वि०)–ठहरा हुआ,बासी हुआ।
उष्ट्र (पु०)–ऊंट, सांड, छकड़ा।
उष्ट्री (स्त्री०)–ऊंटनी।
उष्ण (वि०)–गर्म, तपा हुआ, कार्यशील, तेज। अस्त्री०–गर्मी, ग्रीष्म ऋतु, धूप। पु०–प्याज।
उष्णांशु (पु०)–सूर्य, सूरज।
उष्णक (पु०)–ज्वर, बुखार, ग्रीष्म ऋतु।
उष्णकाल (पु०)–गर्मी का मौसम।
उष्णता (स्त्री०)–गर्मी, तीव्रता।
उष्णागम (पु०)–उष्णाभिगम, गर्मी का मौसम।
उष्णीष (अस्त्री०)–पगड़ी, दुपट्टा, किरीट, मुकुट।
उष्म (पु०)–निदाघ, गर्मी।
उस्र (पु०)–किरण, बैल, सूर्य, दिन।
उस्त्रिक (पु०)–नटिया, बूढा बैल।
उह् (१प०)–दु:ख देना, मारना।
उह्र (पु०)–सांड, बैल।
उह्यमान (वि०)–खींचा हुआ, उठा हुआ।

ऊ

ऊ (पु०)–चन्द्रमा रक्षक, शिव। अ०–सम्बोधन, दया, रक्षा इन अर्थों का बोधक।
ऊढ(वि०)–विवाहित, उठाया हुआ, ले जाया हुआ।

ऊत (वि०)-सीया हुआ, गुंथा हुआ, बुना हुआ।
ऊति (स्त्री०)-सीना, बुनना, रक्षा, दिलबहलाव, अनुकूलता, सहायता।
ऊधस् (न०)-थन, गौ के दूध का आधार, छाती, वक्षःस्थल।
ऊधस्य(न०)-दूध, दुग्ध।
ऊन (वि०)-कम, नाकाफी, अपर्याप्त, असम्पूर्ण, हीन। [पन आदि अर्थों का बोधक।
ऊम् (अ०)-निन्दा, लोभ, क्रोध, उज्जडु
ऊय् (१ आ०)-बुनना, सीना।
ऊरव्य (पु०)-वैश्य, ऊरु से उत्पन्न हुआ।
ऊरु (पु०)-जांघ, जानु से ऊपर का भाग। [पु०-वैश्य।
ऊरुज-सम्भव (वि०)-जंघा से उत्पन्न।
ऊरुपर्व (अस्त्री०)-घुटना, जानु।
ऊर्ज् (१० उ०)-बल लगाना, जीना। स्त्री०-बल, रस, जल। [उत्साह
ऊर्ज (वि०)-कार्तिक मास का नाम, बल,
ऊर्णनाभ (पु०)-मकड़ी। [मेषलोम।
ऊर्णा(स्त्री०)-भौं के बीच के रोम, ऊन,
ऊर्णायु (पु०)-कम्बल, मकड़ी।
ऊर्णु (२ उ०)-घेरना, छिपाना, ढकना।
ऊर्दर (पु०) -राक्षस, बहादुर।
ऊर्ध्व (वि०)-सीधा, खड़ा हुआ, ऊंचा, उपरिस्थित।
ऊर्ध्वकच (पु०)-केतु का नाम।
ऊर्ध्वकण्ठी (स्त्री०)-महाशतावरी।
ऊर्ध्वकाय[अस्त्री०]-शरीर का ऊपर का भाग
ऊर्ध्वगामी (वि०)-ऊपर जाने वाला।
ऊर्ध्वगमन(न०-)चढ़ाई, ऊंचाई, स्वर्गारोहण
ऊर्ध्वजानु (वि०)-जिसके घुटने ऊंचे हों
ऊर्ध्वदेह (पु०)-दाहकर्म।
ऊर्ध्वबाहु [पु०]-ऐसा तपस्वी जो बाहुओं को सदा ऊपर की ओर उठाये रखता है
ऊर्ध्वभाग [पु०]-ऊपर का भाग।
ऊर्ध्वरेताः [स्०] (पु०)-ऐसा मनुष्य जिस का वीर्य ऊपर को जाता है स्खलित नहीं होता, भीष्म, शिव, सन्यासी।
ऊर्ध्वलोक[पु०]-ऊपर का लोक अर्थात् स्वर्ग
ऊर्ध्वशायी [वि०]-ऊपर को मुंह करके सोने वाला। [श्वास ऊपर को लेना
ऊर्ध्वश्वास[पु०]-श्वास का बाहर निकालना
ऊर्मि [अस्त्री०] लहर, प्रकाश, तरंग, तेजी, लाइन, पङ्क्ति।
ऊर्मिका [स्त्री०]-लहर, तरंग, पश्चात्ताप।
ऊर्मिमाली [पु०]-समुद्र।
ऊर्मिला[स्त्री०]-लक्ष्मण की स्त्री का नाम
ऊर्म्या [स्त्री०]-रात्रि। [की अग्नि, बादल।
ऊर्व [वि०]-विस्तीर्ण, बड़ा। पु०-समुद्र
ऊर्वरा [स्त्री०]-जरखेज़ ज़मीन।
ऊलूक(पु०)--उल्लू। [होना।
ऊष्(१ प०)-रोगी होना, अस्वस्थ
ऊष(पु०)-खारी भूमि, प्रातःकाल, प्रभात।
ऊषक(न०)-ऊषाकाल, कालीमिर्च।
ऊषण(न०)--कालीमिर्च, अदरक।
ऊषर(अस्त्री०)-खारीभूमि, ऐसी भूमि जिस में बोया हुआ बीज नहीं जमता, बंजरभूमि।
ऊष्म (पु०)--गर्मी, गर्मी का मौसम, क्रोध, भाप।
ऊह् (१उ०)-वितर्क करना, अनुमान लगाना, समझना।
ऊह(पु०)--अनुमान, तर्कना, परीक्षा, समझ, परिवर्तन।
ऊहन(न०)-अनुमान लगाना।

ऊहा (स्त्री०)-अर्थ पूरा न होने के कारण अन्य स्थान से शब्दों का ग्रहण करना, अध्याहार।

ऊहिनी(स्त्री०)-ढेर, सेना, समूह।

ऋ

ऋ-नागरी वर्णमाला का सप्तम अक्षर।

ऋ(अ०)-उपहास, भर्त्सना, सम्बोधन।

ऋ(१प०)-जाना, हिलना, प्राप्तकरना, आक्रमण करना।

ऋक्थ(न०)-धन, सम्पत्ति, सोना।

ऋक्थग्राह(पु०)-दायभागी, वारिस।

ऋक्ण(वि०)-क्षत, जख़्मी।

ऋक्ष(पु०)-रीछ, भालू, एक पर्वत।

ऋक्षगन्धा(स्त्री०)-विदारीकन्द।

ऋक्षनाथ-राट् (पु०)-चन्द्रमा, जाम्बवान्।

ऋक्षर (पु०) ऋत्विक्;कांटा।

ऋक्षा(स्त्री०)-उत्तरदिशा।

ऋक्षीक(वि०)-भालु के समान भयानक।

ऋक्संहिता(स्त्री०)-वेदों का मन्त्रभाग।

ऋग्वेद (पु०)-चार वेदों में से पहिला जो अग्नि द्वारा प्रकट हुआ है और जिस में विशेषत विज्ञान का वर्णन है। यह आर्यों का प्राचीनतम धर्मपुस्तक है।

ऋच् (६प०)-जाना,तारीफ़ करना,चमकना

ऋच [क] (स्त्री०)सूक्त, गीत, श्लोक। स्तुति, पूजा, ऋग्वेद का मंत्रसमूह।

ऋचीक(पु०)-जमदग्नि का पिता।

ऋचीष(पु०)-नरक विशेष।

ऋच्छ (६ प०)-कठोर होना,जाना,हरकत करना, मोह करना।

ऋच्छका (स्त्री०)-इच्छा।

ऋज् (१ आ०)-जाना, प्राप्त करना।

ऋजीष (न०)-नरकविशेष, कड़ाई।

ऋजु (वि०)-सरल, सीधा।
[स्त्रीलिंग में ऋज्वी,ऋजु दोनों,होते हैं]।

ऋजुता(स्त्री०) सीधापन,ईमानदारी,सच्चाई

ऋजूयु(वि०)-सीधा, ईमानदार।

ऋञ्ज् (६उ०)-आगे को उछलना,दौड़ना, यत्न करना।

ऋण्(६ उ०)--जाना।

ऋण(न०)--क़र्ज़,उधार, क़िला, किले की पृथ्वी; दुर्ग, जल, भूमि, ऋषिऋण, देवऋण और पितृऋण, तीन प्रकार के ऋण होते हैं जिन का उतारना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है।

ऋणग्रस्त(वि०)-क़र्ज़ में फंसा हुआ।

ऋणग्राही(वि०)-कर्जदार, अधमर्ण।

ऋणदाता(वि०)-क़र्ज़ देने वाला, कर्ज अदा करने वाला।

ऋणमार्गण(न०)-प्रतिभू, ज़ामिन्।

ऋणमुक्त (वि०)-ऋण से छुटा हुआ।

ऋणलेख्य(न०)-दस्तावेज़ जिसमें क़र्ज़ लेने का इकरार होता है।

ऋणिक(पु०)-कर्ज़दार, अधमर्ण।

ऋणी(पु०)-पूर्ववत्।

ऋत् (२ आ०)-जाना, भर्त्सना करना, मुकाबिला करना।

ऋत(वि०)-उचित, ईमानदार, सच्चा पूजित, दीप्त, गया हुआ। न०-ब्राह्मण का भोज्य आहार, मोक्ष

जल, सत्य । [परमेश्वर ।
ऋतधाम (वि०)-सत्यस्थान अर्थात्
ऋतम्(अ०)-सत्य, सच ।
ऋतम्भर (पु०)-परमेश्वर, सचाई का रक्षक।
ऋति (पु०)-सेना । स्त्री०-आक्रमण, निन्दा, स्पर्धा, गति, मार्ग, अभ्युदय, सचाई, स्मृति ।
ऋतीया (स्त्री०)-लज्जा, निन्दा, धिक्कार ।
ऋतु (पु०)-मौसम, वर्ष का छठा भाग, बहार, वह काल जब कि स्त्रियों का रक्तस्राव होता है, हैज़, दीप्ति, चमक । वर्ष में छः ऋतु होते हैं, जिन के नाम ये हैं-शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा शरद् और हेमन्त, शिशिर माघ से आरम्भ होती है ।
ऋतुकाल (पु०)-स्त्री के रजोदर्शन का समय जो प्रायः चार दिन तक होता रहता है, उसके पश्चात् गर्भधारण का समय होता है ।
ऋतुगामी(पु०)-रजोदर्शन के पश्चात् ही स्त्री से समागम करने वाला, सम्भोग में नियमाचारी ।
ऋतुपर्ण(पु०)-अयोध्या के एक राजा का नाम ।
ऋतुपा (पु०)-इन्द्र का नाम ।
ऋतुमती (स्त्री०)-हैज़ वाली स्त्री, रजस्वला ।
ऋतुराज (पु०)-ऋतुओं का राजा अर्थात् वसन्त ।
ऋतुस्नाता (स्त्री०)-रजोदर्शन के पश्चात् नहाई हुई स्त्री, गर्भ धारण करने योग्य स्त्री ।
ऋते(अ०)-विना,सिवाय।[वाला,पुरोहित
ऋत्विज् [क्](पु०)-याजक, यज्ञ कराने
ऋद्ध(वि०)-अमीर धनवाला, उन्नत समृद्ध न०--बढ़ोतरी, सिद्धान्त ।
ऋद्धि(स्त्री०) अभ्युदय,सम्पत्ति,कामयाबी, उन्नति, शोभा ।
ऋद्धिकाम(वि०)-उन्नति चाहने वाला।
ऋध् (४,५प०)-उन्नति करना,बढ़ना,काम- याब होना । [लड़ाई करना।
ऋफ् (६ प०)-देना, मारना, निन्दा करना,
ऋभु(पु०)-देव, देवता ।
ऋभुक्ष(पु०)-इन्द्र, वज्र, स्वर्ग ।
ऋश्य (वि०)-मारने योग्य, वध्य ।
ऋश्यकेतु(पु०) प्रद्युम्न का पुत्र अनिरुद्ध ।
ऋष् (१, ६ प०)--जाना ।
ऋषभ(पु०)-बैल, सांड, एक औषध, जैनों का पहिला अवतार । [पुरुष या नर शब्द पूर्वपद होने पर यह शब्द श्रेष्ठ अर्थ बोधक है जैसे पुरुषर्षभ] ।
ऋषभतर (पु०)-एक छोटा या जवान बैल
ऋषभदेव (पु०)-भागवत के अनुसार राजा नाभि के पुत्र जो विष्णु के २४ अवतारों में गिने जाते हैं, जैनियों के आदि तीर्थङ्कर ।
ऋषभध्वज (पु०)--शिव, महादेव।
ऋषभा(स्त्री०)-पुरुष के स्वरूप वाली स्त्री, शूकशिम्बी ।
ऋषि (पु०)-वेदमन्त्रार्थ को प्रकाशित करने वाला, अनुष्ठान कर्म को बताने वाला, सूत्रकर्ता । मुनि,

आचार्य, गोत्र और प्रवर को चलाने वाला मुनि ।
ऋषिकुल्या (स्त्री०)–महानदी ।
ऋषिकृत (वि०)-प्रकट होने वाला ।
ऋषितर्पण (न०)–ऋषियों का तर्पण ।
ऋषिप्रोक्ता(स्त्री०)–माषपर्णी नामक औषध । [पढ़ना ।
ऋषियज्ञ (पु०)–ब्रह्मयज्ञ, वेद का
ऋष्टि (स्त्री०)–दोनों ओर धारा वाला खड्ग । [हरिण ।
ऋष्य (पु०)–मृगभेद, एक प्रकार का
ऋष्यमूक(पु०)–पम्पा सरोवर के पास पुष्पित वृक्षों वाला एक पर्वत जिस का वर्णन रामायण में आया है, जहां रामचन्द्र सुग्रीव के पास कुछकाल तक रहे ।
ऋष्यशृङ्ग (पु०)–विभाण्डक ऋषि का पुत्र, लोमपाद नामक राजा की कन्या शान्ता का पति, मुनिविशेष । [पु०-इन्द्र, अग्नि ।
ऋष्व (वि०)–बड़ा, ऊंचा [वेद में] ।

ॠ

ॠ (अ०)–दूरीकरण, भय, निन्दा, स्मृति, दया इत्यादि अर्थों का बोधक।स्त्री०-स्मृति, गति, देवमाता, भैरव, दानव, असुर।न०-वक्ष:स्थल
ॠ (ध्पा०)–जाना, हरकत करना ।

ऌ

ऌ(अ०)–देवमाता, दैत्यमाता, पृथिवी, पर्वत ।

ॡ

ॡ (अ०)–माता । पु०–शिव । स्त्री०–पृथिवी, पर्वत, देवमाता ।

ए

ए–नागरीवर्णमाला का ग्यारहवां स्वर ।
ए(अ०)-दया, स्मृति, निन्दा, सम्बोधन, ईर्ष्या अर्थों का बोधक । पु०–विष्णु ।
एक(स०)-एक की संख्या, अकेला, सिर्फ, केवल, एकाकी, वही, अद्वितीय, अल्प, थोड़ा ।
एकक(वि०)–अकेला, तन्हा, असहाय ।
एककाल(अ०)–एकदा, एक समय, एक ही समय ।
एककालीन(वि०)–समकालीन, एकही समय में रहने वाला ।
एकगुरु(पु०)–सहपाठी, सहाध्यायी ।
एकचक्र(पु०)–सूर्य का रथ ।
एकचत्वारिंशत(स्त्री०)–इकतालीस ।
एकचारी(वि०)–अकेला रहने वाला, अकेला ।
एकचित्त(वि०)–एकही विषय का ध्यान करने वाला ।
एकजाति(पु०)–शूद्र ।
एकजातीय(वि०)–एक ही वंश का ।
एकतम(वि०)--बहुतसों में से एक ।
एकतर(वि०)–दो में से एक, अन्य ।
एकता-स्त्रम्–एका, मेल, इत्तिफाक ।

एकत्र (अ०)–एक स्थान में, बाहम, परस्पर।
एकदा (अ०)–एक बारगी, एक समय, किसी काल में, साथ २।
एकधा (अ०)–एक प्रकार से, तुरन्त, बाहम। [आसक्त।
एकनिष्ठ (वि०)–एक ही विषय पर
एकनेत्र-नयन-दृश् (वि०)-काणा, एकाक्षी पु०–कौआ, शिव, तत्त्ववेत्ता, कुबेर।
एकपक्ष (वि०)–उस ही पार्टी का, सहायक। पु०–एक पार्टी।
एकपतिक (वि०)–सौत, पतिव्रता।
एकपञ्चाशत (स्त्री०)–इक्यावन की संख्या।
एकपत्नी (स्त्री०)–सपत्नी, सौतन, पतिव्रता, सती स्त्री। [कैलास।
एकपद (वि०)–लंगड़ा। पु० वैकुण्ठ,
एकपदी (स्त्री०)–पगडण्डी, पथ। वि०–एक पैर वाली स्त्री।
एकपदे (अ०)–अचानक, यकायक।
एकपर्णिका (स्त्री०)–दुर्गा की छोटी बहिन, दुर्गा।
एकपाती (वि०)–आकस्मिक।
एकपाद (पु०)–विष्णु, शिव।
एकपिंगल (पु०)–कुबेर जिस की एक आंख पीली थी।
एकपुरुष (पु०)–श्रेष्ठ, प्रधान।
एकप्रकार (वि०)–एक ही तरह का।
एकप्रभुत्व (न०)–सम्पूर्ण आधिपत्य।
एकभक्त (वि०)–वफादार, एक ही की सेवा करने वाला।
एकमति (वि०)–एक राय का।
एकमना (वि०)–जिस का एक ही विषय पर ध्यान लगा हो।
एकयोनि (वि०)–एक ही वंश का।
एकरस (वि०)–एकसा, न बदलने वाला। [वर्त्ती राजा।
एकराट्–ज (पु०)–सार्वभौम, चक्र-
एकराशि (पु०) ढेर, समूह।
एकरूप (वि०)–अनुरूप, समान।
एकवचन(न०)–एक संख्या का बोधक।
एकवार–वारे (अ०)–एकदा, अकस्मात, तुरन्त। [सादा।
एकविध (वि०)–एक ही प्रकार का,
एकवृत (स्त्री०)–स्वर्ग।
एकवेश्म (न०)–सूना घर। [वाला।
एकव्यवसायी(वि०)–एकसा पेशा करने
एकशत (न०)–एक सौ एक।
एकषष्टि (स्त्री०)–इकसठ, ६१।
एकसप्तति (स्त्री०)–इकहत्तर, ७१।
एकसार्थं (अ०) परस्पर, बाहम।
एकस्थ (वि०)–एक स्थान में रहने वाला, शान्त।
एकाकी (वि०)–अकेला, तन्हा।
एकाक्ष(वि०)–एक आंख वाला। पु०–कौआ, शिव।
एकाक्षी (वि०)–पूर्ववत्।
एकाग्र (वि०)–एक ही देश पर जमा हुआ, एक ही विषय का ध्यान करने वाला, शान्त।
एकाङ्ग (वि०)–एक अंग का। पु०–शरीररक्षक, बुध, विष्णु। न०–शिर, चन्दन।

एकादश (वि०)—ग्यारहवां ।
एकादशक (वि०)—ग्यारह भाग का बना हुआ ।
एकादशन् (वि०)—एक और दश अर्थात् ग्यारह ।
एकादशी (स्त्री०)—प्रत्येक कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष की ग्यारहवीं तिथि ।
एकान्त(वि०)—अकेला, तन्हा, केवल, एक, अत्यन्त, जरूरी ।
एकान्तर(वि०)—एकको छोड़कर अगला
एकान्तिक(वि०)—अन्तिम, परिणाम-सूचक ।
एकान्न(वि०)—एक साथ खाने वाला, एक ही वार अन्न खाने वाला ।
एकाब्दा(स्त्री०)—एक वर्ष की गौ ।
एकायन (वि०)—एकाग्रमन, एक ही बात की चिन्ता करने वाला ।
एकार्थ(वि०)-समान अर्थवाला, समान इच्छा वाला ।
एकाशीति (स्त्री०)—इक्यासी, ८१।
एकाश्रय (वि०)—अनन्यगति ।
एकाह (पु०)—एक दिन ।
एकाहार (वि०)—दिन में एक बार भोजन करने वाला ।
एकीकृ(८ उ०)-इकट्ठा करना, जोड़ना, मिलाना । [सगति ।
एकीभाव(पु०)—एकपन, एकत्व, जोड़,
एकीभू (१ प०)--एक होना, मिलना, जुड़ना । [सहायक ।
एकीय (वि०)-एक पक्ष का, पु०-
एकैक-कश (अ०)—एक २ करके ।
एकोक्ति(स्त्री०)-एकही वचन या बात।
एकोदर(वि०)-सहोदर, एक ही उदर से उत्पन्न ।
एकोन(वि०)–जिस में एक कम हो ।
एकोनविंशति(स्त्री०)—उन्नीस ।
एज् (१ आ०)—जाना, हरकत करना।
एड(पु०)-मेष, भेड़, बहिरा ।
एडक(पु०)—जगली बकरा ।
एण(पु०)-काले रंग का मृग ।
एत(वि०)-गतिशील, प्राप्त, आगत। पु०-हरिण, मृगछाला ।
एतत्कालीन(वि०)–इदानीन्तन, इस समय का ।
एतत्क्षणात्(अ०)–यहांसे, इससे आगे
एतद्[पु०–एषः, स्त्री०–एषा,न०-एतद्] (सर्व०)–यह, पुरोवर्ती वस्तु का बोधक ।
एतदीय(वि०)–इसका, एतत्सम्बन्धी।
एतादृश्-श(वि०)–ऐसा, इस मानिन्द, इस प्रकार का ।
एतावत्(वि०)–इतना, यहां तक, इस परिमाण का । [उठना।
एध्(१आ०)–बढना, उन्नति पाना,
एध(पु०)–ईंधन, काष्ठ ।
एधस् (न०)–पूर्ववत् ।
एधा(स्त्री०)–अभ्युदय, खुशी ।
एधित(वि०)–बढा हुआ, वर्द्धित ।
एनस्(न०)–पाप, गुनाह, निन्दा ।
एनी (स्त्री०)–नदी, चश्मा ।
एरक(न०)–ऊनी कम्बल ।
एरण्ड(पु०)–अरण्ड वृक्ष ।
एलविल(पु०)–कुबेर ।

एला(स्त्री०)–इलायची, इलायची वृक्ष
एलिका(स्त्री०)–छोटी इलायची।
एव(अ०)–तिरस्कार, बराबरी, निश्चय, योड़ापन, सादृश्य आदि अर्थों का बोधक, ही, भी, निश्चय।
एवम् (अ०)–इस प्रकार, ऐसा, हां, स्वीकारी, निश्चय।
एष्(१उ०)–पास जाना, जल्दी से पहुंचना, रींगना, इच्छा करना।
एषणा (स्त्री०)–तलाश, इच्छा, स्वाहिश, प्रार्थना।
एषा (स्त्री०)–पूर्ववत्।
एष्टि (स्त्री०)–पूर्ववत्।

ऐ

ऐ–नागरी वर्णमाला का बारहवां स्वर
ऐ(पु०)–शिव। अ०–स्मृति, निमंत्रण, सम्बोधन, अय, ओ।
ऐक(वि०)–एकका, एकसम्बन्धी।
ऐकपत्य (न०)–अप्रतिहतप्रभुता, सम्पूर्ण अधिकार।
ऐकमत्य(न०)–मेलमिलाप, इत्तिफाक़, सर्वसम्मति।
ऐकागारिक(पु०)–चोर, केवल एक घर का मालिक।
ऐकाग्र (वि०)–अनन्यासक्तचित्त, स्वस्थचित्त।
ऐकाङ्ग (पु०)–शरीररक्षक, सेना का सिपाही।
ऐकात्म्य(न०)–परमात्मा में लय हो जाना, एकता, आत्मा का मेल।
ऐकान्तिक(वि०)–सम्पूर्ण, पूरा, अप्रतिहत, अव्यभिचारी, दृढ़।
ऐकान्तिके(अ०)–अकेले में, एकान्त में, दूसरों से अलग होकर।
ऐकार्थ्य (न०)–उद्देश्य का एक होना, अर्थ में समानता होना।
ऐकाहिक(वि०)–एक दिन का, एक दिन को छोड़ कर होने वाला। पु०–तेइया नामक ज्वर, प्रतिदिन नियतसमय पर होने वाला ज्वर।
ऐक्य(न०)–एकता, एका, मेल, जोड़।
ऐक्षव(न०)–शक्कर, गुड़, सुराभेद।
ऐक्ष्वाक(पु०)–इक्ष्वाकुवंश की संतान, सूर्यवंशी राजा। वि०–इक्ष्वाकुकुलोत्पन्न।
ऐच्छिक (वि०)–इच्छा पर निर्भर, इच्छानुकूल, अख़्त्यारी।
ऐडक(वि०)–मेषसम्बन्धी।
ऐडविड (पु०)–कुबेर। [आदि।
ऐण(वि०)–काले हरिण का चर्म
ऐणिक(वि०)–हरिण का मारने वाला।
ऐतरेय (पु०)–इतरा ऋषि की सन्तान जो ऐतरेय ब्राह्मण का उद्बोधनकर्ता हैं। [निषद्।
ऐतरेयोपनिषद्(स्त्री०)–आठवां उपऐतिहासिक(न०)–इतिहाससम्बन्धी। पु०–इतिहास का जानने वाला।
ऐतिह्य (न०)–तवारीख़ी, इतिहाससम्बन्धी, परम्परा से प्राप्त उपदेश, एक प्रकार का प्रमाण।
ऐनस(न०)–पाप, अपराध।
ऐन्दव (वि०)–चन्द्रमासम्बन्धी। पु०–

चन्द्रमास । [वालि, एक तत्सर ।
ऐन्द्र(वि०)-इन्द्र का । पु०-अर्जुन,
ऐन्द्रजालिक(वि०)-छलयुक्त, मायिक, ठगने वाला । पु०—छलिया, बाजीगर । [वालि ।
ऐन्द्रि(पु०)-कौआ, जयन्त, अर्जुन,
ऐन्द्रिय(वि०)-इन्द्रियों से सम्बन्ध रखने वाला, प्रत्यक्ष ।
ऐन्द्री (स्त्री०)-पूर्वदिशा, दुःख, विपत्ति, दुर्गा, छोटी इलायची ।
ऐन्धन (पु०)-सूर्य । वि०-ईंधन का बना हुआ ।
ऐभ(वि०)-हस्तिसम्बन्धी ।
ऐयत्य (न०)-संख्या, परिमाण ।
ऐरावत (पु०)-इन्द्र का हाथी जो कहते हैं कि समुद्र में से उत्पन्न हुआ था ।
ऐरिण(न०)-सैंधा नमक ।
ऐरेय(न०)-मद्य, शराब ।
ऐल(पु०)-इला और बुधका पुत्र पुरुरवा
ऐलविल(पु०)-कुबेर ।
ऐशानी(स्त्री०)-उत्तर और पूर्व की दिशा, दुर्गा का नाम ।
ऐश्वर(वि०)-प्रभावशाली, शक्तिसम्पन्न, स्वर्गीय ।
ऐश्वरिक(पु०)-ईश्वर का मानने वाला।
ऐश्वर्य (न०)-महिमा, प्रभुत्व, शक्ति, प्राधान्य, धनसम्पत्ति ।
ऐषमस्(अ०)-इस वर्ष में,वर्तमान वर्षमें।
ऐषमस्तन (वि०)-एतद्वर्षीय ।
ऐहिक(वि०)-इष्टि सम्बन्धी ।[प्राप्त
ऐहलौकिक(वि०)-इसलोक का,यहां-
ऐहिक (वि०)-पूर्ववत् ।
ऐहिकदर्शी (वि०)-संसारी, केवल संसार की चिन्ता करने वाला ।

ओ

ओ-नागरी वर्णमाला का तेरहवां स्वर
ओ (पु०)-ब्रह्मा, जगत्पति । अ०-सम्बोधन, दया, स्मरण ।
ओक (पु०)-घर, पक्षी, शूद्र, वृषल ।
ओकः [स्] (न०)-घर, निवासस्थान, पनाह की जगह ।
ओकण (पु०) खटमल ।
ओकुल (पु०)-चपाती, आटे की बनी हुई रोटी ।
ओकोदनी (स्त्री०)-जूं, केशकीट ।
ओक्य (न०)-हर्ष, सन्तोष, आराम की जगह । [सजाना,सामर्थ्य रखना।
ओख् (१ प०)-सुखाना, हटाना,
ओघ (पु०)-समूह, धारा, जलधारा, बाढ़, एक प्रकार का नाच ।
ओङ्कार (पु०)-प्रणव, परमात्मा का सर्वोत्तम नाम जिसकी वेद में सर्वत्र महिमा गाई है । [बढ़ना।
ओज् (१० उ०)-सामर्थ्य रखना,
ओजः[स्] (न०)-सामर्थ्य, शारीरिक धातुविशेष । [तेजस्वी ।
ओजिष्ठ (वि०)-बड़े बलवाला,
ओजस्वी(वि०)-मज़बूत, शक्तिशाली, दीप्तिमान् ।
ओड़ी (स्त्री०)-जंगली चावल ।
ओण (१ प०)-हटाना, खींच कर ले

जाना। [अन्तर्यामी।
ओत (वि०)—तागे में मिला हुआ,
ओतप्रोत(वि०)—चारों ओर को फैला हुआ, आड़ा और लम्बा दोनों ओर में मिला हुआ।
ओतु (पु०)—बिलाव, बिल्ली।
ओदन (अस्त्री०)—भात, उबले हुए चावल, अनाज।
ओधस् (न०)—ऊध, गाय का थान।
ओम् (अ०)—अ, उ और म् इन तीनों मे बना हुआ एक अक्षर जो परमात्मा का सर्वोत्तम नाम है। आरंभ,स्वीकारी, मंगल, आज्ञा, दूरीकरण।
ओमात्रा (स्त्री०)—रक्षा; दयालुता, सहायता।
ओल्ल(वि०)—तर, गीला।
ओष(पु०)—दाह, जलन, पकाना।
ओषधि—धी(स्त्री०)—दवाई, पौदा, फलपाकान्त वृक्ष।
ओषधिधर-पति(पु०)—चन्द्रमा,अगार।
ओषधिप्रस्थ(पु०)—हिमालयपुर।
ओषम्(अ०)—फौरन, तुरन्त।
ओष्ठ(पु०)—होठ, दांतों का पर्दा।
ओष्ठाधर(न०)—ऊपर और नीचे का होठ। [उच्चारण होता है।
ओष्ठ्य (पु०)—वे वर्ण जिनका होठों से

औ

औ(अ०)—सम्बोधन, पुकारना, बुलाना।
औक्ष(न०)—बैलों का समूह।
औक्षक(न०)—पूर्ववत्।
औख्य (वि०)—पतीली या बटलोई में पकाई हुई [वस्तु]।
औघ(पु०)—बाढ़।
औचिती(स्त्री०)—उचितपन,उपयुक्तता, मुनासिब बात, योग्यता।
औचित्य(न०)—पूर्ववत्।
औजस(न०)—स्वर्ण, सोना।
औज्ज्वल्य-(न०)-चमक,तेज़ी,सुन्दरता
औड(वि०)—तर, गीला।
औडव(वि०)—नक्षत्र सम्बन्धी।
औडुपिक(पु०)—नौका का सवार।
औडुम्बर(पु०)—गूलर का फल, तांबे की बनी हुई वस्तु, एक प्रकार का कुष्ठरोग।
औत्कण्ठ्य(न०)—उत्कट इच्छा,चिन्ता
औत्कर्ष्य(न०)—उत्कर्ष, महत्त्व।
औत्तर(वि०)-उत्तरदिशा का,शुमाली।
औत्तरेय(पु०)—राजा परीक्षित।
औत्तानपादि(पु०)—ध्रुव।
औत्र(वि०)—खुर्दरा, विषम।
औत्सर्गिक(वि०)—प्राकृतिक, त्याज्य, स्वाभाविक, साधारण।
औत्सुक्य (न०)—चिन्ता, बेचैनी, उत्कट इच्छा। [वाला।
औदक(वि०)-जलयुक्त, पानी में रहने
औदनिक (पु०)—रसोइया, पाचक, बावर्ची।
औदरिक(वि०)—केवल पेट की चिन्ता करने वाला अर्थात् पेटू। [दान।
औदार्य(न०)-उदारता, फैयाज़ी, बड़-

औदासीन्य(न०)-उदासीनता, उपेक्षा, लापरवाही, वैराग्य।

औदास्य(न०) पूर्ववत्।

औदुम्बर(न०)-गूलर का फल, गूलर का काष्ठ, ताम्बा, कुष्ठरोगभेद। पु०-यमराज। [साहसिकता।

औद्धत्य (न०)-उद्धतपन, उजड्डपन,

औद्भिज(न०)-पृथ्वी से उत्पन्न होने वाला नमक।

औद्वाहिक (वि०)-विवाह सम्बन्धी, विवाह में प्राप्त।

औधस्य(न०)-दुग्ध, दूध।

औपकर्णिक(पु०)-कानों के पास का।

औपग्रस्तिक (पु०)-ग्रहण, सूर्य वा चन्द्रग्रहण।

औपचारिक(वि०)-गौण, उपचारयुक्त

औपधर्म्य (न०)-असत्य सिद्धान्त, नास्तिकता।

औपधिक(वि०)-धोखेबाज, मायिक।

औपनिषद् (वि०)-जिस का वर्णन उपनिषदों में हो।

औपपत्तिक (वि०)-हाथ के पास अर्थात् समीप।

औपयिक (स्त्री०)-उपाय, इलाज।

औपम्य (न०)-सादृश्य, बराबरी।

औपयोगिक (वि०)-उपयोग में आने वाला।

औपल (वि०)-पथरीला, पत्थर का।

औपवस्त्र (न०)-उपवास, रोजा।

औपवास्य (न०)-पूर्ववत्।

औपवाह्य (पु०)-राजा का हस्ती, राजा की सवारी।

औपसर्गिक (पु०)-वातादि सन्निपात से उत्पन्न हुआ रोगविशेष।

औपस्थ्य (न०)-मैथुन, समागम।

औपाधिक (वि०)-मजबूत, उपाधि से उत्पन्न हुआ।

और्भ्र (न०)-मेषमांस, ऊनी कपड़ा।

औरभ्रक (न०)-भेड़ों का समूह, भेड़ों का गल्ला।

औरभ्रिक (पु०)-गड़रिया।

औरस (वि०)-छाती से उत्पन्न, आत्मज। पु०-विवाहित पत्नी से उत्पन्न हुआ पुत्र। [क्रिया।

और्ध्वदेह (न०)-दाहकर्म, अन्त्येष्टि

और्व (पु०)-उर्व की सन्तान वा दावानल। न०-पहाड़ी नमक।

और्वर (वि०)-पार्थिव।

औलान(न०)-पानी का हौज, आश्रय।

औलूक (न०)-उल्लुओं का समूह।

औलूक्य (पु०)-कणाद मुनि। [हुआ

औशिज (वि०)-इच्छुक, जोश से भरा

औशीनर (पु०)-उशीनर का पुत्र।

औशीर (न०)-बिस्तरा, कुर्सी, चौकी, पंखा।

औषण (न०)-काली मिर्च।

औषध (न०)-दवाई, भेषज, रोगनाशक द्रव्य।

औषधि-धी (स्त्री०)-पूर्ववत्।

औषस(वि०)-उषाकाल का, सुबह का

औषसी (स्त्री०)-उषाकाल।

औष्ट्र (न०)-ऊंट का दूध।

औष्ट्रक (न०) ऊंटों का समूह।

औष्ठ्य (वि०)-होठ, होठ के द्वारा

उच्चारण किया हुआ ।
औष्ण (न०)–गर्मी, उष्णता ।

क

क—नागरी वर्णमाला का प्रथम व्यञ्जन, कवर्ग का प्रथमाक्षर ।
क (पु०)–ब्रह्म, यम, सूर्य, आत्मा, पक्षी, शरीर, मन, काल, तेज, सम्पत्ति, अग्नि, कामदेव । न०–जल, हर्ष ।
क (प्रत्यय)–स्वार्थ और अल्पार्थ में प्रयुक्त होता है ।
कंस् (२आ०)–जाना, आज्ञा करना, नाश करना ।
कंस (अस्त्री०)–प्याला, कटोरा, आढक नामक परिमाण । पु०–मथुरा का एक राजा उग्रसेन का पुत्र जो कृष्ण का मामा था ।
कंसक (न०)–हीराकसीस नामक नेत्र-औषधविशेष ।
कंसकार(पु०)–कसेरा नामक जाति ।
कंसजित्-द्विष्(पु०)–कंस का मारने वाला अर्थात् कृष्ण ।
कंसवध(पु०)–राजा कंस का हनन जो श्रीकृष्ण जी ने किया था और जो कृष्णजीवन की एक प्रसिद्ध घटना है । [अर्थात् कृष्ण ।
कंसारि–राति(पु०)–कंस का शत्रु
कक्(१ आ०)–चाहना, दर्पित होना ।
कक्(१ आ०) [इदित्]–जाना ।
ककन्द(पु०)–सोना, स्वर्ण ।
ककुल्ल(पु०)–चातक पक्षी ।
ककुत्स्थ(पु०)–सूर्यवंशीय एक राजा का नाम जो इक्ष्वाकु का पोता था ।
ककुद्(स्त्री०)–चोटी, शिखर, बैल का डुहड, प्रधान, सरदार, छत्र चामर आदि राजा का चिन्ह ।
ककुद(अस्त्री०)–बैलका डुहड, प्रधान, पर्वत की चोटी ।
ककुद्मती(स्त्री०)–कटि, कमर ।
ककुद्मान्(पु०)–बैल, पर्वत ।
ककुद्मी(पु०)–डुहड वाला बैल ।
ककुन्दर (न०)–शयनकूप, पृष्ठवंश के नीचे का गर्त्ताकार ।
ककुभ् (स्त्री०)–दिशा, कोण, शोभा, चोटी, रागनी का एक भेद ।
ककेरुक(पु०)–पेट का एक कीड़ा ।
कक्ख् (१प०)–हंसना ।
कक्खटी(स्त्री०)–खड़िया, चाक ।
कक्ष(पु०)-स्त्रियों के दामन का आंचल-लता, घास, सूखा हुआ वन, छिपने का स्थान, घर की दीवार, पाप, तहामी ।
कक्षा(स्त्री०)–कमर, प्राचीर, अन्तःपुर, स्पर्धा, दशा, क्लास ।
कक्षाग्नि(पु०)–दावानल, वनाग्नि ।
कक्षोत्था(स्त्री०)--नागरमोथा ।
कक्ष्या(स्त्री०)–हाथी के बांधने की रस्सी, स्त्रियों के पहरने की तगड़ी, दीवार, घेरा, समानता ।
कख्(१प०)–हंसना, मजाक उड़ाना ।
कक्ष्या(स्त्री०)–घेरा, किसी बड़े महल का भाग या कमरा ।

कग्(१ प०)—काम करना, सम्पादन क०

कङ्क (पु०)-युधिष्ठिर का नाम जो उन्होंने राजा विराट् के यहां धारण किया था, बगुला।

कङ्कट(पु०)—अंकुश, कवच, लोह वस्त्र।

कङ्कण(अस्त्री०)—हाथ में पहरने का एक आभूषण, आभरण।

कङ्कत(अस्त्री०)—बालों के साफ करने की कंघी वा कंघा।

कङ्कतिका(स्त्री०)—कंघी, नागबला।

कङ्कती(स्त्री०)—कंघी, प्रसाधनी।

कङ्कपत्र(पु०)—एक प्रकार का बाण जिस में कङ्क नामक पक्षी के पंख लगे हुए होते हैं। [यन्त्रविशेष।

कंकमुख(अस्त्री०)-संडासी नामक

कङ्कर(वि०)—बुरा, कमीना।

कङ्काल (अस्त्री०)—हड्डियों का पिञ्जर, मांसरहित शरीर का ढांचा।

कङ्कालमाली(पु०)—शिव का नाम।

कङ्कालशेष(वि०)—जिस के शरीर में केवल हड्डी शेष रह गई हो।

कङ्कु(पु०)—कंगुनी नामक अनाज।

कङ्कू(पु०)—अन्दरूनी शरीर।

कङ्केल(पु०)—अशोक वृक्ष।

कङ्गुल (पु०)—हाथ।

कच् (१ प०)—चिंघाड़ना, चमकना।

कच (पु०)—बाल, केश, बन्ध, कपड़े की गोट, बादल, बृहस्पति का एक पुत्र।

कचगन (अ०)—बाजार, हट्ट।

कचगल (पु०)—समुद्र।

कचमाल (पु०)—धुआं, धूम।

कचाकु(वि०)—कमीना, क्रूर, कष्टसाध्य। पु०—सर्प।

कचु (स्त्री०)—हलदी, कचूर। [मट्ठा।

कच्चर (वि०)—मैला, क्रूर। न०—छाछ,

कच्चित्(अ०)—हर्ष, मंगल, इच्छा, प्रश्न आदि अर्थों का बोधक।

कच्छ (पु०)—दलदल, खाड़ी, किनारा, केवट का वृक्ष, तुन का पेड़।

कच्छप (पु०)—कछुआ, एक प्रकार का वृक्ष, कुबेर का धनागार।

कच्छभू (स्त्री०)—दलदल।

कच्छुर (वि०)—व्यभिचारी, बदमाश।

कच्वी(स्त्री०)—हलदी, वृक्षविशेष।

कज् (१ प०)—खुश होना, अधिक दुःख वा सुख से उन्मत्त होजाना।

कज (वि०)—जलोत्पन्न।

कज्जल (न०)—काजल, स्याही, आंख में लगाने का अंजन, रोशनाई।

कज्जलध्वज (पु०)—चिराग, लैम्प।

कज्जलरोचक(अस्त्री०)-दीवट, शमादान।

कच् (१ आ०)—बांधना, चमकना।

कचार (पु०)—सूर्य, सूरज।

कञ्चुक (पु०)—कवच, जिरहबख्तर।

कञ्चुकालु (पु०)—सर्प, सांप।

कञ्चुलिका (स्त्री०)—सर्प की केंचुली।

कञ्चुकी (पु०)—अन्तःपुराध्यक्ष, सांप, जार, कवचधारी।

कञ्चुली (स्त्री०)—सांप की केंचुली।

कञ्ज (पु०—बाल। न०—कमल, अमृत

कञ्जक(पु०)-मैना पक्षी, कोयल।

कञ्जार(पु०)—सूर्य, पेट, मयूर, हाथी।

कट् (१ प०)—जाना, गमन करना।

घेरना, बारिश होना।
कट (पु०)—चटाई, तृण, मुर्दे की रंथी, बाण, श्मशानभूमि, विवाद, लहना। न०—पुष्पधूलि।
कटक (अस्त्री०)—हाथका सोनेका कड़ा, चटाई, घर, राजधानी, सेना, कम्प, छावनी, टेबिलछेवह, घेरा, उड़ीसा प्रदेश का मुख्यनगर।
कटकी [न्](पु०)—पहाड़, पर्वत।
कटकोल (पु०)—पीकदानी।
कटखादक (पु०)—गीदड़, कौआ, कांच का गिलास।
कटङ्कट (पु०)—अग्नि, सोना, गणेश, शिव, घरकी छत, छप्पर।
कटप्रोथ (अस्त्री०)—चूतड़।
कटभंग (पु०)—सेनाके पराजय से राजा का विनाश, हाथसे दाने निखोलना
कटभ्र (पु०)—तीर, एक प्रकार का बाजा।
कटाक्ष (पु०)—तिरछी निगाह, आंख के कोने से से देखना, प्रेमयुक्त दृष्टि, मिथ्या दोषारोपण, तोह-मत।
कटाघटक (पु०)—शिव का नाम।
कटार (पु०)—नागरिक।
कटाह (पु०)—तेल, घी आदि पकाने का पात्रविशेष, कड़ाही, कूप, नरक, छोटी भैंस।
कटाहक (न०)—कड़ाही, बर्तन।
कटि (स्त्री०)—कमर, चूतड़, श्रोणि-देश, हाथी के कपोल।
कटिकूप (पु०)—जघनकूप, पृष्ठवंश के नीचे गर्ताकार स्थानविशेष।
कटित्र (न०)—कटिवस्त्र, लगड़ी।
कटिदेश (पु०)—कमर।
कटिबद्ध (वि०)—सन्नद्ध, उद्यत, तयार।
कटिमालिका (स्त्री०)—स्त्रियोंके पह-रने की तगड़ी।
कटिल्ल (पु०)—करेला, कारवेल्ल।
कटिसूत्र (न०)—तगड़ी, मेखला, कमर पर पहरने का आभूषण।
कटी (स्त्री०)=कटि। [यार।
कटीतल (पु०)—खुखड़ी नामका हथि-
कटीर (न०)—गार, गर्त, गुफा, कटि के ऊपर गर्ताकार।
कटु (वि०)—कड़वा, दूषित, बदबूदार। न०—दूषण, दूषित कार्य, दुर्गन्धि।
कटुकन्द (अस्त्री०)—अदरक, लहसुन।
कटुकर्ण (वि०)—जो सुनने में कठोर प्रतीत हो।
कटुकीट (पु०)—मच्छर, मशक।
कटुक्वाण (पु०)—टिटीहरी पक्षी।
कटुग्रन्थि (अस्त्री०)—सोंठ, पिप्पली।
कटुत्रय (न०)—काली मिर्च, पीपल और सोंठ इन तीन चीजों का संग्रह।
कटुर (पु०)—कटुफल, कायफल। न०—छाछ, तक्र, मट्ठा।
कटुरव (पु०)—मेंढक, कठोर शब्द।
कटुरस (वि०)—कड़वे रस वाला।
कटुबीजा (स्त्री०)—पिप्पली।
कटोर (न०)—मिट्टी का एक बर्तन।

कटोरा (स्त्री०)-कटोरा नाम का प्रसिद्ध बर्त्तन।
कटोल (पु०)-चण्डाल। वि०-कड़ुवा।
कट्टार (पु०)-कटार नामक प्रसिद्ध हथियार।
कट्टर (न०)--मट्ठा, छाछ, चटनी।
कठ् (१प०)--दु:ख का जीवन व्यतीत करना। [भेद।
कठ (पु०)--मुनिविशेष,ब्राह्मण, ऋग्-
कठर (वि०)--कठोर, सख्त।
कठिका (स्त्री०)--खड़िया, चाक।
कठिञ्जर (पु०)--तुलसी वृक्ष।
कठिन (वि०)--कठोर, सख्त, क्रूर, बेरहम, तीव्र। पु०-झाड़ी।
कठिनता (स्त्री०)-बेरहमी, कठोरता, सख्ती, मुश्किल।
कठिना (स्त्री०)-बटलोई, रकाबी, मिठाई।
कठिनिका (स्त्री०)-खड़िया मिट्टी, सलेट पर लिखने का क़लम।
कठिनी (स्त्री०)-पूर्ववत्।
कठोर(वि०)-बेरहम, तीव्र,भरा हुआ, सख्त, कठिन। [कठिनता
कठोरता(स्त्री०)-सख्ती, मजबूती,
कड्(१उ०)--रक्षा करना, बचाना,भेदन करना, दर्पित होना।
कड(वि०)--मूर्ख, अनजान, गूँगा।
कडत्र (न०)=कलत्र।
कडार (पु०)--पीला रंग,नौकर,भृत्य।
कड्ड् (१प०)--मस्त होना,कर्कश होना।
कण् (१प०)-अल्प होना,समीप जाना, आह भरना।
कण (पु०)-बहुत छोटा अंश, लेश, टुकड़ा, अनाज का टुकड़ा, अणु, सफ़ेद जीरा।
कणजीरक (न०)-छोटा जीरा।
कणभक्ष(पु०)-काली चिड़िया, कणाद ऋषि।
कणभक्षक(पु०)--पूर्ववत्।
कणाद (पु०)--कणों का खाने वाला अर्थात् कणाद मुनि, स्वर्णकार।
कणिक(पु०)-अनाज,मैदा,शत्रु,आटा।
कणिका (स्त्री०)-अत्यन्त छोटा टुकड़ा, जीरा, जल की बिन्दु।
कणिष्ठ (वि०)=कनिष्ठ।
कणी(स्त्री०)-जीरा, अणु, बूँद।
कणीक(वि०)-बहुत छोटा।
कणीचि(स्त्री०)-वृक्ष, आवाज़, लता।
कणेर(पु०)-कनेर का वृक्ष।
कणेरा (स्त्री०)-हथिनी, वेश्या।
कणेरु(पु०)-कनेर। स्त्री०--हथिनी, वेश्या।
कण्टक(अस्त्री०)-कांटा, नोक, दुःखदायी पुरुष, उपद्रवी, रोंगटे खड़े होना, नाखून, रोक। पु०-दोष, कारखाना, बांस। [का वृक्ष।
कण्टकद्रुम(पु०)-कांटेदार वृक्ष, सेंवल
कण्टकमर्दन (न०)-उपद्रव का शान्त करना।
कण्टकाशन(पु०)--कांटों के खाने वाला अर्थात् ऊंट ["कण्टकभक्षक" शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]
कण्टकित (वि०)--कांटेदार, पुलकायित,जिस के रोम खड़े हुए हों।

कण्टकी(वि०)--कांटोंदार, दुःखदायी, उपद्रवी। पु०-मछली, खजूर का वृक्ष, बांस, बेरी। [वृक्ष।
कण्टकफल(पु०)—धतूरा,गोखुर,अरण्ड
कण्टालु (स्त्री०)--घास, कीकर।
कण्ठ् (१० उ०)--रक्षा करना, चाहना, शोकपूर्वक याद करना [अन्तिम अर्थ का बोधन करने के लिये इस धातु के पूर्व "उत्" उपसर्ग और लगता है]।
कण्ठ (पु०)—गला, ग्रीवा का अगला भाग, गले का शब्द, मैनफल का वृक्ष, समीप, पास।
कण्ठनीलक(पु०)—मशाल, प्रकाश का एक साधन।
कण्ठलता(स्त्री०)--कालर, लगाम।
कण्ठाग्नि(पु०)—एक प्रकार का पक्षी।
कण्ठागत(वि०)—गले में आया हुआ।
कण्ठाल(पु०)—युद्ध, लड़ाई, नौका।
कण्ठिका(स्त्री०)--गले में पहरने की माला, कण्ठी।
कण्ठी(स्त्री०)--गर्दन, गला, कालर, गले की माला।
कण्ठीरव(पु०)--सिंह, कबूतर।
कण्ठोल(पु०)--ऊँट, दूध बिलोने का बर्तन। [अलग करना।
कण्डन(न०)--अनाज से भूसी का
कण्डनी(स्त्री०)--ओखली, मुसल।
कण्डिका(स्त्री०)—एक देश का नाम, वेद का छोटा भाग।
कण्डू (स्त्री०)--खुजली,अङ्गों का रगड़ना, खाज।
कण्डूघ्न(पु०)--सफ़ेद सरसों।
कण्डू-ति(स्त्री०)-खाज,खुजली,खुर्चना
कण्डूयनी(स्त्री०)--मलने का ब्रुश।
कण्डोल(पु०)--टोकरा, धान्य रखने का बांसका बनाहुआपात्र,ऊंट।
कण्डोलक(पु०)--टोकरी,सन्दूक,कोठार
कण्व(पु०)--एक ऋषि जिसने शकुन्तला का पालन किया था। न०--पाप, गुनाह।
कण्वसुता(स्त्री०)--शकुन्तला का नाम
कतफल(पु०)--एक ऐसा वृक्ष जिस के फल के संयोग से पानी साफ़ होजाता है।
कतम(सर्व०)--बहुतों में से एक।
कतर(सर्व०)--दो में से एक, दो में से कौनसा।
कति(सर्व०)--कितने,संख्या को जानने के लिये इस का प्रयोग किया जाता है।
कतिपय(वि०)--कुछ, चन्द, कुछेक।
कत्तृण(न०)--बुरी घास, नेत्रवाला।
कत्तोय(न०)--शराब, मद्य।
कत्थ् (१ आ०)--घमण्ड करना, शेखी बघारना, खुशामद करना।
कत्थन(न०)--शेख़ी।
कथ्(१० उ०)--कहना, बयान करना, बातें करना।
कथक(पु०)--कथा कहने वाला,वक्ता।
कथङ्कार(अ०)--किस प्रकार से, कैसे।
कथमुत(अ०)--कैसे, किस तरह।
कथञ्चित(अ०)--कठिनता से, येनकेन, जैसे तैसे।

कथन(न०)–बयान, कथा, कहना ।
कथनीय(वि०)–कहने योग्य, बयान करने लायक़ ।
कथम्(अ०)कैसे, किस प्रकार से, कहां से, क्योंकर ।
कथमपि(अ०)–जैसे तैसे, बड़े यत्न से ।
कथम्भूत(वि०)–किस प्रकार का ।
कथा(स्त्री०)-कहानी, वार्ता, वक्तृता, बनावटी कहानी, ऐतिहासिक ज्ञान ।
कथाक्रम(पु०)–बातचीत का आरंभ ।
कथाप्रसंग(पु०)-बातचीत, दौरान गुफ़्तगू ।
कथारम्भ(पु०)–किसी कहानी या क़िस्से को शुरू करना ।
कथित(वि०)–कहा हुआ, वर्णित ।
कथोदय(पु०)–कथारम्भ ।
कद् (४ आ०)–मानसिक दुःख उठाना, घबरा जाना ।
कदक(न०)–मशहरी, तम्बू ।
कदध्वा(पु०)–कुमार्ग, कुपथ ।
कदन(न०)–युद्ध, पाप, खूरेज़ी, नाश ।
कदम्ब(पु०)–कदम नामक वृक्षविशेष, देवताड़ ।
कदर(पु०)–अंकुश, आरा ।
कदर्थित(वि०)–क्षुद्र, दूषित, घृणास्पद, तिरस्कृत ।
कदर्य्य(वि०)-कंजूस, जो स्वयं कष्ट उठाकर और अपने परिवार को कष्ट देकर धन एकट्ठा करे ।
कदली(स्त्री०)–केले का वृक्ष । पु०–एक प्रकार का हरिण जिस का रङ्ग काला और लाल होता है ।
कदलीक्षता (स्त्री०)–ककड़ीभेद, अति सौन्दर्यवती स्त्री ।
कदा(अ०)–किस समय, कब ।
कदाचन(अ०)–कभी, किसी समय, कभी न कभी । [वक्त में ।
कदापि(अ०)–कभी, यदा कदा, किसी
कदुष्ण (वि०)–थोड़ा सा गर्म ।
कद्रु (पु०)–पीलारंग । वि०--पीला ।
कद्रु (स्त्री०)–कश्यप की स्त्री, नागों की माता ।
कद्वर (न०)–छाछ, मट्ठा । [करना ।
कन् (१ प०)–प्रसन्न होना, सेवन
कनक (पु०)–धतूरा, किंशुक वृक्ष । न०–स्वर्ण ।
कनकक्षार(पु०)-सुहागा । [करनेकादण्ड
कनकदण्ड (न०)--राजा के धारण
कनकपत्र(न०)--स्वर्ण, आभरण ।[धातु
कनकरस (पु०)--हरताल नामक उप-
कनकसूत्र (न०)--सोने की बनी हुई गले की माला । [पर्वत
कनकाचल (पु०)--कनकगिरि, सुमेरु ।
कनकाध्यक्ष (पु०)- खजानची । [वृक्ष ।
कनकारक (पु०) कचनाल, कोविदार
कनखल (न०)–एक तीर्थ का नाम जो हरद्वार के समीप है ।
कनिष्ठ(वि०)–सबसे छोटा, अत्यल्प । पु० शिव, सब से छोटा भाई ।
कनिष्ठा (स्त्री०)–कनकी उंगली, सब से छोटी बहिन।
कनी (स्त्री०)–कन्या, पुत्री ।
कनीचि (स्त्री०) घुंघची, लता ।
कनीन(वि०) [वेद में] सबसे छोटा ।

कनीनक(पु०)–बालक, आंखकी पुतली
कनीयस् (वि०)–कनिष्ठ, सबसे छोटा।
कनीयस (न०)–तांबा।
कनीयसी (स्त्री०)--पूर्ववत।
कनेरा (स्त्री०)–वेश्या, हथिनी।
कन्तु (पु०)–हृदय या मन, कोठार, कामदेव। [चीथरा, दीवार,गुदड़ी
कन्था (स्त्री०)–फटा हुआ कपड़ा,
कन्थाधारी (पु०)–साधु, तपस्वी, योगसाधक, वैरागी। [घबराना।
कन्द् (१ प०)–चिल्लाना, शोक करना,
कन्द (पु०)-बादल, मेघ, कापूर। अस्त्री०–प्रत्येक सस्य की जड़, ऐसी भाजी जो भूमि के अन्दर उत्पन्न होती है, जैसे–गाजर, आलू आदि।
कन्दुक (पु०)–पालकी।
कन्दर(अस्त्री०)–घाटी,गुफा। न०-सोंठ
कन्दरा–री (स्त्री०)–गुफा, गर्त, घाटी
कन्दराकर (पु०)–पर्वत,पहाड़।
कन्दराल(पु०)–अखरोट, प्लक्ष,पिलखन
कन्दर्प (पु०)–कामदेव, प्रेम।
कन्दर्पकूप (पु०)–स्त्री की योनि।
कन्दर्पदहन (पु०)–शिव का नाम।
कन्दर्पमुसल (पु०)–उपस्थेन्द्रिय, पुरुषचिन्ह, लिङ्ग। [युद्ध।
कन्दल (पु०)–स्वर्ण, लड़ाई, वाक्य-
कन्दली (स्त्री०)–कमलगट्टा, मृग-विशेष, कमल का बीज।
कन्दिरी (स्त्री०)–छुईमुई का पेड़।
कन्दु (अस्त्री०)–लोहे का पात्रविशेष जिस पर रोटी पकाई जाती है।
कन्दुक(न०)-गद्दी, तकिया। अस्त्री०–खेलने की गेंद।
कन्दुकक्रीडा (स्त्री०)–किरकिट वा हाकी का खेल। फुटबाल को 'पादकन्दुक' कहते हैं।
कन्दोट--त (पु०)–सफ़ेद कमल, नीलोत्पल।
कन्ध (पु०)–बादल, तृणविशेष।
कन्धर (पु०)–बादल, कंधा।
कन्धरा (स्त्री०)-गर्दन, गलदेश।
कन्धि (स्त्री०)–गर्दन, ग्रीवा।
कन्यका (स्त्री०)–छोटी लड़की, अवि-वाहित कन्या,दशवर्ष की कन्या।
कन्यसा (स्त्री०)–कनिष्ठा उंगली।
कन्या (स्त्री०)–क्वारी लड़की, दश वर्ष की कुमारी, बड़ी इलायची।
कन्याट (पु०)--लड़कियों के खेलने का स्थान, अन्तःपुर।
कपट (अस्त्री०)–धोखा, फरेब, जाल, छल।
कपटतापस (पु०)–बनावटी साधु।
कपटलेख्य (पु०)–बनावटी दस्तावेज़।
कपटवेष (पु०)–छिपा हुआ वेष, बनावटी आकार, बहुरूपिया।
कपटिक (पु०)–ठग, बदमाश।
कपटी (वि०)–छलिया, बेईमान।
कपर्दिका (स्त्री०)–कौड़ी।
कपाट (अस्त्री०)–द्वार को बन्द करने के लिये काठ के जो दो पट लगाये जाते हैं, किवाड़।
कपाल (अस्त्री०)–खोपड़ी, खप्पर, घड़े का टुकड़ा।

कपालिका (स्त्री०)–छोटी २ ठीकरी, छोटा खप्पर।
कपि (पु०)–बन्दर, सूर्य, विष्णु।
कपिञ्जल (पु०)–चातकपक्षी, पपीहा।
कपित्थ (पु०)–एक प्रकार का वृक्ष जिसपर बानर अधिक बैठता है।
कपिध्वज (पु०)–अर्जुन। कपिकेतन भी कहते हैं।
कपिरथ (पु०)–रामचन्द्र, अर्जुन।
कपिलोह (न०)–पीतल।
कपिल (पु०)–सांख्यशास्त्र के कर्त्ता ऋषिविशेष, कुत्ता, पीला रंग। वि०–पीला।
कपिलद्युति (पु०)–सूर्य, सूरज।
कपिलधारा(स्त्री०)–सुरनदी, गंगानदी।
कपिला (स्त्री०)–ब्रौन रंग की गाय जो बहुत शुभ मानी गई है।
कपिलाञ्जन (पु०)–शिव।
कपिश पु० –लाल और काला रंग मिला हुआ, ब्रौन रंग।
कपिशा (स्त्री)–माधवी लता, एक नदी का नाम, मद्य।
कपीन्द्र (पु०)–वानरों का राजा अर्थात् सुग्रीव, हनुमान्।
कपूय (वि०)–कमीना, नीच, कुत्सित।
कपोत (पु०)–कबूतर, पारावत, पक्षी।
कपोतक(पु०)–सुर्मा नामक उपधातु। पु०-छोटा कबूतर।
कपोतपाली(स्त्री०)–कबूतरों के बैठने की छतरी।
कपोतपर्णी (स्त्री०)–छोटी इलायची।
कपोतसार (न०)–सुर्मा नामक उपधातु।
कपोतारि (पु०)–कबूतरों का शत्रु श्येननामक पक्षी, बाज़।
कपोल(पु०)–गाल, गण्डदेश।
कपोलराग(पु०)–गालों पर सुर्खी का आना।
कफ(पु०)–शरीर के तीन दोषों में से एक, श्लेष्मा, बलग़म [अन्य दो दोष वात और पित्त होते हैं]।
कफकूर्चिका(स्त्री०)–थूक, लार, राल।
कफोणि(पु०)–कोहनी, बाज़ू और हाथ का जोड़।
कफविरोधी(पु०)–काली मिर्च।
कफारि(पु०)–सोंठ, शुण्ठी।
कफेलु–कफी(वि०)–कफ की अधिकता से पीड़ित।
कब् (१प०)–रंगना, तारीफ़ करना।
कबन्ध(अस्त्री०)–बादल, राहु, जल, पेट, धूमकेतु, बिना शिर का देह।
कबन्धी (पु०)–कात्यायन ऋषि का नाम। [होना, इच्छा करना।
कम् (१० अ०)–प्रेम करना, आसक्त
कमठ(पु०)–कछुआ, कमण्डलु, बांस।
कमण्डलु (अस्त्री०)–सन्यासियों का जल पीने का पात्रविशेष।
कमन(वि०)–कामी, प्रियदर्शन। पु०–कामदेव, अशोकवृक्ष, ब्राह्मण।
कमनीय(वि०)–मनोहर, सुन्दर, प्रियदर्शन।
कमर(वि०)–कामी, विषयासक्त।

कमठ (पु०)-सारस पक्षी ; न०-जल, पद्म, तांबा, औषधि।
कमलयोनि(पु०)-ब्रह्मा [इसी अर्थ में कमलजन्म और कमलभव भी प्रयुक्त होता है]।
कमला(स्त्री०)-सुन्दर स्त्री, लक्ष्मी।
कमलाक्षी(स्त्री०)-कमलनयनी, सुन्दर नेत्रों वाली।
कमलापति(पु०)-विष्णु का नाम।
कमलासन(पु०)-कमल के आसन वाला अर्थात् ब्रह्मा।
कमलिनी(स्त्री०)-पद्मसमूह, पद्मलता
कमा(स्त्री०)-खूबसूरती, सौन्दर्य।
कम्प्(१आ०)-हिलना, कांपना।
कम्प(पु०)-शरीर आदि का हिलना।
कम्पन(न०)-कांपना, शिशिर ऋतु।
कम्पित(वि०)-कांपा हुआ।
कम्पिल्ल(पु०)-कपूर, वृक्षविशेष।
कम्ब्(१प०)--जाना, हरकत करना।
कम्बल(पु०)-कम्बल नामक शुद्ध वस्त्र, ऊन का बना हुआ ओढ़ने का वस्त्र, दीवार।
कम्बलिका(स्त्री०)-छोटा कम्बल, एक प्रकार की हरिणी।
कम्बली(पु०)--बैल, सांड, कम्बल ओढ़ने वाला पुरुष। [शंख।
कम्बु(वि०)--रंगबिरंगा। पु०--हाथी,
कम्बुक (पु०)- शंख, घोंघा, कमीना आदमी।
निवासी। [कम्बोज देश भारत के उत्तर पश्चिम में है और यह शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होता है]
कयाधू (स्त्री०)-प्रह्लाद की माता।
कर (पु०)-हस्त, हाथ, प्रकाश की किरण, हाथी की सूंड, महसूल, टैक्स, चुंगी, ओला। [पेड़।
करक (पु०)-हाथ, महसूल, अनारका
करकण्टक (अस्त्री०)-हाथ की अंगुलियों के सिरे वाला नख, नाखून
करकमल(न०)-पद्मसमान सुन्दर हाथ।
करकाजल(न०)-बर्फ, ओलों का पानी।
करकाम्भ [स्] (पु०)-नारियल का वृक्ष।
करकुड्मल (न०)--अंगुलि।
करग्रहण (न०)- विवाह, पाणिग्रहण, महसूल इकट्ठा करना।
करग्राह (पु०)-महसूल इकट्ठा करने वाला, पति।
करंक(पु०)--माथे की खोपड़ी, अस्थिपिञ्जर, कमण्डलु, नारियल का खोल।
करच्छद(पु०)-तुन का वृक्ष, सिहोड़ा।
करज (पु०)--हाथ में उत्पन्न होने वाला नख, नाखून।
करञ्ज (पु०)--करञ्जुआ नामक वृक्ष।
करट (पु०)--हाथी का गण्डस्थल, कौआ, नास्तिक, नीच वृत्ति का मनुष्य। [से दुही गाय।

करण(न०)-सम्पादन, साधन, शरीर, इन्द्रिय, एक कारक का नाम, वर्ण, हेतु, परमात्मा, उच्चारण।
करणग्राम(पु०)-इन्द्रियों का समूह।
करणाधिप(पु०)-इन्द्रियों का स्वामी अर्थात् जीवात्मा।
करण्ड(पु०)-कारण्डव नामक पक्षी, तलवार, मक्खियों का छत्ता, बांस की बनी हुई टोकरी।
करतल(पु०)-हाथ की हथेली, हस्ततल
करताल(न०)-हथेली बजाना, एक प्रकार का वाद्य जैसे झांझ।
करतालिका(स्त्री०)-करतलध्वनि, करताल।
करद(वि०)-कर देने वाला, खिराज अदा करने वाला।
करन्धय(वि०)-हाथ चूमनेवाला।
करपत्र(न०)-आरा नामक यन्त्र-विशेष, जलक्रीड़ा। [का पेड़।
करपत्रवान्(पु०)-ताड़ का वृक्ष, ताल
करपाल(पु०)-तलवार, सोंटा, खड्ग।
करपालिका(स्त्री०)-पूर्ववत्।
करपीडन(न०)-विवाह, पाणिग्रहण।
करपुट(पु०)-दोनों हाथों को मिला कर बनाया हुआ गर्त, अञ्जलि।
करपृष्ठ(न०)-हाथ का पुश्त।
करबा[वा]ल(पु०) तलवार, खड्ग, नख, नाखून, खवाय।
करभ(पु०)-हाथी का बच्चा, हाथी की सूंड, ऊंट, कोहनी से लेकर अंगुलियों तक हाथ का बाहर का भाग।

करभी(स्त्री०)-ऊंटनी। पु०-हाथी।
करभीर(पु०)-शेर।
करभू(पु०)-अंगुलि का नाखून।
करमरी(पु०)-क़ैदी।
करम्ब(वि०)-मिला हुआ, मिश्रित। पु०-कीचड़।
करम्बित(वि०)-जुड़ा हुआ।
करम्भ(पु०)-दधियुक्त सत्तू, कीचड़।
कररुह(पु०)-हाथ का नाखून, तलवार
करवालिका(स्त्री०)-हाथ की छड़ी।
करशाखा(स्त्री०)-हाथ की डाली अर्थात् उंगली।
करशूक(पु०)-हाथ की सुई अर्थात् नख, नाखून।
करसूत्र(न०)-विवाह के समय हाथ में बांधी हुई डोरी, कंगना।
करहाटक(पु)-हाथ का ज़ेवर, सुवर्ण।
करागम(पु०)-महसूल इकट्ठा करने का स्थान, तहसील।
कराल(वि०)-भयानक, भयंकर, विकट
करालिक(पु०)-वृक्ष, तलवार।
करास्फोट (पु०)-वक्षःस्थल, खम ठोकना।
करिणी (स्त्री०)-हथिनी।
करिदन्त (पु०)-हाथीदांत।
करिदारक (पु०)-शेर।
करिप (पु०)-हाथीवान, पीलवान।
करिपोत (पु०)-छोटा हाथी, करि-शावक, करभ।
करिमाचल (पु०)-शेर।
करिमुख (वि०)-गणेश।
करी (पु०)-हस्ती, सूंड हो जिसके

हाथ का काम देता है।
करीर (पु०)-हाथी के दांत की जड़, बांस का अंखुआ, बांस का नया कल्ला, करील का पेड़, घड़ा।
करीरक (न०)-युद्ध, लड़ाई।
करीष (असी०)-सूखा गोबर, उपला, आरना, वनकंडा।
करीषिणी (स्त्री०)—सम्पत्ति की अधिष्ठात्री देवी, लक्ष्मी।
करुण (वि०)-सहृदय, दयालु, दयायोग्य पु०-दया, कृपा, सहृदयता।
करुणध्वनि (पु०)-दीनता की आवाज़, ऐसी ध्वनि जिसे सुनकर हृदय में दयाभाव उत्पन्न हो।
करुणहृदय (वि०)-दयालु, दयार्द्रचित्त।
करुणा (स्त्री०)-दया, सहृदयता, रहम।
करुणानिधि (पु०)-करुणा या दया का खजाना, दयासागर।
करुणामय (वि०)-बड़ी दया वाला, करुणा से भरा हुआ, दयासागर।
करेट (पु०)- हाथ का नाखून।
करेणु (पु०)-हाथी, हस्ती। स्त्री०-हथिनी।
करोट (न०)-सिर की हड्डी, खोपड़ी, प्याला।
करोटि (स्त्री०)-पूर्ववत्।
कर्क (पु०)-अग्नि, घड़ा, दर्पण, घोड़ा, केकड़ा।
कर्कचिर्भटी (स्त्री०)-ककड़ी-भोमरा फल-विशेष।
कर्कट (पु०)-केकड़ा पक्षी, कांटा, रतिबन्ध, छोटा आंवला।
कर्कटक (पु०)-केकड़ा, वृक्ष।
कर्कटि-टी (स्त्री०)—ककड़ी नामक फल।
कर्कटु (पु०)-एक प्रकार का सारस पक्षी।
कर्कन्धु (स्त्री०)-बेर, उनाब, बदरीफल।
कर्कर (पु०)-हथौड़ा, दर्पण, चमड़े का तस्मा। [में को देखना।
कर्कराटु (पु०)—कटाक्ष, आंख के कोने
कर्कश (पु०)-तलवार, गन्ना। वि०-कठोर, क्रूर, निर्दय, बेरहम, सख्त।
कर्कारु (पु०) पेठा, कूष्माण्ड।
कर्कोट (पु०-सर्पभेद, गन्ना, विषैला सांप जिस के देखने से ही विष प्रवेश कर जाता है।
कर्कोटक (पु०)-पूर्ववत्। [उपधातु।
कर्चूर (न०)-स्वर्ण, हरताल नामक
कर्द् (१प०)-दुःख देना, बेचैन करना।
कर्ण् (१०उ०)-सुनना, छेदना, सूराख करना, फाड़ना।
कर्ण (पु०)-श्रोत्रेन्द्रिय, कान, कुन्ती-पुत्र-अंगराज का नाम, नौका चलाने की लकड़ी, तीन भुजा का बना हुआ क्षेत्र।
कर्णकीटा—कीटी (स्त्री०)-कानखजूरा नामक कीटविशेष।
कर्णगूथ (न०)-कान का मैल।
कर्णग्राह (पु०)-कर्णधार, मल्लाह।
कर्णजप (पु०)-भेदिया, गुप्तचर, चुगलखोर।
कर्णजलूका (स्त्री०)-कर्णकीटी।
कर्णधार (पु०)-नौका चलाने वाला, मल्लाह, नाविक। [पर्व।
कर्णपर्व (न०)-महाभारत का आठवां
कर्णपुट (न०)-मगज के समीप मांस-निर्मित कर्ण का अंग, कर्णमोटक।
कर्णपूर (पु०)—नीला कमल, अशोक वृक्ष, कान का आभूषण, बाली नामक आभूषण।

कर्णवर्जित (पु०)—सर्प। वि०-बहिरा।
कर्णविष (स्त्री०)—कान का मैल।
कर्णवेध (पु०)—सोलह संस्कारों में से एक जिस में कान बींधे जाते हैं।
कर्णशष्कुली(स्त्री०)—कर्णगोलक, कान का वह स्थान जिस पर वायु के आघात से शब्द सुनाई देता है।
कर्णशूल (अस्त्री०)—कान का दर्द।
कर्णस्राव (पु०)—कान का बहना, कान में से मवाद आना।
कर्णहीन (पु०)—सर्प। वि०—कानों से रहित। [दक्षिण का प्रदेश।
कर्णाट (पु०)—भारतीय प्रायद्वीप के
कर्णान्तिक(वि०)—कान के पास।
कर्णार्पण (न०)—कान देना, ध्यान देना, सुनना।
कर्णि(पु०)—एक प्रकार का तीर।
कर्णिक(पु०)—कर्णधार। वि०-कानोंवाला
कर्णिका(स्त्री०)—कान की बाली, छोटा क़लम, मध्यमा अंगुली, खड़िया।
कर्णिकार(न०)—कनेर का फूल।
कर्णिल (वि०)—लम्बे कानों वाला।
कर्णी (स्त्री०)—एक प्रकार का तीर, एक स्त्री का नाम।
कर्णीरथ(पु०)—पालकी, डोली, कंधा।
कर्णेजप (पु०)—कर्णजप, भेद लाने वाला, बहकाने वाला।
कर्त्(१० प०)—हटाना, शिथिल होना, खोलना।
कर्तन(न०)—काटना, बुनना, छेदन।
कर्तनी(स्त्री०)—काटने का यन्त्र, क़ैंची।
कर्त्तरिका(स्त्री०)—छुरी, छुरा, क़ैंची।
कर्त्तव्य(वि०)—काटने के लायक, नष्ट करने योग्य। न०-करने योग्य, फ़र्ज़, करने योग्य काम।
कर्त्तृ[र्तृ] (वि०)—करने वाला, बनाने वाला, सम्पादक, परमात्मा, पुरोहित। [वाला, एजण्ट।
कर्त्तृक(वि०)—किसी काम को करने
कर्द्(१ प०)—कांय कांय करना, पेट का गुड़गुड़ाना।
कर्द(पु०)—कीचड़, मिट्टी।
कर्दन(न०)—पेट की गुड़गुड़ाहट।
कर्दम(पु०)—कीचड़, पाप, मैला, कूड़ा।
कर्दमित(वि०)—कीचड़युक्त।
कर्पट(अस्त्री०)—कपड़े की पट्टी, चीथड़ा, रूमाल।
कर्पण(पु०)—शस्त्रविशेष।
कर्पर(पु०)—कड़ाही, कड़ाह, बर्तन, ठीकरा, खोपड़ी।
कर्पराश(पु०)—कंकड़, रेता।
कर्पास(अस्त्री०)—कपास का पेड़।
कर्पूर(अस्त्री०)—काफूर, सुगन्धविशेष।
कर्फर (पु०)—दर्पण, आयना।
कर्ब्(१ प०)—जाना, हरकत करना, पहुंचाना।
कर्बुर(पु०)—पाप, भूतप्रेत, धतूरा, अनेक रंगों से मिश्रित रंग। न०-स्वर्ण, जल।
कर्बूर(पु०)—पूर्ववत्।
कर्म[न्](न०)—काम, कार्य, सम्पादन, कर्तव्य, परिश्रम, परिणाम, प्रारब्ध, कर्ता द्वारा क्रिया का प्रभाव

जिस वस्तु पर हो उसे व्याकरण में कर्म कहते हैं।
कर्मकर(पु०)–मजदूर, कुली, यमराज।
कर्मकाण्ड(अस्त्री०)–ज्ञानकाण्ड का सहयोगी यज्ञयागादि कर्म, वेद में परमपदप्राप्ति के दो साधन बतलाये हैं, एक ज्ञानकाण्ड दूसरा कर्मकाण्ड, इन दोनों को सम्पादन करता हुआ ही मनुष्य मोक्ष पा सकता है।
कर्मकार(पु०)–कारीगर,मजदूर,लुहार
कर्मकारी [न्] (पु०)–पूर्ववत।
कर्मकीलक (पु०)–धोबी।
कर्मक्षम(वि०)–काम करने में समर्थ।
कर्मज(वि०)–प्रारब्ध से उत्पन्न। पु०–वट वृक्ष। [निपुण।
कर्मठ (वि०)–कर्मशूर, चतुर, कार्य में
कर्मण्य (वि०)–काम के लायक,चतुर। न०–कार्यशीलता, कर्मवीरता।
कर्मण्या (स्त्री०)–मजदूरी, वेतन।
कर्मत्याग(पु०)–वैदिक यज्ञ यागादि का छोड़ना। [मित्र।
कर्मदोष(पु०)–अपराध,गुनाह,गलती,
कर्मधारय (पु०)–समासभेद, विशेष्य और विशेषण का समास।
कर्मन् (न०)=कर्म।
कर्मफल (न०)–प्रारब्ध, किये हुए कामों का सुख दुःखादि जो प्राप्त होता है।
कर्मनिष्ठ (वि०)–कर्म में लगा हुआ, धार्मिक कृत्यों का सम्पादन करने वाला।
कर्मभूमि (स्त्री०)–धार्मिक कृत्यों के सम्पादन के लिये उपयुक्त स्थान, आर्यावर्त, भारतवर्ष।
कर्ममीमांसा (स्त्री०)–जैमिनिकृत पूर्वमीमांसा जिस में कर्मकाण्ड की विशेषता दी गई है।
कर्ममूल (न०)–कुशा नामक घास।
कर्मयुग (न०)–कलियुग का नाम।
कर्मयोग(पु०)–धार्मिक और सांसारिक सब प्रकार के कर्मों का सम्पादन, कर्मलिप्तता।
कर्मरी (स्त्री०)–वंशलोचन।
कर्मविपाक (पु०)–कर्म का पकना, शुभाशुभ जो कर्म किये हैं उनके फलरूप सुख दुःख की प्राप्ति।
कर्मशाला (स्त्री०)–काम करने का स्थान, कारखाना।
कर्मशील(वि०)–कर्मवीर, मेहनती।
कर्मशूर (वि०)–कर्म करने में बहादुर।
कर्मसाक्षी(पु०)–आंखों देखा गवाह, घटनास्थल का गवाह।
कर्मसिद्धि (स्त्री०)–कामयाबी,इच्छित वस्तु की प्राप्ति। [मर्थ।
कर्मक्षम (वि०)–काम करने में असकर्मानुष्ठान (न०)–धार्मिक कृत्यों का सम्पादन।
कर्मानुसार(वि०)–प्रारब्ध के अनुरूप।
कर्मार (पु०) लुहार, बांसभेद।
कर्मिष्ठ (वि०)–काम में लगा हुआ, चतुर, मेहनती।

कर्मेन्द्रिय (न०)—हाथ, पाव, मुख, गुदा और उपस्थ, ये पाच कर्मेन्द्रिय कहलाती हैं।

कर्व् (१ प०)—शेखी मारना, घमण्ड करना, गर्वयुक्त होना।

कर्व (पु०)—प्रेम, इच्छा, चूहा।

कर्वट (पु०)—तिजारती शहर, कस्बा, प्रधाननगर।

कर्वर (पु०)—पाप, राक्षस, चीता।

कर्वरी (स्त्री०)-राक्षसी, रात्रि, दुर्गा।

कर्शान (पु०)—अग्नि।

कर्ष (पु०)—खींचना, हल जोतना, खरोंच, आकर्षण।

कर्षक (पु०)—किसान, खेतीहर।

कर्षण (न०)=कर्ष।

कर्षित (वि०)—जुता हुआ, हस्तैमाल-शुदा, लिया हुआ।

कर्षणी (स्त्री०)-घोड़े की लगाम का लोहा। -[क्षीरिका।

कर्षू (पु०)—आरने की आग, खेती,

कर्हिचित (अ०)—किसी समय।

कल् (१आ०)—गिनना, आवाज़ करना। [१०उ०] पकड़ना, ले जाना, रखना।

कल(वि०)—अस्पष्ट मधुर शब्द, दुर्बल, सुहावना, मनोहर। पु०—धीमी आवाज़।

कलकण्ठ (पु०)—कोयल, हंस, कबूतर। वि०—मधुरध्वनि वाला।

कलकल (पु०)—गुनगुनाहट, शोर, कोलाहल।

कलघोष (पु०)—कोयल।

कलङ्क (पु०)—दोष, धब्बा, दाग़, ऐब, अपवाद, अपयश।

कलङ्कित (वि०)-दोषी, दाग़दार, बदनाम।

कलङ्क (पु०)—पक्षी, तम्बाकू, विषपूर्ण बाण से विद्ध मृग।

कलट (न०)—छप्पर, छान।

कलत्र (न०)—स्त्री, भार्या, शूकरी

कलधूत-धौत (न०)—चांदी, स्वर्ण।

कलन (न०)-दोष, चिन्ह, ऐब, समझना।

कलन्दर (पु०)—वर्णसङ्कर, हीनवर्ण पुरुष के संयोग से उत्पन्न सन्तान।

कलन्दिका (स्त्री०)-प्रतिभा, सर्वविद्याओं के ग्रहण करने की शक्ति।

कलभ (पु०)—छोटा हाथी, हस्तिपोत, ऊंट का बच्चा, धतूरा।

कलम (पु०)—लेखनी, चोर, एक प्रकार का धान्य, बदमाश।

कलम्ब (पु०)—तीर, कदम्ब का वृक्ष, नाली का साग।

कलम्बुट (न०)—ताज़ा घी, नैनी।

कलरव (पु०)—धीमी मीठी आवाज़, कोयल, कबूतर।

कलल (अस्त्री०)-जरायु, झिल्ली।

कलविङ्क-ङ्क (पु०)—धब्बा, दाग़, चटक पक्षी।

कलश-स (अस्त्री०)—कलसा, घड़ा, पात्रविशेष।

कलशी (स्त्री०)—घड़ा, पानी भरने का छोटा बर्तन।

कलह (अस्त्री०)–झगड़ा, विवाद, चिल्लाहट, युद्ध, तलवार का ढक्कन।

कलहंस (पु०)–राजहंस। [नारद।

कलहप्रिय (वि०)–झगड़ालू। पु०–

कलहप्रिया (स्त्री०)–मैना, सारिका।

कला (स्त्री०)–अंश, टुकड़ा, सूद, राशि के तीसवें भाग का साठवां भाग, हुनर [चौंसठ कला प्रसिद्ध हैं], नाव, धोखा।

कलाकुन (न०)–हलाहल विष।

कलाकुर (पु०)–कांस, सारस पक्षी।

कलाद (पु०)–कारीगर, स्वर्णकार, सुनार।

कलादक (पु०)–पूर्ववत्।

कलाधर (पु०)–चन्द्रमा, कारीगर।

कलाधिक (पु०)–मुर्गा, कुक्कुट।

कलानिधि (पु०)–चन्द्रमा।

कलानुनादी (पु०)–भौंरा, चटकपक्षी।

कलाप (पु०)–चन्द्रमा, तर्कस, तीर, अलंकार, मोर की पूंछ।

कलापिनी (पु०)–रात्रि, रात।

कलापी (पु०)–मोर, कोयल, पिलखन।

कलाभृत् (पु०)–चन्द्र, हुनरमन्द।

कलान्त्र(स्त्री०)–सूदखोरी, साहूकारा।

कलाय (पु०)-मटर नाम का अनाज।

कलावान् (पु०)–चन्द्रमा।

कलि (पु०)–चौथा युग, वर्तमान युग, कलह, विवाद, झगड़ा, बहादुर, तीर। स्त्री०–कली, बिना खिला हुआ फूल।

कलिका (स्त्री०)–बिना खुला हुआ फूल, कली।

कलिकार(पु०)–नारदमुनि। [इन्द्रजौ।

कलिङ्ग (वि०)–चतुर, चालाक। न०–

कलिङ्गाः (पु० बहु०)–कारुमण्डल तट की ओर एक प्रदेश तथा वहां के निवासियों का वाचक। [हुआ।

कलित (वि०) कथित, गणित, जाना

कलिन्द (पु०)–सूर्य, विभीतक वृक्ष, वह पर्वत जहां पर यमुना का उद्गमस्थान है।

कलिन्दतनया (स्त्री०)–यमुना नदी।

कलिन्दनन्दिनी–कन्या (स्त्री०)–पूर्ववत्। [मिला हुआ, गहन।

कलिल(न०)-बड़ा ढेर। वि० ढका हुआ,

कलुष (न०)–कीचड़, मैला, क्रोध, अपराध। पु०–महिष, भैंसा। वि०–बुरा, गलीज, अपवित्र, क्रूर, सुस्त, पापी।

कलुषित(वि०)–क्रूर, क्रोधित, अपवित्र

कलेवर (अस्त्री०)–शरीर, जिस्म।

कल्क (अस्त्री०)–तलछट, क्रूरता, नीचता, मैल, कान का मैल, गन्ध-विशेष। वि०–क्रूर, अपराधी, दोषी।

कल्कफल (पु०)–अनार का वृक्ष।

कल्कि (पु०)–विष्णु का दशवां अवतार जो पुराणों के अनुसार सम्बल नगर में विष्णुशर्मा नामक ब्राह्मण के घर में प्रकट होगा।

कल्की [न्] (वि०)–क्रूर, अपवित्र, मल्कयुक्त।

कल्प (पु०)–एक वेदाङ्ग का नाम जिस में यज्ञक्रियाओं का विधान है, ब्रह्मा का एक दिन जो चार अर्ब बत्तीस करोड़ संवत्सर का होता है, महाप्रलय, कल्पवृक्ष । वि०–उचित, मजबूत, मुमकिन ।

कल्पक (पु०)–नापित, यज्ञ, बाल काटने वाला ।

कल्पकार (पु०)–नापित, नाई, कल्पसूत्रों का बनाने वाला ।

कल्पद्रुम (पु०)–कल्पतरु, कल्प वृक्ष जो कहते हैं समस्त इच्छाओं के पूर्ण करने में समर्थ होता है ।

कल्पन (न०)–तरतीब, सम्पादन, रचना, काटना ।

कल्पना (स्त्री०)–रचना, शृंगार, ईजाद, खयालीपुलाव, खयाल, विचार ।

कल्पनी(स्त्री०)–क़ैंची ।

कल्पान्त (पु०)–महाप्रलय ।

कल्पित (वि०)–बनावटी, कल्पना किया हुआ, ख़याली ।

कल्मष (अस्त्री०)–पाप, दुःख । पु०–नरक । वि०–मैला, पापी ।

कल्माष (पु०)–राक्षस, कालारंग, अनेक रङ्गों का मेल ।

कल्मापी (स्त्री०)–यमुना नदी, जमदग्नि की गाय ।

कल्य (न०)–प्रातःकाल, प्रभात, मद्य, आशीर्वाद । वि०–चंगा, नीरोग, सज्जन । [बाद ।

कल्या (स्त्री०)–हरीतकी, मुबारिक-

कल्याण (वि०)–सुखी, भाग्यवान्, शुभ । न०–अच्छा भाग्य, सुख, नेकी, स्वर्ग, उत्सव, स्वर्ण ।

कल्याणवचन (न०)–दोस्ताना सभ-वत, भलाई की बात, लाल-बुझ्किया ।

कल्याणी (वि०)–प्रसन्न, महाभाग ।

कल्याश(पु०)–नाश्ता, सुबह का खाना ।

कल्यवर्त्त–कल्पवर्त्त भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं ।

कल्ल् (१ आ०)–चुप रहना, कूकना ।

कल्ल (वि०)–बहिरा, बधिर ।

कल्लोल (पु०)–शत्रु, लहर, महातरङ्ग, हर्ष, खुशी ।

कल्लोलिनी (स्त्री०)–नदी, दरिया ।

कव् (१ आ०)–कविता करना, चित्र बनाना । [बख्तर, युद्ध का बाजा

कवच (अस्त्री०)–लौहवस्त्र, ज़िरह

कवटी(स्त्री०)–किवाड़ ।

कवन(न०)–जल, पानी ।

कवर(अस्त्री०)–नमक, खारीपन । पु०–जूल्फ़, बालों का गुच्छा, लेक्चर देने वाला, वक्तृता करनेवाला ।

कवरकी(पु०)–कैदी, बन्दी ।

कवल(अस्त्री०)–ग्रास, एक बार मुंह में जितना अन्न आ सके ।

कवलित(वि०) भक्षित, चर्वित, निगला हुआ ।

कवष(पु०)–कवच, काटेदार झाड़ी ।

कवाट(न०)–कपाट, किवाड़ ।

कवि (पु०) सूर्य, ब्रह्मा, वाल्मीकि, शाइर, धीमान्, फिलासफर,

काव्यकर्त्ता। वि०-पण्डित, बुद्धिमान्, विचारशील, सर्वज्ञ। स्त्री०-कलई, लगाम। [ग्रन्थ।
कविता (स्त्री०)-काव्य, छन्दोबद्ध-
कविपुत्र(पु०)-शुक्राचार्य।
कविराज(पु०)-बड़ा कवि, कविश्रेष्ठ।
कवोष्ण(वि०)-कुछ २ गर्म, सीलगर्म।
कव्य(न०)-पितरों के निमित्त दिया हुआ अन्नादि।
कश्(१ प०)-करना।
कशा(स्त्री०)-कोड़ा, चाबुक।
कशस् [:] (न०)-जल, पानी।
कशिपु (पु०)-भोजन, कपड़ा, वस्त्र, चटाई, बिस्तरा।
कशेरु (अस्त्री०)-जलोत्पन्न कन्द विशेष, मेरुदण्ड, रीढ़ की हड्डी।
कशेरुका (स्त्री०)-रीढ़ की हड्डी।
कश्मल (न०)-मूर्छा, पाप। वि०-गन्दा, मैला।
कश्मीर (पु०)-काश्मीर नामक देश जो पञ्जाब के उत्तर में है।
कश्मीरज (अस्त्री०)-केशर, कुंकुम।
कश्यप (पु०)-ब्रह्मा का पोता मरीचि का पुत्र जिस की दिति और अदिति दो भार्या थीं, कछुवा।
कष् (१ उ०)-रगड़ना, मारना, कूदना, फुदकना। [पत्थर।
कष (पु०)-रगड़ना, कसौटी नाम का
कषण (न०)-रगड़ना, चिन्ह लगाना, कसौटी पर लगाना।
कषाकु (पु०)-अग्नि, भास्कर।
कषाय (अस्त्री०)-छःरसों में से एक, कसैला, काढ़ा, क्षाप, कलियुग, मनोविकार।
कष्ट (न०)-बुराई, कठिनता, दुःख, दमया। वि०-बुरा, दुःखी।
कष्टकर (वि०)-दुःखदायी, कष्ट देने वाला।
कष्टसाध्य (वि०)-जो कठिनता से पूरा हो सके।
कष्टि (स्त्री०)-दुःख, आजमायश, परीक्षा, हानि।
कस (पु०)-कसौटी, पथरी।
कसेरु (पु०)-कशेरु।
कस्तीर(न०)-टीन, रांग नामक धातु।
कस्तूरिका (अस्त्री०)-कस्तूरी, मृगमद, मुश्क।
कस्तूरी (स्त्री०)-पूर्ववत्।
कस्तूरीमृग (पु०)-ऐसा मृग जिसकी नाभि में कस्तूरी पाई जाती है।
कहाड़ (पु०)-भैंसा, महिष।
कल्हार (न०)-सफेद कमल।
कांसीय (न०)-कांसा नामक उपधातु को तांबे के मेल से बनता है
कांस्य (न०)-कांसा नामक उपधातु, जल पीने का एक वर्त्तन।
कांस्यकार (पु०)-कसेरा नामक जाति
काक (पु०)-कौवा, लंगड़ा, नीच मनुष्य।
काकचिंचा (स्त्री०)-घौंटली, गुञ्जा।
काकजात (पु०)-कोयल।
काकतालीय (न०)-अचानक होने वाली बात, आकस्मिक घटना।

काकदन्त (पु०)-आकाशकुसुम, असम्भव बातें।
काकनिद्रा (स्त्री०)-ऐसी नींद जो आसानी से भंग हो जाय, चौकन्नी नींद।
काकपुच्छ (पु०)-कोयल।
काकपेय (वि०)-जो गहरा न हो, छिछला।
काकभीरु (पु०)-उल्लू, उलूक।
काकरुक(वि०)-डरपोक, नङ्गा, गरीब। पु० स्त्रैण, भार्याधीन।
काकली (स्त्री०)-मीठी और धीमी आवाज़, चोंटली।
काकारि(पु०)-उल्लू, उलूक।
काकिणी(स्त्री०)-कौड़ी, दमड़ी।
काकु (स्त्री०)-मनोविकार के कारण शब्द का बदलना, वक्रोक्ति।
काकुत्स्थ(पु०)-सूर्यवंशी राजा।
काकुद(न०)-तालु, जिह्वा का आश्रय-स्थान।
काकोदर(पु०)-साँप, सर्प।
काकोल(पु०)-सर्प; पहाड़ी कौवा, सूअर।
काक्ष(पु०)-कटाक्ष, तिरछी चितवन।
काग(पु०)-कौवा।
कांक्ष्(१ उ०)-चाहना, इच्छा करना।
कांक्षा (स्त्री०)-इच्छा, ख्वाहिश।
कांदोल(पु०)-बगुला।
काच(पु०)-एक प्रकार का उपरत्न जो खारी मिट्टी को पका कर निकाला जाता है, कांच, मोम।
काचमल(न०)-काला नून, शोरा।
काचिघ(पु०)-स्वर्ण, मुदा, चूड़ी।
काचूक(पु०)-मुर्गा, चकवा पक्षी।
काच् (१आ०)-चमकना, बाँधना।
काञ्चन (न०)-स्वर्ण, चमक, धनराशि, हरताल। पु०-चम्पक वृक्ष, धतूरा।
काञ्चनक(न०)-हरताल।
काञ्चनकन्दर(पु०)-स्वर्ण की खान।
काञ्चनदली(स्त्री)--स्वर्णकदली।
काञ्चनसन्धि (पु०)-ऐसे प्रकार की सन्धि जिसमें दोनों पक्षों को कुछ हानि न उठानी पड़े।
काञ्चनार (पु०)-कचनाल, कोविदार, कचनाल वृक्ष।
कांचि (स्त्री०)-भारत के दक्षिण में एक नगर का नाम, स्त्रियों के पहरने का एक आभूषण [काञ्ची-का भी यही अर्थ है]
काठिन्य(न०)-कठोरता, सख्ती, मुश्किल।
काण(वि०)--काणा, एक आंख वाला, कौवा।
काणूक(पु०)-हंसभेद, मुर्ग, कौवा।
काण्ड(अस्त्री०)--अध्याय, परिच्छेद, स्तम्भ, सरकण्डा, छड़ी, डाल, मौका, एकान्तस्थान, पत्थर, तीर।
काण्डपृष्ठ(पु०)-शस्त्रजीवी, सिपाही, गोद लिया हुआ पुत्र।
काण्डीर (वि०)-तीरन्दाज़, बाण धारण करने वाला। न०-मजीठ।
काण्डेक्षु (पु०)--तालमखाना, तृण-विशेष।
कातर(वि०)--डरपोक, डरा हुआ, दुःखी, भयाकुल। पु०-मत्स्यभेद, नौका।

कातर्य (न०)--डरपोकपन; भीति ।
कातृण(न०)-बुरी घास,कुत्सित घास।
कात्यायन(पु०)—वररुचि नामक वैया-करण, धर्मशास्त्रकार एक ऋषि-विशेष ।
कात्यायनी (स्त्री०)-याज्ञवल्क्य की स्त्री का नाम, पवित्री, रक्तवस्त्र धारण किये हुए विधवा।
काथिक (पु०)-कथक्कड़ , कहानी कहने वाला ।
कादम्ब (पु०)-ईख का सरकण्डा, कदम का वृक्ष, कलहंस ।
कादम्बक (पु०)-तीर, बाण ।
कादम्बरी (स्त्री०)-सरस्वती,मादा कोयल, सारिका, मैना, सुराभेद, एक काव्य जो बाण कवि का रचा हुआ है ।
कादम्बिनी (स्त्री०)-मेघमाला ।
कादाचित्क(वि०)-आकस्मिक,घटनावश ।
कानक (वि०)-सुनहरा ।
कानन (न०)-जंगल, वन, घर ।
काननाग्नि (पु०)-दावानल, वनाग्नि ।
कानीन(पु०)-अविवाहिता स्त्री की सन्तान, व्यास और कर्ण का नाम, पुत्रभेद ।
कान्त (पु०)-पति, चन्द्रमा, प्रेमी,वसन्त । न० —जाफ़रान , केशर । वि० — इच्छित, प्यारा, प्रियदर्शन ।
कान्तपक्षी(पु०)-लोहे का बना हुआ मयूर ।
कान्तलोह (न०)-स्टील नामक लोहा, एक प्रकार का मज़बूत लोहा ।
कान्ता (स्त्री०)-भार्या, पत्नी, प्यारी स्त्री, बड़ी इलायची, पृथिवी ।
कान्तार (न०)-जंगल । पु०-कचनाल, बांस, उपद्रव, जंगल, गर्त ।
कान्ति (स्त्री०)-दीप्ति,शोभा,शृंगार,इच्छा।
कान्तिकर (वि०)-कान्ति बढ़ाने वाला ।
कान्तिभृत् (पु०)- चन्द्रमा ।
कान्दविक (पु०)-हलवाई, मिठाई बनाने वाला । [भयातुर ।
कान्दिशीक (वि०)-भगोड़ा , भयभीत ,
कान्यकुब्ज (पु०)-देशविशेष, कन्नौज ।
कार्पटिक (पु०)-खुशामदी,छली,विद्यार्थी वि० -धोखेबाज़, बेईमान ।
कापट्य (न०)-कपटता,कपटीपन, कुटता ।
कापथ (पु०)-बुरा रास्ता, कुमार्ग ।
कापालिक (पु०)-भैरवमतानुयायी, वामाचारी ।
कापालिकी (स्त्री०)-चतुर स्त्री, कपालों की बनी हुई माला ।
कापाली (पु०)-भैरव, शिव ।
कापिल (पु०)-पीला रंग, कपिलमतानुयायी ।
कापिश (न०)-सुराभेद ।
कापुरुष (पु०) बुरा आदमी, डरपोक,कमबख्त, नीच मनुष्य ।
कापोत (पु०)-भूरा रंग । न०-सुर्मा, कबूतरों का झुण्ड ।
काफल (पु०)-कड़वा बीज ।
काम (पु०)-इच्छा, ख्वाहिश , अपेक्षित वस्तु, प्रेम, कामदेव, बलराम ।
कामकला (स्त्री०)-कामदेव की स्त्री रति।
कामकार (वि०)-स्वतन्त्र, स्वेच्छाचारी ।
कामकृत (वि०)-पूर्ववत् ।
कामकेलि (पु०)-कामक्रीडा, विषयभोग, संगमागम ।
कामक्रीड़ा(स्त्री०)-पूर्ववत् ।
कामगा(स्त्री०)- असती स्त्री, व्यभिचारिणी ।

कामचार (वि०)-न रोका हुआ, स्वतन्त्र। पु०-स्वेच्छाचारिता।

कामजित् (वि०)-विषयवासना पर क़ाबू पाने वाला। पु०-शिव, स्कन्द।

कामताल (पु०)-कोयल।

कामद (वि०)-कामना पूरी करने वाला, अभीष्टदायक।

कामदर्शन (वि०)-प्रियदर्शन, मनोहर।

कामदुघा (स्त्री०)-कामधेनु, सुरभी।

कामदुह् (स्त्री०)-पूर्ववत्।

कामदूती (स्त्री०)-मादा कोयल।

कामदेव (पु०)-प्रद्युम्न, भारतीयों के बीच कामदेव प्रेम का देवता माना गया है जो कृष्ण और रुक्मिणी का पुत्र कहा जाता है और जिस की स्त्री रति है।

कामधेनु (स्त्री०)-पौराणिकमतानुसार स्वर्ग में इस नाम की एक गौ विशेष रहती है जिस में समस्त इच्छाओं के पूर्ण करने की शक्ति विद्यमान है।

कामध्वंसी (पु०)-शिव का बोधक।

कामन (अ०)-इच्छा, चाहना। वि०-कामी, विषयासक्त।

कामना (स्त्री०)-इच्छा, ख्वाहिश।

कामनीय (वि०) मनोहर, चित्ताकर्षक

कामपत्नी (स्त्री०)-कामदेव की स्त्री, रति। [रिपु।

कामपाल (पु०)-बलभद्र, बलराम,

कामप्रद (वि०)-इच्छाओं का पूर्ण करने वाला। पु०-परब्रह्म।

कामम् (अ०)-इच्छानुकूल, यथेच्छ, इच्छापूर्वक, अच्छा, बहुत अच्छा, हां।

काममह (पु०)-चैत्रमास की पूर्णिमा के दिन कामदेव की पूजा का एक उत्सव।

काममोहित (वि०)-प्रेमासक्त, काममूढ।

कामरसिक (वि०)-कामासक्त, कामी।

कामरूप (वि०)-इच्छानुसार रूप धारण करने वाला, मनोहर, सुन्दर। पु०-आसाम का एक प्रान्त

कामरेखा (स्त्री०)-वेश्या।

कामल (पु०)-वसन्त ऋतु, रोगभेद, मरुभूमि। वि०-कामी, कामासक्त, पीलिया रोग वाला।

कामवल्लभ (पु०)-आम का वृक्ष, चन्द्रमा, वसन्तऋतु। [ज्योत्स्ना।

कामवल्लभा (स्त्री०)-चांदनी, चन्द्रिका,

कामवश्य (वि०)-काम के वशीभूत।

कामवृत्ति (स्त्री०)-काम करने की स्वतन्त्रता।

कामसख (पु०)-वसन्तकाल, चैत्रमास, आम्रवृक्ष।

कामसुत (पु०)-कामदेव का पुत्र अनिरुद्ध।

कामाग्नि (पु०)-प्रेम की आग, तीव्र इच्छा, तीव्रकामैषणा।

कामातुर (वि०) प्रेमासक्त, कामाकुल, प्रेम का मारा हुआ।

कामान्ध (वि०)-काम के वशीभूत, विषयान्ध। पु०-कोयल।

कामारि (पु०)-शिव का बोधक।

कामासक्त (वि०)–प्रेम में फसाहुआ, कामी। [न०-इच्छा,प्रेम।
कामित (वि०)–इच्छित, ईप्सित,
कामिनी (स्त्री०)–मनोहर स्त्री,नारी, अबला, काम को उत्पन्न करने वाली स्त्री।
कामी (वि०)–कामासक्त। पु०-प्रेमी, शिव,चन्द्रमा,कबूतर, चटकपक्षी।
कामुक (वि०)–कामना करने वाला, कामासक्त। पु०–प्रेमी, कामी, चटक पक्षी।
काम्पिल्य (पु०)–एक देश का नाम।
काम्बल (पु०)–एक प्रकार का रथ जो कम्बल से ढका रहता है।
काम्बविक (पु०)–शंखकार।
काम्बोज (पु०)–कम्बोज देश का निवासी, कम्बोज देश का घोड़ा, पुन्नागवृक्ष, कबोह जाति।
काम्य (वि०)–कामनायोग्य, इच्छा पर निर्भर, मनोहर।
काम्यमरण(न०)–खुदकशी,आत्मघात।
काम्यव्रत (न०)–स्वेच्छा से की हुई प्रतिज्ञा। [प्राय।
काम्या (स्त्री०)–इच्छा,प्रार्थना, अभि-
काय (अस्त्री०)–शरीर, देह, प्राजापत्य विवाह, स्वभाव, मूलधन।
कायक्लेश (पु०)–शारीरिक कष्ट।
कायचिकित्सा (स्त्री०)–आठ प्रकार के चिकित्साभेदों में से एक।
कायमान (न०)–फूस का बना हुआ झोपड़ा, शरीर का परिमाण।
कायस्थ (पु०)–परब्रह्म, लिखने का काम करने वाला, एक जातिभेद जो क्षत्रिय और शूद्र के संसर्ग से उत्पन्न हुई है।
कायस्थित (वि०)–शारीरिक, शरीर में रहने वाला।
कायिक (वि०)–दैहिक,शारीरिक, जो देह से किया जाय।
कायिका (स्त्री०)-रुपये का सूद, ब्याज
कार (पु०)–क्रिया,काम, प्रयत्न, पति, इरादा, हिमालय पर्वत, महसूल, वध। वि०–करने वाला,सम्पादक।
कारक(वि०)-क्रियाजनक,करने वाला। न०–व्याकरण में क्रिया और संज्ञाके सम्बन्धसे ७ कारक माने गये हैं, यथा-कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण।
कारण(न०)–सबब, हेतु, उद्देश,साधन, करण, शरीर, कार्य, जरिया, वध। न्याय में वह वस्तु जिस के बिना कार्य की उत्पत्ति नहीं हो सकती। [पीड़ा।
कारणा (स्त्री०)–दुःख, कष्ट, मानसिक
कारणवादी (पु०)–मुद्दई, अर्थी।
कारणविहीन (वि०)–हेतुरहित, बेबुनियाद।
कारणशरीर(न०) लिङ्गशरीर का नाम
कारणिक(वि०)-परीक्षक, जज,कारणयुक्त।
कारण्डव (पु०)-एक प्रकार का हंस।

कारस (वि०)–चन्द्रसम्बन्धी, चन्द्र से उत्पन्न ।
कारसिहिका (स्त्री०)–कापूर, कपूर ।
कारव (पु०)–कौवा, काक ।
कारा(स्त्री०)–क़ैद, जेल,दूती, सुनारी, दुःख, ध्वनि ।
कारागृह–गार(न०)–क़ैदखाना, जेलखाना । [निरीक्षक ।
कारापाल (पु०)–जेलर, बन्दिगृह का
कारि (पु०)–कारीगर, दस्तकार । स्त्री०–काम, कार्य ।
कारिका (स्त्री०) सूद, कष्ट, व्यवसाय, नर्त्तकी, श्लोकभेद ।
कारीरी (स्त्री०) ऐसी यज्ञक्रिया जिस के द्वारा पानी बरस सके ।
कारु(वि०)–करने वाला,बनाने वाला, शिल्पकार, कारीगर, भयानक। पु०–विश्वकर्मा, शिल्प ।
कारुक (पु०)–शिल्पी, कारीगर ।
कारुण (पु०)–हस्तिपोत, वल्मीक, शरीर का तिलादि चिन्ह, नागकेशर। [दयार्द्रचित्त ।
कारुणिक (वि०)–दयालु, मुलायम,
कारुण्य (न०)–दया, रहम,दयालुता ।
कार्कश्य (न०)–कठोरता, उजड्डपन, बेरहमी ।
कार्ण (न०)–कान का मैल, वाणी । वि०–कर्णसम्बन्धी । [वृक्ष ।
कार्त्तस्वर (न०)–स्वर्ण, धतूरा, चाम्पक
कार्त्तान्तिक(पु०)-भाग्य बताने वाला, ज्योतिषी ।
कार्त्तिक(पु०)–कार्त्तिक मास का मास जो अक्तूबर या नवम्बर में होता है, स्वामिकार्त्तिक, स्कन्द ।
कार्त्तिकी (स्त्री०)–कार्त्तिक मास की पूर्णिमा ।
कार्त्तिकेय (पु०)–शिवपुत्र स्कन्द जिस का कृत्तिकाओं ने पालन किया था । [सामग्र्य ।
कार्त्स्न्य (न०)–सम्पूर्णता, साकल्य,
कार्दम (वि०)–कीचड़युक्त, कीचड़ से भरा हुआ ।
कार्पटिक (पु०)–तीर्थयात्री, तीर्थसेवी, अनुभवी पुरुष ।
कार्पण्य(न०)–कञ्जूसी,गुमर्म,दीनता।
कार्पास(वि०)–कपास का बना हुआ। अस्त्री०-कागज़।
कार्पासी (स्त्री०)–कपास का वृक्ष ।
कार्म (वि०)–मेहनती, परिश्रमी ।
कार्मण (वि०)–काम करने में होशियार । न०–जादू, छल, मन्त्रतन्त्र ।
कार्मार (पु०)--दस्तकार, शिल्पी ।
कार्मिक्य (न०)–कार्यकुशलता, परिश्रम ।
कार्मुक (न०)–धनुष्, कमान, वांस, महानिम्ब। पु०–काम करने योग्य, कार्यकुशल ।
कार्य (वि०)–करने योग्य, उत्पादनीय न०–काम, कर्त्तव्य, साहस,अभिप्राय, व्यवहार, कारण का फल, आरम्भ ।
कार्यकर (वि०)–लाभदायक, मुफीद।
कार्यकर्त्ता(पु०)–कारीगर,करने वाला।

कार्यकाल (पु०)—काम करने का उचित समय।
कार्यकुशल(वि०)—कार्य करने में चतुर।
कार्यच्युत (वि०)—बेकार, कर्तव्यविमुख, बर्खास्त।
कार्यपटु (वि०)—काम करने में होशियार, अनुभवी।
कार्यसिद्धि(स्त्री०)—कामयाबी,सफलता
कार्याक्षम (वि०)—काम करने में असमर्थ।
कार्याकार्य (न०)—करने और न करने योग्य बात।
कार्याधिप (पु०)—काम का निरीक्षक, सुपरिंटेण्डेण्ट।
कार्यार्थी (वि०)—मतलबी, गर्जी।
कार्श्य (न०)—कृशता, दुबलापन।
कार्षापण (अस्त्री०)—रुपया, पण, सोलह पण।
कार्षिक (पु०)—पण का चौथा भाग, तोलाभर। [पन।
कार्ष्ण्य (न०)—कालापन, धुंधियालाकाल (पु०)—काला रंग, समय, मृत्यु, यम, प्रारब्ध, आंख की पुतली, कोयल,शिव,कृष्ण, शनि। वि०—काला, हानिकर।
कालकण्ठ (पु०)—काली ग्रीवा वाला, महादेव, नीलकण्ठ, मोर।
कालकण्टक (पु०)—जल में रहने वाला सर्प। [वत।
कालकर्णिका (स्त्री०)—विपत्ति, मुसीकालकर्म (न०)—मृत्यु, मौत।
कालकुण्ठ (पु०)—यमराज।

कालकूट (अस्त्री०)—एक प्रकार का भयङ्कर विष जो समुद्रमन्थन समय उत्पन्न हुआ था।
कालकृत् (पु०)—परब्रह्म, सूर्य, मयूर।
कालक्रम (पु०)—समय का बीतना।
कालक्रमेण (अ०)—ज्यूं २ समय बीतता गया।
कालक्षेप (पु०)—दीर्घसूत्रता, देरी।
कालगंगा (स्त्री०)—यमुना नदी।
कालग्रन्थि (पु०)—संवत्सर,एक वर्ष।
कालचक्र (न०)—समय का बीतना, वक्त का दौर, जीवन का उतार चढ़ाव।
कालज्ञ (वि०)—समय को जानने वाला। किंकर्त्तव्य का ज्ञाता। पु०-कुक्कुट, ज्योतिषी।
कालदर्शी (वि०)—पूर्ववत्।
कालधर्म (पु०)—समयानुसार कर्त्तव्यकर्म, मृत्यु, मौत।
कालनियोग (पु०)—दैवाज्ञा, प्रारब्ध का अटल आदेश।
कालपक्व (वि०)—समय से परिपक्व, अनुभवी।
कालपाशिक(पु०)—जल्लाद,हत्यारा।
कालपुच्छ(पु०)—बारहसींगा,मृगविशेष
कालपुष्ट(पु०)—लंगूर। [करना।
कालयापन(न०)—समय बिताना, देरी
कालरात्रि(स्त्री०)—यम की बहिन, कल्पान्त रात्रि। [विशेष।
काललोह(न०)—स्टील नामक लोह
कालसन्नत्त (वि०)—जिसके ऊपर तिथि लिखी हुई हो।

कालस्वरूप(वि०)—मृत्यु के समान।
काला(स्त्री०)—नील, मजीठ, काला जीरा।
कालाग्नि(पु०)—प्रलय के समय नाशकर अग्नि, रुद्र का बोधक, कालानल।
कालातिक्रमण(नु०)—समय बिताना, देरी करना।
कालातिपात(पुं०)—पूर्ववत।
कालातिरेक(पु०)—पूर्ववत। [हुआ।
कालातीत(वि०)-बीता हुआ, गुजरा
कालान्तर(न०)—समयान्तर, समय-विभाग।
कालावधि(पु०)-नियतकाल।
कालिक(पु०)--सारस, बगुला। वि०—कालसम्बन्धी।
कालिका(स्त्री०)—दुर्गा, कलौंस, काला रंग, स्याही, रोशनाई, काकी, हरीतकी।
कालिंग(पु०)--हाथी, हस्ती, सर्प, एक प्रकार का लोहा, कालिंग देश का राजा। न०—तरबूज नामक फल।
कालिन्द(न०)--तरबूज।
कालिन्दी (स्त्री०)--यमुना नदी, श्रीकृष्ण की एक भार्या।
कालिन्दीभेदन(पु०)--श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम का नाम।
कालिमा(पु०)--कालापन, कलौंस, धब्बा, दोष।
काली (स्त्री०)—रोशनाई, काली स्याही, पार्वती, कल्याणी, रात्रि, निन्दा, अग्नि की जिह्वाविशेष, दुर्गा का भेद, यमभगिनी, महाविद्या।
कालीक(पु०)- बगुला पक्षी। [लत।
कालीची(स्त्री०)--यमराज की अदा-
कालीन(वि०)—समयानुकूल।
कालुष्य(न०)--मैलापन, गन्दापन।
कालेय (न०)--जिगर, कुंकुम, काला चन्दन। पु०—हल्दी, दैत्यविशेष। वि०--कलियुगसम्बन्धी।
कालेयक(पु०)--शिकारी कुत्ता। न०--एक प्रकार का पीलिया रोग, चन्दनभेद। [झूठा साक्षी।
काल्पनिक(वि०)--कल्पित, बनावटी-
काल्य(न०)—उषाकाल, पौ फटना। वि०--समयानुकूल, मंगलकर।
काल्या (स्त्री०)—गर्भ धारण करने के योग्य गाय, रजोदर्शन के पश्चात की स्त्री।
कावार (न०)—काई, कुम्भिका।
कावुक (पु०)—चकवा पक्षी, कुक्कुट।
कावेरी (स्त्री०)—वेश्या, हल्दी, भारतवर्ष के दक्षिण में एक नदी का नाम
काव्य (न०)—कवि की कृति, कविता, कुशलक्षेम, बुद्धि। पु०—शुक्राचार्य वि०-प्रशंसायोग्य, वर्णनीय, आर्यगुणयुक्त। [चुराने वाला।
काव्यचोर (पु०)—दूसरों के ख्यालात
काव्यमर्मज्ञ (वि०)—कविता के गुण दोष जानने वाला।
काश् (भ्वा०)—चमकना, मनोहर दिखलाई देना।
काश (पु०)—काश घास की प्रसिद्ध घास, दीप्ति, खांसी।

काशि (पु०)-सूर्य, मुट्ठी, प्रभा, दीप्ति। स्त्री०-बनारस नामक नगर।
काशिका (स्त्री०)-बनारस नामक नगर, पाणिनिकृत सूत्रों पर एक टीका।
काशिराज (पु०)-धन्वन्तरि, बनारस का राजा, विशेष कर अम्बा, अम्बिका, अम्बालिका के पिता का नाम है।
काशी (स्त्री०)-बनारस नामक प्रसिद्ध नगर जो पौराणिकों के निकट एक पवित्र स्थान है और शिवका निवासस्थल कहा गया है।
काशीनाथ (पु०)-शिव, एक प्रसिद्ध ज्योतिषी जो शीघ्रबोध नामक ग्रन्थ का कर्ता है।
काशीयात्रा (स्त्री०)-तीर्थस्थान के लिये काशीधाम में जाना।
काश्मीर (न०)-कुंकुम, केशर, सुहागा पु०-कश्मीर का निवासी।
काश्मीर्य (न०)-केशर, कुंकुम।
काश्यप (पु०)-मुनिविशेष, कश्यप-पुत्र, कणाद, अरुण। न०-मांस।
काश्यपि (पु०)-गरुड़, अरुण।
काषाय(न०)-सुर्ख कपड़ा। वि०-लाल, कुछ २ सुर्ख।
काष्ठ (न०)-लकड़ी, इन्धन। [केला।
काष्ठकदली (स्त्री०)-वनकेला, जंगली
काष्ठकीट (पु०)-घुण नामक कीड़ा।
काष्ठकूट (पु०)-कुटबढ़ैया नामक पक्षी
काष्ठतक्ष् (पु०) बढ़ई।
काष्ठतक्षक (पु०)--बढ़ई।
काष्ठदारु (पु०)-देवदारु वृक्ष।
काष्ठभारिक(पु०)-लकड़ी ढोने वाला।
काष्ठलेखक (पु०) घुण, काष्ठकूट।
काष्ठा (स्त्री०)-दिशा, सीमा, चिन्ह, निशान, जल, सूर्य, कला का तीसवां भाग, दक्षकी पुत्रीकानाम
काष्ठिक (पु०)-लकड़हारा।
काष्ठीला (पु०)-केले का वृक्ष।
कास् (१ आ०)-चमकना, खांसना, ऊऊं करना।
कास (पु०)-खांसी, कफरोग।
कासघ्नी (स्त्री०)-कटेली, कण्टकारी।
कासर (पु०)-महिष, भैंसा।
कासार (अस्त्री०)-तालाव, सरोवर।
कासीस (न०)-हीराकसीस नामक औषध विशेष।
कासू (स्त्री०)-प्रभा, चमक, रोग, शक्ति, समझ, अस्फुट वाणी।
कासृति (स्त्री०)-गुप्तमार्ग, छिपा हुआ रास्ता।
काहल (पु०)-कौवा, कुक्कुट, बिल्ली, ध्वनि। वि०-सूखा, नीच, क्रूर, बहुत।
किंवदन्ती (स्त्री०)-जनश्रुति, लोकोक्ति, लोकापवाद, अफवाह।
किंवा (अ०)-अथवा, वा, या, विकल्पबोधक।
किशारु (पु०)-बाण, तीर, बगुला, अनाज का टूर।
किंशुक (पु०)-पलाशवृक्ष, टेसू। न०-टेसू का फूल।
किकि (पु०)-चातक पक्षी।

किरि (पु०)–शूकर, सूअर, बादल
किरीट (अस्त्री०)–मुकुट पगड़ी, ताज, राजचिन्ह, व्यवसायी।
किरीटधारी (पु०)–राजा।
किरीटमाली (पु०)–अर्जुन का नाम।
किरीटी (पु०)–अर्जुन। वि० मुकुटधारी।
किर्मि (स्त्री०)–स्वर्णमूर्त्ति, पलासवृक्ष, मकान, ढाल।
किर्मीर (पु०)–नारंगी का पेड़, एक राक्षस का नाम।
किर्याणी (पु०)–जगली सूअर।
किल् (? प०)–किलोल करना, श्वेत हो जाना।
किल(अ०)–निश्चय, प्रसिद्धि, पश्चात्ताप, असन्तुष्टि,अवज्ञा, हेतु आदि अर्थों का बोधक।
किलकिल (पु०)–आवाज़, हर्षजनकध्वनि, बन्दरों की किलकारी।
किलकिला (स्त्री०)–पूर्ववत्।
किलाट(पु०) खोया, मावा, दुग्धविकार।
किलाटक (पु०)–पूर्ववत्।
किलाटी (पु०)–बांस, वंश।
किलिञ्ज (न०)–चटाई, बैठने का तख्ता।
किलिञ्जक (पु०)–पूर्ववत्।
किलिम (न०)–समूर का पेड़।
किल्विष (न०)–अपराध, पाप, अनिष्ट रोग।
किल्वा [न] (पु०)–घाडा, अश्व।
किशल (न०)–अङ्कुआ, अंकुर।
किशलय (अस्त्री०)–पल्लव पत्ता, अङ्कुआ।
किशोर (पु०)–पन्द्रह वर्ष से कम अवस्था का लड़का, नाबालिग, प्रत्यक्ष जान पर का बच्चा।
किशोरावस्था (स्त्री०)–१० वर्ष से लेकर पद्रह वर्ष की अवस्था।
किशोरी (स्त्री०) कुमारीकन्या, युवति
किष्किन्ध [न्ध्य] (पु०)–भारतवर्ष के दक्षिण में एक प्रदेश, ओढ़ देश का एक पर्वत। [देश की राजधानी।
किष्किन्धा–न्ध्या (स्त्री०)–किष्किन्ध
किष्किन्धा न्ध्याकाण्ड (अस्त्री०)–वाल्मीकीयरामायण का पाचवा अध्याय जिसमें श्रीराम की सुग्रीव आदि के साथ भेटादि का वर्णन है।
किष्कु (अक्ली०)–हाथ की नाप, बालिश्त, बारह अगुल की नाप। वि०–नीच, बुरा।
किसल (अक्लीन०)–छोटा पत्ता, अकुर, नवपल्लव।
किसलय (अस्त्री०)–पूर्ववत्।
कीकट (पु०)–घोड़ा, विहारप्रदेश। वि० कजूस, गरीब।
कीकश (पु०)–चाण्डाल।
कीकस (वि०)–मजबूत, दृढ, सख्त। न०–हड्डी, अस्थि।
कीचक (पु० –राजा विराट् का साला जिसकी कथा महाभारत के विराट-पर्व में वर्णित है और जो राजा विराट का सेनापति था। खोखला बास जिसमें वायु के भर जाने से शब्द हुआ करता है।
कीचकजित् (पु०)–कीचक के मारने वाला भीमसेन। [जिस समय पाचों पाण्डव द्रौपदी सहित वेष बदल कर राजा विराट के यहां नौकर हो गये थे उस समय विराट के सेनापति कीचक ने द्रौपदी के

सतीत्वभङ्ग की चेष्टा की; इस पर भीमसेन ने कौशलपूर्वक उसे मार डाला था।

कीट्(१० प०)-बाँधना, जकड़ना, रंगना

कीट (पु०)-कीड़ा, क्षुद्रजन्तु। वि०-कठोर, सख्त।

कीटक (पु०)-कीड़ा, मागधियों का सन्दिग्ध। वि०-कठिन, कर्कश।

कीटघ्न(पु०)-गन्धक, कीट का घातक।

कीटज (न०)-रेशम।

कीटजा (पु०)-कीड़ों से निकली हुई वस्तु अर्थात लाख।

कीटमणि (पु०)-खद्योत, जुगनू।

कीटिका (स्त्री०)-छोटा कीड़ा।

कीदृश् (वि०)-किस प्रकार का, किस ढंग का, किस तरह का।

कीदृश-क्ष (वि०)-किस प्रकार का, किस तरह का, किस ढंग का।

कीदृशी-क्षी (स्त्री०)-पूर्ववत्।

कीन (न०)-मांस, गोश्त।

कीनाश (पु०)-यमराज का बोधक, वानरविशेष। वि०-कमीना, क्षुद्र, निर्धन।

कीर (पु०)-तोता। बहु०-काश्मीर प्रदेश अथवा वहाँ के निवासी। न०-मांस।

कीरेष्ट (पु०)-आम का वृक्ष।

कीर्ण (वि०)-ढका हुआ, रखा हुआ, क्षत, बिखरा हुआ।

कीर्तन (न०)-कथन, वर्णन, प्रशंसा, गुणाख्यान, आराधना।

कीर्तना (स्त्री०)-यश, वर्णन, कथा।

कीर्ति (स्त्री०)-यश, शोहरत, वर्णन, कीचड़, शोभा।

कीर्तित (वि०)-कथित, याद किया हुआ, गाया हुआ, प्रशंसित।

कीर्तिमान्(पु०)-यशस्वी, मशहूर।

कीर्तिशेष (पु०)-केवल यश अथवा नाम का शेष रह जाना अर्थात मृत्यु, नामशेष।

कील्(१ प०)-बाँधना, कील लगाना।

कील-लक (पु०)-कीला, आलपीन, स्तम्भ, भाला, शस्त्र, खूँटा।

कीलाल(न०)-जल, रक्त, लहू। पु०-शहद, पशु, अमृत।

कीलालधि(पु०)-समुद्र, जलधि।

कीलालप(पु०)-राक्षस, असुर।

कीलित(वि०)-छिदा हुआ,जमा हुआ, बंधा हुआ, कीला गया।

कीश(पु०)-बन्दर, वानर,पक्षी, सूर्य। वि०-वस्त्रहीन, नंगा।

कु(स्त्री०)-पृथिवी, भूमि। अ०-पाप, धिक्कार, अल्प, बुराइत आदि भावों का बोधक।

कु(१ आ०)-शब्द करना, चिल्लाना, आह भरना। [कार्य।

कुकर्म(न०)-बुरा काम, पाप, गर्हित-

कुकील(पु०)-पर्वत, पहाड़।

कुकुद(पु०)-आदरपूर्वक अलंकृत कन्या को देने वाला।

कुकुन्दर(पु०)-जघनकूप, नितम्ब के ऊपर गर्ताकार।

कुकूल(न०)-कवच, खाई, गर्त।

कुक्कुट-टक(पु०)-मुर्गा, कुक्कुट पक्षी,

चिनगारी, वर्णसङ्करभेद।
कुक्कुटि(स्त्री०)-बगुलाभक्ति, स्वार्थ के लिये धार्मिक कृत्यों का सम्पादन। [बगलाभक्ति।
कुक्कुटी (स्त्री०)-मुर्गी, छिपकली,
कुक्कुर(पु०)-कुत्ता, श्वान।
कुक्कुरी (स्त्री०)-कुतिया।
कुक्ष(पु०)-पेट, कोख।
कुक्षि (पु०)-पेट, अन्दरूनी भाग, खोखला स्थान, गर्त, वालि का नाम, खाड़ी, खलीज, पेट का बांया और दाहिना भाग जिसे कोख कहते हैं।
कुक्षिम्भरि (वि०)-पेटू, बलिवैश्वदेवादि यज्ञ न करके खाने वाला, स्वार्थी।
कुंकुम(न०)-केशर, ज़ाफरान [यह सुगन्धित द्रव्य कश्मीर में उत्पन्न होता है]।
कुच् (६ प०)-कूंजना, गमन करना, रोकना, लोड़ना।
कुच(पु०)-स्त्रीवक्षःस्थल, स्तन, चूची।
कुचफल(पु०)-अनार का वृक्ष।
कुचर(वि०)-एवज, दूसरे का दोष बताने वाला, मन्दगति।
कुचर्या(स्त्री०)-कुव्यवहार,कुटिलता।
कुचाग्र(न०)-स्तन, चूची।
कुज् (१ प०)-चुराना, चोरी करना।
कुज (पु०)-मंगलग्रह, असुरविशेष, वृक्ष।
कुजा(स्त्री०)-सीता,दुर्गा,कात्यायनी।
कुजन्म(वि०)-नीचवंशोद्भव।
कुज्झटि-टी(स्त्री०)-कोहरा, पाला।
कुज्झटिका(स्त्री०)-पूर्ववत्।
कुञ्च् (१आ०)-आह भरना,चिल्लाना।
कुञ्चन(न०)-कुटिलता, टेढ़ापन, चक्षूरोगभेद।
कुञ्चि(पु०)-आठ मुट्ठी का माप।
कुञ्चिका(स्त्री०)-कुञ्जी, चाबी, मत्स्यभेद, बांस का अंकुआ।
कुञ्चित(वि०)-झुका हुआ, टेढ़ा।
कुञ्ज् (१ प०)-भिनभिनाना, कूजना।
कुञ्ज (अस्त्री०)-लताग्रह, हाथी का दांत, नीचे का जबाड़ा।
कुञ्जर(पु०)-हस्ती, हाथी।
कुञ्जराशन(पु०)-बड़ का पेड़।
कुञ्जरी(स्त्री०)-हथिनी।
कुट् (६प०)-कुटिल होना,टेढ़ा होना, धोखा देना, ठगना। (४ प०)-बांटना, तोड़ना, टुकड़े २ करना, गर्म होना।
कुट(पु०)-पर्वत,दुर्ग,वृक्ष,घर,हथौड़ा। अस्त्री०-घड़ा, सुराही।
कुटक(पु०)=कुटर।
कुटंक(पु०)-छप्पर, घर की छत।
कुटङ्गक(पु०)-झोंपड़ा, छोटा घर।
कुटज(पु०)-अगस्त्यमुनि, द्रोणाचार्य, वृक्षविशेष। [बगीचा।
कुटप(पु०)-मुनि, ऋषि, तपस्वी,
कुटर(पु०)-ऐसा लट्ठा या दीवार जिस में मन्थनी की रस्सी [नेती] बांध दी जाती है।
कुटल(न०)=कुटंक।
कुटि(पु०)-वृक्ष, शरीर। स्त्री०-

कुड्यच्छेदी (पु०)—कूमल करने वाला, चोर।
कुण् (१०प०)—प्रणाम करना, निमन्त्रित करना, बातचीत करना, मशवरा करना। (६प०)—सहायता करना, सहारा देना।
कुणक (पु०)—सद्यःउत्पन्न पशु।
कुणप (पु०)—बदबू, दुर्गन्धि, भाला, मृतदेह, शव।
कुणटक (पु०)—मोटाताजा।
कुण्ठ् (१प०)—सुस्त होना, लंगड़ा होना, कुन्द होना। [सुस्त।
कुण्ठ (वि०)—मन्द, कुन्द, मूर्ख, दुर्बल,
कुण्ठित (वि०)—पूर्ववत्।
कुण्ड (अस्त्री०)—पात्रविशेष, पृथ्वी में जल इकट्ठा करने का गर्त, होमकरणार्थ वेदी।
कुण्डल (अस्त्री०)—कानों की बाली, बेड़ी, वृत्ताकार वस्तु।
कुण्डलिनी(स्त्री०)—सर्पिणी, मोरनी, वृत्ताकारचित्र, गोल वस्तु, वाममार्गियों की शक्ति नामक देवी।
कुण्डली (पु०)—घेरा डालने वाला सर्प, वृत्ताकार चित्र, मोर, सर्प, शिव। स्त्री०—कूंडी, गोल सूराख।
कुतप (पु०)—अग्नि, सूर्य, अतिथि, देवता, भाञ्जा, ब्राह्मण, द्विजन्मा, आठवां मुहूर्त।
कुतर्क (पु०)—तर्काभास, बुरी तर्कना, ग़लत मन्तक़।
कुतस् [कुतः] (अ०)—कहां से, कहां, कैसे, क्योंकर, किस प्रकार।
कुतुक (न०)—इच्छा, कौतूहल, शौक, चित्त का झुकाव।
कुतू (स्त्री०)—चमड़े का एक छोटा सा कुप्पा [कुतुप भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।
कुतूहल (न०)—इच्छा, आतुरता, शौक़, खुशी, दिलबहलाव, कौतुक। वि०—अच्छा, आश्चर्यमय, कीर्तित।
कुतूहलाक्रान्त (वि०)—शौक़ से भरा हुआ, तीव्रैषणा से आतुर, अचम्भे में पड़ा हुआ। [क्यों।
कुत्र (अ०)—कहां, किस स्थान में,
कुत्स् (१०आ०)—निन्दा करना, बुरा भला कहना, धिक्कारना।
कुत्सना—कुत्सा (स्त्री०)—पूर्ववत्।
कुत्सित(वि०)—गर्हित, निंदित, नीच।
कुथ (पु०)—क़ालीन, कुशानामक घास
कुद्दार-द्दाल(पु०)—कचनाल का पेड़, कसला, मिट्टी खोदनेका यन्त्रविशेष।
कुदिन (न०)—बुरा दिन, ऐसा दिन जो मेघों से आच्छादित हो, दुर्दिन
कुध्र (पु०)—पहाड़, पर्वत।
कुनक (पु०)—कौवा, काक।
कुनख (पु०)—नखसम्बन्धी रोगविशेष
कुनालिका (स्त्री०)—कोयल, कोकिल।
कुन्त (पु०)—कीड़ा, धान्यविशेष, बर्छी, भाला, मनोविकार।
कुन्तल (पु०)—हल, जौ, केशगुच्छ, बालों के पट्टे।
कुन्ती (स्त्री०)—कुन्तिभोज की गोद ली हुई कन्या पृथा नाम्नी जिस का विवाह पाण्डु के साथ हुआ

कुड्यच्छेदी (पु०)–कूमल करने वाला, चोर।
कुण् (१०प०)–प्रणाम करना, निमन्त्रित करना, बातचीत करना, मशवरा करना। (६प०)–सहायता करना, सहारा देना।
कुणक (पु०)–सद्यउत्पन्न पशु।
कुणप (पु०)–बदबू, दुर्गन्धि, भाला, मृतदेह, शव।
कुणटक (पु०)–मोटाताजा।
कुण्ठ् (१प०)–सुस्त होना, लगड़ा होना, कुन्द होना। [सुस्त।
कुण्ठ (वि०)–मन्द, कुन्द, मूर्ख, दुर्बल,
कुण्ठित (वि०)–पूर्ववत्।
कुण्ड (अस्त्री०)–पात्रविशेष, पृथ्वी में जल इकट्ठा करने का गर्त, होमकरणार्थ वेदी।
कुण्डल (अस्त्री०)–कानों की बाली, बेड़ी, वृत्ताकार वस्तु।
कुण्डलिनी(स्त्री०)–सर्पिणी, मोरनी, वृत्ताकारचित्र, गोल वस्तु वाममार्गियों की शक्ति नामक देवी।
कुण्डली (पु०)–घेरा डालने वाला सर्प, वृत्ताकार चित्र, मोर, सर्प, शिव। स्त्री०–कूंडी, गोल सूराख।
कुतप (पु०)–अग्नि, सूर्य, अतिथि, देवता, भाञ्जा, ब्राह्मण, द्विजन्मा, आठवा मुहूर्त।
कुतर्क (पु०)–तर्काभास, बुरी तर्कना, गलत मन्तक।
कुतस् [कुत] (अ०)–कहां से, कहां, कैसे, क्योंकर, किस प्रकार।
कुतुक (न०)–इच्छा, कौतूहल, शौक, चित्त का झुकाव।
कुतू (स्त्री०)–चमड़े का एक छोटा सा कुप्पा [कुतुप भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।
कुतूहल (न०)–इच्छा, आतुरता, शौक, खुशी, दिलबहलाव, कौतुक। वि० अच्छा, आश्चर्यमय, कीर्तित।
कुतूहलाक्रान्त (वि०)–शौक से भरा हुआ, तीव्रैषणा से आतुर, अचम्भे में पड़ा हुआ। [क्यों।
कुत्र (अ०)–कहां, किस स्थान में,
कुत्स् (१०आ०)–निन्दा करना, बुरा भला कहना, धिक्कारना।
कुत्सना–कुत्सा (स्त्री०)–पूर्ववत्।
कुत्सित(वि०)–गर्हित, निंदित, नीच।
कुथ (पु०)–कालीन, कुशानामक घास
कुद्दार द्दाल(पु०)–कचनाल का पेड़, कसला, मिट्टी खोदने का यन्त्रविशेष।
कुदिन (न०)–बुरा दिन, ऐसा दिन जो मेघों से आच्छादित हो, दुर्दिन
कुध्र (पु०)–पहाड़, पर्वत।
कुनक (पु०)–कौवा, काक।
कुनख (पु०)–नखसम्बन्धी रोगविशेष
कुनालिका (स्त्री०)–कोयल, कोकिल
कुन्त (पु०)–कीड़ा, धान्यविशेष, बर्छी, भाला, मनोविकार।
कुन्तल (पु०)–हल, जौ, केशगुच्छ, बालों के पट्टे।
कुन्ती (स्त्री०)–कुन्तिभोज की गोद ली हुई कन्या पृथा नाम्नी जिस का विवाह पाण्डु के साथ हुआ

था और जिसके युधिष्ठिर, भीमसेन और अर्जुन तीन औरस पुत्र थे।

कुन्द (पु०)–विष्णु का वाचक, कमल, ९ की संख्या, कुन्दरु वृक्ष। न०–कुन्दरुवृक्ष का फूल।

कुन्दु (पु०)–चूहा, मूषकी।

कुप् (४ प०)–कोप करना, क्रोधित होना, बढ़ना। [सिद्धान्त।

कुपथ(पु०)–कुमार्ग, बुरारास्ता, अनार्य

कुपथ्य (पु०)–हानिकर खाद्य वस्तु।

कुपाणि (वि०)–बुरे हाथ वाला।

कुपिनी [न्] (पु०)–धधिक, मछेरा।

कुविन्द (पु०)–जुलाहा, तन्तुवाय।

कुपुत्र (पु०)–बुरा या कूपुत्र।

कुपूय (वि०)–नीच, कमीना, गर्हित।

कुप्रिय (वि०)–जो प्यारा न हो।

कुप्य (न०)–स्वर्ण और चांदी को छोड़ कर अन्य धातु।

कुबेर (पु०)–धनसम्पत्ति का अध्यक्ष देवता जो उत्तरदिशा का अधिपति है।

कुबेरदिक् [श्] (स्त्री०)–उत्तरदिशा।

कुब्ज (वि०)–कुबड़ा। पु०–कमर का कूब, टेढ़ी तलवार। [वन।

कुब्र (न०)–छकड़ा, तागा, थाली,

कुभृत(पु०)–राजा, पर्वत।

कुमन्त्र(पु०)–बुरी सलाह।

कुमार(पु०)-पांच वर्ष तक का बालक, राजपुत्र, कार्तिकेय, युवक, पुत्र, तोता।

कुमारक(पु०)–युवक, आंख का तारा।

कुमारभृत्या(स्त्री०)–धात्रीकर्म, बच्चों का पालनपोषण।

कुमारिका (स्त्री०)– दश वर्ष से बारह वर्ष तक की कन्या, अविवाहित कन्या, सीता, दुर्गा, बड़ी इलायची, भारतवर्ष के दक्षिण में रास कुमारी।

कुमारी(स्त्री०)–पूर्ववत्।

कुमुद् (न०)–सफेद कमल, रक्तपद्म।

कुमुद(न०)–चांदी। पु०–विष्णु, कापूर, दक्षिणदिशा का स्वामी। स्त्री०–रक्तपद्म, श्वेतकमल।

कुमुदनाथ-पति(पु०)–चन्द्र, चन्द्रमा।

कुमुदवती(स्त्री०)–कमललता।

कुमुदिका(स्त्री०)–कट्फला नाम का पौदा। [पद्मस्थली।

कुमुदिनी(स्त्री०)–कमलभेद, पद्मसमूह,

कुमुदिनीपति(पु०)–चन्द्रमा, चांद।

कुमुदीश(पु०)–पूर्ववत्।

कुम्भ(पु०)–घट, घड़ा, २२ द्रोण का परिमाण। हृद्रोगविशेष। न०–गुग्गुल नामक सुगन्ध द्रव्य।

कुम्भकर्ण(पु०)-रावण के छोटे भाई का नाम।

कुम्भकार (पु०)–सर्प, सांप, कुम्हार, घड़े या मिट्टी के बर्तन बनाने वाला।

कुम्भकारिका-कारी(स्त्री०)–कुम्हारी, कुम्हार की स्त्री।

कुम्भज (पु०) द्रोण तथा अगस्त्य ऋषि का वाचक, वशिष्ठ मुनि का बोधक [कुम्भ के पश्चात्, 'जन्म, योनि और सम्भव' शब्द के जोड़ देने से भी यही अर्थ होता है]।

कुम्भदासी(स्त्री०)–दूती, कुटनी।
कुम्भशाला(स्त्री०)–कुम्हार का घर, कुम्हार का कारखाना।
कुम्भिका(स्त्री०)-घड़िया, छोटा घड़ा, वेश्या, चक्षूरोग। [चोर।
कुम्भिल(पु०)–साला, सेंध लगाने वाला
कुम्भी[न्] (पु०)–हाथी, मछली, गुग्गुल नामक सुगन्ध द्रव्य, जलजन्तुविशेष। [नाग।
कुम्भीपाक(पु०)–एक घोर नरक का
कुम्भीक(पु०)–पुन्नाग वृक्ष।
कुम्भीर(पु०)-मगर, नाका, जलजन्तु।
कुम्भीरक(पु०)–चोर। [करना।
कुर्(६ प०)–आवाज करना, शब्द
कुरकर(पु०)–सारस पक्षी।
कुरग(पु०)–हरिण, मृगभेद।
कुरगनेत्रा(स्त्री०)–मृगनयनी, हरिण के सी आंखों वाली स्त्री।
कुरङ्गनाभि (पु०)-मुश्क, केशर।
कुरट (पु०)–चमार, मोची, जूता बनाने वाला।
कुरण्ड (पु०)–अण्डकोशवृद्धि।
कुरर (पु०) कुंज पक्षी, कुर्र।
कुरस (पु०)–बुरा रस, मद्यभेद। वि०–बुरे रस वाला।
कुरु(पु०)–पुरोहित, भात, उबले हुए चावल, दिल्ली के आसपास के प्रदेश का प्राचीन नाम, चन्द्रवंश के एक राजा का नाम।
कुरुक्षेत्र(न०) –एक विस्तीर्ण मैदान जो आज कल थानेश्वर के नाम से विदित है और जहां पर महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध घटित हुआ था।
कुरुटी[न्] (पु०)–घोड़ा, अश्व।
कुरुण्टी (स्त्री०)–काष्ठनिर्मित कठपुतली।
कुरुराज(पु०)–दुर्योधन का वाचक।
कुरुल(पु०)–केशगुच्छ, जुल्फ।
कुरुवक(पु०)–रक्तझिण्ट, पुष्पवृक्ष-विशेष।
कुरुविन्द(पु०)–लाख। न०-कालानमक, दर्पण, लाख, रत्न। [माप।
कुरुविस्त(पु०)–चार तोले सोने की
कुरुवृद्ध (पु०)–भीष्मपितामह का वाचक। [शकल।
कुरूपता (स्त्री०)–बदशकली, बेढंगी
कुरूप्य(न०)–रांग नामक धातु।
कुर्कुट(पु०)–मुर्गा, कुक्कुट।
कुर्कुर(पु०)–कुत्ता, श्वान, कुक्कुर।
कुर्पर(पु०)–जानु, घुटना।
कुर्वन्(पु०)–नौकर, मोची।
कुल्(१ प०)–इकट्ठा करना, बढ़े जाना, गिनना।
कुल(न०)–वंश, जाति, घर, कुलीन वंश, समूह, गिरोह, शरीर आगे का भाग, बिरादरी, क़ौम।
कुलक(पु०) कुलीन, वमी, वल्मीक, वंश या समूह का सरदार। न०–समूह, गिरोह।
कुलकलङ्क(पु०)–जो अपने वंश के लिये कलंक या धब्बे के समान हो।
कुलक्षय(पु०)–वंश का नाश।

कुलगुरु(पु०)–गोत्रकर्त्ता वंशकर्त्ता, किसी वंश का धर्मगुरु वा शिक्षक।
कुलजात(वि०)–कुलीन, अच्छे वंश का, पैतृक। [पुत्र।
कुलट(पु०)–दत्तक पुत्र, औरसभिन्न
कुलटा (स्त्री०)–असती स्त्री, कर्कशा नारी।
कुलत (अ०)–खान्दान के लिहाज से।
कुलदेवता(स्त्री०)-वंश का रक्षक देव वा देवता।
कुलधर्म(पु०)–वंश का विशेषधर्म या कुलपरम्परासे प्राप्त रीतिरिवाज।
कुलधारक (पु०) पुत्र, आगे को वंश चलाने वाला।
कुलनारी(स्त्री०)–शरीफ औरत।
कुलन्धर(वि०)=कुलधारक।
कुलपति (पु०)–वंश का सरदार वा मुख्य पुरुष, ऐसे गुरुकुल का अधिष्ठाता जिस में १०००० ब्रह्म-चारी शिक्षा पाते हों।
कुलपुरुष (पु०)–कुलीन मनुष्य, श-रीफ आदमी, बजुर्ग।
कुलभर (पु०)–चोर, चौर।
कुलमर्यादा (स्त्री०)–वंश की मर्यादा या इज्जत।
कुलवधू (स्त्री०) शरीफजादी, कुलीन स्त्री। कुलयोषित् का भी यही अर्थ है।
कुलवान्(पु०) कुलीन, शरीफ, खान्दानी
कुलाङ्गना (स्त्री०)-सती और शुद्धा-चारिणी स्त्री, कुलीन नारी।
कुलाङ्गार (पु०)-वंशनाशक मनुष्य।
कुलाधार (पु०)–कुलधर्म।
कुलाभिमान (पु०)–वंशीयता का दर्प, कुलीनता का भाव। [गार।
कुलायि (पु०)–खजाना, निधि, धना-
कुलाय (अस्त्री०)–घोंसला, शरीर, देह।
कुलायिका (स्त्री०) पिंजड़ा। [कार।
कुलाल (पु०)–कुम्हार, उल्लू, कुम्भ-
कुलाहक (पु०)–छिपकली।
कुलि (पु०) हाथ, हस्त।
कुलिक (पु०)–रिश्तेदार, वंश का मुखिया। वि०–कुलीन, अच्छे वंश का।
कुलिंग (पु०) चटक पक्षी, पक्षीमात्र, मूषकभेद।
कुलिन्दा (पु० बहु०) देशविशेष और उसके निवासी।
कुलिश (अस्त्री०)–इन्द्रवज्र, वज्र।
कुली [न्] (न०)–पर्वत, पहाड़।
कुलीन (वि०)–अच्छे वंश का, खा-न्दानी, शरीफ। पु०–अच्छी नस्ल का घोड़ा।
कुलीनस (न०)–जल, पानी।
कुलीश (अस्त्री०)=कुलिश।
कुल्मल (न०) पाप, गुनाह।
कुल्य (वि०)–कुलीन।
कुल्या (स्त्री०)–नाली, नहर, रज वाहा, नेक औरत।
कुव (न०)–फूल, कमल।
कुवल (न०)–मोती, जल, बघेरा, नीला कमल।
कुवाद(वि०)–कमीना, नीच, निन्दक।

कुवाहुल (पु०)-ऊंट, उष्ट्र।
कुविन्द(पु०)-जुलाहा।
कुवेल(न०)-कमल, पद्म।
कुश(पु०)-कुशा नाम की घास, श्री रामचन्द्र का ज्येष्ठ पुत्र। वि०-पागल, क्रूर, कृश। [भाई।
कुशध्वज(पु०)-राजा जनक का छोटा
कुशपुष्प(न०)-ग्रन्थिपर्णनामक वृक्ष।
कुशल(न०)-कल्याण, शुभ, नेकी। पु०-शिव का वाचक। वि०-सुखी, कार्यपटु; चतुर, योग्य, उचित, शुभ।
कुशलप्रश्न(पु०)-मित्रसमागम के समय परस्पर राजीखुशी पूछना।
कुशस्थली(स्त्री०)-द्वारकानामक नगर
कुशा(स्त्री०)-लगाम, रस्सी।
कुशाग्रीय(वि०)-तीव्र,तेज धारा वाला
कुशावती(स्त्री०)-रामपुत्र कुश की राजधानी।
कुशासन (न०)-कुशा नामक घासकी बनी हुई चटाई, अराजकता।
कुशिक (पु०)-विश्वामित्र के पितामह का नाम, बहेड़ा।
कुशीद (न०)-सूदखोरी, ब्याज।
कुशीलव (पु०-चारण, नट, वाल्मीकि का वाचक, कथक।
कुशुम्भ (पु०)-संन्यासी का कमण्डलु।
कुशूल (पु०)-कोठार, अनाज की खत्ती, तुषाग्नि।
कुष् (९ प०)-फाड़ना, खींचना, चमकना, परखना।
कुषल(वि०)-चालाक, चतुर, दक्ष।
कुषाकु(पु०)-वानर, सूर्य, अग्नि,शरीर वि०-कमीना, त्याज्य।
कुषीद(न०)=कुसीद। [रोग।
कुष्ठ(अस्त्री०)-विषभेद, कोढ़ नामक
कुष्ठारि(पु०)-गन्धक, पटोल।
कुष्ठी[न्] (वि०)-कुष्ठरोग से पीड़ित।
कुष्माण्ड(पु०)-लताभेद, कुम्हड़ानामक वृक्ष, सफ़ेद पेठा।
कुस् (४प०)-घेरना,आलिंगन करना।
कुसीद(न०)-ब्याज पर दी हुई वस्तु, साहूकारा, लेनदेन। पु०-साहूकार, बैंकर। [करने वाला।
कुसीदिक (पु०)-साहूकार, लेनदेन
कुसुम (न०)-फूल, फल। स्त्रीरज, चक्षूरोगविशेष,फूला नामक रोग।
कुसुमधन्वा(पु०)-कामदेव का वाचक।
कुसुमपुर (न०)-पाटलीपुत्र नाम नगर, पटना।
कुसुमशयन(न०)-फूलों की सेज।
कुसुमाकर(पु०)-वसन्त ऋतु।
कुसुमाञ्जलि (पु०)-फूलों की भेंट।
कुसुमाल(पु०)-चोर। [शहद।
कुसुमासव(न०)-फूल का मद्य अर्थात्
कुसुमास्त्र(पु०)--कामदेव का वाचक।
कुसुमोच्चय(पु०)--फूलों की माला, गुच्छा।
कुसुम्भ(अस्त्री०)-ज़ाफ़रान, केशर। न०-स्वर्ण, कमण्डलु, कुसुम्भा नामक वृक्ष।
कुसूल(पु०)-खत्ती, कोठार, अनाज इकट्ठा करने का घर।
कुसृति(स्त्री०)-धोखा, फरेब, शठता।
कुस्तुभ(पु०)-समुद्र, सागर, विष्णु।
कुह् (१० आ०)-धोखा देना, ठगना, विस्मित करना।

कुह(अ०)-कुत्र, कहा, किस स्थान पर पु०-कुबेर, ठग, शठ।

कुहक(पु०)-बाजीगर, ठग, बदमाश। न०-धोखा, ठगी, छल।

कुहकस्वर(पु०)-मुर्गा, कुक्कुट।

कुहका(स्त्री०)-जादूगरी, इन्द्रजाल, माया, कपट।

कुहन(पु०)-सर्प, मूषक। वि०-हासिद। धोखेबाज। न०-कच का बर्तन।

कुहना(स्त्री०)-कपटजाल, धूर्तता, वक्रवृत्ति, दम्भ।

कुहनिका(स्त्री०)-पूर्ववत्। [गला।

कुहर(न०)-सूराख, कान, गर्त, गुफा,

कुहु(स्त्री०)-अमावस्या जिस में चन्द्रमा दिखलाई न दे, कोयल की कूक।

कुहूकण्ठ(पु०)-कोयल, कोकिल।

कुहुरव-शब्द(पु०)-कोयल, कोकिल।

कू(१, ६ आ०)-आह भरना, आवाज करना, शोर मचाना।

कूकुद(पु०)-वस्त्राभूषण से अलंकृत कन्या को देने वाला।

कूच(पु०)=कुच।

कूचिका(स्त्री०)-कुंजी, बालों का बना हुआ कलम, गुच्छ, कूची। [कुची शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।

कूज(१ प०) गूंजना, भिनभिनाना, गुंजार डालना। [भिनभिनाहट।

कूजन-जित(न०)-गुंजार; झंकार,

कूट(१० उ०)-सलाह देना, दुखित होना, पुकारना।

कूट(पु०)-घर, अगस्त्य मुनि। अस्त्री०-कपट, छल, माया, झूठ, शिखर, सींग; ढेर; हथौड़ा; नगरद्वार। वि०-झूठा, कुटिल; गर्हित।

कूटकार(पु०)-झूठा गवाह; बदमाश।

कूटकृत(पु०)-कायस्थ; शिव। वि०-धोखेबाज, धूर्त।

कूटछद्म(पु०)-ठग, कपटी। [आवा।

कूटपालक(पु०)-कुम्हार, कुम्हार का

कूटयुद्ध(न०)-छलयुक्त लड़ाई।

कूटसाक्षी(पु०)-झूठा गवाह।

कूटस्थ(पु०)-ब्रह्म। वि०-एकरस, शिर.स्थित। [खेलने का स्थान।

कूटागार(न०)-द्यूतघर, अटारी,

कूण(१० उ०)-बोलना, बातें करना।

कूणिका(स्त्री०)-पशु का सींग, बाजे की खूंटी।

कूदी(स्त्री०)-पैर की बेड़ी।

कूप(१०उ०)-कमजोर होना या करना।

कूप(पु०)-कुआं, गर्त्त, तेल भरने की कुप्पी, मस्तूल। [नौका, कुइया।

कूपक(पु०)-गर्त्त, गुफा, जघनकूप, चिता,

कूपार(पु०)-समुद्र, सागर। [छोलठ।

कूपी(स्त्री०)-छोटा कुआं, कुइया,

कूबर(पु०)-कुबड़ा आदमी, रथ का गुम्मट।

कूबरी[न्] (पु०)-गाड़ी, रथ।

कूम(न०)-तालाब, जोहड़, तलैया।

कूर(अस्त्री०)-पके हुए चावल, भात, भोजन।

कूर्द(अस्त्री०)-मोर का पंख, कुशा की

मुट्ठी, डाढ़ी, मंडल, दम्भ, शेख़ी, छल।
कूर्चशीर्ष(पु०)—नारियल, नारिकेल।
कूर्चशेखर(पु०)—पूर्ववत्।
कूर्द् (१ उ०)—कूदना, उछलना।
कूर्दनी(स्त्री०)-चैत्र की पूर्णिमा के दिन कामदेव की प्रतिष्ठा में जो उत्सव किया जाता है।
कूर्पर(पु०)—घुटना, जानु, कोहनी।
कूर्म (पु०)—कछुआ, कच्छप, देहस्थ एक वायु।
कूर्माचल(पु०)—पर्वतविशेष।
कूर्मावतार(पु०)—पुराणों के अनुसार विष्णु का दूसरा अवतार जो कच्छपयोनि में हुआ था।
कूल्(१ प०)—छिपाना, ढकना, रोकना, घेरना।
कूल (न०)—किनारा, तट, तालाब, ढालू। [वल्मीक।
कूलक (अस्त्री०)—पूर्ववत्। पु०—वमी,
कूलंकष(पु०)—जलधारा, समुद्र, सागर। वि०—किनारों को तोड़ने वाला, उद्वेल।
कूलंकषा (स्त्री०)—नदी, दरिया।
कूलभू (स्त्री०)—किनारे की भूमि।
कूलवती (स्त्री०)—नदी, दरिया।
कूलहण्डक (पु०)—भवर, आवर्त्त।
कूवार=कूपार।
कूहा (स्त्री०)—कोहरा, पाला।
कूहू (स्त्री०)=कुहु।
कृ (८ उ०)—करना, बनाना, पढ़ना, उत्पन्न करना, लिखना। (५उ०)—मारना, वध करना।
कृक (पु०)—गला, ग्रीवा।
कृकला (स्त्री०)—पिप्पली।
कृकलाश [स] (पु०)—छिपकली।
कृकवाकु (पु०)—कुक्कुट, मोर।
कृकाटक (न०)—ग्रीवा, गर्दन।
कृच्छ्र (अस्त्री०)—मुश्किल, आपत्ति, ख़तरा, दुःख, कष्ट, शरीरकष्ट, प्राजापत्यव्रत। न०—पाप। वि०—कष्टदायक, आपदापन्न, शठ।
कृच्छ्रसाध्य (वि०)—कष्टसाध्य, कठिनता से सिद्ध होने वाला।
कृत (१, ६ प०)—काटना, काट कर अलग करना, टुकड़े २ करना। वि०—पूरा करने वाला, सम्पादक, कर्त्ता, बनाने वाला, [इन अर्थों में यह समास के अन्त में प्रयुक्त होता है]।
कृत (वि०)—किया हुआ, सम्पादित, बनाया हुआ। न०—काम, सेवा, लाभ, उद्देश। [इच्छा पूर्ण होगई
कृतकाम(वि०)—ऐसा मनुष्य जिस की
कृतकार्य(वि०)-कामयाब, सफलमनोरथ,
कृतकृत्य(वि०)—कृतार्थ, विद्वान्।
कृतक्षण (वि०)—जिसे अवकाश मिल गया हो, लब्धावसर।
कृतघ्न (वि०)—किये हुए को नाश करने वाला, उपकार को न मानने वाला।
कृतज्ञ (वि०)—किये उपकार को जानने वाला, अहसानमन्द। पु०—कुत्ता, शिव।
कृतधी (वि०)—धीमान्, शिक्षित।

कृतनिश्चय (वि०)–पक्के इरादे का, यक़ीनी।

कृतपूर्व (वि०)–पहिले किया हुआ।

कृतप्रतिज्ञ (वि०)–जिस ने प्रतिज्ञा की हो, प्रण में बधा हुआ।

कृतम् (अ०)–बस करो, अलम्, पर्याप्त, निषेध। [निश्चय वाला।

कृतबुद्धि (वि०) शिक्षित, अक़्लमन्द, दृढ़

कृतमति (वि०)–दृढ़ निश्चय वाला, पक्के इरादे का। [लक्षित।

कृतलक्षण (वि०)–चिन्हित, अङ्कित,

कृतवर्मा (पु०)–महाभारत के एक प्रसिद्ध योद्धा का नाम जो कौरवों की ओर से लड़ा था और युद्ध के पश्चात बच रहा था। [योग्यता।

कृतविद्य (वि०)–शिक्षित, तालीम

कृतवीर्य (वि०)–पराक्रमशाली, शक्ति सम्पन्न। पु०–सहस्रार्जुन के पिता का नाम।

कृतवेष (वि०)–अलंकृत, सुसज्जित।

कृतशोभ (वि०)–शानदार, ख़ूबसूरत।

कृतशौच (वि०)–पवित्र, शुद्धतायुक्त।

कृतश्रम (वि०)–कृतविद्य, उत्साहयुक्त, जिसने मेहनत की हो।

कृतसङ्कल्प (वि०)–विकल्परहित, सङ्कल्पयुक्त, दृढ़ निश्चय वाला।

कृतहस्त (वि०)–हाथ का कुशल, चतुर

कृतहस्तता (स्त्री०)–चतुराई, कौशल।

कृताकृत (वि०)–कुछ किया हुआ और कुछ न किया हुआ, अधूरा किया हुआ। [हुआ।

कृताङ्क (वि०)–अङ्कित, चिन्हित, गिना

कृताञ्जलि (वि०)–हाथ जोड़े हुए। पु०–छुईमुई का वृक्ष। [चित्त।

कृतात्मा (वि०)–शुद्धान्त करण, स्वस्थ-

कृतान्त (पु०)–यम, प्रारब्ध, निश्चय, सिद्धान्त, शनैश्चर।

कृतान्न (न०)–पका हुआ अन्न।

कृतापराध (वि०)–मुजरिम, दोषी।

कृताभ्यास (वि०)–अभ्यास किया हुआ

कृतार्थ (वि०) कृतकार्य, कामयाब।

कृतास्त्र (वि०)–जिसने फ़ौजी तालीम पाई हो, अस्त्रविद्या को सीखा हुआ।

कृति (स्त्री०)–करना, बनाना, सम्पादन कार्य, सामर्थ्य, माया, छुरी, जादू।

कृतिकर (पु०)–रावण का बोधक।

कृती [न्] (वि०)–सन्तुष्ट कामयाब खुश कार्य को जिसने पूरा कर लिया है।

कृते (अ०)–वास्ते, लिये, सबब।

कृतेन (अ०)–पूर्ववत्।

कृत्त (वि०)–इच्छित, फटा हुआ, विभक्त।

कृत्ति (स्त्री०)–चमड़ा, त्वचा, मृगछाला भोजपत्र, घर।

कृत्तिका (स्त्री०)–तीसरा नक्षत्र।

कृत्नु (पु०)–कारीगर दस्तकार।

कृत्य (न०)–कर्तव्य काम कार्य, ड्यूटी, फ़र्ज़। वि०–करने योग्य, उचित ठीक, मुनासिब। [विद्या।

कृत्यका (स्त्री०)–जादूगरनी, माया-

कृत्या (स्त्री०)–कार्य, काम, जादू

जादूगरों की उपास्यदेवी।
कृत्रिम (वि०)–बनावटी, मुतबन्ना। न०–सुगन्धिभेद, लवणविशेष।
कृत्रिमपुत्र (पु०)–गोद लिया हुआ पुत्र, १२ प्रकार के पुत्रों में से एक।
कृत्रिमपुत्रक (पु०)–गुड़िया, कठपुतली
कृत्रिमभवन (न०)–बाग़, वाटिका।
कृत्स्न (न०)–जल, समूह। पु०–पाप, अपराध, गुनाह।
कृत्स्न (न०)–जल, कोख, पेट, पानी। वि०–सम्पूर्ण, सारा, तमाम।
कृन्तन (न०)–काटना, अलग करना।
कृप् (१०प०)–रहम करना, दया दिखलाना, दुःख प्रकाश करना। (१ आ०)–रहम खाना, दयालु होना।
कृप (पु०)–द्रोणाचार्य का साला और अश्वत्थामा का मामा।
कृपण (वि०)–कजूस, मक्खीचूस, ग़रीब, सूम, अदाता, मूर्ख। न०–कमबख़्ती, हतभाग्यता। पु०–कीड़ा, कंजूस।
कृपणधी (वि०)–नीचमना, संगदिल।
कृपा (स्त्री०)–दया, नम्रता, सहृदयता।
कृपाण (पु०)–छुरी, तलवार।
कृपाणकः–णिका=कृपाण।
कृपाणी (स्त्री०)–ख़ञ्जर, क़ैंची।
कृपादृष्टि (स्त्री०)–दयायुक्त दृष्टि, मेहरबानी, नजरे इनायत। [दय।
कृपान्वित (वि०)–दयार्द्रचित्त, सहृ-
कृपालु (वि०)–कृपान्वित।
कृपापूर्वकम्(अ०)–दया करके, बराय मेहरबानी।
कृपी (स्त्री०)–कृपाचार्य की बहन और द्रोण की पत्नी।
कृपीट (न०)–जल, पेट, जगल, ईंधन।
कृपीटयोनि (पु०)–अग्नि, आग।
कृपीसुत (पु०)–अश्वत्थामा।
कृमि (पु०)–कीड़ा, मकड़ी, लाख, गधा, पेट के कीड़े, चींटी।
कृमिक (पु०)–छोटा कीड़ा, कीड़ी।
कृमिकण्टक (न०)–विडंग, उदुम्बर, चित्राङ्ग नामक वृक्ष।
कृमिकोशोत्थ (न०)–रेशम, रेशमी कपड़ा, कौषेय।
कृमिघ्न (पु०)–वायविडंग, हलदी।
कृमिघ्नी (स्त्री०)–हलदी।
कृमिण (वि०)–कीड़ों वाला।
कृमिपर्वत (पु०)–वमी, वल्मीक।
कृश् (४ प०)–कमज़ोर होना, अस्त होना।
कृश (वि०)–पतला, दुबला, कमज़ोर, छोटा, ग़रीब।
कृशर (पु०)–खिचड़ी।
कृशाक्ष (पु०)–मकड़ी।
कृशाङ्ग (वि०)–दुबला, पतला।
कृशानु (पु०)–अग्नि।
कृष् (६ उ०)–खींचना, हल जोतना, फाड़ना, ग़ालिब आना।
कृषक (पु०)–किसान, खेतीहर, बैल। वि०–खींचने वाला, हल जोतने वाला।
कृषाण (पु०)–किसान, खेतीहर, काश्तकार
कृषि (स्त्री०)–खेती, काश्तकारी।

कृषिक (पु०)—कृपाण।
कृषिकर्म (न०)—खेती का व्यवसाय।
कृषिजीवी (वि०)—खेती के सहारे रहने वाला, काश्तकार।
कृषीवल (पु०)—कृषिजीवी।
कृष्कर (पु०)—शिव का वाचक।
कृष्ट (वि०)—हल जुता हुआ, खिंचा हुआ।
कृष्टफल (न०)—खेती की पैदावार।
कृष्टि (स्त्री०)—खींचना, ज़मीन जोतना।
कृष्टोप्त (वि०)—जोतकर बोया हुआ।
कृष्ण (पु०)—काला रंग, काला हरिण, कौवा, कोयल, चन्द्रमास का प्रथम पक्ष, कलियुग, देवकीनन्दन, वासुदेव जो भागवत के अनुसार विष्णु का ८ वां अवतार माना गया है, व्यास, अर्जुन, काली मिर्च, लोहा।
कृष्ण (वि०)—काला, धुंधियाला, काला और नीला, क्रूर, बुरा। न० स्याही, अन्धकार आंख की पुतली, शीशा, सुर्मा, काली मिर्च, लोहा।
कृष्णक (न०)—काले हरिण का चमड़ा।
कृष्णकर्म (वि०)—अपराधी, मुलज़िम।
कृष्णकाय (पु०)—भैंसा, महिष।
कृष्णगति (स्त्री०)—अग्नि।
कृष्णग्रीव (पु०)—शिव का वाचक।
कृष्णचन्द्र (पु०)—यदुवंशी वसुदेव के पुत्र।
कृष्णधन (पु०)—बुरे साधनों से प्राप्त किया हुआ धन।
कृष्णद्वैपायन (पु०)—व्यास का नाम।
कृष्णपक्ष (पु०)—अर्जुन, चन्द्रमास का पूर्वभाग।
कृष्णमृग (पु०)—काला हरिण।
कृष्णमुख-वदन (पु०)—काले मुख का बन्दर अर्थात लंगूर।
कृष्णयजुर्वेद (पु०)—यजुर्वेद की तैत्तिरीयशाखा।
कृष्णयाम (पु०)—अग्नि का वाचक।
कृष्णरक्त (पु०)—गहिरा लाल रंग।
कृष्णवर्ण (पु०)—काला रंग।
कृष्णशृङ्ग (पु०)—भैंसा, महिष।
कृष्णसख (पु०)—अर्जुन।
कृष्णसारथि (पु०)—अर्जुन।
कृष्णिका (स्त्री०)—राई।
कॄ (६ प०)—बखेरना; विकीर्ण करना; इधर उधर फेंकना।
कॄत (१०उ०)—कीर्तन करना, दोहराना।
केकय (पु०)—एक देशविशेष तथा वह के निवासियों का नाम।
केकयी (स्त्री०)—राजा दशरथ की एक रानी।
केकर (वि०)—नीची ऊंची आंखों वाला पुरुष, टेरने वाला।
केका (स्त्री०)—मयूरवाणी।
केकावल-केकिक (पु०)—मयूर, मोर।
केकी[न्] (पु०)—मोर, मयूर। [मेर्जी।
केत (पु०)—घर, निवासस्थान, निमन्त्रण,
केतक (पु०)—केवड़े का वृक्ष, केतकी, ध्वजा।
केतन (न०)—ध्वजा, स्थान, जगह, झंडा, घर, चिन्ह, अनिवार्य कार्य।
केतित (वि०)—निमन्त्रित।
केतु (पु०)—झंडी, सरदार, धूमकेतु, चिन्ह, रोग, शत्रु।

केतुग्रह(पु०)–नवग्रहों में से एक।
केतुम(पु०)–बादल, मेघ।
केद्र(वि०)=केकर।
केदार(पु०)–चरागाह,आलवाल,पर्वत, शिव का एक रूप, हिमालय का भाग केदारपर्वत। [गाल।
केनार(पु०)–खोपड़ी, नरकविशेष,
केनिपात(पु०)–अरित्र, पतवार।
केन्द्र(न०)–मर्कज, दम्यानी नुक्ता।
केयूर(अस्त्री०)--बाजू नामक आभरण
केरल(पु०)–मालाबारप्रदेश। [वाला।
केलक(पु०)--नाचने वाला, नृत्य करने
केलि (अस्त्री०)–मखौल, परिहास, क्रीडा। स्त्री०–पृथिवी।
केलिक (पु०)–अशोकवृक्ष।
केलिनागर (पु०)–कामी पुरुष।
केलिरग (पु०)–क्रीडास्थल।
केलिशयन (न०)–आरामकुर्सी।
केली (स्त्री०)=केलि।
केव् (१ आ०)–सेवा करना।
केवल (वि०)–एक, अकेला, सम्पूर्ण, साफ, शुद्ध, एक ही।
केवलम् (अ०)–सिर्फ़, महज़, बिलकुल
केश (पु०)–बाल, शेर वा घोड़े की अयाल, किरण, वरुण और विष्णु का वाचक।
केशकर्म (न०)–हजामत बनवाना, बाल साफ करना।
केशकीट (पु०)–जू।
केशच्छिद् (पु०)–हज्जाम, नाई।
केशट (पु०)–खटमल, जूं,भाई, वन्धु, विष्णु का वाचक, शोषण नामक कामदेव का एक बाण,अज।
केशप्रसाधनी (स्त्री०)– बाल साफ करने की कघी, कंघा।
केशमार्जक–मार्जन (न०)–पूर्ववत्।
केशरचना (स्त्री०)–बाल बनाना,बाल सुधारना।
केशव (पु०)–कृष्ण का वाचक, विष्णु। वि०–अच्छे बालों वाला।
केशिक (वि०)–अच्छे बालों वाला।
केशिका (स्त्री०)–शतावरी वृक्ष।
केशी [न्] (वि०)–अच्छे बालोंवाला। (पु०)–विष्णु, शेर, सिंह, एक दैत्य का नाम।
केस[श]र(अस्त्री०)--अयाल;मौलसिरी पुन्नाग वृक्ष; जाफ़रान; कुंकुम।
केसरि(पु०)--हनूमान् के पिता का नाम।
केस[श] री[न०] (पु०)–शेर; सिंह; घोड़ा; अश्व, पुन्नाग वृक्ष; हनूमान् के पिता का नाम।
केसरिसुत(पु०)–हनूमान् का वाचक।
कै(१ पु०)--शब्द करना।
कैकेय(पु०)-केकयों का राजा वा अधिपति।
कैकेयी(स्त्री०)--राजा दशरथ की सब से छोटी स्त्री जो भरत की माता थी।
कैटभ(पु०)–एक राक्षस का नाम।
कैटभारि(पु०)–विष्णु।
कैतव(न०)–छल, जूआ, झूठ; कपट। पु०--जुआरी; धतूरे का पेड़।

कैतवक(न०)—द्यूतक्रीडा।
कैरव(पु०)--जुआरी; शत्रु; श्वेतकमल।
कैरवी(स्त्री०)—चन्द्रिका, ज्योत्स्ना।
कैरवी[न्] (पु०)--चन्द्रमा।
केलि (न०)--क्रीडा; खेलकूद।
कैलाश(पु०)—हिमालय की एक चोटी का नाम, जहां पर शिव और कुवेर निवास करते हैं।
कैलासनाथ(पु०)--शिव; कुवेर।
कैलासपति(पु०)--शिव; महादेव; शंकर।
कैवर्त(पु०)—मछेरा; धीवर, मल्लाह।
कैवर्तक(पु०)—पूर्ववत्।
कैवल्य(न०)—छूट जाना, अलग होना, शुद्ध होना, मुक्ति, निर्वाण।
कैशिक(पु०)--कामेच्छा।
कैशोर(न०)--पन्द्रह वर्ष से पूर्व की अवस्था।
कैश्य(न०)—बालों का समूह।
कोक (पु०)—भेड़िया, चकवा, कोयल, मेंढक, विष्णु, खजूर का पेड़।
कोकदेव(पु०)--कपोत, कबूतर।
कोकनद(न०)--लाल कमल, रक्तपद्म।
कोकिल(पु०)--कोयल, अंगार।
कोकिला(स्त्री०) पूर्ववत्।
कोकिलावास(पु०)--आम का वृक्ष।
कोंकण(पु० बहु०)—महाराष्ट्र देश का एक भाग। [का नाम।
कोंकणा(स्त्री०)--जमदग्नि की स्त्री
कोच(पु०)--जातिभेद, मुकुन्द।
कोजागर(पु०)—आश्विन मास की पूर्णिमा के दिन का उत्सव।
कोट(पु०)--क़िला, दुर्ग, कुटिलता, दाढ़ी। [कुटिया।
कोटर(अस्त्री०)—वृक्ष की खोखल,
कोटरी(स्त्री०)--दुर्गा, नंगी स्त्री।
कोटवी(स्त्री०)—पूर्ववत्।
कोटि-टी(स्त्री०)—कक्षा, दर्जा, हथियार की धार या सिरा, एक करोड़।
कोटिर(पु०)--तपस्वियों और साधुओं के मस्तक पर जो बाल गुच्छे के रूप में बांध दिये जाते हैं, जटा, इन्द्र का वाचक।
कोटिशः(अ०)--असंख्य; लाखादाद; बहुत २।
कोटीर(पु०)--जटा; मुकुट; किरीट।
कोटीश्वर(पु०)—करोड़पति।
कोट्ट(पु०)--क़िला; महल; दुर्ग।
कोट्टार(पु०)--कूप; चहारदीवारी से घिरा हुआ नगर, क़िला।
कोण (पु०)--कोना; अस्त्र का सिरा; घर आदि का भाग या देश, भौं की लता।
कोदण्ड(पु०)—देशविशेष, भौं। अस्त्री० धनुष, कमान।
कोद्रव(पु०)--कोदों, धान्यभेद।
कोप (पु०)—क्रोध; मनोविकार; गुस्सा।
कोपन(वि०)--क्रोध, गुस्सा करना।
वि०--कोपित, गुस्से से भरा हुआ।
कोपित (वि०)--क्रोधित, कोपाविष्ट, भड़काया हुआ।
कोमल(न०)--जल, पृथ्वी, मिट्टी। वि०--सुन्दर, मुलायम, नर्म, नाज़ुक।

कोरक (अस्त्री०)–कली, न खिला हुआ फूल, गन्धभेद, पराग ।
कोल (पु०)–सूअर, शूकर, गोद, क्रोड, छाती, जातिच्युत, वहशी । न०–एक तोला का परिमाण,पिप्पली ।
कोलकुण (पु०)–खटमल ।
कोलपुच्छ (पु०)–बगुला, बक ।
कोलमूल (न०)–पिप्पलीमूल ।
कोलम्बक (पु०)–वीणा का देह ।
कोलाहल(अस्त्री०)–शोरगुल,रौला,हुलड़ ।
कोल्या (स्त्री०)–पिप्पली ।
कोविद (वि०)–पण्डित, धीमान्, कुशल, तजुर्बेकार ।
कोविदार (अस्त्री०)–कचनाल का पेड़ ।
कोश[ष](अस्त्री०)–ख़ज़ाना,धनागार,कोठार, म्यान, मद्यपात्र, धन, आहनी सन्दूक़, अभिधान, डिक्शनरी, लुगत, अण्डा ।
कोशक (पु०)–अण्डा, अण्डकोश ।
कोशकार (पु०)–अभिधानकर्त्ता, लुगत लिखने वाला, म्यान बनाने वाला ।
कोशगृह (न०)–ख़ज़ाना, धनागार ।
कोशनायक (पु०)–कोशाध्यक्ष, कुबेर ।
कोशल=कोसल ।
कोशवृद्धि (स्त्री०)–धनकी बढ़ोतरी, आंतों का उतरना, अण्डकोश का बढ़जाना ।
कोशलिक (न०)–रिश्वत, घूंस ।
कोशहीन (वि०)–ग़रीब, निर्धन ।
कोशागार (अस्त्री०)–धनागार, ख़ज़ाना ।
कोशान्तकी[न्] (पु०)–बाडवानल, व्यवसायी, निजार, सौदागर, तिजारत ।
कोशाध्यक्ष(पु०)–कोश,विभाग, ख़ज़ाञ्ची, कुबेर, आयव्यय का हिसाब रखने वाला ।
कोष्ठ(न०)–प्राचीर, घूंघा । पु०-पेट, अन्दरूनी कमरा, कोठार, धान्यादि भरने का घर, कोठा, भण्डार ।
कोष्ठक(पु०)–प्राचीर, कोठार ।
कोष्ठपाल(पु०)–कोषाध्यक्ष,भण्डारी ।
कोष्ठागार(न०)–खत्ता, कुठला ।
कोष्ठागारिक(पु०)–भण्डारी ।
कोष्ण(न०)–कुछ२ गर्मी । वि०–कुछ २ गर्म, ईषदुष्ण । [के निवासी ।
कोसल (पु०बहु०)–अवधदेश तथा वहां
कोस[श]ला (स्त्री०)–अयोध्या नगरी, अवध की राजधानी ।
कोहल (पु०)–वाद्य भेद, मद्य सार ।
कौरत्य(न०)–क्रूरता, पश्चात्ताप, बुरा काम ।
कौक्कुटिक(पु०)–पाखण्डी,दम्भी,ऐसा साधु जो कीटादि के मरने के भय से पृथ्वी की ओर दृष्टि करके चलता है ।
कौक्ष(वि०)–कुक्षिगत, पार्श्वगत ।
कौक्षेयक(पु०)–खड्ग, कोख में छिपाई हुई तलवार ।
कौंकण=कोंकण ।
कौट (पु०)–छल, कपट, फरेब । वि०–छली, दम्भी, स्वतन्त्र, घरेलू ।
कौटकिक (पु०)–शिकारी, वधिक, मछेरा ।
कौटसाक्षी(पु०)–झूठा गवाह ।
कौटसाक्ष्य (न०)–झूठी या बनावटी गवाही । [बेईमान, कपटी ।
कौटिक(पु०)–वधिक, शिकारी । वि०–
कौटिलिक (पु०)–शिकारी, वधिक, लुहार ।

कौटिल्य(पु०)–नीतिकार चाणक्य का नाम जो मौर्यवंशीय चन्द्रगुप्त का मित्र था। न०–कुटिलता, छल, कपट।
कौटुम्ब(वि०)–कुटुम्बसम्बन्धी।
कौटुम्बिक(पु०)–कुटुम्ब का जनक।
कौणप(पु०)–राक्षस।
कौतुक (न०)–चाव, इच्छा, कंगना, खुशी, तमाशा।
कौतुकागार (अस्त्री०)–अजायबघर, दिलबहलाव का स्थान।
कौतुकित(वि०)–कौतुकयुक्त, चाव से भरा हुआ।
कौतूहल(न०)–तमाशा, कौतुक, कुतूहल, अचम्भे की वस्तु, इच्छा, शौक़, विवाहादि कृत्य।
कौतुहल्य(न०)–पूर्ववत्।
कौद्दालिक(पु०)–मठेरा, वर्णसंकर।
कौन्तिक(पु०)–भालेबर्दार। [आदि।
कौन्तेय(पु०)–कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर
कौप (न०)–कुएं का जल।
कौपीन(न०)–पाप,अपराध,लंगोटी।
कौमार(न०)–बचपन,कुंवारापन। वि०–कुंवारा, बचपन, मुलायम।
कौमारभृत्य(न०)–बच्चों का पालन पोषण। [की अवस्था।
कौमारक(न०)–बचपन, पांच वर्ष तक
कौमारिक(पु०)–लड़कियों का पिता।
कौमारिकेय (पु०) अविवाहित स्त्री का पुत्र।
कौमारी(स्त्री०)-कार्त्तिकेय की शक्ति।
कौमुद(पु०)–कार्त्तिक मास।
कौमुदी (स्त्री०)–चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, असौज वा कार्त्तिक की पूर्णिमा।
कौमुदीपति(पु०)–चन्द्रमा।
कौमोदकी (स्त्री०)–विष्णु की गदा।
कौमोदी(स्त्री०)-पूर्ववत्।
कौरव(पु०)–कुरु की सन्तान, कुरुवंशीय राजा [यद्यपि पाण्डु और धृतराष्ट्र दोनों की ही सन्तान कौरव कहला सकती है, परन्तु विशेष कर यह शब्द धृतराष्ट्र की सन्तान का ही बोधक है।]
कौरव्य(पु०)–कुरुवंशीय राजा।
कौल(वि०)-अच्छे कुल का, कुलीन। पु०–तान्त्रिक। [का पुत्र।
कौलटिनेय(पु०)–व्यभिचारिणी स्त्री
कौलटेय(पु०)–पूर्ववत्।
कौलटेर(पु०)–पूर्ववत्।
कौलिक (पु०)–जुलाहा, नास्तिक, तान्त्रिक। वि०–कुलसम्बन्धी, कुलक्रम से प्राप्त।
कौलीन (पु०)–फ़कीरनी का पुत्र, वाममार्गी। न०–अपवाद, बुरी अफ़वाह। वि०–अच्छे कुल का, कुलीन।
कौलिन्य(न०)–उच्चवंशीयता,कुलदोष, कुलप्रतिष्ठा, कुलच्छिद्र।
कौलेयक(पु०)–जवान, शिकारी कुत्ता। वि०–कुलीन।
कौल्य(वि०)–तान्त्रिक, वाममार्गी।
कौवे[बे]र (वि०)–कुबेरसम्बन्धी।
कौवेरी(स्त्री०)–उत्तर दिशा।
कौश(वि०)-रेशमी, कुशा घास का

बना हुआ। [राजीखुशी।
कौशल(न०)-चतुराई, कुशलक्षेम,
कौशलिक(न०)-रिश्वत, घूंस।
कौशलिका(स्त्री०)-कुशलक्षेम पूछना, भेट, नज़राना।
कौशली(स्त्री०)-पूर्ववत्।
कौशलेय(पु०)-राम का वाचक।
कौशल्य(न०)=कौशल।
कौशल्या(स्त्री०)-राजा दशरथ की बड़ी रानी। [राम।
कौशल्यायनि(पु०)-कौशल्या के पुत्र
कौशाम्बी(स्त्री०)-गंगा तट पर एक प्राचीन नगरी का नाम।
कौशिक(पु०)-विश्वामित्र, उल्लू, कोशकार, सर्प पकड़ने वाला, कोषाध्यक्ष, मज्जा, इन्द्र, शृंगार, गुग्गुलु।
कौशिकप्रिय(पु०)-राम का वाचक।
कौशिकफल(पु०)-नारियल।
कौशिका (स्त्री०)-प्याला, पानी पीने का वर्तन। [षण।
कौशिकात्मज(पु०)-अर्जुन का विशे-
कौशिकाराति(पु०)-कौआ, काक।
कौशे[षे]य(न०)-रेशम, रेशमी कपड़ा। वि०-रेशमी।
कौसल्य(पु०)-अयोध्यापति।
कौसल्या(स्त्री०)-दशरथ की बड़ी रानी और राम की माता।
कौसल्यानन्दन(पु०)-राम का वाचक।
कौसीद्य (न०)-सुस्ती, लेनदेन का कारोबार।
कौसुम(न०)-पराग, पुष्प की धूलि।

कौसृतिक(पु०)-जादूगर, बदमाश, ठग।
कौस्तुभ(पु०)-समुद्रमन्थन के समय निकला हुआ रत्नविशेष।
कौस्तुभवक्षः(पु०)-विष्णु का वाचक।
क्नूय्(१, १० प०)-मारना, नुकसान पहुंचाना। [यन्त्र।
क्रकच(पु०)-आरा, बढ़ई का एक
क्रकचपत्र(पु०)-तून का वृक्ष।
क्रकचपाद[द्] (पु०)-छकलास, करकेंटा
क्रकचा(स्त्री०)-केतकवृक्ष।
क्रकर(पु०)-ग़रीब आदमी, रोग, आरा।
क्रतु(पु०)-यज्ञ, विष्णु, प्रतिज्ञा, शक्ति, तरकीब, इच्छा, पर्याप्तता, अर्चना, आषाढ़मास।
क्रतुद्रुह् (पु०)-राक्षस, असुर।
क्रतुद्विष्(पु०)-पूर्ववत्।
क्रतुराज[ज्] (पु०)-राजसूय यज्ञ।
क्रथ् (१ प०)-मारना, चोट लगाना।
क्रथन(न०)-वध, काटना।
क्रन्द्(१ प०)-रोना, चिल्लाना, आंसू बहाना, आर्त्तनाद करना।
क्रन्दन(न०)-आर्त्तनाद, रोना, चिल्लाना। पु०-बिल्ली।
क्रन्दित (न०)-आर्त्तनाद, चिल्लाहट। वि०-रोया हुआ, चिल्लाया हुआ।
क्रप् (१आ०)-दया करना, शोक करना, इच्छा करना।
क्रम् (४प०, १ उ०)-चलना, जाना, गुजरना, क़दम आगे रखना, कूदना।
क्रम (पु०)-सिलसिला, क़दम, गमन, नियम, साहस, शक्ति, विष्णु।

क्रमक (वि०) क्रमपूर्वक, सिलसिले वार, गतिशील ।
क्रमण (न०)–चलना, आगे बढ़ना, कदम, अतिक्रमण । पु०–पैर, घोड़ा ।
क्रमत (अ०)–क्रमपूर्वक, रफ्ता २ ।
क्रमभंग (पु०)–सिलसिले का टूट जाना, बेकायदगी ।
क्रमयोग (पु०)–बाकायदा, सिल-सिला, तरतीब ।
क्रमश (अ०)–सिलसिलेवार ।
क्रमिक (वि०)–क्रमागत, सिलसिले वार ।
क्रमु (पु०)–सुपारी, मद्रमोथा ।
क्रमुक (पु०)–पूर्ववत् ।
क्रमेल–क (पु०)–ऊंट, उष्ट्र ।
क्रय (पु०)–दाम देकर वस्तु लेना, खरीदना, खरीद ।
क्रयण (न०)–पूर्ववत् ।
क्रयलेख्य(न०)–बैनामा, फरोख्तगी की दस्तावेज । [दार ।
क्रयविक्रयिक(पु०)–सौदागर, दूकान
क्रयिक(पु०)–सौदागर खरीद करने वाला । [बिकाई वस्तु ।
क्रय्य(वि०)–बेचने के लिये दूकान पर
क्रव्य (न०)–आम मांस, कच्चा मांस ।
क्रव्याद[द्] (पु०)–कच्चा मांस खाने वाला, राक्षस, गिद्ध, शेर ।
क्शित (वि०)–दुबला किया हुआ, क्षीण ।
क्राकचिक(पु०)–आरा खींचने वाला ।
क्रान्त (पु०)–घोड़ा, कदम । वि०–गया हुआ, अतिक्रान्त, बीता हुआ ।
क्रान्तदर्शी (वि०)–बीती बात के जानने वाला, सर्वद्रष्टा ।
क्रान्ति (स्त्री०)–आक्रमण, गमन, कदम, दबाना, आकाश की गोल रेखा जहां से सूर्य गति करता है।
क्रान्तु(पु०)–पक्षी, चिड़िया ।
क्राथ (पु०)–वध, कत्ल ।
क्रिमि=कृमि ।
क्रिमिशैल(पु०)–बमी, वल्मीक ।
क्रिया(स्त्री०)–कर्म, सम्पादन, काम, परिश्रम, शिक्षा, अमल, पूजा, उपाय, इलाज करना ।
क्रियाकलाप(पु०)–समस्त धार्मिक अनुष्ठान ।
क्रियापटु(वि०)–कुशल, होशियार ।
क्रियापद(न०)–धातु, व्यवहार का तीसरा पाद ।
क्रियापाद(पु०)–व्यवहार का तीसरा पाद [प्रथम गवाह, दूसरा लेख और तीसरा किये गये दावे को पूरा करना ये व्यवहार के तीन पाद कहलाते हैं ।]
क्रियालोप(पु०)–धर्मानुष्ठान का त्याग।
क्रियावादी(पु०)–मुद्दई ।
क्रियाविशेषण(न०)–अव्यय का एक भेद जिस को वाक्य में जोड़ देने से क्रिया के अर्थ में विशेषता आजाती है ।
क्रियासमभिहार(पु०)–किसी काम को बार २ करना ।
क्री(ट उ०)–खरीदना, मोल लेना, सौदा करना ।

क्रीड् (१प०)–खेलना, दिल बहलाना, जुआ खेलना, मजाक़ करना।
क्रीडक(पु०)–खिलाड़ी, दरबान।
क्रीडन (न०)–खेल, दिलबहलाव, खिलौना। [की वस्तु।
क्रीडनक(अस्त्री०)–खिलौना, खेलने
क्रीडा (स्त्री०)–खेल, दिलबहलाव, मजाक़।
क्रीडाकानन (न०)–बग़ीचा, दिल बहलाने का स्थान, क्रीडाभूमि।
क्रीडामन्दिर (न०)–दिलबहलाने का स्थान।
क्रीडानारी(स्त्री०)–वेश्या।
क्रीडावन=क्रीडाकानन।
क्रीडास्थल(न०)–पूर्ववत्।
क्रीत(वि०)–खरीदा हुआ। पु०–१२ प्रकार के पुत्रभेदों में से एक।
क्रीतक(पु०)–खरीदा हुआ पुत्र।
क्रुञ्च् (१प०)–टेढ़ा करना, टेढ़ा होना, कम करना, पहुंचना।
क्रुञ्च(पु०)–वीणाभेद, क्रौञ्चनामक पर्वत।
क्रुड् (६प०)–डूबना, ग़ोता लगाना।
क्रुथ् (९प०)–मारना, क़त्ल करना।
क्रुद्ध (वि०)–क्रोधित, कोपाविष्ट, खूंख्वार।
क्रुध् (४प०)–क्रोध में भरना, गुस्सा करना। स्त्री०–क्रोध। [उठाना।
क्रुन्थ् (९प०)–आलिंगन करना, कष्ट
क्रुश् (१प०)–चिल्लाना, रुदन करना, पुकारना।
क्रुश्वन् (पु०)–गीदड़। [या हुआ।
क्रुष्ट (वि०)–चिल्लाया हुआ, बुला-

क्रूर (वि०)–सख़्त, कठोर, बेरहम, निर्दय, गर्म। अस्त्री०–भात। पु०–बाज़, कङ्कपक्षी। न०–घाव, वध, भयानक काम। [राखी।
क्रूरकर्म (न०)–भयङ्कर काम, खूनख़-
क्रूरगन्ध (पु०)–गन्धक।
क्रूरप्रकृति(वि०)–कुटिल प्रकृति वाला।
क्रेणि–णी (स्त्री०)–खरीद, मोल लेना।
क्रेता (पु०)–ख़रीद करने वाला, मोल लेने वाला।
क्रेय (वि०)–मोल लेने योग्य।
क्रोड (पु०)–गोद, अंक, सूअर, छाती।
क्रोडपत्र (न०)–पत्र या अख़बार में बाद में बढ़ाया जाने वाला लेख, सप्लीमेण्ट।
क्रोध (पु०)–गुस्सा, कोप, दूसरे के अपकार को चाहना।
क्रोधकृत (वि०)–कोपाविष्ट, क्रोधी।
क्रोधज (पु०)–क्रोध से उत्पन्न होने वाले आठ मनोविकार जैसे चुग़लख़ोरी, ईर्ष्यादि।
क्रोधन (वि०)–क्रोधयुक्त, गुस्सेवाला। पु०–कौशिकके एकपुत्र का नाम। न०–क्रोध।
क्रोधनीय (वि०)–क्रोध उत्पन्न करने वाला, भड़काने वाला।
क्रोधालु (वि०)–कोपाविष्ट, क्रोधयुक्त।
क्रोधी (वि०)–क्रोध में भरा हुआ। पु०–कुत्ता, भैंसा।
क्रोश (पु०)–चिल्लाहट, एक कोस, योजन का चौथाई भाग।

क्रोष्टु (पु०)–गीदड़ ।
क्रौञ्च (पु०)–एक पर्वत का नाम, एक राक्षस का नाम, कुर्ई, कुञ्जपक्षी ।
क्रौञ्चदारक–ण (पु०)–कार्तिकेय, परशुराम । [डंठी ।
क्रौञ्चादन (न०)–मृणाल, कमल की
क्रौर्य (न०)–क्रूरता, भयंकरता ।
क्लन्द् (१प०)–पुकारना, चिल्लाना, शोक करना, रोना ।
क्लम् (१, ४प०)–थकना, दुःख मानना ।
क्लम–मथु (पु०)–थकान, थकावट ।
क्लान्त (वि०)–थका हुआ, मुरझाया हुआ, दुबला, पतला, उदास ।
क्लान्ति (स्त्री०)–थकावट ।
क्लान्तिच्छिद् (वि०)–थकावटउतारने वाला, क्लान्ति दूर करने वाला ।
क्लिद् (४ प०)–तर होना, गीला होना, नम होना ।
क्लिन्द् (१उ०)–शोक करना ।
क्लिन्न (वि०)–गीला, तर, नम ।
क्लिन्नहृद् (वि०)–नर्मदिल ।
क्लिश् (४आ०)–क्लेश मानना, दुःख सहना, दिक़ करना । (९ प०)–बरदाश्त करना, दिक़ करना, क्लेश पहुंचाना ।
क्लिशित(वि०)–दुःखी, क्लेशित, मुर्झाया हुआ, थका हुआ, क्षत, कठिन ।
क्लिष्ट(वि०)–पूर्ववत् ।
क्लिष्टि(स्त्री०)–दुःख, कष्ट, सेवा ।
क्लीब् (१आ०)–नपुंसक होना, सादा बनना ।
क्लीब–व(अस्त्री०)–नपुंसक आदमी, हीजड़ा, नपुंसकलिंग । वि०–नपुंसक, कमजोर, भयभीत, कमजोर-दिल, कमीना, सुस्त, कापुरुष ।
क्लेद(पु०)–तरी, नमी, बहाव, उपद्रव ।
क्लेदन(पु०)–कफ दोष । न०– तर करना, भिगोना ।
क्लेदु(पु०)–चन्द्रमा, शरीरस्थ तीनों दोषों का विकार, सन्निपात ।
क्लेश् (१आ०)–रोकना, मारना, दुःख देना ।
क्लेश(पु०)–दुःख, तकलीफ, चिन्ता ।
क्लेशक(वि०)–कष्टदायक, दुःखदायक ।
क्लेशकर–कारक (वि०)–कष्टदायक, दुःखदायक ।
क्लेशित(वि०)–दुःखी, सन्तप्त ।
क्लैब्य-व्य(न०)–नपुंसकता, कायरता, शक्तिहीनता ।
क्लोम(न०)–फेफड़ा, मसाना ।
क्व (अ०)–किधर, कहां ।
क्वचित्-चन(अ०)–पूर्ववत् ।
क्वण् (१प०)–अस्फुट ध्वनि करना ।
क्वणः-क्वाणः(पु०)–ध्वनिमात्र, बाजे की आवाज़ ।
क्वथ् (१प०)–काढ़ा निकालना, पकाना ।
क्वथ-क्वाथ(पु०)–काढ़ा, धीमी अग्नि से बहुत देर तक पका कर रस निकालना । [पकाया हुआ ।
क्वथित (वि०)–काढ़ा किया हुआ,
क्वेल् (१प०)–हिलना, हरकत करना ।
क्ष (पु०)–नाश, अभाव, किसान, राक्षस, विष्णु का चौथा अवतार, बिजली, खेत ।

क्षण्(उभ०)–मारना, नुकसान पहुंचाना, घायल करना, तोड़ना।

क्षण(अस्त्री०)–पल, लहमा, सेकिण्ड का चतुःपञ्चमांश, अवसर, फुरसत, उत्सव, सेवा, केन्द्र।

क्षणतु(पु०)–ज़ख्म, घाव।

क्षणद(पु०)–ज्योतिषी। न०–जल, रात का अन्धेरा।

क्षणदा(स्त्री०)–रात्रि, रात।

क्षणद्युति(स्त्री०)–बिजली।

क्षणन(न०)–वध, घाव करना।

क्षणभंगुर (वि०)–क्षणिक, नाशवान्, अनित्य।

क्षणमात्रम्(अ०)–लहमे भरके लिये।

क्षणविध्वंसी[न्](वि०)–क्षणभंगुर।

क्षणिक(वि०)–दम भर का, एक क्षण का, अस्थायी, अनित्य।

क्षणिका(स्त्री०)बिजली, विद्युत्।

क्षणिनी(स्त्री०)–रात्रि, रात।

क्षत(स्त्री०)–वध, हानि, चोट, फाड़ना।

• क्षत(वि०)–ज़ख्मी, हानि पहुंचाया हुआ, काटा हुआ, फाड़ा हुआ, तोड़ा हुआ। न०–ज़ख्म, चोट, पिरोंट, खतरा।

क्षतज(न०)–रक्त, खून, राध।

क्षतयोनि(स्त्री०) ऐसी स्त्री जो क्वारी न हो अर्थात् जिस का पुरुष के साथ समागम होगया हो।

क्षतविक्षत (वि०)–घायल, अनेक स्थान पर ज़ख्मी।

क्षति(स्त्री०)–हानि, घाव, नाश, बरबादी, अधःपात, काटना, फाड़ना।

क्षत्र (अस्त्री०)–राज्य, आधिपत्य, अधिकार, शक्ति, योद्धा, सिपाही।

क्षत्रधर्म (पु०)–बहादुरी, फौजीपेशा, क्षत्रिय का कर्त्तव्य।

क्षत्रप(पु०)–गवर्नर, शासक, वाइसराय, प्रतिनिधि। [योद्धा।

क्षत्रिय(पु०)–द्वितीय वर्ण का पुरुष,

क्षत्रियका-या(स्त्री०)–क्षत्रिय की स्त्री, क्षत्रियाणी। [वाचक।

क्षत्रियहन-ण (पु०)–परशुराम का

क्षत्रियाणी(स्त्री०)–क्षत्रियजाति की स्त्री, क्षत्रिय की पत्नी।

क्षत्रियी(स्त्री०)–पूर्ववत्।

क्षत्री(स्त्री०)–क्षत्रियवर्ण की स्त्री, छात्रपद, धन, शरीर, जल।

क्षद्(१ आ०)–पीसना, [वेद में]काटना, मारना, खाना, रक्षा करना।

क्षद्म[न्](न०)–जल, भोजन।

क्षन्तव्य(वि०)–क्षमा करने योग्य, सहन करने योग्य।

क्षन्ता[तृ] (वि०)–साबिर, सहन करने वाला, क्षमा करने वाला।

क्षप्(१ उ०)–तपचर्या करना, फाका करना।

क्षप(पु०)–जल, पानी, तोय।

क्षपण (पु०)–बौद्धसाधु। न०–अशौच, अपवित्रता, नाश।

क्षपणक(पु०)–बौद्ध वा जैनसाधु।

क्षपणी (स्त्री०)–जाल, नाव खेने की बल्ली।

क्षपा(स्त्री०)–हल्दी, रात्रि।

क्षपाट(पु०)–निशाचर, राक्षस।

क्षपानाथ-कर(पु०)—चन्द्रमा, कर्पूर।
क्षम्(४ प०, १ आ०)—आज्ञा देना, बरदाश्त करना, माफ करना, रोकना, योग्य होना।
क्षम(वि०)-साबिर, सन्तुष्ट, आज्ञाकारी, योग्य, शक्तिसम्पन्न, क़ाबिल। न०-युद्ध, औचित्य, उपयुक्तता। पु०-शिव।
क्षमणीय=क्षन्तव्य।
क्षमा(स्त्री०)—सबर,बरदाश्त,मुआफ़ी, पृथिवी, दुर्गा।
क्षमाभुज्‌ज(पु०)—राजा, शासक।
क्षमान्वित(वि०)—क्षमा वाला,बरदाश्त करने वाला, माफी देने वाला।
क्षमावान् युक्त(वि०)—पूर्ववत।
क्षमिता[तृ] (वि०)—साबिर, योग्य, क़ाबिल, माफ करने वाला।
क्षय(पु०)-हानि, नाश, सड़ना, कम होना, गिरावट, अन्त, प्रलय, राजयक्ष्मा, घर, मकान, वश।
क्षयकर-ङ्कर(वि०)-नाश करने वाला, बरबाद करने वाला।
क्षयण(न०)-घर, आवासस्थान। पु०-बन्दरगाह, खाड़ी।
क्षयथु(पु०)-क्षयरोग, राजयक्ष्मा।
क्षयपक्ष(पु०)-चन्द्रमास का कृष्णपक्ष।
क्षयरोग(पु०)—राजयक्ष्मा।
क्षयसम्पद्(स्त्री०)—अत्यन्तनाश।
क्षयी (वि०)—क्षयरोग से पीड़ित, नाशवान्, दिन पर दिन घटने वाला। पु०-चन्द्रमा।
क्षर्(१प०)-फिसना, बाहर निकलना, टपकना, घटना, नष्ट होना, पिघलना।
क्षर (न०)-जल, शरीर, अज्ञान, परब्रह्म। पु०—बादल, मेघ। वि०-घटने वाला, नाशवान्।
क्षरण (न०)-टपकना,चूना,पसीना आना।
क्षरित (वि०)-टपका हुआ, गिरा हुआ, गला हुआ।
क्षरी [न्] (पु०)-वर्षा ऋतु। [मिटाना।
क्षल् (१० उ०)-साफ़ करना, धोना, धोकर
क्षव (पु०)-छींक कफ, खांसी।
क्षवथु (पु०)-छींक, नाक साफ़ करना, गले की खराश।
क्षात्र (न०)-क्षत्रियवर्ग क्षत्रिय के लक्षण वि०-क्षत्रियसम्बन्धी,क्षत्रिय जाति का
क्षात्रि (पु०)—क्षत्रियभिन्न माता से उत्पन्न पुत्र।
क्षान्त (वि०)—क्षमा किया गया, बरदाश्त किया हुआ, सन्तोषयुक्त। पु०—शिव।
क्षान्ता (स्त्री०)—क्षमा, सबर, बरदाश्त।
क्षान्तु (पु०)—पिता, क्षमा करने वाला।
क्षाम (पु०)—विष्णु। वि०-छोटा,कमज़ोर, दुर्बल क्षीण।
क्षार (पु०)-रस, खार, कपटी, कांच, नमक, राख, ठग, कपटी। वि०-खारा। न०-काला नमक, जल।
क्षारक (पु०)—सुहागा, धोबी, पिंजरा, कली, कलिका।
क्षारभूमि(स्त्री०)-खारी जमीन, समुद्र के निकट की भूमि।
क्षारमृत्तिका(स्त्री०)-खारी मिट्टी।
क्षुद्रिका(स्त्री०)-भूख, क्षुधा।
क्षारित(वि०)--बदनाम किया हुआ, खारदार मिट्टी से निकला हुआ।

क्षालन(न०)--धोना, साफ़ करना, छिड़कना। [किया हुआ।
क्षालित(वि०)-धोया हुआ, साफ़
क्षि (१प०)-नष्ट होना, सड़ना, हकूमत करना, बरबाद करना, घटना, मारना, खर्च करना, बसना।
क्षि(स्त्री०)--निवासस्थान, गमन, नाश, क्षय होना।
क्षिण् (८उ०)-मारना, चोट करना।
क्षित (वि०)-नष्ट, कमज़ोर, ग़रीब, दुःखी। न०-वध, चोट।
क्षिता (स्त्री०)-पृथिवी, भूमि।
क्षिति (स्त्री०)-पृथिवी, घर, आवासस्थान, प्रलय, नाश।
क्षितिकण (पु०)-धूल, ख़ाक।
क्षितिकम्प (पु०)-भूकम्प, भूचाल।
क्षितिक्षित् (पु०)-राजा, शासक, हाकिम।
क्षितिज (पु०)-वृक्ष, मंगल।
क्षितितल (न०)-पृथ्वीतल, ज़मीन की सतह।
क्षितिदेव (पु०)-भूदेव, ब्राह्मण।
क्षितिधर (पु०)-पर्वत, पहाड़।
क्षितिनाथ-भुज्(पु०)-राजा, हाकिम, शासक।
क्षितिप-पति-पाल(पु०)-पूर्ववत्।
क्षितिपुत्र(पु०)-नरकासुर, मगल ग्रह।
क्षितिभृत्(पु०)-पर्वत, पहाड़।
क्षितिरन्ध्र(न०)-खाई, गड्ढा।
क्षितिरुह (पु०)-वृक्ष, पेड़।
क्षितिवर्धन(पु०)-शव, मुर्दा, मृतदेह।
क्षित्वन् (पु०)-वायु, मरुत्।
क्षिद्र (पु०)-सूर्य, सूरज, सींग, शृंग, रोग।

क्षिप्(६उ०)-फेंकना, भेजना, त्यागना, तोड़ना, रखना, डालना, अपमान करना।
क्षिप(पु०)-त्याग, अपमान, फेंकना।
क्षिपक (पु०)-योद्धा, तीरन्दाज़।
क्षिपण(न०)-प्रेषण, फेंकना, डालना, निन्दा।
क्षिपणि(पु०)-चाबुक लगाना। स्त्री०-जाल, हथियार, वल्ली, पुरोहित।
क्षिपणी(स्त्री०)=क्षिपणि[स्त्रीलिंग में]
क्षिपणु (पु०)-तीरन्दाज़, हथियार, वायु।
क्षिपा(स्त्री०)-रात्रि, प्रेषण, फेंकना।
क्षिप्त(वि०)-फेंका हुआ, त्यागा हुआ, पागल, अपमानित, न्यस्त। न०-गोली का ज़ख्म।
क्षिप्तचित्त(वि०)-व्याकुल, विभिन्नमना।
क्षिप्ता(स्त्री०)-रात्रि, रात। [प्रेषण।
क्षिप्ति(स्त्री०)-पहेली बताना, फेंकना,
क्षिप्र (न०)-मुहूर्त्त का १ बटा १५वां भाग, बालिश्त। वि०-तीव्र, शीघ्रगामी, फ़ुक जाने वाला।
क्षिप्रकारी[न्] (वि०)-चालाक, जल्दी काम करने वाला। [पूर्वक।
क्षिप्रम्(अ०)-तेज़ी से, फ़ौरन, शीघ्रता-
क्षिप्रपाकी [न्] (वि०)-जल्दी पकाने वाला। [पहुंचाना।
क्षी(१उ०)-मारना, क़त्ल करना, चोट
क्षीज्(१प०)-अस्फुटध्वनि निकालना।
क्षीण(वि०)-पतला, दुबला, कमज़ोर, ग़रीब, शक्तिहीन, कम हुआ,

नाजुक, खर्च किया हुआ, मृत,
क्षत । [वाला ।
क्षीणधन(वि०)–अमीर से ग़रीब होने
क्षीणबल(वि०)–क्षीणशक्ति, जिस का
बल घट गया हो ।
क्षीर(अस्त्री०)–दूध, पानी ।
क्षीरकण्ठ(पु०)–दूध पीने वाला बच्चा।
क्षीरद्रुम(पु०)–वटवृक्ष । [दाया।
क्षीरधात्री(स्त्री०)–दूध पिलाने वाली
क्षीरनिधि(पु०)–दूध का समुद्र ।
क्षीरप(पु०)–बच्चा, दूधमुंहा बालक।
क्षीरविकृति(स्त्री०)–फटा हुआ दूध ।
क्षीरशर(पु०)–मलाई ।
क्षीरसमुद्र(पु०)–दूध का समुद्र ।
क्षीरसार(पु०)–मक्खन, घी, घृत ।
क्षीरस्वामी (पु०)–अमरकोष का एक
टीकाकार ।
क्षीरी (वि०)–दूध देने वाला । पु०–
आक, पिलखन, गूलर ।
क्षीरोद(पु०)–क्षीरसमुद्र ।
क्षीरोदतनय(पु०)–चन्द्रमा ।
क्षीरोदसुता (स्त्री०)–लक्ष्मी, क्षीरोदतनया
क्षीव् [व] (१, ४ प०)–मस्त होना, शराब
पीना, थकना ।
क्षीव (वि०)–मदमस्त, भड़का हुआ ।
क्षु (२ प०)–छींक लेना, खखारना ।
क्षुण्ण (वि०)–पिसा हुआ, अभ्यसित,
टुकड़े २ किया हुआ, चूर्णित, परास्त।
क्षुण्णमना (वि०)–व्याकुल, उद्विग्नमना ।
क्षुत् (स्त्री०) छींक, भूख, क्षुधा।
क्षुद् (७उ०)–कुचलना, पैरों नीचे दबाना,
पीसना । [अनाज ।
क्षुद (वि०) आटा, मैदा, पिसा हुआ

क्षुद्र (वि०)–छोटा, कमीना, क्रूर, गरीब,
कंजूस, नाचीज़, निर्दय। पु० ततैया,
मक्खी, टूटा हुआ चावल ।
क्षुद्रजन्तु (पु०)–छोटा जानवर ।
क्षुद्रता (स्त्री०)–नीचता, छोटापन,
ओछापन ।
क्षुद्रबुद्धि (वि०)- नीचमना, कमीना ।
क्षुद्रा (स्त्री०)–मधुमक्खी, मक्षिका, झग
ड़ालू स्त्री, वेश्या ।
क्षुद्राशय (वि०)–ओछे मन वाला,
तंगदिल । [इच्छा होना ।
क्षुध् (४प०)–भूख लगना, भोजन की
क्षुधा (स्त्री०)–भूख, खाद्य पदार्थ,
बुभुक्षा । [इसी अर्थ में क्षुद् भी
बनता है ।] [पीड़ित ।
क्षुधान्वित (वि०)–भूखा, भूख से
क्षुधार्त्त (वि०)–पूर्ववत् ।
क्षुधालु-धित (वि०)–पूर्ववत् ।
क्षुधुन (पु०)–म्लेच्छ, राक्षसजाति ।
क्षुप (पु०)–झाड़ी ।
क्षुब्ध (वि०)–कम्पित, व्याकुल, घब-
राया हुआ । पु०–मन्थनदण्ड,
दूधबिलोने की रई ।
क्षुभ् (४,९ प०, १आ०)–संकोच करना,
सिकोड़ना, चलायमान होना,
उद्विग्न होना ।
क्षुभित (वि०)–कम्पित, उद्विग्न ।
क्षुमा (स्त्री०)–अलसी, सन, नील
वृक्ष । [खींचना ।
क्षुर् (६प०)–काटना, खुरचना, लकीर
क्षुर (पु०) –उस्तरा, बाल मूंडने का
यन्त्र, बाण, तीर, पशुओं का

खुर, गोखुर। [चौर।
क्षुरकर्म (न०)—हजामत बनवाना,
क्षुरक्रिया (स्त्री०)– पूर्ववत।
क्षुरधार(वि०)—उस्तरे के समान तेज़।
क्षुरमर्दी [न्] (पु०)—नापित, नाई, हज्जाम।
क्षुरमुण्डी[न्] (पु०)–पूर्ववत्।
क्षुरिका (स्त्री०)—छोटा उस्तरा, छुरी, खंजर। [क्षुरी भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होती है]।
क्षुरिणी (स्त्री०)—नापितभार्या, नाई की स्त्री।
क्षुरी [न्] (पु०)—नाई, हज्जाम, पशु।
क्षुल्ल (वि०)—छोटा, हलका, लघु, थोड़ा।
क्षुल्लक (वि०)—नाचीज़, दरिद्र, दुःखी, कठोर, थोड़ी उम्र का, क्रूर। [भाई अर्थात् चचा।
क्षुल्लतात (पु०)—पिता का छोटा
क्षेत्र (न०)—खेत, भूमि, ज़मीन,स्थान, तीर्थ, बाड़ा, उर्वराभूमि, उद्गमस्थान, स्त्री, भार्या, शरीर, इन्द्रियसमूह, मन, घर, नगर।
क्षेत्रकर–कृत (पु०)—किसान।
क्षेत्रगणित (पु०)—रेखागणित, ज्योमैट्री।
क्षेत्रज (पु०)—१२ प्रकार के पुत्रों में से एक, अपनी स्त्री में नियोग से उत्पन्न सन्तान।
क्षेत्रज्ञ (वि०)—चतुर, कुशल। पु०—आत्मा,किसान,साक्षी,परमात्मा।
क्षेत्रपति (पु०)—ज़मींदार।
क्षेत्रपाल (पु०)—खेत का रखवाला, शिव का वाचक।
क्षेत्रफल (न०)—क्षेत्र का परिमाण, क्षेत्र की लम्बाई और चौड़ाई को आपस में गुणन करने से जो फल निकलता है, रक़बा।
क्षेत्राजीव (पु०)=क्षेत्रकर।
क्षेत्रिक (पु०)—पति, किसान।
क्षेत्रिय (पु०)—असाध्य रोग, क्षेत्रज पुत्र। न०—चरागाह की घास।
क्षेत्री[न्] (पु०)—नियुक्त पति,किसान, काश्तकार, आत्मा, परमात्मा।
क्षेप (पु०)—अपमान, निन्दा, प्रेषण, देरी, लांघना।
क्षेपक(वि०)—फेंकनेवाला,भेजने वाला, अपमानकारक। पु०—प्रक्षिप्तवाक्य, ग्रन्थकर्त्ता के अतिरिक्त अन्य का बढ़ाया हुआ पाठ।
क्षेपण (न०)—निन्दा, त्याग, प्रेषण, बिताना, गुज़ारना।
क्षेपणिका (स्त्री०)—खेने की बल्ली, नौकाद्वयह, मछली पकड़ने का जाल।
क्षेपणीय (वि०)—त्यागने योग्य।
क्षेपिष्ठ(वि०)—बहुत जल्दी जानेवाला।
क्षेम (अस्त्री०)—कुशल, राज़ीखुशी, ख़ैरोआफ़ियत,रक्षा,मुक्ति, बुनियाद, नक्षत्र, आरामगाह।
क्षेमकर–कार (वि०)—मंगल करने वाला, शुभकारक।
क्षेमा (स्त्री०)—दुर्गा का वाचक।
क्षेमी [न्] (वि०)—रक्षित, महफ़ूज़, कुशलसम्पन्न।

क्षै(१ प०)–घटना, कम होना, नष्ट होना। [कृत।
क्षैण्य(न०)–दुबलापन, नाश, मज़ा-
क्षैत्र(न०)–क्षेत्रसमूह।
क्षैत्रज्ञ(न०)–अध्यात्मज्ञान।
क्षैप्र(न०)–तेज़ी, जल्दी, शीघ्रता।
क्षोणि[णी] (स्त्री०)–पृथिवी, भूमि।
क्षोद(पु०)–धूली, चूर्ण, ख़ाक, पेषण।
क्षोदः[स्] (न०)–जल, पानी, तोय।
क्षोदित(न०)–चूर्ण, आटा। वि०–पिसा हुआ, चूर्णित।
क्षोभ(पु०)–व्याकुलता, उद्वेग, कम्प, घबराहट, कांपना, भड़काव।
क्षोभण(पु०)–कामदेव के पञ्चशरों में से एक।
क्षौम(अस्त्री०)–अटारी, अट्टालिका।
क्षौणीपति(पु०)–राजा।
क्षौद्र(पु०)–चम्पकवृक्ष। न०–क्षुद्रता, शहद, जल।
क्षौद्रज(न०)–मोम।
क्षौद्रधातु(पु०)–माक्षिक, शहद।
क्षौद्रेय(न०)–मोम।
क्षौम(अस्त्री०)–सन का बना हुआ कपड़ा, अट्टालिका।
क्षौर(न०)–हजामत, बाल बनवाना।
क्षौरिक(पु०)–हज्जाम, नाई।
क्ष्णु (२ प०)–तेज़ करना, पत्थरी पर लगाना।
क्ष्मा(स्त्री०)–पृथ्वी।
क्ष्माज(पु०)–मंगल।
क्ष्मापति-भुज्(पु०)–राजा।
क्ष्माभृत(पु०)–राजा, पर्वत, पहाड़।
क्ष्माय्(१ आ०)–कांपना, हिलना।
क्ष्विद्(१ प०)–कूजना, भिनभिनाना।
क्ष्वेड(पु०)–आवाज़, विष, त्याग।
क्ष्वेडा(स्त्री०)–सिंह की गर्ज, सिंह का दहाड़ना, बांस।
क्ष्वेडित(अस्त्री०)–सिंहनाद,दहाड़ना।
क्ष्वेल्(१ प०)–कूदना, खेलना, कांपना, जाना।
क्ष्वेला(स्त्री०)–खेल, उपहास, क्रीडा।

ख

ख (पु०)–सूर्य, सूरज। न०–आकाश, स्वर्ग, शून्य, बिन्दु, ज्ञान, ब्राह्मण, दर्प,अनुस्वार।
खक्ख्(१ प०)–हंसना, मज़ाक उड़ाना।
खक्खट(न०)–चाक, खड़िया।
खग(पु०)–सूर्य, पक्षी,वायु, ग्रह, तीर, देवता।
खगपति(पु०)–गरुड।
खगस्थान (न०)–पेड़ की खोखल, चिड़िया का घोंसला।
खगान्तक(पु०)–कंकपक्षी, बाज़।
खगेन्द्र-श्वर(पु०)–गरुड।
खगोल(पु०)–ऊपर की ओर जो गोलाकार आकाश दिखाई देता है।
खङ्कर (पु०)–केशगुच्छ, जुल्फ।
खच्(१० उ०)–बांधना। (१, ९ प०)–पवित्र करना, फिर से उत्पन्न होना।
खचमस(पु०)–चन्द्रमा, चांद।
खचर[खेचर] (पु०)–सूर्य,पक्षी,बादल, वायु, राक्षस,गन्धर्व, तारा, ग्रह।

खचारी[न्](पु०)—स्कन्द का वाचक।
खचित(वि०)—बंधा हुआ, जुड़ा हुआ, संयुक्त, बद्ध।
खज्(१ प०)—बिलोना, उद्विग्न करना, आन्दोलित करना।
खज(पु०)—मन्थनदण्ड, दूध बिलोने की रई, चमचा करछी।
खजक(पु०)—मन्थनदण्ड।
खजिका(स्त्री०)—चमचा, करछी।
खजप(न०)—घी, घृत।
खजल(न०)—ओस, शबनम।
खजाक(पु०)—पक्षी, परिन्द।
खजाजिका(स्त्री०)—चमचा, करछी।
खज्योतिस्(पु०)—जुगनू, खद्योत।
खञ्ज् (१ प०)—लंगड़ाना।
खञ्ज(वि०)—लंगड़ा, लूला।
खञ्जन(पु०)—पक्षिभेद। न०—गमन, जाना, लंगड़ा कर चलना।
खट् (१ प०)—इच्छा करना, चाहना।
खट(पु०)—कफदोष, बलगम, अन्धकूप, हल, तृण, मुट्ठी।
खटक (पु०)—विवाह की जोड़तोड़ लगाने वाला, मुक्का।
खटखादक (पु०)—कौवा, जानवर, गीदड़।
खटिक(पु०)—आधा बन्द किया हुआ हाथ, टेढ़े हाथ वाला।
खटिका (स्त्री०)—खड़िया, चाक।
खटिनी (स्त्री०)—पूर्ववत्। [खटी भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।
खट्ट् (१०प०)—घेरा देना, ढकना।
खट्टन (पु०)—बौना, वामन।
खट्टा (स्त्री०)—खाट, चारपाई, तृणभेद।
खट्टिक(पु०)—खटीक, क़साई, शिकारी।
खट्टिका (स्त्री०)—छोटी चारपाई, खटोला।
खट्वा (स्त्री०)—पलंग, सेज।
खट्वाङ्ग (पु०)—महादेव का शस्त्रविशेष, पीठ का बांस, दिलीप राजा।
खट्वारूढ़ (वि०)—पलंग पर बैठा हुआ, लापरवाह, प्रमादी।
खड् (१आ०)—तोड़ना, खण्ड २ करना, फाड़ना।
खडिका[खडी](स्त्री०)—खड़िया मिट्टी।
खडु-डू (अक्लो०)—जनाज़ा, मुर्दे की अर्थी।
खड्ग (पु०)—तलवार, असि, गैंडे का सींग, गैंडा। न०—लोहा।
खड्गकोश (पु०)—म्यान, तलवार रखने का घर।
खड्गधर (पु०)—तलवार धारण करने [वाला।
खड्गपत्र (न०)—तलवार का फलका।
खड्गपुत्रिका (स्त्री०)—छुरी, छोटी तलवार
खड्गप्रहार (पु०)—तलवार की चोट।
खड्गाघात(पु०)—तलवार का घाव।
खड्गाधार(पु०)—म्यान।
खड्गामिष(न०)—भैंस का मांस।
खड्गारीट(पु०)—ढाल, रक्षा का शस्त्रविशेष।
खड्गिक(पु०)—भैंस के दूध की मलाई,

तलवार धारण करने वाला, क़साई ।
खड्गी [न्] (पु०)-गैंडा, शिव, हथियारबन्द ।
खण्ड्(१०प०)-तोड़ना, टुकड़े २ करना, पूर्ण पराजय देना, निराश करना, बाधा डालना ।
खण्ड(अस्त्री०)-टुकड़ा, तोड़ा हुआ भाग, अध्याय, परिच्छेद, खाड़, गन्ने का विकार ।
खण्डकथा(स्त्री०)-छोटी कहानी ।
खण्डकाव्य(न०)-मेघदूत के समान छोटा काव्य ।
खण्डधारा(स्त्री०)-क़ैंची, कत्तंनी ।
खण्डन(न०)-तोड़ना,फाड़ना,तरदीद, नाश,बाधा डालना,बरख़ास्तगी।
खण्डनीय(वि०)-खण्डन करने योग्य ।
खण्डपरशु (पु०)-महादेव, परशुराम । [खण्डपर्शु भी इसी अर्थ में] ।
खण्डल(अस्त्री०)-टुकड़ा, भाग ।
खण्डविकार(पु०)-शक्कर, खाड़ ।
खण्डश (अ०)-टुकड़े २ करके ।
खण्डिक(पु०)-खाड़ पकाने वाला ।
खण्डित(वि०)-काटा हुआ, तोड़ा हुआ,तरदीद किया हुआ,निराश।
खण्डिनी(स्त्री०)-पृथ्वी, धरा ।
खण्डोल्ह(८ उ०)=खण्ड् ।
खण्ड्य (वि०)-खण्डनीय, खण्डन करने योग्य ।
खतमाल(पु०)-बादल, धूम ।
खतिलक(पु०)-सूर्य, सूरज ।
खद्(१प०)-मारना, घात करना, मज़बूत रहना, स्थिर होना ।
खदिर (पु०)-वृक्षविशेष, खैर की लकड़ी, चन्द्रमा, इन्द्र का बोधक ।
खदिरसार (पु०)-कत्था ।
खद्योत(पु०)- जुगनू, पटबीजना, सूर्य।
खन्(१उ०)-खोदना, गढ़ा करना, खोद कर ख़ाली करना ।
खनक(पु०)--खान खोदने वाला, चूहा, सेंध लगाने वाला, खान । वि०-खोदने वाला ।
खनन(न०)--खोदना,गाड़ना । [खान ।
खनि-नी (स्त्री०)-गार, गुफा, खान,
खनिता[तृ] (वि०)--खोदने वाला ।
खनित्र (न०)--खोदने का हथियार, कसला ।
खपराग(पु०)-अन्धेरा, अन्धेर ।
खपूर (पु०)-सुपारी का वृक्ष ।
खर(पु०)-गधा, खच्चर, कौआ, बर्क, असुर, एक राक्षस का नाम जो रावण का भाई था । वि०-कठोर, हानिकर, तेज़ धार वाला ।
खरकुटी (स्त्री०)-हज्जाम की दूकान, गर्दभशाला ।
खरदण्ड(न०)-कमल, कंवल ।
खरदूषण(पु०)-धतूरा, खर और दूषण नाम से प्रसिद्ध रावण के दो भाई, जिन्हें पञ्चवटी में श्रीराम ने मारा था ।
खरनाद(पु०)-गधे का रेंकना ।
खरांशु(पु०)-सूर्य, भास्कर ।
खरालिक(पु०)-हज्जाम, तकिया, छीद्रयाण ।

खरी(स्त्री०)–गधी, गर्दभी।
खरु(पु०)–घोड़ा, दांत, कामदेव, शिव, अहंकार। वि०–मूर्ख, नादान, क्रूर सफेद।
खर्ज्(१ प०)–कष्ट देना, पूजा करना, साफ करना।
खर्जन(न०)–खुजली करना,खुजलाना।
खर्जु-र्जू(स्त्री०)–खारिश, खाज, खजूर का पेड़, धतूरा, कीटविशेष।
खर्जुघ्न(पु०)–धतूरा, आक का पेड़।
खर्जु [र्जू] र (न०)–चांदी।
खर्जूर(पु०)खजूरवृक्ष, बिच्छू। न०–चांदी, हरताल, खजूरफल।
खर्जूरक(पु०)–बिच्छू।
खर्द्(१ प०)–काटना, डंक मारना।
खर्पर(पु०)–चोर, ठग, भीख मांगने का पात्र, धूर्त्त, खोपड़ी, छत्री।
खर्व्(१ प०)–जाना, घमण्ड करना।
खर्व[र्व] (वि०)–बौना,वामन,अधूरा। अस्त्री०–१०००००००००० इतनी संख्या का बोधक।
खर्वट(अस्त्री०)–पर्वत की तराई का ग्राम, मंडी, ऐसा ग्राम जिस में पीठ लगती हो।
खर्व[र्वु]ज(न०)–खर्बूजा।
खल्(१ प०)–हिलना, इकट्ठा करना।
खल(पु०)–धूर्त, क्रूर, शठ, सूर्य। अस्त्री०–पृथिवी, भूमि, स्थान, खली, लड़ाई, युद्ध।
खलति(वि०)–गंजा।
खलधिन(पु०)–पर्वत।
खलि-ली(स्त्री०)–खल, सरसों वा तिलों का वह अंश जो तेल निकलने पर शेष रह जाता है।
खलि [ली] न (अस्त्री०)–लगाम का लोहा।
खलु(अ०)–निश्चय, प्रश्न, निषेध, इच्छा, प्रार्थना, विनय आदि अर्थों का बोधक, निश्चय करके।
खलूरिका(स्त्री०)–चांदमारी की जगह, शस्त्राभ्यास करने का स्थान।
खल्या(स्त्री०)–धान्य मलने के स्थान का समूह, पैर, पैरी।
खल्ल (पु०)–खरलनामक औषध पीसने का पात्र, चातक पक्षी, पानी भरने का चमड़े का मशक, नाली।
खल्लिट(वि०)–गंजा, खलति।
खल्वाट(वि०)–पूर्ववत्।
खश(पु०)–देशभेद, हिमालय के पास का देश।
खशरीर(न०)–स्वर्गीय देह।
खश्वास(पु०)–वायु, हवा।
खष्(१प०)–मारना,नुकसान पहुंचाना।
खष्प(पु०)–क्रोध, क्रूरता।
खस(पु०)–खाज, खारिश। [भेद।
खसतिल खस(पु०)–पोस्त नामक वृक्ष-
खसखसरस (पु०) अहिफेन, अफीम।
खाजिक(पु०) भुना हुआ अनाज।
खाट्(अ०)- खकार खकार।
खाट टि (पु०) -मृतक के लेजाने की चारपाई, जनाजा।
खाटा टिका(स्त्री०)- पूर्ववत्।
खाण्डव (न०)- एक प्राचीन वन का

नाम को वर्त्तमान देहली के आस पास था।

खात(वि०)--खोदा हुआ, फाड़ा हुआ, छेदा हुआ। न०--खाई, गार, सूराख

खातक(न०)--खाई। पु० खोदने वाला, अधमर्ण।

खाति(स्त्री०)--खोदना, गढ़ा बनाना।

खात्र(न०)--कसला, तागा, जंगल।

खाद् (१ प०)--खाना, भक्षण करना, कुतरना।

खाद(पु०)--चर्वण, भक्षण, भोजन।

खादक(पु०)--खाने वाला, भक्षक, अधमर्ण। वि०--भक्षण करने वाला।

खादन(पु०)--दांत, दन्त। न०--भोजन, चर्वण।

खादिर (पु०)--कत्था।

खादुक(वि०)--क्रूरप्रकृति।

खाद्य(न०)- भोजन, खाने योग्य पदार्थ वि० -भक्षण करने योग्य।

खान(न०)--नुकसान, खोदना।

खानक(वि०)--खान खोदने वाला।

खानि (स्त्री०)--खान, कान।

खानिल (पु०)--घर में सेंध लगाने वाला, चोर। [माण।

खार-रि(पु०)--षोडश द्रोण का परि-

खार्कार (पु०)--खरनाद, गधे का रेंकना।

खार्या (स्त्री०)-त्रेतायुग।

खिङ्ग (पु०)-लोमड़ी।

खिङ्गिर (पु०)-लोमड़ी, चारपाई का पाया।

खिद् (१ प०)-डरना, डराना।

खिद् (४ ७ आ०)-दुःखी होना, कष्ट उठाना। (६ प०)-दुःख देना, दबाना।

खिदिर (पु०)-तपस्वी, दरिद्र, इन्द्र, चन्द्र।

खिद्र (पु०)-दरिद्र, रोग।

खिन्न (वि०)-थका हुआ, उदासीन, जिस का चेहरा उतर गया हो।

खिल (अस्त्री०)-रिक्तस्थान, बाद में बढ़ाया हुआ अंश, जंगल, बंजरभूमि।

खु (१ आ०)-आवाज़ करना।

खुज् (१ प०)-लूटना, चुराना।

खुर् (६ प०)-काटना, खरोंच करना, टुकड़े २ करना।

खुर (पु०)-गन्धविशेष, उस्तरा, चारपाई का पाया, पशु का खुर।

खुरणस (वि०)-चपटी नोक वाला।

खुरली (स्त्री०)-चांदमारी।

खुराक (पु०) पशु, जानवर।

खुराघात (पु०) पदी लगाना।

खुर्द् (१ आ०)-खेलना।

खुल्ल(वि०)-छोटा, नीच, क्षुद्र।

खुल्लम(पु०)-सड़क, रास्ता।

खेचर=खचर।

खेट् (१० प०)-खाना, ख़र्च करना।

खेट(अस्त्री०)-शिकार, मृगया, ढाल। पु०-गांव, छोटी बस्ती, कफदोष, घोड़ा। न०-तृण, चमड़ा, त्वचा।

खेटक(अस्त्री०)-बलराम का दण्ड, ढाल। पु०-बहुत छोटा ग्राम, पल्ली।

खेटी[न्] (पु०)-शहरी, नागरिक।

खेटितास(पु०)-वैतालिक।

खेद (पु०)-दुःख, कष्ट, उदासी, थकान, रोग।

खेदन (न०)-प्रयत्न।

खेदित(वि०)-दुःखी, सन्तप्त, क्लेशित।

खेय(वि०)-खोदने लायक । न०-परिखा, खाई।
खेल्(१ प०)-खेलना, क्रीड़ा करना, आगे पीछे हरकत करना।
खेलन (न०)-खेल, दिलबहलाव, हरकत, दृश्य।
खेला(स्त्री०)--पूर्ववत्।
खेव् (१ आ०)--सेवा करना, सेवकाई करना।
खेचर(पु०)--खेचर।
खोट(१ प०)--लंगड़ा कर चलना।
खोटि(स्त्री०)--चालाक स्त्री।
खोर(वि०)--लंगड़ा।
खोल (न०)-कलगी, उठा हुआ टोपी का भाग। वि०-लंगड़ा।
खोलक(पु०)-कलगी, बर्तन, बमी।
ख्या(२प०)-कहना, यश पाना, ख्यात कराना।
ख्यात(वि०)-ख्यात, प्रसिद्ध, मशहूर, विदित। न०-घोषणा, प्रसिद्धि।
ख्याति (स्त्री०)-यश, शोहरत, नाम, तारीफ़, प्रसिद्धि।
ख्यातिकर(वि०)-यशदेने वाला, मशहूर करने वाला।
ख्यापक(वि०)-पूर्ववत्।
ख्यापन(न०)-घोषणा, प्रकाशन, ख्यात कराना, प्रसिद्धि देना।

ग

ग (वि०)-जाने वाला, गतिशील, स्थिर [इन अर्थों में सदा समास के अन्त में प्रयुक्त होता है]। पु०-गन्धर्व, गणेश का वाचक। न०-गीत।
गगन(न०)-आकाश, शून्य, स्वर्ग।
गगन [ने] चर (पु०)-पक्षी, बादल, मेघ, ग्रह, तारा, राशिचक्र।
गगनध्वज(पु०)-सूरज,भास्कर,बादल।
गग्ध्(१प०)-हँसना, मज़ाक उड़ाना।
गंगा(स्त्री०)-गंगा नामक प्रसिद्ध नदी, दुर्गा, हिमालय की बड़ी पुत्री।
गंगाका--गंगिका(स्त्री०)-पूर्ववत्।
गंगाज(पु०)-भीष्म पितामह,कार्त्तिकेय
गंगाद्वार(न०)-हरद्वार।
गंगाधर(पु०)-शिव, समुद्र।
गंगापुत्र(पु०)-भीष्म, कार्त्तिकेय, गंगा-तीर्थों पर रहने वाले पण्डे जो यात्रियों को तीर्थकर्म में सहायता देते हैं।
गंगालहरी (स्त्री०)-जगन्नाथ पण्डित का बनाया हुआ एक स्तोत्र।
गच्छ(पु०)-वृक्ष, पेड़, गणित का एक अङ्कभेद।
गज्(१प०)-मस्त होना, गर्जना,घोरना, आवाज़ करना।
गज (पु०)--हाथी, हस्ती, आठ की संख्या,एक गज, ३६ इंच की माप, एक दैत्य जिसे शिव ने मारा था।
गजगति (स्त्री०)-हाथी के समान शानदार चाल।
गजगामिनी (स्त्री०)-हस्ती के समान चाल वाली स्त्री।
गजता(स्त्री०)-हस्तिसमूह।
गजदंत (पु०)-हाथीदांत, खूंटी, गणेश का बोधक।

गजपति(पु०)–सर्वश्रेष्ठ हाथी, हाथियों का स्वामी।
गजपुर(न०)–हस्तिनापुर।
गजबन्धनी-न्धिनी(स्त्री०)-हाथीखाना
गजभक्ष्या-वल्लभा(स्त्री०)-शल्लकीवृक्ष
गजमाचल(पु०)–शेर, सिंह, केसरी।
गजमुख-वदन(पु०)–गणेश का वाचक।
गजयूथ(न०)–हस्तिसमूह।
गजराज(पु०)–श्रेष्ठ या सर्वोत्तम हाथी।
गजसाह्वय(न०)–हस्तिनापुर का नाम
गजस्नान (न०)–निरर्थक कार्य, बेसूद काम। [वान्।
गजाजीव (वि०)–हस्तिपालक, हाथी-
गजानन(पु०)–गणेश।
गजारोह(पु०)–हाथीवान्, हस्तिपक।
गजेन्द्र (पु०)–ऐरावत हाथी, सर्वश्रेष्ठ हस्ती।
गंज (पु०)–खज़ाना, खान, मण्डी, अपमान, गोशाला। न०– खनि, धनागार।
गंजा(स्त्री०)–खान, रत्नखनि, सराय, झोंपड़ा, पीने का पात्र, मद्यापण।
गंजिका (स्त्री०)–सराय, कलाल की दूकान। [खींचना।
गड् (१ प०)–बाहर निकालना, अर्क
गड(पु०)–खाई, परिखा, रोक, बाड़ा, परदा।
गडयन्त(पु०)–बादल, मेघ।
गडि (पु०)–गलिया बैल, सुस्त बैल।
गडु (पु०)–कुब्ड़, पुष्ठ, कुबड़ा आदमी।
गडुर (पु०)–मेंष, भेड़।
गण् (१०उ०)–गिनना।
गण (पु०)–समूह, गिरोह, कक्षा, संख्या, गिनती, भ्वादि आदि धातुओं के दश समूह, गणेश का बोधक, संगति, सेना का एक विशेषभाग जिसमें २७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़े और १३५ पैदल होते हैं, ज्योतिष में नक्षत्रविशेष।
गणक (पु०)–ज्योतिषी, गणित का जानने वाला, दैवज्ञ।
गणदेवताः (स्त्री० बहु०)–आदित्य, विश्वेदेवा, तुषित आदि देवताओं का समूह।
गणद्रव्य (न०)–सार्वजनिक सम्पत्ति।
गणधर (पु०)–किसी जाति या कक्षा का प्रधान, पाठशाला का गुरु।
गणन (न०)–गिनना, हिसाब, सोच-विचार।
गणना (स्त्री०)–पूर्ववत्।
गणनाथ (पु०)–गणेश, शिव।
गणनीय (वि०)–गिनने योग्य, ख़्याल करने योग्य।
गणपति (पु०)–गणेश, शिव।
गणपीठक (न०)–छाती, वक्षःस्थल।
गणभोजन (न०)–दावत, मिलकर एक साथ खाना।
गणि (स्त्री०)–गिनती, गणना।
गणिका (स्त्री०)–हथिनी, अनेक पति वाली अर्थात् वेश्या, वाराङ्गना।
गणित (न०)–गिनना, दूसरहिन्दसा, बीजगणित, अङ्कगणित और रेखागणित आदि का समूह, सवाल। वि०–गिना हुआ।

गणिती [न्] (पु०)–गणित निकालने वाला, हिसाबदां।
गणेय(वि०)–गिनने लायक,गणनीय।
गणेरु (स्त्री०)–हथिनी, वेश्या, वारनारी। पु०–कनेर का वृक्ष।
गणेरुका (स्त्री०)–कुटनी, नायका, दासी।
गणेश(पु०)–परमात्मा, सर्वोत्तम देव, शिव तथा शिवपुत्र गजानन का बोधक।
गण्ड (पु०)–गाल, कपोल, कुम्भ, बुलबुला, चिन्ह, गैंडा, संदूकची, सूजन।
गण्डक (पु०)–गैंडा, जोड़, गांठ, चार कौड़ी अर्थात् गण्डा, रुकावट।
गण्डकी (स्त्री०)–गैंडी, गंगा की एक सहायक नदी।
गण्डकीपुत्र (पु०)–शालग्राम नामक पत्थर। [गण्डकीशिला भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होती है]।
गण्डदेश–प्रदेश (पु०)–गाल, कपोल।
गण्डमाला (स्त्री०)–एक रोगविशेष जिसमें गर्दन पर फोड़े निकलते हैं।
गण्डमूर्ख (वि०)–अत्यन्त मूर्ख।
गण्डशिला (स्त्री०)–बड़ी चट्टान।
गण्डस्थल (न०)–कपोल, गाल, हाथी का कुम्भ।
गण्डि (पु०)–पेड़ का तना।
गण्डीर (पु०)–योद्धा, वीर, बहादुर।
गण्डु–गड्डू (अकर्मो०)–गद्दा, तकिया, गांठ।
गण्डूल (वि०)–झुका हुआ, टेढ़ा।
गण्डूष(पु०)–हाथ की उंगली, हस्तिशुण्ड की नोक, चुल्लू, इतना पानी जितना एक वार मुंह में आजावे।
गत (वि०)–गया हुआ, गुजरा हुआ, मृत, समझा हुआ, गिरा हुआ। न०–गति, घटना।
गतक(न०)–हरकत, गति।
गतक्लम(वि०)–जिस का थकान उतर गया हो, तरोताज़ा।
गतचेतन(वि०)–मूर्छित, बेख़बर।
गतप्राण(वि०)–जिस के प्राण निकल गये हों, मुर्दा।
गतागत(न०)–जाना और आना, जा कर आया हुआ।
गतानुगतिक(वि०)–अन्धविश्वासी, दूसरों के पीछे चलने वाला।
गतार्त्तवा(स्त्री०)–बांझ स्त्री, वन्ध्या, बूढ़ी औरत।
गति(स्त्री०)–जाना, गमन; ज्ञान, गमन और प्राप्ति इन तीन अर्थों का बोधक, दशा, यात्रा, उपाय, कर्मफल, बुद्धि।
गतिला(स्त्री०)–नदी,क्रम,सिलसिला।
गद् (१ प०)–कहना, बोलना, कथन करना, स्पष्ट बोलना।
गद(पु०)–कथन, वाणी, वाक्य, रोग, श्रीकृष्ण का लघु भ्राता।
गद्गद(न०)–अस्फुट उच्चारण।
गदाग्रणी (पु०)–सारे रोगों का सरदार अर्थात राजयक्ष्मा। [लोहेका शस्त्र।
गदा(स्त्री०)–गदा नामक प्रसिद्ध दण्ड,

गदाधर(पु०)–विष्णु ।
गदायुद्ध(न०)–गदा या लोहे के दण्ड से युद्ध करना ।
गदाराति(पु०)–दवाई, औषध ।
गदित(वि०)–कथित, वर्णित ।
गद्गद(अस्त्री०)–आवेशध्वनि, अस्फुट और अव्यक्त स्वर ।
गद्गदवाणी (स्त्री०)–गद्गदध्वनि, अस्फुट और अव्यक्त वाणी ।
गद्गदस्वर(पु०)–पूर्ववत ।
गद्य(वि०)–कथनीय, वर्णनीय । न०–नगर, वाक्यरचना के तीन भेदों में से एक, पद्यभिन्न काव्य, ऐसी रचना जो श्लोकबद्ध न हो ।
गद्यात्मक(वि०)–गद्ययुक्त, श्लोकभिन्न ।
गन्तव्य (वि०)–जाने योग्य, जाने वाला, प्राप्तियोग्य ।
गन्तु(पु०)–पथिक, मार्ग, रास्ता ।
गन्ता[तृ] (वि०)–जाने वाला, गमनशील, मैथुनकारी ।
गन्त्री(स्त्री०)–जाने वाली, बैलगाड़ी ।
गन्त्रीरथ(पु०)–बैलगाड़ी ।
गन्ध्(१० आ०)–विनय करना, मांगना, जाना, चोट करना ।
गन्ध(पु०)–नासिका इन्द्रिय से ग्राह्य गुणभेद । सुगन्ध, गन्धक, घिसा हुआ चन्दन, पड़ोसी, अहङ्कार, लेश । [द्रव्य ।
गन्धक (पु०)–इसी नाम का प्रसिद्ध
गन्धकाली (स्त्री०)–व्यास की माता सत्यवती का नाम ।
गन्धकेलिका(स्त्री०)–मुश्क, काफूर ।
गन्धघ्राण(न०)–सुगन्ध या दुर्गन्ध का सूंघना ।
गन्धज्ञा (स्त्री०)–नाक, नासिका ।
गन्धनालिका–नाली(स्त्री०)-पूर्ववत् ।
गन्धपाषाण(पु०)–गन्धक ।
गन्धबन्धु(पु०)–आम का पेड़ ।
गन्धमाता(स्त्री०)–पृथिवी ।
गन्धमादन (पु०)–गन्धक, रावण । अस्त्री०–एक पर्वत का नाम ।
गन्धमादिनी(स्त्री०)–लाख नामक द्रव्य ।
गन्धमृग(पु०)–कस्तूरिया मृग ।
गन्धर्व(पु०)–कोयल, सूर्य, घोड़ा, कस्तूरीमृग, गायक, देवयोनिभेद जो गानविद्या में प्रवीण होते हैं।
गन्धर्वनगर(अस्त्री०)–एक कल्पित स्वर्गीय नगर, इन्द्रजाल। [गन्धर्वपुर भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।
गन्धर्वलोक(पु०)–विद्याधरों के लोक के नीचे और गुह्यलोक के ऊपर, जो लोक माना जाता है ।
गन्धर्वविद्या(स्त्री०)–गाने की विद्या, गाने का इल्म ।
गन्धर्वविवाह(पु०)–आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिस में कुमार और कुमारी की इच्छा ही अपेक्षित होती है और किसी प्रकार का सार्वजनिक कृत्य नहीं किया जाता ।
गन्धर्ववेद(पु०)–सामवेद का उपवेद जिस में गानविद्या का वर्णन है ।
गन्धवहा(स्त्री०)–नासिका, नाक ।

गन्धसार(पु०)–चन्दन, सन्दल।
गन्धा(स्त्री०)–चम्पे की कली।
गन्धाजीव (पु०)–सुगन्धित वस्तु बेचने वाला, गन्धी।
गन्धाढ्य(न०)–चन्दन का वृक्ष। पु०–नारंगी का वृक्ष।
गन्धार(पु०)–पञ्जाब के पश्चिम में एक देश का नाम [इस अर्थ में यह बहुवचन में प्रयुक्त होता है], सिन्दूर, स्वरभेद।
गन्धालु(वि०)–खुशबूदार।
गन्धिक(पु०)–गन्धक, खुशबू बेचनेवाला
गन्धिनी(स्त्री०)–शराब, मद्य, गन्धबाला नामक द्रव्य।
गन्धी[न्] (पु०)–खटमल। वि०–गन्धयुक्त, गन्धालु। [शराब।
गन्धोत्तमा(स्त्री०)–उत्तम सुरा, अच्छी
गन्धोली(पु०)–ततैया, शुण्ठी, सोंठ।
गभस्ति(पु०)–सूर्यकिरण, चन्द्रकिरण, रश्मि, सूर्य। स्त्री०–स्वाहा।
गभस्तिकर(पु०)–सूर्य, आदित्य।
गभस्तिमाली-हस्त(पु०)–पूर्ववत्।
गभीर(वि०)–गंभीर, गहन, गहरा, अथाह, संजीदा, गुप्त।
गभीरिका(स्त्री०)–बहुत बड़ा ढोल।
गम्(१ प०)–जाना, चलना, हरकत करना, रवाना होना, पहुंचना, गुज़रना, बीतना, बिताना।
गम(पु०)–गति, पहुंच, सड़क, मैथुन।
गमक(वि०)–बोधक, समझाने वाला, सप्रमाण, निश्चय कराने वाला। पु०–रागों का स्वरभेद।
गमथ(पु०)–रास्ता, सड़क, पथिक।
गमन(न०)–गति, जाना, हरकत, चढ़ाई, प्राप्ति, मैथुन।
गमनीय–गम्य(वि०)–आसानी से समझ में आने वाला, करनेयोग्य, प्राप्तियोग्य, जिस के साथ मैथुन करना उचित है।
गम्भीर(वि०)=गभीर। पु०–कमल।
गम्भीरवेदी[न्] (पु०)–हाथी, जिस के शरीर पर प्रहारों का कुछ प्रभाव नहीं होता।
गय(पु०)–धन, घर, कुटुम्ब, सन्तान, आकाश, असुरविशेष।
गया(स्त्री०)–विहार में एक प्रसिद्ध नगर जो तीर्थस्थान है।
गर(अस्त्री०)–विष, ज़हर। पु०–रोग, पेय, निगलना।
गरघ्न(वि०)–रोगनाशक, विषनाशक, तन्दुरुस्त।
गरव(पु०)=गर्व। [तृणमूल।
गरल(अस्त्री०)–सर्पविष, ज़हर। न०–
गरित(वि०)–विषयुक्त, ज़हरीला।
गरिमा[न्] (पु०)–गौरव, बड़ाई, सिद्धिभेद, भारीपन।
गरिष्ठ(वि०)–बहुत बड़ा, बहुत भारी, सक़ील।
गरीयस्(वि०)–अधिक भारी, गुरुतर।
गरीयसी(स्त्री०)–पूर्ववत्।
गरुड(पु०)–पक्षियों का राजा, एक पक्षी जिसका पौराणिक गाथाओं में विशेष वर्णन आता है। विनता के गर्भ से कश्यप का बेटा।

गल् (१ प०)–गिरना, गिराना, खाना, निगलना, अन्तर्धान होना, गलना, पिघलना।
गल(पु०)–गला, गर्दन, ग्रीवा, रस्सी, रस्सा, बाजा, मछली।
गलक(पु०)–पूर्ववत्। [सूज आना।
गलगण्ड(पु०)–गले की गिलटियों का
गलन्तिका(स्त्री०)–जलझरी।
गलद्वार(न०)–मुँह, मुख।
गलस्तन (न०)–बकरी के गले में जो मांस लटका रहता है।
गलस्तनी(स्त्री०)–बकरी, अजा।
गलित(वि०)–गला हुआ, बहा हुआ, गिरा हुआ, नष्ट, सड़ा हुआ, घटा हुआ।
गलितकुष्ठ(न०)–कुष्ठरोगकी वह दशा जब उंगलियां गलने लगती हैं।
गलितनयन (वि०)–अन्धा, जिस की आंखें जाती रही हों।
गलितयौवन(वि०)-जिसकी युवावस्था बीत गई हो, वृद्ध।
गलि(पु०)–गलिया बैल।
गल्भ(वि०)-साहसी, घमण्डी, अहङ्कारी
गल्ल(पु०)–गाल, कपोल, रुख़सार।
गल्लक (पु०)–महापात्र, शराब का प्याला।
गव–किन्हीं समासों के आरम्भ में गो को गव आदेश हो जाता है।
गवराज(पु०)–सांड, बैल।
गवय(पु०)–नीलगाय, जिस की पूंछ का चंवर बनाया जाता है।
गवल(पु०)–जंगली भैंसा, वनमहिष।
गवाक्ष (पु०)–सूराख़, झरोखा, गोल खिड़की। [सूर्य, अग्नि।
गवांपति(पु०)-ग्वालिया, सांड, विज्ञार,
गवाशन(पु०)–चमार, चाण्डाल।
गविनी(स्त्री०)–गायों का समूह।
गविष्ठ(पु०)–सूर्य, हविर्भुज्।
गवेन्द्र (पु०)–अच्छा सांड, बढ़िया सांड, गायों का स्वामी।
गवेरुक(न०)–गेरू।
गवेष् (१०प०, १आ०)–ढूंढ़ना, तलाश करना, पूछगछ करना, इच्छा करना। [ढूंढ।
गवेषः–णम्-तलाश, पूछगछ, कोशिश,
गवेषणा(स्त्री०)–पूर्ववत्।
गव्य (न०)–गोदुग्ध, चरागाह, गो-समूह, गोबर, गोमूत्र, गोघृत।
गव्यूति(स्त्री०)–दो कोस।
गह् (१० उ०)–गाढ़ा होना, गहरा होना, कठिनता से प्रवेश करना।
गहन (वि०)–गहरा, घना, जिस में प्रवेश न किया जा सके, संजीदा, कठिन। न०–गहराई, कठिनाई, जंगल, झाड़ी, गुफा, छिपने की जगह, जल, आभूषण। पु०–परमात्मा।
गह्वर (पु०)–लतागृह, कुञ्ज। न०–गहन। वि०–गहरा, दुष्प्रवेशनीय।
गा (१आ०)–जाना, गमन करना। (३प०)–गाना, तारीफ करना। स्त्री०–गीत, नज़्म।
गाङ्गेय (पु०)–भीष्म, कार्त्तिकेय। न०–स्वर्ण, धतूरा।

गाजर (न०)-गाजर नामक कन्द ।
गाडव (न०)-बादल, मेघ ।
गाढ (वि०)-गहरा, अतिशय, दृढ़, घना, मज़बूत, नहाया हुआ ।
गाढम् (अ०)-मज़बूती से, अधिक, अतिशयेन ।
गाणपत (वि०)-गणेशसम्बन्धी ।
गाणपत्य (पु०)-गणेश का पूजक । न०-गणेशपूजा, सेना की अधिनायकता, कप्तानी ।
गाण्डीव (न०)-धनुष्, अर्जुन का वह धनुष् जिसको उसने अग्नि से प्राप्त किया था ।
गाण्डीवी (पु०)-अर्जुन, धनुर्धारी ।
गातु (पु०)-गीत, गायक, कोयल ।
गात्र(न०)-शरीर,शरीर का अवयव ।
गात्रमार्जनी(स्त्री०)-तौलिया,अंगोछा
गात्ररुह् (न०)-शरीर पर उपजने वाले बाल ।
गात्रा (स्त्री०)-भूमि, पृथ्वी ।
गाथक (वि०)-गवैया, गायक; गाकर जीने वाला ।
गाथा (स्त्री०)-आर्याछन्द, कथा, कहानी, आख्यायिका ।
गाध् (१आ०)-डुबकी लगाना, तलाश करना, ठहरना ।
गाध (न०)-तली, तलहटी, जगह, सपला जल । वि०-उथला, जो बहुत गहरा न हो । [नाम ।
गाधि (पु०)-विश्वामित्र के पिता का
गाधिनगर(न०)-वर्तमान कन्नौज ।
गाधेय(पु०)-विश्वामित्र ।
गान्तु(पु०)-मुसाफ़िर, गवैया ।
गान्त्री(स्त्री०)-बैलगाड़ी, छकड़ा ।
गान्दिनी(स्त्री०)-गंगा का वाचक ।
गान्धर्व (पु०)-गवैया, विवाहभेद, सामवेद का उपवेद, घोड़ा ।
गान्धर्विक(पु०)-गवैया, गायक ।
गान्धर्वी(स्त्री०)-दुर्गा ।
गान्धार(पु०)-कन्धार देश का प्राचीन नाम, सिन्दूर, राग का तीसरा स्वर । [शकुनि का विशेषण ।
गान्धारि(पु०)-दुर्योधन का मामा,
गान्धारी(स्त्री०)-गान्धारराज सबल की कन्या जो धृतराष्ट्र को विवाही थी ।
गान्धारेय(पु०)-दुर्योधन का वाचक ।
गान्धिक (पु०)-गन्धी, सुगन्ध बेचने वाला, लेखक । [वाला ।
गामी[न्] (वि०)-गमनशील, जाने
गाम्भीर्य(न०)-गहराई, गम्भीरता, सज्जीदगी ।
गाय(पु०)-गाना, गीत ।
गायक(पु०)-गानेवाला, गवैया ।
गायत्री (स्त्री०)-चौबीस मात्राओं का एक वैदिक छन्द, एक प्रसिद्ध वेदमन्त्र जो इस प्रकार है-"ओं भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात्" ।
गायन(पु०)-गाने वाला, गवैया ।
गार्ग्य(वि०)-गर्ग ऋषि से उत्पन्न ।
गार्ध्य(न०)-लालच । [स्थिति ।
गार्हपत्य(न०)--गृहस्थ का पद और

गार्हपत्य (न०)–कुटुम्ब का शासन। पु०–अग्निभेद जो गृहस्थ को सर्वदा अपने घर में सुरक्षित रखना चाहिये।
गार्हस्थ्य(न०)–गृहस्थाश्रम, कुटुम्ब-पालन, पञ्चयज्ञ।
गालव (पु०)–एक ऋषि, लोध्रवृक्ष।
गालि(स्त्री०)–निन्दा, कुत्सितवाणी।
गाह् (१आ०)--नहाना, डुबकी लगाना, विलोडन करना, हिलाना।
गाहः-नम्--नहाना, डुबकी लगाना।
गिन्दुक (पु०)--खेलने की गेंद।
गिर्–रा (स्त्री०)–वाणी, भाषा, आवाज़, कथन, शब्द।
गिरि (पु०)–पर्वत, पहाड़, ऊंचाई, चट्टान, सन्यासियों की एक उपाधि, बादल, ७ का अंक। स्त्री०-निगलना, चूहो, सूपी।
गिरिक (पु०)–शिव का वाचक, खेलने की गेंद।
गिरिकन्दर (पु०)–खाई, गुफा।
गिरिकर्णिका (स्त्री०)–भूमि, पृथ्वी।
गिरिका (स्त्री०)–छुहिया, चूहो।
गिरिजा (स्त्री०)–हिमालय की पुत्री पार्वती पर्वतकदली।
गिरिदुर्ग (न०)–पहाड़ी क़िला।
गिरिद्वार (न०)–पहाड़ी रास्ता, दर्रा, पास।
गिरिराज (पु०)–ऊंचा पर्वत हिमालय का बोधक।
गिरिशृङ्ग (न०)–पर्वत की चोटी।
गिरिश (पु०)–शिव का वाचक।
गिरिसार (पु०)–लोहा टीन।
गिरिसुता (स्त्री०)–पार्वती।
गिरीश (पु०)–महादेव।
गिल् (६ प०)=गृ।
गिलित (वि०)–भक्षित, खाया हुआ।
गीत (वि०)–गाया हुआ, कहा हुआ, कीर्तित। पु०–गाना, गाने की वस्तु।
गीता (स्त्री०)–गुरु और शिष्य के संवाद रूप से धर्मोपदेश। यद्यपि गीता नाम की कई एक पुस्तकें विद्यमान हैं परन्तु इस नाम से विशेष कर "भगवद्गीता" का ही बोध होता है।
गीति (स्त्री०)–छन्दोभेद।
गीतिका (स्त्री०)–छोटा गीत।
गीथा (स्त्री०)–गीत, वाणी।
गीर्णि (स्त्री०)–स्तुति, बड़ाई, खाना।
गु (६ प०)–मल त्यागना, पाख़ाने जाना।
गुग्गुल–लु (पु०)–सुगन्धित द्रव्य, गूगल।
गुच्छ–क (पु०)–गुच्छा, पुष्पसमूह, मोर के पर, मोतियों का हार, गुलदस्ता।
गुच्छपत्र (पु०)–ताड़का पेड़।
गुच्छफल (पु०)–कदली वृक्ष, करंजा, अंगूर की बेल।
गुज्–ञ्ज् (१ प०)–गूंजना, शब्द करना, भिनभिनाना।
गुञ्ज –नम्–भिनभिनाहट, कूंज।
गुञ्जा–ञ्जिका (स्त्री०) घोंटली, घोंटली का वृक्ष, तीन जौ का परिमाण।
गुटी–टिका(स्त्री०)–गोली, मोती, कोई गोल वस्तु।
गुड् (६ प०)–हिफ़ाज़त करना, रक्षा करना, मारना।
गुड (पु०)–इसी नाम से प्रसिद्ध इक्षुविकार, खेलने की गेंद, हाथी का सन्नाह [फन्दा]।

गुडत्वक् [च्] (पु०)–दालचीनी।
गुडल(न०)–गुड की शराब।
गुडाकेश(पु०)–अर्जुन का वाचक,शिव।
गुडू [डू] ची (स्त्री०)–गिलोयनामक प्रसिद्ध बेल।
गुण् (१० उ०)–सलाह देना, गुणन करना, बुलाना।
गुण (पु०)–लक्षण, सिफ़त, तारीफ, खूबी, विशेषता, लाभ, असर, प्रभाव, कमान की ज्या, बाजे का तार, नस, रग, बत्ती, रस्सी; रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और विषय ये पांच इन्द्रियविषय। व्याकरण में इ, उ, ऋ और लृ को ए, ओ, अर् और अल् का आदेश होना।
गुणक (पु०)–गुणा देने वाला, गुणन करने वाला। [बखानना।
गुणकीर्त्तन(न०)–गुणानुवाद, गुणों का
गुणगान(न०)–पूर्ववत्।
गुणग्रहण(न०)–अच्छे गुणों का ले लेना, गुणगान।
गुणग्राहक(पु०)–क़दरदान।
गुणग्राम(पु०)–गुणों का समूह।
गुणज्ञ (वि०)–गुणों का जानने वाला, क़दरदान। [गुणनक्रिया।
गुणता-त्वम्–नेकी,अच्छा गुण, ज़रब,
गुणन (न०)–गिनना, गुण दोष का बयान करना, ज़रब देना।
गुणवान् [वत्] (वि०)–गुण वाला, अच्छा, गुणी। [निरर्थक।
गुणहीन (वि०)–गुणरहित, निकम्मा,
गुणातीत (वि०)–लक्षणरहित। पु०–परमात्मा। [नेक, योग्य।
गुणान्वित(वि०)–अच्छे गुणों वाला,
गुणाकर(पु०)–गुणों की खान, जिस में सारे गुण अच्छे पाये जांय।
गुणी [न्] (वि०)–गुणवाला।
गुण्ठ्(१०उ०)–घेरना, छिपाना, ढकना।
गुण्ठित(वि०)–घिरा हुआ, छिपा हुआ, घटा हुआ।
गुण्ड् (१० प०)–ढकना, छिपाना, पीसना, चूर्ण करना।
गुण्डिक(पु०)–आटा, मैदा, चूर्ण।
गुत्स(पु०)–गुच्छ, गुच्छा।
गुत्सक(पु०)–मक्खी उड़ाने की चौरी, गुच्छा, बंडल।
गुद् (१आ०)–खेलना।
गुद(न०)–गुदा, पायु, अपान।
गुदकील-क(पु०)–अर्शरोग, बवासीर।
गुदाङ्कुर–गुदोद्भव (पु०)–पूर्ववत्।
गुधित(वि०)–घिरा हुआ,बन्द किया हुआ।
गु-द्राल(पु०)–चातक पक्षी।
गुप् (१प०)–छिपाना, ढकना, हिफ़ाज़त करना, निगहबानी करना, रक्षा करना। (१ आ०)–परहेज़ करना, नफ़रत करना, छिपाना। (१० उ०)–चमकना, बोलना, छिपाना।
गुपिल(पु०)–राजा, रक्षक।
गुप्त(वि०)–रक्षित, छिपा हुआ। पु०–वैश्य की उपाधि, विष्णु।
गुप्तचर(पु०)–बलराम,जासूस,भेदिया।

गुप्तदान(न०)--ऐसा दान जिसमें दाता अपने नाम को प्रकाशित नहीं करता।
गुप्ति (स्त्री०)--रक्षा, छिपावट, रक्षा का उपाय, पहरा, जेलखाना, मैला डालने की जगह, रोकथाम।
गुफ् [स्फ्] (६प०)--गूंथना, बांधना, गांठना।
गुम्फित(वि०)--ग्रथित, गुंथा हुआ।
गुर् (६ आ०)--यत्न करना, कोशिश करना। (४आ०)-मारना, नुक़सान पहुंचाना।
गुरु(वि०)--भारी, वजनी, बड़ा, लम्बा, महत्त्वपूर्ण, अतिशय, पूजनीय, प्यारा, अहङ्कारयुक्त, सकील, कीमती। (पु०)--पिता, पितामह, बड़ेरा, पूजनीय पुरुष, स्वामी, शासक, आचार्य, पाठक, उस्ताद, बृहस्पति, द्रोण का वाचक, परमात्मा।
गुरुकार्य(न०)--बड़ा काम।
गुरुजन(पु०)--रिश्ते में बड़ा, पूजनीय मनुष्य। [बोझल।
गुरुतर (वि०)--अधिक भारी, अधिक
गुरुतम(वि०)--सब से भारी, सर्वोत्कृष्ट।
गुरुता(स्त्री०)--बड़प्पन, महत्त्व, भारीपन, मान।
गुरुत्व(न०)--पूर्ववत्।
गुरुदक्षिणा (स्त्री०)--विद्यासमाप्ति के पश्चात् गुरु की भेंट।
गुर्जर (पु०)--गुजरातप्रदेश, गुजराती।
गुर्विणी(स्त्री०)--गर्भिणी, गर्भवती।
गुर्वी(स्त्री०)--गुरु की स्त्री, गर्भिणी।
गुलिका(स्त्री०)--मोती, मुक्ता, गेंद।
गुल्फ (पु०)--गट्टा, पैर की गांठ, पादग्रन्थि।
गुल्म (अस्त्री०)--वृक्षसमूह, झाड़ी, जंगल, सेना का एक बहुत छोटा भाग, प्लीहा, दुर्ग, मात।
गुल्मकेश(वि०)--घुंघराले बालोंवाला।
गुवाक(पु०)--सुपारी का पेड़।
गुह् (१ उ०)--छिपाना, ढांकना।
गुह(पु०)--घोड़ा, कार्त्तिकेय, राम के मित्र एक निषादराज का नाम।
गुहा(स्त्री०)--छिपने की जगह, गढ़ा, गुफा। [परमात्मा।
गुहाशय(पु०)--सिंह, चीता, चूहा,
गुहिन(न०)--झाड़ी, झाड़ीदार जंगल।
गुहिल(न०)--सम्पत्ति, धनधान्य।
गुहेर(पु०)--रक्षक, संरक्षक, लुहार।
गुह्य (वि०)--छिपा हुआ, छिपाने योग्य, अज्ञात। पु०--धूर्तता, कछुआ। न०--भेद, रहस्य, गुप्तेन्द्रिय, गुदा।
गुह्यनिष्यन्द(पु०)--पेशाब, मूत्र।
गू (६प०)--मल त्यागना। स्त्री०--मल, गिलाज़त।
गूढ(वि०)--छिपा हुआ, ढका हुआ, वेषयुक्त, अप्रत्यक्ष। [सुरंग।
गूढपथ-मार्ग(पु०)--छिपा हुआ रास्ता,
गूढपुरुष(पु०)--गुप्तचर, भेदिया।
गूढमैथुन(पु०)--काक, कौवा।
गूथ(अस्त्री०)--विष्ठा, मल, गू।
गूर्=गुर् धातु।

गूवाक(पु०)–सुपारी।
गूहन(न०)–छिपाना।
गॄ (१ प०)–तर करना, सींचना, देना, स्वीकार करना।
गृञ्जन (अस्त्री०)–शलगम, कोई २ गाजर भी इस का अर्थ करते हैं।
गृध्(४प०)–लालच करना, चाहना।
गृधु(वि०)–कामी। पु० कामदेव।
गृध्नु(वि०)–लालची, लुब्ध, आतुर।
गृध्र(वि०)–लोभी। अस्त्री०–गीध, गिज्ज। [तर्कबुद्धि।
गृधू (स्त्री०)–अपानवायु, समक्ष,
गृष्टि (स्त्री०)–एक वार जनने वाली गौ। [मकान, भार्या।
गृह (न०)–घर, रहने का स्थान,
गृहकरण (न०)–अमूरख़ानगी, घरेलू कारवार, गृहनिर्माण।
गृहकलह(पु०)–घरेलू झगड़े।
गृहच्छिद्र (न०)–घर के भेद, घर की बदनामी।
गृहजन (पु०)–कुटुम्ब का मनुष्य, कुटुम्ब।
गृहदेहली (स्त्री०)–घर की दहलीज, दुवारी।
गृहपति (पु०)–गृहस्थ, घर का मालिक, कुटुम्ब में सब से बड़ा मनुष्य।
गृहपत्नी(स्त्री०)–घर की मालकिन।
गृहप्रवेश (पु०)–किसी नवीन घर में प्रवेश करते समय अग्निहोत्रादि शुभकर्म का अनुष्ठान।
गृहपाल्य (पु०)–गृहस्वामी, गृहस्थ।
गृहरन्ध्र (न०)–घरेलू झगड़े।
गृहसंवेशक (पु०)–राज, मैमार, घर बनाने वाला।
गृहस्थ (पु०)–घर में रहने वाला अर्थात् दूसरे आश्रम में स्थित।
गृहस्थाश्रम (पु०)–ब्रह्मचर्याश्रम के पश्चात् दूसरा आश्रम जिस में पुरुष पुत्रकलत्र के साथ निवास करता हुआ सांसारिक सुखों का अनुभव करता है।
गृहागत (पु०)–मेहमान।
गृहाश्रम=गृहस्थाश्रम। [की पत्नी।
गृहिणी (स्त्री०)–गृहस्थिन, गृहस्थ
गृही[न्](पु०)–घर का स्वामी,गृहस्थ।
गृह्य (वि०)–घरेलू, पालतू।
गृहीत (वि०)–ग्रहण किया हुआ, पकड़ा हुआ।
गॄ (६प०) [गिरति,गिलति]-निगलना, खाना, थूकना। (९ प०) बताना, जनाना, पुकारना,घोषणा करना।
गेन्दु[न्दु]क (पु०)–खेलने की गेंद।
गेय (वि०)–गाने योग्य। न०–गीत।
गेष् (१आ०)–तलाश करना, ढूंढना, तहक़ीक़ात करना।
गेष्ण–ष्णु (पु०)–गवैया, गायक।
गेह (न०)–घर, गृह,रहने का स्थान।
गेहिनी (स्त्री०)–गेहिनी, गृहस्थिन।
गेही [न्] (वि०)–गृही, गृहस्थ।
गेहेशूर (पु०)–जो घर में बहादुरी जतलाता हो अर्थात् घमण्डी किन्तु कापुरुष।
गै(१प०)–गीत गाना, कीर्तन करना।

गैरिक-रेय (वि०)-पहाड़ी । न०-गेरू।

गो (अव्लो०)-गाय नामक प्रसिद्ध पशु, बैल, आकाश, किरण, स्वर्ग, वज्र, तीर, हीरा । स्त्री०-गाय, पृथ्वी, वाणी, सरस्वती, माता, चक्षु । पु०-बैल, सांड, सूर्य, चन्द्रमा, गवैया, घर ।

गोकरण (पु०)-खिच्चर, साप, गाय का कान, एक तीर्थ ।

गोकृत (न०)-गोबर ।

गोघातक(पु०)-गाय का मारने वाला,

गोचर (पु०)-चरागाह ।

गोचारक (पु०)-ग्वालिया ।

गोतम (पु०)-एक ऋषि का नाम, अहल्या का पति ।

गोतमी (स्त्री०)-गोतम की स्त्री अर्थात् अहल्या ।

गोत्र (न०)-वंश, कुटुम्ब, अस्तबल, गोशाला,उपनाम, उपाधि । पु०-पर्वत ।

गोत्रज (वि०)-सगोत्र, एक ही गोत्रका।

गोत्रप्रवर (पु०)-वंश का आदिपुरुष जिसके नामपर वंश की प्रवृत्ति हुई । [अर्थात इन्द्र ।

गोत्रभिद् (पु०)-पर्वतों के फाड़ने वाला

गोत्रा (स्त्री०)-पृथ्वी, धरा ।

गोदन्त (न०)-हरताल ।

गोदान (न०)-गाय का दान करना, केशमुण्डन संस्कार ।

गोदारण (न०)-हल जोतना, फावड़ा, कुदाल, हल ।

गोदावरी (स्त्री०)-दक्षिण में एक नदी ।

गोदोहनी (स्त्री०)-दूध निकालने का पात्र ।

गोद्रव (न०)-गोमूत्र । [गाय ।

गोधन (न०)-गायका धन, बहुत सी

गोधर (पु०)--पर्वत, पहाड़ ।

गोधा (स्त्री०)-धनुष के चिल्ले की चोट से बचने के लिये आकड़ी पर बधा हुआ चमड़ा ।

गोधि (पु०)-मस्तक, माथा, मगर ।

गोधूम (पु०)-गेहूं, नारंगी ।

गोध्र (पु०)-पर्वत, पहाड़ ।

गोप (पु०)-रक्षक, छिपाना, शोभा, दीप्ति, ग्वालिया, गोपाल ।

गोपन (न०)-रक्षा, हिफ़ाजत, छिपाना, ख़तरा, आभा, ईर्षा, घबड़ाहट ।

गोपना (स्त्री०)-रक्षा, प्रकाश,शोभा ।

गोपनीय (वि०)-छिपाने योग्य, रक्षा करने योग्य ।

गोपा (स्त्री०)-श्यामालता ।

गोपानसी (स्त्री०)-छज्जा, घरो के आगे लगी हुई तिरछी लकड़ी ।

गोपाल (पु०)-गौओं का रखवाला, ग्वालिया, श्रीकृष्ण ।

गोप्ता[तृ](वि०)-रक्षक,छिपाने वाला।

गोप्य (वि०)-रक्षा के योग्य, छिपाने योग्य । [गोसमूह ।

गोमण्डल (न०)-आकाशमण्डल,

गोमती (स्त्री०)-एक नदी का नाम, वेद का मन्त्रविशेष ।

गोमथ (पु०)–ग्वालिया।
गोमय(अस्त्री०)–गाय का गोबर। न०-उपला, कण्डा, गोसा।
गोमायु (पु०)–गीदड़, शृगाल, एक गन्धर्व का नाम।
गोमुख (पु०)–जिसका मुख गौ के समान हो, वाद्यभेद, मगर।
गोमूत्र (न०)–गाय का मूत।
गोमृग (पु०)–नीलगाय, गवय।
गोमेध (पु०)–एक प्रकार का यज्ञ, इन्द्रियदमन, अश्वमेधयज्ञ।
गोरक्ष (पु०)–ग्वालिया।
गोरस (पु०)–गाय का दूध।
गोरोच(न०)–हरताल नामक उपधातु।
गोल (अस्त्री०)–गेंद, घेरा, वृत्त, गोल वस्तु, भूगोल। पु०–विधवा का जारपुत्र।
गोलक (पु०)–भूगोल, गेंद, काष्ठगेन्दुक, एक राशि में छः ग्रहों का जुड़ना, न०-कृष्णलोक।
गोला (स्त्री०)=गोल।
गोलांगूल (पु०)–वदरभेद, लगूर।
गोलोक (पु०)–स्वर्ग के एक भाग का नाम, विष्णुलोक।
गोलोमी (स्त्री०)–वेश्या, वारनारी।
गोवर्धन (पु०)–वृन्दावन के पास एक छोटी पहाड़ी का नाम।
गोविन्द (पु०)–कृष्ण, बृहस्पति, गोपाल।
गोविष्ठा (स्त्री०)–गाय का गोबर।
गोशाला (स्त्री०)–गायों के बांधने का स्थान।
गोष्ठ (१ आ०)–इकट्ठा होना, एक स्थान पर जमा होना।
गोष्ठ (न०)–गोशाला, ग्वाल, गूजर, गोस्थान।
गोष्ठि–ष्ठी (स्त्री०)–सभा, कम्पनी, समिति, कानाफूसी, समूह, ढेर, गुफ्तगू, मजमूआ।
गोष्पद (न०)–वह देश जहां बहुत गौ हों, गाय के पैर पड़ने से उत्पन्न गढ़ा।
गोस (पु०)–उषाकाल, सवेरा, ग्रीष्म ऋतु।
गोस्तन (पु०)–गाय का थन, चार लड़ी का हार।
गोस्थान–नक (न०)–गाय बांधने की जगह, गोष्ठ, गोवाड़ा।
गोह्रन (न०)–छिपाना, गुप्तभाव।
गौंजिक (पु०)–सुनार, स्वर्णकार।
गौड़ (पु०)–उत्तरभारत के भाग का नाम, ब्राह्मणों का एक भेद जो गौड़देश में रहते हैं, गौड़देश-निवासी।
गौड़ी (स्त्री०)–गुड़ से बनी हुई एक प्रकार की मदिरा।
गौडिक (पु०)–ईख, गन्ना, इक्षु।
गौण (वि०)–सहायक, मुख्य से भिन्न, गैरजरूरी, छोटा, गुण से उत्पन्न।
गौणपक्ष (पु०)–युक्ति का निर्बल भाग, दलील की कमजोरी।
गौतम(पु०)–गौतम ऋषि की सन्तान, गौतमवंशज या गोत्रज, बुद्धदेव, न्यायदर्शन के कर्त्ता, कृप, भारद्वाज।
गौतमी(स्त्री०)–कृपी का नाम, बुद्ध

की शिला, गोदावरी, गोमती, दुर्गा।
गौनर्द (पु०)-पतञ्जलि।
गौमेय(पु०)-वैश्यस्त्री का पुत्र।
गौधार(पु०)-गिरगिट।
गौर(वि०)-श्वेत, सफ़ेद, स्वच्छ, सुन्दर। पु०-श्वेत रङ्ग, चन्द्रमा, चैतन्य, गुलाबी रङ्ग, सफेद सरसों। न०-स्वर्ण, कुंकुम, पद्मपराग।
गौरव (न०)-गुरुता, गुरुत्व, वजन, भारीपन, बड़प्पन, महिमा, आदरसत्कार।
गौरिका (स्त्री०)-कुमारी कन्या, अक्षतयोनि।
गौरिल(पु०)-सफेद सरसों, लौहचूर्ण।
गौरी(स्त्री०)--पार्वती, आठ वर्ष की कन्या, सुन्दरी, पृथ्वी, गोरोचना, तुलसी, वाणी।
गौष्ठीन(न०)-पुराना गोबाड़ा।
ग्रथ्(१ आ०)-झुकाना, तिरछा करना, क्रूर होना।
ग्रथित(वि०)--गुथा हुआ, पकड़ा हुआ।
ग्रन्थ्(१० उ०,१ आ०,९,९ प०)--बाधना, जकड़ना, क्रमबद्ध करना, लिखना, बनाना।
ग्रन्थ(पु०)-पुस्तक, किताब, रचना, दौलत, सम्पत्ति, गुम्फन, अनुष्टुप् छन्द का श्लोक।
ग्रन्थनम्-ना-गूंथना, गुम्फन, रचना।
ग्रन्थि(पु०)-गांठ, जोड़, थैली, गुच्छा, क्रूरता, कुटिलता, शरीर का जोड़, धन।
ग्रन्थिक(पु०)-ज्योतिषी, दैवज्ञ, नकुल का नाम जो उसने विराट के यहां धारण किया था।
ग्रन्थिबन्धन (न०)--विवाहसमय में वर वधू का आंचल बांधना।
ग्रन्थिमूल(न०)-गृञ्जन, लहशुन।
ग्रन्थी[न्] (पु०)-किताब का कीड़ा, विद्वान्, शास्त्रज्ञ।
ग्रन्थिल(वि०)-गांठदार। न०-अदरक, पिप्पलीमूल।
ग्रस् (१आ०)-निगलना, खाना, खर्च करना, पकड़ना।
ग्रस्त(वि०)--खाया हुआ, पकड़ा हुआ, गृहीत, गहा हुआ।
ग्रस्तोदय(पु०)--ग्रहण के पश्चात् सूर्य वा चन्द्र का उगना।
ग्रह् (९उ०)--पकड़ना, ग्रहण करना, लेना, बन्दी बनाना।
ग्रह (पु०)--ग्रिफ़, ग्रहण, पकड़, लूट, रसीद, आकाश के [सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु और केतु] ग्रह, चन्द्र और सूर्य का ग्रास, मगर, आशंका, अनुग्रह, घर।
ग्रहक(पु०)-क़ैदी, बन्दी।
ग्रहण(न०)-बन्धन, क़ैद, पकड़, स्वीकारी, आदान, इन्द्रिय, सूर्य वा चन्द्र का ग्रसा जाना।
ग्रहणीय(वि०)--स्वीकार करने योग्य।
ग्रहणीहर (पु०)-लवंग, लौंग।
ग्रहनेमि (पु०)-चन्द्रमा, चांद।
ग्रहपति (पु०)-चन्द्रमा, चांद, सूर्य।

ग्रहपीड़ा (स्त्री०)–सूर्य वा चन्द्रग्रहण, ग्रहों द्वारा उत्पन्न कष्ट।
ग्रहराज(पु०)--सूर्य,चन्द्रमा,वृहस्पति।
ग्रहविप्र (पु०)--ज्योतिषी, दैवज्ञ।
ग्रहशान्ति (स्त्री०)–यज्ञकर्म से ग्रहों द्वारा उत्पन्न पीड़ा को शान्त करना
ग्रहीतव्य (वि०)- ग्रहण करने योग्य, सीखने योग्य।
ग्रहीता[तृ](वि०)–लेनेवाला, स्वीकार करने वाला, अधमर्ण, खरीदार।
ग्राम (पु०)–गाव, पिण्ड, समूह, ढेर, जाति,कुटुम्ब, वाद्यका स्वरसमूह।
ग्रामक (पु०)–गाव का रहने वाला, गवार, ग्रामीण।
ग्रामचर्या (स्त्री०)–स्त्रीसभोग।
ग्रामज (वि०)-गवार, अशिक्षित।
ग्रामणी (पु०)–गाव का प्रधान, गाव का नेता, नापित, विष्णु।
ग्रामधर्म (पु०)–मैथुनकार्य, स्त्रीसभोग
ग्राममुख (न०)–पैंठ, बाजार।
ग्राममृग (पु०)–कुत्ता, कुक्कुर।
ग्रामलुण्ठन (न०)–गाव का लूटना।
ग्रामवास (पु०)–गाव में रहने वाला, ग्रामीण।
ग्रामषण्ढ (पु०)–क्लीव, नपुसक।
ग्रामसघ (पु०)–गाव की पचायत।
ग्रामयाजक(पु०)–बहनोई,भगिनीपति
ग्रामिक (पु०)–गाव का सरदार, ग्रामनिवासी।
ग्रामिणी (अस्त्री०)–नील या वृक्ष।
ग्रामीण (वि०)-गवार, देहाती पु०--ग्रामनिवासी। कुत्ता, कौवा।
ग्रामेय (वि०)–ग्रामज, गवार।
ग्रामेयी (स्त्री०)- वेश्या, वारनारी।
ग्राम्य (वि०)–ग्राम में उत्पन्न,ग्राम-सम्बन्धी,गवार,पालतू,नीच, मूढ
ग्राम्यधर्म (पु०)–ग्रामीण का कर्त्तव्य, स्त्रीसमागम।
ग्राम्यबुद्धि (वि०)–गवार,अनजान,मूर्ख
ग्रावन् (पु०)–पर्वत, बादल, पत्थर, शिला। वि०–कठोर, सख्त।
ग्रास (पु०)–अन्न का टुकड़ा, इतना अन्न जितना मुख में एक बार आजावे, ग्रहण।
ग्राह (पु०)–पकड़, गिरफ्त, नाका,मगर, क़ैदी, समझ, इरादा, रोग,आरम्भ
ग्राहक (वि०)–ग्रहण करने वाला। पु०–खरीदार, पुलिसअफसर, बाज, कङ्कपक्षी।
ग्राह्य (वि०)-- ग्रहण करने योग्य, समझने योग्य। न०--भेंट।
ग्रीवा(स्त्री०)--गर्दन, गर्दन के पीछे का भाग।
ग्रीष्म(वि०)--गर्म, तप्त। पु०--गरमी का मौसम, ज्येष्ठ आषाढ मास।
ग्रुच् (१ प०)–लूटना,चोरी करना।
ग्रैवेय(अस्त्री०)--झालर, गले का हार, कण्ठी।
ग्लस्(१ आ०)--खाना, भक्षण करना।
ग्लह् (१,१० उ०)–जूआ खेलना, लेना, प्राप्त करना।
ग्लह(पु०)--जूआ, द्यूतक्रीड़ा,जुआरी।
ग्लान(वि०) -थका हुआ। न०--थकावट, रोग।

ग्लानि(स्त्री०)--थकावट, नफ़रत, कमज़ोरी, रोग, नाखुशी, नाराज़ी, अधःपात ।

ग्लुच् (१प०)–चुराना, छीनना, जाना।

ग्लेव् (१आ०)–पूजना, सेवा करना ।

ग्लै (१प०)–नापसन्द करना, थकना, उदासीन होना, मुरझाना ।

ग्लौ (पु०)–चन्द्रमा, पृथिवी ।

घ

घ (वि०)–समास के अन्त में इस का अर्थ मारने वाला नाश करने वाला होता है, जैसे–राजघ । पु०–घण्टी, घण्टी की आवाज़ ।

घग्घ् (१प०)–हंसना, मज़ाक उड़ाना।

घट् (१आ०)–मशग़ूल होना, हरकत करना, काम करना, पूरा करना, बनाना । (१०उ०)–मारना, चोट पहुंचाना, जोड़ना, चमकना ।

घट (पु०)–घड़ा, मटका, कलश, २० द्रोण का परिमाण ।

घटक (वि०)–योजक, जोड़ने वाला, पूरा करने वाला । पु०–विवाहादि का जोड़ मिलाने वाला ।

घटना (स्त्री०)–यत्न, कोशिश, पूर्त्ति, वाक़ात, किसी विषय का ख़याल, किसी अलक्षित बात का होना ।

घटा (स्त्री०)--यत्न, समूह, सेना, जमाअत । [वाला ।

घटिक (पु०)–कहार, पानी भरने

घटिका (स्त्री०)--घड़ी अर्थात् २४ मिनट का परिमाण, पैर का गट्टा, घड़, चूतड़ ।

घटित(वि०)–घटना में आया हुआ, जुड़ा हुआ, उत्पन्न, बना हुआ ।

घटी (स्त्री०)–छोटा घड़ा, एक घड़ी अर्थात आधा मुहूर्त्त, काल का परिमाण जानने के लिये जो वर्त्तन पानी में डुबका पड़ा रहता है ।

घटीयन्त्र(न०)–कुएं में से पानी निकालने का यन्त्र, अरघट, रहट ।

घटोत्कच (पु०)–हिडिम्बा राक्षसी के गर्भ से भीमसेन का एक पुत्र ।

घट्ट् (१आ०)–हिलना, रगड़ना, छूना ।

घट्ट् (१०उ०)–पूर्ववत् ।

घट्ट(पु०)–दरिया में उतरने की जगह, घाट, चुंगीघर ।

घट्टना (स्त्री०)–जीविकोपाय, पेशा, कम्पन, आन्दोलन ।

घण् (८उ०)–चमकना । [कहना ।

घण्ट् (१, १० प०)–बोलना, चमकना,

घण्टा (स्त्री०)–घण्टी, कांसी आदि धातु से बना हुआ पात्रविशेष जो कालपरिमाण करने में काम आता है ।

घण्टापथ(पु०)–राजमार्ग, बड़ा रास्ता, नगर का प्रधान मार्ग ।

घण्टिका (स्त्री०)–छोटी घंटी, टाल जो पशुओं के गले में बाधी जाती है ।

घण्ड(पु०)–मधुमक्षिका ।

घन(वि०)–मज़बूत, सख़्त, कठोर, मुञ्झिद, घना, गहरा, अप्रवेश्य, पूरा, शुभ । पु०–बादल, शरीर, समूह,

लौहदण्ड, कफ, कठोरता। न०-लोहा, घनहा, टीन।
घनकफ(पु०)-ओले का वाचक।
घनगर्जित (न०)-बादल की गरज, बहुत गहरा और जोर का शब्द।
घनज्वाला(स्त्री०)-विद्युत, बिजली।
घनताल(पु०)-सारस पक्षी।
घनतोल(पु०)-चातक पक्षी, पपीहा।
घननाभि(पु०)-धूम, धुआं।
घनपदवी (स्त्री०)-बादलों का मार्ग अर्थात् आकाश।
घनफल (न०)-रेखागणित में किसी वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई और गहराई की माप का गुणन।
घनरस(पु०)-कपूर,पानी, गाढ़ा रस।
घनश्याम (वि०)-अतिशय काला। पु०-कृष्ण, राम।
घनाकर(पु०)-वर्षाकाल, बरसात।
घनागम(पु०)-पूर्ववत्।
घनाघन (वि०)-घनी, खूंखार। पु०-इन्द्र, काला बादल।
घनात्यय(पु०)-शरद् ऋतु।
घनान्त(पु०)-पूर्ववत्।
घनामय(पु०)-खजूर का पेड़।
घनोदय(पु०)=घनाकर।
घनोपल(पु०)-बादल का पत्थर अर्थात् ओला। [करना।
घर् (१० प०)-ढकना, आच्छादित
घर(पु०)-मकान,गृह, रहने की जगह।
घरट्ट (पु०)-पीसने की चक्की।
घरघर(वि०)-अस्फुट, झटपट। पु०-गुर, गोर, करकराहट, बहते हुए पानी का शब्द।
घर्व् (१प०)-जाना, चलना।
घर्म (वि०)-उष्ण। पु०-गर्मी, ग्रीष्म ऋतु, पसीना, घाम,धूप, गोदुग्ध।
घर्मद्युति(पु०)-आदित्य, सूर्य।
घर्ष(पु०)-रगड़, घीसना।
घर्षण(न०)-रगड़ना, पीसना।
घर्मोदक-जल -पयस् (न०)-पसीना।
घस्मर(वि०)-पेटू, खूंखार।
घाट(पु०)-घड़ा, दरिया पर उतरने की जगह, ग्रीवा।
घाण्टिक(पु०)-धतूरा, घंटा बजाने वाला, वैतालिक।
घात(पु०)-चोट, प्रहार, वध, नाश, तीर, शक्ति।
घातक(वि०)-नाश करने वाला, मारने वाला, कातिल।
घाति(पु०)=घात।
घाती [न्] (वि०)=घातक।
घातुक(वि०)=घातक।
घार(पु०)-सेचन, सींचना,छिड़कना।
घास(पु०)-खाना, तृण, चारा, चरागाह का तृण।
घु (१ आ०)-आवाज करना, अस्फुट शब्द करना।
घुट् (१, ६ प०)-फिर से मारना, बदला लेना, रोकना। हिफाजत करना। (१ आ०)लौटना, बदला करना।
घुट टिक(पु०)-पाव की गाठ, गट्टा।
घुण (६ प०, १ आ०)-घूमना, चक्कर काटना।
घुण(पु०)-लकड़ी का कीड़ा।

घुघट-क(पु०)-पैर की एड़ी या गट्टा।
घुर् (६ प०)-गुरगुराना, खर्राटे भरना, शब्द करना।
घुरण(पु०)-ध्वनि, आवाज़।
घुर्घुर (पु०)-कीटविशेष, गुरगुराहट।
घुष् (१० उ०, १ प०)-शब्द करना, ज़ाहिर करना, तारीफ़ करना, सुनाना।
घुस्ट्र(न०)-गाड़ी, छकड़ा।
घुसृण(न०)-कुंकुम, केसर।
घूक(पु०)-उल्लू, उलूक।
घूकनादिनी(स्त्री०)-गंगा नदी।
घूकारि(पु०)-काक, कौआ।
घूर् (४ आ०)-क़त्ल करना, मारना।
घूर्ण् (६ प०, १ आ०)-घूमना, आगे पीछे सरकना, चक्कर काटना।
घूर्णवायु(पु०)-हवा का बगूला।
घृ(१ प०)-सींचना, छिड़कना। [इसी अर्थ में यह धातु १० उ०, ५ उ० भी होती है]।
घृण् (८ प०)-चमकना, जलना। (१ आ०)-पकड़ना।
घृण(पु०)-धूप, दिन, गर्मी, तेज़ी।
घृणा(स्त्री०)-दया, ममता, धिक्कार, नफरत, निन्दा।
घृणालु(वि०)-दयार्द्रचित्त, दयावान्।
घृणास्पद(वि०)-त्याज्य, क़ाबिले नफरत।
घृत(वि०)-सींचा हुआ, प्रकाशित। न०-घी, जल, मक्खन।
घृतकेश(पु०)-अग्नि, आग।
घृतधारा(स्त्री०)-घी की नदी।
घृतवान् (वि०)-चिकना। [कद।
घृतकुमारी(स्त्री०)-घीकुंवार, ग्विमी-
घृताची (स्त्री०)-रात्रि, सरस्वती, अप्सरा। वि०-चिकना, चमकदार।
घृताहुति(स्त्री०)-अग्नि में स्रुवे में भर कर घी का डालना।
घृष् (१ प०)-रगड़ना, घिसना, घिस-कर चमकाना, पीसना।
घृष्ट(वि०)-रगड़ा हुआ, घिसा हुआ।
घृष्टि (स्त्री०)-रगड़, पिसाई, स्पर्धा। पु०-सूअर।
घोट [क] (पु०)-घोड़ा, अश्व। [शत्रु
घोटकारि (पु०)-भैंसा, भैंस, घोड़े का
घोटी-टिका (स्त्री०)-घोड़ी।
घोणा (स्त्री०)-नासिका, घोड़े की नाक, सूअर की थूथरी।
घोर(वि०)-भयानक, ख़ौफनाक। पु०-शिव, ऋषिविशेष। न०-कुंकुम, भयकरता, ख़ौफ।
घोरा (स्त्री०)-रात्रि, रात। [मट्ठा।
घोल (अस्त्री०)-छाछ, तक्र, जलरहित
घोष (पु०)-शोर, बादलों की गरज, घोषणा, किंवदन्ती, ग्वालिया, अहीर, घोषी, कायस्थ, स्वर, मच्छर, अहीरों का गाव।
घोषण (न०)-विज्ञप्ति, रिपोर्ट, किसी बात को सर्वसाधारण के जत-लाने के लिये उच्चस्वर से कहना, मनादी, डोंडी, ढिंढोरा पीटना।
घोषणा (स्त्री०)-पूर्ववत्।
घ्रा (१ प०)-सूंघना, गन्धलेना, चूमना
घ्राण (वि०)-सूंघा हुआ। न०-गन्ध,

नासिका, सूँघना, सूँघने की वस्तु
घ्राणतर्पण (न०)–खुशबू, सुगन्धि।
घ्राणेन्द्रिय (न०)–सूँघने की इन्द्रिय अर्थात् नासिका। [योग्य।
घ्रातव्य (न०)–सुगन्धि। वि०–सूँघने
घ्रेय (न०)–बू, गन्ध।

ङ

ङ–कवर्ग का पञ्चम अक्षर, कोई शब्द जो इस अक्षर से आरम्भ होता हो देखने में नहीं आता। पु०–शिवका वाचक, इच्छा, ख्वाहिश, इन्द्रियविषय।

च

च (अ०)–और, तथा, भी, अनी, तादृश, निश्चय, यक़ीन, यदि, अन्वाचय। यह अव्यय गौणवाक्य को प्रधान वाक्य के साथ मिलाने में प्रयुक्त होता है। वि०–बुरा, बीजरहित। पु०–चन्द्रमा, कछुआ, चोर, शिव। [होना, चमकना।
चक् (१ उ०)–तृप्त होना, प्रसन्न
चकास् (२प०)–चमकना, दीप्त होना।
चकित (वि०)–भयातुर, हैरान, खौफ़ज़दा, डरा हुआ, डरपोक, विस्मित न०–भय, कम्पन।
चकोर (पु०)–चकवा, पक्षिविशेष। चन्द्रमा को देखकर यह पक्षी ऊपर को उड़ा करता है।
चक्क् (१० प०)–दुःखी होना, कष्ट देना।
चक्कल (वि०)–घेरेदार, गोल।
चक्रम(पु०) कुटिलता, शठता, बेईमानी
चक्र (पु०)–चकवा पक्षी, गिरोह, समूह। न०–गाड़ी का पहिया, कुम्हार का चाक, प्रान्त, घेरा, अध्याय, परिच्छेद, चक्कर काटना; विभाग।
चक्रक (वि०)–गोल, घेरेदार। पु०–एक प्रकार का तर्काभास।
चक्रगति (स्त्री०)–घूमना, चक्कर काटना।
चक्रजीवक (पु०)–कुम्हार, कुभकार।
चक्रदंष्ट्र (पु०)–शूकर, सूअर।
चक्रधर (पु०)–विष्णु, राजा, सांप। वि०–पहियेवाला।
चक्रनायक (पु०)–सेनानायक, कप्तान।
चक्रनेमि-धारा (स्त्री०)–पहिये के चारों ओर का घेरा।
चक्रपाणि (पु०)–विष्णु का वाचक।
चक्रपाद्-क (पु०)–हाथी, रथ, गाड़ी।
चक्रपाल (पु०)–प्रादेशिक शासक।
चक्रबन्धु-बान्धव (पु०)–सूर्य।
चक्रवाल (स्त्री०)–घेरा, अगूठी, ढेर, समूह।
चक्रभेदिनी (स्त्री०)–रात, रात्रि।
चक्रभ्रम (पु०)–पीसने की चक्की।
चक्रमुख (पु०)–शूकर, सूअर।
चक्रवर्ती (पु०)–शाहंशाह, सम्राट्।
चक्रवाक (पु०)–चकवा पक्षी।
चक्रवृद्धि (अस्त्री०)–सूद दर सूद, ब्याज पर ब्याज चढ़ना।

चक्रहस्त (पु०)–जिसने हाथ में चक्र धारण किया हो अर्थात् विष्णु।
चक्रा (स्त्री०)–नागरमोथा।
चक्राङ्ग (पु०)–हंस, रथ, चक्रवाकपक्षी।
चक्राट (पु०)–बाजीगर, सपेरा, शठ, ठग।
चक्री [न्] (पु०)–विष्णु, कुम्हार, मैशीनमैन, सम्राट्, गर्दभ, प्रादेशिक शासक, सर्प, कौआ।
चक्रीवान् [वत्] (वि०)–चक्र के समान घूमने वाला, गधा।
चक्ष् (२ आ०)–कहना, बोलना, त्यागना, देखना।
चक्षण (न०)–कहना, कथन, भूख बढ़ाने की एक प्रकार की चटनी।
चक्षुः [स्] (न०)–आंख, दृष्टि, देखने की इन्द्रिय, शोभा, प्रकाश।
चक्षुर्गोचर (वि०)–दिखाई देने वाला।
चक्षुःश्रवस् (पु०)–सांप, जिसके आंख ही कान हैं ऐसा जन्तु।
चक्षुष्मान् (वि०)–आंखों वाला।
चक्षुष्य (पु०)–नेत्र में डालने का अंजन, सुर्मा, काजल।
चक्षूरोग (पु०)–आंखों की बीमारी।
चक्रुण (पु०)–गाड़ी, रथ, वृक्ष।
चंक्रमण (न०)–टेढी चाल चलना, धीरे २ चलना।
चङ्ग (वि०)–खूबसूरत, चतुर, तन्दुरुस्त
चच् (१ प०)–जाना, हरकत करना, हिलना, कूदना।
चञ्च (पु०)–पांच अंगुलियों का परिमाण
चञ्चरि (पु०)–हंगारा मक्खी।
चञ्चल (वि०)–अस्थिर, न जमने वाला, कम्पित, कामुक, चपल। पु०–वायु, प्रेमी, कामी।
चञ्चला (स्त्री०)–बिजली, लक्ष्मी।
चञ्चा (स्त्री०)–बेंत की बनी हुई वस्तु, चटाई, घास की गुड़िया।
चञ्चु (पु०)–हरिण। स्त्री०–चोंच। वि०–चतुर, प्रसिद्ध।
चंचुभृत (पु०)–पक्षी, चिड़िया।
चञ्चू-चुका (स्त्री०)–पक्षी की चोंच।
चट् (१ प०)–तोड़ना, अलग करना, ढकना। (१० उ०)–मारना, छेदना।
चटक (पु०)–खुटकढ़ैया पक्षी।
चट [टि] का (स्त्री०)–पूर्ववत्।
चटन (न०)–चटखना, टूटना।
चटु (पु०)–पेट। अस्त्री०–खुशामद की वाणी। [सुन्दर, प्रियदर्शन।
चटुल (वि०)–चञ्चल, अस्थिर, चपल,
चटुला (स्त्री०)–विद्युत्, बिजली।
चण् (१ प०)–आवाज़ करना, जाना, मारना। [का नाम।
चणक (पु०)–सस्यभेद, चना, एक मुनि
चणकात्मज (पु०)–चाणक्य मुनि।
चण्ड (वि०)–भयानक, तीक्ष्ण, तीव्र, क्रोधालु, क्रूर। पु०–राक्षस, शिव, इमली का पेड़।
चण्डमुण्डा (स्त्री०)–दुर्गा का एक भेद।
चण्डविक्रम (वि०)–अत्यन्त बलशाली।
चण्डा (स्त्री०)–क्रोधालु स्त्री।
चण्डांशु (पु०)–जिस की किरण तीव्र हो अर्थात् सूर्य।

चण्डातक(अस्त्री०)–स्त्रियों के पहरने का अधोवस्त्र, लहँगा।
चण्डाल (वि०)–क्रूर, कुकर्मी। पु०–अपने नाम से प्रसिद्ध एक जाति, महानीच, अन्त्यज।
चण्डी (स्त्री०)–अतिकोपना स्त्री, दुर्गा का रूप, चोट।
चत्(१ उ०)–मांगना, याचना करना।
चतु [र्] (वि०)–चार की गिनती।
चतु शाला(स्त्री०)–चौखण्डी, चार घरों वाला मन्दिर।
चतुर(वि०)–होशियार, कुशल, सुन्दर पु०–हाथीखाना, गोल तकिया। न०–चतुराई।
चतुरंश(पु०)–चौथा भाग।
चतुरंग (वि०)–चार प्रकार का, चार अंगों वाला। न०–हाथी, घोड़ा, रथ और पैदल इन चार अंगों से युक्त सेना, चौपड़। [वाचक।
चतुरशीति (स्त्री०)–८४ संख्या का
चतुरस्त्र[श्र] (वि०)–चौकोन, चारकोण वाला। पु०–चार कोण का खेत
चतुरानन(पु०)–ब्रह्मा।
चतुराश्रम(पु०)–ब्रह्मचर्य,गृहस्थ, वान-प्रस्थ और सन्यास ये चार आश्रम
चतुर्गव(पु०)–चार बैल की गाड़ी।
चतुर्गुण(वि०)–चौगुणा।
चतुर्थ(वि०)–चौथा।
चतुर्थांश(पु०)–चार भागों में से एक। वि०–चौथा।
चतुर्थी(स्त्री०)–चौथी तिथि।
चतुर्दश(वि०)–चौदहवां।
चतुर्दशन् (वि०)–चौदह।
चतुर्दिशम्(अ०)–चारों ओर।
चतुर्दशी(स्त्री०)–कृष्ण और शुक्लपक्ष की चौदहवीं तिथि। [से।
चतुर्धा(अ०)–सब तरह से,चारों प्रकार
चतुर्बाहु-र्भुज(पु०)–विष्णु का वाचक। न०–चतुष्कोण क्षेत्र।
चतुर्भाग(पु०)–चौथा हिस्सा,चौथाई।
चतुर्मास (न०)–आषाढशुक्ला एकादशी से कार्तिकशुक्ला एकादशी तक का समयविभाग, चौमासा, बरसात।
चतुर्मुख (पु०)–ब्रह्मा का वाचक।
चतुर्युग (न०)–चारों युग, सत्ययुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग।
चतुर्वक्त्र (पु०)–ब्रह्मा।
चतुर्वर्ग (पु०)–चार वर्ग अर्थात् धर्म, अर्थ,काम और मोक्ष का समुदाय।
चतुर्वर्ण(पु०)–चारवर्ण अर्थात्ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
चतुर्विंश(वि०)–चौबीस संख्या वाला, चौबीसवां।
चतुर्विंशति (स्त्री०)–२४ की संख्या का वाचक।
चतुर्विद्य(वि०)–चारों वेदों का ज्ञाता।
चतुर्विद्या (स्त्री०)–चार वेद अर्थात् ऋक, यजु, साम और अथर्व।
चतुर्विध (वि०)–चार प्रकार का।
चतुर्विधशरीर (न०)–चार प्रकार के शरीर अर्थात् जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज्ज।
चतुर्वेद (पु०)=चतुर्विद्या।

चतुर्व्यूह (पु०)–विष्णु,संसारोत्पत्तिके चार हेतुसमूह यथा–वासुदेव, संकर्षण,प्रद्युम्न और अनिरुद्ध ।
चतुल (वि०)–रखने वाला, स्थापयिता । [चारों ।
चतुष्क (न०)–चार खम्भों वाला घर,
चतुष्की (स्त्री०)–मशहरी,नदीविशेष।
चतुष्टय (वि०)–ऐसी वस्तु जिसके चार भाग हों, चार प्रकार का ।
चतुष्टयी (स्त्री०)=चतुष्टय ।
चतुस्त्रिंशत (वि०)–चौंतीसकी संख्या का बोधक । [का वाचक ।
चतुष्पञ्चाशत(वि०)–चौवन की संख्या
चतुष्पथ (पु०)–चार आश्रमों वाला ब्राह्मण । न०–ऐसा प्रदेश जहां से चारों ओर को रास्ता जाता हो अर्थात् चौराहा ।
चतुष्पद (पु०)–चौपाया,पशु, चारपैरों वाला, ज्योतिष में एक करण ।
चतुष्पदी (स्त्री०)–चार पांव वाली, चार हिस्सों वाली, चौपदी, छन्दोभेद ।
चतुष्पाटी (स्त्री०)–चारों दिशाओं के विदीर्ण करने वाली नदी ।
चतुष्पाठी (स्त्री०)–वह छात्रालय जिस में चारों वेदों का पाठ पढाया जाता हो अर्थात् चौपाठी ।
चतुष्पाणि (पु०)–विष्णु का वाचक ।
चतुष्पाद-द् (वि०)=चतुष्पद ।
चतुष्पार्श्व (न०)–चारों ओर ।
चतुःषष्टि (स्त्री०)–चौंसठ की संख्या का वाचक ।

चतुःषष्टिकला (स्त्री०)–चौंसठ कला ।
चत्वर (न०)–आंगन, होमार्थ निर्मित वेदी, स्थण्डिल, वेहा ।
चत्वारिंशत (स्त्री०)–चालीस की संख्या का नाम । [घास ।
चत्वाल (पु०)–होमकुण्ड, कुश नामक
चद् (१ प०)–मांगना, याचना करना, पूछना । [चमकना ।
चद् (१ प०) [इदित्]–प्रसन्न होना,
चन् (१ प०)–शब्द करना, मारना ।
चन (अ०)–अपूर्ण, न पूरा,जो कुछभी।
चञ्च (१ प०)–गति,जाना,गमनकरना।
चन्द् (१ प०)–चमकना, खुश होना, प्रसन्न होना ।
चन्द-क (पु०)–चन्द्रमा, कर्पूर, काफूर, मत्स्यभेद ।
चन्दनः-नम्–चन्दन नामक प्रसिद्ध सुगन्धित वृक्ष, एक वानर ।
चन्दनधेनु(स्त्री०)–वह गौ जिसके शरीर पर चन्दन लगाया गया हो, पति और पुत्र के जीवित होने पर मृत स्त्री के उद्धारार्थ चन्दनाङ्कित जो गौ ब्राह्मण को दान करदी जावे ।
चन्द्र(पु०) -चन्द्रमा, मृगशीर्ष नामक नक्षत्र, कपूर, पानी, हीरा, मोर के पंख का चन्दा ।
चन्द्रक(पु०)–मोर के पंख का चन्दा, एकप्रकारकी मच्छी,सफ़ेद मिर्च ।
चन्द्रकला(स्त्री०)–चन्द्रमा की सोलह कलाओं मेंसे एक, द्रविड देश का एक प्रकार का बाजा ।

चन्द्रकान्त(पु०)—एक प्रकार की मणि जो चन्द्रमा को देख कर द्रवीभूत हो जाती है। न०—कमल, चन्दन।

चन्द्रकान्ता(स्त्री०)--चन्द्रमा की स्त्री, चांदनी, रात।

चन्द्रकान्ति(स्त्री०)—रोशनी, चन्द्र की आभा। न०--चांदी।

चन्द्रकी [न्] (पु०) -मयूर।

चन्द्रकूट(पु०)--इसी नाम से प्रसिद्ध एक पर्वत।

चन्द्रगुप्त(पु०) -मगध देश का राजा, पुराणों के लेखानुसार यमराज की सभा में मनुष्यों के शुभाशुभ कर्म का लेखक अर्थात् चित्रगुप्त।

चन्द्रगोलस्था (पु०बहु०)—चन्द्रलोक में स्थित दिव्यपितर। [ग्रसा जाना।

चन्द्रग्रहण (न०)—राहु से चन्द्रमा का

चन्द्रचपला (स्त्री०)—एक प्रकार की छोटी मछली, चन्द्रकमत्स्य।

चन्द्रचूड (पु०)—महादेव का बोधक।

चन्द्रतारा (पु० बहु०)—अश्वनी आदि नक्षत्र। [चन्द्रमा की ज्योति।

चन्द्रद्युति(स्त्री०)- चन्दन की लकड़ी,

चन्द्रपुष्पा (स्त्री०)—श्वेतपुष्प वाली कण्टकारी।

चन्द्रप्रभ(पु०)—छत्रविशेष।

चन्द्रप्रभा (स्त्री०) --बाकुची नामक ओषधि चन्द्रमा की ज्योति।

चन्द्रबाला(स्त्री०)—बड़ी इलायची।

चन्द्रबिन्दु (पु०)-अर्धचन्द्राकार अनुस्वार।

चन्द्रभाग(पु०)—पर्वतविशेष।

चन्द्रभागा(स्त्री०)—दक्षिण में एक नदी विशेष।

चन्द्रमणि(स्त्री)—एक प्रकार की मणि।

चन्द्रमण्डल(न०)—चन्द्रमा का गोलाकार स्वरूप, चन्द्रबिम्ब।

चन्द्रमस् (पु०)--चन्द्रमा, आनन्द देने वाला।

चन्द्रमौलि(पु०)—महादेव।

चन्द्रमुखी (स्त्री०)--चन्द्रमा के समान मुख वाली स्त्री।

चन्द्ररेखा-लेखा(स्त्री०) बाकुचीनामक ओषधि।

चन्द्ररेणु(पु०)--काव्यचोर।

चन्द्रलोक(पु०)—चन्द्रस्थित दुनिया।

चन्द्रलोहक—लौह(न०)-चांदी, रूपा।

चन्द्रवंश(पु०)—कौरववंश, हस्तिनापुर के राजगण। [मुखवाला।

चन्द्रवदन (वि०)—चन्द्रमा के समान

चन्द्रविहगम (पु०) -बगुला, बक नामक पक्षी। [प्रसिद्ध व्रत।

चन्द्रव्रत (न०)--चान्द्रायण नामक

चन्द्रवल्लरी (स्त्री०) सोमलता।

चन्द्रशाला (स्त्री०) -अट्टालिका, अटारी, ऊपर का घर।

चन्द्रशेखर(पु०) -महादेव,पूर्व की दिशा में एक पर्वत।

चन्द्रसम्भव (पु०)--चन्द्रमा से उत्पन्न हुआ पुत्र, बुध।

चन्द्रसम्भवा (स्त्री०)--नर्मदा नदी, छोटी इलायची।

चन्द्रहास (पु०) तलवार, रावण की

तलवार, केरल देश का राजा।
न०--चांदी।

चन्द्रहासा(स्त्री०)–गिलोय,सोमलता।

चन्द्रा (स्त्री०)--इलायची, चंदोवा।

चन्द्रातप (पु०)–चंदोवा,वितान,चन्द्रमा की किरण, चांदनी।

चन्द्रापीड (पु०)–महादेव का नाम, काश्मीर देश का एक राजा जो तारापीड का पुत्र था।

चन्द्रावली (स्त्री०)–गोपीविशेष।

चन्द्रिका (स्त्री०)--चांदनी,बड़ी इलायची, तेरह अक्षर के पादवाला एक छन्द।

चन्द्रिकाद्राव (पु०)-चन्द्रकान्त मणि।

चन्द्रिकापायी [न्](पु०)–चकोरपक्षी।

चन्द्रिकाम्बुज (न०)–श्वेतकमल।

चन्द्रिल (पु०)–शिव,नापित,हज्जाम।

चन्द्रेष्टा (स्त्री०)–कुमुदिनी।

चन्द्रोदय(पु०)–चन्द्रमा का निकलना।

चन्द्रोपल(पु०)–चन्द्रकान्त मणि।

चप्(१ प०,१० उ०)–चूर्णीकरण,पीसना, शान्त्वना देना, शान्ति देना।

चपट(पु०)=चपेट।

चपल (पु०)–धीरे २ चलना, पारा, मछली, एक प्रकार का पत्थर। वि०–चञ्चल, क्षणिक, घबराया हुआ।

चपलता-त्वम्=चञ्चलता।

चपला (स्त्री०)–पीपल, लक्ष्मी, बिजली, शराब औरत, मदिरा, विजया।

चपेट(पु०)–फैली हुई उंगलियों वाला हाथ, थपेट, थप्पड़, चांटा। [चपेटक भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।

चम्(१ प०)–खाना।

चमत्करणम्–कारः–कृतिः=विस्मय, हैरानी, आश्चर्य।

चमत्कारी(वि०)–अजीब,आश्चर्ययुक्त

चमर(पु०)–एक प्रकार का हरिण। न०–चमर पंखा।

चमरी(स्त्री०)–चौंरी।

चमसः-सम्=लकड़ी का बना यज्ञ का एक पात्र,सोमरस पीने का पात्र।

चमू(स्त्री०)–सेना, ऐसी सेना जिसमें ७२९ हस्ती, ७२९ रथ, २१८७ घोड़े, और ३६४५ पैदल होते हैं।

चमूरु(पु०)–मृगभेद,कचनालका वृक्ष।

चम्प्(१०उ०)–जाना, हरकत करना।

चम्प(पु०)–कोविदार नामक वृक्ष।

चम्पक(पु०)–चम्पा नामक पुष्पलता, केला। न०–चम्पे का फूल, कदलीफल।

चम्पकमाला(स्त्री०)-छन्दोभेद, गले में पहरने का एक स्वर्णभूषण, चम्पकपुष्पों की बनी हुई माला।

चम्पू (स्त्री०)–काव्यभेद, गद्य और पद्य का मिश्रित एक अत्युत्तम काव्य।

चम्ब्(१ प०)=चन्प्। [जाना।

चय् (१ आ०)–हरकत करना, पास

चर्(१ प०)–चलना, घूमना, करना, पूरा करना,व्यवहार करना, घास चरना, खाना, मशगूल होना, फैलना, जीना।

चर (वि०)–गतिशील, करने वाला । पु०–मगल, जासूस, कौड़ी, दूत, मेष, कर्क, तुला और मकर राशि ।
चरक(पु०)–गुप्तचर, भिखारी, अपने नाम से प्रसिद्ध एक ऋषि जिन्होंने चरकसंहिता निर्माण की है ।
चरण (अस्त्री०)–पाद, पैर स्तम्भ, जड़, आश्रय, श्लोक का प्रथम भाग । पु०–किरण, पदाति । न०–हरकत, सम्पादन, आचरण, पूर्ति । [शरणागत ।
चरणगत(वि०)–पैरों में पड़ा हुआ,
चरणपर्व [न्] (न०)–पैर का गट्टा, एड़ी ।
चरणप(पु०)–वृक्ष, पेड़, पादप ।
चरणसेवा (स्त्री०)–गुरु आदि की सेवा के लिये एक विनयबोधक शब्द ।
चरणामृत(न०)–किसी पूजनीय ब्राह्मण वा आचार्य के पैर धोकर जो जल प्राप्त किया जाता है ।
चरणि(पु०)–मनुष्य, आदमी ।
चरणोदक(न०)=चरणामृत ।
चरम(वि०)–अन्तिम, आखिरी, पश्चिमीय, सब से छोटा, अन्त का ।
चरमकाल(पु०)–मृत्यु का समय ।
चरमाचल (पु०)–अस्ताचल, पश्चिमीय पर्वत जिस के पीछे सूर्य और चन्द्र का अस्त होना बतलाया जाता है ।
चराचर (न०)–संसार, आकाश, स्वर्ग । वि०–जंगम और स्थावर । [वाम ।
चरि (पु०)–जन्तु, जानवर, पशु, हे-
चरित (न०)–जीवन, इतिहास, जीवनचरित्र, हरकत, व्यवहार, कार्य, स्वभाव । वि०–किया हुआ, ज्ञात, प्राप्त, घूमा हुआ ।
चरितार्थ (वि०)–कामयाब, सफलमनोरथ, संघटित, उपयुक्त, सन्तुष्ट ।
चरित्र (न०)–जीवन, जीवनचरित, जीवनवृत्तान्त, स्वभाव, काम, व्यवहार, आदत, सम्पादन गति, पैर ।
चरित्रा (स्त्री०)–इमली का पेड़ ।
चरीत्र (न०)=चरित्र ।
चरु (पु०)–मेघ, पितरों के लिये हव्य, हव्यान्न ।
चर्च् (६ प०)–बहस करना, चोट पहुचाना, खेपन करना, गाली देना, धमकाना ।
चर्च् (१० उ०)–अध्ययन करना, पढ़ना ।
चर्चः–नम्=ध्यान, अध्ययन, बार २ पढ़ना, सुगन्धलेपन ।
चर्चरिका-चर्चरी(स्त्री०)–उत्सव, खुशामद, गतिभेद, गाते समय हथेली बजाना ।
चर्चा (स्त्री०)–गवेषणा, ध्यान, अङ्गलेपन, अध्ययन, बार २ दुहराना, वार्ता, लोकसंवाद, दुर्गा का नाम, विचारणा ।
चर्चिका (स्त्री०)–पूर्ववत् ।
चर्पट (पु०)–हाथ का फैलाना, चपेट, चपेटा ।
चर्य् (१प०)–खाना, जाना, चलना ।

चर्म [न्]-(न०)-चमड़ा, त्वचा, चाम, स्पर्शेन्द्रिय, ढाल ।
चर्मकारक-चर्मक (पु०)-जूते बनाने वाला, चमार ।
चर्मचटी (स्त्री०)-चामचिड़ी, चिमगादड़ ।
चर्मचित्रक (न०)-सफेद कोढ़ ।
चर्मज (न०)-बाल, रक्त, खून ।
चर्मण्य (वि०)-चमड़े का बना हुआ ।
चर्मपादुका (स्त्री०)-चमड़े का बना हुआ जूता ।
चर्मबन्ध (पु०)-चमड़े का तसमा ।
चर्ममय (वि०)-चमड़े का बनाहुआ, चर्मण्य ।
चर्मार (पु०)-चमार, जूते बनाने वाला, चमड़े का काम करने वाला ।
चर्या (स्त्री०)-इधर उधर घूमना, सैर, गति, व्यवहार, अमल, भोजन, रीति ।
चर्व् (१० उ०,१प०)-चबाना, काटना, दांतों से कुतरना, ज़ायका लेना, चूसना ।
चर्वण (न०)-चबाना, चूसना, भक्षण ।
चर्वित (वि०)-चबाया हुआ, खाया हुआ, चखाहुआ ।
चर्वितचर्वण (न०)-चबायेहुये को फिर चबाना, पिष्टपेषण, निरर्थक पुनरावृत्ति ।
चर्वितपात्र (न०)-पीकदानी ।
चल् (१ प०)-चलना, हरकत करना, हिलना, जाना ।
चल (पु०)-वायु, हवा, आन्दोलन, कम्पन । वि०-चला हुआ, गतिशील, चञ्चल, क्षणिक, गड़बड़ ।
चलचित्त(वि०)-चंचलस्वभाव,अस्थिरमनाः ।
चलन(पु०)-पैर,हरिण । न०-हिलना, [हरकत ।
चलित (वि०)-चला हुआ, कम्पित, आन्दोलित, गत, प्राप्त, ज्ञात ।
चलु (पु०)-चुल्लू, चुल्लूभर पानी ।
चलुक (पु०)-पूर्ववत् ।
चष् (१ प०, १ उ०)-खाना, मारना ।
चषक (न०)-शहद, सुरा, मद्यपात्र ।
चह् (१ प०, १ प०)-धोखा देना, दर्प करना, पीसना ।
चाकचक्य (न०)-शोभा, दीप्ति, चमक ।
चाक्रिक (पु०)-कुम्हार, गाड़ीवान, चारण, तैली ।
चाक्रिण (पु०)-कुम्हार वा तेली का [पुत्र ।
चाक्षुष (न०)-नेत्रद्वारा प्राप्त ज्ञान । पु०-छठे मनु का नाम । वि०-नेत्रसम्बन्धी ।
चाञ्चल्य (न०)-चञ्चलता, अस्थिरता, [क्षणिकभाव ।
चाटु (न०)-खुशामद, दिलजुभाना, प्रियवाणी ।
चाटुक(अस्त्री०)-खुशामद की बातें ।
चाटुकार (वि०)- खुशामदी, प्रियभाषी ।
चाटुबटु (पु०)-मज़ाक करने वाला, [ज़रीफ़ ।
चाणक्य (पु०)-चाणक्य नीति का बनाने वाला एक प्रसिद्ध नीतिज्ञ, विष्णुगुप्त, कौटिल्य ।
चाणूर (पु०)-कंस के एक योद्धा का [नाम ।

चापड (न०)-चटुलता, उद्दण्डता, चण्डता ।
चाण्डाल [स्वार्थेऽण्] (पु०)-अन्त्यज, जातिच्युत, भंगी ।
चातक (पु०)-एक पक्षिविशेष जो स्वातिनक्षत्र की वर्षा के ही जल का पान करता है ।
चातुर (वि०)- चारसम्बन्धी, चतुर, कुशल, प्रत्यक्ष । न०-चार पहिये की गाड़ी ।
चातुरक (वि०)-खुशामदी, प्रत्यक्ष ।
चातुराश्रमिक(वि०)-चारो आश्रमो में से किसी में निवास करने वाला ।
चातुरिक (पु०)-गाड़ीवान, हांकने वाला, कोचवान ।
चातुर्भौतिक (वि०)-चार अंशों वाला, चार भूतों से उत्पन्न हुआ ।
चातुर्मासक (वि०)-चातुर्मास्य नामक यज्ञ करने वाला ।
चातुर्मास्य (न०)-एक यज्ञ जो प्रत्येक चौथे मास अर्थात् कार्तिक,फाल्गुन और आषाढ़ के आरम्भ में की जाती है । [कौशल ।
चातुर्य (न०)-चतुराई, सुन्दरता,
चातुर्वर्ण्य (न०)-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नामक चार वर्ण, चारो वर्णों के कर्तव्यकर्म ।
चातुष्भागिक (वि०)-चार भागो में बटा हुआ ।
चांद्र (वि०)-चन्द्रसम्बन्धी । पु०-चन्द्रमास, शुक्लपक्ष । न०-चान्द्रायण व्रत ।
चान्द्रक (न०)-सोंठ, शुण्ठी ।
चान्द्रमस(वि०)-चन्द्रसम्बन्धी, चान्द्र ।
चान्द्रमास (पु०)-वर्ष का वह मास जिस में चन्द्रमा के उदय और अस्त से गणना की जाती है ।
चाप (पु०)-कमान, धनुष, वृत्त का अंश । [तीव्र गति ।
चापल (न०)-चपलता, चञ्चलता,
चापल्य (न०)-पूर्ववत् ।
चामर (अस्त्री०)-चमरमृग के बालों से बनी हुई चौरी ।
चामरी [न्] (पु०)-घोड़ा, अश्व ।
चामीकर (न०)-धतूरा, स्वर्ण,सोना ।
चामुण्डा (स्त्री०)-दुर्गा का रूपभेद ।
चाम्य (न०)-भोजन, खूराक़ ।
चाय् (१उ०)-देखना, अवलोकन करना, पूजना ।
चार (पु०)-गति, चलना, टहलना, क़ैदखाना, बेड़ी, जासूस ।
चारक (पु०)-जासूस, ग्वालिया, नेता, क़ैदखाना, बेड़ी, गति ।
चारण (पु०)-यात्री, गवैया, भाट, जासूस । [अनुचरी ।
चारिका (स्त्री०)-दासी, नौकरनी,
चारित्र-त्र्य (न०)-व्यवहार, कीर्ति, स्वभाव, कुलाचार ।
चारु (वि०)-खूबसूरत, मनोहर, पसन्दीदा । न०-कुंकुम ।
चारुदर्शन(वि०)-प्रियदर्शन, मनोहर ।
चारुलोचन (वि०)-मनोहर नेत्रों वाला ।
चार्म (वि०)-चमड़े का बना हुआ ।

चार्मिक (वि०)–पूर्ववत ।
चार्वाक (पु०)–वाममार्गमत का आदि आचार्य ।
चार्वी (स्त्री०)–प्रतिभा, शोभा, ज्योत्स्ना, कुबेरपत्नी, सुन्दर स्त्री ।
चाल –नम् (न०)–हरकत, चलाना, चलनी नामक पात्र ।
चालनी (स्त्री०)–छाज, छलनी ।
चि (५, १उ०)–इकट्ठा करना, एकत्रित करना, तलाश करना ।
चिकित (वि०)–ज्ञात, समझा हुआ ।
चिकित्सक(पु०)–वैद्य, हकीम, मआलिज । [औषध देना ।
चिकित्सन (न०)–इलाज करना,
चिकित्सा(स्त्री०)–इलाज, रोगोपचार, औषधप्रयोग ।
चिकित्सित (वि०)–इलाज किया हुआ, जिसने आरोग्य प्राप्त कर लिया हो।।
चिकिल (पु०)–कीचड़, कीच ।
चिकीर्षक (वि०)–करने की इच्छा वाला । [मर्जी, ख्वाहिश ।
चिकीर्षा (स्त्री०)–कार्य की इच्छा,
चिकुर (पु०)–शिर के बाल, सर्प, पर्वत । [न०–सुपारी ।
चिक्कण (वि०)–चिकना, चमकदार ।
चिक्कस (पु०)–जौ का आटा ।
चिक्किर (पु०)–चूहा, मूषकी ।
चिखल्ल (पु०)–कीचड़, कीच ।
चिञ्चा (स्त्री०)–इमली का पेड़, इमली का फल, चोंटली का वृक्ष ।
चित् (१० आ०, १प०)–देखना, अवलोकन करना, जानना ।
चित् (स्त्री०)–ख्याल, विचार, समझ, मन, आत्मा, ब्राह्मण ।
चित (वि०)–इकट्ठा किया हुआ, एकत्रित, प्राप्त ।
चिता (स्त्री०)–ढेर, समूह, मृतकदाह के लिये सञ्चित काष्ठसमूह ।
चिताग्नि(पु०)–मृतकदाह की अग्नि।
चिति(स्त्री०)–चेतना, समझ, चिता, ढेर, तह, समूह ।
चित्त (न०)–ख्याल, चेतना, मन, हृद्, तर्कबुद्धि, विचार, चिन्तन । वि०–इच्छित, दृष्ट, चिन्तित ।
चित्तकलित (वि०)–पूर्व से सोचा हुआ, आशङ्कित।
चित्तज–भू (पु०)–कामैषणा, कामदेव।
चित्तनाश (पु०)–चेतना का अभाव।
चित्तनिर्वृत्ति (स्त्री०)–सन्तुष्टि, खुशी प्रसन्नता।
चित्तवान् [वत्] (वि०)–सहृदय, मार्कूलपसन्द, बुद्धिमान् ।
चित्तविकार(पु०)-मनोभाव का बदलना
चित्तविक्षेप (पु०)–चित्त का हटना।
चित्तवृत्ति (स्त्री०)–मनोभाव ।
चित्तापकर्षक (वि०)–दिल को खींचने वाला, मनोहर ।
चित्ताभोग (पु०)–दिल का एक ही विषय पर लगना।
चित्तासङ्ग (पु०) प्रेम,मुहब्बत। [भक्ति
चित्ति(स्त्री०) धारणा,विचारणा,ख्याति,
चित्र (वि०)–चमकीला, स्वच्छ,

रंगबिरंगा, विविध, विस्मयकर, विपम। पु०-यमभेद, अशोकवृक्ष। न०-तस्वीर, आकाश, श्वेतकुष्ठ, विस्मयकर्षक वस्तु।
चित्रकण्ठ (पु०)–कबूतर, पारावत।
चित्रकर-कार (पु०)–मुसव्विर, तस्वीर बनाने वाला, अभिनयकर्त्ता।
चित्रकूट (पु०)–प्रयाग के पास एक छोटी पहाड़ी। [नाम।
चित्रगुप्त (पु०)--यमराज के मन्त्री का
चित्रपट (पु०)–मूर्त्ति, तस्वीर।
चित्रपादा (स्त्री०)–मैना, सारिकापक्षी
चित्रपुङ्ख(पु०)--खुटबढ़ैया पक्षी। [शिव
चित्रभानु (पु०)–अग्नि, सूर्य, अर्कवृक्ष,
चित्ररथ (पु०)–सूर्य, एक गन्धर्वराज का नाम।
चित्रल (वि०)–रंगबिरंगा, चितकबरा।
चित्रलेखा (स्त्री०)–एक अप्सरा, १८ अक्षरों के पाद वाला एकप्रकार का छन्द।
चित्रविचित्र(वि०)–विविध प्रकार का, रंगबिरंगा।
चित्रविद्या (स्त्री०)--मुसव्वरी का हुनर
चित्रशाला(स्त्री०)–मुसव्विर की दूकान।
चित्रा (स्त्री०)–एकनक्षत्र का नाम, माया
चित्राङ्गद (पु०)–शान्तनु राजा का पुत्र, विचित्रवीर्य का भाई।
चित्राङ्गी(स्त्री०)–मजीट, कर्णजलौका, कानखजूराई नामक जन्तु।
चित्राटीर (पु०)–चन्द्रमा, चांद।
चित्रापूपा (स्त्री०)–दृपाशाल, पपेरा।
चित्रिक (पु०)–चैत्रमास।
चित्रिणी (स्त्री०)–स्त्रियों का एक भेद।
चित्रित (वि०)--रंगबिरंग, खिंचा हुआ, लिखा हुआ।
चित्रीकरण (न०)–आश्चर्य, अचम्भा।
चिदाकाश (न०)–चैतन्य रूप आकाश अर्थात् ब्रह्म। [शक्ति।
चिदात्मा (पु०)--परब्रह्म, विवेचना-
चिदाभास(पु०)–जीव, जीवात्मा।
चिन्त्(१० उ०)–सोचना, विचारना, चिन्तन करना, याद करना।
चिन्तन (न०)–विचारणा, धारणा, फ़िक्र, ग़ौरख़ोज।
चिन्तनीय-न्त्य (वि०)–सोचने योग्य, विचारणीय। [ख़याल, विचार।
चिन्ता(स्त्री०)–सोचविचार, फ़िक्र,
चिन्ताकुल (वि०)–फ़िक्र के कारण घबराया हुआ।
चिन्तातुर=चिन्ताकुल।
चिन्तामणि (पु०)–पारसपत्थरी, एक कल्पितमणि कहते हैं कि जिसके संसर्ग से लोहा सोना बनजाता है।
चिन्तित (वि०)–सोचा हुआ, विचार किया हुआ।
चिन्मय(न०)–चेतनशक्ति, परमात्मा।
चिन्मात्र (न०)–पूर्ववत्।
चिपिट(वि०)–चौड़ी नाक वाला।
चिबु[बु]क (न०)–ठोड़ी।
चिर(वि०)–लम्बा, दीर्घकालीन।
चिरकाल(पु०)–दीर्घकाल, लम्बा समय।
चिरकालीन (वि०)–पुराना, बहुत

समय कर। [जीने वाला।
चिरजीवी (वि०)—अनन्तकाल तक
चिरञ्जीव(वि०)—आयुष्मान्, बहुत समय तक जीने वाला।
चिरन्तन(वि०)—पुराना,बहुत कालका।
चिरम्(अ०)—अधिक काल, देरी से।
चिरात् (अ०)—देरी से,बहुत काल से।
चिराय(अ०)—दीर्घकाल के लिये।
चिरायुः [स्] (वि०)—दीर्घजीवी, आयुष्मान्।
चिरि(पु०)—तोता, शुक, कीर।
चिरेण(अ०)—देर से, विलम्बपूर्वक।
चिर्भटी (स्त्री०)—ककड़ी, खीरा, फूट कचरा।
चिल्ल् (१प०)—सुस्त होना, शिथिल होना, ढीला पड़ना।
चिल्ल (पु०)—चील पक्षी। वि०—जिसकी आंख दुखती हों।
चिल्लका—ल्लिका (स्त्री०)—कन्दुक-क्रीड़ा, क्रिकेट का खेल।
चिल्लाभ (पु०)—गठकटा, चोर।
चिवि (पु०)=चिबुक। [लगाना।
चिह्न् (१०उ०)—अङ्कित करना, निशान
चिह्न (न०)—निशान, अंक, मुहर, दाग़, पताका, लक्षण।
चिह्नित (वि०)—अंकित, मुहरशुदा।
चीक् (१,१०प०)—बरदाश्त करना,छूना, आतुर होना।
चीत्कार (पु०)—चिल्लाहट, चीख़ पुकार, चीखना, चिघाड़।
चीन (पु०)—चीन नामक प्रसिद्ध देश, तागा,डोरा। न०-पताका,ध्वजा, सीसा।
चीर (न०)—चीथड़ा, कपड़े का टुकड़ा, छाल, सीसा, चोटी।
चीर्ण (वि०)—किया हुआ, सम्पादित, अधीत।
चीव् (१, १०उ०,)—पहरना, ढकना, पकड़ना, चमकना। [चोगा।
चीवर (न०)—चिथड़ा, संन्यासी का
चुक्कार (पु०)—शेर की दहाड़।
चुक्रा (स्त्री०)—इमली का पेड़।
चुचि (पु०)—दूधी, स्त्रीस्तन।
चुंचु (वि०)—प्रसिद्ध, कीर्त्तित।
चुड् (१,६प०)—छिपाना, ढकना।
चुत् (१प०)—चूना, टपकना।
चुद् (१० उ०)—भेजना, फेंकना, प्रेरणा करना, प्रार्थना करना।
चुन्दी (स्त्री०)—कुटनी नायिका।
चुप् (१प०)—रेंगना,धीरे २ चलना।
चुबुक (पु०)—ठोढी।
चुम्ब् (१,१०उ०)—चूमना,बोसा लेना।
चुम्बः-म्बा (स्त्री०)—चूमा, बोसा।
चुम्बक (पु०)—बोसा लेने वाला, कामी पुरुष, ठग, अयस्कान्त मणि,चुम्बक पत्थर।
चुम्बन (न०)—बोसा लेना, चूमना।
चुर् (१० उ०)—चुराना, लूटना।
चुरा (स्त्री०)—चोरी, चौरकर्म।
चुल् (१०प०)—ऊंचा करना, उठना, उठाना, गोता लगाना। [हांडी।
चुलुक (पु०)—गहरी कीचड़, छोटी
चुल्ल् (१ प०)—खेलना, क्रीड़ा करना।
चुल्लक (पु०)—हस्ताञ्जलि,हाथ की अञ्जुलि।

चुल्लि-ल्ली(स्त्री०)-अगीठी,चूल्हा।
चुस्त (अस्त्री०)-कषाय, भुस्सी।
चूचुक (न०)-स्त्री की टूघी, स्त्रीस्तन का अग्रभाग।
चूड़ा (स्त्री०) चूड़ाकर्म संस्कार जिसमें बाल मुड़ाये जाते हैं, चोटी, कूप, शिखा, मयूरशिखा।
चूड़ाकर्म (न०)-सोलह संस्कारों में से एक जो बालक के जन्म से पहिले या तीसरे वर्ष कराया जाता है।
चूड़ामणि (पु०)-शिरोरत्न। वि०-सर्वोत्तम, सर्वोत्कृष्ट।
चूत (पु०)-आम्रवृक्ष, आम का पेड़, कामदेव के पञ्च बाणों में से एक, घर का दर्वाजा। न०-गुदा, स्त्रीयोनि, कूपक।
चूति (स्त्री०)-स्त्रीयोनि, गुदा।
चूर्ण् (१०उ०)-पीसना, कुचलना, पीस कर साफ करना।
चूर्ण (पु०)-खड़ियामिट्टी, चूना। स्त्री०-आटा, मैदा, पिसी हुई वस्तु, राख। [कुन्तल।
चूर्णकुन्तल (पु०)-केशगुच्छ, अलक,
चूर्णित (वि०)-कुटा हुआ, पिसा हुआ, कुचला हुआ।
चूल (पु०)-बाल, केश।
चूलिका (स्त्री०)-मुर्गकलगिया।
चूष् (१ प०)-चीखना, चूसना।
चूष्य (न०)-चूसने योग्य पदार्थ, भोजन।
चृत् (६प०)-मारना,बांधना, जोड़ना।
चेट-ड (पु०)-सेवक, नौकर, दास।
चेत् [द्] (अ०)-अगर, यदि,अथवा, बशर्ते।
चेतन (पु०)-जीवात्मा, परमात्मा, प्राणी। वि०-चेतनायुक्त।
चेतना (स्त्री०)-समझ,बुद्धि, ज्ञानशक्ति।
चेतस् [ ] (न०)-चित्त,दिल, आत्मा।
चेदि (पु०)-एक देश का नाम।
चेल् (१प०) जाना, हरकत करना, कांपना।
चेष्ट् (१ आ०)--चेष्टा करना, यत्न करना,हरकत करना,काम करना।
चेष्टनम्--चेष्टा=यत्न, पुरुषार्थ,हरकत, काम।
चेष्टित (न०)-इङ्गित,हरकत, बर्त्ताव।
चैतन्य (न०)-आत्मा मन, जीवन, चेतनता, महसूस करने की शक्ति। पु०-एक वैष्णवसम्प्रदायक का नाम। [सम्बन्धी।
चैतसिक (वि०)-मन सम्बन्धी, चित्त-
चैत्र (पु०)-एक चन्द्रमास का नाम जिस की पूर्णिमा चित्रानक्षत्रयुक्त होती है, चैत का महीना।
चैत्ररथ (न०)-कुबेर का उद्यान।
चोच (न०)-चमड़ा, छाल, वल्कल।
चोद (वि०)-प्रेरक,चलाया देने वाला।
चोदन (वि०)-प्रेरक। न०-प्रेरणा करना, आदेश, शासन।
चोदना (स्त्री०)-प्रेरणा, प्रोत्साहन, आदेश।

चोदित (वि०)–प्रेरित, शासित।
चोर (पु०)–चुराने वाला, स्तेय-कर्त्ता, तस्कर।
चोल (पु०)–दक्षिण में एक प्रदेश का नाम, तंजोर प्रान्त। न०–कपड़ा, वस्त्र।
चोली (स्त्री०)–वासकट, अंगिया।
चोष्य (वि०)–चूसने लायक, भक्ष्य।
चौड [ल] (न०)–चूड़ाकर्म। वि०–शिखायुक्त।
चौर (पु०)–चोर।
चौर्य (न०)–चोरी, छिपावट, ठगी।
च्यवन (न०)–गति, गमन, नाश, डूबना, जुदाई। पु०–एक ऋषि का नाम।
च्यु (१० प०)–बरदाश्त करना, हंसना। (१ आ०) गिरना, डूबना, टपकना चूना, कम होना।
च्युत् (१ प०)–चूना, बहना, टपकना।
च्युति (स्त्री०)–गिरावट, टपकना, खोया जाना, नष्ट होना, भग, गुदा। [हसना।
च्युस् (१० प०)–त्यागना, मारना,
च्यूत (पु०)–आम का पेड़, आम्रवृक्ष।

—०—

छ

छ (पु०)–कर्तन, विभाग, टुकड़ा। न०–घर। वि०–अस्थिर, स्वच्छ।
छग (पु०)–बकरा, अज।
छगल (पु०)–बकरा, अत्रि ऋषि का नाम।
छटा (स्त्री०)–दीप्ति, प्रकाश, चमक, पंक्ति, झलक।
छत्र (न०)–छाता, छत्री।
छत्रधर (पु०)–छत्री लगाने वाला।
छत्रपति (पु०)–राजा जिसके ऊपर छत्र लगा रहता है, सम्राट्।
छत्रभङ्ग (पु०)–राज्य का नाश, पराधीनता, वैधव्य, बेकसी।
छत्रिक (पु०)=छत्रधर।
छत्वर (पु०)–लतागृह, कुञ्ज, घर।
छद् (१० उ०)–ढकना, परदा डालना, आच्छादित करना।
छदन (न०)–ढक्कन, आच्छादन, म्यान, पत्ती।
छदपत्र (पु०)–भोजपत्र।
छद्म [न्] (न०)–कपटवेष, धोखा, बहाना, घर की छत।
छद्मतापस (पु०)–कपटी साधु।
छद्मवेषी (पु०)–ठग, बहुरूपिया।
छन्द् (१० उ०)–ढकना, प्रसन्न होना, बहकाना, खुश करना।
छन्द (वि०)–मनोहर गुम। पु०–इच्छा, चाहना, मर्जी, अभिप्राय, विष, खुशी।
छन्द [स्] (न०)–इच्छा, मर्जी, अभिप्राय, धोखा, वेद, पद्य, छन्दःशास्त्र।
छन्दोग (पु०)—सामवेद का गायक।
छन्दोभङ्ग (पु०)–छन्दःशास्त्र के नियम का उल्लंघन।
छन्न (वि०)–ढका हुआ, छिपा हुआ, आच्छादित। न०–रहस्य।
छमण्ड (पु०)–अनाथ, एकाकी।
छर्द् (१ उ०)–वमन करना, कै करना।

छर्दः-सम्=वमन, कै, रोग।
छल (अस्त्री०)-धोखा, फरेब, कपट, बहाना, इरादा, वध।
छलक (वि०)-छलिया, कपटी।
छलन (न०)-ठगई, धोखा।
छल्लि-ल्ली (स्त्री०)-छाल, वल्कल सन्तान, लता।
छवि (स्त्री०)-शोभा, छटा, कान्ति, भड़क, सुन्दरता। [कादूध।
छाग (पु०)-बकरा, अज। न०-बकरी
छागिका (स्त्री०)-बकरी, अजा।
छात (वि०)-दुबला, पतला, कमजोर, विभक्त। [न०-शहद का छत्ता।
छात्र (पु०)-शागिर्द, चेला, शिष्य।
छाद (न०)- छत। [पर्दा, कपड़ा।
छादन (न०)-गुप्तीकरण, ढक्कन,
छादनी (स्त्री०)-चमड़ा, त्वचा।
छादित (वि०)-ढका हुआ, गुप्त।
छाद्मिक (पु०)-ठग, छली।
छान्दस (पु०)-वेदपाठी ब्राह्मण।
छाया (स्त्री०)-परछाईं, प्रतिबिम्ब, साया, समानता, शोभा, अधेरा, रिश्वत, कान्ति, पंक्ति, क़तार।
छायाग्रह (पु०)-आयना, दर्पण।
छायातनय (पु०)-शनैश्चर का बोधक।
छायापथ (पु०)-पितरों का मार्ग।
छायामय (वि०)-सायावाला, शीतल [वृक्ष]।
छायामान (पु०)-चन्द्रमा, चांद।
छाल (अस्त्री०)-वल्कल, वृक्ष की त्वचा, वल्कल।
छि (स्त्री०)-नफरत, घृणा, धिक्कार।
छिक्का (स्त्री०)-छींक।
छिद् (७ उ०)--काटना, छेदन करना, फाड़ना, अलग करना।
छिद्(वि०)-समास के अन्त में विभाजक और नाशक का बोधक होता है।
छिदक (न०)--हीरा, इन्द्रवज्र।
छिदिरः-छिदि (स्त्री ०)-कुल्हाड़ी, छेदन।
छिद्र् (१० उ०)-छेदना, भेदना, फाड़ना
छिद्र (न०)-सूराख़, गढ़ा, ऐब, दूषण, गर्त।
छिद्रित (वि०)-सूराखदार, छिद्रयुक्त।
छिन्न(वि०)-कटा हुआ, फाड़ा हुआ, तोड़ा हुआ।
छिन्नमस्त (वि०)-जिस का शिर कट गया हो, वह।
छिन्नमूल (वि०)-जड़ से कटा हुआ।
छुछुन्दर(पु०)-अपने नामसे प्रसिद्ध पक्षी
छुट् (६, १० प०)-काटना।
छुप् (६ प०)-छूना।
छुर् (१प०)-काटना, खोदना, लिखना।
छुरा (स्त्री०)-चूना।
छुरिका-छुरी(स्त्री०)-छुरी नामक एक हलका हथियार।
छेक(पु०)-पालतू जानवर, मधुमक्खिका। वि०-नागरिक, शहरी।
छेत्ता [तृ] (वि०)-काटने वाला, लकड़हारा, नाशकारी।
छेदः-सम्=कर्तन, फाड़ना, विभाग, टुकड़ा, नाश।

छेदित (वि०)–काटा हुआ, छिन्न।
छेमण्ड (पु०)–यतीम, अनाथ।
छेलक (पु०)–बकरा।
छो (४ प०)–काटना, कुतरना।
छोटिका (स्त्री०)–चुटकी।

ज

ज (पु०)–पिता, उत्पत्ति, विष, विजेता, विष्णु, शिव, तेज़ी। वि०-समास के अन्त में 'उत्पन्न' अर्थ का बोधक होता है।
जक्ष्(२ प०)–खाना, हँसना, भक्षणकरना
जक्षण (न०)–भोजन, भक्षण, सूर्य।
जगत् (न०)–संसार, विश्व, भूमण्डल। पु०–वायु, हवा।
जगत्प्राण-बल (पु०)–वायु, हवा।
जगत्साक्षी (पु०)–सूर्य, परमात्मा।
जगती (स्त्री०)–पृथ्वी, गाय, छन्दोभेद मानवजाति। द्विवच०-पृथ्वी और स्वर्ग।
जगतीधर (पु०)–पर्वत, पहाड़।
जगतीश्वर (पु०)–राजा, हाकिम।
जगद् (पु०)–सेवक, अनुचर, सरलक।
जगदम्बा (स्त्री०)–जगज्जननी, परमेश्वर।
जगदादि (पु०)–परब्रह्म।
जगदाधार(पु०)–परमात्मा, वायु, काल
जगदीश-पति (पु०)–परमात्मा, सर्वोत्तम देव।
जगद्गुरु (पु०)–नारद, ब्रह्मा, विष्णु।
जगद्धात्री (स्त्री०)–जगत् को धारण करने वाली शक्ति, परमात्मा।
जगद्योनि (पु०)–पूर्ववत्।
जगनु (पु०)–अग्नि, पशु। सम्भवतःयह शब्द जुगनू [खद्योत] का भी वाचक है।
जगन्नाथ (पु०)–परमात्मा, विष्णु, दत्तात्रेय, एक कवि का नाम, पुरी में एक मन्दिर का नाम।
जगल (न०)–गोबर, कवच, सुराजेंद।
जग्ध (वि०)–भक्षित, खाया हुआ। न०–भोजन।
जग्धि(स्त्री०)–भोजन, अन्न, खाद्य पदार्थ। [अगला भाग, जांघ।
जघन (न०)–चूतड़, अधःशरीर का
जघन्य (वि०)–अन्तिम, आख़िरी, निकृष्ट, निन्दनीय, नीच।
जङ्गम(वि०)–गतिशील, चलने वाला, जिस का स्थानपरिवर्तन किया जासके, स्थावर का विरोधी।
जङ्गल(न०)–निर्जन वन, झाड़ीदार स्थान, एकान्तभूमि, मांस।
जगुल(न०)–विष, ज़हर।
जङ्घा(स्त्री०)–टांग का ऊपर का भाग, पैर की गांठ और घुटने के बीच का भाग, लात, जांघ।
जंघाकारिक(पु०)–दूत, धावक, दौड़ने वाला।
जंघाल (वि०)–तेज़ दौड़ने वाला, शीघ्रगामी। पु०–हरिण।
जज्(१ प०)–लड़ना, युद्ध करना।
जज(पु०)–योद्धा, सिपाही। [जंज भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।

जटा(स्त्री०)-बालों का गुच्छा, बनाना, आपस में जुड़े हुए बाल, वाम-प्रस्थियों की शिखा, वृक्षमूल, लता, शाखा, शतावरी।
जटाजूट (पु०)-जटाओं का समूह, अनेक जटाएं।
जटाधर(पु०)-साधु, तपस्वी।
जटायु[सु] (पु०)-इसी नाम का एक पक्षी जिसका रामायण में वर्णन आता है।
जटाल(पु०)-बड़ का पेड़, गुग्गुल। वि०-जटा वाला।
जटि-टी-बड़ का पेड़, जटा, समूह।
जटिल (वि०)-जटावाला, गड़बड़, गहरा, कष्टसाध्य, दिक्कततलब। पु०-ब्रह्मचारी,तपस्वी,सिंह, बकरा।
जटिलीभाव(पु०)-गड़बड़, अस्तव्यस्तता।
जठर(वि०)-बूढ़ा, बंधाहुआ, कठोर। अस्त्री०-पेट, शिकम, गर्भ, गर्त।
जठराग्नि(पु०)-पेट की अग्नि, जठर-ज्वाला।
जड़(वि०)-सुस्त, गतिरहित, चेतना-रहित, ठहरा हुआ। पु०-ठंड, कोहरा, मूर्खता। न०-जल, सीसा।
जड़ता(स्त्री०)-सुस्ती, अज्ञान, मूर्खता, कायरता।
जड़त्व(न०)-पूर्ववत्।
जड़भरत(पु०)-विक्षिप्त, पागल।
जतु(न०)-लाख, लाल।
जतूका-जतुनी (स्त्री०)-चिमगादड़।
जन्(४ आ०)-पैदा होना, जन्म लेना, उगना, संघटित होना।
जन (पु०)-जीवधारी, मनुष्य, व्यक्ति, वंश, जाति।
जनक (पु०)-पिता, उत्पादक, सीता के पिता का नाम। [पत्रलिक।
जनता (स्त्री०)-उत्पत्ति, लोकसमूह,
जनत्रा(स्त्री०)-छाता, छत्री।
जनन (वि०)-उत्पादक। पु०-परमात्मा। न०-उत्पत्ति, जन्म, जीवन, दीक्षा।
जननि(स्त्री०)-माता, उत्पत्ति।
जननी (स्त्री०)-दया, कृपा, लाक्षा, माता।
जनपद (पु०)-जाति, देश, राज्य, आबाद मुल्क, प्रदेश, जनसमूह।
जनप्रवाद(पु०)-लोकापवाद,अफवाह, बदनामी।
जनमेजय (पु०)-अर्जुन का प्रपौत्र, परीक्षित का पुत्र,चन्द्रवंशका एक राजा। [उत्पादक, जन्मदाता।
जनयिता [तृ] (पु०)-पिता। वि०-
जनयित्री(स्त्री०)-माता, जननी।
जनरव(पु०)-अफवाह, लोकापवाद।
जनवाद(पु०)-पूर्ववत्। [को बात।
जनश्रुत (वि०)-प्रसिद्ध, सर्वसाधारण
जनश्रुति (स्त्री०)-लोकापवाद, किंवदन्ती।
जनस्थान (न०)-दण्डक वन के एक स्थान का नाम।
जनार्दन(पु०)-कृष्ण, विष्णु का नाम।
जनाश्रम(पु०)-सराय।

जनि-नी(स्त्री०)-पैदायश, उत्पत्ति, स्त्री, पुत्रवधू, माता।
जनित(वि०)-उत्पन्न, संघटित।
जनिता[तृ] (पु०)-पिता, जन्मदाता।
जनित्री(स्त्री०)-माता, जननी।
जनु-नू(स्त्री०)-उत्पत्ति, पैदायश।
जनुस्(न०)-पूर्ववत्।
जन्तु (पु०)-जानदार, जीवधारी, जानवर, मनुष्य।
जन्तुमती(स्त्री०)-पृथिवी, भूमि।
जन्म(न०)-उत्पत्ति, पैदायश।
जन्म[न्] (न०)-पूर्ववत्।
जन्मकृत(पु०)-पिता, जनक।
जन्मक्षेत्र(न०)-जायपैदायश, जन्मस्थान। [दिन।
जन्मतिथि (स्त्री०)-उत्पत्ति का
जन्मपत्र-पत्री (स्त्री०)-उत्पत्ति के समय ग्रहों की चाल को देखकर जो शुभाशुभ का बोधक फलपत्र बनाया जाता है।
जन्मभाषा(स्त्री०)-मातृभाषा।
जन्मभूमि(स्त्री०)-जन्मस्थान,वतन।
जन्मयोग(पु०)-जन्मपत्र।
जन्मस्थान(न०)=जन्मभूमि।
जन्महेतु(पु०)-उत्पत्ति का कारण, जनक। [योनि, पुनर्जन्म।
जन्मान्तर(न०)-दूसरा जीवन, अन्य-
जन्मान्ध(वि०)-जो अन्धा ही पैदा हुआ हो।
जन्माष्टमी (स्त्री०)-भाद्रपदकृष्णा अष्टमी जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।
जन्य(वि०)-उत्पन्न, संघटित, जनसम्बन्धी, गंवार, जातीय। न०-उत्पत्ति, पैदायश, लोकापवाद। पु०-पिता।
जप्(१ प०)-धीमे स्वर से उच्चारण करना, मन मन में बोलना, गुन गुन करना, जाप करना।
जप(पु०)=जाप। [पढ़ना।
जपन (न०)-मन्त्र जपना, प्रार्थना
जम्[जम्भ्] (१ आ०)-मुंह फाड़ना, मुंह बाना, जम्भाई लेना।
जमदग्नि(पु०)-भृगुवंशज परशुराम का पिता जिस की स्त्री का नाम रेणुका था।
जम्पती=दम्पती।
जम्बाल(पु०)-काई, कीचड़, केवड़ा।
जम्बालिनी(स्त्री०)-नदी, दरिया।
जम्बु-म्बू(स्त्री०)-जामन का पेड़।
जम्बुक-म्बूक(पु०)-गीदड़, जामन, नीच मनुष्य। [में से एक।
जम्बुखण्ड(पु०)-पृथ्वी के सात खण्डों
जम्भ(पु०)-जबाड़ा, दांत, टुकड़ा, ठोड़ी, जम्भाई, दैत्यविशेष।
जम्भाराति(पु०)-इन्द्र।
जम्भारि(पु०)-अग्नि, इन्द्र।
जम्भिका जम्भा (स्त्री०)-जम्भाई, मुंह बाना।
जय(पु०)-शत्रुओं का नाश, जीतना।
जयद्रथ(पु०)-दुर्योधन का बहनोई, जो सिन्धु देश का राजा था।
जयन्त(पु०)-इन्द्र के एक पुत्र का नाम, विष्णु, चन्द्रमा, भीम का नाम

जटा(स्त्री०)–बालों का गुच्छा, बनाना, आपस में जुड़े हुए बाल, वानप्रस्थियों की शिखा, वृक्षमूल, लता, शाखा, शतावरी।
जटाजूट (पु०)–जटाओं का समूह, अनेक जटाएं।
जटाधर(पु०)–साधु, तपस्वी।
जटायु[सु] (पु०)–इसी नाम का एक पक्षी जिसका रामायण में वर्णन आता है।
जटाल(पु०)–बड़ का पेड़, गुग्गुल। वि०–जटा वाला।
जटिः-टी–बड़ का पेड़, जटा, समूह।
जटिल (वि०)–जटावाला, गड़बड़, गहरा, कष्टसाध्य, दिक्कततलब। पु०–ब्रह्मचारी, तपस्वी, सिंह, अज।
जटिलीभाव(पु०)–गड़बड़, अस्तव्यस्तता।
जठर(वि०)–बूढ़ा, बंधाहुआ, कठोर। अस्त्री०–पेट, शिकम, गर्भ, गर्त्त।
जठराग्नि(पु०)–पेट की अग्नि, जठरज्वाला।
जड़(वि०)–सुस्त, गतिरहित, चेतनारहित, ठहरा हुआ। पु०–ठंड, कोहरा, मूर्खता। न०–जल, सीसा।
जड़ता(स्त्री०)–सुस्ती, अज्ञान, मूर्खता, कायरता।
जड़त्व(न०)–पूर्ववत्।
जड़भरत(पु०)–विक्षिप्त, पागल।
जतु(न०)–लाख, लाह।
जतूका-जतुनी (स्त्री०)–चिमगादड़।
जन्(४ आ०)–पैदा होना, जन्म लेना, लगना, संघटित होना।
जन (पु०)–जीवधारी, मनुष्य, व्यक्ति, वंश, जाति।
जनक (पु०)–पिता, उत्पादक, सीता के पिता का नाम। [पब्लिक।
जनता (स्त्री०)–उत्पत्ति, लोकसमूह,
जनत्रा(स्त्री०)–छाता, छत्री।
जनन (वि०)–उत्पादक। पु०–परमात्मा। न०–उत्पत्ति, जन्म, जीवन, दीक्षा।
जननि(स्त्री०)–माता, उत्पत्ति।
जननी (स्त्री०)–दया, कृपा, लाक्षा, माता।
जनपद (पु०)–जाति, देश, राज्य, आबाद मुल्क, प्रदेश, जनसमूह।
जनप्रवाद(पु०)–लोकापवाद, अफवाह, बदनामी।
जनमेजय (पु०)–अर्जुन का प्रपौत्र, परीक्षित का पुत्र, चन्द्रवंश का एक राजा। [उत्पादक, जन्मदाता।
जनयिता [तृ] (पु०)–पिता। वि०–
जनयित्री(स्त्री०)–माता, जननी।
जनरव (पु०)–अफवाह, लोकापवाद।
जनवाद(पु०)–पूर्ववत्। [की बात।
जनश्रुत (वि०)–प्रसिद्ध, सर्वसाधारण
जनश्रुति (स्त्री०)–लोकापवाद, किंवदन्ती।
जनस्थान (न०)–दण्डक वन के एक स्थान का नाम।
जनार्दन(पु०)–कृष्ण, विष्णु का नाम।
जनाश्रम(पु०)–सराय।

जनि-नी(स्त्री०)-पैदायश, उत्पत्ति, स्त्री, पुत्रवधू, माता।
जनित(वि०)-उत्पन्न, संघटित।
जनिता[तृ] (पु०)-पिता, जन्मदाता।
जनित्री(स्त्री०)-माता, जननी।
जनु-नू(स्त्री०)-उत्पत्ति, पैदायश।
जनुस्(न०)-पूर्ववत्।
जन्तु (पु०)-जानदार, जीवधारी, जानवर, मनुष्य।
जन्तुमती(स्त्री०)-पृथिवी, भूमि।
जन्म(न०)-उत्पत्ति, पैदायश।
जन्म[न्] (न०)-पूर्ववत्।
जन्मकृत(पु०)-पिता, जनक।
जन्मक्षेत्र(न०)-जायपैदायश, जन्मस्थान। [दिन।
जन्मतिथि (स्त्री०)-उत्पत्ति का
जन्मपत्र-पत्री (स्त्री०)-उत्पत्ति के समय ग्रहों की चाल को देखकर जो शुभाशुभ का बोधक फलपत्र बनाया जाता है।
जन्मभाषा(स्त्री०)-मातृभाषा।
जन्मभूमि(स्त्री०)-जन्मस्थान,वतन।
जन्मयोग(पु०)-जन्मपत्र।
जन्मस्थान(न०)=जन्मभूमि।
जन्महेतु(पु०)-उत्पत्ति का कारण, जनक। [योनि, पुनर्जन्म।
जन्मान्तर(न०)-दूसरा जीवन, अन्य-
जन्मान्ध(वि०)-जो अन्धा ही पैदा हुआ हो।
जन्माष्टमी (स्त्री०)-भाद्रपदकृष्णा अष्टमी जिस दिन श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था।
जन्य(वि०)-उत्पन्न, संघटित, जनसम्बन्धी, गंवार, जातीय। न०-उत्पत्ति, पैदायश, लोकापवाद। पु०-पिता।
जप्(१ प०)-धीमे स्वर से उच्चारण करना, मन मन में बोलना, गुन गुन करना, जाप करना।
जप(पु०)=जाप। [पढ़ना।
जपन (न०)-मन्त्र जपना, प्रार्थना
जभ्[जम्भ्] (१ आ०)-मुंह फाड़ना, मुंह बाना, जम्भाई लेना।
जमदग्नि(पु०)-भृगुवंशज परशुराम का पिता जिस की स्त्री का नाम रेणुका था।
जम्पती=दम्पती।
जम्बाल(पु०)-काई, कीचड़, केवड़ा।
जम्बालिनी(स्त्री०)-नदी, दरिया।
जम्बु-म्बू(स्त्री०)-जामन का पेड़।
जम्बुक-म्बूक(पु०)-गीदड़, जामन, नीच मनुष्य। [में से एक।
जम्बुखण्ड(पु०)-पृथ्वी के सात खण्डों
जम्भ(पु०)-जबाड़ा, दांत, टुकड़ा, ठोड़ी, जम्भाई, दैत्यविशेष।
जम्भाराति(पु०)-इन्द्र।
जम्भारि(पु०)-अग्नि, इन्द्र।
जम्भिका जम्भा (स्त्री०)-जम्भाई, मुंह बाना।
जय(पु०)-शत्रुओं का नाश, जीतना।
जयद्रथ(पु०)-दुर्योधन का बहनोई, जो सिन्धु देश का राजा था।
जयन्त(पु०)-इन्द्र के एक पुत्र का नाम, विष्णु, चन्द्रमा, भीम का नाम

जो उसने विराट के यहां धारण किया था, शिव।
जयन्ती (स्त्री०)–पताका, उत्सव जैसे रजतजयन्ती, स्वर्णजयन्ती।
जयपत्र (न०)–जीत का लेख, वह दस्तावेज़ जिस में विजेता की जीत स्वीकार की गई हो, अश्वमेध में घोड़े के मस्तक पर जो पत्र बांधा जाता था।
जयपाल(पु०)–ब्रह्मा, विष्णु, राजा, जमालगोटा। [जयन्ती।
जया(स्त्री०)–हरीतकी, भांग, जयन्ती,
जरठ(वि०)–कठोर, कर्कश, सकील, जीर्ण।
जरत(वि०)–वृद्ध, बूढ़ा, दुर्बल।
जरद्गव(पु०)–बूढ़ा बैल, पञ्चतन्त्र में एक गिद्ध का नाम।
जरन्त(पु०)–महिष, भैंसा। वि०–शिथिल, ढीला। [वस्था।
जरा(स्त्री०)–बुढ़ापा, कमज़ोरी, वृद्धा-
जरायु(न०)–सांप की केंचुली, जेल, झिल्ली।
जरायुज(वि०)–झिल्ली से उत्पन्न।
जर्च्(१, ६ प०)–कहना, बोलना, धमकाना। [क्षत।
जर्जर(वि०)–वृद्ध, कमज़ोर, श्रान्त,
जर्जरित(वि०)–पूर्ववत्।
जल्(१ प०)–ढकना, परदा डालना, घेरना, ठंडा होना, अमीर बनना।
जल(न०)–पानी, वि०, ह्रीबेर नामक सुगन्धिद्रव्य, पूर्वाषाढा।
जलक(न०)–घोंघा, शंख।
जलकण्टक(पु०)–मगर, नाका।
जलकुन्तल(पु०)–काई।
जलक्रीडा(स्त्री०)–जल में खेलना, दिलबहलाना। [देना।
जलक्रिया(स्त्री०)–पितरों को जल
जलद्रुम(पु०)--वायहाल।
जलचर(वि०)–पानी में रहने वाला। पु०–मछली, जलजन्तु।
जलजन्तुका(स्त्री०)–जलौका, जोंक।
जलजीवी(पु०)–मछेरा, धीवर।
जलतरंग(पु०)–लहर।
जलत्रा(स्त्री०)–छाता, छतरी।
जलद(पु०)--बादल, मेघ।
जलधर(पु०)--समुद्र, सागर, बादल।
जलधारा(स्त्री०)–पानी का सोता, बहता हुआ पानी।
जलधि(पु०)–समुद्र, सागर।
जलनिधि(पु०)--पूर्ववत्।
जलनिर्गम(पु०)–पानी बहने का स्थान, नाली।
जलपात्र(न०)–जल पीने का बर्तन।
जलपूर(पु०)–बाढ़, पानीका चढ़आना
जलप्रलय(पु०)–बाढ़ से नाश।
जलप्लावन=जलपूर।
जलभृत्(पु०)–बादल, घड़ा, कपूर।
जलमार्ग(पु०)--पानी निकलने का रास्ता, नाला।
जलमुक्-च्(पु०)--बादल, मेघ।
जलयन्त्र (न०)–पानी खेंचने की मैशीन; वाटरवर्क्स।
जलराशि(पु०)--समुद्र, सागर।
जलवाह(पु०)--बादल, जल लेजाने

वाला, कहार।
जलाका-लूका, लोका(स्त्री०)--जोंक।
जलांजलि(पु०)--अञ्जलि में जल भरना।
जलाधार(पु०)--समुद्र, झील, हौज़।
जलार्णव(पु०)--वर्षाकाल।
जलाशय(पु०)--तालाब, झील,समुद्र।
जलेवाह (पु०)--गोतेख़ोर, गोता लगाने वाला।
जलोदर(न०)--एक प्रकार का रोग जिस में पेट की नसों में पानी भर जाता है।
जल्प् (१ प०)--बातें करना, तारीफ़ करना, कानाफूंसी करना।
जल्प(पु०)--वाणी, बातचीत, कानाफूसी, वहस, मुबाहिसा।
जल्पक(वि०)--बातूनी।
जल्पन(न०)=जल्प।
जव(पु०)--वेग, ज़ोर, तेज़ी।
जवन(पु०)--तेज़ घोड़ा। न०--तेज़ी, जल्दबाज़ी।
जवनिका(स्त्री०)-पर्दा,क़नात।[जवनी भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।
जवस (पु०)--घास।
जस्(१०प०)--मारना,अपमान करना। ४प०--मुक्त करना,थकना,त्यागना।
जस्र (न०)--थकावट, थकान।
जहानक (पु०)-संसार का अत्यन्त नाश
जा (स्त्री०)--माता, देवरानी या जेठानी, जाति।
जागर (पु०)--जागृति, जागना। वि०-सावधान, जागता हुआ।
जागरण (न०)--जागना, सावधानी, निद्रा का अभाव।
जागरित (वि०)--जागा हुआ। न०--जागरण।
जागरूक(वि०)--निद्रारहित,सावधान, जागरणशील।
जागृ(२प०)--जागना, न सोना, नींद से उठना। [अप्रमत्त।
जाग्रत् (वि०)--जागता हुआ,सावधान,
जांगल (वि०)--जंगली,गंवार,वहशी। न०--मृगमांस, मांस।
जांगुलिक (पु०)--विषवैद्य, सर्प काटे की औषध करने वाला।
जाड्य (वि०)--उदासीनता, मन्दता, सर्दी, जाड़ा।
जात(न०)--जन्तु,जीव,उत्पत्ति, बच्चा वि०--उत्पन्न, संघटित, प्रत्यक्ष। पु०--पुत्र।
जातक (पु०)--सद्य उत्पन्न बालक, जातकर्म, भिखारी। वि०--उत्पन्न
जातकर्म (न०)--पुत्रजन्म के समय का कर्त्तव्य संस्कारविशेष।
जाता (स्त्री०)--पुत्री।
जाति (स्त्री०)--उत्पत्ति,पैदायश,क़ौम, वर्ण,कोटि, चूल्हा, एक अलंकार।
जातिब्राह्मण (पु०)--जो केवल जाति से ब्राह्मण हो अर्थात् अपने कर्त्तव्य का पालन न करता हो।
जातिभ्रष्ट (वि०)--जाति से बाहर, जाति से च्युत।
जातिवैर (न०)--स्वाभाविक शत्रुता।
जातिहीन (वि०)--जातिच्युत, नीच-वंशज।

जातीय(वि०)--जातिसम्बन्धी, स्वजातीय, एक जातिका, कौमी, नेशनल।
जातु (अ०)--शायद, मुमकिन, कदाचित्, एकदा, कभी किसी समय
जातू (पु०)--वज्र। [सगोत्रीय।
जात्य (वि०)--कुलीन, श्रेष्ठ, खानदानी,
जात्यन्ध (वि०)--जन्मान्ध, जो अंधा जन्मा हो।
जानकी(स्त्री०)--जनकपुत्री, रामप्रिया सीता।
जानपद(पु०)--ग्रामीण, गंवार, ग्राम से प्राप्त कर आदि।
जानपदी(स्त्री०)--कारोबार, पेशा।
जानु(न०)--घुटना, गोड़ा, जाघ और पैर के बीच का भाग।
जाप (पु०)--मन्त्रोच्चारण, मन २ में किसी बात को दोहराना, बार२ उच्चारण। [का नाम।
जाबाल (पु०)--अजाजीवी, एक ऋषि
जाबालि(पु०)--एक ऋषि का नाम।
जामा(स्त्री०)--पुत्री, पुत्रवधू।
जामाता [तृ] (पु०)--दामाद, पुत्री का पति, स्वामी, जमाई।
जामि (स्त्री०)- कुल स्त्री, पुत्री, भगिनी, पुत्रवधू।
जामेय(पु०)--भांजा, बहिन का पुत्र।
जाम्बवान् [वत्] (पु०)--ऋच्छराज जिस का रामायण में वर्णन आता है।
जाम्बूनद (न०)--स्वर्ण, सोना, धतूरा।
जाया (स्त्री०)--पत्नी, भार्या।
जायाजीव(पु०)--वेश्या का पति, नट।
जायापती (पु०द्विव०)--पति और पत्नी, दम्पती।
जायु (पु०)--औषध, दवाई, भेषज।
जार (पु०)--व्यभिचारी, आशना, यार, उपपति।
जारज-जात (पु०)--व्यभिचार से उत्पन्न पुत्र।
जारिणी (स्त्री०)--व्यभिचारिणी।
जाल (पु०)--कदम्बवृक्ष। न०-अपने नाम से प्रसिद्ध वस्तु, खिड़की, गवाक्ष, जादू, छल, चक्षूरोग।
जालकारक (पु०)--मकड़ी, जाल बनाने वाला।
जालप्राया (स्त्री०)--कवच, लौहवस्त्र।
जालिक (पु०)--मछेरा, सय्याद, जादूगर, मकड़ी, धीवर। [नगर।
जालन्धर (पु०)--पंजाब में एक प्रसिद्ध
जाल्म (पु०)--ठग, बदमाश, निर्धन। वि०-क्रूर, अदूरदर्शी।
जावन्य (न०)--शीघ्रता, तीव्रता।
जावाल (पु०)--एक ऋषि का नाम।
जाह्नवी(स्त्री०)--गङ्गा नदी का वाचक।
जि (१ प०)--जीतना, हराना, ग़ालिब आना।
जिगीषा (स्त्री०)--जीतने की इच्छा।
जिगीषु(वि०)--जीतनेकी इच्छावाला।
जिघत्सा (स्त्री०)--खाने की इच्छा।
जिघांसा (स्त्री०)--मारने की इच्छा, बदला लेने की वृत्ति।
जिघांसु (वि०)--मारने का इच्छुक, खूंख्वार।

जिज्ञासा (स्त्री०)–जानने की इच्छा, कौतूहल, तलाश।
जिज्ञासित(वि०)–गवेषित, जानाहुआ।
जिज्ञासु (वि०)–जानने का इच्छुक।
जित (वि० –जीता हुआ, पराभूत। न०-जीत।
जित्य (वि०)–जीतने के योग्य।
जिन (पु०)–बुद्ध, जैनतीर्थंकर, वृद्धपुरुष
जिनेन्द्र (पु०)-जैनअर्हत, जैनों का सर्वोत्तम उपास्यदेव।
जिष्णु (वि०)–विजयी। पु०-सूर्य, इन्द्र, विष्णु अर्जुन।
जिवाजिव (पु०)--चकोर पक्षी।
जिह्म(वि०)–मन्द, कुटिल, क्रूर, तिरछा। न०-बेईमानी, कुटिलता।
जिह्वल (वि०)–लालची, गृध्नु, चटोरा।
जिह्वा (स्त्री०)–जीभ, रसनेन्द्रिय, रसना, ज़बान।
जिह्वामूलीय (पु०)--जिह्वा की मूल से जिन शब्दों का उच्चारण होता है, जैसे ≍ क ≍ ख से पूर्व अर्ध विसर्ग।
जिह्वारद (पु०)--पक्षी, परिन्द।
जीति (स्त्री०)--जय, विजय, फ़तह, पराभव।
जीन (पु०) चमड़े का बनाहुआ वस्त्र। वि०-पुराना, वृद्ध।
जीमूत (पु० --पर्वत, बादल, इन्द्र, देवदारु वृक्ष।
जीर (वि०)--छोटा, अल्प। पु०--असि, तलवार। [पु०-जीरा।
जीर्ण(वि०)–फटा हुआ, पुराना, वृद्ध।
जीर्णोद्धार (पु०)-किसी टूटी फूटी इमारत को फिर से मरम्मत कराना, संस्कार।
जीवि(पु०)–कुठार, पशु, काया।
जीव् (१ प०)–जीना, प्राण धारण करना। [प्राणी।
जीव(पु०)–आत्मा, चेतनशक्ति, रूह,
जीवक (पु०)–औषधविशेष। वि०–जीवी, सेवक।
जीवद(पु०)--वैद्य, जीवनदाता।
जीवन(न०)–जिस के सहारे से जीते हैं, जीविका, वृत्ति, जल, लोनी घी। पु०–जीवकौषध, वात।
जीवनक(न०)–अन्न, जीवन का सहारा।
जीवनहेतु (पु०)--जीवन का कारण जैसे शिल्प, वाणिज्य, कृषि।
जीवनाघात(न०)--विष, ज़हर।
जीवनिका(स्त्री०)–हरीतकी, हैड़।
जीवनी(स्त्री०)-जीवन्ती, जीवनचरित्र, सर्वानेतम्री।
जीवन्तिका-न्ती (स्त्री०)–गुडूची, गिलोय, हरीतकी।
जीवन्मुक्त(पु०)–जिसने सशरीर परमानन्द को पा लिया, जिसने आत्मानुभव कर लिया, ईश्वर को साक्षात्कार करने वाला।
जीवमन्दिर (न०)--शरीर, देह।
जीवस्थान(न०) -मर्मस्थल, जहां पर चोट लगने से प्राणपखेरु उड़जांय।
जीवात्मा (पु०)–देहाभिमानी जीव।
जीविका (स्त्री०)–वृत्ति, जीवन, जीवनाधार, रोज़ी, कारोबार।

जीवित (न०)—जीवन, जान। वि०—जीता हुआ।
जीवितेश (पु०) यमराज का बोधक।
जीवी[न्] (पु०)—प्राणी, जीवधारी।
जु (१प०)—वेग से बहना, जोर से चलना।
जुग(१प०)[इदित्]—त्यागना, छोड़ना।
जुगुप्सनम्—प्सा (स्त्री०)—निन्दा, बुराई।
जुटक (न०)—जटा, केशगुच्छ।
जुटिका (स्त्री०)—शिखा, चोटी, बंधे हुए बाल। [करना।
जुड् (५ प०)—जाना, बांधना, गमन
जुत (१ आ०)—चमकना, दीप्तिमान् होना।
जुल् (५प०)—जाना, गमन करना।
जुल् (१०प०)—पीसना, कुचलना, रगड़ना।
जुष् (६आ०, १प०)—खुश होना, हर्ष मानना, प्रसन्न होना।
जुष्ट (न०)—जूठा, उच्छिष्ट, सेवन की हुई वस्तु। [हृदय।
जुहूवान् (पु०)—अग्नि, वृक्ष, कठोर-
जू (स्त्री०)—आकाश, सरस्वती, पिशाची।
जूति (स्त्री०)—वेग,जोर,शीघ्रगामिता।
जूर्त्ति (स्त्री०)—वेग, ज्वर, ताप।
जूष् (१प०) मारना, वध करना।
जूष (न०)—मुद्ग आदि द्राक्षरस, काढ़े का रस, यूष।
जृम्-म्भ् (१आ०) मुंह बाना, मुंह खोलना, जमाई लेना।
जृम्भ—णम्=जमाई, मुखविकाश, मुंह बाना।
जृम्भा—म्भिका (स्त्री०)—पूर्ववत्।
जॄ (४ प०)—बूढ़ा होना। [हमन्द।
जेता [तृ] (वि०)—जीतने वाला, फत-
जेमन (न०)—भोजन, भक्षण, खूराक।
जेय (वि०)—जीतने योग्य।
जै (१प०)—नष्ट होना, क्षय को प्राप्त होना। [पु०—पारा।
जैत्र (न०)—औषध। (वि०)—जैता।
जैन (पु०)—जिनधर्मावलम्बी, बुद्धानुयायी, अर्हत् का उपासक।
जैमिनि—नी (पु०)—व्यास का एक शिष्य।
जैवातृक(पु०)—कर्पूर,चन्द्रमा,औषध। वि०—दीर्घायु, कृश।
जैह्म्य (न०) कुटिलता, जिह्मता।
जोषम् (अ०)—चुप, तूष्णीम्।
जोषिता (स्त्री०)—योषित, नारी, औरत।
ज्ञ (पु०)—बुध, पण्डित, ब्रह्मा।
ज्ञप् (१०प०)—बतलाना, मारना, प्रकट करना, प्रसन्न करना।
ज्ञपित (वि०)—ज्ञापित, मारा गया, ज्ञात किया गया।
ज्ञप्ति (स्त्री०) बुद्धि, अकल।
ज्ञा (९प०)—जानना, समझना, अवगत करना। [अवगत।
ज्ञात (वि०)—जाना हुआ, विदित,
ज्ञातव्य(वि०)—जानने योग्य ज्ञेय, बोध्य। [वाला, शास्त्रज्ञ।
ज्ञातसिद्धान्त(पु०)—सिद्धान्त का जानने

ज्ञाता[तृ] (वि०)–ज्ञानशील, विदुर, जानने वाला।
ज्ञाति (पु०)–जाति, सगोत्रज, एकवंशीय, बिरादरी, स्वजन, बांधव।
ज्ञान (न०)–जानना, बुद्धि, समझ, जानकारी। [का उपाय।
ज्ञानयोग (पु०)–ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति
ज्ञानी[नु](पु०)–दैवज्ञ, जानने वाला, तत्त्वज्ञानी, ज्योतिषी,समझदार।
ज्ञानेन्द्रिय (न०)–जिस इन्द्रिय के द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाय; अन्तःकरण, मन, आंख, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा ये पांच ज्ञानेन्द्रिय कहलाती हैं।
ज्ञापन(न०)–बोधन,जनाना,बतलाना।
ज्ञेय(वि०)–जानने योग्य, ज्ञातव्य।
ज्या(८ प०)–बूढ़ा होना।
ज्या(स्त्री०)–धनुष का चिल्ला, मौर्वी, प्रत्यञ्चा,माता, वसुधा। [हानि।
ज्यानि (स्त्री०)–जीर्णता, बुढ़ापा,
ज्यु(१ आ०)–जाना, गमन करना।
ज्येष्ठ(वि०)–बड़ा, वृद्ध, श्रेष्ठ, अग्रज। पु०–बड़ा भाई, वैशाख के पश्चात् आने वाला मास।
ज्येष्ठा (स्त्री०)–बड़ी बहिन, गंगा, १८ वां नक्षत्र।
ज्येष्ठामूलीय(पु०)–ज्येष्ठ मास।
ज्येष्ठाश्रमी[नु] (वि०)–गृहस्थी, क्योंकि गृहस्थ सब आश्रमों में श्रेष्ठ कहा गया है।
ज्यैष्ठ्य(न०)–बड़प्पन, बड़ा होना।
ज्योक्(अ०)–अब,इस समय, सम्प्रति, जल्दी। [प्रकाश, अग्नि,सूर्य।
ज्योतिः[स्] (न०)–दृष्टि, नक्षत्र,
ज्योतिरिंग(न०)–खद्योत, जुगनू।
ज्योतिर्विद्(पु०)–ज्योतिषशास्त्र को जानने वाला।
ज्योतिर्बीज (न०)–खद्योत, जुगनू।
ज्योतिश्चक्र (न०)–सत्ताईस नक्षत्रों वाला राशिचक्र।
ज्योतिष (न०)–एक वेदाङ्ग जिस में आकाश के ग्रहों के सम्बन्ध का ज्ञान वर्णित है। [जानने वाला।
ज्योतिषी (पु०)–ज्योतिषशास्त्र के
ज्योतिष्टोम (पु०)–एक यज्ञ जिसमें १६ पुरोहित बैठते हैं।
ज्योतिष्मत्[मान्] (वि०)–दीप्तिमान्, चमकीला,प्रकाशयुक्त।
ज्योतिष्मती(स्त्री०)-मालकंगनी नामक लता, निशा, रात्रि। [कौमुदी।
ज्योत्स्ना (स्त्री०)–चन्द्रिका, चांदनी,
ज्योत्स्नाप्रिय(पु०)–चकोरपक्षी।
ज्यौतिषिक(पु०)–दैवज्ञ, ज्योतिषी।
ज्रि(१ प०)–दबाना,तिरस्कार करना।
ज्री(१० उ०, ८ प०)–बूढ़ा होना, जीर्ण होना, वयोवृद्ध होना।
ज्वर्(१प०)–रोगी होना,आतुर होना।
ज्वर(पु०)–बुखार, ताप, देहोष्णता, बुखार की गर्मी, रोगविशेष।
ज्वरघ्न (पु०)–गिलोय, गुडूची, ज्वरनाशक औषध।
ज्वरान्तक (पु०)–ज्वर का नाश करने वाला रस।
ज्वरित (वि०)–बुखार चढ़ा हुआ।

ज्वल् (१ प०)—चमकना, दीप्तिमान् होना
ज्वलका (स्त्री०)—अग्निशिखा।
ज्वलन (पु०)—अग्नि, चित्रक वृक्ष। न० दाह, दहन, दीप्ति, जलन।
ज्वलनाश्मन् [न्] (पु०)—सूर्यकान्तमणि, सूरज का पत्थर, आतशी शीशा।
ज्वलित (वि०)—प्रदीप्त, प्रकाशमान, चमकीला। [लपट।
ज्वाला (स्त्री०)—अग्निशिखा, आग की
ज्वालाजिह्व (पु०)—अग्नि, आग।
ज्वालामुखी (स्त्री०)—पर्वतविशेष जिस में से आग निकला करती है, कोह आतिशफिशा।

झ

झ (पु०)—झञ्झावात, इन्द्र, ध्वनि।
झगिति-गिति (अ०)—शीघ्र, जल्दी, झटिति, तुरन्त।
झङ्कार (पु०)—भौंरे आदि का शब्द, गूंजने की आवाज़।
झञ्झा (स्त्री०)—तीव्रवायु, तेज़ हवा, आंधी, ध्वनिविशेष।
झञ्झावात (पु०)—आंधी, तीव्रवायु।
झट् (१ प०)—इकट्ठा होना, एकत्रित होना
झटि (पु०)—छोटा पेड़।
झटिति (अ०)—शीघ्र, जल्दी, झटपट।
झति (अ०)—पूर्ववत्।
झणत्कार (पु०)—झङ्कार की आवाज़, आभूषणों का बजना, झमझम का शब्द। [सम्पातपतन।
झम्प (पु०)—वेगपूर्वक नीचे को गिरना,
झम्पारु (पु०)—वानर, बन्दर।
झम्पी [न्] (पु०)—वानर, बन्दर।
झर (पु०)—निर्झर, झरना, जलप्रवाह।
झरा-री (स्त्री०)—पूर्ववत्। [झरना।
झर्च्-र्छ (६ प०)—झिड़कना, भर्त्सना
झर्झर (पु०)—एक प्रकार की ध्वनि जो ढोल या बाजा बजाते समय निकलती है।
झर्झरक (पु०)—कलियुग, नदविशेष।
झर्झरा (स्त्री०)—वेश्या, वाराङ्गना।
झला (स्त्री०)—कन्या।
झल्ल (पु०)—एक वर्णसङ्कर जाति, भांड, प्रहासक, नक्काल।
झल्लक (न०)—मजीरा नामक वाद्य-भेद, कांसी के बने करतालक।
झल्लकण्ठ (पु०)—कबूतर, पारावत।
झष् (१ प०)—मारना, बध करना। (१उ०)—लेना, ग्रहणकरना, ढकना।
झष (पु०)—मछली, मत्स्य, धूप, गर्मी, ताप, मीनराशि।
झषकेतन-केतु (पु०)—जिसकी ध्वजा में मत्स्य का चिन्ह हो, कामदेव, मदन।
झषाङ्क (पु०)—अनिरुद्ध, कन्दर्प।
झाट (पु०)—कान्तार, निकुञ्ज, घाव आदि का धोना।
झाटा-टिका (स्त्री०)—भूम्यामलकी।
झामक (न०)—अतिदग्ध ईंट अर्थात् झामा, झावां।
झावु-क (पु०)—झाऊ नामक वृक्ष, झाड़ी का भेद।
झिङ्गिनी (स्त्री०)—उल्का, वृक्षविशेष।

झिझिम (पु०)–दावाग्नि, वनाग्नि।
झिझी–झिरिका–झिरी (स्त्री०)–झिल्ली, पतली खाल।
झिल्लिका–झिल्ली(स्त्री०)–झींगर, कीटविशेष।
झु (१आ०)–जाना, गमन करना।
झुण्ट (पु०)–झाड़ी, गुल्म।
झोड (पु०)–गुवाक नामकवृक्ष।

ञ

ञ–चवर्ग का पञ्चम अक्षर। पु०–शुक, तोता, गायन,बैल, घर्घरध्वनि।

ट

ट–टवर्ग का प्रथम अक्षर, ग्यारहवां व्यञ्जन। (पु०)–बौना, खर्व, वामन, पैर, चुपचाप, निस्स्वन। न०– करंक, टकार।
टक् (१० प०)–बाँधना।
टगर (पु०)–सुहागे का क्षार।
टंक (पु०)–कोप,असि, म्यान, चार मासे की माप, जंघा, अहंकार, दर्प।
टंकक (पु०)–रुपया, मुद्रा, टकसाल।
टंककपति (पु०)–टकसाल का अध्यक्ष। [का घर।
टंककशाला (स्त्री०)–रुपया ढालने
टंकण (पु०)–सुहागा, क्षारविशेष।
टंका (स्त्री०)–जघा।
टंकार (पु०)–धनुष पर ज्या चढ़ाते समय जो ध्वनि निकलती है, विस्मय, आश्चर्यध्वनि।
टंग (अस्त्री०)–टाग, जंघा, कुदाल, खनित्र। पु०–सुहागा। [क्षार।
टंगण(अस्त्री०)–सुहागा नामक प्रसिद्ध
टा (स्त्री०)–पृथिवी, ज़मीन।
टार (पु०)–लंग, तुरंग।
टिक् (१ आ०)–जाना, गमन करना, चलना।
टिटिभक (पु०)=टिट्टिभ।
टिट्टिभ–भक (पु०)–पक्षिविशेष, टिटीहरी, टी टी करने वाला जानवर।
टिप् (१० प०)–प्रेरणा करना, चलाना, प्रेरना। [नोट।
टिप्पनी (स्त्री०)–टीका, व्याख्या,
टीका (स्त्री०)–व्याख्याग्रन्थ, व्याख्यान, विस्तारपूर्वक कथन।
टुंटुक (वि०)–क्रूर, शठ, नीच।
टेरक (वि०)–तिरछी निगाह वाला, केदर, वक्रचक्षु।

ठ

ठ–टवर्ग का दूसरा अक्षर। पु०–शिव, चन्द्रमण्डल, महाध्वनि, शून्य।
ठक्कुर (पु०)–देवता, ठाकुर, देवमूर्ति, ब्राह्मण की उपाधि।
ठेर (पु०)– वृद्ध, बूढा।

ड

ड–टवर्ग का तीसरा अक्षर। पु०–बाड़वानल, भय, शिव, ध्वनि।

डप् (१० आ०)–इकट्ठा करना, ढेर लगाना।
डम (पु०)–डोम, भंगी, अन्त्यज।
डमर (पु०)–दंगाफिसाद, कोलाहल।
डमरु (पु०)–एक प्रकार का वाद्य जो इसी नाम से प्रसिद्ध है।
डयन(न०)–उड़ान,ऊर्ध्वगति,पालकी।
डम्ब् (१० उ०)–फेंकना, आदेश करना, देखना, भेजना।
डम्बर (पु०)–समूह, गिरोह, आडंबर, अहंकार।
डल [ल्ल] क (न०)–बांस की बनी हुई डलिया।
डा (स्त्री०)–डाकिनी।
डाकिनी (स्त्री०)–एक प्रकार की भयानक स्त्री, दुर्गा का भेद।
डामर (वि०)–भयानक, खौफनाक। पु०–शोरगुल, कोलाहल।
डाहल (पु०)–देशविशेष और वहां के निवासी।
डिंगर (पु०)–मोटा आदमी, अपमान, शठ, नौकर।
डिंडिम (पु०)–ढोलकी, छोटा ढोल।
डित्थ (पु०)–काष्ठहस्ती, स्वरूपवान् कृष्णवर्ण युवा पुरुष जो प्रत्येक शास्त्र को जानता हो।
डिप् (१०आ०)–इकट्ठा करना, ढेर लगाना।
डिम् (१प०)–मारना, चोट पहुंचाना।
डिम्ब (पु०)–कोलाहल, बच्चा, शिशु, अण्डा, प्लीहा, तिल्ली।
डिम्बिका (स्त्री०)–व्यभिचारिणी, बुलबुला। [जाना।
डी (१, ४ आ०)–उड़ना, आकाश में
डीन (न०)–उड़ना,पक्षियों की ऊर्ध्व-गति, उड्डीन, अवडीन।
डुंडुभ (पु०)–विषरहित सर्प, दुमी।
डोम (पु०)–भंगी, अन्त्यज, अपने नाम से प्रसिद्ध जाति। [डोम्ब भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।
डोर (पु०)–बटा हुआ तागा, ट्विन।

ढ

ढ–टवर्ग का चतुर्थ अक्षर। पु०–बड़ा ढोल, कुत्ते की दुम, सर्प, कुत्ता, ध्वनि।
ढक्का (स्त्री०)–बहुत बड़ा ढोल, नाश, लालच।
ढाल (न०)–प्रायः गैंडे की खाल का बना हुआ शस्त्रप्रहार रोकने का साधन, अपने नाम से प्रसिद्ध वस्तु।
ढुंढन (न०)–तलाश, ढूंढना।
ढोल (पु०)–अपने नाम से प्रसिद्ध वाद्यविशेष।
ढौक् (१ आ०)–जाना, पास पहुंचना।
ढौकन (न०)–भेंट, नज़राना, घूंस।

ण

ण- टवर्ग का पञ्चम व्यञ्जन। पु०-ज्ञान, निश्चय, आभूषण, दान, लता-कुञ्ज, निषेधबोधक। [कोई शब्द भी 'ण' से आरंभ नहीं होता है,

कोई २ नकारादि धातु 'ण' से लिखी जाती हैं जिनके अर्थ 'न' शीर्षक में ही दिखलाये जावेंगे जैसे णद्, णश्, णह्, णिज्, णिश्, णी, णु]।

त

त-तवर्ग का प्रथम अक्षर। (पु०)-चोर, म्लेच्छ, बुद्धदेव, अमृत, रत्न, योद्धा, छाती, दुम, क्रूरजन। न०-नेकी, पार करना।

तक् (१ प०)-उड़ना, झपटना, मज़ाक़ उड़ाना, सहना।

तकिल (वि०)-चालाक़, क्रूर, ठग।

तक्कन् (न०)-बच्चा, शिशु, बालक।

तक्र(न०)-मट्ठा, छाछ, मथी हुई दही जिस में जल का चौथाई भाग होता है

तक्राट (पु०)-रई, मन्थनी, मन्थनदण्ड

तक्ष् (१, ५, प०)-काटना, छीलना, छेपटी उतारना, जख़्मी करना, ढकना।

तक्षक (पु०)-बढ़ई, लकड़ी काटने वाला, सूत्रधार, सर्पभेद।

तक्षण (न०)-काटना, चीरना, फाड़ना।

तक्षन् (पु०)-बढ़ई, विश्वकर्मा।

तक्षशिला (स्त्री०)-वर्तमान रावलपिण्डी के पास एक प्राचीन नगर।

तङ्कः ङ्कनम्=दुःखमयजीवन, विरह, भय।

तङ्क् (१ प०)=तक्।

तगर(पु०)-एक सुगन्धित औषध।

तञ्च् ञ्ज (७प०)-सिकुड़ना, पीछे हटना।

तट्(१० उ०)-मारना, पीटना। (१प०)-उठना, उन्नत होना।

तट(पु०)-आकाश, शिव, ढाल, ढालवाँ चट्टान। अस्त्री०-किनारा, कूल। न०-खेत।

तटग(पु०)-तालाब, तड़ाग।

तटस्थ (वि०)-तीरस्थित, कूलगत, उदासीन, अकर्मण्य। पु०-उदासीन पुरुष।

तटा-टी(स्त्री०)=तट।

तटाक(अस्त्री०)-तालाब, जलाशय।

तटिनी(स्त्री०)-नदी, दरिया।

तड्(१० उ०)-ताडन करना, मारना, पीटना।

तडग-डाक(पु०)-तालाब, जलाशय।

तडाग(अस्त्री०)-तालाब, जलाशय।

तडित(स्त्री०)-बिजली, बध, चोट।

तडिद्गर्भ(पु०)-बादल, मेघ।

तण्ड्(१ आ०)-मारना।

तण्डक(पु०)-ठग, बाजीगर, फेन, झाग, अधिक समासों वाला वाक्य।

तण्डुरीन(पु०)-म्लेच्छ, मूर्ख।

तण्डुल(पु०)-धान्य, चावल।

तत(वि०)-फैला हुआ, झुका हुआ, तना हुआ,।

ततस्(तत्.) (अ०)-वहां से, वहां, तब, तिस पर, पश्चात, इसलिये, अतएव, उस अवस्था में।

ततस्त्य (वि०)-तत्रभव, वहां का, वहां होने वाला।

तति(स्त्री०) पंक्ति, समूह, अनुष्ठान। सर्व०-उतना, उस क़दर।

तत्काल(पु०)-वर्तमान क्षण, उपस्थित

समय ।
तत्कालधी(वि०)-प्रत्युत्पन्नमति ।
तत्क्षणम् (अ०)-फ़ौरन, तुरन्त, उस समय । [तानकाल ।
तत्क्षण(पु०)-उपस्थित समय, वर्त्त-
तत्क्षण-तत्क्षणात्(अ०)-तुरन्त,फ़ौरन, उसी समय ।
तत्त्व(न०)--सच्चाई, वास्तविक बात, सत्य, मन, सार, परमात्मा ।
तत्त्वज्ञ-विद्(वि०)--तत्त्ववेत्ता, फ़िलासफर । पु०-ब्राह्मण ।
तत्त्वज्ञान(न०)-फ़िलासफ़ी, वास्तविक ज्ञान । [निश्चयपूर्वक ।
तत्त्वतः (अ०)-वास्तव में, ठीक २,
तत्पर(वि०)--तय्यार, उद्यत ।
तत्परायण (वि०)--तदासक्त, उसी में लगा हुआ ।
तत्पुरुष (पु०)- मुख्य पुरुष,परमात्मा, समासों में से एक जिस में पहिला पद दूसरे पद के अर्थ को बनाता है ।
तत्फल (पु०)--विस्तृतफल वाला, सुगन्धिद्रव्यविशेष ।
तत्र (अ०)-उस समय, उस जगह, वहां उस में । [को चीज़ ।
तत्रत्य (अ०)-वहां होने वाला,वहां
तत्रभवान् (पु०)-श्लाघ्य, पूजनीय पुरुष । [निश्चय ।
तथा (अ०)-वैसेही, उस प्रकार से,
तथागत (पु०)-जिस प्रकार पुनरावृत्ति न हो उस प्रकार गया हुआ, यथार्थ ज्ञानी, बुद्ध ।
तथापि(अ०)-पहिले कहे गये अर्थ को दृढ़ करना,उस पर भी,जैसा कि ।
तथापि(अ०)-तो भी, तिस पर भी ।
तथाहि (अ०)-दृष्टान्त, मिसाल, प्रसिद्ध है, जैसा कि ।
तथैव (अ०)-ऐसा ही, उसी प्रकार।
तथ्य (न०)-सत्य, यथार्थ ।
तद् (वि०)-पूर्वोक्त, बुद्धि में स्थित, विचार्य । न०-ब्रह्म ।
तदा (अ०)-उस काल में, उस समय ।
तदात्मा [न्] (वि०)-जिस का वह स्वरूप हो, तत्स्वरूप, तत्सदृश ।
तदात्व (न०)-तत्क्षण,वर्तमान काल।
तदानीम् (अ०)-उसी समय, तब ।
तदानीन्तन (वि०)-उसी काल में होने वाला ।
तदामुख (न०)-आरम्भ, शुरू ।
तदीय (वि०)-उस का,तत्सम्बन्धी ।
तद्गत (वि०)-तत्पर, उसी में लगा हुआ ।
तद्गुण (पु०)-अर्थालंकारभेद ।
तद्दिनम् (अ०)-प्रतिदिन, दिन का मध्य । न०-पूर्वोक्त दिन, वह दिन ।
तद्धन (वि०)-कृपण, सूम, कंजूस ।
तद्धित (पु०)-उस के लिये हितकारी, व्याकरण में नाम के आगे लगने वाले प्रत्यय ।
तद्वत्(अ०)-उस की न्याईं, तत्तुल्य ।
तद्वल (पु०)-बाणविशेष ।
तन् (१,४उ०)-फैलना,विस्तृत होना ।
तनय (पु०)-पुत्र, सन्तान, बेटा ।

तनया (स्त्री०)–स्त्रीसन्तान, पुत्री, बेटी, जिमीकन्द । [बारीकी ।
तन्निमा [नू] (पु०)–छुटाई, कार्श्य,
तनीयान्(वि०)–बहुत पतला,कृशतर।
तनु-नू (स्त्री०)–शरीर, देह ।
तनुक्षीर (पु०)–अमाड़ा नामक वृक्ष-विशेष ।
तनुच्छाय (पु०)--जिस की थोड़ी छाया हो अर्थात् बबूल [कीकर] का पेड़, शरीर की शोभा वा छाया।
तनु[नू]ज (पु०)--पुत्र, बेटा । वि०–शरीर से जो उत्पन्न हो ।
तनुजा (स्त्री०)--पुत्री, तनया, बेटी ।
तनुत्र-त्राण(न०)--कवच, जिरहबख्तर।
तनुपत्र (पु०)--इङ्गुदी नामक वृक्ष-विशेष ।
तनु [नू] भव (पु०)–पुत्र, बेटा ।
तनुभस्त्रा (स्त्री०)–नासिका, नाक ।
तनुभृत(पु०)–जीव, शरीरधारी ।
तनुरस (पु०)–पसीना,स्वेद । [बाल।
तनु [नू] रुह् (न०)–शरीर के लोम,
तनुल(वि०)–विस्तृत, फैला हुआ ।
तनुवात(पु०)–नरकविशेष ।
तनुवार(न०)–कवच,जिरह, सन्नाह ।
तनुबीज (पु०)–राजबदर, बड़ा बेर जिस में छोटी सी गुठली होती है।
तनुम(न०)–देह, शरीर, जिस्म ।
तनुमध्यचारिणी (स्त्री०)–युवति स्त्री, बालिका ।
तनू(स्त्री०)=तनु ।
तनूकृत (वि०)–सूक्ष्म किया हुआ, अल्पीकृत, छोटा किया हुआ ।

तनूनप(न०)--घृत, घी । [का पेड़ ।
तनूनपात्-द्(पु०)–अग्नि, आग, चीते
तनूरुह(पु०)–पुत्र, पंख, गरुत् ।
तन्तु (पु०)–ग्राह, जलजन्तु विशेष, अपत्य, औलाद, सूत्र,सूत,धागा ।
तन्तुक(पु०)–सरसों । [सींक ।
तन्तुकाष्ठ (न०)–तूली, तांतेरकाट,
तन्तुकी(स्त्री०)–नाड़ी, नब्ज़ ।
तन्तुनाभ(पु०)–जिसकी नाभि में सूत हो अर्थात् मकड़ी ।
तन्तुपर्व [न्] (न०)–श्रावणमास की पूर्णिमा, यज्ञोपवीत देने का पर्व।
तन्तुर[ल] (न०)–मृणाल, कमल की डण्डी, तांतवाला ।
तन्तुवाप-य (पु०)–जुलाहा, कपड़ा बुनने वाला, कोली ।
तन्तुविग्रहा (स्त्री०)–कदली, केला इस में सर्वत्र सूत से हो होते हैं।
तन्तुशाला (स्त्री०)–वस्त्र बुनने का घर, जुलाहे का घर ।
तन्तुसन्तत (वि०)–जो तन्तुओं से व्याप्त हो, सिंया हुआ ।
तन्त्र (न०)–फैसला, औषध, तन्तु, प्रधान, परिच्छेद, नौकर चाकर, परिजन, शपथ, कुल, वेद की एक शाखा, तन्त्रशास्त्र नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ । [कपड़ा ।
तन्त्रक(न०)–नूतन वस्त्र, नवीन
तन्त्रिका(स्त्री०)–गुडूची, गिलोय ।
तन्त्री (स्त्री०)–गिलोय, एक प्रकार का वीणा नामक वाद्य, शरीर की नाड़ी, एक नदी, रस्सी, विशेष-

गुणसम्पन्ना युवति स्त्री।
तन्द्रा(स्त्री०)-आलस्य,ऊंघना, नींद।
तन्द्रालु (वि०)-निद्रालु, बहुत सोने वाला, स्वापशील।
तन्द्रित(वि०)-तन्द्रायुक्त, सोया हुआ।
तन्मय(वि०)-तद्रूप, वही, अभेद।
तन्मात्रा (स्त्री०)-अपञ्चीकृत रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्दों की सत्ता।
तन्वित(पु०)-रात्रि, विद्युत, अशनि, वायु, गर्जना।
तन्वी (स्त्री०)-कृशाङ्गी, शालपर्णी।
तप् (१ प०)-चमकना, जलना, गर्म होना, दाह करना,सहन करना। (१० उ०)जलाना,दु:ख देना,सताना।
तप (पु०)-गर्मी, उष्णता, सूर्य, धूप, ग्रीष्मऋतु,इन्द्रियदमन,शारीरिक कष्ट सहन करना, व्रतानुष्ठान।
तपः [स्] (न०)-पूर्ववत्।
तपन (न०)-जलन, शारीरिक कष्ट, मानसिक दु:ख, गर्मी। वि०-दाहक, चमकीला, कष्टदायक।
तपनकर-तपनांशु(पु०)-सूर्य,सूर्यरश्मि।
तपनतनया(स्त्री०)-यमुनानदी, गोदावरी नदी।
तपनी (स्त्री०)-गर्मी, गोदावरी, तापती।
तपनीय(वि०)-गर्म करने योग्य,स्वर्ण।
तपस (पु०)-चन्द्रमा, सूर्य, पक्षी।
तपस्कर (वि०)-तप करने वाला, तपस्वी।
तपस्या(स्त्री०)-शरीर को कष्ट देकर व्रत का अनुष्ठान, इन्द्रियदमन।
[तपश्चर्या और तपश्चरण का भी यही अर्थ होता है]
तपस्विता (स्त्री०)-तप,तपस्या, भक्ति, पवित्राचार।
तपस्वी [न्] (पु०)-तपोधारी, वानप्रस्थाश्रमी, व्रतधारी, साधु, सुटबढ़ैया पक्षी [स्त्री०-तपस्विनी]
तपःस्थली (स्त्री०)-तपोभूमि, बनारस का नाम।
तपित(वि०)-तप्त, दग्ध, जला हुआ।
तपु[स्] (पु०)-अग्नि, सूर्य, शत्रु।
तपोधन (वि०)-वही तपस्या करने वाला, तपस्या ही जिस का एक मात्र धन है। पु०-तपस्वी।
तपोबल(न०)-तपस्या द्वारा प्राप्त शक्ति
तपोमय (पु०)-परमात्मा, परब्रह्म। वि०-तपस्वी।
तपोमूर्त्ति (पु०)-तपस्वी,परमात्मा।
तपोवन (न०)-ऐसा वन जिस में तपस्वी निवास करते हैं।
तप्त (वि०)-दुःखित, सन्तप्त, गर्म किया हुआ, तपा हुआ।
तप्तकृच्छ्र (न०)-कठिन तपस्या जिस में गर्म जल, गर्म दूध और उष्ण वायु का सेवन किया जाता है।
तम् (४ प०)-थक जाना, सच्छीकं उठाना, गला घुटना।
तम(पु०)-तमाल वृक्ष, अंधेरा, राहु। न०-अन्धकार।
तमः [स्] (न०)-अंधेरा, अन्धकार, अज्ञान, दु:ख, पाप।
तमस (पु०)-अन्धकार, कूप। वि०-

गुणसम्पन्ना युवति स्त्री ।

तन्द्रा(स्त्री०)—आलस्य,ऊघना, नींद ।

तन्द्रालु (वि०)—निद्रालु, बहुत सोने वाला, स्वापशील ।

तन्द्रित(वि०)—तन्द्रायुक्त, सोया हुआ ।

तन्मय(वि०)—तद्रूप, वही, अभेद ।

तन्मात्रा (स्त्री०)—अपञ्चीकृत रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्दों की सत्ता।

तन्वित(पु०)—रात्रि, विद्युत, अशनि, वायु, गर्जना ।

तन्वी (स्त्री०)—कृशाङ्गी, शालपर्णी ।

तप् (१ प०)—चमकना, जलना, गर्म होना, दाह करना,सहन करना । (१० उ०)जलाना,दु:ख देना,सताना।

तप (पु०)—गर्मी, उष्णता, सूर्य, धूप, ग्रीष्मऋतु,इन्द्रियदमन,शारीरिक कष्ट सहन करना, व्रतानुष्ठान ।

तपः [न्] (न०)—पूर्ववत् ।

तपन (न०)—जलन, शारीरिक कष्ट, मानसिक दु:ख,गर्मी। वि०-दाहक, चमकीला, कष्टदायक ।

तपनकर-तपनांशु(पु०)—सूर्य,सूर्यरश्मि।

तपनतनया(स्त्री०)—यमुनानदी, गोदावरी नदी ।

तपनी (स्त्री०)-गर्मी, गोदावरी, तापसी ।

तपनीय(वि०)-गर्म करने योग्य,स्वर्ण ।

तपस (पु०)—चन्द्रमा, सूर्य, पक्षी ।

तपस्कर (वि०)—तप करने वाला, तपस्वी ।

तपस्या(स्त्री०)-शरीर को कष्ट देकर व्रत का अनुष्ठान, इन्द्रियदमन ।

[तपश्चर्या और तपश्चरण का भी यही अर्थ होता है]

तपस्विता (स्त्री०)—तप,तपस्या,भक्ति, पवित्राचार ।

तपस्वी [न्] (पु०)—तपोधारी, वानप्रस्थाश्रमी, व्रतधारी, साधु, खुटबढ़ैया पक्षी [स्त्री०-तपस्विनी]

तपःस्थली (स्त्री०)—तपोभूमि, बनारस का नाम ।

तपित(वि०)—तप्त, दग्ध, जला हुआ ।

तपु:[स्] (पु०)—अग्नि, सूर्य, शत्रु ।

तपोधन (वि०)—बड़ी तपस्या करने वाला, तपस्या ही जिस का एक मात्र धन है। पु०-तपस्वी ।

तपोबल(न०)—तपस्या द्वारा प्राप्त शक्ति

तपोमय (पु०)—परमात्मा, परब्रह्म । वि०-तपस्वी ।

तपोमूर्त्ति (पु०)—तपस्वी,परमात्मा।

तपोवन (न०)—ऐसा वन जिस में तपस्वी निवास करते हैं ।

तप्त (वि०)—दु:खित, सन्तप्त, गर्म किया हुआ, तपा हुआ ।

तप्तकृच्छ्र (न०)—कठिन तपस्या जिस में गर्म जल, गर्म दूध और उष्ण वायु का सेवन किया जाता है ।

तम् (४ प०)—थक जाना, सकलीफ उठाना, गला घुटना ।

तम(पु०)—तमाल वृक्ष, अंधेरा, राहु । न०-अन्धकार ।

तमः [स्] (न०)-अंधेरा, अन्धकार, अज्ञान, दु:ख, पाप ।

तमस (पु०)—अन्धकार, कूप । वि०-

गुणसम्पन्ना युवति स्त्री।

तन्द्रा(स्त्री०)–आलस्य,ऊघना, नींद।

तन्द्रालु (वि०)–निद्रालु, बहुत सोने वाला, स्वापशील।

तन्द्रित(वि०)–तन्द्रायुक्त, सोया हुआ।

तन्मय(वि०)–तद्रूप, वही, अभेद।

तन्मात्रा (स्त्री०)–अपञ्चीकृत रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्दों की सत्ता।

तन्यतु(पु०)–रात्रि, विद्युत, अशनि, वायु, गर्जना।

तन्वी (स्त्री०)–कृशाङ्गी, शालपर्णी।

तप् (१ प०)–चमकना, जलना, गर्म होना, दाह करना, सहन करना। (१० उ०)जलाना,दु:ख देना,सताना।

तप (पु०)–गर्मी, उष्णता, सूर्य, धूप, ग्रीष्मऋतु,इन्द्रियदमन,शारीरिक कष्ट सहन करना, व्रतानुष्ठान।

तप: [स्] (न०)–पूर्ववत्।

तपन (न०)–जलन, शारीरिक कष्ट, मानसिक दु:ख, गर्मी। वि०-दाहक, चमकीला, कष्टदायक।

तपनकर-तपनांशु(पु०)–सूर्य,सूर्यरश्मि।

तपनतनया(स्त्री०)–यमुनानदी, गोदावरी नदी।

तपनी (स्त्री०)–गर्मी, गोदावरी, तापती।

[तपश्चर्या और तपश्चरण का भी यही अर्थ होता है]

तपस्विता (स्त्री०)–तप,तपस्या, भक्ति, पवित्राचार।

तपस्वी [न्] (पु०)–तपोधारी, वान-प्रस्थाश्रमी, व्रतधारी, साधु, खुटबढ़ैया पक्षी [स्त्री०-तपस्विनी]

तप:स्थली (स्त्री०)–तपोभूमि, बनारस का नाम।

तपित(वि०)–तप्त, दग्ध, जला हुआ।

तपु [स्] (पु०)–अग्नि, सूर्य, शत्रु।

तपोधन (वि०)–बड़ी तपस्या करने वाला, तपस्या ही जिस का एक मात्र धन है। पु०-तपस्वी।

तपोबल (न०)–तपस्याद्वारा प्राप्त शक्ति

तपोमय (पु०)–परमात्मा, परब्रह्म। वि०-तपस्वी।

तपोमूर्त्ति (पु०)–तपस्वी,परमात्मा।

तपोवन (न०)–ऐसा वन जिस में तपस्वी निवास करते हैं।

तप्त (वि०)–दु:खित, सन्तप्त, गर्म किया हुआ, तपा हुआ।

तप्तकृच्छ्र (न०)–कठिन तपस्या जिस में गर्म जल, गर्म दूध और उष्ण वायु का सेवन किया जाता है।

गुणसम्पन्ना युवति स्त्री।
तन्द्रा(स्त्री०)—आलस्य,ऊंघना, नींद।
तन्द्रालु (वि०)—निद्रालु, बहुत सोने वाला, स्वापशील।
तन्द्रित(वि०)—तन्द्रायुक्त, सोया हुआ।
तन्मय(वि०)—तद्रूप, वही, अभेद।
तन्मात्रा (स्त्री०)—अपञ्चीकृत रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्दों की संज्ञा।
तन्वित(पु०)—रात्रि, विद्युत, अशनि, वायु, गर्जना।
तन्वी (स्त्री०)—कृशाङ्गी, शालपर्णी।
तप् (१ प०)—चमकना, जलना, गर्म होना, दाह करना, सहन करना। (१० उ०)जलाना,दु.ख देना,सताना।
तप (पु०)—गर्मी, उष्णता, सूर्य, धूप, ग्रीष्मऋतु,इन्द्रियदमन,शारीरिक कष्ट सहन करना, व्रतानुष्ठान।
तपः [स्] (न०)—पूर्ववत्।
तपन (न०)—जलन, शारीरिक कष्ट, मानसिक दु.ख, गर्मी। वि०-दाहक, चमकीला, कष्टदायक।
तपनकर-तपनांशु(पु०)—सूर्य,सूर्यरश्मि।
तपनतनया(स्त्री०)—यमुनानदी, गोदावरी नदी।
तपनी (स्त्री०)-गर्मी, गोदावरी, तापती।
तपनीय(वि०)-गर्म करने योग्य,सुवर्ण।
तपस (पु०)—चन्द्रमा, सूर्य, पक्षी।
तपस्कर (वि०)-तप करने वाला, तपस्वी।
तपस्या(स्त्री०)-शरीर को कष्ट देकर व्रत का अनुष्ठान, इन्द्रियदमन।
[तपश्चर्या और तपश्चरण का भी यही अर्थ होता है]
तपस्विता (स्त्री०)—तप,तपस्या, भक्ति, पवित्राचार।
तपस्वी [न्] (पु०)—तपोधारी, वान-प्रस्थाश्रमी, व्रतधारी, साधु, सुटबढ़ैया पक्षी [स्त्री०-तपस्विनी]
तपःस्थली (स्त्री०)—तपोभूमि, बनारस का नाम।
तपित(वि०)—तप्त, दग्ध, जला हुआ।
तपुः[स्] (पु०)—अग्नि, सूर्य, शत्रु।
तपोधन (वि०)—वही तपस्या करने वाला, तपस्या ही जिस का एक मात्र धन है। पु०-तपस्वी।
तपोबल(न०)—तपस्या द्वारा प्राप्त शक्ति
तपोमय (पु०)—परमात्मा, परब्रह्म। वि०-तपस्वी।
तपोमूर्त्ति (पु०)—तपस्वी,परमात्मा।
तपोवन (न०)—ऐसा वन जिस में तपस्वी निवास करते हैं।
तप्त (वि०)—दुःखित, सन्तप्त, गर्म किया हुआ, तपा हुआ।
तप्तकृच्छ्र (न०)—कठिन तपस्या जिस में गर्म जल, गर्म दूध और उष्ण वायु का सेवन किया जाता है।
तम् (४ प०)—थक जाना, सकरीर्क चढ़ाना, गला घुटना।
तम(पु०)—तमाल वृक्ष, अंधेरा, राहु। न०-अन्धकार।
तमः [स्] (न०)-अंधेरा, अन्धकार, अज्ञान, दु.ख, पाप।
तमस (पु०)—अन्धकार, कूप। वि०-

गुणसम्पन्ना युवति स्त्री।

तन्द्रा(स्त्री०)–आलस्य,झंपना, नींद।

तन्द्रालु (वि०)–निद्रालु, बहुत सोने वाला, स्वापशील।

तन्द्रित(वि०)–तन्द्रायुक्त, सोया हुआ।

तन्मय(वि०)–तद्रूप, वही, अभेद।

तन्मात्रा (स्त्री०)–अपञ्चीकृत रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्दों की सत्ता।

तन्यत(पु०)–रात्रि, विद्युत, अशनि, वायु, गर्जना।

तन्वी (स्त्री०)–कृशाङ्गी, शालपर्णी।

तप् (१ प०)–चमकना, जलना, गर्म होना, दाह करना, सहन करना। (१० उ०)जलाना,दु:खदेना,सताना।

तप (पु०)–गर्मी, उष्णता, सूर्य, धूप, ग्रीष्मऋतु,इन्द्रियदमन,शारीरिक कष्ट सहन करना, व्रतानुष्ठान।

तपः [स्] (न०)–पूर्ववत्।

तपन (न०)–जलन, शारीरिक कष्ट, मानसिक दु:ख, गर्मी। वि०-दाहक, चमकीला, कष्टदायक।

तपनकर-तपनांशु(पु०)–सूर्य,सूर्यरश्मि।

तपनतनया(स्त्री०)–यमुनानदी, गोदावरी नदी।

तपनी (स्त्री०)–गर्मी, गोदावरी, तापती।

तपनीय(वि०)–गर्म करने योग्य,सह्य।

तपस (पु०)–चन्द्रमा, सूर्य, पक्षी।

तपस्वर (वि०)–तप करने वाला, तपस्वी।

तपस्या (स्त्री०)–शरीर को कष्ट देकर व्रत का अनुष्ठान, इन्द्रियदमन।

[तपश्चर्या और तपश्चरण का भी यही अर्थ होता है]

तपस्विता (स्त्री०)–तप,तपस्या, भक्ति, पवित्राचार।

तपस्वी [न्] (पु०)–तपोधारी, वानप्रस्थाश्रमी, व्रतधारी, साधु, सुटवढैया पक्षी [स्त्री०-तपस्विनी]

तपःस्थली (स्त्री०)–तपोभूमि, बनारस का नाम।

तपित(वि०)–तप्त, दग्ध, जला हुआ।

तपुः[स्] (पु०)–अग्नि, सूर्य, शत्रु।

तपोधन (वि०)–बड़ी तपस्या करने वाला, तपस्या ही जिस का एक मात्र धन है। पु०-तपस्वी।

तपोबल(न०)–तपस्या द्वारा *प्राप्त शक्ति*

तपोमय (पु०)–परमात्मा, परब्रह्म। वि०-तपस्वी।

तपोमूर्त्ति (पु०)–तपस्वी,परमात्मा।

तपोवन (न०)–ऐसा वन जिस में तपस्वी निवास करते हैं।

तप्त (वि०)–दु:खित, सन्तप्त, गर्म किया हुआ, तपा हुआ।

तप्तकृच्छ्र (न०)–कठिन तपस्या जिस में गर्म जल, गर्म दूध और उष्ण वायु का सेवन किया जाता है।

तम् (४ प०)–थक जाना, तकलीफ उठाना, गला घुटना।

तम(पु०)–तमाल वृक्ष, अंधेरा, राहु। न०–अन्धकार।

तमः [स्] (न०)–अंधेरा, अन्धकार, अज्ञान, दु:ख, पाप।

तमस (पु०)–अन्धकार, कूप। वि०-

काला, कृष्णवर्ण। न०-अंधेर।
तमसा (स्त्री०)-एक नदी का नाम।
तमङ्ग (पु०)-चबूतरा, प्लेटफार्म।
तमर (न०)-सीसा, टिन।
तम्या-मिस्त्रका (स्त्री०)-गाय।
तमस्वती-स्विनी (स्त्री०)-रात्रि, रात [तमा का भी यही अर्थ है]।
तमाल (पु०)-अपने नाम से प्रसिद्ध वृक्ष, तिलक, तलवार, बांस की छाल, तम्बाकू।
तमालपत्र(न०)-तमाल वृक्ष का पत्ता, तिलक, तम्बाकू का पत्ता।
तमि-तमी (स्त्री०)-अंधेरी रात, हल्दी, नशा, मूर्च्छा। [क्रोध।
तमिस्र(न०)-अंधेरा, अज्ञान, माया,
तमिस्रा(स्त्री०)-अंधेरी रात, अंधेर।
तमोगुण (पु०)-सत्त्व, रज, तम ये तीन गुण माने गये हैं; जिस गुण में अंधकार, जड़ता, मन्दता की अधिकता हो वह तमोगुण कहलाता है।
तमोघ्न (पु०)-अंधेरनाशक, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, ज्ञान, परमात्मा।
तमोज्योतिः (पु०)-जुगनू, खद्योत।
तमोमय (वि०)-मूर्ख, अज्ञानी, अन्धकारयुक्त।
तमोहर(वि०)-अन्धकारनाशक। पु०-सूर्य, चन्द्रमा।
तय (पु०)-रक्षा, हिफाजत।
तर-एक तद्धितप्रत्यय। पु०-सड़क, नौका, अग्नि, पार उतरना, किराया। [उधर हिलना।
तरंग (पु०)-लहर, कूद, वस्त्र, इधर
तरङ्गित (वि०)-तरंगयुक्त, विलोडित।
तरङ्गिणी (स्त्री०)-नदी, दरिया।
तरण (न०)-पार उतरना, जीतना, नौकादण्ड। पु०-स्वर्ग, किश्ती।
तरणि (पु०)-सूर्य, किश्ती, अर्क-वृक्ष, सूर्यकिरण।
तरणी (स्त्री०)-बेड़ा, किश्ती।
तरन्त (पु०)-राक्षस, समुद्र, मेंढक, भक्तजन।
तरन्ती (स्त्री०)-नौका, किश्ती।
तरपण्य (न०)-नदी आदि के पार जाने का महसूल।
तरल(वि०)-बहता हुआ, द्रव, शोभायमान, चञ्चल, कम्पित, विस्तृत। पु०-हार, चौरस भूमि, तलहटी, लोहा, हीरा। [लता।
तरलायित (पु०)-बड़ी लहर, चञ्च-
तरलित (वि०)-कम्पित, हिला हुआ।
तरवारि (पु०)-तलवार, खड्ग।
तरस् (न०)-तेजी, शक्ति, तट, बेड़ा, रोग।
तरस (न०)-गोश्त, मांस।
तरसान (पु०)-किश्ती, नौका।
तरस्विन् (वि०)-तेज, मजबूत, शक्तिशाली। पु०-वायु, वीर, गरुड़।
तरि [री] (स्त्री०)-किश्ती, नौका, कपड़े रखने का बकस, आंचल, गोट। [नौका।
तरिक (पु०)-मल्लाह, नाविक,

तरित्र (न०)—नौका, किश्ती, जलयान, जहाज।

तरित्री—तरिणी (स्त्री०)—पूर्ववत्।

तरीय (पु०)—स्वर्ग, व्यवसाय, किश्ती, नौका।

तरु (पु०)—वृक्ष, पेड़, दरख्त।

तरुण (वि०)—जवान, युवक, मुलायम, नया, नवीन। पु० युवा-पुरुष। न०—अंकुर, अंकुआ।

तरुप (पु०)—विजेता, फतहमन्द।

तर्क् (१० उ०)—अनुमान करना, आशंका करना, तर्कना करना, सोचना, समझना, कहना, बोलना, चमकना।

तर्क (पु०)—अनुमान, दलील, सम्भावना, विचार, ऊह, न्यायशास्त्र, हेतु, आशंका, तर्कशास्त्र, मन्तक, आकांक्षा, इच्छा।

तर्कण (न०)—वितर्क, वादविवाद, सोचविचार, मन्तक।

तर्कविद्या—शास्त्र (न०)—न्यायशास्त्र, इल्मेमन्तक, फिलासफ़ी, तत्वज्ञान।

तर्काभास (पु०)—झूठा मन्तक, गलत दलील। [अनुमित।

तर्कित (वि०)—आशंकित, परीक्षित,

तर्की [न्] (पु०)—मन्तकदा, तार्किक, नैयायिक।

तर्कु (अव्यी०) तकला, चर्खे में जो लोहे की सुई लगी रहती है, जिस पर ताना बन २ कर लिपटता जाता है।

तर्ज् (१० आ०, १ प०)—धमकाना, झिड़कना, भर्त्सना करना।

तर्जन-ना (स्त्री०)—भर्त्सना, निन्दा, झिड़क। [अंगुली।

तर्जनी (स्त्री०)—अंगूठे के पास की

तर्णि (पु०)—बेड़ा, सूर्य।

तर्द् (१ प०)—हिंसा करना, मारना

तर्पण (न०)—खुश करना, प्रसन्न करना, पितृयज्ञ, यज्ञसमिधा, देवताओं को जल देना।

तर्हि (अ०)—तब, तदा, उस समय, तो, उस दशा में।

तल् (१०उ०,१प०)—स्थिर होना, जमना, पूरा करना, क़ायम करना।

तल (अस्त्री०)—तलहटी, सतह, भूमि, हाथ की हथेली, नीचे का भाग, गढ़ा, सूराख। न०—तालाब, जंगल, हेतु, कारण।

तलताल (पु०)—हाथ बजाना, हथेली बजाना।

तलप्रहार (पु०)—तमाचा मारना, थप्पड़ लगाना।

तलवारण (न०)—तलवार, असि।

तललोक (पु०)—पाताल, अमेरिका।

तलित (वि०)—तलयुक्त, तहवाला। न०—भुना हुआ मांस।

तलिन (वि०)—पतला, छोटा, साफ, कमज़ोर, निम्नस्थ।

तलुन (पु०) जवान, वायु, आंधी।

तलेक्ष (न०)—नगर, वन।

तल्प (अस्त्री०)—पलंग, बिस्तरा, भार्या, मीनार, अट्टालिका।

तल्पल (न०)–हस्ती का पृष्ठवंश ।
तल्ल (पु०)–ताल, तालाब । न०–गड्ढा ।
तल्लिका (स्त्री०)–कुञ्जी, ताली ।
तल्ली (स्त्री०)–युवती, वरुणपत्नी, नौका । [घटा हुआ ।
तष्ट (वि०)–कटा हुआ, बना हुआ,
तस् (४प०)–मुरझाना, थकना, सड़ना, नष्ट होना, त्यागना ।
तस् (१०उ०)–सजाना, अहंकार करना ।
तस्कर (पु०)–चोर, लुटेरा, कर्ण ।
तस्करता (स्त्री०)–चोरी, श्रवण ।
तस्थु (वि०)–ठहरा हुआ । [पता ।
ताटस्थ्य (न०)–उदासीनता, समी-
ताड (पु०)–सज़ा, शोर, पर्वत, चोट ।
ताडका (स्त्री०)–एक राक्षसी जिस का रामायण में वर्णन आता है ।
ताडना (स्त्री०)–भर्त्सना, मारना, पीटना, सज़ा ।
ताडनी (स्त्री०)–कोड़ा, चाबुक ।
ताडित(वि०)–पीटा हुआ, सजायाफ़्ता ।
ताण्डव (अस्त्री०)–नृत्य, नाच, आँखें मटकाना ।
ताण्डि (पु०)–नृत्यविद्या ।
तात (पु०)–पिता, प्रेमबोधक शब्द । [यह शब्द वृद्ध और कनिष्ठ दोनों प्रकार के बान्धवों के लिये प्रयुक्त होता है]
तातन (पु०)–खञ्जनपक्षी ।
तातल (पु०)–रोग, गर्मी, ज्येष्ठ बान्धव । वि०–पिद्री, गर्म ।
तात्कालिक(वि०)–उसी काल का, सद्य उत्पन्न । [उद्देश्य, गरज ।
तात्पर्य (न०)–अभिप्राय, मतलब,
तात्त्विक (वि०)–सच्चा, तत्त्वयुक्त, असली ।
तादर्थ्य (न०)–उद्देश्य की समानता, अर्थतुल्यता, उद्देश्य ।
तादात्म्य (न०)–स्वभाव की समानता, एकीभाव । [समान ।
तादृक्ष (वि०)–उस प्रकार का, उस के
तान (पु०)–धागा, डोर, फैलाव, सुर, लम्बी आवाज । [अल्पता ।
तानव (न०)–पतलापन, दुबलापन,
तान्त्रिक(वि०)–तन्त्रसम्बन्धी, शास्त्रज्ञ । पु०–तन्त्रग्रन्थों का अनुयायी, वाममार्गी । [कष्ट ।
ताप (पु०)–गर्मी, चमक, दुःख, सन्ताप,
तापत्रय (न०)–तीन प्रकार के सांसारिक कष्ट अर्थात् आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक ।
तापन (पु०)-सूर्य, सूर्यकान्तमणि, ग्रीष्म ऋतु । न०–जलन, सज़ा देना, कष्ट, स्वर्ण ।
तापस (न०)–तमालपत्र । पु०–दमनक वृक्ष । वि०–तपस्वी ।
तापसतरु (न०)–इङ्गुदी का पेड़, जिस की सहायता से तपस्वियों की सब आवश्यकतायें पूरी होती हैं ।
तापस्य (न०)–तपस्या, व्रतानुष्ठान ।
तापिच्छ (पु०)–तमालवृक्ष । [नदी ।
तापी (स्त्री०)–तापती नदी, यमुना
ताम (पु०)–भयानक वस्तु, दोष, चिन्ता, इच्छा, थकान ।

तामर (न०)--घी, घृत, जल।
तामरस (न०)-स्वर्ण, रक्तपद्म, तांबा।
तामस (वि०)-अन्धकारयु,क्तधुंधियाला अज्ञानी। पु०-सर्प, उल्लू, शठ, अन्धेरा।
तामसिक (वि०)-धुंधियाला, तमोगुणी
तामसी (स्त्री०)-रात्रि, निद्रा, दुर्गा।
तामिस्र (पु०)-कृष्णपक्ष, क्रोध, नफ़रत, राक्षस, नरकविशेष।
ताम्बूल (न०)-पान जो नागवल्ली का पत्र होता है, गुवाकु,सुपारी।
ताम्बूलिक (पु०)-तमोली, पनवाड़ी।
ताम्बूली (स्त्री०)-पान का पेड़, नागवल्ली।
ताम्र (वि०)-तांबे का बना हुआ, लाल। न०-तांबा।
ताम्रक (न०)-तांबा, धातुविशेष।
ताम्रकर्णी (स्त्री०)-पश्चिमदिशा की हथिनी, एक नदी।
ताम्रकार (पु०)-कसेरा, तांबे के बर्तन बनाने वाला।
ताम्रकूट (न०)-तम्बाकू।
ताम्रचूड़ (पु०)-मुर्गा, कुक्कुट।
ताम्रपुष्प (न०)-पीतल।
ताम्रपट्टः-पत्रम्=तांबे की पट्टी, तांबे की तख़्ती जिस पर दान या मुआफ़ी की जायदादों का ब्यौरा लिखा जाता था।
ताम्रपल्लव (पु०)-जिस के पत्ते तांबे के रंग के हों अर्थात् अशोकवृक्ष।
ताम्रमुख (पु०)-जिस का मुख तांबे के रंग का हो, जैसे योरोपनिवासी।
ताम्रवल्ली (स्त्री०)-मंजीठ, मंजिष्ठा।
ताम्रशिखी [न्] (पु०)-मुर्गा, कुक्कुट।
ताम्रिक (वि०)-तांबे का बना हुआ। पु०-कसेरा, कांस्यकार।
ताय् (१ आ०)-फैलाना, रक्षा करना।
तायन (न०)-वृद्धि, बढ़ोतरी।
तार (पु०)-नदकूल, नदी का किनारा, मनोहर, मोती, प्रणव, शिव और विष्णु का वाचक, रक्षा। अस्त्री०-मुक्ता, आंख का तारा, आकाशग्रह। वि०-चमकीला, ऊंचा।
तारक (पु०)-आंख की पुतली, नाभि, एक दैत्य का नाम जिसे कार्तिकेय ने मारा था।
तारका (स्त्री०)-आंख की पुतली, बृहस्पति की स्त्री का नाम, पुच्छल तारा, सितारा।
तारकारि (पु०)-कार्तिकेय का नाम।
तारकित (वि०) तारों से भरा हुआ।
तारण (पु०)-शिव, विष्णु, नौका। न०-पार उतारना। वि०-पार करने वाला। [नौका।
तारणि -णी (स्त्री०)-बेड़ा, किश्ती,
तारतम्य (न०)-सिलसिला, भेद, क्रम, सापेक्ष मूल्य।
तारा (स्त्री०)-सितारा, आंख की पुतली, मोती, बालि की स्त्री का नाम।
ताराधिप (पु०)-चन्द्रमा, शिव, सुग्रीव, बालि, बृहस्पति।
तारापति (पु०)-पूर्ववत्।
तारापीड (पु०)-चन्द्रमा, चांद।

ताराभ्र(पु०)—काफ़ूर, कर्पूर।
तारिक(न०)—नाव का भाड़ा, उतरने का किराया।
तारिणी(स्त्री०)—पार्वती, नौका।
तारुण्य(न०)—जवानी, नयापन।
तारेय(पु०)—वालिपुत्रअङ्गद,बुधग्रह।
तार्किक (पु०)—तर्कशास्त्र का ज्ञाता, मन्तक़दां, फ़िलासफ़र।
तार्क्ष्य (पु०)—गरुड़, अरुण, घोड़ा, आरा, शिव, वर्ण, स्वर्ण।
तार्तीय(वि०)—तीसरा। न०-तृतीयांश।
ताल (पु०)—अपने नाम से प्रसिद्ध वृक्ष, हथेली बजाना, मंजीरा, हाथ की हथेली, तलवार की मूठ, गानपरिमाण। न०-हरताल।
तालक(न०)—हरताल,ताला,चटखनी।
तालकेतु (पु०)—भीष्म का वाचक।
तालध्वज(पु०)—बलराम का विशेषण।
तालपत्र (न०)—कर्णभूषण, कान का ज़ेवर, ताड़का पत्ता जो लिखने के काम में आता था।
तालयन्त्र (न०)—ताला।
तालाङ्क (पु०)—बलराम, ताड़ का पत्र, किताब, शिव, आरा।
तालिक (पु०)—हाथ से ताल देना, चपत्तड़, चपेट।
तालिश (पु०)—पर्वत, पहाड़।
तालु (न०)—ऊपर के जबाड़े के पीछे का जो भाग है उसे तालुकहते हैं अर्थात् तालुआ।
तालुजिह्व (पु०)—तालु ही जिस की जिह्वा का काम देता है जैसे मगर।
तालूर (पु०)—आवर्त्त, जलचक्र, भवर।
तावत् (वि०)—उतना, उस क़द्र, समस्त। अ०-प्रथम, पहिले, अब, वास्तव में।
ताविष (पु०)—समुद्र, स्वर्ग।
तास्कर्य (न०)—चोरी, अपहरण।
तिक् (५ प०)—आक्रमण करना, जख़्मी करना,मारना, जाना। (१ आ०)-जाना, हरकत करना।
तिक्त (वि०)--कषैला, छः रसों में से एक, कटु। पु०—कटुरस, कषैलापन, सुगन्धि।
तिक्तक (पु०)—खदिरवृक्ष, चिरायता।
तिग्म (वि०)--तीक्ष्ण, तेज़, क्रोधालु, कषैला।
तिग्मांशु (पु०)—सूर्य, अग्नि, शिव।
तिज्(१ आ०)—सहना,बर्दाश्त करना। (१० उ०)—तीक्ष्ण करना, तेज़ करना, भड़काना।
तितिल (पु०)—चन्द्रमा, राक्षस।
तितउ (पु०)—छलनी, छानने का पात्र। न०-छाता। [क्षमा।
तितिक्षा (स्त्री०)—सहनशक्ति,बर्दाश्त,
तितिक्षु (वि०)—सहारने वाला, सहनशील।
तितिभ (पु०)—बीज नामक कीट।
तित्तिर (पु०)—तीतर पक्षी।
तिथ (पु०)—प्रेम, समय, अग्नि।
तिथि (अक्लीं०)—चन्द्रमा की कलाओं के क्षय तथा वृद्ध्यनुसार प्रतिपदादि दिवस।

तिथिक्षय (पु०)--जिस में चन्द्रमा को कलाओं का क्षय होजाता है अर्थात् अमावास्या, प्रतिपदादि तिथि का कम होजाना।
तिथिपत्री (स्त्री०)-जन्त्री, पत्रा।
तिन्तिड़(पु०)-इमली। न०-इमलीफल
तिम् (१प०)-तर करना,भिगोना। (४प०)-गीला होना, भीग जाना।
तिमि (पु०)-मत्स्य,मच्छ, समुद्र, ह्वेल के समान एक बड़ी मछली।
तिमित (वि०)-गीला,तर, निश्चल।
तिमिर (स्त्री०)--अंधेरा, अन्धापन, चक्षूरोग। वि०-धुंधियाला।
तिमिरारि (पु०)-सूर्य, सूरज।
तिरस् (अ०)-छिपकर, टेढ़ेपन से, पार, बगैर।
तिरस्करिणी (स्त्री०)--पर्दा,क़नात।
तिरस्कार (पु०)-अनादर, अपमान, झिड़क, छिपाना ,अन्तर्धान।
तिरस्कृ (८उ०)-अपमान करना, निन्दा करना, छिपाना।
तिरस्कृत(वि०)-अनादृत,अपमानित।
तिरस्कृति--तिरस्क्रिया (स्त्री०)= तिरस्कार। [पर्दा।
तिरोधान (न०)-अन्तर्धान, छिपना,
तिरोभाव(पु०)-अन्तर्धान, अभाव, छिपना।
तिरोभू (१ प०)-नष्ट होना, छिपना।
तिरोहित (वि०)-छिपा हुआ,दृष्टि से ओझल, अन्तर्हित।
तिर्यञ्च् [क्] (अ०)-टेढ़ा, टेढ़ेपन से। वि०-टेढ़ा, चक्रयुक्त। अस्त्री०-पक्षी, पशु।
तिप् (६ प०,१० उ०)-लेपन करना, तेल मलना, चिकना होना।
तिल (पु०)-अपने नाम से प्रसिद्ध सस्य, शरीर का एक काला चिन्ह जिसे तिल कहते हैं।
तिलक (पु०)-पूर्ववत्। चन्दनादि का माथ पर लेपन। न०-धाकनी, फेफड़ा, अलंकारभेद।
तिलकल्क (पु०)-पिसे हुए तिलों की बनी हुई खल।
तिलतैल (न०)-तिलोंमें से निकला हुआ तैल।
तिलरस-स्नेह (पु०)=तिलतैल।
तिलोत्तमा (स्त्री०)-एक अप्सरा का नाम।
तिष्य (न०)--कलियुग। पु०--पौष मास, आठवां नक्षत्र। वि०-शुभ, मङ्गलकर।
तीक् (१आ०)--जाना, हरकत करना।
तीक्ष्ण (वि०)--तेज़, कडुवा, क्रोधालु, कठोर, अशुभ, चतुर, उत्साही। न० -युद्ध, विष, मृत्यु, शीघ्रता, हथियार, लोहा, गर्मी। पु०--पिप्पली, काली सरसों,काली मिर्च।
तीक्ष्णकन्द (पु०)--प्याज, पलाण्डु।
तीक्ष्णतण्डुला (स्त्री०) -पिप्पली।
तीक्ष्णदंष्ट्र (पु०)--चीता।
तीक्ष्णधार (पु०)-तलवार, असि।
तीक्ष्णपुष्प (न०)--लौंग,लवंग,केतकी।
तीक्ष्णबुद्धि (वि०)--जल्दी ही बात

को समझने वाला, चतुर, तीव्र-बुद्धि।
तीक्ष्णसूप (पु०)-जौ, यव।
तीक्ष्णसार (पु०)--लोहा।
तीम् (४प०)--गीला होना, भीगना।
तीर् (१०उ०)--पार जाना, समाप्त करना पूरा करना तैर जाना।
तीर (न० --किनारा, कूल, तट। पु०--सीसा बाणभेद।
तीरु (पु०)--शिव का नाम।
तीर्ण (वि० --पार उतरा हुआ, फैला हुआ, पराजित, बढ़ा हुआ।
तीर्थ (न०)--मार्ग, रास्ता, घाट, जल-स्थान, पवित्रस्थान, उपाय,द्वारा, इलाज, पूजनीय जन, गुरु, यज्ञ, शिक्षा, शास्त्र, ब्राह्मण, अग्नि, रोगनिदान।
तीर्थकर--तीर्थङ्कर (पु०)-विष्णु, जैनों का उपास्य देव, तपस्वी, शास्त्रप्रवर्त्तक जैसे गौतम, कपिल, कणाद आदि।
तीर्थभूत (वि०)-पवित्र, अद्वेष।
तीर्थयात्रा (स्त्री०)-हरद्वार, काशी आदि तीर्थस्थानों पर स्नान ध्यानादि के लिये जाना।
तीर्थराज (पु०)-प्रयाग, इलाहाबाद
तीर्थिक (पु०)-तीर्थसेवी,तीर्थयात्री।
तीव् (१प०)-मोटा होना,बल पाना।
तीवर (पु०)-शिकारी, समुद्र, वर्णसंकर।
तीव्र (पु०)-शिव, महादेव, तेजी। वि०-तेज, गहन,भयानक,असीम, उष्ण, कठोर। न०-लोहा, गर्मी।
तीव्रगति (वि०)-शीघ्रगामी, द्रुतगामी।
तीव्रपौरुष (न०)-ऐसा साहस जिस में जान का डर हो।
तीव्रवेदना (स्त्री०)-सख्त तकलीफ।
तु (२ प०)-पाना,प्राप्त करना, जाना, बढ़ना, मारना, शक्तिशाली होना।
तु (अ०)-किन्तु, परन्तु, लेकिन, भी, तोभी, प्रत्युत। यह शब्द वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त नहीं होता है।
तुङ्ग (पु०)-ऊँचाई, पर्वत, चोटी, बुध ग्रह, गैंडा, शिव, सिंहासन, बुद्धिमान्। वि०-ऊंचा, प्रधान, मज़बूत।
तुङ्गबीज (पु०)-पारा
तुङ्गभद्रा (स्त्री०)-दक्षिण मे एक नदी।
तुङ्गी (स्त्री०)-रात्रि, हल्दी।
तुङ्गीपति (पु०)-चन्द्रमा, चांद। [तुङ्गीश का भी यही अर्थ है।]
तुच्छ (वि०)-नाचीज़,नीच,निकम्मा, ख़ाली, छोटा। न०-भूसी।
तुज् (१प०)-मारना, क़त्ल करना।
तुट् (६प०)-झगड़ना,लड़ना,मारना।
तुट्टुम (पु०)-मूषक, मूसा, चूहा।
तुड् (१प०)-अपमान करना, अना-दर करना, तोड़ना, छेदना।
तुण् (६प०)-टेढ़ा करना, झुकाना, धोखा देना।
तुण्ड (न०)-हाथी की सूंड,सूअर की थूथड़ी, चेहरा, मुंह।

तुण्डि (पु०)–चोंच, चेहरा, मुंह।
तुण्डिभ–ल (वि०)–बड़ी नाभि वाला, बातूनी।
तुत्थ् (१०उ०)–तारीफ करना, सराहना, फैलाना, बहकाना।
तुत्थ (पु०)–अग्नि, पत्थर। न०–एक प्रकार का अंजन।
तुद् (६ उ०)–मारना, जख्मी करना, घाव करना, नोचना, सताना।
तुन्द (न०)–पेट, मोटा पेट। पु०–नाभि।
तुन्दकूपी (स्त्री०)–पेट की नाभि।
तुन्न (वि०)–क्षत, सताया हुआ, जख्मी।
तुन्नवाय (पु०)–दर्जी, सौचिक।
तुप्–म्प् (१, ६ प०)–मारना, हानि पहुंचाना।
तुभ् (९, ४ प०)–पूर्ववत्।
तुमुल (अस्त्री०)–कोलाहल, शोरगुल, लड़ाई, झगड़ा। वि०–भयानक, भड़का हुआ।
तुम्बः-म्बा (स्त्री०)–अपने नाम से प्रसिद्ध पात्रविशेष, सूखे हुए कद्दू का वक्कल। [वाद्यभेद।
तुम्बर-रु (पु०)–एक गन्धर्व का नाम,
तुर् (६ उ०)–जल्दी करना, चोट पहुंचाना। (३ प०)–दौड़ना।
तुरुष्क(पु०)–जातिविशेष, तुर्कजाति।
तुरग(पु०)–घोड़ा, मन, दिल, विचार।
तुरगारोह (पु०)–घुड़सवार।
तुरगी(स्त्री०)–घोड़ी। [अङ्क।
तुरङ्ग (पु०)–घोड़ा, दिल, मन, ७ का
तुरङ्गक(पु०)–घोड़ा, अश्व।
तुरङ्गप्रिय(न०)–जौ, यव।
तुरगवदन (पु०)–किन्नर। [यल।
तुरगशाला (स्त्री०)–घोड़ों का अस्तबल
तुरंगस्कन्द (पु०)–घोड़ों का समूह।
तुरंगारि(पु०)–महिष, भैंसा।
तुरंगारूढ पु०–अश्वारोही, घुड़सवार।
तुरंगिम(पु०)–घोड़ा।
तुरायण(न०)–असंग, अनासक्ति।
तुरि-री (स्त्री०)–कपड़ा बुनने का औज़ार, जुलाहे का यन्त्रविशेष।
तुरीय(वि०)–चौथा, चार अङ्क वाला, शक्तिशाली। न०–चतुर्थांश।
तुरीयवर्ण(पु०)–चतुर्थ अर्थात् शूद्रवर्ण।
तुरुष्क(पु०)–तुर्कजाति।
तुर्य(वि०)–चौथा, चार अंग वाला।
तुल्(१० उ०, १ प०)–तोलना, मापना, परिमाण करना, उठाना, तुलना करना। [बिला, उठाना।
तुलन (न०)–वजन, परिमाण, मुक़ा-
तुलना (स्त्री०)–उठाना, तोलना मुक़ाबिला, सादृश्य, परीक्षण।
तुलसी (स्त्री०)–अपने नाम से प्रसिद्ध एक वृक्ष, हिन्दुओं के निकट यह वृक्ष बड़ा पवित्र माना गया है, इस वृक्ष में मलेरिया विष के दूर करने की शक्ति होती है।
तुलसीपत्र(न०)–तुलसीवृक्ष का पत्ता।
तुला(स्त्री०)–तराजू, तोलने की डण्डी, माप, परिमाण, सादृश्य। ७वीं राशि।
तुलाकूट(पु०)–असत्य परिमाण।

तुलाकोटि-टी (स्त्री०)—पाजेब, झाबर, नूपुर ।
तुलादान (न०)—स्वशरीर के बराबर तौल कर पण्डित को सुवर्ण, रजत वा अन्न का दान करना ।
तुलाधर (पु०)—वणिक्, सौदागर, तुला नामक राशि ।
तुलाधार (पु०)—पूर्ववत् ।
तुलापुरुष (पु०)—स्वशरीर के बराबर किसी बहुमूल्य धातु का दान ।
तुलामान (न०)—तराजू की डण्डी ।
तुलासूत्र (न०)—तराजू की रस्सी ।
तुलित (वि०)—तुला हुआ, परीक्षित, परिमित ।
तुल्य (वि०)—समान, बराबर, सदृश ।
तुल्यरूप (वि०)—पूर्ववत् । [कसैला ।
तुवर (अस्त्री०)-कसैला रस । वि०-
तुवरिका (स्त्री०)—फिटकरी ।
तुष् (४ प०)—प्रसन्न करना, सन्तुष्ट होना, खुश होना ।
तुष (पु०)—अनाज की भूसी, विभीतक वृक्ष, बहेड़ा ।
तुषाग्नि-अनल (पु०)—भूसी की आग, तोह की अग्नि ।
तुषार (पु०)—हिम, बर्फ, कपूर, पाला, शबनम, कोहरा । वि०--शीतल, ठण्डा ।
तुष्ट (वि०)—प्रसन्न, सन्तुष्ट । पु०—विष्णु ।
तुष्टि (स्त्री०)—सन्तोष, सबर, कनात, प्राप्त पदार्थों से भिन्न वस्तुओं में उदासीनता ।
तुस्प (पु०)—शिव का नाम ।
तुस्त (न०)—खाक, रेणु, धूलि ।
तुहिन (न०)—हिम, बर्फ, कपूर, चन्द्रिका, ओस, पाला ।
तुहिनकर-किरण (पु०)—चन्द्रमा, कपूर ।
तुहिनांशु-रश्मि (पु०)—पूर्ववत् ।
तुहिनाचल (पु०)—हिमालय पर्वत ।
तूण् (१०उ०) सकोच करना, सिकुड़ना ।
तूण (पु०)—तरकस, तीर रखने का घर ।
तूणि (पु०)—पूर्ववत् ।
तूणीर (अस्त्री०)—पूर्ववत् ।
तूवर (पु०)—बिना दाढ़ी का मनुष्य, शृङ्गरहित साँड, क्लीब मनुष्य ।
तूर् (४ आ०)—जल्दी से जाना, मारना ।
तूर्ण (वि०)—जल्दी वाला । न०-शीघ्रता, जल्दी ।
तूर्य (अस्त्री०)—वाद्यभेद ।
तूल् (१ प०)—तोलना, मापना । १०आ०-भरना, पूर्ण करना ।
तूल (अस्त्री०)—कपास, रुई । न०-आकाश, आसमान ।
तूलक (न०)—रुई, कपास ।
तूलशर्करा (स्त्री०)—कपास का बीज अर्थात् बिनौला ।
तूलिका (स्त्री०)—मुसव्विर का कलम ।
तूवरक (वि०)—नपुंसक, कापुरुष ।
तूष्णीक (वि०)—शान्त, चुप, मौनयुक्त ।
तूष्णीम् (अ०)—चुपचाप, मौन ।
तूस्त (न०)—बांधे हुए बाल, जटा, कण, पाप, धूलि ।
तृक्ष (पु०)—कश्यप ऋषि का नाम ।
तृक्ष् (८ उ०)—खाना, घास चरना ।

तृण (न०)–तिनका, घास, घास की बनी हुई चटाई।
तृणकूट-काण्ड(न०)-घास का अंबार।
तृणद्रुम (पु०)–केतक वृक्ष, खजूर, नारियल। [नीवार।
तृणधान्य (न०)–स्वयंभव अनाज,
तृणमाय (वि०)–तुच्छ, निकम्मा।
तृणराज (पु०)–बांस, तालवृक्ष।
तृणौकस्(न०)–तिनकों का बना घर।
तृण्या (स्त्री०)–घास का अम्बार।
तृतीय(वि०)–तीसरा। न०–तृतीयांश।
तृतीयप्रकृति (अव्ली०)–नपुंसक, क्लीवलिंग।
तृतीया (स्त्री०)–चन्द्रमास के उभय-पक्ष की तीसरी तिथि।
तृद् (७ उ०,१ प०)–मारना,नष्ट करना, अनादर करना।
तृप् (४,५,६ प०)–सन्तुष्ट होना, खुश होना, तृप्त होना।
तृप्त (वि०)–शान्त, सन्तुष्ट।
तृप्ति (स्त्री०)–सन्तुष्टि, प्रसन्नता, सन्तोष।
त्रि [त्रि] फला (स्त्री०)–हरीतकी, बहेड़ा और आंवला इन तीन औषधियों का समूह।
तृष् (४ प०)–प्यासा होना, चाहना। स्त्री०–उत्कट इच्छा, आतुरता, प्यास।
तृषा (स्त्री०)-पिपासा,प्यास, उत्कट इच्छा, कामदेवपत्नी।
तृषित(वि०)-प्यासा,लालची,इच्छुक।
तृष्णा(स्त्री०)–प्यास, लालच,इच्छा।
तृष्णालु (वि०)–बहुत प्यासा, उत्कट इच्छुक।
तॄ (१प०)–तरना, पार होना, पार जाना, प्राप्त करना, गालिब आना।
तेज् (१प०)–रक्षा करना, बचाना।
तेज (पु०)–कसैलापन, तेज़ी, चमक, साहस।
तेजन (न०)–हथियार की धार,बांस; तेज़ करना, धार रखना।
तेजस् [:] (न०)–तेज़ी, तीव्रता, अग्निशिखा, गर्मी, चमक, रोशनी, ओज, उत्साह, शक्ति,वीर्य, अग्नि, सार,चर्बी, स्वर्ण,दिमाग़।
तेजस्विनी (स्त्री०)–तेज वाली स्त्री, ज्योतिष्मती लता।
तेजस्वी [न्] (वि०)–तेजोयुक्त, वीर्य-वान्, प्रसिद्ध, प्रबल।
तेजित (वि०)–तीव्र, भड़का हुआ, तेज़ धार वाला, शाण पर लगा हुआ।
तेजोभङ्ग (पु०)–अपमान, गौरव का नाश, उत्साहहरण।
तेजोमय (वि०)–चमकीला, शोभा-यमान, उत्साही।
तेजोमूर्त्ति (पु०)-सूर्य, तेजस्वी पुरुष।
तेप् (१आ०)–टपकना, हिलना, चमकना।
तेमः–तम्=तर करना, नमी, गीला-पन। 'तेमन' कढ़ी का भी वाचक है।
तैक्ष्ण्य (न०)–तेज़ी, कसैलापन, खूंखारी, क्रूरता, निर्दयता।

तैजस (वि०)–चमकीला, शोभायमान, तेजोयुक्त, पराक्रमी, बलशाली। न०–घृत, शक्ति, बल, धातुमात्र।
तैतिर (पु०)–तीतर पक्षी।
तैतिल (पु०)–देवता, गेंडा।
तैत्तिरिक (पु०)–तीतरमार।
तैत्तिरीय (पु०)–यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा, एक उपनिषद् का नाम।
तैर्थिक (न०)–तीर्थ से लाया हुआ जल। पु०–तपस्वी, सिद्धान्त-प्रवर्त्तक। वि०–पवित्र, तीर्थी-भूत। [वस्तु, तेल।
तैल (न०)–अपने नाम से प्रसिद्ध
तैलकार (पु०)–तेली।
तैलपर्णिका (स्त्री०)–चन्दन, धूप, तिरपनतेल।
तैलफल (पु०)–इङ्गुदी वृक्ष।
तैलयन्त्र (न०)–तेली का कोल्हू।
तैलिक–तैली (पु०)–तैलकार, तेली जाति। [की बत्ती।
तैलिनी (स्त्री०)–लम्प या चिराग़
तैलंग (पु०)–कर्णाटक प्रदेश का नाम।
तैष (पु०)–पौषमास।
तोक (न०)–सन्तान, बच्चा, सन्तति।
तोकक (पु०)–चातक पक्षी।
तोकम (न०)–कान का मैल। पु०–बादल, हरा रंग।
तोटक (न०)– १२ अक्षर के पाद वाला छन्द। [फाड़ना।
तोडन (न०)–तोड़ना, विभक्त करना,
तोद (पु०)–कष्ट, सूर्य, सख़्त तकलीफ़।
तोदन (न०)–कष्ट, मुख, अंकुश।
तोमर (अस्त्री०)–लौहदण्ड, रायबांस।
तोय (न०)–जल, पूर्वाषाढ़ा, पानी।
तोयकाम (वि०)–प्यासा, पिपासित, जलेच्छुक।
तोयक्रीडा (स्त्री०)–जलक्रीडा।
तोयगर्भ (पु०)–नारियल, नारिकेल।
तोयद (न०)–घी, घृत। पु०–मेघ, बादल।
तोयधर (पु०)–मेघ, बादल।
तोयमल (न०)–समुद्रफेन।
तोयरस (पु०)– नमी, तरी।
तोयराज् (पु०)–वरुण, समुद्र, सागर।
तोयवेला (स्त्री०)–समुद्रतट, किसी जलाशय का किनारा।
तोरण (अस्त्री०)–विवाहादि उत्सव पर वनस्पति के जो दरवाज़े आदि बनाये जाते हैं, बन्दर-वार, बाहर का दरवाज़ा। पु०–शिव। न०–गर्दन, गला।
तोल (अस्त्री०)–तुला हुआ सामान, परिमाण, तोल, तोला।
तोलन (न०)–तोलना, उठाना।
तोल्य (न०)–तोल। वि०–तुलने लायक़।
तोषः–तोषणम् (न०)–प्रसन्नता, खुशी, सन्तोष, तुष्टि।
तोषित (वि०)–सन्तुष्ट, प्रसन्न।
तोशल (न०)–मूसल, दण्ड।
तौर्य (न०)–बाजे की आवाज़।
तौल (न०)–तोल, वज़न।
तौलिक (पु०)–मुसव्विर, चित्रकार
तौल्य (न०)–तौल, वज़न, समानता।

त्यक्त (वि०)–त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, घृणित।
त्यक्तलज्ज (वि०)–बेशर्म, लज्जाहीन।
त्यज् (१ प०)–त्यागना, छोड़ना, बरखास्त करना, परहेज करना, छुटकारा पाना।
त्यजन (न०)–त्याग, अलहदगी, दान।
त्याग (पु०)–छोड़ना, दान, उदारता, बरखास्तगी।
त्यागपत्र (न०)–इस्तीफा, तलाकनामा
त्यागशील (वि०)–उदार, मुक्तहस्त, फैयाज।
त्यागी [न्] (वि०)–छोड़ने वाला, दाता, वीर, उदार, नित्यकर्म का त्याग करने वाला।
त्याजित (वि०)–त्याग कराया हुआ, छुड़ाया हुआ।
त्याज्य (वि०)–छोड़ने योग्य, त्यक्तव्य, देने योग्य।
त्रप् (१आ०)–शर्मिन्दा होना, शर्म करना
त्रपा (स्त्री०)–लज्जा, शर्म, कुटुम्ब, यश, कुलटा।
त्रपाहीन (वि०)–लज्जाहीन, बेशर्म।
त्रपु [पुस्] (न०)–सीसा, टिनधातु।
त्रपुल [ल] (न०)–टिन धातु।
त्रय (न०)–तीन वस्तुओं का समूह। वि०–तिगुणा।
त्रयम् (पु०)–तीन का वाचक।
त्रयी (स्त्री०)–ऋक्, यजु, साम तीनों वेदों का समुदाय, ऐसी स्त्री जिस के पति और पुत्र उपस्थित हों, तिगड्डा, समझ, बुद्धि।
त्रयीमुख (पु०)–ब्राह्मण, वेदवेत्ता।
त्रयोदश (वि०)–तेरहवां।
त्रयोदशन् (वि०)–तेरह।
त्रयोदशी (स्त्री०)–चन्द्रमास के प्रत्येक पक्ष की तेरहवीं तिथि।
त्रस् (१,४ प०)–हिलना, कांपना, भयभीत होना, डरना, डरसे भाग जाना
त्रस (पु०)–हृदय, दिल। न०–जंगल, वन, जीवधारिसमूह।
त्रसन (न०)–भय, चिन्ता, बेचैनी।
त्रसरेणु (पु०)–धूलिकण, तीस परमाणुओं का समूह।
त्रस्त (वि०)–भयभीत, खौफज़दा, कायर।
त्रा (२ आ०)–रक्षा करना, बचाना।
त्राण (न०)–रक्षा, बचाव, पनाह, कवच। वि० रक्षित, बचाया हुआ
त्रात (वि०)=त्राण।
त्राता [तृ] वि०)–रक्षक, बचाने वाला
त्रास (पु०)–भय, ख़ौफ, डर। वि०-भयातुर।
त्रासन (न०)–डराना, भयहेतु।
त्रासित (वि०–भयातुर, खौफज़दा।
त्रि (वि०)–तीन की संख्या वाला, तीन
त्रिक (न०)–तीन का समुदाय, जघनकूप, कटिस्थल, त्रिफला, त्रिकटु
त्रिकटु (न०)–सोंठ, मिर्च और पीपल।
त्रिककुद् (पु०)–विष्णु, कृष्ण, त्रिकूट पर्वत। वि०–सर्वप्रधान।
त्रिकाय (पु०)–बुद्ध का वाचक।
त्रिकाल (न०)–भूत, भविष्यत्, वर्तमान नामक तीन काल, सायं, प्रात: और दोपहर नामक दिन के तीन भाग।

त्रिकालज्ञ (वि०)–सर्वज्ञ, परमात्मा।
त्रिकूट (पु०)–सिंहलद्वीप में एक पर्वत जिस की चोटी पर लंका बसती थी।
त्रिकोण (वि०)–तीन कोन वाला, ३ भुजा वाला। पु०-त्रिभुज, तीन कोने का क्षेत्र, स्त्रीभग, मंगल की आकृति।
त्रिगर्त (पु०)–जालन्धरप्रदेश और वहां के निवासी।
त्रिगुण (वि०)–तिगुना, तीन गुणों का मेल, सांख्यशास्त्र में प्रधान का नाम।
त्रिचत्वारिंश (वि०)–तेंतालीस।
त्रिजगती (स्त्री०)–पृथिवी, द्यौः और अन्तरिक्ष नामक तीन लोक।
त्रिजटा (स्त्री०)–एक राक्षसी का नाम जो अशोकवन में सीता के पास रहती थी।
त्रिणीता (स्त्री०)–स्त्री, भार्या।
त्रिणे [ने] त्र (पु०)–तीन आंख वाला अर्थात् शिव।
त्रिदशाधिप (पु०)–इन्द्र।
त्रिदिन (न०)-तीन दिन एक साथ
त्रिदिव (न०)–आकाश, स्वर्ग, सुख।
त्रिदोष (पु०)–वात, पित्त, कफ नामक तीन शरीरस्थ दोष।
त्रिधा (अ०)–तीन प्रकार से।
त्रिधारा (स्त्री०)–गंगा नदी।
त्रिपञ्चाशत (स्त्री०)–तरेपन।
त्रिपटु (पु०)–कांच, कच्छु।
त्रिपत्रक (पु०)–पलाश वृक्ष।
त्रिपाठी (वि०)–संहिता, पद और क्रम का जानने वाला।
त्रिपाद (पु०)–परमात्मा, ज्वर।
त्रिपुट (पु०)--त्रिकोण, तीर, तट, हाथ की हथेली।
त्रिपुर (पु०)--एक राक्षस का नाम।
त्रिफला (स्त्री०)--हैड़, बहेड़ा, और आंवला नामक औषध।
त्रिभाग (पु०)--तीसरा हिस्सा।
त्रिभुज(न०)--तीन भुजा वाला क्षेत्र।
त्रियामा (स्त्री०)--रात्रि, हल्दी, यमुना, नील।
त्रिलिङ्ग (वि०)--ऐसा शब्द जो तीनों लिंगों में प्रयुक्त हो सके जिसे विशेषण कहते हैं।
त्रिवर्ग (पु०)--धर्म, अर्थ और काम नामक तीन विषय; सत्त्व, रज और तम नामक तीन गुण; ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य नामक तीन वर्ण।
त्रिविद्य (वि०)--वेदत्रयी का ज्ञाता।
त्रिविध (वि०)--तीन प्रकार का।
त्रिशङ्कु (पु०)--सूर्यवंशी एक राजा का नाम जो हरिश्चन्द्र का पिता था। यह राजा,कहते हैं कि सशरीर स्वर्ग में पहुंचना चाहता था, एतदर्थ उसने अपने कुलगुरु वशिष्ठ से यज्ञ की प्रार्थना की, किन्तु वशिष्ठ के अस्वीकार करने पर विश्वामित्र ने यज्ञ कराना अङ्गीकार कर लिया। विश्वामित्र ने त्रिशंकु को सशरीर

स्वर्ग की ओर चढ़ाना आरम्भ किया परन्तु ऊपर पहुंचने पर इन्द्रादि देवताओं ने उसे ढकेल दिया और वह नीचे की ओर गिरने लगा। तब विश्वामित्र ने उसे अपने तपोबल से आकाश में ही स्थित रक्खा, जो कि अब तक आकाश में ही लटक रहा है, ऐसी एक पौराणिक गाथा है।

त्रिशत (न०)–तीन सौ या एक सौ तीन। [अस्त्रविशेष।

त्रिशूल (न०)-तीन नोक का एक

त्रिशूलधारी (पु०)--शिव का वाचक।

त्रिशृंग (पु० --चित्रकूट पर्वत और त्रिभुज।

त्रिषष्टि (स्त्री०)--तरेसठ।

त्रिसप्तति (स्त्री०)--तिहत्तर।

त्रिसम (वि०)--बराबर भुजाओं वाला त्रिभुज।

त्रिंश (वि०)--तीसवां।

त्रिंशक (वि०)–तीस का बना हुआ।

त्रिंशत् (स्त्री०)--तीस।

त्रिंशत्पत्र(न०)–चन्द्रमुखी, कुमुदनी।

त्रिंशति(स्त्री०)–तीस।

त्रुट् (४, ६ प०)-फाड़ना, तोड़ना।

त्रुटि-टी (स्त्री०)–फाड़ना, लेश, दो निमेष का समय, शक, सन्देह, नाश, छोटी इलायची।

त्रुटित(वि०)–फटा हुआ।

त्रुप् त्रुम्प्(१ प०)-मारना,कत्ल करना।

त्रेता(स्त्री०)-चारयुगों में दूसरा युग, जुए में एक दाम दाव, तीन कौड़ियों का ऊपर होकर गिरना।

त्रै (१ आ०)-रक्षा करना, बचाना, पालन करना।

त्रैकालिक (वि०)–तीन काल अर्थात् भूत, भविष्यत्, वर्तमान से सम्बन्ध रखने वाला।

त्रैगुणिक(वि०)–तिगुणा।

त्रैदशिक(वि०)–स्वर्गीय,आसमानी।

त्रैध (वि०)–तीन प्रकार का। न०–तीन प्रकार।

त्रैमासिक(वि०)–तीन मास का, तीन मास में होने वाला।

त्रैमास्य(न०)--तीन मास का काल।

त्रैराशिक (न०)–अङ्कगणित का एक विशेष नियम।

त्रैलोक्य (न०)–पाताल, भूलोक और स्वर्ग नामक तीन लोक।

त्रैवर्गिक (वि०)–धर्म, अर्थ और काम इन तीन विषयों से सम्बन्ध रखने वाला।

त्रैवर्णिक (वि०)–द्विजाति से सम्बन्ध रखने वाला। [वर्ष का।

त्रैवर्षिक (वि०)-तीनसाला, तीन

त्रैविष्टप (पु०)-देवता।

त्रोटक (न०)–नाट्यभेद।

त्वक्ष् (१प०)-पतलाकरना, ढकना।

त्वग् (१प०)-जाना, हरकत करना, छलांग मारना।

त्वच् [क्] (स्त्री०)–त्वचा, चमड़ा, खाल, स्पर्शेन्द्रिय।

त्वच् (न०)-छाल, त्वचा।

त्वचा (स्त्री०)=त्वच्।

त्वदीय (वि०)–तेरा, तुम्हारा।

त्वर् (१आ०)–जल्दी करना, जल्दी से जाना।

त्वरण (न०)–तीव्रता, जल्दी।

त्वरा–रि (स्त्री०)–जल्दी, तेजी, शीघ्रता।

त्वरित (न०)–जल्दी, तेजी, शीघ्रता। वि०–तीव्र, शीघ्रगामी।

त्वरितम् (अ०)–शीघ्रता से, जल्दी से, तेजी से।

त्वष्टृ [ष्टृ] (पु०)–कारीगर, बढ़ई, विश्वकर्म्मा।

त्वादृश [श्] (पु०)–तेरे समान, तुम्हारी तरह का।

त्विष्(१उ०)–चमकना, दीप्तिमान होना।

त्विष् (स्त्री०)–दीप्ति, चमक, इच्छा, रिवाज, वचन, वाणी।

त्विषा (स्त्री०)–पूर्ववत्।

त्विषि (पु०)–प्रकाशकिरण, सुन्दरता, शोभा, तेज।

त्सरु (पु०)–तलवार की मूठ, रेंगने वाला जन्तु।

थ

थ–तवर्ग का द्वितीय अक्षर। पु०–पर्वत, रक्षक, भक्षण, रोगविशेष, भय, आशंका। न०–रक्षा, भय।

थर्व् (१ प०)–जाना, चलना।

थुड्(६ प०)–ढकना, छिपाना।

थुत्कार(पु०)–थूकते समय जो शब्द होता है।

थुर्व् (१ प०)–मारना, चोट पहुंचाना।

थूत्कार(पु०)=थुत्कार।

द

द–तवर्ग का तीसरा अक्षर। न०–स्त्री। पु०–दान, पर्वत। वि०–दाता, उत्पादक या नाशक।

दंश् (१ प०)–काटना, डंक मारना, डसना।

दंश(पु०)–काटना, डसना, डंक, कटा हुआ स्थान, दांत, जोड़, अवयव, सांप का डंक मारना, दोष, वनमक्खी। [दंशी]–काटने वाला।

दंशक (पु०)–कुत्ता, मक्खी। वि०–

दंशन(न०)–डंक मारना, कवच।

दंष्ट्रा(स्त्री०)–बड़ा दांत, दाढ़, कीला, हाथीदांत।

दंष्ट्राल(वि०)–बड़े २ दांतों वाला।

दंष्ट्रिक(वि०)–पूर्ववत्।

दंष्ट्रिका(स्त्री०)–दाढ़, दंष्ट्रा।

दंष्ट्री[न्] (पु०)–जंगली सूअर, सर्प।

दक्ष् (१ आ०)–बढ़ना, उगना, मारना, चलना, योग्य होना।

दक्ष (वि०)–चतुर, योग्य, उपयुक्त, तत्पर, ईमानदार। पु०–एक प्रजापति का नाम, जो ब्रह्मा का पुत्र था।

दक्षकन्या (स्त्री०)–दक्ष प्रजापति की कन्या, अश्विनी आदि तारा, दुर्गा।

दक्षिण (वि०)–दाहना, सीधा, चतुर, कुशल, सीधी ओर का, दक्षिण दिशा का। पु०–दाहना हाथ, विष्णु, शिव। अस्त्री०–दक्खन, सीधी ओर या तरफ़।

दक्षिणतः (अ०)—दक्षिण दिशा से, दाहनी ओर से।
दक्षिणपश्चिम (वि०)—मग़रबी व जनूबी। [जनूबी।
दक्षिणप्राच्-पूर्व (वि०)—मशरकी व
दक्षिणसमुद्र-सागर (पु०)—दुनिया के जनूब में जो समुद्र है।
दक्षिणा (स्त्री०)—धनदान, संस्कार आदि उत्सवों पर याज्ञिकों को जो भेट दी जाती है, यज्ञ की पत्नी, प्रतिष्ठा, प्रजापति की कन्या, दक्षिणदिशा, यश।
दक्षिणात् (अ०)—दक्षिण से।
दक्षिणापथ(पु० —भारतवर्षका दक्खनी भाग।
दक्षिणायन (न०)—कर्क राशि में सूर्य का बदलना। २२जून से २२ दिसम्बर तक का समय जब कि सूर्य की गति दक्षिण की ओर रहती है।
दक्षिणार्ह (वि०)—दक्षिणा पाने के योग्य
दक्षिणीय-क्षिण्य (वि०)—दक्षिणा पाने के योग्य।
दग्ध (वि०)—जला हुआ, दाग़ल, भस्मीकृत।
दघ् (५ प०)—पालकरना, मारना, रक्षा करना, जाना।
दघ् (१ प०)—त्यागना, रक्षा करना, पालना।
दण्ड् (१० उ०)—सज़ा देना, दण्ड देना।
दण्ड (भारती०)-डण्डा, लकड़ी, सज़ा, लाठी, अंकुश, कोण, घोड़ा, यम-राज, साठ पल का काल।
दण्डक (पु०)—छड़ी, डण्डा, क़तार, पंक्ति, एकछन्द का नाम। अस्त्री०-नर्मदा और गोदावरी के बीच के स्थल का नाम।
दण्डकारण्य (न०)—प्राचीन काल में दक्षिण की ओर एक बड़े वन का नाम।
दण्डग्रहण (न०)—ब्रह्मचर्य वा वान-प्रस्थ आश्रम में प्रवेश करना।
दण्डदेवकुल (न०)-न्यायालय,अदालत
दण्डधर[धार] (पु०)—यमराज,न्याया-धीश, कुम्भकार, राजा, फ़क़ीर, साधु, ब्रह्मचारी।
दण्डनायक (पु०)—जज, कोतवाल, राजा, हाकिम, सिपाही।
दण्डनिपातन (न०)—सज़ा देना।
दण्डनीति (स्त्री०)—क़ानूनफ़ौजदारी, शुक्राचार्य आदि के नीतिग्रन्थ जिन में दण्ड का विधान है।
दण्डनीय(वि०)-दण्डयोग्य,क़ाबिलेसज़ा
दण्डनेता [तृ] (पु०)--राजा, यमराज, न्यायाधीश।
दण्डपाणि(पु०)—यमराज, न्यायाधीश
दण्डपातन (प०)-सज़ा देना, दण्डित करना।
दण्डपारुष्य (न०)—कठोरदण्ड, दण्ड की कठोरता, आक्रमण।
दण्डपालक(पु०)—मुख्य न्यायाधीश, द्वारपाल। [अफ़सर।
दण्डपाशक (पु०)-जल्लाद, पुलिस का

दण्डबालधि (पु०)—हाथी, हस्ती ।
दण्डभृत् (पु०)—कुम्हार, यमराज ।
दण्डवत् (अ०)—खड़े होकर, लेटकर ।
दण्डविधि (पु०)—क़ानूनफ़ौजदारी ।
दण्डहस्त (पु०)—द्वारपाल, यमराज ।
दण्डाज्ञा (स्त्री०)—सज़ा का हुक्म ।
दण्डाधिप(पु०)—प्रधान न्यायाधीश ।
दण्डानीक (न०)—सेना का एक भाग।
दण्डार (पु०)—गाड़ी, किश्ती, कुम्हार का पहिया।
दण्डार्ह (वि०)—क़ाबिले सज़ा।
दण्डिका (स्त्री०)—रस्सा, लड़ी, पंक्ति, मोतियों की माला।
दण्डी [न्] (पु०)—ब्राह्मण, संन्यासी, द्वारपाल, राजा, यमराज ,भिक्षु, एक कवि का नाम जिस ने दश-कुमारचरित बनाया है।
दण्ड्य (वि०)=दण्डनीय।
दत्त (वि०)—दिया हुआ,रक्षित,भेट में दिया हुआ। पु०—बारह पुत्रों में से एक, वैश्य की उपाधि। न०-दान, भेट।
दत्तक(पु०)—धर्मशास्त्र के अनुसार १२ प्रकार के पुत्रों में से एक, गोद लिया हुआ पुत्र।
दत्ति(पु०)—दान, भेट।
दत्त्रिम(पु०)—दत्तकपुत्र।
दद्(१ आ०)—देना, भेट करना।
ददन(न०)—दान, भेट।
दद्रु(पु०)—एक रोग जो जंघाओं में होता है, दाद का रोग, कछुआ।
दध्(१ आ०)—धारण करना, रखना, देना, भेट करना।
दधि(न०)—दही,जमा हुआ दूध,दक्ष।
दधिसार(पु०)—मन्थनदण्ड।
दधिज(न०)—ताज़ा घी, लोनी।
दधित्थ(पु०)—कपित्थ।
दधीच-चि(पु०)—कर्दम प्रजापति की कन्या के गर्भ से अथर्व मुनि का पुत्र जिस.की हड्डियों से देवताओं का वज्र निर्मित हुआ था,जिससे इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया।
दनु(स्त्री०)—दक्ष प्रजापति की एक कन्या का नाम जो कश्यप की पत्नी थी जिस के गर्भ से दानव उत्पन्न हुए।
दनुज-पुत्र(पु०)-राक्षस का नाम।
दन्त(पु०)—दांत, चबाने का साधन, हाथीदांत। [शिखर, दांत।
दन्तक(पु०)—नागदन्त, खूंटी, पर्वत-
दन्तकाष्ठ(पु०)—दांत साफ़ करने का काष्ठ जैसे कीकड़, मिहोऐ की लकड़ी।
दन्तकूर(पु०)—लड़ाई, युद्ध।
दन्तघर्ष(पु०)—दांत पीसना।
दन्तच्छद (पु०)—जिस से दांत ढके रहते हैं ओंठ, होंट।
दन्तधावन(न०)—दांतों के साफ़ करने का ब्रुश, दांतों का साफ़ करना। पु०—खैर का पेड़, बकुल,दांतोन।
दन्तपात (पु०)—दांतों का गिरना, दांत टूटना।
दन्तप्रक्षालन(न०)—दांतों का धोना।
दन्तबीज (पु०)—अनार का पेड़, दाडिम।

दन्तवेष्ट(पु०)-मसूड़ा।
दन्तशूल(अस्त्री०)-दांतों का दर्द।
दन्तायुध(पु०)-सूअर, शूकर।
दन्तावल (पु०)-हाथी, हस्ती।
दन्ती[न्] (पु०)-पूर्ववत्।
दन्तुर(वि०)-जिस के दांत ऊंचे हों या बाहिर को निकले हों।
दन्त्य(वि०)-दांतों का, दांत की जड़ से निकला हुआ, दांतों के लिये उपयोगी। पु०-जिस वर्ण का स्थान दांत है।
दन्दश(पु०)-दांत।
दन्दशूक(पु०)-सर्प, सांप, राक्षस।
दभ्(१० उ०)-प्रेरना, आगे को धकेलना। (५ प०)-धोखा देना, ठगना, दम्भ करना।
दभ्र(पु०)-समुद्र। वि०-छोटा, अल्प।
दम्(४ प०)-शान्त होना, पालतू बनाना, दण्ड देना रोकना।
दम(पु०)-मन का दमन, दण्ड, कीचड़, विष्णु, दमयन्ती के एक भाई का नाम, मनोवृत्तियों का रोकना।
दमक(वि०)-दमन करने वाला, पालतू बनाने वाला। [नाम।
दमघोष(पु०)-शिशुपाल के पिता का
दमथ (पु०)-इन्द्रियदमन, आत्मनिग्रह, दण्ड।
दमन (न०)-पालतू करना, दबाना, सज़ा देना, आत्मनिग्रह, वध। पु०-योद्धा, विष्णु।
दमयन्ती(स्त्री०)-विदेहराज भीम की पुत्री, नल की पत्नी।
दमित(वि०)-दान्त, पालतू, दमन किया हुआ पराभूत।
दमु[सू] नस्(पु०)-अग्नि, शुक्राचार्य।
दम्पती(पु० द्वि०)-पतिपत्नी।
दम्भ्(५ प०, १० उ०)=दभ्।
दम्भ(पु०)-धोखा, फ़रेब, शठता, इन्द्र-वज्र, छद्मवेष।
दम्भन(न०)-धोखा देना, ठगना।
दम्भी[न्] (पु०)-ठग, छद्मवेषी। वि०-क्रूर, मग़रूर।
दम्भोलि(पु०)-हीरा, रत्न, वज्र।
दय्(१ आ०)-दया करना, रहम करना, रक्षा करना, पालन करना, जाना, देना, मारना। [नया बैल।
दम्य(वि०)-दमन करने योग्य। पु०-
दया(स्त्री०)-रहम, कृपा दयालुता, मेहरबानी।
दयाकर(पु०)-दयावान्, मेहरबान।
दयार्द्रचित्त(पु०)-दयाभाव से जिसका मन पिघल गया हो।
दयालु (वि०)-मेहरबान, दयायुक्त, सहृदय। [होना।
दयालुता(स्त्री०)-दयाभाव, दयालु
दयावान् [वत्] (वि०)-दयालु, कृपान्वित। [पति, प्रेमी।
दयित(वि०)-प्यारा, पसन्दीदा। पु०-
दयिता (स्त्री०)-भार्या, पत्नी।
दयिताजित(पु०)-भार्या के वशीभूत, जोरू का गुलाम।
दर (अस्त्री०)-गढ़ा, ग़ार। पु०-भय, ग्रीष्म, जलधारा।
दरथ(वि०)-कायर, कापुरुष।

दरण(न०)–तोड़ना, फाड़ना, चीरना।
दरथ(पु०)–ग़ार, गुफा, जान बचाकर भागना। [हृदय।
दरद्(स्त्री०)–ढालू चट्टान, पर्वत, भय,
दरम्(अ०)–ईषत्, किञ्चित, थोड़ा।
दरि-री(स्त्री०)–कन्दरा, गुफा, घाटी।
दरित(वि०)–भयभीत, ख़ौफ़ज़दा, फाड़ा हुआ।
दरिद्र(वि०)–निर्धन, ग़रीब, दीन।
दरिद्रा(२ प०)–दुःखी होना, ग़रीब होना, निर्धन होना।
दरिद्राणं-द्रता(स्त्री०)–निर्धनता, ग़रीबी
दर्दर(पु०)–पर्वत, टूटा हुआ घड़ा।
दर्दरीक(पु०)–वाद्यभेद, मेंढक, बादल।
दर्दुर(पु०)–बादल, मेंढक, पर्वत, वाद्य-ध्वनि, वाद्यभेद। न०–प्रान्त, जिला, ग्रामसमूह।
दर्दु-दू(स्त्री०)–दाद नामक रोग।
दर्प (पु०)–अहङ्कार, घमण्ड, ग़रूर, उजड्डपन, गर्मी।
दर्पक(पु०)–कामदेव।
दर्पच्छिद्-हर(वि०)–घमण्ड को दूर करनेवाला, दर्प को दूर करनेवाला।
दर्पण (पु०)–आयना, शीशा, कुबेर का पर्वत। न०–आंख, घमण्ड करना।
दर्पित (वि०)–घमण्डी, मग़रूर [दर्पी भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]
दर्भ (पु०)–कुशा नाम की घास।
दर्भपत्र (न०)–कास नामक घास।
दर्व (पु०)–हिंस्र पुरुष, राक्षस, करछी, चोट। [द्वारपाल।
दर्वट (पु०)–गांव का चौकीदार,
दर्विक (पु०)–करछी, चमचा, चम्मच।
[दर्वि–र्वी का भी यही अर्थ है]।
दर्वीकर (पु०)–सर्प, सांप।
दर्श (पु०)–दृश्य, नज़ारा, अमावस्या, नवचन्द्रोदय।
दर्शक (वि०)–देखने वाला, परीक्षक। पु०–द्वारपाल, कारीगर, नुमायशी।
दर्शन (वि०)–देखने वाला, दिखाने वाला। न०–ज्ञान, आंख, परीक्षा, दिखाई देना, मुलाक़ात, प्रत्यक्षीकरण, स्वप्न, अध्यात्मज्ञान, सिद्धान्तविवेचना, दर्पण, राय, इरादा।
दर्शनीय (वि०)–देखने योग्य, मनोहर, सुन्दर।
दर्शयिता [तृ] (वि०)–दिखाने वाला, दर्शक। पु०–द्वाररक्षक, रहनुमा।
दर्शित (वि०)–दिखाया हुआ, व्याख्याकृत, प्रत्यक्ष। [भेदना।
दल् (१प०)–तोड़ना, दलना, फाड़ना,
दल (अस्त्री०)–टुकड़ा, भाग, अर्द्धांश, म्यान, बादल, पत्ता।
दलकोमल (न०)–कमल, पद्म।
दलन (न०)–तोड़ना, टूट पड़ना, पीसना, विभक्त करना।
दलप (पु०)–स्वर्ण, शास्त्र, हथियार।
दलिक (न०)–लकड़ी, खेपटी।
दलित (वि०)–खिला हुआ, प्रफुल्ल, दलन किया हुआ, तोड़ा हुआ।
दल्भ (पु०)–पाप, धार्मिकता, चक्र।
दव (पु०)–अग्नि, ज्वर, कष्ट, जंगल, वन, वनाग्नि।

दवथु (पु०)-आंखों की सोजिश, चिन्ता, दुःख, अग्नि, गर्मी ।
दवदहन (पु०)-दावानल, वनाग्नि, दावाग्नि ।
दविष्ठ (वि०)-अत्यन्त दूर ।
दश [न्] (वि०)-१० की संख्या का वाचक ।
दशक (वि०)-दश का, दशगुणा, दश भाग का बना हुआ । न०-दश वस्तुओं का समूह। [वाचक ।
दशकण्ठ-कन्धर (पु०)-रावण का
दशकुमारचरित (न०)-कविवरदण्डिकृत गद्य का एक ग्रन्थ ।
दशगुण (वि०)-दश बार अधिक ।
दशन (पस्त्री०)-दांत, काटना, डसना । न०-कवच । पु०-पर्वतशिखर । [या अध्यक्ष ।
दशप (पु०)-दश गावों का प्रधान
दशपुर (न०)-एक प्राचीन नगर ।
दशभुजा (स्त्री०)-दुर्गा का वाचक ।
दशम (वि०)-दशवां । न०-दशांश ।
दशमास्य (वि०)-दश महीने का ।
दशमी (स्त्री०)-कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष की दशवीं तिथि ।
दशमूल (न०)-जंगल की दश जड़ों से तैयार की एक औषध ।
दशरथ(पु०)-अयोध्या का एक राजा, अज का पुत्र, श्रीरामचन्द्र का पिता ।
आश्विनशुक्ला दशमी का एक देशव्यापी उत्सव जो रावणवध और दुर्गापूजा के उपलक्ष्य में होता है, और ज्येष्ठशुक्ला दशमी को गंगावतरण के उपलक्ष्य में इस नाम का एक उत्सव होता है ।
दशा (स्त्री०)-अवस्था, हालत, चिराग़ की बत्ती, आंचल, पल्ला, बालकपन, जवानी आदि अवस्थायें, मानसिक अवस्था, मारकेश समझ, बुद्धि ।
दशाकर्ष (पु०)-चिराग़, दीपक, वस्त्राञ्चल ।
दशाधिपति (पु०)-सूर्य, सूरज, दश मनुष्यों का अध्यक्ष ।
दशान्त(पु०)-जीवन का अन्त, बत्ती ख़तम हो जाना। [दुर्भाग्य ।
दशाविपर्यास (पु०)-बदक़िस्मती,
दशाश्व(पु०)-दश घोड़ों वाला अर्थात् चन्द्रमा, चांद ।
दशेन्धन(पु०)-दीप, चिराग़, लम्प ।
दस्(४ प०)-नष्ट होना,घटना,फेंकना। (१ प०, १० उ०)-काटना, डसना, मालूम करना, देखना ।
दसन(न०)-बरबादसगी, नाश,फेंकना।
दस्त(वि०)-नष्ट, त्यक्त, फेंका हुआ ।
दस्म्य (वि०)-सुन्दर, ख़ूबसूरत ।
दस्यु(पु०)-चोर, लुटेरा, ठग, म्लेच्छ, धर्मक्रिया से रहित,सताने वाला।
दह् (१ प०)-जलाना, दाहकरना, नाश करना, दुःख देना ।

दहन(न०)--जलाना, जलना, दाह। पु०—अग्नि, कबूतर, चित्रक, भल्लातक वृक्ष। वि०-हानिक, नष्ट करने वाला, जलाने वाला।
दहर (पु०)-बच्चा, सद्य उत्पन्न बालक, अनुज। वि०-छोटा, नन्हा, कमतर।
दा(१ प०)-देना [यच्छति]। ३ न०-देना,दान देना,त्यागना। २ प०-काटना, छेदना। [करना।
दा(स्त्री०)-रक्षा, साफ करना, पवित्र
दाक(पु०)-दाता,दक्षिणा देने वाला।
दाक्ष(न०)-दक्षिणदिशा।
दाक्षायण(न०)-स्वर्ण, सोना, स्वर्णाभूषण। पु०-दक्ष का पुत्र।
दाक्षायणी (स्त्री०)-अश्विनी आदि कोई नक्षत्र, दक्षपुत्री दिति जो कश्यप की पत्नी थी, पार्वती, रेवती नक्षत्र, अदिति।
दाक्षायणीपति(पु०)-चन्द्रमा, शिव।
दाक्षाय्य(पु०)-गिद्ध, गिध।
दाक्षि(पु०)-दक्ष का पुत्र।
दाक्षिण (वि०)-दक्षिणासम्बन्धी, दक्षिणदिशा का।
दाक्षिणात्य (वि०)-दक्खनी, दक्षिण दिशा का। पु०-दक्षिणदेशनिवासी, नारियल।
दाक्षिण्य (न०)-उदारता, अनुकूलता, तहज़ीब,दया,ईमानदारी,प्रतिभा, चतुराई।
दाक्षी(स्त्री०)-दक्ष की पुत्री, पाणिनि की माता का नाम।
दाक्षीसुत-पुत्र (पु०)-अष्टाध्यायी के कर्त्ता पाणिनि ऋषि। [योग्यता।
दाक्ष्य (न०)-दक्षता, चतुराई,कौशल,
दाढक(पु०)-दांत, दाढ़।
दाडि [लि]म(पु०)-अनार का पेड़, छोटी इलायची। न०-अनार का फल।
दाडिमप्रिय(पु०)-तोता, शुक।
दाडिव(पु०)-अनार का पेड़।
दाढा(स्त्री०)-दाढ़, बड़ा दांत,इच्छा, दशाहिश, समूह।
दात(वि०)-छिन्न, शुद्ध,काटा हुआ।
दातव्य (वि०)--देने योग्य, विवाहने योग्य, लौटाने लायक़।
दाता[तृ] (वि०)--देने वाला, बख़्शने वाला, उदार। पु०--दान देने वाला, उत्तमर्ण, शिक्षक।
दात्र(न०)--दांती,काटने का औज़ार।
दात्री(स्त्री०)=दाना।
दाद(पु०)--दान, बख़्शीस।
दाधिक(वि०)--दही का,दधिमिश्रित।
दान्(१ उ०)--काटना, विभक्त करना।
दान (न०)-देना, बख़्शना, बख़्शीस, उदारता, शिक्षा, भेंट, रिश्वत, कर्तन, रक्षा, वढ़ोतरी, चरागाह।
दानक(न०)-छोटा दान,अनुचितदान।
दानकाम(वि०)-उदार, फ़ैयाज़।
दानपति(पु०)--कृष्ण का मित्र अक्रूर।
दानपत्र (न०)--वक़्फ़नामा, ऐसी दस्तावेज़ जिसमें दान दिये जाने का ब्योरा हो। [कारी।
दानपात्र(न०)--दान पाने का अधि-

दानप्रतिभाव्य(न०)- कर्ज़ की अदायगी की ज़मानत ।

दानव(पु०)--राक्षस, असुर ।

दानवगुरु(पु०)- शुक्राचार्य ।

दानवारि(पु०)--देवता, विष्णु ।

दानवीर(पु०) -अत्यन्त उदार मनुष्य, दानशूर । [देने वाला ।

दानी [न्](वि०)--उदार, फ़ैयाज़, दान

दानु (पु०)--दाता, सन्तोष, वायु, राक्षस, अभ्युदय । वि०--वीर, विजेता ।

दान्त(वि०)--पराजित, दमन किया हुआ, पालतू, दयक, उदार, दन्त-सम्बन्धी ।

दान्ति(स्त्री०)--आत्मनिग्रह, तपश्चरण, पराभव । [हुआ ।

दान्तिक (वि०)--हाथीदांत का बना

दापन(न०)--दिलवाने का काम ।

दापित(वि०)--दिलवाया हुआ ।

दाम [न्] (न०)--रस्सी, पंक्ति, माला, गाय आदि बांधने का रस्सा ।

दामा (स्त्री०)--रस्सी, रज्जु ।

दामिनी (स्त्री०)--विद्युत, बिजली ।

दामोदर (पु०)--विष्णु या कृष्ण का बोधक ।

दाम्पत्य (न०)--विवाहसम्बन्ध ।

दाम्भिक(पु०)-ठग,छद्मवेषी । वि०-धोखा देने वाला, छद्मधारी, गर्वित ।

दाय (पु०)-दान, भेंट, विवाह को दान, विरासत में पाया हुआ माल, हानि, नाश, स्थान ।

दायक (पु०)--वारिस, दायभागी, दाता । [वाला,सपिण्ड, पुत्र ।

दायाद (पु०)--दाय का ग्रहण करने

दायबन्धु (पु०)--सगा भाई, सहोदर । [तकसीम ।

दायभाग (पु०)--बाप के विरसे की

दायी [न्] (वि०)--देने वाला, दाता, उत्पादक ।

दार (पु०)--जोता हुआ खेत, सूराख़, फाड़ाव । बहु०-स्त्री, भार्या ।

दारक (पु०)--पुत्र, सन्तति, बालक, ग्रामशूकर । वि०--फाड़ने वाला, जुदा करने वाला ।

दारकर्म (न०)--विवाह, शादी ।

दारग्रहण (न०)--पूर्ववत ।

दारण (न०)--फाड़ना, दो टूक करना, सूराख़ करना ।

दारद (पु०)--पारा, समुद्र ।

दारपरिग्रह (पु०)--विवाह, शादी ।

दारिका (स्त्री०)--पुत्री,सूराख़,वेश्या ।

दारित (वि०)--फाड़ा हुआ, विभक्त ।

दारिद्र-दारिद्र्य (न०)--कंगाली, गरीबी, भाग्यहीनता ।

दारु (पु०)--हुनरमन्द, दाता, उदार मनुष्य । न०-लकड़ी, देवदारु-वृक्ष, पीतल, कारीगर । वि०-दयावान्, उदार ।

दारुक (पु०)--देवदारु का वृक्ष, कठपुतली, श्रीकृष्ण का सारथि ।

दारुकृत्य (न०)--लकड़ी का काम ।

दारुण (वि०)--कठोर, घोर, भारी, गम्भीर । न०-कठोरता, क्रूरता ।

दारुणय(न०)–कठोरता, क्रूरता, सख़्ती, भयानकता।
दारुसार (पु०)–चन्दन।
दारुसिता (स्त्री०)–दालचीनी।
दार्दुर (अस्त्री०)–जल,लाख, पानी।
दार्व (वि०)–लकड़ी का बना हुआ।
दार्वट (न०)–विचारालय, कचहरी, मन्त्रणागृह।
दार्शनिक (पु०)–दर्शनशास्त्र की फिलासफी के जानने वाला। वि०-दर्शनसम्बन्धी।
दालन (न०)--दांत का दर्द।
दाव (पु०)--दव, वन।
दावाग्नि (पु०)–वन की आग।
दाश् (१उ०)–देना, चखना। (५प०)–मारना, कत्ल करना।
दाश (पु०)–मछेरा,कैवर्त्त,नौकर, दास।
दाशनन्दिनी (स्त्री०)–सत्यवती का नाम।
दाशरथ-थि(पु०)–दशरथकी सन्तान।
दाशेर (पु०)–मछेरे का पुत्र, ऊंट।
दास् (१ आ०)=दाश्।
दास (पु०)–गुलाम,भृत्य,कैवर्त्तक,शूद्र, राक्षस, दस्यु।
दासजन (पु०)–गुलाम, नौकर।
दासभाव (पु०)–गुलामी, नौकरी।
दासानुदास (पु०)–दासों का दास। यह शब्द पत्रलेखक अपना विनीतभाव दर्शाने के लिये अपने नाम से पूर्व लिखा करते हैं।
दासिका (स्त्री०)–नौकरी, दासी।
दासी (स्त्री०)–नौकरनी, शूद्रा, कैवर्त्तकी, वधिकभार्या, वेश्या।
दासीपुत्र (पु०)–दासी के गर्भ से उत्पन्न पुत्र।
दासेर (पु०)–कैवर्त्तक,शूद्र, दासीपुत्र।
दास्य(न०)–गुलामी,बधन, सेवकाई।
दाह (पु०)–जलाना, खाक करना, भस्मीकरण, शरीर को दागना।
दाहकर्म (न०)–अन्त्येष्टि संस्कार।
दिक्क (पु०)–हाथी का बच्चा, पोता।
दिक्कर(पु०)–युवा पुरुष,तरुण,जवान।
दिक्पति--पाल (पु०)–दिशाओं के रक्षक-इन्द्र, वह्नि, पितृपति, नैर्ऋत, वरुण, पवन, कुबेर और ईश ये क्रमशः पूर्वादि दिशाओं के अधिपति हैं।
दिगम्बर (पु०)–दिशा ही जिस का वस्त्र है अर्थात् शिव, जैनों का एक सम्प्रदाय, दूसरा सम्प्रदाय श्वेताम्बर कहलाता है; सन्यासी, नागा।
दिग्गज(पु०)–दिशाओं में पृथ्वी को पकड़ने के लिये जो ऐरावत आदि हस्ती स्थित हैं।
दिग्ध (वि०)–भीगा हुआ, लिप्त, विषयुक्त। पु०--अग्नि,तैल, कथा, विष का बुझा हुआ बाण।
दित (वि०)–कटा हुआ, विभक्त।
दिति [ती] (स्त्री०)--दक्ष की कन्या, दैत्यों की माता,उदारता,कर्त्तन। पु०-राजा।
दितिज (पु०)–राक्षस, दैत्य।

दित्य (पु०)–राक्षस, दैत्य।

दिधिषु (पु०)–विधवा का पति, पति। स्त्री०-अक्षतयोनि कन्या जिस का पुनर्विवाह हो गया हो।

दिधि [धी] षू (स्त्री०)–पुनर्विवाहित स्त्री, ऐसी कन्या जिस की छोटी बहिन का विवाह हो गया हो।

दिधीषूपति (पु०)–अपने भाई की विधवा से संयोग करने वाला, विधवा का पति, नियुक्तपति।

दिन (अस्त्री०)–दिवस, दिन, दिनरात, २४ वा १२ घंटे का काल।

दिनकर-कृत् (पु०)–सूर्य, सूरज

दिनकेशर (पु०)–अँधेरा, अन्धकार।

दिनक्षय (पु०)–सायंकाल, शाम।

दिनचर्या (स्त्री०)–दिनभर में करने का काम, प्रत्येक दिन की कार्यावली।

दिनप-पति (पु०)–सूर्य, आदित्य।

दिनमुख (न०)–प्रातःकाल, उषा।

दिनयौवन (न०)–दोपहरी।

दिनादि (पु०)–दिन का आरम्भ, प्रातःकाल।

दिनान्त (पु०)–दिन का अन्त अर्थात सायंकाल।

दिनिका (स्त्री०)–एक दिन का वेतन।

दिनेश (पु०) सूर्य, रवि।

दिन्व् (१० आ०)–खुश होना, प्रसन्न होना या करना।

दिम् (१० उ०)–चलाना, प्रेरना।

दिलीप (पु०)–सूर्यवंशी एक राजा, जो रघु का पिता और अंशुमान् का पुत्र था।

दिव् (४ प०)–चमकना, फेंकना, जुआ खेलना, शर्त लगाना, तारीफ़ करना, खुश होना। स्त्री०–स्वर्ग, आकाश, दिन, अग्नि, चमक। पु०–देवता, चातक, हरिण, हाथी।

दिव(न०)–आकाश, दिन, जंगल, स्वर्ग, द्यौः।

दिव[न्] (पु०)–दिन। न०– स्वर्ग।

दिवस(अस्त्री०)–दिन।

दिवसमुख (न०)–उषाकाल, सवेरा।

दिवस्पति (पु०)–स्वर्ग का स्वामी, इन्द्र, देवराज।

दिवा(अ०)–दिन में, दिन के समय।

दिवाकर(पु०)–सूर्य, रवि, सूरजमुखी, कुक्कुट। [भाषित।

दिवाकीर्त्ति (पु०)–चाण्डाल, उल्लू,

दिवाचर(पु०)–श्यामा पक्षी, चाण्डाल।

दिवातन(वि०)–दिन में होने वाला।

दिवानिशम् (अ०)–दिनरात।

दिवाभीत(पु०)–उल्लू, उलूक।

दिवारात्रम् (अ०)–रातदिन, हमेशा।

दिवास्वाप(पु०)–दिन में सोना, उल्लू, उलूक।

दिवौकस्[स] (पु०)–देवता।

दिव्य (वि०)–स्वर्गीय, चमकीला, शोभायमान, मनोहर। पु०–यम, तत्त्ववेत्ता, यव। न०–आकाश, दिव्यशाप, लौंग, चन्दन, शपथ, गुग्गुल, स्वर्ग की चीज़।

दिव्यगन्ध (न०)–लौंग। पु०–गन्धक, उत्तम गन्ध।

दिव्यगन्धा(स्त्री०)–बड़ी इलायची।

दिव्यगायन(पु०)–गन्धर्व।

दिव्यचक्षुः [स्] (वि०)–स्वर्गीय नेत्र वाला, मनोहर आँखों वाला, अन्धा। पु०–बन्दर। न०–बाह्य चक्षुओं से जो अगोचर हो उस को देखने की शक्ति।

दिव्यदृश्(पु०)–ज्योतिषी, दैवज्ञ।

दिव्यरस (पु०)–पारा, प्रेमरस।

दिव्यसार (पु०)–सालवृक्ष।

दिव्यांशु(पु०)–सूर्य, रवि।

दिव्यांगना (स्त्री०)–अप्सरा, स्वर्गीय स्त्री। [दिव्यनारी और दिव्य-स्त्री का भी यही अर्थ है]।

दिव्यौषधि (स्त्री०)–मनशिल,गैरिक आदि दवाई।

दिश् (६ उ०)–दिखलाना, ज़ाहिर करना, बतलाना, देना, हवाले करना, राजी होना, आदेश करना, हुक्म करना।

दिश्–दिशा (स्त्री०)–अपने नाम से प्रसिद्ध, पूर्व,पश्चिमादि दिशाओं का बोधक। मुख्य दिशा चार हैं यथा--पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर। इन चार दिशाओं के बीच में चार उपदिशा हैं, यथा–ईशान, आग्नेय, नैर्ऋत्य और वायव्य। एक आकाश और दूसरा पाताल ये सब मिलकर दश दिशा होती हैं।

दिशोभाक् [ज्] (पु०)–जो चारों दिशाओं में भागता है अर्थात् भगोड़ा।

दिश्य(वि०)–दिशाओं में होने वाला, दिशासम्बन्धी।

दिष्ट(पु०)–समय, काल। न०–भाग्य, क़िस्मत, आदेश, उद्देश्य। वि०–दिखाया हुआ,उपदेश किया हुआ।

दिष्टान्त(पु०)–भाग्य का अन्त,मरण, मौत। [आदेश, उपदेश।

दिष्टि (स्त्री०)–भाग्य, क़िस्मत,

दिष्ट्या (अ०)–भाग्य से, ईश्वर की कृपा से,आश्चर्य,मैं बहुत प्रसन्न हूं।

दिष्णु(पु०)–दाता।

दिह् (२ उ०)–लेपन करना, लीपना, फैलाना। स्त्री०–लेपन, मलना।

दी (४ आ०)–मरना, नष्ट होना, घटना। स्त्री०–नाश, क्षय।

दीक्ष् (१आ०)–दीक्षा देना, दीक्षित करना, यज्ञ करना, व्रत की आज्ञा करना, यज्ञोपवीत धारण कराना।

दीक्षक (पु०)–आचार्य, दीक्षा देने वाला।

दीक्षा (स्त्री०)–व्रत, नियम, संस्कार, मन्त्रोपदेश,ब्रह्मचर्याश्रम में प्रवेश।

दीक्षागुरु (पु०)–मन्त्रादि का उपदेश करने वाला आचार्य।

दीक्षान्त (पु०)–बड़े यज्ञ की न्यूनतापूर्ति के लिये छोटे यज्ञ का अनुष्ठान,ब्रह्मचर्याश्रम में गुरुकुल से लौटते समय जो संस्कार किया जाता है।

दीक्षित (वि०)–जिसने दीक्षा ग्रहण की हो, दीक्षायुक्त, व्रतधारी।

दीदिवि (पु०)-भात, स्वर्ग, अग्नि, वृहस्पति ।
दीधिति (स्त्री०)-प्रकाश की किरण, शोभा, ओज, अंगुली ।
दीधी (२आ०)-चमकना, ज़ाहिर होना ।
दीन (वि०)-ग़रीब, दुःखी, निर्धन, कायर । पु०-निर्धन मनुष्य । न०-कष्ट, वेदना ।
दीनार (पु०)-स्वर्णमुद्रा, मोहर, स्वर्णभूषण, सिक्का ।
दीप् (४आ०)-चमकना, जलना, रोशन होना, चमकाना, जलाना ।
दीप (पु०)-दीपक, दिया, चिराग़, लैम्प ।
दीपक (पु०)-पूर्ववत् । वि०-जलाने वाला, रोशन करने वाला । न०-कुकुम ।
दीपन (न०)-रोशन करना, भड़काना, बढ़ाना, कुसुम ।
दीपनीय (वि०)-जलाने योग्य, जो आग को पकड़ सके ।
दीपमालिका (स्त्री०)-जिस में दीपों की कतार हो अर्थात् दीवाली का उत्सव ।
दीपिका (स्त्री०)-मशाल, चन्द्रिका ।
दीपित (वि०)-जला हुआ, प्रकाशयुक्त, भड़का हुआ ।
दीप्त (वि०)-रोशन, चमकीला, जला हुआ । पु०-शेर, सिंह । न०-स्वर्ण ।
दीप्तकिरण (पु०)-सूर्य, रवि ।
दीप्तकीर्त्ति-वर्ण (पु०)-कार्तिकेय का नाम ।
दीप्तजिह्वा (स्त्री०)-उल्कामुखी, कर्कशा स्त्री ।
दीप्तपिङ्गल (पु०)-सूर्य ।
दीप्तमूर्त्ति (पु०)-विष्णु ।
दीप्तलोचन (पु०)-बिल्ली ।
दीप्तलोह (न०)-पीतल ।
दीप्ताग्नि (वि०)-जिस की जठराग्नि उद्दीप्त हो ।
दीप्ति (स्त्री०)-कान्ति, चमक, भड़क, लाख, पीतल ।
दीप्तिमान् [मत्] (वि०)-चमकीला, शोभायमान ।
दीप्र (वि०)-चमकीला । पु०-अग्नि ।
दीर्घ (वि०)-लम्बा, चिरस्थायी, ऊंचा, विस्तृत, द्विमात्रिक । पु०-ऊंट, द्विमात्रिक स्वर ।
दीर्घकण्ठ (पु०)-सारस पक्षी, बगुला ।
दीर्घकाय (वि०)-बड़े शरीर वाला, बड़े शरीर का ।
दीर्घकेश (पु०)-भालू, रीछ ।
दीर्घगति-ग्रीव (पु०)-ऊंट, उष्ट्र ।
दीर्घच्छद (पु०)-जिस के लंबे पत्ते हों, ईख, गन्ना ।
दीर्घजंघ (पु०)-जिस की लंबी जंघा हों, ऊंट, बगुला ।
दीर्घजिह्व (पु०)-लंबी जीभ वाला ।
दीर्घतरु (पु०)-खजूर का वृक्ष ।
दीर्घमुखी (पु०)-छछूंदर ।
दीर्घदर्शी [न्] (वि०)-अनागत की चिन्ता करने वाला, दूरंदेश,

बुद्धिमान् । पु०—उल्लू, गृध्र, भालू, रीछ ।
दीर्घदृष्टि (वि०)—जिस की लम्बी नज़र हो, पण्डित ।
दीर्घनाद (पु०)—कुत्ता, मुर्ग़ा ।
दीर्घनिद्रा (स्त्री०)—लम्बी नींद अर्थात् मृत्यु ।
दीर्घपर्व (पु०)—गन्ना, ऊख ।
दीर्घपाद (पु०)—बगुला, सारस, खजूर का वृक्ष ।
दीर्घपृष्ठ (पु०)—सर्प, साप ।
दीर्घप्रज्ञ (वि०)—चतुर, दीर्घदर्शी, दूर की सोचने वाला ।
दीर्घमारुत (पु०)—हाथी, हस्ती ।
दीर्घरङ्गा (स्त्री०)—हरिद्रा, हल्दी ।
दीर्घरत (पु०)—कुत्ता, कुक्कुर ।
दीर्घरसन (पु० —सर्प, साप ।
दीर्घरोम[न्] (पु०)—भालू, रीछ ।
दीर्घवक्त्र (पु०)—हाथी, हस्ती ।
दीर्घसत्र (न०)—चिरकाल में समाप्त होने वाला यज्ञ ।
दीर्घसुरत (पु०)—कुत्ता, कुक्कुर ।
दीर्घसूत्र-सूत्री (वि०)—सुस्ती से काम करने वाला, ढील से काम करने वाला ।
दीर्घायुष्य (पु०)—बहुत बड़ी उम्र वाला, मार्कण्डेय ।
दीर्घायुस् (पु०)—दीर्घजीवी, बहुत दिन तक जीने वाला, सेमल का वृक्ष ।
दीर्घिका (स्त्री०)—बड़े फैलाव का जलाशय, बावड़ी ।

दीर्ण (वि०)—फटा हुआ, डरा हुआ, विदारित ।
दु (५ प०)—जलाना, तपाना, दु:ख देना ।
दु:ख् (१०उ०)—दु:ख देना, कष्ट पहुंचाना ।
दु:ख (न०)—कष्ट, दिल की बेचैनी, पीड़ा, तकलीफ़ ।
दु:खकर (वि०)—दु:खदायक, कष्टकर ।
दु:खत्रय (न०)—आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक नामक तीन प्रकार के दु:ख ।
दु:खप्राय-बहुल (वि०)—कष्टों से भरा हुआ ।
दु:खित (वि०)—कष्टग्रस्त, रंजीदा, कष्ट में फंसा हुआ ।
दु:खी [न्] (वि०)—पूर्ववत् ।
दु:शासन (पु०)—जो कठिनता से शासित किया जाय, धृतराष्ट्र-पुत्र दुर्योधन का छोटा भाई ।
दु:सह (वि०)—असहनीय, कष्ट से सहन करने योग्य ।
दु:स्थित (वि०)—बेचारा, दु:ख में पड़ा हुआ ।
दु:स्पर्श(पु०)—आकाशबेल,कटिआरी ।
दुकूल (न०)—रेशमी कपड़ा, महीन कपड़ा, दुपट्टा ।
दुग्ध (न०)—दूध । वि०—दुहा हुआ, निकाला हुआ ।
दुण्डुक (वि०)—बेईमान, छलिया, कपटी ।
दुन्दुभि (पु०)—बड़ा ढोल, नक़्क़ारा, नौबत, एक दैत्य, एक राक्षस, विष, ज़हर । स्त्री०—पांसा ।

दुन्दुमा (स्त्री०)–ढोल या नक्कारे की आवाज़।

दुन्दुमार (पु०)–घर का धुआं, बिल्ली, कीटविशेष।

दुर् [स्] (अ०)–यह उपसर्ग बुरा, कुत्सित, कठोर, कष्टसाध्य आदि अर्थों में कुछ शब्दों के पूर्व लगाया जाता है।

दुरक्ष (वि०)–जिसकी चक्षु कमजोर हों। पु०–छलयुक्तद्यूतक्रीडा।

दुरतिक्राम्य (वि०)–जो कठिनता से पार किया जा सके।

दुरत्यय (वि०)–दुरतिक्रमणीय, दुस्तर, कष्टसाध्य।

दुरदृष्ट (न०)–दुर्भाग्य, बदक़िस्मती।

दुरधिगम (वि०)–जो कठिनता से प्राप्त हो सके, दुष्प्राप्य।

दुरधिष्ठित (वि०)–बुरी तरह किया हुआ।

दुरध्व (पु०)–कुमार्ग, बुरा रास्ता।

दुरन्त (वि०)–जिस का फल बुरा हो, जिस का अन्त दूर हो, अनन्त, असीम।

दुरभिग्रह (वि०)–जो मुश्किल से पकड़ा जा सके।

दुरभिप्राय (पु०)–बुरा इरादा।

दुरवगम (वि०)–जो कठिनता से समझ में आवे।

दुरवबोध (वि०)–न समझने योग्य।

दुरवस्था (वि०)–बुरी हालत, अधोगति, गिरावट।

दुराकृति (वि०)–बदशक्ल, कुरूप।

दुराक्रन्द (वि०)–ज़ार २ रोने वाला।

दुराग्रह (पु०)–हठ, अपनी बात पर ही डटे रहना।

दुराचार (पु०)–बुरा आचरण, व्यभिचार, बदचलनी।

दुरात्मता (स्त्री०)–क्रूरता, कमीनापन।

दुरात्मा [न्] (वि०)–दुष्प्रवृत्ति, क्रूर, कुटिल, कमीना, नीच।

दुराधर्ष (वि०)–जिसपर आसानी से आक्रमण नहीं हो सकता, मग़रूर, घमण्डी। पु०–सफ़ेद सरसों।

दुराप (वि०)–दुष्प्राप्य।

दुरारोह (वि०)–जिस पर कठिनता से चढ़ा जावे, नारियल, खजूर।

दुरालाप (पु०)–शाप, कुत्सित वचन, कुवाणी।

दुराशय (वि०)–दुरात्मा, क्रूर।

दुराशा (स्त्री०)–बुरी इच्छा, निराशा, आशा के विरुद्ध आशा करना।

दुरासद (वि०)–जिस के पास पहुंचना कठिन है, दुर्धर्ष, दुर्गम्य।

दुरित (वि०)–कठिन, पापयुक्त। न०–पाप, अपराध, बुरा काम।

दुरिष्ट (न०)–शाप, बद्दुआ।

दुरुक्त (वि०)–बुरा कहा गया। न०–शाप लानत।

दुरुच्छेद (वि०)–जिसका नाश कठिनता से किया जा सके।

दुरुत्तर (वि०)–दुस्तर, लाजवाब।

दुरूह (वि०)–दुर्विज्ञेय, जो दु:ख से ख्याल में लाया जा सके।

दुरेषणा (स्त्री०)–कुत्सित इच्छा।

दुर्ग (वि०)--कष्टसाध्य, दुर्धर्ष,दुष्प्राप्य अस्त्री०--किला, घाटी, मुसीबत, ख़तरा, विषमभूमि।

दुर्गत (वि०)--निर्धन, मुसीबत में फसा हुआ, हतभाग्य।

दुर्गतता (स्त्री०)--दुर्गति, मुसीबत।

दुर्गति (स्त्री०)--निर्धनता, बुरी हालत, मुसीबत,नरक,बुरा मार्ग।

दुर्गन्ध (वि०)--बुरी गन्ध वाला। पु०-बुरी गन्ध, प्याज़, बदबू।

दुर्गपाल-रक्षक-अध्यक्ष (पु०)--क़िलेदार, क़िले का रक्षक।

दुर्गम (वि०)--दुर्धर्ष,दुष्प्राप्य, दुष्प्रवेशनीय।

दुर्गा (स्त्री०)--शिवपत्नी पार्वती का नाम।

दुर्गानवमी (स्त्री०)--कार्तिक शुक्ला नवमी जिस दिन दुर्गा की पूजा होती है।

दुर्गाष्टमी(स्त्री०)-आश्विनशुक्लाष्टमी

दुर्घट (वि०)--कठिन, कष्टसाध्य, असम्भव।

दुर्घोष (पु०)--कठोर शब्द, ऐसी आवाज़ जो कर्णप्रिय न हो।

दुर्जन (वि०)--कमीना, क्रूर, नीच। पु०-क्रूरजन, बुरा आदमी।

दुर्जय (वि०)--जो जीता न जा सके। पु०--विष्णु।

दुर्जर (वि०)--जो कठिनता से जर्जरित हो, जो मुश्किल से सीर्य हो। स्त्री०-ज्योतिष्मती नामक एक लता।

दुर्जात (न०)--आपत्ति, मुसीबत, व्यसन, अनुचित।

दुर्णामा (वि०)--निन्दित नाम वाला, जिस का बुरा नाम हो।

दुर्दान्त (पु०)--कलह, लड़ाई, कठिनता से रोका गया, शान्तिरहित न०- बछड़ा।

दुर्दिन (न०)--बुरा दिन, वह दिन जिस में मेघों से अन्धकार छाया हुआ हो।

दुर्धर (पु०)--जो कठिनता से धारण किया जाय, जो मुश्किल से भी धारण न किया जा सके अर्थात विष्णु, एक दैत्य।

दुर्बल (वि०)--बुरे बल वाला, कृश, अल्पमांस वाला, कमज़ोर।

दुर्भग (वि०)-बुरे भाग्य वाला, कमबख़्त, थोड़े भाग्य वाला। स्त्री०--वह स्त्री जो अपने पति से प्रेम न करती हो, अभागा।

दुर्भिक्ष (न०)--अकाल, खोटा समय, वह समय जिस में अन्न न मिल सके, क़हत।

दुर्मति (वि०)--दुष्टबुद्धि वाला, मूर्ख, बेवकूफ़। पु०--६० संवत्सरों में से एक, बुरी अक़ल।

दुर्मना [स] (वि०)--वह पुरुष जिसका मन व्याकुल हो, बिगड़े हुए दिल वाला, विमनस्क।

दुर्मुख (वि०)–जिस का मुख बुरा हो, कुत्सितमुख, अश्व, घोड़ा, एक दैत्य, वानर, बन्दर, अप्रियवक्ता, कटुवादी।

दुर्मेधा (वि०)–दुष्ट बुद्धि वाला, मन्दधी, जो सदसत् का विचार नहीं कर सकता।

दुर्योधन (पु०)–राजा धृतराष्ट्र का बड़ा पुत्र। वि०–दुःख से युद्ध करने योग्य।

दुर्लभ (पु०)–कचूर। वि०–दुष्प्राप्य, जिसका मिलना कठिन हो।

दुर्ललित(न०)–बुरी इच्छा, दुश्चेष्टा। वि०–दुष्टआशयवाला, असच्चरित्र।

दुर्व् (१ प०)–मारना, वध करना।

दुर्वर्ण (न०)–बुरा वर्ण। वि०–बुरे रंग वाला, मैला, गन्दा। [दरिद्र।

दुर्विध(वि०)–जिस की हालत बुरी हो,

दुल् (१०उ०)–ऊपर को फेंकना, झुलाना, हिलना। [विशेष।

दुलि-ली(स्त्री०)–कच्छपी। पु०–मुनि-

दुश्चर्मा [न्] (पु०)–वह पुरुष जिस की त्वचा ख़राब हो गई हो।

दुश्च्यवन (वि०)–जिस का पतन कठिनता से हो, जिस पर च्यवन ऋषि कुपित हुआ। पु०–इन्द्र।

दुष् (४प०)–बुरा होना, वैर करना, बदल जाना, विकृत होना।

दुष्कर (वि०)–दुःख से जो किया जावे, कठिन। न०–आकाश।

दुष्कर्म (न०)–पाप, कुत्सित कार्य, बुरा काम। वि०–पापी, पापयुक्त।

दुष्कृत (न०)–पाप, कुत्सित आचरण। वि०–पापी, पापयुक्त।

दुष्ट (न०)–कुष्ठ नामक रोग। वि०–अधम, नीच, बुरा, दुर्बल।

दुष्टचेताः[स्] (वि०)–बुरे चित्त वाला, दुष्टबुद्धि।

दुष्टव्रण(पु०)–एकप्रकार का व्रणरोग।

दुष्टा–ष्टि (स्त्री०)–व्यभिचारिणी स्त्री, बदमाश औरत।

दुष्टात्मा(वि०)–क्रूर, बुरे विचारवाला।

दुष्य[ष्म]न्त (पु०)–एक चन्द्रवंशीय राजा जो कि राजा भरत का पिता और शकुन्तलाका पति था।

दुह् (२प०)–वध करना, मारना। २उ०–दोहना, दूध निकालना।

दुहिता (स्त्री०)–पुत्री, सुता, लड़की।

दुहितुःपति (पु०)–लड़की का पति, दामाद, जामाता।

दुह्य (वि०)–दुहने योग्य, दूध काढ़ने लायक। न०–दूध।

दू (४आ०)–दुःख उठाना, तकलीफ़ भोगना, दुःख पाना।

दूदाश (वि०)–पीड़ा उठाने वाला, दुःख पाने वाला।

दूढ्य(वि०)–अधम, नीच।

दूत-तक(पु०)–क़ासिद, सन्देशहर।

दूतिका-दूती(स्त्री०)–सन्देशा पहुंचाने वाली स्त्री, क़ासिद का काम करने वाली स्त्री।

दूत्य(न०)–दूत का कर्त्तव्यकार्य, दूत की प्रकृति, दूतभाव।

दून (वि०)–श्रान्त, मार्ग के चलने से थका हुआ, दुःखित।

दूर (वि०)-अनिकटवर्त्ती, जो समीप में न हो।

दूरतः(अ०)–दूर से।

दूरदर्शी दृष्टि (पु०)–दूर से ही देखने वाला,अनागत को जानने वाला। पु०–गृद्ध, विद्वान् पुरुष, योगी।

दूरम्(अ०)–दूर, अनिकट ।

दूरमूल(पु०)–मूंज नामक तृणविशेष।

दूरवर्ती(वि०)–दूर रहने वाला,दूरस्थ।

दूरस्थित(वि०)–पूर्ववत्।

दूरात् (अ०)–दूर से।

दूरीकृत(वि०)–दूर किया हुआ,पृथक्-कृत, अलग किया हुआ।

दूरीभू(१ प०)-दूर होना, अलग होना।

दूरीभूत (वि०)--अलग हुआ, दूर हुआ।

दूरे (अ०)–दूर, असमीप।

दूरेण (अ०)–असमीप से, दूर से।

दूर्य (न०)–शठी, कचूर नामक एक ओषधि, मल, विष्ठा।

दूर्वा (स्त्री०)–दूब नामक घास।

दूर्वाकांड (न०)–दूब का समूह।

दूर्वांकुर (पु०)–दूब का अंकुआ।

दूषक (वि०) दोष देने वाला, दूषित करने वाला, लांछन लगाने वाला।

दूषण (न०)–दोष, ऐब, दोष देना, लांछन लगाना। पु०–एक राक्षस जो कि रावण की मौसी का बेटा था और जिसका वर्णन रामायण में आया है।

दूषणारि (पु०)–श्रीरामचन्द्र।

दूषिका (स्त्री०)–आंख का मैल, नेत्र-मल, आंख की कीच।

दूषित (वि०)–शापित, निन्दित, दोषयुक्त।

दूषितकर्म (न०)–बुरा काम, दोष-युक्त काम, नीचकर्म।

दूषिता (न०)–दूषणयुक्ता कन्या, प्रमादवती स्त्री, स्वेदयुक्ता स्त्री।

दूष्य (न०)–वस्त्रनिर्मित घर, तम्बू, खेमा। वि०–दोष देने योग्य, दूषणीय।

दूष्या(स्त्री०)–हाथी की स्त्री सन्तान, हाथी के बांधने की रस्सी।

दृ (१,६ आ०)–आदर करना, सत्कार करना, पूजना, इच्छा करना।

दृक्कर्ण (पु०)–सर्प, सांप [दृक्श्रुति भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।

दृक्क्षय (पु०)–दृष्टि का कम होना, मन्ददृष्टि। [देखना।

दृक्पात (पु०)–नज़र, आंख उठाकर

दृक्प्रिया (स्त्री०)–सौन्दर्य, शोभा।

दृक्छक्ति (स्त्री०)–देखने की ताक़त।

दृग्गोचर(वि०)–प्रत्यक्ष, दिखाई देने वाला।

दृग्जल (न०)–आंसू, नेत्रों का जल।

दृग्विष (पु०)–सर्प, सांप।

दृढ (वि०)–मजबूत, स्थिर, क़ायम, गहन, निश्चल।

दृढकाय (वि०)–मजबूत शरीर वाला।

दृढदंशक (पु०)—नाका, मगर।
दृढधन (वि०)—बुद्धदेव का बोधक।
दृढनिश्चय (वि०)—पक्के इरादे का।
दृढप्रतिज्ञ (वि०)—जो अपनी बात का सच्चा हो, वायदे का पूरा।
दृढभक्ति (वि०)—आसक्त, वफ़ादार।
दृढमति (वि०)—दृढनिश्चय।
दृढमुष्टि (वि०)—जिसकी मुट्ठी पक्की है, कृपण, सूम, कंजूस।
दृढव्रत (वि०)—व्रत पालने में दृढ़, दृढप्रतिज्ञ, नियमपालन में पक्का।
दृढसन्धि (वि०)—पक्के जोड़ वाला।
दृढीकरण (न०)—तसदीक़।
दृत (वि०)—अर्चित, पूजित।
दृता (स्त्री०)—जीरा।
दृति(पु०)—पानी भरने का चमड़े का पात्र, मशक, चमड़ा, मत्स्य।
दृतिहार (पु०)—सक्का, मशक ले जाने वाला।
दृन्दू (पु०)—सर्प, साप, चक्र, वज्र।
दृन्भू (पु०)—सूर्य, सूरज, राजा, यमराज।
दृप् (४प०)—सताना, दुःख देना। १प०, १० उ०—सुलगाना, चमकाना। ४प०—गर्व करना, अहंकारी बनना।
दृप्त (वि०)—मग़रूर, उन्मत्त, उजड्ड।
दृफ् (६प०)—तकलीफ करना, कष्ट उठाना। [गुंथा हुआ।
दृब्ध (वि०)—भयभीत, ख़ौफ़ज़दा,
दृभ् (१० उ०) [दर्भयति,ते]—बांधना, जकड़ना, डरना। ६ प० [दृभति]—गाठना, बांधना।
दृश् (१ प०)—देखना, अवलोकन करना, मुलाक़ात करना, निरीक्षण करना [पश्यति, ददर्श]।
दृग् (स्त्री०)—प्रेक्षण, अवलोकन, नज़र, आंख, २ का अङ्क, ज्ञान। समासान्त में इसका अर्थ 'देखने वाला' होता है।
दृषद् (स्त्री०)—चट्टान, पत्थर, दृषद्।
दृशाध्यक्ष (पु०)—सूर्य, रवि।
दृशा (स्त्री०)—चक्षु, नेत्र, आंख।
दृशान (पु०)—ब्राह्मण, आचार्य। न०—रोशनी, चमक।
दृश्य (न०)—नज़ारा, प्रत्यक्ष वस्तु। वि०—देखने योग्य, क़ाबिलदीद, मनोहर।
दृषद् (स्त्री०)—चट्टान, शिला, बड़ा पर्वत, चक्की का पत्थर।
दृषदुपल (पु०)—चक्की का पाट।
दृषद्वती (स्त्री०)—प्राचीन काल में पञ्चनद प्रदेश में एक नदी जो आर्यावर्त्तकी पूर्वीयसीमा पर थी।
दृष्ट (न०)—प्रेक्षण, अपनी या शत्रु की सेना का भय। वि०—देखा हुआ, अवलोकित, प्रत्यक्ष।
दृष्टकूट (न०)—कठिन प्रश्न, पहेली।
दृष्टपृष्ठ (वि०)—जिसने पीठ दिखा दी हो, रण से भागा हुआ।
दृष्टादृष्ट (वि०)—प्रथम बार ही देखा गया।
दृष्टान्त (अस्त्री०)—उदाहरण, मिसाल।
दृष्टि (स्त्री०)—आंख, चक्षु, नज़र, दर्शन, ज्ञान, बुद्धि, विचार, प्रकाश, २ की संख्या।

दृष्टिक्षेप (पु०)–नजर, अवलोकन।
दृष्टिगोचर (वि०)–दिखलाई देने वाला, प्रत्यक्ष।
दृष्टिपात (पु०)=दृक्पात।
दृष्टिपूत (वि०)–स्वयं देखकर शुद्धता का निश्चय करना। [गाह।
दृष्टिविक्षेप (पु०)–कटाक्ष, तिरछी नि-
दृह् (१ प०)–बढ़ना, बांधना, उन्नति पाना।
दॄ (४ प०)–फाड़ना, दो टूक करना, फूट पड़ना, अलग होना [यह धातु ९ प० भी होती है]।
दे (१ आ०)–रक्षा करना, पालना।
देदीप्यमान (वि०)–अत्यन्त चमकीला, प्रकाशमान।
देव् (१ आ०)–जुआ खेलना, फेंकना, चमकना, खेलना।
देव (पु०)–देवता, अमर, ब्राह्मण, राजा, बादल, मेघ, पारा, बच्चा, पूजनीय पुरुष, परमात्मा, द्यूतक्रीड़ा। वि०–स्वर्गीय, चमकीला, पूजनीय।
देवक (पु०)–देवता, देवकी का पिता, श्रीकृष्ण का नाना। वि०–खिलाड़ी, स्वर्गीय।
दे [दै] वकी (स्त्री०)–राजा देवक की कन्या, वसुदेव की भार्या और श्रीकृष्ण की माता।
देवकीनन्दन (पु०)–श्रीकृष्ण।
देवकुट [ल] (न०) देवालय, मन्दिर।
देवकुल्या (स्त्री०)–आकाशगङ्गा।
देवकुसुम (न०)-लवंग, लौंग।
देवगण (पु०)–देवताओं का समूह।
देवगणिका (स्त्री०)–अप्सरा।
देवगर्जन (न०)–बादलों की गड़गड़ाहट।
देवगिरि (पु०)–एक पर्वत का नाम।
देवगुरु (पु०)–बृहस्पति, कश्यप।
देवगृह (न०)–देवालय, राजमहल।
देवतरु (पु०) वटवृक्ष, कल्पतरु, हरिचन्दनादि स्वर्गीय वृक्ष।
देवता (स्त्री०)–दिव्यगुणयुक्त पुरुष या नैसर्गिक शक्ति, जैसे–विद्युत्।
देवदत्त(पु०)–अर्जुन का शङ्ख, शरीरस्थ एक वायु, बुद्धदेव का अन्यनाम, किसी व्यक्ति का नाम।
देवदारु (अस्त्री०)–देवताओं का प्रिय वृक्ष, अपने नाम से प्रसिद्ध लकड़ी।
देवदासी (स्त्री०)–वाममार्गमत के प्रभाव से पौराणिक मन्दिरों में देवमूर्त्ति के आगे नृत्य करने के लिये कुछ कुमारी कन्यायें रहा करती हैं जो देवदासी नाम से पुकारी जाती हैं।
देवदीप (पु०)–चक्षु, आंख।
देवदूत (पु०)–स्वर्गीय दूत, फरिश्ता।
देवदेव (पु०)–ब्राह्मण, विष्णु, शिव।
देवन (पु०)-पाशा, फांसा। न०–चमक, खेल, क्रीड़ा, क्रीडास्थल, स्पर्धा, स्तुति, दुःख, गति, कमल।
देवनदी (स्त्री०)-पवित्र नदी, गङ्गा।
देवना (स्त्री०)–द्यूतक्रीड़ा, खेल, रञ्ज।
देवनागरी (स्त्री०)–इस लिपि का

भाषा जिसमें संस्कृत लिखी जाती है।
देवनिन्दक(पु०)-नास्तिक,अविश्वासी
देवपति (पु०)-इन्द्र का वाचक ।
देवपथ (पु०)-देवताओं का मार्ग, छायापथ । [अमरावती ।
देवपुरी (स्त्री०)-इन्द्र की राजधानी,
देवप्रतिमा(स्त्री०)-देवता की मूर्ति ।
देवप्रिय (पु०)-शिव, अज, तपस्वी, मूर्ख । [ष्ठाता, पुजारी ।
देवब्राह्मण(पु०)-देवालय का अधि-
देवमणि (पु०)-कौस्तुभमणि, सूर्य, घोड़े की भवाल ।
देवमाता (स्त्री०)-कश्यप की पुत्री अदिति, देवताओं की माता ।
देवयज्ञ (पु०)-अग्निहोत्र, होमयज्ञ, पञ्चमहायज्ञों में से एक ।
देवया-यानी (स्त्री०)-शुक्राचार्य की पुत्री । [शुद्ध ।
देवयु (पु०)-देवता । वि०-पवित्र,
देवयुग(न०)-सत्ययुग, कृतयुग ।
देवयोनि (पु०)-अमानुषीय व्यक्ति, अर्द्धदेवता, गन्धर्व ।
देवर(पु०)-पति का कनिष्ठ या ज्येष्ठ भाई ।
देवराट्-ज (पु०)-देवताओं में राजा अर्थात् इन्द्र, बुद्धदेव का नाम ।
देवरात(पु०)-परीक्षित राजा ।
देवर्षि(पु०)-मन्त्रद्रष्टा ऋषि ।
देवल (पु०)-नारद देवर, धौम्य ऋषि का बड़ा भाई, देवता के सहारे जीने वाला, पुजारी ।
देवलोक(पु०)-स्वर्ग, बहिश्त ।
देववाणी(स्त्री०) गैब की आवाज़ ।
देववाहन(पु०)-अग्नि ।
देवव्रत (पु०)-इन्द्रियों को जिसने दमन कर लिया है ऐसा पुरुष, भीष्म पितामह । न०-देवता आदि के नाम व्रतानुष्ठान ।
देवशत्रु(पु०)-दैत्य, राक्षस ।
देवसुत(पु०)-नारद, देवता ।
देवसभा (स्त्री०)-सभ्य पुरुषों की समिति, देवताओं का समाज, राजसभा, द्यूतगृह ।
देवसात्(अ०)-देवताओं के अधीन ।
देवसिंह(पु०)-शिव ।
देवसेनापति(पु०)-देवताओं की सेना का अध्यक्ष, स्वामिकार्तिकेय ।
देवस्व(न०)-देवार्पित धन, वह जाय-दाद जो धर्मार्थ मन्दिरों के नाम करदी जाती है ।
देवहूति (स्त्री०)-स्वायम्भुव मनु की कन्या और कर्दम ऋषि की पत्नी ।
देवागार (अस्त्री०)-देवालय ।
देवाङ्गना(स्त्री०)-अप्सरा । [मात्मा ।
देवाधिदेव (पु०)-सर्वोत्तम देव, पर-
देवाजीव(पु०)-पुजारी, देवल ।
देवाभीष्ट (वि०)-जो देवताओं को प्रिय हो । [बकरा ।
देवानाप्रिय (पु०)-मूर्ख, बेवकूफ,
देवापि(पु०)-चन्द्रवंश का एक राजा।
देवार्चना(स्त्री०)-देवता की पूजा ।
देवार्ह (न०)-सुरपर्ण । वि०-देवता के योग्य ।

देवालय(पु०)–स्वर्ग, देवमन्दिर।
देविका(स्त्री०)–धतूरा, एक नदी।
देवी (स्त्री०)–देवता की स्त्री, राजमहिषी, कुलीन स्त्रियों की उपाधि, सरस्वती, सावित्री।
देवृ (पु० –नियुक्त पति, पति का छोटा भाई।
देवेश(पु०)–देवताओं का स्वामी, महादेव, इन्द्र।
देव्य(न०)–देवतापन, स्वर्गीयभाव।
देश (पु०)–स्थान, भूगोल का कोई भाग, मुल्क, प्रान्त, भाग।
देशक(पु०)–शासक, गुरु।
देशकाल (पु०)–स्थान और समय। [यह द्विवचन में प्रयुक्त होता है]
देशकालज्ञ (वि०)–उचितानुचित समय और युक्तायुक्त स्थान का जानने वाला।
देशभाषा(स्त्री०)–मातृभाषा, साधारण बोलचाल।
देशान्तर(न०)–दूसरा देश। [का।
देशान्तरी[न्](पु०)-अजनबी, ग़ैरमुल्क
देशिक(पु०)–गुरु, पथिक, पथप्रदर्शक, उपदेशक।
देशिनी(स्त्री०)–तर्जनी अंगुली।
देशीय (वि०)–स्थानिक, प्रान्तिक, अपने देश का।
देह(अस्त्री०)–शरीर, जिस्म। पु०–लेपन।
देहकोष(पु०)–शरीर का आच्छादन, पर, पंख, चमड़ा आदि।
देहज (पु०)–पुत्र, बेटा।
देहत्याग(पु०)–शरीर का छोड़ना, इच्छाकृत मृत्यु, देहविसर्जन।
देहद(पु०)–पारा।
देहधारक(न०)–अस्थि, हड्डी।
देहधारण (न०)--जीवन, ज़िन्दगी।
देहबन्ध (पु०) -शरीरपिञ्जर।
देहभृत(पु०)--जानदार मनुष्य,जीवन।
देहम्भर(वि०) -पेटू, स्वार्थी।
देहलक्षण(न०)--शरीर पर का तिल।
देहली (स्त्री०)-घर का दरवाज़ा, घर के दरवाज़े की देहल।
देहवान्[वत्] (वि०)--शरीरी। पु०--मनुष्य, आत्मा।
देहसार(पु०)--मज्जा, चर्बी।
देहिनी(स्त्री०)--पृथ्वी, भूमि।
देही[न्](पु०)–जानदार मनुष्य,आत्मा
दै(१ प०)-शुद्ध करना, पवित्र करना, रक्षा करना।
दैत्य(पु०)–दितिपुत्र, असुर, राक्षस।
दैत्या(स्त्री०)–नशीली वस्तु, सुरा।
दैत्यारि(पु०)–देवता, विष्णु।
दैन-निक (वि०)–रोज़ाना, प्रत्येक दिन का। [वेतन।
दैनिकी (स्त्री०)–प्रत्येक दिन का
दैन्य-न (न०)–दीनभाव, दीनता, कंगाली, उदासी।
दैर्घ-र्घ्य(न०)–लम्बाई,उच्चापन,दीर्घता
दैव(न०)–प्रारब्ध,क़िस्मत। पु०–आठ प्रकार के विवाहों में से एक। वि०–देवसम्बन्धी, स्वर्गीय।
दैवक(पु०)–देवता।
दैवकृत(वि०)–प्रारब्धवश, कुदरती।

दैवज्ञ(पु०)–ज्योतिषी, गणक जो ग्रहों को चाल को देखकर शुभाशुभ वर्षों के फल को बतलाता है।
दैवत(न०)–देवता, देवसमूह प्रतिमा, यास्काचार्यकृत निरुक्त के तीसरे काण्ड का नाम। वि०–स्वर्गीय।
दैवत-न्त्र(वि०) भाग्य के अधीन।
दैवदुर्विपाक(पु०) बदकिस्मती, भाग्य हीनता, भाग्यदोष।
दैवपर (वि०)–भाग्य को सर्वोपरि मानने वाला, जो होना है वह होकर रहेगा ऐसा कहने वाला।
दैवयोग(पु०)–सौभाग्य, शुभावसर।
दैवयोगेन-दैवयोगात् (अ०) खुश किस्मतोसे, घटनावश, इत्तफाक से।
दैववाणी (स्त्री०)–आकाशवाणी, सरस्वाणी।
दैवात्(अ०)–अचानक, अकस्मात्।
दैविक(वि०)–स्वर्गीय, देवतासम्बन्धी।
दैशिक(वि०)–स्थानिक, प्रान्तिक, कौमी, समस्त देश से सम्बन्ध रखने वाला। पु०-गुरु, शिक्षक।
दैष्टिक(पु०)-भोगवादी। वि०-भाग्य के आश्रित।
दैहिक(वि०)-शारीरिक, जिस्मानी।
दो(४ प०)–काटना, छेदना।
दो शिखर(न०)–कंधा, स्कन्ध, कंधा।
दोग्धा [ग्धृ] (पु०)–नादान, गूजर, ग्वाल, बछड़ा।
दोघ(पु०)–बछड़ा, वत्स।
दोर(पु०) रस्सी, रज्जु।
दोर्दण्ड(वि०)-मजबूत, शक्तिशाली।
दोर्दण्ड(पु०)–दण्ड के समान हाथ, दण्डहस्त।
दोर्मूल(न०)–भुजा का मूल, कक्ष, कोख।
दोर्युद्ध(न०)–मल्लयुद्ध, बाहुयुद्ध।
दोल (पु०) झूल, झूलना, डोला, दोलयात्रा।
दोला लिका (स्त्री०)–पालकी, डोली, पीनस, झूलना।
दोष(पु०)–ऐब, पाप, गुनाह, दूषण, वैद्यक में वात, पित्त, कफ। न्याय में राग, द्वेष, मोह।
दोष [न] (अस्त्री०)–बाजू, बाहु।
दोषग्राही[न्] (वि०)–दुर्जन।
दोषज्ञ(पु०)–दोषों के जानने वाला, पण्डित, चिकित्सक।
दोषत्रय(न०)–वात, पित्त, कफ नामक तीन दोष।
दोषा(अ०)–रात्रि के समय। स्त्री०–बाजू, बाहु, रात्रि।
दोषाकर(पु०) चन्द्रमा, चाद, दोषों का समूह।
दोषातन (न०)–रात्रि का, रात में होने वाला।
दोषी[न्] (वि०)–अवगुणी, दोषयुक्त। पु०–मुजरिम अपराधी।
दोस्(अस्त्री०)–बाहु, भुजा, किसी क्षेत्र की भुजा।
दोह(पु०)-दुग्ध, दूध, दुहने का बर्तन।
दोहद(अस्त्री०)–लालसा, गर्भ, गर्भिणी की इच्छा, उत्कटैषणा।
दोहदिनी(स्त्री०)–गर्भिणी, गर्भवती, दो हृदय धारणी।
दोहनी(स्त्री०)–दूध दुहने का पात्र।

दोहल=दोहद ।

दोहा(स्त्री०)-एक प्रकार का मात्रा- [छन्द ।

दौःशील्य (न०)-बुरा स्वभाव, क्रूर-प्रकृति ।

दौत्य(न०)-दूतभाव, दूत का कार्य ।

दौरात्म्य(न०)-क्रूरता, बुरा स्वभाव, बदमाशी ।

दौर्गत्य(न०)-निर्धनता, मुसीबत ।

दौर्ग्य(न०)-कठिनता, मुश्किल ।

दौर्जन्य(न०)-शठता, क्रूरता ।

दौर्बल्य(न०)-कमज़ोरी,पौरुषहीनता।

दौर्भाग्य (न०)-बदक़िस्मती ।

दौर्मनस्य (न०)-मानसिक कष्ट, उदासी, निराशा । [मिलना ।

दौर्लभ्य (न०)-दुष्प्राप्ति, अभाव, न

दौहृद(न०)-गर्भता, गर्भ, इच्छा ।

दौवारिक(पु०)--द्वारपाल, द्वाररक्षक।

दौष्कुल (वि०)-नीचकुलोत्पन्न ।

दौहित्र(पु०)-पुत्री का पुत्र, धेवता ।

दौहित्री(स्त्री०)-धेवती,पुत्री की पुत्री।

दौहृदिनी (स्त्री०)-गर्भवती स्त्री ।

द्यु (२प०)-आक्रमण करना, हमला करना ।

द्यु (न०)-दिन, आकाश, चमक, तेज़ी, स्वर्ग । पु०-अग्नि ।

द्युचर (पु०)-आकाशग्रह, पक्षी ।

द्युत (१ आ०) [द्योतते]-चमकना, दीप्तिमान् होना । पु०-प्रकाश की किरण ।

द्युति-ती (स्त्री०)-चमक, शोभा, कान्ति, प्रकाश ।

द्युपति (पु०)-सूर्य, इन्द्र ।

द्युलोक (पु०)-स्वर्गलोक ।

द्युम्न (न०)-धन, दौलत, बल,ज़ोर, शक्ति, शोभा ।

द्यूत (अस्त्री०)-छल, जुआ, खेल, पासे का खेल, ठगी ।

द्यूतकर (पु०)-जुआरी [द्यूतकृत् का भी यही अर्थ है]।

द्यूतक्रीडा (स्त्री०)-जुए का खेल।

द्यूतवृत्ति (पु०)-पेशेवरजुआरी,द्यूत-गृह का अध्यक्ष ।

द्यो (स्त्री०)-आकाश, बहिश्त, आसमान ।

द्योत (पु०)-प्रकाश, रोशनी, चमक, धूप, गर्मी ।

द्योतक (वि०)-प्रकाशक, प्रकट करने वाला, चमकाने वाला ।

द्योतन (पु०)-लैम्प, चिराग़ । न०-चमक, प्रकाश, व्याख्या, दृष्टि, उषाकाल ।

द्रक्षण (न०)-माप,परिमाण,१तोला ।

द्रम्(१प०)-इधर उधर जाना,दौड़ना ।

द्रव (वि०)-बहता हुआ[पदार्थ] रस, टपकने वाला, वेगयुक्त, पिघला हुआ । पु०-गति, सैर, टपकना, खेल, रस ।

द्रवण (न०)-दौड़ना,टपकना, चूना ।

द्रवद्रव्य (न०)-बहने वाला पदार्थ।

द्रवन्ती (स्त्री०)-शतमूलिका, नदी, मूषकपर्णी ।

द्रविड (पु०)-दक्षिण में एक देश [यह शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होता है]।

द्रविण (न०)-धन, दौलत, सम्पत्ति, स्वर्ण, शक्ति, ताक़त,इच्छा ।

द्रव्य (न०)-चीज, वस्तु, लज्जा, पीतल, लेपन, मलहम, सार, गोंद ।
द्रव्यमय(वि०)-सम्पत्ति वाला, प्राकृतिक
द्रव्यसिद्धि (स्त्री०)-धनप्राप्ति ।
द्रष्टव्य (वि०)-प्रत्यक्ष, देखने योग्य, सुन्दर, प्रियदर्शन ।
द्रष्टा [ष्टृ] (पु०)-ऋषि, परीक्षक ।
द्रा (२ प०)-सोना, भागना, अर्धनिन्द्रा होना ।
द्राक् (अ०)-तेज़ी से, फौरन, तुरन्त।
द्राक्षा (स्त्री०)-अंगूर, किशमिस, अंगूर की बेल ।
द्राक्षारिष्ट (न०)-एक प्रकार का पौष्टिक अरिष्ट जिस में अंगूर विशेष होते हैं ।
द्रांक्ष् (१ प०)-इच्छा करना, चाहना
द्राप (पु०)-सर्प, आकाश, मूर्ख, कीचड़ ।
द्रामिल (पु०)--चाणक्य का नाम ।
द्राव(पु०)--तेजी, भागना, गर्मी, बहना।
द्रावक (पु०)--चन्द्रकान्तमणि, चोर, जार । न०--मोम ।
द्राविड़(पु०)-द्रविड़ देश का निवासी, दक्षिण देश का ब्राह्मण ।
द्राविड़ी (स्त्री०)--इलायची ।
द्रु (१ प०) [द्रवति]-बहना, दौड़ना, पिघलना, जाना ।
द्रुह् (१, ६ प०)-घूमना, नष्ट होना ।
द्रुण (न०)-कमान, तलवार, बिच्छू, बदमाश, मधुमक्खी ।
द्रुत (पु०)-बिल्ली, वृक्ष, बिच्छू । वि० तीव्र, तेज़, दौड़ा हुआ, गला हुआ।
द्रुतम् (अ०)-तेज़ी से, फौरन, अविलम्बेन ।
द्रुतविलम्बित (न०)-एक छन्द का नाम
द्रुपद (पु०)-पञ्चाल देश के एक राजा का नाम, द्रौपदी का पिता
द्रुम (पु०)-पेड़, वृक्ष, दरख्त, कुबेर, स्वर्ग ।
द्रुमारि (पु०)-हाथी, हस्ती ।
द्रुह् (४प०)-द्रोह करना, ईर्षा करना, हानि पहुंचाना ।
द्रुह (पु०)-पुत्र, सन्तान, झील ।
द्रुहिण (पु,०प०)-ब्रह्मा, शिव, विष्णु ।
द्रू (पु०)-मारना, नुकसान पहुंचाना । पु० स्वर्ण, सोना ।
द्रूण (पु०)-बिच्छू । न०--धनुष, कमान
द्रेक्(१आ०)-शब्द करना, हर्षित होना।
द्रै(१ प०) [द्रायति]-सोना ।
द्रोण (पु०)-कौरव पाण्डवों के आचार्य का नाम, बिच्छू, वृक्ष, बादल, एक कौवा, ३४ सेर का परिमाण, ऐसा जलाशय जो ८०० सौ गज लम्बा हो ।
द्रोणि--णी--(स्त्री०)-एक देश, एक नदी, नील का वृक्ष, एक पर्वत ।
द्रोह(पु०)-ईर्षा, द्वेष, कलह, दुश्मनी।
द्रौणायण द्रौणायणि (पु०)--अश्वत्थामा का वाचक ।
द्रौपदी(स्त्री०)--पञ्चाल देश के राजा की कन्या जिस का विवाह अर्जुन के साथ हुआ था, भारतवर्ष की ५ प्रसिद्ध सती स्त्रियोंमें से एक ।
द्वन्द्व(न०)--जोड़ा ।
द्वन्द्व(पु०)- एक समास का नाम, एक

रोग। न०--जोड़ा, दो विरुद्ध वस्तुओं का मेल जैसे सुख दुःख, शीत उष्ण, झगड़ा लड़ाई, मल्लयुद्ध, सन्देह, रहस्य।

द्वन्द्वभाव(पु०)--पारस्परिक कलह, दुश्मनी। [की लड़ाई।

द्वन्द्वयुद्ध (न०)--मल्लयुद्ध, दो मनुष्यों

द्वय(वि०)--दुगना, डबल। न०--जोड़ा, द्विविधा।

द्वाचत्वारिंशत्(स्त्री०)--४२ का वाचक।

द्वाज (वि०)--दो से उत्पन्न।

द्वात्रिंशत्(वि०)--३२ की संख्या का वाचक।

द्वादश(वि०)--१२ का वाचक।

द्वादशकर(पु०)--जिस के १२ हाथ हों, कार्त्तिकेय या बृहस्पति।

द्वादशांगुल (पु०)--बारह अंगुल की माप, एक बालिश्त।

द्वापर(अस्त्री०)--तीसरा युग, सन्देह, अनिश्चितता।

द्वामुष्यायण(पु०)--गौतम ऋषि।

द्वार् (अस्त्री०)--दरवाजा, उपाय, मार्ग, वसीला, तदबीज़।

द्वार(न० --पूर्ववत्।

द्वारकण्टक(पु०)-दरवाज़े की चटखनी।

द्वारपाल(पु०)--दरबान।

द्वारयन्त्र(न०)--ताला।

द्वारस्थ(पु०)--द्वारपाल, द्वाररक्षक।

द्वार[रि] का (स्त्री०)--गुजरात प्रदेश के पश्चिमीय किनारे पर श्रीकृष्ण जी की प्राचीन राजधानी।

द्वारकानाथ-पति(पु०)--श्रीकृष्ण।

द्वारा (अ०)--वज़रिये, मार्फ़त।

द्वाविंशति(स्त्री०)--२२ बाईस।

द्वि (वि०)--२ की संख्या, दोनों।

द्विक (वि०)--दुगना, दूसरा।

द्विककुद्(पु०)--ऊंट, उष्ट्र।

द्विगुण (वि०)--द्विगुणा, २ से गुणा किया गया।

द्विगुणित(वि०)--पूर्ववत्।

द्विज (पु०)--जिस का दोबारा जन्म हुआ हो अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जिन का उपनयन के पश्चात् दूसरा जन्म हुआ कहा जाता है, दन्त, घोंसला, पक्षी, सर्प।

द्विजन्मा [न्] (पु०)=द्विज।

द्विजराज (पु०)--द्विजों का राजा, चन्द्रमा, चांद, गरुड़।

द्विजवर(पु०)-द्विजों में श्रेष्ठ अर्थात् ब्राह्मण, विप्र।

द्विजाति(पु०)--जिस के दो जन्म हों अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य।

द्विजिह्व (पु०)--सर्प, सांप, दो जीभ वाला, खल, कपटी, चोर।

द्वितय(वि०)--दो की संख्या वाला। न०--जोड़ा।

द्वितीय (वि०)--दूसरा। पु०--साथी, मित्र, शरीक़, दूसरा पुत्र।

द्वितीया (स्त्री०)--कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष की दूसरी तिथि, दोयज, भार्या, संगिनी। [द्विगुणापन।

द्वित्व (न०)--जोड़ा, दो का अङ्क,

द्विदत् (वि०)--जो दो दांतों से पहिचाना जाय जैसे बैल आदि।

द्विधा (अ०)–दो प्रकार से, दो तरह ।
द्विप (पु०)–हाथी, हस्ती । [महीना ।
द्विपक्ष (पु०)–पक्षी, परिन्द, मास,
द्विपद्(पु०)–मनुष्य,देवता,पक्षी,राशि।
द्विपाद (पु०)–पूर्ववत ।
द्विमातृक (पु०)-जिस के दो माता हों, गणेश, जरासन्ध ।
द्विरद(पु०)–हस्ती,हाथी,दोदांत वाला
द्विरसन (पु०)–सर्प, सांप ।
द्विरागमन (न०)–विवाह के पश्चात् लड़की का फिर आना, मुकलावा, गौना ।
द्विरात्र (न०)–दो रात्रि ।
द्विरुक्त (वि०)–दो बार कहा हुआ ।
द्विरेफ (पु०)–भ्रमर, भौंरा ।
द्विवचन (न०)–व्याकरण में दो का बोध कराने वाले शब्द का रूप ।
द्विविध (वि०)–दो प्रकार का ।
द्विशत (नं०)–२०० दोसौ, १०२ ।
द्विष् (२ आ०)–द्वेष करना,वैर करना नफरत करना । वि०–द्वेषी, नफरत करने वाला । पु०–शत्रु, दुश्मन ।
द्विष (पु०)–शत्रु, दुश्मन ।
द्विषत (पु०)=पूर्ववत । [वाला ।
द्विषन्तप (वि०)–शत्रु का मर्दन करने
द्विष्ट (न०)–ताम्र, तांबा, ताम्रधातु । वि०–द्वेषयुक्त ।
द्विस् (अ०)–दो बार ।
द्विसप्तति (स्त्री०)–७२ बहत्तर ।
द्विसप्ताह (पु०)–पखवाड़ा ।
द्विसमत्रिभुज (पु०)–ऐसा त्रिभुज जिस की दो भुजाएं बराबर हों ।
द्विहन् (पु०)–हस्ती, हाथी ।
द्विहायन (वि०)–दो वर्ष का ।
द्विहृदया(स्त्री०)–जिसके दो हृदय हों, गर्भवती स्त्री ।
द्वीप (अस्त्री०)–टापू, भूमि का वह भाग जिस के चारों ओर पानी हो, जज़ीरा, चीते का चमड़ा, द्विवर्ण, वाघ ।
द्वीपवान् [वत] (पु०)–सागर, नदी ।
द्वीपी [न्] (पु०)–जिसका चमड़ा दुरंगा हो अर्थात चीता, बाघ ।
द्वीप्य(पु०)–टापू में रहने वाला,व्यास-देव, रुद्र का वाचक ।
द्वेधा (अ०)–दो प्रकार से, द्विगुणा ।
द्वेष (पु०)–नफरत, घृणा, शत्रुता, ईर्ष्या ।
द्वेषण(पु०)–शत्रु । न०–घृणा,नफरत । वि०–घृणा करने वाला ।
द्वेषी [न्] (पु०)–द्वेष करने वाला, नाश करने वाला । [नफरत ।
द्वेष्य (वि०)–घृणास्पद, क़ाबिले
द्वैगुणिक (पु०)–सूदखोर, व्याज पर व्याज लेने वाला ।
द्वैत (न०)–२ की संख्या, दो प्रकार का भेद, एक वचन का नाम, दो वस्तुओं को अनादि मानने का सिद्धान्त अर्थात् ब्रह्म और जीव अनादि, अनन्त और एक

दूसरे से भिन्न हैं।
द्वैतवादी [न्] (पु०)–द्वैत के सिद्धान्त को मानने वाला।
द्वैध(वि०)–द्विगुणा। न०–२ की संख्या, दो हिस्सों में बटवारा, फ़र्क़, विरोध, सन्देह।
द्वैधीभाव (पु०)–अनिश्चयता, संशयाक्रान्त होना, पहेली।
द्वैप (वि०)–टापू में रहने वाला, चीते के चमड़े का बना हुआ। न०–चीते का चमड़ा।
द्वैपायन (पु०)–द्वीप में उत्पन्न होने से वेदव्यास का नाम।
द्वैमातुर–इक (पु०)-गणेश, जरासन्ध
द्वैवार्षिक (वि०)–दो वर्ष में होने वाला, दोसाला।
द्वैहायन (न०)–दो वर्ष का काल।

ध

ध–तवर्ग का चतुर्थ अक्षर। न०–धन, सम्पत्ति। पु०–कुबेर, ब्रह्मा, धर्म। [करना।
धक्क् (१० उ०)–नष्ट करना, बरबाद
धट(पु०)–तराज़ू, तुला, सातवीं राशि।
धटक (पु०)-४२ रत्ती का एक परिमाण होता है।
धटिका-धटी (स्त्री०)–धोती, कमर में बांधने का कपड़ा, कटिवस्त्र।
धण्(१ प०)–आवाज़ करना।
धत्तूर-क(पु०)–धतूरा नामक वृक्ष।
धन् (२ प०)–आवाज़ करना।
धन(न०)–सम्पत्ति, दौलत, रुपया, कोष, कोई बहुमूल्य वस्तु, पूंजी, लूट का माल, पारितोषिक, धनिष्ठा राशि, संकगणित में जमा का निशान।
धनक (पु०)–लालची, गृध्नु।
धनकाम (वि०)–पूर्ववत्।
धनकेलि(पु०)–कुबेर का वाचक।
धनक्षय(पु०)–सम्पत्ति का नाश।
धनगर्वित(वि०)–धन के कारण मग़रूर
धनञ्जय(पु०)–धन को जीतने वाला, अर्जुन, अग्नि, हाथी, एक वायु, एक वृक्ष।
धनद(पु०)–धन की रक्षा करने वाला, कुबेर, उदारमनुष्य, हिज्जल वृक्ष।
धनदण्ड(पु०)–जुर्माना।
धनदायी [न्] (पु०)–अग्नि, आग।
धनधानी(स्त्री०)–कोष, ख़ज़ाना।
धनपति(पु०)–कुबेर, कोषाध्यक्ष।
धनपाल(पु०)–पूर्ववत्।
धनवान्[वत्](वि०)-धनवाला, अमीर।
धनहर(पु०)–वारिस, चोर।
धनहीन(वि०)–ग़रीब, सम्पत्तिरहित।
धनापहार(पु०)–जुर्माना, लूट।
धनिक(वि०)–अमीर, धनवान्, नेक। पु०–धनी पुरुष, साहूकार, बैंकर।
धनिष्ठ(वि०)–बहुत अमीर।
धनिष्ठा(स्त्री०)–२३वां नक्षत्र।
धनी [न्] (पु०)–साहूकार।
धनु (पु०)–कमान, चार हस्त का परिमाण, धनुर्धारी।

धनुर्गुण(पु०)–मौर्वी,धनुष् का चिल्ला।
धनुर्ग्रह-ग्राह(पु०)–धनुर्धारी,तीरंदाज
धनुर्ज्या(स्त्री०)–चिल्ला, मौर्वी ।
धनुर्धर–र्भृत(पु०)–धनुर्धारी,तीरंदाज।
धनुर्विद्या(स्त्री०)–शस्त्रास्त्रविद्या ।
धनुर्वेद(पु०)– चार उपवेदों में से एक जिस में शस्त्रास्त्रविद्या का वर्णन है ।
धनुष्क (पु०)–तीरंदाज, तीर चलाने वाला ।
धनुष्पाणि (वि०)–जिस के हाथ में कमान हो । [धनुर्धर ।
धनुष्मान् [मत्] (पु०)–तीरंदाज,
धनुष्(न०)–कमान, वृत्तांश, चार हस्त का परिमाण, जंगल ।
धनू (स्त्री०)–कमान । पु०-खत्ती, अनाज की खत्ती,अनाजका ढेर।
धन्य (वि०)–अमीर, खुशकिस्मत, प्रसन्न, नेक, अच्छा, कृतार्थ, सराहने लायक,पुण्यशील । न०–दौलत, कोष, अश्वकर्ण का वृक्ष।
धन्याक (न०)–धनिया, धनिया का वृक्ष ।
धन्वन्(अस्त्री०)–आकाश, मरुभूमि, जंगल, किनारा, सहरा ।
धन्वन्तरि(पु०)–एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जो आयुर्वेद का प्रणेता है।
धन्वयवास (पु०)–जवासा नामक औषधी ।
धन्वा [न्] (पु०)=धन्वन् ।
धन्वन (पु०)–शूकर, सूअर ।
धन्वी[न्](पु०)–धनुर्धारी,तीरन्दाज, अर्जुन । न०-अर्जुन नामक एक वृक्ष । [ना ।
धम्(इप०)–शब्द करना, आवाज कर-
धम–क (पु०)–लुहार,अयस्कार,स्वर्णकार ।
धमन (पु०)–नल, लुहार,क्रूर ।
धमनि–नी (स्त्री०)–नाड़ी, नब्ज, ग्रीवा, नाड़, हल्दी, धौंकनी ।
धम्मिल (पु०)–सयत तथा पुष्पादि रचना से विभूषित केश, बधे हुए बाल, रत्नजटित बालों का जूड़ा ।
धर (पु०)–पर्वत, पहाड़, आठ वसुओं में से एक, कपास का सूत्र, धागा ।
धरण (पु०)–एक पर्वत, सूर्य, सूरज, चौबीस या दश रत्ती का परिमाण, धान्य, लोक, सेतु,पुल ।
धरणि (स्त्री०)–भूमि, पृथिवी ।
धरणी (स्त्री०)–भूमि, पृथ्वी, जमीन।
धरणीकीलक (पु०)–पर्वत, पहाड़ ।
धरणीधर (पु०)–विष्णु, पर्वत, कच्छपावतार ।
धरणीपूर (पु०)–समुद्र ।
धरणीसुता(स्त्री०)–सीता, जनकपुत्री।
धरा (स्त्री०)–भूमि, पृथ्वी, गर्भाशय, जरायु, जेल, नाड़ीभेद ।
धरात्मज (पु०)–मंगलग्रह, भूमिपुत्र।
धराधर (पु०)–विष्णु, पर्वत ।
धरामर (पु०)–ब्राह्मण, पृथ्वीके देव। [भूदेव, भूसुर आदि शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।]
धरित्री(स्त्री०)-भूमि, पृथ्वी, जमीन।

धरिमा[न्] (पु०)–तुला, तराजू।
धरुण (पु०)–ब्रह्मा, स्वर्ग, जल, पानी।
धर्तव्य (वि०)–धारण करने योग्य, धारणीय, स्थापनीय।
धर्त्र (न०)–यज्ञ, गृहधर्म।
धर्म (अस्त्री०)–श्रुतिस्मृति-प्रतिपादित कर्म, कर्म से उत्पन्न हुआ शुभाऽशुभ फल वा अदृष्ट, आत्मा, स्वभाव, जीव, उपमा, मिसाल, यमराज, लग्न से ९ वां स्थान, सत्प्रकृति, दान, पुण्य।
धर्मकर्म[न्] (न०)–धर्मार्थ काम, धर्मकार्य।
धर्मकाय (पु०)–बुद्ध का बोधक।
धर्मकील (पु०)–शासन, शिला, राजशासन, राजा की शिला।
धर्मक्षेत्र (न०)–धर्म का क्षेत्र अर्थात् कुरुक्षेत्र जहां पर कौरव और पाण्डवों के बीच महाभारतोपवर्णित घोर युद्ध हुआ था।
धर्मचारिणी (स्त्री०)–वेदविहित दाम्पत्यधर्म का आचरण करने वाली, धर्मपत्नी, भार्या।
धर्मदान (न०)–धर्मार्थ दान अर्थात् वह दान जो किसी भी स्वार्थ को लक्ष्य में न रखकर सुपात्र को दिया जाय।
धर्मद्रवी (स्त्री०)–गङ्गा, देवनदी।
धर्मध्वजी [न्] (वि०)–आजीविकार्थ जटादि धर्म के कपटवेष धारण करने वाला, छद्मवेषी।
धर्मपत्तन (न०)–मरिच, मिर्च।
धर्मपत्नी (स्त्री०)–धर्मकरणार्थ विवाहित सवर्णा भार्या, पूर्वविवाहिता अपने वर्ण की स्त्री, वाणी, कीर्ति, यश, स्मरणशक्ति, क्षान्ति, धृति।
धर्मपुत्र (पु०)-धर्मराज का पुत्र, पाण्डु का ज्येष्ठपुत्र राजा युधिष्ठिर।
धर्ममूल(न०)–पुण्य की जड़, धर्मसनादृष्ट कारण।
धर्मयुक् [ज्] (वि०)–धर्म को धारण करने वाला, धार्मिक पुरुष।
धर्मराज (पु० –यमराज, युधिष्ठिर।
धर्मलक्षण (न०)–धर्म के लक्षण जो कि मनुप्रतिपादित १० हैं, यथा–धृति, क्षमा, दम, चोरी न करना, शौच, इन्द्रियों का निरोध, धी, विद्या, सत्य और क्रोधाभाव।
धर्मवान् [वत्] (वि०)–धार्मिक पुरुष।
धर्मवासर (पु०)–धर्माचरणार्थ दिन, पौर्णमासी।
धर्मवैतंसिक (पु०)–वह पुरुष कि जो पापकर्म से धनोपार्जन कर अपने को धर्मात्मा प्रकट करने के लिये दान करे अर्थात् कपटाचारी।
धर्मशास्त्र (न०)–वह शास्त्र जो धर्म का प्रतिपादन करे जैसे मनुस्मृति आदि।
धर्मशील (वि०)–धर्मानुष्ठान करने वाला, जिस का स्वभाव धर्म करने का हो।
धर्मसंस्थापन (न०)–अधर्म को दूर

कारके वेदोक्तधर्म को नियत करना, धर्म की स्थापना ।

धर्मसंहिता (स्त्री०)–धर्म की स्थिति के लिये निर्माण किये हुए मनुस्मृति आदि शास्त्र अर्थात् धर्मप्रतिपादक मन्वादिशास्त्र ।

धर्मात्मा [न्] (पु०)–वह पुरुष जिसने अपने चित्त को धर्मकार्य में लगा रक्खा हो धर्मशील ।

धर्माधिकरण (पु०)–ऐसा पुरुष जिसे धर्माधिकार प्राप्त हो गया हो, धर्माध्यक्ष । न०–धर्मशास्त्रानुकूल नीति के विचार करने का स्थान अर्थात् कचहरी ।

धर्माध्यक्ष (पु०)–धर्माधिकारी, धर्म का द्रष्टा, परमेश्वर ।

धर्माभास(पु०)–जो वास्तव में धर्म न हो और धर्म से सदृश प्रतीत होता हो, श्रुतिस्मृति के प्रतिकूल धर्म ।

धर्मासन (न०)–व्यावहारिक कार्यसाधन के लिये आसन, विचारासन, बेन्च, नीति की कुरसी ।

धर्मिणी(स्त्री०)–धर्मवतीस्त्री,रेणुका ।

धर्मिष्ठ (वि०)–अतिशय धर्मशील, विशेप रूप से धर्म का धारण करने वाला,धर्मशील, पुण्यात्मा,साधु ।

धर्मी[न्] (वि०)–धर्म का धारण करने वाला, धर्मयुक्त, पुण्यात्मा ।

धर्म्य(वि०)–धर्म से मिश्रित, धर्म से प्राप्य, धर्म से अपृथक्, धर्म से लाभ सम्पादन करने वाला ।

धर्म्यविवाह(पु०)–धर्म के विचारपूर्वक हुआ विवाह, विवाहविशेष ।

धर्ष(पु०)–प्रगल्भता, चातुर्य, चतुराई, शक्तिबन्धन, सानुभूति, मारना, अनादर करना, अमर्ष,न सहना ।

धर्षकारिणी(स्त्री०)–वह कन्या जिस ने अपने कुत्सिताचरण से कुल को दूषित कर दिया हो दूषिता कन्या ।

धर्षण(न०)–अनादर, तिरस्कार, बेइज्जत करना, परिभव ।

धर्षणी(स्त्री०)–असती स्त्री ।

धर्षिणी(स्त्री०)–पुंश्चली, व्यभिचारिणी, असती स्त्री ।

धर्षित(वि०)–तिरस्कृत, अपमानित, बेइज्जत किया हुआ । न०–मैथुन, स्त्रीसंग, भोग करना ।

धर्षिता(स्त्री०)–असती स्त्री, कुलटा, वह स्त्री जो संगमार्थ अपने प्रिय पुरुषके समीप संकेतस्थान में जाये ।

धव्(१ प०)–जाना, गमन करना ।

धव(पु०)–पति स्वामी, मालिक ।

धवल(पु०)–धव नामक वृक्ष, सुन्दर बैल, चीनदेशोद्भव कर्पूर, श्वेत मिर्च, श्वेत वर्ण । वि०–श्वेतवर्ण वाला, गौरवर्ण के अङ्ग वाला ।

धवला (स्त्री०)–सफेद रंग की गौ, शुक्ला गौ ।

धवलपक्ष(पु०)–वह पक्षी जिस के सफेद पर हों अर्थात् हंस, शुक्लपक्ष ।

धवलमृत्तिका (स्त्री०)–सफेद मिट्टी, खड़िया मिट्टी ।

धवलोत्पल(न०)–श्वेतकमल, कुमुद नामक कमल, वह कमल जो रात्रि में खिलता है ।
धवाणक (पु०)–वायु, वह वायु जो वृक्षादि को कम्पायमान करता है, प्रचण्ड वायु ।
धवित्र(न०)–व्यंजन, पंखा, बीजना ।
धा(३ उ०)–पकड़ना, धारण करना, पालन करना, देना, बढ़ाना, पोषण करना ।
धाक(पु०)–वृष, बैल, आहार, अन्न, स्तम्भ, आधार, सहारा ।
धाटी (स्त्री०)–शत्रु के समीप गमन, अभ्यासादन, शत्रु के सम्मुख प्रपात ।
धातकी(स्त्री०)–पुष्पविशेष, धाय के फूल ।
धाता(पु०)–ब्रह्मा, विष्णु, महादेव ।
धातु(पु०)–शरीरधारक वस्तु, जैसे–वात, पित्त और कफ। रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र ये सात । एवं स्वर्णादि सात धातु । व्याकरण में वह गणपठित शब्द जो क्रिया को द्योतित करे जैसे "भू" आदि ।
धातुघ्न(न०)–जो धातुओं का नाश करे, काञ्जी, काञ्जिक ।
धातुप(पु०)–जो धातुओं का पालन करे, रसविशेष ।
धातुद्रावक(न०)–जो अपने संसर्ग से स्वर्णादि धातुओं को द्रवीभूत करदे अर्थात् सोहागा, सुहागा ।
धातुभृत (पु०)–पर्वत, पहाड़, जो धातुओं को धारण करे, वीर्यवर्द्धक वस्तु ।
धातुमारिणी(स्त्री०)–सुहागा, टंकण, सर्जिका, सज्जी ।
धातुवैरी[न्] (पु०)–स्वर्णादि धातुओं का शत्रु, गन्धक ।
धातुशेखर(पु०)–कासीस, कसीस ।
धातूपल(पु०)–पाषाण, पत्थर ।
धातृपुत्र(पु०) -ब्रह्माका पुत्र, सनत्कुमार
धात्र(न०)--ऐसा पात्र जिसमें अन्नादि रक्खाजाय, पात्र, बर्तन, भाजन ।
धात्री(स्त्री०)–माता, मां, उपमाता, धाय, आंवला ।
धात्रीपुत्र (पु०)–उपमाता का पुत्र, धाय का पुत्र, नट ।
धात्रीफल(न०)--आमलकी, आंवला ।
धात्रेयी(स्त्री०)–दुग्ध पिलाने वाली उपमाता, धाय, छोटी माता ।
धानक(न०)--धनियां, धान्याक ।
धाना(स्त्री०)–भृष्टयव, भुने हुए जौ, सत्तू, धनियां ।
धानी (स्त्री०)–आश्रय, आधार, वह जगह जिस में रह कर प्रजावर्ग का पालन पोषण किया जाता है जैसे-राजधानी, पीलू नामक वृक्ष
धानुष्क(वि०)–धनुर्धर, वह पुरुष जिस का शस्त्र धनुष हो, जिस का आजीवन धनुष पर निर्भर हो ।
धानुष्य (पु०)–धनुष के लिये उपयोगी, वंश, बांस ।
धानेय (न०)–धनियां नामक प्रसिद्ध वस्तु, धान्याक ।

धान्धा (स्त्री०)–वृहद्देला इलायची
धान्य(न०)–धान्याक, धनिया, तुष धावल, चार तिलों की माप।
धान्यकोष्ठक(न०)–धान्यरक्षार्थ गृह, कुठला, कोठी। [त्वचा।
धान्यत्वच् (स्त्री०)–धानों का तुष,
धान्यमाय (पु०)–धानों का विक्रेता, धान्यविक्रयी।
धान्यवीर(पु०)–धानों में वीर सदृश, माष, उड़द।
धान्यराज(पु०)–यव, जौ।
धान्याचल (पु०)–दान करने के लिये धान्यनिर्मितपर्वत, धानों का पहाड़।
धान्यारि(पु०)–मूसा, मूषक।
धान्योत्तम(पु०)–धानों में उत्तम, शालि नामक धान्य।
धाम [न्] (न०)–गृह, घर, शरीर, स्थान, जगह, जन्म, तेज, कान्ति, प्रभाव, चमक, स्वयप्रकाश, खुद रोशन।
धामक(पु०)–एक मापे का परिमाण।
धामनिधि(पु०)–तेजों का घर, सूर्य, आक नामक वृक्ष।
धामनी(स्त्री०)–नाड़ी, नब्ज।
धाय (त्रि०)–धारण करने वाला, धारणकर्त्ता।
धाय्य(पु०)–पुरोहित, कुलपुरोहित।
धाय्या(स्त्री०)–अग्नि में समिधा डालने का मन्त्र, ऋग्वेद का वह मन्त्र जिस से अग्नि प्रज्वलित किया जाता है।
धार (न०)–पात्रस्थित वर्षा का जल, मेह का पानी। पु०–गम्भीर, प्रान्त, जिला, ऋण, पत्थरविशेष।
धारणा(स्त्री०)–यम नियम और *प्राणायामादि साधनों से वशीकृत* चित्त की आत्मा में दृढ स्थिति को योगी जन धारणा कहते हैं, उचित मार्ग में स्थिति, आत्मा में चित्त की स्थिरता, मर्यादा, पंक्ति, नाड़ी, नब्ज।
धारणी(स्त्री०)–नाड़ी, नब्ज, बुद्धप्रोक्त मन्त्रभेद, पंक्ति, श्रेणी, कतार।
धारयित्री(स्त्री०)-पृथ्वी, जमीन, भूमि।
धारा (स्त्री०)–घट आदि का छिद्र, निरन्तर द्रवीभूत पदार्थ का टपकना वा गिरना, तलवार आदि की तीक्ष्ण नोक, अधिकता, कीर्ति, अतिवृष्टि, समुदाय, एक नगरी का नाम जो राजा भोज की राजधानी थी, घोड़ों की पांच प्रकार की गति, मेघों का अतिवेग से बरसना।
धाराङ्कुर (पु०)–जल के कण, जलबिन्दु, शीकर, ओले, घनोपल।
धाराङ्ग (पु०)–तीर्थ का नाम, खड्ग, तलवार।
धाराट (पु०)–वह पक्षी जो मेघ की धारा के लिये शब्द करता हुआ घूमता है अर्थात् चातक, पपीहा, मेघ, बादल, अश्व, उन्मत्त हस्ती।
धाराधर (पु०)–मेघ, बादल।
धाराफल (पु०)–मदनवृक्ष, कामदेव का वृक्ष।

धारावाही [न्] (वि०)–निरन्तर बहने वाला, शनैः२क्रमशः गिरने वाला।
धाराविष (पु०)–खड्ग, तलवार।
धारासम्पात(पु०)–धाराओं का पतन, अतिवृष्टि, बहुत बरसना।
धारिणी (स्त्री०)–जो समस्त चराचर प्राणिवर्ग को धारण करे अर्थात् पृथ्वी, भूमि, शाल्मलि नामक वृक्ष।
धारी [न्] (पु०)–पीलु नामक वृक्ष, धारण करने वाला, जो आश्रय प्रदान करे। न०–बचाने वाला।
धारु(वि०)–पान करने वाला, पान-कर्ता। [हुआ गर्म २ दूध।
धारोष्ण (न०)–धारा द्वारा गिरा
धार्त्तराष्ट्र (पु०)–जो अच्छे राजा वाले देश में उत्पन्न हुआ हो, एक सर्प, एक हंसविशेष अर्थात् वह हंस जिसके चरण और चोंच काले वर्ण के और अन्य शरीर श्वेतवर्ण का हो, धृतराष्ट्र की सन्तान, धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधनादि।
धार्मिक (वि०)–निरन्तर धर्म करने वाला, धर्मशील, धर्मसेवी, धर्मात्मा। [धारणीय।
धार्य (वि०)–धारण करने योग्य
धार्ष्ट्य (न०–धृष्टता, लज्जाराहित्य, बेशरमी, निर्लज्जपन।
धाव्(१ आ०)–दौड़ना, जल्दी चलना, भागना, शुद्धि करना, साफ करना।
धावक(पु०)–रजक, रंगरेज, धोबी। वि० जल्दी चलनेवाला, शीघ्रगामी।
धावन (न०)–शीघ्रता से चलना, शोधना, शुद्ध करना, जल्दी जाना।
धावनी(स्त्री०)–कटेली, कण्टकारी।
धावित(वि०)–गया हुआ, गत।
धि (६ प०)–धारण करना, पकड़ना, रखना ['सं' उपसर्ग के पूर्व लगा देने से इस का अर्थ सन्धि (मेल, सुलह) करना होता है]।
धिक्(अ०)–भर्त्सना, भिड़कना, निन्दा [निन्दनीय, शोचनीय, छि, शोक के योग्य इत्यादि अर्थों में प्रायः इस का प्रयोग होता है और इस के योग में द्वितीया विभक्ति होती है]।
धिक्कार (पु०)–अनादर, तिरस्कार, बेइज्जती।
धिक्कृत(वि०)–तिरस्कृत, अपमानित, निन्दा के योग्य किया हुआ, निर्भर्त्सित, डाटा हुआ।
धिक्क्रिया(स्त्री०)–निन्दा, भर्त्सना।
धिक्ष्(१आ०)–सन्दीप्त करना, जगाना, जीवना, रहना, क्लेशित होना।
धिषण (पु०)–देवताओं का आचार्य, बृहस्पति।
धिषणा(स्त्री०)–बुद्धि, मनीषा, अक्ल, जिस के द्वारा मनुष्य धैर्य तथा प्रगल्भतायुक्त कार्य करता है।
धिष्ण्य (न०)–स्थान, गृह, अग्नि, नक्षत्र, शक्ति, अग्निभेद। पु०–शुक्राचार्य, धीर्य। वि० उग्रवदाधिकारी।
धिष्ण्य(न०)=धिष्ण।

धी (४ आ०)–तिरस्कार करना, बेइज्जती करना, सेवा करना, विचार न करना।

धी (स्त्री०)–बुद्धि, मनीषा, अक्ल, समझ, ज्ञान। [हुआ, पीत।

धीत(वि०)–पिया हुआ, पान किया

धीति (स्त्री०)–जल पीने की इच्छा, पिपासा, प्यास।

धीन्द्रिय(न०)–पाच ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् नेत्र, कान, त्वचा, रसना और नासिका। मन भी धीन्द्रिय है।

धीमान्(पु०)–विद्वान्, बृहस्पति।

धीर् (१० उ०)–अनादर करना, तिरस्कार करना, बेइज्जती करना। [सर्वदा 'अव' उपसर्ग इस के पूर्व रहता है,यथा-"अवधीरयति-ते"]

धीर (वि०)–धैर्यान्वित, पण्डित, बलिष्ठ, नम्र, बुद्धि का प्रेरक। परमेश्वर, साक्षी, गवाह। न०–केसर।

धीरा (स्त्री०)–नायिकाभेद, स्थित और निश्चिन्त चित्त की वृत्ति।

धीलटि(स्त्री०)–दुहिता, पुत्री।

धीवर (पु०)–कैवर्त, कहार, मछली पकड़ने वाला।

धीवरी(स्त्री०)–कैवर्तपत्नी, धीवरभार्या, कैवर्ती।

धीशक्ति (स्त्री०)–बुद्धि का सामर्थ्य, शुश्रूषा आदि बुद्धिके आठ गुण, यथा-शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धारण, ऊहापोह (तर्कवितर्क) अर्थविज्ञान और तत्त्वज्ञान।

धीसख(पु०)–मन्त्री,अमात्य,दीवान, वज़ीर।

धीसचिव (पु०)=धीसख।

धु (५ उ०)–कापना,हिलना, कपन।

धु (स्त्री०)–कापना।

धुक्ष् (१ आ०)–जागना,सन्दीप्त करना, रहना, क्लेश पाना, जीवना।

धुत(वि०)–त्यक्त,कम्पित,कपायाहुआ

धुनि (स्त्री०)–नदी, वह नदी जो तटोत्पन्न वेतस आदि वृक्षों को कम्पायमान करती है।

धुनी (स्त्री०)=धुनि।

धुनीनाथ (पु०)–समुद्र,सागर।

धुन्धुमार (पु०)–बृहदश्व नामक राजा का पुत्र जिसने धुन्धु नामक राक्षस का वध किया था अर्थात् कुवलयाश्वराज, इन्द्रगोप, बीरबहूटी, कीटविशेष, गृहधूम।

धुर् [रा](स्त्री०)–शोक,चिन्ता,फिकर, रथादि का अग्रभाग, बोझ,भार।

धुरन्धर (वि०)–बोझ उठाने वाला, भार ढोने वाला, भारवाही।

धुरीण (वि०)–बोझा उठाने वाला, श्रेष्ठ, उत्तम, भारवाह।

धुरीय (पु०)–बैल, अनड्वान्।

धुर्य (वि०)–भार उठने वाला, बोझा ढोने वाला, उत्तम, श्रेष्ठ।

धुर्व् (१ प०)–मारना, वध करना, हिंसा करना।

धुवन (पु०)–अग्नि, आग।

धुवित्र (न०)–यज्ञाग्नि को प्रज्वलित करने के लिये मृगचर्मरचित व्यजन,बीजना,यज्ञाग्नि का सुलगाना।

धुस्तुर (पु०)–धतूरा ।
धू (१,५,९,१०उ०)–कांपना, हिलना
धूः [र्] (स्त्री०)–भार, बोझ, यान का मुख, रथादि का अग्रभाग ।
धूक (पु०)–धूर्त, काल, समय ।
धून (वि०)–कम्पित, कपाया गया, पृथक्कृत, निर्भर्त्सित, डाटा हुआ, त्यक्त, त्यागा हुआ, ।
धूत (वि०)–कम्पित, कंपाया हुआ ।
धूति (स्त्री०)–कंपन, कांपना ।
धूप (१ प०)–तपाना, गर्म करना, तपना
धूप (पु०)–गुग्गुल आदि सुगन्धित द्रव्यों से मिश्रित धूआं, ताप, गर्मी, सन्तप्तीकरण ।
धूपित (वि०)–सन्तप्त, गर्म किया हुआ, मार्ग आदि के चलने से थका हुआ, श्रान्त, धूप दिया हुआ, दत्तधूप ।
धूम (पु०)–गीले काष्ठ से उत्पन्न हुआ धुआं, मेघ की उत्पत्ति का कारण।
धूमकेतन (पु०)–अग्नि, आग, उपद्रवोद्भावी अशुभ फल का सूचक एक सतारों का समुदायक, केतुग्रह, महादेव ।
धूमकेतु (पु०)–अग्नि, आग ।
धूमयोनि (पु०)–बादल, मेघ, नागरमोथा, गीली लकड़ी ।
धमिल (पु०)–कृष्ण-लोहित-वर्ण, काला और लाल रंग । वि०–कृष्णलोहित रंग वाला ।
धूमसंहति (स्त्री०)-धूएं का समुदाय, धूमसमूह ।

धूमाभ (पु०)–धूम्रवर्ण । [विशेष ।
धूमिका (स्त्री०)–कुज्झटिका, पक्षि-
धूमोर्णा (स्त्री०)–यमराज की भार्या, यमपत्नी ।
धूमोर्णापति (पु०)–यमराज, यम ।
धूम्या (स्त्री०)–धूमसमूह, धुएं का समुदाय । वि०–धुएं का साधन ।
धूम्र (पु०)–श्याम और रक्त मिश्रित रंग, लाल और काला वर्ण, खर के रोमसदृश । वि०–श्यामरक्त मिश्रित वर्ण वाला ।
धूम्रक (पु०)–उष्ट्र, ऊंट ।
धूम्रलोचन (पु०)–जिस के नेत्र धूसर वर्ण के हों, कपोत, कबूतर, महिषासुर नामक एक दैत्य जो शुम्भासुर की सेना का पति था।
धूम्रवर्ण (पु०)–जिस का वर्ण धूमले रंग का हो, एक पर्वत का नाम ।
धूम्रिका (स्त्री०)–शिंशिपानामक एक वृक्ष, टाली का पेड़ ।
धूर् (४ आ०)–मारना, वध करना, गमन करना, जाना ।
धूर्जटि (पु०)–महादेव, शिव, जिस में लोकत्रय की चिन्ता एकत्रित हो रही हो ।
धूर्त (पु०)–धत्तूर वृक्ष । वि०-जुआरी, ठग, बदमाश, वञ्चक । न०–विड़नामक लवण ।
धूर्तक (पु०)–धूर्त के सदृश, शृगाल, गीदड़, सियार, नागभेद ।
धूर्तकृत् (पु०)–धतूरा । वि०–ठग, वञ्चक ।

धूर्वह (वि०)–बोझा ढोने वाला, धुरन्धर, भारवाहक।

धूलक (न०)–विष, जहर।

धूलि (स्त्री०)–पराग, रज, पार्थिव चूर्ण, धूल।

धूलिकेदार (पु०)–धूलिप्रधान क्षेत्र, वह खेत जिस में धूलि अधिक हो।

धूलिध्वज (पु०)–पवन, वायु, हवा, जिस का झण्डा धूलि हो।

धूलिपुष्पिका (स्त्री०)–केतकी नामक वृक्ष।

धूलीपटल (पु०)–उड़ी हुई धूलि का गिरोह, उड्डीयमान धूलि का समूह।

धूश्–ष्–स् (१०प०)–कान्तियुक्त करना, शोभित करना, अलङ्कृत करना।

धूसर (पु०)–कपोत, कबूतर, ऊंट, गर्दभ, गधा, जिस का स्वरूप तैल के सदृश हो, काला, पीतवर्ण। वि०–उन २ रंगों वाला।

धूसरी (स्त्री०)–किन्नरीभेद।

धृ (१आ०)–गिरना, पतन होना। (१ उ०)–ठहरना, स्थित होना। (१० उ०)–धारण करना, पकड़ना।

धृत (वि०)–स्थिर किया हुआ, स्थिरीकृत, निश्चित, अवध्वस्त, पतित।

धृतराष्ट्र (पु०)–चन्द्रवंशीय राजा, शन्तनुपौत्र, दुर्योधन का पिता, सर्प, साप, पक्षी।

धृतराष्ट्री (स्त्री०)–धृतराष्ट्र की पत्नी, हंसभार्या, हंसकी पत्नी।

धृति (स्त्री०)–सन्तुष्ट होना, धारण करना, पकड़ना, यज्ञ, धारणा, ऐहिक पदार्थों से विरक्त हुए चित्त की स्थिरता, ८ वां योग, अठारह अक्षर के पादयुक्त एक छन्द, द्वादश की संख्या।

धृत्वरी (स्त्री०)–पृथ्वी, भूमि, जमीन।

धृत्वा [न्] (पु०)–ब्राह्मण, आकाश, समुद्र, विष्णु, मेधावी पुरुष, धर्म।

धृष् (५प०)–चातुर्य दिखाना, प्रगल्भता करना। (१० आ०)–शक्ति को रोकना, शक्तिबन्धन। (१०उ०)–क्रोध करना, दबाना, तिरस्कार करना।

धृषु (पु०)–संघात, समूह, समुदाय, प्रगल्भ, चातुर्य।

धृष्ट (वि०)–प्रगल्भतायुक्त, निर्लज्ज।

धृष्टद्युम्न (पु०)–अपने नाम से प्रसिद्ध द्रुपद राजा का पुत्र।

धृष्टा (स्त्री०)–असती स्त्री, कुलटा स्त्री।

धृष्णक् (वि०)–लज्जारहित, लज्जा न करने वाला, बेशर्म।

धृष्णि (पु०)–किरण, मयूख।

धृष्णु (वि०)–निपुण, चतुर, निर्लज्ज, धृष्ट। पु०–कवि का एक पुत्र।

धेन (पु०)–समुद्र, सागर।

धेना (स्त्री०)–नदी।

धेनिका (स्त्री०)–लक्षणा से जल के समीप का स्थान।

धेनु (स्त्री०)—नवप्रसूता गौ ।
धेनुक (पु०)—असुरविशेष जिस को बलराम ने मारा था ।
धेनुकसूदन (पु०)—बलराम, श्रीकृष्ण ।
धेनुका (स्त्री०)—गौ,हथिनी,हस्तिनी।
धेनुदुग्धकर (पु०)—गाजर, गर्जर ।
धेनुष्या (स्त्री०)—ऋण की निवृत्ति के लिये बन्धक रूप से साहूकार को दी हुई गौ ।
धैनुक (पु०)—धेनुओं का समूह, गौओं का गिरोह ।
धैर्य (न०)—धीरता, धीरज, चित्त की स्थिरता, ऊबापन, विकृत-साधनों के होते हुए भी चित्त का निर्विकारत्व,चित्त का न घबराना।
धैवत (पु०)—सप्तस्वरों में से छठा स्वर, कण्ठनिस्सृत एक प्रकार की आवाज़ ।
धोड़ (पु०)—सर्पविशेष ।
धोरण (न०)—हाथी, घोड़ा, गाड़ी आदि यान, एक प्रकार की अश्व की गति ।
धोरणि(स्त्री०)—परम्परा,क्रम से होना।
धौत (वि०)—धोया हुआ,साफ किया हुआ, उत्तेजित । न०—चाँदी ।
धौतकौषे [शे]य (न०)—धोया हुआ रेशमी कपड़ा, कीड़ों के समूह से उत्पन्न हुआ वस्त्र ।
धौतेय (स्त्री०)—एक प्रकार का नमक, सेंधा नमक ।
धौरेय (वि०)—भार उठाने वाला । पु०—बैल, घोड़ा आदि ।
धौर्तिक(न०)—धूर्तसम्बन्धी, धूर्त का।
ध्मा (१प०)—अग्नि को दहकाना, फूंक मारना, शङ्ख आदि बजाना।
ध्माङ्क्ष् (१प०)—आकांक्षा करना, चाहना, घोर शब्द करना ।
ध्मां [ध्वां] क्ष् (१प०)—कांव२करना ।
ध्मांक्ष (पु०)—कौआ, मत्स्यभक्षक, भीख मांगने वाला ।
ध्मात (वि०)—फूंका गया,सन्धुक्षित, फूंक से बजाया हुआ ।
ध्माकार (पु०)—अयस्कार, लोहार ।
ध्मापित(वि०)—फूंका हुआ,धमाया हुआ
ध्यात (वि०)—चिन्तित, विचारित ।
ध्यातव्य-ध्येय (वि०)-ध्यान करने योग्य, विचारणीय ।
ध्यान (न०)—चिन्तन, किसी वस्तु का एकाग्रचित्त से विचार करना ।
ध्यानस्थ (वि०)—ध्यान में लगा हुआ ।
ध्याम (न०)—दमनक वृक्ष, एक प्रकार का गन्धतृण ।
ध्र (वि०)—धारण करने वाला [यह शब्द प्रायः समास के अन्त में आता है जैसे—महीध्र, कुध्र इत्यादि] ।
ध्रज्-ध्रञ्ज्(१प०)—जाना,हरकत करना।
ध्रा (१प०)—जाना, गमन करना ।
ध्रु (१,६ प०)—स्थिर होना, टिकना, जाना, मारना ।
ध्रुव(वि०)—स्थिर, निश्चल, न बदलने वाला । पु०—एक प्रकार की कील, विष्णु, महादेव, उत्तानपाद राजा का पुत्र, नासिका के ऊपर का भाग, भूगोल के

दक्षिणीय और उत्तरीय केन्द्रों के ऊपर का भाग, एक प्रसिद्ध तारा। न०-आकाश, दलील।

ध्रुवक(न०)-एक प्रकार का गीत।

ध्रुवम्(अ०)-निश्चयेन, ठीक है।

ध्रुवा (स्त्री०)-वटपत्राकृति यज्ञपात्र विशेष, मूर्वा, शालपर्णी नामक ओषधि, साध्वी स्त्री।

ध्रेक्(१ आ०)-उन्नत होना, बढ़ना, उत्साह होना।

ध्रै(१ प०)-प्रसन्न होना, तृप्त होना।

ध्रौव्य(न०)-पक्का होना, स्थिर रहना।

ध्वंस् (१ आ०)-नाश होना, नष्ट होना, गिरना।

ध्वंस(पु०)-विनाश, गिरना, बरबादी।

ध्वंसी [नु] (पु०)-पर्वत पर उत्पन्न होने वाला पीलु नामक वृक्ष। वि०-नष्ट होने वाला।

ध्वज्(१ प०)-जाना, गमन करना।

ध्वज (पु०)-झण्डा, निशान, एक मशहूर मनुष्य। अस्त्री०-पुरुष का चिह्न, उपस्थेन्द्रिय।

ध्वजद्रुम(पु०)-तालवृक्ष, ताड़ का पेड़।

ध्वजप्रहरण(पु०)-वायु, पवन।

ध्वजभङ्ग (पु०)-क्लीबत्वजनक रोग-विशेष।

ध्वजिनी(स्त्री०)-ध्वजा वाली सेना।

ध्वजी[नु] (पु०)-ध्वजा वाला, राजा, रथ, ब्राह्मण, घोड़ा, मोर।

ध्वन्(१० उ०)-शब्द करना, बोलना, आवाज़ निकलना।

ध्वन(पु०)-शब्द, आवाज़, सुर [स्वर]।

ध्वनमोदी [नु] (पु०)-भ्रमर, भौंरा, शब्द की मक्खी।

ध्वनि (पु०)-मृदंगादि का धीमा शब्द, अलंकारग्रन्थों में उत्तम काव्यविशेष अर्थात् उत्तम काव्य।

ध्वनिग्रह (पु०)-कान, श्रोत्रेन्द्रिय।

ध्वनित (वि०)-शब्दित, मृदंगादि का किया हुआ शब्द, स्वनित।

ध्वनिनाला (स्त्री०)-वीणा, काहल।

ध्वनिविकार (पु०)-शब्द का विकार, शोकभयादि के कारण ध्वनि की विकृति।

ध्वस् (१आ०)-जाना, गमन करना, विनाश होना, गिरना।

ध्वस्त (वि०)-पतित, गिरा हुआ, च्युत, गलित, नष्ट।

ध्वांक्ष (पु०)-काक, कौआ, श्वान, गृह, बगुला, तक्षक, भिक्षुक।

ध्वांक्षपुष्ट (पु०)-कोकिल, कोयल, काक से प्रतिपालित।

ध्वान (पु०)-शब्द, आवाज़।

ध्वान्त (न०)-अँधेरा, अन्धकार।

ध्वान्तचित्त (पु०)-खद्योत, पटबीजना, जुगनू।

ध्वान्तशात्रव (पु०)-सूर्य, चन्द्रमा, श्योनाक नामक वृक्ष।

ध्वान्ताराति (पु०)-अन्धकार का शत्रु, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि।

ध्वान्तोन्मेष(पु०)-पटबीजना, जुगनू।

ध्वृ (१प०)-कुटिलता करना, टेढ़ा करना, कुटिलीकरण।

न

न—तवर्ग का पांचवां अक्षर। अ०—निषेध, रोकना, मना करना, बांधना, उपमा, मिलाप, रिक्त, खाली। [क्रिया के साथ संयुक्त होने पर यह 'अभाव, न होने' अर्थ में प्रयुक्त होता है]। वि०—प्रशंसित, प्रशंसा के योग्य, स्तुत। पु०—मोती। [थक।

नंशुक (वि०)—नाश करने वाला, ना-

नकुट (न०)—नासिका, घ्राणेन्द्रिय, नाक।

नकुल (पु०)—नेवला, पाण्डवों में चौथा, शिव, जिस का कुल न हो, कुलरहित।

नकुला (स्त्री०)—जटामांसी, केसर।

नकुलीश (पु०)—भैरवविशेष।

नक्ष् (१० प०)—नष्ट करना, नाश करना, नष्टीकरण।

नक्त (न०)—रात, रात्रि, रजनी, वह व्रत जिस में समस्त दिन निराहार रहकर चार घड़ी रात व्यतीत हो जाने पर भोजन किया जाता है।

नक्तचारी [न्] (पु०)—जो रात्रि में भ्रमण करता है, उल्लू, उलूक, बिल्ली। वि०—रात्रि में घूमने वाला।

नक्तचर (पु०)—राक्षस, असुर, तस्कर, चोर, उल्लू, बिल्ली। वि०—रात्रि में विचरने वाला।

नक्तन्दिव (न०)—रात दिन, लगातार।

नक्र (पु०)—जो दूरस्थल पर पाद-प्रमाण न कर सकता हो कुम्भीर, नाका। न०-द्वार के अग्रभाग की लकड़ी, नासिका, नासा।

नक्रराज (पु०)—जलजन्तुविशेष, ग्राह।

नक्षत्र (न०)—अश्विनी, भरणी आदि आकाशस्थ तारे।

नक्षत्रचक्र (न०)—अश्विन्यादि नक्षत्रों का बना हुआ एक चक्र, २७नक्षत्रों का समूह, आकाशमण्डलस्थ राशिचक्र।

नक्षत्रनेमि (पु०)—ध्रुव नामक एक तारा, विष्णु, चन्द्रमा।

नक्षत्रप (पु०)—चन्द्रमा, चांद, उडुप।

नक्षत्रपुरुष (पु०)—एक व्रत का नाम।

नक्षत्रमाला (स्त्री०)—मालाकार नक्षत्र-समूह, सप्तविंशति मोतियों का निर्मित हार, तारों की पंक्ति।

नक्षत्रसूचक (पु०)—जो नक्षत्रों द्वारा शुभाशुभ फल बतलावे, ज्योतिषी, ऐसा ज्योतिषी जो ज्योतिष के सिद्धान्त को न जानता हो।

नक्षत्रेश (पु०)—चन्द्रमा चांद, नक्षत्रों का पति।

नख् (१ प०)—गमन करना, जाना, चलना, सरकना।

नख (अस्त्री०)—जिस में छिद्र न हो, अङ्गुलीकण्टक, नाखून।

नखकुट्ट (पु०)—नापित, नाई।

नखर (अस्त्री०)—नाखून, न, नख।

नखरञ्जनी (स्त्री०)—नख काटने का शस्त्रविशेष, नुहरना, नहन्नी।

नखरायुध(पु०)–जिस के नख ही अस्त्र हों, कुक्कुट, मुर्गा,व्याघ्र, सिंह। [नखायुध भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।

नखानखि(अ०) परस्पर नखूनों द्वारा प्रवृत्त हुआ युद्ध, ऐसा युद्ध जिसमें नखूनों द्वारा प्रहार किया जाय।

नखाशी (पु०)–जो नखों को भक्षण करे,उल्लू, उलूक।

नखी(स्त्री०)–नख नामक एक प्रकार का गन्ध द्रव्य। [विदीर्ण करे।

नखी (पु०)–सिंह, जो नखप्रहार से

नग(पु०)–जो चल न सके, पर्वत, पहाड़, वृक्ष, पेड़।

नगज(पु०) हस्ती, हाथी।

नगण (पु०)–छन्द शास्त्र में वह गण जिस में तीनों अक्षर लघु होते हैं।

नगपति(पु०)–हिमालय पर्वत, चन्द्रमा।

नगभिद् (पु०)–इन्द्र, पाषाणभेद नामक औषधी।

नगभू(स्त्री०)–क्षुद्रपाषाण,छोटापत्थर।

नगर(न०)–शहर, पुर, बहुजननिवासस्थान, जिस में शिल्पादि कार्यों में निपुण अनेक मनुष्य रहते हों।

नगरन्ध्रकर(पु०)–कार्तिकेय शिव का ज्येष्ठ पुत्र, देवताओं की सेना का पति [यह कथा पुराणों में प्रसिद्ध है कि कार्तिकेय ने अपने बाण से क्रौञ्च नामक पर्वत में छिद्र कर दिया था ताकि हंसों के लिये मानस सरोवर जाने के लिये सीधा मार्ग बन गया]।

नगाटन (पु०)–वृक्षचारी, वानर। वि०–पर्वतों या वृक्षों में घूमने वाला। [हिमालय।

नगाधिप (पु०)–पर्वतों का राजा,

नगाश्रय (पु०)–हस्तिकन्द नामक औषधी। वि०–पर्वतवासी, पर्वत पर रहने वाला।

नगौकस् (पु०)–वृक्ष या पर्वत जिस का निवासस्थान हो, पक्षी, सिंह, सरभ, काक, कौआ।

नग्न(वि०)–नगा, वस्त्ररहित, दिगम्बर नामक एक बौद्धों का भेद, वेदत्रयरूप आवरण का त्याग करने वाला जन।

नग्नाटक(पु०)–दिगम्बर योगी।

नग्निका (स्त्री०)–रजोधर्म से रहित स्त्री, लज्जारहित स्त्री।

नज् (१ आ०)–लज्जा करना, शर्म करना।

नञ् (अ०) अभाव बोधक, रोकना, अल्पत्व, सदृश, कलह, विरोध, भेद। [यह अव्यय सादृश्य आदि छ अर्थों में प्रयुक्त होता है, यथा सादृश्ये अब्राह्मण। अभावे-अपापम्। भेदे–अघट पट। अल्पत्वे–अनुदरी कन्या। अप्राशस्त्ये–अकेशी। विरोधे–असुर।

नट् (१ प०)–नाचना, नृत्य करना, हिंसा करना, मारना।

नट (पु०)–नर्तक, स्त्रीजीवी, वर्णसङ्करभेद, अशोक वृक्ष।

नटन (न०)–नृत्य, नाच।

नटभूषण (न०)–हरताल ।
नटी (स्त्री०)–नट की भार्या, वेश्या, कंजरी, नटनी ।
नटेश्वर (पु०)–शिव, महादेव ।
नड् (१०उ०)–गिरना, पतन होना ।
नड (पु०)–नड नामक तृणविशेष, नाड़, नडघास, नलनामक तृण ।
नड्वल (वि०)–बहुत सी नल नामक घास वाला प्रदेश ।
नत (वि०)–नमित, नमा हुआ, नम्र, कुटिल, जन्मनाड़िकाविशेष, अर्द्धदिन व्यतीत हो जाने पश्चात जन्म की घड़ी । न०–तगर नामक औषधि की जड़ ।
नतनासिक (वि०)–झुकी हुई नाक वाला, चपटी नासिका वाला, अल्पनासिकायुक्त ।
नताङ्गी (स्त्री०)–ऐसी नारी जिस का शरीर स्तनादि के भार से झुका हुआ हो ।
नति(स्त्री०)–नम्रता, नमन, झुकना ।
नद्(१ प०)–खुश होना, सन्तुष्ट होना, शब्द करना ।
नद (पु०)–ऐसी नदी जिन में बिना खोदे स्वतः ही अविच्छिन्न रूप से जलप्रवाह बहता हो जैसे-सिन्धु, शोण, दामोदर और भैरव आदि।
नदथु(पु०)–मेघ, बादल ।
नदी (स्त्री०)–ऐसी जलधारा जिस में आठ सहस्र धनुष् की माप से न्यून परिमाण के फैलाव का जल न हो जैसे-गंगा, यमुना, सरस्वती और कावेरी आदि ।
नदीकान्त(पु०)–समुद्र, सागर ।
नदीकूलप्रिय(पु०)–जलवेतस,जलबेंत ।
नदीज(पु०)–अर्जुन नामक वृक्ष,अग्नि-मन्थ, अरणि, भीष्मपितामह ।
नदीन(पु०)–नदियों का स्वामी,समुद्र ।
नदीमातृक (वि०)–नदी के जल से सम्पादित धान्यादिकों से पालित देश ।
नदीष्ण (वि०)–नदीस्नान करने में कुशल, नदी के अवगाहन में दक्ष, नद्युत्तरण प्रकार को जाननेवाला ।
नद्ध (वि०)–बद्ध,बधा हुआ, निम्नित ।
नद्धी (स्त्री०)–चर्मनिर्मित रस्सी, चर्मरज्जु, चमड़े की बनी रस्सी ।
ननन्दा (स्त्री०)–जो सेवा करने पर भी सन्तुष्ट न हो, पति की बहिन [ननान्द्रा का भी यही अर्थ है] ।
ननु (अ०)–प्रश्न, पृच्छा, सवाल, अवधारण, आवाहन, बुलाना, सम्बोधन, निन्दा, निश्चय, अनुमति, सान्त्वन, समझाना ।
ननुच (अ०)–विरोधपूर्वक वचन, विरोधोक्ति ।
नन्द (पु०)–श्रीकृष्ण के पिता, एक गोप का नाम, आनन्द, निधिविशेष, खज़ाना, एक नृप जो कि महानन्दी का पुत्र था, वांस का नाम, मृदंगविशेष, दत्तक-मीमांसा नामक ग्रन्थ का प्रणेता ।
नन्दक(पु०)–विष्णु का खड्ग, मेंढक, भेक, आनन्ददायक, एक नाग का नाम,कार्त्तिकेय का अनुचरविशेष, धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

नन्दकि (स्त्री०)-पिप्पली ।
नन्दकी [न्] (पु०)-विष्णु का वाचक।
नन्दथु (पु०)-आनन्द का बोधक ।
नन्दन (पु०)-पुत्र, भेक, मेंढक, एक पर्वत। न०-साठ संवत्सरों में से एक। वि०-आनन्द करने वाला।
नन्दनन्दन (पु०)-नन्द के पुत्र श्रीकृष्ण [नन्दसुत भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है] ।
नन्दनन्दनी(स्त्री०)-श्रीकृष्ण के पिता नन्द की पुत्री, दुर्गा। [माला।
नन्दनमाला (स्त्री०)-आनन्दजनक
नन्दना (स्त्री०)-पुत्री, दुहिता ।
नन्दा (स्त्री०)-पार्वती, गौरी, उभयपक्ष की प्रतिपद्, षष्ठी और एकादशी तिथि, मद, अलिञ्जर, मादा
नन्दात्मज (पु०)-नन्दपुत्र, श्रीकृष्ण ।
नन्दि (पु०)-आनन्द का वाचक, द्यूत का एक अङ्ग, शिव का अनुचर, नन्दिकेश्वर, वृक्षविशेष, शिव, विष्णु ।
नन्दिका (स्त्री०)-इन्द्र का क्रीडास्थल, इन्द्र के क्रीडा करने का स्थान, षष्ठी तिथी, अलिञ्जर ।
नन्दिकेश्वर(पु०)-शिव का द्वारपाल।
नन्दिघोष (पु०)-अर्जुन के रथ की ध्वनि, वन्दि जनों की स्तुति का घोष, मांगलिक घोषणा । वि०-घोषयुक्त ।
नन्दिनी (स्त्री०)-पुत्री, दुहिता, पार्वती, गङ्गा, ननद, वशिष्ठधेनु जिस की सन्तानार्थी राजा दिलीप ने सेवा की थी, रेणुका नामक औषध, व्याडि की माता। तेरह अक्षर के पाद वाला एक छन्द, दुर्गा का नाम।
नन्दिनीसुत (पु०)-व्याडि मुनि ।
नन्दी [न्] (पु०)-महादेव का पार्श्वचर, नन्दिकेश्वर ।
नन्दी (स्त्री०)-दुर्गा ।
नन्दीमुखी (स्त्री०)-तन्द्रा, मूर्च्छा ।
नन्दीश (पु०)-शिव, महादेव, महादेव का द्वारपाल, संगीतशास्त्र में भरतोक्त एक तालप्रभेद ।
नन्दसरः [स्] (न०)-इन्द्र का सरोवर।
नपुंसक (अस्त्री०)-जो न पुरुष और न स्त्री हो, हिजड़ा ।
नप्ता [तृ] (पु०)-जिस से पितर न गिरें, पौत्र, पोता, धेवता, लड़की का पुत्र ।
नप्त्री (स्त्री०)-पौत्री, पोती, धेवती, सुतात्मजा ।
नभ (पु०)-श्रावण का मास, स्वारोचिष मनु का पुत्रविशेष।
नभः[स्] (न०)-आकाश, आसमान।
नभःकान्ती [न्] (पु०)-सिंह, शेर ।
नभःप्राण (पु०)-पवन, वायु ।
नभःसद् (पु०)-देवता, देव ।
नभःसरित् (स्त्री०)-आकाशगंगा, मन्दाकिनी, स्वर्गङ्गा ।
नभःस्थित (पु०)-नरकविशेष ।
नभश्चक्षु (पु०)-सूर्य, सूरज ।
नभश्चर(पु०)-पवन, मेघ, सूर्यादिग्रह, तारागण, पक्षी ।

नभस (न०)—आकाश, आसमान।
नभसङ्गम(पु०)—पक्षी, जानवर, परिन्द
नभस्तल (अस्त्री०)—गगनमण्डल, आकाशमण्डल।
नभस्य (पु०)—वर्षा के लिये उपयोगी, भाद्रपद का मास।
नभस्वान् (पु०)—वायु, पवन, हवा।
नभोगज (पु०)—मेघ, बादल।
नभोमणि (पु०)—सूर्य, सूरज।
नभोऽम्बुप (पु०)—चातक पक्षी।
नभोरजः[स्] (न०)—अन्धकार, अंधेरा।
नभ्राट् [ज्] (पु०)—मेघ, बादल।
नमः[स्] (अ०)—झुकना, नम्रता, नति, त्याग, स्तोत्र। न०—अन्न का वाचक।
नमतः (पु०)—प्रभु, स्वामी, धूम, नट।
नमस (पु०)—अनुकूल।
नमस्कार (पु०)—नति, प्रणति, प्रणाम, आदर करना, सत्कार करना, बाञ्जलि शिर झुका कर अपना लघुत्व या नम्रत्वभाव प्रकट करना।
नमस्य (वि०)—नमस्कार करने योग्य, वन्दनीय, नमस्काराई, नमस्करणीय।
नमस्या (स्त्री०)—पूजा, अर्चा, अर्चना।
नमस्यित (वि०)—पूजित, अर्चित, जिसकी पूजा की गई हो।
नमुचि (पु०)—जो न छोड़े, कंदर्प, कामदेव, एक दैत्य का नाम।
नमुचिद्विट् [ष्] (पु०)—नमुचि का शत्रु, इन्द्र।
नमुचिसूदन (पु०)—पूर्ववत्। [वृक्ष।
नमेरु (पु०)—रुद्राक्ष, सुरपुन्नाग नामक
नमोगुरु (पु०)—नमस्करणीय गुरु, ब्राह्मण।
नम्ब् (१ प०)—जाना, गमन करना।
नम्र (वि०)—विनययुक्त, नत, नमा हुआ, झुका हुआ।
नम्रक (पु०)—बेंत, वेतस। वि०—नत, नम्र
नय् (१ आ०)—गमन करना, प्रस्थान करना, जाना।
नय (पु०)—नीति, द्यूतविशेष, शुक्राचार्य प्रभृति नीतिज्ञों का निर्माण किया हुआ शास्त्र। [आनयन।
नयन (न०)—चक्षु, नेत्र, आंख, प्रापण,
नयनी (स्त्री०)—आंख की पुतली, कनीनिका। [प्रदीप।
नयनोत्सव (पु०)—नेत्रों का उत्सव,
नयनोपान्त (पु०)—अपाङ्ग, कटाक्ष, नेत्रों के कोये।
नयविशारद (पु०)—नीति का जानने वाला, नीतिशास्त्रज्ञ, नीतिज्ञ।
नर (पु०)—विष्णु, परमात्मा, अर्जुन, मनुष्य, महादेव, देवयोनिविशेष, एक ऋषि का नाम, छाया नापने का एक शङ्कु।
नरक (पु०)—एक दैत्य, भूमि का मध्य, पापात्माओं के कष्ट भोगने का [पुराणानुसार] स्थानविशेष अर्थात् रौरव प्रभृति २१ नरक।
नरककुण्ड (न०)—पाप भोगने का स्थान, यातनास्थान जो कि वह्निकुण्ड, तप्तकुण्ड, क्षारकुण्ड

ण्आदि पुराणोपवर्णित ८६ हैं।
नरकजित्(पु०)-विष्णु, परमात्मा, श्रीकृष्ण जिन्होंने नरक नामक दैत्य को परास्त किया।
नरकदेवता(स्त्री०)-नरक के अधिष्ठात्री देवता जो कि अलक्ष्मी, निर्ऋति और कालपर्णी आदि हैं।
नरनारायण(पु०)-नर और नारायण अर्थात् कृष्ण और अर्जुन के नाम या स्वरूप से अवतीर्ण मुनि जो कि दो थे, ऋषभदेव।
नरपति (पु०)-मनुष्यों का पति, नृपति, राजा। [देश
नरभू(स्त्री०)-मनुष्योत्पत्ति, भारतवर्ष
नरमानिनी (स्त्री०)-वह स्त्री जिस के दाढ़ी मूंछ हों, श्मश्रुयुक्त नारी।
नरमाला (स्त्री०)-वह माला जो मनुष्यों के शिरों से बनी हो, नरमुण्डमाला।
नरमेध(पु०)-वह यज्ञ जिस में इन्द्रियों का दमन होता है, यह संस्कार जिस में मृतपुरुष का दाहकर्म किया जाता है अर्थात् अन्त्येष्टि संस्कार।
नरवाहन (पु०)-कुबेर, यक्षपति। वि०—मनुष्य जिस के वाहन अर्थात् ले जाने वाले हों, एक राजा का नाम। [दैत्य, असुर।
नरविष्वण (पु०)-नरभक्षक, राक्षस,
नरशार(पु०)-गोमादर।
नरसिंह (पु०)-पुरुषों में सिंहसदृश, विष्णु के दशावतारों में से चौथा, हिरण्यकशिपु नामक दैत्य के वधार्थ जिस का होना पुराणों में वर्णित है, शौर्य, गाम्भीर्य आदि गुणों से उच्चकोटि का मनुष्य, नरश्रेष्ठ। [जनसमुदाय,
नरस्कन्ध(पु०)-मनुष्यों का समूह,
नराधिप(पु०)-राजा, नृपति।
नरान्तक(पु०)-यमराज, राक्षसविशेष जो कि रावण का पुत्र था।
नरी(स्त्री०)-नरपत्नी, नारी, मनुष्य की स्त्री। [स्वामी।
नरेन्द्र (पु०)-राजा, मनुष्यों का
नरोत्तम(पु०)-मनुष्यों में श्रेष्ठ, विष्णु, वैराग्ययुक्त पुरुष, राजा।
नर्कुटक(न०)-नासिका, नाक।
नर्तक(पु०)-नट, चारण, नृत्यकोविद, वह पुरुष जो नाचना जानता हो, नल नामक तृण।
नर्तकी(स्त्री०)-नर्तकभार्या, नृत्यकारिणी, नृत्य जाननेवाली स्त्री।
नर्त्तन(न०)-नाच, नृत्य।
नर्द् (१ प०)-शब्द करना, आवाज करना, जाना।
नर्मद(पु०)-वह पुरुष जो हास्य प्रदान करता है, परिहास का मन्त्री, हंसीदिल्लगी का वज़ीर।
नर्मन्(न०)-परिहास, हंसी, हास्य, हंसीठट्ठा।
नल(पु०)-अपने नाम से प्रसिद्ध चन्द्रवंशीय राजा जो कि दमयन्ती

का पति था, एक सूर्यवंशीय राजा।
नलकिनी (स्त्री०)–जघा, जांघ, लात।
नलकूबर (पु०)–कुबेर का पुत्र।
नलद (न०)–खस, उशीर, पुष्परस, जटामासी।
नलदम्बु (पु०)–निम्बं का वृक्ष, नीम।
नलमीन (पु०)–चिलिचिम नामक मत्स्य। [एक सुगन्धितद्रव्य।
नलिका (स्त्री०)–नाली, नाड़ी, नल,
नलिनीखण्ड (न०)–कमलिनियों का समुदाय।
नलिनेशय (पु०)–विष्णु का बोधक।
नल्व (पु०)–चार सौ हाथ के माप का देश, चतुःशतहस्त परिमित देश।
नव (वि०)–नवीन, नूतन, नया, वर्त्तमानकालिक। पु०-प्रशंसा, स्तोत्र।
नवग्रह (पु०)–सूर्य, चन्द्रादि नवग्रह।
नवति-ती (स्त्री०)–९० की संख्या का वाचक।
नवदल (न०)–कमलकेशर के समीप का पत्ता, कमल का नूतन पत्र।
नवदीधिति (पु०)–वह ग्रह जिस की नौ किरण हों अर्थात् मङ्गल।
नवदुर्गा (स्त्री०)–शैलपुत्री आदि दुर्गा के नौ स्वरूपभेद। [भूल।
नवदोला (स्त्री०)–नवीन प्रेङ्खा, नई
नवद्वारपुर (न०)–ऐसा पुर जिस में नौ दर्वाज़े हों, शरीर, देह। [शरीर में नौ दर्वाज़े ये हैं–दो कर्ण, दो नेत्र, दो नासिका और एक मुख ये सात ऊपर के और गुदा, लिङ्ग ये दो नीचे के मिल कर ९ हैं]।
नवधा (अ०)–नौ प्रकार, नौ तरह।
नवधातु (पु०)–स्वर्ण आदि ९ धातु होते हैं।
नवन् (वि०)–९ की संख्या का वाचक।
नवनी (स्त्री०)–नवीन घृत, नवनीत, नया निकला हुआ घृत, मक्खन।
नवनीत (न०)–पूर्ववत्।
नवनीतक (न०)–घृत, घी, मक्खन से सम्पादन किया घृत।
नवपाठक (पु०)–नवीनाध्यापक, नया मास्टर। [वती स्त्री।
नवफलिका (स्त्री०)–नवीन रजोधर्म-
नवम (वि०)–९ की संख्या का पूरक, नौ की संख्या पूरी करने वाला अर्थात् नवां। [पुष्प युक्त वृक्ष।
नवमल्लिका (स्त्री०)–बहुत पुष्पों से
नवमी (स्त्री०)–कृष्ण और शुक्लपक्ष की ९वीं तिथि।
नवयौवना (स्त्री०)–युवति, तरुणा स्त्री, जवान औरत।
नवरत्न (न०)–नौरत्नों का समूह, नव प्रकार के मणि, विक्रमादित्य की सभा के नौ पण्डित, नीति के उपदेशविषयक ९ श्लोक।
नवरात्र (न०)–९ रात्रि, वे नवरात्रि जिन में आश्विनशुक्ला प्रतिपदा से नवमी पर्य्यन्त दुर्गा का व्रतानुष्ठान किया जाता है।
नववधू (स्त्री०)–नवविवाहिता स्त्री,

नवोढा, नवीना भार्या ।

नववध्वागमन (न०)—नवीन वधू का पिता के घर से पतिगृह में प्रथम आगमन ।

नववरिका (स्त्री०)—नववधू ।

नववस्त्र(न०)—नया वस्त्र,नया कपड़ा, नवीन वस्त्र, अनाहत वसन ।

नवशायक (पु०)—मालाकार, माली, तैलकार, तेली, गोप, कुलाल आदि नौ जाति ।

नवश्राद्ध (न०)—ग्यारहवें दिन का श्राद्ध, एकादशाह श्राद्ध ।

नवसूतिका (स्त्री०)—वह गौ जिस का नवीन प्रसव हुआ हो, नवप्रसूता गौ ।

नवान्न(न०)—नवीन अन्न,नया अनाज।

नवांश (पु०)—मेषादि १२ लग्नों का नवमांश, ९ वां भाग ।

नवाम्बर (न०)—नया वस्त्र, नूतन वस्त्र।

नवार्चि (पु०)—मङ्गल ग्रह ।

नवाह (पु०)—नया दिन, नवीन दिन, प्रतिपत्तिथि ।

नवीन (वि०)—नूतन, नया, नवीन।

नवोढा(स्त्री०)—नवीनविवाहिता स्त्री।

नवोदक (न०)—नया जल, नवीन पानी, नये जल का मोक्षण ।

नवोद्धृत (न०)—नया निकाला हुआ घृत, नवनीत, मक्खन ।

नव्य (वि०)—नया, नवीन, नूतन, स्तुत्य, पूजित, स्तुत, स्तुति किया हुआ ।

नश्यत्प्रसूतिका (स्त्री०)—वह स्त्री जिस की संतति मर जाती हो, मृतवत्सा स्त्री ।

नश्वर (वि०)—नष्ट होने वाला, नष्टशील,नाशयोग्य, ध्वंसप्रतियोगी ।

नष्ट (वि०)—छिपा हुआ, अंतर्हित, तिरोहित, अदर्शनयुक्त ।

नष्टचेष्टता (स्त्री०)—शोकादि से चेतनाभाव, मूर्च्छा, प्रलय, चेष्टारहित, बेहोश ।

नष्टाग्नि (पु०)—प्रमाद से जिस ने अग्निहोत्र का परित्याग कर दिया हो, निरग्निक ।

नष्टाप्तिसूत्र (न०)—चोरों द्वारा अपहृत धनका प्राप्त कुछ भाग, स्तेयद्रव्य, चोरी का माल ।

नष्टेन्दुकला (स्त्री०)—वह तिथि जिस में चंद्रमा की कला नष्ट हो गई हों, अमावस्या, कुहू ।

नसा (स्त्री०)—नाक, नासिका ।

नस्त (पु०)—पूर्ववत् । [विवर ।

नस्ता (स्त्री०)—नासाकृत छिद्र, नासा-

नस्तित (पु०)—वह बैल जिस की नाक बींध दी गई हो, नाथ डाला हुआ बैल ।

नस्तोत (पु०)—पूर्ववत् । [ग्राह्य चूर्ण ।

नस्य (न०)—हुलास,नसवार,नासिका-

नस्योत (पु०)—नस्तित ।

नहि (अ०)—रोकना, मना करना, निषेध करना ।

नहुष (पु०)—अपने नाम से प्रसिद्ध एक चन्द्रवंशीय राजा, सर्पभेद ।

नहुषात्मज (पु०)—नहुष का पुत्र

ययाति नाम राजा।
ना (अ०)–निषेध, नहीं, मत, अभाव।
ना [नृ] (पु०)–पुरुष, मनुष्य, आदमी।
नाक (पु०)–वह लोक जहां दुःख न हो, स्वर्ग।
नाकनाथ (पु०)–इन्द्र।
नाकनायक (पु०)–पूर्ववत्।
नाकी (पु०)–जिसका निवासस्थान स्वर्ग है, देव, देवता।
नाकु (पु०)–वल्मीक, मुनिविशेष।
नाकुल (पु०)–नकुल का पुत्र। न०–तन्त्रविशेष।
नाक्षत्र (न०)–नक्षत्रसम्बन्धी।
नाग (पु०)–सर्प, सांप हस्ती, मेघ, मोथा, नागकेसर, शरीरस्थ एक वायु जिस से उद्गार (डकार) सम्बन्धी कार्य होता है, क्रूरचारी। वि०–पर्वत में होने वाला। न०–ज्योतिष में एक करण का नाम।
नागदन्त (पु०)–हस्ती का दांत, हस्तिदन्तसदृश, गृहान्तर्गत दारु, खूंटी।
नागपञ्चमी (स्त्री०)–आषाढकृष्णा पञ्चमी जिस में विषनाशिनी मनसा देवी का पूजन किया जाता है।
नागपाश (पु०)–वरुणदेव का एक बन्धनोपयोगी अस्त्र, वरुणायुध।
नागबल (पु०)–भीमसेन।
नागमाता (स्त्री०)–सर्पों की माता, मनसादेवी, मनःशिला, मनसिल।
नागर (वि०)–शहर में रहने वाला, चतुर पुरुष, शिल्पकार, कारीगर। न०–सुण्ठी, सोंठ।
नागराज (पु०)–सर्पों का राजा, वासुकि, अनन्त, शेष, हस्तियों का राजा, ऐरावत। [स्त्री, नागरपत्नी।
नागरी (स्त्री०)–चतुर स्त्री, बुद्धिमती
नागरेयक (वि०)–नगरसम्बन्धी।
नागलता (स्त्री०)–सर्प के स्वरूपाकार लता, वह वेल जिसका स्वरूप सर्प के सा हो, ताम्बूललता, पुरुष का चिन्ह। [लोक।
नागलोक (पु०)–पाताल, सर्पों का
नागाधिप (पु०)–शेष, अनन्त। [गरुड़।
नागान्तक (पु०)–सर्पों का विनाशक,
नागाशन (पु०)–पूर्ववत्। [प्रसिद्ध नगर।
नागाह्व (पु०)–हस्तिनापुर नामक
नागी (स्त्री०)–हस्तिनी, हथिनी।
नाचिकेतः (पु०)–एक ऋषि का नाम, अग्नि, आग, एक वेदसम्बन्धी गाथा। [देश या तद्देशवासी।
नाट (पु०)–नृत्य, नाच, कर्णाटकनामक
नाटक (न०)–देखने योग्य एक प्रकार का काव्य, वह काव्य जो गद्यपद्य और प्राकृतभाषा की रचना से युक्त हो, कामाख्या नाम देवी के समीप एक पर्वतभेद।
नाटार (पु०)–नट का पुत्र।
नाटिका (स्त्री०)–नाटकविशेष, एक नाट्य का भेद। [युत।
नाटेय (पु०)–नटी का लड़का, नटी-
नाट्य (न०)–गीत, नृत्य, वाद्यादि नटों का काम।

नाट्यशाला (स्त्री०)–नृत्यस्थान, नाचने का घर, नाटकमन्दिर, देवमन्दिर के समीपस्थ घर।
नाट्योक्ति (स्त्री०)–नाटक विषयक वचन, नृत्यकर्मोपयोगी वाक्य।
नाडि–डी (स्त्री०)–देहस्थशिरा, घड़ी, ६० पलात्मक समय, वृक्ष की शाखा विशेष।
नाडिकेल (न०)–नारियल, नारिकेल।
नाडिन्धम (पु०)–सुनार, स्वर्णकार।
नाडीचक्र (न०)–नाभिस्थान से निःसृत शिराचक्र।
नाड़ीजंघ (पु०)–काक, कौआ, एक प्रकार का बगुला, मुनिभेद।
नाणक (पु०)–जो कुत्सित न हो, उत्तम, श्रेष्ठ, मनोहरमुद्राचिन्हित, जिस पर चिन्ह अङ्कित हो।
नाथ् (१प०)–गर्म होना, संतप्त होना, भिक्षा मांगना, याचना करना। (१आ०)–आज्ञा करना, ऐश्वर्य भोगना।
नाथ (पु०)–स्वामी, मालिक, अधिपति, महादेव। वि०–प्रार्थनीय, स्तुत्य, प्रार्थना करने योग्य।
नाथवान् (वि०)–पराधीन, परतन्त्र, दूसरे के अधीन।
नाथहरि (पु०)–पशु, ढोर, चौपाया।
नाद (पु०)–शब्द, आवाज, उच्चस्वर, चन्द्राकार बिन्दु, वाद्यभेद।
नादेय (न०)–नदी का जल, नदी सम्बन्धी, सेंधा लवण। पु०–काश नामक तृण। वि०–नदी का।
नाध् (१आ०)–याचना करना, मांगना।
नाना (अ०)–अनेक, बहुत, बिना।
नानार्थ (वि०)–अनेक अर्थ वाला, बहुत प्रयोजन वाला।
नानाध्वनि (पु०)–काहल, वीणा, मृदंगादि अनेक बाजों का मिश्रित शब्द।
नानारूप (वि०)–बहु प्रकार का, पृथग्विध, अनेक तरह का, बहुविध।
नान्दी (स्त्री०)–वह श्राद्ध जिस में देवता और पितर तृप्त होते हैं, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, नाटक में सूत्रधार कृत मंगलाचरण, नाटक के आदि में देव द्विजों का दिया हुआ आशीर्वाद।
नान्दीमुख (पु०)–एक प्रकार का श्राद्ध जो विवाहादि के पूर्व वृद्धयर्थ वा अशौचादिजन्यपातक के दूरीकरणार्थ किया जाता है, कूपादिमुखबन्धन।
नान्दीवादी (वि०)–नाटक के आरम्भ में नान्दी विषयक श्लोकों का पाठ करने वाला, भेरी आदि बाजा बजाने वाला।
नापित (पु०)–नाई, हज्जाम, क्षौरकर्म का कर्ता।
नापितशालिका (स्त्री०)–नाई का घर, नापितगृह।
नाभि (पु०)–अपने नाम से प्रसिद्ध राजा जो कि प्रियव्रत का पौत्र और आग्नीध्र का पुत्र था, चक्र [पहिया] का मध्य, पुरी, प्रधान

राका, द्वादश राजाओं के चक्र का मध्य।

नाभिज (पु०)—ब्रह्मा का वाचक।

नाभिजन्मा[न्] (पु०)—पूर्ववत्।

नाभिभू (पु०)—पूर्ववत्।

नाभिवर्ष (पु०)—भारतवर्ष देश।

नाभी (स्त्री०)=नाभि।

नाम(अ०)—स्वीकृति, प्राकाश्य, कुत्सन, निन्दा, विकल्प, मिथ्या, क्रोध, विस्मय, अपकर्ष, स्मरण।

नाम[न्] (न०)—संज्ञा, नाम, आख्या, गोत्र, लक्षण, व्यपदेश्य, चिन्ह।

नामकरण(न०)—एक संस्कार जिस में नाम रक्खा जाता है, जन्म के पश्चात् दशवें दिन का कृत्य।

नामधेय (न०)—संज्ञा, नाम, वाचक शब्द।

नामशेष(वि०)—जिस का केवल नाम ही शेष रह गया हो, मृत, मरा हुआ पुरुष।

नाय(पु०)—नीति, न्याय।

नायक (पु०)—स्वामी, प्रभु, मालिक, ले जाने वाला, सेनाध्यक्ष, हार के मध्य की मणि, उपपति, बहुविषयाभोगोपशील।

नायिका(स्त्री०)—प्रेमासक्त तरुणी स्त्री, वह स्त्री जिसे शृंगार रस अधिक स्वीकृत हो, दुर्गाशक्ति।

नार (पु०)—नरसन्तान, बालक, जल, पानी। न०—नरसमूह, मनुष्यों का समुदाय। वि०—नरसम्बन्धी।

नारक (पु०)—नरक, पाप के फल भोगने का स्थानविशेष। वि०—नरक में रहने वाला, नरकस्थ जीव।

नारकी (वि०)—नरकसम्बन्धी पीड़ा भोगने वाला।

नारकीट(पु०)—वह पुरुष जो अपनी दी हुई आशा को भंग करदे।

नारङ्ग(न०)—गाजर, गर्जर, सतरे का पेड़। पु०—पिप्पलीरस, जौहिंसर लड्डुओं में से एक।

नारद (पु०)—अपने नाम से प्रसिद्ध मुनि, तत्प्रोक्त महापुराण, ज्ञानदाता, अज्ञान का नाशक।

नारसिंह (न०)—एक उपपुराण जिस में नृसिंहावतार का वर्णन है।

नाराच(न०)—लोहनिर्मित एक अस्त्र, लोहे का बाण, तीर।

नाराचिका (स्त्री०)—अठारह अक्षर के पाद वाला एक छन्द।

नारायण (पु०)—विष्णु, नरसमूह का आश्रय अर्थात् निवासस्थान।

नारायणक्षेत्र(न०)—गंगा के दोनों तट की चार हस्त परिमित जगह।

नारायणप्रिय(पु०)—शिव, महादेव।

नारायणबलि(पु०)—मृत पतित पुरुषों के प्रायश्चित्तार्थ कर्त्तव्य कर्मविशेष, धर्मशास्त्रोक्त प्रायश्चित्त।

नारायणास्त्र(न०)—विष्णु का अस्त्रभेद।

नारायणी(स्त्री०)—गंगा, लक्ष्मी, विष्णु की एक शक्ति, शतावरी नामक औषध।

नारिकेर-ल (पु०)—स्वनामप्रसिद्ध फल-

वृक्षविशेष, नारियल का पेड़, जो जल वा पवन से कम्पायमान हो।
नारी (स्त्री०)-वनिता, स्त्री, जिस में नर का धर्माचार हो, नरधर्माचारयुक्ता स्त्री, अबला, औरत।
नारीदूषण (न०)-स्त्रियों के दोष जो कि ६ हैं, यथा-मद्यपान, दुर्जनों का साथ, पति से वियोग, भ्रमण, दूसरे के घर सोना और रहना।
नाल(न०)-कमलदण्ड, कमल की डंडी।
नालीक(पु०)-बाण, तीर, वह बाण जो धनुष् से छूटते समय भयङ्कर शब्द करे।
नाविक(पु०)-मल्लाह, कर्णधार, जहाज द्वारा यात्रा करने वाला पथिक।
नाव्य (वि०)-वह जल जो नाव से तरा जाय, नौका से तरने योग्य जल वा देश, नौकागम्य देश।
नाश(पु०)-भागना, पलायन, मृत्यु, निधन, अदर्शन, दर्शनाभाव, जीवों के नाश का हेतु।
नाशी(वि०)-नाशविशिष्ट, वह पुरुष जिस का नाश हो गया हो।
नासत्यौ (पु० द्विव०)-अश्विनीकुमार, स्वर्ग के वैद्य।
नासा(स्त्री०)-नाक, नासिका।
नासारोग(पु०)-नाक के रोग।
नासिका(स्त्री०)-नाक, नासा।
नासिकामल (न०)-नाक का मल, नासान्वित मल।
नासिक्य (वि०)-नाक के लिये उपयोगी, नासिका में उत्पन्न होने वाला।
नासक्यौ(पु०)=नासत्यौ।
नासीर (न०)-वह सेना जो सेनापति के आगे चले, सेनामुख, पायोनियर सेना। वि०-आगे जाने वाला, अग्रसर।
नास्ति (अ०)-अस्तित्व का अभाव, अविद्यमानता, न होना।
नास्तिक(पु०)-वह पुरुष जो परलोक, स्वसाधन, वेद और ईश्वर के अस्तित्व को न मानता हो; जो यज्ञादि के फल को न माने, वेदनिन्दक, ईश्वरनास्तिकत्ववादी, वेदाप्रामाण्यवक्ता, चार्वाक आदि।
नास्तिकता (स्त्री०)-नास्तिकपन, मिथ्यादृष्टि।
नाहल(पु०)-म्लेच्छजातिविशेष।
नाहुषि (पु०)-नहुष राजा का पुत्र ययाति।
नि (अ०)-निषेध, निश्चय, लघुत्व, छोटापन, चातुर्य, हटना, सत्कार, मुक्त होना, सन्देह, सामीप्य, उपरम, दान, बन्धन।
निः[र्] (अ०)-निषेध, निर्णय।
निः[स्] (अ०)-निषेध, साकल्य, अतीत
निःकासित (वि०)-निकाला हुआ, बहिष्कृत, निष्कासित।
निःक्षत्र (वि०)-बिना क्षत्रिय वाला देश, क्षत्रियशून्य देश।
निःप्रभ (वि०)-प्रभारहित, बिना कान्ति वाला।

निःशब्द (वि०)–चुपचाप, शब्दरहित।
निःशलाक (वि०)–अकेले, एकान्त, रहः, निर्जन, जनसमुदायरहित।
निःशेष (वि०)–जो शेष से निकल गया हो, सम्पूर्ण, समस्त, सब, तमाम।
निःशोध्य (वि०)–साफ़ किया हुआ, शोधित, मृष्ट।
निःश्रयणी (स्त्री०)–जिस के पूर्ण रूप से आश्रयित होता है, सीढ़ी, पीढ़ी, काष्ठनिर्मित सोपान।
निःश्रेणि-णी (स्त्री०)–बांसों की बनी सीढ़ी, सोपानपंक्ति, वंशघटित सोपान।
निःश्रेयस (न०)–निश्चितकल्याण, विज्ञान, मुक्ति, शुभ, विद्या, भक्ति, सेवा। पु०-शिव।
निःश्वास (पु०)–मुख और नासिका से निस्सृत वायु, श्वास, सांस।
निःषमम् (अ०)–निन्दा, बुराई, गर्हा।
निःसङ्ग (वि०)–संग न करने वाला, मेलरहित, फल की इच्छा न करने वाला। [रहित।
निःसन्धि (वि०)–दृढ़, मज़बूत, सन्धि-
निःसम्पात (पु०)–वह समय जिस में आना जाना बन्द हो, अर्द्ध रात्रि का समय, आधीरात। वि०--गमनागमनरहित।
निःसरण (न०)–घर का दर्वाज़ा, गृहादि का द्वार, मरण, मृत्यु, उपाय, निर्गम, बुझना।
निःसार (पु०)–शाखोट नामक वृक्ष। वि०-साररहित, जिस में कुछ सार न हो। [का मार्ग।
निःसारण(न०)–गृह आदि से निकलने
निःसारा (स्त्री०)–केले का वृक्ष, कदली
निःस्नेह (वि०)–स्नेहशून्य, प्रेमरहित, तैलरहित।
निःस्नेहा(स्त्री०)–अतसी नामक वृक्ष, जिस से तैल निकल गया हो।
निःस्राव (पु०)–चावलों का रस, भक्तरस, मांड।
निःस्व (वि०)–दरिद्र, कंगाल, निर्धन, गरीब, ख़ातिरहित।
निकट (न०)–समीप, पास, अदूर।
निकर (पु०)–समूह, गिरोह, समुदाय, निधि, ख़ज़ाना, सार, धन।
निकर्षण (न०)–ग्राम के बाहर विहार करने की भूमि, शहर आदि में गृह के निर्माणार्थ मापा हुआ प्रदेश।
निकष-ष (पु०)–कसौटी, शाण, वह पत्थर जिससे शस्त्र आदि की धार तीक्ष्ण की जाती है।
निकषा(स्त्री०)–राक्षसों की माता, सुमाली की कन्या, विश्रवा की भार्या। अ०-निकट, समीप, पास।
निकषात्मज (पु०)–राक्षस, दैत्य, असुर
निकषोपल (न०)=निकष।
निकाम (न०)–इच्छानुकूल, यथेच्छित, इष्ट, परमात्मा, गृह, स्थान।
निकाय (पु०)–वह प्राणिवर्ग जिनका धर्म समान हो, एकधर्मियों का गिरोह, समूह, स्थान, निलय।

निकाय्य (पु०)–घर, गृह, रहने की जगह।

निकार (पु०)–अनादर, बेइज्जती, तिरस्कार, धिक्कार, धान्य का ऊपर को फेकना, धान्योर्ध्वक्षेपण।

निकारण (न०)–वध, मारण, हिंसा।

निकुञ्ज(अस्त्री०)–लता आदि से ढका हुआ स्थान, लताच्छादित गृह, बेलों से आच्छादित प्रदेश।

निकुम्भ (पु०)–कुम्भकरण का पुत्र, दन्ती नामक एक वृक्ष, प्रह्लाद का पुत्रविशेष।

निकुम्भिला(स्त्री०) लङ्का की पश्चिम दिशा में एक गुफा का नाम, तत्प्रदेशस्थ एक देवी। [सा।

निकुरम्ब (न०)–समुदाय, झुण्ड, बहुत

निकृत (वि०) तिरस्कृत, अवमानित, वञ्चित, ठगा गया, प्रत्याख्यात, शठ, नीच।

निकृति (स्त्री०)-डाटना, भर्त्सन, शाठ्य, दैन्य, अपमान गरीबी।

निकृष्ट(वि०)–अधम,नीच, निन्दित।

निकेत (पु०)–घर, स्थान, निकेतन, रहने की जगह। [पलाण्डु।

निकेतन (न०)–पूर्ववत्। पु०–प्याज,

निक्व[क्वा]ण (पु०)–वीणा की ध्वनि, वीणाशब्द, वीणा की आवाज [प्रक्वण, प्रक्वाण, मुक्कण, सुक्वाण, उपक्वण, उपक्वाण, आदि शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं]।

निक्षिप्त (वि०)-स्थापित, रक्खा हुआ, न्यस्त।

निक्षेप (पु०)–अमानत, धरोहर।

निखर्व(न०)–१०००००००००००० दश सहस्र करोड़ की सङ्ख्या का वाचक। पु०–बौना, वामन।

निखात (वि०)-खोदा हुआ, गढा, खोद कर स्थापित।

निखिल (वि०)–समस्त,सब, सम्पूर्ण।

निगड (अस्त्री०)-बेड़ी, शृङ्खला, हथकड़ी।

निगडित (वि०)–बंधा हुआ, बद्ध।

निगण पु०)–होम का धुआ,हवनधूम।

निगद (पु०)–कथन, भाषण,बोलना।

निगम (पु०)–वेद, निश्चय, प्रतिज्ञा, न्याय के पाच अवयवों में से अन्तिम अवयव, व्यवहार, पुरी, कट, वेद की एक शाखा।

निगमन(न०)–न्याय के पाच अवयवों में से वह अन्तिम अवयव कि जो प्रकरण के विरुद्ध प्रमाण को छिन्नभिन्न करके प्रकरणानुकूल प्रमाण का निश्चय करावे।

निग [गा] र(पु०)–भोजन, आहार।

निगरण (न०)–भक्षण। पु०–होमधूम, होम का धुआ।

निगाल (पु०)–अश्व के कण्ठ का स्थान, अश्वगलोद्देश।

निगु(पु०)–मन, मूल, मनोज्ञ, सुन्दर, चित्रकर्म।

निगूढ (वि०)-गुप्त, छिपा हुआ। पु०–वनमूग, वनमुद्ग।

निगृहीत (वि०)–पीडित, रुद्ध, रोका हुआ,तर्जित,भर्त्सना किया हुआ।

निग्रह(पु०)–अनुग्रह का अभाव,रोक, बन्धन; भर्त्सना, सीमा, हद, निराकरण, कुत्सितप्रवृत्ति को अवलोकन कर तिरस्कृत करना।

निग्रहस्थान(न०)–वह स्थान जिस में पड़ने से वादी परास्त समझा जाता है, वादी के पराजय का स्थान, गौतमप्रणीत १६ पदार्थों में से अन्तिम।

निग्राह(पु०)–आक्रोश, शापयुक्त कटु वचन बोलना, निग्रह।

निघ(पु०)–पूर्णरूप से किया आघात; जिस की उंचाई, चौड़ाई और लम्बाई नीचाई सम हो, समस्थल, दायरा, कंदुक, गेंद, वृत्त।

निघण्टु(पु०)–अपने नाम का वैदिक कोष, वेद की डिक्शनरी।

निघस(पु०)–आहार, भोजन, खाने का पदार्थ।

निघाति (स्त्री०)–लोहमयदण्ड, लोहे का बना दण्डा।

निघुष्ट(न०)–घोषण,घोषणा,मनादी।

निघृष्व(पु०)–खुर, पवन, वायु, खर, गधा, वराह, सूअर, मार्ग।

निघ्न(वि०)–अधीन, वश में, पराधीन, गुणित, गुणन (जर्ब) किया हुआ।

निचय (पु०)–समुदाय, समूह, बढ़ा हुआ, अवधि से बाहिर, अवयवों से वृद्धिङ्गत पदार्थ।

निचाय (पु०)–एकत्रित किया हुआ अन्नादि, राशीकृत, समुदाय।

निचिकी(स्त्री०)–उत्तमा गौ, उत्तमगाय।

निचित (वि०)–पूरित, व्याप्त, भरा हुआ, मिश्रित, मिला हुआ, रचित, सञ्चित, इकट्ठा हुआ, सङ्कीर्ण।

निचुल(पु०)–वेतस, बेंत का वृक्ष।

निचोल(पु०)–बिस्तर, बिछौना, डोली के ढकने का परदा, स्त्रियों का आच्छादन वस्त्र, दुपट्टा, चादर।

निच्छवि(स्त्री०)–त्रिहुत नामक देश।

निच्छिवि(पु०)–एक प्रकार की वर्ण-सङ्कर जाति। [नित्य।

निज(वि०)–अपना, आत्मीय, स्वकीय,

निट्[श्] (स्त्री०)–रात्रि, निशा, रात।

निटल(न०)–मस्तक, कपाल, खोपड़ी।

निडीन(न०)–पक्षियों की गतिविशेष, मन्दगमन, शनैः२ चलना।

नितम्ब(पु०)–स्त्री की कटि का पश्चाद् भाग, कटितट, चूतड़, कटि, स्कन्ध, कन्धा।

नितम्बिनी(स्त्री०)–वह स्त्री जिस के नितम्ब अच्छे हों, प्रशस्तनितम्बयुक्ता स्त्री, स्त्रीमात्र।

नितराम्(अ०)–निरन्तर, सर्वदा, सदा, *अतिशय, विशेषकर।*

नितल (न०)–सात पातालों में से एक जो बहुत निम्नःस्थित है, अधःप्रदेश।

नितान्त(वि०)–अतिशय, बहुत कर, एकान्त, अत्यन्त, उस वाला, तद्वान्।

नित्य(वि०)–सदास्थायी, जो सर्वदा रहे, सतत, निरन्तर। पु०–सदा, सर्वदा, प्रतिदिन, समुद्र, विनाश और उत्पत्ति से रहित वस्तु।

नित्यकर्म (न०)—नित्यप्रति कर्त्तव्य वेदविहित कर्म, वह कर्म जिस के त्याग से मनुष्य प्रायश्चित्ती हो जाता है जैसे कि सन्ध्यावन्दन, पञ्चयज्ञात्मक कर्म ।

नित्यक्षौर (न०)—स्वभाव से प्राप्त समयोपयोगी क्षौर, रागप्राप्त केशकर्त्तन ।

नित्यगति(पु०)—वायु, पवन, हवा ।

नित्यतृप्त (वि०)—ब्रह्मविचारानुभव के आनन्द से तृप्त, आशारहित, निराश्रय, परब्रह्म के आनन्द से सन्तुष्ट ।

नित्यदा(अ०)—सदा, हमेशा, सर्वदा ।

नित्यदान (न०)—प्रतिदिन करने योग्य दान, वह दान जो प्रत्युपकार और फल की इच्छा न कर सुपात्र को दिया जाय ।

नित्यप्रलय (पु०)—चार प्रकार के प्रलयों में से एक, नित्यप्रति उत्पन्न हुए जीवों का नाश ।

नित्यमुक्त (पु०)—कालत्रय के बन्धन से रहित, परमात्मा ।

नित्ययज्ञ(पु०)—फलाभिसन्धान रहित प्राणिमात्र के लिये नित्यकर्त्तव्य यज्ञ, अग्निहोत्रादि ।

नित्ययौवना (स्त्री०)—वह स्त्री जिस का यौवन सदा स्थिर रहे, द्रौपदी वि०—स्थिर यौवन वाला ।

नित्यसमास (पु०)—एक समास का नाम, वह समास जिसका अर्थ समस्यमान पदों के भिन्न कुछ अवगत ही न हो, जैसे "जयद्रथ, जमदग्नि" इत्यादि ।

नित्या (स्त्री०)—पार्वती, शक्ति-विशेष, मनसा नामक देवी ।

नित्यानध्याय (पु०)—सब प्रकार से वर्ज्य वेदपाठादि की छुटी का समय, वेदपाठ न करने की छुट्टी का काल ।

नित्याभियुक्त (वि०)—सर्वप्रकार से योगाभ्यास में संलग्न पुरुष, योगाभ्यासी, केवल देह की रक्षा के लिये यत्नपरायण ।

निद (न०)—विष, जहर ।

निदद्रु (पु०)—विषभय से पलायित पुरुष, दद्रु नामक रोग से रहित ।

निदर्शन (न०)—दृष्टान्त, मिसाल, उदाहरण ।

निदर्शना (स्त्री०)—काव्यालङ्कार का एक भेद ।

निदाघ (पु०)—गर्मी का समय, उष्ण-काल, ग्रीष्मकाल, ज्येष्ठ और आषाढ के मास ।

निदाघकर(पु०)—सूर्य, सूरज ।

निदाघकाल(पु०)—ग्रीष्म ऋतु, ज्येष्ठ और आषाढ मास ।

निदान (न०)—आदिकारण, रोग का निर्णय, अन्त, अखीर, अवसान, वत्सरज्जु, रोग का कारण, रोग का निश्चय कराने वाला एक ग्रन्थ, तपश्चर्या के फल की याचना ।

निदिग्ध (वि०)—लेप आदि से बढ़ा हुआ, उपचित, लेपवर्द्धित सुगन्धित ।

निदिग्धा (स्त्री०)–एला, इलायची ।
निदिध्यासन (न०)–ध्यान का भेद, गुरुमुख से श्रुत पदार्थ का पुनः २ विचार, विचारित अर्थ में निमज्जित होना ।
निदेश (पु०)–आज्ञा, शिक्षा, हुक्म, पात्र, वर्त्तन, समीप, पास, निकट ।
निदेष्टा [ष्टृ] (वि०)–निदेश करने वाला, उपदेशक, उपदेशकर्त्ता ।
निद्रा (स्त्री०)–नींद, सोना, शयन, कर्मेन्द्रियों के विषयों से जीव की पृथक् होने की अवस्था ।
निद्राण(वि०)–वह पुरुष जिसे निद्रा आगई हो, सोया हुआ, निद्रित, शयित ।
निद्रालु (वि०)–अतिनिद्रा वाला, निद्राशील, जिसे बहुत निद्रा आती हो ।
निद्रावृक्ष(पु०)–अंधेरा, अन्धकार ।
निधन (पु०)–मरण, मरना, मृत्यु, मौत, नाश ।
निधान(न०)–निधि, ख़ज़ाना, आसक्त कार्य की समाप्ति, कामका अंत।
निधि(पु०)–शङ्ख पद्म आदि कोष, समुद्र, आधार, आश्रय जैसे–गुणनिधि, विद्यानिधि, जलनिधि इत्यादि ।
निधिनाथ(पु०)–ख़ज़ाने का स्वामी, कुबेर । [निधीश, निधीश्वर आदि शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं] ।
निधुवन(न०)–जिस में हस्त पादादि अंग कम्पायमान होते हैं, मैथुन, स्त्रीसंग, सुरत, कामभोग ।
निध्यान (न०)–दर्शन ।
निध्वान (पु०)–शब्द, आवाज़ ।
निन [ना] द (पु०)–शब्द, रव की ध्वनि, शृगाल का शब्द ।
निन्दक (वि०)–निन्दा करने वाला, चुग़लख़ोर ।
निन्दतल (वि०)–बुरे हाथ वाला, निन्दितहस्त ।
निन्दा (स्त्री०)–अपवाद, दुष्कृति, गर्हा, बदनामी, दूषण, ऐब, चुग़ली ।
निन्दास्तुति (स्त्री०)–निन्दा से मिली हुई स्तुति, निन्दागर्भित स्तुति, व्याजस्तुति ।
निन्दित (वि०)–तिरस्कृत, धिक्कृत, अपमानित, डाटा हुआ ।
निप (अस्त्री०) –कलश, घड़ा, घट, कदम्ब का वृक्ष ।
निपत्या (स्त्री०)–युद्ध की पृथ्वी, युद्धभूमि, लड़ाई की जगह ।
निपाक (पु०)–पाक, पका हुआ ।
निपात (पु०)–पतन, अन्तिम पतन, मृत्यु, मरना, व्याकरण में 'च' वा 'प्र' आदि ।
निपातन (न०)–अधोनयन, नीचे पहुँचाना, ख़लीकरण, व्याकरण में लक्षण से अनुत्पन्न (असिद्ध) पदसिद्धि ।
निपान(न०)–कूप के समीप का जलाशय, चौबच्चा, गौ दुहने का पात्र, गोदोहनपात्र, जलाशयमात्र ।

निपीडित (वि०)-पीड़ा पहुंचाया हुआ, निचोड़ा हुआ।

निपुण (वि०)-कार्यकुशल, काम करने में दक्ष, होशियार, प्रवीण।

निबन्ध (पु०)-ग्रन्थरचना, मूत्रावरोध रोग, निम्ब वृक्ष, दिन या समय के निश्चित करने पूर्वक देने की प्रतिज्ञा, अफारे का रोग, आनाहरोग।

निबन्धन (न०)-वह साधन जिस से मनुष्य बांधा जाता है, वीणा के बन्धन का उपरिभाग।

निबर्हण (न०)-मारण, मारना।

निभ (पु०)-तुल्य, सदृश, बराबर।

निभालन (न०)-दर्शन, अवलोकन।

निभूत (वि०)-बीता हुआ काल, भूतकाल।

निभृत (वि०)-नम्र, विनीत, निर्जन, निश्चल, अटल, अस्तासन्न, छिपने के समीप पहुंचा हुआ।

निमज्जथु (पु०)-शयन, सोना, जलावगाहन, मौनावलम्बन, चुप रहना।

निमज्जन (न०)-स्नान, अवगाहन, चञ्चलतारहित स्थिति, मौनधारण।

निमन्त्रण (न०)-उत्सवविशेष में भोजनार्थ बुलाना, भोजन के लिये बुलावा भेजना, आह्वान, नियोजनविशेष।

निमय (पु०)-विनिमय, अदलाबदली।

निमान (न०)-मोल, क़ीमत, मूल्य।

निमि (पु०)-स्वनाम से प्रसिद्ध राजा इक्ष्वाकु का वंशज।

निमित्त-क (न०)-हेतु, सबब, कारण, चिन्ह, निशान, शकुन, उद्देश्य।

निमित्तकारण (न०)-तीन प्रकार के कारणों में से एक अर्थात् तृतीय कारण।

निमित्तवित् (पु०)-ज्योतिषी, दैवज्ञ।

निमिष (पु०)-विष्णु, समयविशेष, आंख का मींचना, चक्षुर्मीलन।

निमीलन (न०)-मृत्यु, मरना, सकुञ्चित होना, आंख मींचना, वर्त्मगत रोगविशेष।

निमेष (पु०)-नेत्र के स्वाभाविक स्फुरण का काल, नेत्र का मींचना, समयविशेष, पलक का फड़कना, पक्ष्मस्पन्दन।

निमेषकृत् (स्त्री०)-बिजली, विद्युत्।

निमेषरुक् [च] (पु०)-खद्योत, पटबीजना, जुगनू।

निम्न (वि०)-गहरा, नीचा, गम्भीर। पु०-शत्रुमित्र का पुत्र, सत्राजित और प्रसेन का पिता।

निम्नगा (स्त्री०)-नीचे स्थान से जाने वाली नदी, नदीमात्र। वि०-नीचे जाने वाला।

निम्नोन्नत (वि०)-नीचा और ऊंचा, उन्नतानत।

निम्ब (पु०)-नींब का वाचक।

निम्लोचन (न०)-छिपने के समीप, अस्तप्राय।

नियत (वि०)-निश्चित, नित्य, सेवा में तत्पर, सदाचरणयुक्त, जितेन्द्रिय।

न०-प्रतिदिन का कर्त्तव्य काम ।

नियति (स्त्री०)-भाग्य, प्रारब्ध, क़िस्मत, नियम ।

नियती(स्त्री०)-दुर्गा ।

नियतेन्द्रिय (वि०)-जिसने इन्द्रियें वश में करली हों, इन्द्रिय-दमनशील ।

नियन्ता[तृ] (पु०)-रथ चलाने वाला, सारथि, दण्डदाता । वि०-पशु को चलाने वाला ।

नियन्त्रित (वि०)-बाधारहित, अनर्गल, प्रतिरुद्ध, सम्यक् प्रकार से वशीकृत ।

नियम(पु०)-अङ्गीकार प्रतिज्ञा, इक़रार, विश्वास, निश्चय, एक व्रत, मीमांसाप्रतिपादित एक विधि; शौच, सन्तोष, तप, वेदपठन और ईश्वर में मन का लगाना ।

नियमित (वि०)-कृतनियम, बंधा हुआ, बद्ध ।

नियाम(पु०)-नियम ।

नियामक (पु०)-मल्लाह, कर्णधार, नाव चलाने वाला । वि०-स्वामी, मालिक ।

नियुक्त (वि०)-वह पुरुष जिस ने विधवा के साथ नियोग किया हो, नियोगविशिष्ट, निश्चित, अवधारित, आज्ञा किया हुआ, आज्ञप्त ।

नियुत (न०)-१०००००० दश लक्ष की संख्या का वाचक । [नियुक्त ।

नियुद्ध (न०)-बाहुयुद्ध, भुजाओं से

नियोग (पु०)-अवधारण, निश्चय, सेवकों को कार्य में लगाना, आज्ञा, सन्तानार्थ विधवाविवाह आदि।

नियोग्य (वि०)-लगाने को योग्य, नियोगार्ह, स्वामी, मालिक ।

नियोजन (न०)-काम में लगाना, आज्ञा देना, मुक़र्रिर करना ।

नियोज्य(वि०)-कार्य में लगाने योग्य, भृत्य, प्रेष्य, नौकर ।

निर् (अ०)-मना, निषेध, निश्चय, नहीं, बाहिर ।

निरग्नि (पु०)-अग्निहोत्रादि कर्मशून्य; होमाग्नि से रहित ।

निरङ्कुश (वि०)-जिसका कोई प्रतिबन्धक न हो, बाधाशून्य, अनिवार्य ।

निरञ्जना (स्त्री०)-अन्धकाररहित, पूर्णिमा। वि०-अज्ञानरहित ।

निरंश(वि०)-अंशरहित, पवित्र, भागशून्य, संक्रान्ति का दिवस ।

निरत (वि०)-नियुक्त, लगा हुआ ।

निरत्यय (वि०)-नाशरहित, छलरहित, कपटशून्य, जो न रुक सके, अप्रतिरुद्ध ।

निरन्तर (वि०)-लगातार, निरवधि, सघन, अवकाशरहित, निर्भेद, विना फ़र्क़, अनात्मीय, अच्छिद्र ।

निरन्तराभ्यास (पु०)-जिसमें निरन्तर अभ्यास किया जाता हो, स्वाध्याय।

निरपत्रप (वि०)-लज्जाशून्य, निर्लज्ज, धृष्ट, बेशर्म । [बेपर्वाह ।

निरपेक्ष (वि०)-इच्छारहित, अनपेक्ष,

निरय (वि०)-नरक, पापफल भोगने का स्थान । [विघ्नरहित, बाधाशून्य ।

निरर्गल (वि०)-न रुकने वाला, प्रति-

निरर्थक (वि०)-निष्फल, प्रयोजनरहित, बेमतलब, अर्थशून्य ।

निरवग्रह (वि०)-जिसका कोई प्रतिबन्धक न हो, स्वतन्त्र, वर्षा के प्रतिबन्ध का अभाव । [रहित, स्वच्छ, श्रेष्ठ ।

निरवद्य (वि०)-बेकलङ्क, निर्दोष, लांछन-

निरवयव (वि०)-अवयवरहित, निराकार, परम सूक्ष्म । पु०-आकाशादि ।

निरवशेष (वि०)-सब, सम्पूर्ण, सारा ।

निरवसित (वि०)-पात्रबहिष्कृत, पात्र से बाहर किया हुआ, अतिनीचवर्ण ।

निरशन (न०)-अनशन, भोजनाभाव । वि०-बिना भोजनवाला ।

निरस (वि०)-नीरस । पु०-रस का अभाव ।

निरसन(न०)-प्रत्याख्यान, तिरस्कार करना, पृथक् करना, छोड़ना ।

निरस्त (वि०)-शीघ्रता से उच्चारण किया गया, जल्दी बोला हुआ, शीघ्रोच्चारित, त्यक्तशर, थूका हुआ, निष्च्युत, प्रतिहत, भेजा हुआ, प्रेषित ।

निराकरण (न०)-पृथक् करना, दूर करना, निवारण, अनादर करना ।

निराकरिष्णु (वि०)-पृथक् कर देने वाला, निराकरणशील, निगलने वाला ।

निराकार (पु०)-आकाररहित, परमेश्वर, ब्रह्म । [तिरस्कार प्रत्याख्यात निरस्त ।

निराकृत (वि०)-तिरस्कृत किया हुआ,

निराकृति (स्त्री०)-दूर करना, हटाना, निवारण । वि०-आकाररहित, अस्वाध्याय ।

निराचार (वि०)-आचार न करने वाला, आचारशून्य, अनाचारी ।

निरातपा (स्त्री०)-जिसमें आतप दूर हो गया हो, रात्रि, रात ।

निराबाध (वि०)-बाधारहित, एक पक्षाभास का नाम ।

निरामय (वि०)-नीरोग, रोगरहित, जिसे कोई रोग न हो, उपद्रवादिशून्य । पु०-वन का छाग और वनशूकर ।

निरालम्बा (स्त्री०)-आकाशमांसी, शुक्लयजुर्वेद के अन्तर्गत एक उपनिषद् । वि०-आश्रयशून्य ।

निराश (वि०)-आशारहित, इच्छाशून्य ।

निराहार (वि०)-भोजनरहित ।

निरिङ्गिणी (स्त्री०)-कनात, जवनिका ।

निरिन्द्रिय (वि०)-इन्द्रियशून्य, इन्द्रियों का दमन करने वाला ।

निरीक्षण (न०)-दर्शन, अवलोकन ।

निरीक्षित (वि०)-देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ, अवलोकित ।

निरीश (न०)-फाल, लांगलस्थित लौहविशेष । वि०-नास्तिक, ईशरहित ।

निरीष (न०)-पूर्ववत् ।

निरीह (पु०)-विष्णु, परमेश्वर ।

निरुक्त(न०)-धातु और प्रत्यय आदि के अर्थों की सम्यग्विवेचनापूर्वक वैदिक शब्दार्थों का प्रतिपादन करने वाला एक ग्रन्थविशेष ।

निरुक्ति (स्त्री०)-धातु और प्रत्यय के विभाग पूर्वक किसी शब्द की पूर्ण रूप से व्याख्या, निघण्टु पर किया हुआ यास्क मुनि का भाष्य, पूर्णरूप से कथन ।

निरुद्ध (वि०)-रुका हुआ, अरुद्ध ।

निरुद्योग (वि०) उद्योग न करनेवाला, निरुद्यम, आलसी ।

निरुपद्रव (वि०)—उपद्रवरहित, उत्पातशून्य ।
निरुपम (वि०)—जिस की कोई उपमा न हो, अनुपम,उपमारहित ।
निरुपाख्य(वि०)-जो मन वाणी से प्रकाशित न किया जा सके,परमात्मा, परब्रह्म, अव्यक्तस्वरूप, मिथ्या पदार्थ, वन्ध्यापुत्रादि ।
निरुपेक्ष (वि०)—बेपर्वाह,उपेक्षारहित-अनुपेक्ष ।
निरूढ (पु०)—शक्ति के सदृश लक्षणा से अर्थ का द्योतक शब्द । वि०-बिना विवाहा पुरुष,अनूढ़ारहित ।
निरूढलक्षणा (स्त्री०)—शक्ति के समान लक्षणा, वह लक्षणा जो व्याकरण तथा कोष से प्रसिद्ध अर्थ में शक्ति के तुल्य लक्षणरूप शब्दार्थ को प्रकाशित करे ।
निरूढा (स्त्री०)—वह लक्षणा जो शब्द की शक्ति को प्रकाशित करे ।
निरूढि (स्त्री०)—ख्याति, प्रसिद्धि, ओहदत्त ।
निरूपण (न०)—विचार, निदर्शन, मिसाल, दृष्टान्त, प्रकाश, अच्छे प्रकार से विचारना, वह विचार जिस में तत्त्वज्ञानानुकूल शब्द का प्रयोग किया जावे ।
निरूपित (वि०)—वर्णित, निरूपण किया हुआ,कृतनिरूपण, लगाया हुआ, नियुक्त ।
निर्ऋति (स्त्री०)—अलक्ष्मी, लक्ष्मी की ज्येष्ठा भगिनी, घृणास्पद । पु०-दक्षिण और पश्चिम की दिशा का स्वामी । वि०-उपद्रवरहित ।
निर्ऋंथ (पु०)—सामवेद का वाचक ।
निरोद्धव्य (वि०)—रक्षा करने के योग्य, रक्षणीय ।
निरोध (पु०)—नाश, आपत्ति, निग्रह, रोक, प्रलय ।
निरोधन (न०)—रोकना, बन्द करना, कारागारादि में डालना ।
निर्गत (वि०)—बाहर गया हुआ, बहिःप्राप्त । [वाला
निर्गन्ध (वि०)—गन्धरहित, बेगन्ध
निर्गन्धन(न०)—मारना, नाश करना, मारण, निर्मन्थन । [वृक्ष ।
निर्गन्धपुष्पी (स्त्री०)—शाल्मलि का
निर्गुण (पु०)—सत्त्व, रजः और तमोगुण से रहित, परमात्मा ।
निर्गुण्डी (स्त्री०) जिस में रस न हो, नीरस, कमल की मूल,सिन्धुवार नामक एक वृक्ष ।
निर्गूढ (पु०)—वृक्ष का एकोदर, वृक्षकोटर। वि०-ढका हुआ,संवृत,गुप्त।
निर्ग्रन्थ-क(पु०)—नंगा,नग्न, दिगम्बर, एक मुनि, जुआरी,निर्धन, मूर्ख, बौद्धभेद । वि०-ग्रन्थनिर्गत, जिस के हृदय से क्रोधाहङ्काररूप गांठ निकल गई हो,निरस्तहृदयग्रन्थि, असहाय ।
निर्ग्रन्थिक(पु०)—वह पुरुष जो कौपीन भी धारण न करे,क्षपणक। वि०-निपुण, निर्गुण, ग्रन्थिरहित ।
निर्घात(पु०)—वह शब्द जो वायु पर

वायु की चोट पड़ने से होता है, परस्पर दो पवनों के टकरा जाने का शब्द, भूकम्प, भूचाल, नाश।
निर्घृण (वि०)-निर्दय, दयारहित, बेरहम, दया न करने वाला।
निर्घोष(पु०)-प्रत्येक प्रकार का शब्द, शब्दमात्र।
निर्जन (वि०)-जनरहित स्थानादि, विजन, वह प्रदेश जहां कोई भी जन न हो, एकान्त।
निर्जर(पु०)-देवता, देव। वि०-वृद्धावस्था से रहित। [पर्णी।
निर्जरा(स्त्री०)-गिलोय, गुडुची, ताल-
निर्जल(वि०)-जलरहित देशादि।
निर्जलैकादशी (स्त्री०)-ज्येष्ठ मास के शुक्लपक्ष की एकादशी, निर्जला एकादशी जिस में आचमन के अतिरिक्त जल पीना वर्जित है।
निर्जित(वि०)-पराजय को प्राप्त हुआ, विजित, वश में हुआ, वशीकृत।
निर्जीव (वि०)-जीवात्मरहित, मृत, मृतशरीर, प्राणिशून्य, ऐसा शरीर जिसे जीव ने छोड़ दिया हो।
निर्झर (पु०)-झरना, पर्वत से जल निकलने का स्रोत, पर्वतावतीर्णजलप्रवाह।
निर्झरी(स्त्री०)-नदी, दरिया।
निर्झरी [न्](पु०)-पर्वत, पहाड़।
निर्झरिणी (स्त्री०)-झरने के जलप्रवाह से उत्पन्न हुई नदी।
निर्णय (पु०)-अवधारण, निश्चय, यकीन, फ़ैसला, मीमांसा के पांच अवयवों में से अन्तिम, ज्ञान।
निर्णिक्त (वि०)-साफ़ किया हुआ, शोधित, जिस का मल दूर हो गया हो, अपनीतमल।
निर्णीत (वि०)-निर्णय किया हुआ, निश्चय किया हुआ, निश्चयीकृत।
निर्णेजक(पु०)-रजक, धोबी।
निर्दष्ट(वि०)-दूसरों की बुराई में लगा हुआ, परापवादरत, निर्दय, तीव्र, प्रयोजनरहित, मत्त।
निर्दय(वि०)-दयारहित, बेरहम।
निर्दहन (पु०)-भल्लातक, भिलावा, जिस में से आग दूर हो गई हो, अग्निशून्य।
निर्दहनी(स्त्री०)-मूर्वानामक लता।
निर्दिग्ध(वि०)-बली, बलवान्, बलिष्ठ।
निर्दिष्ट(वि०)-निश्चय किया हुआ, निश्चित, बतलाया हुआ, कथित, आदिष्ट, उपदिष्ट।
निर्देश(पु०)-आज्ञा, हुक्म, शासन, द्योतित करने वाला शब्द, रूप और नाम; वेतन। वि०-देश से निकाला हुआ।
निर्देष्टा [ष्टृ] (पु०)-निर्देशकर्ता, उपदेष्टा, उपदेशक। [विक्रूर।
निर्दोष(वि०)-दोषरहित, अनपराधी,
निर्धन (पु०)-बूढ़ा बैल, जरद्गव। वि०-दरिद्र, ग़रीब, धनहीन।
निर्धर्म (वि०)-धर्म न करने वाला, धर्महीन।
निर्धार (पु०)-निश्चय, जाति गुण और क्रिया को हृदय में रखकर

जात्यादि की उत्कृष्टता से सजातीय से पृथक् करना, यथा— मनुष्यों में ब्राह्मण, गौओं में काली गौ और पथिकों में शीघ्रगामी श्रेष्ठ है।

निर्धारण(न०)—पूर्ववत्।

निर्धारित(वि०)—निश्चय किया हुआ, निश्चयीकृत, निर्णीत, फैसला किया हुआ, विदित किया गया, निर्धारणीय विषय।

निर्धार्य (वि०)—निर्धारण करने योग्य, निर्धारयितव्य, विचारने योग्य।

निर्धूत (वि०)—खण्डित, त्यागा गया, निरस्त, डाटा हुआ, भर्त्सित।

निर्धौत (वि०)—धोया हुआ, प्रक्षालन किया गया, प्रक्षालित।

निर्द्वन्द्व (वि०)—सुख दुःख, शीत उष्ण, लाभालाभ और रागद्वेष के से जोड़े से शून्य।

निर्बन्ध (पु०)—हठ, आग्रह, अभिनिवेश अभिलषित वस्तु की प्राप्ति में बार २ प्रयत्न, अर्ज़, अभ्यर्थना, प्रार्थना।

निर्बाध (वि०)—जिस से पीड़ा दूर हो गई हो, उपद्रवरहित, बेरोक, बिना कष्ट।

निर्भट (वि०)—मज़बूत, दृढ़।

निर्भय (वि०)—भयरहित, निरशङ्क। पु०—उत्तम अश्व, श्रेष्ठ घोड़ा, रौच्य मनु का पुत्र।

निर्भर (न०)—जिस में अधिक भार हो, अतिशय, अतिमात्र, जो अत्यधिक हो।

निर्भर्त्सित (वि०)—डाटा हुआ, निन्दित, तिरस्कृत, छोड़ दिया गया, नष्ट किया हुआ।

निर्भाग्य (वि०)—भाग्यहीन, मूढ, अल्पपटु, मन्द।

निर्मद (पु०)—ऐसा हस्ती जिस का मद दूर हो गया हो। वि०—मदशून्य।

निर्मम (वि०)—जिस का अपनापन जाता रहा हो, ममत्वरहित, स्त्री पुत्रादि में ममता न करने वाला।

निर्मल (वि०)—रागादि वा रजस्तमोगुण आदि मल से रहित, शुद्ध, मल को दूर करने वाला, कतक नामक वृक्ष का फल जो कि जल में डालने से उस के सब मल को दूर कर देता है।

निर्मलोपल(पु०)—शुद्धपत्थर,स्फटिक।

निर्माल्य (न०)—देवता पर चढ़ाया हुआ द्रव्य, देवोच्छिष्ट वस्तु, देवता के विसर्जनानन्तर उस को समर्पण किया हुआ द्रव्य।

निर्मुक्त (पु०)—वह सर्प जिस ने केंचुली उतार दी हो, मुक्तकञ्चुक, त्यक्तत्वक्सर्प। वि०—भयरहित, अपने पास कुछ न रखने वाला, निष्परिग्रह, बन्धनरहित।

निर्मुट (न०)—वह दूकान जिस पर कर न हो, करशून्य हट्ट। पु०—पुष्परहित वृक्ष।

निर्मोक (पु०)–केंचुली, सर्प की खाल, सर्पत्वक्,त्वङ्नाश, कवच,सन्नाह, वक्तर, आकाश।

निर्मोक्ष (पु०)–त्याग का वाचक।

निर्यन्त्रण (वि०)–बाधाशून्य, निरर्गल, बेरोक, यन्त्रणारहित, उच्छृंखल।

निर्याण(न०)–हस्ती के नेत्र का कोना, गजापाङ्ग देश, जञ्जीर, वह रस्सी जिससे पशुओं के पाव बाधे जाते हैं, मोक्ष।

निर्यातन (न०)–वैर का शोधन, शत्रुप्रतीकार, धरोहर का समर्पण करना, ऋणादि का शोधन, दान, त्याग, प्रतिदान। [कर्णधार।

निर्याम (पु०)–मल्लाह, नाविक,

निर्यास (पु०)–काढ़ा, क्वाथ, कषाय, गोंद, वृक्ष का रस, रस।

निर्युक्तिक (वि०)–युक्तिशून्य, जिस के पास युक्ति न हो।

निर्यूष (पु०)–क्वाथ, कषाय, काढ़ा।

निर्यूह (पु०)–द्वार, दरवाजा, क्वाथ, काढ़ा, नागदन्त, खूंटी, मुकुट, शिखर, चोटी। [लक्षणशून्य।

निर्लक्षण (वि०)–लक्षण से रहित,

निर्लिङ्ग (पु०)–विष्णु, श्रीकृष्ण, निरीह। वि०–लेपरहित।

निर्लेप (वि०)–आसक्तिरहित, लेपशून्य, निष्पाप।

निर्ल्वयनी (स्त्री०)–केंचुली, सर्प की खाल, सर्पत्वक्।

निर्वचन (न०)–पद व्याख्या को प्रकृति (धातु) और प्रत्यय के विभाग दिखलाने पूर्वक अर्थ को प्रकटित करे, निरुक्ति, अर्थ का निष्कर्ष, पूर्णरूप से कथन, चुप, मौन।

निर्वपन (न०)–दान, देना, पिण्डदान, श्राद्ध करना, अन्नादि का बांटना, बोना, बीजवपन।

निर्वर्त्तित (वि०)–सीमा तक पहुंचा हुआ, निष्पादित, पूर्ण किया गया, पूर्णित।

निर्वहण (न०)–नाट्योक्तिमें आरम्भ की हुई कथा की पूर्त्ति, प्रस्तुत कथा की समाप्ति, अन्त, नाश, नाटक की सन्धिविशेष।

निर्वाण (न०)–मुक्ति, मोक्ष, अपवर्ग, विश्रान्ति, समाप्ति, हस्ती का स्नान, नाश। वि०–मुक्त, शान्त, विष्णु, शून्य, निश्चल।

निर्वात (वि०)–वायु के सञ्चार से रहित देश, वायुरहित।

निर्वाद (पु०)–लोकनिन्दा, बदनामी, जनश्रुति, शोहरत, अवज्ञा, निश्चितवाद, विवादाभाव।

निर्वाप(पु०)–मृत पितरो के उद्देश्य से श्राद्ध आदि में किया दान, भिक्षा के लिये दान। [दान।

निर्वापण (न०)–वध, मारना, देना,

निर्वार्य (वि०)–सत्वसम्पदा से निश्शङ्क होकर कार्य करने वाला, भय, पराक्रम, व्यसन और ऐश्वर्य की वृद्धि में मन की अविकृत दशा

को सत्व कहते हैं उस सत्व की सम्पदा से उद्योग करता हुआ निर्भीक होकर कार्य करने वाला।
निर्वासन(न०)—ग्राम वा देश से पृथक् करना, निकालना, देश से निकाल देना, मारदेना, विसर्जित करना।
निर्वाह (पु०)—कार्य का सम्पादन, कार्यप्रबन्ध, पूर्ण करना, समाप्ति, निष्पत्ति, आजीविका, अन्त।
निर्वाहण(न०)—नाट्योक्ति में प्रस्तुत कथा की समाप्ति।
निर्विकल्प-क(न०)—वह ज्ञान जिससे ज्ञाता और ज्ञेय का विभाग, विशेष्य और विशेषण रूप सम्बन्ध वा नाम तथा गुणत्व का सम्बन्ध दूर हो गया हो; जीव और ब्रह्म की अखण्डाकार एकत्वविषयक वृत्ति का द्योतक ज्ञान; न्यायशास्त्र में वह ज्ञान जो प्रकारता आदि से रहित, सम्बन्धानवगाहि और इन्द्रियों के गोचर न हो।
निर्विकार (वि०)—विकार से रहित, विकारशून्य। पु०—परमात्मा, जन्ममृत्यु आदि षड् विकारों से पृथक्।
निर्विण्ण (वि०)—वैराग्य वाला, उदासीन, अनुतापित, पश्चात्तापयुक्त, पछताने वाला।
निर्विन्ध्या (स्त्री०)—विन्ध्य नामक पर्वत से निकली हुई नदी।
निर्विषा (स्त्री०) वह औषध जिसके सेवन से विष नष्ट हो जाता है, निर्विषी, विषापहा, तृणविशेष।
निर्वीजा (स्त्री०)—वह दाख जिस में बीज न हों, द्राक्षाविशेष।
निर्वीर (वि०)—वीररहित, वह देश वा नगर जिस में कोई शूर पुरुष न हो।
निर्वीरा (स्त्री०)—वह स्त्री जिस के पति और पुत्र न हों, पतिपुत्रविहीना स्त्री।
निर्वृति (स्त्री०)—सुन्दर स्थिति, सुख, अस्त हो जाना, छिप जाना, अस्तङ्गमन, मुक्ति, मोक्ष, मृत्यु, शान्ति।
निर्वृत्त (वि०)—निष्पन्न, सम्पादित, पूर्ण किया हुआ, वृत्तिशून्य, बिना आजीविका वाला।
निर्वृत्ति(स्त्री०)—सम्प्राप्ति,प्राप्त होना, आगति। वि०-वृत्तिरहित।
निर्वेद (पु०)—अवज्ञा-तिरस्कार,स्वावमान, पश्चात्ताप, औदासीन्य, विरक्ति,वैराग्य,सांसारिक पदार्थों से बहिर्मुख होना। वि०-वेदरहित
निर्वेश (पु०)—वेतन, तनख्वाह, भोग मूर्छा, विवाह, प्राप्ति।
निर्व्यथन (न०)—छिद्र, सूराख़, बिल, व्यथाभाव।

दाह, पूर्णरूप से ले जाना, निः-शेषहरण, दाह के लिये मृतक का लेजाना।

निहार (पु०)—गड़े हुए काटे आदि का निकालना, मल और मूत्रादि का परित्याग, मृत शरीर को दाहार्थ बाहर ले जाना, मूलोच्छेदन, यथेष्टविनियोग।

निहारी [न्] (पु०)—वह गन्ध जो दूर तक फैलने वाला हो। वि०—शव को जलाने के लिये बाहर ले जाने वाला।

निह्राद (पु०)—शब्द, आवाज़, ध्वनि।

निलय (पु०)—घर, गृह, स्थान, रहने की जगह।

निलिम्प (पु०)—देवता, देव।

निलिम्पनिर्झरी (स्त्री०)—देवनदी, गङ्गा। [की गौ, सौरभेयी।

निलिम्पा-म्पिका (स्त्री०)—देवताओं

निलीन (वि०)—छिपा हुआ, संलग्न, व्याप्त।

निवपन(न०)—वह दान जो मृत पितरों के उद्देश्य से दिया जाता है।

निवरा (स्त्री०)—कुमारी, अविवाहिता कन्या, वह कन्या जिसका विवाह न हुआ हो। [स्थान।

निवसति (स्त्री०)—घर, गृह, आवास-

निवसथ (पु०)—ग्राम, गांव।

निवसन (न०) घर, गृह, वस्त्र, आच्छादन, वास, कपड़ा।

निवह (पु०)—निरोह, समुदाय, झुण्ड, सातप्रकार के पवनों में से एक।

निवात (वि०)—वायुशून्य, बिना वायु वाला देश। पु०-ऐसा कवच जो शस्त्र से न काटा जा सके, शस्त्राभेद्य कवच।

निवातकवच (पु०ब०)—प्रह्लाद नामक दैत्य के पुत्र जिन्हें इन्द्र के उपदेश से अर्जुन ने मारा था, एक देव का नाम।

निवाप(पु०)—मृत पितरों के नाम पर दिया दान, पितृदान, खेत, क्षेत्र।

निवारण(न०)—निश्चय दूर करना, निराकरण।

निवारित (वि०)—जिस का निवारण कर दिया गया हो, कृतनिवारण।

निवास (पु०)—गृह, घर, आश्रय।

निवासी[न्] (वि०)—निवास करने वाला, निवासकर्त्ता।

निविड (वि०)—छिद्ररहित, अवकाशशून्य, स्थूल, मोटा, सघन, सान्द्र, घिनका।

निविष्ट(वि०)—निवेशयुक्त, प्रविष्ट, कृतप्रवेश।

निवीत (न०)—कण्ठ में लटका हुआ यज्ञोपवीत, कण्ठलम्बितयज्ञसूत्र। वि०—आच्छादनवस्त्र।

निवीती[न्] (वि०)—कण्ठमेंलम्बायमानयज्ञसूत्र वाला, कण्ठलम्बितयज्ञोपवीतयुक्त।

निवृत्त (न०)—मना, निषेध, हटा हुआ, निवृत्त, लौटा हुआ। वि०—मौनधारण किये हुए, मौनावलम्बी।

निवृत्तात्मा [न्] (पु०)—जिसका आत्मा शरीरादि के बन्धन से पृथक् हो, परमात्मा। [अप्रवृत्ति।

निवृत्ति (स्त्री०)—हटना, दूर होना, उपरम,

निवेदन (न०)—सम्मानपूर्वक जतलाना, विज्ञापन, दरख्वास्त, समर्पण, सौंपना।

निवेदित (वि०)–निवेदन किया हुआ, विज्ञापित, कृतनिवेदन ।
निवेश (पु०)-विन्यास, स्थापन, रचना, सेना के ठहरने का स्थान, विवाह ।
निवेशन (न०)–घर, गृह, नगर, स्थापन ।
निवेशनीय (वि०)–प्रवेश करने योग्य, निवेशार्ह ।
निवेश्य (वि०)–निवेश के योग्य, विवाह के लायक, विवाह्य, ऋणमुक्ति के लिये शोधनीय ।
निश्(स्त्री०)–रात्रि, रात, हल्दी ।
निशठ(पु०)–बलदेवजी का पुत्र ।
निश[ा]मन (न०)–दर्शन, देखना, सुनना, श्रवण ।
निशा (स्त्री०)–रात, रात्रि, हल्दी, मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु और मकर इन राशियों की संज्ञा । [मुर्गा ।
निशाकर(पु०)–चन्द्रमा, चांद, कुक्कुट,
निशागण(पु०)–रात्रियों का समूह ।
निशाचर(पु०)–जो रात्रि में विचरे, राक्षस, दैत्य, उलूक, चोर, शृगाल, सर्प, सांप, चक्रवाक, चकवा नामक पक्षी, पिशाच । वि०–रात में घूमने वाला ।
निशाचरी(स्त्री)–राक्षसी, व्यभिचारिणी, कुलटा स्त्री । [कार ।
निशाचर्म [न्] (न०)–अंधेरा, अन्ध-
निशाजल (न०)–ओस, पाला, बर्फ ।
निशाट (पु०)–उलूक, उल्लू । वि०-रात्रि में विचरने वाला ।
निशाटन (पु०)–पूर्ववत् ।
निशात (वि०)–तेज़ किया हुआ, शाण पर चढ़ा हुआ, तीक्ष्णीकृत ।
निशाद (पु०)–भील, निषाद । वि०-रात्रि में भोजन करने वाला, रात्रिभुक् ।
निशादि (स्त्री०)–संध्या समय ।
निशान्त(न०)–गृह, घर, प्रातःकाल । वि०-अतिशान्त ।
निशापति (पु०)–चन्द्रमा, कर्पूर ।
निशामणि (पु०)–चन्द्रमा ।
निशामन (न०)–देखना, अवलोकन, सुनना, श्रवण ।
निशामृग (पु०)-शृगाल, गीदड़ ।
निशारण (न०)–मारण, मारना, रात्रि का युद्ध ।
निशारत्न (न०)–चन्द्रमा, चांद ।
निशावृन्द (न०)–रात्रिसमूह, रात्रिगण
निशावेदी [न्] (पु०)–कुक्कुट, मुर्गा ।
निशाह्स (पु०)–कुमुद नामक कमल ।
निशाह्वा (स्त्री०)–हल्दी, हरिद्रा ।
निशित(वि०)–शाण पर चढ़ाया हुआ, तेज़ किया हुआ । न०-लौह ।
निशीथ (वि०)–आधीरात, अर्द्धरात्र, रात्रिमात्र ।
निशीथिनी (स्त्री०)–रात्रि, रात ।
निशीथिनीनाथ(पु०)–चन्द्रमा, चन्द्र ।
निशीथ्या (स्त्री०)–रात्रि, रात ।
निशुम्भ (पु०)–एक दैत्य जो कि कश्यप की दनुनाम्नी भार्या में उत्पन्न हुआ और शुम्भ का कनिष्ठ भ्राता था ।
निशुम्भन (पु०)–मारण, मारना ।
निशुम्भमर्दिनी(स्त्री०)–दुर्गा का वाचक ।
निशुम्भी (स्त्री०)–बुद्धिविशेष, वह

बुद्धि जिस से अज्ञानकृत अन्धकार दूर हो जावे।

निश्चय (पु०)—संशयरहित ज्ञान, निर्णय, वह अर्थालङ्कार जिस में अन्य को निषिद्ध कर दूसरे प्रकरणभूत की स्थापना की जाय, सिद्धान्त।

निश्चल (वि०)—चञ्चलतारहित, स्थिर, स्थायी, पक्का, असम्भावना और प्रतिकूलभावना से शून्य, पृथ्वी, ज़मीन।

निश्चला (स्त्री०)—शालपर्णी नामक औषध, पृथ्वी, भूमि, एक नदी, वि०-अचल।

निश्चलाङ्ग (पु०)—पर्वतादि, वक, बगुला। वि०-स्पन्दनशून्य।

निश्चायक (वि०)—निर्णय करने वाला, निर्णायक, निश्चयकर्त्ता, फैसला करने वाला।

निश्चारक (पु०)—मल का क्षय, पुरीषक्षय, पवन, स्वतन्त्र। [रहित।

निश्चिन्त (वि०)—चिन्ताशून्य, चिन्ता-

निश्चीयमान (वि०)—निश्चय किया विषय, निश्चितविषय, निश्चय किया जाने योग्य विषय।

निश्चुक्कण (न०)—दांत साफ करने की मिस्सी, दन्तशाण,।

निश्चेष्ट (वि०)—चेष्टाशून्य, निश्चेष्टित।

निश्वास (पु०)—मुख और नाक से बाहर निकला प्राणवायु, बहिर्मुखश्वास, श्वास, सांस।

निश्वाससंहिता (स्त्री०)—शिवप्रणीत एक संहिता।

निषङ्ग (पु०)—तूणीर, तर्कश, इषुधि।

निषङ्गथि (पु०)—आलिङ्गन, चिपटना, तृणविशेष, स्कन्ध, सारथि, रथ, धनुर्धारी। वि०-आलिङ्गन करने वाला।

निषङ्गी [न्] (वि०)—धनुर्धर, धनुष्मान्, धन्वी। पु०-धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

निषण्ण (वि०)—बैठा हुआ, उपविष्ट।

निषध (पु०)—सात प्रकार के स्वरों में से पहिला, स्वनाम से प्रसिद्ध एक राजा।

निषद्या (स्त्री०)—सौदा बेचने की जगह, दुकान, पण्यविक्रयशाला, खटोला, क्षुद्रखट्वा, मढी।

निषद्वर (पु०)—कीचड, पंक, कर्दम, जम्बाल, कामदेव का नाम।

निषद्वरी (स्त्री०)—रात, रात्रि।

निषध (पु०)—एक पर्वत जो इलावृत के दक्षिण भाग में हरिवर्ष की सीमा का द्योतक है, एक देश और तद्देशवासी, तद्देशीय राजा, कठिन, सख्त सूर्यवंशीय श्रीरामचन्द्र का प्रपौत्र, कुशपुत्र अतिथि का तनय, निषाद नामक स्वर।

निषाद (पु०) वीणा से उत्पन्न शब्द, कण्ठ से निकली ध्वनि, ब्राह्मणवर्ण से शूद्रा में उत्पन्न पारशव नामक वर्णसङ्कर जाति, चण्डाल, धीवरभेद, एक स्वर।

निषादी [न्] (पु०)—हस्तिपाल, पील-

वान्, हस्त्यारोह, जो हाथी को चलावे वा बैठावे।

निषिद्ध(वि०)–रोका हुआ,मना किया हुआ, हटाया गया, निवारित, निषेधविषय।

निषेक (पु०)–गर्भाधानसंस्कार, सिंचन, सींचना। न०–रेतः, वीर्य।

निषेध(पु०)–प्रतिषेध, मना, निवृत्ति।

निषेवण(न०)–सेवा, सत्कार, पूजा।

निषेव्य(वि०)–सेवा करने योग्य, सेवनीय, पूज्य, सत्कारार्ह।

निष्क् (१० स्रा०)–माप करना, तोल करना, मान।

निष्क (अस्त्री०)–सुवर्ण, सोना, स्वर्ण का बना आभूषण, वह परिमाण जो १६ माषे का हो, हार, वक्षःस्थल का भूषण, १०८ रक्तिका (रत्ती) परिमित स्वर्ण, स्वर्णनिर्मितपात्र, ४ माषे का परिमाण।

निष्कर्ष(पु०)–निचोड़, विस्तृत बात का तत्त्व वा सार, इतना परिमाण, इयत्तापरिच्छेद, विश्वास, भरोसा, यक़ीन।

निष्कल (वि०)–कलारहित, नष्टवीर्य, वह पुरुष जिस का वीर्य नष्ट हो गया हो, ब्रह्म। पु०–आश्चर्य, सहारा।

निष्कला (स्त्री०)–वह स्त्री जिस का रजोधर्म नष्ट हो गया हो, विगतार्त्तवा, बूढ़ी स्त्री।

निष्कली (स्त्री०)–ऋतुहीना, निवृत्तरजस्का स्त्री।

निष्काशि [षि] त (वि०)–निकाला हुआ, दूर किया हुआ, दूरीकृत, बहिष्कृत।

निष्कुट(पु०)–घर के समीप का उपवन, बग़ीचा, गृहनिकटोपवन, क्षेत्र, क़िला, अन्तःपुर।

निष्कुटि-टी(स्त्री०)–इलायची, एला।

निष्कुषित (वि०)–निकाला हुआ, निष्कासित।

निष्कुषित(वि०)–तोड़ा हुआ, खण्डित, त्रुटित, त्वचा से दूर किया हुआ।

निष्कुह (पु०)–पेड़ की खखोड़र, वृक्षकोटर।

निष्कृति (स्त्री०)–पापादि से दूर होना, छुट्टी पाना, निस्तार, निर्मुक्ति, अग्निविशेष।

निष्क्रम(पु०)–बुद्धि की शक्ति, निर्गम, निष्क्रमण नामक संस्कार, खोटा कुल, दुष्कुल।

निष्क्रान्त (वि०)–निकला हुआ, निर्गत।

निष्क्रिय(न०)–ब्रह्म, परमात्मा। वि०–क्रियाशून्य।

निष्ठ (वि०)–ठहरा हुआ, स्थित।

निष्ठा(स्त्री०)–नाश, निष्पत्ति, अन्त, याचना, प्रार्थना, प्राप्य, दुःख, नाट्योक्ति में प्रस्तुत कथा की पूर्णता वा समाप्ति, गुरुसेवा, धर्मादि का यक़ीन, व्याकरण में 'क्त' और 'क्तवतु' नामक दो प्रत्यय।

निष्ठित(न०)–सम्यक् प्रकार से स्थित होने वाला, निश्चयरूप से स्थित,

अच्छे प्रकार से जानने वाला, सम्यग्ज्ञाता।
निष्ठि [ष्ठी] व (पु०)-थूकना, मुख से कफ का निकालना।
निष्ठीवन (न०)-पूर्ववत्।
निष्ठुर(पु०)-कठिन, सख्त, परुष-वचन, कठोर वचन बोलना, कुवचन निकालना। वि०-तत्स्वभाव वाला। [थूका हुआ।
निष्ठ्यूत(वि०)-फेंका हुआ, क्षिप्त,
निष्ठ्यूति(स्त्री०)-पूर्ववत्।
निष्ठेवन(न०)-पूर्ववत्।
निष्णात (वि०)-सम्यक्प्रकार से स्नान किया हुआ, चतुर, निपुण, विज्ञ, पारङ्गत।
निष्पत्ति (स्त्री०)-पूर्त्ति, समाप्ति, पूरापन, फल, परिणाम, नतीजा, सिद्धि, निबटेरा, अन्त।
निष्पत्राकृति (स्त्री०)-अतिपीड़ा, अत्यन्त दुःख, बड़ी व्यथा, वाण का दूसरी तरफ़ से निकालना।
निष्पत्निका (स्त्री०)-करीर का वृक्ष।
निष्पद्यान (न०)-वह यान जिस के पाद न हों, नौका आदि।
निष्पन्न (वि०)-पूर्ण हुआ, सम्पन्न, समाप्त, सिद्ध।
निष्परिग्रह (वि०)-सांसारिक सामग्रियों से रहित, परमहंस, सन्यासी, साधु। वि०-त्यक्तधन।
निष्पादित(वि०)-समाप्त किया हुआ, सम्पादन किया गया, कृतसम्पादन, सिद्ध किया हुआ।
निष्प्रतिभ (वि०)-दीप्तिशून्य, कान्तिरहित, मूर्ख, जड़।
निष्प्रत्यूह(वि०)-विघ्नरहित, निर्विघ्न।
निष्प्रभ(वि०)-कान्तिशून्य, प्रभारहित
निष्प्रयोजन (वि०)-प्रयोजनरहित, बिना मतलब।
निष्फल (वि०)-बिना फल, फलरहित।
निष्फला (स्त्री०)-वह स्त्री जिस का ५५ वर्ष की अवस्था के उपरान्त रजोधर्म नष्ट हो गया हो।
निसर्ग (पु०)-स्वभाव, आदत।
निसूदन(न०)-वध, हिंसन, मारना। वि०-विनाशक।
निसृष्ट (वि०)-त्यक्त, फेंका हुआ, छोड़ा हुआ, रक्खा गया, न्यस्त।
निसृष्टार्थ (वि०)-दूतविशेष, सन्देशहारक।
निस्तल(वि०)-तलरहित, गोल, वर्त्तुल।
निस्तेजाः [स्] (वि०)-तेज:शून्य, तेजोरहित।
निस्त्रिंश (पु०)-तलवार, खड्ग।
निस्पृह (वि०)-सांसारिक विषयवासनाओं से रहित, स्पृहाशून्य।
निस्पृहा (स्त्री०)-इच्छा का अभाव।
निस्य [ष्य] न्द (पु०)-झरना, टपकना, क्षरण, थोड़ा २ बहना। वि०-क्षरणशील।
निस्रा [स्र] व (पु०)-प्रवाह, दरिया, नदी, चावलों का माड़, बहना, झरना।
निस्व [स्वा] न (पु०)-शब्द, आवाज़।
निहनन (न०)-वध, मारण, मारना, क़त्ल करना।

निहन्ता [तृ] (वि०)-मारने वाला, वधकर्त्ता, महादेव।
निहाका (स्त्री०)-गोधिका, गोसाप नामक जन्तुविशेष।
निहार (पु०)-तुषार, हिम, बर्फ।
निहित (वि०)-स्थापित, स्थापन किया हुआ, गुप्त, ठहरा हुआ, रक्खा हुआ।
निह्नव (पु०)-गुप्त, छिपा हुआ, अन्य प्रकार से स्थित वस्तु को प्रकारान्तर से प्रकटित करना, शाठ्य, अविश्वास।
निह्नुति (स्त्री०)-पूर्ववत्।
निह्राद (पु०)-वह शब्द स्पष्ट रूपसे जिस का अर्थ विदित न हो अर्थात् अव्यक्त शब्द।
निक्षण (न०)-चूमना, चुम्बन।
निक्षा (स्त्री०)-यूका, जूँ, लीख।
निक्षिप्त (वि०)-त्यक्त, त्यागा हुआ, न्यस्त, रक्खा हुआ, धरोहर, स्थापित धनादि।
निक्षेप (पु०)-समर्पण की हुई वस्तु, क्षेपण, त्याग।
नीक (पु०)-वृक्षविशेष।
नीकार (पु०)-न्यक्कार, तिरस्कार, धिक्कार।
नीकाश (वि०)-तुल्य, सदृश, बराबर, उपमा, निश्चय, यक़ीन।
नीच (वि०)-पामर, विवर्ण, वामन, बौना, क्षुद्र, जाल्म, निहीन। पु०-चोर नामक गन्धद्रव्य।
नीचकैः[स्](अ०)-नीचा, अल्प, अनुच्च,
नीचग (न०)-जल, पानी। वि०-पामर। [चले, नदी, दरिया।
नीचगा (स्त्री०)-जो नीचे स्थान से
नीचभोज्य (पु०)-प्याज़, पलाण्डु।
नीचैः [स्] (अ०)=नीचकैः।
नीड (पु०)-घोंसला, पक्षियों का निवास-स्थान, स्थान।
नीडज (पु०)-पक्षी, जानवर।
नीडजेन्द्र(पु०)-गरुड़,पक्षियों का राजा।
नीत (वि०)-प्राप्त, ले आया हुआ।
नीति (स्त्री०)-न्याय, शुक्राचार्य प्रभृतियों का रचा नीतिशास्त्र, प्रापण, प्राप्त करना।
नीतिघोष (पु०)-बृहस्पति का रथ, न्याय की घोषणा, न्यायध्वनि।
नीतिशास्त्र (न०)-वह शास्त्र जिस के द्वारा नीति का बोध हो, बृहस्पति, शुक्राचार्य, चाणक्य और कामन्दक आदि के निर्मित हितोपदेशादि ग्रन्थ।
नीथ (पु०)-नियन्ता, जो प्राप्त करावे, प्रापयिता, नेत्र, स्तुति, जल।
नीध्र(न०)-वन, चन्द्रमा, रेवती नामक नक्षत्र, वल्मीक, नेमि, धुरा।
नीप (पु०)-कदम्ब का वृक्ष, बन्धूक का पेड़, नील अशोक का वृक्ष।
नीर(न०)-जल, पानी, रस।
नीरज (न०)-कमल, मुक्ता, मोती। वि०-जल से उत्पन्न होने वाला, धूलिरहित देश या पुष्पादि। पु०-उद्र नामक एक जलजन्तु।
नीरद(पु०)-मेघ,बादल,नागरमोथा।

वि०–दन्तशून्य ।
नीरधि(पु०)–समुद्र ।
नीरनिधि(पु०)–समुद्र, सागर ।
नीरन्ध्र (वि०)–छिद्ररहित, घन, सान्द्र, गाढ़ा, अनवकाश ।
नीरस (पु०)–अनार, दाड़िम । वि०–रसशून्य । [विलाव ।
नीराखु(पु०)–जलविलाव, उद्र, उद्र-
नीराजन (न०)–आरती करना, आश्विन मास में अश्वादि की पूजा करना, कर्पूर वा प्रज्वलित दीपक आदि से सत्कार करना, शङ्ख में जल, शुद्धवस्त्र प्रदर्शन, आम्रपल्लवों से सिञ्चन और दण्डवत् प्रणाम करने पूर्वक सत्कार करना ।
नीरुक् (स्त्री०)–रोगाभाव, स्वास्थ्य, अनामय । [कुष्ठौषध ।
नीरुज (न०)–जिस से रोग दूर हो,
नील (पु०)–इलावृत नामक वर्ष की उत्तरदिशा में रम्यकवर्ष का एक मर्यादापर्वत, मणिविशेष, एक वानर का नाम, नीला रङ्ग, निधिविशेष, चिन्ह, वट का वृक्ष, अजमीढ का पुत्र, नागभेद । वि०–नीलवर्णयुक्त ।
नीलकण्ठ(पु०)–जिस का कण्ठ नीले रंग का हो, महादेव, मयूर, ग्रामचटक, गाव का चिड़ा, खञ्जन, मभोला नाम का एकपक्षी, चन्दन ।
नीलकमल(न०)–नीले वर्ण का कमल, नीलपङ्कज, नीलाम्बुज । [नामी ।
नीलकुन्तला (स्त्री०)–पार्वती की एक
नीलग्रीव(पु०)–महादेव, शिव । वि०–नीलवर्ण की ग्रीवा वाला ।
नीलङ्गु (पु०)–अतिक्षुद्र जन्तुमात्र का नाम, क्रिमिभेद, गीदड़, शृगाल ।
नीलजा(स्त्री०)–वितस्ता नामक नदी ।
नीलतरु(पु०)–नारिकेल, नारियल का वृक्ष ।
नीलदूर्वा(स्त्री०)–हरितवर्ण की दूर्वा ।
नीलपङ्क(न०)–अंधेरा, अन्धकार ।
नीलपिङ्गला (स्त्री०)–एक प्रकार की गोजाति । [प्रसिद्ध ।
नीलपिच्छ (पु०)–बाज नामक पक्षी,
नीलमणि(पु०)–अपने नाम से प्रसिद्ध मणि ।
नीलमाधव(पु०)–विष्णु, जगन्नाथ ।
नीलमौलिक(पु०)–खद्योत, जुगनू ।
नीललोहित (पु०)–जिस का कण्ठ नीला और बाल रक्तवर्ण के हों, शिव, महादेव, शिवनिमित्तक एक वृक्ष, नील और रक्तमिश्रित रंग ।
नीलवर्षाभू (पु०)–काले रंग का मेंढक, कृष्णभेक । स्त्री०–पुनर्नवा औषध ।
नीलवसन(पु०)–बलराम । वि०–नील वस्त्रों वाला । न०–नीला वस्त्र ।
नीलवस्त्र(पु०)–पूर्ववत् ।
नीलवासा(पु०)–शनिग्रह । वि०–नील वर्ण के वस्त्रों वाला ।
नीलवृष(पु०)–कृष्णवर्ण का बैल, वृषविशेष, वह बैल जिसका रंग लाल और खुर, पुच्छ तथा सिर श्वेतवर्ण के हों । [एक नदी ।
नीला(स्त्री०)–नीलवर्ण की मक्षिका,

नीलाङ्क (पु०)–सारस नामक पक्षी, चास पक्षी ।

नीलाञ्जन (न०)–नीलवर्ण का अञ्जन, सौवीराञ्जन ।

नीलाञ्जना(स्त्री०)–बिजली, विद्युत् ।

नीलाब्ज(न०)–नीलकमल ।

नीलाम्बर (पु०)–बलराम, बलदेव, राक्षस, शनैश्चर ग्रह । वि०–नीलवस्त्रयुक्त । न०–नीला वस्त्र ।

नीलाम्बुजन्म(न०)–नीलकमल ।

नीलाश्मा [न्] (पु०)–नीलमणि, नीलम ।

नीलासन (पु०)--नीलवर्ण का असन नामक वृक्ष, रतिबन्धविशेष ।

नीलीराग (पु०)--वह पुरुष जिस का प्रेम स्थिर हो, स्थिरप्रेमा, नील वर्ण, नायक और नायिका का पूर्वरागविशेष ।

नीलोत्पल(न०)–नीला पद्म, नीलोफ़र अतिसुगन्धित नीलवर्णका कमल ।

नीवर (पु०)–वाणिज्यकर्त्ता, भिक्षुक, संन्यासी, कीचड़, पङ्क । न०-जल ।

नीवार (पु०)--तृणधान्यविशेष, सवां नामक चावल ।

नीवि–वी(स्त्री०)–वैश्यों का मूलधन, स्त्रियों का कमरबन्द, कटिवस्त्र-बन्ध । [विशेष कर यह शब्द स्त्रियों के कमरबन्द में ही प्रयुक्त होता है, परन्तु पुरुषों के भी कटिबन्धवस्त्र का वाचक है] ।

नीवृत् (पु०)–जहां बहुत जनसमूह रहता है, देश, जनपद ।

नीशार(पु०)–कनात, परदा, प्रावरण, मशहरी, जिस से हिम और पवन रुक जाते हैं, हिमानिलप्रावरण ।

नीहार(पु०)–तुषार, हिम, पाला, बर्फ

नु (अ०)–प्रश्न, सवाल, वितर्क, पश्चात्ताप, अतीत, बीता हुआ, अपमान, हेतु, निश्चय ।

नुत(वि०)–स्तुति किया हुआ, स्तुत, प्रशंसित ।

नुति(स्त्री०)–स्तुति, पूजा ।

नूतन(वि०)–नवीन, नया, अभिनव ।

नूत्न(वि०)–पूर्ववत् ।

नूद (पु०)--जो पाप या रोग को दूर करे, ब्रह्मदारुवृक्ष, शहतूत का वृक्ष । [दलील ।

नूनं (अ०)–तर्क, अर्थनिश्चय, स्मरण,

नूपुर (अस्त्री०)--पांव का आभूषण, पादाङ्गद, पांवटा, पाजेब ।

नृकेशरी [न्] (पु०)–नृसिंहावतार, नरश्रेष्ठ ।

नृग (पु०)–एक राजा जो इक्ष्वाकु का पुत्र था जिसे गोदानविषयक प्रमादजन्य पाप से कृकलास (करकेंटा) की योनि प्राप्त होगई थी, और फिर श्रीकृष्ण से उद्धार पाया । यह कथा महाभारत में विशेष रूप से वर्णित है ।

नृकरोटिका (स्त्री०)–मनुष्यकपाल, मनुष्य की खोपड़ी ।

नृचक्षाः [स्] (पु०)-देव, देवता, राक्षस ।

नृपसु. [सू] (पु०)–सुनीथनामक राजा का पुत्र ।
नृत(४ प०)–नृत्य करना, नाचना ।
नृति(स्त्री०)–नाचना, नर्तन ।
नृतु(पु०)–जो नृत्य करे, नाचे, नर्तक ।
नृत्त (न०)–नृत्य, नाचना, नर्तन ।
नृत्य(न०)–पूर्ववत् ।
नृदेव(पु०)–राजा, नृपति । [धर्मयुक्त ।
नृधर्मा[न्] (पु०)–कुबेर । वि०–मनुष्य-
नृप (पु०)–१६ कोशपर्यन्त जिसे शासन का अधिकार हो, नरपति, राजा, बादशाह ।
नृपति (पु०)–राजा, नरपति, कुबेर ।
नृपप्रिय (पु०)–बड़ी प्याज, राजपलाण्डु, शालि नामक धान्यविशेष, आम्रवृक्ष । वि०–राजा का प्रिय ।
नृपमन्दिर (न०)–राजा का महल, राजसदन, सौध । [च्छत्र ।
नृपलक्ष्म[न्] (न०)–राजचिन्ह, राज-
नृपलिङ्गधर (पु०)–जो राजा का वेश धारण करे, नृपवेशधारी ।
नृपसभ(न०)–राजसभा, राजाओं के रहने की शाला ।
नृपात्मजा (स्त्री०)–राजा की कन्या, कड़वी तूंबी, कटुतुम्बी ।
नृपाध्वर (पु०)–राजाओं का यज्ञ, राजसूय नामक यज्ञ ।
नृपाभीर(न०)–राजाओं के भोजनसमय का सूचक बाजा, भक्तूतुय, वह बाजा जो राजाओं के भोजन समय बजाया जाता है । [यक्ष्मा ।
नृपामय (पु०)–क्षय का रोग, राज-
नृपासन (न०)–राजा के बैठने का आसन, सिंहासन, भद्रासन ।
नृपोचित (पु०)–राजमाष, राज नरद । वि०–राजा के योग्य । [सत्कार ।
नृयज्ञ (पु०)–अतिथिसेवा, अतिथि-
नृवराह (पु०)–विष्णु के पौराणिक वराहावतार का वाचक ।
नृशंस (वि०)–दूसरों के साथ द्रोह करने वाला, परद्रोही, क्रूर, निर्दय, हिंसक । [द का रक्षक ।
नृसिंह (पु०)–पौराणिक विष्णु, प्रल्हा-
नृसेन (न०)–मनुष्यों की सेना ।
नृहरि (पु०)–नृसिंहावतार, विष्णु ।
नॄ (९ प०)–न्याय करना, इन्साफ़ करना ।
नेजक (पु०)–धोबी, रजक । वि०–शुद्ध करने वाला, शोधक ।
नेता [न्] (पु०)–प्रभु, स्वामी, निम्बवृक्ष । वि०–निर्वाह करने वाला, प्रापक ।
नेत्र (न०)–आंख, नेत्र, चक्षु, अंशुक, मथने की रज्जु, जटा, रथ, शलाका, वृक्ष की जड़ । वि०–पहुंचाने वाला, प्रापक, प्रवृत्त कराने वाला ।
नेत्रच्छद (पु०) जिनसे नेत्र ढके जाते हैं, पलक, ऐनक । [का गोलक ।
नेत्रपिण्ड (पु०)–बिलाव, बिड़ाल, नेत्र
नेत्रयोनि(पु०)–इन्द्र, देवराज, चन्द्रमा ।
नेत्ररञ्जन (न०)–कज्जल, सुर्मा ।
नेत्ररोग(पु०)–आंख के रोग, चक्षूरोग ।
नेत्ररोगहा [न्] (पु०)–वृश्चिककाली नामक वृक्ष । वि० नेत्ररोगनाशक ।

नेत्रामय(पु०)—नेत्ररोग, आंखों का रोग।
नेत्राम्बु (न०)—नेत्रों का जल, अश्रु, आंसू।
नेत्री (स्त्री०)—नाड़ी, नस, लक्ष्मी, एक नदी। वि०—शिक्षा देनेवाली, पहुंचाने वाली। [अतिसमीपस्थ।
नेदिष्ठ (वि०)—जो अतिनिकट हो,
नेदीयान् [सु] (वि०)—पूर्ववत्।
नेप (पु०)—पुरोहित, जल, पानी।
नेपथ्य (न०)—वेश, वेशस्थान, आभूषण, नाटक आदि के अनुकरण के लिये सज्जित भूमि, रङ्गभूमि।
नेपाल(पु०)—अपने नाम से प्रसिद्ध देश।
नेपालिका (स्त्री०)—मनःशिला नामक औषध।
नेम (पु०)—समय, काल, अवधि, मर्यादा, परकोटा, छल, अर्द्ध, आधा, गर्त, गढ़ा, सायंकाल, मूल [अर्द्ध के अर्थ में प्रयुक्त इस शब्द की सर्वनाम संज्ञा हो जाती है]।
नेमि (स्त्री०)—कुएं के समीप का समानस्थान, चक्र की परिधि, रथ के पहिये का घेरा। पु०—जिनदेव का वाचक।
नेमिचक्र (पु०)—परीक्षितवंशीय एक राजा जो असीमकृष्ण का पुत्र था। [क्षेत्र।
नेमिष (न०)—नैमिषारण्य नामक
नेष्टा [ष्टृ] (पु०)—त्वष्टानामक देव, ऋत्विक्, जो ऋतु के अनुसार वैदिककर्म कराये।
नैकटिक(वि०)—समीपस्थ, समीपवर्त्ती, पास में रहने वाला।
नैकट्य (न०)—समीपता, निकटत्व।
नैकभेद (वि०)—अनेकविध, बहु प्रकार का, उच्चावच।
नैकषेय(पु०)—निकषा के पुत्र राक्षस।
नैगम(पु०)—उपनिषद्, ब्रह्म का प्रतिपादन करने वाली विद्या, वैश्यजन, व्यवहारी, नागर, नगर का।
नैचिकी(स्त्री०)—उत्तम धेनु, श्रेष्ठ गौ।
नैज (वि०)—अपना, स्वीय, निजसम्बन्धी।
नैत्य [त्य]क (न०)—प्रतिदिन का कर्त्तव्य कर्म; नित्य अनुष्ठान करने योग्य। [दक्षता, चतुराई।
नैपुण्य-ण (न०)—चातुर्य, निपुणता,
नैमित्तक (वि०)—वह कर्म जो पुत्रादि के जन्म को निमित्त मान कर किया जाय, जातकर्म आदि।
नैमित्तिकदान (न०)—किसी निमित्त को आश्रित कर किया हुआ दान।
नैमित्तिकलय (पु०)—वह प्रलय जो चारसहस्र युगों के व्यतीत हो जाने के पश्चात् होता है, प्रलयविशेष।
नैमिषारण्य(न०)—एक तीर्थ का नाम, वह क्षेत्र जहां विष्णु ने एक निमिषमात्र में दैत्य का नाश किया था। [फल, वटफल।
नैयग्रोध (न०)—वट नामक वृक्ष का
नैयायिक (वि०)—न्यायशास्त्र के पढ़ने या जानने वाला, न्यायशास्त्रज्ञ,

न्यायाध्येता, तार्किक।
नैरन्तर्य (न०)–विच्छेदरहित होना, लगातार सम्पादन।
नैराश्य (न०)–आशाराहित्य, इच्छाशून्यत्व, इच्छाहिश न रखना।
नैरुक्त (वि०) निरुक्तद्वारा प्रतिपादित, निरुक्तसम्बन्धी, निरुक्त का वेत्ता।
नैर्ऋत (पु०)–राक्षस, पश्चिम और दक्षिण की कोणका स्वामी, राहु।
नैर्ऋति (स्त्री०)–नैर्ऋत कोण, दक्षिण और पश्चिम के मध्य की दिशा।
नैर्गुण्य(न०)–सत्व, रज और तमोगुण का अभाव, निर्गुणत्व, तत्वज्ञान का योग। [यथार्थ, विषयवैराग्य।
नैर्मल्य (न०)–मलराहित्य, शुद्धता,
नैल्य(न०)–नीलापन, नीलिमा।
नैवेद्य(न०)–देवता के लिये समर्पणीय अन्न, देव के उद्देश्य से दातव्य पदार्थ, देवता पर चढाने की वस्तु।
नैश(न०)–रात्रिसम्बन्धी, रात्रि में होने वाला।
नैशिक(वि०)–निशा में होने वाला, निशा में व्यापक। [तत्व।
नैश्चित्य (न०)–निश्चयपन, निश्चि-
नैषध (पु०)–निषधदेश का नल नामक राजा, निषधदेश का पति, एक वर्ष जिस का अधिपति अग्नीध्र का पुत्र हरिवर्ष था, अपने नाम से प्रसिद्ध कविवर हर्षदेव का रचा हुआ एक काव्यग्रन्थ। वि०–निषधसम्बन्धी।
नैष्किक (पु०)–कोषघर में नियुक्त पुरुष, कोषाध्यक्ष, खजाञ्ची, टङ्कपति। वि०–निष्क [स्वर्ण] से खरीदा हुआ, स्वर्णविकार।
नैष्ठिक(वि०)–जो समस्त जीवनपर्यन्त ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर गुरुकुल में निवास करे, ब्रह्मचारिविशेष।
नैसर्गिक (वि०)–स्वाभाविक, स्वभावनिर्मित, कुदरती।
नैस्त्रिंशिक (वि०)–तलवार से प्रहार करने वाला, खड्गधारी।
नो (अ०)–नहीं, अभाव, न होना।
नोचेत् (अ०)–न हुआ तो, नहीं तो, निषेधवाचक।
नोधाः [स्] (पु०)–एक ऋषिका नाम।
नोपस्थाता [तृ] (वि०)–समीप में स्थित न होने वाला, दूर रहने वाला, दूरस्थ, दुष्ट वचन बोलने वाला। [जल पर चले।
नौ (स्त्री०)–नौका, नाव, बेड़ी, जो
नौका (स्त्री०)–नदी आदि के तरणार्थ काष्ठ का बनाया हुआ यानविशेष, नाव।
नौकादण्ड (पु०)–नौका चलाने का दण्डा, बल्ली, क्षेपणी।
नौतार्य (वि०)–नाव से पार होने योग्य जल या देश।
न्यक्कारिका (स्त्री०)–विष्ठाकृमि, मलकीट, विष्ठा का कीड़ा।
न्यक्कार (पु०)–तिरस्कार, अनादर, बेइज्जती, नीचकरण।
न्यक्ष (न०)–तृणविशेष। वि०–निकृष्ट। पु०–महिष, जामदग्न्य, परशुराम।

न्यग्रोध (पु०)–वटवृक्ष, बड़ का पेड़, चार हस्त का परिमाण, व्याम-परिमाण, गांठ का पेड़, शमी-वृक्ष, विष्णु का वाचक, बड़ को अधोभाग में कर के स्थित।

न्यग्रोधपरिमण्डल (पु०)–वह पुरुष जो चार हाथ ऊंचा हो, व्याम-परिमितोच्च पुरुष जो कहते हैं कि त्रेतायुग में विशेष कर होते थे।

न्यग्रोधपरिमण्डला (स्त्री०)–स्त्री-विशेष, वह स्त्री जिस के स्तन अतिकठिन, नितम्ब विशाल और जो मध्यभाग में कृश हो।

न्यच् [ञ्] (वि०)–नीच, बौना, खर्व, नीचैः-स्थल, निम्न, सम्पूर्णता।

न्यङ्कु (पु०)–एक मुनि। वह मृग जिस के बहुत शृंग होते हैं, बारहसिंगा।

न्यच्छ (न०)–एक क्षुद्ररोग का नाम।

न्यक्षिप्त (वि०)–नीचे फेंका हुआ, अधः-क्षिप्त।

न्यस्त (वि०)–स्थापन किया हुआ, स्थापित, त्यक्त, फेंका हुआ।

न्यस्तशस्त्र (पु०)–युद्ध से विमुख हो जिसने शस्त्र रख दिये हों, पितृ-लोक। वि०–त्यक्तशस्त्र, शस्त्र त्यागने वाला।

न्याद्य (न०)–भुने हुए चावल, भृष्ट तण्डुल, भूतान्न।

न्याद (पु०)–आहार, भोजन।

न्याय (पु०)–नीति, विजय का उपाय, विष्णु, गौतमप्रणीत एक शास्त्र, प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगम नामक पञ्चावयव-वाक्य, युक्ति, भोग, उचित।

न्यायी (वि०)–न्यायानुसार काम करने वाला, न्यायशील, न्यायवान्।

न्याय्य (वि०)–न्याय से युक्त, न्याय-निश्चित, न्याय से मिला हुआ, उचित।

न्यास (पु०)–रखने योग्य वस्तु, धरोहर, अमानत, स्थापनीय द्रव्य, अर्पण, त्याग, संन्यास।

न्युब्ज (वि०)–अधोमुख, नीचे मुंह, श्राद्धादिपात्रभेद, नीचे मुंह किया पात्र। पु०–कुशनिर्मित स्रुक्, स्रुवा।

न्यून (वि०)–निन्द्य, निन्दायोग्य, कम, ऊन। [पागल।

न्यूनपञ्चाशद्भाव (पु०)–उन्मत्त,

न्योजाः [स्] (वि०)–कुटिल, तिरछा, क्रूर, बदमाश।

नृस्थिमाली [न्] (पु०)–जो मनुष्यों की अस्थिनिर्मित माला को धारण करे, शिव, महादेव। वि०–मनुष्यास्थिमालाधारी।

प

प–पवर्ग का प्रथम अक्षर। पु०–पवन, वायु, पर्ण, पत्ता, पान करना, पीना, आज्ञा करना, अण्डा।

पक्कण(पु०)–भीलों का निवासस्थान, शबरालय, चाण्डालों की कुटी।

पक्ता [तृ] (वि०)–पाचक, पाककर्ता, पाक बनानेवाला। पु०–अग्नि।

पक्ति (स्त्री०)—पाक, गौरव, भारीपन।
पक्तिशूल (न०)—वह शूल जो भोजन के पश्चात परिपाक समय में हो, परिणामशूल, पाकजशूल।
पक्त्र (न०)—गार्हपत्य नामक अग्नि।
पक्त्रिम (न०)—वह अन्न, जो पका कर तैयार किया गया हो, पाकनिर्वृत्त, पका कर सज्जित (तैयार) किया हुआ अन्न।
पक्व (वि०)—पका हुआ, कृतपाक, परिणत, सुदृढ, विनाश के समीप, नाशोन्मुख।
पक्वकृत (पु०)—निम्ब का वृक्ष। वि०—पाक करने वाला।
पक्वरस (पु०)—मद्य, शराब।
पक्ववारि (न०)—पका हुआ जल, पक्वजल, काञ्जिक, कांजी।
पक्वान्न (न०)—पका हुआ अन्न।
पक्वाशय (पु०)—आमाशय, अन्न पकने का आशय जो नाभि से नीचे के भाग में होता है, नाभ्यधोभाग।
पक्ष् (१० उ०)—स्वीकार करना, पकड़ना, ग्रहण करना, लेना।
पक्ष (पु०)—पक्षी, पंख, मास का कृष्ण शुक्लपक्ष नामक पखवाड़ा, कच से परे समूह अर्थ का बोधक जैसे—केशपक्ष, पार्श्व, समीप, गृह, न्यायमत में वह पदार्थ जिसके साध्य में सन्देह हो जैसे—'पर्वतो वह्निमान्' यहां पर्वत पक्ष में साध्य वह्नि सन्दिग्ध है, मित्र, बल, विरोध, राजहस्ती, कङ्कण, सजातीयसमूह।
पक्षक (पु०)—पार्श्वद्वार, खिड़की, सहाय।
पक्ष[क्षा] घात (पु०)—अपने नाम से प्रसिद्ध वह वातरोग जिसमें शरीर के एक तरफ़ का अङ्ग मारा जाता है।
पक्षचर (पु०)—चन्द्रमा, वह गज जो पृथक् विचरता हो।
पक्षज (पु०)—चन्द्रमा, चांद।
पक्षजन्मा [न्] (पु०)—पूर्ववत।
पक्षता (स्त्री०)—पक्ष का भाव, पक्ष का होना, न्यायमत में जहां अग्नि का अस्तित्व निर्णीत नहीं होता वहीं पक्षता का होना माना जाता है, ऐसा निश्चित होने पर यदि आनुमानिकी इच्छा हो तो भी पक्षता हो सकती या मानी जा सकती है, अन्यथा नहीं, ऐसा स्वीकार करते हैं।
पक्षति (स्त्री०)—पक्ष की मूल, प्रतिपदा, पहिली तिथि, पड़वा, पक्षियों के पंख की जड़।
पक्षद्वार (न०)—पार्श्व का दरवाज़ा, खिड़की, द्वार।
पक्षधर (पु०)—चन्द्रमा। वि०—पक्ष धारण करने वाला।
पक्षपात (पु०)—स्नेह सम्बन्धादि के कारण अन्याययुक्त साहाय्य में गिरना, अन्याय के लिये सहायता प्रदान करना, तरफ़दारी करना, पक्षियों के पंखों का गिरना।

पक्षपालि (पु०)–खिड़की, द्वार।
पक्षमूल (पु०)–प्रतिपदा, पड़वा।
पक्षवाहन(न०)–पक्षी, जानवर, परिन्द।
पक्षान्त (पु०)–पक्ष का अन्त, पौर्णमासी, पूर्णिमा, अमावस्या।
पक्षावसर (पु०)–पूर्ववत्।
पक्षिणी (स्त्री०)–वर्तमान और आने वाले दिनों से मिश्रित रात्रि, अर्थात् वर्तमान और आने वाले दिनों के बीच की रात्रि, पक्षियों का समुदाय।
पक्षिल(पु०)–वात्स्यायन नामक मुनि, जिसने गौतमसूत्रों पर भाष्य निर्माण किया है। वि०–सहायता देने वाला, सहायप्रद, पंखों वाला।
पक्षिशाला (स्त्री०)–पक्षियों के रहने की जगह, चिड़ियाघर, घोंसला।
पक्षिसिंह (पु०)–गरुड़। [का राजा।
पक्षिस्वामी [न्] (पु०)–गरुड़, पक्षियों
पक्षी [न्] (पु०)–जानवर, परिन्द, बाण, तीर। [रसोइया।
पक्तृ (वि०)–पाचक, पाककर्त्ता,
पक्ष्म [न्] (न०)–नेत्रलोम, पलक, किंजल्क, कमल की केसर, पक्षियों के पर, बारीक सूत।
पङ्क (पु०)–कीचड़, कर्दम, पाप।
पङ्ककर्पट (पु०)–जलयुक्त कीचड़।
पङ्ककीर(पु०)–टिटीहरी नामक पक्षी, कोयष्टि पक्षी।
पङ्ककीट (पु०)–शूकर, सूअर। वि०–कीचड़ में खेलने वाला।
पङ्कगति (स्त्री०)–मत्स्यविशेष, एक मत्स्य।
पङ्कज (न०)–कमल, पद्म।
पङ्कजन्म[न्] (न०)–पूर्ववत्।
पङ्कजिनी (स्त्री०)–तालाब, पद्माकर।
पङ्कण (पु०)–भीलों का घर, शबरालय। [नरकविशेष।
पङ्कप्रभा (स्त्री०)–कीचड़युक्त एक
पङ्करुह् [ह्] (न०)–पद्म, कमल।
पङ्करुह (न०)–पूर्ववत्। [वाला स्थान।
पङ्किल (वि०)–कर्दमयुक्त देश, कीचड़
पङ्केरुह (न०)–कमल, पद्म, सारस नामक पक्षी।
पङ्क्ति (स्त्री०)–सजातीय समूह, दश अक्षरों के पाद वाला एक छन्द, १० की संख्या, भूमि, पाक, महत्त्व, गौरव, विस्तार।
पङ्क्तिग्रीव (पु०)–रावण, लङ्केश्वर।
पङ्क्तिचर (पु०)–टिटीहरी नामक पक्षी, कुररी पक्षी।
पङ्क्तिदूषक (पु०)–श्राद्ध में भोजनार्थ बैठे हुए ब्राह्मणों की पंक्ति को जो दूषित करदे, अपांक्तेय, श्राद्ध आदि में भोजन देने के अयोग्य।
पङ्क्तिपावन (पु०)–वह पुरुष जो श्राद्धादि सत्कार्य में भोजन के लिये बैठे ब्राह्मणों की पंक्ति को पवित्र करदे, श्रेणीपवित्रकर्ता, श्राद्धभोजनयोग्य।
पङ्क्तिरथ (पु०)–जिस के रथ की गति दशों दिशाओं में हो, दश-

रथ राजा, श्रीरामचन्द्र के पिता।

पङ्गु (वि०)-लंगड़ा, न चल सकने वाला, गतिरहित। पु०-शनैश्चर ग्रह।

पच् (१उ०)-पकाना, पाक करना। (१ आ०)-प्रकट करना, प्रसिद्धि करना, स्पष्ट करना। (१० उ०) फैलाना, विस्तार करना।

पच (वि०)-पाक करने वाला, पाचक, रसोइया।

पचत (पु०)-अग्नि, सूर्य, सूरज, चन्द्रमा, इन्द्र। वि०-पकाने वाला।

पचन (न०)-पाक, रसोई, पाकसाधन। पु०-अग्नि। वि०-पाचक।

पचन्ती (स्त्री०)-पाककर्त्री, पाक बनाने वाली स्त्री। [रसोइया।

पचमान (वि०)-पाचक, पाककर्त्ता,

पचम्पचा(स्त्री०)-दारुहल्दी। [वाली

पचा (स्त्री०)-पाककर्त्री, पाक बनाने

पचि (पु०)-अग्नि, आग, पवन।

पचेलिम (पु०) अग्नि, सूर्य। वि०-पारदर्शी के परिश्रम बिना ही स्वयं पकने वाला।

पचेलुक(पु०)-पाचक, सूद, पाककर्त्ता।

पञ्ज्(१प०)-आच्छादन करना,ढकना।

पज्र (पु०)-विष्णुके चरणों से उत्पन्न हुआ, शूद्र, चौथा वर्ण।

पज्झटिका (स्त्री०)-एक छन्द जिस के प्रत्येक पाद में १६ मात्रा होती हैं। [वाचक।

पञ्च [न्] (वि०)-५ की संख्या का

पञ्चक (न०)-५ की संख्या, पाँचों का भाग, धनिष्ठादि रेवतीपर्यन्त ५ नक्षत्र, युद्धभूमि, रणक्षेत्र, पाँचों से खरीदा हुआ।

पञ्चकपाल (पु०)-यज्ञविशेष। न०-पाँच कपालों का समूह।

पञ्चकर्म (न०)-वैद्यकमत में-वमन, विरेचन, नस्य, निरूहण और अनुवासन ये पाँच कर्म; न्यायशास्त्र में-उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण और गमन नामक पाँच कर्म हैं।

पञ्चकोष (पु०)-वेदान्त में अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय नामक पाँच कोषों का वाचक।

पञ्चगव्य (न०)-गौ की पाँच वस्तुओं के मेल, यथा-दधि, दुग्ध, घृत, गोमूत्र और गोबर [प्रायश्चित्तविशेष में आत्मा की शुद्धि के लिये इन का सेवन किया जाता है]

पञ्चचूडा (स्त्री०)-पाँच शिखा [चोटी]युक्त एकअप्सरा का नाम।

पञ्चजन(पु०)-पुरुष, मनुष्य,एक दैत्यविशेष [कहते हैं जिसकी अस्थियों से श्रीकृष्ण का पाञ्चजन्य नामक शंख निर्मित हुआ]।

पञ्चजनी(स्त्री०)-विश्वरूप की कन्या

पञ्चजनीन (पु०)-पञ्चजनों के लिये हित। वि० पञ्चजनसम्बन्धी।

पञ्चज्ञान (पु०)-बुद्ध, जिसे पाँच पदार्थों का ज्ञान हो।

पञ्चतत्त्व (न०) पृथ्वी, जल, अग्नि,

वायु और आकाश नामक पांच तत्त्व; तन्त्रशास्त्रोक्त मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन का वाचक।

पञ्चतपाः [स्] (वि०)–चार अग्नि और पांचवां सूर्य इन के मध्य में बैठ कर तप करने वाला, अग्नि-चतुष्टय और पञ्चम सूर्य से साध्य तप से युक्त। [पञ्चावयवयुक्त।

पञ्चतय (वि०)–पांच अवयवों वाला,

पञ्चतन्मात्र (न०)–तमोगुणी अहङ्कार से उत्पन्न पांच महाभूतों के शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध नामक पांच विषय।

पञ्चता (स्त्री०)–पांच भूतों का एकीभाव, मृत्यु, निधन, मौत।

पञ्चतीर्थी (स्त्री०)–ज्ञानवापी, नन्दिकेश, तारकेश, महाकालेश्वर और दण्डपाणि नामक पांच तीर्थ।

पञ्चत्व (न०)=पञ्चता।

पञ्चदशी (स्त्री०)–अमावस्या, पूर्णिमा, श्रीभारतीतीर्थ विद्यारण्यमुनिकृत वेदान्त का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ। [प्रकार से।

पञ्चधा (अ०)–पांच तरह से, पांच

पञ्चनख (पु०)–हस्ती, कूर्म, कच्छप, व्याघ्र।

पञ्चनद (पु०)–शतद्रु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा और वितस्ता नामक पांच नदियों से युक्त देश, पञ्जाब, पञ्चदेश।

पञ्चपक्षी [न्] (पु०)–प्रश्न कहने में उपयोगी एक ज्योतिष का ग्रन्थ।

पञ्चप्रासाद (पु०)–पांच शिखरों से युक्त महल, देवमन्दिरविशेष।

पञ्चबन्ध (पु०)–नष्ट द्रव्य का पञ्चमांश दण्ड।

पञ्चभूत (न०)–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश नामक पांच भूतों का समूह।

पञ्चम (वि०)–पांच की संख्या पूरी करने वाला, पांचवां। पु०–सात प्रकार के स्वरों में से पांचवां। न०–मैथुन, विषयभोग।

पञ्चमहायज्ञ (पु०)–गृहस्थियों को नित्य कर्त्तव्य पांच यज्ञ यथा–ब्रह्मयज्ञ, पितृयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ और नृयज्ञ।

पञ्चमार (पु०)–बलदेव जी का पुत्र, जो पांच इन्द्रियों में आसक्त हो।

पञ्चमास्य (पु०)–पञ्चम राग जिस का मुख्य स्वर हो, कोयल, कोकिल।

पञ्चमी (स्त्री०)–पाण्डवों की पत्नी, द्रौपदी, पांचवीं तिथि, विद्यावित्, नदीविशेष। [का नाम।

पञ्चमुख (पु०)–महादेव, शिव, रुद्राक्ष

पञ्चरत्न (न०)–पांच प्रकार के रत्न यथा-स्वर्ण, हीरक, नीलमणि, पद्मराग, और मुक्ता।

पञ्चलक्षण (न०)–पुराण के पांच लक्षण यथा–सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित।

पञ्चवक्त्र (पु०)–शिव, महादेव, पांच मुख का रुद्राक्ष।

पञ्चवटी (स्त्री०)–वट, पीपल, आंव-

ला, बिल्व और अशोक नामक पांच वृक्षों का समूह, दण्डक वन में उस स्थान का नाम जहां श्रीरामचन्द्र जी ने सीता और लक्ष्मण के साथ बहुकालपर्यन्त वास किया था।

पञ्चबाण (पु०)–जिस के पांच बाण हों, कामदेव, मन्मथ।

पञ्चशर (पु०)–पूर्ववत्।

पञ्चशाख (पु०)–जहां शाखाकार पांच अंगुलियां हों, हस्त, हाथ, कर। वि०–पञ्चशाखायुक्त।

पञ्चशिख (पु०)–सिंह, शेर, धर्म की हिंसा भार्या में उत्पन्न एक मुनि।

पञ्चसूना(स्त्री०)–जीवों की हिंसा के पांच स्थान यथा-चुल्ली, चक्की, गृहसामग्री, बुहारी और जल का घड़ा रखने का स्थान।

पञ्चाग्नि (पु०)–पांच अग्नियों का उपासक। वि०–पांच अग्नि वाला

पञ्चाङ्ग(न०)–एक वृक्ष के त्वक्, पत्र, पुष्प, मूल और फल का समाहार, तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करणात्मक पत्र, पुरश्चरण विशेष यथा-जप, होम, तर्पण, अभिषेक और विप्रभोजन। पु०–कच्छप, कमठ, कछुआ, अश्वविशेष, प्रणामभेद, राजनीति।

पञ्चाङ्गगुप्त(पु०)–कच्छप, कछुआ।

पञ्चाङ्गुल(पु०)–एरण्ड का वृक्ष।

पञ्चातपा (स्त्री०)–तपस्याविशेष।

पञ्चानन(पु०)-सिंह, शेर, अतिशय-क्रूर, ज्योतिषशास्त्रोक्त सिंह-राशि, पांच मुख का रुद्राक्ष।

पञ्चामृत(न०)–दूध, दधि, शर्करा, घृत और मधु ये पांच या इन से बना पदार्थ।

पञ्चाम्नाय (पु०)–एक तन्त्रग्रन्थ का [नाम।

पञ्चाल(पु०)–देशविशेष, तद्देशनिवासी जन, उस देश का नृपति। [यह शब्द बहुवचनान्त भी होता है]।

पञ्चालिका(स्त्री०)–पुतली का वाचक।

पञ्चाली (स्त्री०)–वस्त्रनिर्मित पुतली, गुड्डी, गुड़िया, गीतविशेष।

पञ्चावस्थ (पु०)–मृतक, मुर्दा, शव। वि०–पञ्च अवस्थाओं से युक्त।

पञ्चाशत (स्त्री०)–५० की संख्या का वाचक, पचास।

पञ्चास्य (पु०)–महादेव, शिव। वि०–पञ्चमुख वाला।

पञ्चेन्द्रिय(न०)–पांच ज्ञानेन्द्रिय जो त्वक्, नेत्र, रसना, कर्ण और नासिका हैं।

पञ्चेषु(पु०)–कामदेव, रतिपति।

पञ्चोपविष(न०)–पांच प्रकार के उपविष जो स्नुही [सेहुण्ड], अर्क, करवीर लागली [कलिहारी] और कुचला कहे हैं।

प [पि] ञ्जर (अस्त्री०)–शरीर की हड्डियों का समूह, पक्षी आदि के बांधने की जगह अर्थात् पिंजरा।

पञ्जराखेट (पु०)–मछली मारने का एक प्रकार का उपाय, कांटा।

पञ्जि-ञ्जी (स्त्री०)–गृहधावनतालिका

अर्थात् सूत की अट्टी।
पट्टिकारक (पु०)–कायस्थजाति।
पट् (१ प०)–जाना, गमन करना। (१० उ०)–दीप्ति, चमकना, वेष्टन, लपेटना।
पट (अस्त्री०)–वेष्टन, वस्त्र। पु०–पियाल नामक वृक्ष।
पटकार(पु०)–जुलाहा, चित्रकार।
पटकुटी (स्त्री०)–कपड़े का घर, तम्बू, खेमा। [पटगृह शब्द का भी यही अर्थ है]।
पटच्चर(न०)–जीर्णवस्त्र,पुराना वस्त्र। वि०–जो अपने को कपड़े से लपेट कर चलता है। पु०–चोर।
पटमण्डप (पु०)–वस्त्रों का बनाया गृह, वस्त्रकुटी।
पटमय (न०)–वस्त्रगृह, पटमन्दिर।
पटल (न०)–नेत्ररोग, छत, परिच्छद, सामग्री, पिटारी, परदा। पु०–ग्रन्थविशेष, वृक्ष का नाम।
पटवाप (पु०)–पटमन्दिर, वस्त्रगृह।
पटवासक (पु०)–वह चूर्ण जो वस्त्रों को सुगन्धित करता है, केशरादि चूर्ण, गुलाब।
पटह(अस्त्री०)–ढोल, ढक्का नामक बाजा। पु०–युद्धक्षेत्र में वाद्यमान ढोल। [झण्डी।
पटाका (स्त्री०)–पताका, ध्वजा,
पटिष्ठ(वि०) अतिनिपुण,अतिशयपटु।
पटी(स्त्री०)–कनात, जवनिका।
पटीयान्[स] (वि०)–कार्यदक्ष, अतिशय पटु।
पटीर(न०)–खेत, क्षेत्र, चालनी, मेघ, कामदेव, उदर, पेट, खदिर, उच्च, चन्दन।
पटु(पु०)–पटोलपत्र नामक औषध। वि०–चतुर, दक्ष रोगरहित,मधुर, तेज, स्फुट, साफ।
पटुकल्प(वि०)–कम चतुर,अल्पनिपुण।
पटुजातीय (वि०)–अतिशयपटु, पटु प्रकार।
पटुरूप(वि०)–बहुत निपुण, अतिदक्ष।
पटोल(पु०)–अपने नाम से प्रसिद्ध एक लता। न०–वस्त्रविशेष।
पट्ट (न०)–शहर, नगर, चौक,पटड़ा, ढाल, राजसिंहासन, रेशमी वस्त्र। पु०–पीसने का पत्थर, शिल।
पट्टज (न०)–रेशमी वस्त्र।
पट्टदेवी (स्त्री०)–पटरानी, महादेवी, राजमहिषी, वह राजपत्नी जिस का राजा के सहित अभिषेक किया गया हो।
पट्टन (न०)–पत्तन, शहर, नगर,राजधानी, मुख्य नगर।
पट्टाही (स्त्री०)–पटरानी, महादेवी।
पट्टिश [स] (पु०)–कुल्हाड़ी, परशु, अस्त्रविशेष।
पठ (१प०)–बाचना, पढ़ना, लिखे हुए अक्षरों का पठन।
पठन(न०)–वाचन, पढ़ना।
पठि(स्त्री०)–पूर्ववत्।
पठित(वि०)–पढ़ाहुआ,अधीत,वाचित, पाठ किया हुआ, उच्चरित।

पठितव्य(वि०)–पढ़ने योग्य, पठनीय, पाठ करने योग्य ।
पड् (१ आ०)–जानना, गमनकरना और प्राप्त करना । (१०प०)–इकट्ठा करना, राशीकरण ।
पण्(१आ०)–ख़रीदना, बेचना, स्तुति करना, प्रशंसा करना ।
पण (पु०)–वह धन जिस से व्यवहार किया जाता है, मूलधन, पैसा, जुआ, द्यूत, दाव, गृह, नियम, विष्णु, ८० कौड़िया,चारकाकिणी, पूंजी ।
पणग्रन्थि(स्त्री०)–दुकान, हट्ट ।
पणन(न०)–विक्रय, बेचना ।
पणफर(न०)–ज्योतिषशास्त्रोक्त लग्न से द्वितीय, पञ्चम, अष्टम और एकादश स्थान का नाम ।
पणव (अस्त्री०)--पटहविशेष, एक प्रकार के ढोल का नाम । [द्रव्य ।
पणस (पु०)–व्यावहारिक धन, पण्य-
पणाङ्गना(स्त्री०)–वेश्या, वाराङ्गना ।
पणाया(स्त्री०)–लेना देना रूप व्यवहार ।
पणायित (वि०)-प्रशंसा किया हुआ, प्रशंसित,ख़रीदा हुआ,बेचा हुआ, [पणित भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है] ।
पणास्थि-न(न०)–कपर्दिका, कौड़ी ।
पणितव्य(वि०)–ख़रीदने योग्य, बेचने लायक़, विक्रेय द्रव्य, स्तुति करने योग्य, स्तोतव्य ।
पण्ड (पु०)–वह पुरुष जो कार्य के साफल्य को प्राप्त न हो । वि०–निष्फलप्रयत्नवाला ।
पण्डा (स्त्री०)–तत्त्वानुगामिनी बुद्धि, वह बुद्धि जो उत्तमानुत्तम के विचार से युक्त हो ।
पण्डित(पु०)–वह पुरुष जिस की बुद्धि पदार्थ के तत्त्व को अच्छे प्रकार से जानने में समर्थ हो, शास्त्रमर्मवेत्ता, निपुण ।
पण्डितम्मन्य(वि०)–अपने को पण्डित माननेवाला, जो आपेको पण्डित मानता हो ।
पण्डितमानी [न्] (वि०)--जिसे अपने पाण्डित्य का अभिमान हो,पण्डिताभिमानी । [तव्य द्रव्य ।
पण्य (वि०)–बेचने योग्य द्रव्य, पणि-
पण्यवीथिका (स्त्री०)–दुकान, हट्ट, सौदा बेचने का स्थान [पण्यवीथी, पण्यशाला आदि शब्द भी इसी अर्थ में होते हैं] ।
पण्यस्त्री (स्त्री०)–वेश्या, वाराङ्गना, कंजरी ।
पण्याङ्गना(स्त्री०)–पूर्ववत् ।
पण्याजीव (पु०)–जिस का आजीवन लेनदेन हो, वैश्य, वणिग्जन, व्यवहारी ।
पत्(१प०)–जाना,गमन करना,गिरना, नीचे आना । [वाला ।
पत(पु०)–पुष्ट, दृढ । वि०–पतन करने
पतग(पु०)–पक्षी जानवर, परिन्द ।
पतङ्ग(पु०)–सूर्य, पक्षी, शलभ, महुए का वृक्ष । [मधुमक्षिका ।
पतङ्गिका (स्त्री०)–शहद की मक्खी,

पतञ्चिका (स्त्री०)–प्रत्यञ्चा, धनुष का चिल्ला ।
पतञ्जलि(पु०)–अपने नाम से प्रसिद्ध मुनि जो कि पाणिनि मुनि के सूत्रों पर भाष्यकर्त्ता और पातञ्जल दर्शनादि ग्रन्थों का निर्माता हुआ है, भाष्यकार ।
पतत्र(न०)–पंख, पत्त ।
पतत्रि (पु०)–पक्षी, आसमान परिन्द ।
पतत्री[न्] (पु०)–पूर्ववत् । [पात्र ।
पतद्ग्रह (पु०)–पीकदानी, थूकने का
पतद्भीरु (पु०)–बाज़ नामक पक्षी, श्येन । [गिरने वाला ।
पतन्[त] (पु०)–पक्षी, परिन्द । वि०–
पतन(न०)–पात, गिरना, पाप ।
पतम(पु०)–चन्द्रमा, पक्षी ।
पतयालु (वि०)–गिरने के स्वभाव वाला, पतनशील, पातुक ।
पताका(स्त्री०)–ध्वजा, झंडी, त्रिकोणाकार बांस पर लटकता हुआ कपड़ा, सौभाग्य, नाटक का अङ्कविशेष ।
पताकी [न्] (वि०)–पताका धारण करने वाला, ध्वजाधारी ।
पति(पु०)–भर्ता, पाणिग्रहीता, स्वामी, रमण, गृही, प्राणनाथ । वि०–अधिपति, स्वामी, ईश्वर, नायक।
पतिंवरा (स्त्री०)–वह कन्या जो स्वेच्छा से पति को पसन्द करे, स्वयंवरा ।
पतिघ्नी(स्त्री०)–पति का नाश करने वाली हस्त की रेखाविशेष, हाथ की वह रेखा जिस से पति नष्ट हो जाय, वैधव्यसूचक रेखा ।
पतित(वि०)–अपने सदाचार वा धर्म से भ्रष्ट हुआ, चलित, कम्पित ।
पतिवत्नी (स्त्री०)–सौभाग्यवती, सुहागन, सधवा स्त्री ।
पतिव्रता(स्त्री०)–सुचरित्रा, साध्वी, सती, वह स्त्री जो अपने ही पति में अनुराग रखती है ।
पत्तन(न०)–नगर, शहर, मृदङ्ग बाजा
पत्ति(पु०)–गति, वह सेना जो पैदल चले, १ हस्ती, २ रथ, ३ अश्व और ४ पैदलों की संख्या वाली सेना । [समूह ।
पत्तिसंहति (स्त्री०)–पदातियों का
पत्नी (स्त्री०)–विधिपूर्वक वेद के मन्त्रों से विवाहित स्त्री, यज्ञकर्म में पति के साथ रहने वाली भार्या ।
पत्न्याट(पु०)–पत्नीगृह, भार्यास्थान।
पत्र(न०)–पलाश, पत्ता, पर्ण, पंख, कागज़, चिट्ठी, ख़त, लिपि ।
पत्रकृच्छ्र (पु०)–व्रतविशेष, पर्णकृच्छ्र नामक व्रत ।
पत्रदारक(पु०)–ककच, आरा ।
पत्रपरशु (पु०)–छैनी, स्वर्णादि के काटने का साधन, व्रश्चन ।
पत्रभङ्ग (पु०)–स्तन, कपोलादिकों पर पत्राकार कस्तूरी आदि का लिखा हुआ तिलकविशेष ।
पत्रयौवन(न०)–नवीन पत्र, नया पत्ता।
पत्ररथ(अक्ली०)–पक्षी, विहङ्गम ।

पत्रवाह(पु०)–बाण, तीर।
पत्रसूचि(स्त्री०)–काटा, कटक।
पत्राङ्ग(न०)–लालचन्दन, पद्मक।
पत्राञ्जन(न०)–रोशनाई, स्याही, मसी। [खत।
पत्रिका(स्त्री०)–पत्री, चिट्ठी, लिपि,
पत्री[त्रृ] (पु०)–पक्षी, जानवर, बाण, तीर, शर, बाज नामक पक्षी, रथारूढ पुरुष, पर्वत, पहाड।
पत्री(स्त्री०)–लिपि, पत्र, खत।
पत्स्रल(न०)- मार्ग, रास्ता, पन्था।
पथ्(१ प०)–जाना, गमन करना।
पथ(पु०)–मार्ग, पन्था।
पथिक(वि०)–यात्री, मुसाफिर, मार्ग में चलने वाला।
पथिकसन्तति(स्त्री०)–यात्रियों का समूह, मुसाफिरों का गिरोह।
पथिल(वि०)–पथिक, मुसाफिर।
पथ्य(वि०)–चिकित्सोपयोगी और रोगपीडित मनुष्य के लिये हितकर वस्तु, सुख करने वाला।
पथ्या(स्त्री०)–हरीतकी, हैड।
पद् (४आ०)–जाना, गमन करना। (१० आ०)–जाना, हरकत करना।
पद (न०)--चिन्ह, पाद, श्लोक का चतुर्थ भाग, सुबन्त और तिङन्त शब्द, पादचिन्ह। पु०–किरण।
पदग(पु०)–पदज्ञ, पद का ज्ञाता।
पदग(पु०)–पदाति,पैदल। वि०–पावों से गमन करने वाला।
पदवि वी(स्त्री०)–मार्ग,पन्था, राह।
पदाङ्क(पु०)–पाव के चिन्ह,पादचिन्ह
पदाजि(पु०)–जो पावों से चले,पैदल।
पदाति(पु०)–पूर्ववत्।
पदार(पु०)–पावों की धूलि,पादरज।
पदार्थ (पु०)--पद से ज्ञातव्य वस्तु, भाव, तत्त्व, अभिधेय, धर्म, वस्तुमात्र, सत्त्व, न्यायमत में द्रव्य, गुण, कर्मादि सात पदार्थ।
पदासन (न०)–पावों का आसन, पादपीठ।
पदिक(पु०)–पदाति, पैदल,पदगामी।
पद्ग(पु०)–पूर्ववत्।
पद्धति-ती (स्त्री०)–मार्ग, रास्ता, धर्म, पङ्क्ति, संस्कारादि का बोधक ग्रन्थविशेष–जैसे विवाहपद्धति आदि।
पद्म(न०)–कमल, अरविन्द, हस्ती के मुखादि पर स्थित बिन्दुसमूह, सेना की चक्राकार व्यूहरचना, निधि का वाचक, दशार्बुद की संख्या, सीसा, पोहकरमूल, देहस्थ पद्माकार नाडीचक्र। पु० -नागविशेष।
पद्मकेशर (पु०)--कमल की केशर, किञ्जल्क।
पद्मगर्भ(पु०)–ब्रह्मा, विष्णु, शिव।
पद्मतन्तु(पु०)–कमल के तन्तु, कमलनाल, मृणाल।
पद्मनाभ (पु०) -जिस की नाभि में कमल हो, विष्णु।
पद्मनाभि(पु०)--पूर्ववत्।
पद्मनाल(न०)=पद्मतन्तु।
पद्मपत्र (न०)–पोहकरमूल नामक

औषध, कमलका पत्ता। [पद्म-
पर्ण का भी यही अर्थ है]।
पद्मपाणि(पु०)–ब्रह्मा, बुद्ध, सूर्य।
पद्मपुराण (न०)–१८ पुराणान्तर्गत एक पुराण।
पद्मपुष्प(पु०)–कर्णिकार नामक वृक्ष, विकाङ्ग नामक पक्षी।
पद्मप्रिया(स्त्री०)–जरत्कारु मुनि की पत्नी, मनसादेवी।
पद्मबन्ध (पु०)–चित्रकाव्यविशेष, शब्दालंकारभेद।
पद्मबन्धु(पु०)–सूर्य, भ्रमर।
पद्मभू(पु०)–जिस की उत्पत्ति कमल से है अर्थात् ब्रह्मा।
पद्मयोनि(पु०)–ब्रह्मा।
पद्मराग(पु०)–रक्तवर्ण की एक मणि-विशेष, माणिक, लाल नामक प्रसिद्ध रत्न। [कुबेर, राजा।
पद्मलाञ्छन(पु०)–सूर्य, ब्रह्मा, शिव,
पद्मलाञ्छना(स्त्री०)–सरस्वती, लक्ष्मी।
पद्मवासा (स्त्री०)–जिस का वास कमल में हो अर्थात् लक्ष्मी।
पद्मबीज(न०)–कमलबीज, कमलगट्टा नाम से प्रसिद्ध द्रव्य।
पद्मबीजाभ (न०)–मखाना नामक प्रसिद्ध पदार्थ। [देवी।
पद्मा(स्त्री०)–लक्ष्मी, लवंग, मनसा
पद्माकर (पु०)–कमलोत्पत्तिस्थान, तड़ाग, सरोवर।
पद्माक्ष(न०)–पद्मबीज, कमलगट्टा।
पद्माट(पु०)–चक्रमर्द, चकवड़ नामक वृक्ष।
पद्मालया(स्त्री०)–लक्ष्मी, लवंग।
पद्मावतीप्रिय(पु०)–जरत्कारु मुनि।
पद्मासन (न०)–योगशास्त्र में एक आसनविशेष। पु०-ब्रह्मा।
पद्मिनी (स्त्री०)–पद्मसमूह, कमल वाला देश, पद्मलता, एक प्रकार की औरत।
पद्मिनीकान्त-वल्लभ(पु०)–सूर्य।
पद्मी[न्] (पु०)–हाथी। वि०–कमलों वाला।
पद्मेशय(पु०)–विष्णु।
पद्य(न०)–कविकृति, श्लोकविशेष।
पद्य (पु०)–पैरों से उत्पन्न हुआ अर्थात् शूद्र।
पन् (१आ०)–स्तुति करना, प्रशंसा करना, तारीफ करना।
पनस (पु०)–कटहल नाम से प्रसिद्ध एक प्रकार का फलवृक्ष।
पनसिका (स्त्री०)–क्षुद्ररोगविशेष।
पन्था (पु०)–रथ्या, रास्ता, मार्ग।
पन्न (वि०)–गिरा हुआ, च्युत।
पन्नग (पु०)–सर्प, सांप।
पन्नगकेशर (पु०)–नागकेशर नामक प्रसिद्ध औषध।
पन्नगाशन (पु०)–सांपों को खाने वाला अर्थात् गरुड़।
पन्नगी (स्त्री०)–सर्पिणी, भुजङ्गी।
पन्नद्धा (स्त्री०)–चर्मपादुका, जूता।
पपि (पु०)–चन्द्रमा।
पपी (पु०)–सूर्य, चन्द्र। [नदी।
पम्पा (स्त्री०)–दक्षिण देश में एक
पय् (१आ०)–गमन करना, जाना।

पयश्चय (पु०)-जलसमूह, पूर, बाढ़ ।

पयस् [:] (न०)-जल, पानी, दुग्ध, क्षीर ।

पयस्कन्दा (स्त्री०)-क्षीरविदारी, दूध वाली विदारीकन्द नामक औषध ।

पयस्य (वि०)-दुग्धविकार घृत दधि आदि । पु०-बिड़ाल, बिलाव ।

पयस्या (स्त्री०)-दुग्धिका, दुद्धी, क्षीरकाकोली, अर्कपुष्पी ।

पयस्विनी (स्त्री०)-दूधवाली [धेनु], पानी वाली [नदी], बकरी, जीवन्ती नामक औषध ।

पयोघन (पु०)-घनोपल, ओला ।

पयोधर(पु०)-मेघ, बादल, स्त्रीस्तन, नारियल ।

पयोधाः-धि(पु०)-समुद्र, जलाधार ।

पयोनिधि(पु०)-पूर्ववत् ।

पयोव्रत(पु०)-एक प्रकार का व्रत जो १२ दिन में समाप्त होता है जिसमें केवल दुग्धपान ही किया जाता है

पर (वि०)-अन्य, दूसरा, अगला, दूर, श्रेष्ठ, मोक्ष । न०-ब्रह्म । पु०-शत्रु, दुश्मन ।

परकीय(वि०)-परसम्बन्धी, दूसरे का ।

परकीया (स्त्री०)-नायिकाभेद, उपनायिका ।

परक्षेत्र(न०)-परभार्या, दूसरे की स्त्री ।

परग्रन्थि(पु०)-अङ्गुलियों की गांठ, अङ्गुलिपर्व ।

परच्छन्द (वि०)-परतन्त्र, पराधीन, दूसरे के अधीन ।

परच्छिद्र(न०)-दूसरे के ऐब, परदोष ।

परजात(वि०)-अन्य से उत्पन्न, दूसरे से पोषित । पु०-कोयल, कोकिल ।

परजित (वि०)-शत्रु से जिता हुआ, पराजित, दूसरे से पुष्ट हुआ ।

परञ्ज (पु०)-तैल निकालने का यन्त्र, कोल्हू, फेन, खड्ग ।

परञ्जन(पु०)-पश्चिम दिशा का स्वामी, वरुण ।

परञ्जय (पु०)-शत्रुविजयकर्त्ता, वरुण ।

परतन्त्र(वि०)-पराधीन, दूसरे के वशमें

परत्रभीरु(वि०)-परलोक का भय मानने वाला, धर्मात्मा, धार्मिक ।

परत्व (न०)-भेद, परता, न्यायमतमें सिद्ध गुणविशेष ।

परदार(पु०)-दूसरेकीभार्या, परदारा

परदुःख(न०)-दूसरे की पीड़ा, अन्यजनसम्बन्धी दुःख ।

परद्रोही (वि०)-दूसरों के साथ द्रोह करने वाला, परद्रोही, निंदक ।

परन्तप(वि०)-शत्रुओं को सन्तापित करने वाला, इन्द्रियदमनशील, तामस नामक मनु का एक पुत्र, मगधदेशाधिपति एक राजा ।

परपिण्डाद (वि०)-दूसरों का अन्न खाने वाला, परान्नोपभोगी ।

परपुरुष(पु०)-विष्णु, परमात्मा, अन्य पुरुष, उपनायक ।

परपुष्ट (पु०)-कोयल, कोकिल । [यह लोकमें प्रसिद्ध है कि कोयल अपने बच्चों को स्वयं पालने में असमर्थ होने के कारण काकी

[कौवी] के घोंसले में रख आती और वह उसका निजसन्तानबुद्धि से पालन पोषण करती है एतदर्थ ही कोकिल के 'परपुष्ट' 'परभृत' इत्यादि नाम हैं]। [पीना।
परपुष्टा(स्त्री०)–वेश्या,वाराङ्गना,परा-
परपूर्वा (स्त्री०)–वह स्त्री जो अपने पति को निकृष्ट समझ कर अन्य-पतिको उत्कृष्ट जानउस से प्रेम रखती हो, पुनर्भू, स्वैरिणी।
परभाग(पु०)–अत्यन्त गुणोत्कर्ष,अत्युत्तमता, खण्ड, उत्तमांश, दूसरे का हिस्सा।
परभुक्ता(स्त्री०)–अन्य पुरुष से भोगी हुई स्त्री,परपुरुषसम्भोगवतीनारी।
परभृत(पु०)–काक, कौआ।
परभृत(पु०)–कोकिल, कोयल।
परम् (अ०)–अधिक, केवल, नियोग, अनन्तर।
परम (वि०)–प्रधान, उत्कृष्ट, पहिला, आद्य, ओङ्कार, अग्रेसर, शिव।
परमम्(अ०)–अनुज्ञा, अनुमति, हुक्म, अङ्गीकार, स्वीकार करना।
परमगव(अस्त्री०)–उत्तमगौ,श्रेष्ठगाय।
परमपद (अस्त्री०)–अच्छा स्थान, उत्तम जगह।
परमब्रह्म [न्] (न०)–परमात्मा, परमेश्वर। [मुनि।
परमर्षि (पु०)–उत्तम ऋषि, ब्रह्मवेत्ता
परमहंस (पु०)–सन्यासिविशेष।
परमाणु (पु०)–अतिसूक्ष्म, जिस से अधिक कोई सूक्ष्म न हो।
परमात्मा (पु०)–विष्णु, परमेश्वर, शिव, ईश्वर, ब्रह्म।
परमाद्वैत (पु०)–पूर्ववत्।
परमान्न (न०)–देवान्न, उत्कृष्टान्न, पायस, क्षीर।
परमायुः [स्] (न०)–उत्तम आयु, जीवितकाल, बड़ी उम्र, १०० वर्ष की आयु।
परमार्थ (पु०)–उत्कृष्ट पदार्थ, यथार्थ वस्तु, मोक्ष, सुख, दुःखाभाव।
परमृत्यु (पु०)–काक, कौआ।
परमेश्वर (पु०)–ब्रह्म,चक्रवर्तीराजा।
परमेष्ठी [न्] (पु०)–परब्रह्म में लीन होने वालापुरुष,चतुर्मुख ब्रह्मा।
परम्पर (पु०)–प्रपौत्र आदि, मृगभेद।
परम्परा (पु०)–वंश, सन्तति, क्रम, सिलसिला। [से चला हुआ।
परम्परीण (वि०)–परम्परागत, क्रम
परलोक(पु०)–दूसरा लोक,लोकान्तर
परवश (वि०)–परायत्त, पराधीन, दूसरे के वशीभूत।
परवान् [वत्] (वि०)–पराधीन।
परवृत (पु०)–धृतराष्ट्र।
परश (न०)–रत्नविशेष [कहते हैं कि इस के स्पर्श से दूसरे धातु स्वर्णत्व को प्राप्त हो जाते हैं]।
परशु (पु०)–शस्त्रविशेष, कुल्हाड़ा। [इसी अर्थ में पर्शु भी होता है]।
परशुधर(पु०)–गणेश, परशुराम।
परश्व [स्] (अ०)–आने वाले दिन से अगला दिन, परसों।
परश्व [ध] ध (पु०)–परशु, कुठार,

फुल्हाड़ा । [आपस में ।
परस्पर (वि०)-अन्योन्य, इतरेतर,
परस्मैपद(न०)-ऐसा पद जिसके कहने से दूसरे के लिये फल का ज्ञान हो, व्याकरण में प्रत्ययों की एक संज्ञा ।
परा(अ०)-छुटकारा, उलटापन, बड़ापन, कटूक्ति, सामने, त्याग[देना], गति, अनादर । स्त्री०-ब्रह्मविद्या ।
पराक(पु०)-एक प्रकार का व्रत, १२ दिन का फाक़ा, एक प्रकार का रोग, तलवार ।
पराक्रम(पु०)-बल, शौर्य, बहादुरी ।
पराग(पु०)-धूलिमात्र, पुष्परज, केसर का चूर्ण ।[कार्य से हटने वाला ।
पराङ्मुख (वि०)-विमुख, आरम्भित
पराचित (वि०)-अन्यद्वारा पालित, दूसरे से पला हुआ, परपुष्ट ।
पराचीन (वि०)-पराङ्मुख, परकालिक, पुराना ।
पराजय(पु०)-पराभव, अनादर, हार ।
पराजित(वि०)-हराया हुआ, विजित ।
परात्पर(वि०)-श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ, सब से अच्छा । पु०-श्रीकृष्ण ।
पराधीन=परवश ।
परानसा(स्त्री०)-चिकित्सा, इलाज ।
परान्न (न०)-दूसरे का अन्न । वि०-दूसरे के अन्न पर जीने वाला ।
पराभव (पु०)-तिरस्कार, बेइज़्ज़ती, अपमान, हानि, तबाही ।
पराभूत(वि०)-अपमानित, तिरस्कृत, पराजित ।
परामर्श (पु०)-युक्ति, दलील, विवेचन, सलाह, राय ।
परामृष्ट (वि०)-सम्बन्धित, सलाह किया हुआ, विवेचित ।
परायण (न०)-अत्यन्तासक्ति, किसी कार्य में बहुत ही लगना । वि०-तत्पर, आसक्त ।
परायत्त (वि०)=परवश ।
परारि(अ०)-गततृतीयाब्द, पहिले से पहिला वर्ष, परार साल, बीता हुआ तीसरा संवत् ।
परारु (पु०)-कारवेल्ल, करेला ।
परार्द्ध (न०)-अन्तिमसंख्या, पिछली गिनती, १०००००००००००००००० ब्रह्मा की आयु का दूसरा आधा
परावर्त (पु०)-विनिमय, बदलना, लौटना ।
परावित्तु (पु०)-कुबेर । [पिता ।
पराशर (पु०)-एक मुनि, व्यासदेव का
पराशरी [न्](पु०)-पाराशरी, चतुर्थाश्रमी ।
पराश्रया (स्त्री०)-वृक्ष के ऊपर उगने वाला वृक्ष, बन्दा, वृक्षादनी ।
परासन (न०)-मारना ।
परासु (वि०)-मृत, जिस के असु [प्राण] निकल गये हों ।
परास्कन्दी [न्] (पु०)-चोर, तस्कर ।
परास्त (वि०)-निरस्त, निकाला हुआ, हराया हुआ ।
पराह (पु०)-परदिन, अगला दिन ।
पराह्ण (पु०)-दिन का पिछला भाग, दोपहरबाद का समय ।

परि (अ०)--चारों से तरफ़ वर्जना, व्याधि, निकालना, शोक, सन्तोष, उपरम, भूषण इत्यादि अर्थों का बोधक।

परिकर(पु०)--समारम्भ, कमर कसना, पर्यङ्क [पलंग], विवेक।

परिकर्म्म [न्](न०)--अङ्गसंस्कार, केसर आदि देह सजाने का द्रव्य-विशेष, उबटन, शरीरसंस्कार-मात्र, आभूषण, प्रतिकर्म।

परिकर्मा[न्] (पु०)--सेवक, नौकर, परिचारक।

परिकांक्षित (वि०)--स्वर्गाभिलाष, तपस्वी, वैराग्ययुक्त।

परिक्रम(पु०)--क्रीड़ा के लिये पावों से गमन, देवादि की प्रदक्षिणा करने के लिये पैदल जाना, विहार, सैर।

परिक्रिया(स्त्री०)--एकदिनसम्बन्धी यज्ञविशेष, खाई या भट्टादि से परिवेष्टन [लपेटना]।

परिक्षित(पु०)--एक कुरुवंशीय राजा, अभिमन्यु का पुत्र [परीक्षित, पारिक्षीत, परिक्षित ये शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं]।

परिखा (स्त्री०)--खाई, शत्रु आदि नगर में प्रवेश न कर सकें एत-दर्थ चारों तरफ़ खुदा हुआ जल भरने का स्थान।

परिख्यात (वि०)--अति प्रसिद्ध, मशहूर, गणनायुक्त।

परिगत (वि०)--प्राप्त, ज्ञात, जाना हुआ, विस्मृत, चारों तरफ़ से घिरा हुआ, परिवेष्टित, गया हुआ। [योग्य।

परिग्रह्या (स्त्री०)--नारी, ग्रहण करने

परिग्रह (पु०)--दान लेना, प्रतिग्रह, पत्नी, सेना का पश्चाद्भाग, परिवार, अङ्गीकार, शाप, शपथ, साधन, मूल, कन्द। [धक।

परिग्राह(पु०)--यज्ञ की वेदि का बो-

परिघ (पु०)--लोहे का बना हुआ मुद्गर, ज्योतिषशास्त्रोक्त २७ योगों में से एक, घट, घर, काच का घट, पुर का दरवाज़ा, कार्त्ति-केय का अनुचर, बाणजालविशेष।

परिघात (पु०)--अस्त्र, मारना, हनन।

परिचय (पु०)--विशेषज्ञान, जानपना, प्रणय, ज्ञात को पुनः २ जानना, प्रशंसा, प्रेम।

परिचर (पु०)--युद्धक्षेत्र में रथ का रक्षक, सहायक, सेना में राजा का दण्डनायक, रोगी की परि-चर्या करने वाला।

परिचर्या (स्त्री०)--सेवा, टहल, शुश्रूषा, अधीनता, उपासना।

परिचाय्य (पु०)--वह अग्नि जिस का संस्कार किया जाय, यज्ञ का अग्नि।

परिचारक (वि०)--सेवक, नौकर, भृत्य। [सेव्य, पूजनीय।

परिचार्य (वि०)--सेवा करने योग्य,

परिचित (वि०)--ज्ञात, जाना हुआ, परिचययुक्त। [परिचयनीय।

परिचेय (वि०)--चिनने योग्य, संग्रह,

परिच्छद (पु०)–परिवार, सामग्री, उपकरण अर्थात् हस्ती, अश्व, रथादि। [हुआ, सवृत।
परिच्छन्न (वि०)–सब तरफ से ढका
परिच्छिन्न (वि०)–सावधिक, अवधि-प्राप्त, परिच्छेदयुक्त।
परिच्छेद (पु०)–इयत्ता रूप प्रमाण, इतना, सीमा, अवधि, ग्रन्थ के सर्ग, अध्याय आदि।
परिजन (पु०)–पोष्यजन, परिवार, पालनीय पुत्रादि वर्ग।
परिणत (वि०)–परिपक्व, बढ़ा हुआ, अवस्थान्तर को प्राप्त।
परिणय (पु०)–विवाह, उद्वाह, शादी।
परिणाम (पु०)–विकार, प्रकृति का बदलना, स्वरूप का अन्यथा हो जाना, अन्त, अर्थालंकारभेद।
परिणामदर्शी [न्] (वि०)–कार्यसमाप्ति के पूर्व ही अन्तिम फल का देखने वाला, परमकालदर्शी।
परिणामशूल (पु०)–वह शूल जो भुक्त अन्न के परिपाकसमय में होता है, रोगविशेष। [फैलाव।
परिणाह (पु०)–विस्तार, विशालता,
परिणेता [नृ] (पु०)–भर्ता, पति, मालिक, जिस के साथ विवाह हुआ हो। [सब तरफ से, सर्वतः।
परितः [स्] (अ०)–चारों ओर से,
परिताप (पु०)–दुःख, गर्मी, शोक, भय, कम्प, उत्पन्न करना, नरकविशेष। [रहित, सन्तोषित।
परितुष्ट (वि०)–सन्तुष्ट, अभिलाषा-

परितोष (पु०)–सन्तोष, सम्प्र, सब प्रकार से तुष्टि।
परित्याग (पु०)–छोड़ना, त्यागना, सब प्रकार से वर्जन।
परित्राण (न०)–मारण आदि हिंसात्मक कर्म से बचाना, रक्षण, कुत्सित कर्म से हटाना, हस्तधारण।
परिदान (न०)–एक वस्तु लेकर बदले में दूसरी का देना, अदलाबदली, विनिमय।
परिदायी [न्] (पु०)–अविवाहित ज्येष्ठ भाई को छोड़ कर छोटे को कन्या देने वाला पुरुष। [बड़े भाई को छोड़ छोटे को कन्या देने वाला कन्या का पिता 'परिदायी', वह कन्या 'परिवेदनीया', छोटा भाई 'परिवेत्ता' ज्येष्ठ भ्राता 'परिवित्त' और ऐसे विवाह के कराने वाला आचार्य 'परिकर्त्ता' कहाता है जो कि ये सब धर्मशास्त्र में पतित हैं]।
परिदेवन (न०)–विलाप, किये हुए अनुचित काम पर शोक करना, पश्चात्ताप, पछताना, पुनः २ सोचना। [करना।
परिदेवना(स्त्री०)–शोकविषयक विलाप
परिधान(न०)–पहिरा हुआ वस्त्र, परिधेय वस्त्र, अधोवस्त्र।
परिधि (पु०)–सूर्य और चन्द्रमा के चारों ओर उत्पन्न हुआ गोलाकार मण्डल, घेरा, परिवेश, यज्ञ के वृक्ष की शाखा, पहरने योग्य

वस्त्र,सूर्य तथा चन्द्रमा की सभा।
परिधिस्थ(वि०)–घेरे में रहने वाला, मण्डल में स्थित, भृत्य, नौकर, संग्राम में शत्रु के प्रहार से रथ की रक्षा करने वाला, सेना में नृपति का दण्डनायक।
परिपण-न (न०)–वह धन जिस से व्यवहार किया जाता है, मूल-धन, पूंजी।
परिपन्थक(पु०)–शत्रु, वह पुरुष जो अवगुण को प्रकट करता है या मार्ग को अवरोध कर चलता है।
परिपन्थी[न्] (वि०)–दोषों को प्रकट करने वाला, शत्रु, दुश्मन, प्रति-कूल आचरण करने वाला।
परिपाक (पु०)–चतुराई, निपुणता, उत्तम प्रकार से पकना, अच्छा पाक।
परिपाटि-टी (स्त्री०)–सिलसिला, अनुक्रम,रीति,रिवाज,आनुपूर्वक।
परिपूत (न०)–बिना छिलके के धान्य, तुषरहित धान्य। वि०–सब प्रकार से पवित्र।
परिपूर्णत्व (न०)–सब ओर से भरा हुआ, परिपूर्णता, सम्पूर्णत्व।
परिपेलव(वि०)–अत्यन्त कोमल।
परिप्लव (वि०)–चञ्चलतायुक्त, अति चञ्चल, अस्थिर। पु०–मुखोमल नामक राजा का पुत्र।
परिप्लुत(वि०)–जलादि से डूबा हुआ।
परिप्लुता(स्त्री०)–मदिरा,शराब,मद्य, मैथुन में वेदनावती योनि।
परिबर्ह (पु०)–राजा के योग्य हस्ती, अश्व, रथ आदि,राजयोग्य द्रव्य, परिच्छद, सामग्री।
परिभ[ा]व (पु०)–तिरस्कार, बेइ-ज्जती, अनादर।
परिभाषण (न०)–निन्दायुक्त वचन, सोपालम्भ कथन, वह वचन जिस में उलाहना या ताना दिया जाय।
परिभाषा(स्त्री०)–कृत्रिम नाम, बना-वटी संज्ञा, सूत्र का लक्षणविशेष, अवयवार्थ को छोड़ समूह का अर्थ, एक विशेष नाम।
परिभूत(वि०)–तिरस्कार किया हुआ, अनादृत, अवमानित।
परिमण्डल(वि०)–सब तरफ़ से गोला-कार, वर्तुल, गोल।
परिमल(पु०)–केसर आदि का मलना, मलने से उत्पन्न हुई सुगन्ध, मर्दनोत्थ सुगन्ध, सौरभ, विद्व-त्समूह। [समता।
परिमाण (न०)–माप, प्रमाण, तोल,
परिमार्ग्य (वि०)–शुद्ध करने योग्य, शोधनीय।
परिमित(वि०)–परिणाम किया हुआ, मापित, उचित, ठीक, तोलयुक्त, परिमाणयुक्त।
परिमेय (वि०)–माप करने योग्य, गिनती के लायक़,परिमाणयुक्त।
परिमोक्ष(पु०)–मल का त्याग,विमुक्ति, सब ओर से रक्षण।
परिमोषी [न्] (वि०)–चुराने वाला, तस्कर, चोर, परिमोषणशील।

परि[री] रम्भ (पु०)–आलिङ्गन, हृदय से लगाना।

परिवत्सर (पु०)–संवत्, वर्ष, साल।

परिवजन (न०)–छोड़ना, परित्याग, मारना, मारण।

परि [री] वर्त (पु०)–अदलाबदली, अपवर्त्तन, कूर्मराजा, युग का अन्तिम समय। [जगह।

परिवसथ (पु०)–ग्राम, गाँव, रहने की

परिवह(पु०)–सात प्रकार के वायुओं में से छठा।

परि [री] वाद (पु०)–निन्दा, बुराई, अपवाद, बदनामी।

परि[री] वाप(पु०)-मुण्डन, केशच्छेदन, जलस्थान परिच्छद, साग का

परिवापन(न०)–पूर्ववत्।

परिवापित(वि०)–मुड़ा हुआ, मुण्डित।

परि[री] वार(पु०)–कुटुम्ब, परिजन, तलवार का म्यान, खड्गकोष।

परि[री] वाह(पु०)–जल का प्रवाह, जलोच्छ्वास, चारों तरफ पानी का उछलना।

परिविन्न(पु०)–कनिष्ठ भाई के विवाह समय अविवाहित ज्येष्ठ भ्राता।

परिवित्ति(पु०)–बड़े भाई के अविवाहित होने पर विवाहित छोटे भाई का नाम। [अधिप।

परिवृढ(वि०)–स्वामी, प्रभु, मालिक,

परिवृत(वि०)--सब ओर से लिपटा हुआ, आच्छादित, वेष्टित।

परिवेत्ता[त्तृ] (पु०)–बड़े भाई का विवाह न होने पर विवाहित छोटा भाई।

परिवेदन (न०)–विवाह, शादी, अन्याध्यान, सब प्रकार से ज्ञान, सब तरह से लाभ, सर्वतोभाव से विद्यमानता।

परिवेश (पु०)–उपेटन, घेरा, वेष्टन, मेघादि के कारण सूर्य और चन्द्रमा के चारों तरफ का घेरा।

परिवेष (पु०)–पूर्ववत्। [वाला।

परिवेषक (पु०)–परिवेष्टा, परोसने

परिवेषण (न०)–वेष्टन, घेरा, भोजन का परोसना।

परिवेषिका (स्त्री०)–घेरा डालने वाली, भोजन परोसने वाली।

परिवेष्टा [ष्टृ] (पु०)–घेरा डालने वाला, भोजन परोसने वाला।

परिवेष्टित (वि०)–सब ओर से घिरा हुआ, सब तरह से बंधा हुआ।

परिव्रज्या (स्त्री०)–तपस्या, तपश्चर्या, इधर उधर घूमना।

परिव्राजक (पु०)–यति, सन्यासी, चतुर्थाश्रमी।

परिव्राट् ड् [ज] (पु०)–पूर्ववत्।

परिशिष्ट (न०)–अवशिष्ट भाग को बतलाने वाला, ग्रन्थ, क्षेपक।

परिशोध (पु०)–सब प्रकार से शुद्धि।

परिशोष(पु०)–सब प्रकार से शुष्कता।

परिश्रम (पु०)–व्यायाम, दण्ड बैठक रूप कसरत, मेहनत।

परिश्रय (पु०)–सभा, मजलिस, कमेटी।

परिश्रान्त (वि०)–सब तरह से थका हुआ।

परिश्लेष (पु०)–आश्लेष, आलिङ्गन।

परिषत् द् (स्त्री०)-सभा, धर्मोपदेशक पण्डितों का समुदाय। [परिश्रम
परिषद (पु०)-सेवक, नौकर, मेहनत
परिषद्य (पु०)-सभासद्, मेम्बर।
परिषद्वल (वि०)-सभा वाला। पु०-मेम्बर, सदस्य।
परिष्क[स्क]न्द (वि०)-परपुष्ट, दूसरे से पला हुआ।
परिष्कार (पु०)-अलङ्कार, भूषण, संस्कार, सजावट, सामान।
परिष्कृत (वि०)-अलंकृत, सजाया हुआ, कृतसंस्कार।
परिष्कृतभूमि (स्त्री०)-वेदि, यज्ञार्थ संस्कृतभूमि। [बगलगीर होना।
परिष्वग (पु०)-आलिङ्गन, मिलना,
परिसर(पु०)-नदी, नगर, तथा पहाड़ के समीप की भूमि, मृत्यु, विधि [नियम]। [चारों तरफ जाना।
परिसर्ग (पु०)-चारों तरफ बांधना,
परिसर्प (पु०)-परिक्रिया, चारों तरफ जाना, सर्पविशेष, एक प्रकार का कुष्ठरोग। [घूमना।
परिसर्या (स्त्री०)-सेवा, चारों ओर
परिस्पन्द (पु०)-परिकर, परिवार, सब ओर से चलना, नौकर।
परिस्पन्दन (न०)-चारों ओर से चलना, कांपना।
परिस्यन्द (पु०)=परिस्पन्द।
परिस्रुत्(स्त्री०)-मद्यावस्था, मदिरा।
परिस्रुत (वि०)-सब तरफ से टपका हुआ। [शराब।
परिस्रुता (स्त्री०)-वारुणी, मदिरा,
परि[री]हार (पु०)-अनादर, बेइज्जती, परिवर्जन, त्याग।
परिहार्य (वि०)-त्यक्तव्य, दूर करने योग्य। [मज़ाक, दिल्लगी।
परि[री]हास (पु०)-केलि, हंसीठट्ठा,
परीक्षक(वि०)-परीक्षा लेने वाला, इम्तिहान लेने वाला, जांच करने वाला। [करना।
परीक्षण(न०)-परखना, देख भाल
परीक्षा (स्त्री०)-जांच, इम्तिहान।
परीत(वि०)परिवेष्टित, सब ओर से व्याप्त।
परीष्टि (स्त्री०)-तलाशी, अन्वेषण, सेवा, परिचर्या।
परीसार(पु०)-सब ओर गमन, सर्वतोगमन, परिसर्या।
परु(पु०)-स्वर्गलोक, समुद्र, पर्वत, पहाड़, ग्रन्थि, गांठ।
परुः [स्] (न०)-ग्रन्थि, गांठ।
परुत्(अ०)-गत वर्ष, बीता हुआ संवत्, पिछला साल।
परुत्न(वि०)-वह पदार्थ जो गत वर्ष में हुआ हो, बीते वर्ष में उत्पन्न वस्तु, गतवर्ष का।
परुष(न०)-कठोर वाक्य, मर्मवचन। वि०-विचित्रवर्ण, कठोर, सख्त।
परुषोक्तिक(वि०)-कठोर वचन बोलने वाला, अप्रियवक्ता।
परेत(वि०)-मरा हुआ, मृत, दूर गया हुआ।
परेतराट् [ज्] (पु०)-प्रेतों का राजा, यमराज। [दिन।
परेद्यवि (अ०)-परला दिन, दूसरा

परेद्यु [स्](अ०)--पूर्ववत् ।
परेष्टुका(स्त्री०)-बहुत बार ब्यायी हुई गौ, बहुप्रसूता गौ ।
परेधित(वि०)-दूसरे से पालित, अन्यों से पुष्ट हुआ । पु०-कोकिल ।
परोक्ष (न०)-नेत्रों से दूर, अगोचर, अप्रत्यक्ष । पु०-तपस्वी, ययाति नामक राजा का पौत्र, अनु का पुत्रविशेष ।
पर्जन्य(पु०)-मेघ, बादल, इन्द्र का नाम, मेघ का गर्जन ।
पर्जन्या(स्त्री०)-दारुहल्दी ।
पर्ण् (१० उ०)-हरित रंग का होना, हरितभाव ।
पर्ण(न०)-पत्ता, पत्र,पक्ष, पंख । पु०-पलास का वृक्ष । न०-ताम्बूल । वि०-पत्तों वाला ।
पर्णनर (पु०)-पत्ताओं का बनाया हुआ पुरुष, पुतला, पुत्रलक ।
पर्णशाला (स्त्री०)-पर्णकुटी, पत्तों की बनाई हुई कुटी ।
पर्णसि (पु०)-कमल, पद्म, जलगृह शाकविशेष ।
पर्णाशन (पु०)-मेघ, बादल ।
पर्णास (पु०)-तुलसी नामक वृक्ष ।
पर्द् (१आ०)-अपान वायु का छोड़ना, अधोवायु का त्याग, पाद मारना । [किशों का समूह ।
पर्द (पु०)-अपानवायु का छोड़ना,
पर्दन (न०) अपानवायु का छोड़ना, अपानोत्सर्ग ।
पर्प (न०)-नवीन तृण, नयी घास ।
पर्पट(पु०)-पित्तपापड़ा नामक औषध ।
पर्ब् (१प०)-जाना, गमन करना ।
पर्यङ्क (पु०)-पलंग, खाट, आसनविशेष, वीरासन ।
पर्यटन,(न०)-भ्रमण करना, चारों तरफ घूमना ।
पर्यनुयोग (पु०)-अच्छे प्रकार से पूछना, प्रश्न,सवाल,जिज्ञासा ।
पर्यन्त (पु०)-सीमा तक पहुंचा हुआ, समीप, निकट, पार्श्व ।
पर्यन्तभू (स्त्री०)-नदी, नगर और पर्वत आदि के समीप की भूमि, अवधि की जगह, परिसर ।
पर्यन्तिका(स्त्री०)-गुण से पतित होना, गुणध्वंस ।
पर्यय (पु०)-शास्त्र और लोक से विरुद्ध आचरण, समय का व्यर्थ खोना, कर्त्तव्यविस्मृति ।
पर्यवस्था (स्त्री०)-विरोध, पक्षपात, सिद्ध करना, सर्वव्यापकता ।
पर्यवस्थान (न०)-विरोध, पृथग्भाव।
पर्यस्त (वि०)-गिरा हुआ, पतित, हत, विस्तृत, विस्तार वाला ।
पर्यस्तिका(स्त्री०)-खाट,खट्वा । [पोश
पर्याण (न०) घोड़े की काठी, जीन
पर्याप्त (न०)-यथेष्ट, पूरा, शक्ति, ताकत, संतुष्टि, काफी । वि०-प्राप्त, शक्तिसम्पन्न ।
पर्याप्ति (स्त्री०)-रक्षा हिंसात्मक कर्म करने वाले को रोकना, प्रकाश, प्राप्ति ।
पर्याय (पु०)-सिलसिला, क्रमप्राप्त

वह शब्द जो समान अर्थ का बोधक हो। [क्रमशः पर्याय
पर्यायशयन (नं०)-क्रम से सोना।
पर्यास (पु०)-गिरना, पतन, मारना, हिंसा करना, हनन।
पर्युद्धन (न०)-ऋण, कर्जा।
पर्युदस्त (वि०)-निवारण किया हुआ, निवारित, दूरीकृत, दूर हटाया हुआ।
पर्युदास (पु०)-निवारण, रोकना, एक प्रकार से हटाना, निषेध, प्रकारभेद, वह प्रकार जो सदृश अर्थ का बोधक होता है। [हुआ।
पर्युषित (वि०)-व्युष्ट, बासी, रक्खा
पर्येषणा (स्त्री०)-तर्क आदि से पदार्थ की परीक्षा, तर्कवितर्कद्वारा पदार्थ को अच्छे प्रकार पहिचानना, अन्वेषण।
पर्व् (१ प०)-जानना, गमन करना, प्राप्त करना, पूर्ति करना।
पर्व [न्] (नं०)-ग्रन्थि, गांठ, जोड़, क्षण, अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा और सूर्यसंक्रांति इन पाचों का बोधक।
पर्वक (न०)-घुटना, जानु।
पर्वगामी [न्] (पु०)-पर्व के दिनों में स्त्रीसम्भोग करने वाला पुरुष।
पर्वत (पु०)-गिरि, पहाड़, भूधर, एक मुनि का नाम, मत्स्यविशेष, वृक्ष का वाचक, शाकविशेष।
पर्वतजा (स्त्री०)-पार्वती, गौरी, नदी। वि०-पर्वत में उत्पन्न होनेवाली।
पर्वतराज (पु०)-हिमालय पर्वत।
पर्वतारि(पु०)-इन्द्र, पर्वत का वैरी।
पर्वताश्रय (पु०)-मेघ, बादल।
पर्वतीय (वि०)-एक प्रकार की जाति, पहाड़ों में रहने वाले, पहाड़ी।
पर्वधि (पु०)-चन्द्रमा का वाचक।
पर्वसन्धि (स्त्री०)-गांठों का जोड़, प्रतिपदा और पूर्णमासी का मध्यकाल।
पर्शु (पु०)-परशु, कुल्हाड़ा।
पर्शुका (स्त्री०)-पसवाड़े की हड्डी, पार्श्वास्थि।
पर्शुपाणि(पु०)-परशुराम, गणेश।
पर्शुराम (पु०)-जमदग्नि का पुत्र, परशुराम। [करना।
पर्ष् (१ आ०)-स्नेह करना, प्यार
पर्षद्(स्त्री०)-सभा, पण्डितों का समूह। वि०-सभासद्, सभ्य। [सदस्य।
पर्षद्वल (वि०)-सभासद्, पारिषद,
पल् (१ प०)-गमन करना, जाना। १० उ०-रक्षा करना, बचाना।
पल(न०)-मांस, समय का परिमाण, ४ तोले का वजन, एक घड़ी का साठवां भाग।
पलक्या (स्त्री०)-पालक का शाक।
पलङ्कट(वि०)-डरने वाला, भीरु, भयशील।
पलङ्कष(पु०)-राक्षस, दैत्य।
पलङ्कषा (स्त्री०)-राक्षसी, गोखरू नामक औषध, शल्लकी।
पलप्रिय(पु०)-कौआ, काक।
पलल(न०)-मांस, कीचड़, तिलचूर्ण।

पु०-राक्षस, दैत्य।
पलज्वर(पु०)-मागगतज्वर,पित्तज्वर।
पललाग्नि (पु०)-पित्त, पित्त नामक दोष। [मांस खाने वाला।
पलाद (पु०)-राक्षस, दैत्य। वि०-
पलादन(पु०)-पूर्ववत्।
पलान्न(न०) -मांसादियुक्त सिद्धान्न, वह अन्न जो मांस आदि के साथ पकाया गया हो।
पलायन (न०) -भागना,एक स्थान, को छोड़कर दूसरे स्थान को जाना।
पलायित(वि०)-भागा हुआ, नष्ट, छिपा हुआ, तिरोहित।
पलाल(अस्त्री०) धान्यतुष, पयाल।
पलाश(न०)-पत्ता,पर्ण,पत्र। पु०-ढाक का पेड़। वि०-हरितवर्णवाला।
पलाशी[न्] (पु०)-राक्षस, वृक्षविशेष, क्षीरिवृक्ष।
पलिक्नी(स्त्री०)-वृद्धास्त्री,बूढ़ी औरत।
पलिघ(पु०)-काच का घड़ा,परकोटा, प्राकार, पुर का दर्वाजा, गोपुर।
पलित(न०)-एक रोग जिस में असमय ही बाल सफेद होजाते हैं, बालों का श्वेत होना, केशपाक। पु०-वृद्ध पुरुष।
पलिता(स्त्री०)-बूढ़ी स्त्री।
पल्यङ्क(पु०)-खट्वा, खाट, पलंग।
पल्ययन(न०) घोड़े की काठी, जीन।
पल्ल्(१ प०) जाना, गमन करना।
पल्लव(पु०)-कली, पत्ता, नवीन पत्तों का गुच्छा, एक देश और [पु० व० में] उस देश के रहने वाले।
पल्लवद्रु(पु०)-अशोक नामक वृक्ष।
पल्लवाधार(पु०)-शाखा, टहनी।
पल्लविक(त्रि०)-विलासी पुरुष,कामुक।
पल्लि-ल्ली(स्त्री०)-छोटा गाँव, घर, कुटी। [अल्पसरोवर।
पल्वल (अस्त्री०) -छोटा तालाब,
पव(न०)-गोबर, गोमय। पु०-वायु, मरुत्। [कुम्हार का आँवा।
पवन(पु०)-वायु, हवा। न०-कुम्हार
पवनात्मज(पु०)-हनुमान्, भीमसेन, अग्नि।
पवनाश(पु०)-सर्प, साँप।
पवनाशन(पु०)- पूर्ववत्।
पवनाशनाश(पु०)-गरुड, मयूर,मोर।
पवनेष्ट (पु०)-बड़ा निम्ब का पेड़, बकायन का पेड़।
पवमान(पु०)-पवन, वायु।
पवाका(स्त्री०)-धूलिमिश्रित चक्राकार वायु, वात्या, बवूला।
पवि(पु०)-वज्र, इन्द्र का शस्त्र।
पवित्र (अस्त्री०)-कुश नामक घास, पय, जल तांबा, यज्ञोपवीत, घृत, शहद, विष्णु, महादेव। वि०-व्रतादि से शुद्ध, साफ, स्वच्छ।
पवित्रधान्य(न०), यव, जौ।
पवित्रा (स्त्री०) तुलसी नामक वृक्ष, नदीविशेष, हरिद्रा, हल्दी।
पवित्रारोपण(न०)-वह दान,जिस में विष्णु के निमित्त यज्ञोपवीत अर्पण किया जाता है, श्रावण शुक्ल द्वादशी का नाम।
पश्(१ उ०)-बाधना, रोकना।

१० उ०--बाधना, स्पर्धा करना, छूना, जाना।

पशव्य(वि०)--पशुसम्बन्धी, पशुओं के लिये हितकर।

पशु (पु०)--सिंह आदि चतुष्पाद जानवर, जो सब को समान भाव से देखता है।

पशुक्रिया(स्त्री०)--मैथुन, विषयभोग।

पशुपति(पु०)--शिव, महादेव ।

पशुराज (पु०)--पशुओं का राजा, सिंह,शेर। [प्रतीची, अधिकार।

पश्चात् (अ०)--पीछे, अन्त, चरम,

पश्चात्ताप (पु०)--किसी अनुचित कर्म को करके शोक करना, पछताना, अनुताप,पुनः पुन शोक करना।

पश्चार्द्ध(वि०)--शेष आधा, पीछे का आधा, दूसरा भाग, उत्तरार्ध।

पश्चिम (वि०)--पीछे होने वाला।

पश्चिमा (स्त्री०)--अस्ताचल के समीप की दिशा, पश्चिम दिशा।

पश्य(अ०)--प्रशंसा,तारीफ, आश्चर्य, विस्मय, दर्शक।

पश्यतोहर (पु०)--स्वर्णकार, सुनार।

पश्यन् [त] (वि०)--देखने वाला, ईक्षणकर्त्ता।

पश्यन्ती(स्त्री०)--चार प्रकार की वाणियों में से एक अर्थात् मूलाधार में उत्पन्न होकर हृदयस्थान में प्रकटित हुई शब्दरूप वाणी जो कि चार प्रकार की है यथा-वैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती और अनपायिनी; देखने वाली।

पस्(१ उ०)--बाधना, रोकना, गूंथना, गांठ लगाना।

पस्त्य(न०)--घर, गृह,रहने की जगह।

पह्लव (पु०)--श्मश्रु [दाढ़ी] धारण करने वाली एक नीच जाति।

पा(१प०)--पान करना,पीना। २ प०--रक्षण करना, बचाना।

पा (वि०)--पान करने वाला, रक्षा करने वाला, रक्षणकर्त्ता।

पांशव(पु०)--एक प्रकार का लवण।

पांशु(पु०) धूलि, रज, खेत के लिये चिरकाल से इकट्ठा किया गोबर, खाद, कर्पूर का भेद।

पांशुकुली(स्त्री०)--राजमार्ग।

पांशुचत्वर(पुं०)-ओले, घनोपल।

पांशुल(पु०)--महादेव,शिव, पापात्मा, महादेव का खट्वाङ्ग। वि०--धूलियुक्त वा पापविशिष्ट।

पांशुला (स्त्री०)--व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा, रजस्वला, केतकी।

पांसन (वि०)--दूषण लगाने वाला।

पांसु(पु०)-धूलि, रज।

पाक (पु०)--पकाना, पचन, फल, परिणाम, दैत्यविशेष जिसे इन्द्र ने मारा था, थाली, पात्र, शिशु, बालक,वृद्धावस्था से हुई श्वेतता, भय, राज्यादि।

पाकज(न०)-काचलवण,परिणामशूल।

पाँकरञ्जन(न०)--तेजपात, तेजपत्र।

पाँकल(न०)--कुष्ठौषध, कूठ। पु०--अग्नि, पवन, हस्तिज्वर। वि०--व्रणादि उत्पन्न करने वाला।

पाकशाला (स्त्री०)-पाकस्थान, रसोई घर, पकाने की जगह।
पाकशासन(पु०)-इन्द्र। [अर्जुन।
पाकशासनि(पु०)-इन्द्र का पुत्र जयन्त,
पाकशुक्ला(स्त्री०)-खड़िया मिट्टी।
पाका(स्त्री०)-बालिका।
पाकिम(वि०)-पक कर तैयार हुआ, पक्किम, पाकनिष्पन्न।
पाक्य (न०)-विड नामक लवण। पु०-जवाखार। [पक्षसम्बन्धी।
पाक्षायण (वि०)-पक्ष में होने वाला,
पाक्षिक (वि०)-पक्षपात करने वाला, पक्षिघातक, पक्ष में उत्पन्न हुआ, पक्ष का, प्राप्ति और अप्राप्ति की सम्भावना का वह विषय जो एक पक्ष से आया हो।
पाखण्ड (पु०)-वेदत्रयी के धर्म को खण्डन करने वाला पुरुष।
पागल (पु०)-उन्मत्त, आत्मरक्षण में असमर्थ पुरुष।
पाचक (पु०)-रसोइया, सूद। वि०-भुक्तान्न को पकानेवाला जाठराग्नि न०-पित्त नामक दोषविशेष।
पाचन (पु०)-अग्नि, आग, चन्द्रमा प्रहरस। न०-प्रायश्चित्त, वातादि दोषों को पचानेवाला क्वाथ विशेष।
पाचनक (पु०)-सुहागा, टङ्कण।
पाचनी (स्त्री०)-हैड़, हरीतकी।
पाचल (पु०)-अग्नि, पावक, पवन, राधने का द्रव्य।
पाञ्चजन्य (पु०)-श्रीकृष्ण का शङ्ख।
पाञ्चाल (न०)-एक शास्त्र का नाम। वि०-पञ्चालदेश में उत्पन्न हुआ। पु०-एक देश का नाम जो द्रुपद-राज का नगर था और वर्तमान में को फर्रुखाबाद के नाम से प्रसिद्ध है। पु० ब०-उस देश के रहने वाले। [पुतली, पुत्रिका।
पाञ्चालिका (स्त्री०)-वस्त्रादिनिर्मित
पाञ्चाली (स्त्री०)-पुत्रिका, पुतली, द्रौपदी, पाण्डवपत्नी, पिप्पली।
पाट् (अ०)-सम्बोधन का वाचक।
पाटच्चर (पु०)-चोर, तस्कर।
पाटन (न०)-छेदन, तोड़ना, उखाड़ना।
पाटल (पु०)-श्वेत और रक्तवर्ण, गुलाबी रंग। वि०-श्वेतरक्त रंग वाला।
पाटला (स्त्री०)-दुर्गा, पार्वती।
पाटली[लि]पुत्र(न०)-पटना नामक नगर। [कौशल्य, आरोग्य।
पाटव (न०)-पटुता, चतुराई, क्रिया-
पाटविक (वि०)-पटुतायुक्त, धूर्त।
पाटित (वि०)-फाड़ा हुआ, विदीर्ण किया हुआ।
पाठ (पु०)-गुरुमुख से श्रुत अक्षरों का उच्चारण, विधिपूर्वक वेदादि का अभ्यास, पढना, एक ब्रह्मयज्ञ।
पाठक (पु०)-अध्यापक, पढ़ाने वाला, मास्टर। [स्कूल।
पाठशाला (स्त्री०)-पढने का घर,
पाठिका (स्त्री०)-अध्यापिका, पाठा नामक औषध।
पाठी [न्] (पु०)-चीते का वृक्ष, पाठक। वि०-पढ़ाने वाला।

पाठीन (पु०)-एक मत्स्य का नाम, वह मत्स्य जिस के सहस्र दंष्ट्रा होती हैं, गुगुल का वृक्ष, पाठक। वि०-पढ़ाने वाला।
पाठ्य (वि०)-पढ़ने योग्य, पठनीय।
पाणि(स्त्री०)-दुकान, हट्ट, पण्यवीथी।
पाणि (पु०)-हाथ, हस्त, कर, कुलिक नामक वृक्ष।
पाणिगृहीती (स्त्री०)-वेदोक्त विधानपूर्वक विवाहिता भार्या, धर्मपत्नी।
पाणिग्रहण (न०)-विवाह, उद्वाह, शादी।
पाणिघ (पु०)-वह पुरुष जो हाथ बजावे, हाथ से मृदंगादि बजाने वाला पुरुष।
पाणिज(पु०)-नख, नाखून।
पाणि[णी]तल(न०)-दो तोले का परिमाण, हथेली, हस्त के नीचे का भाग।
पाणिनि (पु०)-व्याकरण के कर्त्ता एक प्रसिद्ध मुनि जो कि दाक्षी नामकी माता से उत्पन्न हुए थे।
पाणिनीय (वि०)-पाणिनि मुनिकृत अष्टाध्यायी प्रभृति व्याकरणग्रन्थ।
पाणिन्धय(वि०)-हाथों से पीने वाला, हाथद्वारा पानकर्त्ता।
पाणिमर्द (पु०)-हाथ बजाने वाला पुरुष, हस्तमर्दक।
पाणिरुह(पु०)-नख, नाखून।
पाणिसर्या(स्त्री०)-रज्जु, रस्सी।
पाणीकरण(न०)-विवाह, शादी।
पाण्डर (पु०)-श्वेत रंग, एक पर्वत, मरुबक वृक्ष विशेष। न०-कुन्द का पुष्प, गेरू। वि०-उस रंग वाला।
पाण्डव (पु०)-युधिष्ठिरादि पाण्डुनन्दन।
पाण्डु(पु०)-चन्द्रवंशीय प्रसिद्ध राजा, शुक्लमिश्रित पीतवर्ण, नागविशेष, श्वेत रंगका हस्ती, रोगविशेष, पटोल का वृक्ष। वि०-श्वेतमिश्रित पीतवर्णवाला।
पाण्य (वि०)-स्तुति करने योग्य, स्तुत्य, स्तवनीय, स्तुत्यर्ह।
पात(पु०)-पतन, गिरना, राहु नामक ग्रह। वि०-रक्षित, बचाया हुआ।
पातक(न०)-पाप, अशुभ कर्म, नरकसाधन, प्राणियों की हिंसा करना, वधात्मक कर्म। [ग्रचर ग्रह।
पातङ्गि(पु०)-सूर्य की सन्तान, शनैपातञ्जल (न०)-पतञ्जलिमुनिप्रणीत योगदर्शन, शास्त्रविशेष।
पातन(न०)-नीचे गिराना, अधःपतन, अधोनयन। [रक्षित।
पाता [तृ] (वि०)-रक्षा करने वाला,
पाताल(न०)-अपने नाम से प्रसिद्ध अधोलोक विशेष, छिद्र, बिवर, सूराख, वाडवानल, लग्न से चौथा स्थान। पु०-औषध पकाने का यन्त्र
पातालनिलय(पु०)-दैत्य, राक्षस, सर्प।
पाति(पु०)-स्वामी, मालिक, प्रभु।
पातिक(पु०)-शिशुमार, मत्स्यविशेष, आकाशस्थ नक्षत्रसमूह।
पातिली (स्त्री०)-मृग बांधने की

रस्सी, नारी, एक प्रकार का मिट्टी का पात्र।

पातुक(वि०)-गिरनेवाला,पतनशील।

पात्र(न०)- जल आदि के रहने का स्थान, आधेय के धारणयोग्य वस्तु, बर्तन,दान के योग्य सुपात्र ब्राह्मण, यज्ञसम्बन्धी स्रुवादि, दोनो तटों के मध्य में जल ठहरने का स्थान, नाटक में नायक आदि का वाचक।

पात्रपाल(पु०)-तराजू, तुला, घट।

पात्रसंस्कार(पु०)-बर्तनों की शुद्धि।

पात्री(स्त्री०)-पात्र, बर्तन।

पात्रीय(न०)-यज्ञ के पात्र, योग्य।

पात्रीर (पु०)-यज्ञसम्बन्धिद्रव्य, यज्ञद्रव्य।

पात्रेसमित (वि०)-भोजनसमय में ही मिलने वाला, जो भोजन से अन्यत्र न मिले, भोजन में ही प्रवीण, एक पाप का नाम, वह पाप जिसमें अन्तःकरण में पापबुद्धि रख ऊपर से प्रशंसा की जाय। [मित्र।

पाथ(न०)-पापियों का त्राता,विष्णु,

पाथ (न०)-जल, पानी। पु०-अग्नि, सूर्य, सूरज।

पाथ [स्] (न०)-जल, पानी, अन्न।

पाथि [स्] (पु०)-समुद्र,नेत्र, चक्षु। न०-जल।

पाथेय (न०)-मार्ग में व्यय करने योग्य द्रव्य, मार्ग का खर्च, सम्बल, कलेवा।

पाथोज (न०)-कमल, पद्म।

पाथोद (पु०)-मेघ, बादल।

पाथोधर (पु०)-पूर्ववत्।

पाथोधि (पु०)-समुद्र, सागर।

पाद् (पु०)-पांव, चरण, पाद।

पाद(पु०)-चरण, पांव,चौथा हिस्सा, वृक्षादि की जड़, श्लोकपाद, बड़े पर्वत के समीप का छोटा पहाड़, किरण।

पादकटक(पु०)-नूपुर, पाजेब,झांवर।

पादकृच्छ्र (पु०)-व्रतविशेष, वह व्रत जिसमें एक दिन का उपवास किया जाता है।

पादग्रहण (न०)-पांव पकड़नेपूर्वक प्रणाम, अभिवादन।

पादचारी [न्] (पु०)-पैदल, पदाति, जो पांवों से गमन करता है। वि०-पांवों से चलने वाला।

पादज (पु०) शूद्र, चौथा वर्ण। वि०-पांवों से उत्पन्नमात्र।

पादत्राण (न०)-जूती,पादुका,खड़ाऊ।

पादप (पु०)-वृक्ष, पेड़, दरख्त, पाद पीठ, पांवों का आसन, पीढ़ा, स्टूल। [पदासन।

पादपीठ(न०)-पांव रखने का आसन,

पादप्रधारण (न०)-पादुका, खड़ाऊ।

पादबन्धन(न०)-गौ और भैंस आदि के पांव बांधने का साधन।

पादमूल (न०)-पांव के नीचे का भाग, चरण का अधोभाग।

पादविक (पु०)-पथिक, यात्री, राहगीर, पैदल। [नतशीर।

पादशोथ(पु०)-पांवों का सूजन,चरण-

पादस्फोट (पु०)–पांवों का फटना, विपादिका, बिवाई।
पादाङ्गद (न०)–नूपुर, झांझर, पाजेब।
पादात् (पु०)–पदाति, वृक्ष का वाचक
पादात (न०)–पैदलों का समूह।
पादालिन्दी (स्त्री०)–नौका, नाव।
पादुका (स्त्री०)–जूती, खड़ाव, पादरक्षिका। [कार।
पादुकाकार–कृत् (पु०)–चमार, चर्म-
पादू (स्त्री०)=पादुका। [मृत।
पादोदक(न०)–चरणों का जल, चरणा-
पाद्य (न०)–पांव धोने के लिये जल, पादप्रक्षालनार्थ जल।
पान (न०)–पीने की वस्तु, पीना, द्रवरूप द्रव्य का गले से नीचे उतारना, पात्र, वर्त्तन, कृत्रिम-नदी, नहर, जल। वि०–रक्षा करने वाला। [पक्रम।
पानक (न०)–पीने का द्रव्य विशेष,
पानगोष्ठी(स्त्री०)-मद्य पीने वालों की सभा, मद्यपानचक्र।
पानपात्र(न०)–शराब पीने का प्याला, मद्य पानपात्र। [वैश्य, शौंडिक।
पानवणिक् (पु०)–मद्य बेचने वाला
पानभाजन(न०)–शराब का प्याला।
पानीय(न०)–जल, पीने योग्य वस्तु।
पानीयशालिका(स्त्री०)–जल पिलाने का घर, प्रपा, प्याऊ।
पान्थ(पु०)–पथिक, मुसाफिर।
पाप(न०)–अधर्म, नीचकर्म, नरक का साधन, गुनाह।
पापक (न०)–पूर्वंवत्।

पापकृत् (वि०)–पाप करने वाला।
पापग्रह (पु०)–रवि, मंगल, शनि, राहु और इन से युक्त बुध।
पापघ्न(पु०)–तिल नामक द्रव्य। वि०–पापनाशक। [जारपति।
पापपति (पु०)–उपपति, दूसरा पति,
पापपुरुष (पु०)–पापशील पुरुष, पापात्मक मनुष्य, गुनहगार, तन्त्रशास्त्र में कहा हुआ पुरुष के स्वरूपका वह पदार्थ जो वामकुक्षि में पाप के स्वरूप में ध्यान के योग्य होता है।
पापमुक्त (वि०–पाप से छूटा हुआ, निष्पाप, पापरहित।
पापर्द्धि(स्त्री०)–शिकार खेलना, मृगया
पापात्मा [न्] (पु०)–पापयुक्त पुरुष, जिस की बुद्धि पापकर्म में लगी हुई हो। [पापयुक्त।
पापी [न्] (पु०)-पापात्मक मनुष्य,
पाप्मा [न्] (पु०)-पाप, नीच कर्म।
पामन्[न्] (पु०)-खुजली नामक रोग, विचर्चिका। [औषध।
पामघ्न(पु०)–गन्धक नाम से प्रसिद्ध
पामर(वि०)–नीच, क्रूर, खल, मूर्ख।
पामा[न्] (स्त्री०)–खुजली रोग।
पायस(पु०)–दूध में तैयार किया गया अन्न, खीर आदि, परमोत्तम अन्न। वि०-दूध का।
पायु(पु०)–गुदा, अपान वायु के रहने का स्थान, गुदाद्वार, अपने नाम से प्रसिद्ध भरद्वाज का पुत्र।
पार(पु० न०)–कार्य की समाप्ति, काम

का समाप्त होना ।
पार(न०)–दूसरा तट, नदी को उलंघन कर जाने योग्य परला किनारा । पु०-पारा, पारद ।
पारक(वि०)–पूर्त्ति करने वाला, पूर्त्तिकारक, पालनकर्त्ता, प्रीति करने वाला । [गामी ।
पारग(वि०)–पार जाने वाला, पार-
पारजायिक (पु०)–परस्त्रीगामी, पारदारिक ।
पारण(न०)–मेघ, बादल ।
पारणा (स्त्री०)–उपवास के अन्त का भोजन, व्रतसमाप्तिविषयक अन्तिम दिन का भोजन ।
पारतन्त्र्य (न०)–दूसरे के वश में रहना, पराधीनता, परवशता ।
पारत्रिक (वि०)–दूसरे लोक में होने वाला, परलोक के लिये हितकारक, पारलौकिक, परलोकसम्बन्धी ।
पारदारिक (पु०)–दूसरे की भार्या में आसक्त, परस्त्रीगामी, परदाररत ।
पारदार्य(न०)–परस्त्री से गमन करना, परदारगमन ।
पारदेश्य (वि०)–परदेश में गया हुआ, पथिक, प्रोषित, परदेशजात ।
पारमहंस्य (वि०)-वह धर्म जो परमहंस नामक संन्यासियों के लिये प्रासङ्ग हो अर्थात् परब्रह्मध्यान, ज्ञानस्वरूप ।
पारमार्थिक (वि०)–जो मोक्ष के लिये हितकर हो, परमार्थयुक्त, मुख्य, आपस में सटा हुआ, परस्पर विपक्ष ।
पारम्पर्य (न०)–कुलक्रम, सिलसिले से आया हुआ, वंश की परम्परा से आगत ।
पारम्पर्योपदेश (पु०)–पितृपरम्परा से प्राप्त उपदेश, वह उपदेश जो अपने वंश के वृद्धों से चला आता हो और जिस का अपने को साक्षात्कार न हो ।
पारलौकिक (वि०)–दूसरे लोक के लिये हितकर, परलोकसम्बन्धी, परलोक में होनेवाला । [पक्षी ।
पार [रा] वत (पु०)–कबूतर नामक
पारशव (पु०)–ब्राह्मण के वीर्य से शूद्राभार्या में उत्पन्न पुत्र, निषाद नामक जाति, परस्त्री का पुत्र, लोह । वि०-परशुसम्बन्धी ।
पारश्वध (पु०)–कुल्हाड़े से युद्ध करने वाला पुरुष, परश्वधधारी ।
पारसि [सी]क (पु०)–एक देश का नाम, फारस देश । पु० ब०-उस देश के निवासी । वि०-उस देश में उत्पन्न होने वाला ।
पारस्त्रैणेय (वि०)–दूसरे की स्त्री से उत्पन्न, जारज, परस्त्रीजात ।
पारा (स्त्री०)–एक नदी ।
पारापत (पु०)–कबूतर, पारावत ।
पारापा [वा] र (पु०)–समुद्र, सागर । न०–तटद्वय ।
पारायण (न०)–पुराणपाठ, किसी

ग्रन्थविशेष का सम्पूर्ण रूप से पाठ करना, पूरा २ पाठ करना, समग्रत्व, जिसके द्वारा एक काम के अन्त को प्राप्त होता है।

पारावती (स्त्री०)–नदी विशेष, गोपगीत।

पारावारीण (वि०)–दोनों तटों पर जाने वाला, तटद्वयगमनशील, तीरद्वयगामी।

पाराशर (पु०)–पराशर नामक ऋषि के पुत्र वेदव्यास, पराशरकृत एक स्मृति, संहिताविशेष। न०–पराशरोक्त भिक्षुसूत्र नामक ग्रन्थ। वि०–पराशर का।

पाराशरि (पु०)–वेदव्यास।

पाराशरी [न्] (पु०)–पराशरोक्त भिक्षुसूत्र को जो पढ़ता है, भिक्षुक, चतुर्थाश्रमी, सर्वकर्मपरित्यागी, सन्यासी। [वेदव्यास।

पाराशर्य (पु०)–पराशर का पुत्र

पारिकांक्षी [न्](पु०)–तपस्वी, सन्यासी, मौनव्रतधारी, ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति का इच्छुक।

पारिजात(पु०)–समुद्र में उत्पन्न हुआ देवताओं का वृक्ष, कल्पवृक्ष।

पारिणाय्य (वि०)–विवाहसमय प्राप्त हुआ धन।

पारिणाह्य (वि०)–घर की सामग्री जैसे–खट्वा, आसन, घट, पात्र, वस्त्रादि।

पारितोषिक(वि०)–भेट में प्राप्त हुआ धन, परितोष से प्राप्त धन, सन्तोषजनक द्रव्य।

पारिन्द्र(पु०)–सिंह, शेर।

पारिपान्थिक(पु०)–चोर, तस्कर।

पारियात्र-त्रिक(पु०)–एक पर्वत का नाम जो विन्ध्याचल के पश्चिम में मालवदेश की सीमा का बोधक और कुलपर्वतों में से एक है।

पारिपार्श्विक(पु०)–जो आस पास में रहता वा विचरता है, नाटक में वह नट जो सूत्रधार के पास रहता है।

पारिप्लव(न०)–चञ्चल, तरल, आकुल, तीर्थविशेष। पु०–जल का पक्षी।

पारिभद्र(पु०)–वृक्षविशेष, निम्बवृक्ष।

पारिभाव्य (न०)–कुष्ठौषध, जामिन होना, जामिनी देना, प्रतिभूबनना।

पारिभाषिक(न०)–परिभाषा के अर्थ का बोधक पद, साङ्केतिकपद।

पारिमाण्डल्य(न०)–सर्वत्र विद्यमानता, न्यायमत में कारणत्व से शून्य परमाणु का माप, परमाणुपरिमाण।

पारिमुखिक(वि०)–सामने में रहने वाला, सम्मुखवर्ती।

पारिषद (पु०)–सभासद्, सभ्य, मेम्बर।

पारिहार्य (पु०)–कंकण, कटक, कड़ा, करभूषण।

पारीण (वि०)–पार जाने वाला, पारगामी, कार्य को समाप्त करने वाला। [सर्प।

पारीन्द्र (पु०)–सिंह, शेर, अजगर

पा.द (पु०)–सूर्य, सूरज, अग्नि, आग।

पारुष्य (न०)—अप्रियभाषण, दुर्वाक्य कटुवचन, इन्द्र का वन, अगर नामक गन्ध द्रव्य।
पार्थ(पु०)—पृथिवी का पालक,राजा, पृथा के पुत्र युधिष्ठिरादि, अर्जुन वृक्ष।
पार्थिव (पु०)—पृथ्वीपति, राजा। वि०-पृथ्वी से उत्पन्न होने वाला।
पार्थिवी(स्त्री०)—सीता, जनकपुत्री।
पार्पर (पु०)—यमराज का याचक।
पार्वण (वि०)—स्मृतियों में कहा वह श्राद्ध जो अमावस्या, पूर्णिमादि पर्व दिनों में किया जाता है। पु०-मृगविशेष।
पार्वत (पु०)—मुकायन, महानिम्ब। वि०-पर्वत में होने वाला।
पार्वती (स्त्री०)- दुर्गा, शिवपत्नी।
पार्वतीनन्दन (पु०) -कार्त्तिकेय, स्कन्द, सेनानी।
पार्श्व (अस्त्री०)—समीप निकट, कक्ष का अधोभाग,चक्र,पहिया।
पार्श्वक (वि०)—शठता से विभव का अन्वेषण करने वाला।
पार्श्वपरिवर्तन (न०)—पार्श्व का फेरना, करवट फेरना, पीठ देना, कटिदान।
पार्श्वपिप्पल (न०)-हरीतकी औषध विशेष।
पार्श्वशूल (पु०)—पसली का दर्द।
पार्षती (स्त्री०)—द्रौपदी,पाण्डवपत्नी।
पार्षद (पु०)—सभासद्,सभ्य,सहायक, नौकर।
पार्षद्य (पु०)—पूर्ववत्।
पार्ष्णि (पु०)— गट्टे के नीचे का हिस्सा, एड़ी, गुल्फ का अधोभाग, सैन्यपृष्ठ, सेना की पीठ। स्त्री०-कुन्ती, पाण्डुपत्नी।
पार्ष्णिग्राह (पु०)—शत्रु, दुश्मन, जो पीछे रहे,पीछा ग्रहण करने हारा।
पार्ष्णित्र (न०)—पीछे की रक्षा करने वाली सेना, पश्चाद्रक्षक सेना विशेष। [करना, बचाना।
पाल् (१०उ०)—रक्षा करना, पालन
पाल (पु०)—पीकदान, थूकने का पात्र। वि० -रक्षक, पालक।
पालक(पु०)—अश्वरक्षक,साईस, चीते का वृक्ष। वि०—पालनकर्त्ता।
पालङ्क (पु०)—पालक का शाक, पर्यङ्क, पलंग, बाज नामक पक्षी।
पालन (न०)—रक्षण, सद्यःप्रसूता गौ का दूध।
पलाश (न०)—पर्ण,पत्ता, किसलय, तेजपात। पु०-हरिद्वर्ण,हरा रंग। वि० -पलाशसम्बन्धी।
पालि ली(स्त्री०)—श्रेणी, पङ्क्ति, जूं, यूका, वह स्त्री जिस के मूछ, दाढ़ी हों, प्रान्त, पुल, गोद, उत्सङ्ग, प्रशंसा। [रक्षित।
पालित (वि०)—रक्षा किया हुआ,
पावक(पु०)—अग्नि, आग, विद्युत् सम्बन्धी अग्नि।
पावकि(पु०)—कार्त्तिकेय, स्कन्द,गुह।
पावन(पु०)—अग्नि, व्यास, पीले रंग का भृंगराज,विष्णु,सिद्ध रस।

न०-जल,रुद्राक्ष,प्रायश्चित्त, चित्रक, चीता, शुद्धि, गोमय, गोबर।
पावनध्वनि(पु०)-शंख का वाचक।
पावनी (स्त्री०)-हरीतकी,हैड़, गंगा, तुलसी,गौ,शाकद्वीपकी एकनदी।
पाश(पु०)-बांधने का साधन, पशु और पक्षियों के बांधने का एक फंदा,शस्त्रविशेष,रज्जुमात्र [कर्ण शब्द के आगे प्रयुक्त करने से इस का अर्थ शोभात्मक होता है]।
पाशक(पु०)-जुआ खेलने का साधन, पाशा, द्यूतविशेष।
पाशपाणि (पु०)-वरुण का वाचक।
पाशबपालन(न०)-घास नामक तृण।
पाशित(वि०)-बांधा हुआ, पाशयुक्त।
पाशी[न्](पु०)-वरुण, व्याध, यमराज।
पाशीकृत(वि०)-पाश से बांधा हुआ, पाशबद्ध।
पाशुपत (न०)-व्रतविशेष, एक अस्त्र का नाम। पु०-जिस का देवता पशुपति हो, पशुपति का भक्त।
पाशुपतास्त्र(न०)-महादेव का शूल-नामक शस्त्रविशेष।
पाशुपाल्य(न०)-पशुओं का रक्षण, पशुओं का पालन, वैश्यवृत्ति, वैश्यधर्म।
पाश्चात्य (वि०)-पश्चिम देश में उत्पन्न होने वाला, पश्चिम देश का, [illegible]।
पाश्वा([illegible])-पाशों का समुदाय,
पाषंड (पु०)-वेदधर्म का परित्याग करने वाला, वेदोक्तधर्म को छोड़ने वाला, वेदाचारविहीन, बौद्ध क्षपणक आदि।
पाषण्डी[न्] (पु०)-पूर्ववत्।
पाषाण(पु०)-पत्थर,प्रस्तर।
पाषाणदारक[ण] (पु०)-छैनी, टंक, पत्थर के काटने का औजार।
पि (६ प०)-गमन करना, जाना।
पिक(पु०)-कोकिल, कोयल।
पिकबन्धु(पु०)-आम्रवृक्ष का वाचक।
पिकराग(पु०)-पूर्ववत्।
पिकवल्लभ(पु०)-पूर्ववत्।
पिकानन्द(पु०)-वसन्त ऋतु।
पिकी(स्त्री०)-कोकिला, पिकभार्या।
पिङ्ग(पु०)-हस्ती का पोता, बैलशावक।
पिङ्ग(न०)-बालक, हरताल नामक द्रव्य। पु०-मूषक, पीला रंग। वि०-पीतवर्ण वाला।
पिङ्गजट(पु०)-शिव, महादेव।
पिङ्गल(न०)-नील और पीत मिश्रित रंग, नागभेद, खजांची, अग्निग्रह, रुद्र, महादेव, एक मुनि का नाम, वह मुनि जिसने छन्दःसूत्र नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ निर्माण किया।
पिङ्गला(स्त्री०)-दक्षिण के दिग्गज की पत्नी, अपने नाम से प्रसिद्ध एक वेश्या, नाड़ीविशेष, राजनीति का वाचक।
पिङ्गाक्ष(पु०)-महादेव, शिव। [पिङ्गेक्षण का भी यही अर्थ है]। वि०-पिङ्गल वर्ण के नेत्रों वाला।
पिचण्ड(पु०)-उदर,पेट,पशु का अवयव।

पिचण्डिल (वि०)–बड़े पेट वाला, तुन्दिल, तोंद वाला।
पिचु(पु०)–कपास, कार्पास, रुई, कुष्ठरोगविशेष; एक दैत्य, शस्यभेद, भैरव का वाचक।
पिचुतूल(न०)–रुई, तूल।
पिचुमन्द(पु०)–निम्ब का वृक्ष।
पिच्च(१० उ०)–छेदन करना, काटना।
पिच्चट(न०)–सीसक, सीसा; रांग, एक प्रकार का नेत्ररोग।
पिच्छ्(६ प०)–रोकना, बांधना।
पिच्छ(न०)–मोर की पूंछ, मयूरपिच्छ, मयूर की शिखा। पु०–पूंछ, लाङ्गूल, सेमल का वृक्ष, सुपारी, पंक्ति, कोंच। [पक्षी।
पिच्छवाण (पु०)–श्येन, बाज़ नामक
पिच्छिल(वि०)–चरस उत्पन्न, मण्डयुक्त भात, स्निग्ध सूपादि।
पिज (१० उ०)–बल करना, चमकना, हिंसा करना, मारना, दान देना।
पिञ्ज(न०)–बल, ताक़त, ज़ोर। पु०–एक प्रकार का कपूर। वि०–व्याकुल, हैरान।
पिञ्जट(पु०)–नेत्रमल, आंखों का मैल।
पिञ्जन(न०)–रुई स्फोटन करने का धनुष, रुई धुनने का साधन।
पिञ्जर(न०)–हरताल, स्वर्ण, नागकेशर, पक्षी आदि के बन्द करने का पिंजरा, शरीरास्थिसमूह। पु०–अश्वविशेष, पीत और रक्तवर्ण। वि०–उस रंग वाला।
पिञ्जल(न०)–कुशपत्र; हरताल।
पिञ्जली (स्त्री०)–कुशा का बनाया प्रादेशमात्र पवित्र, पवित्रा।
पिञ्जूष(पु०)–कान का मैल, कर्णमल।
पिञ्जोट (पु०)–आंख का मल, नेत्रमल।
पिट्(१ प०)–एकत्र होना, शब्द करना।
पिटक (पु०)–पिटारी, मञ्जूषा, विस्फोट, फोड़ा नामक रोग।
पिट्टक(न०)–दांतों का मैल, दन्तमल।
पिठ् (१ प०)–तकलीफ़ उठाना, क्लेश भोगना, मारना, हिंसा करना।
पिठर (न०)–नागरमोथा, दूध बिलोने का दण्ड, मन्थनदण्ड। पु०–गृहभेद, अग्निविशेष, एक दैत्य का नाम।
पिठरी(स्त्री०)–स्थाली, थाली।
पिण्ड् (१ आ०, १० प०)–एकत्र करना, राशीकरण।
पिण्डक (पु०)–स्फोटक, व्रण, फोड़ा।
पिण्डका(स्त्री०)–पूर्ववत्।
पिण्ड(अस्त्री०)–इकट्ठा हुआ, राशीकृत, आजीवन, देहमात्र, देह का एक भाग, स्थान का एक देश, कवल, ग्रास, श्राद्धविषयक पिण्ड, समुदाय, वृत्त, गोल, गजकुम्भ, लोहा, मदनवृक्ष, श्राद्ध में पितरों के लिये देय अन्नविशेष।
पिण्डखर्जूर(पु०)–अपने नाम से प्रसिद्ध खजूर का वृक्ष। [प्रद।
पिण्डद (पु०)–पिण्डदानकर्त्ता, पिण्डपिण्डपाद(पु०)–हस्ती, हाथी।
पिण्डपुष्प (अस्त्री०)–अशोक नामक वृक्ष का पुष्प।
पिण्डबीजक (पु०)–कनेर का वृक्ष।

पिचण्ल (पु०)-सेतु, पुल ।
पिचण्ड (पु०)-भिक्षान्नोपजीवी, भिक्षार्थी ।
पिचण्ड्य (न०)-ओले, घनोपल ।
पिचण्डायस (न०)-तीक्ष्ण लोहा ।
पिचण्डार (पु०)-गोप,ग्वालिया,बौद्ध सन्यासी,क्षपणक,चिककत का वृक्ष।
पिचण्डालुक (न०)-आलु का भेद, गोलाकार आलु ।
पिचिण्डका (स्त्री०)-रथ के पहिये की धुरी, रथनाभि ।
पिचिण्डत (वि०)-गिना हुआ,गणित, घन, गुणन किया हुआ, गुणित।
पिचण्डी [न्] (वि०)-शरीरधारी, शरीरी ।
पिचण्डीशूर (पु०)-वह पुरुष जो खाने में शूर हो, भोजनशूर, घर में ही शूर ।
पिण्याक (अस्त्री०)-तिलकल्क, खल नाम से प्रसिद्ध वस्तु, हींग ।
पिता [तृ](पु०)-उत्पादक, जनक,बाप।
पितामह (पु०)-पितु पिता, बाबा, बाप का बाप,ब्रह्मा। [दादी ।
पितामही (स्त्री०)-पिता की माता,
पितृक (वि०)-पितृसम्बन्धी,पिता से प्राप्त ।
पितृकानन (न०)-पितरों का वन, श्मशानभूमि, मरघट। [पितृवन, पितृगृह शब्द भी इसी अर्थ में होते हैं]।
पितृतिथि (स्त्री०)-अमावस्या ।
पितृतीर्थ (न०)-पितरों का तीर्थ, गया, अंगूठा और तर्जनी का मध्यभाग ।
पितृपति(पु०)-पितरों का पति,यमराज
पितृपिता=पितामह ।
पितृप्रसू (स्त्री०)-पिछली सन्ध्या का समय, पिता की माता, दादी ।
पितृप्रिय (पु०)-भृंगराज, भंगरा ।
पितृबन्धु (पु०)-बाबा [पितामह] की बहिन का पुत्र, पिता के मामा का पुत्र । [भाई ।
पितृभ्राता (पु०)-पितृव्य,पिता का
पितृयज्ञ (पु०)-तर्पण ।
पितृलोक (पु०)-पितरों का लोक, चन्द्रलोक से ऊपर का एक लोक।
पितृव्य (पु०)-पिता का भाई ।
पितृष्वसा [सृ] (स्त्री०)-पिता की बहिन, बुआ ।
पितृष्वस्रीय (पु०)-पिता की बहिन की सन्तान,बुआ का बेटा या बेटी।
पितृसन्निभ (वि०)-जो पिता के समान हो । [सफरा ।
पित्त(न०)-देहस्थ दोषविशेष, गर्मी,
पित्तघ्नी (स्त्री०)-गुडूची, गिलोय ।
पित्तरक्त (न०)-रक्तपित्त नामक रोग जिस में मुखनासा आदि से खून आया करता है ।
पित्तल (न०)-तांबे आदि से बना एक प्रकार का धातु, पीतल । वि०-गर्मस्वभाव का । [पीपल ।
पित्तला (स्त्री०)-जलपिप्पली, जल
पित्तारि (पु०)-पपट, लाक्षा, लाख ।
पित्र्य (वि०)-पितृसम्बन्धी पिता से प्राप्त, पिता का । न०-मधु, माष [उड़द] ।

पु०-पितृस्तुल्य, पिता का भाई।
पित्सन्(पु०) पक्षी। वि०-गिरनेकी इच्छा वाला।
पिधान (न०)-छादन, ढकना, परदा।
पिनद्ध (वि०)-छादनयुक्त, ढका हुआ, पहिरा हुआ [वस्त्रादि]।
पिनाक (क्षत्री०)-शिव का धनुष, शिव शूल रूपी अस्त्र, धूल का बरसना।
पिनाकी [न्] (पु०)-शिव, महादेव।
पिपतिषु (पु०)-पक्षी । वि०-पतनेच्छु, गिरने की इच्छा वाला। [प्यास।
पिपासा (स्त्री०)-पीने की इच्छा, तृषा,
पिपासित (वि०)-तृषायुक्त, प्यासा।
पिपासु(वि०)-पीने की इच्छा वाला,तृषित, प्यासा। [मकोड़ा या मकड़ी।
पिपीलिका = काला कीड़ा या कीड़ी,
पिप्पटा (स्त्री०)-गुडशर्करा, शक्कर।
पिप्पल (न०)-जल,कपड़े का एक टुकड़ा। पु०-पीपल का पेड़, पक्षिभेद।
पिप्पली (स्त्री०)-पीपल नामक औषध, कणा, चपला, मागधी। [औषध।
पिप्पलीमूल (न०)-पीपलामूल नामक
पिप्पिका (स्त्री०)-दन्तमल। [मेवा।
पियाल (पु०)-वृक्षविशेष, चिरौंजी नामक
पिल् (१० उ०)-प्रेरणा करना, चलाना।
पिलुक (पु०)-पीलुवृक्ष, एक प्रकार का पहाड़ी फलवृक्ष।
पिलुपा (स्त्री०)-हस्तिनी, हथिनी।
पिव् (१ प०)-छिड़कना, सिंचन करना।
पिश् (६ प०)-हिस्से करना, टुकड़े करना, पालना। [वाला।
पिशङ्ग(पु०)-पिङ्गल वर्ण। वि०-पिङ्गलवर्ण
पिशाच (पु०)-देवयोनिविशेष,एक प्रकार का राक्षस, मांसभक्षक पुरुष।
पिशाचवृक्ष (पु०)-शाखोटक वृक्ष।
पिशित (न०)-मांस, गोश्त।
पिशिता (स्त्री०)-जटामासी नामक सुगन्धित द्रव्य। [खाने वाला।
पिशिताशी [न्] (वि०)-मांसभक्षक, मांस

पिशुन (न०)-कुंकुम, केसर। पु०-नारद, कौआ। वि०-चुगलखोर, क्रूर,निर्दय।
पिष् (७ प०)-पीसना, चूर्ण करना।
पिष्ट (न०)-सीसा, पिष्टक, पिट्ठी। वि०-पिसा हुआ, चूर्ण किया गया, दला हुआ, चूर्णित।
पिष्टक (न०)-तिलचूर्ण। पु०-पिसे हुए चावलों का विकार, पिसे चावलों का बना भोजनविशेष, पूप, पूआ, नेत्र का एक रोग।
पिष्टप (न०)-लोक, भुवन, जगत्।
पिष्टपचन (न०)-तवा, कढ़ाही ऋजीष।
पिष्टपूर(पु०)-बड़े, वटक, पिष्टक।
पिष्टसौरभ (न०)-चन्दन, मस्तक में लगाने का सुगन्धित द्रव्य।
पिष्टात(पु०)-वह चूर्ण जो वस्त्रों को सुगन्धित करने के लिये बनाया गया हो, अबीर, केशर आदि, पटवास चूर्ण। [पिट्ठी।
पिष्टिका (स्त्री०)-पिसी हुई दाल,
पिस्(१ प०)-चमकना, दीप्त होना, सुगन्धिमर्दन, बल करना, मारना, दान करना, पीसना।
पिहित(वि०)-ढका हुआ, बन्द किया गया, आच्छादित, अन्तर्हित।
पी(४ आ०)-पीना, पान करना।
पीठ(अस्त्री०)-आसनविशेष, पीढ़ा, व्रतधारियों का आसन, बैठने का आधार, स्टूल, वेदी, वह नगरविशेष जहां देवी के देह के अनेक खण्ड टूट कर गिरे हों।
पीठी (स्त्री०)-पीढ़ी नामक आसन।
पीड्(१० उ०)-मारना, प्रयोग करना, विलोड़ना, मर्दन करना।
पीडन(न०)-विपक्षी राजा आदि का

देश पर आक्रमण, दुःख देना, कष्ट पहुंचाना, मर्दन।
पीड़ा(स्त्री०)–दुःख, व्यथा, तकलीफ, बाधा, कष्ट।
पीड़ित(वि०)–बाधा पहुंचाया हुआ, निचोड़ा हुआ, मर्दित, दुःखित।
पीत(न०)–पान, हरिताल। पु०–पीत वर्ण, हल्दी का रंग। वि०–पीत-वर्ण वाला। [पीतल।
पीतक(न०)–हरिताल, केसर, कुंकुम,
पीतकन्द(न०)–गाजर, गर्जर।
पीतकाष्ठ(न०)–पीला चन्दन।
पीततण्डुल(पु०)–कगनी।
पीतता(स्त्री०)–पीलापन, पीतत्व।
पीतन(न०)–केसर, कुंकुम।
पीतपुष्प(पु०)–कनेर का वृक्ष, कर्णिकार।
पीतबालुका(स्त्री०)–हल्दी, हरिद्रा।
पीतवासा[स्] (पु०)–श्रीकृष्ण। वि०–पीतवस्त्र वाला।
पीला(स्त्री०)–हल्दी, हरिद्रा।
पीताब्धि(पु०)–अगस्त्य मुनि।
पीताम्बर(पु०)–विष्णु का वाचक।
पीतु(पु०)–सूर्य, अग्नि, यूथाधिप।
पीथ(न०)–जल, घृत, सूर्य, अग्नि, काल।
पीन(वि०)–मोटा, स्थूल, धनादि से पूर्ण, सम्पन्न, वृद्धिङ्गत, वृद्ध।
पीनस (पु०)–जुकाम, नासिकारोग, प्रतिश्याय।
पीनसी[न्] (पु०)–पीनसरोगी पुरुष, वह पुरुष जिस को जुकाम का रोग हो।
पीनोध्नी (स्त्री०)–वह गौ जिस के थन या थन बहुत मोटे हों, पीवरस्तनी गौ।
पीय् (१प०)–तृप्त होना, प्रसन्न होना।
पीयु (पु०)–सूर्य, उलूक, कौआ, काल। वि०–हिंसा करने वाला, प्रतिकूल।
पीयूष (न०)–अमृत, सुधा, थोड़े दिन की व्याई गौ का सात दिन के भीतर का दूध, नवीन दूध।
पील् (१प०)–रोकना, अवरोध करना।
पीलु (पु०)–पुष्प, परमाणु का वाचक, हस्ती, हड्डियों का खण्ड, कीट-विशेष, बाण, तीर, वैशेषिकों का एक भेद, पिठरपाक, फल-वृक्षविशेष।
पीव् (१प०)–मोटा होना, स्थूल होना।
पीव [न्] (वि०)–मोटा, स्थूल, बल-वान्। पु०–पवन, वायु।
पीवर (वि०)–मोटा, पीन, स्थूल। पु०–तामस मन्वन्तर में सप्तर्षियों का भेद।
पीवा [न्] (पु०)–बलवान्, पवन, वायु।
पीवरी (स्त्री०)–असगन्ध, शतावर नामक औषध, तरुण गौ, शाल-पर्णी।
पुलिङ्ग (न०)–पुरुष का चिन्ह, शिश्न। पु०–व्याकरणोक्त संस्कारविशिष्ट एक प्रकार का शब्द। वि०–पुरुष के चिन्ह वाला।
पुंवृष (पु०)–गन्धमूषक, छछूंदर।
पुंश्चल (पु०)–व्यभिचारी, जार पुरुष।
पुंश्चली (स्त्री०)–व्यभिचारिणी, कुलटा स्त्री।

पुंस्(१० उ०)—मलना, मर्दन करना ।
पुंसवन(न०)—एक प्रकार का गर्भ का संस्कार जो कि गर्भधारणानन्तर तृतीय मास में किया जाता है, स्त्रियों के लिये कर्तव्य एक व्रत, दुग्ध ।
पुंस्कोकिल(पु०)—पुरुष कोयल पक्षी ।
पुंस्त्व(न०)—पुरुष का चिन्ह, पुरुषत्व, शुक्र, वीर्य, अङ्गविशेष ।
पुक्कश-स(पु०)—चण्डाल, अधम, नीच, निषाद से शूद्रा में उत्पन्न पुत्र ।
पुक्कस(पु०)—पूर्ववत ।
पुङ्ख(पु०)—बाण का मूल, चिल्ले पर चढ़ाये बाण का हिस्सा, बाण का सिरा, पर्याप्त, काफ़ी, प्रसिद्ध; मङ्गलाचार ।
पुञ्ज(अस्त्री०)—समूह, गिरोह, समुदाय ।
पुङ्गल(पु०)—आत्मा का वाचक ।
पुङ्गव(पु०)—वृषभ, बैल । [तोलना ।
पुच्छ्(१ प०)—मापना, प्रमाण करना,
पुच्छ(नं०)—पीछे का भाग, पूंछ, लांगूल ।
पुच्छटि (न०)—अङ्गुलियों का चटकाना, अङ्गुलिमोटन । [कुक्कुट ।
पुच्छी[न्](पु०)—अर्क का वृक्ष, मुर्गा,
पुञ्ज (पु०)—गिरोह, समूह, समुदाय ।
पुट् (१० उ०)—दीप्त होना, चमकना, चूर्ण करना, पीसना ।
पुट[अदन्त] (१०प०)-आलिंगन करना, मिलना, जुड़ना ।
पुट(न०)—औषध आदि के पकाने के लिये जुड़े हुए दो पात्र अर्थात् संपुट, दोना, जायफल । पु०—घोड़े का खुर । वि०—ढकना, आच्छादन ।
पुटक(न०)—कमल, पद्म ।
पुटग्रीव(पु०)—तांबे का घड़ा, गागर, ताम्रकुम्भ । [औषध का पचन ।
पुटपाक(पु०)—संपुट के भीतर रक्खे
पुटभेद (पु०)—नदी आदि का चक्राकार भँवर, नदी के जल का चक्र, नगर, शहर, वाद्यविशेष ।
पुटभेदन(न०)—नगर, शहर ।
पुटिका(स्त्री०)—इलायची, एला ।
पुटित (वि०)—गुथा हुआ, ग्रथित, पाटित, तन्त्र में कहा आद्यन्त में ओंकारादि के सम्पुटयुक्त मन्त्र ।
पुटी(स्त्री०)—पत्रादि से रचित दोना, कौपीन, आच्छादनवस्त्र ।
पुटोटज(न०)—श्वेतवर्ण का छत्र ।
पुटोदक(पु०)—नारिकेल, नारियल ।
पुड्(१० उ०)—तिरस्कार करना, अनादर करना, बेइज्जती करना ।
पुड्(१ प०)—मर्दन करना, मलना, पीसना । [का सम्पादन ।
पुण्(६ प०)—धर्मकार्य करना, धर्मकृत्य
पुण्ड्र (पु०)—तिलक, टीका ।
पुण्डरीक (न०)—श्वेतवर्ण का कमल, सफेद रंग का पद्म, श्वेतपद्म, औषधविशेष । पु०—अग्निकोण में रहने वाला दिग्गज, हस्तिज्वर, राजिल नामक सर्प, कमण्डलु, श्वेतवर्ण, क्रौञ्च द्वीपस्थ

एक पर्वत का वाचक, श्रीरामचन्द्र जी के वंश में एक नृप।
पुण्डरीकाक्ष (पु०)–विष्णु, श्रीकृष्ण।
पुण्डरीयक (न०)–स्थलपद्म, गुलाब का फूल।
पुण्ड्र (पु०)–इक्षुभेद, पौंडा, एक दैत्य, चित्रक,चीता नामक औषध, कृमिविशेष, तिलक का वृक्ष, पु० ब०–एक देश का नाम।
पुण्ड्रकेलि (पु०)–हस्ती, हाथी।
पुण्य (न०)–शुभ कर्म, धर्म,शुभादृष्ट, शोभन कर्म। वि०–सुन्दर,सुगन्धि।
पुण्यक (न०)–व्रतविशेष, उपवास।
पुण्यकृत् (वि०)–पुण्य करने वाला, धार्मिक पुरुष।
पुण्यजन (पु०)–यक्ष, राक्षस।
पुण्यजनेश्वर (पु०)–कुबेर।
पुण्यतृण(न०)–श्वेतकुश नामक तृण विशेष।
पुण्यभूमि (स्त्री०)–आर्यावर्त्त देश, हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य का प्रदेश,यथा मनुः—
आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्।
तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्तं विदुर्बुधाः॥
पुण्यवान्[त्] (वि०)–पुण्य करने वाला, पुण्ययुक्त।
पुण्यश्लोक (पु०)–विष्णु, युधिष्ठिर, नलराज। वि०–पवित्र आचरण करने वाला।
पुण्यश्लोका(स्त्री०)–सीता, द्रौपदी।
पुण्या(स्त्री०)–तुलसी नामक वृक्ष।
पुण्याह (न०)–पवित्र दिन, पुण्योत्पादक दिन।
पुण्याहवाचन (न०)–वैदिककर्म के आरम्भ समय में मंगलार्थ 'पुण्याह' इस शब्द का तीन बार कथन या ब्राह्मण द्वारा उस दिवस की पवित्रता का सम्यक् उच्चारण।
पुत् (१ प०)–जाना, गमन करना, प्राप्त करना।
पुत्तल (पु०)–तृण, पत्ता या काष्ठ आदि की बनाई मूर्त्ति, पुतला।
पुत्तलिका(स्त्री०)–पूर्ववत्।
पुत्तिली (स्त्री०)–मिट्टी आदि की बनाई मूर्त्ति।
पुत्तिका(स्त्री०)–शहद की मक्खी, मधुमक्षिका, छोटी मक्खी।
पुत्र(पु०)–जो 'पुत्' नामक नरक से रक्षा करे,लड़का,तनय,सुत, बेटा जो कि 'औरस' आदि १२ प्रकार के होते हैं,उन से पांचवा स्थान।
पुत्रक (पु०)–तनय, बेटा, शरभ नामक पशु, कृत्रिम [गोद लिया] सुत, धूर्त, पर्वतविशेष, वृक्षभेद, दया करने योग्य पुरुष।
पुत्रदा (स्त्री०)–लक्ष्मणा नाम की बेल जो वन्ध्या स्त्रियों के लिये भी गर्भप्रदा होती है।
पुत्रिकापुत्र(पु०)–लड़की का पुत्र या पुत्र रूप से स्वीकार की हुई कन्या।
पुत्रिणी (स्त्री०)–पुत्रवती स्त्री।
पुत्री [न्] (पु०)–पुत्रवान् पुरुष।
पुत्री (स्त्री०)–लड़की, सुता, बेटी।

पुत्रीय (वि०)-पुत्रसम्बन्धी, पुत्रनिमित्तकसंयोग।

पुत्रेष्टि (स्त्री०)-पुत्र के निमित्त यज्ञविशेष, वह यज्ञ जो पुत्रोत्पत्ति के लिये किया जाता है।

पुत्रौ (पु०)-पुत्र और पुत्री। [पहुंचाना।

पुथ् (२ प०)-मारना, हिंसा करना, हानि

पुद्गल (पु०)-देह, आत्मा, शिव का नाम, परमाणु। वि०-सुन्दराकार, सुन्दरद्रव्य

पुनः [र्] (अ०)-भेद, अधिकार, अवधारण, दूसरा पक्ष, पक्षान्तर, फिर।

पुनःपुनः [र्] (अ०)-फिर फिर, बारबार, अभीक्ष्ण, असकृत्, मुहुः।

पुनःपुना (स्त्री०)-एक नदी जो गया के समीप है, पुनपुना, पनपुना।

पुनःसंस्कार (पु०)-दूसरी बार उपनयनादि संस्कार, द्वितीयबार संस्कार।

पुनरागमन (न०)-द्वितीयबार आगमन, फिर से आना।

पुनरुक्त (न०)-पुनर्बार कथन, दूसरी बार कहना। [विप्र।

पुनरुक्तजन्मा [न्] (पु०)-ब्राह्मण,

पुनरुक्तवदाभ्यास (पु०)-वह अलंकार जिस में बार २ पूर्वोक्त कथन पाया जावे।

पुनर्जन्म [न्] (न०)-द्वितीयबार जन्म, फिर से जन्म।

पुनर्नव (पु०)-नख, नाखून।

पुनर्भव (पु०)-पूर्ववत्।

पुनर्भू(स्त्री०)-दूसरी बार विवाहिता स्त्री, दुबारा ब्याही औरत, द्विरूढा

पुनर्वसु(पु०)-विष्णु, शिव।

पुनर्वसू(पु० द्वि०)-अश्विनी से सातवां नक्षत्र।

पुन्नाग (पु०)-श्वेत कमल, पीतवर्ण का हस्ती, उत्तम मनुष्य, वह वृक्ष जिस पर बहुत से पुष्प हों।

पुन्नामनरक(पु०)-वह नरक जिस में मनुष्य परदाराभिगमन आदि १६ प्रकार के पापसमूह से पड़ता है।

पुप्फुल(पु०)-पेट में रहने वाला वायु, उदरस्थ वायु।

पुप्फुस(पु०)-वामपार्श्व में स्थित एक मलाशय, फेफड़ा।

पुमान्[स्] (पु०)-पुरुष, मनुष्य, मनुष्यत्वजातिविशिष्ट, कूटस्थ पुरुष।

पुर् (६प०)-आगे जाना, अग्रगमन।

पुर (न०)-गृह, घर, देह, नागरमोथा, घर के ऊपर घर, चर्म, चमड़ा।

पुर् (स्त्री०)-नगरी, पुरी, शहर, बहुत से ग्राम के व्यवहारी पुरुषों के रहने का स्थान।

पुरः [स्] (अ०)-आगे, समीप में, अग्रतः, पूर्व की दिशा में, प्रथम काल में। [अग्रगामी।

पुरःसर (वि०)-आगे चलने वाला,

पुरञ्जन (पु०)-स्वकृत शुभाशुभ कर्म की आसक्ति वा तत्समीप रहने से देह का उत्पन्नकर्ता, जीव।

पुरञ्जनी (स्त्री०)-बुद्धि, मनीषा।

पुरञ्जय (पु०)-सूर्यवंशीय काकुत्स्थ नामक एक प्रसिद्ध राजा।

पुरट (न०)-स्वर्ण, सोना।

पुरण (पु०)—समुद्र, सागर।
पुरतः [सु] (अ०)—आगे से, अग्रतः।
पुरतटी (स्त्री०)—छोटी दुकान, क्षुद्र हट्ट।
पुरद्वार (न०)—नगर का दरवाज़ा।
पुरद्विट् [प्] (पु०)—शिव, महादेव।
पुरन्दर (पु०)—इन्द्र, देवताओं का राजा, चोर, तस्कर।
पुरन्दरा (स्त्री०)—गङ्गा, सुरनदी, काली मिरच।
पुरन्ध्रि—न्ध्री (स्त्री०)—पति, पुत्र और पुत्री वाली स्त्री, कुटुम्बवती नारी, कुटुम्बिनी, स्त्रीमात्र।
पुरश्चरण (न०)—मन्त्रसिद्धि के पंचांग साधन यथा—मन्त्रजप, होम, तर्पण, अभिषेक और ब्राह्मण भोजन, देवताके पूजन द्वारा किसी अभिलषित मन्त्र को सिद्ध करना।
पुरस्कार (पु०)—आगे करना, पुरस्क्रिया, पूजन, स्वीकार, अभिशाप, शत्रु का पकड़ना, इनाम।
पुरस्कृत (वि०)—पूजित, आगे किया गया, शत्रु से ग्रस्त, स्वीकार किया हुआ, छिड़का हुआ, सिक्त।
पुरस्तात् [अ०)—आगे से, सामने से, अग्रतः।
पुरा (अ०)—पूर्व, व्यतीत, बीते हुए, वाक्यरचना, प्रबन्ध, कहानी, पूर्व की दिशा, सन्निहित, अनागत, आगामिक।
पुरा (स्त्री०)—सुगन्धित द्रव्यविशेष।
पुराकृत (वि०)—पूर्वकाल में किया पापपुण्य रूप कर्म, प्रारब्ध।
पुराण (वि०)—पुराना, प्राचीन, पुराकालीन, वृद्ध। न०—बीती हुई घटना, पुराकालसम्बन्धी कहानी वा गाथा, प्राचीन वृत्तान्त, इतिहास, गाथा, अपने नाम से प्रसिद्ध पुस्तक [पुराण संख्या में १८ हैं जिनमें अनेक कपोलकल्पित गाथाओं का वर्णन और कहीं २ पर धर्मोपदेश का समावेश है। वर्तमान हिन्दुगण [सनातनधर्मी नाम से परिचित] इन को अपना धर्मग्रन्थ मानते हैं]।
पुराणपुरुष (पु०)—विष्णु का वाचक, वृद्ध पुरुष।
पुरातन (पु०)—पहिले समय में हुआ, पुराना, बहुत प्राचीन, पुराण, अध्याय, विष्णु, परमात्मा। वि०—पूर्व समय में होने वाला, प्राचीनकालोद्भव।
पुराध्यक्ष (वि०)—नगर का स्वामी, नगरनायक, पुरका अधिकारी।
पुरारि (पु०)—शिव, महादेव।
पुरावसु (पु०)—भीष्मपितामह।
पुरावृत्त (न०)—पूर्व समय की व्यतीत हुई बात, पूर्व समय के चरित्र, इतिहास, वह ग्रन्थ जिस में प्राचीनकाल के चरित वर्णित हो जैसे महाभारत आदि।
पुरि (स्त्री०)—नगर, कुटी, नदी का वाचक, शरीर। पु०—राजा, सन्यासिभेद।

पुरी (स्त्री०)–नगरी, राजधानी ।
पुरीतत् (अस्त्री०)–आंत, अन्त्र, वे नाड़ियां जो शरीर को फैलाने में हेतु होती हैं ।
पुरीमोह (पु०)–धतूरा, धत्तूर ।
पुरीष (पु०)–विष्ठा, मल ।
पुरीषण (पु०)–पूर्ववत् ।
पुरीषम (पु०)–माष, उड़द ।
पुरु (पु०)–देवलोक, एक राजा जो ययाति का कनिष्ठ पुत्र था, दैत्य का नाम । वि०–बहुत, प्रचुर ।
पुरुष (पु०)–मनुष्य, पुमान्, मानव, मर्त्य ।
पुरुषकार (पु०)–पुरुषार्थ, पौरुष, उद्योग, चेष्टा, हिम्मत, पुरुष का प्रयत्न ।
पुरुषत्व (पु०)–मनुष्यपन, मनुष्यता ।
पुरुषदघ्न (वि०)–पुरुष के परिमाण वाला, पुरुषपरिमाण ।
पुरुषद्वयस (वि०)–पूर्ववत् ।
पुरुषमात्र (वि०)–पूर्ववत् । [श्रेष्ठ ।
पुरुषर्षभ (पु०)–मनुष्यों में श्रेष्ठ, पुरुष-
पुरुषसिंह (पु०)–पूर्ववत् ।
पुरुषाद्य (पु०)–विष्णु, जिनविशेष ।
पुरुषोत्तम (पु०)–विष्णु, परमात्मा ।
पुरुह [ु] (वि०)–बहुत, प्रचुर ।
पुरुहूत (पु०)–इन्द्र, देवराज ।
पुरूरवाः[स्] (पु०)–एक चन्द्रवंशीय राजा जो बुध से इला में उत्पन्न हुआ और उर्वशी का पति था ।
पुरोग (वि०)–आगे चलने वाला, अग्रगामी, प्रधान ।

पुरोडाश (पु०)–हवि, जौ के चून से बनाई रोटिकाविशेष, घृत आदि यज्ञद्रव्य ।
पुरोधा[स्] (पु०)–पुरोहित ।
पुरोभागी [न्] (वि०)–गुणों को छोड़ कर अवगुणों पर दृष्टि डालने वाला, पहिले भाग (हिस्सा) वाला, अग्रांशी ।
पुरोहित (पु०)–पुरोधा, यजमान के मङ्गलार्थ शान्ति आदि कर्ता, इस लोक वा परलोकसम्बन्धी कार्यों में जो आगे किया जाय, यज्ञादि कर्मों का कारयिता ।
पुर्व् (१ प०)–पूर्ण करना, भरना, पूरा करना ।
पुल् (१० उ०)–उन्नत होना, ऊंचा होना । १प०-बड़ा होना, महत्व ।
पुल (पु०)–विपुल, बड़ा, सेतु ।
पुलक (पु०)–रोमों का खड़ा होना, रोमाञ्च, रोमोद्भेद, हस्तिभोजन, कीट, हरिताल, मणि का एक दोष, राई, एक गन्धर्व का नाम । न० कंकुष्ठ नाम औषध । [नाम ।
पुलस्ति-स्त्य (पु०)–एक मुनि का
पुलह (पु०)–मुनिविशेष का नाम, धान नामक अन्न, क्षिप्र, जल्दी ।
पुलाक (पु०)–क्षुद्रधान्य, शस्यशून्य ।
पुलिन (न०)–तोयोत्थिततट, जल से निकला हुआ किनारा, द्वीप, टापू ।
पुलिन्द (पु०)–चण्डालभेद ।
पुलोमजा (स्त्री०)–इन्द्राणी, पुलोमा नाम दैत्य की पुत्री ।

पुलोमजित्-द्विट् (पु०)–इन्द्र।
पुलोमा [न्] (पु०)-असुरविशेष, इन्द्र का श्वशुर। [पालना।
पुष् (१ प०, ४ प०)–पुष्ट करना,
पुषित (वि०)–पुष्ट,पालित, परवरिश किया हुआ।
पुष्कर (न०)–हस्तिशुण्डाग्रभाग,वाद्यविशेष, कमल,एक तीर्थ। पु०–एक हाथी, नृपविशेष [इस अर्थ में प्रायः नल के भाई के लिये यह शब्द प्रयुक्त होता है]। [औषध।
पुष्करमूल (न०)–पोहकरमूल नामक
पुष्कराक्ष (पु०)–विष्णु।
पुष्करिणी (स्त्री०)–पद्मसमुदाय, कमलिनी, चतुष्कोण तालाब जो सौ धनुष् की माप का हो।
पुष्करी [न्] (पु०)–हस्ती, हाथी।
पुष्कल(वि०)–श्रेष्ठ, बहुल,पूर्ण, काफी। न०–नगरविशेष, चौंसठ मुट्ठी का परिमाण, चार ग्रास भर भीख।
पुष्ट(वि०)–मजबूत, बलशाली,पालन किया हुआ।
पुष्टि(स्त्री०)–पालना, बढ़ना, षोडश मातृकाओं में से एक।
पुष्टिदा(स्त्री०)–असगन्ध, वृद्धि।
पुष्प्(४प०)-खिलना,विकसना,फूलना।
पुष्प(न०)–कुसुम, फूल, स्त्रीरज, कुबेर का विमान,फूला नामक नेत्ररोग।
पुष्पक (न०)–कुबेर का विमान, फूला नामक नेत्ररोग।
पुष्पकरण्डक(न०)–फूलों को चुन कर रखने की टोकरी।
पुष्पकीट(पु०)-भ्रमर, अलि, भौंरा।
पुष्पकेतु(न०)-फूले को दूर करने वाला अंजन।
पुष्पचाप(पु०)–कामदेव, अनङ्ग।
पुष्पदन्त (पु०)-वायव्य कोण का दिग्गज, एक विद्याधर का नाम।
पुष्पधन्वा(पु०)–कामदेव, रतिपति।
पुष्पपुर(न०)–पाटलीपुत्र, पटना।
पुष्पफल(पु०)–कपित्थ,कैथ,कूष्माण्ड।
पुष्पमास(पु०)–वसन्त ऋतु।
पुष्परस(पु०)–फूलों का रस,मकरन्द-कुसुम, गोंद, निर्यास।
पुष्पराग(पु०)–मणिविशेष, पुखराज।
पुष्पलाव(पु)–मालाकार, माली।
पुष्पलिट्-लिह् (पु०)–मधुकर,भौंरा।
पुष्पवती (स्त्री०)–ऋतुमती स्त्री, रजस्वला। [फुलवाड़ी।
पुष्पवाटी-टिका(स्त्री०)–पुष्पोद्यान,
पुष्पशर(पु०)–कन्दर्प, कामदेव।
पुष्पशून्य(पु०)–उदुम्बर,गूलर का पेड़। वि०–फूलरहित।
पुष्पा (स्त्री०)–कर्णपुरी, भागलपुर नाम से प्रसिद्ध नगर। [माली।
पुष्पाजीव-जीवी (पु०)–मालाकार,
पुष्पासव(न०)–मधु, शहद।
पुष्पाह्वा(स्त्री०)-शतपुष्पा, सौंफ।
पुष्पित(वि०)–फूलवाला, जातकुसुम।
पुष्य(पु०)–सत्ताईस नक्षत्रों में से आठवाँ नक्षत्र।
पुष्पलक(पु०)–गन्धमृग,क्षपणक,कील।
पुस्त् (१०उ०)–बन्धन, बाँधना।
पुस्त(न०)–मट्टी, लकड़ी, चमड़े आदि

वा रत्नों से बना हुआ पदार्थ, कारीगरी का काम, पलस्तर आदि काम।
पुस्तक(न०)–ग्रन्थ, किताब।
पुस्तकर्मा(वि०)–शिल्पकार, कारीगर।
पू(४ प०, १ आ०, ९ उ०)–शुद्ध करना, साफ करना।
पूग (पु०)–सुपारी का वृक्ष, समूह, कांटे वाला वृक्ष। न०-सुपारीफल।
पूगपात्र-पीठ(न०)–पीकदान, पान सुपारी खाने के समय थूकने का पात्र। [करना, इज्जत करना।
पूज्(१० उ०)–अर्चन करना, पूजा
पूजक(वि०)–पूजनकरनेवाला, पुजारी।
पूजा(स्त्री०)–अर्चना, इबादत करना।
पूजार्ह(वि०)–पूजा के योग्य, पूजनीय।
पूजित (वि०)–अर्चित, पूजा किया हुआ। [पूजनीय।
पूजितव्य-पूज्य(वि०)–पूजा के योग्य,
पूत(वि०)–शुद्ध, पवित्र। न०-अपनीततुषतण्डुल, छड़े हुए चावल। पु०–शंख, श्वेतकुशा।
पूतक्रतायी (स्त्री०)–शतक्रतु[इन्द्र] की पत्नी, शची, इन्द्राणी। [तिल।
पूतधान्य (न०)–पवित्र धान्य अर्थात्
पूतना(स्त्री०)–हरीतकी, हैड़, राक्षसीभेद, एक बालरोग।
पूतनारि(पु०)–श्रीकृष्ण।
पूता(स्त्री०)–दूर्वा, दूब नामक घास।
पूतात्मा[न्] (पु०)–परमात्मा, विष्णु।
पूति(स्त्री०)–पवित्रता, दुर्गन्ध, पार्तीकुर्णी। न०–रोहिष नामक तृण।
पूतिक(न०)–विष्ठा, पुरीष। पु०-करंजवे का भेद।
पूतिकर्ण(पु०)–कर्णरोगविशेष।
पूतिका (स्त्री०)–मार्जारी, बिल्ली, कीटविशेष।
पूतिकाष्ठ(न०)–देवदारु, सरलवृक्ष।
पूतिगन्ध (पु०)–गन्धक, इङ्गुदीवृक्ष, दुर्गन्ध। [कांगनी।
पूतिलैला(स्त्री०)–ज्योतिष्मती, माल-
पूप (पु०)–पिष्टक, बड़ा, पिट्ठी का बना पूड़ा। [राध, पीब।
पूय (न०)–व्रणादि से निकला हुआ
पूयारि(पु०)–निम्ब का वृक्ष।
पूर् (४ आ०)–प्रसन्न होना, भरना, पूर्ति करना।
पूर (पु०)–जल का प्रवाह, जल का समुदाय, भोजनविशेष, व्रण की सफाई।
पूरक (पु०)–बीजपूर नामक नींबू, बिजौरा नींबू, एक गुणक अङ्क, प्राणायाम का भेद, वह प्राणायाम जिस में श्वास नाक से ऊपर को खींचा जाता है, प्रेत के शरीर को निर्माण करने वाले पिण्डों की संज्ञा। वि०-पूर्ण करने वाला।
पूरण(न०)–पिण्डविशेष, वर्षा, अङ्कों का गुणन। पु०–समुद्र, सेतु, पुल, विष्णुतैल। वि०–पूरा करनेवाला।
पूरित(वि०)–पूरा किया हुआ, गुणन किया गया, गुणित।
पूरुष(पु०)–मनुष्य, नर, मर्त्य, आदमी।

पूर्ण(वि०)—सकल, समस्त, भरा हुआ, नागभेद, शक्त। [पूरित घट।
पूर्णकुम्भ(पु०)—जल से भरा घड़ा,जल-
पूर्णपात्र(न०)—वस्तु से भरा हुआ पात्र, किसी उत्सवविशेष में प्रसन्नता से ग्रहण किये अलङ्कारादि, २५६ मुट्ठी चावलों से भरा वह पात्र जो होमादि के अन्त में ब्रह्मा को दक्षिणा में दिया जाता है।
पूर्णमा(स्त्री०)—पूर्णिमा तिथि।
पूर्णमास (पु०)—पौर्णमास नामक यज्ञविशेष।
पूर्णमासी=पूर्णमा।
पूर्णा(स्त्री०)—पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा और अमावस्या नामक तिथि।
पूर्णालक(न०)—पूर्णपात्र।
पूर्णावतार(पु०)—नृसिंह और राम।
पूर्णिमा(स्त्री०)—पौर्णमासी।
पूर्त (न०)—पालन, खात आदि का काम, तालाब, कूप आदि का खुदवाना। न०—भरना, पूर्ण करना। वि०—छन्न, पूरित, भरा हुआ, ढका हुआ। [रहना।
पूर्व् (१०उ०)—बसना, निवास करना,
पूर्व [र्व] (वि०)—प्रथम, पहिला, सब, ज्येष्ठ भाई [इस शब्द की सर्वनाम संज्ञा होती है]।
पूर्वगंगा (स्त्री०)—नर्मदा नदी।
पूर्व [र्व] ज (पु०)—पहिले उत्पन्न हुआ, ज्येष्ठ भ्राता।
पूर्व [र्व] जा (स्त्री०)—बड़ी बहिन, ज्येष्ठा भगिनी।
पूर्व [र्व] दिक् (स्त्री०)—पूर्वदिशा।
पूर्व [र्व] दिक्पति (पु०)—इन्द्र
पूर्व [र्व] देव (पु०)—असुर, दैत्य, राक्षस। [का देश।
पूर्व[र्व] देश (पु०)—पूर्व की दिशा
पूर्व [र्व] पक्ष (पु०)—शुक्लपक्ष, शास्त्र विषयक प्रश्न, शास्त्रीयप्रश्न।
पूर्व [र्व] पद (न०)—वाक्य या समास का पूर्वभाग, परपद से पहिलापद, वह पद जिसके अन्त में सुप् या तिङ् प्रत्यय हो।
पूर्व[र्व] यक्ष (पु०)—जिन का भेद।
पूर्व [र्व] रात्र (पु०)—रात्रि का पहिला भाग। [पहिला रूप।
पूर्व [र्व] रूप (न०)—पहिला लक्षण,
पूर्व [र्व] वादी [न्] (पु०)—प्रथम-वादकर्त्ता, मुद्दई।
पूर्व[र्व]शैल(पु०)—उदय पर्वत, वहपर्वत जिस पर को हो कर सूर्य उदय होता है। [वाला, अग्रगामी।
पूर्व [र्व] सर (वि०)—आगे चलने
पूर्वा[र्वा] (स्त्री०)—पूर्व की दिशा।
पूर्वा [र्वा] षाढा (स्त्री०)—अश्विनी नक्षत्र से २०वां नक्षत्र।
पूर्वा [र्वा] ह्न (पु०)—तीन प्रकार से विभक्त दिन का पहिला भाग।
पूर्वे [र्वे] द्युः [स्] (अ०)—पहिला दिवस, पूर्वदिन। [करना।
पूल् (१० उ०)—एकत्र करना, इकट्ठा
पूष्(१ प०)—बढ़ना, वृद्धि होना।
पूषा[न्] (पु०)—सूर्य, दिनपति, सूरज।
पृ(३ प०)—पालन करना, रक्षा करना।

६ आ०-व्यवहार करना, काम करना। ४ प०-प्रसन्न होना।
पृक्त (न०)-धन, दौलत। वि०-मिला हुआ।
पृक्ति(स्त्री०)-स्पर्श, सम्पर्क, छूना।
पृच्(२ आ०, ७ प०)--मिलना, जोड़ना, सम्पर्क होना, इकट्ठा होना।
पृच्छा(स्त्री०)-प्रश्न, सवाल, पूछना।
पृतना(स्त्री०)--सेना, फौज, चमू, वह सेना जिस में २४३ रथ, २४३ हस्ती, ७२९ अश्व, और १२१५ पैदल हों।
पृतनाषाट्[षाड्] (पु०)-इन्द्र।
पृथ्(१० उ०)--फेंकना, फैलाना।
पृथक्(आ०)-अलहदा, जुदा, भिन्न, अनेक रूप, विना, वर्जन।
पृथक्त्व(न०)-अलग होना, भिन्नता, जुदाई।
पृथगात्मता (स्त्री०)-देहादि स्थूल पदार्थों से आत्मा की पृथक्ता, स्वरूप का पृथग्भाव, विवेक।
पृथगात्मिका (स्त्री०)-व्यक्ति।
पृथग्जन (पु०)-मूर्ख, नीच, पामर।
पृथग्विध (वि०)-अनेक प्रकार वाला, नानारूप।
पृथा (स्त्री०)-कुन्ती, युधिष्ठिरादि की माता, कुन्तिभोज की कन्या।
पृथाज (पु०)-कुन्तीपुत्र। [तनय, सुत, सूनु, और पुत्र लगने से भी यही अर्थ होता है, सामान्यत: यह शब्द अर्जुनके लिये आताहै।
पृथिवी (स्त्री०)-भूमि, ज़मीन।
पृथिवीतल (न०)-ज़मीन की सतह, भूमि का ऊपर का भाग।
पृथिवीन्द्र-ईश-क्षित-पाल(पु०)-राजा, नृपति।
पृथिवीपति (पु०)-राजा, यमराज।
पृथिवीमण्डल(अस्त्री०)-कुर्रए ज़मीन, पृथिवी का घेरा।
पृथिवीरुह (पु०)-वृक्ष, पेड़।
पृथु (वि०)-चौड़ा, विस्तृत, वसीह, बड़ा, बहुत, तेज़। पु०-अग्नि, विष्णु, महादेव, एक राजा का नाम। स्त्री०-अफ़ीम।
पृथुक (पु०)-बच्चा, शिशु, छोटाबालक।
पृथुल (वि०)-चौड़ा, बड़ा, वसीह।
पृथ्वी (स्त्री०)-पृथिवी, ज़मीन, पञ्चभूतों में से एक, बड़ीइलायची।
पृथ्वीखात (न०)-ग़ार, गुफ़ा, खाई।
पृथ्वीज (पु०)-वृक्ष, पेड़, मङ्गलग्रह।
पृथ्वीधर (पु०)-पर्वत, पहाड़।
पृथ्वीपति-नाथ(पु०)-राजा, हाकिम।
पृदाकु(पु०)-बिच्छू, चीता, चित्रक, हाथी, वृक्ष, सर्प।
पृश्नि[श्णि] (वि०)-छोटा, नाज़ुक, खर्व, रङ्गविरंगा। पु०-वामन। स्त्री०-प्रकाशकिरण, भूमि, मेघ, दूत, देवकी।
पृश्निगर्भ-धर(पु०)-श्रीकृष्ण।
पृष्(१ आ०)-छिड़कना, देना, सताना, नुकसान पहुंचाना।
पृषत(पु०)-रङ्गबिरङ्गा मृग, जलबिन्दु, चिन्ह, दाग़।
पृषदश्व(पु०)-वायु, मरुत।
पृषत्क(पु०)-बाण, तीर।
पृषन्ति(पु०)-जलबिंदु, पानीकी बूंद।

पृषोदर (पु०)-वायु, पवन। वि०-बिन्दुगर्भित, धब्बों वाला।
पृष्ट (वि०)-पूछा हुआ, प्रश्न किया हुआ, छिड़का हुआ।
पृष्टि(स्त्री०)-पूछताछ,प्रश्न, सवाल।
पृष्ठ (न०)-शरीर के पीछे का भाग, पीठ, किताब का सफा।
पृष्ठग्रन्थि(वि०)-कुबड़ा, कुब्ज।
पृष्ठतः[स्] (अ०)-पीछे से, पीछे की ओर से, पीछे पीछे।
पृष्ठदृष्टि(पु०)-जिस की नजर पीछे को हो, भालू, रीछ।
पृष्ठवंश (पु०)-पीठ का बांस, कमर की लम्बी हड्डी।
पृ (१०, ६प०)-पालना, पूरा करना।
पेचक (पु०)-उलूक, उल्लू, हाथी की सूंड का सिरा, पर्यंक, चारपाई, मेघ, जूका।
पेटक (अस्त्री०)-बैग, बक्स, टोकरी, थैला, पिटारी। [वृक्षविशेष।
पेटिका-पेटी (स्त्री०)-पिटारी,
पेटार (स्त्री०)-सन्दूक, मञ्जूषा, बड़ी पिटारी। [योग्य।
पेय (वि०)-पीने लायक, पान करने
पेयूष (अस्त्री०)-पेवसी, सद्यःप्रसूता गौ का सात दिन के मध्य का दूध।
पेल् (१प०)-कम्पन,कांपना, हिलना।
पेल (न०)-पुरुषचिन्ह, अण्डकोष।
पेलव (वि०)-कृश, कोमल, नाजुक, नरम, सुन्दर।
पेश [प-स] ल (वि०)-दक्ष, चतुर, होशियार, नाजुक कोमल।
पेशि-शी (स्त्री०)-अण्डा, मांस-पिण्ड, एक नदी, कृपाणाधार, तलवार की म्यान। [करना।
पेष् (१आ०)-सेवा करना, निश्चय
पेषण (न०)-पीसना, चूर्ण करना,
पेषणि-णी (स्त्री०)-पेषणशिला, पीसने की शिल, पट।
पैठीनसि-सी (पु०)-स्मृतिगोत्रकारक एक मुनि। [दादा का।
पैतामह (वि०)-पितामहसम्बन्धी,
पैतृक (वि०)-पिता का,पितासे प्राप्त।
पैत्तिक (वि०)-पित्तज, पित्तसम्बन्धी।
पैत्र (वि०)-पितृसम्बन्धी, पिता का। न०-पितृतीर्थ, तर्जनी और अंगूठे के मध्य का स्थान।
पैल (पु०)-मुनिविशेष।
पैशाच (पु०)-आठ प्रकार के विवाहों में आठवां विवाह।
पैशुन्य(न०)-पिशुनता, चुगली।
पैष्टिक(न०)-मद्यविशेष, सुरामेद।
पोगण्ड(वि०)-विकृतांग, न्यूनाधिकांग, जिस के अंग छोटे बड़े हों। पु०-पांच और दश वर्ष के मध्य की आयुवाला बालक।
पोटलिका(स्त्री०)-पोटली, पुटलिया
पोटा(स्त्री०)-पुरुषचिन्हयुक्त स्त्री, दाढ़ी मूछवाली स्त्री।
पोत (पु०)-बालक, नौका, जहाज की सवारी, समुद्र की सवारी, दशवर्षिक हस्ती।
पोतवणिक् [ज्] (पु०)-जहाज या नौका द्वारा व्यापार करने वाला व्यापारी।

पोतवाह(पु०)–मल्लाह, कैवर्त्तक ।
पोता(पु०)–विष्णु, ऋत्विक् ।
पोत्रायुध(पु०)--शूकर, सूअर ।
पोलिका(स्त्री०)--पिष्टकविशेष, फुलका, फुलकिया नामक रोटी ।
पोषण(न०)–पालन करना, पुष्टि ।
पोष्टा[ष्टृ] (वि०)--पोषणकर्त्ता,पालनेवाला । [जीव ।
पोष्य(वि०)--पोषण करनेयोग्य,पाल-
पौंस्न (न०)--पुंस्त्व,पुरुषत्व । वि०--पुरुष में उत्पन्न, पुरुष से प्राप्त ।
पौण्डरीक (न०)--पौंडा, इक्षुभेद, यज्ञविशेष । [गन्ना ।
पौण्ड्र (पु०)--देशभेद, पौंडा नामक
पौत्र[स्त्र] (पु०)--पुत्र का पुत्र,पोता ।
पौत्री [स्त्री] (स्त्री०)--पुत्र की पुत्री, पोती ।
पौन पुन्यम्(अ०)--पुन पुन ,वारवार।
पौनर्भव(पु०)--१२ प्रकार के पुत्रों में से एक,दूसरी वार विवाहिता स्त्री में उत्पन्न पुत्र । वि०--वार वार होने वाला ।
पौर (वि०)–नगरवासी, नागरिक । न०–रामकपूर ।
पौरव (पु०)–चन्द्रवंशीय पुरु नामक राजा का पुत्र ।
पौरस्त्य (वि०)–पूर्व दिशा में उत्पन्न, पहिले हुआ,आगे हुआ,आगे का।
पौराणिक(वि०) पुराण के जाननेवाला, पुराणों को ही धर्मग्रन्थ मानने वाला ।
पौरुष(न०)–पुरुषभाव, हिम्मत,महाद्दुरी, ऊपर फैले भुजा और हाथा वाले मनुष्य का परिमाण ।
पौरुषेय (वि०)–पुरुषसम्बन्धी, पुरुषकृत । [इया ।
पौरोगव (पु०)--पाकशालाध्यक्ष, रसो-
पौर्णमास (पु०)- पूर्णमासी में होने वाला एक यज्ञ ।
पौलस्त्य(पु०)--कुवेर, रावण ।
पौष (पु०)--पुष्यनक्षत्रयुक्त पूर्णमासी वाला महीना, पूस ।
पौष्टिक (वि०)--पुष्ट करने वाला, बल देने वाला । न०–क्षौर [हजामत] के समय शरीर को ढकने वाला वस्त्रविशेष ।
पौष्प (वि०)–पुष्पनिर्मित,पुष्पसम्बन्धी
प्याट्(अ०)--सम्बोधन का वाचक।
प्यै (१ आ०)–वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना, उन्नति करना ।
प्र(अ०)–गति, आरम्भ, उत्कर्ष,ख्याति, उत्पत्ति, सर्वतोभाव आदि अर्थों का बोधक, उपसर्गों में प्रथम उपसर्ग ।
प्रकट(वि०)--विशद, साफ, जाहिर।
प्रकटित (वि०)--विशदीकृत, जाहिर किया हुआ, स्पष्ट किया हुआ ।
प्रकम्पन(पु०)--वायु, पवन ।
प्रकर (वि०)–विकीर्ण, फैला हुआ [पुष्पादि] । पु० -समूह,अधिकार । न० -अगरु नामक सुगन्धितद्रव्य ।
प्रकरण (न०)--प्रस्ताव, ग्रन्थसन्धि, वह प्रसंग जिस में कवि का आप

हो कल्पना किया हुआ वृत्तान्त होता है ।
प्रकर्ष (पु०)–उत्कर्ष,बड़ाई,उत्तमता।
प्रकाण्ड (पु०)–वृक्ष की जड़ से शाखाओं तक का हिस्सा । [अत्यर्थ ।
प्रकाम (वि०)–यथेष्ट, इच्छापूर्वक,
प्रकाशम् (अ०)–चित्त की प्रसन्नता प्रकट करना ।
प्रकार (पु०)-भेद,सादृश्य,ढंग,तरह ।
प्रकाश (पु०)–आतप, रोशनी, धूप, चमक । वि०-प्रकाशमान,चमकीला
प्रकाशक (वि०)–प्रकाश करने वाला, रोशन करने वाला ।
प्रकाशकज्ञाता(पु०)–कुक्कुट, मुर्गा ।
प्रकाशात्मा[न्] (पु०)–सूर्य,परमेश्वर। वि०-प्रकटरूप वाला । [प्रकटित।
प्रकाशित (वि०)–प्रकाशकिया हुआ,
प्रकीर्ण (वि०)–बिखरा हुआ, विक्षिप्त [फेंकाहुआ], विस्तृत । पु०-एक प्रकार का करंज । न०-भिन्न २ जातियों का मेल, चामर ।
प्रकीर्त्तित (वि०)–कहा हुआ, कथित।
प्रकृत (वि०)–अधिकृत, आरब्ध, जिसे किसी काम का अधिकार दिया गया हो, असली, स्वाभाविक ।
प्रकृति (स्त्री०)–स्वभाव, सत्वरजस्तमोरूप गुणों वाला प्रधान, लिंग, स्वामी, मित्र, शक्ति, परमात्मा, कारीगरी, जीव, इक्कीस अक्षर के पाद वाला एक प्रकार का छन्द ।
प्रकृष्ट (वि०)–प्रधान, बड़ाई वाला, अच्छा ।
प्रकोष्ठ(पु०)–कूर्पर के नीचे का हिस्सा, हाथका हिस्सा,कुहनी से हाथ के पौंहचे तक का भाग, सहन,कमरा
प्रक्रिया (स्त्री०)–अधिकार, प्रकरण, राजाओं के सम्मुख छत्रचामर आदि का हिलाना ।
प्रक्व [क्वा] ण (पु०)–वीन की आवाज़, वीणा का शब्द ।
प्रक्षालन (न०)–धोना, साफ़ करना, मार्जन करना ।
प्रक्षालित (वि०)–धोया हुआ,मार्जित
प्रक्षेप (पु०)–औषधादि में डालने योग्य द्रव्य । [लोहे का तीर ।
प्रक्ष्वेडन (पु०)–नाराच नामक अस्त्र,
प्रखर (वि०)–बहुत तेज़ । पु०-कुक्कुट, कुत्ता, घोड़े का साज़, खच्चर ।
प्रख्या (स्त्री०)–सादृश्य, बराबरी ।
प्रख्यात (वि०)–मशहूर, विख्यात, प्रसिद्ध । [होना ।
प्रख्याति (स्त्री०)–प्रसिद्धि, मशहूर
प्रगण्ड (पु०)–शुद्ध कपोल, कोहनी से लेकर कक्ष [बगल] तक भुजा, दुर्ग की दीवार ।
प्रगल्भ (वि०)–प्रत्युत्पन्नमति, हाज़िरजवाब, प्रतिभावाला ।
प्रगाढ (वि०)–बहुतगाढा, दृढ,मज़बूत
प्रगुण (वि०)–सीधे स्वभाव वाला, दक्ष, पटु ।
प्रगे (अ०)–अतिप्रातःकाल,बहुतसवेरा
प्रग्रह (पु०)–तुलासूत्र, बन्दी, बन्धन, घोड़े आदि की रस्सी, लगाम, किरण ।

प्रघण (न०)-बाहर के दर्वाजे का कमरा, बरामदा, लोहे का मूसल
प्रचण्ड (वि०)-दुर्धर्ष, प्रगल्भ।
प्रचण्डमूर्त्ति (स्त्री०)-वरुण वृक्ष, प्रतापयुक्तशरीर। [नाली संयोग।
प्रचय (पु०)-समूह, बढ़ना, शिथिल
प्रचार (पु०)-व्यक्त, प्रकाश, रिवाज।
प्रचुर (वि०)-बहुत, अधिक, अतिशय।
प्रचेता [तृ] (पु०)-सारथि, कोपवान्।
प्रचेताः [स्] (पु०)-वरुण, एक मुनि। वि०-अच्छे दिल वाला। [हुआ।
प्रचोदित (वि०)-प्रेरित, प्रेरणा किया
प्रच्छ् (इ प०)-पूछना, जानने की इच्छा करना।
प्रच्छद (पु०)-आच्छादन, ढकना।
प्रच्छन्न (वि०)-ढका हुआ, आवृत। न०--अन्तर्द्वार।
प्रच्छर्दिका (स्त्री०)-वमिरोग, कै होना
प्रच्छादन (न०)-उत्तरीयवस्त्र, दुपट्टा, ओढना। [हुआ।
प्रच्छादित (वि०)-आच्छादित, ढका
प्रजनिका (स्त्री०)-माता, जननी।
प्रजव (पु०)-प्रकृष्टवेग, उत्तमवेग।
प्रजा (स्त्री०)-सन्तति, औलाद, रैयत
प्रजागर (पु०)-अतिशय जागना।
प्रजापति (पु०)-प्रजा का स्वामी, चतुर्मुख ब्रह्मा, जामाता, सूर्य, अग्नि, विश्वकर्मा।
प्रजावती (स्त्री०)-सन्तान वाली स्त्री, भाई की भार्या, बड़े भ्राता की पत्नी
प्रजेश्वर (पु०)-राजा।
प्रज्ञ (वि०)-पंडित, विद्वान्।
प्रज्ञप्ति (स्त्री०)-संकेत, इशारा।
प्रज्ञा (स्त्री०)-बुद्धि, सरस्वती, धी।
प्रज्ञाचक्षुः(पु०)-धृतराष्ट्र, अन्धापुरुष।
प्रज्ञान (न०)-बुद्धि, चिन्ह, निशान।
प्रज्वलित (वि०)-प्रकाशमान।
प्रणय (पु०)-प्रीतिपूर्वक प्रार्थना, स्नेह, प्यार, शान्ति।
प्रणयिनी (स्त्री०)-भार्या, स्त्री।
प्रणयी [न्] (पु०)-भर्त्ता, स्वामी।
प्रणव (पु०)-जिस के द्वारा परमात्मा या स्वेष्टदेव की स्तुति की जाय, परमात्मा का सर्वोत्तम नाम, वेदमन्त्र के प्रथम पढ़ने योग्य, ओङ्कार।
प्रणाद (पु०)-उच्चैःस्वर, अनुराग से उत्पन्न शब्द, कर्णरोगविशेष।
प्रणाम(पु०)-भक्तिश्रद्धायुक्त नमस्कार, प्रणति, नम्र होना, झुकना, वह प्रणाम जो दोनों भुजा, दोनों चरण, वक्षःस्थल, शिर, दृष्टि, मन और वाणी इन आठ अंगों द्वारा किया जाय।
प्रणाय्य (वि०)-अभिलाषरहित, प्रेमशून्य, शत्रु, द्वेष करने योग्य, असम्मत, सज्जन, प्रिय।
प्रणाल (पु०)-नाली, जल निकलने का मार्ग, जलनिस्सरण का मार्ग, पतनाला।
प्रणाली (स्त्री०)-पूर्वक्रम।
प्रणिधान (न०)-उद्योग, कोशिश, प्रयत्न, समाधि, अभिनिवेश, किसी एक बात पर ही झुक जाना।

प्रणिधि (पु०)-गुप्त दूत, खुफिया, सेवक, याचना करना, मांगना, वृहद्रथ का पुत्र। [खुशामद।
प्रणिपात (पु०)-प्रणाम, झुकना,
प्रणिहित (वि०)-पाया हुआ, प्राप्त, समाहित, रक्खा हुआ, समाधि में संलग्न।
प्रणीत (वि०)-रूपान्तर वा रूपान्तर को प्राप्त होने वाला, फेंका हुआ, क्षिप्त, स्थापित, प्रवेश किया हुआ। पु०-संस्कार किया अग्नि, सस्कृताग्नि।
प्रणीता (स्त्री०)-यज्ञ का पात्रविशेष, वह पात्र जिस में आहुति से बचा स्रुव का घृत डाला जाता है।
प्रणुत (वि०)-स्तुति किया हुआ, स्तुत, प्रशंसित।
प्रणेय (वि०)-वश में हुआ, अधीन, वश्य। [विस्तृति।
प्रतति (स्त्री०)-बेल, लता फैलाव,
प्रतती(स्त्री०)-पूर्ववत्।
प्रतन (पु०)-पुराना पदार्थ, पुरातन, पुरानी वस्तु।
प्रतल(न०)-एक नीचेका लोक, पाताल-भेद। पु०-चपेट, फैली उंगलियों वाला हस्त।
प्रतान(पु०)-विस्तारयुक्त, तैयार हुआ तन्तुभेद, वायु का एक रोग।
प्रतानिनी (स्त्री०)-फैली हुई बेल, विस्तृत लता।
प्रताप (पु०)-वह तेज जो धन, दण्ड और सेनासमूह से उत्पन्न होता है, प्रभाव, पौरुष।
प्रतापन (न०)-तपाना, पीड़ा देना, पीड़न। पु०-कुम्भीपाक नामक नरक। वि०-क्लेश देने वाला।
प्रतापस(पु०)-सफ़ेद आक का वृक्ष।
प्रतारक(वि०)-ठगने वाला, छलिया, धूर्त, वञ्चक, ठग।
प्रतारण(न०)-ठगना, छल करना, वञ्चन।
प्रतारणा(स्त्री०)-पूर्ववत्।
प्रतारित(वि०)-ठगा हुआ, वञ्चित।
प्रति (अ०)-१४वां उपसर्ग, विस्तृत होना, फैलना, व्याप्ति, चिन्ह, प्रतिदान, निश्चय, भाग, क०, पुनः, तरफ़, ओर।
प्रतिकर्म[न्] (न०)-कृत्रिम वेश, बनावटी भूषण, सजाना, प्रसाधन, अङ्गसंस्कार।
प्रति[ती] कार (पु०)-बदला लेना, वैर निकालना, रोगचिकित्सा, इलाज, अपकार के ऊपर अपकार करना।
प्रतिकाश-स(वि०)-सदृश, तुल्य, बराबर, एकसा, प्रकाश, चमक।
प्रतिकूप(पु०)-परिखा, खाई।
प्रतिकूल(वि०)-उलटा, विपक्ष, आनुकूल्यरहित, विरुद्ध।
प्रतिकृति (स्त्री०)-प्रतिमा, प्रतिनिधि, सादृश्य, तुल्यता, बराबरी, बदला निकालना, तसवीर, मूर्ति।
प्रतिकृष्ट (वि०)-निन्दनीय, गर्ह्य, कुत्सित।
प्रतिक्षणम्(अ०)-वार वार, पौनःपुन्य।
प्रतिक्षप(पु०)-रक्षक, रक्षयिता।

प्रतिक्षिप्त(वि०)–भेजा हुआ, प्रेषित, दूर किया गया, तिरस्कृत, बुला कर भेजा हुआ।

प्रतिग्रह (पु०)–धर्मार्थ दिये धनादि का ग्रहण, अङ्गीकार, मञ्जूर करना, दान का लेना, सेनापृष्ठ, पीकदान, सूर्य। [थूकने का पात्र।

प्रतिग्राह(पु०)–प्रतिग्रहण, पीकदान,

प्रतिघ(पु०)–क्रोध, गुस्सा। [मारण।

प्रतिघातन(न०)–मारना, वध करना,

प्रतिघ्न(न०)–अङ्ग, शरीर, देह।

प्रतिछन्दः [सु] (न०) –इच्छानुकूल, अभिप्राय के अनुसार, प्रतिरूप, चित्र, तसवीर।

प्रतिच्छाया (स्त्री०)–चित्र, तसवीर, प्रतिकृति, सादृश्य, एकसी शकल।

प्रतिजल्प(पु०)–वाक्यविशेष।

प्रतिज्ञा (स्त्री०)–कर्त्तव्य का उपदेश, साध्य का निर्देश, प्रण, दावा, प्रतिज्ञान का बोधक, अंगीकार, आस्था।

प्रतिज्ञात(वि०)–स्वीकार किया हुआ, अङ्गीकृत, मञ्जूर किया हुआ, इक़रार किया गया।

प्रतिताली (स्त्री०)–ताली, चाबी, कुञ्जी, तालकोद्घाटन यन्त्रविशेष।

प्रतिदारण(न०)–युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

प्रतिदिन(न०)–नित्यप्रति, रोज़ २।

प्रतिदि[दी] वा [न्] (पु०)-सूर्य, सूरज।

प्रतिदेय(वि०)–खरीदी हुई वस्तु को तुच्छ समझ कर बेचने वाले को वापिस करके देना

प्रतिध्वनि(पु०)–आवाज़ की आवाज़, गूंज, प्रतिशब्द, एकसा शब्द, लौटा हुआ शब्द।

प्रतिध्वान(पु०)–पूर्ववत्।

प्रतिनिधि(पु०)–सदृश, प्रतिमा, एवज़ी, अपने स्थान में स्वसदृश स्थापन करना, चित्र, तसवीर।

प्रतिप(पु०)-शान्तनुराज का पिता।

प्रतिपक्ष(पु०)–विरुद्धपक्ष में स्थित, शत्रु, दुश्मन, विरुद्ध प्रतिवक्ता।

प्रतिपत[द्] (स्त्री०)–पहिली तिथि, पड़वा, बुद्धि।

प्रतिपत्ति(स्त्री०)–प्रवृत्ति, चातुर्य, धैर्य, प्रगल्भता, गौरव, कर्त्तव्य कार्य का ज्ञान, पदप्राप्ति, विश्वास।

प्रतिपन्न (वि०)–अवगत, जाना हुआ, अङ्गीकृत, स्वीकार किया गया, विक्रान्त।

प्रतिपादक(वि०)–बोध कराने वाला, बोधक, प्रतिपत्तिजनक।

प्रतिपादन (न०)–देना, बोधन, कथन, समझाना। [पालनकर्त्ता।

प्रतिपालक(वि०)–पालन करने वाला,

प्रतिपालन (न०)–रक्षा करना, पोषण।

प्रतिपाल्य (वि०)–पालन करने योग्य, रक्षणीय, पालनीय।

प्रतिप्रसव (पु०)–निषिद्ध का फिर से विधान।

प्रतिफल (न०)–सदृशफल, प्रतिबिम्ब।

प्रतिबध्य (वि०)–बांधने योग्य, प्रतिबन्धनार्ह।

प्रतिबन्ध (पु०)– कार्य का रुकना, कार्यावरोध । वि०–रोकनेवाला ।

प्रतिबन्धक (पु०)–वृक्ष, विटप । वि०–अवरोधक ।

प्रतिबल (वि०)–समान बल वाला, तुल्यबल, सदृश योद्धा ।

प्रतिभय (वि०)–भय देने वाला, भयप्रद, भयङ्कर । न०–भय ।

प्रतिभा (स्त्री०)–प्रत्युत्पन्न मति, स्फुरणवती बुद्धि, वह बुद्धि जो हाजिर जवाब रखती हो ।

प्रतिभू (पु०)–मध्यस्थ, जामिन, वह पुरुष जो एवज़ी होता है, लग्नक ।

प्रतिम (वि०)–तुल्य, सदृश, बराबर।

प्रतिमा (स्त्री०)–मिट्टी या पत्थर आदि की मूर्ति, प्रतिबिम्ब,प्रतिच्छाया, चित्र, तसवीर, सादृश्य, तुल्यता, एक सदृश करना ।

प्रतिमान (न०)–प्रतिबिम्ब, परछाईं, सादृश्य, हस्ती का मस्तकप्रदेश, प्रतिनिधि, दृष्टान्त, प्रतिमा ।

प्रतिमुक्त (वि०)–पहिरा हुआ, धारण किया हुआ, बद्ध, बंधा हुआ, परित्यक्त, वापिस किया गया, विच्युत, प्रतिनिवृत्त ।

प्रतियत्न (पु०)–इच्छा, अभिलाषा, रोकना, प्रतिग्रह, संस्कार, परिश्रमी, ग्रहण । पु० वि०–तुल्य यत्न करने वाला ।

प्रतियातना(स्त्री०)--चित्र, तसवीर, तुल्यपीड़ा, एकसी व्यथा ।

प्रतियोग (पु०)–विरोध, दूसरी बार उद्योग, पुनरुद्योग ।

प्रतियोगी[न्] (वि०)–विरोधी, विरुद्ध पक्ष वाला,प्रतिकूलपक्षावलम्बी ।

प्रतिरूप-क (न०)–प्रतिमा,प्रतिबिम्ब, परछाईं, चित्र । वि०–सदृश ।

प्रतिरोध (पु०)–तिरस्कार, अनादर, सत्प्रतिपक्ष, बाधा, विघ्न, चोरी।

प्रतिरोधी[न्](पु०)--चोर, तस्कर ।

प्रतिलोम (वि०) उलटा, विपरीत, अनुकूलता से विरुद्ध, वाम ।

प्रतिलोमज(पु०)–वह पुरुष जो उत्तम वर्ण की स्त्री में नीच वर्ण से उत्पन्न हुआ हो,वर्णसंकर संकीर्ण।

प्रतिवचः[स्] (न०)--प्रत्युत्तर, जवाब, उत्तर, विरुद्ध वचन ।

प्रतिवचन(न०)–पूर्ववत् ।

प्रतिवसथ(पु०)–ग्राम, गांव ।

प्रतिवाक्य(न०)–उत्तर, जवाब ।

प्रतिवाणि(स्त्री०)–प्रत्युत्तर, प्रतिवाक्य ।

प्रतिवात(वि०)–वह देश जहां से वायु लौट कर आता है, विरुद्धवायुप्रदेश ।

प्रतिवादी [न्] (वि०)–विरुद्ध बोलने वाला, मुदाइलह, प्रतिपक्षी ।

प्रतिवासर(पु०)–प्रतिदिन,नित्यप्रति, तद्दिन ।

प्रतिवासी [न्] (वि०)–समीप रहने वाला, गृहनिकटवासी, पड़ोसी ।

प्रतिविधान (न०)–उपाय, बदला लेना, प्रतियत्न ।

प्रतिबिम्ब (न०)–प्रतिमा, परछाईं।
प्रतिविषा (स्त्री०)–अतीस नामक औषध।
प्रतिवेश (पु०)–पास में रहने वालों का घर,पड़ोसियों का घर। वि०–समीप रहने वाला।
प्रतिशासन(न०)–बुलाकर सेवकादि को कार्य में लगाना,आज्ञा देनी, हुक्म करना, प्रतिकूल आज्ञा।
प्रतिश्याय (पु०)–जुकाम, पीनस का रोग।
प्रतिश्रय(पु०)–यज्ञस्थान, यज्ञ की शाला, सभा, आश्रय, गृह, घर।
प्रतिश्रव (पु०)–मंजूर, अङ्गीकार, स्वीकार, कबूल।
प्रतिश्रुत् (स्त्री०)–प्रतिध्वनि, उलटी आवाज़, गूंज।
प्रतिश्रुत(वि०)–अङ्गीकार किया हुआ, स्वीकृत, प्रतिज्ञात, इक़रार।
प्रतिषिद्ध(वि०)–निषिद्ध, रोका हुआ, मना किया गया, प्रतिषेध का विषय।
प्रतिषेद्धा [द्धृ] (वि०)–निषेध करने वाला, प्रतिषेधकर्त्ता। [निषेध।
प्रतिषेध (पु०)–रोकना, मना करना,
प्रतिषेधक (वि०)=प्रतिषेद्धा।
प्रतिष्क (पु०)–दूत, सन्देशा ले जाने वाला पुरुष। [अग्रगामी।
प्रतिष्कश (पु०)–सहायक, दूत,
प्रतिष्कष (पु०)–चाम की रज्जु।
प्रतिष्टम्भ (पु०)–रोक,प्रतिबन्ध,विघ्न।
प्रतिष्ठ (वि०)–प्रतिष्ठा वाला पुरुष।
प्रतिष्ठा (स्त्री०)–गौरव,बड़ाई,पृथ्वी, स्थान, आश्रय, एक छन्द जिस में चार अक्षरों का पाद होता है; वह कर्त्तव्यकर्म जो व्रतादि की समाप्ति में किया जाता है, संस्कारविशेष।
प्रतिष्ठान (न०)–नगरविशेष जो पुरूरवा नामक राजचक्रवर्ती की राजधानी थी, वर्त्तमान में जिसे विठोर कहते हैं। [स्थित।
प्रतिष्ठित (वि०)–प्रतिष्ठायुक्त,गौरवा-
प्रतिसर (अस्त्री०)–कङ्कण, हस्तसूत्र, मन्त्रविशेष, व्रणशुद्धि, सेना का पिछला भाग,प्रातःसमय,मण्डल।
प्रतिसर्ग (पु०)–ब्रह्मा की सृष्टि के पश्चात् दक्षप्रभृति प्रजापतियों की सृष्टि, प्रतिकूलरचना, प्रलय का वाचक।
प्रतिसव्य (वि०)–प्रतिकूल, उलटा।
प्रतिसान्धानिक (पु०)–वन्दिजन, मागध, स्तुतिपाठक, भाट।
प्रतिसीरा (स्त्री०)–क़नात, परदा, यवनिका।
प्रतिसूर्यक (पु०)–सूर्य के समीप का मंडल,सूर्यसभा,छकलास,करकेंटा।
प्रतिसृष्ट(वि०)–तिरस्कृत, अनादर किया गया, प्रत्याख्यात, प्रेषित, भेजा हुआ, दत्त, दिया गया।
प्रतिहत(वि०)–रोका हुआ, उलट कर मारा गया,द्विष्ट, रुद्ध,आशाशून्य।
प्रति[ती] हार (पु०)–द्वारपाल, द्वाररक्षक, उलट कर चोट करना।

प्रतिहारक (पु०)—मायिक, कपटी, मायाकार।
प्रतीक (पु०)—अङ्ग, अवयव, विलोम, प्रतिकूल, दूसरा रूप।
प्रतीक्षा (स्त्री०)—अपेक्षा, इन्तजारी, प्रतीक्षण, आशा।
प्रतीक्ष्य (वि०)—सत्कार के योग्य, पूजनीय, प्रतीक्षा करने योग्य।
प्रतीची (स्त्री०)—पश्चिम की दिशा। वि० पश्चिमाभिमुखी।
प्रतीचीन (वि०)—पश्चिम की दिशा में होने वाला [प्रतीच्य शब्द का भी यही अर्थ है]।
प्रतीत (वि०)—प्रसिद्ध, ख्यात, मशहूर, जाना हुआ, व्यतीत, विश्वास किया गया, आदरसहित, ज्ञात।
प्रतीति(स्त्री०)—ख्याति, प्रसिद्धि, ज्ञान, हर्ष, आदर।
प्रतीप(वि०)—प्रतिकूल, विरुद्ध, उलटा। न०-अर्थालंकारभेद।
प्रतीपदर्शिनी (स्त्री)—नारी, स्त्रीमात्र
प्रतीर (न०)—किनारा, तट।
प्रतीहारी (स्त्री०)—द्वारस्थ नारी, द्वारपालिनी।
प्रतोद (पु०)—चाबुक, कोड़ा।
प्रतोली (स्त्री०)-गली, कूचा, नगर के मध्य का मार्ग, रथ्या।
प्रत्त (वि०)—दिया हुआ, दत्त।
प्रत्न (वि०)—बहुत पुराना, प्राचीन, पुरातन।
प्रत्यक् [च्](वि०)—पश्चिम की दिशा, पश्चिम का देश।
प्रत्यक्ष (वि०)—नेत्रों के सम्मुख, इन्द्रिय से उत्पन्न ज्ञान। वि०-उस ज्ञान वाला।
प्रत्यक्षवादी[न्] (पु०)—बौद्ध, बुद्धमतावलम्बी पुरुष।
प्रत्यगाशापति (पु०)—पश्चिम की दिशा का स्वामी, वरुण।
प्रत्यग्र (वि०)—नवीन, नूतन, नया।
प्रत्यङ् [ञ्](वि०)—पश्चिमकी दिशा, पश्चिम का देश।
प्रत्यङ्ग(न०)—अवयवविशेष।
प्रत्यङ्गिरा(स्त्री०)—एक देवी का नाम।
प्रत्यनीक (पु०)—शत्रु, विपक्षी, विरोधी, विघ्न। [समीपस्थ देश।
प्रत्यन्त(पु०)—म्लेच्छों का देश। वि०—
प्रत्यन्त-पर्वत (पु०)—बड़े पर्वत के समीप का छोटा पर्वत।
प्रत्यभियोग (पु०)—प्रत्यपराध, प्रतिकूल प्रश्न, अभियुक्त का अभियोग चलानेवाले पर दूसरा प्रश्न, मुद्दई पर आर्थिक हानिविषयक नालिश
प्रत्यभिवाद (पु०)—अभिवाद्य गुरु आदि का दिया आशीर्वचन।
प्रत्यय (पु०)—शपथ, क़सम, ज्ञान, अधीन, यक़ीन, आश्रय, व्याकरण में वह शब्द जो धातु या नाम को निमित्त मान कर विधान किया जाय, हेतु, छिद्र, शब्द, आचार, स्वादु।
प्रत्ययित(वि०)—विश्वस्त, यथार्थवक्ता, लौट कर गया हुआ।
प्रत्यर्थी [न्] (वि०)—शत्रु, दुश्मन। पु०—प्रतिवादी।

प्रत्यर्पित (वि०)-प्रतिदत्त, प्रत्यर्पण, धरोहर का वापिस देना ।
प्रत्यवसान(न०)-भोजन, खानेयोग्य वस्तु । [भक्षित ।
प्रत्यवसित (वि०)-खाया हुआ,
प्रत्यवस्कन्द (पु०)-चार प्रकार के उत्तरों में से एक ।
प्रत्यवस्थाता [तृ] (वि०)-प्रतिपक्षी होकर ठहरने वाला; शत्रु,दुश्मन ।
प्रत्यवाय(पु०)--पाप, नीच कर्म, ऐश्व, दोष, विघ्न ।
प्रत्यहम्(अ०)-प्रतिदिन, रोज़ २ ।
प्रत्याकार (पु०)--तलवार की म्यान, खड्गकोष ।
प्रत्याख्यात (वि०)--दूर किया हुआ, दूरीकृत, तिरस्कृत अनादृत, इन्कार किया हुआ ।
प्रत्याख्यान(न०)--दूर करना, दूरीकरण,अनादर करना,इन्कार करना।
प्रत्यादिष्ट (वि०)--दूर किया गया, निकाला हुआ; सूचित, इत्तिला दिया हुआ, विजित ।
प्रत्यादेश(पु०)-दूर करना,निकालना, आज्ञा,इन्कार करना ।
प्रत्याध्मान(पु०)-पेट का अफरना; वायुजन्य आनाह रोगविशेष ।
प्रत्यालीढ(न०)--धनुर्धारियों की गति विशेष अर्थात् वाम पाद को सिकोड़ और सीधे पाँव को आगे फैलाकर खड़ा होना,आस्वादित, चाटा हुआ ।
प्रत्यासन्न (वि०)--अतिसमीप में रहने वाला; निकटवर्ती ।
प्रत्यासार(पु०)-सेना का पश्चाद्भाग, सैन्यपृष्ठ ।
प्रत्याहार (पु०)-प्रत्येक इन्द्रिय को अपने २ विषय से खींचना, पीछे को हटाना, व्याकरण में 'अण्' आदि संज्ञा का बोधक ।
प्रत्युक्ति(स्त्री०)--प्रत्युत्तर, जवाब ।
प्रत्युत(अ०)-विपरीततः; बल्कि ।
प्रत्युत्क्रम(पु०)-प्रधान हेतु को लक्ष्य में रख कर अप्रधान का आरम्भ करना; युद्धार्थ उद्योगः कर्म के आरम्भ में प्रथम युक्ति का प्रयोग।
प्रत्युत्क्रान्ति (स्त्री०)-पूर्ववत् ।
प्रत्युत्तर (न०)--उत्तर का उत्तर, वह उत्तर जो उचित हो ।
प्रत्युत्थान (न०)-अपने स्थानादि पर आये हुए के सत्कारार्थ उठना, अभ्युत्थान, समीप से उठना ।
प्रत्युत्पन्नमति(वि०)--तत्कालोचित उत्तर देने वाली बुद्धि से युक्त, कुशाग्रीय बुद्धि,सूक्ष्म बुद्धि वाला, प्रतिभायुक्त ।
प्रत्युद्गमनीय(न०)-सामने से उठने योग्य,धुले हुए वस्त्रों का जोड़ा, धौतवस्त्रद्वय । वि० समुपस्थान के योग्य, पूजा करने लायक ।
प्रत्युद्गम (न०)=प्रत्युत्थान ।
प्रत्यूष (पु०)-प्रभात, प्रातःकाल, एक वसु का नाम ।
प्रत्यूषः[स्] (न०)-प्रभात,प्रातःकाल, सवेरा, दिनमुख ।
प्रत्यूह (पु०)-विघ्न, रुकावट ।

प्रत्येक(न०)–एक २ के प्रति,हरएक।
प्रथ् (१ आ०)–प्रख्यात होना, प्रसिद्ध होना।
प्रथम (वि०)–प्रधान, मुख्य,आदिम, अग्रिम [प्रथमाविभक्ति के बहुवचन में इस को 'सर्वनाम' संज्ञा होती है।
प्रथित (वि०)–प्रसिद्ध, मशहूर,ख्यात।
प्रथिमा [न्] (पु०)–मोटापन,स्थूलत्व, बड़ा होना।
प्रथिष्ठ (वि०)--बहुत बड़ा,अतिवृहत्।
प्रद (वि०)–देने वाला, दाता।
प्रदक्षिण (न०)–दक्षिणावर्त्त से किसी देवादि को उपलक्ष्य में रख कर उस के चारों तरफ घूमना, परिक्रमा करना।
प्रदक्षिणा (स्त्री०)–पूर्ववत्। [हुआ।
प्रदत्त (वि०)–अच्छे प्रकार से दिया
प्रदर (पु०)–एक प्रकार का स्त्रियों का रोग, फाड़ना, विदीर्णकरना, भङ्ग, बाण।
प्रदर्शित (वि०)–दिखलाया हुआ, आलोकित।
प्रदरु (पु०)–बाण, तीर।
प्रदान (न०)–उत्तम दान, देना।
प्रदिक् [श्] (स्त्री०)–दिशाओं के बीच की दिशा, विदिक्।
प्रदिग्ध (न०)–मांसनिर्मित व्यञ्जनभेद। वि०–लिपटा हुआ,प्रलिप्त, भूषित।
प्रदीप (पु०)–दीपक, दीवा, लैम्प।
प्रदीपन (पु०)–एक प्रकार का स्थावर विष। वि०–प्रकाशित करने वाला। [भीत।
प्रदेश (पु०)–देशमात्र, मुल्क, भित्ति,
प्रदेशन (न०)–भेंट, उपाय, श्रद्धा वा हर्ष से देवता, ब्राह्मण और राजादि के लिये दातव्य द्रव्य।
प्रदेश [शि] नी (स्त्री०)–तर्जनी अङ्गुलि, वह अंगुलि जिसके द्वारा वस्तु का निर्देश किया जाता है।
प्रदेह (पु०)–प्रलेप, लेप, किसी पिसी हुई वस्तु का शरीर में चिपकाना।
प्रदोष(पु०)–रात्रि का मुख, सन्ध्या समय, रात्रि के प्रारम्भ की चार वा दो घड़ी का समय। वि०–दुष्ट, प्रकृष्टदोषी।
प्रद्यु(न०)–पुण्य, शुभकर्म।
प्रद्युम्न(पु०)–कामदेव, कन्दर्प, श्री कृष्ण का ज्येष्ठ पुत्र।
प्रद्योत(पु०)–किरण, रश्मि।
प्रद्योतन(पु०)–सूर्य, सूरज।
प्रद्र[द्रा] व (पु०)–भागना, पलायन।
प्रधन(न०)–संग्राम, युद्ध, लड़ाई।
प्रधान (न०)–सत्त्वरजस्तमोरूपा गुणत्रयमयी प्रकृति, तत्कार्य बुद्धितत्त्व। वि०–उत्तम, प्रशस्त। पु०–महामात्र, सेनापत्यादि का वाचक, एक राजर्षि का नाम, परमात्मा, बुद्धि।
प्रधि(पु०)–रथनाभि, धुरा।
प्रधी(वि०)–उत्तम बुद्धि वाला, प्रशस्तबुद्धियुक्त। स्त्री०–प्रकृष्टबुद्धि।

प्रनष्ट(वि०)–नाश वाला, नाशयुक्त।
प्रपञ्च (पु०)–विस्तार,फैलाव, सञ्चय, प्रतारण, ठगना, संसार, प्रतिकूलत्व। [मार्ग।
प्रपथ(वि०)–अच्छा रास्ता, प्रशस्त-
प्रपथ्या(स्त्री०)–हैड़, हरीतकी।
प्रपद् न०)–पाव का अग्रभाग,पादाग्र।
प्रपन्न(वि०)–शरणमें आया,शरणागत।
प्रपा (स्त्री०)–प्याऊ, जलशाला, यज्ञशाला।
प्रपाणि(पु०)–पाणितल, हथेली।
प्रपात(पु०)–निर्झर, झरना, बिना किनारे, आश्रयप्रदान, तट,कूल।
प्रपावन(न०)–एक वन, कामपूरकवन, पितामहपिता।
प्रपितामह (पु०)–बाबा का पिता, परदादा, उत्तम पितामह,ब्रह्मा।
प्रपितामही (स्त्री०)–प्रपितामह की पत्नी, परदादी। [परपोता।
प्रपौत्र (पु०)–पोते का सुत,पौत्रपुत्र,
प्रपौत्री (स्त्री०)–पौत्र की कन्या, परपोती।
प्रफुल्ल(वि०)–खिला हुआ,विकसित।
प्रबन्ध (पु०)–काव्यादि ग्रन्थो की रचना,सन्दर्भ, गू थना,इन्तजाम।
प्रबन्धकल्पना(स्त्री०)–वह रचना जिस में मिथ्या विषय अल्पधिक और सत्य विषय सूक्ष्मरूप से वर्णित हो।
प्रबल(पु०)–पत्र, पत्ता,पल्लव। वि०–प्रकृष्ट बल वाला, अतिबलयुक्त।
प्रबाल (अस्त्री०)–मूंगा, विद्रुम, सब का अधिष्ठाता,मङ्गल ग्रह,पल्लव, पत्ता, वीणा का दण्ड, रक्तवर्ण।
प्रबुद्ध(वि०)–विद्वान्, पण्डित, खिला हुआ, प्रफुल्ल, जागता हुआ।
प्रबोध (पु०)–अच्छा ज्ञान, निद्रारहित होना, जागरण, जागना।
प्रबोधन(न०)–जागरण, जागना, होश में होना, किसी कारणवश पूर्व चन्दनादि गन्ध के न्यून हो जाने पर पुनः प्रयत्नविशेष से उस में गन्धोत्पादन करना।
प्रबोधनी (स्त्री०)–दुरालभा नामक औषध, देवउठान एकादशी जो कार्तिकशुक्लपक्ष में होती है।
प्रभञ्जन(पु०)–पवन, वायु, हवा।
प्रभद्र (पु०)–निम्बवृक्ष। वि०–श्रेष्ठ।
प्रभव (पु०)–जन्म, जन्म का हेतु, बल, पराक्रम, पहिला प्रकाशस्थान, ६० प्रकार के वर्षों में से एक, सृष्टि, रचना। वि०–प्रभूत, बहुत।
प्रभविष्णु (पु०)–परमात्मा, भैरव के १०८ नामों में से एक। वि०–होने के स्वभाव वाला।
प्रभा (स्त्री०)–कान्ति, दीप्ति, चमक, रोशनी, एक गोपी, सूर्यपत्नी।
प्रभाकर(पु०)–सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, आक का वृक्ष, मीमांसाशास्त्र के निर्माण करने वाला एक मुनि।
प्रभाकीट(पु०)–खद्योत, जुगनू।
प्रभात(न०)–प्रात काल, सुबह।
प्रभाव(पु०)–कोष और दण्ड से उत्पन्न

हुआ, तेज, शक्ति, ताक़त असर।
प्रभावान्(वि०)–तेजोयुक्त, प्रभावाला, तेजस्वी।
प्रभावती(स्त्री०)–गणों की वीणा, १३ अक्षर के पद वाला एक छन्द, सूर्यभार्या।
प्रभाप(पु०)–आठ वसुओं में से एक।
प्रभास(पु०)–एक तीर्थ का नाम, सोमतीर्थ, वसुभेद।
प्रभिन्न (पु०)–मत्तहस्ती, वह हस्ती जिस का मद चू रहा हो। वि०–भेद वाला, फटा हुआ।
प्रभु(पु०)–ईश्वर, शिव। वि०-स्वामी, नायक, अधिपति, पालक।
प्रभुता(स्त्री०)–ऐश्वर्य, सम्पत्ति, बड़ाई।
प्रभूत (वि०)–बहुत, प्रचुर, निस्सृत, उद्भूत, निकला हुआ, उन्नत, ऊंचा
प्रभृति (अ०)–तब से लेकर, तदादि, तदारम्भ। [स्फोटन।
प्रभेद(पु०)–अन्तर, भेद, फ़र्क़, फूटना,
प्रभ्रष्टक (न०)–शिखा से लटकती हुई माला।
प्रमत्त(वि०)–उन्मत्त, पागल, बेहोश, प्रमादी, असावधान।
प्रमथ(पु०)–महादेव का अनुचरविशेष, अश्व, घोड़ा, धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
प्रमथन (न०)–वध, क्लेश पहुंचाना, विलोडन। वि०–मथने वाला।
प्रमथा(स्त्री०)–हरीतकी, हैड़।
प्रमथाधिप(पु०)–महादेव, शिव।
प्रमथित (न०)–जलरहित तक्र, मट्ठा, छाछ। वि०–मथा हुआ।
प्रमद (पु०)–हर्ष, आनन्द, खुशी, धतूरे का फल, एक दानव, वशिष्ठ का एक पुत्र।
प्रमदवन(न०)–राजपत्नियों के विहार का वन, अन्तःपुर का वन।
प्रमदा(स्त्री०)–उत्तम स्त्री, सुन्दरनारी, चतुर्दशाक्षर के पाद वाला एक छन्द। [हर्षयुक्त, खुशदिल।
प्रमना [स्] (वि०)–प्रकृष्ट मन वाला,
प्रमय(पु०)–हिंसा, वध।
प्रमा(स्त्री०)–वह ज्ञान जिस से पदार्थ यथार्थ रूप से जाना जाय, निर्भ्रम ज्ञान, निश्चयात्मक ज्ञान।
प्रमाण(न०)–युक्ति, दलील, सबूत, निश्चय।
प्रमातामह(पु०)–मातामह का पिता, पड़नाना। [पत्नी, पड़नानी।
प्रमातामही (स्त्री०)–प्रमातामह की
प्रमाथ (पु०)–बलात्कार से हरना, पृथ्वी में डाल कर रगड़ना, भूमि में पीसना।
प्रमाथी [न्] (वि०)–मारने वाला, पीड़ा देने वाला, देह और इन्द्रियों को क्षोभ कराने वाला, प्रमथनशील।
प्रमाद (पु०)–असावधानी, बेपरवाही, कर्त्तव्य को अकर्त्तव्य और अकर्त्तव्य को कर्त्तव्य समझना।
प्रमादवान् [वत्] (वि०)–विना समझे करने वाला, असमीक्ष्यकर्त्ता, मूर्ख।
प्रमादिका (स्त्री०)–सदाचाररहिता कन्या, वह कन्या जो दूषित हो गई हो।

प्रमादी [न्] (वि०)=प्रमादवान् ।
प्रमापण(न०)–हिंसा करना, मारना ।
प्रमित (वि०)–जाना हुआ, ज्ञात, परिमित । [यथार्थज्ञान, प्रमा ।
प्रमिति (स्त्री०)–निश्चयात्मकज्ञान,
प्रमीढ (वि०)-बादल,घन, मूत्रित ।
प्रमीत (वि०)-मरा हुआ, मृत ।
प्रमीला (स्त्री०)-तन्द्रा, आँखों का मिचना, मूर्छा ।
प्रमुख (न०)–उससे लेकर, तदारभ्य, तदादि, तत्क्षण, सन्मुख । पु०–सुपारी का वृक्ष, समूह । वि०–श्रेष्ठ, पहिला, प्रधान, माननीय ।
प्रमुदित (वि०)–प्रसन्न हुआ, हृष्ट ।
प्रमेह (पु०)–एक रोग जिस में स्वप्नावस्था में वा मूत्र के साथ वीर्यक्षरण होता है ।
प्रमोद (पु०)–हर्ष, आनन्द, खुशी ।
प्रम्लोचा(स्त्री०)–एक अप्सराकानाम ।
प्रयत (वि०)–पवित्र, शुद्ध, नम्र, जितेन्द्रिय ।
प्रयत्न (पु०)–फलप्राप्ति के लिये व्यापार, कोशिश, चेष्टा,न्यायमत. में प्रवृत्ति, निवृत्ति और जीवनकारण नामसे तीनप्रकार का यत्न जो कि आत्मा का गुण माना है, सांख्यमतानुसार बुद्धि का धर्म, परिश्रम, मशक्कत ।
प्रयाग (पु०)–एक तीर्थ जहां गंगा और यमुना का संगम हुआ है, यज्ञ, इन्द्र का वाचक,अश्व ।
प्रयोगभव (पु०)–इन्द्र, देवराज ।
प्रयाण (न०)–जाना, गमन करना, यात्रा, प्रस्थान ।
प्रयात (पु०)–सौंप्तिक, भृगु, शुक्राचार्य । न०–प्रस्थान । वि०–गया हुआ, गत । [बलम, अज्ञान ।
प्रयास (पु०)–प्रयत्न, परिश्रम,
प्रयुक्त (वि०)–अच्छे प्रकार लगा हुआ, संलग्न ।
प्रयुत(न०)-दशलक्ष की संख्या का वाचक
प्रयोक्ता [तृ] (पु०)–साहूकार, धनी, उत्तमर्ण । वि०–प्रयोग करने वाला, अनुष्ठाता, नियोग करने वाला, नाट्य का आचार्य ।
प्रयोग (पु०)–मन्त्रादि की पूर्ति करना, वश में करना, वशीकरण, निदर्शन, मिसाल,दृष्टान्त, अश्व, नियत करना, इस्तैमाल करना, वृद्धि के लिये धन देना ।
प्रयोजक(वि०)–सेवकादि को कार्य में लगाने वाला, प्रेरणा करने वाला, प्रेरक, नियोगकर्त्ता, नियन्ता ।
प्रयोजन (न०)–कारण,मतलब, सबब, हेतु ।
प्रयोज्य (वि०)–लगाने योग्य, जो प्रयोग किये जाने के योग्य हो, भृत्य, सेवक ।
प्ररूढ (वि०)–बढ़ा हुआ, वृद्धिङ्गत, जड़पकड़ा हुआ, बहुमूल, जात ।
प्ररोह (पु०)–अङ्कुर, अंकुआ,नन्दीवृक्ष
प्रलपित (वि०)–कहा हुआ, कथित ।
प्रलम्ब (पु०)–एक दैत्य का नाम, राग, त्रपुष, मेघ, शाखा, हार-

भेद, देशविशेष । वि०-लम्बमान ।
प्रलम्बघ्न (पु०)-बलराम ।
प्रलम्बभित् (पु०)-बलराम ।
प्रलय (पु०)-कल्पान्त, ब्रह्मा के दिन, का अन्त, सृष्टि के लय का दिन, नाश, चेष्टालय, अन्तर्धान, छिपना
प्रलाप (पु०)-अनर्थक वचन, बकवाद, निष्प्रयोजन बोलना, बहुतबकना।
प्रलीनता (स्त्री०)-चेष्टा का नाश, प्रलय, इन्द्रियों का सो जाना ।
प्रवचन (न०)-वेद, वेदार्थ का ज्ञान, वेदाङ्ग, प्रकृष्ट वाक्य ।
प्रवचनीय (वि०)-प्रकृष्ट वक्ता, प्रवाच्य
प्रवण (पु०)-चौराहा, चतुष्पथ, वह प्रदेश जहां से चारों तरफ़ को मार्ग जाता हो, क्रम से नीचा स्थान, उदर । वि०-नम्र, स्निग्ध, आसक्त, क्षीण, निर्बल ।
प्रवत्स्यत्पतिका(स्त्री०)-नायिकाभेद।
प्रवयाः [स्] (वि०)-वृद्ध, बूढ़ा पुरुष, पुराण ।
प्रवर (न०)-अगुरु, गोत्र, अन्वय, वंश। पु०-गोत्रप्रवर्त्तक मुनिगण । वि०-श्रेष्ठ ।
प्रवर्ग (पु०)-होम का अग्निविशेष । [प्रवर्ग्य शब्द का भी यही अर्थ है]
प्रवर्त्तक (वि०)-कार्य में लगाने वाला, प्रवृत्तिजनक, प्रवर्त्तनकर्त्ता
प्रवर्त्तना (स्त्री०)-प्रवृत्तिका उत्पादक व्यवहार, आरम्भ, काम में लगाना, प्रेरणा । [लगा हुआ ।
प्रवर्त्तित (वि०)-उत्पन्न हुआ, जात,
प्रवह (पु०)-वायुविशेष, नगर से बाहिर गमन, मेघ का नाम ।
प्रवहण (न०)-पालकी, डोली, स्त्रियों को ले जाने का वह यान जो वस्त्रों से ढका हुआ और कहारों द्वारा ले जाया जाता है।
प्रवह्लि (स्त्री०)-पहेली, प्रहेलिका, कठिन समस्या ।
प्रवह्लिका (स्त्री०)-पूर्ववत् ।
प्रवाद (पु०)-परस्परवाक्य, जनरव, जनश्रुति ।
प्रवार (पु०)-वस्त्र, आच्छादन, प्रवर
प्रवारण (न०)-महादान, सुन्दर स्त्री रत्नादि का दान, निषेध, मना।
प्रवास (पु०)-विदेश, परदेश, दूरदेश-स्थिति, परदेश में रहना ।
प्रवासन (न०)-परदेश में रहना, देशनिकाला, वध, मारना ।
प्रवासी [न्] (वि०)-विदेश में रहने वाला, परदेशी, विदेशस्थ ।
प्रवाह (पु०)-जल का बहना, जल-स्रोत, व्यवहार, उत्तम अश्व।
प्रवाहिका (स्त्री०)-संग्रहणी रोग का भेद । [मशहूर होना ।
प्रविख्याति(स्त्री०)-अतिप्रसिद्धि, बहुत
प्रविदारण(न०)-युद्ध, संग्राम, लड़ाई आकीर्ण । [होना, विधुर ।
प्रविश्लेष (पु०)-अतिवियोग, जुदा
प्रविष्ट(वि०)-प्रवेशयुक्त, पहुंचा हुआ।
प्रविहारण(न०)=प्रविदारण ।
प्रवीण (वि०)-चतुर, विज्ञ, निपुण, शिक्षित, वीणाद्वारा उत्तस्वर से

गाने वाला। [श्रेष्ठ।
प्रवीर(पु०)-उत्तमयोद्धा, सुभट। वि०-
प्रवृत्त (वि०)-लगा हुआ, प्रवृत्तियुक्त, आरम्भ।
प्रवृत्ति (स्त्री०)-वार्त्ता, वात, प्रवर्त्तन, यज्ञादि व्यापार, हस्ती का मद, अव-न्ती आदि देशभेद।
प्रवृद्ध (वि०)-बढ़ा हुआ, वृद्धियुक्त, प्रौढ़, पूर्ण, विशाल, सघन, गाढ़ा
प्रवेक (वि०)-मुख्य, प्रधान, उत्तम, सरदार।
प्रवेट(पु०)-यव, जौ।
प्रवेणि-णी(स्त्री०)-हाथी की पृष्ठ का चित्रविचित्र रंग का कम्बल, नदीविशेष।
प्रवेट(पु०)-पीतवर्णकी मूंग, पीतमुद्ग
प्रवेश(पु०)-अन्दर जाना, अन्तर्गमन।
प्रवेशन(न०)-मुख्य दरवाजा, महाद्वार, सिंह का द्वार, दाखिल होना।
प्रवेष्ट(पु०)-भुजा, बाहु, बाहु।
प्रव्यक्त (वि०)-साफ, स्फुट।
प्रव्रजित (पु०)-सन्यासी, चतुर्थाश्रमी, जैनशिष्य। न० सन्यास।
प्रव्रज्या (स्त्री०)-सन्यास, वानप्रस्थ।
प्रव्रज्यावसित(पु०)-सन्यास से पतित, सन्यास से भ्रष्ट सन्यासी।
प्रशंसा (स्त्री०)-स्तुति, तारीफ, गुण-वर्णन, गुणों का बखान करना।
प्रशम(पु०)-शमता, उपशम, शान्ति।
प्रशमन (न०)-मारना, वध, हिंसा, शमता, शान्ति, स्थिर करना, प्रतिपादन।
प्रशस्त (वि०)-अतिश्रेष्ठ, प्रशंसा के योग्य, क्षेम, चौड़ा।
प्रशास्ता [तृ] (वि०)-शासन करने वाला, ऋत्विक्, मित्र।
प्रश्न (पु०)-जानने की इच्छा, जि-ज्ञासा, सवाल, अनुयोग, पृच्छा।
प्रश्नदूती (स्त्री०)-प्रहेलिका, पहेली।
प्रश्रय (पु०)-प्रेम, मुहब्बत, प्रणय।
प्रश्रित (वि०)-नम्र, विनीत, शिक्षित।
प्रश्लथ (वि०)-शिथिल, ढीला।
प्रष्टा [तृ] (वि०)-पूछने वाला, पृच्छक, प्रश्नकर्त्ता।
प्रष्ठ (वि०)-आगे जाने वाला, अग्र-गामी, अत्युत्तम, नेत्र का वाचक।
प्रष्ठवाट् [ह्] (पु०)-जुए में जोड़े हुए बैल आदि, वे नवीन वृष आदि जो दमन के लिये अर्थात् रथ हल आदि में चलना सिखलाने के लिये जोड़े गये हों।
प्रष्ठी(स्त्री०)-आगे चलने वाली पत्नी, मुख्यभार्या।
प्रष्ठौही (स्त्री०)-प्रथमगर्भा गौ, वह गौ जिस ने प्रथम गर्भ धारण किया हो।
प्रसक्त (न०)-नित्य। वि०-आसक्त, लगा हुआ, फसा हुआ।
प्रसक्ति (स्त्री०)-प्रसंग, संलग्न होना, आपत्ति, अनुमिति, अनुमान।
प्रसंग(पु०)-संगतिविशेष, मेल, मैथुन, स्त्रीसंग। [सफाई, प्रसन्नता।
प्रसत्ति(स्त्री०)-निर्मलता, स्वच्छता,
प्रसन्न(वि०)-स्वच्छ, निर्मल, साफ।

सन्तुष्ट, खुश । [होना ।
प्रसन्नता(स्त्री०)–प्रसाद, खुशी, खुश
प्रसन्ना(स्त्री०)–मदिरा, शराब ।
वि०–प्रसन्नतायुक्त [स्त्री] ।
प्रसन्नेरा(स्त्री०)–मदिरा, मद्य, शराब
प्रसभ (न०)–बलात्कार, जबर्दस्ती ।
प्रसभम् (अ०)–अचानक, अकस्मात्, एकाएक ।
प्रसर(पु०)–उत्पत्ति, प्रणय, वेग, समुदाय, समीपगमन, वाण, संग्राम, सवाँ के चावल, नीवार ।
प्रसरण(न०)–सेना का सब तरफ फैलना, अभ्युत्थान, गमनमात्र ।
प्रसर्पण(न०)–पूर्ववत् ।
प्रसव(पु०)–बालक का पैदा होना, जन्म, गर्भमोचन, उत्पत्ति, गर्भग्रहण, फल, पुष्प, आज्ञा ।
प्रसवबन्धन(न०)–डाँठला, वृन्त ।
प्रसवस्थली (स्त्री०)–माता, जननी
प्रसविता [तृ] (पु०)–पिता, जनक, बाप । [जननी, माता ।
प्रसवित्री(स्त्री०)–उत्पन्न करने वाली,
प्रसव्य(वि०)–प्रतिकूल, वाम, उलटा, विपरीत, बरखिलाफ ।
प्रसह (पु०)–बलात्कार से भक्षक पक्षी, श्येन, बाज आदि ।
प्रसहन(पु०)–हिंस्रपशु । न०–आलिंगन, सहना । [जबरदस्ती ।
प्रसह्य (अ०)–बलात्कार, हठ से,
प्रसह्यचौर (पु०)–बलात्कार से चोरी करने वाला, तस्कर, डाकू ।
प्रसाद (पु०)–प्रसन्नता, खुशी, निर्मलता, स्वास्थ्य, प्रसक्ति, अनुग्रह ।
प्रसादन (न०)–अन्न, प्रसन्नताकारक ।
प्रसादना (स्त्री०)–सेवा, पूजा, टहल ।
प्रसाधनी (स्त्री०)–सिद्धि, कंघी, बाल साफ करने का साधन ।
प्रसाधित (वि०)–अलंकृत, सजाया हुआ, पूर्ण किया हुआ ।
प्रसारण(न०)-विस्तारकरना, फैलाना।
प्रसारी [न्] (वि०)–विस्तार करने वाला, फैलाने वाला, विस्तारकारक । [पूय, राध, पीव ।
प्रसित(वि०)–आसक्त, लगा हुआ । न०
प्रसिद्ध(वि०)–अलंकृत, भूषित, मशहूर, विख्यात ।
प्रसिद्धि(स्त्री०)–ख्याति, प्रतिष्ठा, भूषा
प्रसू (स्त्री०)–माता, जननी, कदली, लता, उत्पन्न करने वाली, घोड़ी
प्रसूका(स्त्री०)–पूर्ववत् ।
प्रसूत (वि०)–उत्पन्न हुआ, सञ्जात । न०–पुष्प, फूल ।
प्रसूता(स्त्री०)–वह स्त्री जिसके सन्तान उत्पन्न हो गई हो, प्रसूतिका, जातसन्ताना ।
प्रसूति(स्त्री०)–सन्तान, अपत्य, औलाद
प्रसूतिज (न०)–प्रसव से उत्पन्न हुआ दुःख, जनने का दुःख ।
प्रसून(न०)–पुष्प, फूल, कुसुम, फल । वि०–उत्पन्न हुआ ।
प्रसूनेषु(पु०)–कन्दर्प, कामदेव ।
प्रसृत (न०)–आठ तोले का परिमाण, पसर, आधी अञ्जुली । वि०–बढ़ा हुआ, विनीत, नियुक्त, नियत किया हुआ ।

प्रसृति(स्त्री०)–पूर्ववत् ।
प्रसेक (पु०)–सेचन, गिरना, च्युति, लार का गिरना, रोगविशेष ।
प्रसेदिवान् [सृ](वि०)–प्रसन्न, खुश ।
प्रसेव (पु०)–वीणा का अङ्गविशेष, स्यूत, सिंया हुआ ।
प्रसेवक (पु०)–वीणा के अग्रभाग पर बंधी हुई लकड़ीविशेष, वीणाप्रान्तस्थ वक्रकाष्ठ ।
प्रस्कण्व (पु०)–ऋषिविशेष ।
प्रस्कन्न (वि०)–गिरा हुआ, पतित ।
प्रस्तर (पु०)–पाषाण, शिला, पत्थर, मणि ।
प्रस्तार (पु०)–तृणवन, तिनकों का वन, पत्रों की बनी शय्या, फैलाव, विस्तार, प्रक्रिया ।
प्रस्ताव (पु०)–अवसर, मौका, प्रसंगस्तुति, प्रसंग, रेज्यूलेशन, तहरीक।
प्रस्तावना (स्त्री०)–आरम्भ, भूमिका, तमहीद, नाटक में सूत्रधार और नटी आदि का परस्परवार्तालाप।
प्रस्तिर (पु)–पत्र आदि से निर्मित शय्या।
प्रस्तुत (वि०)–अवसरप्राप्त, प्रासंगिक, उद्यत, प्रकृष्ट, स्तुतियुक्त, उपस्थित, पेश किया हुआ ।
प्रस्थ (पु०)–१ सेर का परिमाण, पत्थर, पर्वत, पहाड़, फैलाव ।
प्रस्थान (न०)–विजय की इच्छा वाले का संग्रामभूमि में गमन, गमनमात्र, यात्रा ।
प्रस्थापित(वि०)–भेजा हुआ, प्रेषित ।
प्रस्फुट (वि०)–खिला हुआ, विकसित
प्रस्फोटन (न०)–छाज, सूप, ताड़ना, खिलना, विकासन ।
प्रस्रवण (न०)–लगातार जल का बहना, पर्वत का झरना, स्वेद, पसीना । पु०-चन्द्रमा, माल्यवान् पर्वत । [बहना ।
प्रस्राव (पु०)–मूत्र, पेशाब, टपकना,
प्रस्वेद (पु०)–पसीना, घर्मबिन्दु ।
प्रहत (वि०)–फैला हुआ, वितत, अभ्यस्त, क्षुण्ण, हिंसित, ताड़ना, किया हुआ, वादित ।
प्रहनेमि (पु०)–चन्द्रमा, चांद ।
प्रहर (पु०)–दिन का आठवां हिस्सा, पहर, याम ।
प्रहरण (न०)–युद्ध, संग्राम, शस्त्र, अस्त्र, चोट मारना, वश में करना, ताडन करना ।
प्रहर्ष (पु०)–बुधग्रह । वि०-हर्षयुक्त, हर्ष करने वाला ।
प्रहर्षणी(स्त्री०)–हरिद्रा, हल्दी, १३ अक्षरके पाद वालाएक छन्द ।
प्रहसन (न०)–काव्यविशेष, हास्य, हंसी करना, आक्षेप ।
प्रहसन्ती (स्त्री०)–यूथिका, वासन्ती लता ।
प्रहस्त (पु०)–वह हाथ जिस में अङ्गुलियें फैली हुई हों, चपेट, थप्पड़, रावण का सेनापति ।
प्रहार (पु०)–चोट, आघात ।
प्रहास (पु०)–नागभेद, नट, शिव, महादेव ।

प्रहि (पु०)-कूप, कुआँ। [दाल।
प्रहित (वि०)-फेंका हुआ, लिप्त। न०-
प्रहीण (वि०)-त्यक्त, त्यागा हुआ।
प्रहुत (न०)-भूतयज्ञविशेष।
प्रहेलिका(स्त्री०)-पहेली, वह रचना-विशेष जिस में अर्थ छिपा हुआ हो, कूटार्थभाषित कथा।
प्रह्लाद (पु०)-हिरण्यकशिपु नामक दैत्य का पुत्र जो कि ईश्वर का परमभक्त था।
प्रह्व (वि०)-विनीत, नम्र, झुका हुआ।
प्राक्(अ०)-पूर्व की दिशा, पूर्व का देश, पहिले, प्रभात, व्यतीत, अवान्तर।
प्राकाम्य (न०)-आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक, इच्छा, मर्जी, चाहना।
प्राकार (पु०)-परकोट, चारों तरफ से वेष्टनाकार ईंट आदि से निर्मित भित्ति, शहरपनाह, कोट।
प्राकृत (वि०)-अपकार करने वाला, नीच, प्रकृतिसम्बन्धी, स्वभाव-निर्मित, स्वभाव से सिद्ध, संस्कृत शब्द से निर्गत नाटकादि में अप-भ्रंश शब्द, प्रलय का भेद।
प्राकृतप्रलय (पु०)-प्रकृतिसम्बन्धी प्रलय, वह प्रलय जिस में कार्य-समूह प्रकृति में लीन होजाता है।
प्राकृतमानुष(पु०)-सामान्य कोटि का मनुष्य, साधारण पुरुष।
प्राकृतमित्र (न०)-स्वाभाविक मित्र, वह मित्र जिस का प्रेम कृत्रिम अर्थात् बनावटी न हो।
प्राकृतिक (वि०)-स्वाभाविक, प्रकृति-सम्बन्धी, कुदरती।
प्राक्तन (वि०)-पूर्व की दिशा या देश में हुआ, पुरातन, पुराना, पूर्व की दिशा, पूर्वका।
प्राक्तनकर्म (न०)-पूर्वजन्म का कर्म, भाग्य, अदृष्ट, पूर्वकृत कार्य।
प्राक्फल (पु०)-पनस, कटहल का वृक्ष।
प्राक्फल्गुनी (स्त्री०)-पूर्वफल्गुनी नाम नक्षत्र। [चार्य।
प्राक्फल्गुनीभव (पु०)-बृहस्पति, सुरा-
प्रागभाव (पु०)-पूर्वकालवर्ती अभाव, आगामी समय में होने वाला अभाव जैसे-"इन तन्तुओं से वस्त्र बनेगा" इस प्रकार से प्रसिद्ध अभावविशेष, भविष्यत्काल का बोधक। [प्रगल्भता।
प्रागल्भ्य (न०)-गम्भीरता, धैर्य,
प्रागुदीची (स्त्री०)-पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा, ईशान कोण।
प्राग्ज्योतिष(पु०)-कामरूपाख्य देश।
प्राग्भार (पु०)-पर्वत का अग्रभाग, बड़ा भार, उत्कर्ष, बहुतता।
प्राग्रहर (वि०)-उत्तम, श्रेष्ठ।
प्राग्वत्(वि०)-पूर्ववत्।
प्राग्वंश (पु०)-वह घर जो यजमान की स्थिति के लिये होमगृह से पूर्व के भाग में बनाया गया हो, पहिला वंश, पूर्वकुल।
प्राघात (पु०)-युद्ध, लड़ाई।
प्राघार(पु०)-घृतकी आहुति, होमादि

कर्म में अग्नि पर घृत का क्षरण अर्थात् बहाना।

प्राघुण (पु०)–अभ्यागत, अतिथि, अकस्मात् आया हुआ जन।

प्राघुणिक (पु०)–पूर्ववत्।

प्राघूर्णिक (पु०)–पूर्ववत्।

प्राङ् (वि०)–पूर्वदिशा, पूर्व का देश, पूर्वकाल।

प्राङ्गण(न०)–आंगन,चत्वर,गृहभूमि।

प्राचिका (स्त्री०)–वन की मक्खी, वनमक्षिका, दंश, डांस।

प्राची (स्त्री०)–पूर्व की दिशा।

प्राचीन (वि०)–पूर्व की दिशा वा देश में उत्पन्न हुआ, पुराना।

प्राचीनबर्हिः [स्] (पु०)–इन्द्र, एक राजा का नाम।

प्राचीनावीत(न०)–श्राद्ध आदि पितृ-कर्म में वाम हाथ को बाहिर कर दक्षिणहस्त पर यज्ञोपवीत धारण करना।

प्राचीनावीती [न्] (पु०)–बायें हाथ को निकाल कर सीधे हाथ पर यज्ञोपवीत धारण करने वाला पुरुष, प्राचीनावीतयुक्त।

प्राचीपति(पु०)–इन्द्र, देवराज।

प्राचीर(न०)–चारों तरफ की दीवार, परकोटा, शहरपनाह।

प्राचेतस(पु०)–वाल्मीकि मुनि,प्रचेता की सन्तानमात्र,विष्णु, दक्ष, वरुण का पुत्र।

प्राचेतस [स] (पु०)–प्राचीनबर्हि राजा के पुत्र [यह सकारान्त नित्य बहु-वचनान्त होता है]।

प्राच्य (पु०)–शरावती नदी के पूर्व और दक्षिण देश का नाम। वि०–पूर्वदेश का।

प्राजक (पु०)–सारथि, रथादि चलाने वाला।

प्राजापत्य (पु०)–आठ प्रकार के विवाहों में से एक, प्रयाग, जैन-राजविशेष। न०–द्वादश दिन में समाप्त होने वाला एक व्रत, रोहिणी नक्षत्र। वि०–प्रजापति सम्बन्धी चरु आदि।

प्राजिता [तृ] (पु०)–सारथि। वि०–अच्छा हांकने वाला।

प्राज्ञ(पु०)–पण्डित, विद्वान्, कल्कि देव का ज्येष्ठ भ्राता, राजा का तोता,मूर्ख। वि०–चतुर, निपुण।

प्राज्ञा(स्त्री०)–बुद्धिमती स्त्री,बुद्धि,अक्ल।

प्राज्ञी (स्त्री०)–प्रज्ञा, बुद्धि, पण्डित-भार्या।

प्राज्य(वि०)–बढ़ा हुआ, प्रचुर, बहुत। न०–उत्तम घृत, बहुत घृत।

प्राञ्जल(वि०)–सीधा, सरल, ऋजु।

प्राट्[ज्](पु०)–पूछने वाला,प्रश्नकर्ता।

प्राड्विवाक (पु०)–अर्थी [मुद्दई] और प्रत्यर्थी [मुद्दालह] की बात को सुन कर अच्छे बुरे का विचार करने वाला,जज,मुंसिफ,वकील। [प्राड्विवेक का भी यही अर्थ होता है]।

प्राण(पु०)–प्रश्वास,हृदय में रहने वाला वायु, अनिल, बल, काव्य का जीवनात्मक रस, नाक के आगे।

रहने वाला वायु जिस का कर्म बाहर जाना है।

प्राणप (पु०)–पवन, हवा, बलवान्, तीर्थंकर वाचक, प्रजापति।

प्राणद(न०)–जल, रुधिर,रक्त। वि०–प्राण देने वाला। पु०–जीवक वृक्ष।

प्राणन (न०)–जीवन, जीना, चेष्टा करना।

प्राणनाथ(पु०)–पति,स्वामी, मालिक।

प्राणन्त(पु०)–पवन, हवा, रसाञ्जन।

प्राणन्ती (स्त्री०)—छींक, हिक्का, हिचकी।

प्राणमयकोष (पु०)–कर्मेन्द्रियसहित प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान नामक पांच वायु-समूह।

प्राणसंयम (पु०)–प्राणों का रोकना, प्राणायाम, वह कर्म जिसमें नासिका द्वारा आने जाने वाला वायु रोका जाता है।

प्राणसद्[न्] (न०)–शरीर, देह।

प्राणसमा (स्त्री०)–भार्या, पत्नी। वि०–प्राणतुल्य।

प्राणाः (पु० ब०)–प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान नामक पांच वायु।

प्राणापानौ (पु०)–प्राण और अपान नामक दो वायु, अश्विनीकुमार।

प्राणायाम (पु०)–वह कर्म जिस में प्राणवायु का अवरोध किया जाता है अर्थात् बाहिर से प्राण वायु को खींच कर ऊपर ले जाना कुम्भक, फिर उसे वहीं रोक कर पूरण करना पूरक और पुनः उस को नासिका के द्वारा शनैः२ बाहिर निकालना रेचक नाम प्राणायाम कहलाता है, योग का अङ्गविशेष।

प्राणिद्यूत (न०)–वह द्यूत [जुआ] जो मेढा या मुर्गा आदि प्राणियों के द्वारा शर्त लगा कर खेला जाता है, पणपूर्वक मेष और कुक्कुटादि पक्षियों का युद्ध, समाह्वय।

प्राणिहिता (स्त्री०)–पादुका,खड़ाऊं।

प्राणी [न्] (वि०)–प्राणयुक्त मनुष्यादि जन्तु, चेतन, जीव।

प्राणीत्य (न०)–ऋण, कर्ज़।

प्राणेश (पु०)–पति, स्वामी,मालिक।

प्रातः [र्] (अ०)–प्रभात, सुबह, प्रत्यूष, सूर्योदय से तीन घड़ी तक का समय।

प्रातःकृत्य (न०)–प्रभात समय का कर्त्तव्य कर्म,सन्ध्योपासनादि।

प्रातर्गेय (पु०)–वन्दिजन, भाट,स्तुतिपाठक।

प्रातर्भोक्ता [तृ] (पु०)–काक, कौआ। वि०–प्रातःकाल भोजन करने वाला।

प्रातर्भोजन (न०)–प्रातःकाल का खाना, नाश्ता। [प्रातराश भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।

प्रातिपदिक (पु०)–अग्नि, आग। न०–व्याकरण में अर्थ वाला वह शब्दस्वरूप जो कि धातु तथा

प्रत्यय से भिन्न किन्तु कृदन्त, तद्धित और समास से निष्पन्न हुआ हो, सार्थक शब्द।
प्रातिभाव्य (न०)-साक्षी होना, साक्षित्व, जामिनी।
प्रातिस्विक (न०)-प्रत्येक वस्तु का नैजिक असाधारण धर्म।
प्रातिहारिक (पु०)-कपटी, छलिया, मायाकारक, द्वारपाल।
प्राथमिक(वि०)-पहिले समय में उत्पन्न हुआ, पूर्वसमय का, आरम्भिक।
प्रादुर्भाव (पु०)-ज़ाहिर होना, आविर्भाव, प्रकट होना, प्रकाश।
प्रादेश (पु०)-तर्जनी अंगुली के साथ फैला हुआ अंगुष्ठ, देशमात्र, तर्जनी के साथ फैलाये हुए अंगुष्ठपरिणाम का माप।
प्रादेशन (न०)-दान, त्याग, ख़ैरात।
प्रादोष (वि०)-प्रदोष का, प्रदोषसम्बन्धी।
प्रादोषिक (वि०)-पूर्ववत्।
प्राधान्य (न०)-मुख्यत्व, प्रधानता।
प्राध्व (न०)-अनुकूल, आज्ञानुवर्ती।
प्राध्य (पु०)-दूर जाने वाले रथादि, नम्र, दूरमार्ग। वि०-बद्ध, बंधा हुआ।
प्रान्त (पु०)-अन्त का भाग, पिछली सीमा, शेष सीमा, सूबा।
प्रान्ततः [स्] (न०)-चारो तरफ से, सब ओर से।
प्रान्तर (न०)-वह मार्ग जो दूर तक शून्य हो, जलवृक्षादि से रहित पथ, दूरगन्तव्य मार्ग, वन, वृक्ष की खखोड़र।
प्रान्तशून्य(न०)-पूर्ववत्।
प्रापण(न०)-प्राप्त होना, पहुंचाना, ले जाना।
प्रापणीय (वि०)-प्राप्त होने योग्य, प्राप्य, पहुंचाने वा लेजाने योग्य।
प्राप्त(वि०)-लब्ध, प्रस्थापित, भेजा हुआ, आसादित।
प्राप्तपञ्चत्व(वि०)-मरा हुआ, मृत।
प्राप्तरूप (वि०)-सुन्दर, मनोज्ञ, पण्डित, विज्ञ।
प्राप्तव्य(वि०)=प्रापणीय।
प्राप्ति(स्त्री०)-लाभ, धन आदि की वृद्धि, उदय, पाना, संहति, मेल, अणिमादि आठ सिद्धियों में से एक, स्थानान्तर पर पहुंचना।
प्राप्य (वि०)-पहुंचाने योग्य, गम्य, प्राप्तव्य, पाने लायक।
प्राबोधिक(पु०)-प्रातःकाल, सुबह।
प्राभृत(न०)-भेंट, उपायन, पारितोषिकधन, इनाम।
प्रामाणिक (पु०)-सहेतुक, प्रत्यक्षादि प्रमाणसिद्ध, शास्त्रज्ञ, प्रमाणकर्त्ता, मर्यादा के लायक, सभा के योग्य।
प्रामाण्य(न०)-प्रमाण का भाव, प्रमाकरणत्व, वस्तु का यथार्थ रूप से जानना, ग्रहण करने योग्य प्रमाण।
प्राय (पु०)-मृत्यु, मरण, मरणार्थ भोजन न करना, अनशन, तुल्य, बहुतायत, अवस्था, पाप, तप। न०-प्रवेश, प्रयास।

प्रायः [स्](अ०)—बाहुल्य, बहुतायत, बहुत करके, तपोऽनुष्ठान।
प्रायश्चित्त (न०)—पापशोधन का साधन, तपोऽनुष्ठान का निश्चय, पापनिवर्त्तक चान्द्रायणादि व्रत या कर्म।
प्रायश्चित्ती [न्] (वि०)—प्रायश्चित्त करने योग्य पुरुष, अपराधी, दोषी।
प्रायुद्धेषी [न्] (पु०)—अश्व, घोड़ा।
प्रायोग्य(वि०)—प्रयोजन के योग्य, मतलब के लायक़।
प्रायोपविष्ट(वि०)—भोजन न कर मरने के लिये बैठा हुआ पुरुष, वह पुरुष जो अनशन व्रत करता हुआ मरणार्थ उद्यत हो।
प्रायोपवेश(पु०)—सब संकल्प विकल्पों के त्याग तथा भोजन न करने पूर्वक मृत्यु के लिये बैठना।
प्रारब्ध(न०)—शरीर आदि का आरम्भक पूर्वजन्मार्जित अदृष्ट विशेष जिस का क्षय भोग से ही होता है। वि०—आरम्भ किया हुआ।
प्रारब्धि(स्त्री०)—हस्ती के बांधने की रज्जु। [आरम्भ, शुरू।
प्रारम्भ (पु०)—कर्म, काम, यागी,
प्रार्थन(न०)—मांगना, याचना करना, मारना, हिंसा करना।
प्रार्थना(स्त्री०)—पूर्ववत्।
प्रार्थनीय(न०)—द्वापर युग। वि०—प्रार्थना के योग्य, वाञ्छनीय।
प्रार्थित(वि०)-याचित, मांगा हुआ, कथित, हत, मारा हुआ।
प्रालम्ब(न०)—गले में सीधी लटकती हुई माला, कण्ठी। वि०—अतिशय लम्बमान।
प्रालम्बिका(स्त्री०)-स्वर्ण का हार, तोड़ा, स्वर्णनिर्मित हार।
प्रालेय(न०)—हिम, बर्फ़, तुषार।
प्रालेयांशु(पु०)—चन्द्रमा, चांद।
प्रावट(पु०)—यव, जौ।
प्रावरण(न०)—ऊपर का वस्त्र, दुपट्टा, उत्तरीय वस्त्र।
प्रावार(पु०)—पूर्ववत्।
प्रावृट् [ष्](स्त्री०)—वर्षा का मौसम, वर्षाकाल। [ओढ़ने का वस्त्र।
प्रावृत (न०)—उत्तम वस्त्र, पोशाक,
प्रावृति (स्त्री०)—परकोटा, चारों तरफ़ की दीवार।
प्रावृषा(स्त्री०)—वर्षाकाल, घनागम।
प्रावृषिक(पु०)—मयूर, मोर। वि०—वर्षाकाल में उत्पन्न होने वाला।
प्रावृषेण्य (पु०)—कदम्बवृक्ष। वि०—वर्षाकालोद्भव।
प्राशित(न०)—पितृयज्ञ विशेष। वि०—खाया हुआ, भक्षित।
प्राश्निक (पु०)-कुशलप्रश्नकर्त्ता, सभ्य। वि०—प्रश्न करने वाला।
प्रास(पु०)—कुन्त नामक अस्त्र, भाला।
प्रासङ्ग (पु०)—गाड़ी आदि का जूआ, युग। [महल।
प्रासाद(पु०)—देवताओं का घर, राज-
प्रासादकुक्कुट(पु०)—पारावत, कबूतर।
प्रासिक (पु०)—भाले से प्रहार करने वाला, कुन्तास्त्रधारी, कौन्तिक।

प्राह्(पु०)–नृत्यविषयक उपदेश।
प्राह्ण (पु०)–दिन का पहिला पहर, अच्छा दिन, पूर्वदिन।
प्राह्णे(अ०)–पहिले पहर में, पूर्वाह्ण में।
प्राह्णेतन(वि०)–पूर्वाह्ण में होने वाला, पूर्वाह्ण का, पूर्वाह्णसम्बन्धी।
प्राह्णेतराम्(अ०)–बहुत सुबह, बहुत पहिला पहर।
प्रिय (पु०)–पति, भर्त्ता, जामाता, कार्त्तिकेय, मृगविशेष, ऋद्धिनामक औषध।
प्रियवद(पु०)–गन्धर्व का वाचक। वि०–प्रिय बोलने वाला, मिष्टभाषी।
प्रियङ्कर (वि०)–प्रिय करने वाला, प्रियकर्त्ता। पु०–दैत्यभेद।
प्रियजन(पु०)–मित्रवर्ग, हृद्यलोक, मौढ भाव का ज्ञाता।
प्रियतम (पु०)–मयूरशिखा नामक वृक्ष। वि०–इन सब में अति प्यारा, अतिशय प्रिय।
प्रियतर(वि०)–इन दो में बहुत प्रिय।
प्रियता (स्त्री०)–प्यार, स्नेह, हार्द्द।
प्रियदर्शन (वि०)–शुभदर्शन वाला, मनोज्ञ, सुरूप, रूपवान्। पु०–शुक पक्षी, एक गन्धर्व।
प्रियवादी [न्] (वि०)–प्रिय बोलने वाला, मनोज्ञवक्ता।
प्रियव्रत(पु०)–स्वायम्भुव का ज्येष्ठपुत्र।
प्रिया (स्त्री०)–पत्नी, भार्या, इलायची, मदिरा, वात, वार्त्ता।
प्रियाल (पु०)–वृक्षविशेष, पीपलवृक्ष।
प्रियोदित (वि०)–कहा हुआ, प्रिय वाक्य, चाटुवाक्य।
प्री (९ उ०)–तृप्त होना, प्रसन्न होना, इच्छा, चाहना, कान्ति।
प्री (स्त्री०)–प्रथमा विभक्ति का बोधक। [प्रसन्न हुआ।
प्रीण (वि०)–पुराना, पुरातन, प्रीत,
प्रीणन (न०)–तृप्त करना, तर्पण, प्रसन्न करना, रक्षा करना।
प्रीत (वि०)–प्रसन्न हुआ, प्रीतियुक्त, प्रमुदित, हृष्ट।
प्रीति (स्त्री०)–तृप्ति, प्रेम, खुशी, हर्ष, २७ योगों में से दूसरा।
प्रीतिजुषा (स्त्री०)–उषा नाम्नी अनिरुद्ध की पत्नी। वि०–प्रीतियुक्त।
प्रीतिदत्त (न०)–प्रेम से दी हुई वस्तु।
प्रीतिभोज्य (वि०)–प्यार से खाने योग्य अन्नादि।
प्रु (१आ०)–सरकना, खिसकना, सर्पण।
प्रुट् (१आ०)–रगड़ना, मर्दन करना, मलना।
प्रुष् (१प०)–जलाना, भस्म करना। (९ प०)–सींचना, पूरा करना, भरना, स्नेह करना।
प्रुष्ट (वि०)–जला हुआ, दग्ध, गला हुआ, सड़ा हुआ।
प्रुष्व (पु०)–सूर्य, ऋतु, मौसम।
प्रुष्वा (स्त्री०)–जल की बिन्दु, जलकण।
प्रेक्षण (न०)–नेत्र, आंख, दर्शन।
प्रेक्षणकूट (पु०)–आंख का गोलक।
प्रेक्षा (स्त्री०)–अच्छे प्रकार से देखना,

नाट्येक्षण,पर्यालोचना,शोभा,बुद्धि शाखा, नृत्य का देखना।
प्रेक्षावत् (वि०)-सोच कर कार्य करने वाला, समीक्ष्यकर्त्ता।
प्रेङ्खा (स्त्री०)-डोला, झूला, पर्यटन, घूमना, अश्व की गति, नृत्य, नाच, वृक्षविशेष।
प्रेङ्खित (वि०)-कांपा हुआ, कम्पित।
प्रेङ्खोल [अदन्त] (१० प०)-झूलना, दोला पर चढ़ना। [कम्पन।
प्रेङ्खोलन (न०)-झूला, कांपना,
प्रेत (पु०)-नरकस्थ प्राणी, नारकी जीव, पिशाचभेद, स्थूलशरीर के भस्म हुए पश्चात् उत्पन्न देह। वि०-मृत, मरा हुआ।
प्रेतकर्म [न्] (न०)-मृतमनुष्य का दाह से लेकर सपिण्डीकरण तक का कर्म।
प्रेतगृह (न०)-श्मशान, मरघट।
प्रेततर्पण (न०)-मरण से लेकर सपिण्डीकरण तक प्रेतशब्दोच्चारण-पूर्वक दिया हुआ जलदान।
प्रेतदेह (स्त्री०)-प्रेत का शरीर, मृतदेह।
प्रेतनदी(अस्त्री०)-प्रेतों के तरने योग्य नदी, वैतरणी।
प्रेतपटह (पु०)-मृत्यु के समय का बाजा, मरणकाल में वादनीय वाद्यविशेष।
प्रेतपति(पु०)-प्रेतों का पति,यमराज।
प्रेतपिण्ड (पु०)-मरण के अनन्तर सपिण्डीकरणतक प्रेत के लिये प्रदेय पिण्डाकार अन्न।
प्रेतपुर (पु०)-यमपुरी, यमालय।
प्रेतवन (न०)-श्मशान, पितृस्थान।
प्रेतशिला (स्त्री०)-वह शिला जिस पर गया में मरों के उद्देश्य से पिण्डदान किया जाता है।
प्रेतश्राद्ध (न०)-वह श्राद्ध जो प्रेत के उद्देश्य से किया जाय।
प्रेता(स्त्री०)-मृता स्त्री,मरी हुई औरत।
प्रेत्य (अ०)-दूसरा लोक, लोकान्तर, अमुत्र, मरकर।
प्रेम [न्] (न०)-स्नेह,प्रियता,प्यार, हसीठट्ठा [जल।
प्रेमपातन (न०)-रोदना, रोदन, नेत्र-
प्रेमा [न्] (पु०)-स्नेह, इन्द्र, पवन।
प्रेमी [न्] (वि०)-स्नेह करने वाला, प्रेमयुक्त। [स्त्री।
प्रेयसी(स्त्री०)-प्रियतमा नारी,प्यारी
प्रेयान् [स्] (पु०)-बहुत प्यारा,पति, कान्त।
प्रेरण (न०)-भेजना, निकृष्ट सेवकादि को काम में लगाना, प्रेषण।
प्रेरित (वि०)-भेजा हुआ,प्रेषित।
प्रेत्यां [न्] (पु०)-समुद्र, दरिया।
प्रेत्यंदी (स्त्री०)-नदी,दरिया।
प्रेष् (१ प०)-जाना, गमन करना।
प्रेष (पु०)-भेजना,प्रेरण,पीड़ा,व्यथा।
प्रेषण (न०)-प्रेरणा,भेजना।
प्रेषित (वि०)-भेजा हुआ, स्थापन किया हुआ, प्रतिष्ठित।
प्रेष्ठ(वि०)-बहुत प्यारा,अतिशयप्रिय
प्रेष्ठा (स्त्री०)=प्रेयसी।

प्रेष्य(वि०)-भेजने योग्य,दास, सेवक।
प्रैष(पु०)-दास,नौकर। न०-दास का कर्म, सेवाकर्म। [भेजना।
प्रैष्य (पु०)-मलना, मर्दन, उन्माद,
प्रोक्त (वि०)-कथित,कहा हुआ।
प्रोक्षण (न०)-सींचना, छिड़कना, मारना, हिंसा करना,वध।
प्रोक्षित(वि०)-सिक्त, छिड़का हुआ, निहत, मारा हुआ।
प्रोज्झासन(न०)-मारना,हिंसा करना।
प्रोज्झित(वि०)-त्यक्त, त्यागा हुआ।
प्रोञ्छन(न०)-साफ करना, पोंछना, प्रघर्षण।
प्रोण्ठ(पु०)-पीकदान, ष्ठीवनपात्र।
प्रोत (वि०)-गुंथा हुआ, खचित, गुम्फित, स्यूत, सिया हुआ। न०-वस्त्र।
प्रोत्सादन(न०)-छत्र, छाता।
प्रोत्फुल्ल(वि०)-खिला हुआ,विकसित
प्रोत्साह (पु०)-कार्यसम्पादन में अत्यन्त उत्साह।
प्रोथ(स्त्री०)-घोड़े की नाक, अश्व-नासिका, शूकर की नाक, थोंथी, स्त्री का गर्भ, गर्त, गढ़ा, अश्व का मुख। वि०-पथिक, पान्थ, स्थापित।
प्रोथ(पु०)-सन्ताप,कष्ट।
प्रोषित(वि०)-विदेश में गया हुआ, परदेशी, प्रवासगत।
प्रोषितभर्तृका(स्त्री०)-वह स्त्री जिस का पति परदेश में गया हो।
प्रोष्ठ(पु०)-मत्स्यभेद,जनपदविशेष,गौ।
प्रोष्ठपद (पु०)-भाद्रपद नामक मास, नक्षत्रविशेष। वि०-गौ के तुल्य पदयुक्त। [नक्षत्र।
प्रोष्ठपदा(स्त्री०)-पूर्वाभाद्रपद नामक
प्रोष्ठपदी (स्त्री०)-भाद्रपदमास की पूर्णिमा।
प्रोष्ठी(स्त्री०)-मत्स्यभेद, शफरी।
प्रोह(पु०)-हस्ती का पांव, हाथी के पांव की गांठ। वि०-तर्क,निपुण।
प्रौढ(वि०)-बढ़ा हुआ, वर्द्धित,तरुण, परिश्रमी, निपुण।
प्रौढपाद(पु०)-आसन के ऊपर आरोपित पांव वाला पुरुष, किसी वस्त्रादि से कमर, जंघा और घुटनों के बन्धनपूर्वक बैठा हुआ पुरुष।
प्रौढा (स्त्री०)-नायिका भेद, ५५ वर्ष की अवस्था वाली स्त्री।
प्रौढि(स्त्री०)-ताक़त, सामर्थ्य, प्रगल्भता, उद्योग।
प्रौण(वि०)-चतुर, निपुण।
प्लक्ष(१ अ०)-भक्षण करना, खाना।
प्लक्ष (पु०)-वृक्षविशेष, पाकड़ नामक वृक्ष। [में एक द्वीप।
प्लक्षद्वीप(पु०)-सात द्वीपों के अन्त-
प्लव् (१ आ०)-जाना, गमन करना, उछलना, कूदना।
प्लव(पु०)-प्लवन, कूदना, मेंढक, चण्डाल, वानर, भेंड़ा, जलकाक, पाकड़ वृक्ष, जल के पक्षिमात्र, पक्षिविशेष, शत्रु, जलमुर्गा। न०-नागरमोथा, तृण। वि०-कूद कर चलने वाला।

प्लवक (पु०)–खड्ग की धार आदि पर नाचने वाला पुरुष, प्लवग, चण्डाल।

प्लवग (पु०)–वानर, बन्दर, मेंढक, सूर्य का सारथि, शिरीषवृक्ष।

प्लवङ्ग(पु०)–वानर, मृग, प्लक्ष नामक वृक्ष। [कूदकर चलने वाला।

प्लवङ्गम(पु०)–वानर, बन्दर। वि०–

प्लवन (वि०)–क्रम से नीचे प्रदेश वाली भूमि, प्रवण।

प्लावन(न०)–द्रव वस्तु का चारों तरफ़ वा ऊपर को आना, उफान आना, स्नान करना, बहना, बाढ़ आना।

प्लावित(वि०)–जलादि में डूबा हुआ, निमज्जित, बहाया हुआ, गीला किया गया।

प्लिह् (१ प०)–जाना, गमन करना।

प्लीहा (स्त्री०)–तिल्ली नामक रोग, वामकुक्षि के पास में बढ़ा हुआ मांस का टुकड़ा।

प्लीह[न्] (पु०)–पूर्ववत्।

प्लीहारि (पु०)–अश्वत्थ वृक्ष।

प्लु(१आ०)–उछल कर चलना, सरकना।

प्लुत (न०)–तिरछा जाना, झपट कर चलना, अश्व की गतिविशेष। पु०-त्रिमात्रिक वर्ण यथा–ओ३म्। वि०-उछल कर चलने वाला, सिक्त छिड़का हुआ, व्याप्त।

प्लुष् (४ प०)–जलाना, भस्म करना।

प्लुष्ट (वि०)–दग्ध, जला हुआ।

प्लोष (पु०)–दाह, गर्मी, सन्ताप।

प्सा (२ प०)–खाना, भक्षण करना।

प्सात (वि०)–भक्षित, खाया हुआ।

प्सान(न०)-भोजन, खाद्यपदार्थ, खाना।

फ

फ–पवर्ग का दूसरा अक्षर। न०–शुष्क कथन, व्यर्थ वचन, मिथ्या भाषण, फूत्कार, फुंकार। पु०-झञ्झा वायु, ज़ोर का वायु, जृम्भाओं का आना, फलसाधन, फललाभ, संज्ञाविशेष।

फक्क् (१ प०)–कुत्सित व्यवहार, शनैः२ चलना, मन्दगमन, गलती से प्रयोग करना।

फक्किका (स्त्री०)–कुव्यवहार, गलत अमल, तत्त्व के निर्णयार्थ पूर्वपक्ष, सिद्ध करने योग्य तर्क, न्यायविषयक व्याख्या।

फट् (अ०)–तन्त्रशास्त्र में कहा अस्त्र नामक शस्त्र, अर्घ्यपात्र का प्रक्षालन, अर्घ्य जल द्वारा पूजा की सामग्री के अभ्युक्षण आदि में इस का प्रयोग किया जाता है। वि०-विशीर्ण आदि।

फट (पु०)–सर्प का फण।

फटा (स्त्री०)–फणा, दम्भ, धूर्त, कितव।

फण् (१ प०)–अनायास उत्पन्न होना, विना परिश्रम के उपजना। (१प० सक०)–गमन करना, जाना।

फण (पु०)–सांप का फैला हुआ मस्तक, सर्प का फण।

फण[ा]कर (पु०)–सर्प, सांप, भुजङ्ग।

फण [णा] धर (पु०)–साप, सर्प ।
फणभृत्–वान् (पु०)–पूर्ववत । [फण ।
फणा (स्त्री०)–सर्प की फटा, साप का
फणिकेसर (न०)–नागकेसर ।
फणिचक्र (न०)–विवाहादि कार्य में शुभाशुभ के ज्ञानार्थ २७ नक्षत्रो का बनाया सर्पाकार चक्र ।
फणितल्पग (पु०)–विष्णु का वाचक ।
फणिप्रिय (पु०)–वायु, पवन ।
फणिफेन (पु०)–अहिफेन, अफीम ।
फणी [न्] (पु०)–सर्प, साप, भुजङ्ग ।
फणीश्वर (पु०)–सर्पों का स्वामी, अनन्त ।
फतङ (पु०)–जठर, पेट, उदर ।
फत्कारी [न्] (पु०)–पक्षिमात्र ।
फर्फरिका (स्त्री०)–जूती, पादुका ।
फल् (१ प०)–तोड़ना, भेदन करना, फाड़ना, फल का उत्पन्न होना ।
फल(न०)–वृक्षादि का फल, लाभ, ढाल, बाण का अगला हिस्सा, त्रिफला [हैड़, बहेड़ा, आंवला], प्रयोजन, आमफल, दान, काम, उद्देश्य । पु०–कुटज का वृक्ष ।
फलक(न०)–चर्म, ढाल । पु० अस्थियो का समूह, नागकेशर, धोबी का पटड़ा । [हाथ में ढाल हो ।
फलकपाणि (पु०)–वह पुरुष जिस के
फलकाम (वि०)–कर्मफल की इच्छा करने वाला ।
फलकोषक(पु०)–अण्डकोष, मुष्क ।
फलग्रहि (वि०)–समयानुकूल फल धारण करने वाला [वृक्ष] ।
फलग्राही [न्](पु०)–वृक्ष, पेड़ । वि०–फल ग्रहण करने वाला ।
फलत्रिक (न०)–त्रिफला [हैड़, बहेड़ा और आंवला] ।
फलद(पु०)–वृक्ष । वि०–फल देने वाला ।
फलपाकान्ता(स्त्री०)–ओषधि, धान्य कदली आदि । [स्थान ।
फलभूमि(स्त्री०)–कर्मफल भोगने का
फलवान्[वत्] (पु०)–फल वाला वृक्ष, फलयुक्त वृक्ष । [पनस, करौंदा ।
फलवृक्षक (पु०)–फलप्रधान वृक्ष,
फलश्रुति(स्त्री०)–कर्मफल का श्रवण ।
फलश्रेष्ठ(पु०)–आम्रवृक्ष, आम का पेड़ ।
फला(स्त्री०)–जाड़का वृक्ष, शमीवृक्ष ।
फलादन (पु०)–शुक, तोता पक्षी । वि०–फल खाने वाला ।
फलान्त(पु०)–बास, वंश । [फलासक्ति ।
फलासङ्ग(पु०)–फल की अभिलाषा,
फलिका (स्त्री०)–बाण का अगला हिस्सा ।
फलिनी(स्त्री०)–प्रियङ्गु का वृक्ष ।
फली[न्] (त्रि०)–फल वाले वृक्षादि ।
फलेग्र [ग्रा] हि (पु०)–फलयुक्तवृक्ष, योग्य समय । [लाभ ।
फलोदय(पु०)–फलोत्पत्ति, हर्ष, स्वर्ग-
फल्गु (वि०)–साररहित, क्षुद्र, निरर्थक, साधारण, मनोज्ञ, सुन्दर । स्त्री०–गयातीर्थस्थ एक नदी ।
फल्गुदा(स्त्री०)–गया नदी ।
फल्गुन (पु०)–अर्जुन, फाल्गुन का नाम । वि०–फल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न हुआ ।

फल्गुनी (स्त्री०)—पूर्वफल्गुनी उत्तरफल्गुनी नामक नक्षत्र।

फल्गूत्सव(पु०)—दोलयात्रा, गोविन्द के उपलक्ष्य में फाल्गुन मास को पूर्णिमा के दिन करने योग्य एक उत्सव, होलिकोत्सव।

फल्य(न०)—पुष्प, फूल, कुसुम।

फल्लफल(पु०)—छाज की हवा, सूर्पवायु।

फा(पु०)—सन्ताप, कष्ट, व्यर्थभाषण।

फाणि(पु०)—गुड़, जीरा, दही मिले सत्तू, करम्भ, खिचड़ी।

फाणित(न०)—राब, फेणी, कच्चीखांड।

फाण्ट(वि०)—बिना परिश्रम के बना हुआ, अनायासकृत, क्वाथभेद।

फाल(न०)—फाली, कुश, कुशिक, पृथ्वी फाड़ने के लिये लांगलस्थ लौह। पु०—शिव, बलदेव। वि०—कपास से बना हुआ वस्त्र।

फालकृष्ट(वि०)—हल में लगे हुए लौह से जोती हुई भूमि आदि, वह प्रदेश जिस में हल चलाया गया हो।

फाल्गुन (पु०)—अर्जुन, अर्जुन नामक वृक्ष, अश्विनी से ११वां और १२वां नक्षत्र, चैत्र से १२वां मास।

फाल्गुनानुज (पु०)—वसन्तऋतु, वसन्तकाल।

फाल्गुनिक(पु०)—फाल्गुनसंज्ञक मास।

फाल्गुनी(स्त्री०)—फाल्गुन मास की पूर्णिमा। [सवन।

फि(पु०)—पाप, क्रोध, गुस्सा, निष्फल

फिङ्गक(पु०)—चिड़ा, चटक, चिड़िया नामक पक्षिविशेष।

फिरङ्ग (पु०)—अपने नाम से प्रसिद्ध म्लेच्छदेश, शिश्नसम्बन्धी गर्मी का एक रोगविशेष जो फिरङ्गी या फिरंगियों के दर्शन से होता है।

फिरङ्गरोटी(स्त्री०)—डबलरोटी, विष-कुट, वह रोटी जो गेहूं के चून की गोलाकार और मोटी बना कर तन्दूर के पाकद्वारा बनाई जाती है।

फिरङ्गिणी (स्त्री०)—फिरंगदेश में उत्पन्न हुई नारी, फिरंगिन।

फिरङ्गी[न्] (पु०)—वह पुरुष जो फिरंग देश में उत्पन्न हुआ हो।

फु (पु०)—मन्त्रक, मन्त्र को उच्चारण करके फुत्कार शब्द करना अर्थात् फूंकना, तुच्छ वाक्य।

फुट(वि०)—स्फुटित, फूटा हुआ, खिला हुआ, प्रस्फुटित, सांप का फण।

फु[फू]त् (अ०)—फुत्कार शब्द करना, फूंक मारना, तुच्छभाषण।

फुत्कर(पु०)—अग्नि, आग।

फुत्कार(पु०)—फुत्कार शब्द करना, फुत्करण।

फुप्फुस(पु०)—फेफड़ा, वह आशय जो वामपार्श्व में हृदय की नाड़ी से लगा हुआ और उदान वायु का आधार है। [होना।

फुल्ल् (१ प०)—खिलना, विकसित

फुल्ल(वि०)—खिला हुआ। पु०—फूल।

फुल्लरीक(पु०)—सर्प, सांप, देशविशेष।

फेण (पु०)—दूध या जल के झाग, बुलबुला, समुद्रझाग, हिम, गुड़ का विकार।

फेणप(पु०)–मुनिविशेष, वृक्षादि से स्वयं गिरे हुए फलों से आजीवन करने वाला मुनि। वि०–झागों का पान करने वाला।
फेणी(स्त्री०)–राब, गुड़विकार।
फेन (पु०)=फेण।
फेनक (पु०)–पिष्टकविशेष, बड़े।
फेनका (स्त्री०)–जल में पके चावलों का चूर्ण।
फेनल (वि०)–झाग वाला, बुद्बुदयुक्त।
फेनवान् [वत्] (वि०)–पूर्ववत्।
फेनाग्र (न०)–बुद्बुद्, बुलबुला।
फेनाशनि (पु०)–इन्द्र, देवराज।
फेनिल (पु०)–बदरीवृक्ष, बेरी का पेड़। न०–बदरीफल, बेर।
फेर [रु] (पु०)–शृगाल, गीदड़।
फेरव (पु०)–शृगाल, राक्षस। वि०–धूर्त, हिंसा करने वाला।
फेरु (पु०)–गीदड़, शृगाल।
फेल (न०)–खाकर छोड़ा हुआ अन्न, उच्छिष्ट, भुक्तसमुज्झित।
फेलक (पु०)–पूर्ववत्।
फेला–लिका (स्त्री०)–पूर्ववत्।
फेल–ली (स्त्री०)–पूर्ववत्।

ब

ब–पवर्ग का तृतीय वर्ण। पु०–वरुण, घट, संकेत, इशारा, सूचना, वपन, बुनना, वासन, धोना, तन्तुओं का फैलाना, जल का वाचक, गमन। [बहुल, बहुत ही।
बंहिष्ठ (वि०)–बहुत, अतिशय
वंहीयान् [स्] (वि०)–पूर्ववत्।
ब [व] क (पु०)–बगुला नामक पक्षी, एक दैत्य जिसे भीमसेन ने मारा था, वृक्षविशेष, एक असुर जिस का वध श्रीकृष्ण जी ने किया था।
ब [व] कजित् (पु०)–भीमसेन, श्रीकृष्णचन्द्र।
ब [व] कनिसूदन (पु०)–पूर्ववत्।
ब [व] कपञ्चक (न०)–कार्तिकशुक्ला एकादशी से कार्त्तिकी पूर्णिमा तक पांच तिथि [इस विषय में पौराणिक गाथा है कि इन पांच दिनों में शीतलजलवाहिनी नदियों में स्नान करना विशेषपुण्य लाभकर है और इन पांच तिथियों में बगुला मत्स्यादि पक्षियों का मांस भक्षण नहीं करता, अतएव इन तिथियों का नाम 'बकपञ्चक' है इत्यादि]।
ब[व] कवृत्ति (पु०)–बगुला के तुल्य बर्ताव करने वाला कपटी पुरुष, स्वार्थसाधक, मिथ्याविनीत।
ब [व] डवा (स्त्री०)–घोड़ी, घोटकी, अश्विनी नक्षत्र, दासी, स्त्रीविशेष, नदीभेद, तीर्थ का वाचक।
ब [व] डवाग्नि (पु०)–समुद्र में रहने वाला अग्नि, समुद्रस्थ अग्नि, शिवनिर्मित घोड़ी के मुख की अग्नि, तीक्ष्णाग्नि।
ब [व] डवानल (पु०)–पूर्ववत्।
ब[व]डवासुतौ (पु० द्वि०)–अश्विनीकुमार, स्वर्गवैद्य।
बडिश (न०)–मत्स्य बींधने के लिये

लोहे का बनाया तिरछा कांटा, मत्स्यवेधन।
वडिशी (स्त्री०)–पूर्ववत्।
वण् (१प०)–बोलना, आवाज़ करना।
वण (पु०)–शब्द, आवाज़, ध्वनि।
व [ब] णिक् [ज्] (स्त्री०)–व्यवहार, वाणिज्य, लेनदेन। पु०-व्यापारी।
व [ब]णिग्बन्धु (पु०)–नीली का वृक्ष, नीलवृक्ष।
वणिग्भाव (पु०)–व्यापार, वैश्यत्व, क्रयविक्रय करना, लेना देना।
व [ब] णिज (पु०)–वैश्य, वणिक्, बनिया। [ख़रीद फरोख़्त करना।
व [ब]णिज्य (पु०)–वाणिज्य, व्यापार,
वणिज्या (स्त्री०)–पूर्ववत्।
वद् (१प०)-बोलना, भाषण करना, स्थिर होना।
व [ब] दर (न०)–बेर का फल, कपास का वृक्ष, कपास का फल। पु०–बेर का वृक्ष।
वदरि–री (स्त्री०)–बेर का पेड़, कपास।
वदरिकाश्रम (अस्त्री०)–अपने नाम से प्रसिद्ध एक तीर्थ जो हिमालय पर्वत के प्रदेश में श्रीनगर के समीप और अलकनन्दा नदी के पश्चिम तट पर स्थित है जो कि भगवान् व्यास जी का प्रसिद्ध आश्रम है। [बदरीशैल भी इसी का नामान्तर है]।
बद्ध (वि०)–बंधा हुआ, बन्धनयुक्त, नियंत्रित, यन्त्रित, संयत।
बद्धगुद (न०)–एक उदर का रोग जिस में मल का अवरोध हो जाता और कष्ट से थोड़ा२ उतरता है।
बद्धमुष्टि (वि०)–दृढमुष्टि वाला पुरुष, कृपण, कंजूस, सूम, लोभी।
बद्धमूल (वि०)–मज़बूत जड़ वाला, उखाड़ने में न आसकने वाला, दृढमूल।
बद्धशिख (वि०)–शिखा के बन्धन से युक्त, जिस की चोटी बंधी हुई हो।
बध् (१० प०)–बांधना, वशमें करना। (१ आ०)–निन्दा करना।
बध (पु०)–मारना, क़त्ल करना, परप्राणवियोगानुकूल हिंसात्मक कर्म करना।
बधिर (वि०)–सुनने की शक्ति से रहित, बहिरा, श्रवणेन्द्रियशून्य।
व [ब]धू(स्त्री०)– नारी, स्त्री, पुत्रवधू, भार्या, नवोढा, नवीनविवाहिता स्त्री
वधूजन(पु०)–योषित, स्त्रीजन, नारीमात्र।
वधूटयमन (न०)–झरोखा, गवाक्ष, वातायन।
वधूटि–टी (स्त्री०)–थोड़ी वय की औरत, अल्पवयस्का नारी, पुत्र की पत्नी।
वध्य (वि०)–मारने के योग्य, हिंसनीय।
वध्यभूमि (स्त्री०)–मारने के योग्य स्थान, वध्यस्थान, श्मशान।
वध्र (न०)–सीसा, सीसक।
वध्री (स्त्री०)–चमड़े की रस्सी, चर्मरज्जु, तसमा।
वन् (८आ०)–मांगना, याचना करना।
बन्ध (पु०)–मानसी पीड़ा, बन्धन,

देह, गति का रोकना, ऋणशुद्धि के विश्वास के लिये रक्खी हुई वस्तु, सयमन, योगसाधन के हठादि बन्धविशेष।
बन्धक (पु०)-विनिमय, अदलबदल, एक वस्तु देकर तत्सदृश दूसरी लेना।
बन्धकी (स्त्री०) -व्यभिचारिणी, असती, कुलटा स्त्री, बदमाश औरत।
बन्धन (न०)-बांधने का साधन, रज्जु, निगड़[बेड़ी]आदि से बाधना, हिंसा करना, मारना, वध, कारागार, जेलखाना। वि०-बाधने वाला।
बन्धनवेश्म [न्] (न०)-जेलख़ाना, कारागार, क़ैदख़ाना।
बन्धनालय (पु०)-पूर्ववत्।
बन्धस्तम्भ (पु०)-हाथी के बाधने का खम्भ, आलान, गजबन्धन।
बन्धित्र (न०)-कामदेव, कन्दर्प, चमड़े का बीजना।
बन्धु (पु०)-स्वगोत्र का पुरुष, बान्धव, ज्ञाति, मामा का पुत्र आदि मित्र, माता, पिता, भ्राता, वृक्षविशेष।
बन्धुक-जीव (पु०)-बन्धूक नामक वृक्ष।
बन्धुता (स्त्री०)-बन्धुपन, बन्धुओं का समाह, बन्धुसमूह।
बन्धुदत्त (न०)-स्त्रीधन, वह स्त्रीधन जो विवाह से पूर्व कन्यादशा में माता पिता द्वारा दिया गया हो।
बन्धुर(न०)-मुकुट, ?????। पु०-स्त्रीचिन्ह, बहिरा, हंसपक्षी, तिलचूर्ण, तिलकल्क, बगुला, पक्षिमात्र, ऋषभ नामक औषध, बन्धूक वृक्ष। वि०-नम्र, मनोहर, सुन्दर, रमणीय, ऊंचा और नीचा, सत्तू।
बन्धुरा(स्त्री०)-वेश्या, वारांगना।
बन्धुल (पु०)-व्यभिचारिणी स्त्री का पुत्र, कुलटासुत, बन्धूकवृक्ष। वि०-मनोहर, नम्र, नत। [विशेष।
बन्धूक(पु०)-दोपहरिया नामक वृक्ष-
बन्धूर (पु०)-छिद्र, विवर, सूराख़। वि०-रम्य, सुन्दर, नम्र, नत।
बन्ध्य(वि०)-ऋतु के समय में भी फल न आनेवाला वृक्ष, फलशून्य, निष्फलवृक्ष, बाधने योग्य, बन्धनीय।
बन्ध्या(स्त्री०)-बाझ औरत, वह स्त्री जिस के सन्तान न होती हो, अप्रसवस्त्री।
बन्ध्याकर्कोटकी (स्त्री०)-वह औषध विशेष जिस के सेवन से बन्ध्या स्त्रियों के गर्भस्थिति हो जाती है, बाझककोड़ा, पुत्रदा।
ब[व]भ्र(१ प०)-जाना, गमन करना।
बभ्रवी(स्त्री०)-दुर्गा, शिवपत्नी।
बभ्रि (पु०)-वज्र, इन्द्रशस्त्र। वि०-धारण और पोषण करने वाला।
बभ्रु (पु०)-शिव, विष्णु, अग्नि, नकुल, नेवला, विशाल, बड़ा, मुनिभेद, एक देश, कपिल रंग, पीला वर्ण, रोमपाद का पुत्र, यथातिराज

का पौत्र जो बुध का पुत्र था। वि०–पीले रंग वाला।

बभ्रुवाहन(पु०)–अपने नाम से प्रसिद्ध मणिपुर का राजा जो अर्जुन की चित्राङ्गदाभार्यामें उत्पन्न हुआ था।

वर(न०)–केसर, आर्द्रक, जामाता, दामाद, देवता आदि से मांगने योग्य अभिलषित वस्तु, स्वीकार करना। पु०–मित्र, धूर्त।

वर्व्(१ प०)–गमन करना, जाना।

वर्बट(पु०)–राजबड़द।

वर्बटी(स्त्री०)–वेश्या, असती स्त्री, व्रीहिभेद।

वर्ह्(१आ०)–दान करना, मारना, स्तुति करना,सम्भाषण करना।

बर्ह (न०)–मोर का पिच्छ, मयूर का पंख, कुटुम्ब, परिवार।

बल्(१ न०)–हिंसा करना, मारना, जीना,निरूपण करना, देखना।

बल (न०)–सेनासमूह,मोटापन,स्थूलत्व, सामर्थ्य, शक्ति,देह, पत्र,रक्तवर्ण, वीर्य। पु०–बलराम, वरुण का वृक्ष, दैत्यविशेष, काक। वि०–बलयुक्त।

ब[व] लक्ष (पु०)–श्वेतवर्ण, सफ़ेदरंग। वि०–श्वेतवर्ण वाला।

बलज(न०)–युद्ध, संग्राम, क्षेत्र, नगरद्वार, धान्यसमूह। वि०–बल से उत्पन्न।

बलद (पु०)–जीवक नामक औषधविशेष, पौष्टिक कर्म का अगभूत होमाग्नि,वृषभ, बैल। वि०–बल देने वाला।

बलहीनता (स्त्री०)–चित्त की घबराहट, ग्लानि, दुर्बलत्व, हानि।

बलदेव (पु०)–बलराम, श्रीकृष्णजी के ज्येष्ठ भ्राता।

बलप्रसू (स्त्री०)–रोहिणी, बलदेव जी की माता।

बलभद्र (पु०)–बलदेव, पर्वतविशेष।

बलराम (पु०)–बलदेव, हलधर।

बलवत् (अ०)–अतिशय, बहुत। वि०–बलयुक्त।

बलवान् [वत्] (वि०)–बल वाला, बलिष्ठ, वीर्यवान्।

बलविन्यास (पु०)–सेना की रचनाविशेष, व्यूह, शत्रु जिसका भेदन न कर सके इस प्रकार से सेना का खड़ा करना। [वली।

बलशाली[न्](वि०)–बलयुक्त,ताक़तवर,

बलसूदन (पु०)–इन्द्र, देवराज। [बलनिषूदन का भी यही अर्थ है]।

बलस्थिति (स्त्री०)–शिविर, सेना के ठहरने का स्थान, छावनी।

बलहा [न्] (पु०)–इन्द्र,कफ,बलराम। वि०–शत्रु की सेना का नाश करने वाला।

बला(स्त्री०)–खरेटी नामक औषधविशेष, एक अस्त्रविद्या जिस के प्रभाव से क्षुधा और तृषाजन्य क्लेश नहीं होता जो विश्वामित्र जी ने श्रीरामचन्द्रजी को प्रदान की थी। [पूरराज का पुत्र।

ब [व] लाक(पु०)–बकजातिविशेष,

ब [व] लाका (स्त्री०)–बकजाति,

बगलाओं की पंक्ति, बकगणो, प्यारी भार्या, प्रणयिनी ।
बलाट (पु०)–मूग, मुद्ग ।
बलात् (अ०)–हठ से, जिद से, जोरावरी, अकस्मात्, अचानक ।
बलात्कार (पु०)–हठ से करना, बलपूर्वक करना, जोर से करना ।
बलानुज (पु०)–बलदेव के छोटे भाई, श्रीकृष्ण । [का वृक्ष ।
बलाय(पु०)–बल का स्थान, वरुण
बलाराति(पु०)–इन्द्र ।
बलाश(पु०)–कफनामक दोष,बलगम।
बलासम(पु०)–बुद्धदेव, जिन ।
ब[व]लाहक(पु०) मेघ, बादल, नागर मोथा, एक दैत्य, पर्वतविशेष, नागभेद, श्रीकृष्ण के चार अश्वों में से एक, एक नद का वाचक ।
बलि(पु०)–कर टैक्स,राजग्राह्य भाग, उपहार, भेंट, पूजासामग्री पाद्य यज्ञों के अन्तर्गत भूतयज्ञ, विरोचन नामक दैत्य का पुत्र, वृद्धावस्था के कारण त्वचा का ढीलापन, गुदा के भीतर अङ्कुर के स्वरूप का मांसपिण्ड, उदर का अवयव ।
ब [व] लि-ध्वंसी[न्] (पु०)–विष्णु, वामनावतार का बोधक । [दैत्य ।
ब[व] लिनन्दन(पु०)–बाणासुरनामक
ब[व] लिपुष्ट(पु०)–काक, कौआ ।
ब[व] लिभुक्[ज्] (पु०)–पूर्ववत् ।
ब[व] लिमन्दिर (न०)–पाताल, नीचे का लोक, अधोलोक ।
बलि[ली] मुख(पु०)–वानर, बन्दर ।
बलिष्ठ(पु०)–एक मुनि, ऊंट, उष्ट्र । वि०–बलवाला, बलयुक्त ।
ब[व]लिसद्म(न०)–पाताल,अधोलोक
ब[व]ली [न्] (पु०)–बलदेव, वृष, शूकर, ऊंट, महिष, भैंसा, कफ । वि०–बलवाला, बलिष्ठ ।
ब[व] ली(स्त्री०)–बुढ़ापे से ढीली हुई त्वचा ।
ब[व]लीयान्[स्](वि०)–अतिशय बल वाला, जोरावर,प्रशस्तबलयुक्त ।
बलीवर्द (पु०)–वृषभ, बैल ।
बल्य(न०)–शुक्र, वीर्य, मुख्य धातु । पु०–बुद्धभिक्षुक । वि०–बलकर्त्ता ।
बल्या(स्त्री०)–खरैटी,अतिबला,कंघी
बष्कयिणी(स्त्री)–बहुत दिनों की ब्याई गौ, चिरप्रसूता गौ ।
ब[व]ह् (१आ०)–बढ़ना, वृद्धि होना ।
बहु(वि०)–बहुत, अनेक,विपुल,प्रचुर ।
बहुक (पु०)–पपीहा,जलकाक,पक्षिविशेष ।
बहुकर(पु०)–ऊंट, उष्ट्र । वि०–साफ करने वाला, सम्मार्जक, बुहारी लगाने वाला ।
बहुकरी (स्त्री०)–बुहारी, सम्मार्जनी, साफ करने का साधन ।
बहुगन्धदा (स्त्री०)–कस्तूरी नामक सुगंधित द्रव्य ।
बहुगर्ह्यवाक्[च्] (वि०)–कुवाक्य बोलने वाला, कटुवादी ।
बहुग्रन्थि(पु०)–झाऊ नामक वृक्षविशेष
बहुत [स्](अ०)–बहुतों से,अनेकों से ।

बहुतन्त्रि (वि०)—बहुत वीणा वाला, बहुतन्त्रियुक्त ।

बहुतिथ (वि०)—बहुत संख्या वाला, अनेकसंख्यात, बहु समय जिसमें बहुतसी तिथियें बीत गई हों ।

बहुत्र (अ०)—बहुत समय में, बहुतों में।

बहुत्व (न०)—बहुतपन, अनेकत्व ।

बहुत्वक् [च्] (पु०)—भोजपत्र का वृक्ष।

बहुत्वक्क (पु०)—पूर्ववत् ।

बहुदुग्ध (पु०)-गोधूम, गेहूं नामक अन्न।

बहुदुग्धा (स्त्री०)—बहुतसा दूध देने वाली गौ, स्नुही का वृक्ष ।

बहुधा (अ०)—बहुत प्रकार से, अनेक तरह से ।

बहुधार (न०)—वज्र, कुलिश, इन्द्रशस्त्र।

बहुनाडिक (वि०)—अनेक नसों वाला, देह, शरीर । [स्तम्भ ।

बहुनाडीक (वि०)—दिवस, दिन, स्तम्भा,

बहुनाद (पु०)—जिसकी बड़ी आवाज़ हो, शङ्ख ।

बहुपटु (वि०)—अतिनिपुण, बहुत से कर्मों में दक्ष, कुछ कम चतुर ।

बहुपत्र (न०)—अभ्रक । पु०—प्याज, पलाण्डु । वि०—बहुत पत्रों वाला ।

बहुपत्रिका (स्त्री०)— मेथी, भूमि-आंवला, बड़ी शतावर ।

बहुपर्ण (पु०)—सप्तच्छद, सतौने का वृक्ष । वि०—बहुपत्रयुक्त ।

बहुपाद् [द्] (पु०)—बड़ का वृक्ष, वटवृक्ष।

बहुपाद (पु०)—वटवृक्ष । वि०—अनेक पांवों वाला । [पुत्रों वाला ।

बहुपुत्र (पु०)—सतौने का वृक्ष । वि०—बहु-

बहुप्रज (पु०)—शूकर, सूअर, मूञ्ज तृण । वि०—बहुसन्तानवाला ।

बहुप्रतिज्ञ (पु०)—बहु व्यवहार जो अनेक पद वा विषयों की संकीर्णता से पूर्वपक्षयुक्त हो । वि०—बहुप्रतिज्ञावाला ।

बहुप्रद (वि०)—बहुतों को देने वाला, बड़ा दानी, वदान्य, प्रचुरदाता, पु०—शिव ।

बहुप्रसू (स्त्री०)—बहुसन्तान उत्पन्न करने वाली स्त्री, बहुप्रसवा ।

बहुबल (पु०)—सिंह, शेर । वि०—बहुत बल वाला ।

बहुमञ्जरी (स्त्री०)—तुलसी का पेड़ ।

बहुमल (पु०)—सीसा, सीसक । वि०—बहुत मल वाला ।

बहुमार्ग (पु०)—चौराहा, चौहट्टा, बहु मार्ग जिस में से चारों तरफ़ को रास्ता जाता हो । वि०—बहुपथ-युक्त । [अनेकरूप ।

बहुमूर्त्ति (वि०)—बहुत रूपवाला,

बहुमूल्य (वि०)—क़ीमती, बेशक़ीमत । न०—बड़ी क़ीमत, अधिक मूल्य ।

बहुरूप (वि०)—अनेक रूपों वाला, अनेक रंगों वाला । पु०—सूर्य, राल, छिपकली, शिव, विष्णु, ब्रह्मा ।

बहुरोम (वि०)—बहुत बालों वाला । पु०—भेड़ ।

बहुल (वि०)—घना, चौड़ा, विस्तृत, अतिशय, बहुत, अनेक । पु०—कृष्णपक्ष । न०—आकाश । कृष्ण, मिर्च ।

बहुलम् (अ०)—अक्सर, अतिशयेन ।
बहुलता-त्वम्= अधिकता, घनता, आसरूपपन ।
बहुला(स्त्री०)—इलायची, गौ, नीलवृक्ष।
बहुलीकृ (८ उ०)—प्रकट करना, घोषित करना, बढ़ाना ।
बहुलीकृत (वि०)—वर्द्धित, प्रकटित ।
बहुलीभाव (पु०)—प्रकट होना ।
बहुलीभू (१ प०)—फैलना, बढ़ना, प्रकट होना ।
बहुवचन (न०)—व्याकरण में २ से अधिक का बोधक वचन ।
बहुवर्ण (वि०)—बहुत रंगो वाला, अनेकरूप ।
बहुवारम् (अ०)—अक्सर, बहुश: ।
बहुविक्रम (वि०)—अत्यन्त बलशाली, योद्धा ।
बहुविघ्न(वि०)—अनेक उत्पातो वाला
बहुविध (वि०)—अनेक प्रकार का, बहुरूप ।
बहुव्रीहि (वि०)जिस में बहुत चावल हों। (पु०)व्याकरण में एक प्रसिद्ध समास अर्थात् जिस मे अन्य पद प्रधान होता है, जैसे—बहुधन, लम्बकर्ण इत्यादि ।
बहुशाख(वि०)—बहुत शाखाओं वाला।
बहुश्रुत (वि०)—पण्डित, विद्वान्, वेदज्ञाता । [वाला ।
बहुसन्तति (वि०)—बहुत सन्तान
बहु [म्] (अ०)—बहुत, अतिशयेन, बारम्बार । [लगाना ।
बाह् (१ आ०)—स्नान करना, गोते
बादव=वाडव ।

बाहीर(पु०)—नौकर, सेवक, भृत्य ।
बाढ(वि०)—मजबूत, स्थिर, अधिक, बहुत ।
बाढम् (अ०)—हां, स्वीकारी, अच्छा, वास्तव में, यकीनन्, बहुत अच्छा ।
बा [वा]ण (पु०)—तीर, गौ का स्तन, विरोचन का पुत्र, एक दैत्य, एक प्रसिद्ध कवि जो हर्षवर्द्धनकी सभा में रहता था । [गृह ।
बाणतूण(पु०)—तरकस, बाण रखने का
बाणमुक्ति (स्त्री०)—तीर छोड़ना, बाणमोक्षण ।
बाणवृष्टि(स्त्री०)—तीरों की वर्षा ।
बाणिज्य(न०)—क्रयविक्रयरूप वैश्य-वृत्ति, व्यापार ।
बा [वा] णी (स्त्री०)—सरस्वती, वाक्यकीअधिष्ठात्री देवी, बोलना, वाक्य, वस्त्रादि बुनने का काम ।
बादरायण(पु०)—वेदव्यास, पाराशर ।
बा [वा] ध्(१ आ०)—रोकना, कष्ट उठाना, तकलीफ पाना ।
बा [वा] ध (पु०)—प्रतिबन्ध, रोक, रुकावट, न्यायमत में वह पक्ष जिस में साध्य का अभाव हो जैसे— " अग्नि शीतल है " यहां पक्ष= अग्नि में साध्य=शीतलत्व का अभाव है । वि०—प्रतिबन्धक ।
बाधक(वि०)—रोकने वाला, बाधा-जनक । पु०—स्त्रियों का वह रोग जो सन्तान की उत्पत्ति का अव-रोधक है । [निषेध ।
बाधा(स्त्री०)—पीड़ा, व्यथा, दु:ख,

बाधित(वि०)—पीड़ित, बाधायुक्त ।
बाधिर्य(न०)—बहिरापन,कर्ण का रोग।
बाध्य (वि०)—बाधा देने योग्य, पीड़नीय, रोकने लायक़, निवर्त्य ।
बान्धकिनेय (वि०)—व्यभिचारिणी स्त्री का पुत्र, कुलटासुत ।
बान्धव(पु०)—सुहृद्, ज्ञाति, सम्बन्धी, माता और पिता के पक्ष का, मातुल आदि ।
बाबंदोर(पु०)—रांग,आम की गुठली, बीजांसुत, अङ्कुर, अंकुश ।
बाल(वि०)—१६ वर्ष की अवस्था तक का बालक, शिशु, बच्चा, अज्ञ, मूर्ख । अस्त्री०—बाला नामक एक गन्धद्रव्य । पु०—केश, घोड़े की पूंछ, अश्वसुत, हस्ती की पूंछ, नारिकेल, नारियल, पांच वर्ष का हाथी का पोता ।
बालक (अस्त्री०)—गन्धद्रव्य । पु०—शिशु, अश्व और हस्ती की पूंछ, अंगूठी, कंकण, केश ।
बालगर्भिणी (स्त्री०)—प्रथमगर्भा गौ, प्रथमगर्भवती ।
बालग्रह(पु०)—बालकों को कष्ट पहुंचाने वाला एक ग्रह वा रोगविशेष।
बालचर्य (पु०)—स्वामिकार्तिकेय, गुह । न०—बालचरित्र,बालक्रीड़ा।
बालतन्त्र (न०)—वह शास्त्र जिस में बालकों की रक्षा का उपाय वर्णित है ।
बालतृण (न०)—नवीन घास, नूतन तृण, शष्प ।
बालधि (पु०)—केशों वाली पूंछ, वह पूंछ जिस में बाल लगे हों ।
बालपाश्या(स्त्री०)—केशसमूह में भूषण रूप से स्थित मणि ।
बालभोज्य(पु०)—चणक, चने । वि०—बालकों के खाने योग्य ।
बालमूषिका (स्त्री०)—छोटी मूषिका, छछून्दर, गिरिका ।
बालव्यजन(न०)—बालों का बनाया पंखा, चामर, चंवर ।
बालसूर्य(न०)—वैदूर्य नामक मणि । पु०—प्रातःकाल का सूर्य ।
बालहस्त(पु०)—पूंछ,बालधि, लांगूल।
बाला(स्त्री०)—नारिकेल, नारियल, हल्दी, अलंकारविशेष, एक गन्ध द्रव्य, घृतकुमारी, एक वर्ष की अवस्था वाली गौ, षोडशवर्षीया नारी, पांच वर्ष की वा दो वर्ष से न्यून अवस्था की कन्या,कन्यामात्र।
बालार्क (पु०)—प्रातःकाल का सूर्य, नवोदित तथा कन्याराशिस्थ सूर्य ।
बालि(पु०)—वानरों का राजा,इन्द्रसुत जो सुग्रीव के साथ लड़ते हुए श्रीरामचन्द्रजी द्वारा मारा गया था।
बालिखिल्य(पु० ब०)—पुलस्त्य की कन्या सन्नति में क्रतु के वीर्य से उत्पन्न हुआ मुनिविशेष । [वालखिल्य का भी यही अर्थ है] ।
बालिनी (स्त्री०)—अश्विनी नक्षत्र ।
बालिश (वि०)—मूर्ख, अज्ञ, बेवकूफ़, शिशु, बच्चा । न०—तकिया, उपधान, सिरहाना ।

बालिहन्ता[न्तृ] (पु०)—श्रीरामचन्द्र ।
बाली[लिन्](पु०)—बालि । वि०—केशयुक्त ।
बालीश (पु०)—मूत्रकृच्छ्र नामक रोग जिसमे मूत्र कष्ट के साथ थोड़ा २ उतरता है, चिनग ।
बा [वा]लु (स्त्री०)—एलवालुक नामक गन्ध द्रव्य ।
बा[वा]लुका(स्त्री०)—धूलि,रेणुविशेष ।
बा [वा]लुकात्मिका (स्त्री०)—शर्करा, सिकता । वि०—बालुकामय ।
बा[वा]लुकी(स्त्री०)—ककड़ी, कर्कटी ।
बालेय (पु०)—बलि नामक दैत्य की सन्तान, जननेजयवंशीय सुतपा नाम राजा का सुत, गधा, दैत्य-विशेष । वि०—कोमल, मृदु, बलि का हितचिन्तक,बलि के योग्य ।
बालेष्ट (पु०)—बेर, बदर । वि०—बालकों को अभिलषित वा प्रिय ।
बाल्मीकि(पु०)—अपने नाम से प्रसिद्ध मुनि जो बाल्मीकीयरामायण के निर्माता हैं ।
बाल्य (न०)—बालकपन, शैशवावस्था के कर्म, शिशुत्व, १६ वर्ष तक की अवस्था । [भाफ ।
बा [वा] ष्प (न०)—आसू, नेत्रजल,
बाहु-हा (स्त्री०)—भुजा, बाहु,बाह ।
बाहाबाहवि (अ०)—भुजाओ से प्रवृत्त हुआ युद्ध, मल्लयुद्ध ।
बाहु (अस्त्री०)—भुजा, बाह ।
बाहुक(पु०)—राजा नल का नाम जो कि द्यूत द्वारा निज भ्राता पुष्कर के साथ स्वराज्य के जित जाने पर ऋतुपर्णराज के यहा अश्वपरिचर्या में नियुक्त होने की दशा में पड़ा था ।
बाहुज (पु०)—ब्रह्म की भुजाओ से उत्पन्न क्षत्रिय, राजन्य ।
बाहुत्र (अस्त्री०)—चमड़े का बनाया हुआ वह साधन जो शस्त्र के आघात से बचाने के लिये हाथ पर बाधा जाता है । [राजा ।
बाहुदन्ती[न्तिन्](पु०)—इन्द्र,देवताओ का
बाहुदा (स्त्री०)—एक नदी का नाम ।
बाहुभूषा (स्त्री०)—केयूर, बाजू,बाहु-भूषणमात्र ।
बाहुमूल (न०)—बगल, कक्ष, कांख ।
बाहुयुद्ध (न०)—मल्लयुद्ध, भुजाओं द्वारा कुश्तीलड़ना । [का नाम ।
बाहुल (पु०)—अग्नि, आग, कार्तिक
बाहुलेय (पु०)—कार्त्तिकेय,गुह,स्कन्द ।
बाहुसहस्रभृत (पु०)—कार्तवीर्यार्जुन ।
बिट् (१प०)—शपथ खाना,चिल्लाना, शाप देना ।
बिद (१प०)—अलग २ करना,अवयव ।
बिल् (१०उ०)—भेदन करना,तोड़ना ।
बिस् (४प०)—फेंकना, क्षिपण करना ।
बीभत्स (पु०)—अर्जुन । वि०—पापात्मा, दोषी, निन्दित, विकृत, घृणी. शृङ्गारादि आठ प्रकार के रसों में छठा ।
बीभत्सु (पु०)—अर्जुन, पाण्डुसुत ।
बुक्क् (१०उ०)—कहना, कथन करना । (१ प०)—भौंकना, कुत्ते के सा शब्द करना ।

बुक्क(न०)—हृदय में स्थित मांसपिण्ड, हृदय। पु०—छाग, बकरा, समय।
बुक्कन (न०)—कुत्ते का शब्द, कुक्कुर-भाषण।
बुक्का (स्त्री०)—रुधिर, खून, शोणित,
बुक्कार (पु०)—सिंह की गर्जना, सिंह-ध्वनि।
बुद्(१उ०)—देखना, आलोचना करना।
बुद्ध (पु०)—विष्णु का नवमावतार, शाक्यमुनि गौतम। वि०—ज्ञात, पण्डित, जागृत, जागा हुआ।
बुद्धि (स्त्री०)—प्रज्ञा, मनीषा, अन्तः-करण की निश्चयात्मिका वृत्ति, ज्ञान, विद्या, जानना, सांख्य-शास्त्रोक्त प्रकृति का वह परिणामविशेष जो सुख, दुःखादि अष्टविध धर्मों वाला है।
बुद्धिमान् (वि०)—बुद्धि वाला, ज्ञानी।
बुद्धीन्द्रिय (न०)—ज्ञानेन्द्रिय जो पांच और मन के सहित ६ हैं, यथा-मन, कर्ण, नेत्र, जिह्वा, त्वचा और नासिका।
बुद्बुद (पु०)—जल का वर्तुलाकार विकार, बुलबुला, गर्भ का अवयवविशेष।
बुध् (४आ०)—विदित करना, जानना।
बुध (पु०)—पण्डित, सुधी, विचक्षण, नवग्रहों में से चौथा, चन्द्रसुत।
बुधरत्न (न०)—पन्ना, मरकत नामक मणि।
बुधवार (पु०)—बुध का दिन।
बुधसुत(पु०)—पुरूरवा नामक राजा जो इला के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
बुधान(पु०)—गुरु, बुद्धवेत्ता, विज्ञ, कवि।
बुधाष्टमी(स्त्री०)—बुधवारयुक्त अष्टमी, उस में कर्तव्य व्रतविशेष।
बुधित(वि०)—ज्ञात, जाना हुआ, बुद्ध।
बुधिल (वि०)—विज्ञ, जानने वाला, विद्वान्।
बुध्न (पु०)—वृक्ष की जड़, मूलप्रदेश, अगला हिस्सा, महादेव।
बुभुक्षा(स्त्री०)—खाने की इच्छा, क्षुधा, भूख। [वाला, क्षुधित, भूखा।
बुभुक्षित (वि०)—भोजन की इच्छा
बुष (न०)—भुस, तुच्छ धान्य, चावल आदि का छिलका, कडङ्गर।
बुस (न०)—पूर्ववत्।
बुस्त (१० प०)—अनादर करना, बे-इज्जती करना।
बुस्त (न०)—मांसपिण्डविशेष, करील वृक्ष का साररहित भाग।
बोध (पु०)—जानना, ज्ञान, एक ऋषि, जागने का समय, चैतन्य, सूर्य का रूपविशेष।
बोधक(पु०)—सूचक, सूचना देने वाला पुरुष। वि०—बोधोत्पादक।
बोधकर (पु०)—रात्रि के अन्त में जगाने वाला पुरुष, भाट, बन्दि-जन, वैतालिक।
बोधन (न०)—विज्ञापन, गन्धदीपन, इश्तिहार, जताना।
बोधनी (स्त्री०)—पिप्पली, कार्त्तिक-शुक्लैकादशी, देवउठानएकादशी।
बोधि (पु०)—पीपल का वृक्ष, एक

प्रकार की समाधि, बोध। वि०-जानने वाला।
बोधितरु-द्रुम-वृक्ष (पु०)-पीपल का वृक्ष, अश्वत्थवृक्ष।
बौद्ध (न०)-बुद्धप्रणीत वह शास्त्र जो निरीश्वरवाद से युक्त है। वि०-बुद्धकृतशास्त्र के पढ़ने वाला। पु०-क्षपणक, बुद्धशास्त्रानुगामी।
बौध(पु०)-बुध का पुत्र पुरूरवा।
ब्युष्(१० उ०)-त्यागना, पृथक् करना, छोड़ना। [करना।
ब्रण् (१ प०)-आवाज़ करना, शब्द
ब्रतति (स्त्री०)-लता, बेल, विस्तार, फैलाव। [वृक्ष, शिव, महादेव।
ब्रध्न (पु०)-सूर्य, वृक्ष की जड़, अर्क-
ब्रह्म(न०)-वेद, परमेश्वर, तत्त्व, तप, ओ३म्, ब्राह्मण, मोक्ष, ब्रह्मचर्य, अध्यात्मविद्या, ब्राह्मणग्रन्थ, सम्पत्ति, भोजन, सत्य।
ब्रह्मकन्यका(स्त्री०)-सरस्वती, वागधिष्ठात्री, ब्राह्मी। [तालाब।
ब्रह्मकुण्ड (न०)-ब्रह्मनिर्मित एक
ब्रह्मकूट(पु०)-पर्वतविशेष।
ब्रह्मकूर्च (न०)-एक व्रत जिस में पौर्णमासी की रात्रि और दिवस भर उपवास करके अगले दिन प्रातःसमय पञ्चगव्य पान किया जाता है।
ब्रह्मचर्य(न०)-वेदप्राप्ति के लिये अष्टविध मैथुनत्यागपूर्वक व्रत धारण करना, उपस्थेन्द्रिय का संयम, स्त्रीसम्भोगराहित्य।
ब्रह्मचारिणी (स्त्री०)-ब्रह्मचर्यव्रत को धारण करने वाली कन्या, सती स्त्री, भारंगी नामक औषध।
ब्रह्मचारी [न्] (पु०)-उपनयन के अनन्तर नियमपूर्वक गुरु के सम्मुख वेद पढ़ने वाला द्विज, वेदपाठी विद्यार्थी, ब्रह्मचर्यव्रत का धारण करने वाला मनुष्य।
ब्रह्मजन्म[न्] (न०)-उपनयनसंस्कार, आध्यात्मिकजीवन।
ब्रह्मज्ञ-ज्ञानिन्(वि०)-ब्रह्म को जानने वाला। पु०-कार्त्तिकेय।
ब्रह्मज्ञान (न०)-तत्त्वज्ञान, ब्रह्म को जानना, अध्यात्मज्ञान।
ब्रह्मण्य(वि०)-ब्रह्मसम्बन्धी, पवित्र, ब्राह्मण के योग्य। पु०-वेदज्ञ।
ब्रह्मता-त्व=ब्रह्म को प्राप्त होना वा ब्रह्म में लय होना, ईश्वरीयभाव।
ब्रह्मतेजः [स्] (न०)-ब्राह्मणका तेज, ब्रह्मज्ञान द्वारा प्राप्त ओज।
ब्रह्मदण्ड (पु०)-ब्राह्मण का शाप, ब्राह्मण का दातव्य।
ब्रह्मदान(न०)-वेदविद्या का पढ़ाना, तत्त्वज्ञान का देना।
ब्रह्मद्विष्[ट्]-द्वेषिन् (वि०)-ब्राह्मण से द्वेष करने वाला, धर्मविरोधी, नास्तिक।
ब्रह्मनिष्ठ (वि०)-ब्रह्म के ध्यान में रत, सदाचाररत।
ब्रह्मपद(न०)-ब्रह्मता, ब्राह्मणभाव, ब्राह्मीयता।

ब्रह्मपरिषद्(स्त्री०)–ब्राह्मणों की सभा।
ब्रह्मपत्र-पादप(पु०)–पलाश वृक्ष।
ब्रह्मपुत्र(पु०)–ब्राह्मण का पुत्र, भारतवर्ष के पूर्व में एक महानद जो हिमालय से निकल कर बङ्गाल की खाड़ी में गिरता है।
ब्रह्मपुत्री(स्त्री०)–सरस्वती नदी।
ब्रह्मपुर(न०)–हृदय, बनारस।
ब्रह्मपुरी(स्त्री०)–बनारस, स्वर्ग में ब्राह्मणों का पुराणोपकथित नगर।
ब्रह्मपुराण(न०)–१८ पुराणों में से एक।
ब्रह्मबन्धु (पु०)–नीच कोटि का ब्राह्मण, पंक्तिबहिष्कृत निन्दित ब्राह्मण, विप्राचाररहित, निर्दय, विप्रसदृश भाट आदि।
ब्रह्मभूय (न०)–ब्रह्मत्व, ब्रह्मपन, ब्रह्म के साथ एकीभाव, तत्सायुज्य, मोक्ष। [की मेखला।
ब्रह्ममेखल (पु०)–मुञ्ज, मूंज, ब्राह्मण
ब्रह्मयज्ञ (पु०)–विधिपूर्वक वेद का पढ़ना और पढ़ाना, वेद का अभ्यास, शिष्यों को वेदाध्यापन।
ब्रह्मयोनि (पु०)–ब्रह्म की प्राप्ति का कारण, ब्रह्मध्यान, तीर्थविशेष।
ब्रह्मयोनी (स्त्री०)–एक तीर्थ जो कुरुक्षेत्रप्रदेश में सरस्वती के तट पर पृथूदक के निकट स्थित है।
ब्रह्मरन्ध्र (न०)–शिर में एक छिद्रविशेष, वह छिद्र जिस के द्वारा मरण समय में प्राणवायु के निकलने पर जीव की ब्रह्मप्राप्ति कही है और योगी ब्रह्मप्राप्ति के लिये समाधि अवस्था में जिस में ध्यान करते हैं, उत्तमाङ्ग, ब्रह्मतालु।
ब्रह्मरात्र (पु०)–ब्राह्ममुहूर्त, अरुणोदय काल की पहिली दो घड़ी।
ब्रह्मराक्षस (पु०)–वह भूतविशेष जो पहिले ब्राह्मण होकर फिर कुकर्मवश राक्षसयोनि को प्राप्त हो गया हो, ब्राह्मण होकर अनेक कर्म करने वाला पुरुष।
ब्रह्मर्षि (पु०)–वेदवेत्ता वशिष्ठादि मुनि, ब्रह्मा वा ब्राह्मण के तुल्य वेदस्मर्त्ता ऋषि, वेद का स्मरण करने वाला ऋषि।
ब्रह्मर्षिदेश (पु०)–ब्रह्मर्षियों के रहने योग्य देश जो कि चार हैं यथा–कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाञ्चाल और शूरसेन।
ब्रह्मलोक (पु०)–वह लोक जिस को प्राप्त होकर फिर जन्म नहीं लेना पड़ता अर्थात् सत्यलोक।
ब्रह्मवच (न०)–ब्रह्मा का वचन, ब्राह्मणवाक्य, वेदवचन।
ब्रह्मवद्या (स्त्री०)–कथा, गाथा।
ब्रह्मवर्चस(न०)–वेद के पढ़ने वा तप से उत्पन्न हुआ तेज, ब्रह्मतेज।
ब्रह्मवर्त्त (पु०)–सरस्वती और दृषद्वती नदी के मध्य का देश, ब्रह्मावर्त्त देश।
ब्रह्मवाद(पु०)–वेद का पढ़ना, वेदपाठ।
ब्रह्मवादी [न्] (पु०)–वेद के जानने वा पाठ करने वाला पुरुष, वेदपाठी, वेदवक्ता।

ब्रह्मवादिनी (स्त्री०)–गायत्री ।
ब्रह्मविद्या (स्त्री०)–ब्रह्म के प्रतिपादन करने वाली विद्या, ब्रह्मज्ञान, दुर्गा ।
ब्रह्मविन्दु (पु०)–वेदपाठ करते समय मुख से निकली हुई बूंदें ।
ब्रह्मवेद (पु०)–ब्रह्मविषयक ज्ञान ।
ब्रह्मवैवर्त्त (न०)–अठारह पुराणों के अन्तर्गत एक पुराण ।
ब्रह्मशासन (न०) ब्रह्मा का उपदेश, वेद, ब्रह्मविचार का गृह, धर्मकीलक, नवद्वीप के पूर्व और दक्षिण कोण में एक नगर ।
ब्रह्मसंहिता(स्त्री०)–वैष्णवोंके आचार का प्रतिपादन करने वाला एक ग्रन्थ जिसमें १०० अध्याय हैं ।
ब्रह्मसर्प (पु०)–एक प्रकार का सर्प, विष, हलाहल, अश्व की लार ।
ब्रह्मसायुज्य (न०)–ब्रह्मभाव, ब्रह्म के स्वरूप में मिलना, ब्रह्म के साथ एकीभाव, मुक्त होना ।
ब्रह्मसावर्णि (पु०)–दशम मनु ।
ब्रह्मसू (पु०)–अनिरुद्ध,उपापति,कामदेव, ब्रह्मा का उत्पादक विष्णु ।
ब्रह्मसूत्र (न०)–यज्ञोपवीत, यज्ञसूत्र, जनेऊ । ब्रह्म के प्रतिपादक शारीरिक सूत्र, वेदान्तसूत्र ।
ब्रह्मस्व(न०)–ब्राह्मण का धन,ब्राह्मण सम्बन्धी धन ।
ब्रह्महत्या (स्त्री०)–ब्राह्मणका वध, विप्रहनन, ब्राह्मण का मारना ।
ब्रह्महन् [न्] (पु०)–ब्राह्मण को मारने वाला पुरुष, ब्रह्मघ्न, ब्राह्मणवधकर्त्ता, वृषलीपति ।
ब्रह्महुत (न०)–ब्राह्मण या अतिथि के लिये दिया हुआ हव्य, पञ्चमहायज्ञों में से अतिथि के सत्काररूप एक यज्ञ, नृयज्ञ ।
ब्रह्मा [न्] (पु०)–पितामह,सृष्टिकर्त्ता, देवविशेष, यज्ञादि में कृताकृत कर्म का निरीक्षणकर्त्ता, २५वां योग, ब्राह्मण, अर्हदुपासकभेद।
ब्रह्माञ्जलि (पु०)–वेदाध्ययन के समय गुरु के सम्मुख हाथ जोड़ना, सामवेद के पाठ समय स्वर विभाग के लिये की हुई अञ्जलि, वह अञ्जलि जो वेद पढ़ने के आदि और अन्त में ओङ्कार के उच्चारणपूर्वक गुरु के सामने की जाती है ।
ब्रह्माणी (स्त्री०)–ब्रह्मा की पत्नी, ब्रह्मशक्ति, दुर्गा, राजनीति, रेणुका नामक एक गन्धद्रव्य ।
ब्रह्माण्ड (न०)–चतुर्दश भुवन, विश्वगोलक, सब संसार ।
ब्रह्मात्मभू (पु०)–अश्व, घोड़ा ।
ब्रह्मारण्य (न०)–वेदपाठ करने की भूमि ।
ब्रह्मार्पण (न०)–ब्रह्म में अर्पण, ब्रह्म के लिये सौंपना, अर्पणीय सब वस्तुमात्र ब्रह्म है ।
ब्रह्मावर्त=ब्रह्मवर्त्त ।
ब्रह्मासन (न०)–ब्रह्म के ध्यानार्थ आसन, योगासन, पद्म, स्वस्तिकादि आसनविशेष ।

ब्रह्मास्त्र(न०)–ब्रह्मरूद्रयअस्त्रविशेष।
ब्रह्मिष्ठा (स्त्री०)–दुर्गा, शक्ति,देवी।
ब्रह्मी (स्त्री०)–अपने नाम से प्रसिद्ध मेधाजनक औषधविशेष।
ब्रह्मोद्या (स्त्री०)–ब्रह्मकथा, परमात्मा का निरूपण करने वाली कथा। [लिये दिया अन्न।
ब्रह्मौदन (न०)–यज्ञ में ऋत्विजों के
ब्राह्म (न०)–प्रतिपत्ति तीर्थ जो कि अगूंठे के मूल में माना है, इसी तीर्थ से द्विजों के लिये आचमन करने का विधान है, ब्रह्मपुराण, ब्रह्मास्त्र। पु०–नारद,एक विवाह, रात्रि के पिछले प्रहर की अन्तिम दो घड़ी का काल, पारा, राजधर्म्म। वि०–ब्रह्मसम्बन्धी।
ब्राह्मण (पु०)–वेद या ईश्वर को जानने वाला पुरुष, द्विजाति, भूदेव, अग्रजन्मा, उत्तमवर्ण,शिव, विष्णु। न०–ब्रह्मसमूह, ब्राह्मणसमुदाय, यज्ञविषयक ४ ग्रन्थ।
ब्राह्मणब्रुव(पु०)–वह पुरुष जो ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर वेदोक्त कर्म न करता हुआ भी अपने को ब्राह्मण बतलावे, जातिमात्र ब्राह्मण,बुरे आचार वाला विप्र।
ब्राह्मणी (स्त्री०)–ब्राह्मणपत्नी, भारंगी नामक औषध, हंस की भार्या, पिपीलिकाविशेष, बुद्धि।
ब्राह्मण्य (न०)–ब्राह्मणों का समूह, ब्राह्मणत्व, विप्रभाव। वि०–ब्राह्मण का। पु०–शनि ग्रह।
ब्राह्ममुहूर्त्त(पु०)–अरुणोदय होने से पूर्व की दो घड़ी,रात्रि के अन्तिम प्रहर की पिछली दो घड़ियों का समय।
ब्राह्माहोरात्र(पु०)–ब्रह्मा का एक रात दिन जो मनुष्यों के कल्पद्वय का समय होता है।
ब्राह्मी (स्त्री०)–दुर्गा, शिव की अष्टमातृकाओं में से एक, सरस्वती, ब्रह्मशक्ति, शाकविशेष।
ब्रुवत् [वत्] (वि०)–बोलता हुआ, कथन करता हुआ,कथयत्,वक्ता।
ब्रुवाण (वि०)–पूर्ववत्।
ब्रू (२ उ०)–कहना, कथन करना।

भ

भ–पवर्ग का चतुर्थ अक्षर। न०–नक्षत्र राशि, ग्रह। पु०–शुक्राचार्य, दैत्यगुरु,भ्रमर,भ्रम,भ्रान्ति,छन्दःशास्त्र में भगण जिस में पहिला अक्षर गुरु और शेष दो अक्षर लघु होते हैं।
भक्त (न०)–अन्न, अन्ध, अनाज, चावल, ओदन। पु०–भक्तियुक्त, भक्ति करने वाला। वि०–विभक्त, बंटा हुआ। [कृत्रिमधूप।
भक्तकर (पु०)–बनाया हुआ धूप,
भक्तकार (वि०)–रसोई बनाने वाला, पाचक, सूपकार, रसोइया।
भक्तदूर्प (न०)–भोजन समय में बजाने

योग्य बाजा, भोजनकालीन वाद्यविशेष।
भक्तदास (पु०)–पन्द्रह प्रकार के दासों में से एक, केवल भोजनमात्र पर दास्यकर्म करने वाला पुरुष, सुभिक्ष होने पर भी भोजन पर ही जिसने दासभाव स्वीकार कर लिया हो।
भक्तमण्ड (अस्त्री०)–चावलों का माड़, निःस्राव।
भक्ति (स्त्री०)–सेवा, पूज्य पुरुषों में अनुराग, आराधना, गौणवृत्ति, उपासना, ईश्वर में अत्युत्कृष्ट प्रेम, श्रद्धा, रचना, भंगी, अवयव उपचार। [युक्त।
भक्तिमान् (वि०)–भक्तिवाला, भक्ति-
भक्तियोग (पु०)–भक्ति वा चित्त की एकाग्रता से ईश्वरभजन में लग जाना, परमेश्वर में भजन विषयक सम्बन्ध। [पौड़ा।
भक्तिल (पु०)–उत्तम अश्व, अच्छा
भक्ष्(१० उ०)–खाना, भक्षण करना, भोजन करना।
भक्षक (वि०)–भोजन करने वाला, भोजनकर्ता, पेटू।
भक्षण (न०)–खाना, भोजन करना, अशन, खादन। [नीय, द्रव्य।
भक्षणीय (वि०)–खाने योग्य, भक्ष-
भक्ष्य (वि०)–पूर्ववत्।
भक्ष्याभक्ष्य (न०)–खाने और न खाने योग्य वस्तु, खाद्याखाद्य द्रव्य।
भग (पु०)–सूर्य, चन्द्रमा, सौभाग्य, सुखी, अभ्युदय, महत्त्व, कीर्ति, सौन्दर्य, प्रेम, धर्म, यत्न, वैराग्य, मोक्ष, शक्ति, ज्ञान, इच्छा, अष्टसिद्धियों में से एक, स्त्रीयोनि।
भगदत्त पु०)–महाभारत में कथित एक राजा का नाम।
भगन्दर (पु०)–एक प्रकार का भयङ्कर रोग, गुदा का फोड़ा।
भगवत् [वान्](वि०)–तेजस्वी, पवित्र, प्रतिष्ठा का वाचक। पु०-देवता, विष्णु, शिव, बुद्ध का विशेषण।
भगवती (स्त्री०)–प्रतिष्ठित नारी लक्ष्मी दुर्गा।
भगवदीय (पु०)–वैष्णव, विष्णुपूजक।
भगवद्गीता (स्त्री०)–महाभारत में युद्ध पर्व के आदि में वर्णित श्रीकृष्ण और अर्जुनका अध्यात्मविषयक संवाद, अपने नाम से प्रसिद्ध ग्रन्थ।
भगांकुर (पु०)–अर्शरोग बवासीर।
भगाल (न०)–खोपड़ी, खप्पर।
भगिनी (स्त्री०)–बहन, स्वसा, स्त्री, सौभाग्यवती। [का भर्ता।
भगिनीपति-भर्ता(पु०)–बहनोई, बहन
भगिनेय(पु०)–बहन का पुत्र, भागिनेय, भांजा।
भगीरथ (पु०)–सूर्यवंशी राजा सगर का पुत्र जिसने गंगानदी का नहर रूप से निर्माण किया था।
भगीरथप्रयत्न(पु०)–असीम पुरुषार्थ।
भग्न (वि०)–टूटा हुआ, क्षत, फटा हुआ, पराजित, खण्डित।

भग्नचेष्ट (वि०)–नाकामयाब, असफल
भग्नदर्प (वि०)–जिसका दर्प चूर्ण हो गया हो।
भग्नप्रतिज्ञ (वि०)–वादेफ़रोश, अपनी प्रतिज्ञा को तोड़ने वाला।
भग्नमनोरथ (वि०)–निराश, भग्नचेष्ट।
भग्नमान (वि०)–अनादृत, अपमानित।
भग्नव्रत (वि०)–बेवफ़ा, भग्नप्रतिज्ञ।
भग्नाश (वि०)–निराश, भग्नमनोरथ।
भग्नी (स्त्री०)–बहिन, भगिनी।
भग्नोत्साह (वि०)– निराश, जिसकी हिम्मत टूट गई हो।
भग्नोद्यम (वि०)–भग्नचेष्ट, जिस का उद्यम निष्फल रहा हो।
भंग (पु०)–तोड़ना, भक्ति, विभाग, जुदाई, टुकड़ा, गिरावट, नाश, पराजय, नाकामयाबी, त्याग, रोक, भागना, लहर, गमन, धोखा, भांग।
भंगि-गी (स्त्री०)–विच्छेद, जुदाई, तिरछापन, फरेब, रचना, बनावट, लहर, फर्क, बहाना।
भंगुर (वि०)–नाजुक, आप ही टूटने वाला, क्षणिक, नाशवान्, कुटिल, तिरछा।
भंग्य (न०)–भांग का खेत।
भज् (१ उ०)–बांटना, विभाग करना, स्वीकार करना, सेवा करना, भुगताना, चुनना, भजन करना।
भज् (१० उ०)–देना, पकाना।
भजन (न०)–पूजा, उपासना, विभाग, क़बूज़ा, सेवा, कीर्तन।
भंज् (१ उ, प०)–तोड़ना, टुकड़े करना, नष्ट करना, निराश करना, रोकना, पराजित करना।
भंजन (वि०)–तोड़ने वाला, रोकने वाला। न०-विच्छेद, नाश, हटाना, रोकना। पु०-दांत का टूटना।
भंजा (स्त्री०)–दुर्गा का नाम।
भट् (१ प०)–पालना, परवरिश करना, किराया करना। १० उ०-बोलना, बातें करना।
भट (पु०)–योद्धा, सिपाही, अन्त्यज, राक्षस।
भट्ट (पु०)–स्वामी, मालिक, विद्वान् ब्राह्मणों की उपाधि, विद्वान्पुरुष, तत्त्ववेत्ता, भाट, चारण।
भट्टाचार्य (पु०)–विद्वानों की उपाधि, तत्त्ववेत्ता, महापण्डित।
भट्टार (वि०)–पूजनीय, आदरणीय।
भट्टारक (वि०)–पूजनीय। पु०-ऋषि, सूर्य, देवता।
भट्टारकवार (पु०)–रविवार।
भट्टारिका (स्त्री०)–कुलीनस्त्री, देवी।
भट्टिनी (स्त्री०)–ब्राह्मणभार्या, शाहज़ादी, पटरानी।
भट्टिल (पु०)–बहादुर, योद्धा, धनुर्धर।
भण् (१ प०)–कहना, बोलना, बयान करना, शब्द करना।
भणन-णित (न०)–वाणी, बातचीत, गुफ्तगू, संवाद।
भण्ड् (१ आ०)–धिक्कारना, हंसी उड़ाना, मज़ाक करना।
भण्ड (पु०)–मज़ाक करने वाला, ज़रीफ़।
भण्डन (न०)–कवच, युद्ध, शठता।
भण्डिल (वि०)–सौभाग्यवान्, शुभ-

किस्मत। पु०-सौभाग्य, कुशल-क्षेम, मजदूर, दूत, शिरीषवृक्ष।
भदन्त(पु०)-बौद्धों के लिये एक प्रति ष्ठासूचक शब्द, बौद्धक्षपणक।
भद्राक (पु०)-अभ्युदय, सौभाग्य।
भद्र (वि०)-नेक, सुख,शुभ, मेहरबान, अच्छा, सुन्दर। न०-खुशी, सौभाग्य, कुशलक्षेम, आशीर्वाद, स्वर्ण, लोहा। पु०-बैल, कपटी, देवदारु का वृक्ष।
भद्रक (वि०)-सुन्दर, शुभ।
भद्रकारक-कृत (वि०)-मंगलदाता।
भद्रकाली (स्त्री०)-दुर्गा का नाम।
भद्रवत् [वान्] (वि०)-मंगलकर, शोभायमान।
भद्रा (स्त्री०)-गौ, सुरगंगा, कृष्ण-भगिनी सुभद्रा; द्वितीया,सप्तमी और द्वादशी तिथि, कई औष-धियों का नाम।
भद्राश्रय (न०)-चन्दन की लकड़ी, चन्दन का पेड़। [सिंहासन।
भद्रासन (न०)-राजा का आसन,
भन् (१प०)-पुकारना, चिल्लाना, भिन भिन करना।
भम्भ (पु०)-मक्खी, धूम, धुआं।
भय (न०)-डर, खौफ़, ख़तरा। पु०-रोग, बीमारी।
भयकर-कृत (वि०)-भयानक, खौफ़-नाक, ख़तरनाक।
भयडिंडिम(पु०)-अलार्म का बिगुल; ख़तरे की सूचना।
भयत्राता(वि०)-भय से बचाने वाला।
भयमद (वि०)-खौफ़नाक, भयानक।
भयभीत(वि०)-खौफ़ज़दा,डरा हुआ।
भयविप्लुत(वि०)-खौफ़ज़दा,भयभीत।
भयशील (वि०)-डरपोक, कायर।
भयातुर-यार्त्त(वि०)-डरा हुआ,खौफ़-ज़दा, भयभीत।
भयानक (वि०)-खौफ़नाक,डरावना। पु०-चीता, राहु। न०-भय,डर।
भयान्वित-क्रान्त (वि०)=भयभीत।
भयावह (वि०)-ख़तरनाक, भयानक।
भर (वि०)-बरदाश्त करने वाला, सहारा देने वाला। पु०-बोझ, बड़ी संख्या, ढेर, आधिक्य, चोरी।
भरट (पु०)-कुम्हार, नौकर।
भरण (वि०)-पालने वाला, पोषक। न०-पालन, पोषण, लेजाना, पहिरना, किराया। [कीड़ा।
भरण्ड (पु०)-राजा, स्वामी, बैल,
भरण्य (न०)-मजदूरी, भाड़ा,पालन, सहारा। [नारी।
भरण्या (स्त्री०)-मजदूरी, भाड़ा,
भरत (पु०)-चन्द्रवंशीय राजा दुष्य-न्त और शकुन्तला के पुत्र का नाम जिस के चक्रवर्त्तित्व के कारण आर्यावर्त्त का नाम भारत-वर्ष पड़ गया; श्रीराम के भाई का नाम जो कैकेयी का पुत्र था, एक ऋषि का नाम जो नाट्य-विद्या का आविष्कर्ता है; अभि-नयकर्त्ता, वेतनभोगी योद्धा, जङ-

भरत नामक ऋषि ।
भरतखण्ड (न०)-आर्यावर्त्त के एक प्रान्त का नाम ।
भरतवर्ष (पु०)-भरत का देश अर्थात् आर्यावर्त्त, भारतवर्ष ।
भरथ (पु०)-राजा, अग्नि, लोकपाल ।
भरद्वाज(पु०)-सप्त ऋषियों में से एक, लावा पक्षी । [हुआ, हरा ।
भरित (वि०)-पालित, पोषित, भरा
भरु(पु०)-पति, स्वामी, शिव, विष्णु, स्वर्ण, सागर ।
भरुज(पु०)-गीदड़, शृगाल ।
भरुटक(न०)-भुना हुआ मांस, कबाब
भर्ग(पु०)-शिव, ब्रह्मा, प्रभा, भूनना ।
भर्जन(न०)-भूनना, भूनने का पात्र ।
भर्त्ता [र्तृ] (पु०)-पति, स्वामी, लीडर, पालक, उत्पादक, रक्षक ।
भर्तृदारक(पु०)-राजा का पुत्र, नाटक में राजकुमार ।
भर्तृहरि (पु०)-शृंगार नीति और वैराग्य इन तीन शतकों का कर्त्ता एक ग्रन्थकार । [वाली स्त्री ।
भर्त्री (स्त्री०)-माता, पोषण करने
भर्त्स् (१० उभ०)-धमकाना, धिक्कारना, झिड़कना । [शाप ।
भर्त्सन-र्त्सना=डराना, धमकी, धिक्कार,
भर्त्सित(वि०)-धिक्कृत, झिड़का हुआ ।
भर्म(न०)-मजदूरी, भाड़ा, स्वर्ण ।
भर्म[न्] (न०)-सहारा, पोषण, मज-दूरी, घर, स्वर्ण, बोझ ।
भल्(१०आ०)-देखना, अवलोकनकरना
भल्ल् (१०आ०)-वयान करना, कहना, लक्ष्मी करना, मारना, देना ।
भल्ल-क(पु०)-रीछ, भालु ।
भल्लु [ल्लू] क (पु०)-रीछ, भालु ।
भव (पु०)-सत्ता, भाव, उत्पत्ति, उद्गम-स्थान, संसार, प्राप्ति ।
भवत् [वान्] (वि०)-होने वाला । सर्व०-आप, अपने सम्मुख उपस्थित पुरुष के आदर के लिये यह शब्द प्रथम पुरुष में प्रयुक्त होता है ।
भवती (स्त्री०)-प्रथम पुरुष में उप-स्थित प्रतिष्ठित नारी के लिये यह शब्द प्रयुक्त होता है, आप ।
भवदीय(वि०)-आपका, तुम्हारा ।
भवन (न०)-सत्ता, उत्पत्ति, स्थान, घर, मकान, क्षेत्र ।
भवनपति(पु०)-गृहस्वामी, गृहस्थ ।
भवनीय(वि०)-होने योग्य, भावी ।
भवन्ती (स्त्री०)-वर्त्तमान काल, भद्रभार्या ।
भवमूल(न०)--प्राणिमात्र का उद्गम-स्थान अर्थात् परमात्मा । [नाम ।
भवभूति (पु०)-एक प्रसिद्ध कवि का
भवानी(स्त्री०)--शिवभार्या, पार्वती ।
भविक(वि०)-प्रसन्न, शुभ, सुखी, कार-आमद । [भव्य, अटल ।
भवितव्य(वि०)-घटित होने योग्य,
भवितव्यता (स्त्री०)-अटल घटना, प्रारब्ध ।
भविन(पु०)-कवि, शायर । [वाला ।
भविष्णु (वि०)-आगामी, भावी, होने
भविष्य(वि०)-आगामी, आने वाला, भवितव्य । न०-आने वाला समय ।

भविष्यत्(वि०)=भविष्य ।　[एक ।
भविष्यपुराण (न०)-१८ पुराणों में से
भविष्यवादी-वक्ता (वि०)—आगे की बात कहने वाला,दैवज्ञ,ज्योतिषी।
भव्य (वि०)—उपस्थित, वर्त्तमान,आगामी,होने वाला,उचित,उपयुक्त, अच्छा, उम्दा, शुभ,सुन्दर,शान्त, सच्चा ।　[देना ।
भष् (१ प०)--भौंकना, गुर्राना,गाली
भष-क(पु०)--कुत्ता, श्वान ।
भस् (१प०)--खाना । ३ प०-चमकना, धिक्कारना ।
भसद् (पु०)--सूर्य,गोश्त, प्लव, काल ।
भसन(पु०)--मधुमक्षिका ।
भसन्त(पु०)--काल, समय ।　[हुआ ।
भसित (वि०)--भस्मीभूत, राख किया
भस्त्रका-स्त्रा-स्त्रि (स्त्री०)--धौंकनी, पानी भरने की मशक ।
भस्म [न्] (न०)--राख,होमादिक की राख ।
भस्मक(न०)--सोना या चांदी ।
भस्मकार(पु०)--धोबी ।
भस्मभूत(वि०)--मृत, मरा हुआ ।
भस्मसात् (अ०)-राख की दशा में पहुंच जाना ।
भस्मा [स्मी] ए(८उ०)-भस्म करना ।
भस्मीकरण(न०)-भस्मकरना, जलाना
भस्मीकृत (वि०)--भस्म किया हुआ, जलाया हुआ ।
भस्मीभू (१प०)--भस्म होना,जलना ।
भस्मीभूत (वि०)--भस्म हुआ, जला हुआ ।
भा (२प०)--दीप्ति,चमकना । स्त्री०--प्रकाश,चमक, दीप्ति, कान्ति ।
भाग(पु०)--बांटना,हिस्से करना,अंश, टुकड़ा, हिस्सा,भाग्य, किस्मत ।
भागधेय (न०)--भाग्य,किस्मत । पु०--राजदेय कर [ख़िराज], दायाद, शरीक ।　[महापुराण ।
भागवत (न०)--अष्टादशपुराणान्तर्गत
भागशस् [:] (अ०)--एक २ भाग का देना ।
भागहर (वि०)--हिस्सेदार,अंशग्राही, हिस्सा बांटने वाला, ।
भागिक(वि०)—भाग वाला, आंशिक ।
भागिन्[गी] (वि०)--हिस्सेदार, हिस्से वाला ।　[भांजा ।
भागिनेय (पु०)—बहिन का बेटा,
भागीरथी (स्त्री०)—गंगा, जाह्नवी ।
भागुरि(पु०)—धर्मशास्त्र तथा व्याकरण का निर्माता एक मुनि ।　[दैव ।
भाग्य(न०)--शुभाशुभ सूचककर्म,प्रारब्ध
भाङ्गीन (न०,--भंग उपजने का खेत ।
[भांग्य का भी यही अर्थ है ।]
भाज् (१० उ०)-पृथक् करना, जुदा करना,विभाग करना,हिस्सेकरना
भाजक (वि०)—भाग करने वाला, बांटने वाला ।　[लायक़ ।
भाजन (न०)—पात्र, आसरा, योग्य,
भाजित (वि०)—विभक्त,बांटा हुआ, पृथक्कृत ।　[बांटने लायक़ ।
भाज्य (वि०)—विभक्त करने योग्य,
भाटक(न०)--भाड़ा,किराया,महसूल ।
भाट्ट (पु०)—कुमारिलभट्टका अनुयायी

भाण (पु०)–देखने लायक काव्यभेद।
भाण्ड(न०)–बर्त्तन, चौबच्चा,कड़ाही, बकस, औज़ार, सामान, गट्टा।
भाण्डपति(पु०)–सौदागर, व्यापारी।
भाण्डपुट(पु०)–नाई, हज्जाम।
भाण्डशाला (स्त्री०)–कोठार, इकट्ठा करने की जगह।
भाण्डाः (पु० ब०)–मजदूरी, सौदागरी का सामान
भाण्डागार (स्त्री०)–कोठार, सामान रखने का कमरा
भाण्डार(न०)–पूर्ववत्।
भाण्डारिक(पु०)–भण्डारी, कोठारी, भाण्डागारिक। [का स्वामी।
भाण्डारी[न्] (पु०)–कोठारी,भण्डार
भाण्डिक-ल(पु०)–नाई, हज्जाम।
भाण्डिवाह(पु०)–पूर्ववत्।
भाण्डिशाला(स्त्री०)–हज्जाम की दूकान।
भात(पु०)–सवेरा, उषाकाल। वि०–चमकीला, रोशन। [शोभा।
भाति(स्त्री०)–ज्ञान, प्रतीति, चमक,
भातु(पु०)–सूर्य, सूरज।
भाद्र-पद (पु०)–एक चन्द्रमास का नाम जो वर्षाकाल में अगस्त या सितम्बर के लगभग होता है।
भान (न०)–प्रत्यक्ष होना, ज़ाहिर शोभा, चमक, ज्ञान।
भानु (पु०)–सूर्य, सुन्दरता, दिन, राजा, चमक, प्रकाश। स्त्री०–सुन्दर स्त्री। [का नाम
भानुमती (स्त्री०)–दुर्योधन की पत्नी
भाम् (भ्वा०)–क्रोधित होना।
भाम (पु०)–चमक, शोभा, क्रोध, भगिनीपति।
भामनी (पु०)–परमात्मा, ब्रह्म।
भामा (स्त्री०)–क्रोधालुस्त्री, श्रीकृष्ण-भार्या सत्यभामा। [चण्डी।
भामिनी(स्त्री०)–सुन्दर स्त्री,कामिनी,
भामिनीविलास (पु०)–पण्डितराज जगन्नाथकृत एक काव्य का नाम।
भार (पु०)–बोझा, वज़न, घमासान युद्ध, गहराई, मेहनत।
भारक (न०)–बोझ, वज़न।
भारण्ड (वि०)–एक कल्पित पक्षी।
भारत (वि०)–भरतसम्बन्धी। पु०–भरतसन्तति, भारतदेशनिवासी। न०–भारतवर्ष, महाभारत नामक इतिहासग्रन्थ। [सरस्वती।
भारती (स्त्री०)–वाणी, वाग्मिता,
भारद्वाज (पु०)–द्रोण का नाम, अगस्त्य, मंगल ग्रह,सप्त ऋषियों में एक, लावा पक्षी।
भारवाह (पु०)–बोझा ढोने वाला, कहार, भारबरदार।
भारवि (पु०)–किरातार्जुनीय नामक प्रसिद्ध काव्य का कर्त्ता। [हुआ।
भाराक्रान्त (वि०)–बोझ से दबा
भारि (पु०)–शेर, सिंह।
भार्गव (पु०)–शुक्र, परशुराम, शिव, हस्ती, जमदग्नि, मार्कण्डेय, पूर्वी बङ्गदेश।
भार्गवी (स्त्री०)–दूर्वाघास, लक्ष्मी, पार्वती, देवयानी।

भार्य(वि०)—पालन करने योग्य,सहारा देने लायक। पु०—नौकर,आश्रित।
भार्या(स्त्री०)—विधिपूर्वक विवाहिता पत्नी, मादा
भार्याजित-आटिक (पु०)—औरत का गुलाम, भार्याधीन पति।
भार्योट (पु०)—भार्या से वेश्यावृत्ति कराकर पेट पालने वाला।
भार्य्य(न०)—जुल्दी,ज्यादती,आधिक्य।
भाल (न०)—माथा, मस्तक, चमक, अन्धेरा,
भालु(पु०)—सूर्य सूरज।
भालु[ल्लु-लू-ल्लू]क(पु०)—रीछ,भालू।
भाव(पु०)—सत्ता, मौजूदगी, वर्तमानता, होना,संघटना, दशा, ढंग, रुतबा, भक्ति, खसलत, आदत।
भावक(वि०)—उत्पादक, भावपूर्ण। पु०--ख्याल, अनुभव करने की वृत्ति
भावन(पु०)—प्रेम, स्नेह, कामदेव।
भावनं-भावना=चिन्ता, फिक्र, ध्यान, ख्याल, सोचना, पर्यालोचना।
भावरूप(वि०)—असली, ठीक २।
भाववाचक (न०)—ऐसी संज्ञा जिसमें किसी वस्तु की विद्यमानता अथवा उपस्थित का पता लगे।
भावशुद्धि(स्त्री०)—ईमानदारी,सच्चापन।
भावात्मक(वि०)--असली,वास्तविक।
भावार्थ(पु०)--किसी लफ्ज़ या जुमले के ज़ाहिरा मायने।
भाविक (वि०)-कुदरती। स्वाभाविक, भावपूर्ण, भविष्य।
भावित(वि०)--उत्पन्न, प्राप्त, प्रकटित, प्रत्यक्ष, ज्ञात, विचारा हुआ।
भाविन (न०)—द्युलोक, पृथिवीलोक और पाताल नामक तीनलोक।
भाविनी(स्त्री०)--सुन्दर स्त्री, कुलीन नारी, कुलटा स्त्री। [होनहार।
भावी[न्] (वि०)--आगे होने वाला,
भावुक(वि०)--भावी, होने वाला, प्रसन्न, आनन्दित।
भाव्य(वि०)--होने वाला, होनहार।
भाष(१ आ०)--कहना,बोलना, उच्चारण करना।
भाषण(न०)--कथन, वाणी,बातचीत।
भाषा (स्त्री०)—ज़बान, वाणी, बात, बोली
भाषान्तर (न०)—तर्जुमा, अनुवाद, एक भाषा से दूसरी भाषा में करना।
भाषिका(स्त्री०)—ज़बान,बोली,वाणी।
भाषित (वि०)—कहा हुआ, उच्चरित, कथित। न०--वाणी, गुफ़्तगू।
भाषी[न्](वि०)—कहने वाला, बोलने वाला, बातूनी।
भाष्य (न०)—बातचीत, बोलचाल की भाषा का कोई ग्रन्थ, टीका, शिलासरी। [द्युति।
भाष्यकर-कार (पु०)--टीकाकार, पत-
भास् (१ आ०)—चमकना, समझ में आना, ज़ाहिर होना। स्त्री०--चमक, शोभा, किरण, प्रभाव, इच्छा।
भास (पु०)--शोभा, चमक, ख्याल,

मुग्ध, मिहू, गोप्द, एक कवि ।
भासन (न०)-चमकना, प्रकट होना ।
भासु (पु०)-सूर्य, सूरज ।
भास्कर (पु०)-सूर्य, अग्नि, योद्धा, एक ज्योतिषी का नाम । न०-स्वर्ण ।
भास्वत् [वान्] (वि०)-चमकीला, चमकदार । पु०-सूर्य, प्रकाश, शोभा, वीर ।
भास्मन (वि०)-राख का बना हुआ।
भिस् (१आ०)-पूछना, मांगना, भीख मांगना, प्राप्त करना ।
भिक्षण(न०)-फकीरी, भीख मांगना।
भिक्षा (स्त्री०)-भीख, मांगना, मांगने पर दी हुई वस्तु, मजदूरी,सेवा ।
भिक्षाकरण (न०)-भीख मांगना ।
भिक्षाचर-चार(पु०)-फकीर,भिखारी ।
भिक्षाटन (न०)-भीख मांगते हुए इधर उधर घूमना । पु०-फकीर ।
भिक्षान्न (न०)-मांगकर प्राप्त किया अन्न, भिक्षा में प्राप्त भोजन ।
भिक्षित(वि०)-मांगा हुआ ।
भिक्षु(पु०)-भिखारी, साधु, सन्यासी, बौद्धतपस्वी ।
भिक्षुक(पु०)-भिखारी, साधु ।
भिक्षुसंघ(पु०)-बौद्धतपस्वियों की सभा ।
भित्त(न०)-टुकड़ा, दीवार, भीत ।
भित्ति(स्त्री०)-तोड़ना, टुकड़े करना, दीवार, आश्रय, टुकड़ा, टूटी हुई वस्तु, चटाई, दाग, अवसर ।
भित्तिका (स्त्री०)-परदा, दीवार, छिपकली । [चोर ।
भित्तिचौर (पु०)-सेंध लगाने वाला
भिद्(१ प०)-टुकड़े २ करना, विभक्त करना । उ०-तोड़ना,सेंध लगाना, खोदना । [हीरा, इन्द्रवज्र ।
भिदक(पु०)-तलवार, खड्ग । न०-
भिद्य(पु०)-तेज बहने वाला दरिया ।
भिदुर(न०)-वज्र ।
भिन्न (वि०)-टूटा हुआ, विभक्त, अलग, खुला हुआ, कुसुमित, मिला हुआ ।
भिन्नक(पु०)-बुद्धानुयायी ।
भिन्नदेह(वि०)-जख्मी, क्षत ।
भिन्नप्रकार(वि०)-दूसरी तरह का ।
भिन्नहृदय (वि०)-जिसका दिल फट गया हो । [जाति ।
भिल्ल (पु०)-भील नामक जंगली
भिल्लतरु(पु०)-लोध्रवृक्ष ।
भिल्लोट(पु०)-लोध्रवृक्ष,लोधका पेड़ ।
भिषगाचार्य(पु०)-वैद्यों में श्रेष्ठ ।
भिषज्[क्] (पु०)-हकीम, वैद्य, सभा-लिङ्ग, औषध, इलाज ।
भिषज्य (न०)-इलाज, उपचार, चिकित्सा । [भक्षण ।
भिस्सा-भिस्सटा (स्त्री०)-भुना हुआ
भिस्सा(स्त्री०)-भात,पके हुए चावल।
भी(३ प०)-डरना, खौफ खाना, भय-भीत होना । स्त्री०-भय, डर, खौफ, खतरा ।
भीत (वि०)-डरा हुआ, खौफजदा, कायर । न०-डर, भय ।
भीति(स्त्री०)-डर,भय, खौफ, कम्पन, खतरा ।

भीम (वि०)-भयानक, डरावना, भयङ्कर। पु० शिव, परमात्मा, युधिष्ठिर का छोटा भाई।
भीमनाद (वि०)-भयङ्कर गर्जना करने वाला। पु० भयानक शब्द या गर्जना, सिंह।
भीमपराक्रम (वि०)-भयानक शक्ति वाला। पु०-विष्णु।
भीमर (न०)-युद्ध, लड़ाई।
भीमसेन (पु०)-द्वितीय पाण्डुपुत्र, एक प्रकार का कपूर।
भीमा (स्त्री०)-दुर्गा, रोचना, एक नदी, चाबुक।
भीमोदरी (स्त्री०)-उमा।
भीरु (वि०)-डरपोक, कायर। पु० चीता, शृगाल। न०-चाँदी। स्त्री० डरपोक स्त्री, बकरी, छाया।
भीरु [लु] क (वि०)-डरपोक, कापुरुष, शर्मालु। पु०-चीता, गीदड़, भालू, उल्लू। न०-जंगल, वन।
भीरुता-त्व=कायरता, डरपोकपन।
भीरुहृदय (पु०)-हरिण, मृग।
भीलु [लू] क (पु०)-भालू रीछ।
भीरू [लू] (स्त्री०)-डरपोक स्त्री।
भीषण (वि०) भयावना, डरावना, भयङ्कर। न०-भयानक वस्तु।
भीषा (स्त्री०)-डराने का कृत्य, भय, डर।
भीष्म (वि०)-भयानक, भयङ्कर, भीषण। पु०-राक्षस, शान्तनुपुत्र देवव्रत।
भीष्मक (पु०)-शान्तनुपुत्र देवव्रत, विदर्भराज का नाम, जिस की पुत्री रुक्मिणी थी।
भुक्त (वि०)-भोगकिया हुआ, खाया हुआ, आक्रान्त।
भुक्तशेष-उच्छिष्ट (पु०)-जूठन, खाकर बचा हुआ अन्न।
भुक्ति (स्त्री०)-भोजन, भोग।
भुज् (६ प०)-झुकाना, झुकना, टेढ़ाकरना। ७ उ०-खाना, भक्षण करना, भोगना।
भुज् (वि०)-[समासान्त में] भोगने वाला, शासन करने वाला। स्त्री०-भोग, लाभ।
भुज (पु०)-बाजू, बाहु, हाथ, हाथी की सूंड, झुकाव, शाखा।
भुजग(पु०)-साँप, सर्प। [मोर।
भुजगान्तक भक्षन(पु०)-गरुड, नेवला,
भुजगी(स्त्री०)-आश्लेषा नक्षत्र।
भुजङ्ग (पु०)-साँप, सर्प, यार, पति, आश्लेषा नक्षत्र, ८ का अंक।
भुजङ्गम(पु०)-सर्प, साँप, राहु। न०-सीसक, सीसा। [की बेल।
भुजङ्गलता (स्त्री०)-ताम्बूली, पान
भुजङ्गेश(पु०)-वासुकि, शेष, पतञ्जलि, पिंगल ऋषि।
भुजदण्ड(पु०)-हाथ के समान दण्डा।
भुजमूल(न०)-कन्धा, स्कन्ध।
भुजा (स्त्री०)-बाजू, बाहु, भोग, हाथ, चक्राकृति।
भुजाकण्ट(पु०)-नाखून, नख।
भुजान्तर(पु०)-कोदमो, छाती।
भुजि (पु०)-अग्नि, आग।

भुजिष्य(पु०)–दास, नौकर, रोग ।
भुजिष्या (स्त्री०)–नौकरानी, दासी, वेश्या, रखेली ।
भुज्यु(पु०)–बर्तन, अग्नि, भोजन, यज्ञ ।
भुरड्(१ आ०)–सहारा देना, लेना, चुनना । [मिठाई ।
भुरुंडिका (स्त्री०)–एक प्रकार की
भुवन (न०)–संसार, लोक [भुवन या दुनियाओं का नम्बर तीन या चौदह है], पृथिवी, स्वर्ग, जीवधारी, मनुष्य, जल, चौदह का अंक।
भुवनत्रय (न०)–पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौः नाम तीन लोक अथवा द्यौः, पृथिवी और पाताल ।
भुवनपावनी(स्त्री०)–गंगानदी ।
भुवनेश(पु०)–राजा, पृथिवीपति ।
भुवनेश्वर(पु०)–राजा, शिव ।
भुवन्यु(पु०)–स्वामी, मालिक, चन्द्रमा, सूर्य, अग्नि ।
भुवः [र्-स्] (अ०)–अन्तरिक्षलोक, ईश्वर, तीन व्याहृतियों में से एक [भूर्भुवः स्वः] ।
भुविः[स्] (पु०)–समुद्र, सागर ।
भू (१ प०)–होना, वर्तमान रहना, उत्पन्न होना, संघटित होना, सोना
भू (वि०)–[समासान्त में] होनेवाला, वर्तमान, उत्पन्न । पु०–विष्णु, होमाग्नि । स्त्री०–पृथिवी, संसार, भूमि, ज़मीन, तीन व्याहृतियों में से प्रथम । [पु०–अंधेरा ।
भूक(अस्त्री०)–गार, सूराख, काल ।
भूकम्प(पु०)–भूचाल, पृथ्वी का कांपना।

भूकर्ण(पु०)–पृथ्वी का व्यास ।
भूगर्भ(पु०)–पृथ्वी का अन्दरूनी भाग, विष्णु, भवभूति ।
भूगृह-गेह(न०)–तहख़ाना ।
भूगोल(पु०)–पृथ्वी, संसार या ग्लोब, जुगराफ़िया ।
भूगोलविद्या (स्त्री०)–जुगराफ़िया, जलथल का वृत्तान्त ।
भूत(वि०)–हुआ २, उत्पन्न, प्राप्त । पु०–पुत्र, शिव, कृष्णपक्ष । न०–जीवधारिमात्र, जानदार, प्रेत; पृथ्वी, अपस्, तपस्, वायु और आकाश नामक पञ्चभूत, बीता हुआ काल, उपयुक्तता ।
भूतकाल (पु०)–बीता हुआ समय, गुज़िश्ता ज़माना । [आना ।
भूतक्रान्ति (स्त्री०)–भूतप्रेत का चढ़
भूतगण (पु०)–प्राणिसमूह, प्रेतों का समूह । [या प्रेत चढ़ गया हो ।
भूतग्रस्त (वि०)–जिस के ऊपर जिन
भूतग्राम (पु०)–जानदारों का समूह, प्राणिवर्ग, शरीर । [उदारभाव ।
भूतदया(स्त्री०)–जीवधारियों के प्रति
भूतधारिणी(स्त्री०)–भूमि, पृथ्वी ।
भूतनाथ(पु०)–शिव, परमात्मा ।
भूतपक्ष(पु०)–कृष्णपक्ष ।
भूतपूर्व(वि०)–जो पूर्व हो चुका हो ।
भूतयज्ञ(पु०)–पञ्चयज्ञों में से एक, जिस में समस्त प्राणिवर्ग को बलि दी जाती है ।
भूतल(न०)–पृथ्वी की सतह ।
भूतात्मा (वि०)–जिस की आत्मा

पवित्र हो गई हो। पु०-जीवात्मा, ब्रह्मा, शिव, विष्णु, बुद्ध।
भूतानुकम्पा(स्त्री०)=भूतदया।
भूतान्तक (पु०)-मृत्यु का देवता, यमराज।
भूति (स्त्री०)-भाव, विद्यमानता, उत्पत्ति, कुशलक्षेम, अभ्युदय, कामयावी, सम्पत्ति, शोभा, राख, भूरा नाम।
भूतिक(न०)-कर्पूर, चन्दन।
भूतिकर्म[न्] (न०)-मंगलमय उत्सव, त्यौहार।
भूतिकाम (वि०)-मंगल की इच्छा करने वाला। पु०-राजमंत्री, बृहस्पति। [घास।
भूतृण(पु०)-एक प्रकार की सुगन्धित
भूदार(पु०)-सूअर, शूकर।
भूदेव-सुर(पु०)-ब्राह्मण, विप्र।
भूधन(पु०)-राजा, शासक।
भूधर(पु०)-पर्वत, शिव, कृष्ण, सात का अंक।
भूध्र(पु०)-पर्वत, पहाड़।
भूनेता[तृ] (पु०)-हाकिम, शासक।
भूप(पु०)-राजा, हाकिम, भूपति।
भूपति(पु०)-राजा, शिव, इन्द्र।
भूपद(पु०)-वृक्ष, पेड़। [थे घेरा।
भूपरिधि(पु०)-पृथिवी का चारों ओर
भूपवित्र(न०)-गौ का गोबर।
भूपाल (पु०)-राजा, पृथिवीपति, भोजराज। [राहुग्रह।
भूपुत्र-सुत(पु०)-मंगल ग्रह, नरक
भूप्रदान(न०)-भूमि का दान देना।
भूभाग(पु)-प्रदेश, भूमि का टुकड़ा।
भूभुज्(पु०)-राजा, हाकिम।
भूभृत(पु०)-पर्वत, राजा, विष्णु।
भूमण्डल(न०)-पृथिवी का घेरा।
भूमन् (पु०)-आधिक्य, बहुतायत, सम्पत्ति। न०-पृथिवी, प्रान्त, प्रदेश, जीव। [हुआ।
भूमय(वि०)-पार्थिव, पृथ्वी का बना
भूमि(स्त्री०)-पृथ्वी, जमीन, प्रान्त, प्रदेश, स्थान, १ का वाचक।
भूमिकम्प(पु०)-भूचाल, भूकम्प।
भूमिकर(पु०)-लगान, मालगुजारी, जमीन की पैदावार का जो भाग राजा ग्रहण करता है।
भूमिका (स्त्री०)-पृथ्वी, भूमि, जमीन, मकान की मंजिल, नाटक की पोशाक, प्रस्तावना, दीबाचा।
भूमी(स्त्री०)=भूमि।
भूमीन्द्र (पु०)-राजा, नृप।
भूयश. [स्] (अ०)-बहुत ही, अधिक से अधिक।
भूयस्[:](अ०)-पुन, फिर, बहुत ही।
भूयिष्ठ (वि०)-अतिशय, बहुलतर।
भूरि (वि०)-प्रचुर, बहुत। पु०-विष्णु, इन्द्र, शिव। न० स्वर्ण, सोना।
भूरिगम (पु०)-गर्दभ, गधा।
भूरिमाय(वि०)-बहुल छल वाला। पु० गीदड़, शृगाल।
भूरिश [स्] (अ०)-बहुश, बहुतधार।
भूरिश्रवा [स्] (पु०)-चन्द्रवंशीय राजा सोमदत्त का पुत्र, एक राजा।
भूर्ज (पु०)-अपने नाम से प्रचलित

प्रधान प्रसिद्धवृक्ष, भोजपत्र का वृक्ष।
भूर्जपत्र (पु०)—पूर्ववत्।
भूलता (स्त्री०)—केंचुए, जन्तुविशेष जो पानी बरसने के समय जमीन से निकलते हैं।
भूशय (पु०)—पृथिवी में रहने वाले नकुलगोधादि जन्तु।
भूष् (१ प०, १० उ०)—सजाना, शरीरादि की बनावट करना।
भूषण (न०)—अलंकार, सजने की सामग्री, ज़ेवर, गहना। पु०-विष्णु।
भूषित (वि०)—अलंकृत, सज्जित, सजा हुआ।
भूष्णु (वि०)—होनेवाला, भविष्णु।
भृ (१ उ०)—पालनकरना, पोषण करना। ३ उ०-धारण करना, पोषण करना।
भृकुंश [स] (पु०)—वह पुरुष जो भृकुटी द्वारा अपने अभीष्ट को बतलाता है, स्त्री का वेश धारणकर्त्ता नट।
भृकुटि-टी (स्त्री०)—भौं, भ्रूकुटि, भौं का चढ़ाना, त्यौरी बदलना।
भृगु (पु०)—मुनिविशेष, शिव, शुक्रग्रह, जमदग्नि।
भृगुपति (पु०)—भृगु के वंश का पति, परशुराम। [चार्य।
भृगुसुत-पुत्र (पु०)—परशुराम, शुक्राभृङ्ग (पु०)—भ्रमर, भौंरा, भृङ्गराज, भंगरा, कलिंग पक्षी। न०-अभ्रक।
भृंगरिट-टि(पु०)—शिव का द्वारपाल।
भृङ्गाभीष्ट (पु०)—भौंरा को प्रिय, आम्रवृक्ष।
भृंगारि [रि] का (स्त्री०)—झिल्लिका
भृंगारी (स्त्री०)—पूर्ववत्।
भृज् (१ आ०)—भूनना, भर्जन।
भृतक (वि०)—मजदूर, वेतनभोगी।
भृति (स्त्री०)—भरण, पोषण, पालन, वेतन, मजदूरी।
भृत्य (पु०)—दास, गुलाम, नौकर।
भृश् (४ प०)—नीचे गिरना, अधःपात होना।
भृश (वि०)—मजबूत, शक्तिशाली, अत्यधिक।
भृशम् (अ०)—बहुत, अधिक, अतिशय।
भृष्ट (वि०)—भुना हुआ, पानी के बिना रेत और आग के संयोग से पका हुआ।
भॄ (९ प०)—झिड़कना, पालना, भूनना, धिक्कारना।
भेक (पु०)—मेंढक, कापुरुष, बादल।
भेकभुज् (पु०)—साँप, सर्प।
भेकरव-शब्द (पु०)—मेंढक की आवाज़।
भेड (पु०)—भेड़, मेष, मेंढा।
भेड्र (पु०)—मेंढा, मेष।
भेद (पु०)—टूट, पृथक्करण, जुदा करना, फाड़ना, फ़र्क, राजनीति का एक अंग।
भेदक (वि०)—भेद करने वाला, जुदा करने वाला, विशेषण, विदारक।
भेदकर-कृत् (वि०)—भेद डालने वाला, झगड़ा पैदा करने वाला।
भेदन (वि०)—फाड़ने वाला, काटने वाला। न०—फूट का बीज बोना,

जुदा करना, झगड़ा। पु०–सूअर।
भेदबुद्धि (वि०)–ब्रह्म को संसार से अलग मानने वाला।
भेदवादी [न्] (पु०)–द्वैतवादी, जीव ब्रह्मको सत्ता पृथक् २ माननेवाला
भेदिका(स्त्री०)–नाश, बरबादी।
भेदित(वि०)–विदारित, फाड़ा हुआ।
भेदी[न्] (वि०)–भेद डालने वाला।
भेद्य (वि०)–विदार्य, फाड़ने लायक़।
भेरि-री(स्त्री०)–नक्कारा, बड़ा ढोल।
भेरुण्ड(वि०)–भयानक, भयप्रद। न०–गर्भधारण, हमल।
भेरुण्डक(पु०)–गीदड़, शृगाल।
भेल (वि०)–कायर, डरपोक, मूर्ख, अस्थिर, ऊंचा, तेज़। पु०–किश्ती, नौका, बेड़ा।
भेष्(उ०)–डरना, खौफ़ मानना।
भेषज(वि०)–चंगा करने वाला, चिकित्सक। न०–दवाई, औषध।
भेषजांग(न०)–दवाई का अंग, औषध का अनुपान।
भेषज्य(वि०)–चिकित्सा के योग्य।
भैक्ष (वि०)–भिक्षा मांग कर जीने वाला। न०–भीख, भिक्षा।
भैक्षजीविका-वृत्ति(स्त्री०)–फकीरी।
भैक्ष्य(न०)–भिक्षा, भीख।
भैमी (स्त्री०)–भीमराजा की पुत्री, दमयन्ती, माघ के शुक्लपक्ष की एकादशी।
भैरव (वि०)–भयानक, भीषणाक, भीषण। पु०–शिवभेद; भय, रागभेद
भैरवी (स्त्री०)–दुर्गा का भेद, एक रागणी का नाम।   [पक्षी।
भैषज(न०)–दवाई, औषध। पु० लावक
भैषज्य(न०)–औषध, दवाई, चिकित्सा, इलाज।
भैष्मकी (स्त्री०)–विदर्भराज भीष्मक की पुत्री, रुक्मिणी।
भोः[स्] (अ०)–हे, अरे, सम्बोधन।
भोक्ता[तृ] (वि०)–भोगने वाला, अनुभवकर्त्ता, शासक, क़ाबिज़। पु०–पति; राजा, प्रेमी।
भोग (पु०)–सुखदुःखादि का अनुभव, इस्तेमाल, उपभोग, शासन, मैथुनकर्म, दावत, भोजन, देवता पर चढ़ाया हुआ अन्न, लाभ, आमदनी धन, सर्प का फण, शरीर।
भोगकर(वि०)–आनन्ददायक।
भोगगृह(न०)–ज़नाना, अन्तःपुर।
भोगतृष्णा (स्त्री०)–सांसारिक सुखों की इच्छा।
भोगधर(पु०)–सांप, सर्प।
भोगपति(पु०)–प्रान्तिक शासक।
भोगभूमि (स्त्री०)–स्वर्ग, इहलोक।
भोगवती (स्त्री०)–पातालगंगा, चन्द्रमास की द्वितीया।
भोगवस्तु (न०)–भोगने की चीज़।
भोगस्थान(न०)–शरीर, अन्तःपुर।
भोगिक(पु०)–साईस, अश्वरक्षक।
भोगिनी(स्त्री०)–राजा की उपपत्नी।
भोगिवल्लभ(न०)–चन्दन।
भोगी[न्](पु०)–सर्प, सांप, राजा, ग्रामाध्यक्ष, नापित, नाई। वि०–भोगने वाला, भोक्ता।   [अनन्तदेव।
भोगीन्द्र-ईश(पु०)–शेषनाग, वासुकि,

भोग्य(वि०)–भोगनेके योग्य, बरदाश्त करने लायक। न०–भोग्यपदार्थ, धन, दौलत, धान्य।

भोज(पु०)–मालवाप्रदेशान्तर्गत धारानगरी का एक प्रसिद्ध राजा, एक विदर्भराज। [वाला।

भोजक (वि०)–खिलाने वाला;खाने

भोजन(पु०)–विष्णु,शिव। न०–खाना खाद्यपदार्थ, अन्न खाना, भोग, सम्पत्ति।

भोजनत्याग(पु०)–उपवास;रोज़ा।

भोजनभाण्ड(न०)–खाना खाने का बर्तन। [भोजनशाला।

भोजनभूमि(स्त्री०)–खाने का कमरा,

भोजनाच्छादन(न०)--खानाकपड़ा।

भोजनीय(वि०)–खाने योग्य, खाद्य।

भोजी [न्] (वि०)–[समासान्त में] खाने वाला,भोक्ता।

भोज्य(वि०)–खानेयोग्य,भोगने योग्य। न०–भोजन, खुराक।

भोज्यकाल(पु०)-खाना खानेका समय।

भोट(पु०)–तिब्बत प्रदेश।

भोलि(पु०)--ऊट, उष्ट्र।

भोट्ट(पु०)--तिब्बतनिवासी।

भौत (वि०)–भूतसम्बन्धी, भौतिक, पागल। पु०–भूतों की पूजा करने वाला, देवल, भूतयज्ञ।

भौतिक (वि०)--जीवधारियों से सम्बन्ध रखने वाला, पंचभूतों का बना हुआ, भूताक्रान्त। न०–भौतिक पदार्थ, मोती।

भौतिकविद्या (स्त्री०)–इन्द्रजाल, बाजीगरी।

भौपाल(पु०)--राजकुमार।

भौम(वि०)--भूमिसम्बन्धी, पार्थिव। पु०–मंगल ग्रह, जल, प्रकाश, अत्रि ऋषि।

भौमवार(पु०)–मंगलवार।

भौमिक-ध्व(वि०)–पार्थिव, पृथिवी पर रहने वाला। [खजाञ्ची।

भौरिक (पु०)--स्वर्णकोषाध्यक्ष,

भौव[न्] न (पु०)–विश्वकर्मा।

भ्यस्(१ आ०)–डरना, खौफ़ खाना।

भ्रंश् (१ आ०, ४ प०)–नीचे गिरना, भटकना, खो देना, बच भागना, न्यून होना, नष्ट होना।

भ्रंश [स] (पु०) -गिरावट, फिसलना, नाश, अभाव, नुकसान,त्याग।

भ्रकुटि-टी(स्त्री०)–भौं का चढ़ाना, भ्रूभंग।

भ्रक्ष्(१ उ०)–खाना, भक्षण करना।

भ्रज्जन(न०)–भूनना।

भ्रम् (१, ४ प०)–घूमना, भटकना, इधर उधर फिरना, फैलना, भ्रम में पड़ना, ग़लती करना।

भ्रम (पु०)–मिथ्याज्ञान, कुछ का कुछ समझना,चक्रगति, ग़लती,अशुद्धि, घबड़ाहट, आवर्त्त, कुम्हार का चक्र, चक्की, झरना।

भ्रमण (न०)–घूमना, चक्कर काटना, हिलना, अस्थिरता, सैर।

भ्रमर(पु०)–मधुकर,भौंरा,मधुमक्षिका।

भ्रमरक(पु०)–मधुमक्षिका, आवर्त्त, अस्त्री०–जुल्फ, केशगुच्छ, खेलने की गेंद।

भ्रमाकुल(वि०)–घबराया हुआ।
भ्रमि (स्त्री०)--चारों ओर घूमना, कुम्हार का चक्र, आवर्त्त, भवर, अशुद्धि ।
भ्रश्=भ्रंश् । [कला, क्रूरता ।
भ्रशिमा [न्] (पु०)--ज्यादती, अधि-
भ्रष्ट(वि०)–च्युत, अधःपतित ।
भ्रस्ज् (६उ०) [भृज्जति]-पकाना,भूनना
भ्राज्(१ आ०)–चमकना ।
भ्राजथु(पु०)-शोभा,चमक;दीप्ति,कांति
भ्राजिष्णु (वि०)–दीप्तिशील, चमकने वाला ।
भ्राता [तृ] (पु०)-भाई, सहोदर, गहरा दोस्त, बान्धव
भ्रातृक (वि०)-भ्राता सम्बन्धी ।
भ्रातृज (पु०)-भाई का पुत्र; भतीजा।
भ्रातृजाया (स्त्री०)–भाई की पत्नी, भावज ।
भ्रातृद्वितीया (स्त्री०)-भैयादोयज, कार्तिक शुक्ला द्वितीया।
भ्रातृपुत्र-भ्रातुस्पुत्र (पु०)-भाई का पुत्र, भतीजा [श्वशु ।
भ्रातृव्य (पु०)–भाई का पुत्र, भतीजा,
भ्रातृत्व(न०)–भाईपन, भाईचारा ।
भ्रातृवत्(वि०)–भाई या भाइयोंवाला।
भ्रातृश्वशुर(पु०)-पति का बड़ा भाई, जेठ। [स्त्री । पु०-भतीजा ।
भ्रात्रीय-त्रेय(वि०)-भाईका,भ्रातृसम्ब-
भ्रान्त (वि०)-मिथ्याज्ञान वाला, घूमनेवाला । न०-भ्रमण,घूमना ।
भ्रान्ति(स्त्री०)-भ्रमण, घूमना, अयथार्थज्ञान, भूल, भ्रम, सन्देह ।
भ्रान्तिमान्[मत्](वि०)–घूमने वाला।
भ्राम(पु०)–घूमना, भ्रमण,धोखा,माया
भ्रामक (वि०)–बहकाने वाला,धोखेबाज, श्रृगाल, गीदड़, ठग ।
भ्रामर (न०)–मधु, शहद । अस्त्री०–अयस्कान्त, चुम्बक पत्थर ।
भ्राश्(१,४आ०)–चमकना, रोशनहोना
भ्राष्ट्र(पु०)–प्रकाश,ईथर नामकवायु। अस्त्री०-भूनने की कड़ाही ।
भ्रु [भ्रू] कुंश [स] (पु०)–स्त्री वेश में अभिनयकर्त्ता पुरुष ।
भ्रू (स्त्री०)–भौं, भवें, आंखके ऊपर बालों की कतार । [बदलना।
भ्रूक्षेप (पु०)–भौं का चढ़ाना, त्यौरी
भ्रूण् (१० आ०)–आशा करना, इच्छा करना, भरोसा करना, डरना ।
भ्रूण (पु०)–गर्भस्थित बालक, बच्चा, स्त्रियों का गर्भ ।
भ्रूणहत्या (स्त्री०)–गर्भ गिराना, गर्भ का मारना । [बदलना ।
भ्रूभंग (पु०)–भौं का चढ़ाना, त्यौरी
भ्रूमध्य (न०)–दोनों भौं के बीच का स्थान ।
भ्रेज् (१आ०)–चमकना ।
भ्रे [भ्ले] ष् (१उ०)–पीना, चलना, जाना, गिरना, डरना ।
भ्रेष (पु०)–हरकत, गति, अपने स्थान से च्युत होना ।

म

म-पवर्गका पञ्चम अक्षर । पु०-काल, शिव, मन्त्रजापक, चन्द्र,विष्णु,

शिव, ब्रह्मा, यम, पंचम स्वर। न०--जल, हर्ष।
मह्(१ आ०)--ठगना, बढ़ना, देना।
मकर(पु०)--नाका, मगरमच्छ, बारह राशियों में से दसवीं।
मकरकुण्डल(न०)--कर्णाभूषण जो मगर के स्वरूप का होता है।
मकरकेतन-केतु(पु०)--कामदेव,मदन।
मकरध्वज(पु०)--पूर्ववत्।
मकरन्द(पु०)--पुष्परस,फूल का शहद।
मकरसप्तमी (स्त्री०)--माघ मास की शुक्ला सप्तमी।
मकरी [न्] (पु०)--समुद्र, सागर।
मकुट=मुकुट।
मकुति (पु०)--शूद्रशासन।
मकुर (पु०)--आइना, दर्पण,कली।
मकुल (पु०)--बकुलवृक्ष, कली।
मकूलक (पु०)--कली,दन्तीवृक्ष।
मक्क् (१ आ०)--जाना,हरकत करना।
मक्कुल (पु०)--गेरू।
मक्ष् (१ प०)--इकट्ठा करना, ढेर लगाना, क्रुद्ध होना।
मक्ष (पु०)--क्रोध,कपट,गिरोह।
मक्षिक (पु०)--मक्खी,मधुमक्खी।
मक्षि [क्षी] का (स्त्री०)--पूर्ववत्।
मक्षिकामल (न०)--मोम।
मख्,मङ्ख् (१ प०)--जाना, रेंगना।
मगध (पु०)--एक देश, बिहार का दक्षिण भाग, चारण। बहु०--मगधदेशनिवासी।
मगधेश्वर (पु०)--जरासन्ध, मगध देश का राजा।
मगधोद्भवा (स्त्री०)--पिप्पली,मघ।
मघ (पु०)--एक द्वीप, एक देश, आनन्द, विलास।
मघव (पु०)--इन्द्र।
मघवत् (पु०)--पूर्ववत्।
मघवा [वन्] (वि०)--कैयाज, उदार। पु०-इन्द्र, व्यास, पेचक।
मङ्क् (१ आ०)--सजाना, जाना।
मङ्किल (पु०)--वनाग्नि, दावानल।
मङ्कुर (पु०)--आइना, दर्पण।
मङ्क्षु (अ०)--शीघ्र, तुरन्त।
मङ्ग् (१ प०)--जाना,हरकत करना।
मङ्गल (पु०)--मङ्गल ग्रह,अग्नि। वि० शुभ, आनन्ददायक, सौभाग्यवान्। न०-सुख, आनन्द,बरकत।
मङ्गलच्छाय (पु०)--बड़ का पेड़, वटवृक्ष।
मङ्गलप्रदा (स्त्री०)--हरिद्रा,हल्दी।
मङ्गल्य (न०)--चन्दन, सोना, स्वर्ण, सिन्दूर। पु०-अश्वत्थ,नारिकेल, बिल्व, कपित्थ। वि०-मङ्गलकर, सुन्दर।
मङ्गल्या (स्त्री०)--शतपुष्पी, वच, हरिद्रा आदि औषधियोंका नाम।
मङ्गिनी (स्त्री०)--नौका, नाव।
मच् (१० आ०)--कपट करना,ठगना, अभिमानी होना,पूजा करना।
मचर्चिका (स्त्री०)--प्रशस्त, बहुत अच्छा [यह शब्द सज्ञावाचक शब्द के अन्त में आता है]।
मज्जन (न०)--स्नान,नहाना,मज्जा।
मज्जसमुद्भव (न०)--मज्जा से उत्पन्न

अर्थात् शुक्र, वीर्य।
मज्जा (स्त्री०)–अस्थिसार, चर्बी, किसी फल की गुठली के अन्दर का भाग।
मज्जारस (पु०)–मज्जा का रस अर्थात शुक्र, वीर्य।
मञ्च (पु०)–खट्वा, खाट, बांस का बना हुआ ऊंचा आसन।
मञ्जरि-री(स्त्री०)–वल्लरी,बाल,मुक्ता, मोती,तुलसी नामक वृक्ष।
मञ्जीर (अस्त्री०)–नूपुर, पैरों की उंगलियों का भूषण।
मञ्जुघोष (वि०)–अच्छे शब्द वाला।
मञ्जुल-मंजु(वि०)–मनोहर,खूबसूरत, सुन्दर। पु०-ममोला नामक पक्षी। न०-वह स्थान जो लताओं से आच्छादित हो, निकुञ्ज।
मञ्जूषा (स्त्री०)–पिटारी, पेटिका।
मट् (१ प०) -नाश होना,निर्बलहोना
मटची-ती (स्त्री०)–पाषाणवृष्टि,पत्थर बरसना, ओला।
मठ् (१ प०)–वास करना, रहना।
मठ (पु०)–विद्यार्थियों का निवासस्थान, धौहिंगहौस, देवमन्दिर, योगियों के रहने का स्थान, कालिज, पाठशाला, बैलगाड़ी।
मड् (१०उ०)–भूषित करना,सजाना।
मड्डु (पु०)–वाद्यभेद, एक प्रकार का बाजा, विपुल डमरु।
मण् (१प०)–अस्पष्ट शब्द करना, बड़बड़ाना।
मणि-णी (अस्त्री०)-मुक्तादि रत्न,मोती आदि रत्न,मिट्टी का पात्रविशेष, एक कीमती पत्थर। [यह शब्द प्रायःपुंलिङ्ग में ही आता है]।
मणिकर्णिका (स्त्री०)–काशी में एक तीर्थ।
मणिकार (पु०)–जौहरी, मणिनिर्मित अलंकारों का बनाने वाला।
मणिकूट (पु०)–जिसके कूट मणिसदृश हों ऐसा पर्वत, कामरूपदेशस्थ पर्वतविशेष।
मणिखनि (पु०)–मणियों की खान।
मणिग्रीव (पु०)–कुबेरपुत्र।
मणितारक (पु०)–सारस पक्षी।
मणिपूर (न०)–षट्चक्रान्तर्गत नाभिस्थ तृतीय चक्र, अपने नाम से प्रसिद्ध देश।
मणिबन्ध (पु०)–हाथ का पौंचा, जिसजगह कंकण [कड़ा] पहिना जाता है, सैन्धे का एक पर्वत।
मणिबीज (पु०)–जिसके बीज मणि सदृश होते हैं अर्थात् दाडिम, अनार।
मणिमाला-सरः=मणियों से खचित हार, मणियों की माला।
मणीव (अ०)–मणिसमान,मणिसदृश।
मण्ड (अस्त्री०)–सब अन्नों का रस, माड, सार। पु०-मेंढक।
मण्डक (पु०)–पिष्टकविशेष, माडा नाम से प्रसिद्ध रोटिकाभेद।
मण्डन (वि०)–सजाने वाला, आभूषणप्रिय। पु०-एक तत्त्ववेत्ता का नाम जिसको शंकराचार्य ने

शास्त्रार्थ में पराजित किया था। न०-आभूषण,सजावट,शृंगार, प्रमाण और तर्क से किसी विषय की पुष्टि करना।

मण्डप (पु०)–उत्सव के समय पर यज्ञादि के लिये बनाया हुआ कृत्रिम भवन,डेरा, तम्बू, शामियाना, कुंज।

मण्डयन्त (पु०)–आभूषण, सजावट, नट, भोजन।

मण्डल (वि०)–गोल, वर्तुल। पु०-गोलाकार सेनाव्यूह, कुत्ता,सर्पभेद। न०-गोलाकार,वृत्त,दायरा, श्लोक,चक्र,गोलवस्तु,समूह, सभा, प्रान्त,करद राज्य।

मण्डलक (न०)–वृत्त; दायरा; प्रान्त; समुदाय; श्वेतकुष्ठ; दर्पण।

मण्डलित (वि०)–गोल किया हुआ।

मण्डली [न्] (पु०)–कुत्ता, सूर्य, वटवृक्ष, प्रान्तिकशासक, सर्प,बिल्ली

मण्डलीश (पु०)–करद राजा।

मण्डलीकरण (न०)–गोलकरना, कुंडली मारना।

मण्डित (वि०)–भूषित,सजाहुआ।

मण्डूक (पु०)–मेंढक।

मण्डूकयोग (पु०)-एक योगासन जिस में योगी मण्डूकासन बैठकर ध्यान लगाता है।

मण्डूकी(स्त्री०)–मेंढकी, असती स्त्री, कतिपय वृक्षों का नाम।

मण्डूर(न०)--लोहे का मैल।

मत(वि०)--माना हुआ, विचार किया हुआ,आदर किया हुआ,विश्वास किया हुआ,सोचा हुआ, इच्छित, समझा हुआ। न०--विचार,ख्याल, विश्वास, राय, सिद्धान्त, धार्मिक विश्वास, आदेश, सलाह, अभिप्राय, स्वीकारी, ज्ञान।

मतङ्ग(पु०)--हाथी, हस्ती, बादल, मेघ, एक ऋषि।

मतङ्गज(पु०)--हाथी, हस्ती।

मतल्लिका (स्त्री०)–समासान्त में यह शब्द श्रेष्ठ के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

मताक्ष(वि०)--जुआ खेलने में दक्ष।

मतान्तर (न०) -विभिन्न विचार, विभिन्न सिद्धान्त।

मतावलम्बन(न०)--किसी खास राय का मानना, मतविशेष का अनुसरण।

मति (स्त्री०)--समझ, ज्ञान, प्रतिभा, राय, इरादा, विचार, अनुमान, धारणा,निश्चय,चित्त का झुकाव, सलाह, स्मृति।

मतिगर्भ(वि०)–प्रतिभाशाली, चतुर।

मतिद्वैध(न०)–इख्तलाफराय,विचारभेद

मतिनिश्चय (पु०)–दृढ़निश्चय, पक्का विश्वास।

मतिपूर्वकम् (अ०)-इरादतन्, इच्छापूर्वक।

मतिभेद(पु०)–इख़्तलाफराय।

मतिभ्रम(पु०)–चित्त की घबराहट, धोखा, भूल।

मतिमान्[मत्] (वि०)–चतुर, समझदार।

मतिहीन(वि०)–मूर्ख,बेसमझ,नादान।

मत्क(वि०)–मेरा,अपना। पु०–खटमल।

मत्कुण (पु०)–खटमल, ऐसा हाथी जिसके दांत बाहर को न निकले हों, बिना दाढ़ी का मनुष्य, भैंसा, नारियल ।
मत्त(वि०)–पागल, शराबी, गुस्ताख़, बेहोश। पु०–पागलआदमी,कोयल, भैंसा, धतूरा । [भामिनी ।
मत्तकाशि [सि] नी(स्त्री०)–कामिनी,
मत्तकील(पु०)–हाथी, हस्ती ।
मत्तगामिनी(स्त्री०)–कुलटा,असती ।
मत्य(न०)–ज्ञानप्राप्ति का उपाय ।
मत्स(पु०)–मछली ।
मत्सर(वि०)–ईर्षालु, लालची, कंजूस, स्वार्थी, क्रूर । पु०–ईर्षा, द्वेष, घमण्ड, लालच, क्रोध ।
मत्स्य (पु०)–मीन, मछली, बारह राशियों में से एक । [वती ।
मत्स्यगन्धा(स्त्री०)–व्यासमाता,सत्य
मत्स्यघात(पु०)–मछली मारने वाला, मछेरा ।
मत्स्यजीवी[न्] (पु०)–पूर्ववत् ।
मत्स्यण्डिका (स्त्री०)–खाड़ का विकार, गुड़ ।
मत्स्यण्डी(स्त्री०)–पूर्ववत् ।
मत्स्यधानी(स्त्री०)–मत्स्यकरण्डिका, मछली रखनेकी टोकरी। [पक्षी ।
मत्स्यनाशक(पु०)–कुररपक्षी, बगुला
मत्स्यरङ्ग(पु०)–मछरंगा नामक एक पक्षी । [टराज ।
मत्स्यराज(पु०)–रोहितमत्स्य, विरा-
मत्स्यवेधन-वेधनी=बडिश, मछली बींधने का हथियारविशेष,काटा।
मत्स्यादनी(स्त्री०)–जलपिप्पली ।
मत्स्यी (स्त्री०)–स्त्री मत्स्य जाति, मादा मछली ।
मत्स्योदरी (स्त्री०)–व्यास की माता, मत्स्यगन्धा, काशीस्थ एक तीर्थविशेष ।
मथ्-मन्थ्(१प०)-बिलोना,मथना, विलोडन करना, वध करना, मारना ।
मथन(न०)–बिलोडना,मथना,मारना, क्लेश देना ।
मथित(वि०)–मथा हुआ,मारा हुआ, विलोडित । न०–जलरहित तक्र ।
मथु [थू] रा (स्त्री०)–अपने नाम से प्रसिद्ध नगरी ।
मथुरेश(पु०)–श्रीकृष्ण ।
मद् (१, ४ प०)–हर्षित होना, खुश होना,गर्व करना,अहङ्कार करना।
मद (पु०)–आमोद, खुशी, अहङ्कार, मृगमद, कस्तूरी, मत्तता, मस्ती, हस्तिगण्डजल ।
मदकट(पु०)–खाण्ड, गुडभेद ।
मदकल (पु०)–मस्त हाथी । वि०– मदोत्कट,अव्यक्तशब्द करनेवाला।
मदगन्धा (स्त्री०)–मदिरा, शराब ।
मदन(पु०) -कामदेव, वसन्त, एक वृक्ष का नाम, मैनफल ।
मदनचतुर्दशी (स्त्री०)-मदनोत्सवा- त्मिका चतुर्दशी, चैत्रशुक्ल चतुर्दशी।
मदनमोहन(पु०)–श्रीकृष्ण ।
मदनशलाका (स्त्री०)–कामोद्दीपक औषध, सारिका, कोयल ।
मदनसदन (न०)–कामदेव का घर,

स्त्रीचिन्हविशेष, [ज्योतिष में] लग्न से सातवां स्थान।
मदनावस्था (स्त्री०)-मदनकृतदशा, कामियों की हालत जो कामदेव द्वारा होजाती है।
मदनोत्सव(पु०)-उत्सवविशेष, होलिकोत्सव, होली।
मदयन्तिका(स्त्री०)-मल्लिकालता, चमेली।
मदयित्नु(पु०)-कामदेव, शौण्डिक, [कलाल], मेघ। न०-शराब। वि०-मादक, नशीला।
मदस्थल-स्थान (न०)-शराब पीने का स्थान। [मदात्यय रोग।
मदान्तक-अत्यय (पु०)-मदव्याधि,
मदार (पु०)-हस्ती, कामुक, गन्धभेद, धतूरा, शूकर, नृपभेद।
मदालापी[न्](पु०)-कोकिल,कोयल।
मदिर (पु०)-रक्तखदिर, ममोला पक्षी। वि०-मदकारक, मदयुक्त।
मदिरा (स्त्री०)-शराब, हर तरह की मद्य। [भाई।
मदिराक्ष (पु०)-विराट के राजा का
मदिराक्षी (स्त्री०)-मत्तलोचना स्त्री।
मदिरागृह (न०)-शराब बनाने का घर, गोदाम आबकारी।
मदीय (वि०)-स्वकीय, मेरा।
मदोत्कट(पु०)-मत्तहस्ती,मस्त हाथी।
मदोद्धत(वि०)-मस्त, मद से उन्मत्त।
मद्गु (पु०)-पक्षिविशेष, सर्पभेद, जङ्गली पशु, नौका, वेदी, वर्णसंकर, दोगला, बगुला।
मद्गुर (पु०)-एक प्रकार का मत्स्य [मगर]विशेष।
मद्य (न०)-शराब, मदिरा।
मद्यप(वि०)-मद्य पीने वाला,शराबी।
मद्यपात्र-भाण्ड(न०)-शराब का बर्तन, शराब का प्याला।
मद्यपान (न०)-शराब का पीना।
मद्र (पु०)-देशविशेष, मारवाड़प्रदेश।
मद्रक (वि०)-मद्र देश में होने वाला, मारवाड़ी।
मद्रसुता(स्त्री०)-मद्रराजकन्या, पाण्डुराज की दूसरी स्त्री माद्री जो नकुल और सहदेव की माता थी।
मद्रा [न्] (पु०)-शिव।
मधव्य (पु०)-वैशाख मास।
मधु (न०)-शहद, मद्य, शराब, फूल का रस, पानी, मधुररस। पु०-वसन्त ऋतु, चैत्र का महीना, एक दैत्य का नाम, रावण का पिता, अशोक वृक्ष। वि०-मीठा, सुखदायक।
मधुक (वि०)-मीठा, मधुर। पु०-अशोकवृक्ष, महुआ, मुलहठी।
मधुकण्ठ (पु०)-कोकिल, कोयल।
मधुकर (पु०)-हंगारा मक्खी, प्रेमी, मीठानींबू, भौंरा।
मधुकृत् (पु०)-शहद की मक्खी।
मधुकोष (पु०)-शहद की मक्खियों का छत्ता।
मधुक्षीर-क (पु०)-खजूर का पेड़।
मधुगायन (पु०)-कोयल, कोकिल।
मधुघोष (पु०)-पूर्ववत्।

मधुतृण (अस्त्री०)—गन्ना, पौंडा।
मधुदूत (पु०)—आम का पेड़।
मधुद्रुम(पु०)—आम का पेड़,आम्रवृक्ष।
मधुप (पु०)—मधुमक्षिका, शराबी पुरुष।
मधुपति (पु०)—कृष्णचन्द्र।
मधुपर्क (पु०)—कांस्यपात्र में स्थित दही जिसमें शहद मिला हो, दधि, घी, मिश्री, पानी और शहद इन पांचों को भी कहते हैं।
मधुपुर-पुरी=मथुरा का नाम।
मधुपुष्प (पु०)—अशोकवृक्ष, बकुल, दन्ती, शिरीष [सिरस]।
मधुप्रमेह (पु०)—प्रमेह का एक भेद जिस में मूत्र के साथ मीठा आने लगता है, प्रमेह की बढ़ी हुई हालत।
मधुबीज (पु०)—अनार का पेड़।
मधुमक्षः-क्षा-क्षिका--शहद की मक्खी।
मधुमत् [मान्] (वि०)—मीठा, मधुयुक्त, रसगवार। [होश।
मधुमत्त (वि०)—शराब के कारण बे-
मधुमल्लि-ल्ली (स्त्री०)—मालतीलता, चमेली की बेल।
मधुमाधव(न०)—चैत्र या बैशाख।
मधुमेह=मधुप्रमेह। [हठी।
मधुयष्टि-ष्टी (स्त्री०)—ईख, गन्ना, मुल-
मधुर(पु०)—मीठा रस, बिजौरा नींबू, गुड़। न०—विष, आसव। वि०—मीठा,मनोहर, प्रिय, खूबसूरत।
मधुररस(पु०)—इक्षु, गन्ना, जल।
मधुरा (स्त्री०)—दुद्धी नामक घास, सूर्या, मरोड़फली।
मधुरस्रवा(स्त्री०)-एक प्रकार का खजूर, पिण्डखजूर।
मधुरालापा(स्त्री०)—कोकिला, कोयल
मधुरिपु(पु०)—श्रीकृष्ण।
मधुलिट् [ह्] (पु०)—भ्रमर, भौंरा।
मधुलोलुप(पु०)—पूर्ववत्।
मधुवन(न०)—मधुदैत्य जिस में रहता है वह वन,मथुरापुरी के पास एक वन, किष्किन्धा नगरी में बहुत मधुवाला एक वन।
मधुशेष (अस्त्री०)—शहद का बाकी भाग,सिक्थक,मोम। [का मित्र।
मधुसख-सारथि(पु०)—कामदेव, बसन्त
मधुहा[न्] (पु०)—विष्णु।
मधूच्छिष्ट(न०)=मधुशेष। [नगर।
मधूपघ्न (अस्त्री०)—मथुरापुरी, मथुरा
मधूलक(पु०)—जलजमधूक वृक्ष।
मध्य (न०)—बीच, बीचका कद [शरीर का], कमर, बीचका भाग, पेट, परार्ध संख्या से छोटी संख्या। वि०—न्याय्य, इन्साफयुक्त, मध्यस्थ।
मध्यगन्ध(पु०)—आम्रवृक्ष, आमका पेड़
मध्यतः[स्] (अ०)—बीच में, बीच से।
मध्यदेश (पु०)—किसी चीज़ का बीच का भाग, हिमालय और विन्ध्य-देश के बीच का भाग, दक्षिण में एक सूबा। [दोपहर।
मध्यन्दिन (पु०)—दिन का मध्यभाग;
मध्यम(वि०)—बीचका, मध्य में हुआ, बिचला, स्वरों में पांचवां [सुर],

गानशास्त्र में चतुर्थ स्वर। न०—शरीर का मध्य भाग।

मध्यमपदलोपी [न्] (पु०)—व्याकरण शास्त्र में एक प्रकार का समास जिस में मध्यमपद का लोप हो जाता है जैसे-शाकप्रियः पार्थिवः=शाकपार्थिवः में।

मध्यमपाण्डव (पु०)—पाण्डु का बिचला पुत्र अर्जुन।

मध्यमभृतक (पु०)—खेती करने वाला नौकर, किसान, कृषक।

मध्यमलोक(पु०)—पृथिवी,बीचकालोक

मध्यमसाहस (न०)—दूसरे के कपड़े आदि का फाड़ना फेंकना आदि, बिना सोचे जोर से कोई काम करना। पु०—दण्डविशेष, ५०० पण का दण्डविशेष।

मध्यमा (स्त्री०)—दृष्टरजस्कामारी, बीच की उंगली, एक प्रकार की वाणी, नायिकाभेद।

मध्यरात्र(पु०)—आधी रात का समय, निशीथ, रात्रि का बीच।

मध्यलोकपाल(पु०)—राजा, भूपति।

मध्यवर्त्ती[न्] (वि०)—मध्यस्थ, वादी और प्रतिवादी के बीच में रहकर उन का निपटेरा करने वाला, मुनिफ।

मध्या(स्त्री०)=मध्यमा।

मध्याह्न (पु०)—दोपहर।

मध्वासव(पु०)—मधूकपुष्पकृत आसव, माध्वीक नामक शराब।

मन्(१प०,१०आ०)—पूजा करना, अह-कार करना, सत्कार करना। ६, ४ आ०—बोध होना।

मनन (न०)—अनुचिन्तन, विचारणा, अभ्यास करना, जानना।

मन:शिल-ला=मैनशिल नामक औषध

मनस् [:] (न०)—सम्पूर्ण इन्द्रियों का प्रेरक अन्तरिन्द्रिय, मन, चित्त, ग्यारहवीं इन्द्रिय।

मनसा(स्त्री०)—आस्तीक मुनिकी माता जरत्कारु मुनि की पत्नी, वासुकि की बहिन।

मनसिज(पु०)—कामदेव, अनग।

मनसिशय(पु०)—पूर्ववत्।

मनस्ताप(पु०)—अनुताप, मनकी पीड़ा

मन[न:] स्थ (वि०)—मन में स्थित, अन्तःकरणस्थित।

मनस्विन् [स्वी](वि०)—प्रशस्तमनस्क, पण्डित, दाना, बड़े दिल वाला।

मनस्विनी (स्त्री०)—दाना स्त्री, धर्मात्मा स्त्री, दुर्गा, चन्द्रमा की माता

मनाक्(अ०)—ईषत, थोड़ा, अल्प,मन्द

मनायी-वी(स्त्री०)—मनु की स्त्री।

मनित(वि०)—ज्ञात,जाना हुआ।[चाह

मनीषा(स्त्री०)—बुद्धि, इच्छा, अक्ल,

मनीषी[न्] (वि०)—पण्डित, बुद्धियुक्त, मनीषावाला।

मनु (पु०)—एक प्रजापति, धर्मशास्त्र का निर्माता एक मुनि, ब्रह्मा से उत्पन्न मुनि। स्त्री०—मनु की स्त्री

मनुज (पु०)—मनुष्य, आदमी। वि०—मनु से उत्पन्न।

मनुराट् [ज्] (पु०)—कुबेर।

मनुषी-ष्यी (स्त्री०)--मानुषी, मनुष्य की स्त्री, नारी।
मनुष्य(पु०)--जन, आदमी, नर, मानव
मनुष्यधर्मा[न्] (पु०)--धन का राजा, कुवेर। [यज्ञ।
मनुष्ययज्ञ(पु०)-अतिथिपूजन,अतिथि-
मनोजव-जवस(वि०)-पितृतुल्य, पिता के सदृश, अतिशय वेगवाला।
मनोजवा(स्त्री०)-अग्निकी एक जिह्वा, कार्त्तिकेय की माताओं का भेद, वेगवती स्त्री।
मनोज्ञ (वि०)-मनोहर, सुन्दर, रमणीक, मंजल, रुचिर।
मनोज्ञा(स्त्री०)-मन शिला, मदिरा।
मनोभव-योनि(पु०)=मनसिज।
मनोरथ (पु०)-इच्छा, ख्वाहिश, मन की अभिलाषा।
मनोरम(वि०)--मन को रमाने वाला, मनोहर, चारु, रुचिर।
मनोरमा (स्त्री०)- गोरोचना, बुद्धिशक्तिविशेष एक ग्रन्थ का नाम।
मनोहर (वि०) -मनोज्ञ, सुन्दर,रुचिर न०--सोना,स्वर्ण। पु० -कुन्दवृक्ष।
मनोहरा (स्त्री०)--चमेली, पीले रंग की जूही।
मनोहर्त्ता [तृ] (वि०)--मन को हरने वाला, मनोहर।
मनोहारी [न्] (वि०)--पूर्ववत्।
मन्तव्य (वि०) -मननीय, विचार्य, मानने के योग्य। न०--विचार
मन्ता[तृ](वि०)--विद्वान्,मानने वाला।
मन्तु (पु०)--अपराध, कसूर, मनुष्य, प्रजापति, प्रजा का मालिक।
मन्त्र (पु०) -वेदभेद, गुप्तभाषण, सलाह, सम्मति।
मन्त्रकृत् (पु०) -मन्त्री, वजीर। वि०-सलाह करने वाला।
मन्त्रगूढ (पु०)--गुप्तचर, दूत।
मन्त्रगृह (न०)--सलाह करने का घर, मन्त्रणागार।
मन्त्रजिह्व (पु०)- अग्नि, आग।
मन्त्रज्ञ (वि०)--मन्त्र का जानने वाला। पु०--दूत, चर।
मन्त्रण या=सलाह, एकान्त में कर्त्तव्यकर्म का निश्चय करना
मन्त्रदाता [तृ] (वि०)--मन्त्र देने वाला, गुरु। [किया हुआ।
मन्त्रपूत (वि०)-मन्त्र द्वारा पवित्र
मन्त्रविद् (वि०)--मन्त्र का जानने वाला, दूत, चर।
मन्त्री [न्] (पु०)--अमात्य, वजीर,
मन्थ (उप०)-विलोडन करना,बिलोना, मथना।
मन्थ (पु०)--मथनदण्ड, मथानी, सूर्य, आक का पेड़, बिलोना, एक प्रकार का क्वाथ।
मन्थज (न०)--नवनीत, मक्खन।
मन्थन (पु०)--मथानी, विलोने का दण्डा, रई। न०--बिलोना,मथना।
मन्थनघटी (स्त्री०)--दही बिलोने का पात्र, दही की मटकी।
मन्थर(वि०)-मन्द, मूर्ख, सूचक, चालनि वाला,बेवकूफ, टेढ़ा। पु०-

मम (अ०)–मेरा, मदीय।
ममता(स्त्री०)[ममत्व]–अपने का ध्यान, मोह, स्नेह, प्यार, अभिमान।
ममतायुक्त(वि०)–मोहयुक्त,अभिमानी।
मय् (१आ०)–गमन करना, जाना।
मय (पु०)–एक दैत्य का नाम, अश्वतर, ऊंट।
मया (स्त्री०)–चिकित्सा, इलाज।
मयी (स्त्री०)–मय की स्त्री जाति जैसे उष्ट्री, ऊटनी, अश्वतरी।
मयु (पु०)–किन्नर, मृग, हरिण।
मयुराज (पु०)–किन्नरों का राजा, कुबेर। [लपट, शोभा।
मयूख (पु०)–किरण, चमक, ज्वाला,
मयूर (पु०)–मोर, नीलकण्ठ, सूर्य-शतक का कर्ता एक कवि, पुष्प-विशेष।
मयूरक(न०)–अञ्जनविशेष, तूतिया। पु०–अपामार्ग, चिरचिटा।
मयूरचूडा (स्त्री०)–मयूरशिखा।
मयूरारि (पु०)–मोर का शत्रु, कृकलाश, गिरगिट। [मोरनी।
मयूरी (स्त्री०)–मयूर की स्त्रीजाति,
मरक (पु०)–दैविक तथा भौतिक उपद्रवों से उत्पन्न प्राणियों का बिना समय मरना, मारि का भय। [पन्ना।
मरकत(न०)–हरे रंग की एक मणि,
मरण (न०)–शरीर से आत्मा का अलग होना, मौत, वत्सनाभ नामक विष।
मरन्द(पु०)–मकरन्द, फूलों का रस।
मराल (पु०)–राजहंस, कारण्डव नामक पक्षी, घोड़ा, खल,बादल, अनार का वन। वि०–चिकना, नर्म। [तीक्ष्ण द्रव्य।
मरि[री]च (न०)–मिर्च नाम से प्रसिद्ध
मरिमा (स्त्री०)–मृत्यु, मौत।
मरीचि(पु०)–सप्तर्षियों में से ब्रह्मा का मन से उत्पन्न सब से बड़ा पुत्र, एक मुनि, सूम। अवली०–किरण, रश्मि।
मरीचिका (स्त्री०)–मृगतृष्णा,मृगजल, सूर्य की किरणों में पानी का भ्रम होना।
मरु (पु०)–पर्वत, निर्जल देश, मारवाड़ प्रदेश, कुरवक वृक्ष। [स्त्री।
मरुटा-वटा (स्त्री०)–ऊंचे माथे वाली
मरुत (पु०)–वायु, पवन, पादप का वृक्ष।
मरुत् (पु०)–वायु, हवा, देवता। [मारुत का भी यही अर्थ है]।
मरुत्त (पु०)–चन्द्रवंशी एक राजा, करवे का वृक्ष। [का मार्ग।
मरुत्पथ (पु०)–आकाश, देवताओं
मरुत्पाल (पु०)–देवताओं का पालनकर्ता अर्थात् इन्द्र।
मरुत्पुत्र (पु०)–भीमसेन।
मरुत्फल (न०)–घनोपल, ओला।
मरुत्वत [वान्] (पु०)–इन्द्र।
मरुत्सख (पु०)–इन्द्र, अग्नि, चीते का पेड़।
मरुदान्दोल (पु०)–वायु को हिलाने वाला अर्थात् पंखा, व्यजन।

मरुदिष्ट (पु०)–देवताप्रिय, गुग्गुल।
मरुभू-भूमि (स्त्री०)–मारवाड़ प्रदेश, जलरहित पृथिवी, रेतीलाजंगल।
मरुभूरुह् (पु०)–करील का पेड़।
मर्क् (१प०)–जाना, गमन करना।
मर्कट (पु०)–वानर, बन्दर, मकड़ी, एक पक्षी।
मर्कटतिन्दुक (पु०)–कुपीलु, कुचला।
मर्कटशीर्ष (न०)–हिंगुल, शिंगरफ।
मर्कटी (स्त्री०)–कपिकच्छु, कौंच की फली।
मर्कर (पु०)–भृंगराज का वृक्ष।
मर्करा (स्त्री०)–बांझ औरत।
मर्जू (पु०)–धोबी, रजक।
मर्त्त (पु०)–मनुष्य, भूलोक।
मर्त्य (पु०)–मनुष्य।
मर्द्दन (न०)–गात्रपादादि का दबाना, मलना, चूरा करना, पीसना।
मर्द्दित (वि०)–मला गया, पीसा गया, चूर्णित, दबाया हुआ।
मर्म [न्] (न०)–स्वरूप, तत्व, सन्धिस्थान, जीवस्थान।
मर्मज्ञ (वि०)–तत्त्वज्ञ, मर्म [छिपी हुई बात] को जानने वाला, [मर्मवित् का भी यही अर्थ है]।
मर्मर (पु०)–कपड़ों और पत्तों से जो शब्द निकलता है, मड़मड़।
मर्मस्पृक् [श्] (वि०)–जो जीवस्थान को स्पर्श करता है, मर्मपीडक।
मर्माविध्-द् [ध्] (वि०)–मर्मस्थान के वेधन करने वाला, मर्मज्ञ।
मर्य्या (अ०)–सीमा, हद्द।

मर्य्यादक (वि०)–मर्यादाकर्त्ता, मर्याद बांधने वाला।
मर्यादा (स्त्री०)–न्याययुक्त पथ में रहना, सीमा में रहना, सीमा, हद्द, कूल, तट। [काबू करना।
मल् (१ आ०)–धैर्य करना, पकड़ना,
मल (अस्त्री०)–पाप, गुनाह, पुरीष, विष्ठा, लोहे आदि का मल [जंग], शरीर में उत्पन्न श्लेष्म स्वेदादि कफ, कृमि, मूत्र, वातादि तीन दोष, मैल।
मलघ्न (वि०)–मल के साफ करने वाला। पु०–शाल्मलिकन्द।
मलद्रावी [न्] (पु०)–जयपाल, जमालगोटा। [छीना, शामियाना।
मलन (न०)–पीसना, कुचलना। पु०–
मलपृष्ठ (न०)–ग्रन्थ का प्रथम पृष्ठ, टाइटिलपेज।
मलभुज् (पु०)–काक, कौआ।
मलमल्लक (पु०)–कौपीन, लंगोटी।
मलमास (पु०)–अधिक मास, बढ़ा हुआ मास, लौंद का महीना।
मलय (पु०)–भारत के दक्षिण में एक पर्वतमाला, मालाबार, वाटिका।
मलयज-उद्भव (न०)–चन्दन, चन्दन।
मलयाचल-अद्रि-गिरि-पर्वत (पु०)–मलय नामक पहाड़।
मलवासस् (स्त्री०)–रजस्वला नारी।
मलाका (स्त्री०)–हथिनी, दूती, प्रेमवती स्त्री।
मलारि (पु०)–खारी वस्तु जिस से मैल कटता है।

मलि (स्त्री०)–फ़ख्ज़ा, विलास।
मलिक (पु०)–राजा, हाकिम।
मलिन (वि०)–मैला, गन्दा, अपवित्र, अस्वच्छ, दूषित, मलयुक्त, पापी, नीच। न०–पाप, सुहागा।
मलिनता–त्व=मैलापन, गन्दापन।
मलिनमुख (वि०)–क्रूर, नीच, जिस की चेष्टा बिगड़ गई हो। पु०–अग्नि, भूत, गोलांगूल।
मलिनित (वि०)–मैला, खराब, क्रूर।
मलिम्लुच (पु०)–चौर, लुटेरा, राक्षस, मच्छर, मलमास, वायु, अग्नि, चित्रकवृक्ष, पाला, पञ्चयज्ञों को न करने वाला ब्राह्मण।
मलिष्ठा (स्त्री०)–रजस्वला स्त्री।
मलीमस (वि०)–मैला, गन्दा, अपवित्र, मलयुक्त।
मल्ल्(१आ०)–पकड़ना, धारण करना।
मल्ल (वि०)–मज़बूत, कसरती। पु०–पहलवान, वर्तन, कपोल, वर्णसंकरभेद, देशविशेष।
मल्लक्रीड़ा (स्त्री०)–जमनास्टिक, कुश्ती। [अखाड़ा।
मल्लभूमि (स्त्री०)–युद्धस्थल,
मल्लयुद्ध (न०)–कुश्ती, बाहुयुद्ध, पहलवानों की लड़ाई।
मल्लार (पु०)–मलहार राग।
मल्लि [ल्ली] (स्त्री०)–मालतीभेद।
मल्लिका (स्त्री०)–ऐसा हंस जिसका शरीर काला, चोंच और चरण लाल होते हैं, मालतीभेद, दीयट।
मल्लीकर (पु०)–तस्कर, चोर।
मल्लु (पु०)–रीछ, भालू।
मश् (१ प०)–भिनभिनाना।
मश (पु०)–मच्छर, भिनभिनाहट, क्रोध।
मशक (पु०)–मच्छर, त्वचारोगभेद, पानी भरने का चमड़े का पात्र।
मशहरी (स्त्री०)–मच्छरों से बचने के लिये जो परदा पलंग के चारों ओर ताना जाता है।
मशुन (पु०)–कुत्ता, कुक्कुर।
मष् (पु०)–नष्ट करना, मारना।
मषि-षी-शी=मसी।
मस् (४ प०)–मापना, तोलना।
मस (पु०)–माप, वज़न, बाट।
मसरा (स्त्री०)–मसूर, मसूर की दाल।
मसि-सी (अक्लीं०)–रोशनाई, कज्जल।
मसिक (पु०)–साँप का बिल।
मसिधान-धानी (स्त्री०)–दावात।
मसिपथ्य (पु०)–लेखक, मुहर्रिर।
मसिपथ (पु०)–कलम, पेन।
मसु [सू] र (पु०)–मसूर की दाल।
मसूरिका (स्त्री०)–मशहरी, कुट्टनी, चेचकरोग।
मसृण (वि०)–चिकना, स्निग्ध।
मस्क् (१ प०)–जाना, हरकत करना।
मस्कर (पु०)–बांस, गति, हरकत, ज्ञान, खोखला बांस।
मस्करी [रिन्] (पु०)–संन्यासी, चांद।
मस्ज् (६ प०) [मज्जति]–नहाना, डुबकी लगाना, डूबना, गोते मारना।
मस्त (न०)–शिर, मस्तक।
मस्तक (अस्त्री०)–खोपड़ी, माथा, शिर, चोटी।

मस्त [क] मूलक (न०)–मर्दन ।
मस्तकस्नेह(पु०)–दिमाग़ मस्तिष्क ।
मस्ति (स्त्री०)–मापना, तौलना ।
मस्तिष्क (न०)–दिमाग़ ।
मस्तु (न०)–छाछ, दही का पानी ।
मह् (१ प०, १०उ०)–पूजना, इज्जत करना, खुश करना, बढ़ाना । १ आ०–बढ़ना, उगना ।
मह (पु०)–त्योहार, उत्सव, यज्ञ-स्तुति, भैंसा, प्रभा ।
महक (पु०)–कछुआ, प्रसिद्ध पुरुष, विष्णु ।
महक्क(वि०)–महक, फैली हुई खुशबू ।
महत् (वि०)–बड़ा, चौड़ा, बहुत, विपुल, अधिक, लम्बा, वसीह, घना, ज़ोर का, ऊंचा । पु०–महान्, महान्तौ, महान्तः] । पु०–रुद्र, शिव, सांख्य में महत्तत्त्व । न०–बड़प्पन, आधिक्य, राज्य, वेदज्ञान [महत् तत्पुरुष समास में ज्यों का त्यों रहता है, किन्तु कर्मधारय और बहुव्रीहि समास में 'महा' में परिवर्तित हो जाता है] ।
महत्तत्त्व (न०)–सांख्य में वर्णित २५ तत्त्वों में का दूसरा ।
महत्तर (वि०)–अधिक बड़ा । पु०–गाव का प्रधान, ग्रामाध्यक्ष ।
महत्त्व (न०)–बड़प्पन, गौरव, बड़ाई, ऊंचाई । [प्रासाद ।
महदावास (पु०)–बड़ा मकान, महल,
महदाशा(स्त्री०)–बड़ी आशा ।
महदाश्चर्य(वि०)–बड़े अचम्भे वाला ।
महनीय (वि०)–पूजनीय, शरीफ, उच्चपदस्थ ।
महन्त(पु०)–मठ का अध्यक्ष,आचार्य ।
महर्लोक(पु०)–भूः आदि सात लोकों में चौथा ।
महर्षि(पु०)–ऋषियों में श्रेष्ठ, ब्रह्मज्ञानी, वेदव्यासादि ।
महल्लक (पु०)–बड़ा मकान, महल । वि०–कमज़ोर, दुर्बल ।
महस् (न०)–उत्सव, पर्व, त्यौहार, यज्ञ, चतुर्थ भुवन, बड़प्पन, जल, अधिकता ।
महा(स्त्री०)–गाय, गौ ।
महाकर (वि०)–बड़े हाथों वाला, बड़े कर [आय] का ।
महाकर्ण (पु०)–शिव, महादेव ।
महाकर्म [न्] (वि०)–बड़े काम करने वाला । पु०–शिव । [रात्रि ।
महाकला(स्त्री०)–शुक्लाद्वितीया की
महाकवि(पु०)–बड़ा कवि, प्रसिद्ध या प्राचीन कवि, शुक्राचार्य ।
महाकाय (वि०)–जसीम, बड़ी देह वाला । पु०–हाथी, नन्दि ।
महाकार(वि०)–वसीह, चौड़ा, दीर्घकाय, जसीम । [पूर्णिमा ।
महाकार्तिकी (स्त्री०)–कार्तिकशुक्ला
महाकाल(पु०)–अनवच्छिन्न काल, लगातार समय, शिव, भैरव ।
महाकाव्य(न०)–आठ से अधिक सर्गों वाला ग्रन्थ, प्राचीन ग्रन्थ ।
महाकुमार(पु०)-युवराज,ज्येष्ठराजपुत्र।

महाकुल (वि०)–कुलीन, उच्चवंशज। न०–उच्च कुल।
महागज(पु०)–बड़ा हाथी, दिग्गज।
महागन्ध(वि०)–बड़ी गन्ध वाला।
महागल (वि०)–बड़ी गर्दन वाला।
महागुरु(पु०)–माता, पिता और आचार्य–ये तीन महागुरु कहलाते हैं।
महाग्रीवी [न्] (पु०)–ऊंट।
महाघोष (वि०)–बड़े शोर से भरा हुआ। न०–बाज़ार, हट। पु०–गर्जना, दहाड़।
महाङ्ग (वि०)–बड़े अंग वाला, फैले हुए अंग वाला। पु०–ऊंट।
महाचक्रवर्त्ती [न्] (पु०)–ऐसा सम्राट् जिस का राज्य चक्रवर्त्ती हो।
महाच्छाय(पु०)–बड़ का पेड़।
महाजन (पु०)–पबलिक, जनसमूह, बड़ा आदमी, जाति का प्रधान, व्यापारी, जनसाधारण। [ऋषि।
महाज्ञानी [न्] (वि०)–महापण्डित,
महातपस्(पु०)–बड़ा तपस्वी।
महातेजस् (वि०)–बड़े तेज वाला, महापराक्रमी। पु०–योद्धा, अग्नि। न०–पारा।
महात्मा [न्] (वि०)–महानुभाव, तेजस्वी, महाशय, नेक। पु०–परमात्मा।
महात्यय(पु०)–बड़ा ख़तरा।
महादेव(पु०)–बड़ा देवता, शिव।
महादेवी(स्त्री०)–पार्वती, पटरानी।
महाद्रुम(पु०)–बड़ का पेड़।
महाधन (वि०)–अमीर, भड़कीला। न०–क़ीमती पोशाक, स्वर्ण, खेती।
महाधातु(पु०)–स्वर्ण, शिव, मेरु।
महानद(पु०)–बड़ा दरिया।
महानदी(स्त्री०)–बड़ी नदी जैसे गंगा, सिन्धु आदि।
महानन्दा(स्त्री०)–एक नदी का नाम।
महानरक(पु०)–२१ नरकों में से एक।
महानवमी (स्त्री०)–आश्विन शुक्ला नवमी, दुर्गानवमी।
महानस(पु०)–रसोईघर, बावर्चीख़ाना।
महानाद (पु०)–बड़ा शोर, हुल्लड़, ऊंट, हाथी, सिंह।
महानिद्रा (स्त्री०)–मृत्यु, अनन्तनिद्रा।
महानिर्वाण(न०)–बौद्धों के अनुसार जीव का अत्यन्ताभाव।
महानिशा(स्त्री०)–रात्रि के पिछले दोपहर, बड़ी रात्रि।
महानीच(पु०)–धोबी।
महानुभाव (वि०)–उदारहृदय, सच्चरित्र, नेक। पु०–प्रतिष्ठित पुरुष, महाजन।
महान्तक(पु०)–मृत्यु, शिव।
महापक्षी(पु०)–उल्लू, उलूक।
महापथ (पु०)–बड़ा मार्ग, राजमार्ग, बड़ी सड़क।
महापातक(न०)–बड़ा पाप, यथाः–ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वङ्गनागमः। महान्ति पातकान्याहुस्तत्संसर्गश्च पञ्चमः॥ मनु०११,५४
महापात्र-अमात्य(पु०)–महामन्त्री, प्रधान मन्त्री। [जो १८ हैं।
महापुराण (न०)–पुराण नामक ग्रन्थ

महापुरुष(पु०)–महात्मा, बड़ा पुरुष, जातीयनेता।

महाप्रभु(पु०)–सरदार, बड़ा स्वामी, राजा, परमात्मा।

महाप्रलय(पु०)–ब्रह्मा का एक दिन समाप्त होजाने पर सर्व भूतों और लोकों का लय।

महाप्रसाद (पु०)–बड़ा नजराना, देवता के निमित्त भोज्य पदार्थ।

महाप्रस्थान(न०)–मृत्यु, मौत।

महाप्राण(पु०)–द्रोणनामककाकविशेष, वर्ग का दूसरा व चौथा अक्षर।

महाफल (पु०)–बिल्ववृक्ष, बेल का दरख्त। [इन्द्रायण।

महाफला (स्त्री०)–इन्द्रवारुणी,

महाबल (वि०)–बड़े बल वाला। पु०–वायु,हवा, बुद्ध। न०–सीसा, सीसक।

महाब्राह्मण(पु०)–निन्दित ब्राह्मण, अचारज,मृतक का दान लेनेवाला।

महाभट(पु०)–अतिशय योद्धा।

महाभारत (न०)–व्यासदेवरचित प्रसिद्ध इतिहासग्रन्थ।

महाभीता (स्त्री०)–लज्जावती की लता, छुईमुई।

महाभीम(पु०)--शान्तनुराज, भृङ्गि नामक शिव का द्वारपाल। वि०–अत्यन्त डरावना।

महाभूत (न०)–पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पंचभूत।

महामति(वि०)–अधिक बुद्धि वाला, अतिशय चतुर।

महामनाः[स्] (वि०)–महाशय, खुला दिल, दिलावर, फ़ैयाज़।

महामात्र (वि०)–माप में बड़ा, बहुत उम्दा। पु०–प्रधानामात्य, बड़ा वज़ीर, हाथियों का चलाने वा रखने वाला।

महामाया(स्त्री०)–दुर्गा, चण्डी।

महामारी(स्त्री०)–महाकाली, अतिशय मारकरोग।

महामुनि (पु०)–अगस्त्य, बुद्ध, कृपाचार्य,व्यास। न०–औषध,धनिया।

महामोह(पु०)–बड़ा मोह, तामसकी, सांसारिक विषयों में प्रीति कराने वाला एक प्रकार का अज्ञान।

महायज्ञ (पु०)–बड़ा यज्ञ, प्रतिदिन करने योग्य पञ्चयज्ञों का नाम जिन के नाम ये हैं:-ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और नृयज्ञ।

महारथ(पु०)–बड़ा रथ, ऐसा सेनानी जिसके साथ१००००योद्धा हों,शिव।

महारस (पु०)–खजूर, गन्ना, पारा, काञ्जिक, कांजी।

महाराज (पु०)–बड़ा राजा, सम्राट, सम्बोधन में राजाओं और शासकों तथा आचार्यों के लिये प्रयुक्त होता है।

महाराजाधिराज (पु०)–राजाओं का राजा, चक्रवर्ती सम्राट्।

महाराज्ञी (स्त्री०)–सम्राज्ञी, महारानी, पटरानी।

महारात्र (न०)–निशीथ, अर्द्धरात्रि।

महारात्रि[त्री] (स्त्री०)=महाप्रलय।

महाराष्ट्र (पु०)-बड़ा राज्य, मरहठों का देश, गजपिप्पली, मरहठों की बोली।
महारोग (पु०)-असाध्यरोग, महापाप से उत्पन्न मृगी आदि आठ भयंकर रोग। [नों से एक।
महारौरव (पु०)-२१ प्रकार के नरकों
महालोल (पु०)-काक, कौआ।
महालोह (न०)-चुम्बक लोहा।
महावन (न०)-वृन्दावन के पास एक प्राचीन वन।
महावीर (पु०)-बड़ा योद्धा, शेर, इन्द्रवज्र, हनूमान्, गरुड़, एक नाटक का नाम।
महावीर्य (वि०)-महापराक्रमी। पु०-ब्रह्मा, परमात्मा।
महाव्याधि (पु०)-काला कोढ़।
महाव्याहृति (स्त्री०)-भूः भुवः स्वः नाम के तीन शब्द।
महाव्रण (न०)-दुष्ट व्रण,बड़ा फोड़ा।
महाव्रत (न०)-आश्विनमास में दुर्गापूजा आदि, १२ वर्ष का एक व्रत।
महाशठ (पु०)-राजधतूरा।
महाशय (वि०)-बड़े आशय वाला, महानुभाव, उदार, फ़ैयाज़।
महाशूद्र (पु०)-आभीर, अहीर।
महासत्त्व (वि०)-शरीफ़, कुलीन, सुशिक्षित। पु०-बड़ा जानवर, शाक्यमुनि, कुबेर।
महासमुद्र (पु०)-महासागर।
महासान्धिविग्रहिक (पु०)-परराष्ट्र-सचिव, दूसरे राज्यों से युद्ध और सन्धि करने वाला राजमन्त्री।
महासाहस (न०)-बड़ा साहस, उजड्डपन।
महासेन(पु०)-कार्तिकेय,बड़ा लशकर।
महि(अस्त्री०)-बड़प्पन। पु०-समझ, प्रतिभा, बुद्धि। स्त्री०-[मही]-पृथ्वी, भूमि।
महिका(स्त्री०)-पाला, कुहरा।
महित(वि०) -पूजित, आदृत।
महिमा [मन्] (पु०)-बड़प्पन, गौरव, शक्ति, बल, उच्चपद, अष्टसिद्धियों में से एक।
महिर (पु०)--सूर्य, अर्क वृक्ष।
महिला (स्त्री०)--स्त्री, नारी, लेडी, रेणुका।
महिष (पु०)--भैंसा, एक दैत्य।
महिषध्वज-वाहन (पु०)-यमराज जिस की सवारी महिष है।
महिषासुर (पु०)—एक दैत्य।
महिषी (स्त्री०)-- भैंस, रानी, सैरिन्ध्र, असती स्त्री,वह रानी जिस का राजा के साथ अभिषेक किया गया हो।
मही (स्त्री०)—पृथ्वी, भूमि, जमीन, जायदाद।
महिक्षित् (पु०)--राजा, शासक।
महीज (पु०)- मगल ग्रह, वृक्ष, नरकासुर। न०--गीला अदरक।
महीतल (न०)--ज़मीन की सतह।
महीधर (पु०)--पर्वत, पहाड़।
महीध्र (पु०)—पूर्ववत्।

महीपति-पाल-भुज् (पु०)-राजा ।
महीप्राचीर (न०)-समुद्र, सागर।
महीभृत् (पु०)-राजा, पर्वत ।
महीला-हेला-हेलिका (स्त्री०)-नारी
महीसुर (पु०)-भूदेव, ब्राह्मण ।
मा (अ०)-वारण, रोकना, मना करना, मत, निषेध । यह शब्द विशेषकर लोट् के साथ आता है, लुङ् के साथ भी आता है, तब उस के 'अ' का लोप हो जाता है, कभी २ 'अ' का लोप नहीं भी होता ।
मा (स्त्री०)-लक्ष्मी, धन की अधिष्ठात्रीदेवी, माता, माप।
मा (२.प०, ३, ४ आ०)-मापना, तौलना, परिमित करना, बाट से वज़न मालूम करना, तरतीब देना, बनाना, दिखलाना ।
मांस (न०)-गोश्त, शरीर की एक धातु, फल का गुद्दा । पु०-कीड़ा, क़साई, काल ।
मांसज (न०)-मांस से उत्पन्न चर्बी।
मांसप (पु०)-राक्षस, पिशाच ।
मांसरस (पु०)-शोरबा ।
मांसल (वि०)-बलवाला, ज़ोरावर, स्थूल, मोटा ।
मांससार-स्नेह (पु०)-चर्बी ।
मांसहासा (स्त्री०)-चमड़ा, त्वचा ।
मांसाद्-भक्षक (पु०)-गोश्तख़ोर, सूअर, मांसाहारी ।
मांसिक (पु०)-सूअर,क़साई, खटीक ।
मांसौदन (पु०)-मांस के साथ पकके हुए चावल ।
माकन्द (पु०)-आम का पेड़ ।
माक्षि [क्षी] क (वि०)-मक्खी से उत्पन्न । न०-शहद ।
माक्षिकज (पु०)-सिक्थक, मोम।
मागध (वि०)-मगधदेश में उत्पन्न। पु०-मगधदेशनिवासी, वहां का राजा, चारण, भाट ।
मागधा-धिका (स्त्री०)-पिप्पली ।
मागधी (स्त्री०)-पिप्पली, शर्करा, खांड, प्राकृतभेद, एक बोली, छोटी इलायची ।
माघ (पु०)-एक चांद्रमास जो जनवरी या फर्वरी के लगभग होता है, शिशुपालवध काव्य का रचयिता एक कवि ।
माघवती (स्त्री०)-पूर्वदिशा ।
माघी(स्त्री०)-मघा नक्षत्रयुक्त पूर्णिमा, माघ की पूर्णिमा ।
माघ्य (न०)-कुन्दपुष्प,कुन्द का फूल ।
माङ्गल्य (वि०)-मङ्गल के लिये हित-कर, मङ्गलमय,मंगल का साधन ।
माचल (पु०)-बन्दी, चोर, रोग,ग्रह ।
माचिका (स्त्री०)-मक्खी, मक्षिका ।
माञ्जिष्ठ (न०)-मजीठ से रंगा हुआ द्रव्य, लाल रंग ।
माठर (पु०)-सूर्य के आसपास रहने वाला गणविशेष ।
माणव (पु०)-मनुष्य, कम उम्रवाला आदमी, बालक, एक प्रकार का हार ।
माणवक (पु०)-सोलह वर्ष तक के मनुष्य का बोधक,शिशु, कुमार ।

माणवीन (वि०)-शिशुसम्बन्धी, बालक का ।

माणव्य(न०)-बालकसमुदाय,बालकों का समूह । [विशेष ।

माणिक्य(न०)-माणिक, लाल,रत्न-

माणिक्या(स्त्री०)-छिपकली, गृहगोधिका । [सेंधा नमक ।

माणिबन्ध[मन्थ](न०)-सैन्धवलवण,

मातङ्ग (पु०)-गज, हाथी, अश्वत्थवृक्ष,एक प्रकार की भीलों की जाति ।

मातरपितरौ (पु० द्वि०)-माता और पिता, जनक तथा जननी ।

मातरिश्वा [न्] (पु०)-वायु, पवन ।

मातलि (पु०)-मतल की सन्तति, इन्द्र का सारथि ।

माता [तृ] (स्त्री०)-जननी,मातर,मा, पृथ्वी, विभूति, लक्ष्मी । वि०-मापने वाला, ज्ञाता ।

मातामह(पु०)-माता का पिता,नाना

मातामही(स्त्री०)नानी,माताकी माता।

मातुल (पु०)-माता का भाई, मामा।

मातुलक (पु०)-धतूरे का पेड़ ।

मातुलपुत्रक (पु०)-धतूरे का फल ।

मातुला-लानी-ली(स्त्री०)-मातुल की स्त्री,मामी,कलाय [मटर] नामक अन्न, भांग ।

मातुलुङ्ग (पु०)-बिजौरा नींबू, एक प्रकार का नींबू, दाड़िम ।

मातृ [ता] (वि०)-प्रमाणकर्ता,ज्ञाता, निर्माता । स्त्री०-मा, जननी, पृथ्वी, विभूति, लक्ष्मी ।

मातृका (स्त्री०)-उपमाता धाय,दाई, जननी, माता,अकारादि ४९ वर्ण, स्वर ।

मातृनन्दन (पु०)-कार्त्तिकेय, स्कन्द ।

मातृष्वसा [सृ] (स्त्री०)-माता की बहिन, मौसी ।

मातृष्वस्रेय(पु०)-मौसी का लड़का, मौसेरभाई नाम से प्रसिद्ध । [मातृष्वस्रीयका भी यही अर्थ है

मात्र (न०)-सम्पूर्णता, अवधारण, अल्प, माप, परिमाण ।

मात्रा (स्त्री०)-परिमाण,अक्षरावयव, ह्रस्व,दीर्घ, प्लुत इनका बोधक ।

मात्सर्य (न०)-दूसरों के गुणों को देख कर द्वेष करना, हसद करना ।

मात्सिक (वि०)-मत्स्यघातक, मछली मारने वाला ।

माथ (पु०)-रास्ता, मार्ग, बाट, बिलोना, मथना ।

माथुर (वि०)-मथुरा में रहने वाला, वा मथुरा से आया हुआ ।

माद (पु०)-हर्ष, खुशी, अहङ्कार, घमण्ड, गरूर ।

मादक (वि०)-नशीला, उन्मत्तकारक । पु०-चातक पक्षी, दात्यूह पक्षी ।

मादन (न०)-लवंग, लौंग । पु०-कामदेव, धतूरे का पेड़ ।

मादनी (स्त्री०)-विजया, भंग ।

मादृश-श [शु] (वि०)-मुझ सा, मेरे समान ।

माद्री(स्त्री०)-पाण्डु की दूसरी भार्या जिससे नकुल और सहदेव का जन्म हुआ,अतीस नामक औषध।

माधव (पु०)–माया का पति, विष्णु, वसन्त, वैशाख का महीना, महुवे का पेड़।
माधविका-वी (स्त्री०)–माधवी की बेल, वासन्तीलता।
माधवोद्भव (पु०)–राजादनी, खिरनी नाम से प्रसिद्ध फल।
माधुर (न०)–मल्लिकापुष्प, चमेली का फूल।
माधुरी (स्त्री०)–मद्य, शराब।
माधुर्य्य (न०)–मधुरता, मीठापन, लावण्य, सुन्दरता।
माध्यन्दिन(न०)–मध्यदिन, दिन का बीच का भाग। स्त्री०–[नी]–शुक्लयजुर्वेदीय एक शाखा।
माध्वी(स्त्री०)–मद्य, सुरा, शराब।
माध्वीक(न०)–मधु, मध्वासव।
माध्वीकफल (पु०)–नारिकेलभेद, एक प्रकार का नारियल।
मान्(१ आ०)–विचार करना। १० उ–पूजा करना, अर्चन करना।
मान (न०)–परिमाण, माप, तौल का अंश, तौल, अहङ्कार, अभिमान, सम्मान, इज्ज़त।
मानग्रन्थि(पु०)–अपराध, भूल, गुनाह।
माननीय(वि०)–मानने के योग्य, पूजनीय, आदरणीय।
मानरन्ध्रा (स्त्री०)–समय के जानने के लिये एक ताँबे का कटोरा जिस की पेंदी में एक छेद होता है, आजकल कहीं २ पर इस का व्यवहार होता है।
मानव(पु०)–मनुष्य, आदमी।
मानवर्जित(वि०)–मानरहित, जिस की कुछ इज्ज़त न हो, नीच।
मानवी(स्त्री०)–मानुषी, नारीजाति।
मानव्य (न०)–मनुष्यों का समूह। वि०–मनुवंशीय।
मानस(न०)–मन, चित्त, कैलाश के निकट एक सरोवर। वि०–मनः-सम्बन्धी।
मानसव्रत(न०)–मन से किया हुआ व्रत, अहिंसा आदि कर्म।
मानसिक(वि०)-मनोभव,मनःसम्बंधी।
मानसौकाः[स्] (पु०)–मानस [सरोवर] है निवासस्थान जिस का अर्थात् हंस। [स्त्री।
मानिनी(स्त्री०)–फलीवृक्ष, मानवाली
मानी [नु] (वि०)–मानवाला, इज्ज़त वाला, अहङ्कारी, घमण्डी। पु०–सिंह, शेर।
मानुष(पु०)–मनुष्य, आदमी।
मानुष्य (न०)–मनुष्यता, मानुषपन, आदमियत।
मान्द्य(न०)–धीमापन, रोग, मन्दता, मूर्खता, कमी, न्यूनता।
मान्धाता[तृ] (पु०)–एक सूर्यवंशीय राजा का नाम, युवनाश्व का पुत्र। कहते हैं कि जब यह युवनाश्व के पेट से बाहर निकला तब ऋषियों ने कहा ' क एष धास्यति ' अर्थात् यह किस को धारण [पालन] करेगा, तब इन्द्र ने कहा कि ' मां धास्यति '

यानी मुझे धारण करेगा, तभी से इसका नाम मान्धाता पड़ गया।
मान्य (वि०)—माननीय, आदरणीय।
मापन (पु०)—तुला, कांटा जिस में स्वर्णादि तोले जाते हैं। न०—माप, परिमाण, तौल।
मामक(वि०)--मत्सम्बन्धी, मुझ से सम्बन्ध रखनेवाला,मेरा। [मामकीन का भी यही अर्थ है]।
माया(स्त्री०)—कपट, छल, मिथ्या-बुद्धि का कारण एक प्रकार का अज्ञान, कृपा, दम्भ, लक्ष्मी, बुद्ध की माता।
मायाकार-कृत (पु०)—ऐन्द्रजालिक, बाजीगर, मदारी।
मायावी [न्] (वि०)—माया रचने वाला, कपटी, दम्भी। पु०-मदारी, बाजीगर।
मायासुत(पु०)--माया का पुत्र, बुद्ध।
मायिक(वि०)--माया वाला, छली, कपटी। पु०--मदारी, बाजीगर। न०—मायाफल। [एक रोग।
मायु(पु०)--देहस्थपित्त, शरीरोष्मा,
मायूर(न०)--मोरों का समूह। वि०—मयूरसम्बन्धी, मोर वाला।
मायूरिक(वि०)--मयूरों को मारनेवाला, मोर पकड़ने वाला।
मार(पु०)-मृत्यु, मौत, विघ्न, रोक, कामदेव, धतूरा।
मारक (वि०)--मारनेवाला। पु०-उत्पात, मारि, एक पक्षी,बाज।
मारजित् (वि०)--कामदेव को जीतने वाला। [करना।
मारण (न०)—मारना, वध, कत्ल
मारि-री (स्त्री०)—मारना, मौत, मृत्यु, वध।
मारिचिक (वि०)—मरिच [मिर्च] से संस्कृत अर्थात् बना हुआ।
मारित (वि०)—मारा हुआ, नष्ट किया हुआ।
मारिषा(स्त्री०)—दक्ष की माता।
मारीच(पु०)—ताड़का नामी राक्षसी का पुत्र, रावण का नौकर, एक प्रकार का राक्षस।
मारुत(पु०)-मरुदेव,मरुत,पवन,हवा।
मारुतात्मज (पु०)--वायु का पुत्र, हनुमान्, भीमसेन। [मारुति का भी यह ही अर्थ है]।
मारुतापह (पु०)—वरुणवृक्ष, वरने का पेड़। वि०—वायुनाशक।
मारुताशन(पु०)—पन्नग, सांप।
मार्कण्ड-ण्डेय (पु०)—मृकण्डु मुनि का पुत्र,मार्कण्डेय नामक प्रसिद्ध ऋषि।
मार्कर-व (पु०)—भृंगराज, भंगरा।
मार्ग (१०उ०,१प०)—अन्वेषण करना, ढूंढना, तलाश करना, खोज करना।
मार्ग (पु०)—पन्था, रास्ता, शुद्धि, अन्वेषण, तलाश, मृगशिर नामक नक्षत्र। [महीना।
मार्गक (पु०)—मार्गशीर्ष, अगहन का
मार्गण (न०)—अन्वेषण, तलाश,खोज, मांगना, प्रणय, मुहब्बत करना, वि०—याचक, मांगने वाला। पु०-

बाण, तीर।

मार्गशिर-शीर्ष (पु०)–मृगशिर नक्षत्र वाली पूर्णिमा, ऐसी पूर्णिमायुक्त मास, अगहन मास ।

मार्गिक(वि०)–मृगों का मारने वाला, पथिक, मुसाफ़िर।

मार्गित (वि०)–ढूंढा हुआ, तलाश किया हुआ, अन्वेषित।

मार्ग्य (वि०)–मार्जनीय, शुद्धि करने के लायक, अन्वेषणीय, ढूंढने लायक।

मार्ज् (१० उ०)–मार्जन करना, साफ़ करना, मांजना, शब्द करना, धावाद् करना।

मार्ज (पु०)–विष्णु, रजक, धोबी।

मार्जन (न०)–मांजना, साफ़ करना। पु०–श्वेत तथा रक्त लोध्र।

मार्जना (स्त्री०)–मुरजध्वनि, मुरज की आवाज।

मार्जनी (स्त्री०)–सम्मार्जनी, बुहारी।

मार्जार [ल] (पु०)–बिलाव, बिडाल, चित्रक।

मार्जारक (पु०)–मयूर, मोर।

मार्जारी [ली] य (पु०)–बिडाल, बिलाव, शूद्र। न०–शरीर की सफ़ाई, कायशोधन। [हुआ।

मार्जित (वि०)–शोधित, साफ किया

मार्जिता(स्त्री०)–रसाला, एक प्रकार की चटनी। [शूकर।

मार्तण्ड (पु०)–सूर्य, आक का पेड़,

मार्त्तिक (वि०)–मृण्मय, मृत्तकानिर्मित, मिट्टी से बना हुआ। पु०–शराव, सकोरा, प्याला।

मार्दंगिक (वि०)–मृदंगवादक, मृदंग का बजाने वाला।

मार्दव (न०)–मृदुता, कोमलत्व, परदुःख को न सहारने से चित्त का द्रवीभूत होना पु०–वर्णसंकरभेद।

मार्ष्टि (स्त्री०)–शुद्धि, सफ़ाई।

माल (पु०)–जातिविशेष, देशविशेष। न०–क्षेत्र, खेत, हरताल, वन।

मालक (न०)–स्थलपद्म, एक प्रकार का कमल, नारियल का बना हुआ एक पात्र। पु०–निम्बवृक्ष, नीम का पेड़।

मालती (स्त्री०)–जाती नामक लता युवती स्त्री, चांदनी, एक नदी, रात। [सुहागा।

मालतीतीरज-सम्भव (पु०)–टंकण,

मालतीपत्री (स्त्री०)–जातिपत्री, जावित्री।

मालतीफल(न०)–जायफल,जातिफल।

मालभारिक (वि०)–मालाओं के बोझे वाला।

मालव (पु०)–अवन्ति नामक देश, मालवाप्रदेश,एक प्रकार का राग।

माला (स्त्री०)–श्रेणी, राजि, लेखा, पङ्क्ति, स्रक्, माला।

मालाकार (पु०)–माला को बनाने वाला पुरुष, माली।

मालिक (पु०)–माली, एक जाति, पक्षीविशेष। वि०–माला बनाने वाला।

मालिनी (स्त्री०)-माली की स्त्री, छन्दोभेद, गौरी, वियद्गङ्गा, जवासा नामक औषध, कण्व-ऋषि के आश्रम के निकट एक नदी। [वि०-माला वाला।
माली [नृ] (पु०)-माली, जातिभेद।
मालूर(पु०)-बिल्ववृक्ष,बेल का पेड़।
मालेय (वि०)-अच्छी माला बनाने वाला, मालारचना में चतुर।
माल्य (न०)-पुष्प, फूल, कुसुम, कुसुममाला, मूर्द्धस्थित सुमनमाला।
माल्यवान् [वत्] (पु०)-पर्वतविशेष, रावण का वज़ीर [अमात्य], राक्षसविशेष। वि०-माला वाला।
माशब्दिक (वि०)-मा [मत] शब्द को कहने वाला, मनह करने वाला, निषेधकर्त्ता।
माष (पु०)-धान्यभेद, उड़द परिमाणभेद, एक मासे की तौल, मूर्ख, त्वचा का एक रोग जो मस्सा नाम से प्रसिद्ध है।
माषपर्णी (स्त्री०)-वन उड़द, माषपर्णी नाम से प्रसिद्ध औषध।
माषवर्धक (पु०)-स्वर्णकार, सुनार।
माषश [स्] (अ०)-मासा मासा भर, प्रतिमाष।
माषीण-ष्य (न०)-माषक्षेत्र ऐसा खेत जिसमें उड़द उत्पन्न होते हैं।
मास् (पु०)-चन्द्र, चाँद, त्रिंशद्दिनात्मक काल, महीना।
मास (पु०)-चन्द्र, चाँद, महीना, चान्द्रमास,एक मासा[तौल में]।
मासर (पु०)-भक्तमण्ड, मांड, उबले हुए चावलों में से निकला हुआ पानी। [संक्रान्ति।
मासान्त (पु०) महीने का अन्त,
मासिक (वि०)-महीने में होने वाला, महीने का, माहवारी।
मासुरी(स्त्री०)-श्मश्रु,मूँछ,मातृभगिनी
मास्म(अ०)-निवारण,हटाना,रोकना।
माहाकुल-कुलीन (वि०)-बड़े कुल में उत्पन्न, महाकुलोद्भव।
माहात्म्य (न०)-बड़ापन, महिमा, तारीफ़, महत्त्व।
माहिर (अ०)-इन्द्र, अमरेश।
माहिष (वि०)-भैंसका, महिषसम्बन्धी [दुग्धादि]।
माहिष्य (न०)-क्षत्रिय द्वारा वैश्या में उत्पन्न पुत्र, वर्णसंकर,दोगला।
माहेन्द्र (पु०)-ज्योतिष में महेन्द्र सम्बन्धी एक समय, शुभदण्डविशेष। वि०-इन्द्रसम्बन्धी।
माहेन्द्री (स्त्री०)-पूर्व की दिशा, इन्द्रकी स्त्री, गौ।
माहेय (वि०)-महीसम्बन्धी, पृथ्वी का। पु०-मङ्गलग्रह, नरक नामक एक असुर। [शिव का।
माहेश्वर (वि०)-महेश्वर से प्राप्त,
माहेश्वरी (स्त्री०)-दुर्गा, मातृभेद।
मि(५ उ०)-फेंकना,धकेलना,क्षेपण।
मित (वि०)-परिमित, मापा हुआ, थोड़ा गया, फेंका हुआ, क्षिप्त।
मितंगम(वि०)-परिमित गामी,मापता हुआ जानेवाला। पु०--गज,हस्ती।

मितद्रु (पु०)—समुद्र, सागर।
मितम्पच(वि०)—मापकर पकाने वाला, कृपण, सूम।
मिताशन (वि०)--परिमितभोजी, तुला हुआ खाने वाला।
मिति (स्त्री०)--ज्ञान, मापना, विक्षेप, प्रमाण, गवाही, सबूत।
मित्र (न०)--बंधु, दोस्त, सुहृत, सखा।
मित्रयु(वि०)--मित्रवत्सल, मित्र का प्रिय। [सप्तमी।
मित्रसप्तमी (स्त्री०)--मार्गशीर्ष शुक्ला
मित्रा (स्त्री०)--सुमित्रा, लक्ष्मण की माता। [आपस में मिलना।
मिथ् (१ उ०)--वध करना, मारना,
मिथस् [:] (अ०)--रहसि, एकान्त में, अकेले में, आपस में।
मिथिला (स्त्री०)--अपने नाम से प्रसिद्ध राजधानी, तिरहुत, जनक राजा की नगरी।
मिथुन (न०)--स्त्रीपुरुष, जोड़ा, १२ राशियों में से तीसरी राशि।
मिथ्या (अ०)--अयथार्थ, झूठ, असत्य।
मिथ्याकोप(पु०)--बनावटी क्रोध।
मिथ्याग्रह (पु०) -निरर्थक आग्रह, कुछ का कुछ समझना।
मिथ्याग्रहण (न०)--कुछ का कुछ समझना।
मिथ्याचर्या (स्त्री०)--दम्भ, कपट।
मिथ्याचार(पु०)--अन्यथा चिकित्सा।
मिथ्याज्ञान (न०)--अशुद्धि, ग़लती, भूल, भ्रम।
मिथ्यादृष्टि (स्त्री०)--नास्तिकता।
मिथ्यानिरसन (न०)--क़सम खा कर इंकार करना। [आरोपण।
मिथ्यापवाद-अभियोग (पु०)--झूठा
मिथ्याप्रतिज्ञ (वि०)--वादेफ़रोश, झूठीप्रतिज्ञा करने वाला।
मिथ्यामति (स्त्री०)--संभ्रम, ग़लती।
मिथ्यायोग (पु०)--ग़लत इस्तैमाल।
मिथ्यावचन-वाक्य (न०)--झूठ, असत्य बातें।
मिद् (१ आ०, ४, १०उ०)-पिघलना, मोटा होना, प्रेम करना।
मिद्ध(न०)-सुस्ती, मन्दता।
मिन्न(वि०)-आसक्त, चिकना, मोटा, चर्बीदार।
मिन्व्(१ प०)-नम करना, छिड़कना, पूजना, अर्चित करना।
मिल्(६ उ०)--मिलना, जुड़ना, शरीक होना, एकत्र होना, संग करना।
मिलन (न०)-मेल, जोड़, संगति, संग, लगाव, एकत्र होना।
मिलित (वि०)-मिला हुआ, एकत्रीभूत, मिश्रित।
मिलिन्द (पु०)-मधुमक्खी, भौंरा।
मिश् (१प०) [मेशति]-शोर करना, क्रुद्ध होना, गुल मचाना।
मिश्र् (१० उ०)-मिलाना, जोड़ना, जुटाना, जमा करना।
मिश्र (वि०)-मिश्रित, मिला हुआ, सटा हुआ, जुड़ा हुआ। पु०-प्रतिष्ठित पुरुष, यशस्वी मनुष्य, विद्वान्, हस्तिभेद। न०-मिलावट, मिश्रण।

मिश्रक (वि०)–मिलित, मिलाने वाला, विविध । पु०–कम्पौण्डर । न०–इन्द्रोपवन ।
मिश्रण (न०)–मिलावट, मिलान, जोड़, जमा का क़ायदा ।
मिश्रित(वि०)–मिला हुआ, मिलित ।
मिष् (१प०)–तर करना, नम करना । ६ प०–आँखें खोलना, घूरना, मायूसी के साथ देखना ।
मिष (पु०)–स्पर्धा, चढ़ाऊपरी । न०–बहाना, मिस, धोखा, फ़रेब ।
मिष्ट (वि०)–मीठा, ज़ायक़ेदार, लज़ीज़, नम, तर । न०–मिठाई, लज़ीज़ खाना ।
मिष्टान्न(न०)–मिठाई ।
मिह् (१ प०)–पेशाब करना, तर करना, वीर्य त्यागना ।
मिहिका(स्त्री०)–बर्फ़, कोहरा ।
मिहिर (पु०)–सूर्य, मेघ, चन्द्रमा, वायु, वृद्ध पुरुष, अर्क वृक्ष ।
मी (९ प०)–मारना, नष्ट करना, कम करना, बदलना, भटकना । १० उ०–जाना, हरकत करना, जानना, समझना । ४आ०–मरना, नष्ट होना ।
मीढुष्टम(पु०) शिव, वीर, सूर्य ।
मीन(पु०) मछली, मत्स्यावतार ।
मीनकेतन (पु०)–कामदेव ।
मीनगन्धा (स्त्री०)–सत्यवती ।
मीनघाती [न्] (पु०)–मछुआ ।
मीनर (पु०)–मकर, नाका ।
मीम् (१ प०)–जाना, हरकत करना, शब्द करना ।
मीमांसक(पु०)–मीमांसा करने वाला, अनुसन्धानक, विवेचक, मीमांसा शास्त्र का अनुगामी ।
मीमांसन (न०)–परीक्षा, अनुसन्धान, विवेचना ।
मीमांसा(स्त्री०)–परीक्षा, जाँच, विवेचना, गहरा विचार, आर्यों के ६ दर्शनों में से एक जिसका निर्माण जैमिनि ने किया है [मीमांसा के दो भेद हैं–पूर्वमीमांसा, उत्तरमीमांसा अथवा वेदान्त; किन्तु इस शब्द से प्रायः पूर्वमीमांसा का ही बोध होता है] ।
मीमांसाकार (पु०)–जैमिनि ऋषि ।
मीर (पु०)–समुद्र, सागर, सीमा, हद, मद्य ।
मील् (१ प०)–आँखें बन्द करना, आँखें झपकना, मुर्झाना ।
मीलन (न०)–आँखों का बन्द करना, फूल का बन्द हो जाना या मुर्झाना ।
मीलित (वि०)–बंद, नष्ट, आँखें बंद किये हुए, एकत्रित, मिश्रित । न०–अलंकारभेद ।
मीवर (वि०)–नुकसानदह, पूजनीय । पु०–सेनानी, जनरल । [विता ।
मु (पु०)–मुक्ति, मोक्ष, बधन, चिता,
मुकन्दक (पु०)–प्याज ।
मुकु (पु०)–मुक्ति, निर्वाण ।
मुकुट (न०)–ताज, सेहरा, चोटी, शिखर । [वाद्यभेद ।
मुकुन्द (पु०)–विष्णु, पारा, रत्नभेद,

मुकुन्दक (पु०)--धान्यभेद, प्याज।

मुकुर (पु०)–दर्पण, आइना, बकुलवृक्ष, मल्लिका लता।

मुकुल(,अस्त्री०)–कली, बिना खिला हुआ फूल, आत्मा, शरीर।

मुक्त(वि०)–छुटा हुआ, त्यक्त, बन्धन-रहित, अबाध, क्षिप्त, च्युत, प्रेषित। पु०–निर्वाणप्राप्त पुरुष, मोक्षसुखभोगी पुरुष।

मुक्तक (न०)--ऐसा अस्त्र जो फेंक कर मारा जा सके।

मुक्तकच्छ(पु०)–बुद्धानुयायी।

मुक्तकञ्चुक(पु०)–ऐसा सर्प जिस ने केंचली छोड़ दी हो।

मुक्तकण्ठ(वि०)–शोर मचाने वाला।

मुक्तकण्ठम् (अ०)–ज़ोर से, सर्वसाधारण को बता कर।

मुक्तकर-हस्त(वि०)–फ़ैयाज़, उदार, जिस का हाथ खुला हुआ हो।

मुक्तलज्ज(वि०)–बेशर्म, लज्जाहीन।

मुक्ता(स्त्री०)–मोती।

मुक्तात्मा(पु०)–ऐसी आत्मा जिसका संसारचक्र से छुटकारा होगया हो।

मुक्ति(स्त्री०)–मोक्ष, छुटकारा, निर्वाण, त्याग, आवागमन से छुटकारा, छोड़ना, ऋणमोचन।

मुक्तिमार्ग (पु०) -परमानन्द पाने का उपाय, वेदमार्ग।

मुक्त्वा(अ०)–त्याग कर, छोड़कर।

मुख(न०)–वदन, वक्त्र, मुंह, चेहरा, पक्षी की चोंच, सरदार, प्रधान, तल, कारण, वेद। [मुख।

मुखकमल(न०)–कमल के समान सुन्दर

मुखखुर (पु०)--दांत, दन्त।

मुखगन्धक(पु०)–प्याज़।

मुखचपल(वि०)–बातूनी, वाचाल।

मुखचपेटिका(स्त्री०)–मुंह पर तमाचा मारना।

मुखचीरि(स्त्री०)–जीभ, जिह्वा।

मुखज(पु०)–ब्राह्मण।

मुखनिरीक्षक(पु०)–सुस्त आदमी।

मुखनिवासिनी(स्त्री०)–सरस्वती।

मुखपट(पु०)–घूंघट, परदा, यवनिका।

मुखबन्ध.-धन=दीबाचा, भूमिका।

मुखमण्डल (न०)–गोल चेहरा।

मुखमधु(वि०)–मधुरभाषी।

मुखमार्जन(न०)–मुख धोना, कुल्ला करना।

मुखपच(पु०)–फ़क़ीर, भिखारी।

मुखर(वि०)–बातूनी, वाचाल, निरन्तर शब्द करने वाला, मज़ाक़ उड़ाने वाला। पु०–कौआ, सरदार, नायक। [मुखर।

मुखरिका-री(स्त्री०)–लगामका लोहा,

मुखलागल(पु०)–कुत्ता, कुक्कुर।

मुखवल्लभ(पु०)–अनार का पेड़।

मुखवाद्य(न०)–ऐसा बाजा जो मुंह से बजाया जाय।

मुखव्यादान (न०)–मुंह फाड़ना, जम्भाई लेना।

मुखशफ (वि०)–बदज़बान।

मुखस्राव(पु०)–थूक, राल।

मुखहास (पु०)–चेहरे की बशाशत, प्रसन्नवदन।

मुखीय (वि०)–सरदार, प्रधान, मुखिया, शिखरस्थ।

मुख्य (वि०)-मुखसम्बन्धी, प्रधान, खास, प्रथम, सर्वश्रेष्ठ, अग्रगामी, नायक, रहनुमा।
मुख्यता-त्वं=प्रधानता,सर्वोच्च पद।
मुख्यमन्त्री(पु०)-प्रधान मन्त्री।
मुख्यशः-तः (अ०)-प्रधानतः, सब से अधिक, विशेषकर।
मुख्यार्थ (पु०)-गौण अर्थ के सम्बन्ध में प्रधान अर्थ।
मुग्ध (वि०)-घबराया हुआ, विचलित, मोह को प्राप्त, मूर्ख, अज्ञानी, कमसमझ,सीधा,सुन्दर, मनोहर।
मुग्धभाव (पु०)-सादगी, मूर्खता।
मुग्धा (स्त्री०)-युवती, सुन्दरी।
मुग्धाक्षी (स्त्री०)-प्रेममय नेत्रवाली।
मुग्धानना (स्त्री०)-सुन्दरवदना।
मुच् (१आ०)-त्यागना, छोड़ना।
मुच् (वि०)-[समासान्त में] छोड़ने वाला, त्यागने वाला।
मुचकुन्द (पु०)-एक प्रकार का पुष्पवृक्ष, एक राजा।
मुचिलिन्द(पु०)-एक क़िस्म का फूल।
मुज्-मुञ्ज (१प०, १०उ०)-शब्द करना, आवाज़ करना, साफ़ करना।
मुञ्ज (पु०)-एक क़िस्म की घास, मूंज, धारानगरी का एक राजा जो भोज का चचा था।
मुट्-मुंट् (१ प०)-बालों का छेदन करना, बालों का काटना, मर्दन करना।
मुण्ड (वि०)-मुण्डित, मुंडा हुआ। अस्त्री०-मस्तक, माथा, शिर। पु०-एक दैत्य, नापित [नाई], पत्रशाखाहीन वृक्ष।
मुण्डक (पु०)-नापित,हज्जाम, नाई, वि०-मूंडने वाला, बाल काटने वाला।
मुण्डन (न०)-केशों का कटवाना, बाल मुंडवाना, वपन।
मुण्डफल (न०)-जिस का फल शिर की न्याईं हो अर्थात् नारियल, नारिकेल। [मूंडने वाला।
मुण्डी [न्] (पु०)-नाई, हज्जाम,
मुद् (१आ०)-आनन्द मनाना, खुशी मनाना, हर्ष करना।
मुद्-दा (स्त्री०)-हर्ष, मोद, खुशी, त्रायमाणा नामक औषध। [खुश।
मुदित (वि०)-आनन्दित, हर्षित,
मुदिर (पु०)-मेघ, बादल। वि०-कामी, विषयासक्त।
मुद्ग (पु०)-मूङ्ग नामक धान्य,एक पक्षी।
मुद्गमोदक (पु०)-मूंग के लड्डू।
मुद्गर (न०)-एक प्रकार की मालती। पु०-फूलों का वृक्ष।
मुद्गल (न०)-रोहिष नामक तृण। पु०-मधर का प्रवर्तक एक मुनि, एक राजा।
मुद्रा (स्त्री०)-अंगूठी की मुहर, वह अंगूठी जिस में मुहर खुदी हो, देवताविशेष की आराधना करने के निमित्त अंगुलियों की रचनाविशेष, सोने चांदी की अंगूठी।
मुद्रालिपि (स्त्री०)-लिखने के पांच

प्रकारों में से एक लेखनप्रकार, छापे के अक्षर।
मुद्रिका (स्त्री०)-सोने चांदी की बनी अंगूठी, मुहर, रुपया।.
मुद्रित (वि०)-अप्रकटित, गुप्त, अङ्कित, छपा हुआ।
मुधा (अ०)-मिथ्या, वृथा, निरर्थक, झूठ, असत्य।
मुनि (पु०)-ऋषि, पवित्र पुरुष, संयमी, सन्त, भक्त, अगस्त्य, व्यास, पाणिनि आदि, सात की संख्या।
मुनितरु-द्रुम (पु०)-बकवृक्ष, मौलसिरी का पेड़, अगस्ति का पेड़।
मुनिपुंगव(पु०)-मुनियों में श्रेष्ठमुनि।
मुनिपुत्र-त्रक (पु०)-दमनकवृक्ष, दौने का पेड़, खञ्जन पक्षी।
मुनिपुष्प-ष्पक (न०)-बकुलपुष्प, मौलसिरी का फूल।
मुनिभेषज (न०)--हरीतकी, हँड़, लंघन, कुछ न खाना।
मुनीन्द्र (पु०)-मुनिश्रेष्ठ, मुनियों में उत्तम, बुद्धदेव। [हरकत करना।
मुन्थ् (१ प०)-जाना, गमन करना,
मुन्यन्न(न०)-तीवार, सवाई के चावल, कन्द आदि।
मुमुक्षा (स्त्री०)-छूटने की इच्छा, मुक्ति की चाहना।
मुमुक्षु (वि०)-मुक्ति की इच्छा वाला। मोक्ष चाहने वाला। पु०-यति, सन्यासी। [मुक्त।
मुमुचान (पु०)-मेघ, बादल। वि०-
मुमूर्षा (स्त्री०)-मरने की अभिलाषा।
मुमूर्षु (वि०)-मरने की इच्छा वाला, मरने वाला, जिसकी मृत्यु समीप हो
मुर् (६ प०)-घेरा देना, घेर लेना, लपेटना। [वेष्टन।
मुर (पु०)-एक राक्षस। न०-लपेटना,
मुरज (पु०)-मृदंग, एक क़िस्म का बाजा।
मुरजा (स्त्री०)-कुबेर की स्त्री।
मुरन्दला (स्त्री०)-नर्मदा नदी।
मुरमर्दन-रिपु (पु०)-विष्णु, कृष्ण।
मुरला (स्त्री०)-नर्मदानदी, एक बाजा, बसरी, मुरली, केरलदेशस्थ एक नदी।
मुरली(स्त्री०)-बंशी, बांसरी, अलगोजा
मुरलीधर (पु०)-श्रीकृष्ण।
मुरा (स्त्री०)-मुरा नामक एक औषध।
मुरारि (पु०)-विष्णु, श्रीकृष्ण।
मुर्छ् (१ प०)-मूर्च्छा होना, बेसुध होना, बेहोश होना। [अंगीठी।
मुर्मिणी (स्त्री०)-अङ्गारधानिका,
मुर्मुर (पु०)-तुषाग्नि, तुष [छिलके] की आग, कामदेव, सूर्य का घोड़ा।
मुश [स] ली-लिका (स्त्री०)-तालमूली, मूसली नामक औषध, छिपकली।
मुष् (९ प०)-लूटना, चोरी करना।
मुष [स श] ल (पुस्त्री०)-मूसल, जिसके अग्रभाग में लोहा लगा होता है और जो धान्यादि कूटने के काम में आता है।
मुषित (वि०)-अपहृतद्रव्यजन, चुराया हुआ, जिसके चोरी हो गई हो।

मुष्क (पु०)—अण्डकोष, चोर, तस्कर।
मुष्कक (पु०)—वृक्षविशेष, घण्टा-पाटल नामक वृक्ष।
मुष्कशून्य (पु०)—अण्डकोषों से रहित पुरुष, राजाओं के रणवास में रहने वाला पुरुष, ख्वाजा इस नाम से प्रसिद्ध, नपुंसक, हीजड़ा।
मुष्टा[ष्टी] मुष्टि (अ०)—आपस में मुष्टियों से लड़ना, मुक्कामुक्का लड़ना।
मुष्टि (अस्त्री०)—मुट्ठी, मुक्का, एक पल का परिमाण [तौल], चार तोला। स्त्री०—चुराना।
मुष्टिक (पु०)—स्वर्णकार, सुनार, राजा कंस का एक मल्ल [पहलवान, योद्धा]।
मुष्टिका (स्त्री०)—मुट्ठी, मुक्का, हाथ की अंगुलियों को सकोड़कर एकत्र गोलाकार करना।
मुष्टिंधय (पु०)—मुट्ठी चूसने वाला बच्चा, बालक।
मुस [ल-श] ली [न्] (पु०)—श्रीकृष्ण का भ्राता, बलदेव।
मुसल्य (वि०)—मूसल से मारने योग्य।
मुस्तः—स्ता—स्तम्=मोथा, तृणमूल विशेष।
मुस्ताद (पु०)—सूअर, शूकर।
मुह् (४प०)—मोह होना, बेचैन होना, बेसुध होना।
मुहिर (पु०)—कामदेव, मूर्ख, असभ्य।
मुहुस् [:] (अ०)—पौनःपुन्य, बारबार।
मुहूर्त (अस्त्री०)—द्वादशक्षणपरिमित काल, कुछ कम व ज्यादह दो घड़ी का समय, लम्हा, थोड़ा काल।
मू (१प०)—बांधना, बन्धन में करना।
मूक (वि०)—वाक्शक्तिरहित, गूंगा, दीन,। पु०—मछली, एक दैत्य।
मूकता—त्वं—भावः=गूंगापन, बोलने की शक्ति से रहित होना, दीनता।
मूढ (वि०)—मूर्ख, बेवकूफ, जड़।
मूत (वि०)—बद्ध, तृणनिर्मित धान्य [अनाज] भरने का पात्रविशेष।
मूत्र् (१०उ०)—झिरना, बहना, मूतना।
मूत्र (न०)—मूत्र, पेशाब।
मूत्रकृच्छ्र (न०)—रोगविशेष, चिनग रोग जिस में कष्ट से थोड़ा २ मूत्र आता है।
मूत्रग्रन्थि (पु०)—अश्मरीरोग, मूत्र-मार्ग में पथरी का होजाना।
मूत्रदोष (पु०)—प्रमेह, जिरयान रोग।
मूत्रनिरोध (पु०)—मूत्र का रुक जाना, बन्द लगना।
मूत्रफला (स्त्री०)—जिसके खाने से मूत्र अधिक आता है, ककड़ी।
मूत्राशय (पु०)—नाभि के नीचे का भाग, बस्तिस्थान, मसाना।
मूत्रित (वि०)—कृतमूत्रोत्सर्ग, जो पेशाब कर चुका हो।
मूर्ख (वि०)—अज्ञ, मूढ, बेवकूफ।
मूर्खता-त्वम्=बेवकूफी, अज्ञता, ना-समझी।
मूर्च्छ् (१प०)—मूर्छित होना, बेसुध होना।
मूर्च्छना (स्त्री०)—गीत का अंगविशेष,
मूर्च्छा (स्त्री०)—संमोह, बेहोशी, बृद्धि, बढ़ना।

मूर्च्छित (वि०)-बेहोश, बेसुध, मूर्च्छावाला, बढ़ाहुआ, ऊंचा, घबराया हुआ ।

मूर्त (वि०)-मूर्च्छित, बेहोश, मूर्ख, नादान, सदेह, पार्थिव, गुंथमिद, वास्तविक मूर्ति वाला ।

मूर्ति (स्त्री०)-सपरिमाणवस्तु, पार्थिव द्रव्य, शकल, शरीर, कठोरता, सुन्दरता ।

मूर्तित्व (न०)-सशरीरता, अवतार ।

मूर्तिमान् [मत्] (वि०)-आकारयुक्त, शकलवाला, मूर्तिवाला, कठोर ।

मूर्धकर्णी-कर्परी(स्त्री०)-छाता, छत्री ।

मूर्धज (पु०)-शिर के बाल ।

मूर्धन् [मूर्धा] (पु०)-शिर, माथा, मस्तक, चोटी, आगे का भाग, लीडर ।

मूर्धन्य (वि०)-शिर पर रहने वाला, प्रधान, सर्वोत्तम ।

मूर्ध्वन्=मूर्धन् ।

मूर्वा-र्वी-र्विका (स्त्री०)-अपने नाम से प्रसिद्ध एक लता ।

मूल् (१ उ०)-जड़ पकड़ना, अंकुआ उगना, मज़बूती से खड़ा होना । १०उ०-उगाना, जमाना, बोना, पौद लगाना ।

मूल (न०)-जड़, किसी वस्तु का सब से नीचे का भाग, शिफा, आरम्भ, बुनियाद, पाय, उद्गमस्थान, ग्रन्थ का वास्तविक भाग, वह भाग जिस पर टीका की जाय, उन्नीसवां नक्षत्र, निकुञ्ज, पिप्पली आदि जड़ ।

मूलक (वि०)-उत्पन्न करने वाला, मूलयुक्त, जड़ जमाने वाला । अस्त्री०-मूली नामक कन्द ।

मूलकर्म [न्] (न०)-वशीकरण, जादू, प्रथम कार्य ।

मूलकार (पु०)-किसी ग्रन्थ का वास्तविक प्रणेता ।

मूलकारण (न०)-आरम्भिक हेतु, वह कारण जिस से उत्पत्ति हो, प्रधान कारण ।

मूलग्रन्थ (पु०)-पुस्तक का असली भाग, ग्रन्थकार का स्वनिर्मितअंश, बुद्धदेव का वचनसमूह ।

मूलच्छेद (पु०)-जड़ से उखाड़ना ।

मूलज (वि०)-जड़ में उत्पन्न होने वाला जैसे वनी, मूलनक्षत्र में उत्पन्न होने वाला । न०-ताजा अदरक ।

मूलदेव (पु०)-कंस का नाम ।

मूलद्रव्य-धन (न०)-पूंजी, कैपिटल स्टाक, वास्तविकधन, वह रुपया जो आरम्भ में व्यापार में लगाया जाता है ।

मूलप्रकृति (स्त्री०)-सांख्य में समान दशा को प्राप्त हुआ सत्व, रजः और तमोगुणरूप प्रधान ।

मूलभृत्य (पु०)-पुराना नौकर ।

मूलवचन (न०)-किसी किताब का असली अंश, शास्त्रीय प्रमाण ।

मूलवित्त (न०)=मूलद्रव्य ।

मूलसंघ (पु०)-सोसाइटी, सम्प्रदाय ।

मूलस्थान (न०)—बुनियाद, जड़भूमि, परमात्मा, वायु, मुलतान नगर।
मूलहर (वि०)—जड़से नाश करने वाला
मूला (स्त्री०)—अपने नाम से प्रसिद्ध नक्षत्र।
मूलाधार (पु०)-नाभि और लिंग का बीच, जहां सब नाड़ियां आकर मिलती हैं।
मूलिक (वि०)—आरंभिक, प्रधान, गुरु का। पु०-तपस्वी, मूलाहार करने वाला।
मूलिन (वि०)—जड़के पास से उत्पन्न होनेवाला। पु०—वृक्ष, पौदा।
मूली[न्] (पु०)—वृक्ष, पेड़।
मूलेर (पु०)—राजा, बादशाह।
मूलोच्छेद(पु०)—सर्वनाश।
मूल्य (न०)—क़ीमत, मोल, नौकरी, मजदूरी, लाभ, पूंजी, असली क़ीमत। वि०-नष्ट करने योग्य, मूलोत्पन्न, ख़रीदने योग्य।
मूष्(१ आ०)—चुराना, लूटना।
मूष (पु०)—चूहा, छोटा चूहा, मूराख, गोल खिड़की।
मूषक(पु०)—चोर, चूहा, तस्कर।
मूषण(न०)—चोरी, लूट।
मूषा-मूषिका (स्त्री०)—चूही, धातु आदि का मूराख।
मूषिक (पु०)—चूहा, चोर, शिरीष का पेड़, देशभेद।
मूषिकविषाण (न०)—चूहे के सींग अर्थात् असम्भावी बातें, शशविषाण, आकाशकुसुम, खपुष्प।
मूषिकांक-अंचन(पु०)—पौराणिक गणेश का वाचक जिसकी सवारी चूहा है।
मूषिकाद-अराति(पु०)—बिल्ली।
मूषी-मूषिका (स्त्री०)—छोटा चूहा, चूही।
मृ (६ आ०)—मरना, नष्ट होना, शरीर त्यागना [लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लुङ्, आशीर्लिङ् में आत्मनेपद तथा शेष लकारों में परस्मैपद होती है]।
मृकण्डु(पु०)--एक ऋषि का नाम।
मृग्(४ प०, १० आ०)--पीछा करना, तलाश करना, मांगना, ढूढना, अनुसन्धान करना, शिकारकरना।
मृग (पु०)—पशुमात्र, चौपाया, हरिण, पांचवा नक्षत्र, हस्तिभेद, अन्वेषण, मांगना, मकर राशि, कस्तूरी, पीछा, अनुसन्धान, मार्गशीर्षमास।
मृगजल(न०)=मृगतृष्णा।
मृगजीवन(पु०)—व्याध, शिकारी।
मृगणा(स्त्री०)—खोये हुए पदार्थ को ढूंढना, तलाश।
मृगतृष्णा (स्त्री०)—जलशून्य देश में दूर से सूर्य की किरणों को देख प्यास से दुःखित हुए मृग जल की भ्रान्ति से बार २ घूमते हैं परन्तु जल नहीं मिलता, अतः उन का यह प्रयत्न निष्फल रहता है, निर्जल देश में रेत पर गिरी हुई किरणों में पानी का भ्रम, बेमूद काम, अधिक लालच जिस की पूर्ति नहीं हो सकती। [मृगतृष्-

तृषा--तृष्णि-तृष्णिका का भी यही अर्थ है]।

मृगदंश-दंशक (पु०)-कुत्ता, कुक्कुर।

मृगदृश्-नयना-अक्षी (स्त्री०)-हरिण के समान आंख वाली स्त्री, चञ्चल नेत्र वाली स्त्री।

मृगद्विष् (पु०)-शेर, सिंह।

मृगधर (पु०)-चांद, चन्द्रमा।

मृगधूर्त (पु०)-गीदड़, शृगाल।

मृगनाभि (पु०)-मुश्क, कस्तूरी, वह मृग जिसमें कस्तूरी निकलती है।

मृगपति (पु०)-शेर, चीता।

मृगमद (पु०)-कस्तूरी, मुश्क।

मृगमास(पु०)-मार्गशिर का मास।

मृगया (स्त्री०)-शिकार, आखेट।

मृगयायान(न०)-शिकार की मुहिम।

मृगयु (पु०)-शिकारी,गीदड़,ब्राह्मण।

मृगयूथ (न०)-हरिणों का झुण्ड।

मृगराज्-ज (पु०)-शेर,सिंह,चन्द्रमा।

मृगरिपु (पु०)-शेर, सिंह।

मृगलांछन-लक्ष्मन् (पु०)-चांद,चन्द्रमा।

मृगलोचन (पु०)-चांद, चन्द्रमा।

मृगलोचना-नी(स्त्री०)-मृग के समान नेत्र वाली स्त्री।

मृगवाहन (पु०)-वायु, हवा।

मृगव्य (न०)-शिकार, आखेट।

मृगव्याध (पु०)-शिकारी।

मृगशिरस् (अस्त्री०)-जिस का शिर हरिण के समान है, अश्विनी से पांचवां नक्षत्र। [मृगशिरा, मृगशीर्ष, मृगशीर्ष शब्दों का भी यही अर्थ है]।

मृगश्रेष्ठ (पु०)-चीता, सिंह।

मृगहा [न्] (पु०)-शिकारी।

मृगाङ्क (पु०)-चन्द्र, कपूर, वायु।

मृगाजिन (न०)-मृगछाला।

मृगाधिप-अधिराज (पु०)-शेर,सिंह।

मृगाराति (पु०)-शेर, कुत्ता।

मृगेन्द्र (पु०)-शेर, चीता।

मृगेन्द्रचटक (पु०)-बाज, श्येन।

मृज् (१ प०)-आवाज़ करना। २ प०, १० उ०-धोना, मिटाना, साफ़ करना, झाड़ू लगाना।

मृजा (स्त्री०)-मार्जन,साफ़ करना।

मृड् (६,९ प०)-प्रसन्न करना, क्षमा करना, खुश होना।

मृडा-डानी (स्त्री०)-पार्वती।

मृडीक (पु०)-शिव, मछली, हरिण।

मृण् (६ प०)-मारना, क़त्ल करना, नाश करना।

मृणाल (अस्त्री०)-कमलडण्डी, वीरणमूल। [की डण्डी।

मृणालिका-ली(स्त्री०)-कमल के फूल

मृणाली [न्] (पु०)-कमल।

मृत (वि०)-मुरदा,गतप्राय,निकम्मा, निश्चेष्ट। न०-मौत,मृत्यु,भिक्षान्न

मृतक (अस्त्री०)-मुर्दा आदमी, लाश, शव। न०-सम्बन्धी के मर जाने से आशौच, मृत्यु।

मृतकान्तक (पु०)-गीदड़,शृगाल।

मृतकल्प-प्राय (वि०)-मरे के समान, मृततुल्य, बेहोश।

मृतगृह (न०)-कबर।

मृतचेल (न०)-कफन। [वाला।

मृतजीवन (वि०)-मुर्दों को जिलाने

मृतमत्त--मत्तक (पु०)-गीदड़।
मृतसत्कार (पु०)-दाहकर्म, अन्त्येष्टिकर्म।
मृतस्नान (न०)-दाहकर्म के पश्चात् स्नान करना।
मृतांग (न०)-लाश, शव।
मृताशोच(न०)-सम्बन्धी या सगोत्री की मृत्यु के कारण अपवित्रता का जो सचार होता है उसके लिये प्रायश्चित्तादि।
मृति (स्त्री०) -मृत्यु, मरण।
मृतिमा [मन्] (पु०)-मरणधर्म।
मृतण्ड (पु०)- सूर्य, सूरज।
मृत्तिका (स्त्री०)--मट्टी,जमीन, भूमि।
मृत्यु (पु०)-मौत, मरण, यमराज, माया, काली, कामदेव।
मृत्युञ्जय (पु०)--शिव, परमात्मा।
मृत्युद (वि०)--मारने वाला।
मृत्युनाशन (न०)-अमृत।
मृत्युपाश (पु०)-मौत का फंदा।
मृत्युभृत्य (पु०)-रोग, बीमारी।
मृत्युराज् (पु०)-यमराज।
मृत्युलोक (पु०)-इहलोक, पृथ्वी, यमराज का लोक।
मृत्स्ना (स्त्री०)-मृत्तिका, मट्टी।
मृत्स्न (न०)-धूल, रेणु, धूलि।
मृद् (९ प०)-दबाना, कुचलना, टुकडे टुकडे करना, चूर्ण करना, रगड़ना, मिटाना।
मृद् (स्त्री०)-मट्टी, भूमि का अंश, पार्थिव अंश।
मृदकर (पु०)-वज्र, वज्रपात।
मृदंग (पु०)-तबला, वाद्यभेद।

मृदा (स्त्री०)=मृद्।
मृदु (वि०)-मुलायम, नाजुक, दुर्बल, कमजोर,कुन्द,सुस्त,मीठा,संयत। अ०-मुलायमियत से,मीठे स्वर से।
मृदुभाषी [न्] (वि०)-मीठा बोलने वाला, मधुरभाषी।
मृदुल (वि०)-मुलायम, नाजुक।
मृदुस्पर्श (वि०)-छूने में मुलायम।
मृदुहृदय (वि०)-दयावान्,कृपालु।
मृध् (१ उ०)-नम होना, उपेक्षा करना, भीगना।
मृध (न०)-युद्ध, लड़ाई।
मृश्(६ प०)-छूना,हाथ लगाना, रगड़ना, सोचना।
मृष्(१ प०)-छिड़कना। १ उ०-बर्दाश्त करना,सहना। १० उ०-सहना, बर्दाश्त करना, इजाजत देना, क्षमा करना, भूलना।
मृषा (अ०)-झूठ, असत्य, अनृत, वृथा, फिजूल।
मृषालक(पु०)-आम का पेड़।
मृष्ट (वि०)--शुद्ध, पवित्र, साफ किया हुआ, छुआ हुआ, विचारित। न०-मिर्च।
मॄ(९ प०) [मृणाति]--मारना,
मे (१ आ०) [मयते]-बदलना, अदलाबदला करना।
मेक(पु०)-अज, बकरा।
मेकल(पु०)-एक पर्वत का नाम,बकरा।
मेखला (स्त्री०)-स्त्रीकटीभूषण, औरत की कमर का जेवर,करधनी, कटीसूत्र, रस्सी आदि, दोन क

कुहर, पर्वत का नितम्ब।
मेखली [न्] (पु०)-शिव, ब्रह्मचारी।
मेघ(पु०)-बादल, ढेर, ६ रागनियों में से एक, सुगन्धतृण।
मेघकफ (पु०)-ओला।
मेघकाल (पु०)-बरसात, वर्षाकाल।
मेघचिन्तक (पु०)-चातक पक्षी।
मेघदीप (पु०)-बिजली, विद्युत्।
मेघदूत (न०)-कालीदास कृत एक प्रसिद्ध संस्कृतकाव्य।
मेघनाद (पु०)-बादलों की गरज, रावणपुत्र मेघनाद, महावायु।
मेघनादजित् (पु०)-लक्ष्मण।
मेघमण्डल (न०)-आकाश,आसमान।
मेघमाला(स्त्री०)-बादलों का समूह।
मेघयोनि (पु०)-धुआं, कोहरा।
मेघवाहन (पु०)-इन्द्र।
मेघसुहृद् (पु०)-मोर, मयूर।
मेचक (वि०)-काला, नीलाकाला। न०-स्याही,कालारंग,बादल,धुआं
मेट-ड् (१प०)-पागल होना।
मेठ (पु०)-मेंढा, हाथीवान्।
मेठि-थि (पु०)-स्तम्भ, खम्भा।
मेढ़ (पु०)-मेंढा। न०-लिङ्ग, उपस्थेन्द्रिय।
मेंठ-ड (पु०)-फीलवान, हाथीवान।
मेंढ-क (पु०)-मेंढा।
मेथ् (१उ०)-मिलना, परस्पर मिलना, जानना, मारना। [घास।
मेथिका-थिनी (स्त्री०)-मेथी नामक
मेद (पु०)-चर्बी,
मेदस् (न०)-चर्बी, मेद, शरीरस्थ सात धातुओं में से एक, मुटापा, मोटापन।
मेदज (न०)-हड्डी, अस्थि।
मेदवृद्धि (स्त्री०)-मुटापा, चर्बी का बढ़ जाना।
मेदस्वी [न्] (वि०)-मोटा, ताजा, चर्बीदार, मजबूत, स्थूल।
मेदिनी (स्त्री०)-पृथ्वी, भूमि, एक शब्दकोष का नाम। [घन,घना।
मेदुर (वि०)-मोटा, चिकना, सुहा-
मेद्य (वि०)-पूर्ववत्।
मेध (पु०)-आहुति, यज्ञ, होम।
मेधा (स्त्री०)-प्रतिभा, बुद्धि, अच्छी समझ, दिमागी कूवत, ताकत, यज्ञ। [प्रसिद्ध टीकाकार।
मेधातिथि (पु०)-मनुस्मृति का एक
मेधावत् [वान्] (वि०)-अक़्लमन्द, चतुर, समझदार।
मेधावी [विन्] (वि०)-पूर्ववत्। पु०-विद्वान्, ऋषि, प्रतिभाशाली पुरुष, तोता।
मेध्य (वि०)-पवित्र, मेधाजनक, बुद्धि के लिये हितकर। पु०-खदिर, यव, जौ।
मेध्या (स्त्री०)-रक्तवचा, मालकङ्गनी, शंखपुष्पी, ब्राह्मी आदि औषध।
मेनका (स्त्री०)-स्वर्ग की एक वेश्या, हिमालय की स्त्री। [पार्वती।
मेनकात्मजा(स्त्री०)-शकुन्तला, दुर्गा,
मेना (स्त्री०)-मेनका, मनसोत्पन्ना पितृकन्या, हिमालय की स्त्री, एक नदी। [बिलाव।
मेनाद (पु०)-छाग, बकरा, मयूर,

मेन्धिका-न्धी (स्त्री०)-मेंहदी का पेड़ जिसके पत्ते हाथ रचाने के काम आते हैं।
मेप् (१ आ०)-जाना, गमन करना, हरकत करना। [परिच्छेद्य।
मेय (वि०)-मापने लायक, ज्ञातव्य,
मेरु (पु०)-सुमेरु नामक पर्वत, माला के ऊपर का बीज, अंगुलियों का पर्व [पोरवा]।
मेरुसावर्ण (पु०)-एकादश मनु, चतुर्दशमन्वन्तर्गत ग्यारहवां मनु।
मेलक (पु०)-मेल, संग, विवाह।
मेला (स्त्री०)-स्याही, सुर्मा, अञ्जन, मिलाना, नील का वृक्ष।
मेलानन्दा-अन्धु (स्त्री०)-स्याही का आधारपात्र, दावात।
मेव् (१आ०)-सेवा करना, टहल करना
मेष (पु०)-पशुभेद, मेंढा, लग्नविशेष, पहिली राशि, औषधविशेष।
मेषकम्बल (पु०)-मेषलोमनिर्मित वस्त्र, भेड़ की ऊन का कम्बल, ऊर्णायु। [पाला, गड़रिया।
मेषपाल-लक (पु०)-भेड़ों को पालने
मेषशृङ्गी (स्त्री०)-मेढासींगी नामक औषध।
मेषा (स्त्री०)-छोटी इलायची।
मेषाण्ड (पु०)-इन्द्र, अमरेश।
मेषिका-षी (स्त्री०) मेष की स्त्रीजाति, जटामासी, तिनिश नाम का एक पेड़।
मेह (पु०)-प्रस्राव, मूत्र, पेशाब, आर्द्र, मेष, प्रमेह का रोग।
मेहघ्नी (स्त्री०)-हल्दी, हरिद्रा।
मेहन (न०)-पुरुषचिह्न, उपस्थेन्द्रिय, पेशाब करना, मूत्र।
मैत्र (वि०)-मित्रसम्बन्धी, मित्र का, मित्र से प्राप्त। न०-मित्रता, दोस्ती, अनुराधा नक्षत्र, मलमूत्रोत्सर्ग। पु०-ब्राह्मण।
मैत्रावरुण (पु०)-मित्र और वरुण देवता की सन्तान, अगस्त्य, वशिष्ठ। [मैत्रावरुणि का भी यही अर्थ है।]
मैत्री (स्त्री०)--दोस्ती, मित्रता, सुहृद्भाव [मैत्र्य का भी यही अर्थ है]।
मैत्रेय (पु०)-बुद्धभेद, एक मुनि, मित्र की सन्तान। वि०-मित्रसम्बन्धी, मित्र का। [वल्क्य की स्त्री।
मैत्रेयी (स्त्री०)-एक उपनिषद्, याज्ञ-
मैथिल (पु०)-मिथिला नगरी का एक राजा। पु० बहुव०-मिथिला के रहने वाले।
मैथिली (स्त्री०)--सीता, जानकी, रामचन्द्र की भार्या।
मैथुन (न०)--आन्याधानादि यज्ञकर्म, सन्तानार्थ स्त्रीपुरुष का संयोग, सम्भोग।
मैनाक(पु०)--एक पर्वत, दानवविशेष।
मैनाकस्वसा [सृ] (स्त्री०)--मैनाक की बहिन, पार्वती।
मैनिक (पु०)-मछली मारने वाला जालिक, मछेरा।
मैरेय-यक (अस्त्री०)-सुराभेद, एक प्रकार की शराब। [मक्खी।
मैल [लि]न्द (पु०)-भौंरा, शहद की

मोक्ष् (१प०, १०उ०)–फेंकना, छूटना, खोलना, खुल जाना।

मोक्ष (पु०)–मुक्ति, मोचन, मृत्यु, अलग होना, फेंकना।

मोक्षक (वि०)–मोक्षदाता, मुक्ति करने वाला।

मोक्षोपाय (पु०)–मुक्ति का साधन तप शमादि, योग, ज्ञान।

मोक्षण (न०)–छूटना, मुक्त होना, फेंकना। [पु०–मार्जार, फोट।

मोघ(वि०)–निरर्थक,हीन,कम,छोटा।

मोघपुष्पा (स्त्री०)–वन्ध्यास्त्री, वांझ औरत।

मोचा (स्त्री०)–विडंग,पाटला नामक औषध। [न०–केला, कदलीफल।

मोच (पु०)–सहिजना का पेड़।

मोचक (पु०)–मुक्ति, नजात, केले का फल, सहिजना का पेड़। वि०–वैराग्यवान्, विरक्त।

मोचयिता [तृ]–(वि०)–मुक्तिदाता, छुटाने वाला। [चूर्णीकरण।

मोटन (पु०)–वायु,हवा। न०–पीसना,

मोट्टायित (न०)–स्त्रियों की एक प्रकार की अभिलाषा।

मोण (पु०)–सूखा हुआ फल,मक्षिका, साँप रखने की पिटारी।

मोद (पु०)–हर्ष, आनन्द, खुशी।

मोदक(पु०)–खाद्यपदार्थविशेष, लड्डू नाम से प्रसिद्ध पदार्थ,शूद्रस्त्री में क्षत्रिय से उत्पन्न पुरुष, एक प्रकार का पहार जिसको मदरा कहना चाहिये। वि०–आनन्ददाता,खुश करने वाला।

मोदन (न०)–खुशी,हर्ष। वि० हर्षजनक

मोदिनी (स्त्री०)–अजमोद, अजवायन, मालती, चमेली, कस्तूरी, शराब।

मोरटा (स्त्री०)–मूर्वा नामक औषध।

मोषक (पु०)–चोर, तस्कर।

मोषण (न०)–लूटना, चुराना,छेदना, मारना। [लूटने वाला।

मोषिता [तृ] (वि०)–चुराने वाला,

मोह (पु०)–मूर्च्छा, बेहोशी, अज्ञान, नासमझी, दुःख, शरीरादि में आत्माभिमान।

मोहन (पु०)–धतूरा, कामदेव का शर विशेष। वि०–मोहित करने वाला। न०–सुरत, रतभेद।

मोह[हि]नी (स्त्री०)–वटपत्री,माया। वि०–मोहने वाली स्त्री।

मोहरात्रि (स्त्री०)–जन्माष्टमी की रात्रि, ब्रह्मा के परिमाण से पचास वर्ष बीतने पर एक प्रकार का प्रलय।

मोहशास्त्र (न०)–अविद्याजनक ग्रन्थ।

मौक्तिक (न०)–मुक्ता, मोती।

मौक्तिकप्रसवा–शुक्ति (स्त्री०)–मोती वाली सीपी,ऐसी शुक्ति जिस में से मोती निकलता है। [या हार।

मौक्तिकसर (पु०)–मोतियों की लड़ी

मौक्य (न०)=मूकता।

मौखर्य (न०)–अप्रियवादिता, वक्तृता, मुखरता।

मौखिक (वि०)–मुखसम्बन्धी, मुह से कहा हुआ।

मौञ्जी (स्त्री०)–कटिबन्धनसूत्र, तगड़ी, मूंज की तिहरी बनी हुई मेखला।
मौञ्जीबन्ध [न] (पु०)–यज्ञोपवीत संस्कार । न०–तगड़ी पहरना, मेखलाधारण करना।
मौढ्य (न०)–मूढ़ता, मूर्खता, बालकपन, मोह।
मौद्गल्य (पु०)–मुद्गलमुनि की सन्तान, गोत्रप्रवर्तक मुनिविशेष।
मौद्गीन (न०)–मूग पैदा होने योग्य क्षेत्र, ऐसा खेत जिसमें मूग अच्छी पैदा हो। [रहना, तूष्णीम्।
मौन (न०)–मुनिपना, अभाषण, चुप
मौनी [न्] (वि०)–वाणीव्यापार रहित, चुप रहने वाला। पु०-मुनि
मौरजिक (वि०)–मुरज [मृदंग] बजाने के स्वभाव वाला, मुरज बजाने वाला।
मौर्य (न०)–मूर्खता, मूढ़ता, बेवकूफी।
मौर्वी (स्त्री०)–धनुष् की प्रत्यञ्चा।
मौल(वि०)–मूल से उत्पन्न, आरम्भिक, पुराना, प्राचीन, कुलीन। पु०–पुराना मन्त्री।
मौलि (वि०)–प्रधान, सर्वोत्तम। पु०–शिर, मुकुट, चोटी, शिखर, अशोकवृक्ष। अव्स्त्री०-शिर की चोटी के बाल, जटाजूट, ताज, राजमुकुट।
मौलि-ली (स्त्री०)–पृथ्वी, भूमि।
मौलिक (वि०)–प्रधान, मूल्यवान्, सर्वोत्तम।
मौलिमण्डन (न०)–शिरोभूषण।
मौलिमुकुट (न०)–ताज, एक राजचिन्ह
मौली [न्] (वि०)–ताजदार, शिखरयुक्त, मुकुटधारी।
मौल्य (न०)–क़ीमत, मूल्य।
मौष्टिक (पु०)–बदमाश, ठग, शठ।
मौहूर्त (पु०)–नजूमी, ज्योतिषी।
मौहूर्तिक (वि०)–क्षणिक, अल्पकालीन। पु०-ज्योतिषी, दैवज्ञ।
म्ना (१ प०)–जपना, मन२ में दोहराना, मेहनत से सीखना, याद करना।
म्नात (वि०)–अधीत, सीखा हुआ, दोहराया हुआ।
म्रक्ष् (१ प०)–रगड़ना, इकट्ठा करना, मारना। १०उ०-ढेर करना, लेपन करना, मिलाना, बड़बड़ाना।
म्रक्ष (पु०)–कपट, दम्भ।
म्रद् (१ आ०)–पीसना, कुचलना।
म्रदिमा [मन्] (पु०)–मुलायमियत, मृदुता, कोमलता।
म्रुच् म्लुच्(१ प०)–जाना, हरकत करना
म्लेट् (१ प०)–पागल होना।
म्लक्ष् (१०प०)–काटना, बांटना।
म्लात (वि०)–मुर्झाया हुआ।
म्लान (वि०)–मुर्झाया हुआ, थका हुआ, उदास, गन्दा।
म्लानमुख-वदन(वि०)–उदास, जिसका चेहरा उतर गया हो।
म्लानि(स्त्री०)–सड़ना, मुर्झाना, नाश, थकावट, उदासी, ग़मगीनी, चमना
म्लिष्ट (वि०)–अस्फुट, मुर्झाया हुआ
म्लेच्छ् (१ प०, १० उ०)–अस्फुट

बोलना, यद्वद्वा कर कहना ।
म्लेच्छ(पु०)–वहशी, अनार्य, असस्कृत-भाषी, विदेशी, अन्त्यज, जाति-च्युत, पापी । न०-तांबा ।
म्लेच्छजाति (स्त्री०)–वहशी क़ौम, अनार्य लोग, पर्वतस्थ जाति ।
म्लेच्छभाषा (स्त्री०)–विदेशी ज़ुबान।
म्लेच्छभोजन (पु०)–गेहूं, गोधूम । न०-जौ, यव ।
म्लेव् (१ आ०)–पूजना, सेवा करना
म्लै (१ प०)–मुर्झाना, सहना, थकना, उदास होना ।

य

य (पु०)–जाने वाला, गतिशील, गाड़ी, वायु, यश, जौ, प्रकाश, रोक, एक गण, त्याग, यम ।
यकृत् (न०)–जिगर, शरीर का एक अंग, कोख, कुक्षि ।
यकृदुदर (न०)-जिगर का बढ़ जाना, जलन्धररोग ।
यक्ष् (१ प०)–हरकत करना, चलना । १० आ०-पूजना, अर्पना करना ।
यक्ष (पु०)–एक कल्पित देवयोनि जो कुबेर के अनुचर बताये जाते हैं, भूत, इन्द्रभवन, कुबेर, पूजा ।
यक्षग्रह (पु०)–भूत का चढ़ना, यक्ष द्वारा आक्रान्ति ।
यक्षतरु (पु०)–वटवृक्ष, बड़ का पेड़।
यक्षराज् (पु०)- कुबेर, जलाद ।
यक्षरात्रि(स्त्री०)–दीपावली का उत्सव।
यक्षाधिप-इन्द्र (पु०)–कुबेर, यक्षराज् ।
यक्षावास (पु०)–बड़ का पेड़, वटवृक्ष ।
यक्षिणी (स्त्री०)–यक्षभार्या, भूतिनी ।
यक्ष्म-यक्ष्मन् (पु०)–रोगभेद, मिर्गी, क्षयरोग ।
यक्ष्मग्रह (पु०)--क्षयरोग का आक्रमण
यक्ष्मघ्नी (स्त्री०)--अंगूर ।
यक्ष्मी [न्] (वि०)–क्षयरोगग्रस्त ।
यज् (१ आ०)–यज्ञ करना, पूजा करना, देना, दान करना, संगति करना, इज्ज़त करना ।
यज (पु०)–यज्ञ, अग्नि।
यजत (वि०)–पवित्र, पूजनीय । पु०-यज्ञकर्त्ता, शिव, चन्द्र ।
यजत्र (पु०)–अग्निहोत्री ।
यजन (न०)–यज्ञ करना, यज्ञ, यज्ञस्थान
यजमान-क (पु०)–होता [पुरोहित] आदि को नियुक्त करने वाला, निरन्तर यज्ञ कराने वाला ।
यजाक (वि०)–पूजा करने वाला, उदार, फ़ैयाज़ ।
यजि (पु०)–यज्ञकर्ता, यज्ञ ।
यजुः [स्] (न०)–यज्ञमन्त्र, यजुर्वेद का मन्त्र, यज्ञ करते समय पठनीय मन्त्र, यजुर्वेद ।
यजुर्विद् (वि०)–यजुर्वेद का ज्ञाता।
यजुर्वेद (पु०)–चारों वेद में द्वितीय वेद जिस में यज्ञ का विधान विशेषरूप से है [ऋक्, यजुः, साम और अथर्व नाम के चार वेद हैं]
यज्ञ (पु०)–वेदमन्त्रों के उच्चारण पूर्वक समिधा सामग्री के साथ

पताहुतियों का अग्नि में समर्पण, पूजाकार्य, उपकार, अच्छा काम, अग्नि, विष्णु, दान, सगतिकरण, वेदाध्ययन, शिल्पादि का निर्माण।

यज्ञकर्म [न्] (न०)–यज्ञार्थ की पूर्त्ति करने वाला कोई काम।

यज्ञकल्प (वि०)–यज्ञ के समान।

यज्ञकाल (पु०)–पूर्णमासी, अमावस्या।

यज्ञकुण्ड (न०)–यज्ञ करते समय प्रदीप्त अग्नि रखने का पात्र विशेष जिस मे यज्ञाहुतियां डाली जाती हैं परिमाणपूर्वक ऐसा कुण्ड पृथ्वी में भी खोद लिया जाता है।

यज्ञकृत् (वि०)–यज्ञ करने वाला। पु०–विष्णु, याज्ञिक, यज्ञकर्त्ता।

यज्ञक्रिया (स्त्री०)–यज्ञसम्बन्धी कोई कार्य।

यज्ञघ्न (पु०)–यज्ञकर्म में बाधा डालने वाला व्यक्ति, राक्षस, पिशाच।

यज्ञदक्षिणा (स्त्री०)–यज्ञान्त में यज्ञ कर्त्ताओं को पुरस्कार रूप से जो धन दिया जाता है।

यज्ञदीक्षा (स्त्री०)–यज्ञ का सम्पादन, यज्ञ में भाग लेने का अधिकार-प्रदान।

यज्ञद्रुह् (पु०)–राक्षस, दस्यु।

यज्ञपति (पु०)–यजमान।

यज्ञपात्र (न०)–यज्ञकर्म में जिन पात्रों का व्यवहार होता है।

यज्ञपुरुष (पु०)–परमात्मा, ब्रह्म।

यज्ञबाहु (पु०)–अग्नि।

यज्ञभूमि (स्त्री०)–यज्ञस्थल, यज्ञ करने का स्थान।

यज्ञवल्लि ल्ली (स्त्री०)–सोमलता।

यज्ञवृक्ष (पु०)–वटवृक्ष।

यज्ञवेदि दी (स्त्री०)–यज्ञ करने के लिये जो स्थान या मण्डप निर्मित किया जाता है। [भवन।

यज्ञशाला (स्त्री०)–यज्ञ करने का

यज्ञसिद्धि (स्त्री०)–यज्ञ की पूर्त्ति।

यज्ञसूत्र (न०)–यज्ञोपवीत।

यज्ञागार (अस्त्री०)–यज्ञशाला।

यज्ञाङ्ग (न०)–यज्ञ का साधन।

यज्ञान्त (पु०)–यज्ञसमाप्ति।

यज्ञाशन (पु०)–वायु, विद्युत, इन्द्र, वसु आदि ३३ देवता।

यज्ञिक (पु०)–पलास वृक्ष, ढाक।

यज्ञिन् [यज्ञी](वि०)–यज्ञों का करने वाला। पु०–विष्णु, ईश्वर, परमात्मा।

यज्ञिय (वि०)–यज्ञयोग्य, यज्ञ में काम आने वाला, पवित्र, पूजनीय। पु०-देवता, द्वापरयुग।

यज्ञीय (वि०)–यज्ञसम्बन्धी। पु०–उदुम्बर का वृक्ष।

यज्ञोपकरण (न०)–यज्ञ करते समय भाण्ड, सामग्री, समिधा, घृत, अस्त्रशस्त्र आदि आवश्यक सामग्री।

यज्ञोपवीत (न०)–यज्ञसूत्र जिस को धारण करने का अधिकार द्विज मात्र को है।

यष्टव्य (वि०)-पूजने योग्य।
यष्टया (स्त्री०)-पूजा, यज्ञ।
यत् (१ आ०)-यत्न करना, कोशिश करना। [जिससे।
यत्-द् (वि०)-जो। अ०-यस्मात्,
यतः [तु] (अ०)-जिससे, यस्मात्।
यतम (वि०)-जिन [सब]में से एक।
यतर (वि०)-जिन दोनों में से एक।
यति (वि०)-जितना, जिता। पु०-संन्यासी,भिक्षुक। स्त्री०-विराम, छन्दोग्रन्थ में जीभ के रुकने का स्थान, पाठविच्छेद। [संन्यासी।
यती [न्] (पु०)-यति, जितेन्द्रिय,
यती (स्त्री०)-विधवा, वेवा,रांडस्त्री।
यतु [तू] का (स्त्री०)-वृक्षविशेष।
यत्न (पु०)-उद्योग, कोशिश,हिम्मत, रूपादि २४ गुणों में से एक।
यत्नवान् [वत्] (वि०)-उद्योगी, साहसी, यत्नवाला।
यत्र (अ०)-जिसमें, जहां,यस्मिन्।
यथा (अ०)-जैसे, जिस तरह से, जिस भांति से, जिस प्रकार से।
यथाकामम् (अ०)-इच्छानुकूल, मरज़ी के मुआफ़िक़, जैसा चाहें।
यथाक्रमम् (अ०)-क्रम के अनुकूल, सिलसिलेवार।
यथाजात (वि०)-जैसा उत्पन्न हुआ वैसा ही रहा, मूर्ख, बेवकूफ़।
यथातथम् (अ०)-ठीक २, यथार्थ। [यथायथम् का भी यही अर्थ है]।
यथार्थम् (अ०)=यथातथम्।
यथार्हम् (अ०)-यथायोग्य, जैसा होना चाहिये।
यथाशक्ति (अ०)-शक्ति के अनुसार, बलानुकूल, ताक़त के मुवाफ़िक़।
यथाशास्त्रम् (अ०)-शास्त्रानुसार, जैसा शास्त्र में लिखा हो, शास्त्र के मुताबिक़।
यथास्थितम् (अ०)-जैसे रहना चाहिये वैसे ही रहना। वि०-सत्य, सच।
यथेप्सितम् (अ०)-इच्छा के अनुसार न०-इच्छा का न टूटना। [यथेष्ट का भी यही अर्थ है]।
यथेष्टाचारी [न्] (वि०)-स्वेच्छाचार करने वाला, इच्छानुकूल फिरने वाला,स्वच्छन्द।
यथोचितम् (अ०)-यथायोग्य, जैसा चाहिये। न०-औचित्य, मुनासिब बात को न छोड़ना। वि०-उचित, ठीक। [में।
यदा (अ०)-जब,जिस समय, जिसकाल
यदि (अ०)-जो, अगर,पक्षान्तर में।
यदीय (वि०)-यत्सम्बन्धी, जिसका।
यदु (पु०)-ययाति नामक राजा का पुत्र जिसके वंश में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ।
यदुनाथ-पति (पु०)-श्रीकृष्ण।
यदृच्छा (स्त्री०)-स्वतन्त्रता, अपनी इच्छा से अचानक, स्वैरिता।
यन्ता [तृ] (पु०)-सारथि, महावान्, हाथी को चलाने वाला। वि०-संयमी, अपने को वश में करने वाला।

यन्त्र (न०)-संयमन, रोकना, देवता का आसन, फला[फल], पात्रविशेष
यन्त्रगृह (न०) -कलघर, तैलनिष्का-सन कलों या स्थान ।
यन्त्रण (न०)-रक्षण, रोकना, बाधना, बचाना ।
यन्त्रणा (स्त्री०)-पीड़ा, दर्द, तकलीफ
यन्त्रित (वि०)-बद्ध, बंधा हुआ । [वाला
यन्त्री [न्] (वि०)-यन्त्रयुक्त, बांधने
यभ् (१ प०)-मैथुनकरना, सम्भोग करना । [होना ।
यम् (१ प०)-हटना, रुकना, उपरम
यम (पु०)--धर्मराज, अहिंसा सत्य-वचन ब्रह्मचर्यादि कर्म, इन्द्रियों का रोकना, कौआ, दो की संख्या, शनिग्रह, विष्णु । वि० जोड़ा ।
यमक (न०)-शब्दालंकारभेद । वि० जोड़ा, यमज । पु०--संयम ।
यमकोटि (स्त्री०) लंका से पूर्व दिशा में पुरीविशेष ।
यमदग्नि (पु०)- मुनिविशेष, परशु राम का पिता ।
यमद्वितीया (स्त्री०) कार्तिक महीने के शुक्लपक्ष की दोयज ।
यमन (न०) -बन्धन, उपरति, बाधा । पु०- यमराज । वि० संयम करने वाला, बन्धनकर्त्ता ।
यमनिका(स्त्री०) यवनिका, कनात, चिक
यमभगिनी (स्त्री०)- यमुना नदी ।
यमराज (पु०) -चौदह यमों का राजा, धर्मराज, पितरों का राजा ।
यमल (न०)- युग्म, जोड़ा । वि०— यमज, एक गर्भ से एक साथ उत्पन्न दो [बच्चे] ।
यमवाहन (न०)- भैंसा, महिष, यमराज की सवारी ।
यमानिका-नी (स्त्री०)-अजमोद, अजवायन ।
यमी [न्] (वि०)-संयमी, इन्द्रियों को वश में करने वाला, यमों का पालनकर्त्ता ।
यमी (स्त्री०)-यमुना नदी ।
यमुना (स्त्री० - यमुना नदी, यम की बहिन, सूर्य की पुत्री, दुर्गा ।
ययाति(पु०) -नहुष का पुत्र एक राजा।
ययी (पु०) महादेव, अश्व, तेज जाने वाला घोड़ा ।
ययु (पु०) -अश्वमेधीय घोड़ा, अश्वमात्र ।
यव (पु०) जौ नामक अन्न ।
यवक्य (न०) -जौ बोने लायक खेत ।
यवक्षार (पु०)—क्षारविशेष, जवाखार ।
यवन (पु) -देशविशेष, यूनान, उस देश के रहने वाले मनुष्य, एक मुनि । सुक्व०—वेग, जोर तेज गति वाला घोड़ा, गेंहूम, तुरक जाति । वि० -वेग वाला ।
यवनप्रिय (न०)—मरिच, मिर्च ।
यवनाचार्य (पु०)—ज्योतिष शास्त्र का निर्माता एक ऋषि ।
यवनानी (स्त्री०)—यवनों की लिपि, तुरकों का हाथ का लिखा
यवनारि (पु०)—यवन [कालयवन] का शत्रु अर्थात् श्रीकृष्ण ।

यवनी (स्त्री०)-अजवायन नामक औषध,यवन की स्त्री[मुसलमानी]
यवनेष्ट(पु०)-लशुन, लहसन, प्याज़, निम्बवृक्ष । न०-मिर्च, सीसा, गुञ्जन ।
यवमध्य(न०)-एक प्रकार का चान्द्रायणव्रत । [बना हुआ ।
यवमय (वि०)-यवनिर्मित, जौ का
यवशूक (पु०)-यवक्षार, जवाखार ।
यवस (न०)-घास, तृण ।
यवागू(स्त्री०)-एक प्रकार की खिचड़ी जो छगुने पानी में पकाई जाती है ।
यवासक-सा (पु०)-दुरालभा, जवासा नामक प्रसिद्ध औषध ।
यविष्ठ (वि०)-बड़ा जवान, छोटा भाई, लघुभ्राता ।
यवीयान् [स्] (वि०)-पूर्ववत ।
यव्य (न०)-जौ बोने योग्य खेत । वि०--यवों के लिये हितकर । पु०--चान्द्रमास ।
यशः [स्](न०)-प्रसिद्धि,कीर्ति,बड़ाई ।
यशःपटह (पु०)--यश को प्रकाश करने वाला एक प्रकार का बाजा ।
यशःशेष (वि०) मृत, गतायु ।
यशस्कर (वि०)--कीर्तिकारक, प्रसिद्ध करने वाला ।
यशस्या (स्त्री०)-जीवन्ती और ऋद्धि नामक औषध ।
यशस्वान् [वत्] (वि०)--यशस्वी, नामी, मशहूर, कीर्तियुक्त ।
यशस्विनी(स्त्री०)-यशवाली स्त्री,सत्यव्रत की पत्नी, एक प्रकार की मालकांगनी, गंगा ।
यशोद (पु०)-पारद, पारा । वि०--यश देने वाला । [की माता ।
यशोदा (स्त्री०)--नन्दपत्नी,दिलीप
यष्टा [ष्टृ] (वि०)--यज्ञ करने वाला, यागशील । पु०--यजमान ।
यष्टि (अस्त्री०)-ध्वजा का दण्डा, लाठी, लकड़ी, हारावली, तांत, मुलहठी, भारंगी नामक औषध । स्त्री०-शाखा, टहनी ।
यष्टी (स्त्री०)-मुलहठी ।
यस् (४प०)-यत्न करना,कोशिश करना।
यस्क (पु०)-मुनिविशेष ।
या (२प०)-जाना, गमन करना ।
याग (पु०)-यज्ञ, इष्टि ।
याच् (१उ०)-याचना करना,मांगना ।
याचक (वि०)-मांगने वाला, याचना करने वाला ।
याचन-ना(स्त्री०)-मांगना,याच्ञा ।
याचनक (वि०)=याचक ।
याचित (वि०)-प्रार्थित, मांगा हुआ । न०-मांगना, याच्ञा । [प्रार्थना ।
याच्ञा (स्त्री०)-मांगना, भिक्षा,
याजक (पु०)-यज्ञ कराने वाला, ऋत्विक्, राजा का हाथी, मत्त हाथी ।
याजि (पु०)-यज्ञ, यज्ञकर्त्ता ।
याजुष (वि०)-यजुर्वेदसम्बन्धी ।
याज्ञवल्क्य (पु०)-धर्मशास्त्र का प्रवर्तक एक मुनि,योगियों का राजा
याज्ञिक (पु०)-यज्ञ के लिये हितकर द्रव्य, कुशा, दर्भ, गूलर, पलाश,

अश्वत्थ आदि वृक्ष। वि०-याजक, यज्ञ कराने वाला [पुरोहित, यजमान आदि]।
याज्य (वि०)-यज्ञ कराने योग्य। न०-यज्ञस्थान, देवप्रतिमा, दायभाग।
यात(वि०)-गत,गया हुआ, प्राप्त।
यातना (स्त्री०)-तीव्रवेदना, बड़ी पीड़ा।
यातयाम (वि०)-जीर्ण, पुराना, पर्युषित, उच्छिष्ट,परिभुक्त।
यातव्य (वि०)-जाने लायक, गन्तव्य। पु०-वह शत्रु जिसके सम्मुख जीतने की इच्छा वालों को जाना चाहिये।
याता [तृ] (वि०)-जाने वाला, गमनशील, गन्ता। स्त्री०-पति के भाई की स्त्री। [गमन।
यातायात(न०)-आनाजाना, गमनायातिक (वि०)-पान्थ, मुसाफिर, जाने वाला।
यातु (अस्त्री०)-राक्षस, दैत्य। पु०-काल, वायु। स्त्री०-यातना, पीड़ा। वि०-गन्ता,जाने वाला।
यातुघ्न (वि०)-यातु [राक्षस] को मारने वाला। पु०-गुग्गुल।
यातुधान (पु०)-राक्षस, असुर।
यातृ(स्त्री०)-पति के भाई की पत्नी, देवरानी। [वाला।
यात्रिक (वि०)-मुसाफिर, यात्रा करने
यात्रा (स्त्री०)-गमन, प्रस्थान,शत्रुओं को जीतने की इच्छा से राजादि का गमन, देवता के उद्देश्य से एक प्रकार का उत्सव जैसे-रथयात्रादि।
यात्रिक (वि०)-यात्रा के लिये हितकर, उत्सव, उपाय।
याथातथ्यम् (अ०)-जो चीज़ जैसी होनी चाहिये उसका वैसा ही होना, ठीक २ होना।
यादःपति-ईश (पु०)-जलजीवों का स्वामी, वरुण, समुद्र।
यादव (पु०)-श्रीकृष्ण। न०-गौ भैंस आदि धन। वि०-यदु की सन्तान, यदु सम्बन्धी, यदु का। [जीव।
यादस् [ः] (न०)-हर क़िस्म का जल-
यादसांनाथ पति (पु०)=यादःपति।
यादृक्ष-क् [श्]-श (वि०)-जैसा, जिस भांति का, जिसके सदृश।
यादृच्छिक (वि०)-अपनी इच्छा से आया, अचानक आगया।
यान (न०)-गमन, जाना, आक्रमण, हमला, मुहिम, सवारी [रथ, गाड़ी आदि]।
यानपात्र(न०)-समुद्रयान, जहाज़।
यापन (न०)-गुज़ारना [समय का], बिताना, हटाना।
याप्य (वि०)-अधम, निन्दित, ऐसा रोग जो दवाई करते २ तो शान्त रहे और दवाई छोड़ने पर फिर बढ़ने लगे। [तयान, पालकी।
याप्ययान(न०)-पुरी सवारी, निन्द्-
याम (पु०)-समय, पहर, दिन तथा रात्रि का चौथाई हिस्सा।

यामघोष (पु०)-कुक्कुट, मुर्गा [यह एक २ पहर के पीछे बोलता है]।
यामल (न०)-युगल, जोड़ा, तन्त्रशास्त्र-भेद।
यामवती (स्त्री०)-रात्रि, हरिद्रा।
यामाता [तृ] (पु०)-दुहितृपति, जमाई, दामाद। [आधा पहर।
यामार्द्ध (न०)-पहर का आधा,
यामि(स्त्री०)-भगिनी, बहिन, कुलवधू।
यामिकभट (पु०)-पहरेदार, पहर २ में बदलने वाला चौकीदार।
यामित्र (न०)-ज्योतिषशास्त्र में लग्न से सातवां स्थान।
यामिनी (स्त्री०)-रात्रि, रात, हल्दी।
यामिनीपति (पु०)-चन्द्रमा, रात का स्वामी, कपूर।
यामी (स्त्री०)-दक्षिणदिक्, यमयातना, यमराज सम्बन्धी पीड़ा।
यामुन (वि०)-यमुना का, यमुना सम्बन्धी । न०-सुर्मा, सुर्मा, तीर्थविशेष। [भांजा।
यामेय (पु०)-यामिपुत्र, भागिनेय,
याम्य (पु०)-अगस्त्यमुनि, चन्दन का पेड़, यमदूत। वि०-यमसम्बन्धी।
याम्या (स्त्री०)-दक्षिणदिशा, भरणी नक्षत्र।
याम्यायन (न०)-दक्षिणायन, सूर्य का दक्षिणदिशा में जाना।
यायजूक (पु०)-बार २ यज्ञ करने वाला मनुष्य।
यायावर(पु०)-अश्वमेध नामकयज्ञ का घोड़ा, जरत्कारु मुनि। वि०-बार २ टेढ़ा जाने वाला, अतिशयवक्रगामी । न०-याचना, मांगना। [यावदायुः ।
यावज्जीवम् (अ०)-जीवनपर्यन्त,
यावत् (अ०)-सारा, अवधि, जबतक, सीमा । वि०-जितना, जितने परिमाण वाला।
यावन (पु०)-यवनदेशोत्पन्न सिल्हक नामक एक गन्धद्रव्य।
यावनाल(पु०)-धान्यभेद, जुआर नाम से प्रसिद्ध धान्य, एक देश का नाम।
यावशूक (पु०)-यवक्षार, जवाखार।
याशोधरेय (पु०)-शाक्यमुनि का पुत्र।
याष्टीक (वि०)-लाठी ही जिसका अस्त्र हो, लाठी से लड़ने वाला, लठैत नाम से प्रसिद्ध।
यु (२ प०)-मिलाना और न मिलाना। ९ उ०-बांधना।
युक्त (वि०)-मिला हुआ, उचित, जुड़ा हुआ। पु०-योगी पुरुष, न्याय से प्राप्त द्रव्य।
युक्ति (स्त्री०)-अनुमान, दलील, न्याय, नाटक का अङ्गविशेष।
युग (न०)-युग्म, जोड़ा, दो की संख्या; सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि नाम चार युग; चार हाथ का माप, गाड़ी, रथादि का जूआ।
युगपद् (अ०)-एकदा, एक ही समय।
युगपत्रक (पु०)-कोविदार, कचनाल।
युगपार्श्वग (पु०)-सम्पार्श्व हल के साथ बांधा हुआ बैल, हिलाया बैल।

युगल(न०)–जोड़ा, युग्म, दोकी सख्या।
युगान्त (पु०)–प्रलय, युगों का अन्त।
युग्म (न०)=युगल।
युग्मपत्र (वि०)–दो पत्तों वाला। पु०–कचनार का पेड़।
युग्य (न०)–यान, सवारी, वाहन। पु०–घोड़ा, बैल आदि।
युच्छ् (१ प०)–भूलना, प्रमाद होना, बेपर्वाह होना।
युज्(१०उ०)–मिलना, जुडना। ४आ०–मिलना, समाधि लगाना।
युज् (वि०)–समाधि वाला, सयोग वाला, मिला हुआ।
युजान(पु०)–सारथि, रथहांकनेवाला।
युजौ (पु० द्वि०)–अश्विनीकुमार।
युञ्जान(पु०)–सारथि, गाडीवान, विप्र। वि०–योगविशेष वाला, योगी।
युत् (१आ०)–चमकना, प्रकाश होना।
युत् [ध्] (स्त्री०)–युद्ध, सग्राम। वि०–योद्धा, युद्ध करने वाला।
युत (वि०)–मिला हुआ, सयुक्त। न०–चार हाथ की नाप।
युतक (न०)–संशय, [illegible], युग, जोडा, स्त्री के वस्त्र का किनारा, पादाग्र-भाग, यौतुकधन अर्थात् दहेज, मैत्री करना। वि० संयुक्त, मिला हुआ।
युद्ध (न०)–लड़ाई, संग्राम, समर।
युद्धरङ्ग (पु०)–युद्धभूमि लड़ाई का स्थान, मैदानजङ्ग।
युद्धसार(पु०)–घोड़ा, अश्व।
युध् (४आ०)–लड़ाईकरना, युद्ध करना।
युध्-धा(स्त्री०)–संग्राम, लड़ाई, युद्ध।
युधान(पु०)–लड़ने वाला क्षत्रिय।
युधिक(वि०)–योद्धा, लड़ने वाला, शूर।
युधिष्ठिर (पु०)–अपने नाम से प्रसिद्ध पाण्डवराज, धर्मपुत्र, पाण्डु का ज्येष्ठपुत्र।
युयुधान (पु०)–इन्द्र, सात्यकि नामी एक यादव, क्षत्रियमात्र। वि०–योद्धा, युद्ध करने वाला।
युवक(पु०)–युवा, जवान पुरुष।
युवखलति(स्त्री०)–ऐसी जवान स्त्री जो शिर की गजी हो, रोगविशेष-युक्ता जवान औरत।
युवति-ती (स्त्री०)–प्राप्तयौवना नारी, जवान औरत।
युवन्(वि०)–जवान, श्रेष्ठ, बहुत अच्छा।
युवनाश्व(पु०)-एक राजा, मान्धाता का पिता।
युवराज (पु०)–राजकुमार, राजा के मरने के बाद गद्दी पर बैठने वाला राजकुमार, भाविराजा।
युष्(१ प०)–भजन करना, सेवा करना।
युष्मद् (वि०)–आप, तुम्हारा, यह भवच्छब्द के अर्थ में सर्वनाम संज्ञक शब्द है, इस के तीनों लिंगों में एक से ही रूप रहते हैं।
यूक(अस्त्री०)–मत्कुण, खटमल, जूं।
यूका (स्त्री०)–मत्कुण, खटमल, बालयूका, लीक।
यूति(स्त्री०)–मिलाप, मिलाना।
यूथ (न०)–सजातीय समुदाय, समूह,

झुंड, गिरोह । [प्रधान ।
यूथनाथ-पति(पु०)-वन्य हाथियों का
यूथभ्रष्ट(वि०)-झुण्ड से पृथक् हुआ ।
यूथिका-थी (स्त्री०)-जूही, एक प्रकार की पुष्पलता ।
यूनि(स्त्री०)=यूति । [औरत ।
यूनी (स्त्री०)-युवती स्त्री, जवान
यूप (अस्त्री०)-यज्ञीय पशु बांधने के लिये काष्ठविशेष, संस्कृत काष्ठविशेष, यज्ञस्तम्भ, यज्ञसमाप्तिसूचक स्तम्भविशेष । पु०-जयस्तम्भ, जीत का खम्भा, यज्ञस्तम्भ ।
यूपद्रु-द्रुम (पु०)-खदिरवृक्ष, खैर का पेड़ ।
यूष(अस्त्री०)-मुद्गादिक्वाथरस, मूंग, मसूर आदि को अठारह गुणे जल में पकाते हैं जब कुछ गाढ़ा हो जाता है तब उतार कर ज्वरादि में दिया जाता है । [वाला ।
योक्ता[क्तृ] (वि०)-योगकर्त्ता, मिलाने
योक्त्र(न०)-जुए के साथ हल बांधने की रस्सी, नाही नाम से प्रसिद्ध चमड़े की रस्सी ।
योग (पु०)-जोड़, संयोग, उपाय, मिलाना, युक्ति, ध्यान, वर्म [कवच] आदि का धारण करना, जीवात्मा और परमात्मा का एक होना, दलील, ज्योतिष में विष्कम्भादियोग, नुशखा ।
योगज(वि०)-योग से उत्पन्न होने वाला । न०-अगुरु, चन्दन । पु०-न्यायादि में कथित अलौकिक सन्निकर्ष [व्यापार] विशेष ।
योगदान(न०)-छल व उपाधि से देना ।
योगनिद्रा (स्त्री०)-योगरूपी नींद, ऊंघना, दुर्गा, पार्वती ।
योगपीठ(अस्त्री०)-योगोचित आसन, देवादि का आसनविशेष ।
योगरूढ(पु०)-एक प्रकार का शब्दभेद, ऐसा शब्द जिस में अवयवशक्ति और समुदायशक्ति दोनों हों जैसे 'पङ्कज' ।
योगवाह (पु०)-अनुस्वार, विसर्ग, जिह्वामूलीय और उपध्मानीय ।
योगारूढ (वि०)-योगीविशेष, वह योगी जो इन्द्रियविषय तथा कर्मों में आसक्त न हो । [आसन ।
योगासन(न०)-पद्मासन, ध्यान का
योगिनी (स्त्री०)-योगयुक्ता नारी, भगवती की सखीरूपिणी शक्तियें जो बहुत हैं ।
योगी [न्] (वि०)-योग वाला, जो सुख दुःख में समानवृत्ति वाला हो, योगी, संयोग वाला ।
योगीश्वर(पु०)-याज्ञवल्क्य मुनि । वि०-योगियों में श्रेष्ठ ।
योगेश (पु०)-याज्ञवल्क्यमुनि । वि०-योग का स्वामी ।
योगेश्वर (पु०)-योगों का स्वामी श्रीकृष्ण ।
योग्य (वि०)-योग के लिये उचित, प्रवीण, चतुर, योगार्ह, शक्तिमान् । पु०-पुष्यनक्षत्र । न०-ऋद्धिनामक औषध ।

योग्यता (स्त्री०)-सामर्थ्य, लायक़ी, क्षमता, चतुरता, होशियारी।
योग्या (स्त्री०)-अभ्यास, दक्ष होना, भली स्त्री।
योजन (न०)-योग करना, मेल, जोड़ना, चार कोस।
योजनगन्धा (स्त्री०)-कस्तूरी, सीता, व्यासदेव की माता, सत्यवती।
योजित(वि०)-जोड़ा हुआ, मेलित, मिलाया हुआ।
योत्र (न०)=योक्त्र।
योद्धा [द्धृ] (वि०)-युद्धकर्त्ता, लड़ाई करने वाला, बहादुर।
योध (पु०)-युद्ध, जंग, समर, लड़ाई। वि०-योद्धा, बहादुर।
योधन (न०)-पूर्ववत्।
योधसंराव (पु०)-योद्धाओं को आपस में युद्ध के लिये बुलाना।
योनि (अवस्त्री०)-आकर, खान, कारण, जल, कुशद्वेशस्थ एक नदी, स्त्रीचिन्ह। [मनुष्यादि।
योनिज (वि०)-योनि से उत्पन्न
योनिमुद्रा (स्त्री०)-योनि की शकल की मुद्रा जो तन्त्रशास्त्र [वाममार्ग] में पूजा का अंग कहा है।
योषा (स्त्री०)-नारी, औरत, स्त्री।
योषित्-षिता (स्त्री०)-पूर्ववत्।
योषित्प्रिया (स्त्री०)-हरिद्रा, हल्दी।
यौक्तिक (वि०)-युक्ति से प्राप्त, युक्तिसिद्ध, दलील के योग्य। पु०-नर्मसचिव, दिल्लगी द्वारा दिल बहलाने के लिये नियुक्त किया वज़ीर।
यौगिक (वि०)-धातु तथा प्रत्यय के अर्थसम्बन्ध से ज्ञात, योग के लिये उचित। पु०-एक प्रकार का शब्दभेद, ऐसा शब्द जो धातु तथा प्रत्यय के समझने पर अर्थ को प्रकाश करता है जैसे 'पाचक'।
यौजनशतिक (वि०)-एक सौ योजन [चार सौ कोस] जाने वाला।
यौत [तु] क (न०)-विवाहसमय में प्राप्त धनादि, दहेज़ का धन।
यौधिष्ठिर (पु०)-युधिष्ठिर की संतति। वि०-युधिष्ठिरसम्बन्धी।
यौधेय=योद्धा।
यौन (न०)-ज़िनाकारी का गुनाह। वि०-योनिसम्बन्धी।
यौवत (न०)-युवति स्त्रियों का समूह, जवान औरतों का गिरोह।
यौवन (न०)-तरुणता, जवानी, सोलह वर्ष से ऊपर की अवस्था।
यौवनकण्टक-पिडिका (स्त्री०)-एक प्रकार की फुंसी जिसको मवासा कहते हैं और जो तारुण्य के जताने वाली होती है।
यौवनलक्षण (न०)-जवानी का निशान, सुन्दरता, स्तन। [राजा
यौवनाश्व (पु०)-मान्धाता नामक
यौष्माक-कीन(वि०)-युष्मत्सम्बन्धी, आपका, तुम्हारा।

र

र (पु०)–वह्नि, आग, तेज, उग्र, कामदेव की अग्नि ।

रंहः [स्] (न०)–वेग, शीघ्रता, तेजी ।

रक्त (न०)–केशर, ताम्रधातु, सिन्दूर, रुधिर, खून । पु०–लालरंग, कुसुम्भ । वि०–लालरंग वाला, आसक्त, अनुरक्त ।

रक्तकन्द (पु०)–विद्रुम, मूंगा रक्तालु, रतालु नामक शाकभेद । [कमल ।

रक्तकमल (न०)–रक्तोत्पल, लाल

रक्तकायशा (स्त्री०)–रक्तपुनर्नवा, लाल सांठी । [वृक्षविशेष ।

रक्तकुसुम (पु०)–पारिभद्र नामक

रक्तगन्धक (न०)–लालगन्धक ।

रक्तगुल्म (पु०)–एक प्रकार का रोग जो स्त्रियों को ही होता है ।

रक्तचन्दन (न०)–लाल चन्दन ।

रक्तचूर्ण (न०)–सिन्दूर नामक द्रव्य ।

रक्ततुण्ड (पु०)–तोता, शुकपक्षी । वि०–लाल मुंह वाला ।

रक्तदन्तिका (स्त्री०)–लाल दांतों वाली एक दुर्गाशक्ति ।

रक्तदृश् (अक्ली०)–कपोत, कबूतर । वि०–लाल आंखों वाला ।

रक्तधातु (न०)–गेरु, गैरिक, तांबा, शरीर का खून ।

रक्तप (पु०)–राक्षस, दैत्य । वि०–रक्त पीने वाला ।

रक्तपक्ष (पु०)–गरुड़ नामक पक्षी ।

रक्तपल्लव (पु०)–अशोक का वृक्ष । वि०–लाल पत्तों वाला ।

रक्तपा (स्त्री०)–डाकिनी, डायन, जोंक, जलौका ।

रक्तपादी (स्त्री०)–लज्जालुलता, छुईमुई का पौदा ।

रक्तपायी [न्] (वि०)–रक्तपान करने [खून पीने] के स्वभाववाला ।

रक्तपित्त (न०)–रोगविशेष जिस में नासा, मुख और गुदादि से खून आया करता है । [पेड़ ।

रक्तपुष्पक (पु०)–पलाशवृक्ष, ढाक का

रक्तपुष्पा (स्त्री०)–शाल्मलिवृक्ष, लाल सांठी ।

रक्तफल (पु०)–वटवृक्ष, बड़ का पेड़।

रक्तफला (स्त्री०)–बिम्बिका, कन्दूरी नामक लता ।

रक्तबीज (पु०)–दाड़िम,अनार,रीठा।

रक्तमेह (पु०)–प्रमेह रोगविशेष ।

रक्तमोक्षण (न०)–शोणितस्राव, खून का निकलवाना । [मजीठ ।

रक्तयष्टि-ष्टिका (स्त्री०)–मञ्जिष्ठा,

रक्तलशुन (पु०)–रक्तवर्ण की कन्द-विशेष, शलजम, सम्भवतः इस ही का नाम भाषा में शलजम है ।

रक्तवर्ग (पु०)–दाड़िम, किंशुक, लाख आदि लाल रंग वाली चीज़ों का समुदाय ।

रक्तवर्ण (पु०)–इन्द्रगोप, तीज, बीर-बहूटी नामक कीड़ा ।

रक्तवृन्त(पु०)–बैंगन नामक फलशाक, पारावत, कबूतर ।

रक्तवसन (पु०)–संन्यासी, यति ।

रक्तवात (पु०)–रोगविशेष ।

रक्तवृष्टि (स्त्री०)–रक्त का बरसना, दैवकृत उपद्रवविशेष।
रक्तशालि (पु०)–रक्तवर्ण के चावल।
रक्तशृंगिक (न०)–एक प्रकार का विष।
रक्तसर्षप (पु०)–लालवर्ण की सरसों, राई, राजिका।
रक्तसार(न०)–रक्तचन्दन, लालचन्दन। पु०–अम्लवेत नामक वृक्ष, खदिर-वृक्ष। .[बहना।
रक्तस्राव (पु०)–अम्लवेत, खून का
रक्तहंसा (स्त्री०)–रागणी विशेष जिस से हंस वशीभूत हो जाते हैं।
रक्ता(स्त्री०)–चौटली, लाक्षा, मजीठ।
रक्ताक्ष(पु०)–कबूतर, सारस, चकोर। वि०–क्रूर, लाल नेत्रों वाला।
रक्तांग न०)–कुंकुम, केसर, जाफ़-रान। पु०–मंगलग्रह, कबीला। स्त्री०–प्रवाल, मूंगा।
रक्ताम्बर (न०)–काषायवस्त्र, रंगे हुए वस्त्र। वि०–काषायवस्त्रों के धारण करने वाला।
रक्तार्शः [स्] (न०)–खूनी बवासीर।
रक्तिका (स्त्री०)–चौंटली, गुञ्जा, रत्ती [तोल में]।
रक्तोत्पलाभ (वि०)–लालकमल के सदृश कान्ति वाला।
रक्ष् (१प०)–रक्षा करना, बचाना, पालना।
रक्षः [स्] (न०)–राक्षस, असुर।
रक्षःसभा (न०)–राक्षसों की सभा, राक्षसों का समूह।
रक्षक (वि०)–रक्षा करने वाला, पालने वाला, बचाने वाला।
रक्षण (न०)--रक्षा, बचाना, पालना।
रक्षा (स्त्री०)=रक्षण।
रक्षापत्र (पु०)--भोजपत्र का पेड़, भूर्जपत्र।
रक्षित(वि०)-रक्षा किया हुआ, बचाया हुआ, हिफ़ाज़त किया हुआ।
रक्षिता [तृ] वि०)-रक्षा करने वाला, बचाने वाला।
रक्षिवर्ग (पु०)--रक्षा करने वालों का समूह, सेनादि जो रक्षा करने वाले, बहुत सिपाही।
रक्षोघ्न (पु०)-भिलावे का पेड़, सफ़ेद सरसों। न०–कांजी, हींग, ऋग्वेद में सूक्तविशेष। वि०–राक्षस को मारने वाला।
रक्षोजननी (स्त्री०)–रात्रि, रात, राक्षसों की माता।
रग्(१ आ०)–गमन करना, जाना।
रघ्(१ आ०)–गमन करना, जाना।
रघु (पु०)–सूर्यवंशीय राजा दिलीप का पुत्र जो रामचन्द्र का प्रपिता-मह था, रघुवंश नामक प्रसिद्ध कालीदासकृत संस्कृतकाव्य। पु० बहुव०–रघुकुल में हुए राजा। वि०-शीघ्रगामी। [कालीदास।
रघुकार (पु०)–रघुवंशकाव्य का कर्ता
रघुनन्दन(पु०)–श्रीरामचन्द्र।
रघुनाथ-पति(पु०)–पूर्ववत्।
रघुवंश (पुस्त्री०)--रघुवंश नामक ऊनविंशसर्गात्मक काव्य। पु०–रघु का वंश, रघुकुल।

रंक (पु०)–कृपण, सूम, मन्द, मूर्ख।
रंकु (पु०)–मृगविशेष, एक प्रकार का हरिण।
रंग (न०)–धातुविशेष, रांग। पु०–राग, रंग, नृत्य, नाच, रणभूमि, नाट्यशाला, सुहागा।
रंगज (पु०)–रांग से उत्पन्न सिन्दूर।
रंगजीवक (पु०)–रंगरेज, कपड़ा रंगने वाला, चित्रकार, तमाशा करके जीने वाला।
रंगण (न०)–नाच, नृत्य।
रंगद (पु०)–टंकण, सुहागा।
रंगदृढा (स्त्री०)–स्फटिका, फिटकरी।
रंगबीज (न०)–रूप्यक, रुपया।
रंगभूमि (स्त्री०)–नाटकघर, नृत्यशाला, पहलवानों का अखाड़ा, थियेटर, स्टेज, युद्धक्षेत्र, स्वयंवरस्थान।
रंगमण्डप (पु०)–थियेटर, नाटकघर।
रंगशाला (स्त्री०)–नृत्यशाला, क्रीडाभूमि। [थियेटर।
रंगाङ्गण (अस्त्री०)–अखाड़ा, एम्फीरंगावतरण (न०)–रंगभूमि में नट का प्रवेश, नटवृत्ति।
रंघ् (१ उ०)–जाना, जल्दी से गमन करना। १० उ०–चमकना, बोलना।
रंघस् (स्त्री०)–तेजी, जल्दी।
रच् (१० उ०)–बनाना, रचना, तैयार करना, लिखना, ग्रन्थ बनाना, सजना।
रचन-ना (स्त्री०)–तय्यारी, बनावट, पूर्ति, श्रृंगार, ग्रन्थनिर्माण, सेना का सज्जित करना, प्रन्थसम्पादन, निर्माण।
रचयिता [तृ] (पु०)–सम्पादक, निर्माता।
रचित (वि०)–रचा हुआ, बनाया हुआ, निर्मित, सम्पादित, लिखित।
रज (पु०)=रजस्।
रजक (पु०)–धोबी, तोता।
रजका (स्त्री०)–धोबिन, रजकभार्या।
रजकी (स्त्री०)–धोबिन, तीसरे दिन की रजस्वला नारी।
रजत (वि०)–रुपहला, धवल, श्वेत। न०–चांदी, स्वर्ण, रक्त, हाथीदांत, पर्वत।
रजतद्युति (पु०)–हनूमान्।
रजताद्रि-प्रस्थ (पु०)–कैलासपर्वत।
रजन (पु०)–किरण, रश्मि। न०–रंगना, रंग देना।
रजनि-नी (स्त्री०)–रात्रि, हल्दी, नाम लता, दुर्गा।
रजनिकर (पु०)–चन्द्रमा, काफूर।
रजनिचर (पु०)–चांद, चोर, राक्षस, निशाचर, चौकीदार।
रजनिजल (न०)–ओस, पाला।
रजनिपति-रमण (पु०)–चांद, चन्द्रमा।
रजनिमुख (न०)–सायंकाल, सन्ध्या।
रजस् (न०)–धूलि, राख, चूर्ण, पुष्परेणु, अंधेरा, अज्ञान, दूसरा गुण [प्रथम सत्व, तृतीय तमस् कहलाता है], स्त्री का विकृत रक्त जो प्रतिमास योनि द्वारा बहता है, एक धातुभेद।
रजस्वल (वि०)–रजोयुक्त, रजोगुणविशिष्ट। पु०–महिष, भैंसा।

रजस्वला (स्त्री०)--मासिकधर्म वाली स्त्री, ऋतुमती स्त्री, हैज़ वाली औरत।
रजोबल (न०)--अन्धकार, अंधेरा।
रजोहर (पु०)--रजक, धोबी।
रज्जु (स्त्री०)--बन्धनसाधन, रस्सी, डोरी।
रञ्जक (न०)--हिंगुल, सिंगरफ। पु०--कबीलर, रंगरेज। वि०-- प्रीति करने वाला।
रञ्जन (न०)--लालचन्दन, मजीठ, हिंगुल, मुहब्बत, प्रीति। वि०--रागजनक, प्रेमोत्पादक। पु०--कायफल, मूंज नामक घास।
रञ्जनी (स्त्री०)--हरिद्रा, हल्दी।
रट् (१ प०)--भाषण करना, बातचीत करना, रटना।
रटन्ती (स्त्री०)--माघ महीने की कृष्णपक्ष की चतुर्दशी।
रटित (वि०)--कथित, कहा हुआ, रटा हुआ।
रठ्=रट् [शब्द करना।
रण् (१ प०)--गमन करना, जाना,
रण (अस्त्री०)--युद्ध, समर, जंग।
रणतूर्य (न०)--रणवाद्य, संग्राम में बजने वाला बाजा।
रणमत्त (पु०)--हाथी, गज।
रणरण (पु०)--मशक। न०--उद्दीपन। वि०--रण में गर्जने वाला।
रणसंकुल (न०)--तुमुलयुद्ध, बड़ी भारी लड़ाई।
रण्डा (स्त्री०)--आखुकर्णी नामक औषध, रांड, विधवा स्त्री।
रण्डाश्रमी [न्] (पु०)--स्त्रीनाभाव के कारण निष्फल आश्रम वाला पुरुष, ऐसा पुरुष जो ४० या ४८ वर्ष की आयु में अपनी भार्या से बिछुड़ गया हो।
रत (न०)--मैथुन, सम्भोग, क्रीड़ा करना, गुह्यस्थान। वि०--अनुरक्त, आसक्त, प्रीति में फंसा हुआ।
रतताली (स्त्री०)--कुट्टनी, दूती।
रतनिधि (पु०)--खञ्जनपक्षी।
रतहिण्डक (पु०)--स्त्रीचोर, लम्पट, बदमाश, लुच्चा।
रतायनी (स्त्री०)--वेश्या, रण्डी, वारांगना।
रति (स्त्री०)--कामदेव की पत्नी, अनुराग, प्रीति, रमण करना, गुह्यस्थान।
रतिगृह (न०)--केलिमन्दिर, योनि।
रतिपति (पु०)--अनंग, कामदेव। [रतिकान्त, रतिरमण, रतिप्रिय आदि शब्दों का भी यही अर्थ है।]
रत्न (न०)--मणि आदि पत्थर, माणिक, हीरा, अपनी २ जाति में उत्तम। [द्वीपविशेष।
रत्नकूट (पु०)--पर्वतविशेष। न०--
रत्नगर्भ (पु०)--कुबेर, समुद्र, सागर।
रत्नगर्भा (स्त्री०)--पृथिवी, भूमि, श्रेष्ठ पुत्रवती स्त्री। [रत्नों का स्थान।
रत्नपारायण (न०)--सम्पूर्ण प्रकार के
रत्नमुख्य (न०)--हीरा, हीरक।
रत्नराट् [ज्] (न०)--रत्नों में श्रेष्ठ।

अर्थात् माणिक्य, लाल।
रत्नवती (स्त्री०)–पृथिवी, भूमि। वि०–रत्नवाली।
रत्नवर्षुक (न०)–पुष्पकरथ। वि०–रत्न बरसाने के स्वभाव वाला।
रत्नसू(स्त्री०)-भूमि,ज़मीन,पृथिवी।
रत्नाकर (पु०)–मणियों की खान, समुद्र। [गहना, जड़ाऊ जेवर।
रत्नाभूषण (न०)–रत्नों से जटित
रत्नि (अक्लीं०)–मुट्ठी बंधे हुए हाथ का परिमाण [माप]।
रथ (पु०)–रथ नामक प्रसिद्ध सवारी, शरीर, पांव [पैर], बेत का वृक्ष।
रथकड्या (स्त्री०)–रथों का समुदाय।
रथकर–कार (पु०)–रथ बनाने वाली एक जाति, खाति नामक जाति।
रथगुप्ति (स्त्री०)–दूसरे के प्रहार के रोकने के वास्ते रथ का गुप्त भाग, वरूथ।
रथचरण (पु०)–चक्रवाकपक्षी, रथ का चक्र [पहिया]।
रथन्तर(वि०)–रथ का खेंचने वाला, रथ से पार होने वाला, सामवेद में मन्त्रविशेष।
रथाङ्ग (पु०)–चक्रवाक [चकवा] पक्षी। न०-चक्र, पहिया।
रथाङ्गपाणि (पु०)–श्रीकृष्ण, विष्णु।
रथारोही [न्] (वि०)–रथी, रथ में सवार हुआ, रथ में चढ़कर लड़ने वाला।
रथिक (वि०)–रथ पर सवार हो कर लड़ने वाला। पु०-रथी। [रथिर, रथिन, रथी इन शब्दों का भी यही अर्थ है]।
रथ्य (पु०)–घोड़ा, अश्व। वि०-रथ का, रथसम्बन्धी।
रथ्या(स्त्री०)–रथके जाने योग्य सड़क, उत्तम रास्ता, गली, रथोंका समूह।
रद् (१ प०)–खोदना, उखाड़ना।
रद (पु०)–दांत, दन्त, खोदना, फाड़ना
रदच्छद (पु०)–ओष्ठ, होठ।
रदन (पु०)=रद। [हाथी।
रदनी-दी [न्] (पु०)–दांतों वाला
रध् (४ प०)–हिंसा करना, मारना, रांधना, पकाना।
रञ्ज् (१ उ०)–[सक०] रंगना, दूसरा वर्ण करना। [अक०] आसक्त होना, फंसना।
रन्तिदेव (पु०)–विष्णु, चन्द्रवंशीय एक राजा, कुत्ता, श्वान।
रन्धन (न०)–पाक, रांधना, पकाना।
रन्धित (वि०)–रधा हुआ, पकाया हुआ
रन्ध्र (न०)–छिद्र, सूराख़, दूषण, दोष, ऐब, ज्योतिष में लग्न से आठवां स्थान।
रन्ध्रवंश (पु०)–छिद्र वाला बांस, पोला बांस।
रप् (१ प०)–जाना, गमन करना।
रभ् (१ आ०)–किसी वस्तु की अति अभिलाषा करना, आरम्भ करना, गले लग कर मिलना [इदित्वेट्] शब्द करना, आवाज़ करना।
रभस (पु०)–वेग, तेज़ी, उत्सुकता, हर्ष, आनन्द, अतिशय अभिलाषा।

रम् (१ आ०)–क्रीडा करना, रमण करना, विलास करना, खेलना ।
रम (पु०)–कान्त, रक्त अशोक का पेड़, अनग, रतिपति ।
रमण (न०)–परवल की जड़, क्रीडा, भोगविलास करना, मैथुन खेलना। पु० पति, स्वामी, कामदेव, निम्बवृक्ष, गर्दभ, गधा । वि०-रमणीय, मनोहर, सुन्दर ।
रमणी (स्त्री०)–नारी, स्त्री, सुन्दर स्त्री।
रमणीय यम (वि०)–मनोहर, सुन्दर, खूबसूरत, उम्दा, अच्छा ।
रमा (स्त्री०)–लक्ष्मी, शोभा, शशिध्वज नामक राजा की कन्या और कल्किदेव की पत्नी ।
रमाधव (पु०)–विष्णु, श्रीकृष्ण ।
रमापति(पु०)–पूर्ववत् । [विष्णु ।
रमाप्रिय (न०)–कमल, पद्म । पु०
रमेश्वर (पु०)–विष्णु, श्रीकृष्ण ।
रम्भ(पु०)–वेणु, महिषासुर का पिता, वानरविशेष, रेणु, धूलि ।
रम्भा (स्त्री०)–केला, कदली, अप्सरा का नाम, पार्वती, गौ का शब्द, वेश्या ।
रम्य (न०)–पटोलमूल । वि० सुन्दर, मनोज्ञ, मद करने वाला, मधुकवृक्ष, चम्पक ।
रम्यक (न०)–जम्बुद्वीप के नव वर्षों में से एक वर्षविशेष ।
रम्या(स्त्री०)–रात, रात्रि, गङ्गा, स्थलपद्मिनी, कुमुदनी ।
रय (पु०)–स्वर्णवर्ण, शोभा ।
रय् (१ आ०)–गमन करना, जाना ।
रय (पु०)–वेग, शीघ्रता, तेजी, प्रवाह, पुरूरवा का पुत्र ।
रराटी (स्त्री०)–मस्तक, ललाट ।
रल्लक (पु०)–कम्बल, मृगविशेष, पक्ष्म, पलक । [करना ।
रव् (१आ०)–जाना, गमन करना, शब्द
रव (पु०)–शब्द, आवाज ।
रवण (पु०)–शब्द, कोकिल, कोयल । न०–कांस्य । वि०–तीक्ष्ण, चञ्चल, शब्द करने वाला ।
रवथ (पु०)–कोयल, कोकिल ।
रवि(पु०)–सूर्य, आक का वृक्ष, रविवार।
रविकान्त (पु०)–सूर्यकान्त नामक मणि । [सूर्यचक्रविशेष ।
रविचक्र (न०)–मनुष्य के आकार का
रविज (पु०)–शनैश्चर, वानरराज सुग्रीव, यमराज, वैवस्वतमनु, कुन्तीपुत्र कर्ण । द्विव०–अश्विनीकुमार ।
रविनाथ(न०)–कमल, पद्म। पु०-बन्धूक।
रविनेत्र (पु०)-विष्णु का बोधक ।
रविप्रिय (न०)–लाल कमल, ताम्र, तांबा । पु०-रक्तकरवीर, लकुच ।
रविरत्न (न०)–माणिक्य, मानिक, लाल ।
रविलौह (न०)–ताम्र, तांबा ।
रविसुत (पु०)=रविज ।
रवीन्द्र (न०)–कमल, पद्म ।
रश् (१प०)–शब्द करना, आवाज करना।
रशना (स्त्री०)–जिह्वा, जीभ, काञ्ची, स्त्रीकटिभूषण, तगड़ी ।

रश्मि (पु०)–किरण, अश्वादि की रस्सी, लगाम । न०–कमल ।
रस् (१० उ०)–स्वाद लेना । १ प०–शब्द करना ।
रस (पु०)–रसना इन्द्रिय से ग्रहण करने योग्य पदार्थ जो कि मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय भेद से छः प्रकार का है, धातुविशेष, भक्षित अन्न आदि का पूर्वपरिणाम, पुष्परस, अलंकारशास्त्र में कहा हुआ वह रति आदि स्थायिभावयुक्त शृङ्गारादि कि जो सञ्चारी, व्यभिचारी और सहकारी भाव से प्रकट होने योग्य हो, सुख, प्रेम, वीर्य, पारा, द्रवपदार्थ । न०–भस्म । अस्त्री०–गन्धरस ।
रसकर्पूर (न०)–रसकापूर, कर्पूररस, पारा, रस का पुष्प ।
रसगर्भ(न०)–रसाञ्जन, हिंगुल, शिंगरफ़ ।
रसघ्न (पु०)–सुहागा, टंकण ।
रसज (न०)–रक्त, रुधिर । पु०–गुड़, मद्य का कीट । वि०–रस से उत्पन्न होने वाला ।
रसज्ञा (स्त्री०)–जिह्वा, जीभ, गङ्गा । वि०–रस का जानने वाला ।
रसज्येष्ठ (पु०)–मधुर रस, मीठा रस, शृङ्गार रस ।
रसतेजः [स्] (न०)–भुक्तान्न का सार, रक्त, खून । [चेक्षु ।
रसदालिका (स्त्री०)–पौंडा, ईख, पुण्ड्र-
रसधातु (पु०)–पारा, पारद ।
रसधेनु (स्त्री०)–वह गौ जो दानार्थ इक्षुरस से बनाई जाती है ।
रसन (न०)–स्वाद, ध्वनि, आवाज़, जिह्वा, जलेन्द्रिय ।
रसना (स्त्री०)–जिह्वा, जीभ, रस्सी, रज्जु, तगड़ी ।
रसनायक (पु०)–शिव, महादेव ।
रसनालिट् [ह्](पु०)–कुत्ता, कुक्कुर । वि०–जीभ से चाटने वाला ।
रसपाकज (पु०)–गुड़ ।
रसफल (पु०)–नारिकेलवृक्ष ।
रसराज (पु०)–पारा, पारद, रसाञ्जन ।
रसवती (स्त्री०)–रसोई का घर, पाकस्थान । [दाख ।
रसा (स्त्री०)–पृथ्वी, भूमि, ज़मीन,
रसाखन (पु०)–मुर्गा, कुक्कुट ।
रसाञ्जन (न०)–शिंगरफ़, हिंगुल, रसौत ।
रसातल(न०)–पातालभेद, पृथ्वी के नीचे का सातवां लोक ।
रसादान(न०)–भूमिदान, पृथ्वी का दान ।
रसाधार(पु०)–सूर्य, सूरज ।
रसाभास (पु०)–अनौचित्ययुक्त रस, वह रस जो वास्तव में रस न हो और रस सा प्रतीत हो । [चूक ।
रसाम्ल (पु०)–अम्लवेत । न०–चुक्र,
रसायन(न०)–तक्र, छाछ, कमर, विष, वह औषधविशेष जो जरा और ज्वरादि व्याधियों का नाशक हो । पु०–गरुड़ ।
रसायनफला(स्त्री०)–हैड़, हरीतकी ।
रसाल (न०)–सिल्हक, एक सुगन्धित

वस्तुविशेष, शिखरणी नामक एक पेय पदार्थ। पु०–आम्र, इक्षु, ईख, गेहूं, पनस, पौंढा।
रसाला(स्त्री०)–जिह्वा, दूर्वा, दाख।
रसाली(स्त्री०)–पौंढा, ईख, गुल्गुलेक्षु।
रसास्वादी [न्] (पु०)–भ्रमर, भौंरा। वि०–रस का स्वाद लेने वाला।
रसिक(पु०)–सारसपक्षी, अश्व, हाथी। वि०–रसास्वादयुक्त। [काञ्ची।
रसिका (स्त्री०)–ईख का रस, रसना,
रसित(न०)–मेघनिर्घोष, मेघ का शब्द। वि०–स्वर्णादि से जड़ा हुआ।
रसुन(पु०)–लशुन, लहसुन।
रसेन्द्र(पु०)–पारद, पारा।
रसोत्तम(पु०)–मूंग, मुद्ग।
रसोनक(पु०)–लशुन, म्लेच्छकन्द।
रसोद्भव(न०)–मोती, मौक्तिक।
रस्न(न०)–द्रव्य।
रस्य(न०)–रक्त, लोहू। वि०–स्वाद लेने योग्य, आस्वाद्य।
रंह् (१० उ०)–जाना, गमन करना।
रंहः[स्] (न०)–वेग, तेज़ी, वग।
रह् (१ प०)–गति, गमन करना। १प० सक०–छोड़ना, त्याग करना।
रहः [स्] (न०)–एकान्त, निर्जन, विविक्त, गोपनीय, याथार्थ्य। अ०–विजन स्थान।
रहस्य(वि०)–छिपाने योग्य, गोप्य, एकान्त में उत्पन्न।
रहस्या(स्त्री०) नदीभेद, रास्ना नामक औषध, पाठा। [हुआ।
रहित (वि०)–वर्जित, त्यक्त, छोड़ा

रा (२ प०)–दान करना, लेना, ग्रहण करना।
रा(स्त्री०)–विभूम, दान, तेज़ी, काञ्चन, श्री। पु०–धन, स्वर्ण।
राका (स्त्री०)–पूर्ण चन्द्रमा वाली तिथि, प्रतिपद्युक्त पूर्णिमा, नदीविशेष, प्रथमरजोधर्म वाली स्त्री, एक राक्षसी जो शूर्पणखा और खर की माता थी, कच्छूरोग।
राक्षस (पु०)–यातुधान, हिंसात्मक कर्म करने वाली जीव जातिविशेष, नन्दराज का मन्त्री, आठ प्रकार के विवाहों में से एक। अस्त्री०–अब्दभेद। वि०–राक्षससम्बन्धी।
राक्षसी(स्त्री०)–राक्षसपत्नी, दाढ़, चण्डी, सन्ध्यासमय।
राक्षसेन्द्र (पु०)–रावण, राक्षसों का पतिमात्र।
राक्षा(स्त्री०)–लाख, लाक्षा।
राग (पु०)–रंगना, प्रेम, प्रीति, अनुराग, चन्द्रमा, राजा, सूर्य, रक्तवर्ण, क्रोध, वसन्तादि स्वरविशेष, गानशास्त्रीय राग जो ६ हैं यथा-भैरव, कौशिक, हिंदोल, दीपक, श्रीराग और मेघराग या मलहार।
रागचूर्ण (पु०)–कामदेव, खदिर का वृक्ष, लाक्षारस। [विशेष।
रागदालि (पु०)–मसूर नामक धान्य-
रागयुक्[ज्] (पु०)–माणिक्य, मोती।
रागरज्जु(पु०)–कामदेव, कन्दर्प।
रागलता(स्त्री०)–कामदेव की पत्नी।

रागसूत्र(न०)–तुला [तराजू] का सूत्र, पट्टसूत्र ।
रागाक्ती(स्त्री०)–मंजीठ, मञ्जिष्ठा ।
रागाढ्या(स्त्री०)–पूर्ववत् ।
रागाशनि(पु०)–बुद्धदेव ।
रागिणी(स्त्री०)–चतुरा नारी, मेनका की ज्येष्ठकन्या, जयश्री नाम वाली लक्ष्मी, छः रागों की पत्नी ।
रागी [न्] (वि०)–अनुराग करने वाला, कामुक, विलासी पुरुष, रक्तवर्णयुक्त । [युक्त होना ।
राघ्(१ आ०)–सामर्थ्य होना, शक्ति-
राघव (पु०)–श्रीरामचन्द्र, अज, दशरथ, रघुवंशीयमात्र, समुद्रस्थ एक महामत्स्यविशेष ।
राङ्कव (न०)–मृग के रोमों से बना हुआ वस्त्रविशेष ।
राट्रुण(न०)–एक प्रकार का पुष्प जो रक्तपित्त का नाशक है ।
राज्(१ उ०)–चमकना, दीप्तियुक्त होना
राजक(न०)–राजसमूह, राजाओं का गिरोह । वि०–चमकने वाला ।
राजकन्या (स्त्री०)–केविका नामक पुष्प, राजपुत्री । [का ।
राजकीय (वि०)–राजसम्बन्धी, राजा
राजकल्प (पु०)–राजा के तुल्य, राजसदृश, राजा होने में कुछ न्यून ।
राजकुमार (पु०)–राजपुत्र, वह राजपुत्र जो तरुणावस्था को प्राप्त न हुआ हो । [पर्वत, शाकभेद ।
राजगिरि (पु०)–मगधदेशस्थ एक
राजघ(वि०)–राजा को मारने वाला, राजहन्ता । [उपस्थेन्द्रिय ।
राजचिन्ह (न०)–राजा का चिन्ह,
राजजम्बु (स्त्री०)–पिण्डखजूर, रायजामन ।
राजय[य]क्ष्मा(पु०)–क्षय नामक रोग ।
राजत (वि०)–रजतनिर्मित, चांदी के बने भूषणादि । न०–चांदी ।
राजतरु (पु०)–कर्णिकारवृक्ष, कनेर का पेड़ ।
राजताल (पु०)–गुवाक का वृक्ष ।
राजदण्ड (पु०)–राजा की आज्ञा, राजशासन ।
राजदन्त (पु०)–ऊपर की पंक्ति के मध्यवर्ती दो दांत ।
राजदैवीय (पु०)=राजकल्प ।
राजधर्म्म (पु०)–राजा का आवश्यक प्रजापालनादि रूप कर्तव्य कर्म ।
राजधानी (स्त्री०)–राजा के रहने की नगरी, राजनिवासस्थान ।
राजनीति(स्त्री०)–राजाओं के जानने योग्य साम, दाम आदि उपाय और उन को प्रतिपादन करने वाला शास्त्र ।
राजनील (न०)–मरकत नामक मणि ।
राजन्य (पु०)–क्षत्रिय, राजपुत्र, अग्नि, क्षीरिका का वृक्ष ।
राजन्यक (न०)–क्षत्रियसमूह ।
राजन्वान् (वि०)–सुराजयुक्तदेश, अच्छे राजा वाला देश ।
राजपट्टिका (स्त्री०)–चातक नामक पक्षिविशेष ।
राजपथ (पु०)–राजमार्ग, राजाओं के

जाने योग्य मार्ग, बड़ा रास्ता।
राजपुत्र (पु०)–चन्द्रमा का पुत्र बुध-ग्रह, राजा का पुत्र, वर्णसंकर, वैश्य से अम्बष्ठ की कन्या में उत्पन्न पुत्र, राजपूत। [कन्या।
राजपुत्री (स्त्री०)–कड़वी तूंबी, राज-
राजभूय (न०)–राजत्व, राजा का असाधारण कर्त्तव्य धर्म, राजपन।
राजमार्ग (पु०)=राजपथ।
राजयोग्य (वि०)–राजोचित, नृपार्ह।
राजरंग (न०)--रजत, चांदी।
राजराज (पु०)--कुबेर, धनपति, चक्र-वर्ती राजा, चन्द्रमा।
राजर्षि (पु०)--राजाओं में श्रेष्ठ, ऋतुपर्णादि राजा, जितेन्द्रिय पुरुष, यतात्मा।
राजलक्ष्मा [न्] (पु०)--युधिष्ठिर, धनञ्जय नामक कोष। वि०--राजा के चिन्हों से युक्त।
राजलक्ष्मी(स्त्री०)--राजश्री, राजशोभा
राजवंश्य (वि०)--राजवंश में उत्पन्न होने वाला, नृपवंशोद्भव, जाति-विशेष। [राजा का कर्त्तव्य कर्म।
राजवर्त्म [न्] (न०)--राजमार्ग,
राजवान् [वत्] (वि०)–राजा से युक्त, नृपविशिष्ट [देश]।
राजवाह (पु०)–अश्व घोड़ा।
राजशण (पु०)–पट, रेशम।
राजशाक (पु०)–बथुआ, वास्तूकशाक।
राजस (वि०)–रजोगुण वाला, रजो-गुण से उत्पन्न। [सीप।
राजसदन (न०)–राजगृह, राजमहल,
राजसभा (स्त्री०)–नृपसमाज, राजाओं की समिति।
राजसारस (पु०)–मयूर, मोर।
राजसी (स्त्री०)–दुर्गा, रजोगुणवती।
राजसूय (पु०)–राजा के करने योग्य यज्ञविशेष।
राजस्कन्ध (पु०)–घोड़ा, अश्व।
राजस्व(न०)–राजा का धन, राजकर।
राजहंस (पु०)–वह हंस जिस की चोंच और पांव लाल वर्ण के और अन्य शरीर श्वेत रंग का हो, उत्तम राजा।
राजहर्षण (न०)--तगर का पुष्प।
राजा [न्](पु०)–नृपति, प्रभु, पार्थिव।
राजादन (न०)–पियाल वृक्ष, वह वृक्ष जिसके फल और बीजों के लड्डू बनाकर राजाओं के द्वारा खाये जाते हैं, क्षीरिका वृक्ष, किंशुक।
राजार्क (पु०)–सफ़ेद आक का वृक्ष।
राजार्ह (न०)–अगुरु। वि०-राजा के योग्य।
राजार्हा (स्त्री०)–जम्बु, जामन।
राजि (स्त्री०)–पंक्ति, श्रेणी, रेखा, क़तार, सफ़ेद सरसों।
राजिका (स्त्री०)–राजसर्षप, काली सरसों, केदार, राई। [सर्प।
राजिल(पु०)–डुण्डुभ नामक सर्प, जल-
राजी(स्त्री०) -पंक्ति, श्रेणी, रक्तसरसों।
राजीव(न०)--कमल, पद्म। पु०-मत्स्य मीनविशेष, सारसपक्षी, हरिण-भेद, हस्ती। वि०-राजोपजीवी।

राजेन्द्र(पु०)--राजश्रेष्ठ, चार योजन कोश के अधिकार वाला नृप, नृप से शतगुण अधिक अधिकारी मण्डलेश्वर और मण्डलेश्वर से दशगुणाधिक राजेन्द्र कहलाता है।
राज्ञी(स्त्री०)--राजपत्नी, रानी, सूर्य की भार्या,पश्चिमदिशा, कांस्य।
राज्य(न०)--शासन, हुकूमत, राजत्व।
राज्यका(स्त्री०)--रायता।
राज्यांग (न०)--राज्य के अंग जो सात हैं यथा--स्वामी, अमात्य [मन्त्री], सुहृत, कोष, राष्ट्र, दुर्ग [क़िला], बल और पुरवासियों की श्रेणी।
राटि (स्त्री०)--संग्राम, युद्ध, टिटिहरी नामक पक्षी।
राढ (पु०)--देशविशेष।
राढा (स्त्री०)--शोभा, लक्ष्मी, एक पुरी का नाम।
राढीय (वि०)--राढ नामक देश में उत्पन्न हुआ, राढदेशोद्भव।
रात्र (न०)--रात, रात्रि।
रात्रक (न०)--नारदप्रोक्त पञ्चरात्र नामक ग्रन्थविशेष। पु०--वह पुरुष जो एक वर्ष पर्यन्त वेश्या के घर में निवास कर चुका हो।
रात्रि (स्त्री०)--रात, निशा, मर्त्यक देश में सूर्यास्त हो जाने के पश्चात् का समय,हरिद्रा,हल्दी।
रात्रिकर(पु०)--चन्द्रमा, चांद, कपूर।
रात्रिच [द्रु] र (पु०)--राक्षस। वि०--रात्रि में विचरने वाला।
रात्रिच [द्रु] री (स्त्री०)--राक्षसी। वि०--रात में भ्रमण करने वाली।
रात्रिजागर (पु०)--कुत्ता, कुक्कुर। वि०--रात्रि में जागने वाला।
रात्रिमणि (पु०)--चन्द्रमा, चांद,
रात्रिवास (पु०)--अन्धकार, अंधेरा, रात्रि में सोते समय ओढ़ने योग्य वस्त्र। [सुबह।
रात्रिविगम (पु०)--प्रातःकाल, सवेरा,
रात्रिवेद (पु०)--मुर्गा, कुक्कुट।
रात्रिवेदी [न्] (पु०)--पूर्ववत्।
रात्रिहास (पु०)--सफ़ेद कमल।
रात्री (स्त्री०)--निशा, रात।
रात्र्यट (पु०)--राक्षस। वि०--रात्रि में घूमने वाला।
रात्र्यन्ध (पु०)--काकादि पक्षिविशेष, वह पक्षी जिसे रात्रि में नहीं दीखता।
राध् (प्प०)--सुख करना, पूरा करना, सम्पादन करना, तय्यार करना, मारना। ४ प०--मेहरबान होना, कामयाब होना, मारना।
राध (पु०)--वैशाखमास। अस्त्री० दया, मेहरबानी, अभ्युदय।
राधरंक (पु०)--दृढ़, हलकी बारिश, ओला।
राधन (न०)--राज़ी करना,सम्पादन, प्राप्ति, सम्पादनोपाय।
राधना (स्त्री०)--वाणी, बोली।
राधनी (स्त्री०)--पूजा, अर्चना।
राधा (स्त्री०)--अभ्युदय, सफलता, एक गोपिका का नाम, कर्ण की

रूपमाता, अधिरथ की भार्या, विशाखा नक्षत्र, बिजली, वैशाख मास की पूर्णिमा।
राधासुत (पु०)-अंगराज कर्ण।
राधिका (स्त्री०)=राधा।
राधेय (पु०)-राधापुत्र, कर्ण।
रानस्य (न०)-खुशी, हर्ष, बलप्रदर्शन।
राम (वि०)-सुखकर, आराम देने वाला, सुन्दर, चारु, श्याम, श्वेत। पु०-तीन प्रसिद्ध महापुरुषों का नाम-१ जमदग्निपुत्र परशुराम, २ कृष्ण के ज्येष्ठभ्राता बलराम, ३ दशरथपुत्र श्रीरामचन्द्र [श्रीरामचन्द्र का वृत्तान्त विस्तार पूर्वक वाल्मीकीय रामायण में वर्णित है]। न०-कालापन, अंधेरा, कुष्ठरोग।
रामक (वि०)-चारु, सुन्दर, हर्षजनक।
रामचन्द्र-भद्र (पु०)-दशरथपुत्र राम।
रामठ (अस्त्री०)-हिंगु।
रामनवमी (स्त्री०)-चैत्रशुक्ला नवमी जो श्रीरामचन्द्र का जन्मदिन है।
रामसख(पु०)-किष्किन्धाधिपति सुग्रीव
रामा (स्त्री०)-सुन्दरी, चारु स्त्री, भार्या, शिक्षित नारी, गोरोचना।
रामानुज (पु०)-एक वैष्णव सुधारक का नाम जो द्वैतवादी था।
रामायण (न०)-रामचरित्र, राम के जीवन का वृत्तान्त, महर्षि वाल्मीकिकृत अपने नाम से प्रसिद्ध आदिकाव्य। [एक कवि।
रामिल (पु०)-प्रेमी, पति, कामदेव,
राय (पु०)-राजन् का अपभ्रंश।
राय (पु०)-शोर, चीख, गर्जना, दहाड़।
रावण (वि०)-चिल्लाने वाला, गर्जने वाला। पु०-एक प्रसिद्ध राक्षसराजा जो लंका का अधिपति था तथा जिसने रामपत्नी सीता का हरण किया था और इसलिये दशरथपुत्र श्रीराम ने उस को सवंश निहत करके सती सीता का उद्धार किया-यह कथा विस्तारपूर्वक रामायण में वर्णित है।
रावणि (पु०)-रावणपुत्र, मेघनाद।
राशि (पु०)-समूह, ढेर, व्यक्त और अव्यक्त गण, ज्योतिश्चक्र का १२ वां अंश मेष आदि, धान्य आदि का ढेर।
राशिचक्र (न०)-राशियों का बना हुआ चक्र, मेष आदि १२ राशि वाला गोलाकार।
राशिभोग (पु०)-सूर्य आदि ग्रहों का अपनी २ गति से अनुसार राशियों में जाना।
राशिकृ (दश०)-ढेर लगाना, चुनना।
राशीकृत (वि०)-इकट्ठा किया हुआ।
राष्ट्र (न०)-राज्य, देश, रियासत, जाति, क़ौम, नेशन। अस्त्री०-क़ौमी ख़तरा, आम मुसीबत।
राष्ट्रिय-ष्ट्रीय(वि०)-राष्ट्रसम्बन्धी। पु०-शासक, राजा, राजा का साला।
रास् (१ आ०)-चिल्लाना, गुर्राना।
रास (पु०)-शब्द, ध्वनि, शोर, हुल्लड़, एक प्रकार का नृत्य।

रासभ (पु०)-गधा, गर्दभ ।
रास्ना (स्त्री०)-एक लता ।
राहित्य (न०)-रहितता, खालीपन, अभाव, शून्य ।
राहु (पु०)-त्याग, छोड़ना, ज्योतिश्चक्र में सूर्य की किरणों के न छूने से उत्पन्न हुई पृथ्वी की छाया का आश्रय रूप एक ग्रह ।
राहुग्रसन-ग्रासः=सूर्य वा चन्द्रग्रहण । [राहुदर्शन-पीडा का भी यही अर्थ है] ।
रि (६ प०)-जाना, हरकत करना । ५ प०-मारना । ९ उ०-खदेड़ना, निकालना ।
रिक्त (वि०)-खाली, सूना, विभक्त, निरर्थक ।
रिक्तक (वि०)=रिक्त ।
रिक्तपाणि--हस्त (वि०)-निर्धन, ग़रीब, खाली हाथ ।
रिक्ता (स्त्री)-चतुर्दशी, नवमी और चतुर्थी नामक तिथि ।
रिक्थ (न०)-दायभाग, विरासत, धन, जायदाद, स्वर्ण ।
रिक्थग्राह-भागी [न्] (पु०)-दायाद, वारिस ।
रिख्-ग् (१प०)-रेंगना, सरकना ।
रिंगण (न०)-रेंगना, खिसकना, स्खलन ।
रिच् (७ उ०)-खाली करना, साफ करना, अलग करना, त्यागना । १,१० उ०-मिलना,जोड़ना,अलग करना ।
रिज् (१ आ०)-भूनना ।
रिभम (पु०)-वसन्त ऋतु, प्रेम ।
रिपु (पु०)-शत्रु, दुश्मन, विपक्षी, लग्न से छठा स्थान ।
रिपुमर्दन (न०)-शत्रु का नाश ।
रिफ् (६ प०)-गाली देना, शेखी मारना, देना, लड़ना, मारना ।
रिभ् (१आ०)-चर्चर का शब्द करना ।
रिम्फ् (६प०)-मारना, वध करना ।
रिश (पु०)-शत्रु, दुश्मन ।
रिष् (१, ४ प०)-मारना, नुकसान पहुंचाना, चोट करना, नाकामयाब होना ।
रिष्ट (वि०)-क्षत, हताशय । न०-पाप, नाश, बदक़िस्मती, सौभाग्य । पु०-तलवार ।
री (४आ०)-बहना,टपकना । ९ उ०-जाना, मारना, गुर्राना ।
रीज्या (स्त्री०)-लज्जा,शर्म, निन्दा ।
रीढक (पु०)-रीढ़ की हड्डी ।
रीढा (स्त्री०)-अपमान, बेइज्ज़ती ।
रीण (वि०)-क्षरित, बहा हुआ ।
रीति (स्त्री०)-गति, हरकत, पंक्ति, सीमा, नदी, तरीक़ा,ढंग,रिवाज़, चाल, पीतल ।
रीव् (१ उ०)-लेना, ढकना ।
रु (२ प०)-चिल्लाना, शब्द करना । १ आ०-जाना, हरकत करना, मारना ।
रुक्ष (पु०)-दानी, उदार ।
रुक्म (वि०)-चमकीला, शोभायमान । पु०-धतूरा, स्वर्णाभूषण ।

नo–स्वर्ण, लोहा।
रुक्मकारक (पुo)–सुनार।
रुक्मी [न्] (पुo)–राजा भीष्मक का ज्येष्ठ पुत्र।
रुक्मिणी (स्त्रीo)–विदर्भराज भीष्मक की पुत्री, श्रीकृष्ण की भार्या।
रु[रू]क्ष (विo)–सूखा, स्नेहरहित।
रुग्ण (विo)–बीमार,रोगी,क्षत,टेढ़ा।
रुच् (१आo)–प्रसन्न होना, चमकना।
रुच्-चा(स्त्रीo)–दीप्ति,प्रकाश,शोभा।
रुचक (विo)–रुचिकर। पुo–तोता। नo–दांत, माला, सज्जी, घोड़े की अयाल।
रुचि [ची] (स्त्रीo)–शोभा, चमक, सुन्दरता, जायका, इच्छा, पसन्द, गोरोचना, भूख।
रुचिकर(विo)–जायकेदार,भूख बढ़ाने वाला, उद्दीपन।
रुचित (विo)–शोभायमान, चमकीला, जायकेदार, सुख, पचा हुआ।
रुचिधाम--भर्ता (पुo)–सूर्य, पति।
रुचिर (न)–सुन्दर, चारु, रोचक, जायकेदार। नo–कुंकुम, लवंग।
रुच्य (विo)–रुचि के लिये हितकर, सुन्दर। पुo-प्रेमी, पति,चावल।
रुज् (६ पo)–नष्ट करना, टुकड़े २ करना, रोगिल करना, दुःख पहुंचाना। १० उo–मारना।
रुज्–जा (स्त्रीo)–टूट, भग्नता,दुःख, कष्ट, रोग, थकावट। [कना।
रुट् (१आo)–मुकाबिला करना, चमकना।
रुठ् (१ पo)–मारना। १ आo–रोकना, मुक़ाबिला करना, दुःख देना।
रुठ् (१ पo)–जाना,चुराना, लंगड़ा होना, मुक़ाबिला करना।
रुंड (नo)–मस्तकरहित देह, तना, कबन्ध।
रुद् (१ पo)–चिल्लाना,रोना,गर्जना।
रुद् (स्त्रीo)–चिल्लाहट, शोरोगुल।
रुदथ (पुo)–बच्चा,कुत्ता,मुर्गा।
रुदन-दित (नo)–रोना, चिल्लाना, आहोजारी, क्रन्दन।
रुद्ध (विo)–रुका हुआ, घिरा हुआ, ढका हुआ, बद किया हुआ।
रुद्र (विo)–भयानक, खौफनाक, बड़ा, प्रशंसनीय, रुलाने वाला। पुo-ग्यारह रुद्र जो तैंतीस वैदिक देवताओं के अन्तर्गत हैं, शिव, अग्नि, ११ का अङ्क।
रुद्रज (नo)–पारा, पारद।
रुद्रभू (स्त्रीo)–श्मशानभूमि।
रुद्रसू (स्त्रीo)–ग्यारह बच्चों की माता।
रुद्राणी (स्त्रीo)–पार्वती,रुद्रभार्या, ११ वर्ष की कन्या।
रुध् (७ उo)–रोकना, ढकना, बन्द करना, बांधना, घेरना,सताना। [रुणद्धि, रुन्धे; रुरोध, रुरुधे; अरुधत्, अरौत्सीत्, अरुद्ध; रोत्स्यति-ते]।
रुधिर (विo)–लाल, सुर्ख। नo-खून, रक्त, कुंकुम। पुo-मङ्गलग्रह, टालरग।

रुप् (४प०)–घबराना, विगाड़ना ।
रुमा(स्त्री०)–सुग्रीव की स्त्री। विशिष्ट लवण की खान ।
रुरु (पु०)–मृगभेद, कुत्ता ।
रुवु (पु०)–एरण्ड का वृक्ष ।
रुश् (६ प०)–मारना, हिंसा करना ।
रुष् (४ प०)–भूखा होना, दुःखीहोना १ प०–मारना, हिंसा करना ।
रुष्-षा-ष्टि(स्त्री०)–क्रोध, गुस्सा ।
रुषित-रुष्ट(वि०)–क्रोधित, भड़का हुआ ।
रुह् (१ प०)–उत्पन्न होना, उगना, बीज जमना ।
रुरुक (न०)–सूराख़, ग़ार गढ़ा ।
रुहा (स्त्री०)–दूर्वा घास ।
रूढ (वि०)–उगा हुआ, उत्पन्न, उठा हुआ, चढ़ा हुआ, प्रसिद्ध, मशहूर, निश्चित, प्रकृति और प्रत्यय के अर्थ की अपेक्षा न करके समुदायशक्ति से अर्थ को जताने वाला शब्द जैसे'घट, गौ' ।
रूढि (स्त्री०)–जन्म, पैदायश, प्रसिद्धि, प्रकृति और प्रत्यय के अर्थ की अपेक्षा किये बिना समुदायशक्ति से अर्थ का बोधन ।
रूप्(१०उ०)–बनाना, मूर्तिमान् करना, देखना, तलाश करना, विचारना।
रूप (न०)–मूर्त्ति, शकल, स्वभाव, प्रत्यक्ष वस्तु, ख़ूबसूरती, ग्रन्थावृत्ति, आकार, शब्द, नाम, शब्द तथा धातुओं के आगे विभक्ति लगा कर निष्पन्न शब्द, नाटकादि ग्रन्थ, श्वेत रंग । वि०–श्वेत रंग वाला, उत्तरपदस्थ रूपादि शब्द के उपमान का वाचक यथा–'पितृरूपः सुतः', एक की संख्या का बोधक ।
रूपक (न०)–नाटक, अभिनय का प्रदर्शक दृश्य काव्यप्रभेद, मूर्त्त, काव्यालङ्कार, संख्याविशेष, उपमान । पु०–मुद्रा, तीन रत्ती की माप, रजत, चांदी । वि०–मूर्त्तिमान् ।
रूपतत्त्व (न०)–शील, सद्वृत्त, अच्छा स्वभाव ।
रूपधारी [न्] (वि०)–सौन्दर्ययुक्त, ख़ूबसूरत, रूपान्तर धारण करने वाला नट ।
रूपनाशन (पु०)–उलूक, पेंचक, उल्लू पक्षी ।
रूपाजीवा (स्त्री०)–वेश्या, वारांगना, कंजरी ।
रूपास्त्र (पु०)–कामदेव, मन्मथ ।
रूपिका (स्त्री०)–सफ़ेद आंक का वृक्ष, श्वेतार्क वृक्ष ।
रूप्य (न०)–आभूषण बनाने के लिये आहत [चोट लगाया हुआ] स्वर्ण तथा चांदी, रूपा, रजतमात्र, उपमेय । वि०–सुन्दर, ख़ूबसूरत ।
रूप्याध्यक्ष(पु०)–कोषाध्यक्ष, ख़ज़ांची ।
रूवुक (पु०)–एरण्ड का वृक्ष ।
रूष् (१० उ०)–धूसरित करना, धूलि आदि से मिला देना ।
रूषक (पु०)–बांसा, वासक ।
रूषित (वि०)–धूलिमिश्रित, शुष्क किया हुआ, गुण्ठित ।

रे (अ०)–सम्बोधनविशेष, नीच सम्बोधन,नीचादि के बुलाने में।

रेक् (१आ०)–सन्देहयुक्त होना, संशयाक्रान्त होना, सम्यक्तया न जानना।

रेक (पु०)–संशय, शंका, विरेचन, दस्त होना, मेंढक।

रेक्णः [स्] (न०)–स्वर्ण, सोना।

रेका (स्त्री०)–सन्देह, शङ्का।

रेखा (स्त्री०)–थोड़ा, अल्प, छद्म, कपट, लकीर, पंक्ति, लाइन।

रेखागणित (पु०)–ज्योतिषशास्त्र का एक गणितग्रन्थविशेष, ज्योमेट्री।

रेखाभूमि (स्त्री०)–लंका और सुमेरु पर्वत के मध्यसूत्रगत देशविशेष।

रेचक (पु०)–जवाखार, जमालगोटे का वृक्ष, पिचकारी, प्राणायाम में नासिका से निष्कासित वायु। वि०–भेदक, दस्त करने वाला।

रेच्य (पु०)–वह वायु जो प्राणायाम के समय नासिका द्वारा बाहर निकाला जाता है। वि०–भेदक।

रेचन (न०)–दस्त होना, मलभेदन, मल का बाहर निकलना।

रेचना (स्त्री०)–कबीला, काम्पिल्ल।

रेचनी (स्त्री०)–कबीला, जमालगोटे का वृक्ष, सफेद निसोथ।

रेज् (१ आ०)–चमकना प्रकाशित होना,दीप्तिमान् होना।

रेट् (१उ०)–मांगना, याचना करना।

रेणु (अक्ली०)–धूलि, पांशु, पराग, पुष्परज। पु०-पित्तपापड़ा, पर्पट, वायविडङ्ग।

रेणुका (स्त्री०)–मरिच के आकार का सुगन्धित एक द्रव्यविशेष, जमदग्नि की स्त्री और परशुराम की माता।

रेणुकासुत (पु०)–परशुराम।

रेणुरूषित (पु०)–गधा, गर्दभ। वि०–धूलि से धूसरित।

रेणुवास (पु०)–भ्रमर, भौंरा।

रेणुसार-क(पु०)–कर्पूर, काफूर।

रेतः [स्] (न०)–शुक्र, वीर्य, शिववीर्य, पारद, पारा, जल।

रेतजा (स्त्री०)–बालुका,धूलिविशेष।

रेतन (न०)–वीर्य, शुक्र।

रेत्य (न०)–पीतल, पित्तल।

रेत्र (न०)–वीर्य, अमृत, पीयूष, पटवास, गुलाल, सूतक।

रेप (वि०)–निन्दित, कृपण, सूम, क्रूर, दयारहित।

रेफ (पु०)–रकार, राग, वह रकार जो अक्षर के ऊपर चढ़ा रहता है। वि–निन्दित,कुत्सित,निन्दा किया हुआ।

रेफाः [स्] (वि०)–कृपण, नीच, दुष्ट, अधम, क्रूर।

रेभण (न०)–गौओं का रंभाना,गोशब्द, गौओं की ध्वनि। [चोर, असुर।

रेरिहाण (पु०)–शिव, महादेव,

रेव् (१ आ०)–फुदकना, उछल कर चलना।

रेवट (पु०)–सूअर, वेणु, बांस,विषवैद्य, मातुल, बघूला। न०–दक्षि-

णावर्त्त शङ्ख ।

रैवत (पु०)--जम्बीर, नीबू, एक राजा जो रैवती का पिता और बलराम का श्वशुर था ।

रैवति (स्त्री०)--कामदेव की पत्नी ।

रैवती (स्त्री०)-बलदेव की भार्या, २७ वा नक्षत्र, मातृविशेष, एक नदी, दुर्गाभेद, २७ की संख्या, बालग्रह, मेढासिंगी ।

रैवतीभव (पु०)-शनिश्चरग्रह ।

रैवतीरमण (पु०)-बलदेव, बलभद्र ।

रैवतीश (पु०)-पूर्ववत्‌ ।

रेवा (स्त्री०)-नर्मदा नदी, रति का नामविशेष । [करना ।

रेष् (१ प०)-हींसना, घोड़े का शब्द

रै (१ प०)-शब्द करना ।

रैत्य (वि०)-पित्तल का विकार, पीपल का बर्त्तन ।

रैवत (पु०)-रैवती नदी के समीप का प्रदेश, द्वारकासमीपस्थ पर्वत विशेष, शिव, दैत्यविशेष, स्वर्णालु नामक वृक्ष, पञ्चम मनु, मेघ, रैवतपर्वत, सोमलता । वि०-धनयुक्त ।

रोक (न०)-छिद्र बिल, सूराख, नौका, पु० नक़द रुपया देकर वस्तु खरीदना, क्रयभेद, दीप्ति, प्रकाश ।

रोग (पु०)-धातु या दोषों के वैषम्य से उत्पन्न व्याधि, बीमारी ।

रोगघ्न (न०)-औषध, दवाई, चिकित्साशास्त्र । वि०-रोग का नाश करने वाला ।

रोगभू (स्त्री०)-शरीर, देह ।

रोगराज (पु०)-राजयक्ष्मा, क्षयरोग, कफजक्षयरोग ।

रोगलक्षण (न०)-निदान, रोग बतलाने वाला चिन्ह ।

रोगशान्तक (पु०)-वैद्य, चिकित्सक ।

रोगशिला (स्त्री०)-मन शिला, मनसिल ।

रोगश्रेष्ठ (पु०)-ज्वर, बुखार, ताप ।

रोगहृ (न०)-औषध, दवाई । वि०-रोगनाशक, वैद्य ।

रोगहारी [न्‌] (पु०)-वैद्य, हकीम । वि०--रोगहन्ता ।

रोगितरु (पु०)-अशोकवृक्ष ।

रोगी [न्‌] (वि०)-रोग वाला, व्याधियुक्त, बीमार ।

रोग्य (वि०)-- रोग करने वाला, अपथ्य, अहितकर, रोगसम्बन्धी ।

रोचक (पु०)-क्षुधा, भूख, बुभुक्षा । वि० रुचिकारक, प्रिय ।

रोचन (पु०)-कबीला, कूटशाल्मलि, पलाण्डु, प्याज, दाड़िम, स्वायम्भुवमन्वन्तर में देवविशेष, भारतवर्ष के अन्तर्गत एक पर्वत । वि० रोचक दीप्तिशाली, अभिमान, अनुराग करने वाला ।

रोचनक (पु०)-जम्बीर, निम्बु ।

रोचना (स्त्री०)-रक्तकमल, गोरोचना, कृष्ण निसोथ, आमलकी, मनसिल, सुन्दर नारी, वसुदेव की पत्नीविशेष ।

रोचनिका (स्त्री०)-वंशलोचन ।

रोचमान (पु०)–अश्व की ग्रीवा में रोमों का घेरा 'भोंरी' एक नृप। वि०-दीप्ति वाला, दीप्यमान।

रोचि [स्] (न०)–प्रभा, कान्ति रोशनी।

रोचिष्ण (वि०)–प्रकाशशील, दीप्ति वाला, भ्राजिष्णु, चमकने वाला।

रोची [न्] (वि०)–पूर्ववत्।

रोद् [ध्] (वि०)–हिंसा करने वाला, बधक, हिंसक।

रोटिका (स्त्री०)–गोधूमादि चून की बनी रोटी, पिष्टकविशेष।

रोड् (१ प०)–तिरस्कार करना, अनादर करना।

रोदः [स्] (न०)–स्वर्ग, पृथिवी।

रोदन (न०)–चिल्लाना, क्रन्दन, रोना, अश्रु, आंसू।

रोदसी (स्त्री०)–स्वर्ग और भूमि। [यह अव्यय भी है और इसी अर्थ का बोधक है]। [पृथ्वी।

रोदस्यौ (स्त्री० द्विव०)–स्वर्ग और

रोध (पु०)–नदीतट, रोधन, रोकना, बंद करना, आवरण, ठहरना।

रोध [स्] (न०)–नदी का किनारा, नदीतीर।

रोधन (वि०)–रोकने वाला, रोधकर्ता। न०-प्रतिबन्ध, रोक।

रोध[धो]वक्रा(स्त्री०)–नदी, दरिया।

रोधोवक्रा (स्त्री०)–पूर्ववत्।

रोध्र (न०)–पाप, अपराध। पु०–लोध का वृक्ष।

रोप (पु०)–बाण, तीर, बीजादि का लगाना, रोपण। न०–छिद्र।

रोपण (न०)–जनन, बीज लगाना, प्रादुर्भाव, वस्तु के वास्तविक रूप को छिपा कर प्रकारान्तर से जताना। वि०–रोपक।

रोम (न०)–जल, लोम, बालु, जनपदविशेष।

रोम [न्] (न०)–शरीरोत्पन्न अङ्कुर, रोम, केश, बाल, एक जनपद और तद्देशवासी जन।

रोमक (न०)–पांशुलवण, लोहकान्त, जनपदविशेष, रूम, तद्देशवासी।

रोमकूप (पु०)–लोमछिद्र, रोमों के सूराख।

रोमकेशर (पु०)–चामर, चंवर।

रोमगुच्छ (पु०)–पूर्ववत्।

रोमन्थ (पु०)–भक्षित घास आदि को निकाल कर पशुओं का चाबना, जुगालना, जुगाली करना।

रोमभूमि (स्त्री०)–त्वचा, चमड़ा, खाल।

रोमलता (स्त्री०)–रोमावलि, रोमों की पंक्ति।

रोमवान् (वि०)–रोमों वाला, लोमविशिष्ट पुरुष। [खड़ा होना।

रोमविकार(पु०)–रोमाञ्च, रोमों का

रोमश (वि०)–प्रचुर रोमवाला। पु०–मेष, शूकर, सूअर, पिण्डालु, एक ऋषि। न०–उपस्थ।

रोमशा (स्त्री०)–दुग्धावृक्षविशेष, बृहस्पति की कन्या।

रोमहर्ष (पु०)–रोमाञ्च, रोमोद्गम, रोमों का निकलना।

रोमहर्षण (पु०)--सूत, व्यासशिष्य। न०--रोमाञ्च। वि०--रोमों को खड़ा करने वाला।
रोमाञ्च (पु०)--रोमहर्षण, लोमों का खड़ा होना।
रोमाञ्चित (वि०)--वह पुरुष जिसके रोम खड़े हो गये हों, जातपुलक, हृष्टरोमा।
रोमाली-वली (स्त्री०)--रोमपंक्ति, लोमों की क़तार, नाभि के ऊपर की रोमपंक्ति जिस से तारुण्य का होना प्रकटित होता है।
रोमोद्गम-द्भेद (पु०)--रोमाञ्च, लोमों का फूटना। [अतिशय रोदन।
रोरुदा (स्त्री०)--अधिक रोना,
रोलम्ब (पु०)--भ्रमर, भौंरा।
रोष (पु०)--क्रोध, गुस्सा।
रोषण (पु०)--पारा, पारद, ऊपर भूमि, कसौटी, हेमघर्षणोपल। वि०--क्रोधयुक्त। [चढ़ने वाला।
रोह (पु०)--अकुर, अंकुआ। वि०--
रोहक (पु०)--प्रेतविशेष। वि०--चढ़ने वाला।
रोहण (न०)--वीर्य, शुक्र, जन्म, प्रादुर्भाव, प्रकट होना। पु०--पर्वतविशेष, दूरस्थ पर्वत।
रोहि (पु०)--बीज, वृक्षविशेष। वि०--धार्मिक पुरुष, धर्मात्मा।
रोहिण (न०)--पन्द्रह भागों में विभक्त दिन का नवम मुहूर्त। पु०--वटवृक्ष, रोहितक नामक वृक्ष, शाल्मलिद्वीपस्थ एक पर्वत, भूतृण।
रोहिणि (स्त्री०)--अश्विनी से चौथा नक्षत्र। [वर्ण वाली स्त्री।
रोहिणिका (स्त्री०)--क्रोध से रक्त-
रोहिणी (स्त्री०)--गौ, वसुदेवपत्नी, बलदेव की माता, बिजली, हरीतकी, हड़, मंजीठ, नव वा पांच वर्ष की कन्या, हिरण्यकशिपु की पुत्री, चौथा नक्षत्र, कटुतुम्बी, सुरभिकन्या, कण्ठरोगविशेष, चन्द्रभार्या। [वृषभ।
रोहिणीपति (पु०)--चन्द्रमा, वसुदेव,
रोहिणीश (पु०)--पूर्ववत्।
रोहिण्यष्टमी (स्त्री०)--रोहिणीयुक्त भाद्रकृष्णाष्टमी, कृष्णजन्माष्टमी।
रोहित (पु०)--सूर्य, एक मत्स्य, वर्णभेद, ऋष्यमृग। वि०--रोहित वर्ण वाला। स्त्री०--मृगी, घोड़ी, लताभेद।
रोहित (न०)--कुंकुम, केशर, रक्त। पु०--मीनविशेष, अपने नाम से प्रसिद्ध हरिश्चन्द्र का पुत्र, मृगविशेष, वृक्षभेद।
रोहिताश्व (पु०)--अग्नि, आग, हरिश्चन्द्र राजा का पुत्र।
रौक्ष्य (न०)--पारुष्य, रूक्षता, रूखापन, कठोरता, चिक्कणाभाव।
रौद् [ड] (१प०)--अनादर करना, तिरस्कार करना।
रौद्र (न०)--शृंगारादि आठ रसों में से अन्तिम, उग्ररस। पु०--तेजरस, सूर्य की गर्मी, धूप। वि०--भीषण, डरावना।

रौप्य (न०)—चादी, रजत । वि०—चादी का ।
रौरव (वि०)—चञ्चल, भीषण, धूर्त, रुरुमृग का । पु०—रौरव नामक नरकविशेष ।
रौहिणेय (पु०)—बुधग्रह, बलराम । न०—मरकत मणि ।

ल

ल (पु०)—इन्द्र, वर्णमाला का २८वां अक्षर । न०—पृथिवीबीज ।
लकु [क] च (पु०)—लकुच का वृक्ष, बड़हर नामक प्रसिद्ध वृक्ष ।
लक्ष् (१० उ०)—देखना, पहिचानना, अवलोकन करना, निशाना लगाना ।
लक्ष (न०)—पद, चिन्ह, अंक, निशान, व्याज, बहाना, शरव्य, तीर का निशाना, एक लाख की संख्या ।
लक्षण-क्ष्म [न्](न०)—चिन्ह, निशान । पु०—लक्ष्मण, सारस पक्षी ।
लक्षित (वि०)—ज्ञात, अनुमान किया हुआ, अंकित ।
लक्ष्मी (स्त्री०)—शोभा, कान्ति, विष्णु की स्त्री, धनदौलत, मोती, हरिद्रा ।
लक्ष्मीपुत्र (पु०)—कामदेव, अश्व, कुश नामक रामचन्द्र का पुत्र, एक गन्धर्व ।
लक्ष्मीफल (न०)—श्रीफल, बेल का पेड़ ।
लक्ष्य (न०)—निशाना लगाने के लायक़ द्रव्य, प्रयोजन, मतलब, उद्देश्य वि०—देखने के योग्य, अनुमान करने लायक़ । [मिला हुआ ।
लगित (वि०)—लगा हुआ, सशक्त,
लगुड [ल-र] (पु०)—दण्डा, लट्ठ, लाठी ।
लग्न (न०)—मेषादि बारह राशियों का उदय । वि०—लज्जित, सशक्त, लगा हुआ, स्तुतिपाठक, लाभित ।
लघ् (१आ०)—लघन करना, भोजन न करना, सीमा को नलाघना ।
लघिमा [न्] (पु०)—लघुता, हलकापन, एक प्रकार का ईश्वर का ऐश्वर्य ।
लघु (वि०)—शीघ्र, हलका, छोटा, साररहित, मनोज्ञ, सुन्दर । पु०—ह्रस्वमात्रा वाले अकारादि वर्ण । न०—अगुरु, अगर नामक सुगन्धित द्रव्य ।
लघुकाय (पु०)—बकरा, छोटा शरीर । वि०—छोटे शरीर वाला, खर्वकाय ।
लघुद्राक्षा (स्त्री०)—छोटी मुनक्का, किशमिश ।
लङ्का (स्त्री०)—रावण की राजधानी का नाम, दक्षिण में पुरीविशेष ।
लकापति-नाथ (पु०)—रावण, लका का मालिक ।
लकास्थायी [न्] (वि०)—लकानिवासी, लका में रहने वाला । पु०—वृक्षविशेष ।
लघन (न०)—अनशन, भोजन न करना, फाका, लाघना, उछलना ।
लज् (१ प०)—क्रीड़ा करना, शर्म

करना। १० स०-बोलना, हिंसा करना, देना।

लज्जा (स्त्री०)-लाज, शर्म, ब्रीडा, हया।

लज्जालु (वि०)-शर्मालु, शर्म करने वाला। स्त्री०-छुईमुई की बेल।

लज्जित (वि०)-शर्मिन्दा, लज्जायुक्त।

लड्डुक (पु०)-लड्डू, मोदक, एक प्रकार की मिठाई।

लदद्द (पु०)-लदद्दन नामक देश।

लता (स्त्री०)-बेल, वल्ली, व्रतति।

लताफल (न०)-परवल, पटोल।

लतामणि (पु०)-मूगा, प्रवाल।

लतारसन (पु०)-सर्प, सांप।

लतार्क (पु०)-हरी प्याज, हरित्पलाण्डु

लप् (१ प०)-कहना, बोलना।

लपन (न०)-मुख, आनन, मुंह, भाषण, कहना।

लपित (वि०)-कथित, कहाहुआ, उच्चरित। न०-वचन, वाक्य।

लम्बिका (स्त्री०)-लक्ष्मी, लक्ष्मी।

लब्ध (वि०)-प्राप्त, हासिल किया हुआ, पाया।

लभ्य (वि०)-पाने योग्य, प्राप्त करने योग्य, हासिल करने लायक।

लमक (पु०)-यार, जार, अध्याश।

लम्पट (पु०)-पूर्ववत्। वि०-विषयासक्त, परस्त्रीरत।

लम्ब (पु०)-नर्तक, नट, कान्त, उत्कोच [रिश्वत], अकशास्त्र मे भुजा और त्रिभुज आदि क्षेत्र। वि०-लम्बा, लटका हुआ।

लम्बकेश (वि०)-लम्बे बालों वाला, पु०-कुशा का आसन, लम्बे बाल।

लम्बोदर (वि०)-लम्बे पेट वाला, जिस का पेट मुशकिल से भरता हो। पु०-पौराणिक गणेश।

लम्बौष्ठ (पु०)-ऊंट, उष्ट्र। वि०-लम्बे होठों वाला।

लय (पु०)-मेल, विनाश, प्रलयकाल, ईश्वर, गीतशास्त्र में नृत्यवाद्यादि की साम्यता। [जिह्वा।

ललना (स्त्री०)-कामिनी, नारीभेद,

ललनाप्रिय (पु०)-कदम्ब का पेड़, कामिनीवल्लभ। [भाल।

ललाट (न०)-कपाल, मस्तक, माथा,

ललाटिका (स्त्री०)-मस्तकाभरण, माथे का गहना, टीका नाम से प्रसिद्ध जेवर।

ललाम (वि०)-सुन्दर, प्रधान। न०-चिन्ह, ध्वजा, सजावट, सींग, पूंछ। पु०-घोड़ा, पुरुष।

ललित (वि०)-सुन्दर, मनोज्ञ, अभिलषित। न०-शृंगारभाव से उत्पन्न चेष्टाविशेष। पु०-एक प्रकार का राग वा स्वर।

लव (पु०)-कालभेद, लेश, जरासा, छेदन, श्रीरामचन्द्र का पुत्र, गौ की पूछ के बाल। न०-जायफल, लौंग, लवंग।

लवण (न०)-नमक, क्षारसंयुक्त द्रव्य, छेदन। पु०-सिन्धु, समुद्र, एक प्रकार का रस। वि०-नमकीन लवणयुक्त, खारी, बड़ा खूबसूरत।

लवणा (स्त्री०)-नदीविशेष, महा-

ज्योतिष्मती, कान्ति,दीप्ति।

लवणोत्तम (न०)-सेंधा नमक, लाहौरी नोन।

लवित्र (न०)-दांती,दराती,चाकू,छुरी

लष् (१,४,उ०)-इच्छा करना, चाहना, स्पृहा करना।

लसिका (स्त्री०)-लाला, लार, मुह से जो पानी टपकता है।

लहरि-री (स्त्री०)-लहर, महातरंग, बड़ी तरंग।

ला(२ प०)-लेना,ग्रहण करना,पकड़ना।

लाक्षण्य (वि०)-शुभाशुभ लक्षण को जानने वाला, शकुनी।

लाक्षा (स्त्री०)-लाख नाम से प्रसिद्ध द्रव्य। [आरोग्य।

लाघव (न०)-लघुता, हलकापन,

लांगल (न०)-खेत जोतने का साधन, हल।

लांगलपद्धति (स्त्री०)-लांगलरेखा, हल से खींची हुई लकीर, हलाई, सीता।

लांगली [न्] (पु०)-बलराम, नारियल, नारियल का पेड़।

लाङ्गू[ङ्गू]ल(न०)-पशुओं की पूंछ,दुम।

लाघ् (१ प०)-झिड़कना, घुड़कना।

लाजा (स्त्री०)-अक्षत, चावल।

लाजाः (पु०ब०)-खील,भुनेहुए धान।

लाञ्छन (न०)-नाम, निशान, चिन्ह, दोष लगाना। [नफ़ा, पाना।

लाभः-भम्=व्याज, सूद, फ़ायदा,

लालन (न०)-प्रेमपूर्वक पालन करना, लाड़ प्यार करना।

लालसा (स्त्री०)-अभिलाषा, अतिशय इच्छा, गर्भवती की इच्छा, गर्भ का चिन्ह। [कातर।

लालायित (वि०)-लाला [लार] युक्त,

लालित्य (न०)-सुन्दरता, मनोज्ञभाव, खूबसूरती, मनोहरता।

लाव [ब] क (पु०)-लावा नामक पक्षी। वि०-काटने वाला, छेदने वाला। [सौन्दर्यविशेष।

लावण्य (न०)-लवणता, खारीपन,

लासक (पु०)-मयूर, मोर। न०-मटका, घड़ा। [पु०-नर्तक, नट।

लास्य (न०)-नृत्य, नाच, नाचा।

लिक्षा [क्षा] (स्त्री०)-जूं का अण्डा, लीख, मूका, एक प्रकार का माप, गवाक्षों में सूर्य की किरण पड़ने पर जो धूलिकण दिखलाई देते हैं उन को चार सरसा के बराबर की माप।

लिख् (६प०)-लेखन करना, लिखना।

लिखन (न०)-लिखना, लिपि, लेख।

लिखित (वि०)-लिखा हुआ, अंकित, न०-लिखना, लिपि, हस्ताक्षर, विवाद, एकमुनि का नाम, इकरारनामादि पत्र।

लिंग (न०)-चिन्ह, निशान, पुरुष का चिन्हविशेष, अनुमानसिद्ध कर्त्ता हेतुविशेष, शिवलिंग,व्यक्त, व्याकरणशास्त्र में पद के ठीक होने को बताने वाला एक धर्म।

लिङ्गी [न्] (वि०)-चिन्ह वाला,

निशान वाला, ध्वजी । पु०–हस्ती, हाथी ।
लिप(वि०)–लेपनकर्त्ता,लीपने वाला ।
लिपि-पी (स्त्री०)–लिखना, लिखे हुई अक्षरों का पत्र, किसी भाषा की वर्णमाला । [वाला, मुहर्रिर ।
लिपिक[का] र (पु०)–लेखक, लिखने
लिप्त (वि०)–भुक्त, भोगा हुआ,मिला हुआ, छिपा हुआ,लिपटा हुआ ।
लिप्सा (स्त्री०)–इच्छा, अभिलाषा, चाह । [लालची, लोभी ।
लिप्सु (वि०)–लुब्धक, गृध्नु, लोलुप,
लिवि [वि] (स्त्री०)=लिपि ।
लीढ (वि०)–आस्वादित, चाटा हुआ, छूआ हुआ, स्पृष्ट । [आसक्त ।
लीन (वि०)–लयप्राप्त, लगा हुआ,
लीला (स्त्री०)–केलि, क्रीड़ा, खेल, विलास ।
लीलावती (स्त्री०)–विलासवती स्त्री, भास्कराचार्य की पुत्री, पुराणों में एक प्रसिद्ध वेश्या, अंकगणित का एक ग्रन्थ जो भास्कराचार्य की पुत्री का बनाया है ।
लुक्कायित (वि०)–अन्तर्हितदेह, छिपा हुआ, जिसने शरीर को छिपा लिया हो ।
लुट् (१० उ०)–चोरी करना, लूटना ।
लुठन (न०)–लोटना, श्रमापनोदार्थ पृथ्वी पर घोड़े का इधर उधर लोटना । [चोर ।
लुण्ट[ण्टा] क (वि०)–लूटने वाला,
लुण्ठक (वि०)=लुण्टक ।
लुप्त (वि०)–जिसका धन चुराया गया हो,नष्ट,छिप गया,टूट गया ।
लुब्ध (पु०)–व्याध, लम्पट । वि०–इच्छाकरने वाला,अभिलाषायुक्त ।
लुब्धक (पु०)–पूर्ववत् ।
लुलाप (पु०)–महिष, भैंसा ।
लुलित (वि०)–आन्दोलित, फैला हुआ,व्याप्त,खंडित,उन्मूलित ।
लू (९ उ०)–काटना, छेदन करना ।
लूता (स्त्री०)–मकड़ी, एक प्रकार का कीड़ा ।
लून(वि०)–छिन्न,कटा हुआ,काटागया ।
लूम (न०)–पुच्छ, लांगूल, पूंछ ।
लूमविष (पु०)–बिच्छू आदि वह कीटविशेष जिस के पुच्छ में विष होता है ।
लेख (पु०)–देव, देवता, लिखना । वि०–लिखने योग्य, लेख्य ।
लेखक (पु०)–लिखने वाला पुरुष, लेखनकर्त्ता, लिपिकर, मुहर्रिर ।
लेखन (न०)–पत्रादि पर अक्षरों का लिखना, अक्षरविन्यास, भोजपत्र ।
लेखनी (स्त्री०)–क़लम, वर्णतूली ।
लेखर्षभ (पु०)–इन्द्र, देवश्रेष्ठ,देवराज ।
लेखहार-क (पु०)–पत्र लेजाने वाला, चिट्ठीरसा, पत्रवाहक ।
लेखा (स्त्री०)–पंक्ति, क़तार, लिपि ।
लेख्य(वि०)–लिखने योग्य, लेखनीय ।
लेख्यपत्र (पु०)–तालवृक्ष । न०–लिखने योग्य पत्र, लेटरपेपर ।
लेख्यस्थान (न०)–लिखने की जगह, दफ़्तरखाना, आफ़िस ।

लेप (पु०)–लीपना, लेपन, भोजन, खाद्यपदार्थ ।
लेपक(पु०)–लीपनेवाला,राज,मिस्तरी।
लेपन (न०)–लीपना ।
लेय (पु०)–मेष से पाचवीं राशि, सिंह राशि ।
लेलिहान (पु०)–साप, सर्प, शिव । वि०–बार २ चाटने वाला ।
लेश (पु०)–अल्प, कण, थोड़ा, टुकड़ा। [आस्वाद, चाटना ।
लेह (पु०)–भोजन, आहार, भक्षण,
लेहन (न०)–जिह्वा द्वारा रस का ग्रहण, चाटना ।
लेहिन (पु०)–सुहागा, टङ्कण ।
लेह्य (वि०)–चाटने योग्य । न०–अमृत, सुधा ।
लैङ्ग (न०)–लिङ्गपुराण, । लिङ्गनी वृक्ष । वि०–लिङ्गसम्बन्धी ।
लोक् (१ आ०)–देखना, अवलोकन करना ।
लोक (पु०)–भुवन, जन, दुनिया ।
लोकचक्षु (पु०)–सूरज, सूर्य ।
लोकपाल (पु०)–नृप राजा, इन्द्रादि दिक्पाल जो आठ हैं यथा इन्द्र, अग्नि, धर्मराज, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर और शंकर । वि०–लोकों की रक्षा करने वाला ।
लोकबान्धव (पु०) सूर्य, सूरज ।
लोकमाता (स्त्री०)–लक्ष्मी ।
लोकश्रुति (स्त्री०)-जनश्रुति, अफवाह, लोकापवाद ।
लोकायत (न०)-तर्कभेद, चार्वाकमत।
लोकायतिक(पु०)–चार्वाक, नास्तिक, तार्किक ।
लोकालोक (पु०)–अपने नाम से प्रसिद्ध वह पर्वत जिसके एकआधे भाग में प्रकाश और दूसरे में अंधेरा बताया जाता है।
लोकेश (पु०)–ब्रह्मा, नृपति, राजा, इन्द्र, बुद्धभेद, पारा, लोकपाल ।
लोच् (१ आ०)–देखना,दर्शन करना ।
लोच (न०)–अश्रु, आसू ।
लोचक (पु०)–मांसपिण्ड, आंख की पुतली, कज्जल,स्त्रियों के मस्तक का आभूषण, नीलवस्त्र, सर्प की केंचुली,कदली, बुद्धिशून्य।
लोचन (न०)–आंख, नेत्र, चक्षु ।
लोत (न०)–चोरी का धन,स्तेयद्रव्य
लोध्र (पु०)–लोध का वृक्ष ।
लोप (पु०)–अभाव, विनाश, छिपना, छेदन,व्याकरण में वर्ण का नाश ।
लोपामुद्रा (स्त्री०)–अगस्त्यमुनि की भार्या । [का धन ।
लोप्त्र (न०)–लूट का माल, चोरी
लोभ (पु०)–दूसरे के द्रव्य की अभिलाषा, लालच, तृष्णा ।
लोभी[न्] (वि०)–लोभयुक्त, लालची ।
लोभ्य(पु०) मूग,मुद्ग। वि० लोभनीय।
लोम [न्] (न०)–शरीरोत्पन्न केश, बाल, रोम ।
लोमपाद (पु०)–अङ्ग देश का एक राजा जो ऋष्यशृङ्ग मुनि का श्वशुर था ।
लोमश (पु०)–मुनिविशेष । वि०-

बहुत बालों वाला।
लोमहर्षण (न०)-रोमाञ्च, रोमों का खड़ा होना। पु०-व्यासशिष्य सूत जो कि बड़ा पौराणिक था।
लोल(वि०)-चञ्चल,साकाङ्क्ष, लालची, पु०-तामस मनु।
लोला(स्त्री०)-चपलता, लक्ष्मी,जिह्वा।
लोलुप (वि०)-बहुत लोभ वाला, अतिलुब्ध। [एकत्रित करना।
लोष्ट् (१ आ०)-इकट्ठा होना,
लोष्ट (न०)-लौहमल। पु०-मिट्टी का ढला, मृत्खण्ड।
लोष्टघ्न-भेदन (पु०)-ढेला तोड़ने का साधन, मुद्गर।
लोह (अस्त्री०)-लोहा, धातुविशेष। न०-अगुरुचन्दन।
लोहकार (पु०)-लुहार।
लोहकिट्ट(न०)-लोहे का मल,लौहमल
लोहद्रावी [न्] (पु०)-सुहागा,टंकण।
लोहवर (न०)-स्वर्ण, सोना।
लोहित (न०)-कुंकुम, लालचन्दन, संग्राम, सरोवर, मोती, रुधिर, पतङ्ग। पु०-नदविशेष, भौमग्रह, लाल वर्ण, मत्स्यभेद, मृगविशेष, सांप, एक पर्वत। वि०-लालवर्ण वाला।
लोहिताक्ष (पु०)-विष्णु, कोकिल। वि०-लाल नेत्र वाला। [का वृक्ष।
लोहिताङ्ग (पु०)-मङ्गलग्रह, कबीले
लोहिनी (स्त्री०)-रक्तवर्ण की स्त्री।
लौकायतिक (पु०)-चार्वाक शास्त्र का जानने या पढ़ने वाला पुरुष, तार्किकविशेष।
लौकिक (वि०)-लोकप्रसिद्ध, लोक में मशहूर,लोकव्यवहार से सिद्ध।
लौकिकाग्नि (पु०)-असंस्कृताग्नि, विधिपूर्वक संस्कार न किया हुआ अग्नि।
लौह (पु०)-लोहा, धातुविशेष।
लौहज (न०)-मण्डूर, लोहे का मल।
लौहभाण्ड (पु०)-लोहे का पात्र, इमामदस्ता। [बना खूंटा।
लौहशङ्कु (पु०)-नरकभेद, लोहे का
लौहित्य (पु०)-ब्रह्मपुत्र नामक नद विशेष, समुद्र। न०-रक्तवर्ण।
ल्पी-ल्पी (९ प०)-मिलना, आलिंगन करना।
ल्वी(९प०)-जाना,गमन करना,प्राप्ति।

व

व (पु०)-पवन, वायु, वरुण, बलवान्, मन्त्रणा, सलाह,समझाना, वस्त्र, कल्याण, व्याघ्र, निवासस्थान, वरुण का घर, वन्दन। न०-वरुणबीज, प्रचेता। अ०-सादृश्य अर्थ का बोधक।
वंश (पु०)-पुत्र पौत्र आदि सन्ततिसमूह, अन्ववाय, गोत्र, तृणविशेष, बांस, पीठ का हिस्सा, वाद्यविशेष, इक्षु, सालवृक्ष।
वंशज (पु०)-बांसों से उत्पन्न हुआ यव के आकार का एक पदार्थ, वेणुजव, वासकाअकुआ। वि०-श्रेष्ठ

कुल में उत्पन्न हुआ।
वंशशर्करा (स्त्री०)–वंशलोचन ।
वंशस्तनित–स्यविल (न०)–१२ अक्षर के पाद वाला एक छन्दोविशेष ।
वंशाग्र (न०)–वंश का अंकुर, वंशमूल, वंश का पूर्वज ।
वंशानुचरित (न०)–वंश के चरित्रों का वर्णन जो पुराण के पञ्च लक्षणान्तर्गत है।
वंशी (स्त्री०)–मुरली नामक बाजा विशेष ।
वंशीधर (पु०)–श्रीकृष्ण का बोधक ।
वंश्य(वि०)–श्रेष्ठकुलोत्पन्न, खानदानी
वक् (१ आ०)–टेढ़ा होना, कुटिल होना ।
वक (पु०)–बगुला, पुष्पों वाला वृक्ष विशेष, कुबेर, एक राक्षस जो भीमसेन के द्वारा मारा गया था, दैत्यविशेष जो श्रीकृष्ण जी से मारा गया, औषध बनाने का यन्त्र विशेष।
वक्तव्य (वि०)–नीच, हीन, निन्दित, कुत्सित, वचनार्ह, कहनेलायक ।
वक्ता [तृ] (वि०)–उचित और बहुत कहने वाला, वाग्मी, बहुभाषी, बोलने वाला।
वक्त्र (न०)-मुख, वदन, मुंह ।
वक्त्रशोधी [न्] (पु०)–जम्भीर, नींबू। वि०-मुख को शुद्ध करने वाला ताम्बूलादि।
वक्त्रासव (पु०)-अधरमधु,ओठका रस
वक्र (पु०)-शनैश्चर, मंगलग्रह, शिव, त्रिपुरापहा, पर्पट, त्रिपुर नामक दैत्य, टेढ़ी गति वाला ग्रह, तिर्यग्गमन। वि०–तिरछी चाल वाला।
वक्रिम (न०)–तिरछापन, कौटिल्य ।
वक्रतुण्ड (पु०)–गणेश, शुकपक्षी, तोता।
वक्रोक्ति(स्त्री०)–कुटिलोक्ति, काकूक्ति, टेढ़ावचन, शब्दालंकारभेद ।
वक्ष् (१ प०)–क्रोध करना, गुस्सा करना ।
वक्ष [स्] (न०)–छाती, हृदय, कण्ठ से नीचे का भाग ।
वक्षोज (न०)–स्तन, कुचा, पिस्तान ।
वक्षोरुह (पु०)–पूर्ववत् ।
वक्ष्यमाण (वि०)--भविष्यत्काल में कथनीय विषय।
वख् (१प०)–जाना, गमन करना।
वगला-मुखी (स्त्री०)–दश महाविद्याओं के अन्तर्गत एक देवीविशेष ।
वगाह (पु०)–स्नान, नहाना, अवगाह
वघ् (१ आ०)–गमन करना, निन्दा करना, शीघ्रता से जाना, आरम्भ करना ।
वङ्क (पु०)–नदी का टेढ़ापन, नदीचक्र ।
वङ्किल (पु०)–कांटा, कण्टक ।
वङ्ग (न०)–धातुविशेष, रांग। पु०–रत्नाकर से लेकर ब्रह्मपुत्र तक का प्रदेश, चन्द्रवंशीय एक राजा।
वङ्गज (न०)--सिन्दूर। वि०--वंगदेश में उत्पन्न हुआ।

वंगशुल्वज (*न०)--राग और तांबे से मिश्रित धातु, कांसी ।
वच् (२ प०)--बोलना, कथन करना ।
वचः [स्] (न०)--वाक्य,कथन,फिक़रा ।
वचक्नु (पु०)--ब्राह्मण । वि०--वावदूक, अतिशयवक्ता ।
वचन (न०)--वाक्य,कथन, सोंठ,व्याकरण में एकत्वादि संख्या के अर्थ का द्योतक सुप्तिङात्मकप्रत्यय ।
वचनीय (वि०)--कहने योग्य, कथनीय, निन्दा के योग्य, लोकापवाद । [लोकनिन्दा ।
वचनीयता (स्त्री०)--लोकापवाद,
वचनेस्थित (वि०)--वचन का पालन करनेवाला,वशीभूत,आज्ञानुवर्ती।
वचनोपक्रम (पु०)--वाक्यारम्भ,उपन्यास, कहने की शुरूआत ।
वचसांपति(पु०)--बृहस्पति, देवगुरु ।
वचस्कर (वि०)=वचनेस्थित ।
व्रज् (१ प०)--गमन करना, जाना ।
वज्र (अस्त्री०)-इन्द्र का अस्त्रविशेष, हीरा, एक योग । न०--बालक, लौह । पु०-श्वेतकुश, श्रीकृष्ण का पौत्र, एक नृप ।
वज्रदन्त (पु०)--शूकर, मूषक, मूसा ।
वज्रधर (पु०)-इन्द्र, देवराज ।
वज्रनिर्घोष (पु०)--वज्र का शब्द, गर्जन ।
वज्रपाणि (पु०)--इन्द्र, ब्राह्मण ।
वज्रमय (वि०)--बहुत कठिन, वज्रस्वरूप । [वि०--वज्रयुक्त ।
वज्री [न्] (पु०)--इन्द्र, बुद्धदेव ।
वञ्चक (पु०)--शृगाल, गीदड़ । वि०--ठग, खल, धूर्त, कपटी ।
वञ्चन (न०)--ठगना, प्रतारण,किसी वस्तु को प्रकारान्तर से वर्णन कर मोहोत्पन्न करना ।
वञ्चना (स्त्री०)--पूर्ववत् ।
वञ्चित (वि०)--ठगा हुआ, प्रतारित ।
वञ्जुल (पु०)--अशोक का वृक्ष, तिनिश नामक पेड़, कुमुदवृक्ष, पक्षिविशेष, बेंत का वृक्ष । वि०--तिरछा, वक्र, टेढ़ा ।
वञ्जुला (स्त्री०)--बहुदुग्धा गौ ।
वट् (१प०)--चोरी करना,वर्णन करना, कहना । १०उ०--बाटना,घेरना ।
वट (पु०)--बड़ का वृक्ष, सन की बनी हुई रस्सी, तांत ।
वटक (पु०)--बड़ा, पिष्टकविशेष ।
वटु (पु०)--बालक, शिशु, माणवक, ब्रह्मचारी ।
वटुक (पु०)--बालक, ब्रह्मचारी, भैरवविशेष, भैरो ।
वठर (पु०)--मूर्ख, वक्र, टेढ़ा, ब्राह्मण से वैश्यकन्या में उत्पन्न पुत्र, शब्दकार । वि०--मन्द, शठ ।
वड् (१० उ०)--बाटना,हिस्सा करना । १ प०--लपेटना, घेरा देना ।
वडभि-भी (स्त्री०)--छज्जा, गृह की चोटी, महल के शिखर का गृह ।
वड्ड (वि०)--बड़ा, बृहत्, श्रेष्ठ, उत्तम ।
वण्ट (पु०)--भाग, हिस्सा, अविवाहित पुरुष ।
वण्टक (पु०)--भाग,हिस्सा । वि०--

विभाग करने वाला, बाटने वाला

वत (अ०)–बराबरी, तुल्यता, सादृश्य।

वत (अ०)–अनुकम्पा, दया, खेद, हर्ष, सन्तोष, आमन्त्रण, विस्मय।

वतंस (पु०)–कर्णभूषण, कर्णफूल, शेखर, शिर का गहना।

वतोका (स्त्री०)–वह स्त्री जिस की सन्तान दूर हो गई हो, सन्तान-रहिता नारी।

वत्स (न०)–वक्षःस्थल, छाती। पु०–गौ का बछड़ा, देशभेद, दिवोदास का पुत्रविशेष।

वत्सतर (पु०)–छोटा बछड़ा, क्षुद्रवत्स, दम्य बैल।

वत्सतरी (स्त्री०)–वृषोत्सर्ग में दानार्थ तीन वर्ष की परिकल्पित अवस्था वाली बछिया, छोटी बछिया।

वत्सनाभ (पु०)–एक प्रकार का स्थावर विष जो पशु के बच्चों को मारता है।

वत्सपाल (पु०)–श्रीकृष्ण। वि०–वत्सों [बछड़ों] का पालक।

वत्सर (पु०)–वर्ष, सवत्, साल।

वत्सराज (पु०)–चन्द्रवंशीय एक राजा।

वत्सरान्तक(पु०)–वर्ष का अन्त करने वाला फाल्गुन का मास।

वत्सल(वि०)–स्निग्ध, स्नेहयुक्त, प्रेम-वाला। पु०–शृंगारादि दश रसों में से एक, कार्त्तिकेय का अनुचर-विशेष।

वद्(१ प०)–याचना, नृत्य करना।

१ प०–बोलना, कथन करना।

वद(वि०)–बोलने वाला, वक्ता।

वदन(न०)–मुख, मुंह, कथन, कहना।

वदन्ति-न्ती (स्त्री०)–कथा, गाथा, कहानी।

वद [दा] न्य (वि०)–बहुत दान देने वाला, बहुप्रद, बड़ा दानी, बहु-दानशील।

वदाम (न०)–अपने नाम से प्रसिद्ध फलविशेष, बादाम। [बहुवक्ता।

वदावद (वि०)–बहुत बोलने वाला,

वध(पु०)–हिंसा, मारना, क़त्ल करना, दूसरे के प्राणवियोगानुकूल नीच कर्म करना। [वधकर्त्ता।

वधक(पु०)–हिंसा करने वाला पुरुष,

वधस्थान (न०)–मारने की जगह, बधभूमि, बूचरखाना।

वध्य(वि०)–मारने योग्य, वधार्ह।

वध्यपाल(पु०)–क़ैदियों की रक्षा करने वाला पुरुष, जेलर।

वन्(८ आ०)–मांगना, याचना करना।

१ प०–सेवा करना।

वन(न०)–वह स्थान जो बहुत से वृक्षों युक्त हो, बगीचा, कानन, विपिन, जल, निवास, घर, झरना, किरण।

वनकोलि (स्त्री०)–वन की बेरी।

वनगोचर (पु०)–व्याध, भील, नारायण, विष्णु, जलचर, कानन में विचरने वाला पुरुष।

वनचन्दन (न०)–अगुरु, देवदारु।

वनज (न०)–अम्बुज, कमल, पद्म। पु०–नागरमोथा, हस्ती। वि०–वन में उत्पन्न होने वाला।

वनप्रिय (पु०)—कोकिल, कोयल।
वनमल्लिका (स्त्री०)—वन की मल्ली, दश, डांस।
वनमाला (स्त्री०)—वह माला जो घुटनों तक लम्बी हो,ऋतु के सब प्रकार के पुष्पों से बनाई और जिस के बीच में मोटा कदम्ब का पुष्प हो; श्रीकृष्ण की माला, वनपुष्पनिर्मित मालाविशेष।
वनमाली [न्] (पु०)—श्रीकृष्ण,विष्णु।
वनमुक् [च्] (पु०)—मेघ, बादल।
वनराज (पु०)—सिंह, शेर।
वनलक्ष्मी (स्त्री०)—कदली, केला।
वनस्थ(पु०)—वानप्रस्थ,तृतीयाश्रमी, मृग। वि०—वन में रहने वाला।
वनस्पति (पु०)—वह वृक्ष जिस पर बिना पुष्प के फल आते हैं जैसे अश्वत्थ, पीपल आदि, वटवृक्ष, घृतपृष्ठ का पुत्रविशेष।
वनायु (पु०)—देशविशेष, अरब देश जहां के अश्व उत्तम माने जाते हैं।
वनायुज (पु०)—वनायु देश में उत्पन्न हुआ घोड़ा, अरबी घोड़ा।
वनि (पु०)—अग्नि, आग।
वनित (वि०)—याचना किया हुआ, याचित, सेवित, प्रार्थित।
वनिता (स्त्री०)—स्त्री, योषित, औरत, प्रेम करने वाली स्त्री, जातरागा स्त्री, स्त्रीमात्र।
वनी (स्त्री०)—वन, विपिन, जंगल।
वनी [न्] (पु०)—वानप्रस्थ।
वनीक (वि०)—याचक, मांगने वाला। [वनीयक का भी यही अर्थ है]।
वनेचर (वि०)—वन में विचरने वाला, अरण्यचारी।
वनौकाः [स्] (पु०)—वानर, बन्दर।
वञ्च् (१ प०)—छल करना, ठगना, प्रतारण।
वन्दन (न०)—स्तुति, प्रशंसा,तारीफ़, प्रणाम, विषविशेष, रक्षोभेद, असुर, [वन्दना भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।
वन्दनी (स्त्री०)—स्तुति, नति,प्रणाम, स्त्रियों के मस्तक का भूषण-विशेष जिसे बन्दी कहते हैं।
वन्दनीय (वि०)—स्तुति के योग्य, प्रणामार्ह,तारीफ़ के लायक़। पु०—पीतवर्ण का भंगरा।
वन्दारु (वि०)—प्रणाम करने के स्वभाव वाला, अभिवादनशील। न०—स्तुति।
वन्दि-न्दी (स्त्री०)—क़ैदी, कारागार में बन्धा हुआ मनुष्य गवादि, नमस्कार, स्तुति। पु०—भाट।
वन्दिग्राह (पु०)—अग्नि, शस्त्र और देवता के स्थान का भेदक, नामी चोर, डकैत। [भाट,स्तुतिपाठक।
वन्दिपाठ (पु०)—प्रशंसा करने वाला,
वन्दी [न्] (पु०)—पूर्ववत्।
वन्द्य (वि०)—नमस्कार के योग्य, वन्दना करने लायक़, स्तुत्य।
वन्य (न०)—दारुहल्दी। पु०—वाराही कन्द। वि०—वन में उत्पन्न होने वाला।

वन्या (स्त्री०)–वनसमूह, जलसमुदाय, मुद्गपर्णी, अश्वगन्ध।
वप् (१उ०)–बुनना, बीज बोना, मूड़ना।
वपन (न०)–क्षौर कराना, केशमुण्डन, वस्त्रादि का बुनना, बीज बोना।
वपनी (स्त्री०)–नापितशाला, नाई का घर, कोली का घर।
वपु [स्] (न०)–शरीर, देह, जिस्म, अच्छा आकार, अंश। स्त्री०–दक्षकन्या और धर्मराज की पत्नी।
वप्ता [तृ०] (पु०)–पिता, जनक, नापित। वि०–बीज बोने वाला, कृषक, किसान।
वप्र (न०)–दुर्ग का नगरादि, खाई से निकाला हुआ मिट्टी का ढेर, क्षेत्र, खेत, तट, धूलि, सीसा। पु०–पिता, जनक, प्रजापति, परकोटा।
वब (पु०)–ज्योतिषशास्त्रोक्त करण-विशेष।
वभ् (१ प०)–गमन करना, जाना।
वम् (अ०)–शिवपूजा के अन्त में कपोल वाद्यविशेष, शिव का प्रणवस्वरूप।
वम् (१ प०)–वमन करना, कै करना, ऊपर को उछलना।
वमथु (पु०)–उद्दि, रद्द, कै।
वमन (न०)–पूर्ववत्।
वमित (वि०)–वान्त, कै किया हुआ। न०–वमनकृत वस्तु।
वय्(१ आ०)–गति, गमन, जाना।
वय [स्] (न०)–बाल्यादि अवस्था, अमर, पक्षी, जानवर।
वय [य] स्थ (वि०)–युवा, तरुण, जवान। पु०–मित्र, दोस्त।
वय[य] स्था (स्त्री०)–युवती स्त्री, जवान औरत, सखी, छोटी इला-यची, गिलोय।
वयस्य(वि०)–बराबर उमर का, तुल्य-वयस्क, स्निग्ध, मित्र।
वयस्या (स्त्री०)–समान उमर की औरत, सखी, सहेली।
वयुन(न०)–ज्ञान, विद्या, इल्म। पु०–देवस्थान, कृशाश्व का पुत्रविशेष।
पु०–नियम, तरीका।
वर् (१० उ०)–इच्छा करना, चाहना।
वर (न०)–केसर, कुछ प्रिय, त्वचा, आर्द्रक, इच्छा, मांगना, आव-रण, घेरा। अ०–मनाक्प्रिय, थोड़ा प्यारा।
वर (पु०)–पति, जामाता, मित्र, गुग्गुल, प्रार्थनाविशेष, देवता से वरणीय अभिलषित वस्तु, देव-मार्पित पदार्थ, निग्रह।
वरट (पु०)–हंस नामक पक्षी, कीट-विशेष न०–कुन्दपुष्प।
वरटा(स्त्री०)–हंस की भार्या, हंसिनी।
वरण (न०)–कन्या आदि का ग्रहण, कन्या देने के लिये जामाता की प्रार्थनाविशेष। पु०–परकोटा, कोट, वरने का वृक्ष।
वरत्रा (स्त्री०)–हस्ती की चर्मनिर्मित कक्षरज्जु, हस्ती की पेटी, तसमा।
वरद (वि०)–वर देने वाला, अभीष्ट प्रद, वरदाता।
वरदाचतुर्थी (स्त्री०)–माघशुक्लपक्ष

की चतुर्थी जिस में गौरी का पूजन किया जाता है।

वररुचि (पु०)–अपने नाम से प्रसिद्ध एक कवि, विक्रमादित्यराज की सभा के नवरत्नों में से एक।

वरवर्णिनी (स्त्री०)–अत्युत्तमा स्त्री, श्रेष्ठ नारी, हल्दी, लाक्षा, रोचना, गौरी, पतिव्रता स्त्री।

वराक (पु०)–शिव, महादेव। न०–युद्ध। वि०–शोचनीय, छोटा, अवर।

वराङ्ग (न०)–मस्तक, गुह्य, गुदा, योनि। पु०–विष्णु, हस्ती। वि०–श्रेष्ठ अङ्ग वाला।

वराङ्गना (स्त्री०)–अत्युत्तम अङ्गयुक्ता स्त्री, सुन्दर नारी।

वराट–क (पु०)–कौड़ी, कपर्दक, छोटी कौड़ी, रस्सी, रज्जु।

वराण (पु०)–इन्द्र, वरुणवृक्ष।

वराणसी (स्त्री०)–काशी, बनारस।

वरारोह (पु०)–हस्त्यारोह, हस्ती।

वरारोहा (स्त्री०)–उत्तमाङ्गना, प्रशस्तनितम्बवती नारी।

वराशि(पु०)–स्थूलवस्त्र, मोटा कपड़ा।

वराह (पु०)–शूकर, सूअर, विष्णु का अवतारविशेष, एक पर्वत, शिशुमार, नागरमोथा।

वरिवसित (वि०)–उपासना किया हुआ, उपासित, परिवेषित।

वरिवस्या (स्त्री०)–शुश्रूषा, सेवा, पूजा, अर्चना।

वरिष (न०)–वर्ष, संवत, साल, अब्द।

वरिषा (स्त्री०)–वृष्टि, वर्षा।

वरिष्ठ (वि०)–बहुत बड़ा, अतिप्रिय, अतिश्रेष्ठ। न०–ताम्र, तांबा।

वरीयान् [यस्] (वि०)–बहुत श्रेष्ठ, अत्युत्तम, अतितरुण। पु–विष्कुम्भादि योगों में से १८ वां योग।

वरुड (वि०)–एक प्रकार की म्लेच्छ जाति।

वरुण (पु०)–जल का अधिष्ठाता देवविशेष, पश्चिम दिशा का स्वामी, जल, सूर्य।

वरुणानी (स्त्री०)–वरुण की पत्नी।

वरूथ (न०)–कवच, तनुत्राण, शिरस्त्र, गृह, घर, सेना। पु०–रथ की रक्षा का स्थानविशेष, रथगुप्ति।

वरूथिनी (स्त्री०)–सेना, फौज।

वरेण्य (वि०)–पूजनीय, प्रार्थना करने योग्य, प्रधान। न०–केशर। पु०–पितृगणों में से एक।

वर्कर (पु०)–बकरा, मेषशावक, छाग।

वर्ग (पु०)–स्वजातीयसमूह, समानधर्म वाले प्राणी या अप्राणियों का गिरोह यथा–मनुष्यवर्ग, अक्षरवर्ग जैसे कवर्ग, चवर्ग आदि; ग्रन्थपरिच्छेद यथा–स्वर्गवर्ग, गणित में समान दो अङ्कों का परस्पर गुणन करना यथा–२ की संख्या का ४ और ३ का ९ इत्यादि; स्थान।

वर्गोत्तम (पु०)–क्षेत्रादि छः वर्गों में उत्तम, ज्योतिषशास्त्रोक्त तीस अंश वाली राशि का ९वां अंश अर्थात् चर राशियों के पहले,

स्थिरों के पांचवें और द्विस्वभाव वाली राशियों के नवमांश में वर्गोत्तम कहलाता है। [होना।
वर्च् (१ आ०)-चमकना, प्रकाशित
वर्चः [स्] (न०)-रूप, विष्ठा, मल, तेज, शुक्र, वीर्य।
वर्चस्क(अस्त्री०)-विष्ठा, मल।
वर्चस्वी [न्] (पु०)-तेजस्वी मनुष्य, तेजोयुक्त पुरुष।
वर्जन(न०)-त्याग, छोड़ना, हिंसा, मारण, मारना।
वर्जित(वि०)-त्यक्त, त्यागा हुआ।
वर्ण् (१० उ०)-स्तुति करना, प्रशंसा करना, चमकना, दीप्त होना, उद्योग करना, कथन करना, बयान करना।
वर्ण(न०)-कुंकुम, केशर। पु०-ब्राह्मण क्षत्रियादि जाति, सफेद आदि रूप, अकारादि अक्षर, यश, चन्दनादि लेपन द्रव्य, व्रतविशेष, स्वर्ण, अंगराग, गाने का सिलसिला, प्रशंसा, स्तुतिभेद।
वर्णक (न०)-हरताल, मलने योग्य घिसा हुआ चन्दनादि द्रव्य। पु०-चन्दन, विलेपन, चारण, मण्डल। [स्याही का पात्र।
वर्णकूपिका(स्त्री०)-मसीपात्र, दवात,
वर्णतूलि-ली (स्त्री०)-लेखनी, क़लम।
वर्णधर्म (अस्त्री०)-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के कर्त्तव्यकर्म।
वर्णन (न०)-कथन, स्तुति, कथन, गुणकीर्त्तन।
वर्णमाता (स्त्री०)-लेखनी, क़लम।
वर्णमाला (स्त्री०)-अकारादि अक्षरों का समूह, अक्षरश्रेणी।
वर्णसङ्कर (पु०)-वर्णों का मेल अर्थात् दोगलापन, मिश्रितजाति, उत्तम वर्ण के पुरुष से हीनवर्णा भार्या में या नीच वर्ण पुरुष के वीर्य से उत्तम वर्ण की स्त्री में उत्पन्न पुत्रादि।
वर्णित (वि०)-स्तुत, प्रशंसित, तारीफ़ किया हुआ, कथित।
वर्णी [न्] (पुं०)-ब्रह्मचारी, कुमार, ब्राह्मणादि जाति, लेखक, चित्रकर, चित्र खींचने वाला पुरुष।
वर्त्तक (पु०)-पक्षिविशेष, बत्तक।
वर्त्तन (न०)-आजीविका, वृत्ति, रोज़ी, स्थापन, जीवनोपाय। वि०-जीविकायुक्त, रहनेवाला। पु०-काक, कौआ।
वर्त्तमान (पु०)-वह समय जिसमें आरब्ध कार्य की परिसमाप्ति न हो, मौजूदा, ज़माना, गुजरता हुआ समय, हाल, अद्यतनकाल।
वर्त्ति (स्त्री०)-दीपक की बत्ती, दीपदशा, लेप, नेत्राञ्जन, शरीरलेपन।
वर्त्तिष्णु (वि०)-वर्त्तनशील, रहने वाला, होने वाला।
वर्त्तुल (वि०)-गोलाकार पदार्थ। न०-गृञ्जन, शलजम। पु०-कलायविशेष।
वर्त्म [न्] (न०)-पन्था, मार्ग, रास्ता, नेत्र के पलक, नेत्रच्छद।

वर्द्ध् (१०उ०)–छेदन करना, काटना।
वर्द्धक (पु०)–आम्रजयष्टि, भारंगी। वि०–पूर्ण करने वाला, काटने वाला, छेदक।
वर्द्धकी [न्] (पु०)–बढ़ई, त्वष्टा, वर्णसङ्करजातिविशेष।
वर्द्धन (न०)–छेदन, काटना, पूरा करना। वि०–वृद्धि करने वाला, वृद्धियुक्त।
वर्द्धमान (पु०)–एरण्ड का वृक्ष। वि०–बढ़ा हुआ, वृद्धिशील, मिट्टी का पात्रविशेष, कुञ्जा, देशभेद, धनिकों का गृहविशेष।
वर्द्ध (न०)–चमड़ा, चर्म, चाम।
वर्द्धी(स्त्री०)–चमड़े की रस्सी,तसमा।
वर्म्म [न्] (न०)–कवच, ज़िरह बख़्तर।
वर्म्मा [न्] (पु०)–क्षत्रियों की वह उपाधि जो नाम के आगे लगाई जाती है, क्षत्रियपद्धति।
वर्म्मित (वि०)–कवचधारी, धृतसन्नाह, कवच धारण किये हुए।
वर्य(वि०)–प्रधान, मुख्य, श्रेष्ठ। पु०–कामदेव।
वर्वणा (स्त्री०)–नीले रंग की मक्खी, नीलमक्षिका, स्याह मक्खी।
वर्व्वर (न०)–हिंगु, हींग, पीला चन्दन, गन्धरस। पु०–देशविशेष, काल तुलसी का वृक्ष। वि०–पामर, नीच, मूर्ख।
वर्ष (अस्त्री०)–वृष्टि, वर्षा, जम्बुद्वीप का अंश, सवत्,साल, मेघ, प्रभव आदि ६० वर्ष, जम्बुद्वीप।
वर्षण (न०)–वृष्टि, बरसना।
वर्षपर्वत (पु०)–वे पर्वत जो वर्षों का विभाग करते हैं जो सात हैं यथा–हिमवान्, हेमकूट, निषध, मय, चैत्र, कर्णी और शृङ्गी।
वर्षप्रिय (पु०)–चातक पक्षी।
वर्षवर (पु०)–नपुंसक, पण्ड,हीजड़ा।
वर्षवृद्धि (पु०)–जन्मदिन, जन्म की तिथि, वर्षगांठ, जन्मतिथि का कृत्य।
वर्षा (स्त्री०)–अपने नाम से प्रसिद्ध ऋतु, बरसने का मौसम,वर्षाऋतु।
वर्षाभू (पु०)–भेक, मेंढक।
वर्षाभ्वी (स्त्री०)–भेकपत्नी, मेंढकी, पुनर्नवा नामक औषध। [बूटा।
वर्षिष्ठ (वि०)–अतिशय वृद्ध, बहुत
वर्षीयान् [यस्] (वि०)–पूर्ववत।
वर्षुक (वि०)–बरसने के स्वभाववाला, वर्षणशील। [के पत्थर।
वर्षोपल (पु०)–ओला, करका, वर्षा
वर्त्म [न्] (न०)–शरीर, देह, जिस्म।
वर्ह् (१० उ०)–मारना, हिंसा करना।
वर्ह (न०)–मोर का पंख,मयूरपिच्छ।
व [व] र्हिः [स्] (पु०)–अग्नि, आग, दीप्ति, यज्ञ, कुश।
वर्हिण (पु०)–मयूर, मोर।
वर्हिर्मुख(पु०)–देवता,देव। [विशेष।
वर्हिषदः [द्] (पु० बहु०)–पितृगण-
व[ब] र्ही [न्] (पु०)–मयूर,मोर,माधा के गर्भ से उत्पन्न कश्यप का पुत्रविशेष। [करना।
वल् (१ आ०)–ढकना, आच्छादन

वलभि-भी (स्त्री०)=वडभि ।
वलय (अस्त्री०)-कंकण, कटक, हस्त पाद के कड़े [यह शब्द उत्तर-पदस्थ होने पर 'उसका घेरा' अर्थ का बोधक होता है, यथा—'भूवलय' अर्थात् पृथ्वी का घेरा]।
वलयित (वि०)-घेरा हुआ, लपेटा हुआ, वेष्टित ।
व[ब] लिश (न०)=बडिश
व [ब] ल्क(न०)-बक्कल, वृक्षों का छिलका,नपुंसक,स्त्रीजङ्घा,मछलियों की त्वचा शल्क, खण्ड ।
व [ब] ल्कल (न०)-वृक्षत्वक्, वक्कल। अस्त्री०-दालचीनी ।
वल्ग्(१प०)-जाना,उछल कर चलना ।
वल्गन (न०)-प्लुतगमन, उछल कर चलना । [की रस्सी ।
वल्गा (स्त्री०)-लगाम, अश्व के मुख
वल्गित (न०)-अश्व की गतिविशेष, जाना,अधिक बोलना,बहुभाषण ।
वल्गु (पु०)-छाग, बकरा । वि०-सुन्दर, मनोज्ञ । न०-चन्दन, वन, जंगल, अरण्य, पण पैसा ।
व [ब] ल्मीक (पु०)-कीटनिर्मित मिट्टी का ढेर, बमई, बामलूर, वल्मी,वाल्मीकि मुनि,रोगविशेष।
वल्ल (पु०)-तीन गुञ्जा का परिमाण, तीन रत्ती की तौल ।
वल्लकी (स्त्री०)-वीणा,बीन,वल्लकी नामक वाद्यविशेष ।
वल्लभ (पु०)-दयित, प्रिय, अध्यक्ष, स्वामी, श्रेष्ठ अश्व ।
वल्लरि-री (स्त्री०)-मञ्जरी, लता, मेथिका, चित्रमूल ।
वल्लव (पु०)-गोप, ग्वालिया, भीमसेन का नाम जो कि विराटनगर में गुप्तरूप से रहने के समय रक्खा था। वि०-पाचक,रसोइया।
वल्लवी (स्त्री०)-गोपपत्नी,गोपिका। आभीरी ।
वल्लि (स्त्री०)-लता, बेल, पृथ्वी ।
वल्लुर (न०)-कुञ्जस्थान, बेलों से आच्छादित गृह, मञ्जरी, क्षेत्र, खेत, वन, निर्जलस्थान, नूतन-घासयुक्त स्थान ।
वल्लूर (वि०)-सूखा हुआ मांस,शूकर-मांस, कल्लर की जमीन, ऊषर-भूमि, वाहन, वनक्षेत्र ।
वश् (२ प०)-इच्छा करना, चाहना ।
वश (न०)-प्रभुत्व, अधीन होना, पराधीनता, काबू में होना । पु०-इच्छा, वेश्यागृह, जन्म ।
वशंवद (वि०)-अधीन होने के वाक्य बोलने वाला, 'मैं आप के वश हूं' ऐसा कहने वाला, प्रियवक्ता, मीठा बोलने वाला, वशीभूत । [औरत ।
वशा (स्त्री०)-वन्ध्या नारी, बांझ
वशित्व (न०)-स्वातन्त्र्य,खुदमुख्तारी, ऐश्वर्यविशेष । आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक ।
वसि [सि] ष्ठ (पु०)-अपने नाम से प्रसिद्ध जितेन्द्रियों में प्रधान एक मुनि, अरुन्धती का पति ।

वशी [न्] (वि०)-इन्द्रियों को वश में रखने वाला, जितेन्द्रिय, स्वतन्त्र ।

वशीकरण (न०)-वश में करने वाला मन्त्र, औषध वा मणिविशेष; वह मन्त्रादि साधन जिसके द्वारा अवश पुरुषादि वश में किया जासके।

वश्य (न०)-लवंग, लौंग। वि०-वश में हुआ, वशीभूत।

वश्या (स्त्री०)-वशीभूता स्त्री, वश में हुई औरत।

वषट् (अ०)-देवता के उद्देश्य से हविः वा घृत त्याग करने का मन्त्र, देवोद्देश्य से घृतादि का त्याग।

वषट्कार (पु०)-वह यागविशेष जो देवता के उद्देश्य से किया जाय, देवोद्देश्यक याग।

वषट्कृत (वि०)-वषट् इस मन्त्र से किया हुआ होम, वषट्मन्त्र को उच्चारण कर अग्नि में होम किया गया [हव्य]।

वस् (१ प०)-रहना, निवास करना। २ आ०-ढकना, आच्छादन करना।

वसति-ती (स्त्री०)-वास, रहना, रात्रि, निकेतन, स्थान।

वसन (न०)-वस्त्र, आच्छादन, कपड़ा, ढादन, ढकना, निवास।

वसना (स्त्री०)-स्त्री की कमर का गहना, नारीकटिभूषण।

वसन्त (पु०)-ऋतुविशेष जो चैत्र और वैशाखमास में होता है, रागविशेष, शीतला नामक रोग।

वसन्ततिलक (न०)-चौदह अक्षर के पाद वाला एक छन्दोविशेष।

वसन्तद्रु (पु०)-कोयल, चैत्रमास, आम्रवृक्ष, हिन्दोल। [पंचमी।

वसन्तपञ्चमी (स्त्री०)-माघशुक्ला

वसन्तबन्धु-सख (पु०)-कामदेव, मदन।

वसन्तोत्सव (पु०)-होलिकोत्सव।

वसा (स्त्री०)-चर्बी, मेद, दिमाग़।

वसि (पु०)-कपड़ा, वस्त्र, घर।

वसित (वि०)-बसा हुआ, रहने वाला, पहरा हुआ। न०-घर।

वसिर(न०)-सामुद्र लवक, गजपिप्पली।

वसि[शि]ष्ठ (पु०)-एक ऋषि का नाम जो सूर्यवंश के पुरोहित थे और अनेक वैदिक मंत्रों के द्रष्टा हुए हैं।

वसु (वि०)-मधुर, शुष्क। न०-धन, सम्पत्ति, रत्न, स्वर्ण, जल, वस्तु। पु०-आठ वैदिक देव, आठ की संख्या, अग्नि, सूर्य, वकुलवृक्ष।

वसुदेव (पु०)-श्रीकृष्ण का पिता, यदुकुल में उत्पन्न एक क्षत्रिय।

वसुदेवभू (पु०)-श्रीकृष्ण।

वसुधा (स्त्री०)-पृथ्वी, जमीन, वसुमती।

वसुन्धरा (स्त्री०)-पूर्ववत्।

वसुस्थली (स्त्री०)-कुबेरपुरी।

वस्कयणी (स्त्री०)-चिरप्रसूता गौ, बहुत दिनों की ब्याई हुई गौ।

वस्त (पु०)-छाग, बकरा।

वस्ति (पु०)-वास रहना, नाभि के नीचे मूत्राशय का स्थान।

वस्तु (न०)—द्रव्य, चीज़, पदार्थ ।
वस्तुतः [स्] (अ०)—असलियत में, ठीक २, वास्तविक ।
वस्त्य (न०)—घर, गृह, मकान । वि०—निवास के लिये अच्छा ।
वस्त्र (न०)—आच्छादन, कपड़ा ।
वस्त्रग्रन्थि (पु०)—कपड़े की गांठ, नीवी, धोती की आंटी ।
वस्न (न०)—वेतन, मज़दूरी, द्रव्य । पु०—मृत्यु, मौत, मोल ।
वह् (१उ०)—पहुंचाना, लेजाना,ढोना ।
वह (पु०)—बैल के कन्धे की जगह, घोड़ा, अश्व, यान, सवारी, रास्ता, नद, धारा, सहारा ।
वहत (पु०)—मुसाफ़िर, बैल ।
वहति (पु०)—बैल, वायु, मित्र,मंत्री ।
वहती-वहा (स्त्री०)—नदी,जलधारा ।
वहन (न०)—लेजाना, पहुंचाना, सहारा देना,बहना,गाड़ी,नौका ।
वहित (वि०)—लेजाया हुआ, ज्ञात, प्राप्त ।
वहित्र-नौ=बेड़ा, किश्ती, जहाज़ ।
वह्य (न०)—गाड़ी, यान । [विकल्प ।
वा (अ०)—पक्षान्तर, अथवा, भी,
वा (२ प०)—बहना, फूंकना, जाना, मारना, सूंघना । ४प०—सूखना, बुझना । १० प०—जाना, सुख होना, घूमना ।
वाक् (पु०)—वाणी, वचन । [लड़ाई ।
वाक्कलह (पु०)—झगड़ा, बातों की
वाक्कीर (पु०)—साला, पत्नी का भाई ।
वाक्चपल (वि०)—बातूनी, वाचाल ।
वाक्छल (न०)—मिथ्या उत्तर, ऐसे शब्दों का प्रयोग जो द्व्यर्थक हो ।
वाक्पटु (वि०)—बात करने में चतुर ।
वाक्प्रलाप (पु०)—बहुत बोलना, वाग्मिता ।
वाक्य (न०)—वाणी, शब्द, फ़िक़रा, कथन, बोली ।
वाक्यप्रयोग (पु०)—भाषा का प्रयोग, लफ़ज़ों का इस्तैमाल ।
वाक्यरचना (स्त्री०)—जुमले में लफ़्ज़ों की तरतीब देना, कारकों का आपस में सम्बन्ध लगाना ।
वाक्यविन्यास (पु०)—पूर्ववत् ।
वाक्यविशारद (वि०)—फसीह,वाग्मी।
वाक्संयम (पु०)—कम बोलना,मौनधारण ।
वागर (पु०)—तपस्वी, ऋषि, विद्वान्, वीर, इरादा, वाड़वानल, भेड़िया ।
वागा (स्त्री०)—लगाम,बागडोर ।
वागारू (वि०)—बेवफ़ा, भग्नप्रतिज्ञ ।
वागाडम्बर (पुं०)—बहुत कहना, कठिन शब्दों का प्रयोग ।
वागीश (पु०)—वाग्मी,सुवक्ता,बृहस्पति।
वागुरा (स्त्री०)—जाल, पाश ।
वागुरिक (पु०)—बधिक, शिकारी ।
वाग्जाल (न०)—बहुत बातें करना, निठल्ली बातें ।
वाग्डम्बर (पु०)=वागाडम्बर । [ना ।
वाग्दण्ड (पु०)—लानत,मलामत,भर्त्स
वाग्दत्त (वि०)—वादा किया,प्रतिज्ञात
वाग्दत्ता (स्त्री०)—ऐसी कन्या जिसकी सगाई हो गई हो ।
वाग्दान (न०) सगाई, मंगनी ।

वाग्देवी(स्त्री०)–सरस्वती, शारदा।
वाग्य (वि०)–कमगो, थोड़ा बोलने वाला। पु०–विनय, लज्जा।
वाग्युद्ध (न०)–बातों की लड़ाई, वितण्डावाद।
वाग्विदग्ध (वि०)–बोलने में चतुर।
वाग्विलास (पु०)–मधुर या सुन्दर वाणी।
वाग्मी [न्] (वि०)–वाचाल, फसीह, बहुत बातूनी, कपबकड़, वक्ता। पु०–ठिकुनरार, बृहस्पति।
वाङ्क (पु०)–समुद्र, सागर।
वाङ्क्ष् (१प०)–चाहना, इच्छा करना।
वाङ्मय (वि०)–शब्दमय, बातूनी, कपक्कड़।
वाङ्मात्र (न०)–कथनमात्र।
वाङ्मुख(न०)–दिबाचा, प्रस्तावना।
वाच् [क्] (स्त्री०)–वाणी, शब्द, बोली, आवाज़, बातचीत, भाषा, कथन, सरस्वती।
वाचक (वि०)–बोलने वाला, कहने वाला, प्रकाशक, अर्थद्योतक। पु०–पाठक, दूत।
वाचन (न०)–पढ़ना, घोषणा।
वाचनिक (वि०)–वाणी से कहा हुआ, शाब्दिक।
वाचस्पति(पु०)–वाणी का स्वामी अर्थात् बृहस्पति। [वाग्मिता।
वाचस्पत्य (न०)–धाराप्रवाहवक्तृता,
वाचा (स्त्री०)–वाणी,कथा,कसम।
वाचाट (वि०)–बातूनी, वृथा बात करने वाला।
वाचाल (वि०)–पूर्ववत्।
वाचिक (वि०)–वाणीसम्बन्धी, शाब्दिक। न०–ज़बानी ख़बर।
वाच्य(वि०)–कहने योग्य,कुत्सित,हीन विशेषण। न०–दूषण,प्रतिपादन।
वाच्यवज्र (न०)–कठोरवाणी, सख़्त गुफ़्गू। [प्रार्थ।
वाच्यार्थ (पु०)–ज़ाहिरामायने,प्रकट
वाज (पु०)–बाज़, पर, युद्ध, आवाज़। न०–घी, भोजन, जल,यज्ञ, शक्ति, धन, तेज़ी।
वाजसन (पु०)–विष्णु, शिव।
वाजसनि (पु०)–सूर्य, सूरज।
वाजसनेय (पु०)–याज्ञवल्क्य, वाजसनेयसंहिता का कर्ता।
वाजिन (न०)–शक्ति, बहादुरी।
वाजी [न्] (वि०)–शीघ्रगामी, बलशाली। पु०–घोड़ा, तीर, इन्द्र, बृहस्पति। [वीर्यवर्धक औषध।
वाजीकरण (न०)–एक प्रकार की
वाञ्छ् (१ प०)–चाहना, इच्छा करना, तलाश करना।
वाञ्छन (न०)–इच्छा, ख्वाहिश।
वाञ्छा (स्त्री०)–पूर्ववत्।
वाञ्छित (वि०)–इच्छित, चाहा हुआ। न०–इच्छा। [बहुत।
वाट (अस्त्री०)–बाड़ा, मार्ग, बग़ीचा,
वाटिका (स्त्री०)–बग़ीचा,उपवन।
वाटी (स्त्री०)–घेरा, बाड़ा, बाग़।
वाड् (१आ०)–नहाना,गोते लगाना।
वाडव (पु०)–ब्राह्मण,समुद्र की अग्नि।
वाणि(स्त्री०)–बुनना,कथन,सरस्वती।

वाणिज (पु०)--सौदागर, व्यापारी।
वाणिजिक(पु०)–सौदागर, ठग।
वाणिज्य (न०)–तिजारत, व्यापार।
वाणी (स्त्री०)–सरस्वती, शब्द, भाषा, जबान, आवाज, तारीफ़।
वात(वि०)–मुंह से फूंका हुआ, इच्छित, प्रार्थित। पु०-वायु, हवा, आंधी, गठिया, जोड़ों का सूजन, पृष्ठ।
वातक(पु०)–जार, यार।
वातकेतु(पु०)–धूलि, रेणु।
वातकेलि(पु०)–प्रेम की बातें, कानाफूसी। [ज्वर।
वातज्वर(पु०)–वातदोष से उत्पन्न
वातध्वज(पु०)–बादल, ख़ाक।
वातपुत्र(पु०)–ठग, भीम, हनूमान्।
वातरोग(पु०)–गठिया का रोग।
वातवैरी[न्](पु०)–एरण्डवृक्ष, बादाम।
वातसारथि(पु०)–अग्नि, आग।
वातायन (पु०)–घोड़ा। न०-खिड़की, तम्बू।
वातापि(पु०)–एक राक्षस का नाम।
वातापिद्विष्-ट् (पु०)–अगस्त्य ऋषि, अगस्त्य नक्षत्र।
वालि(पु०)–सूर्य, वायु, चन्द्रमा।
वातुल(वि०)–पागल, गठियारोग से पीड़ित। पु०-बवूला।
वाता [तृ](पु०)–वायु, हवा।
वात्या(स्त्री०)-तूफान, तेज़हवा, बवूला।
वात्सल्य(न०)–प्रेम, बच्चों पर प्यार।
वात्स्यायन (पु०)–न्यायसूत्रों का एक टीकाकार, कामसूत्रों का बनाने वाला।

वाद(पु०)–कथन, बातचीत, वाणी, बयान, बहस, सिद्धान्त, अफ़वाह, वृत्तान्त। [अनिश्चित।
वादग्रस्त(वि०)–झगड़े में फंसा हुआ,
वादप्रतिवाद(पु०)–बहस, उत्तरप्रत्युत्तर।
वादविवाद(पु०)--बहस, मुबाहिसा, विवेद। [धीमान्।
वादि(वि०)–शिक्षित, सुपठित, चतुर,
वादित्र(न०)–बाजा, बजाने की वस्तु।
वादिश(पु०)–विद्वान्, ऋषि।
वादी[न्] (वि०)–बातें करने वाला, झगड़ालू। पु०–वक्ता, प्रतिपक्षी, मुद्दई, शिक्षक। [वाद्यध्वनि।
वाद्य(न०)–बाजा, बाजे की आवाज,
वाद्यकर(पु०)–बाजा बजाने वाला।
बादर(वि०)–रुई का बना हुआ। न०–सूती कपड़ा।
वादरन(पु०)–वटवृक्ष।
वादरायण=बादरायण
वाधक=बाधक।
वाधा=बाधा।
वाधु[धू] क्य(न०)–शादी, विवाह।
वाध्रीणस(पु०)–गेंडा। [वार्द्धीणस का भी यही अर्थ होता है]।
वान (वि०)–मुंह से फूंका हुआ, सुखाया हुआ, वनसम्बन्धी। न०-सूखा फल, धौंकनी से फूंकना, सुगन्धि, बुनना, चटाई।
वानप्रस्थ (पु०)–तीसरे आश्रम में रहने वाला, तीसरा आश्रम, तपस्वी, मधूकवृक्ष, पलाश।
वानर (पु०)–बन्दर, लंगूर, बन्दर के

रूप वाली मनुष्यजाति ।
वानस्पत्य(पु०)-ऐसा वृक्ष जिस का फल फूल से उत्पन्न हो ।
वानायु(पु०)-भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश में एक देश, अरबदेश ।
वानीरक(पु०)-बेत का वृक्ष,मूंजघास ।
वान्त(वि०)-कै किया हुआ, थूका हुआ, त्यागा हुआ ।
वान्ताद(पु०)-कुत्ता, कुक्कुर ।
वान्ति(स्त्री०)-कै, वमन, छर्दि ।
वाप(पु०)-बीज बोना, बुनना, हजामत बनाना ।
वापित(वि०)-बोया हुआ, हजामत बनवाया हुआ ।
वापि-पी(स्त्री०)-कुआं, कूप,बावड़ी ।
वाम (वि०)-बांया, बांई तरफ़ का, विरुद्ध, ख़िलाफ़, कुटिल, कमीना, नीच, सुन्दर, प्रियदर्शन, छोटा । पु०-कामदार, शिव, कामदेव, सर्प, छाती, निषिद्ध कर्म । न०-धन, दौलत ।
वामदेव(पु०)-शिव,महादेव,एकऋषि ।
वामन (पु०)-बौना, खर्व, छोटापुरुष, दक्षिणदिशा का हाथी, शिव, अश्वभेद, दनु का पुत्रविशेष, विष्णु, अंकोटवृक्ष ।
वाममार्ग (पु०)-मद्य मांसादि सेवियों का मार्ग,एक मत जिसमें शक्ति की उपासना की जाती है, वेदविरुद्धाचार, उलटामार्ग ।
वामलूर (पु०)-बमी, वल्मीक, दीमक का बनाया मिट्टी का ढेर ।
वामलोचना (स्त्री०)-सुन्दरनेत्रों वाली स्त्री, स्त्रीभेद,स्त्रीमात्र ।
वामा (स्त्री०)-स्त्रीमात्र,गौरी, लक्ष्मी, सुन्दर स्त्री ।
वामावर्त्त (वि०)-बांई तरफ़ से लौटने वाला,वामें मार्ग से लौटने वाला ।
वामी (स्त्री०)-घोड़ी, शृगाली,गधी, ऊंटनी, हथिनी । [स्त्री ।
वामोरू(स्त्री०)-सुन्दर जंघाओं वाली
वायक (पु०)-समूह, गिरोह, कोली, जुलाहा ।
वायवी (स्त्री०)-उत्तर और पश्चिम के मध्य की दिशा,वायव्यदिशा ।
वायव्य(वि०)-वायुसम्बन्धी,वायुका । न०-अस्त्रविशेष ।
वायस (पु०)-काक, कौआ,अगस्तवृक्ष ।
वायसाराति (पु०)-उल्लू, उलूक ।
वायु (पु०)-पवन, हवा, उत्तर और पश्चिम की दिशा का पति,शरीरस्थदोषविशेष, पांच भूतों में से एक ।
वायुकेतु (स्त्री०)-धूलि, रेणु ।
वायुगुल्म (पु०)-वायुगोला,उदररोगविशेष, आवर्त्त, भंवर ।
वायुतनय-पुत्र-सुत (पु०)-हनुमान्, भीमसेन ।
वायुभुज्-भक्ष (पु०)-सर्प,सांप । वि०-वायु को भक्षण करने वाला ।
वायुवर्त्म [न्] (न०)-आकाश, गगन, आसमान ।
वायुवाह (पु०)-धूम, धुआं ।
वायुसख-खा-खि (पु०)-आग,अग्नि ।

वाणिज (पु०)--सौदागर, व्यपारी ।
वाणिजक(पु०)--सौदागर, ठग ।
वाणिज्य (न०)--तिजारत, व्यापार ।
वाणी (स्त्री०)--सरस्वती, शब्द, भाषा, ज़बान, आवाज़, तारीफ़ ।
वात(वि०)--मुंह से फूंका हुआ, इच्छित, प्रार्थित । पु०-वायु, हवा, आंधी, गठिया, जोड़ों का सूजन, पुष्ट ।
वातक(पु०)--जार, यार ।
वातकेतु(पु०)--धूलि, रेणु ।
वातकेलि(पु०)--प्रेम की बातें, कानाफूंसी । [ज्वर ।
वातज्वर(पु०)--वातदोष से उत्पन्न
वातध्वज(पु०)--बादल, छाक ।
वातपुत्र(पु०)--ठग, भीम, हनूमान् ।
वातरोग(पु०)--गठिया का रोग ।
वातवैरी[न्](पु०)--एरण्डवृक्ष, बादाम ।
वातसारथि(पु०)--अग्नि, आग ।
वातायन (पु०)--घोड़ा । न०-खिड़की, तम्बू ।
वातापि(पु०)--एक राक्षस का नाम ।
वातापिद्विष्-ट् (पु०)--अगस्त्य ऋषि, अगस्त्य नक्षत्र ।
वाति(पु०)--सूर्य, वायु, चन्द्रमा ।
वातुल(वि०)--पागल, गठियारोग से पीड़ित । पु०-बगूला ।
वाता [त्](पु०)--वायु, हवा ।
वात्या(स्त्री०)--तूफ़ान, तेज़हवा, बगूला ।
वात्सल्य(न०)--प्रेम, बच्चों पर प्यार ।
वात्स्यायन (पु०)--न्यायसूत्रों का एक टीकाकार, कामसूत्रों का बनाने वाला ।

वाद(पु०)--कथन, बातचीत, वाणी, बयान, बहस, सिद्धान्त, अफ़वाह, दस्तग़ासा । [अनिश्चित ।
वादग्रस्त(वि०)--झगड़े में फंसा हुआ,
वादप्रतिवाद(पु०)--बहस, उत्तरप्रत्युत्तर ।
वादविवाद(पु०)--बहस, मुबाहिसा, डिबेट । [धीमान् ।
वादि(वि०)--शिक्षित, सुपठित, चतुर,
वादित्र(न०)--बाजा, बजाने की वस्तु ।
वादिश(पु०)--विद्वान्, ऋषि ।
वादी[न्] (वि०)--बातें करने वाला, झगड़ालू । पु०-वक्ता, प्रतिपक्षी, मुद्दई, शिक्षक । [वाद्यध्वनि ।
वाद्य(न०)--बाजा, बाजे की आवाज़,
वाद्यकर(पु०)--बाजा बजाने वाला ।
वादर (वि०)--रुई का बना हुआ । न०-सूती कपड़ा ।
वादरंग(पु०)--वटवृक्ष ।
वादरायण=बादरायण
वाधक=बाधक ।
वाधा=बाधा ।
वाधु[धू] क्य(न०)--शादी, विवाह ।
वाध्रीणस(पु०)--गैंडा । [वार्द्धीणस का भी यही अर्थ होता है] ।
वान (वि०)--मुंह से फूंका हुआ, सुखाया हुआ, वनसम्बन्धी । न०-सूखा फल, धौंकनी से फूंकना, सुगन्धि, बुनना, चटाई ।
वानप्रस्थ (पु०)--तीसरे आश्रम में रहने वाला, तीसरा आश्रम, तपस्वी, मधूकवृक्ष, पलाश ।
वानर (पु०)--बन्दर, लंगूर, बन्दर के

रूप वाली मनुष्यजाति ।
वानस्पत्य(पु०)–ऐसा वृक्ष जिस का फल फूल से उत्पन्न हो ।
वानायु(पु०)–भारत के पश्चिमोत्तर प्रदेश में एक देश, अरबदेश ।
वानीरक(पु०)–वेत का वृक्ष,मूंजघास ।
वान्त(वि०)–कै किया हुआ, थूका हुआ, त्यागा हुआ ।
वान्ताद(पु०)–कुत्ता, कुक्कुर ।
वान्ति(स्त्री०)–कै, वमन, छर्दि ।
वाप(पु०)–बीज बोना, बुनना, हजामत बनाना ।
वापित(वि०)–बोया हुआ, हजामत बनवाया हुआ ।
वापि-पी(स्त्री०)–कुआं, कूप,बावड़ी ।
वाम (वि०)–बांया, बांई तरफ का, विरुद्ध, खिलाफ़,कुटिल, कमीना, नीच, सुन्दर, प्रियदर्शन, छोटा । पु०–जानदार, शिव, कामदेव, सर्प, छाती, निषिद्ध कर्म । न०–धन, दौलत ।
वामदेव(पु०)–शिव,महादेव,एकऋषि ।
वामन (पु०)–बौना, खर्व, छोटापुरुष, दक्षिणदिशा का हाथी, शिव, अश्वभेद, दनु का पुत्रविशेष, विष्णु, अंकोटवृक्ष ।
वाममार्ग (पु०)–मद्य मांसादि सेवियों का मार्ग,एक मत जिसमें शक्ति की उपासना की जाती है, वेदविरुद्धाचार, उल्टामार्ग ।
वामलूर (पु०)–वमी, वल्मीक, दीमक का बनाया मिट्टी का ढेर ।
वामलोचना (स्त्री०)–सुन्दरनेत्रों वाली स्त्री, स्त्रीभेद,स्त्रीमात्र ।
वामा (स्त्री०)–स्त्रीमात्र,गौरी, लक्ष्मी, सुन्दर स्त्री ।
वामावर्त्त (वि०)–बांई तरफ से लौटने वाला,बायें मार्ग से लौटने वाला ।
वामी (स्त्री०)–घोड़ी, शृगाली,गधी, ऊंटनी, हथिनी । [स्त्री ।
वामोरु(स्त्री०)–सुन्दर जंघाओं वाली
वायक (पु०)–समूह, गिरोह, कोली, जुलाहा ।
वायवी (स्त्री०)–उत्तर और पश्चिम के मध्य की दिशा,वायव्यदिशा ।
वायव्य(वि०)–वायुसम्बन्धी,वायु का । न०–अस्त्रविशेष ।
वायस (पु०)–काक, कौआ,अगरुवृक्ष ।
वायसाराति (पु०)–उल्लू, उलूक ।
वायु (पु०)–पवन, हवा, उत्तर और पश्चिम की दिशा का पति,शरीरस्थदोषविशेष, पांच भूतों में से एक ।
वायुकेतु (स्त्री०)–धूलि, रेणु ।
वायुगुल्म (पु०)–वायुगोला,उदररोगविशेष, आवर्त्त, भंवर ।
वायुतनय-पुत्र-सुत (पु०)–हनुमान्, भीमसेन ।
वायुभुज्-भक्ष (पु०)–सर्प,सांप । वि०–वायु को भक्षण करने वाला ।
वायुवर्त्मं [न्] (न०)–आकाश, गगन, आसमान ।
वायुवाह (पु०)–धूम, धुआं ।
वायुसख-खा-खि (पु०)–आग,अग्नि ।

वार् (न०)–जल, पानी।
वार (पु०)–समूह, वृन्द, गिरोह, अवसर, सूर्यादि दिन यथाः–रविवार; सोमवार आदि, शिव, द्वार, दरवाज़ा, क्षण, कुब्जकवृक्ष, ओसारा, मज्झर। न०–मद्यपात्र, मद्यपात्रविशेष, जलसमूह।
वारक (पु०)–अश्वविशेष, घोड़े की चाल। न०–कष्ट का स्थान। वि०–निषेधक, रोकनेवाला, हटानेवाला।
वारण (न०)–रोकना, निषेध करना, धारण करना। पु०–हस्ती, कवच।
वारणवल्लभा (स्त्री०)–केला, कदली, हथिनी।
वारमुख्या (स्त्री०)–वेश्या, वारांगना।
वारवाणि (पु०)–वंशी बजाने वाला पुरुष, उत्तमगायक, धर्माधिकारी, वर्ष, साल।
वारवाणि-णी (स्त्री०)–वारांगना, वेश्या।
वारस्त्री (स्त्री०)–पूर्ववत्।
वारांनिधि (पु०)–समुद्र, सागर।
वाराणसी (स्त्री०)–काशी, बनारस।
वाराह (पु०)–कल्पभेद, शूकर, वृक्षविशेष, विष्णु का अवतारविशेष। न०–एक तीर्थ, एक पुराण। वि०–शूकरसम्बन्धी।
वाराही (स्त्री०)–दुर्गाभेद, योगिनीविशेष, श्यामापक्षी, शूकरी, सूअरी।
वारि (न०)–पानी, जल।
वारि-री (स्त्री०)–वाणी, बोली, वाक्य, सरस्वती, हाथी के बांधने की रस्सी वा भूमि।
वारिचर (पु०)–मत्स्य, मच्छ, जलजन्तु। वि०–पानी में विचरनेवाला
वारिज (न०)–कमल, पद्म, लौंग, एक प्रकार का नमक। पु०–शंख, सीपी, शुक्ति।
वारित्रा (स्त्री०)–छत्र, छाता, छतरी।
वारिद (पु०)–मेघ, बादल। न०–नागरमोथा। वि०–जल देनेवाला।
वारिधि-निधि (पु०)–समुद्र, सागर।
वारिप्रवाह (पु०)–झरना, जल का बहना।
वारिमुक् [च्] (पु०)–मेघ, बादल।
वारिरुह (न०)–कमल, पद्म। वि०–पानी में उत्पन्न होनेवाला।
वारिवाह (पु०)–मेघ, बादल।
वारिश (पु०)–विष्णु, परमात्मा।
वारीश (पु०)–समुद्र, सागर, वरुणदेव।
वारु (पु०)–विजयकुञ्जर, संग्रामभूमि में विजय के देनेवाला हाथी।
वारुण (न०)–जल, पानी, शतभिषा नक्षत्र, एक उपपुराण। पु०–भारत भूमि का एक खण्ड। वि०–वरुणसम्बन्धी।
वारुणि (पु०)–अगस्त्य मुनि, भृगु।
वारुणी (स्त्री०)–मदिरा, दूर्वा घास, वरुण की भार्या, पश्चिमदिशा।
वारुण्ड (अस्त्री०)–कर्णमल, नेत्रमल, नौकापात्रविशेष।
वार्क्ष (वि०)–वृक्षों का बना हुआ। न०–वन।
वार्णिक (पु०)–लेखक, मुहर्रिर।

वार्त (वि०)–तन्दुरुस्त, हलका, कमज़ोर। न०--कुशलक्षेम, चतुराई।
वार्ता(स्त्री०)--कहना,ठहरना,समाचार, ख़बर,पेशा, खेती, वैश्यवृत्ति।
वार्तावह-हर (पु०)--दूत, समाचार लेजाने वाला, एलची, जासूस।
वार्तायन (पु०)--पूर्ववत्।
वार्तिक(वि०)–वार्तासम्बन्धी। पु०–गुप्तचर, वैश्य। न०–टीकासम्बन्धी नियमविशेष।
वार्द्धक(न०)–बुढ़ापा, जरा, वृद्धसमूह।
वार्द्धक्य(न०)–पूर्ववत्।
वार्द्धुषि-षिक-षी [न्] (पु०)–उत्तमर्ण, बैंकर, अधिक सूद लेने वाला।
वार्य(न०)–बरकत, वरदान।
वार्षिक(वि०)–सालाना, एक वर्ष का, वर्षासम्बन्धी।
वाल-क(पु०)=वालक।
वालि(पु०)-सुग्रीव के बड़े भाई का नाम जिस को राम ने निहत किया था। [चूर्ण, कर्पूर।
वालुका(स्त्री०)-बजरी, रेत, धूलि,
वालेय(पु०)=वालेय।
वाल्मीक-कि(पु०)=वाल्मीकि।
वावदूक(वि०)–बातूनी,वाचाल,वाग्मी।
वावदूकता(स्त्री०)–वाग्मिता, बहुत बातें करना।
वावृत(४ आ०)–पसन्द करना,चुनना, छाटना, सेवा करना, प्रेमकरना।
वावृत्त(वि०)--चुना हुआ,पसन्दीदा।
वाश् (४ आ०)-गर्जना, चिल्लाना, चीखना, पुकारना।
वाशि(पु०)–अग्नि, अग्निदेवता।
वाशिता(स्त्री०)–हथिनी,स्त्री,वनिता।
वाशुरा(स्त्री०)--रात्रि, रात।
वा[बा] ष्प (अस्त्री०)–ऊष्मा, गर्मी, नेत्रजल, आंसू, भाप, लोहा।
वास्(१० उ०)–खुशबू देना, सुगन्धित करना, मसाला लगाना।
वास (पु०)–सुगन्धि, रहना, निवास, घर, जगह, कपड़ा।
वासक (वि०)--सुगन्धि देने वाला, बसाने वाला। न०-पहिरने का वस्त्र।
वासकर्णी(स्त्री०)--यज्ञभूमि,क्रीडास्थल
वासभवन-मन्दिर(न०)–निवासस्थान, घर, गृह, मकान।
वासना (स्त्री०)–भावना, कृतकर्मों की स्मृति, मिथ्याज्ञान, ख़याल, सुगन्धितता।
वासन्त (वि०)–वसन्तऋतुसम्बन्धी, जवान, मेहनती। पु०–ऊंट, छोटा हाथी,कोयल, मलयसमीर, आचारभ्रष्ट मनुष्य।
वासन्ती (स्त्री०)–वसन्तोत्सव,होली, पिप्पली, एक पुष्पलता।
वासर (अस्त्री०)–दिन, वार।
वासवदत्ता(स्त्री०)–एक ग्रन्थ का नाम।
वासस् (न०)–कपड़ा, वस्त्र, परदा।
वासःकुटी (स्त्री०)–तम्बू, शामियाना, डेरा।
वासि [शि] ष्ठ (वि०)–वशिष्ठ का। पु०–वसिष्ठसन्तति।
वासु (पु०)—आत्मा, परमात्मा।

वासुकि-केय (पु०)-एक प्रसिद्ध सर्प, सर्पराज।
वासुदेव (पु०)-वसुदेवपुत्र, श्रीकृष्ण।
वासुरा (स्त्री०)-पृथ्वी, रात्रि, स्त्री।
वास्तव(वि०)-असली, सचा, सारयुक्त।
वास्तया (स्त्री०)-उषाकाल, प्रातः।
वास्तविक(न०)-सच्चा, असली, ठीक २।
वास्तु (अस्त्री०)-घर, गृह, रहने की जगह।
वास्तुशान्ति(स्त्री०)-गृहप्रवेशसंस्कार, आधारशिला रखने का उत्सव।
वास्त्र (वि०)-कपड़े का बना हुआ।
वास्प=बाष्प।
वाह् (१आ०)-यत्न करना, कोशिश [करना।
वाह (वि०)-ले जाने वाला। पु०-ले जाना, लादू जानवर, घोड़ा, सांड, गाड़ी, वायु, हवा।
वाहक (पु०)-गाड़ीवान्, कोचमैन, घुड़सवार। [हस्ती।
वाहन (न०)-ले जाना, हांकना, गाड़ी,
वाहस (पु०)-अजगर, अजगर।
वाहिक (पु०)-नक़ारा, बैलगाड़ी, भार ढोने वाला। [प्रतिभार।
वाहित (न०)-बहुत बड़ा बोझा,
वाहिनी (स्त्री०)-सेना, फ़ौज, नदी।
वाहिनीपति (पु०)-समुद्र, कमानियर।
वाहुक=वाहुक।
वाह्लि (पु०)-वर्तमान बलख़ प्रदेश।
वाह्लिक-ह्लीक (पु०)-देशभेद, बलख़ का घोड़ा, गन्धर्वभेद। न०-कुङ्कुम, हींग।
वि (अ०)-निग्रह, निश्चय, नियोग, न सहना, हेतु, विनियोग, ईषत, शुद्धि, परिभव, विज्ञान, पालन, आलस्य, गति, अव्याप्ति, अवलम्बन, आलम्भ, उपसर्गविशेष [विशेष कर यह धातु और संज्ञावाचक शब्दों के पूर्व प्रयुक्त होता है और उसके अर्थ में व्यत्यय करा देता है यथा-क्रय-ख़रीदना और विक्रय-बेचना आदि]। पु०-पक्षी, परमात्मा।
विंश (वि०)-२० की संख्या पूरी करने वाला, बीसवां।
विंशक (वि०)-बीस से ख़रीदा हुआ, विंशतिक्रीत, बीसवां।
विंशति(स्त्री०)-२० की संख्या, बीस।
विंशतिक (वि०)-बीस के योग्य, विंशतियोग्य, बीस के लायक।
विंशतितम (वि०)-विंश, बीसवां, २० की संख्या का पूरक।
विकच(पु०)-क्षपण, बुद्धसन्यासिविशेष, केतु। वि०-विकसित, खिला हुआ, केशशून्य।
विकट(पु०)-विस्फोटक, फोड़ा, दुर्योधन का एक पुत्र। वि०-विकराल, विशाल, विस्तृत, फैला हुआ, उन्नतदन्त, विकृत।
विकण्टक (पु०)--बिना काटों का वृक्षविशेष, यवास। वि०--बिना कांटेवाला।
विकत्थन (न०)--आत्मप्रशंसा, अपनी बड़ाई, मिथ्या प्रशंसा, अपनी बड़ाई। वि०-बड़ाई करनेवाला।

विकराल (वि०)--भयङ्कर, भयानकरूपवाला।

विकर्ण (पु०)--दुर्योधन के पक्ष का एक शूर।

विकर्त्तन (पु०)-सूर्य, सूरज, अर्कवृक्ष।

विकर्मस्थ (वि०)-निषिद्ध कर्म करने वाला, कुत्सिताचारयुक्त, निन्दित चालचलन वाला।

विकर्षण (न०)-आकर्षण, खींचना।

विकल (वि०)-विह्वल, घबराया हुआ, स्वभावशून्य, कलारहित।

विकला (स्त्री०)-मासिकधर्मरहित स्त्री, वह स्त्री जिसका रजोधर्म नष्ट हो गया हो।

विकलाङ्ग (वि०)-स्वभाव से न्यूनाङ्ग, विकृत अङ्ग वाला, अङ्गहीन।

विकल्प (पु०)-भिन्न प्रकार, संशय, भ्रान्ति, नानाविध, अनेक प्रकार की कल्पना, अवान्तर कल्प, पक्ष से प्राप्त, देवता, प्रकारद्वय से होने वाला।

विकस्व [स्व] र (वि०)-खिलने के स्वभाव वाला, प्रकाशशील।

विकसि [सि] त (वि०)-खिला हुआ, प्रफुल्लित, प्रकाशयुक्त।

विकच (पु०)-चन्द्रमा, चांद।

विकार (पु०)-स्वभाव का अन्यथा होना, प्रकृति की तबदीली, रोग, बीमारी, मत्स्य का नाम।

विकाल (पु०)-कार्य के अयोग्य काल, विरुद्धकाल, वह काल जिस में दैव और पितृसम्बन्धी कार्य करना निषिद्ध है, दिनान्त, सायाह्न, राक्षसीय समय।

विकाश (पु०)-प्रकाश, रहः, एकान्त, अकेले, विजन, स्फुट, स्वर्ग, आकाश।

विकाशी-षी-सी [न्] (वि०)-विकाशशील, विकस्वर, खिलने के स्वभाव वाला, खिला हुआ।

विकिर (पु०)-विहग, पक्षी, वह सफ़ेद सरसों जो पूजा के समय विघ्न दूर करने के लिये अभिमन्त्रित कर चारों तरफ़ बखेरी जाती है, वह पिण्डविशेष जो असंस्कृत मृतपितरों के लिये कुशाओं पर दिया जाता है, नदी आदि के निकट वालुकामयी भूमि से निकला हुआ जल।

विकिरण (न०)-फैंकना, विक्षेपण, हिंसा करना, मारना, विज्ञान, जानना। पु०-आक का वृक्ष।

विकीर्ण (वि०)-फैंका हुआ, विक्षिप्त, फैला हुआ, बिखरा हुआ।

विकुर्वाण (वि०)-परिवर्त्तनशील, प्रसन्न, खुश।

विकृत (वि०)-परिवर्तित, रोगी, विकारयुक्त, अधूरा, विचित्र, ख़राब। न०-परिवर्त्तन, नफ़रत।

विकृति (स्त्री०)-परिवर्त्तन, विकार, रोग, क्रोध, उत्तेजना।

विकृष् (१ प०)-खींचना, रोकना, नष्ट करना।

विकृष्ट (वि०)-खींचा हुआ, फैला हुआ।

विक्ॢ (६ प०)-बखेरना, फैलाना, ख़राब करना।

विक्लृप् (१ आ०)–सन्देह करना, विकल्प होना। [खुले हुए हों।
विकेश (वि०)–गंजा, जिस के बाल
विक्क (पु०)–अल्पायु हस्ती।
विक्रम् (१ आ०)–आक्रमण करना, आगे बढ़ना, शक्ति दिखलाना, साथ २ चलना।
विक्रम (पु०)–पराक्रम, क़दम, चलना, जीत, बहादुरी, उज्जयिनी के एक राजा का नाम।
विक्रमादित्य (पु०)– उज्जयिनी का एक प्रसिद्ध राजा।
विक्रान्त (वि०)–शक्तिशाली, विजयी, अतिक्रान्त। पु०–योद्धा, सिंह। न०–क़दम, बहादुरी।
विक्रन्त (पु०)–चन्द्रमा, चांद।
विक्रय (पु०)–बेचना, फ़रोख़्त करना।
विक्रिया(वि०)–परिवर्त्तन, आन्दोलन, क्रोध, विपत्ति, वैकल्य।
विक्री(९आ०)–बेचना, बदलना।
विक्रेय (वि०)–बेचने योग्य।
विक्रुश् (१प०)–चिल्लाना, ज़ोर से रोना, गाली देना।
विक्रुष्ट (वि०)–चिल्लाया हुआ, कठोर, क्रूर। न०–सहायता के लिये चिल्लाना, गाली। [गलौच।
विक्रोशन (न०)–चिल्लाहट, गाली-
विक्लव (वि०)–भयभीत, कायर।
विक्लिन्न(वि०)–बहुत गीला, सड़ा हुआ।
विक्लिष्ट(वि०)–अतिदुःखी, आहत।
विक्षत (वि०)–ज़ख़्मी, आहत, फाड़ा हुआ। [फैलाना, त्यागना।
विक्षिप्(६ प०)–बखेरना, फेंकना,
विक्षिप्त (वि०)–फैला हुआ, त्यक्त, घबराया हुआ, पागल, उन्मत्त।
विक्षुभ्(९आ०)–क्षुब्ध होना,घबराना।
विक्षेप (पु०)–इधर उधर फेंकना, प्रेषण, घबराहट, भय।
विक्षेपण (न०)–फेंकना, त्यागना, भेजना, घबराहट।
विक्षोभ (पु०)–घबराहट, चञ्चलता, चित्तवैकल्य, युद्ध।
विखण्डित (वि०)–टूटा हुआ;विकृत, खण्डन किया हुआ।
विखासा (स्त्री०)–ज़बान, जिह्वा।
विख्या (२प०)–मशहूर होना, देखना, पुकारना, प्रत्यक्ष करना।
विख्यात (वि०)–प्रसिद्ध, मशहूर।
विख्यापन (न०)–घोषणा,स्वीकारी।
विगण् (१० प०)–संख्या करना, गिनना, विचारना, ध्यान न देना।
विगणन (न०)–गणना, गिनती, विचार, ऋण का दे देना। [मृत।
विगत(वि०)–गया हुआ, जुदा हुआ,
विगम् (१प०)–गुज़ारना, बिताना, चला जाना, मरना, नष्ट होना।
विगम(पु०)–जुदाई,अन्त,त्याग,मृत्यु।
विगर्ह् (१प०)–दोष देना, बदनाम करना, नफ़रत करना।
विगर्हण-णा=निन्दा,भर्त्सना,गाली।
विगर्हित (वि०)–निन्दित, अपमानित, नीच, बुरा। न०–निन्दा।

विगल् (१प०)–गलना, पिघलना, नीचे गिरना, टपकना ।
विगलित (वि०)–गला हुआ, नष्ट, पिघला हुआ
विगाढ (वि०)–स्नात, निमज्जित, गहरा, बहुत, अधिक ।
विगाण (न०)–निन्दा, दोषारोपण ।
विगाह् (१आ०)–नहाना, डुबकी लगाना, प्रवेश करना, हिलाना ।
विगीति (स्त्री०)–निन्दा, विरुद्ध-कथन । [शून्य ।
विगुण (वि०)–गुणरहित; लक्षण-
विगूढ (वि०)–छिपा हुआ; निन्दित; गुप्त । [कर गाना ।
विगै (१प०)–निन्दा करना; मिल
विग्रह् (९प०)–पकड़ना, झगड़ना, लड़ना, विभक्त करना, स्वागत करना, देखना ।
विग्रह(पु०)–फैलाव,विस्तार,आकार, शरीर, विभाग, झगड़ा, लड़ाई, युद्ध, अंश । [रोका हुआ ।
विगृहीत(वि०)–विभक्त, पकड़ा हुआ,
विघट् (१आ०)–अलग होना, नष्ट होना, रुकना, विकार को प्राप्त होना । [टूटा हुआ।
विघटित (वि०)–अलहदा विभक्त,
विघटिका (स्त्री०)–एक घड़ी का साठवाँ भाग, पल ।
विघट् (१० उ०)–मारना, खदेड़ना, रगड़ना, तोड़ना ।
विघन(पु०)–हथौड़ा, घन, विजयी ।
विघस(पु०)–अर्द्धचर्वित ग्रास,जूठन ।
विघात (पु०)–नाश, दूरीकरण, क़त्ल, रोक, त्याग ।
विघ्न(पु०)–रोक, बाधा, मुश्किल ।
विघ्नकर-कर्ता-कारी (वि०)–रोकने वाला,बाधा डालनेवाला,बाधक ।
विघ्ननायक-नाशन (पु०)–गणेश, शिवपुत्र ।
विघ्न (पु०)–घोड़े का खुर ।
विच् (३, ७उ०)–अलग करना, विभक्त करना, पहिचानना ।
विचक्षण(वि०)–चतुर, पण्डित । पु०–विद्वान्, धीमान् ।
विचक्षु[स्](वि०)–अन्धा, नेत्रहीन ।
विचर् (१ प०)–इधर उधर घूमना, विचलित होना, विचरना, आक्रमण करना,सन्देह करना, परीक्षा करना ।
विचरित(न०)–इधर उधर घूमना ।
विचार(पु०)–ध्यान धारणा, शोध, परीक्षा, बहस, जाँच, विवेचना, सन्देह, पसन्द, राय, इरादा ।
विचारक(पु०)–परीक्षक,जज,मुन्तज़िम।
विचारण-णा=परीक्षा,अन्वेषणा,बहस, विचार, सन्देह ।
विचारशील(वि०)–ध्यान देने वाला, अग्रशोची, सावधान ।
विचारित(वि०)–चिन्तित, परीक्षित, निश्चित ।
विचर्चिका(स्त्री०)–खुजली, खाज ।
विचल् (१ प०)–हिलना,काँपना, हरकत करना, आन्दोलित होना, भ्रष्ट होना ।

विषय(पु०)–तलाश, अन्वेषण।
विचल(वि०)–चलायमान,चञ्चल,गर्वित।
विचि (५ उ०)–इकट्ठा करना, ढेर लगाना, ढूँढना, अलग करना।
विचि (अक्लीo)–लहर, तरंग [विची (स्त्री०)–का भी यही अर्थ है]।
विचिकित्सा (स्त्री०)–सन्देह, शक, अनिश्चय, ग़लती, अशुद्धि।
विचित्र(वि०)–मुख़्तलिफ़, अनेक रंगों वाला, आश्चर्यमय।
विचित्रवीर्य(पु०)–चित्रांगद का छोटा भाई और शान्तनु का छोटा पुत्र जो सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
विचिन्त्(१० उ०)–सोचना,विचारना, ख़याल करना। [मृत।
विचेतन(वि०)–चेतनारहित, बेजान,
विचेतस्[स्](वि०)–चेतनारहित, घबराया हुआ, क्रूर, मूर्ख।
विचेष्ट्(१ आ०)–चेष्टा करना।
विचेष्टा(स्त्री०)–यत्न,हरकत,व्यवहार
विचेष्टित(वि०)–चेष्टा किया हुआ, अन्यथाकृत।
विच्छन्द-क(पु०)–महल, प्रासाद।
विच्छर्दन(न०)–क़ै, वमन।
विच्छर्दित(वि०)–वमन किया हुआ, त्यागा हुआ।
विच्छित्ति (स्त्री०)–कर्त्तन, टूटना, विनाश, नाश, बन्द होना।
विच्छिद् (७ उ०)–काट कर अलग करना, तोड़ना, अन्त करना।
विच्छुर् (६ प०)–लेपन करना, मलना।
विच्छेद(पु०)=विच्छित्ति। [ड़ना।
विच्छेदन(न०)–काटना, जड़ से उखा-
विच्यु(१ आ०)–च्युत होना,विचलित होना। [लित।
विच्युत (वि०)–गिरा हुआ, विच-
विच्युति (स्त्री०)–गिरावट, विचलन, नाश, नाकामयाबी।
विज् (३उ०)–अलग करना, देखना, हिलना।
विजिता [तृ](पु०)–शरीक,अंशी,भ्रम।
विजन् (४आ०)–उत्पन्न होना,उगना।
विजन (वि०)–एकान्त, जनशून्य।
विजनन (न०)–उत्पत्ति, पैदायश।
विजने (अ०)–एकान्त में।
विजातीय (वि०)–दूसरी जाति का, प्रतिकूल, समतारहित।
विजय (पु०)–जयप्राप्त करना, जीत, ग़ालिब आना, अर्जुन, यम।
विजयडिण्डिम(पु०)–युद्ध का नक़्क़ारा।
विजयनगर(न०)–एक नगर का नाम।
विजयन्त (पु०)–इन्द्र, देवराज।
विजया (स्त्री०)–दुर्गा, भांग।
विजयादशमी (स्त्री०)–आश्विन-शुक्ला दशमी।
विजयी [न्] (पु०)–विजेता,फ़ातह।
विजर (वि०)–जवान, युवा।
विजि (१ आ०)–फ़तह करना, विजय करना, ग़ालिब आना, जीतना।
विजिगीषा (स्त्री०)–जीतने की इच्छा, स्पर्द्धा।
विजिगीषु (वि०)–जीतने का इच्छुक, स्पर्द्धा करने वाला। पु०–योद्धा, प्रतिपक्षी।

विजित (वि०)—पराजित, मग़लूब।
विजितेन्द्रिय (वि०)—इन्द्रियों को दमन करने वाला, विजितात्मा।
विज्जिल (वि०)—कुटिल, टेढ़ा, बेईमान। [खोलना, ब्यापना।
विजृम्भ् (१ आ०)—जम्भाना, मुंह
विजृम्भण(न०)—जंभाई लेना, खिलना, फैलना।
विज्ञ (वि०)—ज्ञाता, जानने वाला, चतुर। पु०—विद्वान्। [हुआ।
विज्ञप्त (वि०)—प्रार्थित, ज्ञात किया
विज्ञप्ति (स्त्री०)—प्रार्थना, दरख़ास्त, घोषणा, इश्तहार।
विज्ञा(८ उ०)—जानना, वाक़िफ़ होना, सीखना, प्रार्थना करना।
विज्ञात (वि०)—जाना हुआ, समझा हुआ।
विज्ञान (न०)—विशेष ज्ञान, चतुराई, अच्छी समझ, सांसारिक ज्ञान, साइंस।
विज्ञानपाद (पु०)—वेदव्यास।
विज्ञानवाद (पु०)—वह सिद्धान्त जिस में विज्ञान को ही सर्वोपरि ठहराया जाता है।
विज्ञानिक (वि०)—चतुर, सुशिक्षित।
विज्ञानेश्वर (पु०)—मिताक्षरा नामक टीका लिखने वाला एक ऋषि-विशेष। [शिक्षक।
विज्ञापक (पु०)—सूचना देने वाला,
विज्ञापनं-ना=नोटिस,प्रार्थना,सूचना शिक्षा। [शिक्षित।
विज्ञापित (वि०)—प्रार्थित, सूचित,

विक्षोलि-ली (स्त्री०)—लाइन, क़तार।
विट (पु०)—जार, कामी पुरुष, बद-माश, ठग।
विटप (पु०)—शाखा, झाड़ी, अङ्कुर, गुच्छा, फैलाव।
विटपी[न्] (पु०)—वृक्ष,पादप,वटवृक्ष।
विठङ्क (वि०)—बुरा, नीच, कमीना।
विड् (१ प०)—ज़ोर से चिल्लाना, लड़ना। [विशेष, वायविडङ्ग।
विडङ्ग (वि०)—चतुर। अस्त्री०—औषध
विडम्ब् (१० उ०)—नक़ल करना,मज़ाक़ उड़ाना, दुःख देना।
विडम्बनं-ना=नक़ल,ठगई, धोखा।
विडारक (पु०)—बिलाव, बिल्ली।
वितण्ड (पु०)—हस्ती, ताले का एक भेद।
वितण्डा (स्त्री०)— वह कथा जिस में अपने पक्ष की स्थापना न करके परपक्ष को छिन्नभिन्न किया जाय।
वितत (वि०)—फैला हुआ, विस्तार-युक्त, विस्तृत।
वितथ (वि०)—मिथ्या, निष्फल,असत्य, व्यर्थ। पु० भरद्वाज का पुत्र।
वितद्रु(स्त्री०)—पंजाब देश में एक नदी।
वितरण (न०)—दान, देना, त्याग।
वितर्क (पु०)—संशय, दलील, ऊह, ज्ञानसूचक, शक।
वितर्द्दि-का-र्द्दी (स्त्री०)—वेदी,वेदिका।
वितर्द्दी (स्त्री०)—पूर्ववत्।
वितल (न०)—पातालविशेष, नीचे का लोक, नीचे का दूसरा लोक।
वितस्ति(स्त्री०)—बारह अङ्गुल की

माघ, द्वादशाङ्गुल,एक वालिश्त।
वितान (न०)-वृत्तिविशेष, अवसर, मौका। पु०-विस्तार,यज्ञ,चदोवा, चन्द्रातप,शामियाना। वि०-मन्द, शून्य, तुच्छ।
वित(१० प०)-छोड़ना, त्याग करना।
वित्त (न०)-धन, द्रव्य, दौलत। वि० विज्ञात, विचारा हुआ, लब्ध, ख्यात, मशहूर।
वित्ति (स्त्री०)-विचार,लाभ,जानना, ज्ञान, सम्भावना।
वित्तेश (पु०)-कुबेर, धन का स्वामी।
वित्रस्त (वि०)-डरा हुआ,त्रासयुक्त।
वित्रास (पु०)-भय, डर।
विथ् (१ आ०)-मांगना, याचना करना।
विद् (६ उ०)-प्राप्त करना, पाना। ७ आ०-मीमांसा करना,विचारना। ४ आ०-होना,अस्तित्व। २ प०-जानना, ज्ञान प्राप्त करना।
विद-द्(पु०)-पण्डित,विद्वान्,बुधग्रह।
विदग्ध (वि०)--निपुण, नागर, शहर में रहने वाला, पण्डित।
विदग्धा(स्त्री०)--नायिकाभेद,चतुरस्त्री।
विदथ(पु०)-योगी, कृती, सफलप्रयत्न, कामयाब, यज्ञ।
विदन्[त्] (वि०)-जाननेवाला,विज्ञ।
विदर्भ(अव्यमी०)-कुण्डिन नामक नगर जो वंग देश के दक्षिण पश्चिम में वर्तमान है जिसे आजकल नागपुर कहते हैं।
विदर्भजा (स्त्री०)--अगस्त्यभार्या, नलराजपत्नी दमयन्ती,श्रीकृष्ण-भार्या रुक्मिणी। [भीमराज।
विदर्भराज (पु०) -विदर्भदेशाधिपति,
विदल(न०)-द्विधाकृत मटर आदि; दो फांक किया हुआ अनार, दाडिम। पु०-रक्तकाञ्चन, पिष्टक-विशेष। वि०-पत्रशून्य।
विदा (स्त्री०)--बुद्धि, जानना, ज्ञान, अकल। [प्रवाह, युद्ध।
विदार(पु०)-फाड़ना,विदारण,जल का
विदारक(पु०)-जल के बीच में स्थित वृक्ष या शिलादि। न०-वज्रक्षार, जल के ठहरने का गर्त्त। वि०-फाड़ने वाला।
विदारण(न०)- फाड़ना, भेदन करना, मारना। पु०-कनेर का वृक्ष। वि०-विदारण करने वाला।
विदाहि[न्] (न०)--दाह करने वाला द्रव्य, दाहजनकवस्तु।
विदिक् [श्] (स्त्री०)-दिशाओं के बीच की दिशा जो चार हैं, यथा-ईशान, आग्नेय, नैर्ऋत और वायव्य।
विदित (वि०)-जाना हुआ, अवगत, प्रार्थित, उपगम। पु०-कवि। वि०-ज्ञान का आश्रय।
विदिन (पु०)-पण्डित,विद्वान्,योगी।
विदीर्ण (वि०)-फाड़ा हुआ, विदारित, कृतविदारण।
विदुः (पु०)-हस्ती के कपोलद्वय के बीच का भाग, घोड़े के कान के नीचे का हिस्सा, क्रियापद।

विदुर (पु०)–कौरवों का मन्त्री जो दासी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, नागर, शहर में रहने वाला पुरुष, धीर। वि०–जानने वाला, ज्ञाता

विदूर (वि०)–अतिदूरस्थ देशादि। न०–बहुत दूर। पु०–पर्वतविशेष, वैदूर्य नामक मणि के उत्पन्न होने का स्थान।

विदूरथ (पु०)–सूर्यवंशीय एक राजा।

विदूराद्रि (पु०)–वह पर्वत जहां वैदूर्य मणि उत्पन्न होती है।

विदूषक (वि०)–अनेक प्रकार के दोष लगाने वाला, कामुक, परनिन्दक। पु०–नायकविशेष, शृङ्गाररस का सहायक। [देशान्तर।

विदेश (पु०)–परदेश, दूसरा देश,

विदेह (पु०)–जनकराज, श्रीरामचन्द्र का श्वशुर और सीता का पिता। वि०–देह के सम्बन्ध से शून्य।

विदेहा (स्त्री०)–मिथिला नगरी।

विद्ध (वि०)–बिंधा हुआ, क्षिप्त, छिद्रित, बाधित।

विद्यमान (पु०)–वर्त्तमान, मौजूद। वि०–वर्तमानकाल में होने वाला।

विद्या (स्त्री०)–ज्ञान, मोक्षविषयक बुद्धि, तत्त्व का साक्षात्कार, दुर्गा, दुर्गातन्त्रोक्त देवीमन्त्र, शास्त्र, इल्म।

विद्यापण [न]-चुञ्चु (वि०)–विद्या से प्रसिद्धि वाला, विद्याविख्यात, इल्म से मशहूर।

विद्यादान (न०)–अध्यापन, पढ़ाना, विद्या का दान, पुस्तकदान।

विद्यादेवी (स्त्री०)–सरस्वती, बौद्धों की सोलह देवियों में से एक।

विद्याधन (न०)–विद्या से प्राप्त धन, विद्यारूप धन।

विद्याधर (पु०)--देवयोनिविशेष, वह देवता जो मन्त्रादि को धारण करता है।

विद्युज्जिह्व (पु०)--एक राक्षस जो शूर्पणखा का पति था।

विद्युत (स्त्री०)--बिजली, तड़ित, चञ्चला, सन्ध्या। वि०–कान्तिशून्य, निष्प्रभ। [कांसी।

विद्युत्प्रिय (न०)--कांस्य नामक धातु,

विद्युन्माला (स्त्री०)--आठ अक्षर के के पादयुक्त एक छन्द, बिजली की पंक्ति।

विद्युन्माली[न्] (पु०)–राक्षसविशेष।

विद्र (न०)--छिद्र, सूराख।

विद्र [द्रा] व (पु०)--पलायन, भागना, बहना, द्रवीभूत होना, युद्ध।

विद्रुत-द्रावित (वि०)--पलायित, भागा हुआ, पीड़ित, विलीन, द्रवीभूत हुआ।

विद्रुम (पु०)-प्रवाल, मोती, मूंगा, मूंगे का वृक्ष, रत्नवृक्ष।

विद्वत्कल्प (वि०)–कुछ कम विद्वान्, ईषदून विद्वान्। [विद्वान्।

विद्वत्तम (वि०)–इन सब में अधिक

विद्वत्तर (वि०)--इन दो में अधिक विद्वान्।

विद्वद्देश्य-देशीय (वि०)-कुछ कम विद्वान्, ईषदून विद्वान्, विद्वान् होने में कुछ न्यूनतायुक्त ।
विद्वान् [वस्] (वि०)-सम्यक् प्रकार से जानने वाला, प्राज्ञ, पण्डित, आत्मज्ञानयुक्त ।
विद्विष (पु०)--शत्रु दुश्मन । वि०-द्वेष करने वाला । [विरोध ।
विद्वेष (पु०)-वैर; शत्रुता; दुश्मनी,
विद्वेषक(वि०)-द्वेष करनेवाला, विरोधक; विरोधकर्त्ता ।
विद्वेषण(न० =विद्वेष
विध(पु०)--विमान, ऋद्धिविशेष, हस्ती का भक्ष्यान्न, प्रकार ।
विधवन(न०)--कम्पन; कांपना, हिलना।
विधवा (स्त्री०)--मृतभर्तृका; रांड़; बेवा; वह स्त्री जिस का पति मर गया हो ।
विधाता [तृ] (पु०)-ब्रह्मा, प्रजापति, मदिरा, भृगुमुनि का पुत्रविशेष, महादेव, विष्णु, कामदेव, कन्दर्प। वि०-रचने वाला ।
विधान (न०)-विधि, प्रकार, हस्ती के खाने योग्य अन्न ।
विधानज्ञ (पु०) पण्डित, विद्वान् । वि०-विधान के जानने वाला।
विधायक(वि०)-नियम बनाने वाला, विधानकर्त्ता ।
विधि (पु०)-ब्रह्मा, भाग्य, प्रारब्ध, क्रम, सिलसिला, काल, समय, नियम, विधान, विधिवाक्य, नियोग, विष्णु, हस्ती का भक्ष्यान्न, वैद्य, व्याकरण में सूत्रविशेष, नीति, क़ानून । [नीतिज्ञ ।
विधिज्ञ(वि०)-विधि के जानने वाला,
विधिदर्शी[न्] (पु०)-सदस्य, मेम्बर ।
विधिवत् (अ०)-नियमपूर्वक, विधि के अनुसार ।
विधु (पु०)-चन्द्रमा, चांद, विष्णु, ब्रह्मा, पवन, कर्पूर, कापूर, राक्षसविशेष, आयुध ।
विधुत (वि०)-त्यक्त, त्यागा हुआ ।
विधुति (स्त्री०)-कांपना, कम्पन, निराकृति, तिरस्कार ।
विधुनन (न०) -पूर्ववत् ।
विधुन्तुद (पु०)-राहु ।
विधुर (वि०)-विकल, पृथक् हुआ, घबराया हुआ । न०-विश्लेष, वियोग, दूर होना, दु:ख, कष्ट।
विधूत (वि०)-कम्पित, कांपा हुआ, हिलाया हुआ ।
विधेय (वि०)-विधान करने योग्य, वशीभूत, समझाया हुआ, बोधित।
विध्वस(पु०)--नाश, आपत्ति; तबाही।
विनत (वि०)--प्रणत, झुका हुआ, भुग्न, टेढ़ा हुआ, शिक्षित ।
विनता (स्त्री०)-कश्यप की स्त्री और गरुड़ की माता । [सारथि ।
विनतासूनु (पु०)-गरुड़, अरुण, सूर्य-
विनय (पु०)-प्रणाम, नम्रता, शिक्षा, विनती, अनुनय । वि०-क्षिप्त, फेंका हुआ, विजितेन्द्रिय, पहुंचाने वाला, पृथक् करने वाला ।
विनयग्राही [न्] (वि०)-वचन के

मानने वाला, वचनस्थित, वशीभूत
विनयस्थ (वि०)—आज्ञाकारी, कहना मानने वाला।
विनशन (न०)—विनाश, कुरुक्षेत्र तीर्थ।
विनष्ट (वि०)—नाश को प्राप्त हुआ, ध्वंसयुक्त, पतित, नाशाश्रय।
विनष्टि (स्त्री०)—विनाश, अभाव, हानि। [नासिक।
विनस (वि०)—नासिकारहित, गत-
विना (अ०)—वर्जन, रोकना, मना करना, सिवाय, अन्तरेण, नाना।
विनाकृत (वि०)—त्यक्त, त्यागा हुआ।
विनायक (पु०)—गणेश, गजानन, बुद्ध देव, गरुड़, विघ्न। वि०—नमाने वाला, विनय वाला।
विनाश (पु०)—नाश, न दीखना, अदर्शन, ध्वंस। [विनाशकर्त्ता।
विनाशक (वि०)—नाश करने वाला,
विनाशोन्मुख (वि०)—नष्ट होने वाला, पक्व, पका हुआ, नाश के लिये उद्यत हुआ।
विनिगमना (स्त्री०)—वह उक्ति जो एक पक्ष में पड़ने वाली हो, एक तर्फी दलील। [निद्रारहित।
विनिद्र (वि०)—उन्मीलित, खिला हुआ,
विनिद्रता—त्व=प्रबोध, जागना, निद्राराहित्य।
विनिपात (पु०)—पतन, दैवादि से प्राप्त हुआ व्यसन, अपमान, तिरस्कार।
विनिमय (पु०)—प्रतिदान, बदले का दान, अदलाबदली, अमानत, एक वस्तु को देकर तत्सदृश दूसरी लेना।
विनीत (वि०)—नम्र, विनययुक्त, विनयान्वित, जितेन्द्रिय, दूरीकृत, फेंका हुआ, शिक्षित, अनुष्ठित, दण्डित किया हुआ। पु०—उत्तम अश्व, दमनक नामक वृक्ष।
विनेता [तृ] (वि०)—शिक्षक, शिक्षा देने वाला। पु०—नृपति, राजा।
विनोद (पु०)—कौतूहल, तमाशा, क्रीड़ा, उत्सव, प्रमोद, हर्ष, राजगृहविशेष।
बिन्दु (पु०)—बूंद, जलकण, कतरा, दन्तक्षतविशेष, अनुस्वार, बिन्दी, रेखागणित में वह बिन्दु जिस का विभाग न हो सके। वि०—जानने वाला, वेदितव्य, ज्ञाता।
विन्ध्य (पु०)—एक पर्वत का नाम जो आर्यावर्त्त को दक्षिण भारत से अलग करता है। [न्वित, व्यस्त।
विन्न (वि०)—ज्ञात, प्राप्त, अनुस-
विन्यस् (४ प०)—आधान करना, रखना, हवाले करना।
विन्यस्त (वि०)—रक्खा हुआ, सुरक्षित, दत्त। [समूह, निश्चय।
विन्यास (पु०)—धरोहर, क्रम, रखना,
विप् (१०आ०)—फेंकना, डालना।
विपक्ष (वि०)—विरुद्ध पक्ष वाला। पु०—शत्रु, प्रतिद्वन्द्वी, प्रतिवादी।
विपक्षता-त्वम्=शत्रुता, द्वेषभाव।
विपच् (१प०)—पकाना, हजम करना, पिघलाना, भूनना।

विपक्व (वि०)–परिपक्व, अच्छी तरह पका हुआ।
विपण् (१आ०)–बेचना, शर्त लगाना।
विपणः-णनम्=बिक्री, विक्रय, खुर्दा-फरोशी। [व्यापार।
विपणि-णी (स्त्री०)–बाजार, हट्ट,
विपणी [न्] (पु०)–व्यापारी, सौदागर, दूकानदार।
विपत्ति (स्त्री०)–विपत्, मुसीबत, आपत्ति, मृत्यु, नाश, यातना। पु०–श्रेष्ठ पदाति।
विपथ (पु०)–ग़लत रास्ता, कुमार्ग।
विपद् (४आ०)–नाकामयाब होना, फेल हो जाना, मरना।
विपद्=विपत्ति। [हुआ।
विपद्ग्रस्त (वि०)–मुसीबत में फंसा
विपदा (स्त्री०)=विपत्ति।
विपन्न (वि०)–मृत, नष्ट, भाग्यहीन, मुसीबतज़दा। पु०–सर्प, सांप।
विपरिणाम(पु०)–परिवर्त्तन, तबदीली।
विपरिवृत् (१आ०)–घूमना, चक्कर काटना, लौटना, घेरना।
विपरी (२प०)–नाकामयाब होना। असफल होना, चक्कर काटना, दुःख में फंसना।
विपरीत (वि०)–विरुद्ध, प्रतिकूल, ग़लत, झूठा, असुविधाजनक, अशुभ।
विपरीतता-त्वम्=विरोध, इख़्तलाफ़।
विपर्यय (पु०)–विरोध, विरुद्धघटना, अभाव, नाश, प्रलय, तबादला, ग़लती, मुसीबत।
विपर्यस् (४आ०)–लौट जाना, बदल जाना, कुछ का कुछ समझना।
विपर्यस्त (वि०)–परिवर्त्तित, विरुद्ध, मिथ्या को सत्य समझा हुआ।
विपर्याय(पु०)-बदक़िस्मती, विरोधिता
विपर्यास (पु०)–पूर्ववत्।
विपल(न०)–पल का साठवां भाग।
विपलायन (न०)–इधर उधर भागना।
विपाक (पु०)–पाचन, परिपक्वता, फल, परिणाम, स्वादान्तर, ज़ायका, कठिनता।
विपादन(न०)–नाश, क़त्ल, वध।
विपाशू-शा (स्त्री०)–पञ्जाब में व्यास नामक एक नदी।
विपिन(न०)–जंगल, वन, वृक्षसमूह।
विपुल(वि०)–बहुत, अधिक, अतिशय, विस्तृत, गहन। पु०–हिमालय।
विपुला(स्त्री०)–पृथिवी, भूमि।
विप्र(पु०)–ब्राह्मण, विद्वान्, अश्वत्थ का वृक्ष, सामगायक।
विप्रकीर्ण (वि०)–बखेरा हुआ, छितराया हुआ, जुदा हुआ।
विप्रकार(पु०)–बेइज़्ज़ती, अपमान, क्रूरता, विरोध, बदला।
विप्रकृ (८उ०)–सताना, दुःख देना, अपमान करना।
विप्रतिकार(पु०)–खण्डन, बदला।
विप्रतिपत्ति (स्त्री०)–पारस्परिक कलह, सम्मतिभेद, घबराहट।
विप्रतिपद्(४आ०)-इख़्तलाफ़ करना, भेद रखना। [विक्षिप्त।
विप्रतिपन्न (वि०)–घबराया हुआ,

विप्रतिषेध(पु०)-संयमन, निषेध।
विप्रति [ती] सार (पु०)-पछतावा, क्रोध, क्रूरता।
विप्रनष्ट(वि०)-खोया हुआ, निकम्मा।
विप्रयुक्त(वि०)-अलहदा, मुक्त।
विप्रयुज् (७ आ०)-अलग करना, महरूम करना। [झगड़ा।
विप्रयोग (पु०)-अलहदगी, जुदाई,
विप्रलभ्(१ आ०)-ठगना, धोखादेना, नियमभंगकरना, पुनः प्राप्त करना।
विप्रलम्भ(पु०)-ठगई, धोखा, भुलावा, झगड़ा।
विप्रलम्भन(न०)-पूर्ववत्।
विप्रलय(पु०)-महाप्रलय, अत्यन्तनाश
विप्रलाप(पु०)-निरर्थक वार्तालाप, झगड़ा, प्रतिज्ञाभंग।
विप्रिय(वि०)-नागवार, नापसन्दीदा।
विप्लव(पु०)-दूसरे राजा के राजआदि से डर, उपद्रव, घबराहट, बिगाड़, क्लेश, बलवा, पाप।
विप्लु(१ आ०)-इधर उधर बहना, चंचल होना, घबराना, नष्ट होना।
विफल (वि०)-निष्फल, निकम्मा, निरर्थक। [फैलाना।
विबन्ध् (९ प०)-बांधना, जकड़ना,
विबन्ध(पु०)-कब्ज़, अजीर्ण।
विबुद्ध(वि०)-जागृत, खिलाहुआ, चतुर।
विबुध्(१ प०, ४ आ०)-जानना, चेतन होना, देखना, जानना।
विबुध(पु०)-पण्डित, विद्वान्, चन्द्रमा।
विबुधान(पु०)-शिक्षक, विद्वान्।
विबोध(पु०)-प्रतिभा, जागरण।
विभक्त(वि०)-बंटा हुआ, अंगीकृत, जुदा, पृथक्कृत। न०-विभाग, हिस्सा
विभक्ति (स्त्री०)-विभाग, हिस्सा, व्याकरण में सुप्तिङादि प्रत्यय।
विभज् (१उ०)-विभाग करना, अलग करना, बांटना।
विभव (पु०)-ऐश्वर्य, धन, मोक्ष, एक संवत्सर का नाम।
विभा(२ प०)-चमकना, दिखलाई देना। स्त्री०-कान्ति, किरण, प्रकाश।
विभाकर-वसु(पु०)-सूर्य, सूरज, आक का पेड़, चन्द्रमा, अग्नि।
विभाग (पु०)-हिस्सा, टुकड़ा, अंश, अध्याय। [अंशतः।
विभागतः-शः(अ०)-टुकड़े २ करके,
विभाजन(न०)-तक़सीम, बटवारा।
विभाज्य(वि०)-विभाग करने योग्य, बांटने लायक़।
विभात-भाती=प्रभात, उषाकाल, सवेरा
विभावरी(स्त्री०)-रात्रि, हल्दी, वेश्या, मुखरस्त्री। [दुष्टस्त्रना।
विभाषा (स्त्री०)-निषेध, विकल्प,
विभिद् (७उ०)-छेदना, अलग करना, विभक्त करना, बखेरना।
विभिन्न (वि०)-विभक्त, छिदा हुआ, घबराया हुआ, मिश्रित, फटा हुआ।
विभीतक (अस्त्री०)-बहेड़े का वृक्ष।
विभीषण (पु०)-रावण का छोटा भाई, नलतृण। [आतंकसाधन।
विभीषिका (स्त्री०)-भय, डर,
विभु (वि०)-शक्तिशाली, सर्वोत्तम, समर्थ, सर्वव्यापक, मज़बूत। पु०-

ईश्वर नामक वायु, काल, आत्मा, स्वामी, नौकर।
विभू (१ प०)-ज़ाहिर होना, पर्याप्त होना, व्यापना।
विभूत (वि०)-बड़ा, शक्तिशाली, उत्पन्न, प्रकट।
विभूति (स्त्री०)-शक्ति, बड़प्पन, अभ्युदय, महत्त्व, शोभा, धन, भस्म, खाक।
विभूष् (१० उ०)-सजाना, शृंगार करना।
विभूषण विभूषा=शृंगार, ज़ेवर।
विभूषित (वि०)-सज्जित, अलकृत।
विभ्रंश् (१ आ०, ४प०)-भ्रष्ट होना, गिरना, नष्ट होना।
विभ्रंश (पु०)-नाश, गिरावट, अधःपात
विभ्रम् (१, ४, प०)-घूमना, भटकना घबराना।
विभ्रम (पु०)-बहुत घूमना, शोभा, स्त्रियों का विलास, भ्रमण।
विभ्राज् (१ आ०)-चमकना, दीप्तिमान् होना। वि०-शोभायमान।
विमत (वि०)-विरुद्धमतियुक्त, ख़िलाफ़ राय वाला, दुश्मन।
विमनाः-नस्क (वि०)-चिन्तादि से विकल चित्त वाला।
विमय (पु०)-तबादला, परिवर्त्तन।
विमर्द (पु०)-मर्दन, मलना, रगड़ना, ग्रहण, थकावट।
विमर्दन-ना=पीसना, रगड़, नाश।
विमर्दित(वि०)-रगड़ाहुआ, पिसाहुआ
विमर्शः-र्षम्=सोचविचार, बहस, तर्कना, सन्देह।
विमर्ष(पु०)-विचार, बेसबरी, असन्तोष
विमल (वि०)-शुद्ध, बेदाग़, साफ।
विमाता [तृ] (स्त्री०)-सौतेली मा।
विमान (अस्त्री०)-बेलून, हवाई जहाज़, सातमंजिल का मकान, अपमान। [त्यक्त।
विमुक्त (वि०)-मुक्तहुआ, छुटा हुआ,
विमुक्ति (स्त्री०)-मोक्ष, छूटना, निजात
विमुख (वि०)-प्रतिकूल, बहिर्मुख, विरुद्ध, दुश्मन, मुंह मोड़े हुए।
विमुद्र (वि०)-विकसित, खिला हुआ, मुहर से रहित।
विमोहित (वि०)-मोहयुक्त, वशीभूत।
वि [बि]म्ब (अस्त्री०)-सूरज और चन्द्रमा का मण्डल, दर्पण, शीशा। न०-छाया, कन्दूरी का फल। पु०-ककलास नामक पक्षी।
वियच्चारी [न्] (वि०)-आकाश में चलने वाला। पु०-चील पक्षी।
वियत् (न०)-आकाश, आसमान।
वियद्गङ्गा (स्त्री०)-आकाशगंगा, मंदाकिनी, स्वर्ग की नदी।
वियात (वि०)-निर्लज्ज, बेशरम, धृष्ट।
वियोग (पु०)-विरह, विछोआ, विच्छेद, पक्षियों का मेल।
वियोजित (वि०)-अलग किया हुआ, वियोग कराया हुआ, मिलाया हुआ।
विरक्त (वि०)-जुदा, हटा हुआ, बेमुहब्बत, वैरागी।
विरक्ति(स्त्री०)-विराग, प्रीतिराहित्य।
विरचित (वि०)-बनाया हुआ,

निर्मित, सम्पादित, रचा गया ।
विरजाः [स्] (स्त्री०)–ऐसी स्त्री जिस का मासिकधर्म नष्ट हो गया हो, गतार्त्तवा स्त्री ।
विरञ्च-ञ्चि (पु०)–जगदुत्पादक, विधाता, ब्रह्मा ।
विरत (वि०)–निवृत्त, हट गया, हटा हुआ ।
विरति (स्त्री०)–हटना, निवृत्ति, रुकना, कुछ कार्य्य न करना ।
विरह (पु०)–विच्छेद, वियोग, जुदाई ।
विरहित (वि०)–त्यक्त, विहीन, अलग किया हुआ ।
विरही [न्] (पु०)–वियोगी पुरुष ।
विराग (पु०)–राग का अभाव, मुहब्बत का न होना ।
विराट (पु०)–एक देश, उस देश का स्वामी या राजा । [मारा था ।
विराध(पु०)–एक राक्षस जिसे राम ने
विराम(पु०)–अवसान, अन्त, आख़ीर, हटना, निवृत्ति, ठहराव ।
विरुद्ध(वि०)–प्रतिकूल, उलटा, खिलाफ़ ।
विरूढ (वि०)–उत्पन्न हुआ, अङ्कुरित, निकला हुआ, फूटा हुआ ।
विरूप (वि०)–बदशकल, बुरे रूपवाला, नानारूप, परित्यक्तरूप । न०–पिप्पलीमूल । [होना ।
विरेक (पु०)–दस्त, जुलाब, खाली
विरेचन (न०)=विरेक ।
विरोक (पु०)–सूर्य की किरण । न०–छिद्र, सूराख़ ।
विरोचन (पु०)–सूर्य, आक का पेड़, बलि का पिता, प्रह्लाद का पुत्र, चन्द्रमा, एक राक्षस । वि०–रुचिकर, रोचक ।
विरोध (पु०)–वैर, शत्रुता, दुश्मनी ।
विरोधी [न्] (पु०)–शत्रु, वैरी, एक सवत् का नाम ।
विल् (६ प०)–ढकना, छिपाना ।
वि [बि] ल (न०)–छिद्र, सूराख़, गुफा, भेद । पु०–बेंत, उच्चैःश्रवा नामक इन्द्र का घोड़ा ।
विलक्षण (वि०)–विशेष चिन्हवाला, अजीब, जुदा । न०–विना प्रयोजन रहना ।
विलग्न (वि०)–अच्छे प्रकार लगा हुआ, संलग्न । न०–शरीर का मध्यभाग, कमर, उदित मेषादि राशि । [करना ।
विलज्ज् (६ आ०)–लज्जा करना, शर्म
विलज्ज (वि०)–बेशर्म लज्जाहीन ।
विलप् (१ प०)–कहना, शोक करना, गप्प उड़ाना । [ज़ारी ।
विलपित (न०)–शोक, रञ्ज, आहो-
विलम्ब् (१ आ०)–देर करना, मुयस्थित होना । [टालमटोल ।
विलम्बः–म्बनम्=ऊपर लटकना, देर,
विलम्भ (पु०)–दान, उदारता, बख़्शिश ।
विलयः-यनम्=नाश, मृत्यु, दूरीकरण ।
विलस् (१ प०)–चमकना, प्रकट होना, दिलबहलाना । [आहोज़ारी ।
विलाप (पु०)–रोना, चिल्लाना,
विलाल (पु०)–बिडाल, यन्त्र, मैथीन ।

विलास -सनम्=क्रीड़ा, खेल, दिल-बहलाव।
विलासवती (स्त्री०)-असती स्त्री।
विलासिनी (स्त्री०)-नारी, वेश्या, असती स्त्री।
विलासी [न्] (पु०)-कामी पुरुष, अग्नि, चन्द्रमा, सर्प, शिव, कामदेव।
विलिख् (६ प०)-लिखना, चित्रित करना।
विलिप् (६ प०)-लेपन करना, मलना।
विलिप्त (वि०)-अभिषिक्त, मला हुआ, गन्दा।
विली (४ आ०)-सहारा पकड़ना, पिघलना, लीन होना, नष्ट होना। ९ प०-पिघलना, द्रवीभूत होना।
विलीन (वि०)-पिघला हुआ, मृत, नष्ट, अप्रत्यक्ष।
विलुण्ठन (न०)-लूटना, लूट।
विलुप् (६ प०)-तोड़ कर अलग करना, पकड़ना, लूटना, ख़राब करना, लोप करना। [नष्ट, विलीन।
विलुप्त (वि०)-गृहीत, लूटा हुआ,
विलुल् (१ प०)-आगे पीछे हरकत करना, हिलना।
विलेखन (न०)-खोदना, जड़ से उखाड़ना, विभक्त करना, अंकित करना।
विलेपः-पनम्=मरहम, लेप करने की वस्तु, पलास्तर, लेपन। [करना।
विलोक् (१० उ०)-देखना, अवलोकन
विलोकन(न०)-अवलोकन, दर्शन।
विलोकित(वि०)-देखा हुआ, दृष्ट, परीक्षित।
विलोचन(न०)-आंख, चक्षु।
विलोडन(न०)-आन्दोलन, बिलोना।
विलोडित (वि०)-बिलोया हुआ, आन्दोलित। न०-मट्ठा।
विलोपः-पनम्-नाश, लूट, छीनना, कर्त्तन। [वरुण।
विलोम(पु०)-विरुद्धादेश, कुक्कुर, सर्प,
विलोल (वि०)-चपल, तरंगायित, विलोडित।
विवक्षा (स्त्री०)-बोलने की इच्छा, अभिप्राय, इच्छा, अर्थ।
विवक्षित(वि०)-इच्छित, अभिप्रेत।
विवक्षिपु(वि०)-चालाक, धोखेबाज़।
विवर्जन(न०)-त्याग, मना करना।
विवर्जित (वि०)-त्यक्त, परहेज़ किया गया, बाटा हुआ।
विवद्(१आ०)-विवाद करना, झगड़ना।
विवर(न०)-सूराख, मुख, गढ़ा, ज़ख़्म, ९ का अंक।
विवरण(न०)-ब्यौरा, बयान, टीका, खोलना, दिखलाना।
विवर्ण(वि०)-वर्णरहित, पीला, कुरूप, नीच, मूर्ख। पु०-अन्त्यज।
विवर्द्धन (न०)-बढ़ोतरी, आधिक्य, कर्त्तन। [सन्तुष्ट।
विवर्द्धित(वि०)-बढ़ा हुआ, उन्नत,
विवश (वि०)-हठी, स्वतन्त्र, अपराभूत, मजबूर, अधीन, बेकाबू, असहाय
विवस्(१ प०)-बाहर रहना, गुज़ारना, बिताना, वास करना।
विवसन(वि०)-नंगा, दिगम्बर।
विवस्वान् [वत्] (पु०)-सूर्य, अरुण,

वर्तमान अर्थ मनु ।
विवह (१ प०)--विवाह करना,हटाना, उदेलना ।
विवाक(पु०)-जज, न्यायाधीश ।
विवाद(पु०)–लड़ाई, झगड़ा, बहस, डिबेट, अभियोग, आदेश ।
विवादवस्तु (न०)–झगड़े की जड़, मिनाएमुखासमत ।
विवादार्थी[न्] (पु०)--मुद्दई, वादी ।
विवार(पु०)–सूराख, फैलाव ।
विवासः-सनम्=निर्वासन, निदासन, इखराज, देशनिकाला ।
विवासित(वि०)–खारिज,निष्कासित।
विवाह(पु०)–शादी, पाणिग्रहण, मनु के अनुसार विवाह आठ प्रकार के होते हैं यथा:-ब्राह्मोदैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः। गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोऽधमः ॥ मनु० ३। २१
विवाहदीक्षा(स्त्री०)–विवाहसंस्कार।
विवाहित (वि०)–कृतविवाह, शादीशुदा ।
विवाह्य(पु०)–जामाता,जमाई। [क्षुद्र,
विविग्न(वि०)–अतिशयभीत, अत्यन्त
विविक्त (वि०)–अलग किया हुआ, विभक्त, एकाकी,अकेला,बेदाग ।
विविच् (३,७ उ०)-अलग करना, विभक्त करना ।
विविध (वि०)-मुख्तलिफ, अनेकविध, अनेक प्रकार का ।
विवीत(पु०)–बाड़ा, घिरी हुई भूमि ।
विवृ (५, ९ उ०)-ढकना, खोलना, प्रकट करना, व्यक्त करना ।
विवृक्त (वि०)-त्यक्त, त्यागा हुआ ।
विवृज् (१०उ०)–देना, नफरत करना, मुहब्बत करना ।
विवृत्(१ आ०)–चक्कर काटना,घूमना आक्रमण करना ।
विवृत (वि०)–प्रत्यक्ष, जाहिर किया हुआ, व्यक्त, बड़ा, चौड़ा ।
विवृति(स्त्री०)–फैलाव,इज़हार,टीका।
विवृत्त (वि०)–चारों ओर घूमा हुआ, चक्कर काटने वाला ।
विवृद्ध(वि०)–बढ़ा हुआ,बड़ा,विस्तृत।
विवृद्धि (स्त्री०)–बढ़ोतरी, अभ्युदय ।
विवेक(पु०)–सदसद् को जानने वाली बुद्धि, ज्ञान, समझ, विचारशक्ति।
विवेकी [न्] (वि०)–सदसद् की विवेचना करने वाला, इन्साफ करने वाला । पु०–जज, मुंसिफ, तत्त्ववेत्ता ।
विवेक्ता [तृ] (पु०)–जज, तत्त्वदर्शी ।
विवेचनं-चना=जांच, पड़ताल,विचार, बहस, तफ़तीश । [होना ।
विश् (६प०)–प्रवेश करना, दाखिल
विश् [ट्] (पु०)–वैश्य, मनुष्य,लोक । स्त्री०–जनता, पब्लिक, पुत्री ।
विश्पति-विशांपति (पु०)–राजा, जामाता, मुख्यव्यापारी ।
विशंक(१ आ०)–सन्देह करना,डरना, सन्दिग्ध होना ।
विशङ्क (वि०)–निडर, बेखौफ ।
विशङ्का (स्त्री०)-सन्देह, शक, डर ।

विशंकट (वि०)–बड़ा, मजबूत, शक्तिशाली।
विशद (वि०)–स्वच्छ, बेदाग, साफ, सफ़ेद, चमकीला, शान्त।
विशय (पु०)–सन्देह, अनिश्चितता।
विशर (पु०)–वध, नाश, फूटपड़ना।
विशस् (१ प०)–काटना, क़त्लकरना।
विशस्त्र(वि०)–शस्त्रहीन,ग़ैरमहफ़ूज़।
विशाख(पु०)–कार्त्तिकेय, प्रार्थी, शिव, देवविशेष।
विशाखा(स्त्री०)–१६वें नक्षत्र का नाम।
विशारद (वि०)–चतुर, दक्ष, प्रसिद्ध। दृढ। [तेजस्वी, प्रसिद्ध।
विशाल (वि०)–बड़ा, विस्तीर्ण,
विशालता-त्वम्=बड़प्पन, गौरव, महत्व।
विशालाक्ष (वि०)–बड़ी २ आंखों-वाला। पु०–विष्णु, गरुड़, शिव।
विशिख (वि०)–बेताज का, शिखर-रहित। पु०–तीर।
विशित (वि०)–तेज़, तीक्ष्ण।
विशिप (पु०)–मन्दिर, घर, महल।
विशिष् (७ प०)–तारीफ करना, महदूद करना, विशेषता दिखलाना, लक्षणयुक्त करना।
विशिष्ट (वि०)–विशेषतायुक्त, ख़ास, लक्षणयुक्त, परिभाषा किया गया, श्रेष्ठ।
विशिष्टता(स्त्री०)–श्रेष्ठता, विशेषता।
विशिष्टाद्वैतवाद (पु०)–वैष्णवप्रचारक रामानुज का सिद्धान्त कि जीव और प्रकृति एक ही और वास्तविक वस्तु हैं। [हुआ।
विशीर्ण (वि०)–खण्डित, नष्ट, मुरझाया
विशील (वि०)–असभ्य बेहूदा, क्रूर।
विशुद्ध (वि०)–शुद्ध किया हुआ, पवित्र, निर्लेप।
विशुद्धि (स्त्री०)–पवित्रता, सफ़ाई, अशुद्धिराहित्य।
विशृंखल (वि०)–अबाध, अनियन्त्रित, बेक़ाबू।
विशेष (वि०)–ख़ास, बहुत। पु०-दो वस्तुओं का फ़र्क या इम्तियाज़।
विशेषक (वि०)–पहचानने वाला, फ़र्क करने वाला।
विशेषण (वि०)–विशेषताद्योतक, लाक्षणिक। न०-लक्षण, ऐसा शब्द जो किसी संज्ञा [विशेष] की विशेषता, गुण वा लक्षण का द्योतक हो।
विशेषित (वि०)–लक्षित, चिन्हित, अंकित, श्रेष्ठ।
विशेष्य (वि०)–लक्षण करने योग्य, विशेषतायुक्त, उत्तम। न०-वह संज्ञा जिसको किसी विशेषण द्वारा विशेषता दिखलाई जावे।
विशोक (वि०)–शोकरहित। पु०–अशोकवृक्ष। [करण।
विशोधन (न०)–शुद्ध करना, शुद्धी-
विशोध्य (वि०)–शोधने योग्य। न०–ऋण, कर्ज़।
विशोषण(न०)–सुखाना, शुष्कीकरण।
विश्रम् (४ पं०)–आराम लेना, ठहरना, रुकना। [रहितता।
विश्रम (पु०)–आराम, ठहरना, श्रम-

विश्रब्ध (वि०)-विश्वस्त, शान्त, मजबूत, निश्चिन्त ।

विश्रब्धम् (अ०)-निडर होकर, बे रोक टोक । [विश्वास रखना ।

विश्रम्भ् (१ आ०)-भरोसा करना,

विश्रम्भ (पु०)-भरोसा, विश्वास, आराम, प्रेम ।

विश्रम्भपात्र-स्थान (न०)-वह व्यक्ति जिस पर भरोसा किया जा सके ।

विश्रय (पु०)-पनाह, रक्षास्थान ।

विश्रवाः [स्] (पु०)-पुलस्त्य मुनि का पुत्र और रावण का पिता ।

विश्रान्त (वि०)-रुका हुआ, आराम लेने वाला, शान्तचित्त ।

विश्रान्ति(स्त्री०)-आराम, विश्राम ।

विश्राम(पु०)-आराम, शान्ति, शान्त-चित्तता, उद्वेगहीनता ।

विश्रा [स्रा]व(पु०)-गिरना, टपकना, संहाव, प्रसिद्धि । [रहने वाला ।

विश्रुत (वि०)-प्रसिद्ध, प्रसन्न, सुख

विश्रुति(स्त्री०)-प्रसिद्धि, टपकना ।

विश्लिष्(४ प०)-छूट पड़ना, अलग होना । [अलहदा ।

विश्लिष्ट (वि०)-अलग, विभिन्न,

विश्लेष (पु०)-अलहदगी, जुदाई, वियोग, अभाव । [विभक्त ।

विश्लेषित(वि०)-अलग किया हुआ,

विश्व(सर्व०)-सब, समस्त, तमाम । न०-दुनिया, जगत्, संसार । पु०-तन का अभिमानी जीवात्मा ।

विश्वकर्मा [न्] (पु०)-परमेश्वर, सूर्य, देवशिल्पी ।

विश्वकृत(पु०)-विश्वकर्मा, परमेश्वर ।

विश्वकेतु (पु०)-विश्व जिसका झण्डा है, अनिरुद्ध ।

विश्वधारिणी(स्त्री०)-पृथिवी ।

विश्वम्भर (पु०)-विश्व का पालक, ईश्वर, इन्द्र, विष्णु ।

विश्वम्भरा(स्त्री०)-पृथिवी ।

विश्वरेताः [स्] (पु०)-संसारोत्पादक परमात्मा ।

विश्वसृक् [ज्] (पु०)-पूर्ववत् ।

विश्वस्त (वि०)-मोतबिर, जिसने विश्वास, विश्वासपात्र ।

विश्वाची(स्त्री०)-एक अप्सरा ।

विश्वात्मा[न्] (पु०)- विष्णु, परमात्मा ।

विश्वामित्र(पु०)-गाधिपुत्र एक ऋषि ।

विश्वाराट् [ज्] (पु०)-विश्वों का राजा, परमेश्वर ।

विश्वास(पु०)-प्रत्यय, श्रद्धा, यक़ीन ।

विश्वदेवाः (पु० बहु०)- क्रतु आदि दश देवता, वह्नि, आग ।

विश्वेश (पु०)-विश्व का मालिक, परमात्मा ।

विष् (३ उ०)-व्याप्ति, व्याप्त होना, फैलना । स्त्री०-मैला, विष्ठा ।

विष (न०)-जल, कमल की केशर, कमल की डण्डी । अस्त्री०-ज़हर, गरल, वत्सनाभ नामक विष ।

विषघ्न-घाती [न्] (पु०)-शिरीष वृक्ष, सम्पे का पेड़, खैरा । वि०-विष को दूर करने वाला ।

विषण्ण (वि०)-विषादयुक्त, दुःखी ।

विषण्णता(स्त्री०)-जड़ता, मन्दता ।

विशंकट (वि०)–बड़ा, मजबूत, शक्तिशाली।
विशद (वि०)–स्वच्छ, बेदाग़, साफ़, सफ़ेद, चमकीला, शान्त।
विशय (पु०)–सन्देह, अनिश्चितता।
विशर (पु०)–बध, नाश, फूटपड़ना।
विशस् (१ प०)–काटना, क़त्लकरना।
विशस्त्र(वि०)–शस्त्रहीन, ग़ैरमहफ़ूज़।
विशाख (पु०)–कार्त्तिकेय, मार्गी, शिव, देवविशेष।
विशाखा(स्त्री०)–१६वें नक्षत्र का नाम।
विशारद (वि०)–चतुर, दक्ष, प्रसिद्ध। दृढ़। [तेजस्वी, प्रसिद्ध।
विशाल (वि०)–बड़ा, विस्तीर्ण,
विशालता-त्वम्=बड़प्पन, गौरव, महत्त्व।
विशालाक्ष (वि०)–बड़ी २ आंखों-वाला। पु०–विष्णु, गरुड़, शिव।
विशिख (वि०)–बेताज का, शिखर-रहित। पु०–तीर।
विशित (वि०)–तेज़, तीक्ष्ण।
विशिप (पु०)–मन्दिर, घर, महल।
विशिष् (७ प०)–तारीफ करना, मदद करना, विशेषता दिखलाना, लक्षणयुक्त करना।
विशिष्ट (वि०)–विशेषतायुक्त, ख़ास, लक्षणयुक्त, परिभाषा किया गया, श्रेष्ठ।
विशिष्टता(स्त्री०)–श्रेष्ठता, विशेषता।
विशिष्टाद्वैतवाद (पु०)–वैष्णवप्रचारक रामानुज का सिद्धान्त कि जीव और प्रकृति एक ही और वास्तविक वस्तु हैं। [हुआ।
विशीर्ण (वि०)–खण्डित, नष्ट, मुरझाया
विशील (वि०)–असभ्य बेहूदा, क्रूर।
विशुद्ध (वि०)–शुद्ध किया हुआ, पवित्र, निर्लेप।
विशुद्धि (स्त्री०)–पवित्रता, सफ़ाई, अशुद्धिराहित्य।
विशृंखल (वि०)–अबाध, अनियन्त्रित, बेक़ाबू।
विशेष (वि०)–ख़ास, बहुत। पु०-दो वस्तुओं का फ़र्क या इम्तियाज़।
विशेषक (वि०)–पहचानने वाला, फ़र्क करने वाला।
विशेषण (वि०)–विशेषताद्योतक, लाक्षणिक। न० लक्षण, ऐसा शब्द जो किसी संज्ञा [विशेष्य] की विशेषता, गुण वा लक्षण का द्योतक हो।
विशेषित (वि०)–लक्षित, चिन्हित, अंकित, श्रेष्ठ।
विशेष्य (वि०)–लक्षण करने योग्य, विशेषतायुक्त, उत्तम। न०-वह संज्ञा जिसकी किसी विशेषण द्वारा विशेषता दिखलाई जावे।
विशोक (वि०)-शोकरहित। पु०–अशोकवृक्ष। [करण।
विशोधन (न०)–शुद्ध करना, शुद्धी-
विशोध्य (वि०)–शोधने योग्य। न०–ऋण, क़र्ज़।
विशोषण(न०)–सुखाना, शुष्कीकरण।
विश्रम् (४ प०)–आराम लेना, ठहरना, रुकना। [रहितता।
विश्रम (पु०)–आराम, ठहरना, श्रम-

विश्रब्ध (वि०)-विश्वस्त, शान्त, मजबूत, निश्चिन्त ।
विश्रब्धम् (अ०)-निडर होकर, बे रोक टोक । [विश्वास रखना ।
विश्रम्भ् (१ आ०)-भरोसा करना,
विश्रम्भ (पु०)-भरोसा, विश्वास, आराम, कलह ।
विश्रम्भपात्र-स्थान (न०)-वह व्यक्ति जिस पर भरोसा किया जा सके ।
विश्रय (पु०)-पनाह, रक्षास्थान ।
विश्रवाः [स्] (पु०)-पुलस्त्य मुनि का पुत्र और रावण का पिता ।
विश्रान्त (वि०)-रुका हुआ, आराम लेने वाला, शान्तचित्त ।
विश्रान्ति(स्त्री०)-आराम, विश्राम ।
विश्राम(पु०)-आराम, शान्ति, शान्तचित्तता, शुद्धचित्तता ।
विश्रा [स्रा]व(पु०)-गिरना, टपकना, बहाव, प्रसिद्धि । [रहने वाला ।
विश्रुत (वि०)-प्रसिद्ध, प्रसन्न, खुश
विश्रुति(स्त्री०)-प्रसिद्धि, टपकना ।
विश्लिष्(४ प०)-फूट पड़ना, अलग होना । [अलहदा ।
विश्लिष्ट (वि०)-अलग, विभिन्न,
विश्लेष (पु०)-अलहदगी, जुदाई, वियोग, अभाव । [विसक्त ।
विश्लेषित(वि०)-अलग किया हुआ,
विश्व(सर्व०)-सब, समस्त, तमाम । न०-दुनिया, जगत्, संसार । पु०-सब का अभिमानी जीवात्मा ।
विश्वकर्मा [न्] (पु०)-परमेश्वर, सूर्य, देवशिल्पी ।
विश्वकृत(पु०)-विश्वकर्मा, परमेश्वर ।
विश्वकेतु (पु०)-विश्व जिसका झण्डा है, अनिरुद्ध ।
विश्वधारिणी(स्त्री०)-पृथिवी ।
विश्वम्भर (पु०)-विश्व का पालक, ईश्वर, इन्द्र, विष्णु ।
विश्वम्भरा(स्त्री०)-पृथिवी ।
विश्वरेताः [स्] (पु०)-संसारोत्पादक परमात्मा ।
विश्वसृक् [ज्] (पु०)-पूर्ववत् ।
विश्वस्त (वि०)-भीतचित्त, जात-विश्वास, विश्वासपात्र ।
विश्वाची(स्त्री०)-एक अप्सरा ।
विश्वात्मा[न्] (पु०)-विष्णु, परमात्मा ।
विश्वामित्र(पु०)-गाधिपुत्र एक ऋषि ।
विश्वाराट् [ज्] (पु०)-विश्वों का राजा, परमेश्वर ।
विश्वास(पु०)-प्रत्यय, श्रद्धा, यकीन ।
विश्वेदेवाः (पु० बहु०)- ऋतु आदि दश देवता, वह्नि, आग ।
विश्वेश (पु०)-विश्व का मालिक, परमात्मा ।
विष् (३ उ०)-व्याप्ति, व्याप्त होना, फैलना । स्त्री०-मैला, विष्ठा ।
विष (न०)-जल, कमल की केशर, कमल की डण्डी । अस्त्री०-जहर, गरल, वत्सनाभ नामक विष ।
विषघ्न-घाती [न्] (पु०)-शिरीष वृक्ष, धव्वे का पेड़, बहेड़ा । वि०-विष को दूर करने वाला ।
विषण्ण (वि०)-विषादयुक्त, दुःखी ।
विषण्णता(स्त्री०)-जडता, मन्दता ।

विषधर(पु०)–सर्प, साप ।
विषभिषक्[ज्] (पु०)–विष की चिकित्सा करने वाला वैद्य ।
विषम(वि०)–असमान, ऊंचा नीचा, जो बराबर न हो, दारुण, सख्त, संकट । न०-एक प्रकार का छन्द ।
विषमज्वर (पु०)–ज्वरविशेष, तेज बुखार ।
विषमविभाग (पु०)–असमानांश, हिस्सों का बराबर न होना ।
विषमस्थ (वि०)–ऊ चे नीचे में ठहरने वाला, मुसीबत में फंसा हुआ, विपद्ग्रस्त ।
विषमायुध(पु०)–कामदेव, कन्दर्प ।
विषय(पु०)–इन्द्रियादिकों से जाने गये शब्दादि,मजमून,देश,आश्रय।
विषयि[न्] (न०)–ज्ञान, इन्द्रिय ।
विषयी[न्] (वि०)–विषयासक्त,भोगों में फंसा हुआ । पु०-राजा,कामदेव, शब्द ।
विषाण(न०)–पशुओं के सींग, हाथी वा शूकर का दांत ।
विषाणी [न्] (पु०)–हाथी, सींग वाले पशु, सिंघाड़ा, शृंगाटक ।
विषाद (पु०)–जड़ता, अवसाद, दुःख, दिल का टूटना ।
विषाराति(पु०)–काला धतूरा,
विषु(अ०)–साम्य,बराबरी,नानारूप।
विषुवत् (न०)–वह काल जब कि रात और दिन बराबर हो ।
विष्कल(पु०)–ग्राम्यशूकर ।
विष्किर (पु०)–बखेर कर खाने वाले पक्षी,जैसे-तीतर,मोर,मुर्गादि ।
विष्टप (अस्त्री०)–संसार, दुनिया ।
विष्टपहारी[न्](वि०)–दुनियापरस्त।
विष्टम्भ् (५,९प०)–रोकना, जमाना ।
विष्टम्भ (पु०)–रोक, रुकावट, कब्ज, मूत्रावरोध, अश्वरोध। [शूल ।
विष्टर (पु०)–स्थान, जगह, आसन,
विष्ठा-ष्टा (स्त्री०)–मल, पाखाना ।
विष्टि (स्त्री०)–मजदूरी, पेशा, बेगार, ज्योतिषशास्त्र में भद्राविशेष ।
विष्णु (पु०)–व्यापक परमेश्वर, पौराणिकों के त्रिदेव में का दूसरा देव जिस का धर्म संसार का पालन करना है, अग्नि, पवित्र पुरुष, एक स्मृतिकार, श्रावण ।
विष्णुगुप्त (पु०)–चाणक्यमुनि । [एक ।
विष्णुपुराण(पु०)–१८महापुराणों में से
विष्णुरात (पु०)–राजा परीक्षित ।
विष्णुरथ-वाहन (पु०)–गरुड़ पक्षी ।
विष्पन्द् (१आ०)–भड़कना, हरकत करना ।
विष्पन्द (पु०)–धड़कन, हरकत।
विष्यन्द् (१ आ०)–बहना ।
विष्यन्द (पु०)–बहाव, टपकना ।
विस् (४प०)–डालना, फेंकना,भेजना । १प०–जाना, हरकत करना ।
विसयुक्त (वि०)–अलग, जुदा ।
विसयोग (पु०)–जुदाई, अलहदगी ।
विसवद् (१प०)–प्रतिज्ञाभंग करना, धोखा देना ।
विसवाद (पु०)–धोखा, प्रतिज्ञाभंग ।
विसङ्कट (वि०)–भयङ्कर, खौफनाक ।

पु०—शेर, इङ्गुदीवृक्ष।
विसंगत (वि०)—असङ्गत, अमानुरूप।
विसंज्ञ (वि०)—संज्ञारहित, अचेतन।
विसर्ग (पु०)—दान देना, छोड़ना, मल का त्याग, मोक्ष, प्रलय, लेखन-कला में एक चिन्हविशेष जो [:] इस प्रकार का होता है।
विसर्जन(न०)—त्याग, देना, छोड़ना।
विसर्जनीय (वि०)—त्यागने योग्य, छोड़ने लायक़, विसर्गचिन्ह।
विसर्जित (वि०)—त्यक्त, दत्त, भेजा हुआ।
विसर्प (पु०)—रेंगना, आगे पीछे सर-कना, एक प्रकार का रोग।
विसर्पन्न (न०)—मोम।
विसर्पण (न०)=विसर्प।
विसू [षू] चिका (स्त्री०)—हैज़ा [कालरा] नामक रोग।
विसूरण-णा=दुःख, कष्ट।
विसूरित (न०)—पछतावा, दुःख।
विसूरिता (स्त्री०)—ज्वर, बुख़ार।
विसृ (१प०)—फैलना, विस्तृत होना, सरपट दौड़ना।
विसृज् (६प०)—त्यागना, छोड़ना, भेजना।
विसृत(वि०)—विस्तीर्ण, फैला हुआ।
विसृप् (१प०)—जाना, मार्च करना, वध भागना।
विसृष्ट (वि०)=विसर्जित।
विस्त [स्तार] र (पु०)—फैलाव, विस्तरण, चौड़ाई, विशालता। [विशाल।
विस्तीर्ण (वि०)—विपुल, फैला हुआ,
विस्तृ (५ उ०)—फैलना, बिथराना, फैलाना, ढकना। [विस्तृत।
विस्तृत (वि०)—फैला हुआ, चौड़ा,
विस्तृति (स्त्री०)=विस्तार।
विस्तॄ (९उ०)=विस्तृ।
विस्था (१ आ०)-ठहरना, अलग खड़े होना, फैलना।
विस्पष्ट(वि०)—साफ़, प्रत्यक्ष, प्रकट।
विस्फुर् (६प०)—कांपना, हिलना, चमकना।
विस्फुरित (वि०)—हिलता हुआ, हिला हुआ, फूला हुआ।
विस्फुर्ज् (१प०)—दहाड़ना, गर्जना।
विस्फुलिंग(पु०)—आग की चिनगारी, एक प्रकार का विष।
विस्फूर्जित(न०)—दहाड़,चीख,परिणाम
विस्फोटः-टा=छोटी २ फुंसी, चेचक।
विस्मय (पु०)—आश्चर्य,अद्भुत,अजीब।
विस्मरण (न०)—भूल, याद न रहना।
विस्मि (१आ०)—आश्चर्य करना, सन्देह में होना, तारीफ़ करना।
विस्मित (वि०)—आश्चर्ययुक्त, हैरान हुआ, विस्मयान्वित।
विस्मिति (स्त्री०)=विस्मय।
विस्मृ (१प०)—भूलना,याद न रहना।
विस्मृत (वि०)—भूला हुआ।
विस्मृति (स्त्री०)=विस्मरण।
विस्रंस् (१ आ०)—फिसलना, गिरना, ढीला होना।
विस्रसा (स्त्री०)—जरा, बुढ़ापा।
विह [हं] ग (पु०)—पक्षी, परिन्द, सूर्य, चन्द्रमा, बादल, ग्रह, तीर।
विहंगम (पु०)—सूर्य, पक्षी।

विहत (वि०)–आहत, रोका हुआ, वध किया हुआ। पु०-जैनमन्दिर
विहति (पु०)–मित्र, साथी। स्त्री०-कत्ल, वध, नाकामयाबी।
विहन् (२ प०)–मारना, कत्ल करना, रोकना, त्यागना।
विहनन (न०)–कत्ल, मार, चोट, वध।
विहर.-रण=हरना, लेना, अलहदगी।
विहर्त्तृ [तृ] (पु०)–घूमनेवाला, लुटेरा
विहर्ष (पु०)–अत्यन्त हर्ष।
विहस् (१ प०)–मुस्कराना, हंसना।
विहसन सित (न०)–मन्द मुस्कान, मुस्कराहट।
विहास (पु०)–पूर्ववत्।
विहस्त (वि०)–हस्तरहित, बेक़ाबू किया, पण्डित।
विहा (२ प०)–त्यागना, छोड़ना।
विहायस्-स (अस्त्री०)–आकाश, आसमान। पु०-पक्षी।
विहार (पु०)–क्रीडार्थपदगमन, भ्रमण, लीला, बौद्धों का मन्दिर।
विहारी [न्] (वि०)–विहार करने वाला।
विहित (वि०)–कृत, किया गया, विधिपूर्वक बतलाया हुआ।
विहीन (वि०)–छोड़ाहुआ, वर्जित, त्यक्त
विहृ (१प०)–छीनना, लेना, हटाना, गिराना।
विहेठ (पु०)–चोट, नुकसान।
विह्वल (वि०)–व्याकुल, भय आदि से घबराया हुआ।
वी (२ प०)–कान्ति, चाहना, उत्पन्न होना, व्याप्ति, फैलाना, फेंकना, खाना।
वीक (पु०)–वायु, पक्षी, हृदय।
वीक्ष् (१आ०)–देखना, अवलोकनकरना
वीक्षण-णा=देखना, अवलोकन करना, न०-नेत्र, आंख।
वीक्षित (न०)–दृष्टि, निगाह।
वीक्ष्य (वि०)–देखने योग्य। पु०-नट, घोड़ा। न०-आश्चर्य, विस्मय।
वीचि (अस्त्री०)–लहर, तरंग, अविचार, हर्ष, विश्राम।
वीचिमाली [न्] (पु०)–सागर, समुद्र।
वीची (स्त्री०)= वीचि।
वीज् (१ आ०)–जाना, गमन करना। १० उ०-पंखा करना।
वी [वी] ज (न०)–शुक्र, वीर्य, अंकुर, अव्यक्तगणित, एकअक्षर, धान्यादि का फल।
वी [वी] जगणित (न०)–एलजबरा।
वीजकोष (पु०)–वराटक, कौड़ी।
वीजन (न०)–पंखा, वस्तु, हवा करना
वीजी [न्] (पु०)–उत्पादक, पैदा करने वाला, पिता।
वीज्य (वि०)–बहुत आदर के योग्य, कुलीन, ख़ान्दानी।
वीटि-टिका-टी (स्त्री०)–पान का बीड़ा, लगाया हुआ पान।
वीणा(स्त्री०)–इसी नामका बाजा, बीन
वीणावाद (वि०)–वीणा [बीन] के बजाने वाला।
वीत (वि०)–गत, गया हुआ, गुजरा हुआ, नष्ट, मुक्त, चाहा हुआ।

वीतराग(वि०)-इच्छारहित,शान्त, रागरहित। पु०-जैन अर्हत्।
वीतशोक (पु०)-अशोकवृक्ष। वि०-जिस का शोक दूर हो गया हो।
वीतसूत्र (न०)-यज्ञोपवीत, जनेऊ।
वीति (स्त्री०)-गति, जाना, दीप्ति, चमकना, खाना, शुद्धि। पु०-घोड़ा।
वीतिहोत्र (पु०)-अग्नि, सूर्य।
वीचि-ची(स्त्री०)-पङ्क्ति,श्रेणि, रास्ता, मार्ग, गली, काव्य या नाटक का एक अंग।
वीथिका (स्त्री०)-पूर्ववत्।
वीध्र (वि०)-पवित्र, शुद्ध। न०-आकाश, वायु, अग्नि।
वीनाह(पु०)-कूपादिमुखबन्धन का साधन, घाट।
वीपा (स्त्री०)-बिजली,विद्युत्।
वीप्सा (स्त्री०)-व्याप्ति, फैलना, शब्दानुवृत्ति।
वीर (वि०)-बहादुर, वेगवाला, शूरता वाला। पु०-योद्धा, भट, अग्नि, पुत्र, पति, विष्णु। न०-मिर्च, सरकण्डा।
वीरक (पु०)-योद्धा,करवीरवृक्ष।
वीरण (न०)-उशीर,एक प्रकार का चन्दन। [पशुयुद्ध।
वीरन्धर(पु०)-मयूर,चमड़े की वास्कट,
वीरबाहु (पु०)-विष्णु।
वीररस(पु०)-काव्यादि के शृंगारादि रसों में से एक।
वीररेणु (पु०)-भीमसेन।
वीरसू-प्रसू-प्रसविनी (स्त्री०)-वीर-माता, पुत्र की माता।
वीरसेन (पु०)-नलराजा का पिता।
वीरा (स्त्री०)-वीर की स्त्री, पुत्र वाली स्त्री, आमलकी अतीस।
वीरासन (न०)-वीरों का आसन, आसनविशेष। [हुई बेल।
वीरुध्-धा (स्त्री०)-विस्तृतलता,फैली
वीर्य(न०)-शुक्र,सातवां धातु, पराक्रम, प्रभाव, तेज, दीप्ति।
वीर्यवान् (वि०)-बलवाला, वीर्यवाला, ज़ोरवाला।
वीवध (पु०)-वृद्धि, चावल आदि का गल्ला, मार्ग, भार, बोझा।
वीवधिक (पु०)-बोझा उठाने वाला, भारवाही।
वीहार=विहार।
वृ (१० उ०)-आच्छादन, ढकना। ९ आ०-सेवा करना। ९ उ०-स्वीकार करना, मंजूर करना।
वृक् (१ आ०)-आदान, पकड़ना, ग्रहण करना।
वृक (पु०)-भेड़िया, उल्लू, कौआ, एक राक्षस,बकुलवृक्ष,हल,गीदड़।
वृकदंश(पु०)-कुत्ता, कुक्कुर।
वृकधूर्त (पु०)-गीदड़, शृगाल।
वृकोदर (पु०)-भीम, ब्राह्मण।
वृक्ण (वि०)-छिन्न, कटा हुआ।
वृक्ष (पु०)-पेड़, दरख्त।
वृक्षक (पु०)-छोटा पेड, पौदा।
वृक्षचर (पु०)-बन्दर, वानर।
वृक्षच्छाय (न०)-पेड़ों की छाया, गहरी छाया।

वृक्षनाथ (पु०)–वटवृक्ष, बड़ का पेड़।
वृक्षनिर्यास (पु०)–गोंद।
वृक्षभिद् (पु०)–कुल्हाड़ा।
वृज् (२ आ०)–परहेज़ करना, त्यागना ७ प०–त्यागना, पसन्द करना, पूर्ति करना, हटाना, देना, मारना। १ प०, १० उ०–परहेज़ करना, त्यागना, सुस्तस्ना करना।
वृजन (न०)–पाप, गुनाह, आकाश। पु०–केश, बाल। वि०– कुटिल, तिर्छा।
वृजिन (न०)–पूर्ववत्।
वृण् (८उ०)–खाना, खर्चकरना। ६ प०–देना, सन्तुष्ट करना। [वर्त्तना।
वृत [वर्त्तति-वर्त्तते] (१उ०)–होना,
वृत (वि०)–प्रार्थित, स्वीकृत, मांगा गया, वरा गया।
वृति (स्त्री०)–मांगना, वेष्टन, लपेटना।
वृत्त (वि०)–संघटित, सम्पादित, गत, गोल, मरा हुआ, दृढ, पठित, उत्पन्न हुआ, प्रसिद्ध। न०–घटना, समाचार, सूचना, इतिहास, वृत्तान्त, चलन, रीति, दायरा, छन्दोभेद। पु०–कूर्म, कछुआ।
वृत्तकर्कटी (स्त्री०)–तरबूज़।
वृत्तगन्धि (न०)–गद्यविशेष।
वृत्तफल (न०)–काली मिर्च। पु०–अनार, बेर, आमलक।
वृत्तस्थ (वि०)–अच्छे चरित्र वाला, गुरु आदि की पूजा में लगा हुआ, सच्चरित्र। [हाल।
वृत्तान्त (पु०)–बात, संवाद, वर्णन,

वृत्ति (स्त्री०–आजीविका, स्थिति, अन्तःकरण का परिणामविशेष, व्यवहार।
वृत्र (पु०)–अन्धकार, शत्रु, एक दैत्य, पर्वत, शब्द, मेघ।
वृत्रहा [न्] (पु०)–इन्द्र, देवराज।
वृथा (अ०)–निरर्थक, व्यर्थ, बेफ़ायदा।
वृथादान (न०)–वह दान जिस का कुछ फल न हो, निष्प्रयोजनदान।
वृद्ध (न०)–शैलज नामक गन्धद्रव्य। पु०–विधारा का पेड़। वि०–बूढ़ा, चतुर, निपुण।
वृद्धता-त्वम्=बुढ़ापा, स्थविरत्व।
वृद्धप्रपितामह (पु०)–पड़दादा, बाप का बाबा।
वृद्धश्रवाः (स्] (पु०)–इन्द्र, देवराज।
वृद्धसंघ (पु०)–वृद्धों का समूह, वार्द्धक।
वृद्धा (स्त्री०)–बूढ़ी स्त्री, गतयौवना नारी।
वृद्धि (स्त्री०)–बढ़ोतरी, सम्पत्ति, अभ्युदय, तरक्क़ी। पु०–सूद, ब्याज।
वृद्धिजीविका (स्त्री०)–ब्याज की आमदनी।
वृद्धिश्राद्ध (न०)–नान्दीमुखश्राद्ध, वह श्राद्ध जो सम्पत्ति के लिये विवाहादि शुभकार्यों में किया जाता है।
वृद्ध्याजीव (वि०)–ब्याज की आमदनी से जीने वाला, सूदख़ोर।
वृध् (१० उ०)–चमकना, दीप्तिमान् होना। १ आ०– बढ़ना।
वृन्त (न०)–डांठल, फल तथा पत्तों का बन्धन।

वृन्ताक (पु०)--बैंगन नामक फलशाक।
वृन्द (न०)--समूह, गिरोह, दश अरब की संख्या का वाचक।
वृन्दारक (पु०)--देवता, प्रधान। वि०-सुन्दर, मनोज्ञ।
वृन्दावन (न०)--अपने नाम से प्रसिद्ध मथुरा के समीप तीर्थविशेष।
वृन्दिष्ठ (वि०)--अतिश्रेष्ठ।
वृश्चिक (पु०)—बिच्छू, राशिविशेष, कीटविशेष।
वृष् (१ पु०)--सींचना, जल देना, उत्पन्न करने की सामर्थ्य का होना।
वृष (पु०)--बैल, इन्द्र, धर्मराज, कामदेव, मयूरपुच्छ, दूसरी राशि, चूहा, शत्रु।
वृषण (पु०)--अण्डकोष।
वृषध्वज (पु०)--शिव, महादेव।
वृषपर्वा[न्] (पु०)--महादेव, एक दैत्य।
वृषभ (पु०)--बैल, श्रेष्ठ, कान का छिद्र, जिनविशेष।
वृषभानु (पु०)--राधिका का पिता।
वृषल (पु०)--शूद्र, अश्व, धर्महीन, गाजर, चन्द्रगुप्त नामक राजा।
वृषली (पु०)--पिता के घर में अविवाहिता रजोधर्मयुक्ता कन्या, वृषलजाति की स्त्री।
वृषलीपति (पु०)--वृषली नाम की कन्या का विवाहने वाला पुरुष, शूद्रा का पति।
वृषलोचन (पु०)--मूषक, चूहा। न०--बैल के से नेत्रों वाला।
वृषवाहन (न०)--महादेव, शिव।

वृषस्यन्ती (स्त्री०)—विषय की इच्छा करने वाली स्त्री, कामुकी।
वृषाकपायी (स्त्री०)--पार्वती, लक्ष्मी, इन्द्राणी, स्वाहा, अग्निभार्या, जीवन्ती नामक औषध।
वृषाकपि (पु०)--शिव, विष्णु, सूर्य, अग्नि, इन्द्र।
वृषाङ्क (पु०)--महादेव।
वृषि-षी (स्त्री०)--व्रतियों का एक प्रकार का कुशासन।
वृषोत्सर्ग (पु०)—मृतमनुष्य के उद्देश्य से विजार का छोड़ना रूप त्याग।
वृष्टि (स्त्री०)—वर्षा, बरसना।
वृष्टिभू (पु०)—मेंढक। वि०—वर्षा में होने वाला।
वृष्णि (पु०)—यादव, कृष्ण, मेंढा, मेघ।
वृष्णिगर्भ (पु०)—श्रीकृष्ण।
वृष्य (न०)--वीर्यवर्द्धक एक प्रयोग, वाजीकर औषध। पु०--उड़द।
वृह् (१० उ०, १ प०)—चमकना, प्रकाशित होना, शब्द करना, बढ़ना।
वृ [बृ]हत (वि०)--विस्तारयुक्त, बड़ा।
वृ [बृ] हती (स्त्री०)--कटेली, शब्द, छन्दोभेद, ऊपर का वस्त्र।
वृहद्भानु (पु०)--सूर्य, चीते का वृक्ष।
वृहद्रथ (पु०—शतधन्वा का पुत्र, इन्द्र, यज्ञपात्रविशेष, सामवेद का एक भाग। वि० -बड़े रथवाला।
वृ [बृ] हस्पति (पु०)—देवगुरु, वाणी का पति।
वॄ (९उ०)—स्वीकार करना, वरना।
वेग (पु०)-तेज़ी, जव, प्रवाह, वीर्य,

समूह, विषकारी, महाकाल, न्याय में सरकारविशेष।
वेगी [न्] (वि०)–तेज, वेग वाला। पु०–बाज नामक पक्षी।
वेण् (१उ०)–गमन करना, पहिचानना, देखना, स्तुति करना, बाजे पर नाचना, लेना, सोचना।
वेण (पु०)–पृथुराज का पिता, वर्णसंकरजातिविशेष।
वेणि-णी (स्त्री०)–केशों की रचनाविशेष, जलसमूह, देवदारु का वृक्ष, नदीभेद, गंगा यमुना और सरस्वती के संगम का स्थानविशेष।
वेणु (पु०)–बांस, वंशी, मुरली।
वेणुध्म (पु०)–वंशी बजाने वाला पुरुष, वेणुवादक।
वेणुवाद (पु०)–पूर्ववत्।
वेत-स (पु०) बेंत का वृक्ष।
वेतन (न०)–तनख्वाह, मजदूरी, कर्मदक्षिणा। [वाला देश।
वेतस्वान् [वत्] (वि०)–बहुत बेंतों
वेताल (पु०)–मल्लविशेष, द्वारपाल, *शिव जी के गणों का स्वामी*, भूताधिष्ठित मुर्दा।
वेत्ता [तृ](वि०)–ज्ञाता, जानने वाला, प्राप्त करने वाला, उठाने वाला।
वेत्र (पु० =बेंत।
वेत्रधर (पु०)–द्वारपाल, ड्योढ़ीवान्, वि०- बेंत धारण करने वाला।
वेत्र [त्रा] वती (स्त्री०) -मालवप्रदेश में एक नदी। [पटाई।
वेत्रासन (न०)- बेंत की कुरसी, मूढ़ा,
वेद (पु०)- विष्णु, शास्त्रविषयकज्ञान, धर्म और ब्रह्म के प्रतिपादक अपौरुषेय ग्रन्थविशेष जो चार हैं यथाः--ऋक्,यजु, साम,अथर्व।
वेदगर्भ (पु०)- ब्रह्मा, ब्राह्मण।
वेदत्रय त्रयी=तीन वेद अर्थात् ऋक्, यजु और साम।
वेदन (न०) -वह ज्ञान जिससे सुख दुःखादि का अनुभव होताहै,ज्ञान।
वेदना (स्त्री०)--कष्ट, दुःख।
वेदनिन्दक(पु०)–वेद की निन्दा करने वाला पुरुष, नास्तिक मनुष्य।
वेदपाठी [न्] (वि०)–वेदों का पढ़ने वाला, वेदाभ्यासी।
वेदपारग(पु०)–वेदवेत्ता ब्राह्मण।,वि०–वेद के पार को प्राप्त होने वाला।
वेदमाता[तृ] (स्त्री०)–गायत्री।
वेदवती (स्त्री०)–कुशध्वज नामक राजा की कन्या।
वेदवचन(न०)--वेदोक्त वाक्य।
वेदवदन(न०)–व्याकरण, ग्रामर।
वेदवित्(पु०)–विष्णु,ब्राह्मण। वि०–वेदों को जानने वाला।
वेदविहित (वि०)-वेदप्रतिपादित, वेदों में कहा गया।
वेदव्यास(पु०)--सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न पराशर का पुत्र, ब्रह्मसूत्रों के निर्माता ऋषि।
वेदाग्रणी(स्त्री०)--सरस्वती।
वेदाङ्ग(न०)–वेद के अंगभूत शास्त्र जो छ हैं यथा --शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द।

वेदाधिप(पु०)--वेदों के पति जो चार हैं यथाः-वृहस्पति, भृगु, भौम और बुध ।
वेदान्त (पु०)--ब्रह्म का प्रतिपादन करने वाला शास्त्रविशेष ।
वेदान्ती[न्](पु०)--वेदान्तशास्त्रवेत्ता।
वेदादि(पु०)--प्रणव, ओंकार ।
वेदि-दी (स्त्री०)-होमादि के लिये संस्कार की हुई भूमि, सरस्वती।
वेदिशा (स्त्री०)--अर्जुनपत्नी द्रौपदी।
वेदित(वि०)-ज्ञापित,बतलाया हुआ।
वेदितव्य (वि०)--ज्ञातव्य, जानने योग्य। [वाला ।
वेदिता [तृ] (वि०)--ज्ञाता, जानने
वेदी[न्] (पु०)--पण्डित, विज्ञ,ब्रह्म । वि०--जानने वाला ।
वेदोक्त (वि०)--वेद में कहा हुआ, वेदविहित ।
वेध (पु०)-बींधना, वेधन, नक्षत्र-जन्य वह योगविशेष जो विवाहादि शुभकार्यों में वर्जित है ।
वेधक (न०)-कर्पूर, धनिया । वि०-बींधने वाला । [मूल, ब्राह्मतीर्थ ।
वेधस (न०)-अंगूठे की जड़, अंगुष्ठ-
वेधाः [स्] (पु०)-शिव, ब्रह्मा,विष्णु, सूर्य,पंडित,आक का पेड़,चन्द्रमा। वि०-रचने वाला । [हुआ ।
वेधित (वि०)-छिद्रित, विद्ध, बींधा
वेधिनी (स्त्री०)-जलौका, जोंक ।
वेध्य (न०)-लक्ष्य, निशाना । वि०-बींधने लायक ।
वेन=वेण् ।
वेप् (१ आ०)-कांपना, हिलना ।
वेपथु (पु०)-कम्प ।
वेपन (न०)-कांपना, हिलना ।
वेम (पु०)-कपड़ा बुनने का दण्डा ।
वेमा [न्] (अस्त्री०)-पूर्ववत् ।
वेर (न०)-शरीर, केशर, बैंगन ।
वेल् (१ प०)-कांपना, हिलना ।
वेल (न०)-उपवन, बगीचा, समय ।
वेला (स्त्री०)-समुद्रतट, समुद्र का किनारा, मर्यादा, समय, बुध की स्त्री, दांतों का मांस ।
वेल्ल् (१ प०)-कंपाना, हिलाना ।
वेल्लज (न०)-काली मिर्च ।
वेल्लन (न०)-काष्ठनिर्मित पूरी आदि बनाने का साधन अर्थात् बेलन, घोड़े आदि का पृथ्वी पर लोटना ।
वेश-ष (पु०)-अलंकारादि की सजावट का काम, नेपथ्यकर्म, वेश्या का घर, गृहमात्र, प्रवेश ।
वेशदान (पु०)-सूर्य की शोभा ।
वेशधारी[न्](पु०)-कपटस्वरूप बनाने वाला, छली तपस्वी ।
वेशंत (पु०)-छोटा तालाब,अग्नि ।
वेश [स] र (पु०)-छोटा घोड़ा ।
वेश [स] वार (पु०)-मांस का धोवन, मांसधौतजल ।
वेश्म [न्] (न०)-गृह, घर ।
वेश्मभू (स्त्री०)-घर बनाने लायक जगह, वास्तु ।
वेश्य (न०)-वेश्या का घर ।
वेश्या-स्या (स्त्री०)-वारांगना,रण्डी।

वेष्ट् (१आ०)–लपेटना, आच्छादित करना। [वेठन, मुकुट, पगड़ी।
वेष्टक-ष्टन (न०)–पगड़ी, दुपट्टा,
वेष्टित (वि०)–चारों तरफ़ घिरा हुआ, रुद्ध, घेरा हुआ।
वेस् (१ प०)–जाना, गमन करना।
वेसन (न०)–दाल का चून अर्थात् वेसन नाम से प्रसिद्ध चूर्ण।
वेहत्(स्त्री०)–गर्भपात करने वाली गौ।
वेहार (पु०)–विहार नामक प्रदेश।
वै (१ प०)–सुखाना, शुष्क करना। अ०-पादपूरण, प्रार्थना, अनुनय, सम्बोधन, निश्चय आदि अर्थों का बोधक।
वैंशतिक (वि०)–बीस रुपये से खरीदा हुआ, विंशतिक्रीत।
वैकक्ष (न०)–यज्ञोपवीत, जनेऊ।
वैकल्पिक (वि०)–विकल्प से प्राप्त या होने वाला, सुखारी।
वैकल्य (न०)–विकलता, घबराहट।
वैकारिक (वि०)–विकारयुक्त, विकारवाला।
वैकुण्ठ (पु०)–विष्णु, इन्द्र, गरुड़। न०–उपरिस्थ लोकविशेष।
वैकृत (न०)–विकार, बदलना, विकृतभाव। वि० विकारोत्पन्न।
वैक्रान्त (न०)–एक प्रकार की मणि।
वैखानस (पु०) वानप्रस्थ, तृतीयाश्रमी, एक ऋषिविशेष।
वैगुण्य (न०) गुणराहित्य, बिगड़ना, पूर्ण न होना, बेइमानी।
वैचित्र्य (न०)–अनेकरूपता, विलक्षणता, विचित्रता।
वैजयन्त (पु०)–इन्द्र का महल, इन्द्र की ध्वजा, एक देत्य।
वैजयन्तिका (स्त्री०)–पताका, ध्वजा, झण्डी, जयन्ती का वृक्ष।
वैजयन्ती (स्त्री०)–पूर्ववत्।
वै [वे] जिक (न०)–हेतु, आत्मा, शिग्रुतैल। वि०–बीजसम्बन्धी।
वैज्ञानिक (वि०)–निपुण, विज्ञानयुक्त। पु०–बौद्धों का शास्त्रविशेष।
वैडालव्रत (न०)–दुराचार, कपटव्यवहार। [मुरलीवादक।
वैणिक (वि०)–वीणा का बजानेवाला,
वैतंसिक,(वि०)–मांसविक्रेता, गोश्त बेचनेवाला।
वैतनिक (वि०)–तनख्वाह लेकर काम करनेवाला, मजदूरी से जीनेवाला।
वैतरणी (स्त्री०)–पुराणोपवर्णित पापियों के तरने के लिये यमलोक की एक नदी, नरकसिन्धु।
वैतालिक (पु०)–मंगलगीत आदि गान से राजाओं के जगाने वाले भाट।
वैदग्ध-ग्ध्य (न०)–चातुरी, होशियारी, बुद्धिमत्ता।
वैदर्भ (पु०)- विदर्भ देश का राजा।
वैदर्भी (स्त्री०)–दमयन्ती।
वैदिक(पु०)- वेदज्ञाता ब्राह्मण। वि०–वेदसम्बन्धी, वेदज्ञ। [शेष।
वैदूर्य(न०)–कृष्णपीतवर्ण की मणिवि-
वैदेशिक(वि०)–विदेशसम्बन्धी, देशान्तर का। [व्यवहारी मनुष्य।
वैदेह(पु०)–विदेहदेश का राजा, जनक,

वैदेही (स्त्री०)—सीता, जानकी, हल्दी, गोरोचना, वणिकपत्नी, पिप्पली ।

वैद्य (पु०)—भिषक्, चिकित्सक, पंडित । वि०-वेदसम्बन्धी ।

वैद्यक (न०)—आयुर्वेद, चिकित्साशास्त्र।

वैध-धिक (वि०)—विधिप्रतिपादित, ब्रह्मा या मायासे प्राप्त । [नाकी ।

वैधर्म्य (न०)—असमानता, फर्क, गैरहं-

वैधवेय (पु०)—विधवा का पुत्र ।

वैधव्य (न०)—रँडापा, पतिवियोग ।

वैधृति (पु०)—धैर्य का अभाव, विष्कुम्भादि योगों में से एक । स्त्री०-वृद्धि, उन्नति ।

वैनतेय (पु०)—गरुड़, अरुण ।

वैनाशिक (पु०)—वस्तुमात्र की क्षणभंगुरता का प्रतिपादक बौद्धशास्त्रविशेष, क्षणिक, ऊर्णनाभ । न०-नाड़ी, नक्षत्रविशेष । [भाव ।

वैपरीत्य (न०)—उलटापन, विपरीत-

वैभव (न०)-ऐश्वर्य, विभूति, अतिशय ।

वैमनस्य (न०)—मन का द्वैधीभाव, मन की विपरीतता ।

वैमात्र-त्रेय (पु०)—उपमाता की संतान, सौतेला भाई ।

वैयाकरण (वि०)—व्याकरण के जानने या पढ़ने वाला । [दित रथ ।

वैयाघ्र (पु०)-व्याघ्र के चर्म से आच्छा-

वैयाघ्रपद्य (पु०)—गोत्रप्रवर्त्तक एक मुनि ।

वैयासिक (पु०)—व्यास की सन्तान, शुकदेव ।

वैयासिकी (स्त्री०)—व्यासप्रोक्तसंहिता

वैर (न०)—विरोध, दुश्मनी, वीरत्व ।

वैरकर-कृत् (वि०)-विरोधी, वैर करनेवाला ।

वैरनिर्यातन-प्रतिक्रिया=बदला लेना, वैर निकालना ।

वैराग्य (न०)—विषयवासनाओं से राहित्य, बेपरवाही ।

वैरी [न्] (पु०)—शत्रु, दुश्मन । वि०—वैर करने वाला । [बदसूरती ।

वैरूप्य (न०)—कुरूपता, बदशकल होना,

वैरोचन-चनि-चि (पु०)—बलि नामक राजा, बुद्ध, विरोचन की संतति, सूर्यपुत्र, अग्नि की सन्तान ।

वैलक्षण्य (न०)—विलक्षणता, विशेषता, अनोखापन ।

वैवर्ण्य (न०)—रंग का बदलना, कालुष्य ।

वैवस्वत (पु०)—सूर्यपुत्र, यमराज ।

वैवाहिक (वि०)—विवाह के योग्य, विवाहसम्बन्धी, विवाह वाला । पु०-लड़का लड़की का श्वशुर, समधी । [एक मुनि ।

वैशम्पायन (पु०)—व्यासदेव का शिष्य,

वैशाख (पु०)—अपने नाम से प्रसिद्ध एक महीना । न०-धनुर्धारियों की स्थितिविशेष, मंथनदण्ड, रई ।

वैशेषिक (पु०)—कणाद मुनिकृत दर्शन का वेत्ता । न०-षड्दर्शनों में से एक ।

वैश्य (पु०)—चार वर्णों में से तीसरा, बनिया । वि०—वैश्यसम्बन्धी ।

वैश्रवण (पु०)-कुबेर, शिव ।

वैश्वदेव (पु०)—पांच यज्ञों में से एक ।

वैश्वानर (पु०)—अग्नि, चीते का

वृक्ष, सामवेदीय एक शाखा।

वैषम्य (न०)-विषमता, ऊंचानीचा, नतोन्नत, एकसा न होना।

वैष्णव (वि०)-विष्णु का उपासक, विष्णुसम्बन्धी । न० होमभस्म, एक महापुराण।

वैहासिक (पु०)-मसखरा पुरुष, हँसीठट्ठा करने वाला आदमी, विदूषक।

वोड्र (पु०)-सर्पभेद, मत्स्यभेद।

वोढा [ढृ] (वि०)-बोझा ढोने वाला। भारिक। पु० मूर्ख, सूत, बैल, ऋषभ, परिणेता।

वोलु (पु०)-मुनिविशेष।

वौषट् (अ०)-देवता के उद्देश्य से घृतादि का अग्नि में छोड़ना।

व्यंशक (पु०)-धूर्त, ठग, पर्वत।

व्यक्त (वि०)-प्रकटित, जाहिर, साफ, देखने योग्य। पु० विष्णु।

व्यक्ति (स्त्री०)-प्रकाश, स्पष्टता, जाति, भूतमात्र।

व्यग्र (वि०)-व्याकुल, घबराया हुआ, ससम्भ्रम। पु०-विष्णु।

व्यजन (न०)-बीजना, पंखा।

व्यञ्जक (पु०)-अवस्थानुरूप हृदय के भाव को प्रकाशित करने वाला और व्यञ्जना से अर्थ का प्रकाशक शब्दविशेष। वि०-प्रकाशक।

व्यञ्जन (न०)-शाकभाजी, चिन्ह, श्मश्रु, दिवस, अवयव, उपस्थेन्द्रिय, अर्द्धमात्रिक अक्षर।

व्यञ्जना (स्त्री०)-शब्द की वृत्तिविशेष

व्यतिकर (पु०)-व्यसन, दुःख, मेल, सम्बन्ध।

व्यतिक्रम (पु०)-उलटा, विपरीत, विपर्यय।

व्यतिरिक्त (वि०)-अधिक, भिन्न, जुदा।

व्यतिरेक (पु०)-विशेष, अभाव, सिवाय, अर्थालङ्कारभेद।

व्यतिहार (पु०)-अदलबदल, परिवर्त्तन

व्यतीत (वि०)-बीता हुआ, गत।

व्यतीपात (पु०)-बड़ा उत्पात, विष्कम्भादि २७ योगों में से एक

व्यत्यय (पु०)-उलटा, उल्लघन, विपर्यय

व्यत्यास (पु०)-पूर्ववत्।

व्यथ् (१ आ०)-भय करना, दुःख का अनुभव करना।

व्यथा (स्त्री०)-पीड़ा, दुःख।

व्यध् (४ प०)-चोट लगाना, ताड़ना।

व्यध्व (पु०)-कुमार्ग, खोटा रास्ता।

व्यपदेश (पु०)-छल, बहाना, नाम, वाक्यभेद।

व्यभिचार (पु०)-भ्रष्टाचार, बुरा चालचलन, न्याय में हेतु का दोषविशेष।

व्यभिचारी [न्] (पु०)-शृंगार रस का भावविशेष, कुमार्गगामी पुरुष

व्यय (पु०)-धनत्याग, खर्च, गमन, विनाश। न०-लग्न से १२वां स्थान

व्यर्थ (वि०)-निष्प्रयोजन, निरर्थक

व्यलीक (न०)-अपराध, असत्य, अप्रिय, कुकर्म, दुःख, ठगना। पु०-नागर। वि०-उस वाला।

व्यवकलन (न०)-वियोग, हीन, बाकी निकालना, कम करना।

व्यवच्छेद (पु०)-पृथक् करना, बाण का छोड़ना, निवृत्ति । [दन, ढकना
व्यवधान (न०)-फक, बीच, आच्छा
व्यवसाय (पु०)-साहस उद्यम, आजीविका, निश्चय करना ।
व्यवस्था (स्त्री०)-शास्त्र से निरूपित विधि, शास्त्रमर्यादा, नियम ।
व्यवस्थित (वि०)-विधिपूर्वक कथित, व्यवस्थापित ।
व्यवहार (पु०)-विवाद, व्यापार, स्थिति, कर्म, वृक्षविशेष ।
व्यवहारिक(वि०)-व्यवहार के योग्य। पु०-इङ्गुदी नामक वृक्ष । [वाला।
व्यवहारी [न्] (वि०)-व्यापार करने
व्यवाय (पु०)-मैथुन, छिपना, शुद्धि ।
व्यसन (न०)-विपत्ति,कष्ट,वध,गिरना।
व्यसनी [न्](वि०)-व्यसनयुक्त,दु खी, बुरे शौक वाला ।
व्यसु (वि०)-मृत, मरा हुआ ।
व्यस्त (वि०)-व्याकुल, घबराया हुआ, बांटा हुआ, विपरीत । न०-नियम का तोड़ना ।
व्याकरण (न०)-वेद का वह अङ्गविशेष जिसके द्वारा शब्दस्वरूप से शब्दों की सिद्धि की जाती है, पाणिनि मुनि आदि प्रणीत अष्टाध्यायी प्रभृतिशास्त्र ।
व्याकुल (वि०)-घबराया हुआ,कित संदेह के ज्ञान से शून्य ।
व्याकोश(वि०)-खिला हुआ,विकसित।
व्याख्या (स्त्री०)-विवरण, टीका, अधिक बयान ।
व्याख्यात (वि०) कथित,कहा हुआ।
व्याघात(पु०)-विष्कम्भादियोगों में से १३वां, विघ्न, रुकावट, चोट, अलङ्कारविशेष ।
व्याघ्र (पु०)-बाघ, भेड़िया, रक्तवर्ण का एरण्ड, करञ्जवृक्ष ।
व्याघ्रपात [द] (पु०)-एक मुनि, विकङ्कतवृक्ष । वि०-व्याघ्र के तुल्य पावों वाला ।
व्याघ्रास्य (पु०)-बिलाव, बिड़ाल । न० भेड़िये का मुख ।
व्याज (पु०)-छल, बहाना, अपदेश ।
व्याजस्तुति(स्त्री०)-बहाने से प्रशंसा, कपटस्तुति, अलङ्कारभेद ।
व्याजोक्ति (स्त्री०)-छल से कथन, अर्थालङ्कारविशेष । [इन्द्र,वञ्चक।
व्याड (पु०)-सर्प, मांसभक्षक पशु,
व्याडि (पु०)-कोषकार एक मुनि ।
व्याप्त (वि०)-फैला हुआ, प्रसृत, विस्तृत । [भील, दुष्ट ।
व्याध(पु०)-मृगहिंसक जाति,शिकारी,
व्याधि (पु०)-बीमारी, रोग, कुष्ठ ।
व्याधित (वि०)-रोगयुक्त, बीमार ।
व्याधु [धू] त (वि०)-कम्पित,हिला हुआ ।
व्यान (पु०)-शरीरस्थ पांच वायुओं में से वह जो सब शरीर में व्यापक है।
व्यापक (वि०)-सर्वत्र में रहने वाला, अधिकदेशवृत्ति ।
व्यापद्(स्त्री०)-आपत्ति,मृत्यु । [ग्रस्त।
व्यापन्न (वि०)-मृत,मरा हुआ,व्यापद्
व्यापाद (पु०)-बुरा चाहना, द्रोह-

चिन्तन। [हुआ।
व्यापादित (वि०)—मारित, मारा
व्यापार (पु०)—व्यवहार, काम, मदद।
व्यापारी [न्] (वि०)—व्यवहारी, व्यवसाय करने वाला, मेहनती।
व्यापी[न्](पु०)—विष्णु। वि०-व्यापक।
व्याप्त (वि०)—सम्पूर्ण, छन्न, भरा हुआ, ख्यात, फैला हुआ।
व्याप्ति (स्त्री०)—शिव का ऐश्वर्य-विशेष, हेतु और साध्य का एकत्र रहना, व्यापन।
व्याप्य (वि०)—व्याप्तियुक्त, फैला हुआ। न०—अनुमिति का साधन।
व्याम-न (पु०)—तिर्यक् भाग में फैलाई हुई दोनों भुजाओं के बीच का नाप अर्थात् व्यौं।
व्यामिश्र(वि०)—मिला हुआ, सम्मिलित
व्यायत(वि०)—लम्बा, चौड़ा, दीर्घ, दृढ।
व्यायाम (पु०)—परिश्रम, कसरत, कुश्ती, दुर्गसञ्चार।
व्याल (पु०)—सर्प, दुष्ट हस्ती, श्वापद, सिंह। वि०-धूर्त, खल।
व्यालग्राह (पु०)—सर्प पकड़नेवाला पुरुष, सपेरा।
व्यालग्राही [न्] (पु०)—पूर्ववत्।
व्यावहारी (स्त्री०)—आपस में चोरी, परस्परहरण। [परस्परहसन।
व्यावहासी (स्त्री०)—आपस की हंसी,
व्यावृत्त (वि०)—वृत्त, घेरा, गोल, रुका हुआ, हटा हुआ। [हटाना।
व्यावृत्ति (स्त्री०)—निवारण, खण्डन,
व्यास (पु०)—विस्तार, गोल के मध्य की रेखा, पराशरपुत्र वेदव्यास, मानभेद, पुराणपाठक ब्राह्मण।
व्यासक्त (वि०)—आसक्त, संलग्न, लगा हुआ।
व्यासङ्ग (पु०)—विशेष आसक्ति, कार्यान्तरों को छोड़ एक ही में लगना। [व्याघात से युक्त।
व्याहत (वि०)-रुद्ध, घबराया हुआ,
व्याहार (पु०)—उक्ति, कहना, वचन।
व्याहृति (स्त्री०)—कथन, वाक्य, उक्ति, मन्त्रविशेष जो 'भूर्भुवः स्वः' आदि सात हैं।
व्युत्थान (न०)—विरोधाचरण, स्वातन्त्र्य होना, नृत्यभेद।
व्युत्पत्ति (स्त्री०)—संस्कार, विशेषोत्पत्ति, शक्तिज्ञान। [विज्ञ।
व्युत्पन्न (वि०)- व्युत्पत्तियुक्त, पण्डित,
व्युदस्त (वि०)--दूर किया हुआ, निराकृत। [करण।
व्युदास (पु०)- अनादर करना, निरा-
व्युप् (१० उ०)- छोड़ना, त्याग करना।
व्युष्ट (वि०)- जला हुआ, दग्ध।
व्यूढ (वि०)—विवाहित, संहत, पृथुल, फैला हुआ, परिहित।
व्यूह (पु०)—समूह, गिरोह, झुण्ड।
व्यो (अ०)—लोहा, धीस का वाचक।
व्योकार (पु०)—लोहकारक, लुहार।
व्योम [न्] (न०)—आकाश, जल।
व्योमकेश (पु०)—शिव, महादेव।
व्योमचारी [न्] (पु०)—देवता, पक्षी, ग्रह, नक्षत्र आदि।
व्योमधूम (पु०)—मेघ, बादल।

व्योमयान(न०)—विमान, आकाशयान।
व्योष (न०)—सोंठ, काली मिर्च और पीपल नामक तीन कटुवस्तु।
व्रज् (१प०)—जाना, गमन करना।
व्रज (पु०)—समूह, मार्ग, गोष्ठ, मथुरा के चारों ओर का देश। न०-गमन।
व्रजनाथ-पाल (पु०)—श्रीकृष्ण।
व्रजाङ्गना (स्त्री०)—गोपी, व्रज की स्त्री।
व्रज्या (स्त्री०)-गमन, पर्यटन, विजय की इच्छा वाले का प्रयाण।
व्रण् (१०उ०)—शरीर पर घाव करना, छेद करना।
व्रण (पु०)—क्षत, घाव, जख्म।
व्रत(न०)—उपवास, नियम, भोजनविशेष
व्रतति-ती (स्त्री०)-लता, बेल, विस्तार।
व्रतादेश (पु०)—उपनयन, यज्ञोपवीत धारण। [ब्रह्मचारी।
व्रती[न्](पु०)—व्रतधारणकर्ता, यजमान,
व्रश्च (६प०) छेदन करना, काटना।
व्रश्चन(पु०)—काटने का साधन, छैनी। न०-काटना, छेदन करना।
व्रात (पु०) समूह, गिरोह, वृन्द।
व्रातीन (पु०)—समुदायजीवी पुरुष, जिस का जीवन समुदाय पर निर्भर हो।
व्रात्य (पु०)-दशसंस्काररहित पुरुष, संस्कारहीन, सावित्री से पतित, पंक्तिबाह्य।
व्रात्यस्तोम (पु०)—संस्कारहीन पुरुषों के करने योग्य एक यज्ञ।
व्रीड् (४प०)-लज्जा करना, शर्म करना।
व्रीडा (स्त्री०)-लज्जा, शर्म। [व्रीड और व्रीडन का भी यही अर्थ है]।
व्रीहि (पु०)--चावल, धान्यमात्र।
व्रीह्यगार (न०)—धान्यगृह, कुठला, कुसूल, खत्ती। [व्रीहिविशेष।
व्रैहेय (न०)—धान्य उपजने का खेत,

श

श (न०)—कल्याण, मंगल, शुभ, शास्त्र। पु०-शिव, शस्त्र।
शंयु(वि०)—शुभान्वित, कल्याण वाला।
शंवर (न०)—जल, पानी। [कथन।
शंसा (स्त्री०)-वाक्य, प्रशंसा, प्रकथा,
शंसित (वि०)—निश्चय किया हुआ, स्तुत, मारा हुआ, कथित।
शंस्य (वि०)—प्रशंसा के योग्य, मारणीय, कहने लायक़,
शक् (१ आ०)-डरना, शक करना। ५ प०-सामर्थ्य होना।
शक (पु०)-एक जाति, देशभेद, शालिवाहन नामक एक राजा।
शकट (स्त्री०)—एक दैत्य जो श्रीकृष्ण द्वारा निहत हुआ, यानविशेष, गाड़ी।
शकटहा [न्] (पु०)--श्रीकृष्ण।
शकल (स्त्री०)—खण्ड, टुकड़ा, कण्टक, तुष का वल्कल, देशविशेष।
शकाब्द (पु०)—शक राजा का प्रचलित किया हुआ संवत, वर्ष।
शकार (पु०)--राजा की अविवाहिता स्त्री का भाई, मद और मूर्खता-भिमानी पुरुष।

शकारि (पु०) -राजा विक्रमादित्य।
शकुन (न०) -भावी शुभाशुभ का सूचक अङ्ग का फड़कना आदि चिन्ह । पु०--पक्षिमात्र, विप्रविशेष । [ज्योतिषी।
शकुनज्ञ(वि०)--शकुन के जानने वाला,
शकुन्त (पु०)--पक्षिमात्र ।
शकुन्तला (स्त्री०)--विश्वामित्र के वीर्य से मेनका अप्सरा में उत्पन्न हुई कन्या,दुष्यन्तराज की पत्नी।
शकुन्ति (पु०)--पक्षिमात्र, जानवर ।
शकृत् (न०)--विष्ठा मल ।
शकृत्करि (पु०) वत्स, बछड़ा ।
शक्क [क्ष] रि (पु०)--वृष बैल ।
शक्करी (स्त्री०)--एक नदी, छन्दोभेद।
शक्त (वि०)--सामर्थ्य वाला, ताकतवर, बलिष्ठ । [का चूर्ण।
शक्तव (पु०)--सत्तू, भुने हुए यवादि
शक्ति (स्त्री०)--देवीभेद, सामर्थ्य, न्यायशास्त्रोक्त वह धर्म जो कारण में रहने वाला और कार्य का उत्पादक है, शब्दस्थ वृत्तिविशेष। पु०--वशिष्ठ जी का ज्येष्ठपुत्र
शक्तिधर (पु०)--कार्त्तिकेय, ग्रह । वि० शक्ति धारण करने वाला ।
शक्तु (पु०)--शक्तव । [प्रियवद ।
शक्नु (वि०)--प्यार से बोलने वाला,
शक्य (वि०)--शक्तिपूर्ण, हो सकने योग्य, सातत्य ।
शक्र (पु०) इन्द्र, देवराज ।
शक्रगोप (पु०) इन्द्रगोप, वीरबहुटी, लाल नामक कीटविशेष ।
शक्रजित् (पु०)--रावण का पुत्र मेघनाद । वि० इन्द्र का जीतने वाला
शक्रधनु (न०)--वह धनुष जो मेघाच्छन्न आकाश में सूर्य की किरणों के सम्पर्क से विचित्र वर्ण का दीख करता है, रामधनुष ।
शक्रनन्दन-सुत (पु०)--अर्जुन,जयन्त।
शक्राणी (स्त्री०)--इन्द्राणी, शची ।
शङ्कर (पु०)--महादेव, शिव । वि०-कल्याण के करने वाला ।
शङ्का (स्त्री०)--त्रास,डर,वितर्क,दलील
शङ्कित (वि०)- भीत, डरा हुआ, विश्वास के अयोग्य, शङ्कायुक्त ।
शङ्कु (पु०)--स्थाणु, खूटा, मत्स्यभेद, शल्यास्त्रविशेष, महादेव, दश करोड़ की संख्या, कलुष, एक राक्षस, सूर्य की छाया के परिमाणार्थ काष्ठनिर्मित १२ अंगुल का एक कीलक, लोहे की कील।
शङ्कुकर्ण (पु०)--गधा, गर्दभ ।
शङ्ख (अस्त्री०)--अपने नाम से प्रसिद्ध वाद्यवस्तु, मस्तक की अस्थिविशेष निधिभेद, एक मुनि, हस्तीके दांत का बीच का हिस्सा, संख्याविशेष । [पुरुष ।
शङ्खध्म (पु०)--शङ्ख बजाने वाला
शङ्खभृत् (पु०)--विष्णु ।
शङ्खिनी (स्त्री०) शङ्खपुष्पी नामक औषध, यवतिक्ता, चार प्रकार की स्त्रियों में से एक ।
शच् (१ आ०) -कथन करना,बोलना
शचि-ची(स्त्री०) इन्द्रपत्नी,इन्द्राणी

शचीपति (पु०)--इन्द्र ।
शद् (१प०)--बीमार होना,भेद करना, जाना, थकना ।
शट (पु०)--खट्टा, अम्ल ।
शटा (स्त्री०)--शेर की जटा ।
शठ् (१० प०)--आलस्य करना, कुवाक्य बोलना, मारना, ठगना, दुःख उठाना ।
शठ (न०)--तगर, केशर, लोह । पु०--धतूरा, धूर्त, मध्यस्थपुरुष ।
शठता (स्त्री०)--माया, शरारत, ठगी, शाठ्य, मूर्खता ।
शण् (१ प०)--देना, दान करना ।
शण (पु०)--सन का वृक्ष, भांग ।
श [प] ण्ड (न०)--कमल आदि का समूह । पु०--नपुंसक, हीजड़ा, वृष ।
शं[प]ण्ढ(पु०)--नपुंसक, हीजड़ा, अन्तःपुररक्षक, ख्वाजा ।
शत (न०)--१०० की संख्या, एकसौ ।
शतकुम्भ (पु०)--वह पर्वत जहां से से सोना निकलता है ।
शतकोटि (पु०)--वज्र, इन्द्र का शस्त्र, हीरा । स्त्री०-१०० करोड़ की संख्या ।
शतक्रतु (पु०)--इन्द्र ।
शतखण्ड (न०)--स्वर्ण, सोना ।
शतग्रन्थि (स्त्री०)--दूर्वा घास ।
शतघ्नी (स्त्री०)--एक शस्त्र, तोप, कण्ठरोगविशेष, बिच्छू ।
शततम (वि०)--१०० की संख्या पूर्ण करने वाला, सौवां । [नक्षत्र ।
शततारा (स्त्री०)--शतभिषा नामक
शतद्रु (स्त्री०) सतलज नदी ।
शतधामा[न्](पु०)--विष्णु, परमात्मा ।
शतधार (न०)--वज्र । वि०-- सौ धार वाला । [ब्रह्मा, स्वर्ग ।
शतधृति (पु०)--इन्द्र, स्वर्गाधिप,
शतपत्र (न०)--पद्म, कमल । पु०--मयूर, सारसपक्षी ।
शतपथ (पु०)--अपने नाम से प्रसिद्ध यजुर्वेदीय एक ब्राह्मणग्रन्थ ।
शतपथिक (वि०)--अनेक मतावलम्बी, बहुत मतों पर चलने वाला, शतपथ का पढ़ने या जानने वाला ।
शतपर्वा (स्त्री०)--शुक्राचार्य की पत्नी, दूर्वा, वचा ।
शतपुष्पा (स्त्री०)--सौंफ । [नक्षत्र ।
शतभिषक् [ज्] (स्त्री०)--शतभिषा
शतमख मन्यु (पु०)--इन्द्र ।
शतरूपा (स्त्री०)--ब्रह्मा की पत्नी या कन्या ।
शतह्रदा (स्त्री०)--बिजली, विद्युत् ।
शतानन्द (पु०)--अपने नाम से प्रसिद्ध एक मुनि, जनकराज का पुरोहित, ब्रह्मा, गौतम मुनि, विष्णु ।
शतायुः [स्] (वि०)--एक सौ वर्ष की अवस्था वाला, सौ वर्ष का ।
शत्रु (पु०)--अरि, रिपु, दुश्मन, लग्न से छठा स्थान । वि०--दुःखदायक
शत्रुघ्न (पु०)--सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न दशरथ का कनिष्ठ पुत्र, लक्ष्मण का छोटा भाई ।
शद् (१प०)--काटना, तीक्ष्ण करना, नष्ट करना, गिरना ।
शद्रि (पु०)--मेघ, हस्ती । स्त्री०--

बिजली, खड्ग। [पुत्र, छग्रांग्रह।
शनि (पु०)—छाया के गर्भ से उत्पन्न सूर्य-
शनैः [स्] (अ०)—अद्भुत, धीरे, मन्द २।
शनैश्चर (पु०)—पूर्ववत्।
शप् (१, ४ उ०)—चिल्लाना, प्रतिज्ञा करना, शाप देना, क़सम खाना।
शपथ (पु०)—क़सम, सौगन्द, वाणी से शरीरस्पर्शन।
शपन (न०)—शपथ, क़सम, गाली।
शप्त (वि०)—शाप दिया हुआ, शापग्रस्त। न०—तृणविशेष। [वृक्षमूल।
शफ (न०)—गौ आदि का खुर,
शफर (अक्ली०)—एक प्रकार का मत्स्य।
शब्द् (१० उ०)—बोलना, आवाज़ करना।
शब्द (पु०)—ध्वनि, आवाज़, कर्णेन्द्रिय से ग्राह्य गुण, पदार्थविशेष, अक्षरस्वरूप। [शब्दग्राम।
शब्दग्रह (पु०)—कर्णेन्द्रिय, कान,
शब्दब्रह्म [न्] (न०)—शब्दस्वरूप ब्रह्म, शब्दशास्त्र।
शब्दभेदी-वेधी [न्] (पु०)—अर्जुन, दशरथराज, बाणविशेष, गुदा, स्पर्शेन्द्रिय।
शब्दानुशासन (न०)—शब्द के साधुत्व का द्योतक व्याकरण।
शब्दित (वि०)—बुलाया हुआ, आहूत, आह्वायमान।
शम् (४उ०)—शान्त करना, ख़ामोश होना।
शम (पु०)—शान्ति, भीतर या बाहर के इन्द्रियों का निग्रह, मोक्ष।
शमथ (पु०)—शान्ति, मन्त्री, वज़ीर।
शमन (न०)—शान्ति, हिंसा। पु०—यमराज, मृगविशेष, मटर।
शमनस्वसा [सृ] (स्त्री०)—यमुना नदी।
शमनी (स्त्री०)—रात्रि, रात।
शमल (न०)—विष्ठा, मल, पाप।
शमि-मी (स्त्री०)—छोंक का वृक्ष।
शमी [न्] (वि०)—शान्त, धीर।
शमीगर्भ (पु०)—अग्नि, ब्राह्मण।
श[म्]म्पा (स्त्री०)—विद्युत, बिजली।
शम्ब् (१प०)—जाना, गमन करना।
शम्ब (पु०)—वज्र, इन्द्रशस्त्र। न०—जल, धन, मेघ, वृत्त।
शम्बर (पु०)—एक दैत्य, मृगविशेष, मत्स्य, शैवविशेष, युद्ध, लोध्र, श्रेष्ठ।
शम्बरारि (पु०)—कामदेव, कन्दर्प।
शम्बल (अस्त्री०)—तट, पाथेय, सफ़रख़र्च, मत्सर। [जलकी सीपी।
शम्बु [म्बू] क (पु०)—जलजन्तुविशेष,
शम्भल (पु०)—सम्भल नामक एक नगर जहां कल्कि अवतार का होना पुराणों में वर्णित है।
शम्भु (पु०)—शिव, ब्रह्मा, विष्णु, बुद्धदेव, अग्नि, सफ़ेद आक का वृक्ष, सिद्ध। [सैल।
शम्या (स्त्री०)—युगकीलक, जुए का
शय (पु०)—हाथ, सर्प, निद्रा, शय्या, पण।
शयन (न०)—सोना, निद्रा, शय्या, मैथुन।
शयनीय (न०)—शय्या, खट्वा। [दशी।
शयनैकादशी (स्त्री०)—आषाढशुक्लाएका-
शयालु (वि०)—निद्राशील, सोने वाला।
शयित (वि०)—सुप्त, सोया हुआ।
शय्या (स्त्री०)—बिस्तरा, धारण है,

आसन, निद्रा, कीच।
शय्यागत (वि०)–सोया हुआ, बिस्तर पर लेटा हुआ।
शय्यागृह (न०)–सोने का कमरा।
शय्याध्यक्ष (पु०) राजशय्या, गृह का अध्यक्ष।
शर (पु०)–तीर, बाण, सफेद मूंज, मलाई, चोट, ५ का अङ्क। न० जल।
शरज(न०)–ताज़ा घी। पु०-कार्त्तिकेय।
शरट (पु०)–कृकलास, करकेंटा।
शरण (न०)–सहायता, रक्षा, बचाव, रक्षास्थान।
शरणागत-पन्न(वि०)–शरण में आया हुआ, सहायता मांगने वाला।
श[स]रणि-णी (स्त्री०)–पृथ्वी, रास्ता।
शरण्ड (पु०)–पक्षी, करकेंटा, ठग।
शरण्य (वि०)–शरण देने योग्य। न०–शरण, रक्षास्थान, बचाव।
शरण्यु (पु०)–रक्षक, बादल, वायु।
शरत्काल(पु०)–आश्विन और कार्त्तिक
शरद् (स्त्री०)–संवत, वर्ष, आश्विन और कार्त्तिकमाससम्बन्धी ऋतु।
शरधि (पु०)–तरकस, तूण।
शरभ (पु०)–एक प्रकार का आठ पांव का कल्पित मृग, एक बन्दर, हाथी का पोता।
शरभू (पु०)–कार्त्तिकेय।
श[स]रयु-यू(स्त्री०)–एक नदी जिस के किनारे पर अयोध्या नगरी है।
शरल=सरल।
शरलक (न०)–जल, पानी।
श[स]रव्य (न०)–लक्ष्य, निशाना।
शरारु (वि०)–शरीर, बदमाश, नुकसान पहुंचाने वाला।
शरारु (पु०)–धनुष्, कमान।
शराव (अस्त्री०)–प्याला, कुज्जा, दही का एक पात्र, कुडव।
शरावती (स्त्री०)–एक नदी, एक नगरी
शराश्रय (पु०)–तूण, तरकस।
शरिमा [मन्] (पु०)–उत्पन्न करना।
शरीर (न०)–देह, जिस्म, शारीरिक-शक्ति, शव। [पु०-आत्मा।
शरीरक (न०)–छोटा शरीर, शरीर,
शरीरज (पु०)–रोग, कामदेव।
शरीरदण्ड (पु०)–शारीरिक दण्ड।
शरीरपतन-पात=मृत्यु, जीव और देह का अलग होना।
शरीरभाक्(पु०)–सदेह, जीव, जानदार।
शरीरयष्टि (स्त्री०)–हड्डियों का पिञ्जरमात्र, दुबला आदमी।
शरीरयात्रा (स्त्री०)–जीवननिर्वाह।
शरीरसम्पत्ति(स्त्री०)–अच्छी तन्दुरुस्ती।
शरीरी [न्] (वि०) देह वाला, सदेह, जानदार। पु०-शरीरयुक्त वस्तु मनुष्य, सजीव व्यक्ति।
शरु (पु०)–तीर, वज्र, क्रोध।
शर्करा (स्त्री०)–शक्कर, खाड, कंकरी, पथरी, टुकड़ा।
शर्करी (स्त्री०)–नदी, पेटी।
श[स]र्व् (भ्वा०प०)–जाना, मारना, क़त्ल करना।
शर्वर (पु०)–वस्त्रविशेष।
शर्म (पु०)–समूह, शक्ति, ताक़त।
शर्म [न्] (न०)–खुशी, सौख्य,

मरकत, घर। न०-सुख, सुत।
विo--सुखी।
शर्मद(वि०)-सुखदाता। पु० परमात्मा।
शर्मा [न्] (पु०)-ब्राह्मण की उपाधि। [क्षत्रिय की वर्मा, वैश्य की गुप्त और शूद्र की दास उपाधि होती है]। [का नाम।
शर्मिष्ठा (स्त्री०)-ययाति की भार्या
शर्या (स्त्री०)-रात्रि, उंगली।
शर्व (१प०)-जाना, गमन करना, मारना
शर्व (पु०)-शिव, विष्णु।
शर्वर (न०)-अंधेरा। पु० कामदेव।
श[स]र्वरी (स्त्री०)-रात्रि, रात, हल्दी।
शर्वरीश (पु०)-चन्द्रमा, चांद।
श[स]र्वाणी (स्त्री०)-पार्वती, दुर्गा।
शर्वरीक (वि०)-क्रूर, निर्दय। पु०-शठ, बदमाश।
शल् (१ आ०)-हिलना, आन्दोलित होना, ढकना। १ प० जाना दौड़ना
शल (पु०)-भाला।
शलक (पु०)-मकड़ी।
शलग (पु०)-राजा, हाकिम।
शलभ (पु०)-टीड़ी, कीटविशेष, एक असुर।
शलाका (स्त्री०)-खूंटी, कील, पेंसिल, सलाई, तीर, सारिका पक्षी।
शलाट (पु०)-गाड़ी का धामन।
शलाभोलि (स्त्री०)-ऊंट, ऊंट।
शल्क शकल(न०)-वृक्ष की छाल, भाग, टुकड़ा।
शल्कली-ल्की [न्] (पु०)-मछली।
शल्भ् (१ आ०)-तारीफ करना।
शल्य (न०)-भाला, तीर, बाण, कांटा, खूंटी, कील।
शल्ल् (१ प०)-जाना, हरकत करना।
शल्ल (न०)-छाल, वल्कल।
शल्व (पु०)-देशभेद, शाल्व।
शव् (१ प०)-जाना, पास पहुंचना, बदलना।
शव (अस्त्री०)--जीवरहित देह, मुर्दा शरीर। न०-जल।
शवदाह (पु०)-अन्त्येष्टि कर्म।
शवयान-रथः=मुर्दा ले जाने की गाड़ी
शवर=सवर।
शवसान (पु०)-पथिक, मार्ग। न०-श्मशानभूमि।
शश (पु०)-खरगोश, चन्द्रमा के धब्बे, लोध्रवृक्ष।
शशक (पु०)-खरगोश, वर्णभेद।
शशभृत् (पु०)-चन्द्रमा, चांद।
शशलाञ्छन(पु०)-चन्द्रमा, चांद, कर्पूर।
शशबिन्दु (पु०)-चन्द्रमा, विष्णु।
शशविषाण शृंग (न०)-खरगोश के सींग अर्थात् असम्भव वस्तु।
शशस्थली (स्त्री०)-गंगा और यमुना के बीच का देश, द्वाबा।
शशाङ्क (पु०)-चन्द्रमा चांद, कर्पूर।
शशिनी (स्त्री०)-चन्द्रमा की १६ कलाओं में से एक।
शशिकान्त (पु०)-चन्द्रकान्त मणि। न०-कमल। [शिव का नाम।
शशिभूषण भृत-मौलि शेखर (पु०)-
शशिलेखा (स्त्री०)-चन्द्रकला।
शशी [न्] (पु०)-चन्द्रमा, चान्द।

शश्वत् (अ०)-हमेशा, सर्वदा।
शष् (१ प०)-मारना, घात करना।
शष्कुलि-ली (स्त्री०)-कर्णरन्ध्र, पूरी कचौरी, कर्णरोग। [ताज़ी घास।
श[स]ष्प-स्प(पु०)--प्रतिभाक्षय। न०--
शस् (१ प०)--काटना, मारना। २ प०-सोना।
शसन (न०)--जख्म, वध, मारना।
शस्त (वि०)--प्रशंसित, क्षत, पुनरावृत्त।
शस्ति (स्त्री०)-स्तुति, तारीफ़, स्तोत्र, श्लाघा। [लोहा।
शस्त्र (न०)-तलवार आदि हथियार,
शस्त्रजीवी [न्] (पु०)-शस्त्र से आजीविका वाला पुरुष।
शस्त्रपाणी [न्] (पु०)-वह पुरुष जिस के हाथ में शस्त्र हो, शस्त्रधारी।
शस्त्री [न्] (वि०)-शस्त्र धारण करने वाला, गृहीतशस्त्र।
शस्त्री (स्त्री०)--छुरी, छोटा शस्त्रविशेष
श[ष]स्य (न०)-वृक्षों के फल, क्षेत्र के धान्यादि
शस्यमञ्जरी (स्त्री०)-नवीन धान्यादि की कोमल, कणिश।
शस्यशूक (न०)-धान्य के तूर, धान्य का तीक्ष्णाग्रभाग, किशारु।
शाक (पु०)-वृक्षविशेष, शक्ति, शिरीषवृक्ष, नृपभेद, एक द्वीप। न०-पत्रपुष्पादि, तरकारी। [एक मुनि।
शाकटायन (पु०)-व्याकरण का कर्त्ता
शाकटिक (वि०)-गाड़ी से जानेवाला।
शाकम्भरी (स्त्री०)-दुर्गा, देवीविशेष।
शाकराज (पु०)-वास्तूक, बथुआ।
शाकिनी (स्त्री०)-शाकयुक्तपृथ्वी, दुर्गा की एक अनुचरी। [एक यन्त्र।
शाकुन (पु०)-शुभाशुभ का निश्चायक
शाकुनिक (पु०)-पक्षियों के मारने वाला पुरुष, पक्षिहन्ता।
शाकुनेय (पु०) वृकनामक असुर, छुछुल पक्षिविशेष। वि०-शकुनसम्बन्धी।
शाकुन्तलेय (पु०)-शकुन्तला का पुत्र भरतराज। वि०-शकुन्तलासंबंधी।
शाक्त (वि०)-शक्ति की उपासना करने वाला, शक्त्युपासक। [वाला।
शाक्तीक (वि०)-बरछी से प्रहार करने
शाक्य (पु०)-बुद्धदेव।
शाक्यमुनि-सिंह (पु०)-शाक्यवंश में उत्पन्न हुआ एक मुनि।
शाक्री (स्त्री०)-दुर्गा, शक्रपत्नी।
शाख् (१ प०)-व्याप्त होना, फैलना।
शाख (पु०)-कृत्तिकापुत्र, कार्त्तिकेय का कनिष्ठ भ्राता, गणभेद, राहु, वृष
शाखा (स्त्री०)-टहनी, डाल, ग्रन्थभेद, समीप, प्रकार, तरह।
शाखानगर-पुर (न०)-मूल नगर के समीप का छोटा शहर, पुरवा।
शाखामृग (पु०)-वानर, बन्दर।
शाखारण्ड (पु०)-अपनी शाखा को छोड़ कर शाखान्तर को पढ़ने वाला पुरुष।
शाखी [न्] (पु०)-वृक्ष, एक राजा, वेद का भागविशेष, तुरुष्कीय जन।
शाङ्कर (न०)-छन्दोभेद। पु०-बलीवर्द। वि०-शङ्करसम्बन्धी।
शाङ्करि (पु०)-गणेश, कार्त्तिकेय।

शाट-क(पु०)–वस्त्र,आच्छादन,कपड़ा।
शाटिका-टी (स्त्री०)-वस्त्रभेद, साड़ी, धोती।
शाट्यायन (न०)–वह होम जो प्रकृत होम में किसी प्रकार की हुई विकृति के शमनार्थ किया जाता है। पु० -एक मुनि।
शाठ्य (न०)–शठता,मूर्खता,ढीठपना।
शाण (न०)–सन का बना वस्त्रादि। पु० -कसौटी, रसान, चार मासे की तौल।
शाणित (वि०)-तीक्ष्ण किया हुआ, निशित, शाण पर चढ़ाया हुआ।
शाण्डिल्य (पु०)-बिल्व का वृक्ष, गोत्रप्रवर्त्तक एक मुनि जो भक्ति सूत्र का निर्माता है, अग्निभेद।
शात (न०) सुख। वि०-तीक्ष्णीकृत।
शातकुम्भ (न०)-स्वर्ण,काञ्चन,सोना पु०-धतूरा, कनेर का वृक्ष।
शातन (न०) सूक्ष्म करना, तनूकरण, कार्श्य, विनाशन। वि०-छेदक।
शात्रव (न०)-शत्रुसमूह, शत्रुता, दुश्मनी। वि०--शत्रुसम्बन्धी।
शाद (पु०)–कीचड़,कर्दम,नवीनघास।
शादहरित (पु०)-नवीन घास से हरित वन का प्रदेश।
शाद्वल (पु०)-बहुत सी नई घास वाला देश, नवीनतृणबहुलप्रदेश।
शान् (१प०)–काटना, भेदन करना।
शान (पु०)=शाण।
शान्त (पु०)–एक रस। वि०–शान्ति-युक्त, शम वाला।
शान्तनव (पु०)–शान्तनु की सन्तान, भीष्मपितामह।
शान्तनु(पु०)–द्वापरयुग का चन्द्रवंशीय एक राजा,भीष्म का पिता।
शान्ता (स्त्री०)–दशरथराज कन्या, ऋष्यशृङ्ग की भार्या, शमीवृक्ष।
शान्ति (स्त्री०)--चित्त का उपशम, काम क्रोधादि का जीतना,विषय-वासना से चित्त का अवरोध।
शाप (पु०)-आक्रोश, बुरा वाक्य कहना, शपथ, क़सम।
शापास्त्र (पु०)–मुनि, शान्तजन।
शाब्द (वि०) शब्द से उत्पन्न हुआ, शब्दसम्बन्धी।
शाब्दबोध (पु०)--वह ज्ञान जो शब्द के अर्थ से उत्पन्न हुआ हो, पदार्थज्ञान से उत्पन्न ज्ञान।
शाब्दिक (पु०)-शब्दशास्त्र का वेत्ता, वैयाकरण। [का स्थान।
शामित्र (न०)-एक यज्ञ, पशुबन्धन
शाम्बरी (स्त्री०) -शम्बर दैत्य की रची इन्द्रजालादि माया।
शाम्भव (पु०)-कर्पूर, शम्भुपुत्र गणेशादि, शिवोपासक, एक विष, गूगल। वि०--शम्भुसम्बन्धी। न० -देवदारु।
शाम्भवी (स्त्री०)–दुर्गा।
शायक (पु०)–बाण, तीर, तलवार।
शार (न०)–विचित्र वर्ण, रंगबिरंग। वि०–विचित्र रंग वाला। पु०–वायु, हिंसन।
शारंग (पु०)–मयूर,चातक,मृग,हस्ती,

भ्रमर। वि०-विचित्रवर्णयुक्त।
शारंगी(स्त्री०)—सरंगीनाम का बाजा।
शारद (न०)—सफ़ेद कमल, शस्य। पु०-बगुला, काश तृण, पीली या हरी मूँग, संवत्, एक रोग।
शारदा (स्त्री०)—सरस्वती, वीणाविशेष, ब्राह्मी।
शारदिक (न०)—शरत्कालसम्बन्धी श्राद्ध। पु०-उस काल का रोग, आतप, धूप।
शा[सा]रि-का(स्त्री०)-पक्षिविशेष,मैना पाशक आदि की गोली। [पटड़ा।
शारिफल (अस्त्री०)—पासा खेलने का
शारीर (न०)—सुश्रुतग्रन्थ का एक भाग, वेदव्यासकृत एक वेदान्त ग्रन्थ। वि०-शरीर से उत्पन्न होने वाला। पु०-वृष, जीव।
शारीरिक (वि०)—शरीरसम्बन्धी,गात्रिक,शरीरोत्पन्न [सुख दुःखादि]।
शारुक (वि०)-हिंसक, मारनेवाला।
शार्कर (पु०)—दूध के झाग, पथरीली जगह। वि०-शर्करायुक्त।
शार्ङ्ग (न०)—विष्णु का धनुष,धनुर्मात्र।
शार्ङ्गी [न्] (पु०)—विष्णु।
शार्दूल (पु०)—व्याघ्र, भेड़िया, एक राक्षस, पशुभेद।
शार्दूलविक्रीडित(न०)- उन्नीस अक्षरों के पादयुक्त एक छन्द। [रात्रिका।
शार्वर (न०) -बहुत अन्धकार। वि०-
शाल् (१प०)--कथन करना, कहना।
शाल(पु०)--मत्स्यभेद,एक वृक्ष,प्राकार।
शालग्राम (पु०)- विष्णु की मूर्त्तिविशेष, एक क्षेत्र, पर्वतभेद।
शालनिर्यास (पु०)--साल के वृक्ष का गोंद, सर्जरस। [पुतली, वेश्या।
शालभञ्जिका (स्त्री०)--काष्ठ की बनी
शाला (स्त्री०)--घर, गृह, गृहकोण, वृक्ष के स्कन्ध की डाली।
शालामृग(पु०)--गीदड़, शृगाल।
शालावृक (पु०)--मृग, कुत्ता, शृगाल, वानर, बिलाव।
शालि (पु०)--गन्धमार्जार, चावल आदि धान्यविशेष।
शालिवाहन (पु०)--एक राजा जो विक्रमादित्य का शत्रु और शक संवत् का प्रवर्त्तक कहा जाता है।
शालिहोत्र (पु०) -अश्व, घोड़ा।
शाली (स्त्री०)--काला जीरा।
शालीन(वि०)--धृष्ट, निर्लज्ज, बेशर्म।
शालु(न०)--कपैलाद्रव्य। पु०--मेंढक।
शालोत्तरीय (पु०)--पाणिनि मुनि।
शाल्मल-लि (पु०)--शाल्मली का वृक्ष; एक द्वीप।
शाल्व (पु०)--एक देश का नाम।
शाव (पु०)--शिशु, बालक, बच्चा। वि०--शवसम्बन्धी।
शावक (पु०)—बालक, शिशु।
शावर (पु०)—अपराध,पाप, लोध्रवृक्ष, शवरस्वामिकृत एक भाष्य,शिवकृत तन्त्रविशेष। वि०-शवर का।
शावरी (स्त्री०)—भीलनी, एक प्रकार की विद्या, शूकशिम्बी।
शाश्वत (वि०) नित्य,हमेशा,सतत। पु०-व्यास, शिव।

शास् (१ प०)–पूछा करना, तारीफ़ करना [इस धातु के पूर्व विशेष कर 'आङ्' उपसर्ग रहता है]। २ आ०–आशीर्वाद देना। २ प०–आज्ञा करना, शासन करना।
शासन (न०)–शिक्षा देना, आज्ञा, हितसाधन में लगाना, निदेश।
शासनहर (पु०)–दूत, क़ासिद।
शासित (वि०)–शिक्षित, उपदेश किया हुआ। [उपदेष्टा।
शासिता [तृ] (वि०)–शिक्षा देनेवाला,
शास्ता [तृ] (पु०)–राजा, पिता, उपाध्याय। वि०–शासनकर्त्ता।
शास्त्र (न०)–हितोपदेशक ग्रन्थ, पुस्तक, निदेश। [कर्त्ता।
शास्त्रकृत (पु०)–ऋषि। वि०–शास्त्र-
शास्त्रचक्षुः [स्] (न०)–व्याकरण।
शास्त्रज्ञ-वित् (वि०)–शास्त्र का जाननेवाला, शास्त्रवेत्ता।
शास्त्री [न्] (वि०)–पूर्ववत्।
शास्त्रीय(वि०)–शास्त्र में कहा हुआ, शास्त्रप्रतिपादित। [शिक्षणीय।
शास्य (वि०)–शिक्षा करने योग्य,
शि (१ उ०)–छेदन करना, काटना।
शिंशपा (स्त्री०)–शीशों का पेड़।
शिक् [च] (स्त्री०)–शिक्य, छींका।
शिक्थ (न०)–मोम, मधूच्छिष्ट।
शिक्य(न०)=शिक्। [करना।
शिक्ष् (१ आ०)–सीखना, अभ्यास
शिक्षक(वि०)–शिक्षा देने वाला, पाठक।
शिक्षण (न०)–विद्या ग्रहण करना।
शिक्षा (स्त्री०)–सीखना, वेदाङ्ग शास्त्रविशेष, पथ, अभ्यास, विद्या।
शिक्षाकर (पु०)–व्यास। वि०–शिक्षा करने वाला।
शिक्षागुरु(पु०)–विद्या देने वाला गुरु।
शिक्षित (वि०)–शिक्षा दिया हुआ, विज्ञ। [चूड़ा, चोटी।
शिखण्ड (पु०)–मयूर की पिच्छ,
शिखण्डक (पु०)–कौवे का पर, पट्टे, काकपक्ष।
शिखण्डिक (पु०)–कुक्कुट, मुर्ग़ा।
शिखण्डी [न्] (पु०)–मोर, द्रुपद-राज का पुत्र, बाण, विष्णु, शिव, मुर्ग़ा।
शिखर(अस्त्री०)–पर्वत की चोटी, वृक्ष का अग्रभाग, शिर, सिरा, अन्त।
शिखरवासिनी (स्त्री०)–दुर्गा।
शिखरिणी (स्त्री०)–छन्दोभेद, उत्त-माङ्गना, रोमावली।
शिखरी [न्] (पु०)–पर्वत, वृक्ष।
शिखा (स्त्री०)–चोटी, चूड़ा, अग्नि की ज्वाला।
शिखाकन्द (न०)–गृञ्जन, गाजर।
शिखिध्वज (पु०)–धूआ, धूम।
शिखिवाहन (पु०)–कार्त्तिकेय।
शिखी [न्] (पु०)–मोर, अग्नि, तीर, मुर्ग़ा, केतुग्रह, अश्व, दीपक, मेधी। वि०–शिखा वाला।
शिग्रु (पु०)–सहिंजने का वृक्ष।
शिङ्घ्(१ प०)–सूँघना, गन्धग्रहण करना
शिङ्घाण (न०)–नासिकामल, लोहे का मल, काचपात्रविशेष। पु०–श्लेष्मा, कफ।

शिंज् (१०उ०)–अस्फुट शब्द करना ।

शिञ्जा(स्त्री०)–गहने की आवाज़, आभूषणों का शब्द, धनुष् का चिल्ला ।

शिञ्जिनी (स्त्री०)–धनुष का चिल्ला, नूपुर, बिछवे नामका ज़ेवर ।

शित (वि०)–दुर्बल, कृश, तीक्ष्णीकृत, तेज़ किया हुआ । पु०–विश्वामित्रगोत्रीय एक ऋषि ।

शितशूक (पु०)–यव, जौ, गोधूम ।

शिति (पु०)–भोजपत्र का वृक्ष, श्वेत और काला रंग । वि०–उस रंग वाला । [विशेष ।

शितिकण्ठ (पु०)--शिव, दात्यूहपक्षि-

शिथिल (वि०)--श्लथ, ढीला, ढीले प्रयोग वाला, मन्द, मूर्ख । न०--मन्दबन्धन । [सात्यकि का नाना ।

शिनि (पु०)--यदुवंशीय एक क्षत्रिय,

शिपि (पु०)--रश्मि, किरण, जल ।

शिपिविष्ट(पु०)--शिव, विष्णु, दुश्चर्मा

शिप्र (न०)–एक झील जिससे शिप्रा नदी निकली है । [एक नदी ।

शि [सि] प्रा (स्त्री०)–उज्जैनप्रान्त में

शिफाकन्द(पु०)–कमलके पुष्पकी जड़ ।

शिरः[स्] (न०)--मस्तक, शिर, शिखर ।

शिरःफल(पु०)–नारिकेल, नारियल ।

शिरःशूल(न०)-शिर का दर्द, शिरःपीड़ा ।

शिरज(पु०)–शिर के बाल, केश ।

शिरसिज-रोरुह्-ह(पु०)–पूर्ववत् ।

शिरस्क (न०)-शिरस्त्राण, पगड़ी, दुपट्टा, टोपी ।

शिरस्त्र(न०)–पूर्ववत् ।

शिरा (स्त्री०)–नाड़ी, नस ।

शिराल(वि०)–शिरायुक्त, नाड़ीवाला ।

शिरीष(पु०)–सिरस का वृक्ष ।

शिरोगृह (न०)–ऊपर का घर, चन्द्रशाला, अटारी । [नाड़ ।

शिरोधरा-धि(स्त्री०)–ग्रीवा, गर्दन,

शिरोमणि(पु०)–चूड़ामणि ।

शिरोवेष्ट(पु०)–पगड़ी, दुपट्टा ।

शिल् (६ प०)–सिल्ला बीनना, एक २ दाना चुगना ।

शिल(अस्त्री०)–उञ्छ, सिल्ला, खेत का अन्न काटे जाने के पश्चात् एक२ दाना चुगना, पत्थर ।

शिला(स्त्री०)–सिल, पत्थर, द्वार के नीचे रक्खा लकड़ी का टुकड़ा ।

शिलाकुट्टक-भेद(पु०)–टांकी, टङ्क ।

शिलासार(न०)–लोहा । [धातु ।

शिलाह्व(न०)–शिलाजीत नामक उप-

शिलि(पु०)–भूर्जपत्र का वृक्ष, दरवाज़े का काष्ठविशेष ।

शिलीन्ध्र(न०)–केले का पुष्प, गोमयछत्रिका, डाल । पु०–मत्स्यविशेष ।

शिलीमुख (पु०)–भ्रमर, भौंरा, बाण, तीर, युद्ध ।

शिलोच्चय(पु०)–पर्वत, पहाड़ ।

शिलोञ्छ (पु०)–अन्न ग्रहण किये हुए खेत में से अवशिष्ट अन्न का चुगना ।

शिलौकाः[स्] (पु०)–गरुड़ ।

शिल्प(न०) कारीगरी, कल बनाने की विद्या, हुनर ।

शिल्पकार(पु०)–कारीगर ।

शिल्पकारी [न्] (वि०)–मूर्ति आदि के बनानेवाला, शिल्पकर्मकर्ता ।

शिल्पशाला (स्त्री०)-कारीगरों का घर, मूर्त्ति बनाने वालों का गृह ।
शिल्पी [न्] (वि०)-कारीगर ।
शिव (न०)-सुख, मङ्गल, जल, समुद्र-लवण, सफेद सुहागा । पु०-महादेव, वेद, गूगल, पारा, देवता, २०वां योग, काले रंग का धतूरा, लिङ्ग ।
शिवक (पु०)-कीलक, खूंटा, वह कीलक जो गोष्ठ में गौओं के खुजलाने के लिये गाड़ा जाता है ।
शिवचतुर्दशी (स्त्री०)-शिवप्रिया चतुर्दशी, फाल्गुनकृष्णा चतुर्दशी ।
शिवदूती (स्त्री०)-दुर्गा की मूर्त्तिविशेष ।
शिवद्रुम (पु०)-बिल्ववृक्ष ।
शिवधातु (पु०)-पारद, पारा ।
शिवपुरी (स्त्री०)-काशी, बनारस ।
शिवप्रिय (न०)-रुद्राक्ष । पु०-धतूरा ।
शिवप्रिया (स्त्री०) पार्वती, दुर्गा ।
शिवरात्रि (स्त्री०)-माघ के शुक्ल और फाल्गुन के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी ।
शिवलिंग (न०)-शिव की लिंगाकार पूजनार्थ पत्थर की बनाई मूर्त्ति ।
शिवबीज (न०)-पारा, पारद ।
शिवशेखर (पु०)-चन्द्रमा, धतूरा ।
शिवा (स्त्री०)-पार्वती, गीदड़, सौभाग्यवती स्त्री, मुक्ति, दूर्वाघास, हल्दी, आमलक ।
शिवानी (स्त्री०) पार्वती, गौरी ।
शिवालु (पु०)-गीदड़, शृगाल ।
शिवि [वि] का (स्त्री०)-पालकी, डोली । [मिमानिवेश, पड़ाव ।
शिवि [वि] र (न०)-छावनी, कैम्प,

शिशिर (वि०)-ठण्डा, सर्द । पुस्त्री०-ओस, शबनम, माघ और फाल्गुन मास । [ऋतुविशेष ।
शिशिरकाल (पु०)-सर्दी का मौसम,
शिशु-क (पु०)-बच्चा, सद्योजात बालक, शिष्य, आठ या सोलह वर्ष का बालक ।
शिशुमार (पुं०)-सूस नामक जलजन्तु ।
शिश्न [स्न] (न०)-उपस्थेन्द्रिय ।
शिश्विदान (वि०)-शुद्धाचारी, क्रूर ।
शिष् (१ प०)-मारना, क़त्ल करना । १प०, १० उ०-बाकी रहना, अवशिष्ट रहना ।
शिष्ट (वि०)-छोड़ा हुआ, आदिष्ट, शिक्षित, पालतू, बुद्धिमान्, शरीफ़ ।
शिष्टाचार (पु०)-सुव्यवहार, शरीफ़ाना बर्त्ताव ।
शिष्टि (स्त्री०)--आदेश, सज़ा, नियम ।
शिष्य (पु०)-चेला, शागिर्द, क्रोध, उद्धतता ।
शी (२ आ०)-लेटना, आराम करना, सोना । स्त्री०-नींद, आराम ।
शीक् (१आ०)-तरकरना, धीरे चलना । १ प०, १० उ०-क्रुद्ध होना, चमकना, बोलना, तर करना ।
शीकर (पु०)-बौछार, बूंदाबांदी । न०-सरलवृक्ष ।
शीघ्र (वि०)-तेज़, तीव्र ।
शीघ्रचेतन (पु०)-कुत्ता, कुक्कुर ।
शीघ्रम् (अ०)-जल्दी से, फ़ौरन ।
शीत (वि०)-ठण्डा, सर्द, सुस्त, निद्रालु, मन्द । पु०-निम्बवृक्ष

अस्त्री०-शिशिर ऋतु। न०-ठंडक, जल, पानी।
शीतकर (पु०)-चन्द्रमा, कर्पूर।
शीतकाल (पु०)-मौसमसर्मा, जाड़ा।
शीतल (वि०)-ठण्ढा, सर्द। पु०-चन्द्रमा, कपूरभेद, चम्पकवृक्ष। न०-ठण्ढक, शीतकाल, सफेद चन्दन, मोती, कमल।
शीतला-ली (स्त्री०)-चेचक रोग।
शीतांशु (पु०)-चन्द्रमा, कर्पूर।
शीताद्रि (पु०)-हिमालय पर्वत।
शीतार्त-आकुल(वि०)-ठंढ से व्याकुल।
शीतालु (वि०)-ठण्ढ के कारण, कांपता हुआ।
शीन (पु०)-अजगर, महामूर्ख।
शीभ् (१आ०)-शेखी मारना, बोलना।
शीम्य (पु०)-सांड़, शिव।
शी [मी]र (पु०)-बड़ा सांप, अजगर।
शीर्ण (वि०)-सड़ा हुआ, सूखा हुआ, फटा हुआ, दुबला, पतला।
शीर्यि (वि०)-नाशकारी, संहारकार।
शीर्ष (न०)-शिर, मस्तक।
शीर्षक (पु०)-राहु। न०-शिर, खोपड़ी, चोटी, टोपी, फ़ैसला, कुचन, लेख का हेडिंग।
शीर्षण्य (पु०)-साफ़बाल। न०-कलगी, टोपी।
शील् (१ प०)-सोचना, सेवा करना, पूजना, मनन करना। १० उ०-पूजना, बार २ करना, चिन्तन करना, पहरना। [अनु और परि उपसर्ग के लगा देने से इस धातु का अर्थ बार २ सोचना या करना होता है]।
शील (पु०)-अजगर। न०-नियत, खसलत, आदत, अच्छा स्वभाव, अच्छी सूरत। [सदाचार का भंग।
शीलखण्डन (न०)-सतीत्वनाश,
शीलन (न०)-बार २ करना, स्वाध्याय, पहिरना।
शीलवृत्ति (स्त्री०)-सदाचार, नेकी।
शीलित (वि०)-पहिरा हुआ, अमल किया हुआ।
शुंशुमार (पु०)-मकरभेद, सूंस।
शुक (पु०)-तोता, शिरीषवृक्ष, व्यासपुत्र। न० वस्त्र, कलगी, पगड़ी।
शुकदेव (पु०)-व्यासपुत्र का नाम।
शुकवल्लभ-मदन(पु०)-अनार का पेड़।
शुक्त (वि०)-चमकीला, साफ़, खारा, कठोर। न०-मांस।
शुक्ति(स्त्री०)-सीप, घोड़े की अयाल।
शुक्तिबीज (न०)-मोती।
शुक्र (पु०)-एक ग्रह, असुरों का आचार्य, ज्येष्ठमास, अग्नि, चित्रकवृक्ष। न०-वीर्य, शक्ति।
शुक्रल-क्रिय(वि०)-वीर्यवर्धक, वीर्ययुक्त
शुक्रवार-वासर (पु०)-गुरुवार से अगला दिन, जुम्मा।
शुक्ल (वि०)-सफ़ेद, श्वेत। पु०-श्वेतता, चान्द्रमास का अन्तिम आधा भाग, शिव। न०-चांदी, नोनी घी।
शुक्लधातु (पु०)-खड़िया, चाकमिट्टी।
शुक्लपक्ष (पु०)-चान्द्रमास का

अन्तिम अर्द्धांश जिस में चन्द्रमा प्रकाशित होता है।

शुक्ला (स्त्री०)–सरस्वती, खांड, काकोली वृक्ष।

शुक्लिमा[न्](वि०)–श्वेतता, सफ़ेदी।

शुक्ति (पु०)–वायु,रोशनी, अग्नि।

शुंग (पु०)–बटवृक्ष के अंकुर।

शुच् (१ प०)–दुःखी होना, रंज करना, सोच करना, पछताना। ४ उ०-चमकना, स्वच्छ होना, तर होना, मुर्झाना, दुःखीहोना।

शुच्–चा (स्त्री०)–दुःख,कष्ट, सोच।

शुचि (वि०)–स्वच्छ, साफ़, सफ़ेद, पवित्र। पु०-पवित्रता, नेकी, ब्राह्मण, ग्रीष्म ऋतु,शृंगार, चीते का पेड़,शिव,आक का पेड़।

शुचिष्मान् [मत्] (वि०)–चमकीला। पु०-अग्नि।

शुचिस् (पु०)–चमक, रोशनी।

शुटीर (पु०)–वीर, योद्धा।

शुठ् (१ प०)–लंगड़ाना, रोकना। १० उ०-सुस्त होना,मन्द पड़ना।

शुण्ठ् (१ प०, १०उ०)–पवित्र करना, सूखना।

शुण्ठि-ण्ठी(स्त्री०)–सोंठ,सूखा अदरक।

शुण्ठ्य (न०)=शुण्ठी।

शुण्ड् (१ प०)–तोड़ना,दिक़ करना।

शुण्ड(पु०)–हाथी की सूंड,हस्तिमद।

शुण्डा (स्त्री०)–हाथी की सूंड, कमल की दण्डी, वेश्या, कुटनी, सराय।

शुण्डाल (पु०)–हाथी, गज।

शुण्डी[न्](पु०)–हाथी,साफ़ करनेवाला

शुद्ध (वि०)–पवित्र, स्वच्छ, साफ़, बेदाग़,निर्दोष, श्वेत,यथा,केवल, सादा।

शुद्धदन्त (पु०)–गधा, गर्दभ।

शुद्धधी-भाव-मति (वि०)–साफ़दिल, ईमानदार, अकुटिल।

शुद्धात्मा (वि०)–शुद्धान्तःकरण।

शुद्धान्त (पु०)–अन्तःपुर, हरम।

शुद्धान्ता (स्त्री०)–राजमहिषी,बेगम।

शुद्धि (पु०)–पवित्रता, सफ़ाई, चमक, शोभा, ग़लती की दुरुस्ती।

शुद्धिकर (वि०)–शुद्धि करने वाला।

शुद्धिपत्र (न०)–ग़लतनामा।

शुद्धोदन (पु०)–गौतमबुद्ध का पिता।

शुध् (४प०)–साफ़ होना, शुद्ध होना, शुभ होना।

शुनक (पु०)–कुत्ता, एक ऋषि।

शुनाशी [सी]र (पु०)–इन्द्र, उल्लू।

शुनि (पु०)–कुत्ता, कुक्कुर।

शुनी (स्त्री०)–कुतिया, कुक्कुरी।

शुन्ध्(१०उ०)–साफ़ होना,शुद्ध करना।

शुन्ध्यु(पु०)–वायु, हवा। स्त्री०-घोड़ी।

शुभ् (१आ०)–चमकना, खुश होना, सुन्दर दिखलाई देना।

शुभ (वि०)–चमकीला, सुन्दर, मंगलकर। न०-मंगल, सौभाग्य, आभूषण, जल।

शुभ [ङ्क] कर (वि०)–मंगलकर, शुभदायक।

शुभकर्म (न०)–अच्छा काम।

शुभवार्त्ता (स्त्री०)–अच्छा समाचार।

शुभंयु (वि०)–मंगलकर, खुशक़िस्मत।

शुभा (स्त्री०)-दूर्वा घास,वंशलोचन।
शुभांग (वि०)-खूबसूरत, सुन्दर।
शुभाचार (वि०)-नेक, अच्छा।
शुभानना(स्त्री०)-सुन्दर मुख वाली स्त्री
शुभाशुभ (न०)-नेकीबदी, अच्छा-बुरा, सुखदुःख।
शुभ्र (वि०)-चमकदार, श्वेत। न०-चांदी। पु०-चन्दन,चन्दन।
शुभ्रा (स्त्री०)-गङ्गा नदी, मणि।
शुभ्रांशु भकर (पु०)-चन्द्रमा, चांद।
शुंभ् (१प०)-चमकना,बोलना,मारना।
शुंभ(पु०)-एक दैत्य का नाम। [होना।
शु [शू] र् (४आ०)-मारना, मज़बूत
शुल्क् (१०उ०)-देना, अदा करना, पैदा करना, कहना, त्यागना।
शुल्क (अस्त्री०)-टैक्स, चुंगी, प्राप्ति, क़ीमत, दहेज़।
शुल्कग्राहक-ग्राही (पु०)-महसूल इकट्ठा करनेवाला। [पैदा करना।
शुल्ब्-ल्ब् (१० उ०)-देना, त्यागना,
शुल्ब-ल्ब (न०)-रस्सा,तांबा,क़ायदा।
शुश्रू (स्त्री०)-माता।
शुश्रूषक (पु०)-अनुचर, नौकर।
शुश्रूषणं-षणा=शुश्रूषा।
शुश्रूषा (स्त्री०)-सुनने की इच्छा, सेवा, कथन, आदर, टहल।
शुष्(४प०)-सूखना,मुर्झाना,दुःखी होना
शुषिर (वि०)-सूराख़दार। पु०-अग्नि, चूहा।
शुषिल (पु०)-वायु, हवा।
शुष्क (वि०)-सूखा, सूखा हुआ, थका हुआ, निरर्थक, बेबुनियाद।
शुष्ककलहः-वैरम्=निरर्थक शत्रुता।
शुष्कमांस (अस्त्री०)-सूखा हुआ मांस।
शुष्ण (पु०)-सूर्य, अग्नि।
शुष्म (पु०)-सूर्य, अग्नि, वायु। न०-शक्ति, प्रकाश।
शूक (अस्त्री०)-जौ, यव, शिखा।
शूकर (पु०)-सूअर, वराह।
शू[सू]क्ष्म(वि०)-अल्प,थोड़ा,अस्पष्ट। पु०-अध्यात्मा। [पादज।
शूद्र (पु०)-चतुर्थवर्ण, अन्तिमवर्ण,
शूद्रप्रिय (पु०)-पलाण्डु, प्याज़।
शूद्रकर्म [न्] (न०)-शूद्रों का कर्त्तव्य, सेवादि काम। [जाति की स्त्री।
शूद्रा (स्त्री०)-शूद्र की भार्या, शूद्र-
शूद्रावेदी [न्](पु०)-शूद्रजाति की स्त्री से विवाह करने वाला पुरुष।
शूद्री-द्राणी (स्त्री०)-शूद्र की भार्या।
शून (वि०)-वर्द्धित, सूजा हुआ।
शूना (स्त्री०)-प्राणियों के वध का स्थान, क़साईख़ाना।
शूनावान् [वत्] (पु०)-हिंसा करने वाला, क़साई।
शू[शु]न्य(न०)-आकाश, बिन्दु,नुक्ता वि० अभावयुक्त, रिक्त, ख़ाली, निर्जन, तुच्छ। [नास्तिक।
शून्यवादी [न्] (पु०)-बौद्धविशेष,
शून्यालय (पु०)-निर्जनगृह।
शू[सू]पकार(पु०)-पाचक,शूद्रपाचक, शूद्रपाकोपजीवी।
शू[सू] र (पु०)-वीर, बहादुर, एक यादव जो श्रीकृष्ण का दादा था, सूर्य, सिंह, एकमत्स्य, शूकर।

शूरसेन (पु०)—देशविशेष, यदुपति ।
शूर्प् (१० उ०)—नापना, माप करना ।
शूर्प (पु०)—छाज, धान्यादि मापने का साधनविशेष ।
शूर्पकर्ण (पु०)—हस्ती, गज ।
शूर्पणखा (स्त्री०)—रावण की बहिन ।
शूर्मः र्मि·-र्मी=लोहेकीप्रतिमा।[होना
शूल् (१ प०)—रोगी होना,बड़ी पीड़ा
शूल (अस्त्री०)—वह रोग जिस से उदर में सुई चुभने की सी पीड़ा होती है, बरछा, त्रिशूल, लोह-कील, एक मुनि, एक योग ।
शूलद्विट् [ष्] (पु०)—हिङ्गु, हींग ।
शूलधन्वा [न्](पु०)—शिव, महादेव ।
शूलधर धारी [न्] (पु०)—पूर्ववत् ।
शूलधारिणी (स्त्री०)—पार्वती, दुर्गा ।
शूलाकृत (न०)—लोह आदि की शलाका से बींध कर पकाया हुआ मांस । [युक्त।
शूलिक (पु०)-खरगोश । वि०-शूल-
शूली [न्] (पु०)-शिव । वि०-शूल रोग वाला ।
शूल्य (न०)=शूलाकृत ।
शृगाल (पु०)—गीदड़, गोमायु, दैत्य विशेष,नीच,निर्दय,भीरु,वासुदेव।
शृगालिका-ली (स्त्री०)—गीदड़ की स्त्री, गिदड़िया । [बन्धन।
शृङ्खल (अस्त्री०)—जञ्जीर, लोहरज्जु,
शृङ्खला (स्त्री०)—पूर्ववत् ।
शृङ्ग (न०)—शिखर, पर्वत की चोटी, सींग, चिन्ह, प्राधान्य, उत्कर्ष, कामाधिक्य,स्तन।पु०-एक ऋषि।
शृङ्गवेर (न०)—अदरक, सोंठ, श्रीरामचन्द्र के मित्र गुह का पुर ।
शृङ्गमूल (पु०)—सिघाड़ा, शृङ्गाटक ।
शृङ्गवान्[वत्](पु०)—भारतवर्ष की सीमा का एक पर्वत ।
शृङ्गाट (न०)—चतुष्पथ, चौराहा । पु०—कामरूपदेशस्थ एक पर्वत, सिघाड़ा ।
शृङ्गार (न०)—लौंग, अदरक, सिन्दूर, कालागुरु,सजावट। पु०—नाटक में एक रस, हस्ती का भूषण,सुरत।
शृङ्गारभूषण (न०)—सिन्दूर ।
शृङ्गारयोनि (पु०)—कामदेव ।
शृङ्गारी [न्] (पु०)—सुपारी, हस्ती, सुवेश, माणिक्य ।
शृङ्गी [न्] (पु०)—पर्वत, वृक्ष, एक ऋषि । वि०—शृङ्ग वाला ।
शृत (वि०)—पका हुआ, पक्का ।
शृध् (१ आ०)—अपान शब्द करना। १ उ०—काटना ।
शृधु (पु०)—गुदा, बुद्धि ।
शॄ (९ प०)-काटना, छेदन करना ।
शेखर (न०)—शिखा, शिखास्थित माला, शिर के भूषणमात्र, मुकुट के ऊपर का पुष्प, ताज ।
शेप-फ (पु०)—शिश्न, उपस्थ,लिङ्ग।
शे[प.]फः [स्] फ (न०)—पूर्ववत् ।
शेफालिका-ली (स्त्री०)—पुष्पितवृक्ष, सहिजने का वृक्ष, जूफा ।
शेमुषी (स्त्री०)—बुद्धि, अक्ल, ज्ञान ।
शेव (पु०)—लिङ्ग, शिश्न ।
शेवधि (पु०)—निधि, खज़ाना ।

शेव[वा]ल (न०)-सिवाल, जल के ऊपर की काई।
शेष (पु०)-सर्पों का राजा, अनन्त, अवशिष्ट, बाकी, वध, गज।
शेषा (स्त्री०)-निर्माल्य, वह माला आदि जो देवता के ऊपर चढ़ी हुई हो।
शैक्ष (पु०)-शिक्षा अर्थात् स्वर विषयक ग्रन्थ के पढ़ने वाला पुरुष, शिक्षक।
शैक्षिक (वि०)-शिक्षाशास्त्र के जानने या पढ़ने वाला। [वृक्ष।
शैखरिक (पु०)-अपामार्ग, चिरचिटा
शैत्य (न०)-शीतलता, ठण्डापन।
शैथिल्य(न०)-ढीलापन,शिथिलता।
शैनेय (पु०)-सात्यकि नामक यादव जो श्रीकृष्ण का सारथि था।
शैल (पु०)-पर्वत, पहाड़। न०-शिलाजीत। [द्रव्य।
शैलज (न०)-एक प्रकार का सुगन्धित
शैलजा (स्त्री०)-पार्वती, दुर्गा, गजपिप्पली।
शैलधन्वा [न्] (पु०)-महादेव।
शैलधर (पु०)-श्रीकृष्ण।
शैलभित्ति (स्त्री०)-टाकी, टङ्क।
शैलराज (पु०)-हिमालयपर्वत।
शैलशिबिर (पु०)-समुद्र, सागर।
शैलसुता(स्त्री०)-पार्वती,ज्योतिष्मती
शैलाग्र(न०)-शिखर,पर्वत की चोटी।
शैलाट (पु०)-सिंह, किरात, भील।
शैलाली [न्] (पु०)-नट, शैलूष।
शैली (स्त्री०)-सूत्र, नियम, रीति, परिपाटी।
शैलूष (पु०)-नट, बिल्व का वृक्ष, धूर्त, ताल देने वाला पुरुष।
शैलूषिकी (स्त्री०)-नटनी,शैलूषभार्या।
शैलेन्द्र (पु०)-हिमालयपर्वत।
शैव (न०)-शिवपुराण। पु०-धतूरा। वि०-शिव की उपासना करने वाला, शिवसम्बन्धी।
शैवल(न०)-पद्मकाष्ठ। पु० सिवाल, विन्ध्य के समीप एक पर्वत।
शै[शे]वलिनी (स्त्री०)-नदी,दरिया।
शैवाल (न०)-जलोत्पन्न द्रव्यविशेष, काई,सेवाल,सिवाल। [एक राजा।
शैव्य-ब्य (पु०)-श्रीकृष्ण का एक अश्व,
शैव्या (स्त्री०)-प्रतीपराज की भार्या, सगर की पत्नी।
शैशव (न०)-बाल्यावस्था, बचपन।
शैशिर (पु०)-श्याम रंग का चिड़ा। वि०-शिशिरसम्बन्धी, शीतकालीन। [चढ़ाना।
शो (४ प०)-धार रखना, शाण पर
शोक (पु०) दुःख, कष्ट, मानसिक वेदना।
शोकाग्नि नल (पु०)-दुःख की आग।
शोचन (न०)-दुःख, कष्ट।
शोचनीय (वि०)-शोकप्रद,दुःखदायी।
शोच्य (वि०)-दुःखदायी, कमीना।
शोचिस् (न०)-प्रभा, प्रकाश, अग्नि की लपट।
शोटीर्य (न०)-बहादुरी, पराक्रम।
शोण (वि०)-सुर्ख, लाल, पीला। पु०-अग्नि, मंगल। न० रक्त।
शोणित (वि०)-सुर्ख, लाल। न०-कुंकुम, रक्त, खून।

शोथ (पु०)–सूजन ।
शोध (पु०)–सफ़ाई, शुद्धता, पवित्रता
शोधक (वि°)–दस्तावर, शुद्धिकारक।
शोधन (वि०)–शुद्ध करने वाला। न०–सफ़ाई, ग़लतियों का शुद्ध करना, क़र्ज़ की अदायगी। पु०-चूना
शोधनी (स्त्री०)–झाड़ू, मार्जनी।
शोधित (वि°)–शुद्ध किया हुआ।
शोभन (वि०)–सुन्दर, अच्छा, मनोहर। न०–सुन्दरता, कमल।
शोभना (स्त्री०)–हल्दी, सुन्दर स्त्री।
शोभा (स्त्री०)–सुन्दरता, चमक, प्रभा, हल्दी, गोरोचना।
शोष (पु°)–मुरझाना, सूखापन।
शोषण (वि°)–सुखाने वाला, मुरझाने वाला। पु°-कामदेव के पञ्च-शरों में एक। [झाया हुआ।
शोषित (वि०)–सुखाया हुआ, मुर-
शौक्र (वि०)–वीर्यसम्बन्धी।
शौच (न०)–शुद्धता, सफाई, शौचता, सम्बन्धी आदि के जन्म मरण से जो सूतक लगता है उसका दूरीकरण।
शौचकर्म (न०)–प्रातःकाल मलमूत्र त्याग कर स्नानादिकृत्य।
शौचकूप (पु०)–पाखाना, सण्डास।
शौट्-ड् (१ प०)–मग़रूर होना, गर्व करना। [योद्धा, तपस्वी।
शौटीर (वि०)–मग़रूर, गर्वित। पु०–
शौण्ड (वि०)-दक्ष, चतुर, मदमस्त।
शौण्डिक-ण्डी [न्] (पु०)–कलाल, मद्यवणिक्।

शौद्र (वि०)–शूद्रसम्बन्धी।
शौनक (पु०)–मन्त्रद्रष्टा एक ऋषि।
शौनिक(पु०)–वधिक, क़साई।
शौर्य(न०)–बहादुरी, पराक्रम, शूरता।
शौल्क-ल्किक (पु०)–शुल्कग्राहक।
शौवस्तिक(वि०)–आने वाले कल का, कल तक रहने वाला।
श्मनु(न०)–मुख, चेहरा, शरीर, शव।
श्मशान(न०)-मुर्दा फूकने की जगह।
श्मश्रु(न०)–दाढ़ी।
श्मश्रुल(वि०)–दाढ़ी वाला, दाढ़ीदार।
श्मील् (१ प०)–आँखें बन्द करना, नेत्र मींचना।
श्याम(पु०) कृष्णवर्ण, कोकिल, मेघ, प्रयाग तीर्थ का वट, वृद्धदारक वृक्ष। वि०–श्यामवर्णयुक्त।
श्यामकण्ठ(पु०)–मयूर, शिव, नीलकण्ठ नामक पक्षी।
श्यामल(पु०)–काला रंग, पीपल। वि०–काले रंग वाला।
श्यामसुन्दर (पु०)--श्रीकृष्ण।
श्यामा (स्त्री०)--वह स्त्री जिस के सन्तान न हुई हो, षोडश वयस्का स्त्री, यमुना, पिप्पली, गिलोय, हल्दी, तुलसी, गूगल, गौ, शिंशपावृक्ष, स्त्रीविशेष, यथा-- “शीते सुखोष्णसर्वाङ्गी, ग्रीष्मे च सुखशीतला। तप्तकाञ्चनवर्णाभा, सा स्त्री श्यामेति कथ्यते”।
श्यामाङ्ग (पु०)--बुधग्रह। वि०--काले अङ्ग वाला। [वाला।
श्याल-क (पु०)-पत्नी का भ्राता,

श्याव (पु०)–कालापीलामिश्रित रंग, कपिश । वि०–उस वाला ।
श्यावदन्त-क (वि०)–काले और पीले दांत वाला ।
श्येत (पु०)--शुक्लवर्ण, सफेद रंग । वि०–श्वेत रंग वाला । [रङ्ग।
श्येन (पु०)--बाज़ नामक पक्षी, सफेद
श्यै (१आ०)--जाना, गमन करना ।
श्यैनम्पाता(स्त्री०)--मृगया, शिकार ।
श्रण् (१प०,१०उ०)--देना,दान करना ।
श्रत् (स्त्री०)--श्रद्धा, विश्वास, यक़ीन ।
श्रथ् (१०उ०)–बांधना, छुड़ाना, वध करना । १प०–यत्न करना, दुर्बल होना ।
श्रथन (न०)–मारना, वध, कोशिश ।
श्रद्ध-द्धालु (वि०)–श्रद्धा रखने वाला, इच्छुक । [करना,
श्रद्धा (३उ०)–भरोसा करना, विश्वास
श्रद्धा (स्त्री०)–विश्वास, भरोसा, यक़ीन । [भरोसा करने लायक़।
श्रद्धेय (वि०)--श्रद्धा रखने के योग्य,
श्रन्थः-न्थनम्–ढील, क़त्ल,बांधना ।
श्रम् (४ प०)–यत्न करना, कोशिश करना, थकना । [दुःख, तप।
श्रम (पु०)–मेहनत, यत्न, थकावट,
श्रमकर्षित (वि०)–मेहनत से थकित।
श्रमण क (वि०)–मेहनत करने वाला, नीच । पु०–तपस्वी, बौद्ध साधु, फ़क़ीर । [होने योग्य ।
श्रमसाध्य (वि०)–मेहनत से प्राप्त
श्रम्भ् (१ आ०)–लापरवाह होना, ग़लती करना ।
श्रयः-यणम्=पनाह,आश्रय,रक्षास्थान।
श्रव (पु०)–कान, टपकना, यश ।
श्रवण (अस्त्री०)–कान । न०–सुनना, अध्ययन,यश,छिपी हुई वार्त्ता,धन।
श्रवणगोचर (वि०)–जो सुनाई देसके।
श्रवणेन्द्रिय (न०)–सुनने की इन्द्रिय, कान, श्रोत्र ।
श्रा (२ उ०)–पकाना, उबालना ।
श्राण(वि०)–पका हुआ,उबला हुआ।
श्राद्ध (वि०)–श्रद्धायुक्त, वफ़ादार । न०–श्रद्धापूर्वक पितरों की सेवा, शुश्रूषा तथा भोजनादि से उन की तृप्ति ।
श्रान्त (वि०)–थका हुआ, शान्त ।
श्रान्ति (स्त्री०)–थकावट, श्रम ।
श्राम (पु०)–काल, महीना, छप्पर ।
श्राय (पु०)–आश्रय, रक्षास्थान ।
श्राव (पु०)–सुनना, बहना ।
श्रावक (पु०)–सुनने वाला, शिष्य, बौद्धसाधु, कौआ ।
श्रावण (वि०)-कर्णसम्बन्धी । पु०--आषाढ के पश्चात् आने वाला चान्द्रमास, नास्तिक, एक वैश्य तपस्वी जो राजा दशरथ के द्वारा मारा गया । [श्रावणमें होने वाला ।
श्रावणिक (पु०)--श्रावण मास । वि०–
श्रावणी (स्त्री०)–श्रावण मास की पौर्णमासी, उस दिन किये जाने वाला एक वैदिककृत्य ।
श्रावित(वि०)–सुनाया हुआ, कथित ।
श्राव्य (वि०)–सुनने योग्य, साफ़ ।
श्रि (१उ०)–आश्रय लेना,समीप जाना।

श्रित (वि०)-गत, आश्रित,रक्षित।
श्री (९ उ०)-पकाना उबालना।
श्री (स्त्री०)-सम्पत्ति, धन, दौलत, सुन्दरता, शोभा, लक्ष्मी, शृंगार, प्रतिभा, धर्म, अर्थ और काम का समुच्चय, कमल, सरस्वती, लवंग, वाणी, यश, प्रतिष्ठावाचक शब्द।
श्रीकण्ठ (पु०)-शिव, भवभूति।
श्रीनगर (न०)-एक नगर का नाम।
श्रीकण्ठिनी (स्त्री०)-वसन्तपञ्चमी।
श्रीपति (पु०)-विष्णु, राजा।
श्रीपथ (पु०)-राजमार्ग, [इन्द्राश्व।
श्रीपुत्र (पु०)-कामदेव, चन्द्रमा,
श्रीमान् [मत्] (वि०)-धनवान्, खुश-किस्मत, प्रसिद्ध, आदरपात्र।
श्रीयुक्त-युत (वि०)-पूर्ववत्।
श्रीवल्लभ पु०)-खुशकिस्मत आदमी।
श्रील (वि०)=श्रीमान्।
श्रीश (पु०)-विष्णु, परमात्मा।
श्रु (१ प०)-जाना, हरकत करना। ५ प०-सुनना, श्रवण करना, ध्यान देना। [अधीत, ख्यात।
श्रुत (वि०)—सुना हुआ, सीखा हुआ,
श्रुतकीर्ति (वि०)-प्रसिद्ध। पु०-उदार पुरुष, ऋषि। स्त्री०-शत्रुघ्न की पत्नी। [करने वाला।
श्रुतधर (वि०)—केवल सुन कर याद
श्रुतवान्[वत्] (वि०)-वेदज्ञ, वेदपाठी।
श्रुति-ती (स्त्री०)-सुनना, श्रवण,कान, रिपोर्ट, समाचार, किंवदन्ती, आवाज, वेद, वेदमन्त्र,वेदज्ञान।
श्रुतिकट (पु०)-सर्प, तप।
श्रुतिकटु (वि०)-सुनने में कठोर।
श्रुतिधर (वि०)-सुनने वाला।
श्रुतिप्रामाण्य (न०)-वेद का प्रमाण।
श्रुत्युक्त (वि०)-वेदविहित।
श्रु[स्रु]व (पु०)-यज्ञ, यज्ञ का सुरवा।
श्रु [स्रु]वा (स्त्री०)-यज्ञ में घृताहुति देने का पात्रविशेष, सुरवा।
श्रेणि-णी (स्त्री०)-पंक्ति, लाइन, क़तार,समूह, जमाअत, टोल।
श्रेणिका (स्त्री०)-तम्बू, खेमा।
श्रेयस् (वि०)-बेहतर, सर्वोत्तम। न०-शुभकर्म, सौभाग्य, मुक्ति।
श्रेयस्कर(वि०)-शुभ, मंगलकर।
श्रेष्ठ (वि०)-सर्वोत्तम, अत्युत्तम, अत्यन्तसुखी। पु०-ब्राह्मण,राजा, कुबेर, विष्णु। न०-गोदुग्ध।
श्रेष्ठाश्रम (पु०) गृहस्थाश्रम।
श्रेष्ठी[न्] (पु०)-धनवान्, सेठ।
श्रैष्ठ्य (न०)-श्रेष्ठता, अच्छापन।
श्रोण् (१प०)-इकट्ठा करना या होना।
श्रोणि णी (स्त्री०)-नितम्ब, चूतड़, कमर, सड़क,-रास्ता।
श्रोणिसूत्र (न०)-पेटी, तगड़ी।
श्रोतस् (न०)-कान, सूंड, कर्णेन्द्रिय।
श्रोता[तृ] (पु०) सुनने वाला, शिष्य।
श्रोत्र (न०)-कान, कर्णेन्द्रिय, वेद, वेदाध्ययन।
श्रोत्रिय(पु०)-वेदज्ञ,वेदपाठी ब्राह्मण।
श्रौत (न०)-कर्णसम्बन्धी, यज्ञसम्बन्धी, वेदसम्बन्धी।
श्रौतकर्म (न०) वैदिक धर्मकार्य।
श्रौतसूत्र (न०)-एक प्रकार के सूत्र

जिन में कर्मकाण्ड का विधान है और जिन की रचना आश्वलायन, सांख्यायन, कात्यायन आदि ऋषियों ने की है। [सुन्दर।
श्लक्ष्ण (वि०)-मुलायम, चिकना,
श्लाघ् (१आ०)-तारीफ़ करना, शेखी मारना, बढ़ावा मारना।
श्लाघन-घा=तारीफ, बढ़ावा, खुशामद।
श्लाघित (वि०)-प्रशंसित, तारीफ किया हुआ। [प्रशंसा के योग्य।
श्लाघ्य घनीय(वि०)-क़ाबिलेतारीफ,
श्लिष् (१प०)-जलना, विवर्ण। ४प०-आलिंगन करना, जोड़ना, पकड़ना।
श्लिष्ट (वि०)-जुड़ा हुआ, आलिंगन किया हुआ।
श्लेष(पु०)-आलिंगन, सम्बन्ध, जोड़।
श्लेषार्थ (पु०) द्व्यर्थकवार्त्ता।
श्लेष्म-क-ष्मा[न्](पु०)-कफ, बलग़म।
श्लेष्मल(वि०)-कफजनक, बलग़मवाला।
श्लेष्मातक (पु०)-लिहसोड़े का वृक्ष।
श्लोक् (१ आ०)-प्रशंसा करना, रचना करना, बढ़ना, एकत्रहोना।
श्लोक (पु०)-पद्य, कविनिर्मित चार पादों वाला वाक्यविशेष, यश।
श्वः [स्] (अ०)-कल, आने वाला दिन, अनागतदिन।
श्व श्रेयस (न०)-कल्याण, शुभ, मंगल, भलाई, सुख। [समूह।
श्वगण(पु०)-कुत्तों का गिरोह, कुक्कुर-
श्वदंष्ट्रक (पु०)-गोक्षुर, गोखरू।
श्वपच (पु०)-चाण्डाल, निषाद, भंगी, नीच पुरुष।
श्वपाक (पु०)-पूर्ववत्।
श्वफल (पु०)-अनार, नींबू, नारंगी।
श्वयथु (पु०)-शोथ, सूजन।
श्वयीची (स्त्री०) रोग, बीमारी।
श्वल्-ल्ल् (१ प०)-भागना, दौड़ना।
श्वल्क् (१०उ०)-कहना, बयान करना।
श्वशुर(पु०) पति वा पत्नी का पिता।
श्वशुर्य (पु०)-साला, बहनोई, देवर।
श्वश्रू (स्त्री०) सासू, पत्नी वा पति की माता। [आह भरना।
श्वस् (२प०) श्वास लेना, फुकारना,
श्वसित (वि०)-श्वास लिया हुआ। न० श्वास, पसीना, आह।
श्वस्तन (वि०)-कल होने वाला।
श्वा [न्] (पु०) कुत्ता, कुक्कुर।
श्वागणिक (पु०)-कुत्तों का पालक।
श्वाभ्रिक (पु०)-शिकारी।
श्वाननिद्रा (स्त्री०)-कुत्तेकी सी नींद, चमक नींद। [शिकारी जानवर।
श्वापद (वि०)-खूंख्वार। पु०-चीता,
श्वास (पु०) सांस, प्राण, पसीना, वायु, श्वास का रोग, आह।
श्वि (१ प०)-बढ़ना, फूलना, वृद्धि को प्राप्त होना।
श्वित् (१ आ०)-सफ़ेद होना।
श्वित (वि०)-सफ़ेद। न०-सफ़ेदी।
श्वित्र (न०)-सफ़ेद कोढ़।
श्वेत (वि०)-सफ़ेद। पु०-सफ़ेद रङ्ग, सीप, कौड़ी, शुक्र। न०-चांदी
श्वेतकुञ्जर(पु०)-ऐरावत नामक हस्ती।
श्वेतकुष्ठ (न०)-सफ़ेद कोढ़।
श्वेतकेतु (पु०)-जैन वा बौद्ध तपस्वी

श्वेतधाम(पु०)–चन्द्रमा,कपूर । [का।
श्वेतपत्र(पु०)–हंस । वि०–सफेद पत्तों
श्वेतपिङ्गल (पु०)–सिंह, शेर ।
श्वेतमाल (पु०)–बादल, धुआं ।
श्वेतरक्त (वि०)–गुलाबी ।
श्वेतवाह (पु०)–अर्जुन, इन्द्र ।
श्वेता (स्त्री०)–कौड़ी, दूर्वा, खांड, स्फटिका, फिटकरी ।
श्वैत्य (न०)–सफेदी, श्वेतकुष्ठ ।

ष

ष (वि०)–श्रेष्ठ, धीमान् । पु०–नाश, हानि, अवशेष, अन्त, मुक्ति, स्वर्ग, निद्रा,बाल,गर्भविमोचन ।
षट्कर्म (न०)–ब्राह्मण के छः कर्त्तव्य कर्म यथा:-पढ़ना, पढ़ाना; यज्ञ करना, कराना; दान देना और लेना ।
षट्चरण (पु०)–मक्खी, टीड़ी, जूं ।
षड्दर्शन (न०)–आर्यों के ६ शास्त्र यथा:-सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त ।
षड्विंशति (स्त्री०)–२६ की संख्या ।
षडङ्ग (न०)–शरीर के छः भाग यथा:–दोनों जंघा, दोनों बाहु, शिर और मध्यभाग; ६ वेदाङ्ग यथा:–शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द ।
षडशीति (स्त्री०)–८६ की संख्या ।
षडानन-षण्मुख-वदन (पु०)–कार्तिकेय ।
षण्ड[षण्ढ]-क (पु०)–हीजड़ा,नपुंसक ।
षण्मासिक (वि०)–अर्द्धवार्षिक ।
षष्टि (स्त्री०)–६० की संख्या ।
षष्ठ (वि०)–छठा, छठवां ।
षष्ठांश (पु०)–छठाभाग, खेत की उपज का ६वां हिस्सा जो राजा प्रायः स्वयमपासे ग्रहण करता है ।
ष [षा] ष्ठिका-ष्ठी (स्त्री०)–शुक्ल वा कृष्णपक्ष की छठी तिथि, छठी विभक्ति,कात्यायनी नामी दुर्गा ।
षष्ठीतत्पुरुष (पु०)–समासभेद ।
षष्ठीपूजन पूजा=बालक जन्म के पश्चात् छठे दिन जो छठी का पूजन किया जाता है ।
षड्बाहु (पु०)–मयूर, यक्ष ।
षाड्व (पु०)–मनोविकार, राग ।
षाड्गुण्य (न०)–छः गुणों का समूह, राजनीति के छः विशेष अङ्ग ।
षाण्मातुर (पु०)–कार्तिकेय ।
षाण्मासिक (वि०)–अर्द्धवार्षिक ।
षाष्ठ (वि०)–छठा ।
षिड्ग (पु०)–कामी पुरुष, विट ।
षु (पु०)–बालकजन्म ।
षोडश [न्] (वि०)–सोलह ।
षोडश (वि०)–सोलहवां ।
षोडशकलाः (स्त्री० बहु०)–चन्द्रमा की सोलह कलाएं यथा–अमृता, मानदा, पूषा, तुष्टि,पुष्टि,रति, धृति, शशिनी,चन्द्रिका, कान्ति, ज्योत्स्ना,श्री,प्रीति, अङ्गदा,पूर्ण और अमृता ।
षोडशमातृकाः (स्त्री० बहु०)–सोलह माताएं यथा:-"गौरी पद्मा शची

मेधा, सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः। शांतिः पुष्टिर्धृतिस्तुष्टिः कुलदेवात्मदेवताः ॥।
षोडशिक(वि०)–सोलह का बना हुआ।
षोढा (अ०)–छः प्रकार से।
षोदत् (पु०)–छः दांत का बैल।
ष्ठिव् (१, ४ प०)–थूकना।
ष्ठीवन- ष्ठेवन (न०)–थूक, लार।
ष्ठ्यूत (वि०)–थूका हुआ।

स

स (पु०)–सर्प,वायु,शिव,पक्षी,विष्णु। न०–ज्ञान, ध्यान, बाढ़ा। स्त्री०–[सा] लक्ष्मी। अ०–समास के पूर्व में 'सह, सम, सदृश' के लिये प्रयुक्त होता है।
संघ (पु०)–अस्थिमिश्रुर।
संयज् (१ उ०)–पूजना,पवित्र करना।
संयत्(१ आ०)–कोशिश करना, लड़ाई करना। स्त्री०–युद्ध,लड़ाई।
संयत (वि०)–अवरुद्ध, बंधा हुआ। पु०–तपस्वी।
संयतात्मा [न्] (वि०)–जितेन्द्रिय।
संयत्त (वि०)–सावधान, तत्पर, उद्यत।
संयम् (१ प०)–रोकना, शासित करना, बांधना। [अवरोध, तपस्या।
संयम (पु०)–रोक, मनोवृत्तियों का
संयमन (न०)–पूर्ववत्। [चित्त।
संयमित (वि०)–रोका हुआ, बद्ध,एक-
संयमी [न्](पु०)–तपस्वी,जितेन्द्रिय।
संया (२ प०)–एक साथ आगे बढ़ना, जुदा होना, प्राप्त करना, एकत्रित होना। [परदेशगमन।
संयात्रा (स्त्री०)–द्वीपान्तर में जाना,
संयान (न०)–अच्छे प्रकार से जाना।
संयाम (पु०)=संयम।
संयाव (पु०)–घृतक्षीरपक्व गोधूमचूर्णादि का हलुवा,पिष्टकविशेष।
संयुक् [ज्] (वि०)–सम्बन्धी,गुणवान्, संयुक्त, जुड़ा हुआ। [संयोगाश्रय।
संयुक्त(वि०)–मिला हुआ, जुड़ा हुआ,
संयुग (पु०)–युद्ध, लड़ाई।
संयुत (वि०)=संयुक्त।
संयोग (पु०)–मेलन, जोड़ना, मेल, अप्राप्तवस्तुद्वय की प्राप्ति,सम्बन्धमात्र। [संयोगयुक्त।
संयोगी [न्] (वि०)–संयोग वाला,
संयोजन (न०)–मैथुन, संयोग।
संयोजित (वि०)–मिलाया हुआ, संयोगीकृत। [निन्दा।
संरम्भ(पु०)-कोध, गुस्सा,वेग,उत्साह,
संराधन (न०)--सेवा करना, अच्छे प्रकार सोधना।
संराव (पु०)--शब्द, ध्वनि, आवाज़।
संरूढ (वि०)--उगा हुआ, जाताङ्कुर, प्रौढ, परिपूर्ण हुआ।
संरोध (पु०)–रोकना, फेंकना, क्षेप।
संलग्न (वि०)--लगा हुआ, संयुक्त।
संलय (पु०)-निद्रा, सोना, प्रलय।
संलाप (पु०)--आपस में बातचीत करना, एकान्त सम्भाषण,प्रीतियुक्त भाषण, गुफ्तगू।

सवत् (अ०)-वर्ष, साल, अब्द।
सवत्सर (पु०)-पूर्ववत।
सवदन (न०)-वश में करना, अच्छे प्रकार से देखना, आलोचना करना, सवाद।
सवदना (स्त्री०)-वशीकरणक्रिया।
सवर (न०) जल, एक बौद्धव्रत। पु०-एक दैत्य, मत्स्यविशेष।
सवर्त्त (पु०)-प्रलय, धर्मशास्त्रनिर्माता एक मुनि, मेघों का राजा।
सवर्त्तक (पु०)-बलदेव, बलदेव का हल, बाडवानल, समुद्राग्नि।
सवर्त्तिका (स्त्री०)-दीपक की शिखा, कमलादि की केसर के समीप का पत्ता, नवीन पत्र। [करने वाला
सवर्द्धक (वि०)-बढाने वाला, इज्जत
सवलित (वि०)-मिश्रित, मिला हुआ, एकत्रित।
सवसथ (पु०) ग्राम गाव।
सवह (पु०) सात प्रकार के वायुओं में से एक, चौथा वायु।
सवाद (पु०)-समाचार, सन्देशवाक्य।
सवार (पु०)-व्याकरण में ग्यारह प्रकार के बाह्य प्रयत्नों में से एक, छिपाना, सगोपन।
सवास (पु०) गृह, घर, पुर से बाहिर क्रीडार्थीय खुला स्थल।
सवाहक (वि०)- अङ्गमर्दक, मुट्ठी भरने वाला, अङ्ग मलने वाला।
सवाहन (न०) अङ्गमर्दन, मुट्ठीभरना।
सविग्न (वि०)-घबराया हुआ, डरके दिल वाला।
सवित्ति (स्त्री०)-बुद्धि, चेतना, समझ, अङ्गीकार।
सविद् (स्त्री०)-ज्ञान, प्रतिपत्ति, स्वीकार, आचार, युद्ध, सङ्केत, समाधि, खुशी, नाम, सम्भाषा।
सविदा (स्त्री०) विजया, भाग, सिद्धि। [हुआ, अङ्गीकृत।
सविदित (वि०) अच्छे प्रकार जाना
सविधान (न०)-उपाय, रचना।
सवीक्षण (न०)-तलाश करना, अन्वेषण, अच्छी तरह देखना।
सवीत-वृत (वि०) रुका हुआ, ढका हुआ आवृत,
सवेग (पु०)-भयादि से उत्पन्न हुई शीघ्रता, पूर्ण वेग, जल्दी करना।
सवेश (पु०) निद्रा, उपभोगस्थान।
सवेशन (न०)- भोगक्रिया, मैथुनकर्म।
सव्यान (न०) उत्तरीयवस्त्र, ऊपर ओढने का वस्त्र, वस्त्रमात्र।
संशप्तक (पु०)-कुलाचार या प्रतिज्ञा करके युद्ध से न हटने वाला पुरुष, नारायणी सेनाविशेष।
संशय (पु०)-सन्देह, शक, परस्पर विरुद्ध दो धर्मों का शक।
संशयस्थ(वि०)-सन्देह में पड़ा हुआ, संशययुक्त।
संशयितृ [तृ] (पु०) सन्देह करने वाला पुरुष, सन्दिग्धान्तःकरण।
संशयालु (वि०)-सन्देहयुक्त, शक करने वाला।
संशयिता [तृ] (वि०)-पूर्ववत्।
संशरण(न०)-युद्धारम्भ, हमला, शरणा।

स्थिति, नाश, व्यवस्था, सादृश्य, न्याय्य पथ में स्थिति, यज्ञविशेष, प्रलयचतुष्टय ।
संस्थान (न०)—ढेर, मिक़दार, शकल, बनावट, निकटता, चौराहा, स्थान, चिन्ह, मृत्यु ।
संस्थापक (वि०)—क़ायम करने वाला ।
संस्थापन (न०)—क़ायमी, एक स्थान पर रखना, नियम । [किया हुआ ।
संस्थापित (वि०)—एकत्रीभूत, क़ायम
संस्थित (वि०)—ठहरा हुआ, समीपस्थ, एकत्रित, क़ायम, समाप्त, मृत ।
संस्थिति (स्त्री०)—समीपता, ढेर, स्थान, अवस्था, हालत, मृत्यु, रोग, प्रलय ।
संस्पर्श (पु०)—लगाव, छूना, मिलाप ।
संस्पृश् (६प०)—छूना, जल छिड़कना ।
संस्पृष्ट (वि०)—छुआ हुआ, मिला हुआ ।
संस्मरण (न०)—याददाश्त, स्मरण ।
संस्मृ (१प०)—याद करना, सोचना ।
संस्मृति (स्त्री०)=संस्मरण ।
संस्र [स्रा] व (पु०)—बहना, चूना, टपकना, धारा ।
संहत (वि०)—आहत, बन्द किया हुआ, जुड़ा हुआ, मिला हुआ, एकत्रित, घन ।
संहति (स्त्री०)-मेल, मिलाप, घनता, ढेर, शक्ति, शरीर ।
संहन् (२ प०)-बाहम मिलाना, मारना, इकट्ठा करना ।
संहरण (न०)—इकट्ठा करना, पकड़ना, रोकना, पीछे को हटाना ।
संहर्ता [र्तृ] (पु०)—नाश करने वाला ।
संहर्ष (पु०)--अत्यन्तखुशी या भय, वायु, स्पर्द्धा, रगड़ना ।
संहार (पु०)--एकजगह करना, रोकना, नाश, प्रलय, अन्त, समूह, हुनर ।
संहारक (वि०)--नाश करने वाला, दबाने वाला ।
संहित (वि०)--एक जगह रक्खा हुआ, एकत्रित, सम्मिलित, स्थित ।
संहिता (स्त्री०)--मेल, समूह, सूत्र या श्लोकों का क्रमपूर्वक एकीकरण, वेद की ऋचाओं के शब्दों को सन्धि के नियमानुसार मिलाने का नाम संहिता है इसी लिये वेद संहिता नाम से भी पुकारे जाते हैं ।
संहूति (स्त्री०)--हुल्लड़, शोरोगुल ।
संहृ (१ प०)--इकट्ठा करना, बाहिर खींचना, मुख्तसिर करना, रोकना, पकड़ना । [आक्रान्त, नष्ट ।
संहृत (वि०)--एकत्रित, मुख्तसिर,
संहृति (स्त्री०)--घनता, नाश, पकड़ गिरफ्त, रोक, समूह ।
संहृष् (४ प०)--खुश होना, रोंगटे खड़े होना ।
सकट (वि०)--कमीना, नीच, बुरा ।
सकण्टक (वि०)—कांटेदार, खतरनाक, दुःखदायी । पु०--सिरवाल ।
सकरुण (वि०)--दयावान्, दयालु ।
सकलंक (वि०)--कलंकयुक्त ।
सकर्मक (वि०)—कर्म करने वाला, कर्मशील, व्याकरण में उस धातु

संग्रामपटह (पु०)-फ़ौजी बाजा, लड़ाई का नक्कारा ।
संग्राह (पु०)-पिलू, मुट्ठी, दस्ता ।
संग्राहक (पु०)-पकड़ने वाला, इकट्ठा करने वाला ।
संगृहीत (वि०)-ग्रहण किया हुआ, संक्षिप्त, एकत्रित, शासित, स्वीकृत।
सङ्घ (पु०)-जनाश्रत, समूह ।
सङ्घट्ट (१आ०)-मिलना, एकत्र होना ।
सङ्घटना (स्त्री०)-मेल, मिलाप, घटना ।
सङ्घट्ट(पु०)-रगड़, टक्कर, आलिङ्गन।
सङ्घट्टन-ट्टना=सङ्घट्ट ।
सङ्घर्षः-र्षणम्=रगड़, टक्कर, स्पर्द्धा, हसद, जलन ।
सचकित (वि०)-विस्मित, कायर ।
सचि (पु०)-मित्र, मित्रता । स्त्री०-इन्द्राणी ।
सचित्र (वि०)-चित्रित, चित्रयुक्त ।
सचिव (पु०)-मित्र, मन्त्री, अमात्य ।
सचेतन-तस् (पु०)-चेतनायुक्त, सावधान ।
सचेष्ट (पु०)-आम्रवृक्ष । वि०-सावधान ।
सजन (पु०)-रिश्तेदार, सम्बन्धी ।
सजल (वि०)-तर, नम, गीला ।
सजात (वि०)-एक साथ उत्पन्न ।
सजाति-तीय (वि०)-वशज, एक ही जाति का, समान ।
सजात्य (न०)-बिरादरी, भाईचारा ।
सज्ज (वि०)-तय्यार, तत्पर, सन्नद्ध ।
सज्जन (पु०)-अच्छा आदमी । न०-घाट, सन्तरी, तैयारी, बन्धन ।
सज्जा(स्त्री०)-पोशाक, शृङ्गार, कवच।
सज्जित (वि०)-वस्त्रयुक्त, तैयार, सशस्त्र, सजा हुआ ।
सज्जीभू (१प०)-तैयार होना, सजना।
सञ्जत (पु०)-बदमाश, बाजीगर, धोखा।
सञ्चय (पु०)-ढेर, सङ्ग्रह, स्टाक, बड़ी संख्या ।
सञ्चयन (न०)-ढेर लगाना, अन्त्येष्टि कर्म के पश्चात् अस्थि और भस्म को इकट्ठा करना ।
सञ्चर् (१प०)-चलना, हरकत करना, अमल करना, वर्तना ।
सञ्चर (पु०)-मार्ग, पगडण्डी, फाटक, वध, शरीर, बढ़ोतरी ।
सञ्चरण (न०)-गति, यात्रा, हरकत ।
सञ्चल्(१ प०)--हरकत करना, कांपना, झपटना ।
सञ्चलन (न०)-उद्वेग, कम्पन ।
सञ्चार (पु०)-गति, हरकत, मार्ग, कठिनयात्रा, कठिनाई, पथप्रदर्शन, सर्पमणि, सूर्य का राश्यन्तरगमन ।
सञ्चारक (पु०)-रहनुमा, नेता, अग्रगामी।
सञ्चारण (न०)-लेजाना, हरकत ।
सञ्चारिका(स्त्री०)-कुटिनी, गन्ध, जोड़ा
सञ्चारित (वि०)-उद्विग्न, सञ्चारयुक्त ।
सञ्चारी[न्](वि०)-गतिशील, भ्रामक, अस्थिर । पु०-वायु, गन्ध ।
सञ्चि (५उ०)-ढेर लगाना, इकट्ठा करना, तरतीब देना ।
सञ्चित (वि०)-एकत्रित, ढेर किया हुआ, संख्यात, सघन ।
सञ्चिति (स्त्री०)-एकीकरण, संग्रह ।
सञ्चिन्त्(१० उ०)-विचारना, सोचना ।

सञ्चिन्तन (न०)–विचार, ध्यान ।
सञ्चिन्तित(वि०)–निश्चित, अच्छे प्रकार विचारा हुआ, अभिप्रेत ।
सञ्छद् (१० उ०)–छिपाना, ढकना, पहिरना ।
सञ्छन्न(वि०)–गुप्त, ढका हुआ ।
सञ्छिद्(७ उ०)–काटना, विभक्तकरना, दूर करना । [हल करना ।
सञ्छेद(पु०)–कर्त्तन, विभाग, दूरीकरण,
सञ्ज् (१प०) चिपटना बाधना, जाना ।
सञ्जन्(४ आ०)–उत्पन्न होना, बढ़ना ।
सञ्जय (पु०)–धृतराष्ट्र के सारथि का नाम ।
सञ्जल्प् (१ प०)–बातें करना ।
सञ्जल्प(पु०)–बातचीत, शोरोगुल ।
सञ्जा(स्त्री०)–बकरी, अजा ।
सञ्जात(वि०)–उदित, बीता हुआ ।
सञ्जीव् (१प०)–मिलकर रहना, जीवन-निर्वाहकरना, फिरसे जीवन पाना ।
सञ्जीवन (न०)–पुनर्वार जीना, एक साथ रहना ।
सञ्जीवनी(स्त्री०)–एक प्रकार का अमृत, औषध, रघुवंश और मेघदूत की मल्लिनाथकृत टीका ।
सज्ज(वि०)–सावधान, सन्नद्ध ।
सज्जन(न०)–घर, फाटक ।
सज्ञा (९ आ०)- जानना, समझना, पहिचानना, सावधान रहना, आदेश करना ।
सज्ञा(स्त्री०)–चेतना, ज्ञान, इशारा, नाम, व्याकरण में किसी वस्तु, मनुष्य,स्थान या भाव का बोधक शब्द, गायत्री ।
सज्ञान(न०) -ज्ञान, समझ ।
सज्ञाविपर्य्यय(पु०)–चेतना का नाश ।
सज्ञापन(न०)–सूचना, शिक्षण, वध ।
सटीक(वि०) टीकासहित,व्याख्यायुक्त
सट् (१० उ०)–समाप्त करना,जाना, सजाना ।
सट(न०)–जटा यतियों की शिखा और केशसमूह,सिंहादि की ग्रीवा के बाल, सिंह आदि के अयाल ।
सटा(स्त्री०)–पूर्ववत् ।
सण्डीन(न०)–पक्षियों की गतिविशेष ।
सतत(न०)–निरन्तर,लगातार । वि०–लगातार होनेवाला ।
सतत्त्व(न०)–स्वभाव आदृत, तत्त्व के अनुकूल ।
सति(स्त्री०)–दान, अन्त, अवसान ।
सती(स्त्री०)–साध्वी,पतिव्रता, दुर्गा, दान, अवसान । [जल ।
सतीन(पु०)–मटर, बांस, मटर । न०–
सतीर्थ्य (पु०)–एक गुरु के पास पढ़ने वाले शिष्य, आपस में एक गुरु के शिष्य ।
सतृष्[ष्] (वि०)–तृषायुक्त, प्यासा ।
सत् (वि०)–सत्य, विद्यमान, साधु, धैर्य वाला, प्रशस्त, पूजित ।
सत्कर्त्ता [तृ] (पु०)–विष्णु । वि०–अच्छा कार्य करने वाला ।
सत्कर्म[न्] (न०)–वेदविहित यज्ञादि शुभ कर्म । [विशेष, सम्मान ।
सत्कार(पु०)–आदर, पूजा, उत्सव-
सत्कृत(वि०)–पूजित, आदर किया

हुआ । पु०-महादेव ।
सत्कृति-क्रिया(स्त्री०)-सत्कार,आदर, श्रद्धाहादि क्रिया । [श्रेष्ठ ।
सत्तम(वि०)-पूज्यतम, उत्तम, अतिशय
सत्ता (स्त्री०)-विद्यमानता, होना, यह जातिविशेष जो द्रव्य, गुण और कर्मों में रहती है ।
सत्पथ(पु०)-श्रेष्ठ मार्ग, प्रशस्त पथ ।
सत्पुरुष(पु०)-उत्तम मनुष्य,पूज्यपुरुष
सत्प्रतिग्रह(पु०)--श्रेष्ठ पुरुषों के दिये धन का ग्रहण ।
सत्प्रतिपक्ष(पु०)-एक प्रकार का न्याय जो सदृश विरोध करने वाला हो, तुल्य व्यक्ति का प्रतियोगी ।
सत्फल(पु०)-दाडिम,अनार का वृक्ष।
सत्य(न०)-कृतयुग,क़सम,शपथ,ठीक २, सिद्धान्त,ब्रह्म । पु०-श्रीरामचन्द्र, विष्णु, पीपल का वृक्ष,एक मुनि। वि०-सत्ययुक्त ।
सत्यम्(अ०)-अङ्गीकार, प्रश्न,सवाल।
सत्यङ्कार (पु०)--सत्यापन, 'मुझे यह वस्तु अवश्य ख़रीदनी है' इस प्रकार सच्चा करना,बयाना देना।
सत्यधृति (पु०)--एक ऋषि। वि०-सत्यशील ।
सत्यनारायण (पु०) देवताविशेष, एक व्रत जो आजकल बहुत प्रचरित है।
सत्यपुर(न०)--विष्णुलोक ।
सत्यभामा(स्त्री०)--श्रीकृष्ण की पत्नी।
सत्ययुग(न०)-चार युगों में से पहिला।
सत्यलोक(पु०)-ब्रह्मलोक, सात लोकों में ऊपर का ।
सत्यवचाः[स्](पु०)-ऋषि,मुनि । वि०-सत्यवक्ता ।
सत्यवती(स्त्री०)-वेदव्यास की माता, ऋचीक मुनि की भार्या,नारदपत्नी।
सत्यवतीसुत(पु०)-वेदव्यास ।
सत्यवादी [न्] (वि०)-सत्य बोलने वाला, यथार्थवक्ता ।
सत्यवान् [वत्] (पु०)-एक राजा जो सावित्री का पति था ।
सत्यव्रत (पु०)-त्रेतायुग में सूर्यवंशीय एक राजा, त्रिशङ्कुराज,महादेव । न०-सत्यरूप व्रत। वि०-व्रतयुक्त।
सत्यसंध-सगर(पु०)-कुबेर, श्रीराम, भरत । वि०--दृढप्रतिज्ञ, सच्ची प्रतिज्ञा करने वाला ।
सत्यापन-ना=बयाना देना,साई देना।
सत्र(न०)-यज्ञ, धन, गृह,वन, आच्छादन, छल, सदादान,तड़ाग,दान ।
सत्रप (वि०)-लज्जायुक्त, लज्जालु ।
सत्रम्(अ०)-साथ, सह ।
सत्रशाला(स्त्री०)--अन्नादि दान का घर,यज्ञशाला, धर्मशाला ।
सत्राजित (पु०)-एक राजा जो सत्यभामा का पिता और श्रीकृष्ण का श्वशुर था ।
सत्रि(पु०)-मेघ, बादल ।
सत्री(न्)-गृहपति, गृहस्थ ।
सत्त्व (न०)-प्रकृति का एक गुण, सुख का हेतु प्रकाशक ज्ञान,व्यवसाय, स्वभाव,शक्ति। अस्त्री०-जन्तु,जीव।
सत्वर (न०)-शीघ्र, जल्दी । वि०-जल्दी करने वाला ।

सद् (१प०)–दुःखी होना, गमन करना।
सदन (न०)–घर, जल, पानी।
सदय (वि०)–दयालु, मेहरबान।
सदस् (स्त्री०)–सभा, कमेटी। न०–गृह, घर।
सदस्य (पु०)–सभासद्, मेम्बर।
सदा (अ०)–हरवक्त, हमेशा, नित्य।
सदाचार (पु०)–अच्छे मनुष्यों का आचरण। [वाला, नेकचलन।
सदाचारी [न्](वि०)-अच्छे आचरण
सदानन्द (पु०)–शिव, महादेव। वि०–हमेशा खुश रहने वाला। [नदी।
सदानीरा (स्त्री०)–करतोया नाम्नी
सदुत्तर (न०)–अच्छा उत्तर, ठीक जवाब। [बराबर।
सदृश श्-श (वि०)–एकसा, समान,
सदोष (वि०)–दोषयुक्त, ऐब वाला।
सद्भाव (पु०)–विद्यमानता, मौजूदगी, अच्छापन।
सद्म [न्](न०)–घर, जल, पानी।
सद्यः [स्](अ०)–झट, तत्क्षण, सपदि उसी वक्त।
सद्यःप्राणकर (वि०)-झट बल वा जीवन का देने वाला। न०–ताज़ामांस, बालाखी, दुग्धभोजन, घी, गर्मजल।
सद्यःप्राणहर (वि०)-झट ही बल वा जीवन को हरने वाला। न०–सूखा मांस, खट्टा दही आदि।
सद्योजात (पु०)–बत्स, बछड़ा, शिव-मूर्त्तिविशेष। वि०–तुरन्त ही पैदा हुआ।
सद्वृत्त (न०)–अच्छा स्वभाव, श्रेष्ठ आचरण। वि०–अच्छी जीविका वाला, सच्चरित्र।
सधर्मचारिणी (स्त्री०)–स्त्री, भार्या।
सधर्मा [न्](वि०)–समान धर्म वाला, समान, बराबर।
सधर्मिणी (स्त्री०)–स्त्री, भार्या, पत्नी
सधर्मी [न्](वि०)–समान धर्म वाला, एक जैसा आचरण करने वाला।
सधवा (स्त्री०)–सौभाग्यवती स्त्री, सभर्तृका नारी।
सधि (पु०)–अग्नि, आग।
सधिस् (पु०)–वृषभ, बैल।
सध्रीची (स्त्री०)–सहचरी, सखी, सहेली। [वाला।
सध्र्यच् (वि०)–सहचर, साथ विचरने
सनत् (पु०)-ब्रह्मा, विधाता। अ०-सर्वदा, हमेशा।
सनत्कुमार (पु०)-अपने नाम से प्रसिद्ध ब्रह्मा का पुत्र, एक मुनि।
सनन्द (पु०)–पूर्ववत्।
सनसूत्र (न०)-पवित्रक, मच्छी पकड़ने के लिये सन के सूत का बना हुआ जाल।
सना-त् (अ०)–नित्य, हमेशा, सर्वदा।
सनातन (पु०)-विष्णु, ब्रह्मा, शिव, ब्रह्मा का पुत्र, एक मुनि, दिव्य मनुष्य। वि०–नित्य, सदा होने वाला, निश्चल। [सरस्वती।
सनातनी (स्त्री०)–दुर्गा, लक्ष्मी,
सनाथा (स्त्री०)-सधवा स्त्री।
सनाभि (पु०)–ज्ञाति, सपिण्ड, जाति भाई। वि०–स्नेह वाला, तुल्य।

सति (पु०)-दान, पूजा, सत्कार, स्त्री०-गुरु आदि का किसी कार्य में सादर नियोजन।

सनिष्ठी [ष्ठि]व (न०)-थूक की बिन्दुओं के साथ कहा वचनादि, अनुकूल।

सनीड (वि०)-निकट, समीप रहने वाला, छिद्रयुक्त।

सन्तत (न०)-निरन्तर, हमेशा, लगातार। वि०-विस्तार वाला।

सन्तति (स्त्री०)-गोत्र, सन्तान, नाम, पंक्ति, विस्तार, पुत्र, कन्या, न रुकने वाली धारा।

सन्तप्त (वि०)-रास्ते के चलने आदि से थका हुआ, श्रान्त, अग्नि या धूप से तपा हुआ।

सन्तमस (न०)-गाढ़ अन्धकार, मोह, सर्वत्रव्यापी अन्धकार।

सन्तान (पु०)-वंश, अपत्य, औलाद, विस्तार, कल्पवृक्ष। न०-एकअस्त्र।

सन्तानिका (स्त्री०)-क्षीरसर, मलाई, फेनी, दूध का लच्छा, खोआ, छुरी का फल। [दुःख।

सन्ताप (पु०)-अग्नि की गर्मी, ताप,

सन्तापन (पु०)-कामदेव के पांच बाणों में से एक। वि०-सन्तापकारक।

सन्ति (स्त्री०)-दान, अन्त, अवसान।

सन्तुष्ट(वि०)-सबर वाला, सन्तोषी, खुश। [स्वास्थ्य, धीरज।

सन्तोष (पु०)-सन्तुष्टि, खुशी, सबर,

सन्दंश (पु०)-सडलोई उतारने का एक यन्त्र, सण्डासी ['सन्दंशिका' का भी यही अर्थ है।]।

सन्दर्भ (पु०)-रचना, ग्रन्थन, गूथना, प्रबन्ध, गूढार्थ का प्रकाशन, सारवचन।

सन्दान (न०)-दाम, रस्सी, बन्धन, उत्तम दान। पु०-हस्ती के घुटनों के नीचे का भाग।

सन्दानित (वि०)-बद्ध, बंधा हुआ।

सन्दानिनी (स्त्री०)-गोशाला, गौओं के बंधने का घर।

सन्दाव (पु०)-भागना, पलायन।

सन्दाह (पु०)-मुख, तालु और होंठों का सूखना, पूरी जलन।

सन्दिग्ध(वि०)-सन्देहयुक्त,शकवाला।

सन्दित (वि०)-बद्ध, बंधा हुआ।

सन्दिष्ट (न०)-सन्देश, वार्ता; वाचिक अर्थ का कथन। वि०-कथित। [सन्दिग्ध।

सन्दिहान (वि०)-सन्देह वाला;

सन्दी (स्त्री०)-खट्वा, खाट, मांजा।

सन्देश (पु०)-संवाद, ख़बर।

सन्देशहर-हारक (पु०)-दूत, ख़बर पहुंचाने वाला पुरुष।

सन्देह (पु०)=संशय।

सन्दोह (पु०)-समूह, गिरोह।

सन्द्राव (पु०)-पलायन, भागना।

सन्धा (स्त्री०)-प्रतिज्ञा, इक़रार, स्थिति, मेल।

सन्धान (न०)-मद्य निकालना, मेल, अनुसन्धान, काञ्जी, मदिरा।

सन्धि (पु०)-राजाओं के छः गुणों में से एक, मेल, भेट देने पूर्वक

राजाओं का परस्पर मिलना, हड्डियों के जोड़ का स्थान, चौरादि से बनाई हुई सुरङ्ग, सावकाश, साधन, दो अक्षरों का मिलना।

सन्धिचौर (पु०)–सुरङ्ग लगा कर चोरी करने वाला पुरुष।

सन्धित(वि०)–मिलित, जुड़ा हुआ।

सन्धिनी (स्त्री०)--बैल द्वारा गर्भ धारण करने वाली गौ, अकाल दुग्धा गौ।

सन्धिपूजा (स्त्री०)–आश्विनशुक्लपक्ष की अष्टमी और नवमी के मेल की पूजा, शारदीय महापूजा के अन्तर्गत तृतीयापूजा। [पुष्प।

सन्धिपुष्प(पु०)--भूमिचम्पक,चमेलीका

सन्धिवेला(स्त्री०)–दिन और रात्रि के मिलने का समय।

सन्धिहारक(पु०)--सुरंग से चोरी करने वाला पुरुष, सन्धिचौर।

सन्धुक्षित (वि०)–भड़काया हुआ, प्रकाशित, उद्दीपित। [मिलनीय।

सन्धेय(वि०)–मिलाने योग्य, सयोज्य,

सन्ध्या (स्त्री०)–दिन और रात्रि के मिलने के वक्त दो घड़ी का समय, रात्रि के आद्यन्त समय का दण्डचतुष्टयात्मककाल, युगसन्धि, सन्ध्यासमय उपासनीय देवता, नदीविशेष, एक स्त्री॰ छीगर, चिन्ता, पुष्पविशेष।

सन्ध्यांश (पु०) युग की सन्धि।

सन्ध्यानटी [न्](पु०)–शिव,महादेव।

सन्ध्याभ्र (न०)–गेरू, स्वर्ण, सन्ध्या समय का मेघ।

सन्ध्याराग(न०)–सिन्दूर।

सन्ध्याराम(पु०)--ब्रह्मा।

सन्नक(पु०)--पियाल वृक्ष, निर्बलजन, खर्व, बौना। वि०–निर्बल, अवसन्न, दु खित, घटा हुआ।

सन्नत(वि०)--प्रणत, झुका हुआ।

सन्नति (स्त्री०)–प्रणति, प्रणाम, ध्वनि, नम्रता।

सन्नद्ध(वि०)–वर्म्मित, कवच पहिरे हुए, उद्यत, बद्ध, सज्जित।

सन्नय(पु०)- समूह, गिरोह।

सन्नाह(पु०)–वर्म्म,कवच,जिरह,बख्तर।

सन्निकर्ष (पु०)–समीप, सन्निधान, निकट होना, न्याय में विषय और इन्द्रियों का सम्बन्ध जो ज्ञान का हेतु है।

सन्निधान (न०)–निकट, सामीप्य, आश्रय, अवस्थान,इन्द्रियगोचर।

सन्निधि (स्त्री०)–पूर्ववत्।

सन्निपतित (वि०)–मिला हुआ, मिश्रित, एकत्रीकृत।

सन्निपात(पु०)–मिलना,नीचे गिरना, एकत्र होना, एक ज्वर जिस में वात पित्त कफात्मक तीनों दोष बिगड़ कर एकत्र होजाते हैं,नाश, तालविशेष।

सन्निबन्धन (न०)--अच्छे प्रकार बांधना, कई स्थानों में विभक्त वाक्यों का एक स्थान पर सकलन करना। वि०-अच्छे आजीवन वाला।

सन्निभ (वि०)–सदृश,तुल्य,बराबर।
सन्निविष्ट (वि०)–उपविष्ट, बैठा हुआ, निकट।
सन्निवेश (पु०)–निकर्षण, नगर से बाहिर विहार करने का प्रदेश, अच्छी स्थिति,मल्लस्थान,अखाड़ा।
सन्निहित (वि०)–निकटस्थित, समीप में ठहरा हुआ। पु०–अग्निविशेष। न०–निकट होना।
सन्न्यस्त (वि०) समर्पित, सौंपा हुआ, निक्षिप्त, त्यागा हुआ, रक्खा हुआ।
सन्न्यास (पु०)–काम्य कर्मों का परित्याग, चौथा आश्रम, चैत्र मास में शिव का व्रतविशेष।
सन्न्यासी [न्] (पु०)–सन्न्यासयुक्त, चौथे आश्रम वाला पुरुष,परिव्राट्।
सपक्ष (पु०) न्याय में वह पक्ष जिस में साध्य और साधन दोनों विद्यमान हों। वि० सम्बन्धी, अपनी तरफ के मनुष्यों वाला, पक्षों वाला।
सपत्राकरण (न०)–सपक्ष बाण के लगने की अतिपीडा, अत्यन्त व्यथा।
सपत्न (पु०)–शत्रु, दुश्मन, वैरी।
सपत्नी (स्त्री०)–समानपतिका स्त्री, सौतिन, दूसरी औरत। [क्रट।
सपत्नीक(वि०) भार्यासहित,स्त्री वाला।
सपदि(अ०)–तत्क्षण,उसी समय द्रुत।
सपर्या(स्त्री०)–पूजा,सत्कार,आदर।
सपाद(वि०)–पादसहित,चौथे हिस्से वाला, चतुर्थांश युक्त, सवाया।
सपिण्ड (पु०) -सप्तपुरुषान्तर्गत जाति, दायभागी, सनाभि, सात पीढी तक का पुरुष।
सपिण्डीकरण (न०)–वह कर्म जिस में प्रेतत्व के छुड़ाने के लिये प्रेत का पिण्ड पिता, पितामह और प्रपितामह के पिण्ड के साथ मिलाया जाता है, प्रेत को पित्रादि की पंक्ति में मिलाने वाला श्राद्धविशेष।
सपिण्डीकृत (वि०)–वह मृतक जिस का सपिण्डन कर्म किया गया हो।
सपीति (स्त्री०)–ज्ञाति [बिरादरी] के साथ मिलकर खाना, पीना।
सप्त [न्] (न०) ७ की संख्या,सात।
सप्तक (वि०)–सातवां। न० सात।
सप्तजिह्व ज्वाल (पु०)–अग्नि, आग।
सप्तति (स्त्री०)–सत्तर।
सप्तदश [न्] (वि०)–१७ की संख्या।
सप्तधातु (पु०)–शरीरस्थ सात धातु यथा-रस, रक्त,मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र।
सप्तपदी (स्त्री०)–विवाह के समय वधू और वर का सात पद साथ २ चलना।
सप्तम (वि०)–सातवां।
सप्तमी (स्त्री०)-व्याकरण में सातवीं विभक्ति, प्रत्येक पक्ष की सातवीं तिथि।
सप्तसप्ति (पु०)–रवि, सूर्य।
सप्ति (पु०)–घोड़ा, जीन.
सप्रत्यय (वि०)–विश्वास

सफल(वि०)–कामयाब,फलयुक्त,सनाश
सबलि(पु०)–सायंकाल का अन्धकार।
सबाद (वि०)–सताने वाला,हानिकर।
सभर्तृका (स्त्री०)–पतियुक्ता स्त्री।
सभा (स्त्री०)–समाज, मीटिंग, मन्त्रणागृह,न्यायालय,पबलिक हाल।
सभापति-नायक(पु०)-प्रधान,चेयरमैन।
सभावन(पु०)–शिव, महादेव।
सभासद्(पु०)-सभा का मेम्बर या सभ्य
सभास्तार(पु०)–पूर्ववत्।
सभ्य (वि०)–सभा से सम्बन्ध रखने वाला, सभा के योग्य, वफ़ादार, शरीफ।पु०-सभासद्,कुलीन,असेसर
सभ्यता-त्वम्=शराफत, कुलीनता।
सम्(१ प०)–घबराना, न घबराना।
सम् (अ०)–साथ,समान, हाँ, बहुत आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है।
सम (वि०)–समान, वही, सदृश, बराबर, साफ, सरल, ईमानदार, अच्छा, साधारण, सीधा,समस्त, चौरस न०–चौरस मैदान।
समकालम्(अ०)–एक साथ मिलकर।
समकालीन(वि०)–एक ही समय में रहने वाला,एक वक्त का।
समकोल(पु०)–सर्प, सांप।
समक्ष(वि०)–आंखों के सामने,प्रत्यक्ष।
समग्र(वि०)–तमाम, सारा,सम्पूर्ण।
समचतुरस्र(वि०)-मुरब्बा। न० ऐसा क्षेत्र जिसकी चारों भुजा बराबर हों
समचित्त(वि०)–शान्तचित्त,उदासीन।
समज्(१ प०)–इकट्ठा करना, जोड़ना, पराजित करना, भड़काना।
समज (पु०)-मूर्खमण्डली, समूह। न०-वन, जंगल।
समज्ञा(स्त्री०)–यश, कीर्ति।
समज्या(स्त्री०)–मीटिंग, सभा, यश।
समञ्जस (वि०)–उचित, ठीक शुद्ध, साफ, नेक, तन्दुरुस्त। न०–औचित्य, शुद्धता।
समतिक्रम्(१ उ०)–बिल्कुल पार होना, बढ़ जाना, अवज्ञा करना।
समतिक्रम(पु०) सम्यक्तयाअतिक्रमण।
समती=समतिक्रम्।[बीताहुआ[वक्त]।
समतीत (वि०)–गत, अच्छी तरह
समत्रिभुज(अस्त्री०)–ऐसा क्षेत्र या चित्र जिस की तीनों भुजा बराबर हों।
समद्(वि०)–मदमस्त, हर्षित।
समदर्शी[न्](वि०)–बेलाग,पक्षपातहीन
समदृश्-दृष्टि=समदर्शी।
समधिक(वि०)–अतिशय, बहुत।
समधिकम्(अ०)–बहुत अधिक।
समधिगम् (१ प०)–समीप पहुंचना, अध्ययन करना, प्राप्त करना, सबक़त ले जाना।
समधिगमन(न०)–सबक़त,अतिक्रमण।
समनुज्ञा (९ प०)–रज़ामन्द होना, पसन्द करना,इजाज़त,माफ़करना
समनुज्ञान(न०)–स्वीकृति, मंजूरी।
समन्त(वि०)–विश्वव्यापक,समूचा। पु०–हद्द, सीमा।
समन्ततः[स्](अ०)–चारों तरफ से।
समन्तभुज्(पु०)–अग्नि, आग।
समन्वय(पु०)–बाक़ायदा सिलसिला, तात्पर्य।[क्रमपूर्वक गुथा हुआ।
समन्वित (वि०)–अच्छे प्रकारयुक्त,

समभिव्याहार(पु०)–सहित, साथ, सम्यक्तया कथन करना, साथ वर्णन करना।
समभिव्याहृत(वि०)–साथ उच्चारण किया हुआ, सहित, मिश्रित।
समभिहार (पु०)–पौनःपुन्य, बार बार, भृशार्थ।
समम्(अ०)–साथ,सहित,एक ही बार।
समय (पु०)–काल, वक्त, आचार, शपथ, सिद्धान्त, संकेत, सुचित, स्वीकार,अवसर,नियम,सम्पत्ति।
समया (अ०)–निकट, समीप, मध्य।
समयाध्युषित (वि०)–सूर्य और तारागण से रहित काल।
समर (पु०)-संग्राम, युद्ध, लड़ाई।
समरमूर्द्धा [न्] (पु०)–संग्रामभूमि, युद्धस्थल,लड़ाई का मैदान।
समर्चन(न०)–सम्यक्प्रकार से पूजा करना,अच्छी तरह आदरकरना।
समर्थ (वि०)–शक्तियुक्त,ताकतवाला
समर्थन-ना=उचितानुचित रूप से निश्चय करना, याथार्थ्य रूप से साबित करना, फ़ैसला।
समर्द्धक (वि०)–अभिलषित पदार्थ का देने वाला, इष्टफलप्रद।
समर्याद (पु०)–समीप। वि०-मर्यादायुक्त, अच्छे चलन वाला।
समल (न०)–विष्ठा, बहुत मल। वि०-मलसहित।
समवतार (पु०)–तीर्थ, जल में उतरने की सीढ़ी [पौड़ी]।
समवर्ती [न्] (पु०)–यमराज। वि०-समान वर्त्ताव करने वाला।
समवाय (पु०)–समूह, मेल, नित्य रहने वाला सम्बन्ध।
समवेत (वि०)–समूहयुक्त, मिश्रित, मिला हुआ,इकट्ठा हुआ।
समष्टि (स्त्री०)–समूह, सम्मेलन, सम्यग्व्याप्ति, समस्तपन।
समस्त(वि०)–सारा,सम्पूर्ण,संक्षिप्त, कृतसमास, मिलित।
समस्थ (पु०) – समानभाव से रहने वाला,समभावस्थित।
समस्थली(स्त्री०)–गंगा और यमुना के मध्य का प्रदेश, द्वाबा।
समस्या(स्त्री०)–श्लोक के एक पाद से शेष तीन और बना कर श्लोक की पूर्ति करना।['समस्यार्था'भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]।
समा (स्त्री०) वर्ष, संवत्,साल।
समांशिक (वि०)–समान भाग वाला, बराबर हिस्से वाला।
समांशी [न्](वि०)- पूर्ववत्।
समांसमीना (स्त्री०)-प्रतिवर्ष बच्चा देने वाली गाय।
समाकर्षी [न्](पु०)-बहुत दूर तक फैलने वालीगन्ध,दूरगामी गन्ध। वि०–अच्छे प्रकारखींचने वाला।
समाख्या (स्त्री०)--कीर्त्ति, यश, नाम, प्रसिद्धि।
समागत (वि०)--सम्यक्तया आया [हुआ
समागम (पु०)–सम्प्राप्ति, अच्छेप्रकार आगमन या मेल।
समाघात (पु०)– युद्ध,संग्राम, लड़ाई।

समाचार (पु०)–अच्छा आचरण, संवाद, खबर ।
समाज (पु०)–सभा, मीटिंग, हाथी ।
समाधा (स्त्री०)–विरोध का मिटाना, समाधान, प्रश्नोत्तर ।
समाधान (न०)–चित्त की एकाग्रता, ब्रह्म में मन का लगाना, झगड़ा मिटाना, प्रश्न का यथोचित उत्तर देना, नाटक का एक अङ्ग ।
समाधि (पु०)–ध्यान, एकाग्र हो कर ध्येय वस्तु में चित्त का स्थिरीकरण, नियम, काव्य का एक गुण, कारणसामग्री, मठ । [हुआ ।
समाधिस्थ (वि०)–समाधि में लगा
समान (वि०)–तुल्य, सम, बराबर । पु०–नाभिस्थ वायु, वर्णभेद ।
समानोदर्य (वि०) सहोदर, सगा ।
समापक (वि०)–समाप्त करने वाला ।
समापन (न०)–समाप्ति, खात्मा ।
समापन्न (वि०)–प्राप्त, समाप्त, क्लिष्ट ।
समाप्त (वि०)–ख़तम, अच्छे प्रकार प्राप्त हुआ । [खात्मा ।
समाप्ति (स्त्री०)–आख़ीर, अन्त,
समाप्य (वि०)–ख़तम करने लायक, समाप्तियोग्य । अ०-समाप्त करके
समालम्बी [न्] (वि०)–लटकने वाला । पु०–भूमिचम्पक ।
समालम्भ-म्भ (पु०)–कुङ्कुमादि, से शरीर पर लेपन करना, मारना ।
समालम्भन (न०)–पूर्ववत् ।
समावर्त्तन (न०)–एक संस्कार जो विद्यासमाप्ति के बाद घर आने के वक्त होता है । [संलग्न ।
समाविष्ट (वि०)–संयुक्त, मिला हुआ,
समावृत (वि०)–सम्यक् प्रकार से ढका हुआ ।
समावृत्त (वि०)–कृतसमावर्त्तन, विद्यासमाप्ति के अनन्तर जिस को गुरु ने गृहस्थाश्रम में प्रवेश होने की आज्ञा दे दी हो ।
समावेश (पु०)–अनेक अर्थों को एक वचन में लाना, प्रवेश ।
समास (पु०)–संक्षेप, समर्थन, बहुत पदों का एक होना, इकट्ठा करना, खुलासा करना ।
समासक्त (वि०)–संयुक्त, मिलित, मिला हुआ, फंसा हुआ ।
समासङ्ग (पु०)–मेल, संयोग ।
समासादित (वि०)–प्राप्त, पाया हुआ, आहृत, निकटस्थ । [संक्षेप
समाहार (पु०)–समुच्चय, इकट्ठा करना,
समाहित (वि०)–समाधि में लगा हुआ, धृतसमाधि, प्रतिज्ञात, विकारहित, शुद्ध, निष्पन्न ।
समाहृत (वि०)–संगृहीत, इकट्ठा किया हुआ, एकत्रीकृत ।
समाहृति (स्त्री०)–संग्रह, संक्षेप ।
समाह्वय (पु०)–द्यूत, जुआ, बुलाना, युद्ध, पक्षी आदि का द्यूत ।
समित (स्त्री०)–युद्ध, लड़ाई ।
समिता (स्त्री०)–गेहूं का चून, मैदा ।
समिति (स्त्री०)–सभा, कमेटी, युद्ध, जंग, बराबरी ।
समिध-ध (पु०)–अग्नि, आग ।

समिद् [ध्](स्त्री०)–लकड़ी, होमार्थ काष्ठविशेष । [प्रज्वलित ।
समिद्ध (वि०)–प्रदीप्त, जला हुआ,
समिध (पु०)–अग्नि, काष्ठ ।
समिन्धन (न०)–समित्, काष्ठ ।
समीक (न०)-संग्राम, लड़ाई ।
समीकरण (न०)–जो बराबर न हो उसे बराबर करना, बीजगणित में वह प्रक्रिया जिस के द्वारा अज्ञात संख्या जानी जाती है ।
समीक्षण (न०)-प्रेक्षण, अच्छे प्रकार देखना । वि०-प्रकाशक ।
समीक्षा (स्त्री०)–पर्यालोचना, ठीक ठीक समझना, बुद्धि, मीमांसा-शास्त्र, यत्न, आत्मविद्या ।
समीक्ष्यकारी [न्] (वि०)–विचार कर काम करने वाला ।
समीच (पु०)–समुद्र, सागर ।
समीचक (पु०)–मैथुन, स्त्रीसंग ।
समीची (स्त्री०)–मृगी, स्तुति, वन्दना ।
समीचीन (न०)–यथार्थ, ठीक, सत्य वि०-सत्ययुक्त ।
समीद (पु०)=समिता ।
समीप (वि०)–निकट, अदूर, पास ।
समीर (पु०)–वायु, पवन, शमीवृक्ष ।
समीरण (पु०)–वायु, प्रेरण, पथिक, मरुवक वृक्ष । वि०-प्रेरक ।
समीरित (वि०)–कथित, उच्चारित ।
समीहित (वि०)–अभिलषित, चाहा हुआ, वांछित ।
समुचित(वि०)–उपयुक्त, योग्य ।
समुच्चय (पु०)–इकट्ठा होना, परस्पर-निरपेक्ष बहुत से शब्दों का एकत्रित होना, समाहार ।
समुचित (वि०)--इकट्ठा किया हुआ ।
समुच्छेद(पु०)–विनाश, सम्यक् प्रकार से काटना ।
समुच्छ्र [च्छ्रा] य (पु०)–विरोध, उत्सेध, ऊंचा होना, अत्युच्चता ।
समुच्छ्रित(वि०)–अत्युन्नत, बहुत ऊंचा ।
समुच्छ्वसितं-श्वासः=श्वास, सांस, मुख-नासिक द्वारा वायु का चलना ।
समुज्झित(वि०)–त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, परित्यक्त ।
समुत्क्रम्(१ प०)–अच्छे प्रकार जाना, भले प्रकार गमन करना ।
समुत्क्रम (पु०)–ऊपर जाना, भले प्रकार ऊपर जाना ।
समुत्क्रोश(पु०)–कुररपक्षी, कुंज नामक पक्षी, जोर की आवाज़
समुत्थ (वि०)–सम्यगुत्पन्न, अच्छे प्रकार पैदा हुआ, उठा हुआ ।
समुत्थान(न०)–उठाना, अच्छे प्रकार उद्योग करना ।
समुत्थित(वि०)–उठा हुआ, सम्यक् प्रकारेण उठा हुआ ।
समुत्पन्न (वि०)–अच्छे प्रकार पैदा हुआ, समुद्भूत । [करना ।
समुत्पादन(न०)–अच्छे प्रकार से पैदा
समुत्सर्ग(पु०)–सम्यक् त्याग, अच्छे प्रकार छोड़ना, पूर्णत्याग ।
समुत्सुक(वि०)–शौक़ीन, बहुत उत्साह वाला, अभिलषित वस्तु की प्राप्ति के निमित्त शीघ्रता करने वाला ।

समुत्सृष्ट(वि०)-अच्छे प्रकार त्यागा हुआ, दिया हुआ । [युद्ध, दिन ।
समुद [दा] य (पु०)-समूह, गिरोह,
समुद्गम (पु०)-सब प्रकार से ज्ञान ।
समुदित (वि०)-अच्छे प्रकार से कहा गया, उदय हुआ ।
समुदीरण (न०)-अच्छे प्रकार कहना ।
समुद्ग (वि०)-मूंगका, मूंगसहित । पु०-सम्पुट, सन्दूक ।
समुद्गम (पु०)-ऊपर जाना, उत्पत्ति ।
समुद्गीत (वि०)-ऊंचे स्वर से गान किया हुआ ।
समुद्गीर्ण (वि०)-वमित, उगला हुआ, कथित, उठाया हुआ ।
समुद्दिष्ट (वि०)-सम्यक् ज्ञापित, अच्छे प्रकार कहा हुआ ।
समुद्धत (वि०)-अत्युन्मत्त, धूर्त, अतिनिपुण, अतिमूर्ख, घमंडी ।
समुद्धरण (न०)-उत्तोलन, कूपादि से जल का निकालना, भक्षित अन्न का वमन करना, उद्धार ।
समुद्धर्त्ता [र्त्तृ] (वि०)-उद्धार करने वाला, उभारने वाला ।
समुद्धृत (वि०)-अपनीत, उत्पाटित, अच्छे प्रकार से निकाला हुआ, उद्धृत किया गया ।
समुद्भव (पु०)-उत्पत्ति, पैदायश ।
समुद्भूत (वि०)=समुत्पन्न ।
समुद्यत (वि०)-अच्छे प्रकार से तैयार हुआ, पूर्ण उद्यमी ।
समुद्यम (पु०)-पूर्णप्रयत्न, पूरे तौर पर कोशिश करना ।
समुद्र (पु०)-सागर, जलनिधि ।
समुद्रकफ-फेन (पु०)-समुद्रझाग ।
समुद्रग (वि०)-समुद्र को प्राप्त होने वाला ।
समुद्रगा (स्त्री०)-नदी, दरिया ।
समुद्रमेखला-रसना वसना (स्त्री०)-पृथ्वी । [करने के लिये जाना ।
समुद्रयात्रा (स्त्री०)-समुद्र की सैर
समुद्रयान (न०)-पोत, जहाज ।
समुद्रवेला (स्त्री०)-समुद्रतट, समुद्र का किनारा ।
समुद्रा (स्त्री०)-शमीवृक्ष ।
समुद्रि[द्री] य (वि०)--समुद्र में उत्पन्न होने वाला, समुद्रसम्बन्धी ।
समुद्वह (वि०)--सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, अच्छे प्रकार लेजाने वाला, ।
समुद्वाह (पु०)- श्रेष्ठ विवाह, शादी ।
समुन्दन(न०)--गीलापन, आर्द्रीभाव ।
समुन्न(वि०)--क्लिन्न, भीगा हुआ ।
समुन्नत (वि०)-अच्छे प्रकार उठा हुआ, ऊंचा । [ऊंचाई ।
समुन्नति (स्त्री०)--उच्चता, उत्सेध,
समुन्नद्ध (वि०)--अभिमानी, घमण्डी, पण्डितम्मन्य, अच्छे प्रकार उत्पन्न ।
समुन्मूलन (न०) -जड़ से उखाड़ना, अच्छे प्रकार नष्ट करना ।
समुपजोषम्(अ०)--आनन्द, खुशी ।
समुपवेशन(न०)-मकान, घर ।
समुपस्थित(वि०)-विद्यमान, मौजूद, हाज़िर । [से प्राप्त ।
समुपेत (वि०) एकत्रित, अच्छे प्रकार
समुपेयिवान्(वि०)-समीपगत, पास में पहुंचा हुआ, गमनकर्ता ।

समुपोढ(वि०)–मिला हुआ, संगत, उत्पन्न। [परिच्छेद, अध्याय।
समुल्लास (पु०)–अत्यन्त आनन्द,
समुल्लेख(पु०)–पैर आदि से पृथ्वी का खोदना।
समूढ(वि०)–इकट्ठा किया हुआ,राशीकृत, फुका हुआ, विवाहित, शोधित, भुग्न, टेढ़ा।
समूल(वि०)–मूलसहित,जड़ के साथ।
समूह् (१उ०)–इकट्ठा करना, एकत्र करना।
समूह (पु०)–ढेर, गिरोह, संख्या।
समूहनी(स्त्री०)–झाड़ू, मार्जनी।
समृ(१प०)–मिलना,आमनेसामनेआना
समृद्ध (वि०)–अमीर, धनवान्, वर्द्धित अभ्युदयित, सौभाग्यवान्।
समृद्धि (स्त्री०)–अभ्युदय, मंगल, सम्पत्ति, शक्ति।
समृध् (४,५प०)–बढ़ना,उन्नति पाना।
समॄ (२प०)–पार करना,मिलना।
समेत(वि०)–समुपेत,सहित,मिलित।
समेध्(१आ०)–वृद्धि पाना,फूल फलना।
सम्पत् (१प०)–मिल कर उड़ना, आक्रमण करना, संघटित होना, उतरना, एकत्रित होना।
सम्पत्ति (स्त्री०)–अभ्युदय, सफलता, धनवृद्धि।
सम्पद्(४आ०)–कामयाब होना,उत्पन्न होना,पूरा होना,प्राप्त करना।
सम्पद् (स्त्री०)=सम्पत्ति।
सम्पन्न (वि०)–अभ्युदित, सौभाग्यवान्, प्राप्त, युक्त। पु०–शिव। न०–दौलत, धन।
सम्पराय (न०)–युद्ध, लड़ाई, विपद्, भविष्यदशा, पुत्र।
सम्परे (२आ०)–मुकाबिला करना, गुजरना। [मैथुन, मोहब्बत।
सम्पर्क (पु०)–मेल, मिश्रण, संगति,
सम्पाक (वि०)–चतुर, कुशल, छोटा, तर्कवादी।पु०-अमलतास का वृक्ष।
सम्पाट (पु०)–तकुवा, तर्कु।
सम्पात (पु०)–एक स्थान पर मिलन, टक्कर, अधोगमन, गति, दूरीकरण, गरुड़पुत्र।
सम्पाति(पु०)–एक कल्पित पक्षी जो गरुड़ का पुत्र और जटायु का बड़ा भाई था।
सम्पादः-दनम्=सफलता,पूर्ति,प्राप्ति।
सम्पिष् (७प०)–अच्छे प्रकार पीसना।
सम्पीड् (१० उ०)–दबाना, सताना, ग्रसना।
सम्पीडः-नम्=दबाव,दुःख,उद्वेग,जुल्म
सम्पुट (पु०)–गर्त्त, गहरा स्थान, टोकरी, बकस।
सम्पुटका-टिका (स्त्री०)–पूर्ववत्।
सम्पूज् (१० उ०)–पूजना,भेंट करना।
सम्पूर्ण (वि०)–भरा हुआ, समस्त, तमाम। न०-ईथर वायु।
सम्पृक्त (वि०)–मिला हुआ, सम्बन्धित, स्पर्श में आया हुआ।
सम्प्रदेता [तृ] (पु०)–शासक, न्यायाधीश।
सम्प्रति(अ०)–अब,इस समय,इदानीम्

सम्प्रतिपत्ति (स्त्री०)–समीपागमन, उपस्थिति, प्राप्ति, स्वीकारी, आक्रमण, घटना, सम्पादन ।
सम्प्रतिपद् (४ आ०)–पास जाना, ख़याल करना, राय में राय मिलाना, प्राप्त करना, सम्पादन करना ।
सम्प्रती (२ प०)–विश्वास करना, फ़ैसला करना, तौलना । [यश ।
सम्प्रतीति (स्त्री०)–पक्का विश्वास,
सम्प्रत्यय (पु०)–अद्दर व पैमान, दृढ़ विश्वास । [विवाह में देना ।
सम्प्रदा (३ उ०)–देना, बख्शना,
सम्प्रदान(न०)–सम्यक् रूप से देना, विवाह में देना, बलिप्रश, चतुर्थी विभक्ति का अर्थद्योतन ।
सम्प्रदाय (पु०)–परम्परा, विश्वास-समूह, विशेष धार्मिक विचार, मत-विशेष के मानने वालों का समूह ।
सम्प्रधान (न०)–निश्चायकता ।
सम्प्रधारणं-रणा=उचितानुचित का विचार । [से युक्त ।
सम्प्रपन्न (वि०)–प्राप्त, अच्छे प्रकार
सम्प्रपद् (४ आ०)–प्राप्त करना, आरम्भ करना ।
सम्प्रमोद (पु०)–अतिहर्ष, महोल्लास ।
सम्प्रमोह (पु०)–बड़ा मोह या प्रति-भाक्षय । [बटा हुआ, आसक्त ।
सम्प्रयुक्त(वि०)–एक साथ जुता हुआ,
सम्प्रयुज् (१,७उ०)–एक साथ जोतना, मिलाना, प्रयोग में लाना, पहचान ।
सम्प्रयोग (पु०)–मेल, लगाव, सम्ब-न्ध, समागम ।

सम्प्रवद् (१ उ०)–ज़ोर से वा साफ़ बोलना, चिल्लाना, बातचीत करना ।
सम्प्रवदन (न०)–बातचीत, गुफ़्तगू ।
सम्प्रवर्त्तन (न०)–आरम्भ, साहसिक कार्य । [करना ।
सम्प्रविश् (६ प०)–मिल कर प्रवेश,
सम्प्रवृत् (१आ०)–संघटित होना, आरम्भ करना, उपस्थित होना ।
सम्प्रश्न (पु०)–तहक़ीक़ात, जांच ।
सम्प्रसाधन (न०)–शृङ्गार, सजावट, सुसम्पादन । [बढ़ना ।
सम्प्रस्था (१आ०)–रवाना होना,
सम्प्रस्थान (न०)–रवानगी, बहिर्गमन ।
सम्प्रहार (पु०)–एक दूसरे पर चोट करना, मुक़ाबिला, गति ।
सम्प्राप् (५प०)–प्राप्त करना, पहुंचना ।
सम्प्राप्ति (स्त्री०)–पूर्णतया प्राप्ति ।
सम्प्री (४ आ०)–सम्यक्तया प्रसन्न होना । [देखना ।
सम्प्रेक्षण (न०)–अच्छे प्रकार से
सम्प्लव (पु०)–बाढ़, जलमग्न होना ।
सम्फुल्ल (वि०)–सम्यक्तया खिला हुआ । [हुआ, शृङ्खलायुक्त ।
सम्बद्ध (वि०)–अच्छे प्रकार से बंधा
सम्बन्ध् (९प०)–एक साथ बांधना, जोड़ना, बनाना ।
सम्बन्ध (वि०)–योग्य, उचित । पु०–लगाव, ताल्लुक़, रिश्तेदारी, षष्ठी विभक्ति का अर्थद्योतन, विवाहयोजना, अभ्युदय ।
सम्बन्धक (वि०)–जोड़ने वाला, मित्र, सम्बन्धी, रिश्तेदार ।

सम्बन्धी [न्] (वि०)–सम्बन्ध रखने वाला, मिला हुआ। पु०–रिश्तेदार, पुत्रवधू के पिता और भ्रातादि।
सम्बर (पु०)–पुल, पुश्ता, मृगभेद, पर्वत, एक राक्षस। न०–रोक, जल।
सम्बल (अस्त्री०)–रसद, यात्रा में खाने पीने का सामान। न०–जल। [रोकना।
सम्बाध् (१आ०)–सताना, जुल्म करना,
सम्बाध-नम् = रोक, बाधा, कठिनता, डर।
सम्बुद्ध (वि०)–अच्छी तरह समझा हुआ, अतिचतुर। पु०–बुद्ध या जैनदेवता।
सम्बुध् (१उ०,४आ०)–समझना, वाक़िफ़ होना, जागना, देखना।
सम्बोध (पु०)–सूचना, व्याख्या, शुद्ध ज्ञान।
सम्बोधन (न०)–व्याख्या, पुकारना, पुकारने में जो विभक्ति प्रयुक्त होती है उसका नाम।
सम्भक्त (वि०)–विभक्त, अच्छे प्रकार बांटा हुआ, आसक्त।
सम्भज् (१उ०)–तक़सीम करना, भोगना, देना, सेवा करना।
सम्भली (स्त्री०)–कुटनी।
सम्भव (पु०)–उत्पत्ति, भाव, पैदायश, कारण, आरम्भ, मेल, इमशान, औचित्य, नाश, योग्यता।
सम्भाव्य (वि०)–जिसकी भविष्य काल में होने की आशा हो, मुमकिन, योग्य।
सम्भार (पु०)–एकत्रित करना, सामान, रसद, समूह, सहारा, धन।
सम्भावना (स्त्री०)–अनुमान, मन में विचारना, विचार, पूजाभाव इमकान, योग्यता, सन्देह, प्रेम, प्रसिद्धि।
सम्भावित (वि०)–भावना किया हुआ, मुमकिन, पूजनीय, प्राप्त, सन्तुष्ट।
सम्भू (१आ०)–उत्पन्न होना, वर्तमान होना।
सम्भूत (वि०)–उत्पन्न, संयुक्त, समान।
सम्भूति (स्त्री०)–उत्पत्ति, आरम्भ, मेल, औचित्य, शक्ति।
सम्भूय (अ०)–मिल कर, एक साथ।
सम्भूयसमुत्थान (न०)–मिल कर व्यापारिक काम करना, कम्पनी खोलना।
सम्भृ (३उ०)–इकट्ठा करना, पूरा करना, तैयार करना।
सम्भृत (वि०)–एकत्रित, तय्यार, युक्त, प्राप्त।
सम्भृति (स्त्री०)–समृद्ध, तैयारी, पूर्णता, परवरिश। [राशि।
सम्भाष या षम् = बातचीत, गुफ़्तगू प्रिय
सम्भिद् (७उ०)–टुकड़े २ करना, मिलाना, डराना। [भागा हुआ।
सम्भुक्त (वि०)–खाया हुआ, अच्छे प्रकार
सम्भोग (पु०)–आनन्द, इस्तेमाल, मैथुन।
सम्भोजक (पु०)–ज़ायका लेने वाला, भक्ता।
सम्भ्रम् (१, ४ प०)–घूमना, घबराना।
सम्भ्रम (पु०)–चक्कर काटना, जल्दी, भय, घबराहट, ग़लती, अज्ञान।
सम्मत (वि०)–अच्छे प्रकार माना हुआ, पसन्द, विचारित पूजित।
सम्मति (स्त्री०)–राय, स्वीकारी, इच्छा, आदर, प्रेम, आदेश। [उदास।
सम्मद (वि०)–अत्यन्त हर्षित। पु०–महा
सम्मन् (८आ०)–राज़ी होना, स्वीकार करना, सोचना, इजाज़त देना आदर करना। [करना।
सम्मन्त्र् (१आ०)–सलाह करना, स्वागत
सम्मन्त्रण (न०)–सलाह, राय, मशवरा।
सम्भ्रान्त (वि०)–घबराया हुआ, विक्षिप्त, आदृत, पूजनीय।
सम्मा (३आ०, २प०)–मापना बराबर करना।
सम्मार्जक (पु०)–भंगी, झाड़ू लगाने वाला।
सम्मार्जनी (स्त्री०)–झाड़ू, बुहारी।
सम्मान (पु०)–आदर, इज़्ज़त। न०–तौल, मुक़ाबिला। [पर मिलना।
सम्मिल् (६प०)–इकट्ठा होना एक स्थान
सम्मील् (१प०)–आंखें बंद करना मुर्झाना।
सम्मुख (वि०)–आमने सामने, मुंह के आगे, मुक़ाबिले में।
सम्मुखम् (अ०)–सामने, आगे, मुक़ाबिले में।
सम्मुखी [न्] (पु०)–आइना, दर्पण।
सम्मुग्ध (वि०)–सुन्दर, विक्षिप्त।

सम्मुह् (४ प०)–घबराना, मूर्ख बनना।
सम्मृज् (२प०, १ उ०)–साफ़ करना, झाड़ू लगाना।
सम्मृद् (९ प०)–दबाना,पीसना,कुचलना।
सम्मेलन (न०)–एक स्थान पर मिलना, मिश्रण, सभा, कान्फ्रेंस।
सम्मोद (पु०)–मनोल्लास,बड़ी खुशी।
सम्यक्-च्-ञ्च् (वि०)–ठीक, उचित, खुशगवार, सारा, तमाम।
सम्राट् [ज्] (पु०)–चक्रवर्ती राजा, ऐसा राजा जिसने राजसूय यज्ञ कर लिया हो।
सयोनि (वि०)–सहोदर, सगा। पु०–सगाभाई, चुरैता, इन्द्र।
सर(वि०)–गतिशील। पु०–गति,तीर, मलाई,नमक,प्रपात। न०–जल।
सरक (अस्त्री०)–सड़क,रास्ता,मार्ग, मद्यपात्र। न०–गति,झील, स्वर्ग।
सरघ (पु०)–पक्षी,चौपाया। [मक्खी।
सरट् (पु०)–वायु, बादल, छिपकली,
सरट (पु०)–वायु, पक्षी।
सरण (वि०)–गतिशील,जाने वाला। न०–गति, लोहे का जंग।
सरबद–स्यु=शरबद, शरयु।
सरमा (स्त्री०)–कुतिया, देवशुनी, दक्षपुत्री, विभीषण की भार्या।
सरयु (पु०)–वायु, हवा।
सरल (वि०)–सीधा,अकुटिल, ईमानदार, सादा।
सरस् [:] (न०)–झील, तालाब, जल।
सरस (वि०)–रसवाला, सार्द्र, गीला।
सरसि[सी]ज (पु०)–सारस पक्षी।
सरसिज (न०)–कमल।
सरसी(स्त्री०)–झील,तालाब। [पक्षी।
सरसीरुह् (न०)–कमल। पु०–सारस
सरस्वान् [वत्] (वि०)–जलयुक्त, रसयुक्त,सुन्दर। पु०–समुद्र,झील, नद, भैंसा।
सरस्वती (स्त्री०)–वाणी, एक नदी का नाम, नदी, गाय, अच्छी स्त्री, दुर्गा, सोमलता, ज्योतिष्मती, वाग्मिता।
सराव (पु०)=शराव।
सरित् (स्त्री०)–नदी, तागा।
सरित्पति-नाथ (पु०)–समुद्र।
सरिद्वान् [वत्] (पु०)–पूर्ववत्।
सरितांपति (पु०)–पूर्ववत्। [वायु।
सरि[री]मा [न्] (पु०)–गति, रेंगना,
सरिषप (पु०)–सरसों।
सरीसृप (पु०)–सांप, सर्प।
सरूप (वि०)–समान रूपवाला, समान, तद्रूप।
सरोज (न०)–कमल, पद्म। वि०–तालाब में उत्पन्न होने वाला।
सरोजिनी(स्त्री०)–कमल की बेल,पद्मसमूह।
सरोरुह्–ह(न०)–कमल का फूल,पद्म।
सरोवर (पु०)–तड़ाग, तालाब।
सरोष (वि०)–क्रोधयुक्त,भड़का हुआ।
सर्क (पु०)–वायु, चित्त, मन।
सर्ग (पु०)–रचना, स्वभाव, छुटकारा, काव्यादि का परिच्छेद, निश्चय, उत्साह, अनुमति।
सर्गबन्ध (पु०)–महाकाव्य।
सर्ज् (१भा०)–प्राप्त करना, कमाना।

सर्जि-का-र्जी (स्त्री०)-सज्जी नामक मिट्टी। [माला, गति।
सर्जु(पु०)-व्यापारी। स्त्री०-बिजली,
सर्प (प०)-सांप, नागकेशर, रेंगना।
सर्पतृण (पु०)-नकुल, नेवला।
सर्पण (न०)-रेंगना, सर्प के सी गति।
सर्पभुज् (पु०)-मोर,सारस,बड़ा सांप।
सर्पमणि (पु०)-सांप के मस्तक में कल्पित मणि। [वासुकि।
सर्पराज (पु०)-सर्पों का राजा अर्थात्
सर्पसत्र(न०)-एक पौराणिक गाथा है कि पारीक्षित जनमेजय ने सर्पों से अपने पिता का परिशोध लेने के लिये यज्ञ किया था जिस का नाम ' सर्पसत्र' है।
सर्पाराति-अरि-अशन(पु०)=सर्पभुज्।
सर्पिणी(स्त्री०)-सर्प की स्त्री,सांपिनी।
सर्पिः [स्] (न०)-घृत, घी।
सर्म (पु०)-गति, आकाश, द्यौ।
सर्व् (१ प०)-मारना,क़त्ल करना।
सर्व(वि०) [सर्वनाम]-सारा,समस्त।पु०-विष्णु, शिव।
सर्वकालीन(वि०)-सदा रहने वाला,नित्य।
सर्वक्षार(पु०)-सारा खार, खारा नाम से प्रसिद्ध पदार्थ, साबन।
सर्वगत(वि०)-सर्वव्यापक। [न०-जल।
सर्वग (पु०)-शिव, परमात्मा, आत्मा।
सर्वगामी-गति(वि०)-सर्वव्यापक।
सर्वंकष(पु०)-सब को रगड़ने वाला अर्थात् पाप। वि०-सर्वोत्तम। [व्यापी।
सर्वजनीन (वि०)-सर्वत्र प्रसिद्ध, संसार-
सर्वज्ञ-विद् (वि०)-सब जानने वाला। पु०-परमात्मा। [तरफ से।
सर्वतः [स्] (अ०)-चारों ओर से, सब
सर्वतन्त्रसिद्धान्त(पु०)-ऐसा सिद्धान्त जिसे सब कोई सिखा सकता हो। [से।
सर्वतोभावेन(अ०)-सब रूप से, सब तरह
सर्वतोमुख(न०)-जल,आकाश। पु०-शिव, ब्रह्मा, आत्मा, अग्नि।
सर्वत्र(अ०)-सब स्थान में, सब देशों में, सब काल में, सब जगह।
सर्वथा(अ०)-सब तरह, सब प्रकार से।
सर्वदमन(पु०)-सब को दमन करने वाला अर्थात् दुष्यन्तपुत्र भरत। [सर्वद्रष्टा।
सर्वदर्शी [न्] (पु०)-बुद्ध, परमात्मा,
सर्वदा (अ०)-सदा, हमेशा।
सर्वनाम(अ०)-व्याकरण में शब्दों की एक कक्षा जिस का संज्ञा के द्योतन कराने के लिये प्रयोग होता है। [करते हों।
सर्वप्रिय (वि०)-जिस को सब पसन्द
सर्वमङ्गला(स्त्री०)-पार्वती।
सर्वव्यापक(वि०)-सब जगह उपस्थित।
सर्वशः(अ०)-बिलकुल, तमाम,सब कहीं।
सर्वसह(वि०)-सब कुछ सहारने वाला। पु०-गुग्गुल।
सर्व[र्वं]सहा (स्त्री०)-पृथिवी।
सर्वसाक्षी [न्] (पु०)-परमात्मा, अग्नि, वायु, सूर्य।
सर्वस्व(न०)-सब धन; सब वस्तु।
सर्वहित(न०)-काली मिर्च।
सर्वांग(न०)-सारा शरीर, सब वेदांग।
सर्वांगीण(वि०)-सब अंगों में व्यापनेवाला।
सर्वाधिकारी [न्] (पु०)-जनरल सुपरिंटेंडेंट, सर्वाध्यक्ष।
सर्वेश(पु०)-परमात्मा, चक्रवर्ती राजा।
सर्षप पु०)-सरसों।
सल-रिल(न०)-जल, पानी।
सलज्ज(वि०)-लज्जालु,शर्मालु। [नक्षत्र।
सलिल (न०)-जल, पानी, उत्तराषाढा
सव (पु०)-यज्ञ, सन्तान; मर्कवृक्ष।
सवन (न०)-सोम निकालने का व्यापार, यज्ञ, प्रसव। [सखा, मित्र।
सवयाः[स्] (वि०)-समान उम्र वाला,
सवर(पु०)-शिव,जल। [एक प्रकार का।
सवर्ण(वि०)-एक रंग का, एक जाति का,

सविकल्प क(वि०)–सन्देहयुक्त,यह वा वह।
सविग्रह (वि०)–सशरीर, युद्धग्रस्त।
सवितर्क-विमर्श (वि०)–दूरदर्शी, चिन्ताशील।
सविता [तृ] (वि०)–उत्पादक, दाता। पु०–सूर्य, इन्द्र, परमात्मा।
सवित्री (स्त्री०)–माता, गौ।
सविध(वि०)–एक ही प्रकार का, समीप
सविनय (वि०)–अवनत, नम्र।
सविशेष (वि०)–खास, अद्भुत, श्रेष्ठ।
सविस्तर (वि०)–विस्तारपूर्वक,पूरा।
सविस्मय (वि०)–आश्चर्य, सन्दिग्ध।
सवेश(वि०)–वेशयुक्त,सज्जित,समीप।
सव्य (वि०)–वाम, बायां, प्रतिकूल; विरुद्ध, दक्षिणी।
सव्याज (वि०)–संकपट, छली।
सव्यापार(वि०)–मशगूल,लगा हुआ।
सव्रीड(वि०)–शर्मिन्दा,शर्मील,सलज्ज
सशल्य (वि०)–कांटेदार,दुःखदायी।
सश्रीक (वि०)–सौभाग्यवान्,सुन्दर।
सस् (२ प०)–सोना।
ससत्वा (स्त्री०)–गर्भवती स्त्री।
ससन्देह (वि०)–सन्देहयुक्त।
सस्मित (वि०)–मुस्कराता हुआ।
सह् (४प०)–सन्तुष्ट होना, सहना, खुश होना।
सह (वि०)–सहारने वाला, साबिर। पु०–मार्गशीर्ष मास, महादेव। अस्त्री०–शक्ति,ताकत। अ०–साथ, बाहम, मिलकर।
सहकार (पु०)–सहयोग, आमवृक्ष।
सहकारी[न्](पु०)–सहायक, असिस्टेंट
सहचर (पु०)–साथी, मित्र, पति, नौकर।
सहचरी (स्त्री०)–स्त्री, भार्या, सखी।
सहज (वि०)–कुदरती, मौरूसी। पु०–सहोदर।
सहजमित्र (न०)–स्वाभाविक मित्र।
सहदेव (पु०)–कनिष्ठ पाण्डुपुत्र।
सहधर्मिणी(स्त्री०)–समान धर्म वाली अर्थात् पत्नी।
सहन (न०)–क्षमा, बरदाश्त, शीत उष्णादि का सहारना।
सहनशील (वि०)–क्षमाशील,साबिर।
सहभोजन (न०)–दावत, मिलकर खाना, प्रीतिभोजन।
सहरि (पु०)–सूर्य, रवि।
सहर्ष (वि०)–हर्षयुक्त, खुश।
सहर्षम् (अ०)–हर्षपूर्वक, खुशी से।
सहस् (पु०)–मार्गशीर्षमास, जाड़े का मौसम। न०–शक्ति, विजय, शोभा, बल।
सहसा(अ०)–यकायक,अकस्मात्,बलात्।
सहस्वान(वि०)साबिर। पु०–मयूर,यज्ञ।
सहस्य (पु०)–बल का हितकारी अर्थात् पौष मास।
सहस्र(न०)–दशसौ की संख्या,हज़ार, बहुत बड़ी संख्या।
सहस्रकर-किरण (पु०)–सूर्य, सूरज। [दीधिति, रश्मि, भानु, पाद, मरीचि,अंशु,अर्चिस् इन शब्दों के लगाने से भी सूर्य ही का बोध होता है]।
सहस्रदृश्-लोचन-नेत्र(पु०)–इन्द्र,विष्णु।
सहस्रपत्र (न०)–कमल, सारस पक्षी।

सहस्त्रबाहु(पु०)—कार्त्तवीर्य नामक राजा बाण, राक्षस, शिव।
सहस्त्रभुज-मौलि (पु०)—विष्णु।
सहस्त्ररोम[न्]-(न०)—कम्बल।
सहस्त्रवीर्या (स्त्री०)—दूर्वा घास।
सहस्त्रशः (अ०)—हजारों की संख्या में।
सहस्त्राक्ष (पु०)—इन्द्र, विष्णु, परमात्मा, शिव।
सहा (स्त्री०)—पृथिवी।
सहाध्यायी [न्](पु०)—सहपाठी।
सहाय (पु०)—मित्र, दोस्त, अनुचर, साथी, मददगार, शिव। [मदद।
सहायता—त्वम्=दोस्ती, मित्रता,
सहार (पु०)—महाप्रलय, आम्रवृक्ष।
सहित (वि०)—साथ, बाहम, मिलकर।
सहित्र(न०)—क्षमा,सब्र। [करनेवाला।
सहिष्णु (वि०)—सहनशील, बरदाश्त
सहिष्णुता—त्वम्=सहनशीलता,सब्र।
सहुरि (पु०)—सूर्य। स्त्री०-पृथिवी।
सहृदय (वि०)—नेकदिल, मेहरबान, सखा। [राज। न०-दूषितान्न।
सहल्लेख (वि०)—संदिग्ध,काबिले एत-
सहोटज(स्त्री०)—पर्णशाला, पत्तियों की कुटी।
सहोढ (पु०)—ऐसा चोर जो चुराये हुए माल के साथ पकड़ा गया हो, ऐसा पति जिस ने गर्भवती स्त्री के साथ विवाह किया हो।
सहोदर (पु०)—एक पेट से उत्पन्न होने वाला अर्थात् सगा भाई।
सहोर(वि०)—अच्छा,श्रेष्ठ।पु०-तपस्वी, ऋषि।
सह्य (वि०)--बरदाश्त करने लायक, सहने योग्य। न०—तन्दुरुस्ती, सहायता।
सा (स्त्री०)—लक्ष्मी, पार्वती।
सायान्त्रिक(पु०)—समुद्र के मार्ग से व्यापार करने वाला,पोतवणिक्।
सायुगीन (वि०)—युद्ध करने में चतुर, बड़ा योद्धा।
साराविण(न०)—हुल्लड़, शोरोगुल।
सावत्सर (वि०)—सालाना, वार्षिक। पु०-ज्योतिषी, दैवज्ञ।
सावादिक (वि०)--वार्त्ता सम्बन्धी। पु०-प्रतिवादी।
साशयिक(वि०)—सन्देहयुक्त,अनिश्चित।
सासारिक (वि०)—दुनियावी।
सासिद्धिक (वि०)—कुदरती, मौरूसी।
सास्थानिक (वि०)—एक ही देश का रहने वाला। [देहयुक्त।
साहननिक (वि०)—शारीरिक, दैहिक,
साक (न०)=शाक।
साकम् (अ०)—साथ, बाहम,मिलकर।
साकल्य(न०)—सम्पूर्णता, समस्तभाव।
साकाङ्क्ष (वि०)-इच्छुक।
साकेत (न०)-अयोध्यानगरी।
साकेतक(पु०)—अयोध्यानिवासी जन।
साक्तुक (पु०)—यव, जौ। न०-सत्तू।
साक्षात्(अ०)—सामने, आखों के आगे, खुल्लमखुल्ला, प्रत्यक्ष।
साक्षात्कार(पु०)—स्वयं किसी वस्तु को देखना, ज्ञान।
साक्षी[न्](वि०)--देखने वाला,तसदीक़ करने वाला। पु०—गवाह, ऐसा

मनुष्य जिस ने घटना को अपनी आँखों से देखा हो, परमात्मा।

साक्ष्य (न०)–गवाही, शहादत, तसदीक। [मारने वाला।

साक्षेप (वि०)–आक्षेपयुक्त, ताना।

साखेय (वि०)–दोस्ताना, मित्र सम्बन्धी।

साख्य(न०)–मित्रता,दोस्ती। [भेद।

सागर(पु०)–समुद्र,७ वा ४ का अंक,मृग-

सागरगा (स्त्री०)–नदी, गंगा।

सागरप्लवन (न०)–जहाज़रानी।

सागराम्बरा-नेमि-मेखला (स्त्री०)– पृथिवी, भूमि।

साग्नि (वि०)–अग्नियुक्त, अग्नि को निरन्तर प्रज्वलित रखने वाला।

साग्निक (वि०)–पूर्ववत्। [वट

साङ्कर्य (न०)--मिश्रण, गड़बड़,मिला-

साङ्काश्य-श्या=जनकभ्राता कुशध्वज की राजधानी। [युक्त।

साङ्केतिक (वि०)–सङ्केतवाला, सङ्केत-

साङ्क्षेपिक (वि०)–सङ्क्षिप्त, मुख़्तसर।

साङ्ख्य(वि०)–सङ्ख्यासम्बन्धी, विचारने वाला। नस्त्री०–षड् दर्शनों में से एक जिस को कपिल मुनि ने निर्माण किया है।

साङ्ग (वि०)–अंगयुक्त, प्रत्येक अंग में सम्पूर्ण।

साङ्ग्रामिक (वि०)–संग्रामसम्बन्धी, युद्धविषयक। पु०–कप्तान,सेनापति।

साङ्घातिक(वि०)–इकट्ठा करनेवाला।

साचि (अ०)–टेढ़ा,तिरछा, वक्र।

साचीकृत (वि०)–टेढ़ा किया हुआ, वक्रीकृत।

साटोप (वि०)–आडम्बरयुक्त। [सुख।

सात (वि०)–दिया हुआ, नष्ट। न०–

सातत्य (न०)–निरन्तरता।

साति (स्त्री०)–अन्त, दान, पीड़ा।

सातिसार (वि०)–अतिसारयुक्त।

सात्वत (पु०)–बलराम, श्रीकृष्ण, यादवमात्र, विष्णुभक्त।

सात्वती (स्त्री०)–नाटक की वृत्ति-विशेष, सुभद्रा।

सात्त्विक (पु०)–ब्रह्मा, विष्णु, तीन प्रकार के भावों में से एक। वि०– सत्त्वगुणयुक्त।

सात्त्विकी (स्त्री०)–दुर्गा, पूजाविशेष।

सात्म्य (वि०)–सुख देने वाला, आनन्दजनक।

सात्यकि (पु०)–एक वृष्णिवंशीय जो श्रीकृष्ण का सारथि था।

सात्यवत–वतेय (पु०)–वेदव्यास।

साद (पु०)–विषाद,दुःख, गमन,शरण।

सादन (न०)–गृह, घर।

सादि (पु०)–सारथि।

सादी [न्] (पु०)–अश्वारूढ़, घुड़सवार, हस्त्यारोह, रथ पर चढ़ा हुआ। [बराबरी।

सादृश्य (न०)–तुल्यधर्मता, सदृशता,

साधक (वि०)–निष्पादक, साधन करने वाला।

साधन (न०)–कार्य करने का हेतु, कारण, करणकारक, मृतसंस्कार, आग लगाना, दान,धन,सामग्री,

गमन, साबित करना, मोहन, अनुगमन ।
साधना (स्त्री०)—आराधना, सेवा ।
साधर्म्य(न०)—समानधर्मत्व,बराबरी।
साधारण (वि०)—सदृश, बराबर, समान, बहुतों के अधिकार वाली वस्तु, सामान्य ।
साधारणी (स्त्री०)—चाबी, कुञ्जी, वेश्या, व्यभिचारिणी स्त्री।
साधित (वि०)—सिद्ध किया हुआ, दापित, पूरा किया हुआ ।
साधिष्ठ (वि०)—दृढतम, बहुत मज़बूत, बहुत अच्छा ।
साधीयान् [यस्] (वि०)—अतिशय साधु, बहुत अच्छा, न्याय्य ।
साधु (वि०)—उत्तमकुलोत्पन्न, सभ्य, सज्जन, मुनि, सुन्दर, वार्धुषिक, जिनदेव, उचित। पु०-व्यवहारी जन । [वाहन ।
साधुवाह (पु०)—उत्तम अश्व, सुन्दर
साधुवृत्ति (स्त्री०)—अच्छी आजीविका, सुन्दर बर्तन ।
साधृत (न०)—छत्र, आतपत्र, मोरों का गिरोह, पण्यवीथी, बाज़ार।
साध्य (पु०)—गण देवताविशेष जो १२ हैं, २१वां योग । वि०-सिद्ध करने योग्य, वह पदार्थ जो अठारह प्रकार के विवादों में से प्रमाणादि से सिद्ध करने योग्य हो।
साध्यसिद्धि(स्त्री०)—सिद्ध करने योग्य पदार्थ की सिद्धि, निष्पत्ति ।
साध्वस (न०)—भय, डर, प्रतिभा ।
साध्वी (स्त्री०)—सती, पतिव्रता स्त्री ।
सानन्द (वि०)—सुख, आनन्दयुक्त ।
सानु(अस्त्री०)—चोटी,शिखर,पर्वतस्थ चौरस भूमि,अंकुर,वन, उपवन,सूर्य।
सानुक्रोश (वि०)—दयालु ।
सानुनय (वि०)-शरीफ, नम्र,सभ्य।
सानुराग (वि०)—आसक्त, प्रेमावद्ध ।
सान्तर (वि०)—अन्तरयुक्त ।
सान्तानिक (वि०)—सन्तानसम्बन्धी, फैला हुआ ।
सान्त्व् (१० उ०) खुश करना, राजी करना, तसल्ली देना ।
सान्त्वन-ना=शान्तता,रजामन्दी,नम्रता, तसल्ली ।
सान्द्र (वि०)—सघन, जुटा हुआ, गहरा, अतिशय ।
सान्धिविग्रहिक (पु०)—परराष्ट्रसचिव, अन्य राष्ट्रों से सन्धि विग्रह करने वाला मन्त्री ।
सान्ध्य (वि०)—सन्ध्या सम्बन्धी ।
सान्नाय्य (पु०)—हवनसामग्री आदि जिस में घृत मिला हो ।
सान्निध्य (न०)—निकटता, सामीप्य, उपस्थिति ।
सान्यासिक(पु०)—सन्यासी, चतुर्थाश्रमी
सान्वय (वि०)—अन्वयसहित ।
सापत्न्य (न०)—प्रीतियाडाह,शत्रुता ।
सापराध (वि०)—मुजरिम,अपराधी ।
सापवाद (वि०)—अपवादयुक्त, अपवाद फैलाने वाला ।

साफल्य (न०)-सफलता, कामयाबी ।
साबाध (वि०)-बाधायुक्त, गड़बड़ ।
साम् (१० उ०)-सान्त्वना देना; तसल्ली करना ।
सामक (न०)--असल ऋण । पु०-रसाना
सामग (पु०)--सामगान करने वाला, ब्राह्मण । [असवाब ।
सामग्री (स्त्री०)--सामान, फ़रनिचर,
सामग्र्य(न०)--सम्पूर्णता, स्टाक ।
सामजात (वि०)--सामवेद से उत्पन्न ।
सामञ्जस्य (न०)--औचित्य,उपयुक्तता
सामनी-म्नी (स्त्री०)--पशु बांधने का रस्सा ।
सामन् (न०)--तसल्ली, सान्त्वना, राजनीति का एक उपाय वा भेद, शान्ति द्वारा किसी विचार के निपटारे का उपाय, सामवेद, और मन्त्र ।
सामन्त(वि०)-सर्वजनीन।पु०-पड़ौसी, करद राजा, सेनानी । न०-पड़ौस
सामयाचारिक (वि०)-समय के अनुसार आचरण करने वाला ।
सामयिक (वि०)-समयसम्बन्धी,वर्त्तमानकालीन, मामीफ़, क्षणिक ।
सामयोनि (पु०)-ब्राह्मण, हस्ती ।
सामर्थ्य (न०)-शक्ति, ताक़त, बल, योग्यता, धन, लाभ ।
सामवाद (पु०)-विनययुक्त शब्द ।
सामवेद(पु०)-तीसरा वेद जो आदित्य द्वारा प्रकट हुआ है ।
सामवेदी [न्](पु०)-सामपाठी ब्राह्मण
सामाजिक (वि०)-समाजसम्बन्धी पु०-समाज का सभासद् ।
सामान्य (वि०)-साधारण, समान, तमाम। न०-समानभाव,समानता ।
सामान्यतः(अ०)-साधारण रूप से ।
सामान्यवनिता (स्त्री०)-वारनारी, वेश्या, रण्डी ।
सामान्यशास्त्र(न०)-साधारण नियम
सामान्या (स्त्री०)-वारनारी,वेश्या ।
सामासिक (वि०)-समासयुक्त, संक्षिप्त
सामीची (स्त्री०)-श्लाघा, प्रशंसा ।
सामीप्य (पु०)-पड़ौसी, न०-पड़ौस, समीपता ।
सामुद्र (वि०)-समुद्री, समुद्रोत्पन्न, पु०-नाविक,पोतवाह। न०-समुद्री नमक, तिल ।
सामुद्रिक (वि०)-समुद्रोत्पन्न, तिल सम्बन्धी । न०-हाथ देखने की विद्या । पु०-ज्योतिषी ।
साम्प्रत (वि०)-उचित, मुनासिब ।
साम्प्रतम् (अ०)-अब, इस समय, तुरन्त । [उचित ।
साम्प्रतिक (वि०)-वर्तमानकालीन,
साम्प्रदायिक (वि०)-परम्परागत, सम्प्रदायसम्बन्धी ।
साम्भर (न०)-साम्भर झील से निकला हुआ नमक। [मित्रभावो ।
साम्य (न०)-समानता,समावस्था ।
साम्राज्य(न०)-चक्रवर्तीराज्य,सल्तनत
साय (पु०)-अन्त, सन्ध्या, तीर ।
सायक (पु०)--बाण, तीर, तलवार।
सायह्न (पु०)--अपराह्ण के पश्चात् का समय, शाम ।

सायण(पु०)--वेद का एक भाष्यकार।
सायम् (अ०)--शाम के वक्त।
सायी [न्] (पु०)-घुड़सवार।
सायुज्य (न०)-गहरा लगाव, निमग्न हो जाना।
सार (वि०)--अच्छा, असली, मज़बूत, आज़मूदा। स्त्री०--असल बातें, आवश्यक भाग, चर्बी, तत्त्व। न०--जल, उपयुक्तता, लोहा।
सारघ (न०)--शहद, मधु।
सारंग (वि०)--रंगबिरंगा, चित्रक। पु०--मृगभेद, हरिण, शेर, हस्ती, कोयल, मयूर, बादल, वस्त्र, बाल, शिव, कामदेव, कमल, कपूर, कमान, चन्दन, वाद्यभेद, आभूषण, स्वर्ण, चातकपक्षी, रात्रि, प्रकाश।
सारङ्गिक(वि०)-चिड़िया पकड़ने वाला
सारंगी(स्त्री०)-अपने नामसे प्रसिद्ध बाजा
सारणि-णी (स्त्री०)--नहर, नाला।
सारथ (पु०)--सांप का बच्चा।
सारथि (पु०)--रथवान्, साथी, समुद्र।
सारमेय (पु०)--कुत्ता, श्वान।
सारमेयी (स्त्री०)-कुतिया।
सारल्य (न०)--अकुटिलता, सीधापन।
सारस (वि०)--सरोवरसम्बन्धी। पु०--अपने नाम से प्रसिद्ध पक्षी, चन्द्रमा। न०--कमल।
सारस्वत (वि०)--सरस्वती से सम्बन्ध रखने वाला, वाग्मी। पु०--सरस्वती के आस पास का देश, ब्राह्मणभेद। न०--वाणी, वाग्मिता।
सार्गल (वि०) रुका हुआ, बाधायुक्त।
सार्थ (वि०)--अर्थयुक्त, मुफ़ीद, अमीर। पु०--अमीर आदमी, व्यापारियों का समूह, झुण्ड। [आमद।
सार्थक (वि०)-अर्थयुक्त, मुफ़ीद, कार-
सार्थवाह (पु०)--बंजारों का नायक, बड़ा व्यापारी।
सार्थिक (पु०)--बंजारा, व्यापारी।
सार्द्र (वि०)--तर, गीला, नम।
सार्द्र (न०)--ड्यौढ़ा।
सार्धम् (अ०)--मिलकर, साहन।
सार्व (वि०)--सब का, सब से सम्बन्ध रखने वाला। [निरन्तर।
सार्वकालिक (वि०)--सदा रहने वाला,
सार्वजनिक (वि०)-सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला, साधारण।
सार्वज्ञ (न०)--सब बातों को जानना।
सार्वत्रिक (वि०)--सब स्थानों में होने वाला, सर्वत्रस्थित।
सार्वभौम (वि०)--सारे संसार का। पु०--सम्राट्, चक्रवर्ती राजा, उत्तर-दिक्पाल।
सार्षप (वि०)--सरसों का बना हुआ। न०--सरसों का तेल।
साल (पु०)--अपने नाम से प्रसिद्ध वृक्ष, प्राचीर, भित्ति।
साला (स्त्री०)--दीवार, घर, शाला।
सालूर (पु०)--मेंढक।
साल्व (पु०)--एक देश का नाम।
साल्विक (पु०)-मैनापक्षी।
सावक (पु०)--शिशु, बच्चा, बछड़ा।
सावकाश(वि०)-अवकाशयुक्त, फ़ुर्सती
सावधान (वि०)--ख़बरगीर, चिन्ता-

शील, चतुर।
सावधि (वि०)–सीमाबद्ध, विशेषित।
सावयव (वि०)–अवयवयुक्त, साङ्ग।
सावर (पु०)–लोध्र वृक्ष, दोष, पाप।
सावरण (वि०)–ढका हुआ, घिरा हुआ। [तीय।
सावर्ण (वि०)–एक ही वर्ण का, सजा-
सावशेष (वि०)–अवशेषयुक्त, अधूरा।
साविका (स्त्री०)–दायी, धाय।
सावित्र (वि०)–सूर्यसम्बन्धी। पु०–सूर्य, ब्राह्मण। न०-यज्ञसूत्र।
सावित्री (स्त्री०)–प्रकाशकिरण, गायत्रीमन्त्र, उपनयनसंस्कार, ब्राह्मणी, पार्वती, कश्यपपत्नी, सत्यवान् की भार्या।
साशंक (वि०)–भयातुर, खौफज़दा।
साशूक (पु०)–कम्बल।
साश्चर्य(वि०)–विस्मित, विस्मयकर।
सास्रु (वि०)–आंसुओं से भरा हुआ, रोता हुआ।
साश्रुधी (स्त्री०)- सासू, पत्नीमाता।
साष्टाङ्गम् (अ०)–शरीर के आठ अंगों से पृथिवी को छू कर।
सासूय (वि०)–हासिद, ईर्ष्यालु।
साहचर्य (न०)–संगति, गोष्ठी, साथ रहना। [शक्ति।
साहन (न०)–सहना,बर्दाश्त, सहन-
साहस (न०)–परस्त्रीहरणादि दुष्कृत कर्म, दण्ड, बलात्कार से किया काम, अविचारित कर्म। पु०-अग्निविशेष। वि०-विना विचारे करने वाला।
साहसिक (वि०)–चोर,मनुष्यहन्ता, परस्त्रीगामी, कटु बोलने वाला, हिम्मती, हठ करने वाला।
साहस्र (न०)–सहस्रसमूह, अनेक हज़ार, सहस्रमात्र। वि०-सहस्र की संख्या वाला।
साहायक (न०)–सहायता, मदद।
साहाय्य (न०)–पूर्ववत्।
साहित्य (न०)–एकत्रित होना, मिलना, काव्यशास्त्रविशेष, परस्परसापेक्ष समान रूपों का एक ही क्रिया में अन्वयित होना।
साह्य (न०)–मेलन, सहायता, इकट्ठा होना, मिलना।
साह्वय (पु०)–पशुयुद्ध, मेंढे आदि प्राणियों का द्यूत। वि०-नामयुक्त, नाम के सहित।
सि (उ०)–सीन,।सूचीकर्म करना।
सिंह (पु०)–शेर, केशरी। [यह शब्द जब किसी संज्ञावाचक शब्द के अन्त में आता है तब इसका अर्थ श्रेष्ठ तथा बलवान् का होता है जैसे:-पुरुषसिंह]।
सिंहतल (न०)–अङ्गुलि बाधना।
सिंहध्वनि-नाद(पु०)–शेर की दहाड़।
सिंहयाना-रथा (स्त्री०)–दुर्गा।
सिंहल (अस्त्री०)-देशविशेष आजकल जिसे 'सीलोन' कहते हैं।
सिंहला (पु० ब०)-लंकानिवासी जन, सीलोन के रहने वाले।
सिंहवाहन (पु०)-शिव, महादेव।
सिंहाण न(न०)-लोहमल,नासिकामल।

सिंहासन (न०)—स्वर्णरचित राजा का आसन । पु०-रति के १६बन्धों में से चौदहवां ।
सिंहिका (स्त्री०)—राहु की माता ।
सिंहिकातनय-पुत्र-सुत (पु०)—राहु ।
सिंही (स्त्री०)—शेरनी, सिंह की स्त्री ।
सिकता (स्त्री०)—बालुकायुक्त भूमि, बालूरेत ।
सिकतामय (वि०)—रेतीला, बालुका वाला । न०-बालुकाबहुल तट, रेतीला किनारा ।
सिक्त (वि०)—छिड़का हुआ, सींचा हुआ ।
सिक्थ (पु०)—उबले हुए चावल, ग्रास । न०-मोम ।
सिक्थक (न०)—मोम ।
सिंघिणी (स्त्री०)—नाक, नासिका ।
सिच् (६ उ०)—सींचना, जलदेना, जल छिड़कना ।
सिचय (पु०)—वस्त्र, कपड़ा, पुराना वस्त्र
सिञ्चन्-त् (वि०)—छिड़कता हुआ, सींचने वाला ।
सिञ्जा (स्त्री०)—गहने की आवाज़ ।
सित (वि०)—सफ़ेद, धवल, शुक्लवर्णयुक्त । पु०-सफ़ेदरंग, शुक्राचार्य । न०-चांदी, चन्दन ।
सितकण्ठ (वि०)—सफ़ेद कण्ठ वाला । पु०-दात्यूह पक्षी ।
सितकर (पु०)—चन्द्रमा, कर्पूर ।
सितकुञ्जर (पु०)—इन्द्र, इन्द्रहस्ती ।
सितगुञ्जा (स्त्री०)—सफ़ेद घौंटली ।
सितच्छत्र (न०)—राजच्छत्र ।
सितच्छद-पक्ष (पु०)—हंस नामक पक्षी
सितमरिच (न०)—सफ़ेद मिरच ।
सितशिम्बिक (पु०)—गेहूं, गोधूम ।
सितसप्ति (पु०)—अर्जुन, सफ़ेद घोड़ा ।
सितसर्षप (पु०)—सफ़ेद सरसों ।
सिता (स्त्री०)—खांड, मिसरी, चमेली, बावची, सफ़ेद दूब ।
सितांशु (पु०)—चन्द्रमा, कपूर ।
सिताङ्ग (पु०)—रोहितमत्स्य, एक प्रकार की मछली ।
सिताजाजी (स्त्री०)—सफ़ेद ज़ीरा ।
सितादि (पु०)—राब, इक्षुविकार ।
सितानन (पु०)—गरुड़ पक्षी । वि०-सफ़ेद मुख वाला । [करने वाला ।
सिताम्बर (वि०)—सफ़ेद वस्त्र धारण
सिताम्भोज (पु०)—श्वेत पद्म, सफ़ेद कमल । [शनि ।
सितासित (पु०)—बलदेव, शुक्रसहित
सिति (वि०)—काला, सफ़ेद । पु०-सफ़ेद और कालारंग ।
सितिमा [न्] (पु०)—शुक्लता, कृष्णता
सितोदर (पु०)—कुबेर । न०-सफ़ेद कोख, श्वेतकुक्षि । [न०-खड़िया ।
सितोपल (पु०)—स्फटिक, बिल्लौर ।
सितोपला (स्त्री०)—शर्करा, खांड़ ।
सिद्ध (पु०)—देवयोनिविशेष, अच्छा पुरुष । न०-सेंधानमक । वि०-प्रसिद्ध, नित्य, मन्त्रसिद्धि वाला ।
सिद्धपुर (न०)—भूगोल के नीचे का देशविशेष ।
सिद्धविद्या(स्त्री०)—महाविद्याविशेष ।
सिद्धसेन (पु०)—कार्तिकेय ।
सिद्धा(स्त्री०)—ऋद्धि, योगिनीविशेष ।

सिद्धान्त (पु०)–मन्तव्य, जिससे ठीक बात का निश्चय होता है, ज्योतिषशास्त्रविशेष ।
सिद्धार्थ (पु०)–शाक्यसिंह, सफ़ेद सरसों, प्रसिद्ध अर्थ ।
सिद्धि (स्त्री०)–दुर्गा, योगविशेष, निष्पत्ति, मोक्ष, वृद्धि । सिद्धि आठ हैं यथाः–"अणिमा महिमा चैव, लघिमा प्राप्तिरेव च । प्राकाम्यञ्च तथेशित्व, वशित्वं च तथापरम्" । [पु०–वटुक भैरव ।
सिद्धिद (वि०)–सिद्धि का देने वाला ।
सिद्धेश्वरी (स्त्री०)–देवीविशेष ।
सिध्म (न०)–एक प्रकार का कोढ़ । [सिध्मन् का भी यही अर्थ है] ।
सिध्मल (वि०)–कोढ़ी, एक प्रकार के कोढ़ वाला ।
सिध्य (पु०)–पुष्यनक्षत्र ।
सिनी (स्त्री०)–सफ़ेद गुण वाली ।
सिनीवा [वा] ली (स्त्री०)–चौदस वाली अमावस्या, दुर्गा ।
सिन्दूर(न०)–लाल रंगका एक द्रव्य । पु०–एक प्रकार का वृक्ष ।
सिन्दूरतिलका (स्त्री०)–ऐसी स्त्री जिस के सिन्दूर का टीका लगा हो अर्थात् सधवा स्त्री ।
सिन्धु (पु०)–समुद्र, नदविशेष, एक प्रकार का राग, सफ़ेद सुहागा । स्त्री०–नदी, पञ्जाब में एक प्रसिद्ध नदी ।
सिन्धुदेश (पु०)–सिन्धप्रदेश ।
सिन्धुज (न०)–सेंधा नमक । वि०–समुद्र में उत्पन्न हुआ ।
सिन्धुजन्मा [न्] (पु०)–चन्द्रमा ।
सिन्धुपुष्प (पु०)–शङ्ख ।
सिन्धुर (पु०)–हाथी, गज ।
सीकर (पु०)–जलकण,पानी की बूंद ।
सीता(स्त्री०)–जनक राजा की पुत्री, हल की फाली, हल से खींची हुई लकीर ।
सीतापति (पु०)–रामचन्द्र ।
सीत्कार(पु०)–सीसी करना, सुहब्बत से उत्पन्न शब्द । [शराब ।
सीधु (पु०)–गन्ने के रस से बनी हुई
सीधुरस (पु०)–आम्रवृक्ष ।
सीमन्त (पु०)–सीमन्ती, गर्भ से छठे वा आठवें महीने में कर्त्तव्य एक संस्कार, बालों में मार्ग के समान बनावट, मांग । [औरस ।
सीमन्तिनी (स्त्री०)–योषित, स्त्री,
सीमन्तोन्नयन (न०)–गर्भ से आठवें वा छठे महीने में करने योग्य एक संस्कार ।
सीमा(स्त्री०)–मर्यादा,हद्द,अण्डकोष।
सीरी [न्] (पु०)–बलदेव, बलराम ।
सी [से]वन(न०)–सीवन, सीना, तांत फैलाना ।
सु (अ०)–अच्छा, बहुत, पूजा ।
सुकरा (स्त्री०)–ऐसी गाय जो सुखपूर्वक दुही जावे। [नामक कन्द ।
सुकर्णक (पु०)–हस्तिकन्द, हाथीचक
सुकर्मा [न्] (वि०)–अच्छे काम करने वाला, सक्रिय । [वृक्ष ।
सुकाण्ड (पु०)–अच्छी शाखा वाला

सुकाम(वि०)-अच्छी कामना वाला।
सुकुमार (वि०)-कोमल, मृदु। पु०-अच्छा बालक।
सुकुमारा (स्त्री०)-चमेली की लता, मालतीलता, कदली।
सुकुमारी (स्त्री०)-कोमलाङ्गी स्त्री, शंखपुष्पी नामक औषध।
सुकृत् (वि०)-पुण्य करने वाला, भाग्यशाली।
सुकृत (न०)-पुण्य,शुभ, अच्छा काम।
सुकृति (स्त्री०)-पूर्ववत्।
सुकृती [न्] (वि०)-पुण्यशील, भलाई वाला।
सुकेशी (स्त्री०)-स्वर्गवेश्याभेद,सुन्दर केशों वाली स्त्री।
सुख (न०)-आनन्द, आत्मवृत्ति गुणविशेष, मद, हर्ष।
सुखकर (वि०)-सुख करने वाला, सहज में ही होने वाला।
सुखजात (वि०)-आनन्दित, सुखी।
सुखद (वि०)-सुख देने वाला। पु०-विष्णु। न०-विष्णु का स्थान।
सुखभाक् [ज्] (वि०)-सुखी, हर्षित।
सुखरात्रि-त्रिका (स्त्री०)-दीपावली, दिवाली।
सुखा (स्त्री०)-वरुणपुरी।
सुखाधार (पु०)-सुख का आश्रय, सुख देने वाला निवासस्थान।
सुखावह(वि०)-सुखदाता, आनन्दजनक।
सुखी[न्](वि०)-सुखवाला।
सुखोत्सव (पु०)-पति,सुख देने वाला उत्सव।
सुगण(वि०)-अच्छा गणक।
सुगत (पु०)-बुद्ध। वि०-अच्छी चाल वाला।
सुगति (स्त्री०)-अच्छी गति, सद्गति। पु०-नय नामक ऋषि का पुत्र, एक ग्रन्थकर्त्ता का नाम।
सुगन्धि (स्त्री०)-अच्छी खुशबू, इष्टगन्ध, सद्गन्ध। वि०-अच्छी गन्ध वाला॥ न०-एलुवा।
सुगम (वि०)-सुख से प्राप्त होने वाला, अनायासप्राप्य।
सुगृह (न०)-अच्छा घर, सुन्दरगृह।
सुगृहीत (वि०)-अच्छे प्रकार ग्रहण किया हुआ।
सुगृहीतनामा [न्] (पु०)-प्रातःस्मरणीय नाम वाला युधिष्ठिरादि, पवित्रयशस्वी जन।
सुग्रन्थि(पु०)-चोरक नाम वृक्ष। वि०-अच्छी ग्रन्थि वाला।
सुग्रीव (पु०)-श्रीकृष्ण का अश्व, वानरों का राजा जो श्रीरामचन्द्र का सखा और वालि का छोटा भाई था।
सुग्ल (वि०)-हर्षक्षययुक्त, रजोदा।
सुचक्षुः [स्] (पु०)-उदुम्बर, गूलर। वि०-अच्छे नेत्रों वाला। न०-सुन्दर नेत्र।
सुचरित्रा(स्त्री०)-साध्वी,पतिव्रता स्त्री।
सुचारु (वि०)-मनोहर, सुन्दर।
सुचिर (अ०)-बहुत देर का समय। वि०-बहुत काल का।
सुचिरायुः [स्] (पु०)-देवता। वि०-अति चिरकाल तक जीने वाला।
सुचेलक (न०)-शोभनवस्त्र, अच्छा कपड़ा।
सुजन (पु०)-अच्छा आदमी, साधु, सज्जन।

सुजनता (स्त्री०)–अच्छा जनसमूह ।
सुजल (न०)–पद्म, कमल, अच्छा जल । वि०--अच्छे जल वाला ।
सुजल्प (पु०)–वाक्यविशेष, अच्छा कथन, शुभवचन ।
सुत (पु०)-पुत्र, तनय, बेटा ।
सुतनु (स्त्री०)–नारी, स्त्री । वि०–शोभनशरीरयुक्त ।
सुतपाः [स्] (पु०)–सूर्य, सूरज,रोच्य मनु का पुत्र, मुनि, विष्णु । वि०-अच्छे तप वाला ।
सुतराम् (अ०)–अतिशय, बहुत ही, निश्चित अर्थ का प्रतिपादक ।
सुतर्दन (पु०)–कोयल, कोकिल ।
सुतल (पु०)–नागलोकभेद, पाताल का छठा खण्ड,अट्टालिका बन्धन।
सुता (स्त्री०)–कन्या, पुत्री,लड़की ।
सुतात्मज (पु०)--पौत्र,दौहित्र,धेवता ।
सुतात्मजा (स्त्री०)–पौत्री, पोती, धेवती, दौहित्री ।
सुतिक्त (पु०)–पर्पट, पित्तपापड़ा । वि०–अतितीखा । पु०–निम्बवृक्ष ।
सुतीक्ष्ण (पु०)–सहिंजने का वृक्ष, एक मुनि ।
सुतुङ्ग (पु०)–नारियल का वृक्ष । वि०-- अतिशयोच्च, बहुत ऊंचा ।
सुत्रामा [न्] (पु०)–इन्द्र, देवराज ।
सुत्वा [न्] (पु०)–यज्ञान्तस्नान करने वाला पुरुष, सोमरस के पीने या निकालने वाला पुरुष ।
सुदण्ड (पु०)-बेत, बेंतका वृक्ष ।
सुदन् [त] (वि०)–अच्छे दांतों वाला, शोभनदन्त ।
सुदन्त (पु०)–नट, नर्तक ।
सुदन्ती(स्त्री०)–दिशाओं की हथिनी, दिग्गजपत्नी ।
सुदर्शन (न०)–इन्द्र का नगर । पु०–विष्णु का चक्र । सुमेरु पर्वत,जबुवृक्ष, मत्स्यविशेष । वि०–अच्छे दर्शन वाला ।
सुदामा [न्] (पु०)–एक ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का मित्र था, मेघ,पर्वत ऐरावत हस्ती, समुद्र, गोपभेद । स्त्री०–एक नदी ।
सुदि (अ०)–शुक्लपक्ष का वाचक ।
सुदिन (न०)–अच्छा दिन, शुभदिवस ।
सुदिनाह (न०)–शुभ दिन, प्रशस्त दिवस, पुण्याह ।
सुदीर्घ (वि०)–अतिविस्तृत, बड़े विस्तार वाला । [बहुत दुःखी ।
सुदुःखित (वि०)–अत्यन्त पीडित,
सुदुःश्च[ष्क] र (वि०)–दुःख से करने योग्य, कष्टाचरणीय ।
सुदुस्त्यज (वि०)–कठिनता से त्यागने योग्य ।
सुदूर (वि०)–बहुत दूर,अति दूरतर ।
सुदृक् [श] (वि०)–सुन्दर नेत्रों वाला।
सुदृढ (वि०)–बहुत मजबूत, अतिगाढ़।
सुद्युम्न (पु०)-वैवस्वत नामक मनु का पुत्र । वि०-श्रेष्ठधनयुक्त ।
सुधन्वा [न्] (पु०)–विश्वकर्मा, एक राजा, अनन्त नामक नाग । वि०–अच्छे धनुष् वाला ।
सुधर्मा[न्](पु०)–देवताओं की सभा,

कुटुम्बी । [दिवसभार्य में यह शब्द स्त्रीलिङ्ग भी होता है] । वि०—अच्छे धर्म वाला ।
सुधा (स्त्री०)—अमृत, लेपनपदार्थ [कलीचूना], आवला, गङ्गा, ईंट, इष्टिका, हैड़, मधु ।
सुधांशु (पु०)—चन्द्रमा, चाद, कर्पूर ।
सुधाकर-धार—निधि (पु०)—पूर्ववत् ।
सुधाजीवी [न्] (पु०)—लेपक, राज, कारीगर ।
सुधावर्षी [न्] (पु०)—ब्रह्मा ।
सुधासिन्धु (पु०)—अमृत का समुद्र ।
सुधाहर (पु०)—गरूड़, पक्षिराज ।
सुधिति (अक्लो०)—परशु,कुल्हाड़ा ।
सुधी (पु०)—पण्डित, विज्ञ । वि०—अच्छी बुद्धि वाला ।
सुधोद्भव (पु०)—धन्वन्तरि ।
सुनन्द (पु०)—श्रीकृष्ण का एक सेवक या सखा, राजगृहविशेष । न०—बलदेव जी का मूसल । वि०—अच्छा आनन्द देने वाला ।
सुनन्दा (स्त्री०)—पार्वती की एक सखी, गोरोचना,अजपत्नी इन्दुमती की सखी वा द्वारपालिका ।
सुनयन (पु०)—मृग । वि०- सुन्दर नेत्र वाला ।
सुनयना (स्त्री०)—हरिणी, मृगपत्नी, नारी । वि०—अच्छे नेत्रा वाली ।
सुनाभ (पु०)-मैनाकपर्वत, धृतराष्ट्र का एक पुत्र ।
सुनार (पु०)—सर्प का अण्डा ।
सुनासी [री] र(पु०)—इन्द्र, देवताओं का राजा ।
सुनिष्टप्त (वि०)—अत्यन्ततप्त, बहुत तपा वा चमका हुआ ।
सुनीति (स्त्री०)—अच्छी नीति, ध्रुव की माता ।
सुनीथ (वि०)—धर्म का प्रवर्तक धर्मशीलक । पु० - ब्राह्मण ।
सुनील-क (पु०)—दाड़िम, अनार, नीलम मणि, अच्छा नील वर्ण ।
सुनु [नौ] (न०)—जल, पानी ।
सुन्द (पु०)—दैत्य विशेष,एक वानर ।
सुन्दर (वि०)—मनोहर, अच्छी आकृति वाला । पु०—कामदेव, वृक्षविशेष ।
सुन्दरी (स्त्री०)—उत्तमांगना,एक देवी।
सुपक्व (पु०)—श्रेष्ठ आम्र । वि०—अच्छा पका हुआ ।
सुपथ (पु०)—अच्छा रास्ता, सन्मार्ग । वि०—शोभन पथ वाला ।
सुपर्ण (पु०)—गरुड़, नागकेशर । वि०—अच्छे पंखों वाला ।
सुपर्णकेतु (पु०)—विष्णु ।
सुपर्णा (स्त्री०)—पद्मिनी, कमलिनी ।
सुपर्वा [न्] (पु०)—देवता, वंश,बाण, तीर, धूआ, पर्व ।
सुपात्र (न०)—योग्यपुरुष, अच्छा बर्त्तन । वि०—शोभन पात्रवाला ।
सुपान (वि०)—पीने योग्य ।
सुपीत (न०)- गाजर, गर्जर । पु०—अच्छा पीतवर्ण । वि०—उसवाला
सुपीवा [न्] (पु०)—अच्छा पीने वाला, शोभनपानकर्त्ता ।

सुपुष्प (न०)—लवग, लौंग का पुष्प, स्त्रीरज, रुई ।
सुप् (न०)--इक्कीस विभक्तियों की संज्ञा, सप्तमीविभक्तिका बहुवचन।
सुप्त (न०)—निद्रा, नींद, शयन । वि०—शयित, सोया हुआ ।
सुप्तघातक (पु०)—दंश, मच्छर ।
सुप्तजन (पु०)—अर्द्धरात्र का समय ।
सुप्ति (स्त्री०)--निद्रा, शयन, नींद ।
सुप्रतिष्ठा(स्त्री०)—एक वैदिक छन्दो-विशेष, अच्छी प्रशंसा। वि०—शोभनप्रतिष्ठायुक्त ।
सुप्रतिष्ठित(वि०)—अच्छी प्रशंसावाला
सुप्रतीक (पु०)—ईशानदिशा का हस्ती, महादेव, कामदेव ।
सुप्रभ (वि०)—अच्छी कान्ति वाला ।
सुप्रभा (स्त्री०)—अग्नि की जिह्वा-विशेष, बाकुची नामक औषध, अच्छी कान्ति ।
सुप्रभात (न०)—शुभसूचक प्रात काल, उस समय पठनीय मांगलिकवचन
सुप्रभाता (स्त्री०)—एक नदी, शोभन-प्रभात वाली रात्रि ।
सुप्रयुक्त (वि०)—अच्छे प्रकार प्रयोग किया हुआ ।
सुप्रयुक्तशर (पु०) कृतहस्त, शीघ्र-तया बाण चलाने में निपुण, जल्द निशानेबाज़ ।
सुप्रलाप (पु०)—अच्छा वचन।
सुप्रसन्न (पु०)--कुबेर । वि०-अच्छी प्रसन्नता वाला
सुप्रसरा (स्त्री०)--प्रसारिणी लता, फैली हुई बेल ।
सुप्रसाद (पु० --शिव, विष्णु, अच्छी प्रसन्नता । वि०—सुप्रसन्नतायुक्त ।
सुफल (पु०)--कनेर का वृक्ष, अनार, बदर, मुद्ग। वि० शोभनफलयुक्त। न०-अच्छा फल ।
सुफेन (पु०)—समुद्रफाग ।
सुबन्ध (पु०)—तिल ।
सुभग (पु०)--चम्पा, अशोकवृक्ष, सुहागा । वि० सुन्दर, प्रिय, अच्छे ऐश्वर्ययुक्त, सुहृदय ।
सुभगा (स्त्री०)—हल्दी, तुलसी, कस्तूरी, नील दूर्वा, प्रियङ्गु, सुवर्णकदली, पतिप्रिया नारी ।
सुभगासुत (पु०)—पति की प्यारी स्त्री का सुत, सौभागिनेय ।
सुभग (पु०)—नारियल का वृक्ष ।
सुभट (पु०)—अच्छा योद्धा, बहादुर ।
सुभद्र (पु०)-विष्णु, एक राजा । वि० शुभ कल्याणयुक्त ।
सुभद्रा(स्त्री)--श्यामा लता, श्रीकृष्ण की भगिनी और अर्जुन की पत्नी।
सुभद्रेश (पु०)- अर्जुन ।
सुभाषित (वि०)--अच्छा कहा हुआ । पु०--बुद्धभेद ।
सुभिक्ष (वि०)—सुकाल, सुगमता से भिक्षा मिलने वाला काल, अच्छा समय ।
सुभू (वि०)--अच्छे जन्म वाला, सुजन्मा । स्त्री०--उत्कृष्ट भूमि ।
सुभूम (पु०)-कार्तिकेय, गुह ।
सुभूति (पु०)-अपने नाम से प्रसिद्ध

एक पण्डित, बेल का वृक्ष।
विo--अच्छे ऐश्वर्य वाला।
सुदृढ (नo)--बहुत दृढ़, बाढ़, अतिशय
सुभ्रु-भ्रू (स्त्रीo)--सुन्दर भौं वाली स्त्री, नारीमात्र। विo--सुन्दर भ्रूयुक्त। [आकाश।
सुम (नo)--पुष्प, फूल। पुo--चन्द्रमा,
सुमति (स्त्रीo)--अच्छी बुद्धि, विष्णुयशाःब्राह्मण की पत्नी और कल्किदेव की माता। विo--सुन्दर मतिवाला।
सुमदन (पुo)--आम्रवृक्ष।
सुमधुर (नo)--बहुत मीठा वचन, शान्तिके वाक्य। विo-बहुत मीठे रस वाला। [विo-सुगंध।
सुमन (पुo)--गेहूँ, गेहूं, धतूरा।
सुमनः [स्] (नo)--पुष्प, कुसुम, फूल, सुन्दर मन। विo-शोभनचित्तयुक्त।
सुमनाः [स्] (पुo)--देवता, विद्य, पण्डित, गोधूम, निम्बवृक्ष। विo-अच्छे चित्त वाले। स्त्रीo-पुष्पलता, मालती, शतपत्री।
सुमन्त्र (पुo)--कल्किदेव का बड़ा भाई, दशरथराज का मन्त्री और सारथि।
सुमित्र (पुo)--इक्ष्वाकुवंशीय रथ नामक राजा का पुत्र, २४ महर्षि पिताओं में से एक।
सुमित्रा (स्त्रीo)--राजा दशरथ की पत्नी जो लक्ष्मण और शत्रुघ्न की माता थी।
सुमुख (पुo)--गणेश, नागभेद, गरुड़ का पुत्र, पण्डित, शाकभेद। नo-अच्छा मुख, नखक्षतविशेष। विo-सुन्दर मुख वाला।
सुमुखा-खी (स्त्रीo)--सुन्दर मुख वाली स्त्री, सुन्दर नारी।
सुमेखल (पुo)--मुञ्ज का वृक्ष। विo अच्छी मेखला वाला।
सुमेधाः [स्] (स्त्रीo)--ज्योतिष्मती नामी लता। विo-सद्बुद्धियुक्त।
सुमेरु (पुo)--स्वर्ग का एक पर्वत, जप करने की माला के शिर का बड़ा दाना।
सुम्म-ल (पुo)--एक देश का नाम।
सुयामुन (पुo)--विष्णु, एक पर्वत, वत्सराज, मेघ, एक महल।
सुयोधन (पुo)--धृतराष्ट्र का पुत्र, दुर्योधनराज। [सूर्य, स्वर।
सुर (पुo)--देवता, विद्वान्, पण्डित,
सुरक्त (विo)--अच्छे अनुराग वाला, अत्यन्त आसक्त, बहुत रंग चढ़ा हुआ।
सुरगुरु (पुo)--बृहस्पति, देवाचार्य।
सुरङ्ग (नo)--हिङ्गुल, शिंगरफ, पतङ्ग। पुo-नागरङ्ग, गर्तभेद।
सुर[रु]ङ्गा (स्त्रीo)--सुरंग, गुफा, सेंध।
सुरज्येष्ठ (पुo)--ब्रह्मा, प्रजापति।
सुरत (नo)--मैथुन, स्त्रीसंग, क्रीडाविशेष। विo-क्रीडायुक्त, दयालु।
सुरता (स्त्रीo)--देवसमूह, देवत्व, अप्सरोभेद। [विo-अच्छे रथ वाला
सुरथ (पुo)--चन्द्रवंशीय एक राजा।
सुरदारु (पुo)--देवदारु नामक वृक्ष।
सुरदीर्घिका (स्त्रीo)--स्वर्गगङ्गा, देवनदी।

सुरद्रुम (पु०)-देवदारु, कल्पवृक्षादि।
सुरद्विट् [ष्] (पु०)-असुर, दैत्य। वि०-देवताओं से द्वेष करने वाला।
सुरद्विप (पु०)-ऐरावत हस्ती।
सुरधनुः[स्] (न०)-इन्द्र का धनुष्।
सुरधूप (पु०)-राल।
सुरनदी (स्त्री०)-गङ्गा।
सुरपति(पु०)-इन्द्र, देवताओं का पति।
सुरपथ (न०)-आकाश, आसमान।
सुरपादप (पु०)-कल्पवृक्ष।
सुरपुरी (स्त्री०)-अमरावती।
सुरभि (न०)-स्वर्ण, सोना, सुन्दर, अच्छीगन्ध। पु०-सुगन्धि, चम्पक, गूगल, राल, वसन्त ऋतु, चैत्र का महीना, कदम्बवृक्ष, धीर। स्त्री०-प्रियजटा, तुलसी, गौ, एक देवी, सुरा, पृथ्वी। वि०-मनोहर, धीर, ख्यात, प्रसिद्ध।
सुरर्षि (पु०)-नारद, देवर्षि।
सुरलोक(पु०)-स्वर्ग, देवताओं का लोक
सुरवर्त्म [न्] (न०)-आकाश।
सुरवल्ली (स्त्री०)-तुलसी।
सुरवैरी [न्] (पु०)-असुर, दैत्य, राक्षस
सुरसद्म [न्] (न०)-देवगृह, स्वर्ग।
सुरसरित् (स्त्री०)-गङ्गा।
सुरसा(स्त्री०)-तुलसी, सर्पों की माता।
सुरसुन्दरी (स्त्री०)-दुर्गा, अप्सरा, योगिनीविशेष, देवस्त्री।
सुरा (स्त्री०)-मद्य, शराब, मदिरा।
सुरा:[रै] (पु०)-धनीपुरुष, धनवान्।
सुराङ्गना(स्त्री०)-देवताओं की स्त्री, अप्सरा।
सुराचार्य (पु०)-बृहस्पति।
सुराजा [न्] (पु०)-अच्छा राजा। वि०-अच्छे राजा वाला देश।
सुराजीवी [न्] (पु०)-मद्यवणिक्, शौण्डिक, कलाल।
सुराप(वि०)-मद्य पीने वाला शराबी।
सुरापगा (स्त्री०)-गङ्गा।
सुरापाण-न (न०)-मद्यपान, शराब का पीना, अवदंश, चटनी।
सुरारि (पु०)-दैत्य, असुर।
सुरार्ह (न०)-देवताओं के योग्य चन्दन, हरिचन्दन। [सुमेरु पर्वत।
सुरालय (पु०)-देवमन्दिर, स्वर्ग,
सुराष्ट्र(पु०)-सुरट नामक देशविशेष, जो भारतवर्ष के पश्चिम में है।
सुरि [रै] (वि०)-अच्छे धन वाला।
सुरूप (न०)-अच्छा रूप, तूल, रुई। वि०-अच्छे रूपवाला।
सुरेज्य (पु०)-बृहस्पति।
सुरेज्या (स्त्री०)-तुलसी।
सुरेन्द्र (पु०)-इन्द्र, लोकपाल।
सुरेश्वर (पु०)-शिव, महादेव, इन्द्र।
सुरेश्वरी (स्त्री०)-स्वर्गगङ्गा।
सुरोत्तम (पु०)-सूर्य्य, देवश्रेष्ठ।
सुरोद (पु०)-मदिरा का समुद्र।
सुलभ (वि०)-अनायासलभ्य, सहज से प्राप्त होने योग्य। [वाला।
सुलोचन(पु०)-मृग। वि०-अच्छे नेत्रों
सुवचन(न०)-अच्छावचन, शोभनोक्ति।
सुवचाः [स्] (वि०)-अच्छा बोलने वाला, वाग्मी।
सुवर्च (पु०)-अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा।

सुवर्चाः [स्] (वि०)-शुभतेज वाला, अतितेजस्वी ।

सुवर्ण (न०)-स्वर्ण, सोना, हरिचन्दन, नागकेशर, धन । अस्त्री०- १६ मासे स्वर्ण का परिमाण । पु०- स्वर्णकर्ष,एक यज्ञ,धतूरा, गूगल । वि०-अच्छे रूप वा अक्षर वाला।

सुवर्णकार (पु०)-स्वर्णकार, सुनार ।

सुवयाः [स्] (स्त्री०)-अच्छी अवस्था वाली स्त्री, प्रौढ़ा, युवति स्त्री ।

सुवह (वि०)-सुख से ले जाने योग्य, सुखवाह्य । [शिव ।

सुवास(पु०)-अच्छीगन्ध,उत्तमनिवास,

सुवासिनी (स्त्री०)-चिरकाल तक पिता के घर में वास करने वाली स्त्री, चिरिंटी, द्वितीयवयस्का नारी । [का नारी ।

सुविद् (पु०)-पण्डित । स्त्री०-गुणयु-

सुविदत्त (पु०)-गुणाढ्य स्त्री के पाने वाला अर्थात् राजा, नृपति ।

सुविदत्र (वि०)-कुटुम्ब, वेष्टुवेत्ता ।

सुविदल्ल (न०)-अन्तःपुर, रनवास ।

सुविनीता (स्त्री०)-सुशीला गाय।

सुवीज (पु०)-खसखस, शिव । वि०- अच्छे बीज वाला । [पराक्रम।

सुवीर्य (न०)-बदरीफल, अच्छा

सुवृत्त (पु०)-शूरण, जिमीकन्द। वि०- अच्छे चरित्र वाला,अच्छा गोल।

सुवेल (पु०)-त्रिकूट पर्वत । वि०- शान्त,अच्छी मर्यादा वाला,प्रणत।

सुवे [ष] श (पु०)-सफ़ेद गन्ना । वि०-अच्छे वेश वाला ।

सुवेशी [न्] (वि०)-सुन्दर वेशयुक्त ।

सुव्रती (स्त्री०)-सुख से दुहने योग्य गौ, अच्छे व्रत वाली स्त्री ।

सुशर्मा [न्] (पु०)-एक राजा, एक निन्दित ब्राह्मण । वि०-अच्छे सुख वाला। [अच्छी चोटी वाला

सुशिख (पु०)-अग्नि, आग। वि०-

सुशिखा (स्त्री०)-मयूर की चोटी ।

सुशीत (न०)-पीतचन्दन । वि०- शीतलस्पर्शयुक्त, बहुत ठंडा ।

सुशील (पु०)-चोल नामक राजा। वि०-अच्छे स्वभाव वा चरित्र वाला । [वि०-सुन्दरलक्ष्मीयुक्त ।

सुश्रीक (पु०)-सल्लकी का वृक्ष ।

सुश्रुत (पु०)-विश्वामित्रमुनि का पुत्र जो चिकित्साशास्त्र का कर्त्ता है, उसका एक रचा ग्रन्थ । वि०-अच्छे प्रकार सुना हुआ । [सुखयुक्त ।

सुश्लिष्ट(वि०) सम्यक्तया मिलाहुआ,

सुषम (पु०)-सुन्दर, शोभन, बराबर ।

सुषमा (स्त्री०)-बड़ी शोभा ।

सुषिर (न०)-छिद्र, सूराख, बिल । वि०-छिद्रयुक्त ।

सुषीम (पु०)-चन्द्रकान्तमणि, एक सर्प । वि०-मनोज्ञ, शीतगुणी ।

सुषुप्त (न०)-वह अवस्थाविशेष जिस में मनुष्य के मनोरचित सब सङ्कल्प विकल्पात्मक भाव दूर हो जाते हैं। वि०-सुषुप्तियुक्त।

सुषुप्ति (स्त्री०)-गाढनिद्रा, सुनिद्रा, वह अवस्था जिस को प्राप्त हुआ मनुष्य न किसी वस्तु को

कामना करता और न स्वप्न देखता है।
सुषुम्ना (स्त्री०)–पृष्ठ की लम्बी हड्डी के बाहर इडा और पिंगला के मध्य की नाड़ी।
सुषेण (पु०)–विष्णु, बेंत, लङ्कानिवासी एक वैद्य, वानरविशेष, एक राजा, नागभेद, वसुदेवपुत्रविशेष।
सुष्ठु (अ०)–प्रशस्त,सत्य, बहुत ठीक, अतिशय।
सुष्म (न०)–रज्जु, रस्सी, डोर।
सुसंस्कृत (वि०)–घृतादि द्रव्य से अच्छे प्रकार परिपक्व [व्यञ्जनादि], उत्तम संस्कार वाला।
सुसम्पत्-द् (स्त्री०)–अच्छी दौलत, सौभाग्य। वि०–अच्छी सम्पत्ति वाला। [सुसमृद्ध।
सुसह (वि)–सुख से सहने योग्य,
सुस्थ(वि०)–सुख से ठहरा हुआ,नीरोग
सुस्थता (स्त्री०)–आरोग्य, रोगराहित्य, तन्दुरुस्ती। [हुआ, स्थिरतर।
सुस्थिर (वि०)–अच्छे प्रकार ठहरा
सुस्नात (वि०)–मांगलिक द्रव्यों से स्नान किया हुआ, अच्छे प्रकार नहाया हुआ।
सुहित(वि०)–किया हुआ,विहित,तृप्त।
सुहिरा (स्त्री०)–अग्निजिह्वा।
सुहृत्-द् (पु०)–सखा, मित्र, दोस्त, प्रिय। [वाला, प्रशस्तचित्त।
सुहृदय (वि०)–अच्छे अन्तःकरण
सू (स्त्री०)–सन्तान, प्रसव, औलाद, फेंकना, क्षेप।
सूक (पु०)–वायु, तीर, उत्पल,पत्थर।
सूकर (पु०)–सूअर,कुम्भकार,मृगभेद।
सूक्त (वि०)–सुष्ठु कथित, मन्त्रसमूह यथा–पुरुषसूक्त, अग्निसूक्त इत्यादि।
सूक्ष्म (न०)–छल, कपट, कैतव, अध्यात्म, अलङ्कारभेद। पु०–कतक का वृक्ष। वि०–अल्प, अणु, थोड़ा। [कुशाग्रबुद्धि विज्ञ।
सूक्ष्मदर्शी [न्] (वि०)–अतिबुद्धिमान्,
सूक्ष्मभूत (न०)–अपञ्चीकृत आकाशादि पांच भूत।
सूक्ष्मैला (स्त्री०)–छोटी इलायची।
सूच्(१०उ०)–चुगली करना, वैर करना।
सूचक (वि०)–पिशुन, चुगलखोर, निन्दक, सूचना देने वाला। पु०–सीवने का द्रव्य, बिलाव, काक, मुर्गा, पिशाच, कथक, सिद्ध, सूत्रधार, बुद्ध। [गन्धर्व।
सूचन (न०)–ज्ञापन,जतलाना,मारना,
सूचना(स्त्री०)–खबर देना,जतलाना।
सूचि-ची (स्त्री०)–सुई, शिखा, नोक, नाट्यभेद, व्यूहविशेष, केतकी का पुष्प।
सूचिक (पु०)–कपड़ा सीने वाला अर्थात् दरजी, हस्ती की सूंड़।
सूचिका (स्त्री०)–सुई,हस्तिशुण्ड।
सूचित (वि०)–कहा हुआ,जतलाया हुआ, बोधित।
सूचिरदन (पु०)–नकुल, मूसा।
सूचीमुख (न०)–हीरा, एक नरक। पु०–सफेद कुशा।

सूत (पु०)—सारथि, सूर्य, क्षत्रिय-वीर्य से ब्राह्मणी में उत्पन्न वर्णसंकर, विश्वकर्मा, लोमहर्षण नामक पुराणवक्ता, पारा। वि०—प्रेरित, भेजा हुआ। [ग्रहण। पु०—पारा।
सूतक (न०)—जननाशौच, मरणाशौच,
सूति (स्त्री०)—जनन, पैदा होना, सोमरस निकालने की भूमि, सीवन, सन्तान।
सूतिका (स्त्री०)—नवप्रसूता स्त्री।
सूतिकागारगृह (न०)—प्रसवगृह, बालक पैदा होने का घर।
सूत्थान (वि०)—चतुर, कार्यकुशल। न०—अच्छे प्रकार उठना।
सूत्या (स्त्री०)—यज्ञ का स्थलवि-शेष, सोमरस के पान।
सूत्याशौच (न०)—सूतक, जन्म के निमित्त से उत्पन्न अपवित्रता, जननाशौच।
सूत्र् (१०उ०)—लपेटना, गूंथना।
सूत्र (न०)—वस्त्र बुनने का साधन, धागा, सूत, यज्ञसूत्र, व्यवस्था, शास्त्र के अभिप्राय को संक्षिप्त रूप से दिखलाने का नियम या ग्रन्थ, प्रस्ताव, कारण।
सूत्रकण्ठ (पु०)—ब्राह्मण, कपोत, ममोला नामक पक्षी।
सूत्रधार (पु०)—नाटक के प्रसंग को समय २ पर दिखलाने वाला मुख्य नट, इन्द्र, शिल्पिभेद।
सूत्रपुष्प (पु०)—कार्पास, कपास।
सूत्रयन्त्र (न०)—सूत्रवेष्टन काष्ठ, चरखा।
सूद (पु०)—सूपकार, रसोइया, व्यंजन।
सूदन (न०)—स्वीकार करना, हिंसन, मारना, फेंकना। [का स्थान।
सूदशाला (स्त्री०)—पाकशाला, रसोई
सून (न०)—पुष्प, प्रसव, उत्पन्न होना। वि०—प्रफुल्लित, खिला हुआ, उत्पन्न हुआ।
सूना (स्त्री०)—प्राणियोंके वधका स्थान, मांस का बेचना, हस्तिशुण्ड।
सूनु (पु०)—पुत्र, छोटा भ्राता, सूर्य, अर्क वृक्ष। स्त्री०—लड़की, कन्या [स्त्रीलिंग में 'सूनू' भी होता है।
सूनृत (न०)—सत्य और प्रियवचन, मङ्गल। वि० तद्युक्त।
सून्मद (वि०)—उन्मत्त, बहुत पागल।
सूप (पु०)—दाल, रसोई, व्यञ्जनविशेष।
सूपकार (पु०)—पाककर्त्ता, रसोइया।
सूर (पु०)—सूर्य, अर्कवृक्ष, पण्डित, दाना।
सू [शू] रण (पु०)—ज़िमींकन्द।
सूरत (वि०)—दया करने वाला, कृपालु, मेहरबान।
सूरसूत (पु०)—अरुण, सूर्यसारथि।
सूरि (पु०)—पण्डित, विद्वान्, सूर्य, आक का पेड़, एक यादव।
सूरी [नृ] (पु०)—विद्वान्, पण्डित।
सूरी (स्त्री०)—बड़ी सरसों, सूर्यभार्या, कुन्ती, विदुषी स्त्री।
सूर्पणखा (स्त्री०)=शूर्पणखा। [राक्षस।
सूर्य (पु०)—सूरज, आक का पेड़, एक
सूर्यकान्त (पु०)—बिल्लौर, स्फटिक, आतशी शीशा, मणिविशेष।
सूर्यकेल (पु०)—दिन, दिवस।

सूर्यग्रहण (न०)–राहु से सूर्य का ग्रसा जाना, राहु में पृथिवी की छाया के पड़ने से सूर्य का दबाया जाना।
सूर्यज (पु०)–सूर्य का पुत्र शनि, यम, वैवस्वतमनु, सुग्रीव। [पुत्र-तनय-सुत शब्द लगाने से भी यही अर्थ होता है]।
सूर्यजा-पुत्री (स्त्री०)–यमुना नदी।
सूर्यमण्डल(न०)–सूर्य का गोला,परिधि
सूर्यवंश (पु०)–सूर्य का ख़ान्दान, एक प्रसिद्ध राजवंश जिसमें इक्ष्वाकु आदि राजा हुए हैं।
सूर्या (स्त्री०)–सूर्यपत्नी, कुन्ती।
सूर्यालोक (पु०)–सूर्य का प्रकाश, धूप, रौद्र, तेज।
सूर्यावर्त्ता(स्त्री०)–हुलहुलनामक घास।
सूर्यास्त (न०)–सूर्य का छिपना।
सूर्योढ (पु०)–वह अतिथि जो साय-काल को घर पर आया हो।
सूर्योदय (पु०)–सूर्य का उदय होना, सवेरा, प्रातःकाल।
सृ (१ प०)–जाना, गमन करना।
सृज् [ज्] (पु०)–सृष्टिकर्त्ता, ब्रह्मा।
सृक्क [क्व] (न०)–होठों के समीप का भाग, गलफू।
सृक्क[क्कि] णी (स्त्री०)–पूर्ववत्।
सृगाल (पु०)–शृगाल।
सृज् (६आ०)–त्यागना, देना।
सृणि-णी (स्त्री०)–अंकुश, अस्त्र।
सृणि [णी]का (स्त्री०)–लाला,लार।
सृत (वि०)–गत, गया हुआ।
सृति (स्त्री०)–गति, जाना, मार्ग।
सृत्वर (वि०)–गमनकर्त्ता,जानेवाला।
सृत्वरी (स्त्री०)–माता, जाने वाली।
सृदर (पु०)–सर्प,सांप। [स्त्री०-नदी।
सृदाकु (पु०)–वायु, अग्नि,वज्र, मृग।
सृप् (१प०)–जाना, गमन करना।
सृपाटिका (स्त्री०)–चञ्चु, चोंच।
सृप्र (पु०)–चन्द्रमा, चांद।
सृमर (पु०)–पशुविशेष, एक प्रकार का हरिण। वि०–जाने वाला।
सृष्ट (वि०)–निर्मित, बनाया हुआ, युक्त, त्यक्त,निश्चित,भूषित,सजा हुआ। [निर्माण,स्वभाव।
सृष्टि (स्त्री०)–संसार की रचना,
सेक (पु०)–सींचना, जलादि का छिड़कना।
सेकपात्र (न०)–जल देने का पात्र अर्थात् डोल, मशक, चोका।
सेक्तृ [तृ](वि०)–सेचक, सींचने वाला,जल देने वाला। पु०–पति, स्वामी, खाविंद।
सेचन (न०)=सेक।
सेचनी(स्त्री०)–सींचने का वर्त्तन,बाल्टी।
सेतिका (स्त्री०)–अयोध्यानगरी।
सेतु (पु०)–पुल, वरुणवृक्ष, खेत की क्यारी जिन में पानी रोका जाता है, तन्त्र में प्रणवस्वरूप मन्त्र।
सेध (न०)–बेड़ी,हथकड़ी,निगड़।
सेना (स्त्री०)–सैन्य,चमू, फौज।
सेनाङ्ग (न०)–हाथी घोड़े रथ पैदल आदि का समूह। [जानेवाला।
सेनाचर (वि०)–सेनागामी, सेना में
सेनानी-पति (पु०)–कार्त्तिकेय,सेना-

पति, फ़ौज का अफसर, कप्तान ।
सैनामुख (न०)-सेना का अग्रभाग, धोड़ा आदि की एक संख्या ।
सैनारक्ष (पु०)-सैनिक, सिपाही ।
सैमन्ती (स्त्री०)-सेवती नामक पुष्पलता
सेव (न०)-इसी नाम से प्रसिद्ध फल ।
सेवक (वि०)-नौकर, अनुचर, भृत्य, दास । पु०-सीनेवाला, दरजी ।
सेवधि=शेवधि ।
सेवन (न०)-सिलाई, कपड़े आदि का सीना, भोगना, साधना, पूजना । [अवयवविशेष ।
सेवनी (स्त्री०)-सुई, सूची, शरीर का
सेवा (स्त्री०)-शुश्रूषा, टहल, नौकरी, भोगना, भजन, आराधना, आसरा लेना ।
सेवित (वि०)-पूजित, सेवा किया हुआ, भोगा हुआ, आसरा लिया हुआ ।
सेव्य (वि०)-सेवा करने लायक, पूजनीय । पु०-अश्वत्थ का वृक्ष । न०-वीरणमूल, उशीर, खस ।
सैंह (वि०)-सिंह का,सिंहसम्बन्धी ।
सैंहिक-केय (पु०)-राहु नामक ग्रह
सैकत (वि०)--सिकतामय, रेतीला ।
सैद्धान्तिक(वि०)--सिद्धान्त का जानने-वाला । [इत्ति आदि पदार्थ ।
सैनिक (पु०)- फौजी, सेना में प्राप्त
सैन्धव (न०)--सेंधा नमक । पु०-घोड़ा, अरबी घोड़ा ।
सैन्य (पु०)--सेना में मिला हुआ हाथी घोड़ा आदि, फौजी । न०-सेना का समूह ।
सैरिभ (पु०)--महिष, भैंसा, स्वर्ग ।
सैवाल (न०)=शैवाल ।
सोः (स्त्री०)--पार्वती ।
सोढ (वि०)-शान्त, क्षमाशील, सहने वाला, सहारा गया । [क्षमायुक्त।
सोढा [ढृ] (वि०)-सहारने वाला,
सोत्कण्ठ (वि०)- बड़ी इच्छा वाला, उत्कण्ठायुक्त । [से हसना ।
सोत्प्रास(न०)-विपचन । पु०-ऊचेस्वर-
सोदय (वि०)-वृद्धियुक्त, प्रकटित, उदयसहित ।
सोदर (पु०)-सगा भाई, सहोदर ।
सोदरा (स्त्री०)-सगी बहिन ।
सोन्माद(वि०)-उन्मादयुक्त,नशेवाला
सोपप्लव (पु०)-राहु से ग्रस्त चन्द्रमा वा सूर्य, विपद्ग्रस्त पुरुष ।
सोपाधि (वि०)-उपाधियुक्त, प्रतिलाभ की इच्छा से किया दानादि ।
सोपान(न०)-सीढ़ी,पौड़ी,आरोहण ।
सोम (पु०)-चन्द्रमा, कपूर, वानर, यमराज, पवन, कुबेर, वसुविशेष, शिव, जल, सोमलता, किरण, अमृत । न०-स्वर्ग, काञ्जी ।
सोमक्षय (पु०)-अमावस्या ।
सोमगर्भ (पु०)-विष्णु ।
सोमज (न०)-दुग्ध । पु०-बुध । वि०-चन्द्रमा से उत्पन्न होने वाला ।
सोमतीर्थ (न०)-प्रभास नामक तीर्थ ।
सोमपः-पाः (पु०)-अमृत पीने वाला पुरुष ।
सोमपीतिन् (पु०)=पूर्ववत् ।

सोमबन्धु (पु०)–कुमुद, बुध, सूरज ।
सोमयाग (पु०)–एक यज्ञ जो तीन वर्ष में पूर्ण होता है और जिस में सोमरस पिया जाता है ।
सोमयाजी[न्] (पु०)–सोम नामक यज्ञ करने वाला पुरुष ।
सोमरोग (पु०)-स्त्रीरोगविशेष जिसमें मूत्र अधिक होता है [एक बेल ।
सोमलता(स्त्री०)-अपने नाम से प्रसिद्ध
सोमवार (पु०)-चन्द्रवार ।
सोमविक्रयी [न्] (पु०)-सोमरस के बेचने वाला पुरुष । [ग्रन्थ ।
सोमसिद्धान्त (पु०)-एक ज्योतिष का
सोमसुत् (वि०)-सोमरस का निकालने वाला पुरुष ।
सोमसुता (स्त्री०)-नर्मदा नदी ।
सोमसूत्र (न०)-शिवलिङ्ग से जल निकलने का स्थान, जलहरी ।
सोल्लुण्ठः-पठनम्=स्तुतिपूर्वक दुर्वाद, साक्षेप वचन, बोली मारना ।
सौकरिक (पु०)-व्याध, शिकारी ।
सौकर्म (न०)-अनायाससाध्य कार्य, बिना परिश्रम के होने वाला काम
सौखसुप्तिक (वि०)-सुख से सोना पूछने वाला, स्तुतिपाठक, वन्दी ।
सौख्य (न०)-सुख, आनन्द, आराम
सौगत (पु०)-बौद्धविशेष, शून्यवादी
सौगन्धिक(न०)-सुगन्धित कमलपुष्प ।
सौचिक(पु०)-सूचीकर्मोपजीवी, दर्जी ।
सौजन्य (न०)-सुजनता, कुलीनता, भलमनसी । [पादित कर्मविशेष ।
सौत्र (पु०)-ब्राह्मण, सूत्रद्वारा प्रति-
सौत्रामणी (स्त्री०) एक यज्ञ जिस का देवता इन्द्र है । [विद्युत् ।
सौदाम [नि] नी(स्त्री०)--बिजली,
सौध (अस्त्री०)--राजमहल ।
सौनिक (पु०)-मांसविक्रयी, व्याध, कसाई । [खूबसूरती ।
सौन्दर्य (न०)--सुन्दरता, मनोहरता,
सौपर्ण (न०)--मरकत मणि, पन्ना ।
सौपर्णेय(पु०)-गरुड़ ।
सौप्तिक(न०)-रात्रियुद्ध, निशारण, महाभारतीय एक पर्व । [मन्यु ।
सौभद्र-द्रि(पु०)-सुभद्रा का पुत्र अभि-
सौभाग्य (न०)-सुहागा, सिन्दूर, अच्छा प्रारब्ध। पु०-विष्कम्भान्तर्गत एक योग ।
सौभिक(पु०)-ऐन्द्रजालिक, बाजीगर ।
सौमनस्य(न०-चित्त की सन्तुष्टता, श्राद्ध में पिण्डप्रदान के पश्चात् ब्राह्मण के हस्त में पुष्प देने का मन्त्र ।
सौमित्रि(पु०)-लक्ष्मण ।
सौम्य(पु०)-बुधग्रह । वि०-मनोज्ञ, उग्रतारहित ।
सौर(पु०)-शनैश्चर, यम ।
सौरभ(न०)-केशर, अच्छा गन्ध ।
सौरभेय(पु०)-वृष, बैल ।
सौरभेयी(स्त्री०)-गौ, अप्सरोभेद ।
सौरमास(पु०)-सूर्य की एक राशि पर भोगने तक का काल ।
सौराष्ट्र (पु०)-सूरत नामक देश । न०-एक विष ।
सौरि(पु०)-शनैश्चर ।
सौल्विक(पु०)-तांबे के पात्र बनाने

वाला, ताम्बुकुट्टक, कसेरा।
सौवस्तिक (पु०)-कल्याण करने में निपुण, पुरोहित।
सौविदल्ल (पु०)-अन्तःपुर का रक्षक, जनानखाने का रखवारा। [देश।
सौवीर (न०)-बेर, स्रोतोञ्जन। पु०-एक
सौष्ठव (न०)-सुन्दर होना, अच्छापन, आतिशय्य, प्रशसनत्व।
सौस्नातिक (वि०)-'आपने अच्छे प्रकार स्नान कर लिया' ऐसा पूछने वाला, सुस्नातपृच्छक।
सौहार्द (न०)-हृदय का अच्छापन, मित्रता, प्रियता। पु०-सुहृद् का पुत्र
सौहित्य (न०)-तृप्ति का होना, प्रसन्नता। [कूद कर जाना।
स्कन्द् (१ आ०)-उछल कर चलना,
स्कन्द (पु०)-शिवपुत्र, कार्तिकेय।
स्कन्दन (न०)-रेचन, बहना, गमन, सूखना।
स्कन्ध (पु०)-अंस, कंधा, प्रकाण्ड, युद्ध, तना, समूह, संग्राम, शरीर, छन्दोभेद, बौद्धों के विज्ञानादि पांच, ग्रन्थ का भाग, मार्ग। [छावनी।
स्कन्धावार (पु०)-शिविर, सैन्यस्थिति,
स्कन्न (वि०)-गलित, गिरा हुआ, क्षरित, शुष्क गया हुआ। न०-बहना।
स्कम्भ् (९ उ०)-चोट करना, प्रतिघात।
स्कान्द (न०)-स्कन्द नामक पुराण।
स्खद् (१ आ०)-फाड़ना, विदीर्ण करना।
स्खदन (न०)-फाड़ना, क्लेश देना, हिंसन।
स्खल् (१ प०)-चलना, गमन करना।
स्खलन (न०)-चलना, गिरना, रेंगना, उच्चारण, चोट करना।
स्खलित (न०)-कपट युद्धादि द्वारा मर्यादा से गिरना। वि०-चलित, गिरा हुआ।
स्तन् (१० उ०)-मेघ का गर्जना, मेघशब्द होना। [पिस्तान, पयोधर, चूचक।
स्तन (पु०)-स्त्रियों का अंगविशेष, कुच,
स्तनन (न०)-मेघ का शब्द, बादल का गर्जना।
स्तनन्धय (पु०)-छोटा बालक, अतिशिशु।
स्तनभर (पु०)-स्थूल स्तनों का भार।
स्तनयित्नु (पु०)-मेघ, बिजली, नागरमोथा, मृत्यु, रोग।
स्तनान्तर (न०)-छाती, हृदय।
स्तनाभोग (पु०)-कुचों की परिपूर्णता।
स्तनित (न०)-मेघ का शब्द, हथेली की आवाज़, शब्दमात्र।
स्तन्य (न०)-दुग्ध, दूध। [जड़ीभूत।
स्तब्ध (वि०)-स्तम्भित, रोका हुआ,
स्तब्धरोमा [न्] (पु०)-शूकर, सूअर। वि०-पक्के बालों वाला।
स्तभ् (१आ०)-जड़ होना, रोकना।
स्तम्ब (पु०)-गुल्म, गुच्छा, तृण, खम्भा।
स्तम्बेरम (पु०)-हस्ती, हाथी।
स्तम्भ (पु०)-स्थूणा, खंभा, थंबा।
स्तम्भन (न०)-रोकना, जड़ीभूत होना, कामदेव का एक बाण।
स्तव (पु०)-स्तुति, प्रशंसा, बड़ाई।
स्तवक (पु०)-गुच्छा, गुल्म।
स्तावक (पु०)-प्रशंसक, खुशामदी।
स्तिमित (वि०)-तर, गीला, सन्तुष्ट। न०-तरी, नमी, गीलापन।
स्तु (२उ०)-तारीफ़ करना, बढ़ावा देना।
स्तुत (वि०)-स्तुति किया हुआ, कीर्त्तित।
स्तुति (स्त्री०)-प्रशंसा, तारीफ़, बड़ाई।
स्तुतिपाठक (पु०)-चारण, भाट।
स्तुत्य (वि०)-प्रशंसनीय, बड़ाई योग्य।
स्तुभ् (१ प०)-तारीफ़ करना। १ आ०-रोकना, दबाना।
स्तुम्भ् (५, ९ प०)-रोकना चेतना-रहित करना।

स्तूप् (४प०, १०उ०)-ढेर लगाना ।
स्तूप (पु०)-ढेर, मीनार, चिता, शक्ति, बौद्धमन्दिरविशेष ।
स्तृ (५उ०)-फैलाना, ढकना, मारना । ५ प०-प्रसन्न होना ।
स्तेन्(१०उ०)-चुराना,लूटना,दूरकरना
स्तेन (पु०)-चोर,लुटेरा । न०-चोरी ।
स्तेम (पु०)-तरी, नमी ।
स्तेय (न०)-चोरी, लूट,चुराई वस्तु ।
स्तेयी [न्] (पु०)-लुटेरा, सुनार ।
स्तोक (वि०)-थोड़ा,छोटा, चातक ।
स्तोकम् (अ०)-कुछ २, अल्पशः ।
स्तोत्र (न०)-तारीफ़, बड़ाई, स्तव ।
स्तोभ (पु०)-स्तम्भन, रोकना, गान-स्वर को पूरा करने के लिये निरर्थक शब्द ।
स्तोम (पु०)-प्रशंसा, मस्तक । न०-शस्य,लौहदण्ड,शिर,धन,अनाज।
स्त्येन (पु०)-अमृत, सुधा, चोर ।
स्त्यै (१उ०)-ढेर लगाना, आवाज़ करना । [भार्य्या ।
स्त्री (स्त्री०)-योषित्, नारी, औरत,
स्त्रीचरित्र-त (न०)-औरतों का स्वभाव या कृत्य ।
स्त्रीचिन्ह (न०)-योनि, भग ।
स्त्रीजाति (स्त्री०)-नारीसमूह ।
स्त्रीजित (पु०)-जोरू का गुलाम, भार्यावश ।
स्त्रीधन (न०)-वह धन जिस पर स्त्री का स्वत्व हो जो ६:प्रकार का है ।
स्त्रीधर्म(पु०)-नारी का कर्त्तव्य,रजस् ।
स्त्रीधव (पु०)-नर, नारीपति ।
स्त्रीप्रसंग (पु०)-मैथुनकर्म ।
स्त्रीप्रसू-जननी (स्त्री०)-केवल कन्या जनने वाली नारी ।
स्त्रीरञ्जन (न०)-पान, ताम्बूल ।
स्त्रीरत्न (न०)-श्रेष्ठतमा स्त्री ।
स्त्रीलिंग (न०)-व्याकरण में शब्दों का वह भेद जो नारीगुण का द्योतक होता है, स्त्रीत्वद्योतक चिन्ह ।
स्त्रीवश (पु०)-स्त्री की अधीनता ।
स्त्रीहरण (न०)-स्त्री का चुराया जाना।
स्त्रैण (वि०)-स्त्री का,ज़नाना । न०-स्त्रीपन,नारीस्वभाव,नारीसमूह।
स्थ (वि०)-[समासान्त में] ठहरने वाला, रहने वाला । पु०-स्थान ।
स्थग् (१ प०)-ढकना,ढाँपना ।
स्थगन (न०)-छिपावट, आच्छादन ।
स्थगर (न०)-सुपारी । [छिपा हुआ ।
स्थगित (वि०)-आवृत, तिरोहित,
स्थण्डिल (न०)-चबूतरा, आंगन, यज्ञवेदि, सीमा ।
स्थपति (वि०)-प्रधान । पु०-राजा, सारथि, कुबेर, अन्तःपुराध्यक्ष ।
स्थल् (१प०)-मज़बूती से ठहरना ।
स्थल (न०)-सूखी ज़मीन, जलरहित अकृत्रिम भूमि का भाग,स्थान ।
स्थली (स्त्री०)=स्थल ।
स्थवि (पु०)-चर वस्तु,जुलाहा,स्वर्ग ।
स्थविर (वि०)-निश्चल, स्थिर, वृद्ध । पु०-बड़ा,भिखारी, ब्रह्मा ।
स्थविष्ठ (वि०)-सब से बड़ा ।
स्था(१प०)-ठहरना,खड़े होना,रुकना ।

स्थाणु (वि०)–स्थिर, गतिरहित। पु०-शिव, स्तम्भ, भाला, खूंटी। अस्त्री०-पल्लवशाखारहित वृक्ष।
स्थाता [तृ](वि०)–ठहरा हुआ स्थित
स्थान (न०)–जगह, स्टेशन,घर, देश, नगर,पद,स्थिति, समानता,वर्तन।
स्थानक (न०)–स्थान,नगर,वर्तन,झाग
स्थानच्युत-भ्रष्ट (वि०)–पदच्युत,बरखास्त, बेकार। [पु०-थानेदार।
स्थानिक(वि०)–उसी स्थान का, लोकल
स्थानी [न्] (वि०)–स्थानयुक्त। पु०-स्थानरक्षक, व्याकरण में वह अक्षर जिस के स्थान में दूसरा अक्षर आदेश होता है।
स्थानीय (वि०)=स्थानिक।
स्थाने (अ०)–ठीक २,उचित स्थान में
स्थापक (वि०)–स्थापन करने वाला।
स्थापन-ना=क़ायम करना, रखना, बुनियाद डालना,सुरक्षित करना
स्थापित (वि०)–क़ायम किया हुआ, स्थिर किया हुआ, न्यस्त, निवेशित, टिकाया हुआ।
स्थाम[न्](न०)–शक्ति,ताक़त,स्थिरता
स्थायिभाव(पु०)–चित्त की निश्चलता
स्थायी [न्] (वि०)–रहनेवाला, बहुत कालतक ठहरने वाला, मज़बूत।
स्थायुक (वि०)–मज़बूत, ठहरने वाला। पु०-ग्रामाधिपति।
स्थावर (वि०)–स्थिर, ठहरा हुआ, सुस्त। पु०-पर्वत।
स्थावरजंगम (न०)–चल और अचल सम्पत्ति, चर और अचर वस्तु।
स्थापत्य (पु०)–अन्तःपुराध्यक्ष।
स्थाल (न०)–थाली,रकाबी,बटलोई।
स्थाली(स्त्री०)–मिट्टी का वर्तन,डेगची
स्थालीपाक (पु०)–गृहस्थ द्वारा करने योग्य एक यज्ञ।
स्थालीपुलाक (पु०)–स्थाली में पके हुए चावल, एक प्रकार का न्याय जिसमें एक अंश के ज्ञान से सम्पूर्ण का ज्ञान अनुमित किया जाता है जैसे एक चावल को देखने से सबके पकने न पकने का ज्ञान हो जाता है
स्थाविर (न०)–बुढ़ापा, वृद्धत्व जो ७० वर्ष के पश्चात् आरम्भ होता है।
स्थासक (पु०)--पानी का बुलबुला, अलंकार। [हुआ।
स्थास्नु (वि०)--स्थितिशील, ठहरा
स्थित (वि०)--ठहरा हुआ, निश्चल, खड़ा हुआ। [हालत,पोज़ीशन।
स्थिति (स्त्री०)–ठहराव,दशा,मर्यादा,
स्थिर (वि०)--मज़बूत, ठहरा हुआ, निश्चल,शान्त। पु०--देवता,वृक्ष, पर्वत, सांड, शिव। [क मज़बूत।
स्थिरतर(पु०)–परमात्मा। वि०-अधि-
स्थिरता-त्वम्=मज़बूती, निश्चलता।
स्थिरप्रतिज्ञ(वि०)–बात का पक्का।
स्थिररंगा(स्त्री०)–नील। [वाला
स्थिरात्मा-चित्त-धी-बुद्धि-मति(वि०) मज़बूतदिल का,स्थिर बुद्धिवाला।
स्थूणा (स्त्री०)–घर का खम्भा,स्तम्भ, लौहमूर्ति।
स्थूम (पु०)–प्रकाश, चन्द्रमा।
स्थूर (पु०)–सांड, पुरुष।

स्थूल (वि०)–पीवर, मोटा, बड़ा, मजबूत, घना, मूर्ख, मन्द । न०–ढेर, तम्बू, कूट ।
स्थूलकाय (वि०)–दीर्घ शरीर वाला ।
स्थूलता त्वम् =मोटापन, मन्दता ।
स्थूलधी-मति (स्त्री०)–मोटी अकल ।
स्थूलशरीर (न०)–पञ्चभूतों का बना देह, पाञ्चभौतिक शरीर ।
स्थूला (स्त्री०)–बड़ी इलायची ।
स्थूलो [न्](पु०)–ऊंट, वृषभ ।
स्थेय (वि०)–ठहरने योग्य । पु०–मध्यस्थ, पञ्च, प्राज्ञ ।
स्थैर्य (न०)–मजबूती, चित्तैकाग्रता।
स्थोर (न०)–मजबूती ।
स्थौल्य (न०)–स्थूलता, मोटी बुद्धि ।
स्नव (पु०)–बहना, चूना, स्रवण ।
स्ना (२प०)–नहाना, धोना ।
स्नात (वि०)–नहाया हुआ ।
स्नात-क (पु०)–ऐसा ब्रह्मचारी जिस ने गुरुकुल में विद्या समाप्त कर के गृहस्थ में प्रवेश किया हो ।
स्नान (न०)–नहाना, अवगाहन, सफाई
स्नानागार (न०)–नहाने का स्थान ।
स्नानीय (वि०)–स्नान के लिये हितकारी जैसे तेल, उबटना आदि ।
स्नायु (पु०)–रग, रक्तवाहिनी नाड़ी ।
स्नायु धनु (पु०)–स्नायु ।
स्निग्ध (वि०)–चिकना, गाढा, स्नेह वाला, चमकदार, प्रेमयुक्त, मनोहर । पु०–मित्र । न०–तेल, मोम, प्रकाश
स्निग्धता-त्वम्=ममता, प्रेम, चिकनापन
स्निग्धा (स्त्री०)–चर्बी, मज्जा ।

स्निह् (४प०)–प्रेम करना, खुश होना ।
स्नु (स्त्री०)–स्नायु, रग ।
स्नुषा (स्त्री०)–पुत्रवधू ।
स्नेह (पु०)–प्रेम, सुहृद्भाव, चिकनापन; मज्जा, चर्बी, तेल ।
स्नेहभू (पु०)–कफ, बलगम । [चढ़ाना ।
स्नेहवस्ति (स्त्री०)–वस्ति द्वारा तेल
स्नेही (पु०)–मित्र, चित्रकार, तैलमर्दक
स्नेहु (पु०)–चन्द्रमा, रोगविशेष ।
स्नै (१प०)–लपेटना, कपड़े पहनना ।
स्पन्द् (१आ०)–हिलना, ठहर २ कर चलना ।
स्पन्दः-न्दनम्=ईषत्कम्पन, धड़कन।
स्पर्ध् (१आ०)–स्पर्धा करना, बराबरी करना, चेलेंज देना ।
स्पर्धनम्-र्धा=मुकाबिला करना, चढ़ा ऊपरी, हसद, ईर्षा, चेलेंज ।
स्पर्श् (१०आ०)–छूना, ग्रहण करना, आलिङ्गन करना । [दूत ।
स्पर्श (पु०)–पकड़ना, एक गुण, युद्ध,
स्पष्ट (वि०)–साफ, प्रकट, जाहिर ।
स्पृष्ट (वि०)–छूआ हुआ, कृतस्पर्श ।
स्पृह् (१० उ०)–इच्छा करना, चाहना ।
स्पृहणीय (वि०)–चाहने योग्य, श्लाघ्य ।
स्पृहयालु (वि०)–चाहने वाला, इच्छुक ।
स्पृहा (स्त्री०)–इच्छा, ख्वाहिश ।
स्फटि [टी] क (पु०)–बिल्लौर, एक मणि, आतशी शीशा ।
स्फाय् (१ आ०)–वृद्धि होना, बढ़ना ।
स्फाति (स्त्री०)–वृद्धि, उन्नति ।
स्फार (पु०)–सोने का बुलबुला । वि०–विपुल, चमकदार ।
स्फि [फ्] (स्त्री०)–नितम्ब, चूतड़ ।
स्फिर (वि०)–विपुल, अतिशय, बढ़ा हुआ ।

स्फुटन(न०)-खिलना, फूटना।
स्फुटित(वि०)—खिला हुआ, फूटा हुआ।
स्फुरण(न०)-फड़कना, ईषच्चलन।
स्फुलिंग(अस्त्री०)-आग की चिनगारी।
स्फूर्त्ति,स्त्री०)-फुरना, निकसना, प्रतिभा, तेज़ी। [ग्विक,सित,स्फूर्ति वाला।
स्फूर्त्तिमान् [मत्] (वि०)-कान्तिमान्.
स्फोटक (पु०)-फोड़ा, व्रण। वि०-फोड़ने वाला।
स्फोटन(न०)-विदारण, खिलना, फाड़ना।
स्म(अ०)-बीता हुआ,पाद को पूरा करना।
स्मय(पु०)-घमंड, आश्चर्य, गरूर।
स्मर(पु०)—अनंग, कामदेव।
स्मरगृह-मन्दिर(न०)-स्त्री का चिन्हविशेष।
स्मरण(न०)-याद करना, ज्ञानविशेष।
स्मरप्रिया(स्त्री०)—रति, अनंगभार्या।
स्मरहर(पु०)—शिव।
स्मार(वि०)-कामदेवसम्बन्धी।
स्मारक(वि०)-याद कराने वाला। [ग्राता।
स्मार्त्त (वि०)-स्मृतिविहित, स्मृतियों का
स्मि(१० आ०)-अनादर करना,हैरान होना।
स्मित(वि०)—आश्चर्य युक्त, हैरान,खिला हुआ। न०-ईषद्धास।
स्मृ(१ प०)-स्मरण करना, याद करना।
स्मृत(वि०)-याद किया हुआ।
स्मृति(स्त्री०)-धर्मोपदेशक शास्त्र,यादगार, स्मरण, मनुस्मृति आदि धर्मग्रन्थ।
स्मृतिविरुद्ध(वि०)-स्मृतिशास्त्र के खिलाफ
स्मेर(वि०)—विकसित, ईषद्धासयुक्त।
स्यन्द(१ आ०)-सूपना, बहना, टपकना।
स्यन्द(पु०)-बहना, टपकना, चूना।
स्यन्दन(न०)-बहना, जल। पु०-रथ, तिनिश का वृक्ष। [वाला।
स्यन्दनारोह(पु०)-रथ पर चढ़कर लड़ने
स्यन्दी[न्](वि०)-बहने वाला।
स्यन्न(वि०)-टपका हुआ, चुत।
स्यमन्तक(पु०)-श्रीकृष्ण के हाथ की मणि।
स्यूत (वि०)-सिया हुआ। पु०-सूत का बना पात्र।
स्यूति(स्त्री०)-सुई आदि से सीना।
स्रंसन(न०)-नीचे गिराना या गिरना।
स्रंसी[न्](वि०)-अधःपतनशील।
स्रक्[ज्] (स्त्री०)-माला, माल्य।
स्रग्वी[न्] (वि०)-मालाधारी, माल्ययुक्त।
स्रग्धरा(स्त्री०)-रस्सी,तन्तुपटसमूह,प्रजापति।
स्रम्भ(१ आ०)-गिरना, पतन होना।
स्र[स्रा]व (पु०)-बहना,क्षरण होना,झरना।
स्रवण(न०)-मूत, पेशाब, घर्म, पसीना, बहना, टपकना।
स्रवन्ती(स्त्री०)-नदी, एक औषध।
स्रष्टा[ष्टृ](पु०)-ब्रह्मा, प्रजापति।
स्रस्त(वि०)-पतित, गिरा हुआ, च्युत।
स्रस्तर(पु०)-आसन,बिस्तरा,बिछौना
स्राक्(अ०)-द्रुत, झट, जल्दी।
स्रु(१ प०)-जाना, बहना, क्षरण।
स्रुक्-ग्[च्] (स्त्री०)-स्रुवा, यज्ञपात्र।
स्रुघ्न (पु०)-पटना नामक देश।
स्रुत (वि०)-बहा हुआ जलादि,गत।
स्रुव (पु०)=स्रुक्। [पानी का बहना।
स्रोत (न०)-प्रवाह, सोता, स्वयं
स्रोतः [स्] (न०)-वेग से स्वयं जल का निकलना, वीर्य।
स्रोतस्वती-स्विनी (स्त्री०)-नदी, दरिया। प्रवाहयुक्त।
स्रोतोञ्जन (न०)-सफ़ेद सुरमा।
स्व(न०) धन,दौलत। वि०-आत्मीय, अपना। पु०-ज्ञाति, विष्णु।
स्वक (वि०)-आत्मीय, अपना।
स्वकम्पन (पु०)-वायु, हवा।
स्वकर्म[न्](न०)-अपना कर्त्तव्य काम।
स्वकीय (वि०)-अपना, आत्मीय।
स्वगत (वि०)-मनोगत भाव, दिल की बात, नाट्योक्तिविशेष।

स्वच्छ(न०)-निर्मलता, साफ़, मोती।
पु०-स्फटिक। वि०-रोगमुक्त।
स्वच्छन्द(वि०)-स्वतन्त्र, खुदमुख़ार।
स्वच्छमणि(पु०)-स्फटिक मणि, बिल्लौर
स्वज (न०)-रुधिर, खून। पु०-पुत्र।
वि०-अपने से उत्पन्न।
स्वजन (पु०)-ज्ञाति, अपना लोक।
स्वतः[स्](न०) स्वयंही, अपने आप।
स्वतन्त्र (वि०)-स्वाधीन, निरङ्कुश।
स्वत्व (न०)-स्वाधीनता, मालिकपना, अपना कब्ज़ा।
स्वधर्म (पु०)-अपने वर्ण के अनुसार वेदविहित आचार।
स्वधा (अ०)-देवताओं के हविर्दान का मन्त्र, पितरों का अन्न। स्त्री०-दक्षकन्या और पितरोंकी पत्नी।
स्वधाप्रिय (पु०)-काले तिल, अग्नि।
स्वधाभुज् [क्](पु०)-पितृसमूह, देवता।
स्वधिति(स्त्री०)-कुठार, कुल्हाड़ा।
स्वन् (१०उ०)-शब्द करना।
स्वन(पु०)-शब्द, आवाज़। [ध्वनित।
स्वनित (न०)-मेघ का गर्जना। वि०-
स्वपन (न०)-शयन, निद्रा।
स्वप्न (पु०)-निद्रा, दर्शन ख्वाब।
स्वभाव (पु०)-अपना धर्म, मिज़ाज, शील, आदत। [अलङ्कारविशेष।
स्वभावोक्ति (स्त्री०)-अर्थसम्बन्धी
स्वभू (पु०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अनङ्ग।
स्वयमर्जित (वि०)-खुद पैदा किया हुआ।
स्वयंक (पु०)-वर्ष, साल। [खुदबखुद।
स्वयम् (अ०)-खुद, आप, अपनेतईं,

स्वयम्भु (पु०)-ब्रह्मा। शिव।
स्वयम्भुव (पु०)-प्रथम मनु, ब्रह्मा,
स्वयम्भू (वि०)-स्वयमुत्पन्न। पु०-ब्रह्मा, विष्णु, शिव, काल, कामदेव, स्त्रीवक्षः, परमात्मा।
स्वयंवर(पु०)-आप ही वरना, सभा में कन्या का अपने लिये वर चुनना।
स्वयंवरा (स्त्री०)-अपने लिये वर चुनने वाली कन्या। [करना।
स्वर् (१०उ०)-ऐब निकालना, निन्दा
स्वर् (अ०)-स्वर्ग, द्यौः, ईश्वर, आकाश, तीसरी व्याहृति, शोभा, जल।
स्वर (पु०)-आवाज़, ध्वनि, बाजे का सुर, ७ का अङ्क, उदात्त अनुदात्त और स्वरित भेद से उच्चारण का यत्नविशेष, अ आ इ ई आदि अक्षर।
स्वरभग (पु०)-एक रोग जिस में आवाज़ रुक जाती है। [प्राय।
स्वरस (पु०)-अपना मतलब, स्वाभि-
स्वराज् (पु०)-ईश्वर, छन्दोभेद।
स्वराज्य (न०)-खुदमुख़ारी, सेल्फ़-गवर्नमेण्ट।
स्वरापगा(स्त्री०)-स्वर्ग की नदी, गङ्गा।
स्वरित (वि०)-ध्वनित, उच्चरित।
पु०-एक स्वर जो उदात्त और अनुदात्त के मेल से उत्पन्न होता है।
स्वरु (पु०)-धूप, वज्र, यज्ञ, तीर।
स्वरूप (न०)-अपना रूप, स्वभाव।
वि०-मनोज्ञ, मनोहर, बराबर।
स्वर्ग (पु०)-त्रिदिव, देवताओं का

निवासस्थान, बड़े सुख की जगह।
स्वर्गकाम (वि०)–स्वर्ग की इच्छा करने वाला।
स्वर्पति–भर्त्ता (पु०)–इन्द्र।
स्वर्गवधू (स्त्री०)–अप्सरा, स्वर्वेश्या।
स्वर्गाचल (पु०)–सुमेरु पर्वत।
स्वर्गी[न्](वि०)–स्वर्गीय। पु०-देवता, अमर, मृतपुरुष। [को प्राप्त।
स्वर्गीय-र्ग्य(वि०)–स्वर्ग के योग्य, स्वर्ग
स्वर्गौकाः [स्] (पु०)–देवता, अमर।
स्वर्जिक-र्जी [न्] (पु०)–सज्जी।
स्वर्ण (न०)–सोना, सुनहरा सिक्का।
स्वर्णकाय (पु०)–गरुड़।
स्वर्णकार–कृत् (पु०)–सुनार।
स्वर्णदी (स्त्री०)–गंगा।
स्वर्लोक (पु०)–स्वर्गलोक, वहिश्त।
स्वर्वापी (स्त्री०)–गंगा, स्वर्गनदी।
स्वर्वेश्या(स्त्री०)–मेनकादि अप्सरा।
स्वर्वैद्य (पु०)–अश्विनीकुमार।
स्वल् (१प०)–जाना, हरकत करना।
स्वल्प(वि०)–थोड़ा, बहुत छोटा, नाचीज
स्वल्पक(वि०)–स्वल्पता, बहुत छोटा।
स्वल्पिष्ठ (वि०)-सब से छोटा।
स्वशुर(पु०)--पति वा पत्नी का पिता।
स्वसृ [सृ] (स्त्री०)–भगिनी, बहन।
स्वस्ति (अ०)–क्षेम, आशिष्, कुशल, अङ्गीकारवचन।
स्वस्तिक (पु०)–कल्याणदाता, एक प्रकार का घर, आसनविशेष।
स्वस्तिवाचन (न०)–किसी यज्ञ वा सत्कार के पूर्व मंगलदायक वेद-मन्त्रों का पाठ।

स्वस्त्ययन (न०)–शुभ के लिये किया गया यज्ञयागादि।
स्वस्थ (वि०)--अपने आपे में स्थित, सावधान, तन्दुरुस्त।
स्वस्थित(वि०)-इच्छानुसार गतिशील
स्वस्त्रीय-स्रेय (पु०)–भाजा।
स्वस्त्रीया--स्रेयी (स्त्री०)–भाजी।
स्वागत (न०)–अच्छा आना, शुभागमन।
स्वाच्छन्द्य (न०)–स्वेच्छाचारता।
स्वातन्त्र्य (न०)–स्वतन्त्रता, खुदमुख्तारी।
स्वाति ती (स्त्री०)–एक नक्षत्र।
स्वाद्-दनम् = ज़ायका लेना, खाना।
स्वादित (वि०)–खाया हुआ, चाखा हुआ।
स्वादिष्ठ (वि०)–बहुत मीठा, अति उत्तम।
स्वादु (वि०)–मीठा, ज़ायक़ेदार, अच्छा।
स्वादुरसा(स्त्री०)–शतावर, मुनक्का, मदिरा।
स्वाद्वी (स्त्री०)–किशमिश, अंगूर, मुनक्का।
स्वान (पु०)–शब्द, आवाज़।
स्वाप (पु०)–सोना, नींद लेना।
स्वापद = श्वापद। [कुदरती।
स्वाभाविक (वि०)–स्वभाव से उत्पन्न,
स्वामिता-त्वम् = अध्यक्षता, प्रोप्राइटरी।
स्वामिनी (स्त्री०)–मालकिनी, मोप्राइस।
स्वामी [न्] (वि०) -मालिक, अध्यक्ष, पु०–प्रोप्राइटर।
स्वायंभुव (वि०)–ब्रह्मा की संतान। पु०–एक मनु।
स्वाराट् [ज्] (पु०)–इन्द्र।
स्वारोचिषः चिस् (पु०)–द्वितीय मनु।
स्वास्थ्य (न०)–स्वस्थता, नीरोगता, तन्दुरुस्ती, हालत।
स्वाहा (स्त्री०)–अग्नि की स्त्री। अ०–देवतों को हविः देने का मंत्र।
स्वित् (अ०)–प्रश्न, वितर्क, पादपूर्ति।
स्विन्न(वि०)–स्वेदयुक्त, पसीना दिया हुआ।
स्वीकृ(८उ०)–स्वीकार करना, मंजूर करना।
स्वीकरणं-कृति-कारः = हाँ, मंजूरी, स्वीकारी।
स्वीय (वि०)–निजसम्बन्धी, अपना।

स्वृ (९ प०)–मारना, वध करना।
स्वेद (पु०)–पसीना, उष्णता के कारण शरीर से जो पानी निकलता है।
स्वेदन (न०)–पसीना निकलना। [तन्दूर।
स्वेदनी (स्त्री०) लोहे का पात्र,तवा कढ़ाही,
स्वैर (न०)–अपनी इच्छा। वि०–अपनी इच्छा वाला। [गमन।
स्वैरता-त्वम्=स्वच्छन्दचारिता,इच्छापूर्वक
स्वैरिणी(स्त्री०)–स्वेच्छापूर्वक विचरनेवाली स्त्री, दुराचारिणी स्त्री।
स्वैरी [न्] (वि०)–स्वेच्छाचारी, आज़ाद, खुदमुख्तार, स्वतन्त्र।

ह

ह (अ०)–पाद को पूरा करने के लिये प्रयुक्त होता है। सम्बोधन; प्रसिद्धिबोधक। पु०–शिव,जल,शून्य मगल। न०-परमात्मा, प्रसन्नता।
हंस (पु०)–अपने नाम से प्रसिद्ध पक्षी [कहते हैं कि यह पक्षी मानसरोवर झील पर रहता है], परमात्मा, जीवात्मा, प्राणवायु, शिव, विष्णु, सूर्य, कामदेव, रोगरहित राजा, पवित्र मनुष्य, पर्वत, ईर्ष्या, घोड़ा। [कड़ा।
हंसक (पु०)–पक्षिविशेष,नूपुर,पाद का
हंसगामिनी (स्त्री०)–हंस के समान सुन्दर चाल चलने वाली स्त्री।
हंसनादिनी(स्त्री०)–सूक्ष्म अग वाली, कोयल के समान बोलने वाली और भारी नितम्ब वाली स्त्री।
हंसमाला (स्त्री०)–हंसों की क़तार।
हंसरथ वाहन (पु०)–पुराणोपकल्पित चतुर्मुख ब्रह्मा।
हंसलोहक (न०)–पीतल।
हंसाशु (पु०)–सफ़ेद, श्वेत।
हंसाधिरूढा (स्त्री०)–सरस्वती।
हंसाभिख्य (न०)–चांदी, रजत।
हंसिका-सी (स्त्री०)–मादा हंस।
हहो (अ०)–हे, अरे, हो, हलो, प्रश्नवाचक, सम्बोधन।
हट्(१प०)–चमकना,दीप्तिमान् होना।
हट (पु०)–बाज़ार,मार्केट, मेला।
हट्टविलासिनी (स्त्री०)–वेश्या, बाज़ारु नारी, हल्दी।
हट्टी (स्त्री०)–छोटा बाज़ार।
हठ् (१प०)–कूदना,क्रूर होना,सताना।
हठ(पु०)–दुराग्रह,ज़ुल्म,ज़िद,बलात्कार
हठयोग (पु०)–ध्यानधारणा द्वारा योगसाधन।
हड्ड (न०)–हड्डी, अस्थि।
हड्डज (न०)–चर्बी, मज्जा।
हण्डिका-ण्डी (स्त्री०)–मट्टी का घड़ा।
हत (वि०)–प्रतिहत, मारा गया, नष्ट, घात किया गया, छीना गया, रोका गया। न०–वध, फ़स्ल। [कायर, कापुरुष।
हतक (वि०)–दु.खी, कम्बख़्त। पु०–
हतकण्टक(वि०)–शत्रु,या कण्टकरहित
हतचित्त (वि०)–घबराया हुआ।
हतदैव(वि०)–बदक़िस्मत,भाग्यहीन।
हतप्रभाव (वि०)–शक्तिहीन,नपुंसक।
हतबुद्धि(वि०)–बुद्धिहीन, मूर्ख।
हतभाग-ग्य(वि०)–बदक़िस्मत,कम्बख़्त।
हतलक्षण (वि०)–कम्बख़्त,लक्षणरहित।
हतश्री-सम्पद् (वि०)–गरीब,निर्धन।

हताश (वि०)-नाउम्मीद, आशा-रहित, कमज़ोर, क्रूर, चालाक, नीच।
हति (स्त्री०)--वध, नाश, चोट, नाकामयाबी, ऐब, ज़रब, गुणा।
हत्नु (पु०)-हथियार, रोग।
हत्या (स्त्री०)--वध, मरण, खून।
हन्, (१प०)--मारना, क़त्ल करना, पीटना, नुकसान पहुंचाना, त्यागना, जीतना, हटाना।
हन् (वि०) [समासान्त में]--मारने वाला, घात करने वाला।
हन (न०)-क़त्ल, वध।
हनन (न०)--क़त्ल, वध, गुणन, चोट।
हनु-नू (अक्लीo)--ठोड़ी। स्त्री०--हथियार, रोग, मृत्यु, औषध-विशेष, वेश्या।
हनु [नू] मान्[मत](पु०)--रामायण में वर्णित एक प्रसिद्ध वानर योद्धा जो पवन के वीर्य से अंजना में उत्पन्न हुआ था।
हनूप (पु०)--राक्षस, असुर।
हन्त (अ०)--खेद, हर्ष, दया, शोक, आशिष् आदि अर्थों में आता है।
हन्ता [तृ] (वि०)--मारने वाला। पु०--घातक, वधिक, चोर।
हन्तु (पु०)-वध, मृत्यु, बैल।
हय् (१ प०)-जाना, पूजना, आवाज़ करना, थकना।
हय (पु०)-घोड़ा, सात का अंक, इन्द्र।
हयङ्कप (पु०)-रथवान्, कोचवान्, इन्द्र का सारथि, मातलि।
हयग्रीव (पु०)-विष्णु का एक रूप।
हयघ्न (पु०)-सलोत्री, साईस।
हयद्विषत (पु०)-भैंसा, महिष।
हयप्रिय (पु०)-जौ, यव।
हयमेध (पु०)-अश्वमेध यज्ञ।
हयशाला(स्त्री०)-अस्तबल, घुड़साल।
हयारूढ (पु०)-अश्वारोही, घुड़सवार।
हयी (स्त्री०)-घोड़ी।
हर (वि०)-हरने वाला, पकड़ने वाला, विभाजक। पु०-शिव, अग्नि, गधा, विभाजक, पकड़ना, हरण। [शिव
हरक(पु०)-चोर, बदमाश, विभाजक,
हरण (न०)-चुराना, ग्रहण, हटाना, नाश, विभाग, बाज़ू, स्वर्ण, यौतक कौड़ी, उबलता हुआ पानी।
हरतेजः बीज(न०)-पारद, पारा।
हरशेखरा(स्त्री०)-गंगा।
हरि (पु०)-विष्णु, सिंह शिव, चन्द्र, सूर्य, वायु, इन्द्र, किरण, अश्व, ब्रह्मा, सर्प, वानर, मेंढक, यम, मोर, हंस; तोता; कोकिल; नौ वर्षों में से एक; अग्नि; भर्तृहरि; पीत और हरित वर्ण। वि०-उस वर्णवाला।
हरिकेश (पु०)-शिव।
हरिचन्दन (अक्लीo)-कल्पवृक्ष। न० पद्मकेसर; कुंकुम; चाँदनी।
हरिण (पु०)-मृग, शिव, विष्णु, सूर्य, हंस, सफ़ेद रंग। वि०-सफ़ेद रंग वाला।
हरिणहृदय(वि०)-भीरु, डरपोक।
हरिणाक्षी (स्त्री०)-मृगनयना स्त्री।
हरिणाङ्क (पु०)--चन्द्रमा।

हरिणी (स्त्री०)–मृगी, सोने की प्रतिमा, १६ अक्षर के पाद का एक छन्द, युवती स्त्री, एक सुरांगना।
हरित् (पु०)–नीलमिश्रित पीतवर्ण, एक अश्व, सिंह, विष्णु, सूर्य। स्त्री०–हल्दी। अस्त्री०–तृण।
हरिताल(न०)–हरताल नाम उपधातु।
हरिदश्व (पु०)–सूर्य, आक का वृक्ष।
हरिद्रा (स्त्री०)–हल्दी। [एक तीर्थ।
हरिद्वार(न०)–अपने नाम से प्रसिद्ध
हरिन्मणि (पु०)–मरकतमणि।
हरिभुक् [ज्] (पु०)–सर्प। [वर्ष।
हरिवर्ष (न०)–जम्बुद्वीपान्तर्गत एक
हरिवंश (पु०)–विष्णुवंश, एक पुराण।
हरिवासर (न०)–एकादशी तिथि और द्वादशी का प्रथम भाग।
हरिवाहन (पु०)–गरुड़।
हरिशयन (न०)–आषाढ़ शुक्ला द्वादशी से कार्त्तिक शुक्ला द्वादशी तक का समय।
हरिहय (पु०)–इन्द्र, देवराज।
हरीतकी (स्त्री०)–हैड़।
हर्त्ता [तृ] (पु०)–सूर्य, चुराने वाला।
हर्म्य (न०)–धनी पुरुषों के महल।
हर्यक्ष (पु०)–सिंह, कुबेर। वि०–पीले नेत्र वाला।
हर्यश्व (पु०)–इन्द्र। [उत्पन्न आनन्द।
हर्ष (पु०)–इष्ट वस्तु की प्राप्ति से
हर्षण (न०)–सुख, खुशी, विष्कुम्भान्तर्गत १४वां योग। वि०–हर्षकर्त्ता।
हर्षिणी (स्त्री०)–विजया, भाग।
हर्षित(वि०)–सुखी हुआ, आल्हादित।
हल् (१प०)–विलेखन करना, खींचना।
हल (न०)–लांगल।
हलधर (पु०)–बलदेव।
हला (स्त्री०)–सखी, मदिरा, भूमि, जल।
हलाहल (पु०)–एक प्रकार का तीक्ष्ण विष, ब्रह्मसर्प। [कर्म करने वाला।
हली [न्](पु०)–बलराम। वि०–कृषि-
हलीशा (स्त्री०)–हलदण्ड, हलस।
हल्य (न०)–हल से जुता हुआ खेत, हलकर्षित क्षेत्र। [नाचना।
हल्लीष-क(न०)–बहुत स्त्रियों के साथ
हव (पु०)–होम, यज्ञ, आज्ञा, बुलाना।
हवन(न०)–होम।
हवनायुः [स्](पु०)–अग्नि।
हवनी (स्त्री०)–होम का कुंड।
हवनीय (न०)–होम का द्रव्य, हव्य।
हविष (न०)–घृत, घी। [द्रव्य।
हविष्यान्न (न०)–घृतादि में खाने योग्य
हव्य (न०)–देवताओं के योग्य अन्न।
हव्यपाक (पु०)–चरु।
हव्यवाह्-न (पु०)–अग्नि, आग।
हस् (१प०)–हसना, विकसित होना, खिलना।
हस (पु०)–हास्य, मुख का खिलना।
हसन (न०)–हसना, ठट्ठा करना।
हसन्ती (स्त्री०)–अंगीठी। वि०–हसने वाली।
हसित (न०)–हसना, खिलना। वि०–विकसित, खिला हुआ, हसा हुआ
हस्त(पु०)–हाथ, पाणि, हाथी की सूंड, तेरहवां नक्षत्र।
हस्तसूत्र (न०)–विवाह के समय हाथ में बधा सूत्र, कङ्कण, कंगना।

हस्तामलक (न०)–करस्थित आंवला, अनायास करने वा देखने योग्य पदार्थ, वेदान्त का एक ग्रन्थ।
हस्तिक (न०)–हस्तियों का समूह।
हस्तिदन्त(पु०)–हाथी का दांत,दीवार की खूंटी।
हस्तिन [ना] पुर (न०)–चन्द्रवंशीय हस्ति नामक राजा का बसाया एक प्रसिद्ध नगर।
हस्तिनी (स्त्री०)-गजपत्नी,हथिनी
हस्तिप-पक (पु०)-हाथी पर चढ़ने वाला, हाथीवान्। [मदजल।
हस्तिमद (पु०)-हस्तिमदाद्र से स्तुत
हस्त्यारोह (पु०)=हस्तिप।
हस्ती [न्] (पु०)-हाथी, गज।
हा (३ प०)-छोड़ना, त्याग करना। ३ आ०-गमन करना, जाना।
हा (अ०)-शोक,पीड़ा,विषाद, निन्दा
हाटक (न०)-स्वर्ण, सोना, धतूरा। वि०-सोने का बना हुआ।
हातव्य (न०)-छोड़ने योग्य,त्यक्तव्य।
हान (न०)-त्याग, छोड़ना।
हानि (स्त्री०)-क्षति,नुकसान,अपचय
हायन (अस्त्री०)-वर्ष,सवत्। पु०-अग्नि की शिखा,व्रीहिभेद।
हार(पु०)-मोतियोंकीमालामुक्तावली
हारक (पु०)-चोर, धूर्त, कितव, गद्यभेद, विभाजक अङ्क। वि०-हरण करने वाला।
हारावली (स्त्री०)-मोतियों का हार
हारिद्र (पु०)-कदम्बवृक्ष। वि०-हल्दी से रगा हुआ।
हारी [न्] (वि०)-हार वाला, मनोज्ञ, चुराने वाला।
हारीत (पु०)-धर्मशास्त्र का प्रणेता एक मुनि, मैना पक्षी, धूर्त।
हार्द (न०)-स्नेह,प्रेम,प्यार,अभिप्राय
हार्य (पु०)-विभीतक वृक्ष। वि०-ले जाने योग्य।
हालाहल=हलाहल।
हालाहली (स्त्री०)-मदिरा।
हालिक (वि०)-कृषक, किसान।
हाव (पु०)-आह्वान, बुलाना, स्त्रियों केशृंगारभावजन्य चेष्टा।
हास (पु०)=हस।
हास्तिक (न०)-हस्तिसमूह।
हास्य (न०)-हंसना, रसविशेष।
हाहाः(पु०)-देवगन्धर्वविशेष।
हाहाकार (पु०)-युद्ध का शब्द, शोकजन्य ध्वनि, हा हा करना।
हि (५प०)-बढ़ना,गमन करना।
हि (अ०)-निश्चय,पादपूरण,प्रश्न, सबब,सम्भ्रम,हेत्वपदेश[क्योंकि], असूया, निन्दा।
हिंसक (पु०)-सिंहादि मारने वाला पशु,शत्रु। वि०-हिंसा करने वाला
हिंसा (स्त्री०)-मारना, वध करना, कत्ल करना।
हिंसित (वि०)-मारा हुआ,वधप्राप्त।
हिंस्र (वि०)-घातक, हिंसाशील, मारने वाला।
हिक्क (१ उ०)-कूलना, अव्यक्त शब्द करना। १० आ०-हिंसा करना।
हिक्का (स्त्री०)-हिचकी रोग।

हिङ्गु (न०.)–हींग, एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य।

हिड् (१आ०)–गमन करना, जाना।

हिडिम्ब (पु०)–एक दैत्य जो भीमसेन द्वारा निहत हुआ।

हिडिम्बा (स्त्री०)–एक राक्षसी जो हिडिम्ब की बहिन और भीमसेन की भार्या थी।

हित (वि०)–पथ्य, हितकर्त्ता, मित्र, धारण किया हुआ, गत, मङ्गल।

हितकारी[न्](वि०)-भलाई करनेवाला।

हितैषी [न्] (वि०)–हित की इच्छा करने वाला।

हितोपदेश (पु०)–सत्कर्त्तव्य का उपदेश, भलाई का परामर्श देना, विष्णुशर्मकृत नीतिका एक ग्रन्थ।

हिन्दोल (पु०)–झूलना, हिंडोला, श्रावण के शुक्लपक्ष में झूलने का उत्सवविशेष, छः प्रकार के रागों में से एक।

हिम (न०)–तुषार,बरफ़। पु०–चन्दनवृक्ष, कपूर, चन्द्रमा, हेमन्त ऋतु, हिमालय पर्वत।

हिमकर (पु०)–चन्द्रमा, कपूर।

हिमांशु (पु०)–पूर्ववत्।

हिमानी (स्त्री०)–बरफ़ का गिरोह, हिमसंहति। [पर्वत।

हिमालय (पु०)-अपने नाम से प्रसिद्ध

हिमिका (स्त्री०)–दर्भों पर पड़ा हुआ तुषार। [स्वर्गीय एक वर्ष।

हिरण्मय (पु०)-ब्रह्मा। न०–भववर्ष।

हिरण्य (न०)–स्वर्ण, सोना।

हिरण्यकशिपु(पु०)–एक राक्षस राजा का नाम जिसके सम्बन्ध में एक पौराणिकगाथा है कि वह इतना शक्तिशाली हो गया कि उसने इन्द्र का राज्य छीन लिया और परमात्मपूजा का अत्यन्त विरोध किया, यहाँ तक कि उसने अपने पुत्र प्रह्लाद को भी उसकी ईश्वरभक्ति के कारण अनेक कष्ट दिये। अन्त में विष्णु ने नरसिंहावतार धारण करके उसका हनन किया।

हिरण्यकोश (पु०)–स्वर्ण और रजत।

हिरण्यगर्भ (पु०)–परमात्मा, विष्णु।

हिरण्यदा (स्त्री०)–पृथिवी।

हिरण्यनाभ (पु०)–मैनाक पर्वत।

हिरण्यबिन्दु (पु०)–अग्नि।

हिरण्यय (वि०)–सुनहरा।

हिरण्यरेताः [स्] (पु०)–अग्नि, सूर्य, शिव,चित्रकवृक्ष। [मकज भाई।

हिरण्याक्ष (पु०)-हिरण्यकशिपु का

हिल् (६प०)–प्रेमक्रीड़ा करना।

हिल्लोल(पु०)–लहर, तरंग, हिंडोल।

ही (अ०)–आश्चर्य,थकावट, दुःख।

हीन (वि०)–त्यक्त, त्यागा हुआ, भावरहित, नष्ट, न्यून।

हीनकर्म(वि०)–नित्यनैमित्तिक कर्म का त्यागने वाला। [कुलोत्पन्न।

हीनकुल–कुलज(वि०)–कमीना,नीच-

हीनजाति (वि०)–जातिच्युत।

हीनांग (वि०)–अंगभङ्ग, लूला आदि।

हीर (पु०)–सर्प, माला, सिंह, औद्धर्य

का पिता, शिव। अस्त्री०-इन्द्र-वज्र, हीरा।
हीरक (पु०)-हीरा, लाल।
हीरा (स्त्री०)-लक्ष्मी, चींटी।
हु (३उ०) [जुहोति]-आहुति देना, यज्ञ करना, खाना।
हुंकारः-कृतिः=हुंहुं की आवाज़।
हुड् (१ प०)-जाना। ६ प०-इकट्ठा करना, डूबना।
हुड (पु०)-भेड़ा, लौहदण्ड, बादल।
हुडु (पु०)-भेड़ा, मेष।
हुडुक (पु०)-चटखनी, शराबी, दात्यूह पक्षी।
हुंड् (१ आ०)-इकट्ठा करना, चुनना।
हुंड (पु०)-शेर, भेड़ा, ग्रामशूकर, राक्षस।
हुत (वि०)-आहुति रूप से दिया हुआ, अग्नि में समर्पित। पु०-शिव। न०-आहुति।
हुतभुक् [ज्] (पु०)-अग्नि, आग।
हुतवह (पु०)-पूर्ववत्।
हुताग्नि (पु०)-यज्ञ की अग्नि।
हुताशन (पु०)-अग्नि, शिव, चित्रक।
हुताशनी (स्त्री०)-होलिका, फाल्गुनमास की पूर्णिमा।
हुति (स्त्री०)-आहुति।
हु[हूं] म् (अ०)-सन्देह, स्वीकारी, क्रोध, नफ़रत, धिक्कार, प्रश्न।
हुल् (१ प०)-जाना, छिपाना, मारना।
हू (अ०)-सम्बोधन, अनादर, गर्व, दुःखबोधक।
हूड् (१ आ०)-जाना।
हूण [न] (पु०)-एक राक्षसजाति, विदेशी।
हूत (वि०)-बुलाया हुआ, आहूत।
हूति (स्त्री०)-बुलावा, निमंत्रण।
हूरव (पु०)-गीदड़। सियार।
हूच्र्छन (न०)-कपट, ठगई।
हृ (१उ०)-हरना, छीनना, लेजाना लेना, लूटना, चुराना, विवाहना, विभाग करना। [निन्दा।
हृणी [णि] या (स्त्री०)-शर्म, दया,
हृत (वि०) [समासान्त में] लेजाने वाला, पकड़ने वाला।
हृत (वि०)-हरा गया, गृहीत, पकड़ा गया, स्वीकृत, विभक्त। न०-भाग।
हृतसर्वस्व (वि०)-जिसका सब कुछ छिन गया हो, बिलकुल नष्ट।
हृताधिकार (वि०)-निकाला हुआ, पदच्युत, अधिकारच्युत।
हृति (स्त्री०)-लूटना, पकड़ना, नाश।
हृद् (न०)-दिल, मन, हृदय, छाती, आत्मा, अभ्यन्तर।
हृद्गत (वि०)-मनमें लगा हुआ।
हृ[हृ]द्रोग (पु०)-दिल की बीमारी, दुःख, कष्ट, आसक्ति।
हृदय (न०)-दिल, आत्मा, मन, छाती, प्रेम, अभ्यन्तर।
हृदयकम्प (पु०)-दिलकी धड़कन।
हृदयग्राही [न्] (वि०)-दिल को लुभाने वाला।
हृदयङ्गम (वि०)-दिल को छूने वाला, सुन्दर, मधुर, प्यारा।

हृदयच्छिद् (वि०)–हृदय को छेदने वाला, अप्रिय।
हृदयरोग (पु०)-दिल की बीमारी।
हृदयलेख (पु०)-ज्ञान, चिन्ता, दिल का दर्द। [छेदने वाला।
हृदयविध्-वेधी (वि०)–दिल को
हृदयस्थ(वि०) हृदय में स्थित।
हृदयस्थान (न०)–छाती, वक्षःस्थल।
हृदयालुना [नु] (पु०)–बगला।
हृदयालु-यिक-दयी (वि०)–नेकदिल, सहृदय, दयार्द्रचित्त।
हृदयेश येश्वर (पु०)–पति, स्वामी।
हृदयेशा येश्वरी(स्त्री०)–भार्या,पत्नी।
हृदि [दी] क (पु०)–एक यादव राजा।
हृदिस्पृश् (वि०)–हृदयवेधी· प्यारा, मनोहर।
हृद्य (वि०)-दिल का सच्चा, दिल को प्यारा, मनोहर, दयालु।
हृष् (१,४ प०)–खुश होना, खुशी मनाना, रोंगटे खड़े होना, झूठ बोलना। [र्योन्वित,ताशा,हृताश।
हृषित (वि०)–प्रसन्न खुश, आश्च-
हृषीक (न०)–ज्ञानेन्द्रिय।
हृष्ट=हृषित।
हृष्टचित्त(वि०)–खुशदिल,प्रसन्नमना:।
हृष्टरोम[न्](वि०)-पुलकित,रोमांचित
हृष्टवदन(वि०)–प्रसन्नमुख। [धाम।
हृष्टि (स्त्री०)–खुशी, प्रसन्नता, गर्व,
हे (अ०)–सम्बोधनचिन्ह।
हेक्का (स्त्री०)–हिचकी, हिक्का।
हेठ् (१प०)–क्रूर होना, दिक़ करना, मारना, पवित्र करना।
हेठ (पु०)–सताना, रोग, नुक्सान।
हेड् (१आ०)–अनादर करना,भूलना। १प०–घेरना।
हेड (पु०)–अवज्ञा, अनादर।
हेडज (पु०)–क्रोध, नाखुशी।
हेडाबु (पु०)–घोड़ों का सौदागर।
हेति (स्त्री०)-हथियार, प्रकाश, लपट, शोर, किरण।
हेति (पु०)–सबब, कारण, उद्देश्य, उद्गमस्थान, उपाय, ज़रिया,तर्क
हेतुक (वि०)–[समासान्त में] उत्पादक। पु०–कारण,जरिया,तार्किक।
हेतुता·त्वम्=कारणकाहोना,कारणभाव
हेतुमान् [मत्] (वि०)–कारणयुक्त। पु०–कार्य।
हेतुवाद (पु०)–बहस, मुबाहिसा।
हेतुशास्त्र (न०)–तर्कशास्त्र।
हेत्वाभास (पु०)–जो वास्तव में हेतु न हो और हेतु सा प्रतीत हो।
हेम (न०)–स्वर्ण, सोना, धतूरा। पु०–काला घोड़ा, बुधग्रह।
हेम [न्] (न०)–स्वर्ण,सोना,जल,बर्फ़, धतूरा, शीतऋतु, बुधग्रह।
हेमक (न०)–स्वर्ण, सोना।
हेमकर·कर्त्ता·कारक (पु०)–सुनार।
हेमकुम्भ (न०)–सोने का कलश।
हेमकूट (पु०)–एक पर्वत का नाम।
हेमकलि (पु०)–अग्नि, चित्रकवृक्ष।
हेमगिरि (पु०)–सुमेरु पर्वत।
हेमज्वाल (पु०)–अग्नि, आग।
हेमन्त (अस्त्री०)–छः ऋतुओं में से एक, मार्गशीर्ष और पौष मास।

हेमन्ती (स्त्री०)–जाड़ा, शीतकाल।
हेममाला (स्त्री०)-यमराज की स्त्री।
हेममाली [न्](पु०)-सूर्य, सूरज।
हेमरागिणी (स्त्री०)-हल्दी, हरिद्रा।
हेमशंख (पु०)-विष्णु।
हेमल (पु०)-सुनार, कसौटी।
हेम्य (वि०)-सुनहरा।
हेय (वि०)-त्यागने योग्य।
हेरिक(पु०)-जासूस, गुप्तचर। [झना।
हेल् (१आ०)-अवज्ञाकरना, तुच्छसम-
हेलन-ना=अवज्ञा, अनादर।
हेला (स्त्री०)-अनादर, प्रेमक्रीडा, खुशी, दिलबहलाव, कामेच्छा, ज्योत्स्ना, चांदनी।
हेलावुक्क (पु०)-घोड़ों का सौदागर।
हेलि (पु०)-सूर्य। स्त्री०_कामक्रीडा।
हेवाक (पु०)-उत्कट इच्छा, शौक।
हेवाकस(वि०)-उत्कट,तीव्र। [गर्जना।
हे[ह्रे]ष् (१आ०)-हिनहिनाना, रेंगना,
हे[ह्रे]षः-षा=हिनहिनाहट,गर्दभध्वनि
हेषी[न्] (पु०)-घोड़ा, अश्व।
हेहे(अ०)-सम्बोधनचिन्ह।
है (अ०)-सम्बोधन।
हैतुक (वि०)-हेतुयुक्त, सकारण। पु०--तार्किक, नास्तिक।
हैम (वि०)--ठण्डा, सर्द, सुनहरा, ओस। पु०--शिव।
हैमन (वि०)- ठण्डा, शीतकालसम्ब न्धी, सुनहरा। पु०--मार्गशीर्ष मास, हेमन्त ऋतु।
हैममुद्रा-द्रिका(स्त्री०)--सुनहरामिक्का।
हैमवत(वि०)--बर्फीला, हिमालय पर्वत पर उत्पन्न। न०--भारतवर्ष।
हैमवती (स्त्री०)--पार्वती,गङ्गा नदी।
हैयङ्गवीन (न०)-ताज़ा घी।
हैविक (न०)-शौक, तस्कर।
हैहय(पु०)--एकदेश,उस देशके निवासी, यदुका प्रपौत्र, अर्जुन कार्तवीर्य।
हैहेय (पु०)--अर्जुन कार्तवीर्य।
हो (अ०)--सम्बोधन, आश्चर्यबोधक।
होड् (१आ०)--अवज्ञा करना, अपमान करना। १प०--जाना।
होड (पु०)--बेड़ा, नौकासमूह।
होडा [ढ़] (पु०)--लुटेरा, डाकू।
होढ (न०)--चुराया हुआ माल।
होता [तृ] (वि०)-हवन करने वाला, आहुति डालने वाला। पु०-याज्ञिक, यज्ञकर्त्ता, अग्नि।
होत्र (न०)-हवन में डालने योग्य वस्तु जैसे-घृत,समिधा।
होत्रा (स्त्री०)-यज्ञ, प्रशंसा।
होत्रिक (पु०)-यज्ञकर्त्ता का सहायक।
होत्री [न्] (पु०)-यज्ञ कराने वाला।
होत्री (पु०)-आहुति डालने-वाला, शिवरूपभेद। [यज्ञशाला।
होत्रीय (वि०)-होतृसम्बन्धी। न०-
होम (पु०)-हवन, पंचयज्ञान्तर्गत एक यज्ञ।
होमक(पु०)-होता,हवन करने वाला।
होमकुण्ड (न०)-हवन करने के लिये पृथिवी में खोदा हुआ गड्ढा या ताम्रादि का पात्र।
होमधान्य (न०)-तिल।
होमधूम (पु०)-हवन का धुआं।

होमभस्म [न्] (न०)–हवन की राख ।
होमवेला (स्त्री०)–हवन करने का समय।
होमशाला (स्त्री०)–होम करने का स्थान
होमाग्नि (पु०)–यज्ञवह्नि, हवन की आग ।
होमि (पु०)–अग्नि, घी, पानी ।
होमी [न्] (पु०)–होता, होम करने वाला
होमीय-म्य (वि०)–होम के योग्य । न०-घृत, घी ।
होरा (स्त्री०)–लग्न, रेखा, शास्त्र-विशेष, २॥घड़ी का समय, एक घंटा
होलक (पु०)–अग्नि में भुने हुए अर्धपक्व चने गेहूं आदि, होला नाम से प्रसिद्ध भृष्टधान्य ।
होलाक (स्त्री०)-वसन्तोत्सव, होली ।
होलिका-होला (स्त्री०)–पूर्ववत् ।
हौ (अ०)–सम्बोधन, बुलाना ।
ह्नुड् (१प०)–अनादर करना, जाना ।
ह्नु (२ आ०)–चोरी करना, दूरलेजाना
ह्यस् (अ०)–बीता हुआ दिन ।
ह्यस्तन-स्त्य (वि०)–गतदिवसीय, बीते हुए दिन में होने वाला ।
ह्रद (पु०)–अगाध जलाशय, झील, पानी का गढा, कुण्ड ।
ह्रदग्रह (पु०)–कुम्भीर, नाका ।
ह्रदिनी (स्त्री०)–नदी, दरिया ।
ह्रसित [वि०]–ध्वनित, शब्द वाला ।
ह्रसिमा [न्] (पु०)–ह्रस्वता, लघुता ।
ह्रसिष्ठ (वि०)–अधिक छोटा, अतिशय ह्रस्व ।
ह्रसीयान् [गस्] (वि०)–पूर्ववत् ।
ह्रस्व (वि०)–छोटा, लघु, खर्व, नीच । पु०-बौना आदमी, एक प्रकार का अक्षर। न०-परिमाणविशेष ।
ह्रस्वगर्भ (पु०)–कुशा, दर्भ । [थिर्रटी]
ह्रस्वगवेधुका (स्त्री०)–एक प्रकार की
ह्रस्वफला (स्त्री०)-भूमिजम्बू, जामुनभेद
ह्रस्वाग्नि (पु०)–अर्कवृक्ष ।
ह्राद (पु०)–हिरण्यकशिपु का पुत्र अर्थात् प्रह्लाद, शब्द ।
ह्रादिनी (स्त्री०)-विद्युत, बिजली ।
ह्रादी [न्] (वि०)–शब्द वाला ।
ह्रास (पु०)-शब्द, नाश, क्षय ।
ह्रासक (वि०)-शब्द करनेवाला, नाशकर
ह्रिणाया (स्त्री०)-लज्जा, शर्म, दया ।
ह्रित (वि०) ह्रीत, लज्जित, विभक्त ।
ह्रिति (स्त्री०)–हृति, हरण, चुराना ।
ह्री (३प०)–लज्जाकरना, शरमकरना । स्त्री०-लज्जा, शरम ।
ह्रीं [ह्री]का (स्त्री०)–त्रास, लज्जा ।
ह्रीकु (वि०)–लज्जित, शरम वाला ।
ह्रीजित (वि०)–लज्जाशील ।
ह्रीण-त (वि०)–लज्जित, लज्जायुक्त ।
ह्रीबेर-ल-लक (न०)–एक औषध ।
ह्लादि (१आ०)–खुश होना, आनन्द मनाना, शब्द करना ।
ह्लाद-दक (पु०)–खुशी, आनन्द, प्रह्लाद का नाम ।
ह्वे (१उ०)–स्पर्धा करना, ईर्षा करना, शब्द करना ।

